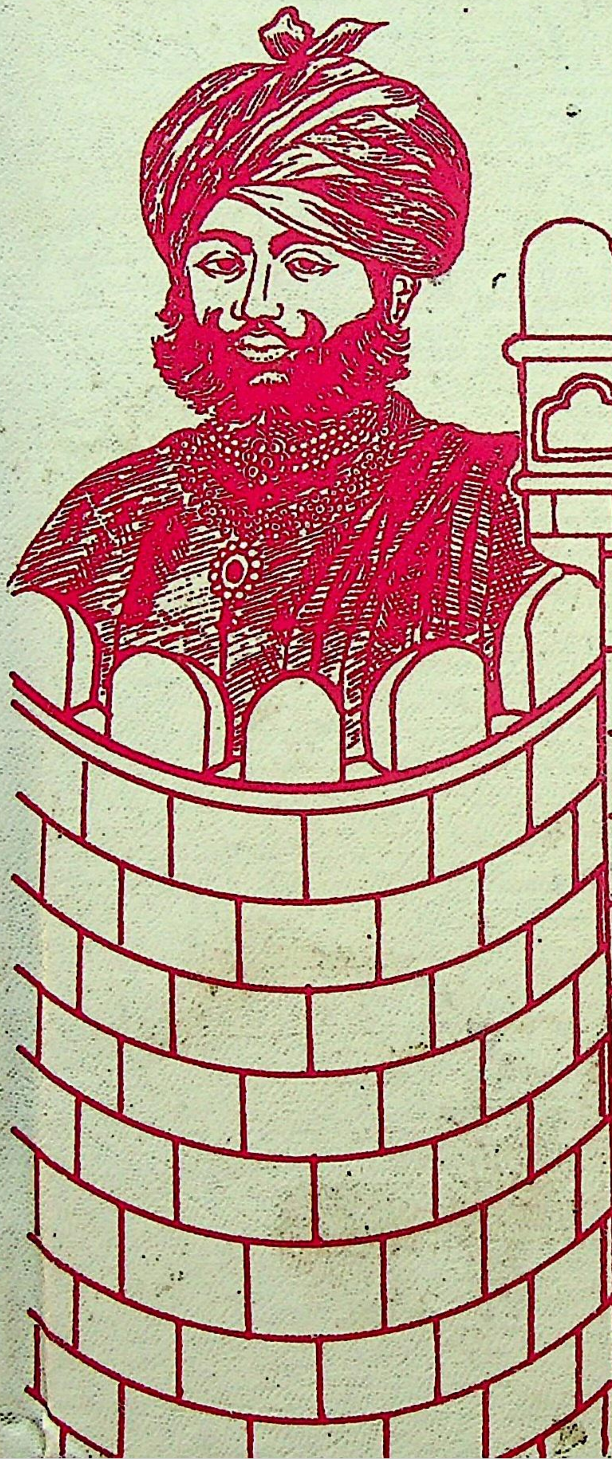
आल्ह खण्ड





श्रीः

आल्हखण्ड-बड़ा

(असली ५२ गढ़की लड़ाई)



पंडित

नारायणप्रसाद सीतारामजी

द्वारा संकलित और

परिवर्धित



संस्करण : जुलाई २०१३, संवत् २०७०

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

मूल्य : ६०० रुपये मात्र

श्रीवेंकटेश्वराय नमः



प्रस्तावना

★

वेङ्कटेश पदपद्म नमि, पाय अभय वरदान।
आल्हखण्ड प्रस्तावना; कहौं छन्द करि गान॥

करखा छन्द

आदि सनातन हरि अविनाशी, क्षीरधिवासी दीनदयाल।
कला तुम्हारी सिगरे जगमें, घट घट व्यापि रही सब काल।।
चारों युगमें नरतनु धारचो, केवल भक्त उधारन काज।
रक्षा कीन्ही रे भक्तनकी, महिमा प्रकट कीनि महाराज।।
का गति वरणौं मैं भक्तनकी, जिन वश किये नंदके लाल।
भक्त सहायक प्रण सांचो है, यह प्रण छुटे न कौनहु काल।।
व्यास देव ह्वै द्वापर प्रगटे, जिन अट्ठारह रचे पुरान।
चारों वरणोंकी मरयादा, आ सब कथा कीन तिन गान।।
सर्व पुराणमें रुचिकारी, भारत रच्या व्यास भगवान।
कथा अनूपम कुरुपांडवकी, जाके सुनत मोद सरसान।।
नृप धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन, वह महाराज कुरुन सरदार।
भीष्म द्रोण कृप कर्ण धनुर्द्धर, युद्ध करनेको रहे अगार।।
पांचौं पाण्डव कुन्ती वारे, अर्जुन भीम रहे बलवान।
सहदेव नकुल धर्म महाराज, जिनके बलको ना परमान।।
तिनको ईर्षा वश दुर्योधन, कपटी दीन्ह्यो दुखित बनाय।
भरी सभामें चीर खिंचायो, द्रुपदी रही सनाका खाय।।
आरत ह्वैकै हरिको टेरचो, राखी लाज आय यदुराय।
भई लड़ाई कुरु पाण्डवकी, जूझे बड़े बड़े रणधीर।।
जीत्या कुरुको रे पाण्डवने, जबै सहाय भये यदुवीर।

जीतिके भारत रे पाण्डवके, मनमें बड़ा ओज सरसान।
करि अभिलाषा फिर लड़नेकी, अस्तुति करैं कृष्णकी गान॥
हे कमलापति यदुपति स्वामी, मागैं तुम्हारे चरण मनाय।
यह वर देवौ जिन दासनको कलियुग खेलैं जूझ अघाय॥
एवमस्तु गिरिधारी बोले, मनमें खुशी भये सब भाय।
जगजानी द्रुपदी महरानी, प्रकटी पृथ्विराज घर आय॥
नाम पड़ो है बेलारानी, कीन्हो नाश क्षत्रियन क्यार।
धर्मराज प्रगटे आल्हा ह्वै, जिनकी खड़ी रही तलवार॥
अर्जुन जन्म वीर लड़ैंते, सिरसाके नाहर मलखान।
भीमजु जन्म्यो बघ ऊदल ह्वै, सहदेव ब्रह्माबलवान॥
भे तरवरिहा एक एकते, जीते बड़े बड़े संग्राम।
मान न राखा केहु क्षत्रीको, दिल्ली बीच कीन घमसान॥
बेला बेटी पृथ्वीराजकी, दिल्ली वंशनाश करदीन।
अपनौ जूझे पृथ्विराजसे, जगमें यह शाका करलीन॥
जो कोई जन्मा या पृथ्वीमें, काल कलेवा इकदिन होय।
यह संसार अपार सार नहिं, देख्यो ज्ञान दृष्टिसे जाय॥
सारवस्तु है रामनाम इक, जाको करो भजन श्रीराम।
भजन किये दोऊ दिशि सुधरैं, चिंतित सिद्ध होयँ सब काम॥
वेंकटेश्वर छापखानो, आरब ग्रंथ प्रकाशन जान।
जाकी मुद्रित्त सब पोथिनको, जानैं सज्जन और जहान॥

बलदेवप्रसाद

विनय

पहिले ध्यावौं गणनायकको, सुमिरत होय विघ्न सब खीश।
अष्टसिद्धि वामें तत्पर, सुरगण खड़े नवावें शीश॥
शंकर सुवन दुलारे गिरिजा, सब जग जपै तुम्हारो नाम।
दया निधान खान सब गुनके, जनके सिद्ध करो प्रभु काम॥
पुस्तक सुभग किरीट विराजै, सोहत कर गुलाबको फूल।
रक्त बरन अभरन सुवरनके, राखो शरन सुमंगल मूल॥
आदि भवानी तोको बन्दौं, केतकि सुमन चढ़ाय चढ़ाय।
तुम्हरे नाम लिये ते छिनमें, सिगरे काम सिद्ध हो जायँ॥
सब जग जानी वेद बखानी, बन्दौं सिंहबाहिनी ताहि।
युक्ति उक्ति अरु सहस कवित्तकी, दीजे शक्ति शिवानी मोहि॥

शुंभ निशुंभ सँहारन हारी, महिषासुरकी मारन हार।
रक्तबीजसे दानव मारे, डंका बजो कालिका क्यार ।।
पुनि पग वन्दों महावीरके, जाकी कीरति छई जहान।
काम रामके पूरण कीन्हें, सीता शोक छुड़ायो आन ।।
लगी शक्ति लक्ष्मण भे मूर्छित, लाये बेगि सजीवन मूरि।
अब जन आन शरन है ताकी, माथे देहु चरनकी धूरि।
जब जब भीर परी भक्तन पैं, तब तब कीन्हीं आप सहाय।
महिमा अगम अपार तुम्हारी, सो अब कैसे वरनी जाय ।।
वैश्य वंश कुलकमल-दिवाकर, श्रीमान् खेमराज सुखदान।
'वेंकटेश' छापाखाना उन, कीन्हो नगर बम्बई आन ।।
वेद पुराण शास्त्र ज्योतिषके, कीन्हे अगनित ग्रंथ प्रकाश।
नित प्रति पूजन सुर औ भूसुर, परम भक्ति मत अधिक हुलाश ।।
सुतन सहित ते युग युग जीवो, पावो ऋद्धि सिद्धि धन धाम।
द्विज बलदेव प्रसाद मिश्रके, पूरन करत रहो नित काम ।।
रहै समान्तर में जल जबलौं, गंग यमुनकी धार।
भानु चन्द्रमा जब लगि नभमें, निज निज करत रहैं उजियार ।।
तब लौ खेमराज सुख विहरा, नित यश छाय रहैं संसार।
धर्म अर्थ कामादि मोक्ष तव, कर तल होय पदारथ चार ।।
'मिश्र सुखानंद' को मध्यम सुत, मेरो वास मुरादाबाद।
नित प्रिय पूजन शिव शंकरको, जैसी मम कुलकी मर्याद ।।
बड़े भ्रात ज्वाला प्रसाद हैं, जिनको सकल जगतमें नाम।
धर्म सनातनकी सेवा करि, पूरे भक्त जनन मन काम ।।
छोटो अहै सकल गुण, राशी, जाको कहत कन्हैयालाल।
उलथा कीन्हों बहु ग्रंथनका, भाषा मनहर परम रसाल ।।
मैं बलदेव प्रसाद सदाही, सुमिरौं पार्वती और ईश।
दास जान पाठक गण अपनो, मनसे दीजे मोहिं अशीश ।।
मित्र हमारे 'नारद' प्यारे औ शुभ चिन्तक 'मुन्नालाल'।
सबकी कृपा शोध आल्हाको, मैं अपनी मतिके अनुसार ।।
परिवर्द्धित सम्पादित कीन्हों, होय भूल तो लेहु सुधार।
दया निधान सुजान सांवरे, कृष्णाके प्यारे भगवान ।।
दीन जान अपनाहु विहारी, मोकों शरण न कोऊ आन।

देव-स्तुति

आदि शक्ति सुमिरों जगदम्बा, जो संकटमें करत सहाय।
जाके नाम लिये ते छिनमें, कारज सकल सिद्ध हो जाय।।
मंगल करनी जन दुख हरनी, वरनी वेदन बारम्बार।
आदि भवानी सब जग जानी, मानी सुरवर मुनि संसार।।
पांच हजार बरस मधु कैटभ, ते अतियुद्ध कियो करतार।
महाबली सो मरै न मारे, वासुदेव तब मनहि विचार।।
खल अति अजय जगत संतापी, जाके बलको बारण पार।
मारत मारत भुजबल थकि गये, कैसे होय शत्रु संहार।।
अस्तुति गाई जगदम्बाकी, उर दुर्गाके चरण संभार।
देवि शारदा दहिनी ह्वै गइ, औ मधुकैटभ डारे मार।।
शुंभ निशुंभ रक्तबीजको, पलमें डारो उदर विदार।
धरनि पछारो महिषासुरको, डंका बजो कालिका क्यार।।
जब जब भीर परत सन्तन पर, तब तब जननी करत सहाय।
आज अखाड़ेमें बरनी है, राखो लाज शारदा माय।।
जो जो अक्षर माता भूलौ, सो मोहिं तुरतहि देहुं बताय।
जासों आल्हखण्ड कथ गाऊं, चूक परै जननी कहुं नाय।।
पुनि पग वन्दौं शिव शंकरके, जो प्रभु काम जरावन हार।
बट पूजत हैं झारखण्ड में, बाबा बैजनाथ दरबार।।
कर त्रिशूल औ डमरु विराजै, शोभा एक न बरनी जाय।
गरल कण्ठ उर नर शिर माला, गंगा रही जटनमें छाय।।
फेंट लगाये हैं सर्पनकी, बंधी कालिया की कौपीन।
राम राम श्रीराम अहर्निशि, गावैं और बजावैं बीन।।
चिता भस्म सब अङ्ग लगाये, परे जनेउ बासुकी क्यार।
भंग संग अर्धंग गौरि है, औ चन्द्रमा दिये लिलार।।
कुन्द इन्दु सम गौरवदन प्रभु, नित्त प्रति करत भक्तके काम।
सो मो पर अनुकूल रहें शिव, करें दासके उर विश्राम।।
डिम डिम डिम डिम डमरू बाजै, रुम रुम बजै सरंगी आय।
छम छन नन नन घुंघुंरू बाजै, नाचत अधंगी हरषाय।।
चले महादेव निज आसनसे, पहुंचे नन्दी गण पै जाय।
मारी छलांग चढ़े प्रभु तापर, निज मन सुमिर राम रघुराय।।

डगर पकर लइ इन्द्रप्रस्थकी, मनमें अधिक मोद सरसाय।
घड़ी एकके भइ अरसामें, तब फाटक पर पहुंचे जाय।।
लगी कचहरी पाण्डु सुतनकी, भारी लागि रह्यो दरबार।
नकुल भीम सहदेव युधिष्ठिर, बैठे नगन लिये तलवार।।
बड़े बड़े नरेश बैठे हैं, अपनी अपनी सुधर कतार।
मुकुट कन्हैयनकै चमकत हैं, मानो फूल रही फुलवार।।
घण्टा बाजो नन्दी गणको, नकुला पंडा गही कमान।
कौ अपराधी है द्वारे पर, जिन यह घंट बजायो आन।।
त्योरी पर बल डारि उारि जब, बोल्यो नकुल न उत्तर देउ।
क्रोध पूर्ण तब शंकर बोले, तुम यह शाप हमारो लेउ।।
जाउ द्रौपदी मृत्यु लोकमें, कलियुग जाय लेउ अवतार।
बेटी कहैहौ पृथ्वीराजकी, औ कुलवधू चंदेले क्यार।।
नाम तुम्हारो बेला हुइहै, तुम पर बहुत होय संग्राम।
तुम जब पहुंचोगी पृथ्वीपर, छिन भर मिले न तेहि विश्राम।।
जादिन बेला भइ जन्मी थी, थर थर कांपे तीनों लोक।
इंद्र डोल गये इन्द्रासन पर, शिवशंकर उर छायो शोक।।
सब देवता कांपन लागे, सब जग हाहाकार पुकार।
रानी अगमा पृथ्वीराजकी, तेहिकी कोख, लिखो अवतार।।
ब्रह्मा उपजे नगर महोबे, पंडा अर्जुनके अवतार।
जो भर पूर शूर नर बंका, जाकी जग जाहिर तलवार।।
अब पग बन्दौं रामचंद्रके, अशरण शरण हरण जंजाल।
दास जानि मोहि रक्षा कीजै, दशरथ नन्दन दीनदयाल।।
जो मोपर प्रसन्न सुख राशी, अविनाशी प्रभु परम उदार।
तो तुम देहु मोहि मति सुंदर, बरनौ आल्हखण्ड सुखसार।।
सीता राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, हनूमान कह तुरत बढ़ो।
कह प्रहलाद सुनो भाई लड़को, हम जु पढ़ैं सो तुमहुं पढ़ो।।
राम राम सबकी पाटीमें, सो प्रहलादने लिख्यो बनाय।
जब वह पाटी पण्डित देखी, मनमें बहुत खपा हो जाय।।
बांह पकरिकै तब लरिकाकी, लै गयो हिरनाकुश के पास।
नाम जपत यह तेरे वैरीका, जासो होइ है कुलको नाश।।
बहुत क्रोध दानवने करके, पर्वत परसे दियो गिराय।
रक्षा कीन्ही नारायणने, ताके चोट लगी कछु नाय।।

पुनि समझाय रह्यो बेटाको, सुन प्रहलाद हमारी बात ।
जिसका नाम जपत तू निशिदिन, इसने भ्रात किये मम घात ।।
जो कोई उपजै वंश हमारे, औ पुनि लेइ रामको नाम ।
वंश नाश तुरत ह्वै जैहैं, हमको शिव पूजनसे काम ।।
लौट जवाब दियो लरिकाने, दादा मति मारी भगवान ।
राम नाम तजिहौं कबहूं ना, चाहे तनमें रहै न प्रान ।।
बांह पकरिकै पुनि लरिकाको, भुरजी भार दियो झुकवाय ।
तत्ती पवन लगन नहिं पाई, जनको लीन्हों राम बचाय ।।
अगन घंभसे तब बंधवाकर, बोला हिरनाकुश झुंझलाय ।
अब तो सुमिरौ नारायणको, जो खंभासे लेइ बचाय ।।
तमक जवाब दिया लरिकाने, तुम्हरो काल गयो अब आय ।
हममें तुममें खड्ग खंभमें, सबमें राम रहे हैं छाय ।।
तड़ तड़ाय हिरनाकुश योधा, मुक्का हनो खंभमें जाय ।
अरर ररर रर खंभ फटि गयो, टुकड़े गिरे धरनिपै जाय ।।
खंभ फाड़ प्रकटे नारायण, प्रलय काल सम क्रोध अपार ।
घुटुअन पर हिरनाकुश धरके, नखसे डारो उदर बिदार ।।
सुमन वृष्टि देवनने कीन्हीं, पायो प्रभुको परम प्रसाद ।
ऐसे हि राखो जन अपनेको जैसे राखि लिये प्रहलाद ।।

बलदेवप्रसाद मिश्र
दीनदारपुरा, मुरादाबाद

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop. Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
Email : Khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s. Khemraj Shrikrishnadass, Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune - 411 013.

अथ प्रस्तावना

दोहा–गणपति विधि हरि हर सुमिरि, लिखत यथामति पाय।
आल्हखण्ड-प्रस्तावना, सुनहु सुजन मन लाय ॥ १ ॥

वीर छंद

अलख निरञ्जन परमेश्वरको। लै परभात रामको नाम।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र वै सिरजत। पालत हरत सृष्टि परधान ।।१।।
नेति नेति कहि वेद पुकारत। महिमा अमित विष्णु भगवान।
सो अवतार लेत भक्तन हित। हरिजन सदा करत गुणगान ।।२।।
भाषे व्यास पुराण अठारह। अरु महाभारत किया बखान।
गाये कृष्णचरित्र अनूपम। जिन बहु हने असुर बलवान ।।३।।
कियो युद्ध कौरव पांडव मिलि। सारथि बने कृष्ण महाराज।
जो कछु इच्छा कृष्णचन्द्रकी। सोई तहां रचायो साज ।।४।।
दुर्योधन आदिक कौरव सब। मारे गये युद्ध मैदान।
भूप युधिष्ठिरादि पांडव तहँ। जीते कृपा कीन्ह भगवान ।।५।।
अहंकार वश भे पांडव तब। विनती करी कृष्ण ढिग जाय।
रही कामना युद्ध करनकी। कलिमें पूर्ण करहु सुरसाय ।।६।।
यह सुनि बानी भीमादिककी। सोचे मनहिं कृष्ण भगवान।
अहंकार वश भये पांडुसुत। ताते इनहिं देहुं बरदान ।।७।।
कौरव हाथ कराय मीचु इन। मुनि करि हेतु देहुं निजधाम।
यह विचारि कहि एवमस्तु प्रभु। हर्षित भये सकलतेहि ठाम ।।८।।
सोई प्रकट भये कलियुगमें। आल्हा आदि बीर बलवान।
बावन गढ़के नृप जीते तिन। करिके युद्ध घोर घमसान ।।९।।
मंडलीक नृप भूप युधिष्ठिर। जिनको सुयश प्रकट संसार।
प्रगट भये सोई आल्हा हुइ। जिनकी रही अमर तलवार।।१०।।
भीमसेन प्रकटे ऊदनि ह्वै। औ सहदेव बीर मलिखान।
अर्जुन प्रकटे ब्रह्मानंद ह्वै। चारों भये महुबिया ज्वान ।।११।।
लाखनिराना जो कनउजके। पाण्डव नकुल क्यार अवतार।
दुर्योधन प्रकटे दिल्लीमें। ह्वैके पृथ्वीराज सरदार ।।१२।।
चौड़ा ब्राह्मण पृथ्वीराज ढिग। द्रोणाचारज को अवतार।
दुःशासन प्रगटे धांधू ह्वै। ताहर कर्ण क्यार अवतार ।।१३।।
नर अभिमन्यु भये इन्दर ह्वै। बेला भई द्रौपदी आय।
इहि विधि प्रकटे कौरव पांडव। सब मिलि कीन्ही युद्ध अघाय।।१४।।

माहिल राजाकी चुगुलिनते । राजा बिगरि गये परिमाल ।
रहेउ शूर नहिं भरत्तखण्डमें । मारे गये सबहि महिपाल ।।१५।।
हुकुम चलायो यवन हिन्दुपर । बिज्जति करी यहां पर आय ।
लाखन हिंदू मुसलमान करि । बहुतै पुस्तक दिये जलाय ।।१६।।
अच्छे अच्छे ग्रंथ नशाये । कीन्हीं बहुत्त अनीति अघाय ।
इतिहासोंमें लिखा हाल यह । पढ़ि पढ़ि रोम जात थर्राय ।।१७।।
जब आये अंग्रेज बहादुर । तबसे सुचित्त भये सब लोग ।
होत न्यायते काम यहां अब । सिगरी प्रजाकरति सुखभोग ।।१८।।
बन्दोबस्तके रहे कलक्टर । कछु दिन शहर फरुखाबाद ।
मिस्टर सी. इ. इलियट साहब । सिगरी आल्हखण्डमरजाद ।।१९।।
गावनवाले जो जाहिर थे । तिनते लिखवायो त्येहिकाल ।
अंगरेजीमें करो तरजुमा । लन्दन भेजि दियो तत्काल ।।२०।।
आज्ञा ले अपने मतवेमें । मुन्शी रामस्वरूप छपाय ।
संवत् उनइससै उनतिसमें । असली आल्हा नाम धराय ।।२१।।
कियो प्रकट लै मोल लोग सब । बांचत आल्हखंड सब ठाम ।
पंडित भोलानाथ गवैया । ताही समय रहे सरनाम ।।२२।।
तिनका सुंदर आल्हखण्ड यह । तिनते यथा समय हम पाय ।
प्रथम छपायो नगर बम्बई । पुनिलक्ष्मणपुर दियो छपाय ।।२३।।
अब बढ़ायके भली भांति हम । शोधेउँ शहर बम्बई आय ।
चन्दभाटकृत आल्हखण्डको । बहुविधिलिखोजिलिया संगवाय।२४।।
सोउं सोध लिखो पाछेते । आज्ञा रंगनाथकी पाय ।
भेजि दियो बम्बई प्रेसको । छापन हेत मोदसरसाय ।।२५।।
"श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालय । स्वामी खेमराज सरनाम ।
हैं जो सेठ बम्बई माही । तिन सुत रंगनाथ बुधिधाम ।।२६।।
दूसर सुत श्री श्रीनिवासजी । होवैं सुखी सहित्त परिवार ।
नितनित बाढ़ै भवनसम्पदा । है यह आशीर्वाद हमार ।।२७।।
वर्षाऋतुमें समय पाय सब । आल्हा पढ़त सुनत्त मनलाय ।
ताते लिखिकै आल्हखण्ड यह । भोलानाथी दिया छपाय ।।२८।।
नारायण प्रसाद लक्ष्मीपुर । सीताराम सहित सरनाम ।
हाट पुस्तकालय सोहत है । सन्मुख हनूमान बलधाम ।।२९।।
समय पायके आल्हा गावो । नित उठि लेउ रामको नाम ।
भोलानाथ मनाय हियेमह । बहुविधि धारि ध्यान घनश्याम।।३०।।

—पं० नारायण प्रसाद सीताराम

भूमिका

प्रिय पाठगण ! यह आल्हखण्ड महोबेकी बोलीमें पृथ्वीराज आदि राजाओंके साथ आल्हा ऊदनि आदि महावीरोंका युद्ध आल्हा गानेवाले प्रेमियोंके चित्त विनोदार्थ आल्हा छन्दमें वर्णित है ।

आल्हा संग्रामका मूल कारण

प्रगट हो कि, कुरुक्षेत्रके मैदानमें जब महाभारत युद्ध हुआ तब श्रीकृष्णचन्द्रजी की सहायतासे पांडवोंने कौरवोंसे विजय पायी । उस समय दुर्योधन आदिक कौरव नष्ट और युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव ये पांचों पांडव विजयी हुए, परंतु भीम आदिककी इच्छा युद्धसे पूर्ण न हुई । इस कारण उन्होंने श्रीकृष्णके सम्मुख जाकर प्रार्थना पूर्वक स्तुति की, कि — हे कृपासिन्धु ! आपकी कृपासे कौरवों को तो जीता परंतु अभी हमारी युद्धकी इच्छा बनी है । इसलिये आप प्रसन्न होकर यह वर दीजिये कि हम लोग कलियुगमें युद्ध करके इच्छा पूरी करें ।

यह बात सुनकर श्रीकृष्णने अपने मनमें विचारा कि, जीत होनेसे इनको अभिमान हो गया है, अब कौरवोंके हाथसे इनकी मृत्यु कराकर वैकुण्ठ पहुँचाऊं यह विचार कर उन्होंने कहा कि अच्छा तुम्हारी इच्छा पूरी होगी । वे ही कलियुगमें युधिष्ठिर आल्हा, भीमसेन ऊदनि, अर्जुन ब्रह्मानन्द, नकुल लाखनि और सहदेवने मलिखानके नामसे जन्म लिया । इस प्रकार पांचों पांडव अवतार लेकर प्रकट हुए, इन्दल अभिमन्युका अवतार है, कौरवोंमें राजा दुर्योधन पृथ्वीराज, दुश्शासन धांधू, कर्ण ताहर और द्रोचाणार्य चौड़ा ब्राह्मण हुए । इन सबने उमंगके साथ युद्ध किया और अन्तमें सब नष्ट हो गये । अब आगे आल्हखण्ड सम्बन्धी वीरोंका संक्षिप्त वृत्तांत लिखा जाता है ।

राजा परिमालका जन्म

कलियुगके कुछ वर्ष बीतनेपर चन्देली नगरमें चन्द्रवंशी महाराज चन्द्रब्रह्म हुए । धर्मात्माचन्द्रब्रह्मजीको चंद्रमाने प्रसन्न होकर पारसमणि दी थी, उस पारस पत्थरको छूकर लोहा सुवर्ण हो जाता था । उसीके प्रभावसे महाराजने अनेक यज्ञ किये और बहुत सेना रखकर सब राजाओंको जीतकर संसारमें अपना यश फैलाया । महराजके मंत्री 'चिन्तामणि' तोमरवंशी क्षत्रिय थे । चन्द्रब्रह्मके पुत्र वीरब्रह्म उनके रूपचन्द्र, रूपचन्द्रके व्रजब्रह्म और व्रजब्रह्मके पुत्र बन्दन हुए । महाराज बन्दनने पांच यज्ञ किये । बन्दनके पुत्र जगद्ब्रह्म, जगद्ब्रह्मके सत्यब्रह्म और सत्यब्रह्मके सूर्यब्रह्म हुए; सूर्यब्रह्मने अपने नामसे सूर्यकुण्ड बनवाया । सूर्यब्रह्मके मदनब्रह्म और मंदनब्रह्मके पुत्र कीर्ति हुए, जिन्होंने अपने नामपर 'कीरतिसागर' बनवाया । महाराजकीर्तिके यहां बीस लाख सेना थी । कीर्तिके पुत्र परिमाल (चन्देले) प्रतापी राजा हुए । राजा परिमालने तीर्थयात्रा करते हुए बहुत दान ब्राह्मणोंको दिया और अनंगपाल आदि सब राजाओंको अपने वशमें कर भेंट लेकर छोड़ दिया तथा अमरनाथ गुरुकी आज्ञासे अपना खांडा सागरमें पखारकर गुरुकी शपथ कर ली और फिर अस्त्र-शस्त्रको हाथ नहीं लगाया । इसी कारण वे युद्धके नामसे कांप जाते थे कि एक तो मैं वृद्ध हो गया, दूसरे अस्त्र शस्त्र हाथमें ले नहीं सकता हूं, मेरा यश जो फैल रहा है उसमें कलंक लग जायगा । राजा परिमालके पितृवंशमें एक चम्पावती नामवाली कन्या थी, जो कि राठौरवंशी क्षत्रिय महाराज कनवजको विवाही गई थी । जिस वंशमें राजा जयचन्द हुए ।

राजा परिमालका विवाह

राजा वासुदेवका दूसरा नाम 'मालवन्त' था जो कि महोबेमें राज्य करते थे । उनके माहिल और भोपति नामक दो पुत्र तथा मल्हना आदि पांच कन्यायें थीं । मल्हना बहुत सुन्दरी थी, उसके रूपकी बड़ाई सुनकर राजा परिमालने महोबेपर चढ़ाई की और राजा वासुदेव तथा माहिल, भोपतिको युद्ध करके जीत लिया तब हार मानकर राजा वासुदेवने मल्हनाका विवाह राजा परिमालके साथ कर दिया । फिर मल्हना रानीने

चन्देलीमें रहना अंगीकार नहीं किया और कहा कि हम महोबेमें ही रहेंगी, यह सुनकर राजा वासुदेवसे महोबेकी राजधानीको छीनकर राजा परिमालने अपना निवास स्थान बनाया। राजा वासुदेव उरईमें जा रहे और राजा परिमालको अपनेसे प्रबल जानकर सम्मानके साथ शुभ दृष्टिसे देखते रहे और छल कपट रहित बर्ताव करने लगे। पर माहिल मन ही मन कुढ़ रहे थे, किन्तु कुछ कर नहीं सकते थे। कुछ ही काल बीते राजा वासुदेव परलोक गामी हुए, उरईका राज्य माहिल करने लगे और अपने भाई भोपतिको जगनेरीमें किला बनवाके वहांका राज्य दिया, माहिल और भोपति दोनों भाई राजा परिमालकी सम्मतिसे सब काम करते थे भोपतिका दूसरा नाम जगनिक था। माहिलने राजा परिमालसे चुगुली माफ करा ली थी और परिमालसे बदला लेनेके बाद दांव घातमें लगे रहते थे इसीसे माहिलकी चुगुलीपर राजा परिलाल कुछ ध्यान नहीं देते थे, इसका परिणाम यह हुआ कि पीछेसे सर्वनाश हो गया। राजा परिमालके अन्य भी अनेक रानियां थीं।

दस्सराज और बच्छराजका वृत्तान्त

माडौगढ़का राजकुमार (राजा जम्बैका पुत्र) करिंघाराय गंगा स्नान करने आया। वहां मेलेमें अपनी बहिनके लिए नौलखा हार ढूंढ़ता था, इतनेमें माहिलने उससे मिलकर कहा कि तुम राजाओंके बेटे होकर बजारमें हार खरीदते फिरते हो महोबेमें हमारी बहिनके पास नौलखाहार है चलकर लूट लो। यह सुनकर करिंघा महोबेमें आकर हार लेना चाहा; तब ताल्हन, सैयद और दस्सराज, बच्छराजने लड़कर उसको मार भगाया। कुछ समय बीते ताल्हन और सैयद बनारस गये थे, माहिलने जाकर करियाको खबर दी कि सैयद बनारसको गये हैं, मौका अच्छा है अब चलकर नौलखा हार ले आओ। यह सुनकर करिंघा आया और दशहरिपुरवामें जाकर आधीरातको छापा मारा और दस्सराज, बच्छराजको सोते बांध लिया, दिवलाके गलेसे नौलखा हार और सब गहना, हाथी पचसावद घोड़ा पपीहा लाखापातुर आदि इन सबको साथ लेके माड़ौको लौट गया। दस्सराज और बच्छराज दोनों भाइयोंको कोल्हूमें पिरवाके शिर काट बरगद वृक्षमें टँगा दिये। दस्सराज और बच्छराजकी उत्पत्ति वनमें हुई थी इस कारण इनको बनाफर कहते थे, इनकी उत्पत्तिका विस्तार बीरवंशावलीमें लिखा है।

पृथ्वीराजका जन्म

अनंगपाल जिस समय दिल्लीके राजा थे उसी समय कन्नौजमें राजा विजयपाल (अजयपाल), जोधपुरमें नाहरराय, चित्तौरमें अमरसिंह, पाटनमें भीमदेव, जैसलमेरमें भोजदेव, आबूमें जेतपँवार, अजमेरमें सोमेश्वर राजा थे। कविचन्द भाट ने लिखा है कि राजा अनंगपालका कामध्वजके साथ युद्ध हुआ, उस युद्धमें अजमेर पति सोमेश्वरने अनंगपालकी सहायता की, इससे प्रसन्न होकर अनंगपालने अपनी छोटी कन्या कमला देवीका विवाह सोमेश्वरके साथ कर दिया। कमलका दूसरा नाम इन्द्रावती और इन्द्रकुँवरि भी था। कमलाके गर्भसे संवत् १११५ विक्रमीयमें पृथ्वीराजका जन्म हुआ, पृथ्वीराजकी जन्मपत्रीके विषयमें चंद्र कविने पद्धरी छन्दमें इस प्रकार लिखा है।

"दरबार बैठि सोमेशराय। लीन्हे हजार ज्योतिषि बुलाय ॥
कहो जन्मकर्म बाल विनोद। शुभ, लगन मुहुरत सुनतमोद ॥
संवत् एकादश पंच अग्ग। वैशाख मास पख कृष्ण लग्ग ॥
गुरु सिधियोग चित्ता नखत। नर नामकर्ण शिशु परम हित ॥
ऊषा प्रकाश इकधरिय रात। पल तीस अंश त्रय बाल जात ॥
गुरु बुध शुक्र परि दशस्थान। अष्टमेंथान शनिफलविधान ॥
पंचम अथान परि सोम भौम। ग्यारवें राहु बल परम होम ॥

बारहें सूर सो करन रंग। अन मौन माइ तिन करै भंग।।
पृथिराज नाम बल हरै छत्र। दिल्लीय लखत मंडै सुछत्र।।
चालीस तीन तिनवर्ष साज। कलि पहुमि इन्द्र उद्धारकाज।।"

इस कवितामें कुछ भूल अवश्य है, वैशाख कृष्ण पक्षका जन्म चित्रा नक्षत्रमें लिखा है, तिथि नहीं लिखी परंतु चित्रा नक्षत्र वैशाख कृष्ण प्रतिपदाको हो सकता है क्योंकि चैत्रमासकी पूर्णमासी चित्रा नक्षत्रका मुख्य स्थान है, नक्षत्रके नामसेही मासका नाम मुख्य माना जाता है सो प्रतिपदाको सही और वैशाखमें सूर्य मीन राशिका अयवा मेषराशिके होते हैं डेढ़ घड़ी रात रहे जन्म लिखकर बारहवें स्थान में सूर्य लिखे यह असंभव है। पांच और दो मिलाकर सातवें स्थानमें चंद्रमा लिखा है तो आधे चित्रा तक कन्या राशि होती है अतः कन्याका चन्द्रमा सातवें होनेसे मीन लग्नमें जन्म निश्चय हुआ। मेषके सूर्य दूसरे हुए, यदि मीनके सूर्य हों तो मूर्तिमें हुए, सूर्य और बुधका प्रायः साथ रहता है। यहां सूर्य बारहवें घरमें लिख और बुधको दशमस्थानमें लिखा यह बात भी असमंजसकी है कुछ भी हो यहां संवत् १११५ में जन्म मान लेनेकी आवश्कयता है।

पृथ्वीराजके जन्मसे पहले पृथ्वीराजकी माताको अति कष्ट भोगना पड़ा था, जिसका संक्षिप्त वृत्तांत यह है कि तोमर वंशी महाराज अनंगपालकी कन्या इन्द्रावती तीन महीनेके गर्भसे थी श्रावणका महीना था, पिताने बुलाया और कन्याको गर्भवती जानकर पंडित चंदनलालजीसे पूछा कि इस कन्याके गर्भस्थ बालकका वृत्तांत कहो। पंडितजीने उत्तर दिया कि इसके गर्भमें बड़ा प्रतापी शूरवीर उत्पन्न होगा। सब राजाओंको जीतनेवाला होगा और इसको सब नरदेही कहेंगे और यह तुम्हारे वंश भरको यहांसे निकालकर निष्कंटक राज्य करेगा। यह सुनकर महाराज अनंगपाल चिन्तायुक्त हुए और अपने वंशके लोगों को बुलाकर सब हाल सुनाया तब कुटुम्बी लोग बोले कि महाराज ! आप अपनी कन्याको बुलाकर एकांत में समझाकर कहो कि हमने तेरे गर्भके विषयमें पंडितोंसे पूछा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी कन्याके गर्भसे बड़ा प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा, परंतु जो यहां रहेगी तो इसका गर्भ गिर जायगा। इस कारण तबतक तीर्थाटन कर आओ, इस प्रकार समझाकर इन्द्रावतीको हमारे साथ भेज दीजिये। हम इसको किसी कुवांमें गिराकर लौट आवेंगे, यह सुनकर राजा अनंगपाल रनिवासमें जा अपनी रानीके समीप इन्द्रावतीको बुलाकर कहा कि हे पुत्री ! आज हमने ज्योतिषियोंको बुला तुम्हारे गर्भके कल्याण निमित्त पूछा था पंडितोंने कहा कि आपके कन्याके गर्भसे बड़ा प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा परंतु यहां रहेगीतो गर्भ पतन हो जायगा, इसलिए यदि तुम्हारी इच्छा हो तो अपने कल्याण निमित्त हमारी सेना और कुटुम्बी-जनोंको साथ लेकर तब तक तीर्थाटन कर आओ। इन्द्रावती ऐसा वचन पिताका सुन मातासे सम्मति करके अपनी कुशल कामना करके मधुर वचन बोली – पिताजी ! जो आपकी आज्ञा हो वही करूँगी। तब राजा अनंगपालने अपने कुटुम्बियोंको बुला सेनासहित तीर्थाटन मिस इन्द्रावतीको भेज दिया, वे सब घोर वनमें इन्द्रावतीको ले गये और रात्रिके समय छल करके एक कुआंमें डाल दिया। बाद सब लोग दिल्ली लौट आये और राजासे कहा कि आपका काम हम कर आये। इन्द्रावती उस कुएं में पड़ी हुई बहुत विलाप करने लगी, उसी समय हरिकी इच्छासे एक अश्वत्थामा नामक साधु आ गये और इन्द्रावतीको कुवांसे निकालकर पूछने लगे कि तुमको इस कुंएमें किस दुष्टने डाल दिया ? तब इंद्रावतीने कहा–महात्मन् ! मैं राजा अनंगपाल (दिल्लीपति) की कन्या हूँ और अजमेर महाराजकी प्रिय पत्नी हूँ। रात्रिके समय शयन करतेमें नहीं मालूम कि कौन राक्षस या देव मुझको लाकर यहां कुवांमें डाल गया। यह सुनकर साधु कहा कि अब तुमको तुम्हारे पिताके यहाँ पहुँचा दें, अथवा पतिके यहां शीघ्र बताओ ? तब, इंद्रावती बोली कि अब मैं कहीं नहीं जाऊंगी, इस समय तो मेरे पिता आप ही हो मेरी रक्षा करो। यह सुनकर साधु इन्द्रावतीको कन्याके समान अपनी मढ़ीमें रख रक्षा करने लगे। इन्द्रावती वहां अपने पिताके यहां से अधिक सुखपूर्वक रहने लगी। पुराण इतिहासके अनुसार बलभद्रविलास एक बड़े ग्रंथमें लिखा है कि –

"अथ सा माघमासे तु त्रयोदश्यां सिते भृगौ।
पुष्ये द्वित्रीन्दुचन्द्रेऽब्दे मध्याह्नेऽभिजिति क्षणे ।।१।

मुदिते लोकसंताने तदा पुत्रमजीजनत् ।
यं वदन्ति नराः सर्वे धार्तराष्ट्रावतारकम् ।।२।।
आजानुबाहु शशिपूर्णिमास्यः पद्मायताक्षो मदनैकरूपः ।
वीरप्रहन्ता क्षितिभारहर्ता वंशावतंसो नरदेहसंज्ञः ।।३।।

अर्थात् संवत् ११३२ माघ शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवारको दोपहर दिनके समय पुष्य नक्षत्र अभिजित मुहूर्तमें सब लोगोंके प्रसन्न समय कमला (इंद्रावती) के पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसको सब मनुष्य दुर्योधनका अवतार कहते हैं। वह बालक लंबी भुजवाला, चन्द्रमाके समान मुखकांतिवाला, कमलके समान नेत्रवाला, कामदेवके समान सुन्दर रूपवाला, वीरहंता, भूमिके भारको हरनेवाला, चौहान वंशमें भूषण नरदेही हुआ।

मुनिजीने उस बालकका नाम पृथ्वीराज रखा, पांच वर्षकी अवस्थासे ही मुनि अश्वत्थामाजीने बाण-विद्याकी शिक्षा दी, सात वर्षकी आयुमें अनेक विद्यायें मुनिजी ने सिखायीं। तब पृथ्वीराज वनमें निर्भय होकर विचारने लगे, बाणोंसे सिंह व्याघ्र आदि पशुओंको मूर्छित कर पकड़--पकड़ मढ़ीमें ला ला अपनी माता व मुनिराजजीको आनन्द देते हुए बाललीला दिखाने लगे।

पृथ्वीराजका अपने पितासे मिलना और घरपर आना

महाराज सोमदेव एक दिन वनमें आखेटको निकले, दैवयोगसे उसी वनमें पहुँचे जहां पृथ्वीराज वनमें विचरते हुए सिंह आदि पशुओंको पकड़ रहे थे। राजा सोमदेवने उस बालकको देखकर विचार किया कि यह बालक कौन है? जिसको देखकर हमारा हृदय विह्वल होने लगा है। हमारी प्यारी जीती होगी और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ होगा तो ऐसा ही पुत्र हुआ होगा। यह विचारकर महाराज उस बालकसे पूछने लगे कि तुम किसके बालक हो यहां इस वनमें किस कारण विचरते हो? यह सुनकर बालक कहने लगा कि अश्वत्थामा ऋषि मेरे पिता हैं, आपको रुचै तो मेरे स्थानको चलिये। तब महाराज सोमदेव उस बालकके साथ गये, ऋषि राजाको देखकर मधुर वचनोंसे सत्कार किया और पूछा आपका स्थान कहां है? राजाने कहा कि मैं अजमेरका राजा सोमदेव चौहान वंशमें उत्पन्न क्षत्रिय हूँ। मेरी दो स्त्रियां रहीं, उनमें एक तो कुशवंशी कोतलजी अजमेरके राजाकी पुत्री, दूसरी तोमरवंशी अनंगपाल हस्तिनापुरके राजाकी पुत्री। मुझे वह अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारी थी, जब वह गर्भवती हुई तब उसके गर्भस्थ सन्तानके विषयमें अनंगपालने पंडितोंसे पूछा उस समय पंडितोंने कहा कि जो बालक इसके गर्भसे उत्पन्न होगा वह तुम्हारे वंशभरको यहांसे निकाल राज्य करेगा। तब इस गर्भसे शंका मानकर अनंगपालने हमारी गर्भवती प्यारी स्त्रीको अपने कुटुम्बियोंके साथ श्रावण मासमें तीर्थके मिस भेजकर मार डाला। यह समाचार सुन उसी दिनसे उदासमन रहा करता हूँ। मुझको कुछ नहीं सुहाता, यह कहकर महाराज सोमदेवजी नेत्रोंसे आंसुओंकी धारा छोड़ने लगे, और मढ़ीके भीतर बैठी हुई इंद्रावती अपने पतिको पहचान उनके वचन सुनकर आंसू बहाने लगी। राजा सोमदेवजीको दुःखित देखकर अश्वत्थामाजी कहने लगे---हे राजन् आप कुछ सोच न करो ईश्वरकी गति विचित्र है, जो दूसरेको मारना चाहता है वह औरसे मारा जाता है, सुनो---राजन्! हमने यहीं एक वटवृक्षपर कबूतरका जोड़ा बैठा देखा, एक वधिक उस वृक्षके नीचे धनुषबाण लिये आ पहुँचा और कबूतरके जोड़ेको देखकर बाण चढ़ा धनुष तानकर मारना चाहता था, इतनेमें एक बाज पक्षी ऊपरसे आया और कबूतरके जोड़ेको मारना ही चाहता था, ऊपरसे नीचे अपना काल देख कबूतरका जोड़ा भी घबड़ाने लगा कि अब मृत्यु आ गई, इतनेही में वटवृक्षकी जड़में बांबीसे एक सांप निकला और व्याधको डस लिया, वह गिर पड़ा और उसके हाथसे छूटा हुआ बाण ऊपर बाज पक्षीके जा लगा, ऐसे वे दोनों मर गये और कबूतर पक्षीका जोड़ा बच गया। इस कौतुकको देखकर हम यहां वनमें स्थिर हैं, हे राजन्। तुम्हारी स्त्री इस घोर वनमें एक कूपमें पड़ी थी, हमने उसे निकालकर पुत्रीके समान पालन किया है, सो आप अपनी स्त्री और पुत्रको लीजिये यह कह कर इंद्रावतीको मढ़ीसे बाहर बुलाकर सामने किया और पृथ्वीराजका हाथ पकड़ा दिया। महाराज सोमदेवजीके आनंदकी सीमा न रही पुत्रको हृदयसे लगाया, पृथ्वीराजने पिताको प्रणाम किया, अनंतर

अश्वस्थामाजीको प्रणाम कर स्त्री पुत्रको साथ ले महाराज सोमदेवजी अजमेर चलने लगे तब अश्वत्थामाजीने पृथ्वीराजको आशीर्वाद देकर एक अर्धचन्द्राकार बाण दिया और कहा कि यह बाण खाली नहीं जायगा और तुम शब्दवेधी बाण मारनेमें प्रसिद्ध होगे। तुमको सब शब्दवेध चौहान कहेंगे, तुम्हारा नाम पृथ्वी भरमें प्रसिद्ध होगा। इस प्रकार आशीर्वाद देकर जनेकी आज्ञा दी तब पृथ्वीराजने मुनिजीके चरणोंमें प्रणाम किया इंद्रावती और महाराज सोमदेव भी मुनिराजको प्रणामकर, अपने स्थानको चले और आकर पृथ्वीराजने कान्हदेवजीको प्रणाम किया और आशीर्वाद पाया।

जब पृथ्वीराज बारह वर्षके हुए तब अपने भाई कान्हदेवको अपना पुत्र सौंपकर महाराज सोमदेवजी परलोकगामी हुए। कुछ दिन उपरांत महाराज नाहू अपने पुत्र सोमदेवके शोकसे परलोकगामी हुए और महाराज पृथ्वीराज अनेक शूर वीर सामंतों सहित राज्य करने लगे। जो सौ मनुष्योंसे अपनी और अपनी सेनाकी रक्षा कर सके और सौको मार गिरावे उसको योद्धा कहते हैं, उसमें पांच हाथीका बल होता है। जो सौ योद्धाओंसे अपनी रक्षा भली भांति कर सके उसको शूर कहते हैं, उसमें दस हाथीका बल होता है। जो सौ शूरोंसे अपनी रक्षाकर सके उसको सांमन्त कहते हैं, उसमें २० हाथीका बल होता है। जो सौ सामन्तोंसे अपनी रक्षा कर सके उसको धवल कहते हैं, उसमें चालीस हाथीका बल होता है और जो सौ धवलोंसे अपनी रक्षा कर सके उसको सबल कहते हैं, उसमें अस्सी हाथीका बल होता है। इसमें महाराज पृथ्वी राज तो सबल थे। एकसौ आठ सामंत, सोलह सौ शूर तथा दस हजार योद्धा, इन सबके साथ महाराज पृथ्वीराजजी अजमेर का राज्य करते थे।

पृथ्वीराजका दिल्लीपति होना

पश्चिम दिशामें अफगानिस्तान बादशाह सुलतान शहाबुद्दीन गोरी एक समय दिल्ली पर चढ़ आया और अनंगपालके पास एक दूत द्वारा कहला भेजा कि आपसे युद्ध करनेके लिये गजनी शहरका बादशाह आया हैं और अटक नदीपर आकर डेरा दिया है। यह समाचार पाकर अपने मंत्रियोंको बुलाकर सम्मति की कि यदि हम अटक नदीपर युद्ध करने जायं और दूसरा कोई राजा चढ़ आवे तो दिल्लीकी रक्षा कौन करेगा? मंत्रियोंने कहा कि आपके वंशमें तो कोई भी इस योग्य नहीं जो दिल्लीकी रक्षा कर सके, परंतु आपकी कन्या (इन्द्रावती) का पुत्र पृथ्वीराज इस योग्य है, उसको बुलाकर तब तक अपना राज्य सौंप दीजिये। यह सुनकर अनंगपालने अजमेरसे पृथ्वीराजको बुलाया और महाराज पृथ्वीराज अपने चाचा कान्हदेव, शूरवीर चंद कविको संग लेकर अनंगपालकी भेजी हुई, सेनाके साथ आदि भयंकर नामक अपने हाथीपर सवार होकर दिल्ली आकर अपने नाना अनंगपालके चरणोंमें प्रणाम किया। अनंगपालने पृथ्वीराजको हृदयसे लगा लिया और बोले कि पश्चिम से अफगानिस्तान के गजनी शहरका बादशाह चढ़ आया है। हम उससे युद्ध करने जाते हैं तबतक तुम यहां राज्य करो। यह सुन पृथ्वीराजने कहा कि इस प्रकारसे मैं आपका राज्य स्वीकार नहीं करूंगा। आप सबको समझाकर उनके सामने मुझे राज्य अधिकारी कीजिये और यह भी कह दीजिये कि यदि मैं भी लौटकर आऊँ तो पृथ्वीराजकी विना आज्ञा न आने पाऊँ। यह सुनकर अनंगपालने अपने मंत्री व कुटुम्बीजनों को तथा अन्य सब लोगोंको बुलाकर उनके सामने कहा कि हम अटकपर शत्रुसे युद्ध करने जा रहे हैं और अपना राज्य कोषादि सब पृथ्वीराजके आधीन करते हैं; तुम सब पृथ्वीराजकी आज्ञा मानना यह कह कर राजा अनंगपाल शत्रुसे युद्ध करने को चले गये। पृथ्वीराजने अनंगपाल की सेनाके सब मनुष्योंको रत्न वस्त्र धन आदि देकर प्रसन्न कर लिया और भोजनादि सत्कार से सबको आधीन कर लिया। अजमेर से अपनी चाची व भाई आदिको बुलाकर दिल्ली में बसाया और अपनी पूर्व सेनाको अजमेरगढ़की रक्षाके निमित्त रख दिया—अपने चाचा राव शूरको अधिपति किया। इस प्रकार दिल्लीके राज्याधिकारी पृथ्वीराज हुए उस समय पृथ्वीराज की आयु सोलह वर्ष की थी। उसी अवसरनें चामुंडाराय ब्राह्मण महाराज पृथ्वी राजके यहां आया जिसका वृत्तांत आगे लिखेंगे।

० अनंगपालकी बड़ी पुत्री सुन्दरीका विवाह विजयपालके साथ हुआ था। उसके गर्भसे जयचन्दका जन्म हुआ। कहीं ऐसा भी लिखा है कि सुन्दरीका विवाह जयचन्दके साथ हुआ था। इन दो बातोंमें नहीं मालूम कौन सी बात सत्य है? खैर जो हो वृद्ध होने पर राजा अनंगपालका चित्त इस असार संसारसे उठ गया। इस कारण बदरिकाश्रममें जाकर तपश्चर्या करनेकी और अपने कोई पुत्र न होनेसे दत्तक पुत्र लेने की इच्छा प्रकट की।

लोगोंको विश्वास था कि राजा अनंगपाल जयचन्दको दत्तक लेंगे परंतु ऐसा न हुआ। समय पाकर पृथ्वीराजको अजमेरसे बुलाकर राज्य दिया, इस बातसे जयचंदके चित्तमें जलन उत्पन्न हो गयी, जिसका परिणाम यह हुआ कि जयचंद पृथ्वीराजके शत्रु बन गये और पृथ्वीराजके शत्रु शहाबुद्दीन गोरीसे जा मिले। जिससे यह भारतवर्ष (हिन्दुस्थान) मुसलमानोंके हाथमें चला गया और उसकी स्वाधीनता सदाके लिये कूच कर गयी। आपस की फूटने हिन्दुस्तान को पराधीन कर दिया और पराधीनताके कारण हिन्दुओंको बहुत दुःख भोगने पड़े, जो इतिहासोंके पढ़नेसे साबित होता है। वर्तमान राज्यमें तो भारतमें स्वाधीनताका बहुत कुछ अंश लौट आया है जिससे उस समयका दुःख भूल-सा गया है।

पृथ्वीराजका विवाह

गुजरातका राजा भोलाराम बड़ा ही अहंकारी था। पृथ्वीराजने उसका अहंकार चूर्ण किया और इच्छनकुमारीके साथ विवाह किया। फिर चन्द्रपुण्डार की कन्या दाहिनी नामवाली परम सुंदरीसे विवाह किया अनन्तर दिल्लीसे पूर्व दिशा की ओर समुद्र शिखर नामका एक नगर था, वहां यादववंशी राजा विजयपाल का पुत्र पद्मसेन राज्य करता था, पद्मसेन की कन्या पद्मावती परमसुन्दरी थी, उसका विवाह कमाऊं के राजा कमोदमनिके साथ निश्चय हुआ था परंतु पद्मावतीने पृथ्वीराजाके गुणों की प्रशंसा सुन रखी थी इस कारण पृथ्वीराज को अपना पति मानकर अपनी ओरसे पत्र भेजा। पृथ्वीराजने तोतेके द्वारा वह पत्र पाकर पढ़ा और पद्मावतीके साथ विवाह करनेका निश्चय किया। फिर एक छोटीसी सेना लेकर समुद्र शिखरपर चढ़ गये, विजयपाल और कमोदमनिको परास्त कर थोड़ी ही देरमें पद्मावतीको व्याहकर दिल्लीको लौट आये। फिर उरईके परिहार राजा माहिल की बहिन अगमाके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ। अगमा रानी बड़ी बुद्धिमती थी इसी कारण सब रानियोंमें वही मुख्य पटरानी समझी जाती थी, उसीके गर्भसे द्रौपदीने बेला नामसे जन्म धारण किया था। × देवगिरिकी राजकन्या शशिव्रताके पानेकी आशासे कन्नौजाधिपति जयचन्द देवगिरिको गये, पृथ्वीराजने जाकर उस कन्याको हर लिया। पृथ्वीराजके साथ जयचन्दका युद्ध हुआ युद्धमें पराजित होकर जयचन्द कन्नौज लौट गये (पृथ्वीराज कर्णाटकको गये वहांसे केलहन नामवाली एक नायिकाको साथ लेकर लौट आये) अन्तमें कन्नौजाधिपति जयचन्दकी कन्या संयोगिताके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ, इसका वृत्तांत विस्तारपूर्वक यहां नहीं लिखा जा सकता; परंतु यहां इतना कह देना आवश्यक है कि संयोगिताके लानेमें पृथ्वीराज और जयचन्दकी ओरसे बहुतसे शूरवीर मारे गये जिससे दोनों में निर्बलता आ गई, पृथ्वीराज इसी संयोगिताके प्रेममें मग्न रहा करते थे, राजकाज में आलस्य करने लगे। यह संयोगिता न थी किन्तु भरत खंड जैसे स्वाधीन हिन्दू राज्यकी वियोगिनी थी। धर्म और वैराग्य पृथ्वीराज में था ही नहीं किंतु काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पांचों विकार पृथ्वीराज में थे। इन सबका फोटो पृथ्वीराजके चरित्रमें उतर आवेगा। संयोगिताके मोहमें फंसकर कामके बस होकर महलमें ही रहने लगे जिससे अराजकता फैलने लगी। वेतन (पगार) न मिलने के कारण सेना डामाडोल होने लगी, इसका परिणाम जो हुआ सो संक्षेपमें आगे लिखेंगे।

---

० परंतु हमको यही निश्चय होता है कि राठौरवंशी विजयपालके साथ सुंदरीका विवाह हुआ था।

× देवगिरि राजा मानकी कन्या सुंदरी शशिव्रता नामकी थी, उसका विवाह रानाने अपने पुत्र लक्ष्मणसेनके कहनेसे जयचंदके भाई वीरचन्दके पुत्रसे ठहराया था इसकी कथा विस्तृत है।

पृथ्वीराजकी बहिन पृथाके साथ चित्तौरपति समरसिंहका विवाह हुआ था। दिल्लीकी गद्दीपर बैठते ही पृथ्वीराजके हाथ नागौरके एक उपवनमें एक बहुत बड़ा खजाना लग गया, इस धनसे चौहान बहुत ही धनी हो जायेंगे। इस द्वेषसे कन्नौज और पाटनके राजाओंने पृथ्वीराजपर धावा किया और गजनीगढ़से शहाबुद्दीन गोरीको सहायताके लिये बुलाया। पृथ्वीराजने पाटनके राजाको हराकर चित्तौरके नरेश समर सिंहकी सहायतासे शहाबुद्दीनपर आक्रमण किया और उसे कैदकर आठ हजार घोड़े दण्ड लेकर छोड़ दिया यही पृथ्वीराजके पराक्रमका पहला काम था। फिर स्वदुवनमें बहुत धन पाया, उस धनको पृथ्वीसे निकालते समय शहाबुद्दीनने आक्रमण किया उस बार भी पहलेके समान पृथ्वीराजने इसको कैद कर बहुत सा धन दण्ड लेकर छोड़ दिया, तभीसे पृथ्वीराज धनी चौहान भी कहे जाते थे।

चामुण्डवीर (चौड़ा ब्राह्मण) का वृत्तान्त

इन्द्रदत्त ब्राह्मण बकसरमें रहता था, उस गुणी ब्राह्मणके दो पुत्र थे — १ सूर्यमणि, २ चामुक्ड, ये दोनों देवीके उपासक थे। पांच वर्षकी पूजासे प्रसन्न हो देवीजीने आकाशवाणी द्वारा कहा कि ब्राह्मणो! अब तुम दोनोंसे हम प्रसन्न हैं इच्छानुसार वरदान मांगो! यह सुनकर सूर्यमणिने यह वर मांगा कि हे भगवती! हमको राज धन और यज्ञसे परिपूर्ण करो, देवीने कहा, 'एवमंस्तु'। चामुण्डने कहा हे भगवती! मैं कुछ दिन और पूजन करके वर मांगूंगा, यह कह बड़े प्रेमसे देवीजीका पूजन करने लगा। सूर्यमणिको व्याघ्रवंशी महाराजा रीवां नरेशने बुलाकर आदरपूर्वक बहुतसा धन दे अपना पुरोहित नियत किया। राज्यमें उत्तम अधिकार दिया दो वर्षके उपरांत देवीने चामुण्डसे कहा कि हे विप्र! अब वर मागो। तब चामुण्डने कहा—हे भगवती! रणमें विजय युद्धमें कुशलता और अमरत्व प्रदान कीजिये। तब देवीजीने कहा कि तुम युद्धमें कुशल होगे। अपनेसे समान वालोंके साथ युद्ध करके विजयी और योद्धाओंमें श्रेष्ठ होगे, परंतु अमरत्व संसारमें दुर्लभ है। रणमें सब शत्रु तुम्हारे हाथसे मारे जायेंगे। परंतु तुम्हारी मृत्यु दस्सराजके पुत्र (आल्हा) के हाथसे होगी। यह कहकर देवीजी अन्तर्धान हो गई और चामुण्डवीर अपने घर आया। इसके प्रमाणमें दलभद्रविलास के निम्नलिखित श्लोक हैं:—

"सर्वेषां त्वदरीणां च रणे मृत्युर्भविष्यति।
दस्सराजात्मजं प्राप्य भवान् गन्ता यमक्षयम् ।।४।।

एक दिन चामुण्डवीर दिल्ली गये, वहां द्वारपालके हाथ एक पत्र पृथ्वीराजके पास पहुँचाया; पृथ्वीराजने वह पत्र बांचकर चामुण्डवीरको अपने समीप बुलाया और प्रणाम किया। चामुण्डने आशीर्वाद दिया और राजाकी आज्ञासे सुन्दर आसनपर बैठ गये।

"ततो नृपस्तत्कुशलं विदित्वा कृतादरं तं निजदुर्गमध्ये।
ददौ निवासं कतिचिद्दिनानि विचारयंस्तद्गुण कर्मशीलम् ।।५।।
निरीक्ष्य विद्यारणभूजयत्वं तथा समालक्ष्य वरं महेश्याः।
सम्मंत्र्य सर्वं प्रददौ विलोक्य राजा स तस्मै निजभूमिभारम् ।।६।।
अथ प्रजानामधिपः स्वसैन्यमाहूय सर्वं वचसा समूचे।
मया द्विजोऽयं भवदाधिपत्ये प्रकल्पितो यः स च माननीयः ।।७।।

अनन्तर महाराज पृथ्वीराजने चामुण्ड ब्राह्मणसे कुशल पूंछ उसका वृत्तान्त जानकर अपने गढ़में इस ब्राह्मणके गुण कर्म स्वभाव जाननेके लिये कुछ दिन वास करनेकी आज्ञा दी ।।५।। फिर चामुण्डराजकी विद्या, रणभूमिमें जय तथा देवीके वरदानको भली भांति समझकर सबकी सम्मतिसे पृथ्वीराजने अपने राज्य का भार चामुण्डराजको सौंप दिया ।। ६ ।। और अपनी सेनाके मुख्य जनोंको बुलाकर यह कहा— मैंने इस ब्राह्मणको तुम लोगोंका मालिक किया है, ये जो आज्ञा करें इसे तुम सब लोग मानना ।। ७ ।।

पृथ्वीराजका अविचार और अहंकार

राजा अनंगपालकी एक रत्नमञ्जरी नामकी वेश्या थी, उसके दो पुत्र बड़े बली रणमें कुशल पर्वताकार रूपवाले वीरहंता थे। उस वेश्याको चामुण्ड ब्राह्मणके कहनेसे पृथ्वीराजने दिल्लीसे निकाल दिया। तब वह वेश्या पचास हजार भट्ट और करोड़ों रत्न व अपने दोनों पुत्रों सहित दिल्लीसे निकलकर गढ़ गजनीको चली गई। दो वर्ष बाद गढ़ गजनीका बादशाह अलाउद्दीन अपने भाइयों सहित चतुरंगिनी सेना लेकर पृथ्वीराजसे युद्ध करने आया और उसकी सहायताके लिये अरबके बादशाहने एक लाख सेना ले दिल्लीको चारों तरफसे घेर लिया। युद्ध होनेपर पृथ्वीराजकी विजय हुई? ऐसे पांचबार गढ़ गजनीका बादशाह एक लाख सेना ले लेकर चढ़ा, किन्तु पांचों बार पृथ्वीराजकी ही विजय हुई, बादशाहको पकड़ बहुतसा धन दंड लेकर छोड़ दिया।

एक समय अरब देशका मीर एक लाख अस्सी हजार सेना लेकर अजमेरपर चढ़ आया और चाहा कि छल करके अजमेरका राज्य हर लिया जावे। इस कारण घोड़ों के सौदागर बनकर अजमेर में आये, नगर भरमें इनके घोड़ोंकी प्रशंसा होने लगी। पृथ्वीराजने भी घोड़ों की प्रशंसा सुनकर अपने मंत्री कैंमासको भेजा कैंमासने वहां जाकर घोड़ोंको और उनके सामानको देखकर ताज्जुब किया, सब घोड़ों को देख भालकर मीरके चढ़ने के लिये घोड़ेको मोल लेनेकी इच्छा प्रकट की। मीरने पहले तो उस घोड़े को बेचनेसे इंकार किया परंतु जब कैंमासने मुंह मांगा मोल देना चाहा, तब मीरने बेचना मंजूर किया। कहते हैं कि पृथ्वीराजने वह घोड़ा छत्तीस करोड़ रुपये देकर मोल लिया। इससे पृथ्वीराजका खजाना खाली हो गया इसी प्रकार और तरह से भी छलकर मीर सेनाने पृथ्वीराजको हानि पहुँचायी, अन्त में घोर युद्ध हुआ। मीर और मीरकी सेनाको राजपूतोंने विध्वंस कर दिया। यह समाचार सुनकर मीरके गुरु ख्वाजापीर को बहुत क्रोध आया और खुद अजमेरमें आकर, ख्वाजापीरने अपने दैविक करामतोंसे हिन्दुओंको सताना आरंभ कर दिया। * पृथ्वीराजने अनेक उपाय किये कि ख्वाजापीर किसीको न सतायें और हमसे परास्त होकर यहांसे चले जायं परंतु कोई उपाय न चला तब अपने मंत्रियोंके साथ पृथ्वीराजने अपनी धायकी लड़की परम सुन्दरी गूजरीको ख्वाजा-साहबका तप भंग करने के लिये भेजा, उसने वहां जाकर ख्वाजासाहबके सामने बहुतेरे हाव-भाव कटाक्ष किये परंतु सब व्यर्थ हुये। वह खुद उनकी मुरीद बनकर सेवा करने लगी तब लाचार होकर पृथ्वीराजने अपने मित्र कविचन्द वरदाईको भेजा कि जाकर ख्वाजा साहबको प्रसन्न करो। चन्दने जाकर अपनी चतुराई से ख्वाजा साहबको प्रसन्न कर लिया। ख्वाजासाहब इस बातपर राजी हुये कि यदि पृथ्वीराज अजमेर पीरोंके लिये छोड़दें तो हम किसीको न सतायेंगे। पृथ्वीराजने यह बात मान ली और अपनी सब सेना आदिको दिल्ली में भेजकर अजमेर पीरों के लिये छोड़ दी, तबसे अजमेर ख्वाजा पीरके नामसे प्रसिद्ध है।

जिसके शिरपर राज्यका मुकुट है उसको कभी सुख नहीं क्योंकि जिसके ऊपर राज्यशासनका भार रहता है उसके पीछे अनेक प्रकारकी चिन्ताएं लगी रहती हैं। परंतु शासकोंको अपनी मान मर्यादा और अपने पूर्वजोंके यशका बहुत ख्याल रखना पड़ता है। राजपूतोंमें यह विशेषता थी कि अपने कुल की मर्यादाके लिये किसी भी अड़चनकी पर्वाह नहीं करते थे, किंतु कर्तव्य पालनमें अनेक कठिनाइयोंके होते हुए भी तत्पर रहते थे। 'प्राण जायं पर वचन न जाहीं' यह उनका प्रधान सिद्धांत रहता था। पृथ्वीराज दिल्लीमें थोड़े दिन सुख से रहे कि उनके कठिन धर्म पालनका समय आ उपस्थित हुआ।

गढ़गजनीके बादशाह शाहबुद्दीनके दरबारमें एक सुन्दरी चित्रलेखा नामवाली वेश्या थी वह गाने, नाचनेमें बहुत निपुण थी। इसी कारण शहाबुद्दीन उसको बहुत चाहता था, परंतु वह उसके छोटे भाई हुसेनखां पर मोहित थी। जब शहाबुद्दीनने जाना तो दोनोंको मार डालने की आज्ञा दी; तब हुसेनखां चित्ररेखा को लेकर वहांसे भागकर हिन्दुस्तान आया 'और पृथ्वीराजके समीप आकर अपनी रक्षा निमित्त विनय करने लगा। पृथ्वीराजने सोचा कि इसने अच्छा काम तो नहीं किया लेकिन शरणागतकी रक्षा करनी चाहिए।

---

* भलभद्र विलासमें लिखा है कि युद्ध में ख्वाजापीरको पृथ्वीराजने मार डाला है।

यह विचार कर उसको नागोरमें रख दिया। शहाबुद्दीनको जब खबर मिली कि हुसेनखां को पृथ्वीराज-नागोरमें रख लिया है तब अरबखां सरदारको दिल्ली भेजकर पृथ्वीराजके समीप कहला भेजा कि हुसेनखां और चित्ररेखाको हमारे सुपुर्द करदो नहीं तो सुल्तानका दासत्व स्वीकारना पड़ेगा। अरबखां दिल्ली पहुँचा बादशाहका संदेश कह सुनाया। दासत्वका नाम सुनते ही पृथ्वीराजका शरीर मारे क्रोधके कांपने लगा और उत्तर दिया कि शहाबुद्दीनमें कुछ पराक्रम हो तो चढ़ाई करके प्रकट करे वृथा गाल मत बजावे। अरबखां यह उत्तर सुनकर लौट गया। उसी अवसर में देवगिरिके राजा मानकी शशिव्रता कन्या थी, मानने चाहा कि पृथ्वीराजके साथ इसका विवाह करें परंतु अपने पुत्र लक्ष्मणसेनके कहने सुननेपर जयचंदके भाई वीरचंदके पुत्रसे उसकी सगाई कर दी। यह सुनकर शशिव्रताने एक पत्र पृथ्वीराजके पास भेजा, पत्र पाते ही पृथ्वीराज अपने वीरों सहित देवगिरी पहुँचे और वीरचंदके साथ युद्धकर शशिव्रताको दिल्ली हर लाये यह समाचार सुन कन्नौजसे क्रोधपूर्वक राजा जयचंद बहुत सेना लेकर देवगिरीपर चढ़े, जयजंदने समझा कि राजा मानने पृथ्वीराजसे सहायता मांगी, पृथ्वीराजने चामुंडरायको बहुत सेना देकर भेज दिया चामुण्डराय ने राजा मान और रावल समरसिंहके भाई अमरसिंहकी सहायतासे जयचंदको हरा दिया, ग्यारह दिन तक युद्ध होता रहा। इस विजयके हर्षसे पृथ्वीराज अपने मंत्रियों सहित नर्मदा-तटपर हाथियोंके लिए गये थे। वहां लाहौरके गवर्नर चन्दपुण्डरीरने संदेश भेजा कि शहाबुद्दीनगोरी बहुत बड़ी सेना लिए हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करनेके लिए आ रहा है। यह समाचार पाते ही पृथ्वीराज उसको रोकनेके लिए पंजाब पहुँचे। शहाबुद्दीनने जयचंदको कहला भेजा कि दिल्ली शून्य पड़ी है, अपनी हारका बदला चाहो तो दिल्ली पर चढ़ जाओ। बदलेके भूखे जयचन्दने यह न सोचा कि ऐसा करनेसे हिन्दुओंको सदाके लिए विदेशियोंका दास बनना पड़ेगा; जयचन्दने दिल्लीपर चढ़ाई की। यह खबर मिलते ही पृथ्वीराज दिल्ली पहुँच गये। शहाबुद्दीनने मैदान पाकर दिल्लीकी ओर कूच किया, परंतु चन्दपुण्डीरने मार्गमें ही रोक दिया। उधर पृथ्वीराज जयचन्दको हराकर शीघ्र दिल्लीसे चलकर शहाबुद्दीनसे लड़नेके लिये आ गये। सारूड़ेके मैदानमें सामना हुआ, यह सुनकर पृथ्वीराजकी ओर से हुसेनखां भी लड़नेके लिए आ गया। चित्तौरके रावल समरसिंहके सैनापतित्वमें पृथ्वीराजकी ओरसे जेत, पमार चामुण्ड ब्राह्मण और अन्य सरदार लड़ते थे। एक दिनरात युद्ध हुआ, पृथ्वीराजके तेरह और शहाबुद्दीनके चौसठ सरदार मारे गये। दूसरे दिन सबेरा होते ही सुलतानके ओरसे बीस हजार सेना लेकर तातारखांने धावा किया, पृथ्वीराजकी ओरसे हुसेनखांने सामना किया। बहुत देरतक लड़ाई होती रही, जब हुसेन खांकी ओरसे सब साथी मार डाले गये तब वह खुद तलवार लेकर तातारखांपर झपटा, तातार की गदाने उसका काम तमाम कर दिया, मरते-मरते उसने भी तातारखांका सिर तलवारसे काट डाला। चित्ररेखा हुसेनखांकी लाशके साथ जीती पृथ्वीमें गढ़ गई युद्ध होता रहा। पृथ्वीराजने बड़ी साहसके साथ अपनी सब सेना लेकर शहाबुद्दीनकी सेनापर धावा किया शहाबुद्दीन भी वीरताके साथ लड़ने लगा। अन्तमें राजपूतोंकी जीत हुई, सुलतानकी सेना भागने लगी, चामुण्ड वीरने पीछा किया और शहाबुद्दीनको पकड़ लाया। उसको लेकर पृथ्वीराज दिल्ली आये, कुछ दिनों कैद रख नौ हजार घोड़े आठ हाथी, बीस ढाल और हीरा मोती आदि दंड लेकर उसको छोड़ दिया।

यहां पृथ्वीराजने अविचार और अहंकारसे इस बातका विचार न किया कि आज हम शक्तिमान हैं फल शक्ति न रही तो ऐसे शत्रुको छोड़ देनेसे परिणाम क्या होगा ? इस लेखके उत्तरमें पृथ्वीराजके पक्षपाती लोग जो कुछ लिखें तो उनका पक्षपात है, परंतु हम यही कहेंगे कि महाराज पृथ्वीराज और राजा जयचन्दन देश भलाई की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, अपने अपने अहंकारके वश होकर परस्पर लड़ते रहे।

पृथ्वीराजकी वीरता

पृथ्वीराजको शक्तिमान देखकर अनेक राजालोग गुप्तभावसे द्वेष मानने लगे और प्रजाको उभाड़ने लगे, कुछ लोग बदरिकाश्रममें अनंगपालके पास पहुँचे और शिकायत करने लगे। अनंगपालने कुछ ध्यान न दिया परंतु एक हिन्दी कहावत है कि 'कहे सुने दीवालें चल जाती हैं'। निदान अनंगपालने पृथ्वी राजको कहला भेजा कि तुम मुझसे आकर मिलो, अथवा राज्य छोड़ दो। इसके उत्तरमें पृथ्वीराजने कहला भेजा

कि बड़ोंकी आज्ञा हमको मानना चाहिये, परंतु हम निर्दोष हैं पायी हुई भूमिको छोड़ना क्षत्रिय धर्मके विरुद्ध है। यदि आपकी इच्छा ऐसी हो तो युद्ध करके यहां से निकाल दो, यह उत्तर पाकर अनंगपालने क्रोधकर चढ़ाई कर दी। पृथ्वीराजने नानाका सामना करना उचित नहीं समझा; इस कारण उनके धावको किलोमें रहकर ही रोका। चार दिन तक अनंगपालने धावा किया, जब देखा कि किला जीतना असंभव है तब लाचार होकर लौट गये और अपने माधव सरदारको गजनी भेजकर शहाबुद्दीनसे सहायता मांगी।वह यही चाहता था परंतु दो लाख सेना लेकर चढ़ आया, अनंगपालने भी दो हजार सिपाही, तीनसौ बैरागी एक हजार सवार लेकर सोनपुरमें सुल्लतान से जा मिले। इधर पृथ्वीराजने भी युद्धकी तैयारी की। दिल्लीसे पांच कोश, दोनों सेनाओंमें युद्ध होने लगा, पर पृथ्वीराजने यह आज्ञा फेर दी कि नानाजीको जीता पकड़ लेना उनपर कोई शस्त्र न चलाना। बहुत कालतक युद्ध होता रहा, अन्तमें सुल्लतानकी पराजय हुई। कैमाषने अनंगपाल को और चामुण्डरायने शहाबुद्दीनको पकड़ कर बांध लिया। पृथ्वीराज उस प्रकार विजय पाकर दिल्ली लौट आये एक दरबार किया उसमें अनंगपालको बुलाकर चरणोंमें प्रणाम किया और ऊँचे आसनपर बिठाकर पूछा कि पिताजी! आपको यह अयोग्य बुद्धि किसने दी, जो म्लेच्छोंका साथ कर आपने इतनी हानि कराई? अनंगपालने कुछ उत्तर न दिया। सुल्तान भी वहां लाया गया और दंड देकर छोड़ दिया गया। अनंगपाल भी तेरह महीने दिल्लीमें रहे, पृथ्वीराजने बहुत आदरसे रखा और उनकी सेवाका पूरा प्रबन्ध कर दिया तथा दिल्लीमें ही रहकर धर्म ध्यान करनेकी प्रार्थना की, परंतु अनंगपालने बदरिकाश्रममें ही रहना पसंद किया और जानेके लिए बहुत हठ किया, तब पृथ्वीराजने दस लाख मुद्रा, सौ नौकर और ग्यारह ब्राह्मण साथ देकर बदरिकाश्रम पहुंचा दिया।

उस समयके राजपूतोंकी शक्ति, ऐश्वर्य और देशभक्तिको विचारकर आश्चर्य होता है कि, जिस देशके राजपूत अपने देशकी रक्षाके लिए अपने प्यारे प्राणोंतकको कुछ नहीं समझते थे, वह देश कैसा विदेशियोंके हाथमें चला गया? इसके उत्तरमें अपनी अपनी सम्मतिके अनुसार लोगोंने लेख लिखे हैं, परंतु अधिक लोगों की अनुमति यही है कि; आपसकी फूटही राजपूतों की अवनतिका कारण है। यदि राजपूतों में एकता होती और वे देश हेतुके लिए आपसके वैर विरोधको दूरकर विदेशियोंका सामना करते तो न उनकी वह दशा होती जो उनके ऐसा न करनेसे हुई। राजपूतोंने अपने वंशगौरवके गर्वमें आकर आपस में लड़ना आरंभ कर दिया अतएव स्वाधीनताका अन्त हुआ। फूट ने ही उनका सत्यानाश किया कवि गंगने ठीक कहा है—

कवित्त

"फूटि गये हीराकी बिकानी कनी हाट हाट,
कहु घाटि मोल काहू बाढ़ि मोलको लयो।
टूटि गई लंका फूटि मिल्यो विभीषण राम,
रावण समेत वंश नाशवान ह्वै गयो॥
कहै कवि गंग दुर्योधनसे छत्रधारी,
तनिकके फूटेते गुमान वाको नै गयो॥
फूटते नरद- उठि जात बाजी चौरसकी,
आपके फूटे कहो कौनको भलो भयो॥ १॥

फूटने ही राजपूतों और उन्हींके साथ भारतको गारत कर दिया। महाराज पृथ्वीराजके समयके अन्तमें ही फूटने विशेष बल पकड़ा था और इसीसे उनके पश्चात् देश विदेशियोंके हाथ में लग गया। पृथ्वीराजने यह विचार न किया कि परस्पर विरोधके कारण हमारी शक्ति घटती चली जाती है, लोभमें आकर शहाबुद्दीनसे दंड लेकर उसको बार बार छोड़ते गये।

पृथ्वीराजने अपने चौहानी वंशके गर्वमें गाफर राजपूतोंमें अनेक शत्रु कर लिये थे, परंतु पृथ्वीराज का सामना करनेकी योग्यता रखनेवाले केवल दो ही थे एक गुजरातका चालुक्यराना भीमदेव, दूसरा कन्नौजका

राठौर राजा जयचंद । यदि भीमदेव और जयचंद शत्रुता न कर पृथ्वीराजकी सहायता करते तो भारतदेश भी आज संसारके स्वतंत्र राज्योंमें गिना जाता, परंतु ऐसा न करके उन्होंने स्वयं शहाबुद्दीनको भारतमें बुलाकर देशकी स्वतंत्रता उसको अर्पित कर दी । पृथ्वीराजको भीमदेव और जयचंदके साथ अनेक युद्ध करने पड़े ।

भीमदेव और पृथ्वीराजके आपसी झगड़ेका हाल इस प्रकार है कि भीमदेव गुजरातका राजा था, उसके पास बड़ी सेना थी । कच्छ, काठियावाड़ झालावाड और मालवाके राजा उसके आज्ञाकारी थे । अमरकोशके कर्ता अमरसिंह जैन उसके मंत्री थे । उसके काका सारंगदेव के १ प्रतापसिंह, २ अमरसिंह, ३ गोकुलदास ४ गोविंद, ५ हरिसिंह, ६ श्याम और ७ भगवान् ये सात पुत्र थे, वे सब शूर वीर थे, सारंगदेवकी मृत्युके पश्चात् उनकी भीमदेवके साथ अनबन हो गई, इस कारण वे सातों भाई दिल्ली आकर पृथ्वीराजके आश्रय रहने लगे । एक दिन पृथ्वीराजकी सभा मे महाभारतकी कथा हो रही थी उस समय सभामें सब शूर सरदार बैठे थे, कथामें एक स्थानपर वीररसका प्रसंग आया उसको सुनकर वीरोंके नेत्र लाल हो गये, भुजायें फड़कने लगीं । सारंगदेवके बड़े पुत्र प्रतापसिंह ने मोछपर हाथ फिराया, पृथ्वीराजके काका कन्ह चौहानने देख लिया चौहानोंकी सभामें आश्रित युवा चालुक्याका यह वीरकर्म कन्हसे सहन न हुआ । कन्हने भयंकर क्रोधसे उसी समय तलवारसे प्रतापसिंहका शिर काट डाला, यह देख प्रतापसिंहके छहों भाइयोंने कन्ह पर धावा किया कन्हने सबको मार डाला, सब सभासद चित्रसमान बैठे देखते रहे । पृथ्वीराजको कन्हका यह नीच कर्म सहन न हुआ, क्रोध करके कन्हको कुछ बुरा भला कहकर धिक्कार, कन्हने अपने बचावमें यह कहा कि, मेरी प्रतिज्ञा है कि मेरे सामने जो मूंछ पर ताव देगा उसको मैं जीता न छोडूंगा । यह सुन पृथ्वीराजको कन्हका इतना गर्व सहन न हुआ और आज्ञा दी कि, आंखों में पट्टी बांध रक्खो, तबसे कन्हकी आंखों में पट्टी बँधी रहती थी । युद्ध समय पट्टी खोली जाती थी, यह समाचार पाकर भीमदेवने अपना बड़ा अपमान समझा कि हमारे चचेरे भाइयोंको निरपराध मार डाला इस अपमानका बदला लेनेके लिये दिल्लीपर चढ़ाई करनेका निश्चय किया । परंतु वर्षाकाल होनेके कुछ समय तक वह चढ़ाई न कर सका ।

उस समय आबूगढ़ पर पमार राजा जेतसिंह राज करता था, वह भी एक स्वतन्त्र बलवान् राजा था । उसके १ सलख नामक पुत्र था और १ मन्दोदरी, २ इच्छनकुमारी नामक दो कन्यायें थीं । इच्छनकुमारीके रूप लावण्यकी प्रशंसा देशभरमें फैल रही थी, मन्दोदरीका विवाह भीमदेवके साथ हुआ था । इच्छनकुमारीकी प्रशंसा सुनकर भीमदेवने जेतसिंहको कहला भेजा कि, इच्छनकुमारीका विवाह मेरे साथ करो या आबूगढ़ छोड़ दो । उसके उत्तरमें जेतसिंह ने कहला भेजा कि भीमदेवको बड़ा गर्व है पर पमार उसकी गीदड़ भभकीसे डरनेवाले नहीं हैं । यह सुन भीमदेवने क्रोधमें आकर आबूगढ़पर चढ़ाई करदी, सो समाचार पाकर जेतसिंहने इच्छनकुमारीको पृथ्वीराजके यहां भेज दिया और अपने पुत्र सलखको भेजकर पृथ्वीराजसे सहायता मांगी । पृथ्वीराज आबूगढ़ तक नहीं पहुंच पाये थे कि भीमदेव आबूगढ़ पर चढ़ आया । अँधेरी रातमें आबूगढ़को विजय किया, जेतसिंहने बड़ी वीरतासे सामना किया, परंतु अन्तमें मारा गया, भीमदेवने आबूगढ़को अपने वशमें किया तब तक सलख और पृथ्वीराज पहुँचे । दोनों सेनाओंमें घोर संग्राम हुआ । भीमदेव हारकर गुजरात लौट गया । उसी अवसरमें महाबुद्दीन गोरीने कई बार दिल्लीपर चढ़ाई की, परंतु हरवार उसकी हार हुई पृथ्वीराजने दंड ले लेकर छोड़ दिया । अनन्तर पृथ्वीराज और भीमदेवमें बड़ा भयंकर युद्ध हुआ । भीमदेवको पृथ्वीराजने मार डाला, भीमदेवके पिता कचरारायने पृथ्वीराजकी अधीनता स्वीकार कर ली । पृथ्वीराज उनको पाटनकी गद्दीपर बिठाकर दिल्ली लौट आये, इस विजयने पृथ्वीराजका आधिपत्य दिल्लीसे दक्षिणतक फैला दिया था । राजपूताना, मालवा और गुजरातके सब राजा पृथ्वीराजके अधीन हो गये । केवल कन्नौजके राजा जयचन्द और बुन्देलखंडकी राजधानी महोबेके चन्देलवंशी राजा परिमाल ये दोनों पृथ्वीराजके अधीन न थे ।

शहाबुद्दीनगोरी बार बार पृथ्वीराजसे हराया जाकर भी सदा पृथ्वीराजको सतानेका अवसर देखता रहता था, जासूस भेष बदलकर दूत दिल्लीमें घूमते रहते थे और खबरें भेजा करते थे । जब पृथ्वीराज पद्मावतीको लेने समुद्र शिखर गये थे और वहांसे लड़कर पद्मावतीको ब्याहकर दिल्लीको थोड़ी सेना लिये आ रहे ।

थे उस समय शहाबुद्दीनको खबरमिली कि पृथ्वीराज थोड़ी सेना लिये दिल्ली जा रहे हैं। उसने आकर मार्गमें ही रोक लिया और युद्ध होने लगा, पृथ्वीराजने उसे कैद कर लिया और आठ हजार घोड़े दंड लेकर छोड़ दिया। पृथ्वीराज दिल्ली पहुंचे; परंतु सेनाके कुछ घायल मार्ग भूलकर भकटते हुए महोबा पहुँचे, सन्ध्याका समय था, प्रबल वायुके साथ वर्षा होने लगी जिससे वे घायल और भी व्याकुल हो गये। समीप ही राजा परिमालका एक उपवन था उसमें वे घायल अपनी रक्षाके निमित्त जाने लगे तो बागके मालीने रोका, एक घायल ने उस मालीका शिर काट डाला, मालीकी स्त्रीने जाकर मल्हना रानीसे कहा, रानीने राजाको सुनाया राजाने कुछ सेना भेजी, घायलोंने लड़कर उस सेनाके सब बुन्देलोंको मार डाला तब परिमालको बहुत क्रोध आया और ऊदनिको बुलाकर आज्ञा दी कि उनको बांध लाओ और मार डालो। ऊदनिने कहा—महाराज ! घायलोंपर प्रहार करना शूरोंका धर्म नहीं है, इन घायलोंको दमन करनेसे फिर पृथ्वीराजसे लड़ना पड़ेगा। यह सुनकर माहिल परिमालसे कहने लगा कि ऊदनि डरता है इस कारण पृथ्वीराजके घायलोंको मारना नहीं चाहता, कानके बच्चे परिमालने ऊदनिको डपटकर आज्ञा दी कि शीघ्र जाकर उन घायलोंको मारो। लाचार होकर ऊदनि गये और घायलोंपर आक्रमण किया। उन बीस घायलोंमें कनक चौहान नामका एक बड़ा वीर सैनिक था, उसने उनका नेता बनकर बड़े साहसके साथ ऊदनि वीरका सामना किया परंतु ऊदनिके साथ कब तक ठहर सकते थे, ऊदनिने उन सबको समाप्त कर दिया यह लड़ाई चन्देलेके नाशका कारण हुई, इस लड़ाईसे पृथ्वीराज और चन्लेमें खैर हो गया। पृथ्वीराजने उक्त समाचार सुनकर चढ़ाई की और सिरसासे महोबे तक युद्ध हुआ। आल्हखण्डमें अनेक युद्ध महोबेवालोंसे और पृथ्वीराजसे हुए इन सब युद्धों में माहिल ही कारण रूप था।

कन्नौजराज्य दिल्वी राज्यसे अधिक समृद्धशाली था, राजधानी कन्नौज उस समय एक सर्वोपरि नगर था, उसका घेरा पंद्रह कोश था, मनुष्य संख्या बहुत अधिक थी, तीस हजार दूकानें तमोलियोंकी थीं, इससे वहां की बाजारका अनुमान कर लीजिये। अस्सी लाख सेना थी, जयचन्दको अपनी शक्तिका बड़ा अभिमान था जयचन्दने राजसूययज्ञ करके संसारमें अपनी कीर्ति स्थापन करनेकी इच्छा की सब प्रकारका प्रबन्ध कर देशदेशांतरोंके राजाओंको अपनी सेवामें उपस्थित होनेका संदेश भेजा। भारत वर्षके प्रायः सभी ही राजदूत नरेश अपने दलबल समेत जयचन्दकी आज्ञानुसार कन्नौजमें आ पहुंचे परंतु पृथ्वीराज और रावल समरसिंह ने आना उचित न समझा। जयचन्दके भेजे हुए दूतसे पृथ्वीराजने अभिमान भरे वचन कहकर उसको सभासे निकाल दिया। इस अपमानका बदला लेनेके लिये जयचन्दने अपने भाई बालुकारायको साठ हजार सेना देकर पृथ्वीराजको पकड़ लानेके लिये भेजा और इधर यज्ञका मुहूर्त निकट आया जानकर जयचन्दने एक सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर एक छड़ी उसके हाथमें दे पृथ्वीराजके नामसे द्वारपालके स्थानमें खड़ी कर दी। यह खबर पाकर पृथ्वीराजको बड़ा क्रोध आया और जयचन्दके यज्ञ विध्वंस करनेकी प्रतिज्ञा कर कान्हकी सम्मतिसे कुछ सेना साथ लेके आगे बढ़े और खौखन्दनामक स्थानमें युद्ध कर बालुकरायको मार डाला और राठोर सेनाको मार भगाया। यह समाचार कन्नौजमें पहुंचा, सुनते ही जयचन्दको बड़ा क्रोध आया और शोक छा गया, यज्ञको बन्द करके जयचन्दने दिल्लीपर चढ़ाई करने का विचार किया। परंतु इस समय एक ऐसी घटना हुई कि जिससे चढ़ाई न हो सकी।

संयोगिता स्वयंवर

संयोगिता नामकी एक कन्या जयचन्दकी रानी जुन्हाईके गर्भसे उत्पन्न हुई थी। उसके समान सुन्दर कन्या भरतखंडमें न थी। सखियों द्वारा उसने पृथ्वीराजकी प्रशंसा सुन रखी थी। इस कारण उसने पृथ्वीराजकी अर्धांगिनी बननेकी प्रतिज्ञा कर ली थी। यह हाल रानी जुन्हाईने सुना और जयचन्दको सुनाया तो जयचन्द को बड़ा शोक हुआ। उसका प्रेम हटानेके लिये जयचन्दने अनेक उपाय किये परंतु कोई उपाय काम नहीं आया। तब संयोगिताके स्वयंवर की इच्छा प्रकट की जो मंडप यज्ञके लिये रचा गया था उसीमें संयोगिताका स्वयंवर रचा गया। संयोगिता हाथमें वरमाला लिये हुए सभा में पहुँची और सब राजाओंको छोड़ उसने पृथ्वीराजकी प्रतिमाके गलेमें माला पहिना दी। इससे जयचन्दका क्रोध लज्जाके कारण और भी बढ़ गया, और कन्नौजके

एक ओर गंगाके तटपर एक विशाल महलमें संयोगिताको रख दिया और रखवारीके लिये अनेक दासियां तथा सैनिक नियुक्त कर दिये । जब यह समाचार पृथ्वीराजने सुना तब उनका मन संयोगिता के प्रेमकी ओर खिंच गया और विचार किया कि जैसे बने वैसे संयोगिताके साथ विवाह कर दिल्ली लाना चाहिये । प्रगट रूपसे यह काम होना कठिन था, इस कारण ग्यारह सैनिक सहित सेवकके भेषमें चन्दकविके साथ कन्नौजको चल दिये । पृथ्वीराजके सरदार भी भेष बदलकर चन्दकविके साथ हो लिये वहां पहुँच सेनाको कन्नौजके बाहर छोड़ चन्दकवि राजा जयचन्दके दरबारमें पहुंचे । साथमें पृथ्वीराजको अपने सेवकके रूपमें ले गये, जयचन्दने कविचन्दका स्वागत किया और कुछ समय तक अलंकारके साथ वार्तालाप किया । जयचन्द बोले–हे चन्द संजयके समान बुद्धिमान् तुम पृथ्वीराजके दरबारमें थे, फिर उन्होंने निष्कारण हमारे भाईको मारकर हमारे यज्ञमें विघ्न क्यों किया ? दिल्लीपति महाराज अनंगपाल हमारी सेवा करते थे । हम भी उनकी मान मर्यादाकी रक्षा करते थे । इन्होंने हमारी आज्ञा बिना पृथ्वीराजको दत्तक पुत्र बनाया तब केवल उनकी सेवा पर दृष्टि करके हमने क्षमा की । आज अस्सी लाख सेना हमारी आशा में है । सब हिंदू मुसलमान हमारे आतंक से थरथर कांपते हैं, फिर पृथ्वीराजने जान बूझकर सिंहकी पूछ दबानेका कैसे साहस किया ? यह सुनकर चन्दने उत्तर दिया महाराज ! पृथ्वीराजकी सिंहकी पूछ दबानेका अभ्यास तो जन्मसे है परंतु वे आपको सपुच्छ नहीं समझते थे । यदि परस्परके उपकारको ही सेवा समझते हैं तो महाराज पृथ्वीराजने, आपकी सेवामें क्या कसर की ? जब आप दक्षिण देशपर चढ़कर गये पीछेसे शहाबुद्दीन गौरी कन्नौजपर चढ़ आया था यदि उस समय पृथ्वीराजने आपकी रक्षा न की होती तो आपको दक्षिण सिधारनेके सिवाय और कौन सा मार्ग था फिर जब आप ऐश्वर्यमदमत्त होकर धर्मकी मर्यादा तोड़ने लगे 'अश्वमेधं गवालम्भं संन्यासं पलपैतृकम् । देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥" अर्थात् अश्वमेधयज्ञ, गोमेधयज्ञ, संन्यास, मांससे पितरोंकी पिंडदान, देवरसे पुत्र उत्पन्न करना ये पांच कर्म कलियुगमें वर्जित हैं इस महावाक्य के विपरीत कविवर्जित यज्ञ आरंभ कर दिया तब पृथ्वीराजजीने अपने सरल स्वभावसे केवल एक बार धनुष की टंकोर करके आपको चेता दिया तो क्या अनुचित किया ? यह उत्तर सुनकर जयचन्द कहने लगे कि कविचन्द ! क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि कलियुग कैसा ? काल राजाका कारण नहीं किंतु राजा कालका कारण है । महाभारत में लिखा है –

'कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम् ।
इति ते संशयो मा भूद्राजा कालस्य कारणम् ।'

इससे तुम्हारा बलबाणीमें है ऐसा शास्त्रमें नहीं । अच्छा बताओ इतने मुकुटधारी राजा इस समय हमारी सभामें बैठे हैं इनमें पृथ्वीराज किसकी अनुहार है ? इसके उत्तरमें कविवर चन्द "इसो" शब्द कहती बार सेवक रूप पृथ्वीराजकी ओर पीछेको हाथ करके कहने लगे –

दक्षिण दिशि यमलोक

छप्पै–"इसो राजा पृथिराज जिसो गोकुलमें मोहन ।
इसो राज पृथिराज जिसो भारतमें अर्जुन ॥
इसो राज पृथीराज जिसो अभिमानी रावन ।
इसो राज पृथीराज राम रावन संतापन ॥
बरस तीस छै अधिक हैं तेजपूंज अनुपम वदन ।
इमि जपै चन्दवरदाय व पृथ्वीराज अनुहार इन ॥१॥

यह सुनकर जयचन्दने पृथ्वीराजकी ओर देख कर विचार किया कि जब मैं इस सेवकको ओर देखता हूं तो इसके मुखपर मुझको राजतेजकी झलक प्रत्यक्ष दिखाई देती है । इसकी अवस्था भी पृथ्वीराजसे मिलती

हुई है, चन्द पृथ्वीराजको अनुपम वदन कहकर इसकी अनुहार बताता है मेरे अपमान-सूचक वचन सुनकर इसका मुख लाल होगया। होठ फड़क उठे, क्रोधित सांपके समान नथुने फुंकार मारने लगे, सिंहके रुधिर पूरित दांतोंके समान नेत्र लाल हो गये, भृकुटीसे युगान्तक रुद्रके तीसरे नयन खुलनेकासा भाव दिखाई देने लगा। ये लक्षण साधारण मनुष्यके नहीं हो सकते, इन लक्षणोंसे तो यही जान पड़ता है कि यह पृथ्वीराज है इसके पकड़नेका यह अवसर अच्छा है परंतु यह पृथ्वीराज न हुआ तो बड़ी हंसी होगी, लोग कहेंगे कि पृथ्वीराज तो हाथ नहीं आता सेवकको पकड़कर अपना मन संतोष करते हैं। यह विचारकर जयचन्दने मनमें कहा कि *करनाटकीको बुलाऊं, वह पृथ्वीराजके महलमें रही है वहां से अलग होनेपर भी पृथ्वीराजको ही पुरुष समझकर शिर ढकती है, जो वह यहां आकर अपना सिर ढांक लेगी, तो इसके पृथ्वीराज होने में कुछ संदेह न रहेगा। यह सोचकर करनाटकीको सभामें बुलाया, उसने सभामें आकर पृथ्वीराजको देख शीघ्र घूंघट कर लिया यह देख चन्दने तुरंत दोहा पढ़ा –

"कर नाटक कौशलमयी, तज संकोच दरबार।
यहां कुशल सब होयगी, कहु निज वृत्ति विचार।।"

करनाटकीने चन्दका इशारा समझ तुरंत घूंघट खोल दिया। जयचन्दने उससे इस व्यवहारका कारण पूछा, करनाटकीने उत्तर दिया कि महाराज! पृथ्वी और चन्दका दृढ़ संबंध समझकर मैंने इतनी मर्यादा की, जो पृथ्वीराजको प्रत्यक्ष देख लेती तो शिर ढककर क्यों उघाड़ती इस उत्तरसे जयचन्दका संदेह कुछ कम हुआ, परंतु सर्वथा निवृत्त न हुआ। जयचन्दने मनमें कहा कि क्या करें संदेह नहीं जाता, अच्छा अभी तो ये यहां ठहरेंगे गुप्त दूत भेजकर उनका सब भेद ले लिया जायगा। यह विचारकर सेनापति रावणसे कहा कि, नगरके पश्चिम मखमलके डेरोंमें चन्दजीको ले जाकर ठहराओ और मिहमानीका सब सामान पहुँचाओ इनको किसी प्रकार का परिश्रम न हो। यह सुनकर सेनापतिने कहा "जो आज्ञा।" अनन्तर मंत्रीने चन्दको, पान देकर विदा किया। चलते समय चन्दने यह पढ़ा –

"जय जय चन्द सदा रहे, यही विधि आनंद।
कुमुद विकाश प्रकाश. लखि, होय कमलद्युति मन्द।।"

इस नोहामें ध्वनिसे जय जय शब्द भिन्न उच्चारण करके चन्द अपनी विजयका बोध करता है, रावणने चन्दको ले जाकर ठहराया। अनन्तर जयचन्दने अनेक दूत दूती भेजकर भेद लेना चाहा; किन्तु जब कुछ भेद नहीं जान पाया तब अचानक मंत्रीको साथ ले चन्दके डेरेमें गये। देखते ही सेवकने डेरेमें जाकर कहा कि महाराज! जैसे निर्मल आकाशमें एकाएक बादल प्रकट हो जाते हैं उसी प्रकार इस समय राजा जयचंद अपने डेरोंमें अचानक आ पहुंचे और चन्दसे मिला चाहते हैं। यह सुनकर चंदने कहा उनको सत्कारसे जल्दी लिवा ला, सेवक गया और पृथ्वीराज पलंगसे नीचे उतरकर बैठ गये, चन्द पलंगपर बैठे। जयचंदको मंत्री सहित आते देखकर चंद पलंगसे उतरकर जयचंदको ऊँचेपर बिठाकर आप नीचे बैठ गये। तब जयचन्द मुसक्याकर बोले एक बादल प्रगट होने से चन्दको कुछ मलिनता तो नहीं हुई? यह सुनकर चन्दने मनमें कहा क्या इन्होंने सेवककी बात सुन ली; महराजको पलंगपर बैठे तो नहीं देख लिया? यह सोचकर प्रगटमें बोले महाराज! बादलसे चन्द्रको मलिनता हो तो कुछ हानि नहीं परंतु बादलकी जल वृष्टि से प्यारे पपीहाकी प्यास अवश्य बुझानी चाहिये। यह सुनकर जयचन्दने कहा –

*यह करनाटकी पृथ्वीराजकी वेश्या थी, पृथ्वीराज इसको बहुत चाहते थे। एक समय कैमाष और करनाटकी एक दूसरेपर मोहित हो गये और परस्पर गुप्त संबंध रखने लगे, जब पृथ्वीराजको मालूम हुआ तब पृथ्वीराजने कैमाष को मार डाला, परंतु करनाटकी भागकर कन्नौज आई और संयोगिताकी दासी बनकर रहने लगी। उसीने पृथ्वीराजकी प्रशंसा कर संयोगिताका चित्त पृथ्वीराजकी ओर झुका दिया था।

सोरठा–"मिलत कर्म अनुसार, बहुत पपीहन है स्वाति जल।
बहुत उपल प्रहार, होत एक ही जलदसों ॥"

फिर मंत्री ने कहा–

दोहा–"रत्न बिन्दु वरषै, नृपति सुरपति, सम सर्वत्र।
हतभागे सूखे रहैं, शिर दरिद्रको छत्र ॥"

अथवा

दोहा–"सुरपति सम सर्वत्र प्रभु, कंचन वर्षत नीर।
माथे छत्र दरिद्रका, बूंद न परत शरीर ॥"

यह सुनकर चन्दजी चुप हो रहे, अन्तर पृथ्वीराजको जयचन्दके लिये पान देनेकी आज्ञा दी; तब पृथ्वीराजने विचारा कि हथेलीपर रखकर सेवककी भांति पान देना ठीक नहीं, यह विचार दाताओं के समान अंगुलियोंसे पकड़कर पान दिया जयचन्दने अस्वीकार किया, परंतु कवि चन्दके समझाने से पान ले लिया। पान देते समय पृथ्वीराजने जयचन्दके हाथमें एक ऐसा झटका दिया कि जयचन्द गिरते गिरते संभल गये। तब जयचन्दने जान लिया कि यह पृथ्वीराज है। तुरंत जयचन्द मंत्री समेत चल दिये और सेनापति रावणको बुलाकर आज्ञा दी कि चन्दके डेरेको घेरकर पृथ्वीराजको बांध लो। आज्ञा पातेही सेनापति रावण तीन लाख सेना लेकर चढ़ा और चारों ओरसे चंदके डेरेको घेर लिया, यह सुनकर पृथ्वीराजने युद्ध करना चाहा तब संयमराय के पुत्र लंगरीरायने सेनापति बन केवल दो हजार घुड़सवार सेनाकी सहायतासे रावण और उसकी तीन लाख सेनाका नाश कर डाला, परंतु किल्विषा नामवाली तोपके गोलेमें लंगरीराय भी वहीं समाप्त हो गया।

जिस समय यह युद्ध हो रहा था उस समय नगरके उत्तर ओर गंगा तटपर एक सवार अपने घोड़ेको पानी पिला रहा था, उसके वस्त्र और चेहरेसे यह जान पड़ता था कि अभी युद्धसे चला आ रहा है उसके अंग अंगसे वीर रस टपक रहा था। घोड़ेको जल पिलाकर वह चलनेही को था कि घोड़ेकी आयालमेंसे एक मोती टूटकर अचानक जलमें गिर पड़ा, उसको भक्ष्य पदार्थ जानकर मछलियाँ उछलकर झपटने लगीं, यह तमाशा देखकर सवारका मन प्रसन्न हो गया और वह अपने हाथसे मोती तोड़कर जलमें डालने लगा, जब आयालके सब मोती डाल चुका तब घोड़ेकी पूंछकी ओर हाथ बढ़ाया और मोती तोड़ तोड़कर फेंकने लगा यह कौतुक संयोगिता अपने महलके झरोखेसे देख रही थी और देखनेमें इतनी लीन थी कि उसको अपनी शरीरकी भी सुध न थी। संयोगिता युद्धके समाचार पाकर छतपर जा रही थी परंतु संचार को देखते ही झरोखेही में खड़ी रह गयी करनाटकीके कहनेसे जाना कि यह सवार पृथ्वीराज है, जब घोड़ेके पूंछसे मोती चुकते जाना तब संयोगिताने दो थाल मोती अपनी दो दासियोंके हाथ भिजवा दिये एक थाल एक दासीने घोड़ेकी पूंछपर रख दिया, पृथ्वीराज मछलियों के दृश्यमें लीन था जब एक एक थालके मोती हो चुके तब दूसरा थाल रख दिया गया। जब वह भी हो चुका तब थालीमें हाथ लगा ध्यान भंग हो गया, पीछे देखा तो दो सुन्दरियोंको खड़े देखा, पूछा तुम कौन हो? उन दोनोंने कहा कि हम संयोगिताकी सखियां हैं। आप महलमें चलिये। पृथ्वीराज तुरंत प्रसन्नता पूर्वक महलमें गये, दोनों प्रेमी मिलकर प्रसन्न हुए। संयोगिताकी प्रार्थनासे रात भर महलमें रहकर गांधर्व विवाह किया, प्रभात होते ही लौटनेका बचन दे अपने डेरे पर आये मंत्रियोंने भी रातका सब हाल जाना पश्चात् यह निश्चय हुआ कि संयोगिताको हरकर दिल्ली ले जाना चाहिये। इस अभिप्रायसे पृथ्वीराज अपने सब सरदारोंको साथ ले संयोगिताके महलमें पहुँचे और अपना अभिप्राय प्रगटकर संयोगिताको वीरवेषमें अपने साथ लिया। कुछ दूर जाकर विचार किया कि इस प्रकार

चोरोंके समान काम वीरोंको नहीं चाहिये, यह विचार कर चन्द कविको जयचंदके पास जानेको कहा कि जाकर इस बातकी सूचना दे दो । चन्दने राजनीति सम्बन्धी दो चार बात कहकर कहा कि सूचना देनेकी क्या आवश्यकता है । जयचन्दको स्वयं सूचित हो जायगा । आपका काम बन गया आप घर चलिये यह सुनकर पृथ्वीराजको कुछ क्रोध आया, तब चन्दने कहा कि –

दोहा–"सचिव वैद्य गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं प्रभुआश ।
राज देह अरु धर्म कर, होय बेग ही नाश ।।"

महाराज ! क्रोध नहीं करना चाहिये सच्ची वीरता तो क्रोध रोकने ही में है । भला जो मनुष्य अपना क्रोध न रोक सकेगा वह शत्रुको कैसे रोक सकेगा ? सुनकर पृथ्वीराजने कहा कि हमारे चित्तमें यही डट गया है कि तुम जाकर जयचन्दसे संयोगिता समेत हमारे दिल्ली जानेका समाचार कह दो । वृथा समय मत खोओ और विवाद करके आज्ञा भंग मत करो, इतनी बात सुनते ही चन्द कवि वहांसे चल दिये और जयचन्दकी सभामें पहुंचकर आशीर्वाद दिया ।

दोहा–"श्रीगोविंद प्रतापसे, सुख भोगैं जयचंद ।
चितकी सब चिंता मिटै, रहै सदा आनंद ।।"

जयचन्दने चन्दसे कहा – कहो कविराय ! क्या कोई नवीन समाचार है । चंद बोले–महाराज ! राजकुमारी संयोगिता प्रसन्न हैं । पृथ्वीराजजी संयोगिता संयुक्त दिल्ली जानेके लिये आपसे अनुमति चाहते हैं । सुनते ही जयचंद बोले – आह ! क्या संयोगिता पृथ्वीराजके साथ है ? हमने यज्ञ किया जिसमें घीके बदले रुधिर की आहूति दी गई । यह सुन चंदने कहा, कि आप इतने दुःखित क्यों होते हैं ? पृथ्वीराज आपके पुराने व्योहारी हैं, ईश्वरने उनका और राजकुमारीका संबंध योग्य बनाया है । कन्या किसी को देनी ही पड़ती है यह कैसा अच्छा हुआ है कि राजकुमारीने जिसकी स्वर्णप्रतिमाके गलेमें वरमाला पहनायी थी उसीके साथ सम्बन्ध हो गया । यह सुनकर जयचन्द बोले – चंद तुम क्यों जलेपर नोन छिड़कते हो ? माता पिताकी सम्मति विना यह सम्वन्धकी रीति कैसी ? इसमें हमारे लिये कैसी लज्जाकी बात है ? चंदने कहा – स्वयंवर में माता पितासे सम्मति लेकर वर-माला पहनानेकी रीति नहीं सुनी गयी फिर इसमें लज्जाकी कौनसी बात है ? जयचन्द बोले–कुछ भी हो, इस विषयमें पृथ्वीराजकी ओरसे हमारा ऐसा अपमान हुआ है कि हम उसका बदला अवश्य लेंगे, जो चन्द्रादि ग्रह पश्चिमके बदले पूर्व दिग्गमन करेंगे तो भी यह सम्वन्ध न होगा । जयचन्दकी यह बात सुनकर चन्दने उत्तर दिया कि चन्द्र आदि ग्रहोंके पूर्व दिग्गमनमें संदेह नहीं वैसे ही अव इस सम्वन्धमें कुछ संदेह नहीं रहा, आप क्रोध किस पर करते हैं ? महाराज पृथ्वीराज क्या अब आपसे पृथक् हैं, आप अपनी आत्मासे बदला लेने का विचार करते हैं तो भले ही कर लें, परंतु आपको इसका पछतावा अवश्य होगा । सुभद्राहरणके उपरांत कृष्ण बलरामने अर्जुनका सम्बन्ध अंगीकार किया तो कैसा अच्छा परिणाम हुआ उषा अनिरुद्धके गंधर्व विवाहके उपरांत बाणासुचने प्रतिवाद किया तो कैसा दुःख पाया ? परस्परके विवादमें किसीको सुख नहीं मिलता । चंद कविके ये वचन सुनकर जयचंद बोले यह सब सत्य है परंतु संसारमें जिसकी बात न रही उसका क्या रहा ? इस बातके उत्तरमें चंद बोले महाराज ! आप ध्यानपूर्वक विचारिये कि कुरुक्षेत्रमें अठारह दिन युद्ध हुआ, उसमें अठारह अक्षौहिणी सेनाएं दोनों ओरकी मारी गयीं । पांडवोंने सौ भाई दुर्योधन अदिके सिवाय भीष्मपितामह द्रोणाचार्य आदि अद्वितीय वीरोंको रणशायी करके विजयलक्ष्मी पाई और छत्तीसवर्ष राज्य किया, परंतु महाराज युधिष्ठिरजीके मनको क्षणभर भी संतोष नहीं हुआ । बारम्बार ठंडी श्वास लेकर यही कहते थे कि जिनके लालन पालनके लिये मनुष्य राजलक्ष्मी चाहता है उनका विनाश करके अब मैं क्या सुख भोगूं. यह सुनकर जयचंदने कहा – चंद ! अब तुम जाओ हमारी जो इच्छा होगी सो हम करेंगे, तुमने सूचना दे दी यह भी अच्छा किया । यह सुनते ही चंद उठकर चल दिये । जयचंद पहलेसे युद्धकी ठान चुके थे, बीस लाख सेना लेकर पृथ्वीराजका पीछा किया और अपने सरदारोंको आज्ञा दी कि –

कवित्त

"धावौ चतुरंगिनी लै वेगि बलशाली जन,
पृथ्वीके नाम पृथ्वीराजको मिटाय दो।
गावहु सिंदूर अरु शंकरादि ऊंचे स्वर,
तोपनको मारि मारि भूमि उलटाय दो।।
लावहु मम शस्त्र मैं चलिहौं तुम्हारे संग,
शत्रुको सुयश आजु धूरिमें मिलाय दो।
दाबहु स्वसैन्यते रिपुनको भल प्रकार,
दिल्लिहि उजारि बीच धारमें बहाय दो।।"

जयचंदके धावाकी खबर पाते ही उधर यह निश्चय किया गया कि एक सरदार जयचंदको रोकता जाय और अन्य सरदार पृथ्वीराजके साथमें दिल्लीकी ओर बढ़ते जायं। सबसे पहले गोविन्द रायने रोकना आरंभ किया। उसके मारे जानेपर चन्दपुण्डीर राठौरोंके साथ लड़ने लगा, चन्दपुण्डरीके उपरान्त आततांईने आकर राठौर सेनाको रोका! जयचन्दकी ओरसे केहरिकंठीर आतताईसे बातचीत करके लड़ने लगा और सेनाको चीरता हुआ पृथ्वीराज के निकट जाकर गलेमें फन्दा डाल दिया। पृथ्वीराजके निकट ही घोड़ेपर सवार संयोगिता उस फन्देको काट डाला, तब केहरि कंठीरने आततांईको मार गिराया, तुरंत ही पृथ्वीराजने बाण मार कर केहरिकंठीरको स्वर्ग पहुँचा दिया। तदनंतर निडरराय (हमीरी) पज्जुन तुम्वर पहाड़ कान्हदेव आदि वीर लड़कर स्वर्ग सिधारे। दिल्लीके फाटक तक युद्ध होता रहा कान्हदेवने बड़ी वीरताके साथ युद्ध किया, जयचन्दके भाई रतीमानने कान्हदेवको मारा, मरते समय कान्हदेवने रतीभानको भी मार गिराया। पृथ्वीराज दिल्ली पहुंच गये, इस युद्धमें जयचन्दके सब सैनिक मारे गये जो उस समय साथमें थे पृथ्वीराजके चौसठ सामन्त और ग्यारह हजार सैंनिक काम आये, केवल हाहुलीराय चन्द और रामगुरु पुरोहित बचे थे। इस युद्ध ने पृथ्वीराज और जयचन्द दोनोंको शक्तिहीन कर दिया था; पीछे जयचन्दको होश आया कि यह बड़ा अनर्थ हो गया, संयोगिता हर लेजानेके उपरान्त पृथ्वीराज अधिक विषयासक्त हो गये और उनकी शक्ति कम होती चली गयी अर्थात् अन्तके दिन आ गये।

पृथ्वीराजके अंतिम दिन

संयोगिताके प्रेममें अधिक आसक्त होकर पृथ्वीराजने जब राजसभामें आना छोड़ दिया और महलम ही रात दिन रहने लगे तब प्रजामें गड़बड़ मच गई। कुछ लोगों ने पृथ्वीराजके समीप प्रजाका दुःखोंके पुकार पहुंचानेका निश्चय किया इसके लिये कविवर चन्दने एक पत्र लिखा जिसमें ऐसे शब्द लिखे थे–तुमपर गोरी रत्तिय अरु ता घर गोरी तविकयें' अर्थात् तुम तो गोरी स्त्रीके रतिसुखमें लिप्त हो रहे हो और तुम्हारा घर सहाबुद्दीन गोरी तक रहा है। यह पत्र सब सरदार लेकर संयोगिता के महलमें पहुँचे, वहां पहले ही संयोगिताने दासियोंका पहरा लगा रखा था। लोगों ने एक दासीको पत्र देकर उसे पृथ्वीराजके पास पहुँचानेकी प्रार्थना की दासीने वह पत्र पृथ्वीराजको न देकर संयोगिताको दिया; पढ़ते ही संयोगिता के क्रोधकी सीमा न रही, पत्र लिखने वालोंको चाबुकसे मारकर भगा देनेकें लिये अपनी सात सौ दासियों को आज्ञा दी, दासियोंने लोगों पर चाबुक झाड़ना प्रारंभ कर दिया। स्त्रियोंपर हाथ डालना अनुचित समझकर लोग भागने लगे। यह दृश्य संयोगिता अपने झरोखेसे देख रही थी, पास ही पृथ्वीराज भी खड़े देखकर हँस रहे थे। कविचन्द और हाहुली-रायने पृथ्वीराजको हँसते देख लिया, चंदको तो शोकके साथ दया आई परंतु हाहुलीराय हमीरको बड़ा क्रोध आया। चन्दने उसको बहुत समझाया परंतु उसने एक न मानी और अपने अपमानका बदला लेनेंके लिये शहाबुद्दीनके पास गजनी पहुँचा। वह तो यही चाहता था कि किसी तरह पृथ्वीराजको हराकर हिन्दु-स्थानपर अपना आधिपत्य जमाऊँ। बड़ी खुशीके साथ दश लाख सेना लेकर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी, इधर

पृथ्वीराजके प्रायः सब वीर सेनापति युद्धोंमें काम आ चुके थे, संजमराय आदि महुबेकी लड़ाईमें और कान्ह लंगरीराय, चंदपुंडीर, गोविन्दराय जामयादव, आततांई आदि वीर कन्नौजकी लड़ाईमें मारे गये। चन्दके पुत्र धीरपुंडीरको मुसलमानोंने छलसे मार डाला था; पृथ्वीराजको यह सुधि न थी कि दिल्लीमें अब एक भी सरदार नहीं रहा।

शहाबुद्दीनकी चढ़ाईका हाल जब चित्तौर पहुँचा तब रावलसमरसिंह दिल्ली आये साथमें एक लाख सेना थी। अपने राज्यका भार अपने पुत्र रत्नसिंहपर छोड़ा आठ दिन तक पृथ्वीराजसे भेंट न हुई तब एक तोतेके द्वारा पृथ्वीराज तक पत्र पहुँचाया। पत्र पहुँचतेही पढ़ा तब पृथ्वीराजकी आंखें खुल गयीं, तुरंत आकर समरसिंहसे मिला। जो सरदार बचे थे वे पृथ्वीराजको देखकर शहाबुद्दीनसे युद्ध करने की तैयारी करने लगे। अबकी बार जयकी आशा नहीं थी।

अपने एक मात्र पुत्र रायनेमिको युद्धमें सम्मिलित नहीं होने दिया, उसको जैतराव परमाके पास भेज दिया। चलते समय संयोगितासे मिलकर युद्धमें आना चाहा, उसने बड़ी कठिनतासे आने दिया। कागरनदीके किनारे ठट्ठा नामक स्थानके निकट दोनों सेनाओंका सामना हुआ, राजपूतोंने अपनी स्वाधीनताकी रक्षाके लिए प्राणोंपर खेलकर युद्ध किया। परंतु उनकी स्वाधीनताके दिन पूरे हो चुके थे, इसीसे उनकी हार हुई। उस समय जयचन्दको छोड़ अनेक राजाओंने सहायता की थी, यदि जयचन्द साथ देते तो कदाचित् यह हिन्दुस्थान मुसलमानोंके हाथ न जाता, परंतु होनहार बलवान है। स्वजाति और स्वदेशके निमित्त रणक्षेत्रमें समरसिंह आदि नरेश मारे गये। पृथ्वीराज अकेले ही बहुत युद्ध किया, किंतु अंतमें पकड़ लिये गये। इस समय बन्दी पृथ्वीराज अंधे कर दिये गये थे। पृथ्वीराजके गलेमें लोहेकी एक जंजीर डालकर सुल्तान पृथ्वीराजको गजनी ले गया और वहां एक कमरेमें कैद कर रखा। कविवरचन्द अनेक कष्ट सहते हुए पृथ्वीराजसे मिलनेके लिए गजनी पहुँचे और सुल्तानकी आज्ञासे पृथ्वीराजसे मिलने गये। चंदका आना जानकर पृथ्वीराज उठ खड़े हुए, तब सुल्तानने एक वजनदार जंजीर डलवादी, यह देख चंदको शोक हुआ। चन्दने बादशाहसे कहा – जहांपनाह! मैंने सोचा था कि मेरे आनेसे पृथ्वीराज का दुख कम होगा, सो और भी बढ़ गया। अंधा अब आपको क्या तकलीफ पहुँचा सकता है; यदि आप इसको स्वतन्त्र रखें तो यह समय–समय पर बड़ी बड़ी करामतें दिखावेगा जिससे आप बहुत प्रसन्न होंगे। यह अंधा होने पर भी शब्दवेधी बाण मार सकता है; सुल्तानके जीमें यह बात देखनेकी इच्छा हुई। परीक्षा के लिए एक दिन नियत हुआ, महलमें सब सरदार इकट्ठे हुए, ऊपर सिंहासनपर सुल्तान अपने सरदार सहित बैठा था, नीचे पृथ्वीराज और चन्द खड़े थे। पृथ्वीके हाथमें कमान दिया गया, एक ओर लोहेके सात तवे लटकाये गये, सब लोग पृथ्वीराजकी ओर देख रहे थे। कविवर चन्दने कहा –

"छप्पै–इही बान चहुंआन, राम रावन्न उथप्पो।
इही बान चहुंआन, कर्णशिर अर्जुन कप्पो॥
इही बान चहुंआन, शंभु त्रिपुरासुर संध्यो।
इही बान चहुंआन, भ्रमर लछमनकर बन्ध्यो॥
सोबान आज तोकर चढ़चो, चन्द विरद सच्यो जबे,
चहुंआन रान संचरि धनी, मत्त चूके मोटे तबे॥"

दोहा–चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमान।
एते पर सुलतान है, मत चूकै चौहान।

चन्दने तीर चलानेके लिए सुल्तानसे आज्ञा मांगी, सुलताननने चन्दके भेदको न समझकर कह दिया मार। 'मार' शब्द सुनते ही पृथ्वीराजने तीर मारा, तीरके चलते ही सुलतानका काम तमाम हो गया। सुलतानका मरना देखकर सरदारने आक्रमण किया, मुसलमानोके हाथसे मारा जाना अनुचित समझकर वे दोनों मित्र

एक दूसरे के गलेमें तलवार मारकर मर गये। पृथ्वीराजके उपरांत यह देश यवनोंके हाथ आया, उसके लिखनेकी यहां आवश्यकता नहीं है, यहां तो पृथ्वीराज का हाल लिखना था सो लिखा गया।

महोबेके उड़नेवाले घोड़ोंका वृत्तान्त

राजा परिमालकी मल्हना परम सुंदरी थी, जिस समय नखसे शिख तक शृङ्गार करती थी। उस समय लक्ष्मीके समान शोभाको प्राप्त होती थी।

श्लोक-"यां हर्म्यपृष्ठे किल क्रीडयन्तीं, विलोक्य तां भूत कदाचिदिन्द्रः
देवोऽपि दिव्याम्बरवासिनीभिः, सुसेवितः कामवशं प्रणीतः ।।८।।

जिस मल्हनाको राजमंदिरपर सखियोंके संग विहार करते देखकर एक समय देवताओं का राजा इन्द्र मोहित हो गया, जो इन्द्र स्वर्गवासिनी देवांगनाओं करके नित्य सेवित था जब इन्द्र भी मोहित हो गया तो औरोंका क्या कहना है ।।८।।

मल्हनापर मोहित हो जानेके कारण इन्द्रने राजा परिमालसे मित्रता की, राजाने इन्द्रका बड़ा सत्कार किया, और इन्द्रके श्यामकर्ण घोड़ेको अपनी अश्वशालामें बंधवा दिया। वहां राजा परिमालकी चितरंगी आदि घोड़ियोंका उससे संयोग हुआ। इन्द्रने सात दिन निवास किया परिमालको इन्द्रने बिजुलिया खाण्ड वज्र कमान, बिजली समान पीली रेशमी चादर, पपीहा घोड़ा और पचशब्द हाथी जो ऐरावतके अनुसार था जिसके जंजीर घुमानेसे बहुत दूर तकके मनुष्य रणभूमिमें गिर पड़ते थे, इतनी वस्तुएं दीं। पांच वर्षतक मित्रता रही। एक दिन परिमालके वेषमें राजा इन्द्र मल्हनाके समीप गये, मल्हनाने अपना स्वामी समझकर कहा कि आज आप एकादशीको कैसे आये? तब इन्द्रने कहा कि तुम्हारे स्वामीके रूपमें हम देवराज इन्द्र हैं, तुमसे मिलने आये हैं और आशीर्वाद देते हैं कि हमारे ही समान तुम्हारे पुत्र उत्पन्न हो। यह सुनकर मल्हनाने हाथ जोड़के कहा देवेन्द्र आपकी बड़ी कृपा हुई दर्शन दिया। आपका आशीर्वाद पाकर मैं कृतार्थ हुई, पतिव्रता धर्मके प्रभावसे आज मुझको देवदर्शन हुए यह सुनकर इन्द्र अपने पुरको चले गये फिर कभी नहीं आये। इन्द्रके पांच वर्ष के आगमनसे चितरंगी घोड़ीसे १ करिलिया, २ हरनागर ३ मनुरथा, ४ बेंदुला, ये चार घोड़े हुए, पांचवीं कबूतरी घोड़ी उत्पन्न हुई, एक और सामान्य राशिकी घोड़ी गर्भिणी हुई थी उससे हिरोंजिनी घोड़ी उत्पन्न हुई, पपीहा घोड़ा इन्द्र स्वयं दे गये थे। इस प्रकार ये सात घोड़ा घोड़ी बहुत उत्तम पवनके समान वेगवाले थे। बेंदुला घोड़ेका नाम दलगंजन भी था, एवं करिलिया घोड़ा हंसामणि नामसे भी प्रसिद्ध था।

आल्हाका संक्षिप्त वृत्तान्त

दस्सराजकी स्त्री देवकुंवरिके गर्भसे आल्हाका जन्म हुआ, महाराज परिमाल और रानी मल्हनाने बड़ा उत्सव किया। दस्सराज और बच्छराज दोनों भाइयोंने बड़ा आनंद माना, राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूछे; तब पंडितोंने कहा कि यह बालक सिंह लग्नमें उत्पन्न हुआ, सब राजाओंपर सिंहसमान गरजेगा, इसका नाम आल्हा जगत्में प्रसिद्ध होगा। इसका नाम युगोंतक प्रसिद्ध होगा, और इसके नामके साथ हजारों राजाओंका नाम बीरताके साथ बखाना जायगा यह सुनकर राजा परिमाल बहुत प्रसन्न हुए और ज्योतिषियोंको अनेक रत्न देकर विदा किया। आल्हाकी सवारी घोड़ा करिलिया था, जब मांडौसे अपने बापका बदला लेकर महुबे आये तब वहांसे पच-शब्द हाथी, घोड़ा पपीहा लाये सो भी आल्हा को सवारीमें हाथी और पपीहा घोड़ा भी रहा। आल्हाका विवाह नैनागढ़में राजा नेपालकी कन्या सुनमा (सुलक्षणा) से हुआ था, सुनमाका दूसरा नाम मछला था। आल्हा सब युद्धोंमें विजय पाते रहे, कहीं हार नहीं हुई, बेलाके सती होनेपर युद्धके समय जब आल्हाकी सब ओरकी सेना कट गई कोई योद्धा न रहा तब महाकोप करके आल्हाने भगवतीकी दी हुई खड्गको मियानसे निकाला। उस खड्गके उठानेसे जहां तक उसकी आभा पड़ी वहां तकके सब वीर शिरहीन हो गये, केवल पृथ्वीराज और चन्दकवि वृक्षकी ओटमें शेष रहे। उसी समय श्री गोरखनाथजी आ गये और आल्हाका हाथ पकड़ लिया और बोले कि

ऐसा मत करो, इस खड्गको बन्द करो। इस प्रकार गोरखनाथजीकी आज्ञासे आल्हाने खड्गको मियानमें कर लिया। तब आल्हाको साथ लिये श्रीगोरखनाथजी पृथ्वीराजके पास जाकर बहुत समझा-बुझाकर दिल्लीको भेज दिया और आल्हाको साथ लिये तप करनेके लिये वनको चले गये। आल्हाने देवीजीकी बहुत उपासना करके अमरत्व वरदान पाया था, आल्हा युधिष्ठिरजीके अवतार हैं जो पांडवोंमें सबसे बड़े और प्रतापी तथा सत्यवादी थे।

मलिखानका वृत्तांत

बच्छराजकी स्त्री तिलका अथवा ब्रह्मानामवाली रानीसे सहदेवका अवतार मलिखानका जन्म हुआ। राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूछे तो पंडितोंने कहा–यह बालक भी सिंह लग्नमें जन्मा है यह सिंह समान बलवान होगा। जैसे बनमें सब जीवोंका स्वामी होता है इसी प्रकार मनुष्योंमें यह सिंहसमान वीर होगा। इसके चरणमें पद्म होनेसे यह किसीके मारे नहीं मरेगा जब पद्म फटेगा तब मर सकेगा वैसे नहीं मर सकता। यह देवीजीका उपासक होगा और देवीजीसे वर पावेगा, यह सुनकर राजा परिमाल बहुत प्रसन्न हुए। मलिखानका विवाह पथरीगढ़ (कोट कसौंदी) में गजराजाकी बेटी कुसुमासे हुआ था। मलिखानने देवीजीकी उपासना कर जब देवीजीको प्रसन्न किया तब देवीजीने बरदान दिया कि तुम्हारी सर्वत्र विजय होगी किसी वीरके हाथसे तुम्हारी मृत्यु न होगी, मलिखानने अकेले ही पृथ्वीराजके वीरोंको जीता है।

"ये ये भटास्तस्य मुखे रणौघे समागताश्चोद्यतशस्त्रहस्ताः।
ते ते क्षयं तेन यमस्य नीता श्रीवक्षराजस्य सुतोत्तमेन ॥९॥
यथा युगान्ते परितो महाग्निर्यथान्तको वै धृतकालदण्डः।
तथा महीपस्य महाबलौघं शस्त्राग्निना दग्धमथ प्रचक्रे ॥१०॥"

जो कोई योद्धा रणमें शस्त्र लेकर मलिखानके सन्मुख आते थे उनको बच्छराजका पुत्र वीर (मलिखान) अपने शस्त्रके प्रहारसे शीघ्र यमपुरीको भेज देता था ॥९॥ जैसे प्रलयकालमें महा- अग्नि अपने तेजसे महाकाल अपने कालदंडसे जगत् प्रलय करता है इसी प्रकार वीर मलिखानने अपने शस्त्रकी अग्निसे पृथ्वीराजकी सब सेनाको भस्म कर डाला। अर्थात् सब सेना तितर-बितर हो गयी ॥१०॥

अनंतर पृथ्वीराज सेनाके नाश हो जानेपर कूच कर गये। फिर जब दुष्ट माहिल सिरसा आया और अपनी बहिन तिलकासे मिलकर मलिखानके मारे जानेका भेद ले गया, तब जाकर पृथ्वीराजसे कहा कि मलिखानके पांवमें पद्म है जबतक वह पद्म नहीं फटेगा तब तक मलिखान नहीं मरेगा और उभे खुदवानेसे पांवका पद्म फट जायगा और मलिखान खुद ही मर जायगा पृथ्वीराजने ऐसा ही किया। दो सौ उभे खुदवाकर उनमें बर्छी, भाले और सांगे गड़वा दीं और लड़ाईके लिए वहां ताहरको उभेके सामने खड़ाकर लड़नेके लिए मलिखानको बुलाया। ज्यों ही उभेपर होकर घोड़ी निकली कि उभेमें गिर पड़ी, मलिखानके पांवका पद्म फट गया और मूर्च्छा आ गई पछताकर मलिखान मर गया। इस प्रकार धोखेसे मलिखान मारा गया। मलिखानके खड्गकी प्रशंसामें एक दूसरा आल्हखण्ड लिखा जा सकता है, क्योंकि मलिखानने अपने खड्गके बलसे प्रायः सब राजाओंको जीत लिया था।

लाखनि रानाका वृत्तान्त

श्लोक–"कान्यकुब्जे नृपश्चैको राजन् राठौरवंशजः।
जयचंदः समाख्यातो भूभुजां शिरसोमणिः ॥११॥
पंच पंच सहस्राणि यस्य द्वार्षु चतुर्षु च।
उद्यतास्त्राणि तिष्ठन्ति सैन्यान्येवमहर्निशम् ॥१२॥

नृपानुजो महावीरो रतिभानुर्बलाग्रणीः ।
यत्प्रभावं समालक्ष्यारयो जग्मुः पराभवम् ।।१३।।
तस्यात्मजो विशालाक्षः पूर्णचन्द्रसमाननः ।
नकुलस्यावतारोऽभूल्लाखनेति परिश्रुतः ।।१४।।

हे राजन्! कन्नौजमें एक राठौरवंशी क्षत्रिय राजा जयचंद राजाओंमें शिरोमणि हुआ ।।११।। जिसके नगरमें चारों फाटकोंपर पांच-पांच हजार सेना शस्त्रोंको उठाये दिनरात खड़ी रहती थी ।।१२।। राजा जयचंदका छोटा भाई महावीर रतीभान नाम बलवानोंमें अग्रगन्ता था, जिसके प्रभावको देखकर शत्रु रण छोड़ भागते थे ।।१३।। उस रतीभानका पुत्र विशाल नेत्रोंवाला, पूर्ण चंद्रमाके समान मुखवाला,नकुलका अवतार लाखनि नामसे पृथ्वीमें प्रसिद्ध हुआ ।।१४।। बंगालमें कामरू राजधानीके बूंदी शहरमें महाराज गङ्गाधरकी बेटी कुसुमासे लाखनिका विवाह हुआ था । लाखनिने रणक्षेत्र में जो वीरता दिखलाई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । जिस समय वीरता दिखाते हुए लाखनि पृथ्वीराजके सम्मुख पहुँचे उस समय पृथ्वीराजने कुछ तेहाकी बात कही तो लाखनिने छाती खोलकर कहा कि तुम भी अभिलाषा पूरी कर लो, पृथ्वीराजने अपना धन्वा लेकर, अनेक बाण लाखनिके मारे ।

"शराघातहतो वीरो वारणे भटसत्तमः ।
यथा तथैव संतस्थौ मृतोऽपि वीरपुंगवः ।।१५।।"

बाण लगनेसे लाखनिने प्राण तो छोड़ दिये परंतु जिस प्रकार हाथीपर बैठे थे वैसे ही बैठे रह गये किसी ओरको शिर न हिला ।।१५।। जब लाखनि रानाकी हथिनीने टक्कर मारकर पृथ्वीराजके हाथीको हटा दिया और पृथ्वीराजने पीठ फेरी तब लाखनि राना मूर्छित हो गये वास्तव में लाखनि राना बड़ा वीर था ।

ढेबाका वृत्तान्त

महोबेके राजपुरोहित चिंतामणिका पुत्र ढेबा बहुत सुंदर रूपवाला शकुन-विद्यामें परम प्रवीण था । महाराज परिमाल और रानी मल्हना आदि सब ढेबाको बहुत प्यार करते थे क्योंकि ढेबा भी बड़ा वीर था । ऊदनिसे ढेबाकी बड़ी मित्रता थी और ढेबा बड़ा शुभचिंतक ब्राह्मण था । ढेबाका दूसरा नाम 'देवकर्ण' था । देवकर्ण और पृथ्वीराजके सौतेले भाई संयमरायमें बड़ा युद्ध हुआ था दो बार अपनी गदासे देवकर्णने संयमरायके शिरको फाड़ दिया, परंतु चन्द कविने दोनोंवार अपने बाणसे संयमरायके शिरके फाकोंको जोड़ दिया । संयमराय युद्ध करते करते मूर्छित हो गये । देवकर्णको सोमवंशी भी कहा, परंतु यह ढेबाका ही दूसरा नाम था, प्यारमें ढेबा नाम रख लिया गया था । जिस समय कीर्तिसागर पर युद्धमें ब्रह्मानंदके बाणसे मूर्छित होकर पृथ्वीराज लोथोंमें जा गिरे थे, उस समय गिद्ध गिद्धनी पृथ्वीराजकी आंख निकालना चाहते थे । संयमवीर एक ओर वहीं पड़ा था उसने पक्षियोंको देख अपना मांस काटकर पक्षियोंको खिलाया और पृथ्वीराजकी रक्षा की, उसी समय पृथ्वीराजकी मूर्च्छा दूर हुई । मल्हना रानीने ढेबाको मनुरथा घोड़ा चढ़नेको दिया था ।

धांधूका वृत्तान्त

दस्सराजकी स्त्री देवकुंवरिके गर्भसे अभुक्त मूलमें बालक उत्पन्न हुआ, राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूंछे पंडितोंने कहा कि यह बालक अभुक्त मूलमें जन्मा है, इसके देखनेसे पिता जीवित नहीं रह सकता । यह बालक बड़ा बलवान हजारों मनुष्योंका सरदार होगा परंतु अपने बंशवालोंसे युद्ध करेगा, यह सुनकर परिमालने धायीको बुलवाकर वह बालक दिलवा दिया और कहा कि इस बालकका पालन भले प्रकार करो, किसी प्रकार का क्लेश इसको न हो । यह कह महोबेके उत्तर और एकांत में उसके रहनेको एक मंदिर खाली कर दिया और दस्सराजको बुलाकर कहा कि तुम भूल करके भी उस बालकको नहीं देखना । इस प्रकार उस बालकके पालनका प्रबंध राजाने कर दिया जब वह बालक आठ महीनेका हुआ, तब कार्तिकी पूर्णिमाको गंगास्नान

करनेकी विठूर घाट जानेके निमित्त धायीने हठ किया, तब कुछ सेनासे सुरक्षित उस धायीको राजा परिमालने विठूर भेज दिया। वहां विठूरमें पृथ्वीराज भी अपने चाचा कान्हदेवके सहित आये थे, कार्तिकी पर्वमें स्नानकर धायी उस बालकका हाथ एक पंडितको दिखाने लगी वहीं पृथ्वीराज भी खड़े थे। बहुत सुंदर राजलक्षणोंसे युक्त तेजवाले बालकको देखकर एक रक्षकसे पृथ्वीराजने पूछा कि यह किसका बालक है, उसने कहा कि यह बालक दस्सराजका है। राजा परिमालने इस धायीको इस बालककी रक्षा करनेको नियत किया है। यह सुन पृथ्वीराजाने एक जादूगरको बुलाकर कहा कि आज रात्रि समय अपने जादूके बलसे इस बालकको लाकर हमको दोगे तो हम तुमको बहुत कुछ इनाम देंगे। जादूगरने रात्रि समय धायी आदि रक्षकोंको अपनी जादूसे मूर्छितकर उस बालकको चुरा लिया और ले जाकर पृथ्वीराजको दिया; पृथ्वीराजने उस जादूगरको अनेक रत्न देकरविदा किया। उस बालकको चञ्चल दृष्टिमान और कांतिमान देखकर कान्हकुमारने कहा—हे तात ! हमारे कोई सन्तान नहीं, इस कारण यह बालक हमको दे दो, तब पृथ्वीराजने कान्हकुमारको दे दिया। दिल्ली पहुंचकर कान्हकुमारने उस बालकको गोद लेकर बड़ा उत्सव किया। ज्योतिषियोंको बुलाकर नामकरण संस्कार कराया। पंडितोंने नष्ट जन्मपत्र बनाकर उसका नाम देवपाल रखा, परंतु कान्हदेवने देवकुंवरका पुत्र होनेके कारण चन्दपुण्डीर नाम प्रसिद्ध किया। यह बालक छोटी ही अवस्थासे बहुत मोटा ताजा था इस कारण प्यारसे लोग धांधू कहकर पुकारने लगे। इससे दूसरा नाम धांधू प्रसिद्ध हो गया। कन्नौजके युद्धमें कान्हदेव रतीभानके हाथसे मारे गये तब पृथ्वीराजने धांधूको अपना छोटा भाई समझकर अस्सी हजार सेनाका सरदार बनाया, काम पड़नेपर लाखोंका सरदार बना दिया जाता था। गंगाजीसे धायी जब महोबे पहुंची और राजाको खबर दी कि बालक चुरा लिया गया सो सुनकर सबने संतोष किया। कुछ दिनों बाद सुना कि गंगा विठूर घाटसे एक बालकको लाकर कान्हदेवने गोद बिठाया है, तब परिमालने कहा कि कुछ चिन्ता नहीं, महाराज पृथ्वीराजके चाचा कान्हदेवजी महावीर बली हैं उनके यहां जानेसे वह बालक बहुत सुखमें रहेगा, उसका अहोभाग्य है जो ऐसे स्थानमें पहुंचा, ऐसे कह सुनकर संतोष किया।

ब्रह्मानन्दका वृत्तान्त

राजा परिमालकी रानी मल्हनाके गर्भसे श्रीकृष्णजीके कृपापात्र अर्जुनने जन्म लिया, वृद्धावस्था में पुत्र होनेके कारण राजा परिमालने बड़ा आनंद माना। महोबे भरमें आनंद छा गया। बालकके जन्मका उत्सव महुबेमें बड़ी धूमधामके साथ किया गया जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। राजाने ज्योतिषियोंको बुलाकर बालकके लक्षण पूछे, तब ज्योतिषियोंने कहा कि यह बालक शुक्ल तृतीयाको सूर्योदय समय मेष लग्न रोहिणी नक्षत्र मेषके सूर्य वृषके चन्द्रमामें जन्मा है, इसी तिथिमें परशुरामका अवतार हुआ था। सूर्य चंद्रमा उच्च राशिमें हैं इस कारण यह बालक चंद्र-वंशमें भूषण, चंद्रमाके समान बलवान होगा और ब्रह्मण्य होगा, इस कारण रणमें कोई वीर इनके सामने होकर जीत नहीं सकेगा; यह सुनकर परिमालने बहुत आनंद माना, फिर पूछा कोई ग्रह, अरिष्ट तो नहीं है? पंडितोंने कहा कि महाराज ! ऐसा कोई भी प्राणी संसारमें नहीं है ? जो अरिष्टसे रहित हो, परंतु इस मंगलोत्सवमें बालकका अरिष्ट कहनेकी आवश्यकता नहीं। जब राजाने हठ किया तब ज्योतिषियोंने कहा कि इस बालकका स्त्रीभाव अच्छा नहीं है, स्त्री ही के कारणसे इसकी मृत्यु होगी फिर ज्योतिषियोंने उस बालकका नाम ब्रह्मानंद रखा। राजा परिमाल कुछ उदास हुए, फिर संतोषकर ज्योतिषियोंको अनेक रत्न देकर विदा किया। अरिष्टके कारण ही परिमालने ब्रह्मानंदका व्याह नहीं करना चाहे परंतु मलिखानके बहुत हठसे विवाह अंगीकार किया। ब्रह्मानंदका विवाह दिल्लीमें पृथ्वीराजकी कन्या बेलाके साथ हुआ था। दुष्टात्मा, कलहप्रिय माहिलके कहनेसे पृथ्वीराजने महोबेपर चढ़ाई की कीर्तिसागर पर लड़ाई हुई। पहले ब्रह्मानंदके छोटे भाई रणजीत और माहिलके इकलौते बेटे अभईने युद्ध किया, जब दोनों मारे गये और उनका कबंध जागा, तब ब्रह्मानंद चढ़ गये और युद्ध करने लगे। तब वीरोंसे एक एक करके युद्ध हुआ, जब ब्रह्मानंद जीतने में न आये तब माहिलके कहनेसे पृथ्वीराजने युद्ध करना आरंभ किया। चन्द कविने पृथ्वीराजसे कहा कि महाराज ब्राह्मणोंका प्यारा ब्रह्मा कदापि आपसे जीता नहीं जा सकता। तब पृथ्वीराजने क्रोध करके अश्वत्थामाका दिया हुआ अर्धचन्द्राकार बाण ब्रह्मानंदको मारनेको हाथमें लिया, देखकर ब्रह्मानंदने शीघ्रताके साथ एक तीक्ष्ण बाण महाराज पृथ्वीराजको मारा।

श्लोक-"ब्रह्मबाणेन व्यथितो राजा मूर्च्छामवाप ह।
हाहाकारे तदा जाते युद्धे तस्मिन् रणोत्सवे ॥१६॥"

ब्रह्मानंदके बाणसे व्याकुल होकर पृथ्वीराज मूर्च्छित हो गये उस समय रणभूमिमें बड़ा हाहाकार हुआ इतनेमें योगियोंके भेषमें लाखनि और ऊदनि जो कन्नौजसे आ गये थे सो आ पहुंचे। अनंतर जब बेला का गौना था तब दुरात्मा माहिल ब्रह्मानंदको अकेले ले जाकर दिल्ली मे पहुंचा और वहां युद्ध कराया, उस युद्धमें भी ब्रह्मानंदने बड़ी वीरता दिखायी चामुण्डाराय और ताहरने धोखा देकर घायल कर दिया था, ब्रह्मानंदके सामने लड़ कर कभी किसीने विजय नहीं पायी यह ब्रह्मानंदका वृत्तान्त लिखा, आगे ब्रह्मानंदकी बड़ी बहिन चन्द्रावलिका वृत्तान्त संक्षेपसे लिखते हैं।

चन्द्रावलिका वृत्तान्त

राजा परिमालकी रानी मल्हनाके गर्भसे एक कन्या उत्पन्न हुई, जिसका नाम चन्द्रावलि रखा गया। ब्रह्मानंदके जन्मके दूसरे साल उसका विवाह इस प्रकार हुआ कि चन्द्रावलि परम सुंदरी थी, उसके रूपकी प्रशंसा सुनकर बौरीगढ़से बीरसाह सेना लेकर चढ़ आये और राजा परिमालके पास एक दूत द्वारा कहला भेजा कि अपनी कन्याका विवाह हमारे पुत्र इन्द्रसेनके साथ कर दो नहीं तो हम युद्ध करके कन्या हरण करेंगे और महोबेको विध्वंस कर डालेंगे। यह सुनकर परिमालने रनवासमें जाकर रानी मल्हनासे कहा। मल्हनाने कहा कि तुमने अपने सब अस्त्र शस्त्र सागरमें पखार दिये, दस्सराज बच्छराजको करिया सोतेसे बांध ले गया और वहां ले जाकर मार डाले। ताल्हन सैयद बनारस में छा रहे, बहुत दिनोंसे आये नहीं यहां युद्ध करनेवाला कौन है? कन्या किसी राजाके यहां ब्याहनी ही होगी, इस कारण उचित है कि व्याह कर दो। बीरसाह भी यादववंशी क्षत्रिय हैं कुछ चिंताकी बात नहीं है। सुनकर राजा परिमालने बीरसाहके दूतको उत्तर दिया कि कन्याका विवाह हम करेंगे परंतु इस प्रकार अनरसके साथ नहीं करेंगे। इस कारण बीरसाह लौट जायें हम पीछेसे तिलक और दिन नियत करके संदेशा भेजेंगे, तब बरात चढ़ा कर लावें। यह सुनकर दूत चला गया राजा परिमालका उत्तर वीरसेनसे कह सुनाया, सुनकर वीरसाह प्रसन्न हुए और लौट गये। अनन्तर राजा परिमालके कथनानुसार चन्द्रावलिका विवाह इन्द्रसेनके साथ हुआ परंतु दुरात्मा व कलहप्रिय माहिलके उपद्रवोंके भयसे परिमालने चन्द्रावलिको नहीं बुलाया, चन्द्रावलिका गौना नहीं हुआ या गौने में भी लड़ाई बनाकर हालमें छापी गयी है इसी प्रकार लाखनिके गौनेमें भी लड़ाई नहीं हुई थी परंतु बनाने वालोंने झूठी लड़ाई बनाकर सच्ची लड़ाइयोंमें भी संदेह उत्पन्न करा दिया है, झूठी लड़ाइयोंके मिलनेके कारण आल्हखंड प्रायः गप्प समझा जाता है। चन्द्रावलिकी चौथी लेने जब ऊदनि गये थे तब कलही माहिलकी चुगली के कारण बड़ा युद्ध हुआ था फिर चौथी हुई उस समय चंद्रावलिका पुत्र जगनिक बहुत छोटा था। माहिलके भाई जो जगनेरीमें राज्य करते थे, उनके मरने पर राजा परिमालने जगनेरीका किला जगनिकको दिया था, जगनिक भी बड़ा वीर था ब्रह्मानंदका भाई रणजीत था, जो भुजरियोंकी लड़ाई में ताहरके हाथसे मारा गया था।

ऊदनिका वृत्तान्त

दस्सराजकी रानी देवकुंवरिके गर्भसे भीमसेनजीने आकर जन्म लिया। राजा परिमालने पुत्र जन्म सुनकर आनंद माना। परंतु देवकुंवरिने अपने पतिके शोकमें उस पुत्रका होना अच्छा नहीं समझा, अपनी बांदीको तुरंत दे दिया और कहा कि इस पुत्रको ले जाकर कहीं, फेंक दे, विधवा होने पर मेरे यह पुत्र हुआ इस कारण मैं इस पुत्रको नहीं चाहती। बांदीने बहुत कुछ कहा सुना परंतु देवकुंवरिने यही कहा कि इस पुत्रको सामनेसे ले जा। तब बांदीने उस पुत्रको ले जाकर मल्हनाको दिया और सब हाल कहा, मल्हनाने उस पुत्रको ले लिया और पालन करने लगी। राजा परिमालने ज्योतिषियोंको बुलाकर उस बालकके लक्षण पूंछे तब पंडितोंने कहा कि यह पुत्र बलवान होगा, यह रणक्षेत्रमें किसीसे नहीं डरेगा। इसका नाम ऊदनि प्रसिद्ध होगा, यह अपने आल्हा भाईके नामके साथ प्रसिद्ध होगा इसके नामको जगतमें लोग बड़ी वीरताके साथ लेंगे और इसका यश गावेंगे। यह सुनकर परिमाल बहुत प्रसन्न हुए मल्हना रानीने अपने पुत्र ब्रह्माके साथ-साथ ऊदनि का भी पालन की। एक सिंहनी नामवाली महिषी थी उसका दूध पिलाकर ऊदनिको पाला।

जब ऊदनि बारह वर्षके हुए तब अस्त्र धारण कर बनमें शिकार खेलने को जाने लगे और बाललीला करके सबको सुख देने लगे। एक दिन देवीकी पूजा करते-करते अपना शिर काटकर देवीजोको चढ़ानेकी इच्छासे हाथमें खाण्डा लिया उस समय देवीजीकी आभा बोली हे पुत्र! ऐसा मत करो; हम तुमसे प्रसन्न हैं, तू संसारमें महावीर प्रसिद्ध होगा और रणमें जाकर तू किसी से नहीं डरेगा तेरी मृत्यु ब्राह्मणके हाथसे होगी यह सुन ऊदनि प्रसन्न हुए, ब्राह्मण के हाथसे अपनी मृत्यु जानकर संतोष किया।

श्लोक—"ऊदनस्य कृतं कर्म क एवं मानवेषु च।
रणे कुर्याद् द्वितीयो यः शूरसामन्तघातिनः ॥१७॥"

शूरसामन्तोंके मारनेवाले ऊदनिके लिये कर्मोका कौन ऐसा दूसरा मनुष्य है जो कर सके ॥१७॥ ऊदनिसे पांच दिनके सुलिखान छोटे थे जो बीर मलिखानके छोटे भाई थे।

अवशेष वृत्तांत

हिन्दुस्तानके सब राजाओंमें परस्पर प्रेम था। एक दूसरे के यहां महोत्सव में जाया करते थे और जब कहीं राजसभा हो तो वहां सब एकत्र होकर अपनी-अपनी सम्मति प्रकाश कर देशकी उन्नति के उपाय सोचा करते थे। राजा अनङ्गपाल दिल्ली में राज्य करते थे, जो जयचंद और पृथ्वीराजके नाना थे। जयचंद कन्नौजके राजा थे और पृथ्वीराज अजमेरके राज्याधिकारी थे। अनंगपालने पृथ्वीराजको दत्तक पुत्र बनाया और दिल्लीका राज्य सौंपा। यह बात जयचन्दको अच्छी नहीं लगी इसीसे जयचंद और पृथ्वीराज में अनबन हो गयी और इसी कारण दोनों में बैरभाव बढ़ता ही गया। बच्छराजके मरनेके उपरांत सिरसागढ़को पृथ्वीराजने दबा लिया और अपने पुत्र पारथको उसमें रख दिया। जब बच्छराजके पुत्र मलिखानने जाना तब युद्ध करके सिरसाको छीन लिया, तबसे मलिखानसे पृथ्वीराजका वैर हो गया और महोबे में पृथ्वीराजके कुछ घायल वीर गुणमञ्जरी दासी सहित आकर बागमें उतरे तो मालीने उनको मनाकर एक घायल वीरके शिर में कंकड़ मारा तब उसने दौड़कर मालीका शिर काट डाला मालिनीने जाकर राजा परिमालसे कहा, परिमालने कुछ सेना भेजी उसे भी घायलोंने मार डाला तब परिमालने आल्हा ऊदनिको बुलाकर कहा कि जाकर घायलोंको मारो, आल्हा ऊदनिने परिमालको बहुत कुछ समझाया बुझाया परंतु कलही माहिलके भड़कानेसे परिमालने आल्हा ऊदनि की एक बात भी नहीं मानी। लाचार होकर ऊदनिने जाकर उन घायलोंको मार डाला। गुणमंजरीने दिल्ली जाकर सब वृतान्त अपने स्वामी पृथ्वीराजसे कहा, उधर माहिलने भी पहुंच और झूठी चुगली खाकर पृथ्वीराजको परिमालका वैरी बना दिया। ऐसी ही बातोंसे राजाओंमें परस्पर वैर बढ़ता गया, एक दूसरेसे लड़ लड़कर शक्तिहीन हो गये, तब यवनोंने आकर धोखा देकर रातोंमें छापा मारकर यहां अपना अधिकार जमाया।

असली आल्हखंड

मिस्टर सी. ई. इलियटरसाहब बहादुर फरुक्खाबाद में बंदोबस्तके कलक्टर थे, उन्होंने आल्हा गाने वालोंसे आल्हखंड लिखवाकर अंग्रेजीमें तर्जुमाकर लंदनको भेज दिया। उसका नागरीमें छापनेके लिए मुंशी राम स्वरूपजीने साहब बहादुरसे आज्ञा लेकर अपने प्रेसमें छापकर संवत् १९२१ में पहली बार प्रकाशित किया इसीसे उसको असली आल्हखंड कहते हैं, परंतु जिन अल्हैतोंके द्वारा यह आल्हखण्ड लिखी गयी उन्हीं अल्हैतोंमेंसे किसी अल्हैतकी लिखी हुई आल्हखण्ड हो अथवा उसीके अनुसार उससे उत्तम हो तो क्यों न असली मानी जाय। हमारी यह आल्हखंड उसी समयके प्रसिद्ध अल्हैत पंडित भोलानाथजीकी लिखी हुई है किसीकी नकल नहीं है और महोबेकी बोलीमें है उसीको ठीककर और बढ़ाके छापनेको दी गयी है, इस कारण इसके असली होने में कुछ भी संदेह नहीं है।

सज्जनों के हितैषी—
नारायणप्रसाद सीतारामजी
लखीमपुर खीरी (अवध)

भूमिकाकी अनुक्रमणिका

इति बड़ा आल्हखंड की विषयानुक्रमणिका

बड़ा आल्हखण्डकी लड़ाइयोंकी अनुक्रमणिका

श्रीनिकुञ्ज विहारिणे नमः



आल्हखण्ड बड़ा



मंगलाचरण

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सम्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

त्रिभंगी छन्द

जय जय गणनायक, जयति विनायक, जन सुखदायक लंबोदर।
जय जय प्रतिपाला, दीनदयाला रूप विशाला गज शेखर ॥
जय जयति अनन्ता, जय भगवन्ता जय इकदन्ता नागवदन।
जय गौरीनन्दन, त्रिभुवनवन्दन, शत्रु निकन्दन, सिद्धिसदन॥२॥

सवैया

रामको नाम बड़ो जगमें, सोई रामको नाम रटैं नरनारी ।
रामके नाम तरी शबरी, बहु तारे अजामिलसे खलभारी ॥
रामको नाम रटो हनुमान, हते रजनीचर लंक पजारी ।
प्रेमते नेमते राम रटौं नित, रामको नाम सदा हितकारी ॥३॥
भाल विशाल त्रिपुण्ड विराजत, मस्तक एक कला शशि सोहै ।
दीनदयाल कृपालु प्रभो दुख, दोष दुरावत ताप विमोहै ॥

पार न पावत वेद कभू, महिमा तुम्हरी कहि पावतको है ।
मुण्डन माल गले उर व्याल, रटौं शिवशंकर पालत जो है ॥४॥

कुंडलिया

मनमें धीरज धारिके, जप तप करता दान ।
लाओ मन समझायके, पद सरोजका ध्यान ॥
पद सरोजका ध्यान मान मन वचन हमारा ।
भूषण लोक अनंत कृष्णका लेउ सहारा ॥
भोलानाथ मनाय अरे मन चेत पियारा ।
भजै नहीं हरिनाम मूढ़ डूबै मंझधारा ॥ ५ ॥

चौपदी छन्द

जय त्रिभुवन वन्दनि सुर उर चन्दनि, दुष्ट निकन्दनि सदा जये । मम विपति विभञ्जनि खलदल गंजनि, जनमन रंजनि कृपामये ॥ जय जय जगजननी भवभयहरनी, जगविस्तरनी शिववामा । जय विषय निवारिनि कलिमल हारिनि, अधम-उधारिनि सुखधामा ॥ ६ ॥

अथ सुमिरनी

प्रथम मनाऊं श्रीगणेशको ❋ सुमिरत होयँ सिद्धि सब काम।
है सब लायक दास सहायक ❋ सुन्दर वदन रूप अभिराम ॥
रक्त बरन लंबोदर सोहै ❋ सोहै अंग अंग सब काल ।
मस्तक कंचन मुकुट विराजे ❋ राजै कंठ मुण्डकी माल ॥
एकदन्त गजवदन विनायक ❋ लायक सुभट कालके काल ।
शंकरनन्दन दुष्ट निकंदन ❋ वंदत जगत गौरिके लाल ॥
ऋद्धिसिद्धिनिधिचंवरडुलावैं ❋ सुरगण हाथ बांधिरहि जांय॥
तेज विराजै अंग अंगमें ❋ शोभाअमितवरणिनहिंजाय॥
विघ्न विदारी भव भय हारी ❋ युग युग हरत भूमिको भार ।

महिमा गावैं शेष शारदा ❀ तेऊ कभी न पावैं पार ॥
मैं अज्ञान मोहवश निशिदिन ❀ केहि विधि रटौं तुम्हारो नाम ।
दास आपनो जानि मोहि प्रभु ❀ पूरण करहु नित्य सब काम ॥
बहुरि मनाऊं मातु भवानी ❀ औ जगदीश शम्भु भगवान् ।
माथ नवाऊं सब देवनको ❀ करि निज इष्टदेवको ध्यान ॥
तीर्थ स्वरूप सुमिर श्रीगंगा ❀ कलिमल हरनि धार लहराय ।
ज्ञानिन ध्यावों सनकसनंदन ❀ वीरन भीष्म पितामह ध्याय ॥
प्रेमिनमें सुमिरौं नँद नंदन ❀ ऋषियन कपिल देवभगवान् ।
वैद्यनमें सुमिरों धन्वन्तरि ❀ कीशन मध्य वीर हनुमान ॥
धाम सुध्यावों जगन्नाथजी ❀ क्षेत्रन कुरुक्षेत्र हरिद्वार ।
पुरिन मध्य सुमिरो श्रीकाशी ❀ है जहँ विश्वनाथ दरबार ॥
योगिनमें सुमिरों शिवशंकर ❀ दानिन हरिश्चन्द्र महाराज ॥
सत्य सराहौं नृप दशरथको ❀ औ प्रहलाद भक्त शिरताज ।
चक्र सराहौं श्रीविष्णूको ❀ जासों अभय भक्तको दीन्ह ॥
वज्र सराहौं इन्द्र देवको ❀ वृत्रासुरै पराजय कीन्ह ।
शूल सराहौं शिवशंकरको ❀ जासों काटि जलन्धर दीन ॥
धन्य कमंडलु श्री ब्रह्माको ❀ जामें राखि सुरसरिहि लीन ।
शूरनमें सुमिरौं लंकापति ❀ सन्मुख युद्ध राम सों कीन ।
मुख नहिं मोर्‍यो समर भूमिते ❀ अरु ह्वै गयो वंशसे हीन ॥
नारि शिरोमणि सीताजीको ❀ सुमिरहुँ बार बार नमि माथ ।
धर्म पतिव्रत को पालन करि ❀ जो वन गई रामके साथ ॥
पूरव सुमिरौं जगन्नाथजी ❀ पश्चिम कृष्णचन्द्र करतार ।
दक्षिण सुमिरौं रामेश्वरको ❀ उत्तर बद्रीनाथ दरबार ॥
आगे सुमिरौं सकलदेव पुनि ❀ कहिहौं वीर पंवारा गाय ।
कंठ विराजौ मेरे कंठेश्वर ❀ जिह्वा बैठे शारदा माय ॥
जो जो अक्षर माता भूलूं ❀ सो सो लिखियो जीभ हमार ।

तेरी नैया पर चढ़ि बैठों ❋ बेड़ा खेइ लगैयो पार॥

श्रीगणेशजी

प्रथम सुमिरिये श्रीगणेशको ❋ सुमिरे होति सिद्ध सब ठाम।
हैं गणनायक सब लायक प्रभु ❋ सुन्दर वदन रूप अभिराम॥
रक्त वर्ण सोहत लंबोदर ❋ सोहत अंग अंग सब लाल।
कंचन मुकुट सुघर मस्तक पर ❋ सो हैं कंठ मुण्डकी माल॥
एकदन्त गजवदन विनायक ❋ वंदन जगत गौरिके लाल।
शंकर नंदन दुष्ट निकन्दन ❋ भक्तन अभय देत सब काल॥
तेज विराजत अंग अंगमें ❋ शोभा अमित वरणि नहिं जाय।
चमर डुलावत ऋद्धिसिद्धि मिलि ❋ निशिदिन हरत विघ्न समुदाय॥
महिमा गावत शेष शारदा ❋ मैं कस रटौं तुम्हारो नाम।
जानि आपनो दास मोहिं प्रभु ❋ पूरण करहु नित्य सब काम॥

श्रीसूर्यनारायणजी

सुमिरन करिये दिननायकको ❋ हैं प्रत्यक्ष देव संसार।
जिनकी महिमा सब जग जाहिर ❋ पूरण ब्रह्म रूप करतार॥
हैं अविनाशी सुख राशी प्रभु ❋ अञ्जलि दिये करत उद्धार।
जिनके उदय होत जग जागै ❋ निज निज काज करै संसार॥
नित उठिकर हि प्रणाम र विहि जो ❋ ताके होयँ पूर्ण सब काम।
भक्ति भावसे जो सुमिरै रवि ❋ होवै सुलभ सिद्ध सब याम॥
रवि मण्डल सब देव विराजत ❋ कीन्हें कृपा होत भव पार।
नेम धर्मसे लवण त्यागिकै ❋ रवि दिन एक बार आहार॥
करे आरती दिन नायककी ❋ मनमें धारि भक्ति अभिराम।
सूर्य पुराण सहश वरत जो ❋ सो नर लहै अंत रविधाम॥

श्रीदेवीजी

सुमिरौं श्रीगिरिजा जगदम्बा ❋ दुर्गा महा कालिका माय।
आदि शक्ति चंडिका भवानी ❋ अस्तुति करत देव समुदाय॥

भीर परत जबहीं भक्तनपर ❋ तब तब माता करै सहाय ।
मारे दानव मधु कैटभसे ❋ अरु महिषासुर दीन गिराय ॥
चंडमुंडको भक्षण कीन्हों ❋ पुनि करि रक्तबीजको नाश ।
शुम्भनिशुम्भ विदारे माता ❋ निशदिन करौं तुम्हारी आस ॥
रूप अनेक धरे जगदम्बे ❋ औ भक्तनकी करी सहाय ।
तैसेइ करिके दया दृष्टि अब ❋ मेरे कंठ विराजो आय ॥
गावनवालेको स्वर दीजे ❋ औ बजवैयहि दीजै ताल ।
नाचनवालेको नैना देउ ❋ मर्दहिं देउ खड्ग अरु ढाल ॥
जो गति बांधै कोइ ढोलककी ❋ बांधै नाल मंजीरन क्यार ।
कंठ गवैयाको जो बांधै ❋ ताको करो कालिका क्षार ॥
हाथ जोरिकै मैं मांगत हूँ ❋ राखौ अंब नामकी लाज ।
पूरण कीजे सदा आश मम ❋ जस नित करो संतके काज ॥

श्रीसरस्वतीजी

मातु सरस्वतीको पुनि सुमिरौं ❋ विद्याशक्ति शारदा माय ।
शरदचन्द्रमाके सम आनन ❋ शोभा अङ्ग अङ्ग दरसाय ॥
सोहत पुस्तक एक हाथमें ❋ वीणा दूजे हाथ सुहाय ।
कुंडल सोहत है कानन में ❋ अस्तुति करैं देव समुदाय ॥
हंसवाहिनी बुद्धिदायिनी ❋ जग-उत्पत्तिकरनि महरानि ।
ब्रह्मशक्ति प्यारी ब्रह्माकी ❋ सबविधिजगत माहिं सुखदानि॥
कमलासनराजतसुन्दर अति ❋ जाको रूप न बरणो जाय ।
नाग यक्ष गन्धर्व सुरासुर ❋ सिगरे मोहि मोहि रहिजायँ ॥
दीजै मोहि बुद्धि वर वाणी ❋ मांगत हाथ जोरि महरानि ।
सदा हमारी मनोकामना ❋ पूरन करहु मातु प्रण ठानि ॥

श्रीब्रह्माजी

बहुरि सुमिरिये ब्रह्माजीको ❋ हैं जो वेद-सृष्टि करतार ।
ऋग यजु अथर्व वेद हैं ❋ जिनमें कह्यो मुख्य सब सार ॥

ज्ञानकांड अरुकर्मकांड पुनि ❋ भाष्यो तहँ उपासना ज्ञान ।
सब मर्यादा है वेदनमहँ ❋ जगहित सुने पढ़े धरिध्यान ॥
आदिपुरुषचतुरानन स्वामी ❋ मांगौ हाथ जोरि शिर नाय ।
पूरण कीजे मनोकामना ❋ निशिदिन मोपर होउ सहाय ॥

श्रीविष्णूजी

बहुरि सुमिरिये श्रीविष्णूको ❋ व्यापक सकल जगतकरतार ।
जब जब भीर परत देवनपै ❋ तब तब आय लेत अवतार ॥
होत सहायक सब देवनके ❋ दुष्टन केर करत संहार ।
रक्षा करत सकल भक्तनकी ❋ हितकर हरत भूमिको भार ॥
सदाक्षीरनिधिके वासी प्रभु ❋ लक्ष्मी सेवत चरण ललाम ।
ब्रह्मा उपजे नाभि कमलते ❋ शोभा सिंधु रूप घनश्याम ॥
हाथ जोरिकै मैं विनवत हौं ❋ हे प्रभु कृपासिंधु भगवान ।
पूरण करिये मनोकामना ❋ निशिदिनदास आपनो जान ॥

श्रीमहादेवजी

सुमिरन कीजे महादेवको ❋ जेहि शिर गङ्ग भङ्ग आधार ।
अङ्ग अङ्गमें भस्म रमाये ❋ नन्दी वृषभनाथ अवतार ॥
मस्तकचन्दा अति सोहत है ❋ धारे कण्ठ मुंडकी माल ।
बीछी सांप आभरण तनमें ❋ कमल समान नैनत्रय लाल ॥
जटाजूट अर्धंग विराजे ❋ आधे अङ्ग अंबिका माय ।
भूत पिशाच प्रेत संग डोलै ❋ बोलै वचन बनाय बनाय ॥
डमरू हाथ त्रिशूल विराजै ❋ शोभा जासु वरणि नहिं जाय।
है अविनाशी सब देवनमें ❋ महिमा रटैं देवसमुदाय ॥
सुखराशी कैलास निवासी ❋ हैं अविनाशी शंभु सुजान ।
सेवकसुखदायक सब लायक ❋ पूरण करैं दास मनमान ॥
हाथ जोरि प्रभु मैं विनवत हौं ❋ हे प्रभु महादेव भगवान ।
आश हमारी पूरण करिये ❋ निशिदिन धरौं आपको ध्यान ॥

श्रीरामचन्द्रजी

चैत उजेरी तिथि नवमीमें ❀ शुभदिन आनि परो गुरुवार ।
पूरण ब्रह्म रूप गुणसागर ❀ लीन्हों रामचन्द्र अवतार ॥
सुमिरनकीजे तिन प्रभुको नित ❀ अरुलक्ष्मण पद शीश नवाय ।
भरत शत्रुहन अरु सीताके ❀ सुमिरौं चरण कमल शिरनाय॥
गुरुवसिष्ठजीको सुमिरौं पुनि ❀ सुमिरौं भरद्वाज महाराज ।
विश्वामित्र केर सुमिरौं पद ❀ सुमिरौं नारदादि मुनिराज ॥
पुनि सुग्रीव दास अङ्गद पद ❀ सुमिरौं वीरबली हनुमान।
सुमिरौं जामवंतनल नीलहि ❀ द्विविद मयंद आदि बलवान॥
हाथ जोरिकै मैं विनवत हौं ❀ हे प्रभु रामचन्द्र भगवान ।
पूरण करि नित मनोकामना ❀ दीजै मोहिं भक्ति वरदान ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी–सवैया

पुण्यप्रताप प्रभा पलटै, विचरैं खलनीच निशाचरराई ।
भक्तनको दुखभूरि मिलै, अरु पापके भार धरा गरुआई ॥
धर्म रु कर्म घटै जबहीं, बहुतै जग बाजत द्वेष बधाई ।
भार उतारने को जगमें, तबहीं प्रगटैं भुवि श्रीयदुराई ॥

लागतभादौंतिथि आठैंदिन ❀ प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ।
भक्ति प्रेमवश श्रीयशुदाकी ❀ खेलत गोद मोद मन मान ॥
कोटि काम सम मूरति राजै ❀ सुभग शरीर श्याम अभिराम।
लालकमलसमपगविशालदोउ ❀ मुनि मन मधुप रहत मनथाम॥
लालेअधरनबिच दतियाँ द्वै ❀ नासा देखि कीर शरमाय ।
चारुकपोलन अनमोलनपर ❀ निरखत बार बार मन जाय ॥
नखद्युतिवर्णतबनि आवै नहिं ❀ छावै हिये मोद सब काल ।
कमलपाखुरिनपर मोतीजनु ❀ विकसे लसे हरन जंजाल ॥
ध्वजावज्रअरु अंकुशादिकी ❀ रेखा रुचिर रही दरशाय ।
मुनिमनमोहे सुनि नूपुर धुनि ❀ कटि किंकिणी शब्द सरसाय॥

नयनविशालेमुख प्यालेसम ❋ दरसत परस शोभयुतकान ।
हैं युग भौंहें तिरछौंहे सोउ ❋ भालविशाल तिलक झलकान॥
त्रिवली सोहै भली उदरमहँ ❋ अति गंभीर मनोहर नाभि ।
भुजा अदूषण युत भूषण सो ❋ हि बघनखा रहा छबि नाभि॥
चिक्कन कुंचित घुघुंरालेकच ❋ पीत झंगुलिया रही सुहाय ।
क्या छबि वरणौं बालकृष्णकी ❋ शोभा अंग अंग दरशाय ॥
हाथ जोरिकै मैं बिनवतु हौं ❋ हे प्रभु कृष्णचन्द्र करतार ।
पूरण करि नित मनोकामना ❋ दीजै मोहिं भक्ति सुखसार ॥

श्रीवेदव्यासजी

पुनिमैं सुमिरौं मुनिनायकको ❋ हैं जो सत्य ज्ञान गुणखान ।
सत्यवती पराशर नंदन ❋ मुनिवर व्यासदेव भगवान ॥
अष्टादश पुराण जिन भाषे ❋ तिनके नाम कहौं हर्षाय ।
ब्रह्म[1]पुराण पद्म[2] अरु विष्णू[3] ❋ वामन[4] नारदीय[5] सुखदाय ॥
मत्स्य[6] ब्रह्मवैवर्त[7] भागवत[8] ❋ अरुशिव[9] अग्नि[10]भविष्य[11]महान ।
लिंग[12]कूर्म[13] पुनिगारुड[14] जानौ ❋ शूकर[15] अरु ब्रह्मांड[16] पुरान ॥
मार्कण्डेय[17] स्कन्द[18] जो गावत ❋ अन्तिम लहत मोक्षनिर्वाण ।

श्रीनारदजी

बहुरिसुमिरिये तेहि योगीको ❋ वीणा सदा रहत जेहि हाथ ।
लोक लोकमें जो विचरत हैं ❋ गावत सदा विष्णु गुणगाथ ॥
नाश करावत हैं असुरनको ❋ पुरवत सदा सुरनके काज ।
ऐसे योगी श्रीनारदजी ❋ हमरे माननीय शिरताज ॥
मुनिवर ज्ञानी नाम ब्रह्मऋषि ❋ हैं नारायण भक्त सुजान ।
दीजै मोहिं भक्तिहरिकी प्रभु ❋ बिनवौं बार बार धरि ध्यान ॥

श्रीगंगाजी

सुमिरन करिये नित गंगाको ❋ भागीरथी नाम विख्यात ।

सकल जगतकी तारन हारी ❃ माता धर्म तुम्हारे हात ॥
गंगाहेत भूप भागीरथ ❃ पहुँचे हरिद्वारमें जाय ।
कीन्ह तपस्या शिवशंकरकी ❃ हर्षित भये शम्भु सुर राय ॥
मांगों मांगों वर भागीरथ ❃ हम हैं अति प्रसन्न महराज ।
गंगा मांगी शिव शंकरसे ❃ पूर्ण किये भक्त सब काज ॥
गंगा यमुना और सरस्वति ❃ संगम कीन्ह प्रागमें आय ।
नाम त्रिवेणी सब जग जाहिर ❃ मज्जन किये पाप नशिजाय ॥
अक्षय वट है कल्प वृक्ष जहँ ❃ अरु है भरद्वाज स्थान ।
वेनी माधव जहां विराजत ❃ दर्शन जासु मुक्ति निर्वान ॥
काशी कनउज कानपूर उर ❃ सागर सेतु और हरिद्वार ।
गंगाजीके तेज पुञ्जमें ❃ जरि जरि पाप होत सब छार ॥
शुभ वर दीजे गंगे माई ❃ पूरण सभी कीजिये काम ।
पाप नशावनि सन्त उबारनि ❃ नित अस्नान देति सुख धाम ॥
दास तुम्हारो शरणागत है ❃ सेवक जानि हिये हर्षाय ।
वाणी ज्ञान बुद्धि वर दीजे ❃ बिनती करों शीश पद नाय ॥

श्रीहनुमानजी

बहुरि सुमिरिये हनूमान पद ❃ हैं जो महावीर संसार ।
शोभा सिंधु रूप गुण आगर ❃ सागर सुयश बुद्धि आगार ॥
पूर्ण भक्त श्री रघुनन्दनके ❃ जगत प्रसिद्ध वीर बल धाम ।
अंजनितनय संत सुखदायक ❃ लायक सुभट शूर संग्राम ॥
राम दुलारे सीता प्यारे ❃ लक्ष्मण प्रान दान गुण खान ।
आश हमारी पूरण करिये ❃ है बलवन्त वीर हनुमान ॥
चरण तुम्हारेके सुमिरनते ❃ मनके सिद्ध होयँ सब काम ।
नाम तुम्हारो साधु संत जन ❃ सुमिरन करत आठहू याम ॥
मल्ल अखाड़ेमें जो सुमिरैं ❃ पावे विजय होय यश मान ।

जो बल चाहै निज देहीमें ❋ क्यों नारटै वीर हनुमान ॥
जबहीं सुमिरै श्रीबजरंगी ❋ तुरतै होय मल्ल बलवान ।
तासों ध्यान करो निशिवासर ❋ रक्षा करहिं वीर हनुमान ॥
तुम्हरो अखाड़ेमें गावत यों ❋ है बलवन्त अञ्जनी लाल ।
निज सेवककी मनोकामना ❋ पुरवो दास जानि सब काल ॥
गावत वारेन की इच्छासे ❋ बरणों आल्हखण्ड मन लाय ।
भारत शूरनको पुरुषारथ ❋ आगे सुनियो कान लगाय ॥

सवैया

श्रीगिरिजा पतिको सुमिरौं, सुमिरौं पुनि मैं गिरिजेश दुलारो ।
अंजनि पुत्र बली हनुमान, तुही सब भाँतिनसो रखवारो ॥
हर्षि हिये विनवौं सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारो ।
मैं अति मन्द यथा मतिसों, सबके हित गावत वीर पँवारो ॥

कुंडलिया

मारौ अपने क्रोधको, निश्चय शत्रू जान ।
ऐसी समता धारि ले, होवै मित्र जहान ॥
होवै मित्र जहान, कानि सब मानै भारी ।
करि आदर सत्कार, बात पूँछैंगे सारी ॥
नारायण धरि ध्यान, बोले सबसे प्रिय बैना ।
होय सिन्धु भव पार, पाय जगमें सुख चैना ॥

इति सुमिरनी समाप्त

राजा परिमालका ब्याह

महोबेकी पहली लड़ाई.

★

दोहा–श्रीगणेश गुरुपद सुमिरि, इष्टदेव मनलाय ।
आल्हखण्ड वर्णन करत, आल्हा छंद बनाय ॥

सुमिरनी

ब्रह्म सनातनको सुमिरौं मैं ❀ सुमिरौं पुनि अनंत भगवान ।
जग उपजायो जिन ब्रह्मा ह्वै ❀ रक्षा करत विष्णु ह्वै जान ॥
पुनि संहार करत शंकर ह्वै ❀ महिमा जासु बरनि नहिं जाय ।
जबजब भीर परति भक्तनपर ❀ तब तब विष्णू करत सहाय ॥
दश अवतार प्रगट जगमाहीं ❀ तिनके नाम कहौं हरषाय ।
प्रथम मत्स्यअवतारधारिकै ❀ शंखासुरहि कीन्ह बध जाय ॥
रक्षा करी सकल वेदन की ❀ दूजो कूर्म रूप भगवान ।
पीठि आपनीपर गिरिधारी ❀ मन्थन कियो समुद्र महान ॥
ह्वै वराह पृथिवी धारण करि ❀ मारो हिरण्याक्ष बलधाम ।
यह अवतार तीसरो जानो ❀ सुमिरत होयँ सिद्ध सब काम ॥
चौथो रूप धरो प्रभुजीने ❀ सो हम तुमहिं कहत समुझाय ।
वैर कियो है हिरणाकुशने ❀ अरु प्रहलाद दीन्ह बंधवाय ॥
ताहि समैया जगन्नाथजी ❀ नरहरि रूप पहुँचे आय ।
उदर विदारो हिरणाकुशको ❀ जन प्रहलादहि लीन्ह बचाय ॥
पञ्चम रूप धरो वामनको ❀ भिक्षुक भये इन्द्रके काज ।
तीन पैग पृथिवी नृप बलिसे ❀ मांगी जाय छांड़िकै लाज ॥
रूप बढ़ायो पुनि प्रभुजीने ❀ नापे सकल लोक मनलाय ।
सुमन वृष्टि भइ स्वर्गलोकते ❀ हर्षित भये देव समुदाय ॥
छठो रूप श्रीपरशुरामको ❀ जिनको जानत सकल जहान ।

कहँलगबरणौं तिनके बलको ❋ मारा सहसबाहु बलवान ॥
पुनि जब भीर पड़ी संतनपै ❋ पूरण रूप आप करतार ।
सरयू निकट अयोध्याजीमें ❋ लीन्हों रामचन्द्र अवतार ॥
मारि ताड़ुका तारि अहल्या ❋ तोरचो धनुष जनक पुर जाय ।
सिया ब्याहि आये नगरी निज ❋ गवने विपिन पिता रुखपाय ॥
प्रभुसियलषनसहितबनबिहरे ❋ सीता हरी निशाचर आय ।
पुनि गति कीन्हीं गृध्रराजकी ❋ कीन्हों मित्र सुकंठहि जाय ॥
मारावालि सियासुधि कारण ❋ भेजा हनूमान बलवान ।
श्रीहनुमान गये लङ्काको ❋ तहँ पर मिले विभाषण जान ॥
करि विध्वंसवाटिका तरुवर ❋ मारा अक्षय पुत्र वलधाम ।
पुनि विवादकरि लङ्कापतिसे ❋ जारी सकल लङ्क तेहि ठाम ॥
हनुमत पहुँचे पुनि सीताढिग ❋ आज्ञा पाय चले प्रभु पास ।
सब सुधि आय कही रघुवरसे ❋ मनमें ठानि असुरको नाश ॥
सेतु बँधायो रामचन्द्रने ❋ उतरे सिंधु सैन लै साथ ।
लंक जाय निशिचर संघारे ❋ घननादादि हने रघुनाथ ॥
मारा रावण पुनि रघुवरने ❋ दै अभिषेक विभीषण माथ ।
क्रिया कराई पुनि रावणकी ❋ चलिभे राम सिया लै साथ ॥
यहिविधिनाशकियोअसुरनको ❋ हरिलौ सकल भूमिको भार ।
पुनिप्रभुराज कियोपृथ्वीपर ❋ कीन्हो जगत सुयश विस्तार ॥
बहुरि सतावन लगे असुरगण ❋ साधू संत भये भयमान ।
मथुरा माहिं रूप गुण सागर ❋ प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
जिनकी लीलासबजगजाहिर ❋ जानत सबै वृद्ध अरु बाल ।
घटघटवासी अविनाशी हैं ❋ गो द्विज रक्षक दीनदयाल ॥
मारि पूतना हति शकटासुर ❋ बक अरु तृणावर्तको मार ।
गर्व नशायो इंद्र देवको ❋ नक अँगुरी पर धरो पहार ॥
केशी व्योमासुर वृषभासुर ❋ मारे कंस आदि खलराज ।

रक्षा कीन्हीं पांडवकुलकी ❋ सारथि बने भक्तके काज ॥
पुनि ह्वै बौद्ध योगधारण करि ❋ राज जगन्नाथ दरबार ।
दशम रूप कल्की जग ह्वै हैं ❋ यह हम कहे दशों अवतार ॥
नगर अयोध्याके मण्डलमें ❋ राजत नैमिषार वनराज ।
शौनकादिकऋषिजहँश्रोतागण ❋ बांचत कथा सूत शिरताज ॥
गिरो विष्णुको चक्र मनोहर ❋ पृथ्वी मध्य जानि शुभ थान ।
जितने तीरथ हैं जग अन्तर ❋ तिन सब कीन्हें प्रस्थान ॥
अपनो अपनो नाम उचारत ❋ डारो नीर चक्रके माहिं ।
तबते चक्र तीर्थ सब गावत ❋ राजत नैमिषारके माहिं ॥
एक प्रयाग राज नहिं आये ❋ तासों पंच प्राग विख्यात ।
देवी ललिता जहा विराजे ❋ तीरे बही गोमती मात ॥
बुड़की ले जो चक्र तीर्थमें ❋ ताके सकल पाप नशि जायँ ।
दक्षिण चौकी है भैरवकी ❋ ऊपर धर्म ध्वजा फहराय ॥
नैमिषारते उत्तर मिश्रिख ❋ पश्चिम योजन सात प्रमान ।
नाथ गोकरणशिव प्रसिद्ध तहँ ❋ मन अनुकूल देत वरदान ॥
पुनि मैं सुमिरौं उन विप्रनको ❋ जे श्रुति नीति शास्त्र वक्तार ।
परम पियारे नारायणके ❋ धारे विष्णु भक्ति उर हार ॥
सुजनसमाजनकोपुनिसुमिरौं ❋ जे पर काज खड़े तैयार ।
अड़े रात दिन उपकारै महँ ❋ हरि गुण गड़े बड़े दातार ॥
कड़े न होवैं कबहुँ स्वप्नमें ❋ कबहुँ न पड़ैं विषयके जाल ।
जड़े यथोचित निजधर्मनमहँ ❋ नाहीं हर्ष शोक केहु काल ॥
सुमिरि शीतला जाजमऊकी ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
छप्पर कलुवा बावन भैंरों ❋ चौसठि योगिन लेउँ अधार ॥
देवी सुमिरौं हिंगलाजकी ❋ धौलागढ़में प्रगटीं आय ।
जो असमैं मैं सुमिरन करिहैं ❋ ताकी सदा सिद्ध होइ जाय ॥
ऊँचे पर्वत भवन विराजे ❋ अनहद बाजे बाजत द्वार ।
चौरासी घण्टा गर्जत तहँ ❋ अरु मिरदङ्ग झांझ झनकार ॥

सकल शृङ्गार अङ्ग बिच सोहै ❀ सोहै कण्ठ मोतियन हार ।
छत्र विराजै शिर सोनेका ❀ औ चन्दाकी ज्योति लिलार ॥
हीरालाल जवाहर बिचबिच ❀ रतनन भूषण जड़े अपार ।
सकल देवता शीश नवावैं ❀ अस्तुति करैं मातु दरबार ॥
वरणों शाखो आल्हखण्डको ❀ दहिने होउ शारदा माय ।
बड़े बड़े क्षत्री भये धरणिपर ❀ सुनि सुनि नाम जीव हुलसाय ॥
करणी सुनि सुनि कँपै करेजा ❀ धनि धनि जगत लिये अवतार ।
सतयुगहिरण्याक्षहिरणाकुश ❀ जिनके बलको नाहिं सम्हार ॥
त्रेतामाहिं राम अरु लक्ष्मण ❀ अंगद और वीर हनुमान ।
परशुरामको महा पराक्रम ❀ जानत सबहिं लोक बलवान ॥
कौरव पांडव भे द्वापरमें ❀ जिन भारतमें युद्ध रचाय ।
जन्म धरिके फिर कलयुगमें ❀ आल्हा आदिक नाम धराय ॥
सिंहरूप ह्वै जगमें जन्मे ❀ गढ़ ठोकरसों दियो ढहाय ।
बावन गढ़में साखो कीन्हो ❀ भई सहाय शारदा माय ॥
ऐसे वीर सदा नहिं उपजैं ❀ तेहिते शाखो देउँ सुनाय ।
बावन गढ़को युद्ध बखानूं ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
किला बखानूं कालिंजरको ❀ जामें बसैं चँदेले राय ।
ऐंठापाग बांधे शिर ऊपर ❀ कलँगी एक हाथ फहराय ॥
कोट बखानूं गढ़ शिरसाका ❀ जामें बसैं चँदेले राय ।
जासम योधा जग नहिं हुइहै ❀ ना जग मोतिनसी महरानि ॥
बेटी बखानूं वासुदेवकी ❀ तिलका और दिवलदे मात ।
मलिखे सुलके आल्हा ऊदल ❀ जन्मे कोखि जगत विख्यात ॥
खांड़ों बखानूं चन्देले को ❀ जो सागरमें धरचो पखार ।
चारि वीर मछलाके वरणों ❀ जिनपै विद्या अगम अपार ॥
गुरू बखानूं अमरनाथसे ❀ जो चेलनकी करैं सहाय ।
भाला बखानूं मैं जगनिकका ❀ जामे उड़त चिड़ी बिंध जाय ॥
कछुक बखान करौं बौनाको ❀ जो कुड़ियलका चोर अपार ।

फतह बखानूं पुनि आल्हाकी ❃ नौसै झंडा चलत अगार ॥
गांसि बखानूं नर ऊदलकी ❃ पर्वत फोरि पार होइ जाय ।
घोड़ी बखानूं रन मलखेकी ❃ चारों सुम्म स्वर्ग मंडराय ॥
चुगुल बखानूं उरईवालो ❃ जाको नाम महिल परिहार ।
करिके चुगुली परीमालकी ❃ कीन्हों नाश क्षत्रियन क्यार ॥
छोड़ि सुमिरनी आगे बरणौं ❃ हितसों आल्हखंड संग्राम ।
जेठ दशहरासे वर्षा भरि ❃ यारो छोड़ि पढ़ो सब काम ॥
कहूँ लड़ाई अब महुबेकी ❃ यारो सुनिये कान लगाय ।
जेहि विधि आयो नगर महोबे ❃ ब्याहे गये चन्देले राय ॥
जिनका राज महोबो कहिये ❃ तिनका सभी सुनाऊ हाल ।
जैसे ब्याही मल्हना रानी ❃ औ बसिगये रजापरिमाल ॥
राजा वासुदेव महुबेका ❃ दूजो मालवन्त जेहि नाम ।
बड़ो लड़ैया महुबे वारो ❃ राजा वासुदेव बलधाम ॥
दो सुत कहिये वा राजाके ❃ भोपति और महिलपरिहार ।
मल्हना बेटी वासुदेवकी ❃ तिलका और दिवलदे क्वांरि॥
तिनमें मल्हना ऐसी सुन्दरि ❃ सूरज चंदाकी अनुहारि ।
तेज बिराजे अंग अंगमें ❃ ऐसी कोई लखी ना नारि ॥
केहरि समताकी कटि कहिये ❃ कंठ कोकिला सम उच्चार ।
चालमराल नाक सुवनासी ❃ नयना हिरनाके अनुहार ॥
खबर फैल गइ देश देशमें ❃ जगमें सुघरि मल्हनदे नारि ।
बेटी राजा वासुदेवकी ❃ औ मुहबेकी राजकुमारि ॥
भूप चंदेला चंदेलीको ❃ जाको नाम कहत परिमाल ।
जितने जोधा भरतखंडमें ❃ सो हनि हनि कीन्हे परिमाल ॥
सुनी खबरिया गढ़ महुबेकी ❃ सुन्दर कुवरि महोबे क्यार ।
ऐसी सुन्दरि जग नहिं कोई ❃ जैसी सुघर मल्हनदे नार ॥
सुनिके मोहित भये चँदेले ❃ वे नरनाह रजा परिमाल ।

तुरत बुलायो चिंतामणिको [1] ❁ मंत्री सुनो चित्तको हाल ॥
तुम तौ हमरे शुभ मंत्री हो ❁ दूजो पंडित राजसमाज ।
ऐसी सम्मति मोहिं बतावौ ❁ जाते सिद्ध होय एक काज ॥
इतनी सुनि चिंतामणि बोले ❁ मनको भेद कहो महाराज ।
कौन अंदेशा है जियरामें ❁ ह्वइ हैं सभी तुम्हारे काज ॥
लौटि जवाब दियो राजाने ❁ पंडित सुनौ हमारी बात ।
राजा वासुदेव मह्बुबेको ❁ कन्या जासु जगत विख्यात ॥
मल्हना नाम ताको कहिये ❁ जाको रूप न वरणो जाय ।
रूप सुनतही वा कन्याको ❁ सो हमरे मन गई समाय ॥
शोधि पत्तरा शकुन बतायो ❁ जातें काम सिद्ध ह्वै जाय ।
सुनतै पंडित शकुन बतायो ❁ नीकी सायति दई बताय ॥
कूच कराय देउ मह्बुबेको ❁ तुम्हरे होय सिद्ध सब काज ।
इतनी सुनत भूप चंदेले ❁ बहुतै खुशी भये महाराज ॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❁ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
तोप सजावौकिलामसक्कनि ❁ जो किल्लेको देयँ गिराय ॥
हनू हकारनिको सजवावौ ❁ लै चरखिन पर देउ चढ़ाय ।
पर्वत फोड़निको सजवावौ ❁ जो पर्वतको देयँ गिराय ॥
राम लक्ष्मण तोप सजवावौ ❁ जो अड़ेमें होय सहाय ।
हनूहंकारनि गर्भ गिरावनि ❁ भैरव तोप लेउं सजवाय ॥
गंगा जमुना तोपै सजवावौ ❁ तिनका साजि करो तैयार ।
औ घनगर्जनिको सजवावौ ❁ बारह कोश जाय धधकार ॥
तोप कालिका अरु चंडी है ❁ दोनों जलदी लेउ सजाय ।
गाजसुनावनिबड़िबड़ितोपैं ❁ गोला मन पक्केको खायँ ॥
सबको चरखिनपरधरवावौ ❁ लश्कर मोहिं देहु पहुँचाय ।
ग्राफके गोले जिनमें पड़ते ❁ उन तोपनको करो तयार ॥

[1] यह चिन्तामणि ब्राह्मण थे ।

छोटी छोटी तोप सजावो ❀ जो लश्करके चलत अगार ॥
बोलि दरोगा हाथिनवारो ❀ चीरा कलँगी दई पिन्हाय ।
हाथि सजावो कजरीवनके ❀ सिंहल द्वीपी लेउ सजाय ।
चीनी हाथी नये मँगाये ❀ तिनको तुरत लेउ सजवाय ॥
बड़ दंता औ छुट दंता सब ❀ हाथी तुरतै लेउ सजाय ।
इकदंता औ दुइदंतापर ❀ होदा धरो सोबरन क्यार ॥
मँगुल भूरा हाथी साजौ ❀ छोटे पर्वतकी उनहार ।
खूनी हाथिन को सजवावौ ❀ पायँन देउ जँजीर बँधाय ॥
खोलि जँजीरे रणमें दीजो ❀ रजपूतनको जायँ चबाय ।
पहले गद्दा रेशमवारे ❀ ऊपर हौदा करौ तयार ॥
सोनेवारी धरौ अँबारी ❀ जिनमें रतननको उजियार ।
जल्द सजाय लेउ हाथी सब ❀ इतनो करौ जाय तुम काम ॥
टेरि दरोगा फिर घोड़नको ❀ दीन्हें कंचन कड़ा इनाम ।
ताजी तुर्कि घोड़ा साजौ ❀ हंस परेवा लेउ सजाय ॥
रश्की मुश्की पँच कल्यानी ❀ औ कुम्मैत लेउ सजवाय ।
सब्जा सुर्खाको सजवावौ ❀ नकुला घोड़ा लेउ सजाय ॥
जीन धरावौ मखमलवारे ❀ औ ऊपरसे तंग कसाय ।
गर्रा भर्रा खेतन साजौ ❀ जो दुइ पायँनसे ठहरायँ ॥
जलपातुर खेतनमें साजौ ❀ जो पानी पर नाचत जायँ ।
और काठियावाड़ी घोड़ा ❀ तुरतै साजि करौ तैयार ॥
काबुल औ कंधारी घोड़ा ❀ औ तातारी अजब बहार ।
अरबी दरियाई पानीके ❀ घोड़ा साजि करौ तैयार ॥
बारहजात कबूतर साजौ ❀ रङ्गबिरंगी होयँ तैयार ।
रंग बिरंगे जीन धरावौ ❀ दुहरे तंग देउ खिंचवाय ॥
बोले दरोगा ऊँटनवारो ❀ तिनको हुक्म दीन्ह फरमाय ।
सजे सांड़िया मारवाड़के ❀ बहुत सजीले लेउ सजाय ॥
अरबी ऊँट मझोले साजौ ❀ औ करहलके लेउ सजाय ।

कछु मेवाड़ी सजौ साँड़िया ❋ जिनके जिमि न लागैं पायँ ॥
बीकानेरी ऊँट सजावौ ❋ उनपर गद्दा देउ डराय ।
ऊपर काठी चन्दनवारी ❋ सोने मढ़ी करौ तैयार ॥
तङ्ग दुतंगा रेशमवारे ❋ देउ कसाय तुरत यहि बार ।
गले हमेलैं सोनेवाली ❋ अरु चौरासी बजना धार ॥
रथ सजवाय देउ हाथिनके ❋ औ घोड़नके करो तैयार ।
ऊँटनवारे रथ सजवावो ❋ अरु बैलनके लेउ सजाय ॥
हुक्म पायके सबै दरोगा ❋ लश्करमें तुरत पहूँचे जाय ।
हुक्म सुनायो चन्देलेको ❋ जल्दी फौज होय तैयार ॥
डङ्का बाजो सब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
सिगरी तोपैं साफ कराईं ❋ सो चरखिन पर दईं चढ़ाय ॥
तिनके संग बहुतसे छकड़ा ❋ तिनमें गोला दिये भराय ।
पेटी लै लै बारूदनकी ❋ सो छकड़नमें दईं भराय ॥
भई सजावट है हाथिनकी ❋ तिनकी सुनो हकीकत आय ।
झूले हैं जर्कसकी न्यारी ❋ झालरि तिनमें दईं लगाय ॥
हौदा लटकत हैं रेशमके ❋ झब्बा मोतिनके लगवाय ।
ऊपर हौदा धरे सुनहरी ❋ कछु चाँदीके दिये धराय ॥
तिनके ऊपर धरी अँबारी ❋ तापर कलश दिये धरवाय ।
फिर सब घोड़नको सजवायो ❋ तिनपै जीन दिये धरवाय ॥
शिर पर कलंगी है रतननकी ❋ ऊपर तंग दिये खिंचवाय ।
तंग दुतंगा कसे रेशमी ❋ औ गलबीच हमेलै आय ॥
ऊँट सजाये विविध भांतिके ❋ सो सब तुरत भये तैयार ।
सजी पालकी और नालकी ❋ सुन्दर गजरथ लिये सजाय ॥
खोलिकुठरिया जिरहनवाली ❋ लम्बे चौक दीन्ह डरवाय ।
पहिरौ पहिरौ मेरे शहजादौ ❋ जैसी जाके अङ्ग समाय ॥
पहिले पहिरो सुर्ख बनाती ❋ ताके ऊपर कुलह कबार ।
ताके ऊपर बख्तर पहिरो ❋ जांमे सांगि बिलोचा खाय ॥

ताके ऊपर झीलम सारी ❀ जामें टूटि जाय तलवार ॥
छप्पनछुरियां हनिहनिबांधो ❀ औ गुजराती हने कटार ।
अगलबगलमें दुइ पिस्तौलैं ❀ दहिने दुइ झूमै तलवार ॥
जोड़ी बांधो कड़ाबीनकी ❀ गोली टका भरेकी खाय ।
टोप झिलमिला धरि माथेपै ❀ गोली लगत चीप हुइ जाय ॥
जितनो गहनो रजपूतनको ❀ ज्वानन पहिरि लीन्ह हरषाय ।
खुलो खजानो चन्देलीमें ❀ औ चौहान गयो पुनि आय ॥
दोनों हाथ उठायके बोला ❀ क्षत्रिय सुनो हमारी बात ।
जिनहिंपियारी हैं घर तिरियां ❀ क्यों नहिं अपनी तलब चुकात ॥
जिनकी बिदा अभी हो आई ❀ सो सब छोरि धरौ हथियार ।
जिनहिं पियारी परम भगौती ❀ पंजा दुइ डारो तलवार ॥
दूनी तलब लेउ तुम हमसे ❀ औ रण खेलौ जूझ अघाय ।
इतनी सुनिकै क्षत्री बोले ❀ मुन्शी सुनो नवल चौहान ॥
जहां पसीना गिरै भूपको ❀ तहँ दै देयँ रक्तकी धार ।
कटि कटि शीश गिरै धरणीपर ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ॥
सुनिकै बातैं सब क्षत्रिनकी ❀ मुन्शी बहुत खुशी है जाय ।
जायके पहुँचा परीमालपर ❀ तुम सुनि लेउ चँदेलेराय ॥
लश्कर सजिगौ चँदेलीको ❀ जल्दी आप होउ तैयार ।
इतनी सुनतहि चँदेलेने ❀ चिंतामणिसे कही सुनाय ॥
जितने राजा यहँ बैठे हैं ❀ सो सब चलैं हमारे साथ ।
हुक्म सुनायो तब मन्त्रीने ❀ सबही चलैं साथ नरनाथ ॥
बड़े बड़े जोधा सँग लीन्हे ❀ अपना सजे वीर परिमाल ।
गजभरि छाती परीमालकी ❀ अरु नैननमें बरै मसाल ॥
पहर पैजामा मिसरूवारो ❀ जामा पहिरि दुदामी क्यार ।
अगल बगलमें दुइ पिस्तौलैं ❀ बायें सिंहिनि मूठि कटार ॥
पाग सुनहरी शिरपर सोहै ❀ कलँगी मोतीचूरकि लागि ।
साजि चँदेले जब ठाढ़े भये ❀ मानौं इन्द्र अखाड़े जायँ ॥

वीरभद्र हाथी सजवाया ❋ जो सब हाथिनको सरदार ।
डारिके गद्दा मखमलवारो ❋ सोने हौदा दियो धराय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरकी ❋ तापर चढ़े रजा परिमाल ।
राजा सजतै सबै सजि गये ❋ शोभा छाय रही तेहिकाल ॥
चलिभो हाथी परीमालको ❋ अरु लश्करमें पहुँचे जाय ।
तेज विराजै अंग अंगमें ❋ मानौं इन्द्र पहूँचे आय ॥
ज्योंही देखे चन्देलेको ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढिगे ❋ बांके घोड़नपर असवार ॥
बड़ बड़ तोंदनके जे क्षत्री ❋ सो पलकिनमें भये सवार ।
सब्जै बाना सब्जै निशाना ❋ सब्जै झण्डी भये तयार ॥
सब्जै हाथी सब्जै घोड़ा ❋ सब्जहि कमर धरे तलवार ।
सब्जै पल्टनकी शोभा जहँ ❋ हुइगइ सब्ज भूमि सब झार ॥
नौसै झण्डा खड़े सुनहरी ❋ अगणित ध्वजा रही फहराय ।
कूँचको झंडा तब दिखरायो ❋ कूँचको डंका दियो बजाय ॥
लश्कर चलिभौ चन्देलीसे ❋ हाहाकारी बीतत जाय ।
बारह जोड़ी बजैं नगाड़े ❋ धौंसा होत गोलमें जाय ॥
डाढी करखा बोलत जावै ❋ बिच बिच होवै शब्द अपार ।
डगमग मानौं धरती डोलै ❋ केहिपर चढ़ै इन्द्र सरदार ॥
ईंटै घिस घिस रोड़ा हो गईं ❋ रोड़ा घिसे धूरि हो जाय ।
गर्द उड़ानी आसमानको ❋ रविजी गये धुन्धमें छाय ॥
दबति अँधेरिया दलमें आवै ❋ कोइ काहूँसों बोले नाय ।
मञ्जिल मञ्जिलके चलनेमें ❋ महुबो धुरो दबायो जाय ॥
लश्कर परिगो तब धूरेपर ❋ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ।
जीन उतार धरे घोड़नके ❋ हाथिन हौदा धरे उतार ॥
भेख खटाखट बाजन लागी ❋ तम्बू खड़े दिये करवाय ।
झंडा फहरत उन तँबुअनके ❋ कलशा आसमान घहराय ॥
ऊँचे ऊँचे तम्बू लागे ❋ औ नीचेमें लगी बजार ।

चढ़ी रसुइयां रजपूतनकी ❀ क्षत्रिय भोजन किये तयार ॥
राजा बैठे जब तम्बूमें ❀ निज मंत्रीको लियो बुलाय ।
सम्मति करिकै परीमालने ❀ लीन्हों कलमदान मँगवाय ॥
लैके कागद् कल्पीवारो ❀ पाती लिखन लाग तेहिबार ।
पहिले लिखिकै सरनामाको ❀ औ पीछेसे लिखी जुहार ॥
ताके पोछे लिखी हकीकति ❀ सुनिये वासुदेव नरराय ।
नगर चँदेलीका राजा हूं ❀ उपजो चंद्रवंशमें आय ॥
पिता हमारे हैं जगजाहिर ❀ जिनको नाम कीर्ति भूपाल ।
हमरो नाम रूप जाहिर है ❀ कहियत सबै रजा परिमाल ॥
बेटी तुम्हरी जो मल्हना है ❀ जाको रूप प्रगट जग मायँ ।
ताहि ब्याहने हम आये हैं ❀ जल्दी ब्याह देउ करवाय ॥
हँसी खुशीसे ब्याह रचावौ ❀ तौ यश रहै धरणिमें छाय ।
जो कहुँ नाहीं मुखसे करिहौ ❀ महुबो गर्द देउँ करवाय ॥
खबरैं करि देउ रंग महलमें ❀ सखियां करैं मंगलाचार ।
अरुजो मरजी हो लड़िबेकी ❀ तौ तुम आय लड़ौ सरदार ॥
इतनो हाल लिखो पातीमें ❀ औ धामनको दी पकराय ।
लैके पाती धामन चलि भो ❀ औ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
धामन आयो जब फाटक पर ❀ दरवानीने कही सुनाय ।
कहांसे आयो औ कहँ जैहो ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले धामन दरवानीसे ❀ फाटक जल्दी देउ खुलाय ।
पाती लाये चँदेलेकी ❀ सो राजाको देहैं जाय ॥
खुलिगै फाटक तब महुबेके ❀ धामन चला अगारू जाय ।
देखी शोभा नगर राजकी ❀ धामन बहुत खुशी हुई जाय ॥
बीच बजारोंमें जब पहुँचो ❀ जहँ चौपड़की राशि अपार ।
हीरनकी ढेरी तहँ देखी ❀ औ मोहरनकी राशि अपार ॥
मूंगा मोती अगणित देखे ❀ बैठे बड़े बड़े उमराय ।
लगी दुकानैं बहु कपड़नकी ❀ शोभा एक न बरणी जाय ॥

हलवाइनकी सजी दुकानैं ❋ जिनमें भांति भांति मिष्ठान ।
कहँ लगि बरणौं मैं बजारको ❋ धामन मोहि गयो लखिथान॥
जाय पहूँचो राजभवन ढिग ❋ जहँ दरबार महोबे क्यार ।
लगी कचहरी वासुदेवकी ❋ भरमाभूत लगो दरबार ॥
जाय सांड़िया दाखिलहोइ गौ ❋ औ ड्योढ़ीमें पहूँचो जाय ।
सांकरि खैंचति सँड़िनीबैठगइ ❋ धामन उतर परो अरगाय ।
लैके पाती धामन चलिभौ ❋ औ दरबार पहुँचो जाय ॥
देखत शोभा राज सभाकी ❋ मनमें बहुत खुशी हुइ जाय ।
बारह द्वारीके बँगला हैं ❋ तेरह द्वारीके दलान ॥
खंभ अठासीकी बैठक है ❋ चौबिस खम्भ बनी चौपार ॥
आधे बँगलामें सब्जी है ❋ आधे रही सफेदी छाय ।
सोने सिंहासन राजा बैठे ❋ ऊपर चौर ढुरैं गजगाह ॥
फर्श बिछे हैं कीनख्वाबके ❋ जिनपर इतरनका छिरकाव ।
शीशी चटकि रही बँगलामें ❋ औ खुशबोंइन उड़ै गुलाल ॥
बड़े बड़े क्षत्री शूर सजीले ❋ बैठे बड़े बड़े उमराव ।
शीशपगड़ियादक्खिनवाली ❋ तुर्रा लोटि लोटि रहि जाय ॥
बँधे बजुल्ला भुज दण्डनमें ❋ कण्ठा कण्ठ रहे छबि छाय ।
सिंहकी बैठक जोधा बैठे ❋ एकते एक मायके लाल ॥
छाइ लालरी है नयननमें ❋ टिहना मग्न धरे तलवार ।
ऐसी शोभा राजसभाकी ❋ मानहुँ इन्द्र लोक दरबार ॥
नाचगान महिमाक्यावरणौं ❋ सुरपुर मानौं अप्सरा गान ।
बन्दी भाट भनत विरदावलि ❋ करि रहे ठाढ़े सुयश बखान ॥
खिंचे सपिंडारे बँगलामें ❋ तबला ठुकै तालके साथ ।
बजैं तँबूरा गन्धर्वनके ❋ मुरली अधर मरोड़ा खात ॥
बजैमँजीराकिटकिटकिटकिट ❋ डिर डिर डाराबजै सितार ।
जोड़ी बजरहींअलगोजनकी ❋ औ मुरचङ्ग बजैं दो चार॥
नचैं पतुरिया पर्वतवाली ❋ जो चुटकिनमें तोड़ैं तान ।

जबहीं झोंक देत नैननकी ❋ क्षत्रिन लगत कामके बान ॥
देखि तमाशा रहे शूर सब ❋ बैठे तहां अनेक भुवाल ।
यहिविधिशोभादेखिसभाकी ❋ धामन मोहि गयो तत्काल ॥
सात कदमसे कुन्नस करिके ❋ धामन पाती दई चलाय ।
नजरि बदलिगई वासुदेवकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ॥
काढ़ि कतरनीसे बँद काटे ❋ तुरत लिफाफा दियो चलाय ।
पाती बांचत परलै ह्वै गइ ❋ गुस्सा गयी देहमें छाय ॥
दहिने माहिल जो बैठे थे ❋ सो राजासे लगे बतान ।
कहांसे पाती यह आई है ❋ दहुआ हाल देउ बतलाय ॥
बोले राजा तब माहिलसे ❋ बेटा खबरदार होइ जाउ ।
पाती आई चन्देलेकी ❋ ब्याह हेत मल्हनदे क्वांरि ॥
फौज सजावौ तुम महुबेकी ❋ औ लड़बेको होउ तयार ।
इतनी बात कही माहिलसे ❋ औ फिर कागद लियो उठाय ॥
लैके लेखनि कर कंचनकी ❋ पाती लिखी तुरत नरभान ।
उत्तर भेजत हौं चिट्ठीको ❋ हमरे वचन करौ परमान ॥
ब्याह न हुइ है गढ़ महुबेमें ❋ चाहैं लाख चढ़ैं परिमाल ।
कठिन मवासी गढ़ महुबो है ❋ काह्रे शीश बिराजो काल ॥
चुप्पै लौटि जाउ अपने घर ❋ नाहित कतल देउँ करवाय ।
जोनहिं इच्छा होय लौटनकी ❋ तौ तुम खबरदार ह्वै जाउ ॥
चिट्ठी लिखिकै दइ धामनको ❋ धामन लौटि गयो तत्काल ।
पाती दीन्हीं वासुदेवकी ❋ सब पढ़ि लई रजा परिमाल ॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
डंका बाजै मेरे लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब फौजनमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकामें बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़न पर असवार ॥

कोइनालकिन कोइ पालकिन ❀ कोई गज रथ भये सवार।
मारू डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर चला चंदेले क्यार॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर दई चढ़ाय।
पहिया ढुरकै उन तोपनके ❀ करकति आवै सिंदुरियाबान॥
बारह जोड़ी बजैं नगाड़े ❀ दलमें होन लाग घमसान।
नौसै झंडाके हलकामें ❀ हाथी चलो चँदेले क्यार॥
यहांकि बातें तो यहँ छोड़ो ❀ अब आगेको सुनो हवाल।
हुक्म पायके माहिल भोपति ❀ अपने लश्कर पहुँचे जाय॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय।
बजै नगाड़ा हमरे दलमें ❀ लश्कर साजि होय तैयार॥
डंका बाजो तब महुबेमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार।
तोप दरोगाको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय॥
हुक्म देदिया माहिलठाकुर ❀ सिगरी तोपैं लेउ सजाय।
हुक्म पायके चला दरोगा ❀ तोपैं सभी सजावन लाग॥
तोप भवानी और कालिका ❀ गोला दो दो मनके खायँ।
हनू हँकारनि गर्भ गिरावनि ❀ सो चरखिनपर लईं चढ़ाय॥
सूर्यलपक्कनिचन्द्रझपक्कनि ❀ सोऊ तोपैं लईं सजाय।
बम्बकी तोपैं सब सजवाईं ❀ गोला तीन कोशलौं जाय॥
किल्ला तोड़नि बुर्जमरोरनि ❀ पर्वत ढावनि लईं सजाय।
तोप संकटाको सजवायो ❀ भैरों तोप लीन्ह सजवाय॥
बिजली तड़पनि तोप सजाई ❀ तोप लक्ष्मणा लईं सजवाय।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ लैं चरखिनपर दईं चढ़ाय॥
हाथिन वारेको बुलवायो ❀ सिगरे हाथी करौ तयार।
बड़े बड़े हाथिनको सजवायो ❀ छोटे पर्वत की अनुहार॥
हाथी सजावो सब इक्कदन्ता ❀ औ दुइदन्ता लेउ सजाय।
मैनकुंज मलया धौला गिरि ❀ औ भौंरागिरि लेउ सजाय॥
अंगदगज औ पंगदगजको ❀ भूरा सब्जा देउ सजाय।

मुड़ियाहाथिनको सजवावौ ❋ मकुना हाथी लेउ सजाय ॥
हुक्म पायके चला दरोगा ❋ हाथी सभी सजावन लाग ।
डारे गद्दा मखमल वारे ❋ शोभा कछू कही न जाय ॥
हौदा धरवाये चांदीके ❋ औ सोने कलश रखाय ।
डारिके रस्सा रेशमवारे ❋ हाथी तुरत दीन्ह कसवाय ॥
यक यक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ।
हीरा विराजे अम्मारिनमें ❋ झालरि लगी मोतियन क्यार ॥
बोलि दरोगा घोड़न वारो ❋ सोने कलँगी दई इनाम ।
बड़े बड़े घोड़नको सजवावौ ❋ औ जल्दीसे करो तयार ॥
हरियल मुश्की घोड़ा साजौ ❋ सब्जा घोड़ा लेउ सजाय ।
स्याह सफेदाको सजवावौ ❋ औ सब रंगा लेउ सजाय ॥
ताजी तुर्कीको सजवावौ ❋ अरबी घोड़ा करो तयार ।
कच्छी मच्छी घोड़ा साजौ ❋ औ सामुद्रिक करो तयार ॥
लक्खा गर्रा और कुमैता ❋ सुर्खा घोड़ा लेउ सजाय ।
श्यामकर्ण घोड़ा सजवावौ ❋ औ दरियाई लेउ सजाय ॥
चौंधरिचालकबूतरि साजौ ❋ पँचकल्यानी करौ तैयार ।
हुक्म पायकै चलो दरोगा ❋ घोड़ा सबै किये तैयार ॥
धरिकठिलानी तिन घोड़नपर ❋ ऊपर जीन दिये धरवाय ।
लगे बकसुआ हैं सोनेके ❋ औ रेशमके तंग कसाय ॥
छोटी कलँगी मोतीचूरकी ❋ सो कल्लनपर दई धराय ।
परी लगामैं तब कञ्चनकी ❋ औ चांदीकी परी रकेब ॥
कहँ लग वरणौ इन घोड़नको ❋ शोभा एक न बरणी जाय ।
ऊँट दरोगाको बुलवायो ❋ सिगरे ऊँट होयँ तैयार ॥
चलो दरोगा ऊँटन वाला ❋ सिगरे ऊँट सजावन लाग ।
सजे सांड़िया मारवाड़के ❋ बहुत सजीले लिये सजाय ॥
कछु मेवाड़ी सजे सांड़िया ❋ जिनके जमी न लागे पांव ।
अरबी ऊँट मझोले साजे ❋ औ करहलके लिये सजाय ॥

बीकानेरी ऊँट सजाये ❋ जिनपर गद्दा दिये डराय ।
सजिगइ काठी सब ऊँटनपर ❋ सिगरे ऊँट भये तैयार ॥
रथ सजवाये सब माहिलने ❋ फिर क्षत्रिन ढिग पहुँचो जाय ।
हाथ उठाकर माहिल बोलो ❋ क्षत्रिय खबरदार ह्वै जाय ॥
जितने क्षत्री हमरे दलमें ❋ सिगरे बांधि लेऊँ हथियार ।
शूर बघेले औ चँदेले ❋ औ जनवार डौंड़िया क्यार ॥
औ रघुवंशी सूरजवंशी ❋ चन्द्रवंशी होयँ तयार ।
हाड़ावाले बूँदी वाले ❋ औ राठौर सजैं तत्काल ॥
तोमर ठाकुर तुमरधारके ❋ झारा मैनपुरी चौहान ।
सजै भदावरवाले क्षत्री ❋ औ सजि जांय यादवा ज्वान ॥
मारवाड़के क्षत्री साजैं ❋ औ परिहार गुटैया टार ।
सब गहलौत और कछवाहे ❋ छत्री यादव होयँ तैयार ॥
हबशी औ दुर्रानी साजैं ❋ जो मनइनको करै अहार ।
हुक्म पायके सबरे क्षत्री ❋ तुरतै होन लगे तैयार ॥
कुरी छतीसौं सब सजवाई ❋ डंका होन लगा तेहि वार ।
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़न पर असवार ॥
कोई रथपर कोई ऊँटपर ❋ कोई नलकिन भये सवार ।
बड़े बड़े तोंदनके जे क्षत्री ❋ ते पलकिनपर भये सवार ॥
पैदल पल्टन और रिसाले ❋ सब सज गये महुबिया झार ।
अलबेले सांड़िनपर चढ़िगे ❋ कमरसे दुइ बांधे तलवार ॥
जितनो लश्कर वासुदेवको ❋ दुइ घण्टामें भयो तयार ।
धौंसा बांजो तब लश्करमें ❋ बारह कोस जाय धधकार ॥
सिंहा हाथीको सजवायो ❋ तापर चढ़े माहिल परिहार ।
सब्जा हाथी त्यार करायो ❋ भोपति तापर भयो सवार ॥
हाथ उठाये माहिल बोले ❋ क्षत्रिय सुनो बात यहिकाल ।
पानी रखियो तुम महुबेको ❋ अपने माय बापके लाल ॥
जौ मरि जैहौ रणखेतनमें ❋ तुरतै मिलै स्वर्गमें धाम ।

जो मरिजै हो खटिया परके ❀ कलिमें कोइ न लेहै नाम ॥
बोले क्षत्री तब माहिलते ❀ तुम सुन लीजो राजकुमार ।
कटि कटि शीश गिरैं धरतीपर ❀ उठि उठि रुंड करैं तलवार ॥
निमक तुम्हारो हम खाये हैं ❀ सो हाड़नमें गयो समाय ।
पांव पिछाहू हम न धरिहैं ❀ चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥
इतनी सुनिकै माहिल भोपति ❀ कूंचको झंडा दियो फिराय ।
लश्कर चलि भौ गढ़ महुबेको ❀ दलमें रही लालरी छाय ॥
पांच लाखसे माहिल चलभे ❀ हाहा कारी बीतति जाय ।
धूरि उड़ानी आशमान लौं ❀ सूरज रहे धुंधमें छाय ॥
रणके बाजे बाजन लागे ❀ झूमन लागे लाल निशान ।
पहिया ढुरके उन तोपनके ❀ तड़कत जायँ सिंदुरिया बान ॥
छमछमछमछम बजै पैजनी ❀ दमकै अष्ट धातुकी नाल ।
सररररररर जै रथ दौरैं ❀ रब्बा चलैं पवनके साथ ॥
बारह जोड़ा बजै नगाड़ा ❀ बाजै तुरही औ कंडाल ।
इतते लश्कर है माहिलको ❀ उतते सैन्य रजा परिमाल ॥
दोउ सेना दल बादलसी ❀ पहुँची समर भूमिमें जाय ।
कहँलगिबरणौं उन फौजनको ❀ कायर देखि देखि भय खाँय ॥

सवैया

युद्धको साज बनों दुहुँ ओरसे, वीरबली रणधीर सयाने ।
बादलसों दल साजि चढ़े, तेहि औरसकी छबि कौन बखाने ॥
शूर महाबलवान सबै जिन को, लखि कालहु हारि पराने ।
मैं मति मंद कहा वरणौं तेहि, सैन्यको कायर देखि डराने ॥
कायर दुबकत इत उत डोलैं ❀ नौ कोठनसे छूटैं परान ।
जाय मिहरियन सों बतलावैं ❀ अब कस होय मोर कल्यान ॥
करी चढ़ाई परीमालने ❀ चन्देलीको जो सरदार ।
बड़ो लड़ैया जोरावर है ❀ जेहिकी जग जाहिर तलवार ॥
बोलिमिहिरियासुनिलेउसैंया ❀ लहँगा पहिरि लेउ घर माहिं ।

चुरियां हाथनमें पहिरो तुम ❀ बिछियां पहिरि पाँवके माहिं ॥
आठ दिनको बनो मिहरिया ❀ मुखमें रहौ घूंघटा डारि ।
फौजें चली जायँ हिअनासे ❀ निकरौ आप मूछ फटकारि ॥
बात सुनत ही बनियां छिपिगे ❀ जिनके जिया रहे नादान ।
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहिगो आध कोस मैदान ॥
हाथी बढ़ायो तब माहिलने ❀ सन्मुख जाय दीन्ह ललकार ।
केहिकी माता नाहर जायो ❀ केहि रजपूत लीन्ह अवतार ॥
कौन बरोबरिके हमारे हैं ❀ कौन धुरो दबायो आय ।
इतनी सुनतै चन्देलेने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले राजा तब माहिलसे ❀ सुनलो वासुदेवके लाल ।
देश हमारो चन्देली है ❀ हमारो नाम रजा परिमाल ॥
बहिन तुम्हारी ब्याहन आये ❀ जल्दी ब्याह देउ करवाय ।
बिना बिआहे हम न जैहैं ❀ चाहै प्राण रहैं की जांय ॥
इतनी सुनिकै माहिल बोले ❀ चुप्पै लौटि जाउ नर राय ।
धोखे रहियो न काहूके ❀ सबके मूंड लेउँ कटवाय ।
यह सुनि बोले तब चन्देले ❀ माहिल सुनो बात मन लाय ।
जिसकी बेटी नीकी देखे ❀ तुरतै भांवरि देउँ डराय ॥
डण्ड बांधि लेउँ व क्षत्रीकी ❀ संगहि डोला लेउँ खंदाय ।
इतनी सुनिकै माहिल जरिगे ❀ नैना अग्नि ज्वाला ह्वै जायँ ॥
बोले माहिल चन्देलेसे ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
भागे न बचिहो रणखेतनमें ❀ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ ॥
माहिल हाथीको लौटारचो ❀ अपने लश्कर पहुँचे आय ।
तोप दरोगा को बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दीन्ह फरमाय ॥
बत्ती दै देउ सब तोपनमें ❀ इन पाजिनको देउ उड़ाय ।
लगे मोरचा तब तोपनके ❀ कछु तारीफ करी न जाय ॥
लैके थैली बारूदनकी ❀ सो तोपनमें दई डराय ।
गोला डारि दिये तोपनमें ❀ सुम्मा मौंर बारंबार ॥

रंजक धरि दइ तब प्यालनमें ❀ ऊपर बत्ती दई लगाय ।
धुआं उड़ानो आसमान लौं ❀ सूरज रहे धुंधिमें छाय ॥
दोउ ओरसे दगी सलामी ❀ अब कुछ रहा ठिकाना नाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❀ कह कह करैं अगिनिया बान ॥
सननन सननन गोली छूटीं ❀ सररर तीरनकी आवाज ।
दोनों फौजनको संगम भौ ❀ जहवां परी तीरकी मारू ॥
गोला लागै जिन हाथिनके ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहि जायँ ।
गोला लागै जेहि ऊँटनके ❀ दलमें गिरैं चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़नके ❀ चारों सुम्म गर्द ह्वै जायँ ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❀ तिनकी त्वचा स्वर्ग मँडराय ॥
बंबको गोला जिनके लागै ❀ सो लत्तासे जायँ उड़ाय ।
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❀ तिनके हाड़ मास छुटि जायँ ॥
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानो गिरह कबूतर खाय ।
बानको डंडा जिनके लागै ❀ तिनके सत खंडा हुइ जायँ ॥
एक पहर भरि गोला बरसो ❀ कोइ रजपूतन न टारैं पांव ।
तोपैं धैं धैं साली हुइ गईं ❀ ज्वानन हाथ धरे न जायँ ॥
चढ़ी कमनियां पानी हुइ गईं ❀ गे चुड़किनके मांस उड़ाय ।
मारू बन्द भइ तब तोपनकी ❀ पैदल पल्टन बढ़ी अगार ॥
लईं बँदूकैं तब ज्वाननने ❀ लैके रामचन्द्रको नाम ।
तुरतै चलन लगीं बन्दूकैं ❀ रणमें होन लाग घमसान ॥
रिमझिम गोली बरसन लागी ❀ मानो मघा बूँद झरि लागि ।
फुंके पलीता बन्दूकनके ❀ दागे कड़ावीन हथियार ॥
गोली लागै जिन हाथीके ❀ तुरतै तीन कदम हटिजाय ।
गोली लागै जौन ऊँटके ❀ सो गिरि परै धरनि भहराय ॥
लागै गोली जो घोड़ाके ❀ सो गिरि परै चकत्ता खाय ।
गोली लागै जा मानुषके ❀ ताको काल होय तत्काल ॥
जिनके काल नहीं है रणमें ❀ उनके गोली ना नियराय ।

जिनका काल लिखा खेतनमें ❀ सन्मुख लगै निशाना जाय ॥
चारि घड़ी बन्दूकैं बाजी ❀ ज्वानन हाथ सुस्त पड़जायँ ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ रहिगो पांच कदम मैदान ॥
सांगै चलन लगीं दोनों दल ❀ ऊपर बर्छिनकी भइ मार ।
छुटैं पिचक्का जो लोहुनके ❀ औ बुबकारिन बोलैं घाव ॥
बूड़ि जुलफियां गईं लोहुनसे ❀ औ चुचवात फिरैं असवार ।
चारि घड़ीभरि बजो सांगड़ा ❀ भारी भइ बर्छिनकी मारु ॥
भाले टूटके दोना हुइ गये ❀ लट्टुवा कटि भानके जायँ ।
यहौ लड़ाई पाछे परिगइ ❀ अब आगेको सुनो हवाल ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहिगो डेढ़ पैग मैदान ।
इच्छा करि दौ तब क्षत्रिनने ❀ ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट तेगा बोलन लागे ❀ बोलै छपक छपक तलवार ।
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं वर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सजीले ज्वान ।
पैदलके संग पैदल भिड़िगये ❀ औ असवारनसे असवार ॥
हौदाके संग हौदा भिड़ि गये ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
सात कोस लौं चलैं सिरोही ❀ चारों ओर होय घमसान ॥
पैग पैग पर पैदल गिर गये ❀ दुइ दुइ पैग गिरे असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी गिर गये ❀ छोटे पर्वतके अनुहार ॥
कच्छा कटि गये जिन घोड़नके ❀ धरती गिरैं करोंटा खाय ।
छुटे पिचक्का हैं लोहूके ❀ कायर देख देख दहलाय ॥
कटि भुजदण्डैं रजपूतनकी ❀ चेहरा कटै सिपाहिन क्यार ।
अँतड़ी निकलपड़ीज्वाननकी ❀ दलमें हाहाकार पुकार ॥
कटैं भुसुण्डा जिन हाथिनके ❀ भुइमें गिरैं भरहरा खाय ।
चीख चीखकर प्राण छोड़ते ❀ उनको हाल न वरणो जाय ॥
चार घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।
पड़े दुशाला जो लोहूमें ❀ जनु नदीमें परो सिवार ॥

ढालें पड़ी पड़ी लोहुनमें ❋ मानो कछुआसी उतरायँ ।
पड़ी बन्दूकें हैं लोहुनमें ❋ मानो नाग रहे मन्नाय ॥
डरे घैया रणमें लोटैं ❋ जिनका प्यास प्यास रटिलागि।
मुहर कटोरा पानी हुइगो ❋ रणमें कोइ न बूझैं बात ॥
कोई रोवत है तिरियनको ❋ बेड़ा कौन लगैहैं पार ।
कोई रोवत है लड़िकनको ❋ कोइ पुरखिनको चिल्लाय ॥
गोला फूटिगो भर्रा परिगो ❋ लश्कर अनी बदल हुइ जाय ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे नर दुलहा चले पराय ॥
दुइ दुइ फेंटनके बंधवैया ❋ तिन नारनकी पकरी राह ।
भिड़हा आये चन्देलीके ❋ सो लश्करमें दियो छुड़ाय ॥
भेड़बकरियनकी गिनतीनहिं ❋ वे वीरनको करैं अहार ।
छांड़ि नौकरी हम माहिलकी ❋ बनकी बेच लकड़ियां खायँ ॥
पांच लाखसे माहिल आये ❋ रहिगे तीन लाख असवार ।
दाबे हाथी माहिल आये ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
मुर्चन मुर्चन माहिल डोलैं ❋ सबसे कहैं पुकारि पुकारि ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भाई लगो हमार ॥
भागि न जैयो कोइ सम्मुहेसे ❋ बुडिहै सात साखिको नाम ।
मानुष देही यह दुर्लभ है ❋ यारो जन्म न बारंबार ॥
पात टूटिकै ज्यों तरुवरसे ❋ वीरो लौटि न लागैं डार ।
यह दिन कहिबेको रहिजैहै ❋ हमरी लाज तुम्हारे हाथ ॥
खटिया परिकै जौमरि जैहौ ❋ अइहै देह न कौनेहु काम ।
जो मरि जैहौ रण खेतनमें ❋ ह्वैहै अमर तुम्हारो नाम ॥
झुके सिपाही महुबे वारे ❋ फिरिकै करन लगे तलवार ।
उतमें योधा चन्देलके ❋ रणमें कर रहे मारा मार ॥
भगे सिपाही माहिल वाले ❋ ना देही की रही सम्हार ।
पीछै फिरकर लखै न कोई ❋ करते हाहाकार पुकार ॥
भगत सिपाही माहिल देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।

जाकर बोलो परीमालसे ❀ हाकिम सुनो चँदेले राय ॥
दुइ दुइ रुपयाके चकरनको ❀ काहे डारो मूँड़ कटाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❀ दुइमें एक आंकु रहि जाय ॥
यह मन मानी चन्देलेके ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
खैंचि शिरोही लइमाहिलने ❀ औ राजा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई परीमालने ❀ बच गये मात पिताके भाग ।
कई वार जब खाली परि गये ❀ तब माहिल मन सोचन लाग॥
कै तेरि माताने शिव पूजे ❀ कै तेरे पिता रहे इतवार ।
मेरी चोटसे जो तुम बच गये ❀ जगमें नया लिया अवतार ॥
गुर्ज उठायो फिरि माहिलने ❀ सो राजापर दियो चलाय ।
देवि शारदा दाहिनि होगई ❀ खालि गिरो धरनिपर जाय ॥
लई कमनियां तब माहिलने ❀ गांसी सेर भरेकी खाय ।
फोंक जमावे सिंदोहीकी ❀ औ गजबेलिकी गांसी लागि ॥
खैंचि कमनियां भुज दंडनपर ❀ तीवा मर मर होय कमान ।
चेहरा डाटो चँदेलेको ❀ समुहें छांड़ि कैवरी दीन्ह ॥
हाथी हटिगो चँदेलेको ❀ उनको राखि लीन भगवान ।
माहिल सोचे अपने मनमें ❀ है यह महावीर बलवान ॥
बोले माहिल चन्देलेसे ❀ तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ।
अबहुँ लौटि जाउ चन्देली ❀ तौ ना परो कालके गाल ॥
हँस कर ज्वाब दियोराजाने ❀ सुनिलेउ उरईके परिहार ।
धर्म क्षत्रियनको नाहीं है ❀ जो रण चढ़िकै हटैं पिछार ॥
जौ हम कदम धरे पाछेको ❀ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ।
चौथो वार और भी करिलेउ ❀ नाहिंत सर्ग बैठि पछिताय ॥
सत्तरमनकी सांगि तुरतहीं ❀ सो हाथनमें लई उठाय ।
दुचितो देखो सब राजाको ❀ अररर सांगि समक्की जाय ॥
पैर बढ़ाय दियो हाथीने ❀ नीचे सांगि गिरी अरराय ।
तब ललकारो चन्देलेने ❀ अब तुम सुनौ महलियाराय ॥

अपने अपने भरो ओसरे ❀ जैसे कुवां भरै पनिहारि ।
चार वार हम तुमरे झेले ❀ अब दो झेलौ वार हमारि ॥
लई शिरोही परीमालने ❀ गज मस्तक पर दई चलाय ।
मस्तक मारो तब हाथीको ❀ औ माहिलको लियो बँधाय ॥
माहिल बँधते परले ह्वइगइ ❀ भोपतिके मन रह्यो न ताब ।
कौने बांधो है माहिलको ❀ मोहि समुहे है देउ जवाब ॥
इतनी सुनते परीमालने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
हमने बाँधो है माहिलको ❀ तुम सुनि लेउ जगनसीराय ॥
बहिनी ब्याहि देउ जलदीसे ❀ काहे रारि बढ़ाई आय ।
इतनी सुनिके भोपति बोलो ❀ काहे भरम गमायो आय ॥
जितने आये चन्देलीसे ❀ सबके मूँड लेऊँ कटवाय ।
बोले चँदेले तब भोपतिसे ❀ जोधा सुनो भोपती राय ॥
बिना विआहे हम ना जैहैं ❀ चाहै प्राण रहै की जायँ ।
ताते तुमको समझइयत हैं ❀ रसमें जहर न घोलो आय ॥
बावन गढ़ हमने वश कीन्हें ❀ जीते बड़े बड़े सरदार ।
जो आधीनी करै हमारी ❀ जगमें सोई मित्र हमार ॥
यह सुनि भोपति बोलन लागे ❀ काहे वृथा करत तकरार ।
अब बकवाद करत याहीते ❀ शिर पर आयो काल तुम्हार ॥
लो तुम सम्हरि जाउ हौदामें ❀ हमरी देखि लेउ तलवार ।
सुमिरन करके नीलकंठको ❀ मनियाँ सुमिरि महोबे क्यार ॥
करिके सुमिरन जगदंबाको ❀ भोपति खैंचि लई तलवार ।
करो झड़ाका जब समूहे पर ❀ बायें उठी गेंड़की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ जगनिककी ❀ ताको भयो न बाँको बाल ।
मनमन शोच कियो भोपतिने ❀ यह क्या अबै करी करतार ॥
याहि सिरोहीसे गज काटे ❀ काटे छाँटि छाँटि असवार ।
सोई सिरोही धोखा देगई ❀ अब मम मनमें अधिक विचार ॥
भैया लौटो भतिजा लौटो ❀ औ सब लौटि कुटुम्बी जायँ ।

रनमें लोहे तू मत लौटे ❀ तीनों लोक ठिकानों नांय ॥
गुर्ज उठायो तब जगनिकने ❀ सो राजापर दियो चलाय ।
हाथी हटिगो चंदेलेको ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गाफिलकरिकेतबजागनिकको ❀ राजा तुरत लियो बँधवाय ।
जितनी फौज हती महुबेको ❀ सो सब रैन बैन हुइ जाय ॥
तुरत साँड़ियाको बुलवायो ❀ पाती लिखी रजा परिमाल ।
लिखिकै पाती यह भेजतहौं ❀ पढ़िये वासुदेव भूपाल ॥
माहिल भोपति तुम्हरे बेटा ❀ सो हम बाँधिलीन रणमाय ।
बेटी ब्याहि देउ जल्दीसे ❀ अब क्यों राखी देर लगाय ॥
इतनी लिख दईहै चिठियामें ❀ सो धामनको दई गहाय ।
पाती लैके धामन चलिभो ❀ औ महुबेमें पहूँचो जाय ॥
लगी कचहरी मालवन्तकी ❀ धामन तहाँ पहूँचो जाय ।
सात कदमसे कुन्नश करिकै ❀ पाती धरी मेजपर आय ॥
खोलिके पाती राजा बांची ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजाय ।
लौटि जवाब लिखो चिठ्ठीको ❀ सुनिये वीर चन्देले राय ॥
कठिन मवासी गढ़ महुबो हैं ❀ सीधे ब्याह होनको नाय ।
ताते लौटि जाउ चँदेली ❀ क्यों शिर काल रहा मँड़राय॥
औ जो मरजी है लड़नेकी ❀ तो तुम सावधान हुइ जाउ ।
लै कै पाती धामन पहुँचो ❀ पाती राजै दई गहाय ॥
खोलिके पाती पढ़ी चँदेले ❀ अपनो हुक्म दियो फ़रमाय ।
डंका बाजै मेरे दलमें ❀ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❀ सेना तुरत भई तैयार ।
उतलँग वासुदेव महुबेके ❀ अपनो लश्कर लियो सजाय॥
घड़ी चारके भइ अरसामें ❀ सजि गये तीन लाख असवार।
दुइ हजार तोपैं सजवाईं ❀ साजे हाथी पांच हजार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगैं ❀ बांके घोड़न पर असवार ।
समर भयङ्कर हाथी साजो ❀ ता पर चढ़े वीर सरदार ॥

कूँच को डंका तब बजवायो ❋ लश्कर चला महोबे क्यार ।
इतते लश्कर वासुदेवको ❋ उतते फौज चँदेले क्यार ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो आठ खेत मैदान ।
हाथी बढ़ायो मालवन्त तब ❋ भारी जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आये हैं ❋ जिन यह धुरो दबायो आय ।
किसने बाँधो है माहिलको ❋ औ जागनिको लियो बँधाय ॥
इतनी सुनिकै परीमालने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
हमने बाँधो है माहिलको ❋ हमहीं भोपति लियो बँधाय ॥
डार भाँवरी दो बेटी की ❋ नाहित महुबे लेउँ दबाय ।
डंड बाँधिके ब्याह कराउँ ❋ जोरावरिसे लेऊँ लुटाय ॥
यह सुनि बोले वासुदेव तब ❋ नहिं हम करी सगाई आय ।
अपने मनको ब्याह रचतहौं ❋ शिर पर काल विराजो जाय ॥
मनके बढ़िया तुम राजा हो ❋ नाहीं बोलत बात सम्हार ।
ब्याह न हुइहै गढ़ महुबेमें ❋ चाहै कोटि धरो अवतार ॥
इतनी सुनि बोले चँदेले ❋ सुन नृप वासुदेव सरदार ।
नहीं सगाई तुमने कीन्हीं ❋ पै हमरे कुल यह व्योहार ॥
कौन सिंहको न्योता भेजत ❋ वन वन मार खात शिकार ।
समय देखि क्षत्री ब्याहत है ❋ तहँ नहिं काम सगाई क्यार ॥
जेहि की बेटी समरथ देखैं ❋ उजरी रूप तेगकी धार ।
बलकरि तासों ब्याह रचावैं ❋ क्षत्री वरै तेगकी धार ॥
इतनी सुनतै वासुदेव के ❋ गुस्सा गई बदनमें छाय ।
हुक्म दे दियो तब क्षत्रिनको ❋ तोपन आगी देउ लगाय ॥
बेगि उड़ाओ इन पाजिनको ❋ टट्टुआ टायर लेउ छिनाय ।
बत्ती दे दइ तब तोपनमें ❋ धुअँना रहो सरग मँडराय ॥
अन्धकार लश्करमें छायो ❋ सूरज रहो धुंधमें छाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो लश्करमें गर्जन लागि ॥

परे नाका हैं तोपनके ❋ कह कह करैं अगनियाँ बान।
सरररर सरररर गोली छूटैं ❋ सननन परी तीरकी मार॥
तीरन मारैं जे कम नैता ❋ गोलिन मारैं बरकन्दाज।
गोला लागै जेहि हाथीके ❋ दलथैं चिघ चिघ रहि जाय॥
गोला लागै जौन ऊँटके ❋ सो गिर परै चकत्ता खाय।
गोला लागै जिन घोड़नको ❋ चारों सुम्म गर्द हुइ जायँ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ मानो गिरह कबूतर खाय।
जिनके लागै तीरकी गाँसी ❋ क्षत्री गिरैं भरहरां खाय॥
जिनके लागै बानको डण्डा ❋ तिनके दुइ खण्डा हुइ जाय।
दोऊ ओरसे गोला छूटैं ❋ चारों ओर मचा घमसान॥
तोपैं धैं धैं लाली हुइ गईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
चढ़ी कमनियां पानी हुइ गईं ❋ गे चुटकिनके मांस उड़ाय॥
तोपैं छाड़ि दई ज्वानननै ❋ औ बन्दूकैं लईं उठाय।
सननन सननन गोली छूटैं ❋ मानो मघा बूंद झरि लाय॥
सननन सननन सहटी छूटैं ❋ काली नागिन सी मन्नायँ।
बान कुहनियाँ छूटन लागे ❋ मुलतानी चले कमान॥
जैसे नागिन घुसै गुफामें ❋ तैसे धँसे अंगमें धाय।
जेहि हाथीके गोला लागैं ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय॥
जैसे बज्र गिरैं पर्वतपैं ❋ औ धरतीमें जाय समाय।
जौन ऊँटके गोली लागै ❋ पँसुरी तोरि पारहुइ जाय॥
जिस घोड़ाके गोली लागै ❋ चारो सुम्म गर्द हुइ जाय।
जिस पैदल के गोली लागै ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय॥
धरि बन्दूकैं दइँ ज्वानननै ❋ झड़की कम्मर से तलवार।
चलै जुनब्बी और गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटि कटि रुंड गिरैं भहराय।
पैग पैग पर पैदल गिरिगे ❋ दुइ दुइ पैग गिरे असवार॥
बिसे बिसे पर हाथी गिरि गये ❋ छोटे पर्वत की अनुहार।

ऐसो समर भयो महुबेमें ❀ औ बहि चली रक्तकी धार।
मूंड़नके तहँ ढेर लागिगे ❀ लोथिन ऊपर लोथि दिखाय॥
पगिया डारी हैं लोहूमें ❀ मानौं कमल फूल उतरायँ।
परे दुशाला हैं लोहूमें ❀ मानौं मच्छ कच्छ तैरायँ॥
डारे घैहा रणमें लोटे ❀ जिनके प्यास प्यास रटलागि।
दोनों फौजैं संगम हुइ गईं ❀ चारों ओर चलै तलवारि॥
हलके घायनके सहिजादे ❀ उठि उठि फेरि करैं तलवारि।
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ रणमें करि रहे मारा मार॥
उधर सिपाही चन्देलेके ❀ सबकी कटा दई करवाय।
ऊंचे खाले कायर भागे ❀ जे रण दुलहा चले बराय॥
द्वै द्वै कलँगीके बँधवैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह।
प्राण पियारे जिनको लागे ❀ रणमें डारि देयँ हथियार॥
ऊपर मुर्दा नीचे क्षत्री ❀ परिगे हाथ पांव फैलाय।
जो कोइ हाथी रणसे बिचलै ❀ सो मुर्दन पर धरि देइ पांव॥
बिनही मारे ते मरि जावैं ❀ जो मुर्दनमें रहे छिपाय।
भगे सिपाही महुबेवारे ❀ अपनो डार डार हथियार॥
कोई रोवत है तिरियनको ❀ कोइ लरकिनको रहे पुकार।
भगत सिपाही राजा देखे ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय॥
हाथ उठाके राजा बोले ❀ तुम सुनि लेउ महुबिया ज्वान।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❀ तुम सब भाई लगो हमार॥
युद्ध जीति हौ जौ यह रणमें ❀ सोने कड़ा देउँ डरवाय।
दियो बढ़ावा वासुदेवने ❀ लौटन लगे महुबिया ज्वान॥
झुके सिपाही फिर महुबेके ❀ दोनों हाथ करैं तरवार।
यहां शूरमा चन्देलेके ❀ अंधाधुंध करैं हथियार॥
वर्षा होय रही लोहूकी ❀ सोहैं लाल लाल असवार।
सावन भादों ज्यों जल बरसै ❀ त्यों रण रक्त मूसलाधार॥
रणमें नहरैं बहि निकरी तहँ ❀ औ शिर कमल तुल्य उतरान।

लाशैं बिछगई हैं धरतीमें ❀ घायल लोट पोट रहि जात ॥
घोड़े न्हाय गये लोहूमें ❀ लोहू बूड़ि गई तलवार ।
लाली फैल रही सब रणमें ❀ मानों फूलि रही फुलवारि ॥
मारा मार परी रण भीतर ❀ अतिही बीत रहा घमसान ।
अल्ला अल्ला कहैं मुसल्ला ❀ हिंदू नाम लेत भगवान ॥
खुदा खुदा तौ सैयद कहते ❀ तोबा तिल्ला करैं पठान ।
कायर भागि गये लश्करसे ❀ अपनी डार डार तलवार ॥
छैल चिकनियां भगे प्राण लै ❀ जो नित तकैं पराई नार ।
यह गति हो गइ है लश्करकी ❀ बेड़ा कौन लगावै पार ॥
आधे ज्वान कटे महुबेके ❀ उनसे आधे चँदेले क्यार ।
बड़े लड़ैया चँदेलीके ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भाल घुमावैं नागदौनिके ❀ जिनमें उड़त चिड़ी बिंधजाय ।
साँगै चमक रही लश्करमें ❀ नंगी चमक रही तलवार ॥
इक मोहरेपर राजा दबि गये ❀ मारा मार करैं परिमाल ।
एकलँग पण्डित चिन्तामणि हैं ❀ इकलँग डटा नवल चौहान ॥
इक अलंग पर है चन्द्राकर ❀ भाई जौन चँदेले क्यार ।
चार ओरसे चारों डटि गये ❀ सारी पलटन दीन झुकाय ॥
जैसे भिड़िया भेड़िन पैठे ❀ जैसे सिंह बिडारै गाय ।
जैसे लड़िका गबड़ी खेलैं ❀ गिनि गिनि धरैं अगारी पाँव ॥
तैसे लड़ै चँदेली वारे ❀ भागे सबै महुबिया ज्वान ।
इकला वासुदेव महुबेका ❀ सो रहि गयो समर मैदान ॥
और महुबिया शूर सिपाही ❀ ना कोइ रहा खेतके माहिं ।
तोप मोरचा छीन लियो है ❀ अब कोइ धीर धरैया नाहिं ॥
हाथी बढ़ायो वासुदेव तब ❀ चँदेले पर पहुँचो जाय ।
तहँ ललकारो वासुदेवने ❀ अब सुनि लेउ चँदेले राय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❀ दुइमें एक वंश मिटि जाय ।
पहिली चोट करौ तुम अपनी ❀ नाहिंत सर्ग बैठि पछिताउ ॥

इतनी सुनि चंदेले बोले ❋ तुम सुनि लेहु वीर परिहार ।
तीनिनियमहमरेकुलबाँधिरहे ❋ राजा चन्देले दरबार ॥
बाँधे बँधुआको ना मारैं ❋ ना भगतेके परैं पिछार ।
चोट अगौनी नहिं हम करते ❋ सुनलो महुबेके सरदार ॥
लो शर मार लेउ छातीमें ❋ चिरिकै निकलि जाय वापार ।
मैं मुँह फेर जाउँ पाछेको ❋ तो क्षत्रीपनको धिक्कार ॥
बातें सुनकर चन्देले की ❋ हँसिके वासुदेव नरराय ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ झड़की कम्मरसे तलवार ॥
करो झड़ाका चन्देलेपर ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
टूटि शिरोही गइ राजाकी ❋ कब्जा जमो हाथ रहिजाय ॥
मन मन सोच कियो योधाने ❋ हैं बड़ बली चँदेले राय ।
सांगि उठा फिर वासुदेवने ❋ चन्देले पर दई चलाय ॥
हाथी हटिगो चन्देले का ❋ दाहिनी भई शारदा माय ।
गुर्ज उठायो मालवन्तने ❋ सो सम्मुहे पर दियो चलाय ॥
बढ़िकै छलिया परीमालने ❋ छलिकरि लीन्ही चोट बचाय ।
सांगि गिरि अरराय धरनिमें ❋ सोचे वासुदेव मनमायँ ॥
बड़ो शूरमा यहु लड़िका है ❋ भयो सपूत वंशके मायँ ।
ऐसे सोचे मालवंत नृप ❋ अपने मनमें करत विचार ॥
जेहि क्षत्रीके कायर बेटा ❋ होवे नाश तासु कुल क्यार ।
जिसके घरमें नारिकलहनी ❋ उसका सुखसंपत्ति नशिजाय ॥
बिटिया दीन्ही मोहि ईश्वरने ❋ हमरो दीन्हो गर्व नशाय ।
जो नहिं बेटी हमरे होती ❋ क्यों यह लाता फौज चढ़ाय ॥
बैर करत है जो काहुसे ❋ ताको तुरत गर्व नशि जाय ।
जिसके बेटी आकर जनमें ❋ उसकी लाज रखै करतार ॥
सबै प्रतिष्ठा नशै तासुकी ❋ औ अपकीर्ति होय संसार ।
ब्राह्मण बनिये सब अच्छे हैं ❋ जन्मैं बेटी दुइ औ चारि ॥
कन्यादान करैं आनँदसों ❋ औ सब सुखी होयँ नरनारि ।

बड़ी बुराई है क्षत्रिनमें ❀ कन्या जने नाश परिवार ॥
शीश जमाईको काटत हैं ❀ अरु बेटीको डारत मार ।
ऐसी रीति चली क्षत्रिनमें ❀ हमपर सही न जावै हाय ॥
इहिविधिसोचतमालवन्तनृप ❀ चन्देलेसे कही सुनाय ।
गरुये नातेके लड़िका हौ ❀ सो तुम चलो हमारे साथ ॥
तौ हम ब्याह करें बेटीको ❀ नातर लौटि जाउ नरनाथ ।
इतनी सुनिकै चन्देले ❀ राजै लियो तुरत बँधवाय ॥
कौनसी शेखीमें डूबे हो ❀ अबहीं भौंरी लेऊँ डराय ।
सुनिके बातें चन्देलेकी ❀ बोले वासुदेव नरराय ॥
डंड खोलिकर मेरे बेटनकी ❀ हमरउ डंड देउ खुलवाय ।
अबहीं ब्याह देउँ बेटीको ❀ मनमें धीर धरो नरनाथ ॥
गङ्गा कीन्ही वासुदेवने ❀ औ चलि भये पुत्रलै साथ ।
जायके पहुँचे राजमहलमें ❀ राजा वासुदेव निजधाम ॥
तुरतै सोचे अपने मनमें ❀ अब धोखेमें बनिहै काम ।
खंदक खुदा दिये महलनमें ❀ तापर पलँग दीन्ह बिछवाय ॥
फिर बुलवायो परीमालको ❀ अबहीं भौंरी देउँ डराय ।
तुम सब लायक चन्द्रवंशमें ❀ बैठो याहि चन्द्र सरदार ॥
जबहीं बैठन चले चँदेले ❀ सन्मुख खड़ी पद्मिनी आय ।
कियो इशारा अपने पतिको ❀ बैठा नाहिं चन्द्र सरदार ॥
कुरसी पड़ी वहाँ बँगलामें ❀ तापर बैठ भूप यहि वार ।
चतुर छबीला चँदेला है ❀ सो मन समझ गयो सनकार ॥
सम्मुख देखा जब मल्हनाको ❀ मानौं चन्द्र ज्योति उजियार ।
रूप छबीली निरखिकामिनी ❀ मोहित भयो चन्द्र सरदार ॥
मनमें सोचे परीमाल नृप ❀ केहि विधिवरौं याहि यहिबार ।
लोभीको धन दै वश करिये ❀ औ मूरखको बात बनाय ॥
नारीजनको अस वश करिये ❀ भूषण वसन अनोखे लाय ।
दुष्ट पुरुषकी करै बड़ाई ❀ ऊँची नीची कहै बुझाय ॥

अधिक तामसी जो मानुष हो ❁ ताको करै निहोरा जाय ॥
समय देखिके मानुष वरतै ❁ जैसे बनै आपनो काम ।
यहिविधि सोचि चँदेले बोले ❁ सुनिये वासुदेव महराज ॥
शीशलचावन परतताहिजग ❁ औ आधीन होत एक साथ ।
जन्मत बेटी जेहि मानुषके ❁ ताकी लाज रामके हाथ ॥
स्यानी बिटिया जेहि घर देखैं ❁ तौ राजनको धर्म नशाय ।
घर अपनेमें कभी न रखिये ❁ देहरी नांघत दोष लगाय ॥
उत्तम मानुष जो जगमें हैं ❁ ब्याहत वर्ष आठवीं मायँ ।
तेहिते मानो बात हमारी ❁ हौ तुम बुद्धिमान नरराय ॥
हँसी खुशीसे निज बेटीको ❁ अबहीं ब्याह देउ करवाय ।
इकली कन्याके जियरा पर ❁ काहे फौज देउ कटवाय ॥
जगमें बेटी गर्व घटावै ❁ शेखी छिनमें देय निकार ।
विधवा होवै जिसकी बेटी ❁ सो तौ महादुखी संसार ॥
रहैं प्रतिष्ठा कैसे जगमें ❁ नित नित चिन्ता बढ़ै अपार ।
इहिविधि समझायो राजाने ❁ बोल्यो वासुदेव परिहार ॥
नीति शास्त्रके जाननहारे ❁ हौ तुम बुद्धिमान नरराय ।
जितनी बात कही तुमने सब ❁ सो हमरे मन गई समाय ॥
जल्दी बुलवाओ पंडितको ❁ लग्न मुहूरत करै विचार ।
सिगरी सखियनको बुलवायो ❁ महलन होय मङ्गलाचार ॥
हुक्म सुनायो मालवन्तने ❁ महुबो नगर देउ सजवाय ।
झाडू लागि गई गलियनमें ❁ औ शतरंजी दई बिछाय ॥
द्वार द्वार पर कलश धराये ❁ बन्दनवारें दई बँधाय ।
आय चँदेले अपने दलमें ❁ तुरतै लई वरात सजाय ॥
चली सवारी परीमालकी ❁ ब्याहन चले चन्द्र सरदार ।
कहँ लग वरणौं मैं शोभाको ❁ मानहुँ चले इन्द्र दरवार ॥
जायकै पहुँचे नगर महोबे ❁ घर घर होय मङ्गलाचार ।
अबिरगुलाल उड़े चारौंदिशि ❁ औ फूलनकी है बौछार ॥

बहुत सुगंधित इतर केवड़ा ❋ जासों सबै मस्त है जायँ ।
छुटैं पिचक्का रंग कैसरिके ❋ गलियाँ महकि महकि रहि जायँ॥
बन्दनवारे घर घर सोहैं ❋ द्वारे कलश सोवरन क्यार ।
बजै नगाड़ा सब गलियनमें ❋ नौबत और झाँझ झनकार ॥
सखियाँ बैठी जो अंटनपर ❋ छज्जन रही लालरी छाय ।
झुकि झुकि देखैं चन्देलेको ❋ ओ मन मोहि मोहि रहिजायँ ॥
धनि धनि माता इनकी कहिये ❋ जेहिकी कोखि लीन्ह अवतार ।
जबहीं पहुँचे जाय चँदेले ❋ तुरतै भयो द्वारको चार ॥
हरे हरे गोबर अँगन लिपायो ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
भीतर सखियाँ मंगल गावैं ❋ बाहर वेदी दई रचाय ॥
जबबीं राजा भीतर पहुँचे ❋ चन्दन चौकी दई डराय ।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ शोभा कछू कही न जाय ॥
कंचन चौकी दई चँदेले ❋ तुरतै नेग होन तब लाग ।
चिन्तामणि पंडित राजाके ❋ अभरन डब्बा दियो सुहाग ॥
अब तौ बेटीको लै आवौ ❋ भाँवरि समय पहूँचो आय ।
तब नाइनको तुरत बुलायो ❋ उबटन बेगि दियो करवाय ॥
फिर अस्नान कराये सब विधि ❋ सिगरे वस्त्र दीन्ह पहिराय ।
पहिरि घांघरा घूमदार है ❋ दक्षिण चीर सजायो आय ॥
गोटा सुनहरी चौगिरदा लगे ❋ झालरि लगी मोतियन क्यार ।
नौसै कलियां कमलरूप हैं ❋ सो लहँगामें देत बहार ॥
नाकमें नथुनीकी शोभा पुनि ❋ लटकन झूमि झूमि रहिजाय ।
पड़ा चौगड़ा है नथुनामें ❋ कांटेदार झलूमा खाय ॥
कर्णफूल काननमें सोहैं ❋ झुमका गेंदा फूल समान ।
माथे बेंदी नीलमणिनकी ❋ उपमा कहत शेष सकुचान ॥
बाकी गहने सब लै लीन्हे ❋ सो मलहनाको दौ पहिराय ।
दुलरी तिलरी शीशफूल औ ❋ वेनी बेन्दी अधिक सुहाय ॥
बाँकी टेढ़ी चौटानी औ ❋ छल्ला छड़ा झाँझ झनकार ।

जुगनूपचलड़िओ सतलड़ो ❀ औ धुकधुकी सोबरन क्यार ॥
चूड़ी और नौगिरी कंकन ❀ पहुँची और पछेला छाप ।
जेहर तेहर अनवट बिछुए ❀ गुजरी किंकिनकी है झांप ॥
कहँ लगि बरणौं मैं गहनोंको ❀ पहिरे सबै मल्हनदे नारि ।
सजिके आई जब बेदी पर ❀ मानों कामदेवकी प्यारि ॥
हाथन मेंहदी पायँ महावर ❀ शोभा एक न वरणी जाय ।
सब शृङ्गार और आभूषण ❀ मानो इन्द्र अप्सरा आय ॥
चन्दन चौकीपर बिठलायो ❀ सिगरे नेग कीन्ह हर्षाय ।
भौंरी परन लगी मड़ये तर ❀ उठिके चले चँदेले राय ॥
पहिली भांवरिके परतै खन ❀ माहिल खैंचि लई तलवार ।
करो जड़ाका जब समुहेपर ❀ मुन्बि जौन चन्द्र सरदार ॥
ढाल अड़ाय दई समुहेपर ❀ ऐसो वीर नवल चौहान ।
दुसरी भाँवरिके परतै खन ❀ जागनि लई शिरोही तान ॥
करो जड़का चँदेले पर ❀ पंडित दीन्ही ढाल अड़ाय ।
सातौभांवरियहिविधिपरिगईं ❀ बहुतै खुशी चँदेले राय ॥
बहुत दान विप्रनको दीन्हों ❀ सिगरे नेगी लिये बुलाय ।
गहनों बांटि दियो नेगिनको ❀ सिगरे याचक गये अघाय ॥
जितनो दायज है महुबेको ❀ ताते दूने दियो लुटाय ।
अनँद बधैया महुबे बाजै ❀ घर घर खुशी रही तहँ छाय ॥
फिरपरिमालकहनअसलागे ❀ सुनिलेउ वासुदेव नरराय ।
करो तयारी तुम बेटीकी ❀ अबहीं बिदा देउ करवाय ॥
खबरैं हुइ गईं रंगमहलमें ❀ बेटी सजिकै भई तयार ।
डोला संगलियोदुलहिनको ❀ लश्कर कूँच दियो करवाय ॥
चली बरात बिदा होइकै ❀ डोला चलो मल्हनदे क्यार ।
नौसे घोड़े आगे चलिभै ❀ पीछे चलिभये एक हजार ॥
और भीढ़ सब संगे चलिभइ ❀ शोभा एक न वरणी जाय ।
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❀ अपनो धुरो दबायो जाय ॥

यह हरकारा दौरत आयो ❀ चन्देलीमें पहुँचो जाय ।
भई तयारी रंगमहलमें ❀ सखियां मंगल रहीं सुनाय ॥
आये चन्देले राजभवनमें ❀ परछनि भई मल्हनदे क्यार ।
दगी सलामी चन्देलीमें ❀ रैयत खुशी भई सब झार ॥
एकदिन मल्हना बोलन लागी ❀ स्वामी सुनौ चँदेले राय ।
नगर महोबा मेरे बापको ❀ तेहिसम नगर जगतमें नायँ ॥
चलिके वास करो महुबेमें ❀ नातर हमहिं देउ पहुँचाय ।
नगर चँदेलीना मोहिं भावत ❀ भूलत नाहिं महोबा ठाँव ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ रानी सुनो हमारी बात ।
बहुत राज है मेरे बापको ❀ अरु है पारसमणि विख्यात ॥
ऐसा पत्थर है हमरे घर ❀ लोहा छुवत सोन है जाय ।
जहँपर स्वामी रहै नारिको ❀ तहँ पर नारि रहै मन लाय ॥
कौन बातकी ह्याँ कमती है ❀ सब कुछ दीन मोहिं करतार ।
कमी होय जो कुछ हमरे घर ❀ सो अब तुरत करौं तैयार ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❀ औ राजासे लगी बतान ।
राज पाटकी ना भूखी हौं ❀ चहिये नाहिं मोहिं धनधाम ॥
मैं तौ वास करौ महुबेमें ❀ नातर प्राण तजौं शक नाहिं ।
बोले राजा तब रानीसे ❀ रानी धीर धरो मनमाहिं ॥
लड़िकै महुबो सरकरि लैहौं ❀ जासों काम होत तत्काल ।
धीरज दैके रनि मल्हनाको ❀ आये सभा रजा परिमाल ॥
सम्मति करिके निजमंत्रीसे ❀ दीन्हों हुक्म चंद्र सरदार ।
बजै नगाड़ा मेरे दलमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❀ क्षत्री तुरत उठे भहराय ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
चौथे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्रिन कूँच दीन्ह करवाय ।

बावन गढ़के सूबा लैके ❋ संगहि चले चन्देले राय ॥
मञ्जिल मञ्जिलके चलिबेमें ❋ महुबो धुरो दबायो जाय ।
तीन कोश जबमहुबो रहिगो ❋ तहँपर डेरा दियो लगाय ॥
फेटैं छुटिगइं रजपूतनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
जीन उतारि धरे घोड़नके ❋ डेरा डारि दिये सब झारि ॥
पाती लिखी तुरत चन्देले ❋ सुनियो वासुदेव नरनाय ।
आधो महुबो हमको दे दो ❋ आधा राज देउ बटवाय ॥
हमसे दुसरी जो तुम करिहो ❋ तो मैं किला लेऊ छिनवाँय ।
इतनी बात लिखी पातीमें ❋ औ धामनको दई गहाय ॥
लैके पाती धामन चलिभौ ❋ औ महुबेमें पहुँचो जाय ।
जहां कचहरी वासुदेवकी ❋ धामन तहां गयो नियराय ॥
सांकरि खैंचति सांड़िनि बैठी ❋ धामन उतरि परो अरगाय ।
लैके पाती धामन चलिभौ ❋ औ ढ्योढ़ीमें पहुँचो जाय ॥
सोने सिंहासन राजा बैठे ❋ ऊपर चौर ढुरै गजगाह ।
सात कदमसे करी बंदगी ❋ पाती रखिदइ सहित उछाह ॥
नजरिबद लिगइ मालवन्तकी ❋ तुरतै पांती लई उठाय ।
पाती बांचत परलै हुइगइ ❋ देही रही सनाका खाय ॥
नाम पढ़त ही चंदेलेको ❋ जियरा अन्तरिक्ष उड़िजाय ।
माहिल पूँछें तब राजासे ❋ ददुआ हाल देउ बतलाय ॥
कहांसे पाती यहु आई है ❋ सो मोहिं कहो बात समुझाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ बेटा सुनौ बात मनलाय ॥
पाती आई चन्देलेकी ❋ आधो महुबो देउ बँटाय ।
दूसरि करिहौ जो हमसे तुम ❋ तौ हम लड़िकर लेंहिं छिनाय ॥
अनुचित कारज जो नर करते ❋ तिनकी जगमें रहै न लाज ।
सज्जन जनसे बैर बिसाहत ❋ तिनकी बिगरै सभा समाज ॥
जो बैरी हो बली आपसे ❋ उहिते लड़े गमावैं जान ।
करैं भरोसा पर नारिनको ❋ उनकी लेवे मौत पिछान ॥

वैर बिसाहा था रावणने ❀ सारा कुनबा नाश कराय ।
वैर किया था कंसासुरने ❀ दीन्हो तेहि जमद्वार चढ़ाय ॥
याते वैर हमैं नहिं करनो ❀ आधो महुबो देउ बंटाय ।
इतनी सुनिकै माहिल जरिगो ❀ अपने लश्कर पहुँचो जाय ॥
फौज सजाय लई माहिलने ❀ हाथिनका नहिं परै शुमार ।
नौलख घोड़ा गढ़ महुबेमें ❀ काठी परी एक ही वार ॥
तोपैं दुइ हजार संग लैके ❀ किल्ले ऊपर दई चढ़ाय ।
त्यारीकरिलइ जबलड़िबेको ❀ माहिल और जगनसीराय ॥
खबरि कराय दई धामनको ❀ माहिल चढ़े वीरपरिहार ।
इतते लश्कर है माहिलको ❀ उतते फौज चँदेले क्यार ॥
पहिलि लड़ाई भइ तोपनकी ❀ दुसरि भई तीरकी मार ।
तिसरी लड़ाई भइ सांगिनकी ❀ ज्वानन खैंचि लीन्ह तलवार ॥
पैदलके संग पैदल भिरि गये ❀ औ असवारनसे असवार ।
दोनों फौजैं संगम हुइगईं ❀ भारी मार चंदेले क्यार ॥
हल्ला बोलि दियो फौजनमें ❀ फाटक काटि कीन्ह घमसान ।
तीन पहरके भइ अरसामें ❀ लशकर काटि करो खरिहान ॥
जीवतपकड़लियो माहिलको ❀ औ जागनि को लियो बंधाय ।
खबरि पहुँच गइ वासुदेवपर ❀ मनमें बहुत गये घबराय ॥
तुरतै चलिभयेतबडचोढ़ीसे ❀ औ आगये चन्देले पास ।
करी खुशामद परीमालकी ❀ जानहु मोहि आपनो दास ॥
मुश्क खोलि देउ तुम बेटनको ❀ औ महुबेमें करो निवास ।
बैठे राज करो महुबेमें ❀ रनको मेटि देउ सब त्रास ॥
सुनिके बातैं वासुदेवकी ❀ महुबे बसे रजा परिमाल ।
राजा वासुदेव उरईमें ❀ बसि गये कुटुम्बसहित तत्काल ॥
कछु दिन बीते वासुदेवनृप ❀ आई निकट मृत्यु जेहिकाल ।
तुरत बुलायो चन्देले को ❀ बोले मालवन्त महिपाल ॥
बड़े शूरमा तुम क्षत्री हो ❀ हौ तुम चन्द्रवंश सरदार ।

हमरे लड़िका हैं यहु दोनौं ❀ जो परिहार वंश उजियार ॥
सदा सहायक इनके रहियो ❀ इनकी खता न मनमें लाय ।
इतनी कहिके प्राण त्यागिनृप ❀ पहुँचे स्वर्ग लोक नरराय ॥
उरई राज कियो माहिलने ❀ सम्मति दई चँदेले राय ।
छोटे भैया नर जगनिकको ❀ जगनेरीमें दियो बसाय ॥
कही चँदेले तब माहिलसे ❀ तुम सुन लेउ प्रेमके भाय ।
जो कछु दौलत तुमको चहिये ❀ सो तुम लेउ सदा मन लाय ॥
बैठे राज करौ उरईमें ❀ तुमरी करिहौं सदा सहाय ।
हाथ जोरि तब माहिल बोले ❀ तुम सुनि लेउ चन्देले राय ॥
बहुत संपदा मेरे बापकी ❀ ताते कछू चाहिये नाय ।
है स्वभाव मेरी चुगलीको ❀ चुगली मेरी माफ हुइ जाय ॥
खता माफकी चन्देलेने ❀ दोनौं भाई दिये समझाय ।
ऐसे बाँट कियो राजाने ❀ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
नगर महोबाको सजवायो ❀ पारसमणिको लियो मँगाय ।
ऐसा पारस पत्थर कहिये ❀ लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
छोटा भाई परीमालका ❀ वाको चन्द्राकर है नाम ।
राज्य चँदेलीका दै दीन्हो ❀ औ रानीको लियो बुलाय ॥
बारह ब्याह किये चन्देले ❀ ऐसो शूर वीर बलवान ।
बारह रानी परीमालकी ❀ एकते एक रूपकी खान ॥
नगर महोबे में सुंदर विधि ❀ भोगो राज रजा परिमाल ।
महुबो सजवायो राजाने ❀ रैयत भई सबै खुशहाल ॥
किला सोबरनका बनवायो ❀ छोनी मोर पंखनकी लाग ।
अरु रतननके बने कँगूरा ❀ मानहुँ इन्द्रधाम सुखधाम ॥
चोपड़की बजार सजवाई ❀ शोभा जासु वरणि नहिं जाय ।
लगीं दुकानैं परम मनोहर ❀ बैठे बड़े बड़े उमराय ॥

बहुतै सुन्दर महल बने हैं ❀ तहँ छज्जनपर सोहैं मोर ।
कटीखिरकियाँमलयागिरिको ❀ मोहित चित्त देखि सब ठौर ॥
नगर महोबेमें चंदेले ❀ बसिगे प्रगट रजा परिमाल ।
युगल साँग है चँदेलेकी ❀ जाकी अनी दहाड़ै काल ॥
जितने योधा भरतखंडमें ❀ सो लड़ि लड़ि कीन्है पामाल ।
बावनगढ़को सरकरि लीन्हों ❀ मानी हार सभी भूपाल ॥
किसी बलीकी मार न खाई ❀ सिगरो हालि गयो संसार ।
रहा मुकाबिल न कोउ योधा ❀ खाँडा सागर धरो पखार ॥
कसम खायली अमर गुरूकी ❀ अब ना गहूँ हाथ हथियार ।
अब जो शस्त्र हाथ पकरूँ मैं ❀ नाशै क्षत्री धर्म हमार ॥
यह परिमाल ब्याहकी आल्हा ❀ जेहि विधि सुनी कही मनलाय ।
राम बनावै तो बनि जावै ❀ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
अबमैं कहिहौं गढ़कनउजमें ❀ जेहि विधि भयो घोर संग्राम ।
भयो स्वयंवर सयोगिनिको ❀ जहँ है अजयपालको धाम ॥
राजा पृथ्वीराज अरु जयचंद ❀ जेहिविधि कीन्ह युद्ध घमसान ।
सो सब आगे वर्णन करिहौं ❀ कहिहौं सकल वीर यशखान ॥

इति परिमालका ब्याह (महोबेकी लड़ाई संपूर्ण)

———

श्रीः

संयोगिनि स्वयंवर

★

पृथ्वीराज और जयचन्दकी लड़ाई

(कन्नौजखंड)

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिके नारायणको ❀ गुरु गणपतिके चरण मनाय ।
मातुशारदाको सुमिरनकरि ❀ सुमिरौं बहुरि कालिका माय ॥
बिनती करिके गोवर्धनकी ❀ लै लै फूलमतीके नाम ।
सुमिरन करिके संदोहिनको ❀ जहँ है अजयपालको धाम ॥
सकल देवतनकोसुमिरनकरि ❀ वेनि चक्कवेके गुण गाय ।
सुमिरन करिके सब देवनको ❀ वीर पँवारो देहुँ सुनाय ॥
कंठ विराजो मातु सरस्वति ❀ भूले अक्षर देहु बताय ।
कहौं स्वयंवर संयोगिनिको ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
देश अयोध्याके मंडलमें ❀ है नैमिषारण्य वनराज ।
ताते दक्षिण रजधानी एक ❀ कनउज नगर राज शिरताज ॥
राजा अजैपाल क्षत्री वर ❀ जो राठौर वंश विख्यात ।
बेनिचक्कवे महाराज जहँ ❀ शोभा तासु वर्णि नहिं जात ॥
जगजाहिर तिनके दुइ बेटा ❀ जयचँद रतीभान महराज ।
लगी सभा जयचँद विराजैं ❀ सोहैं छत्र और शिरताज ॥
देश देशके राजा बैठे ❀ भारी लागि रहा दरबार ।
छत्रपती गढ़पती नरपती ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
सूर्यवंश और चन्द्रवंश के ❀ औ रघुवंशी राजकुमार ।
बूँदी वाले हाड़ावारे ❀ औ परिहार गुटैया टार ॥

भदवरिया गहलौत रुहेले ❁ औ सोलंखि वीर चौहान ।
नगर चँदेलीके चन्देले ❁ नृप राठौर और कछवाह ॥
बँधे बजुल्ला भुजदण्डनमें ❁ तुर्रा लौटि लौटि रहि जाय ।
मोढ़ाके सँग मोढ़ा रगड़ैं ❁ मचियारगड़िरगड़ि रह जाय ॥
सिंह ठवनि क्षत्री सब बैठे ❁ टिहुना धरे नग्न तरवार ।
क्याछबि बरणौं राजसभाकी ❁ मानहु इन्द्रकेर दरबार ॥
नचैं कञ्चनी बारह जोंड़ी ❁ तबलाठुमकिठुमकिरहिजाय ।
समय सुहावन गीत सुनावैं ❁ गावैं भाव बताय बताय ॥
सोलह जोड़ छोकरा नाचैं ❁ गावैं तान मनोहर गान ।
जबहीं झोंक देत नयननकी ❁ क्षत्रिन लगत कामके बान ॥
नाच रंग देखैं सब क्षत्री ❁ नयनन रही लालरी छाय ।
बैठे सैयद गंग पारके ❁ दाढ़ी रही तोंद पर आय ॥
ताही समय महाराजके ❁ मनमें सोच रहो कछु आय ।
ब्याह योग भई संयोगिनि ❁ मैं ताको वर देहुँ मिलाय ॥
सोच समझके राजा जैचँद ❁ निज मंत्रीसे कही सुनाय ।
ब्याहन योग संयोगिनि ह्वइगइ ❁ सम्मति हमहिं देउ बतलाय ॥
यह सुनि ज्वाब दियो मंत्रीने ❁ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ।
चिठिया भेजो सब राजनको ❁ औ कनउजमें लेउ बुलाय ॥
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❁ जासों सिद्ध होय सब काज ।
सम्मतिउचितसुनीतेहिऔसर ❁ बहुते खुशी भये महराज ॥
चिठिया भेजी सब राजनको ❁ अपनी करन तयारी लाग ।
देश देशके राजा आये ❁ कनउज नगरकेर धनिभाग ॥
तम्बू तनिगे सब भागनमें ❁ झण्डन रही लालरी छाय ।
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❁ शोभा कछू कही ना जाय ॥
बिछे बिछौना रेशमवाले ❁ मंडप तुरत भयो तैयार ।
भयो बुलौआ सब राजनको ❁ आये कुरी कुरी सरदार ॥
अपनो अपनो साज सजाये ❁ एकते एक शूर बलवान ।

एक न आये दिल्ली वारे ❋ राजा पृथ्वीराज चौहान ॥
मूरति बनवाई पिरथीकी ❋ सो द्वारे पर दई धराय ।
खबरि भेजि दई रङ्गमहलमें ❋ आवै कुँवरि साजि हर्षाय ॥
चली संयोगिनि तब महलोंसे ❋ शोभा अंग अंग रहि छाय ।
गहने पहिरे नखसे सिखलौं ❋ बनता बरन करी ना जाय ॥
पूर्ण चन्द्रमाके सम आनन ❋ सुन्दर मन्द मन्द मुसकान ।
नैना हिरनाके सम सोहत ❋ बांकी चितवन भौंह कमान ॥
माला लीन्हे दोउ हाथनमें ❋ पहुँची राज सभामें जाय ।
सम्मुहे देखैं ज्यहि राजाके ❋ सो अपनो शिर लेय झुकाय ॥
बेटी ढूँढ़ै पृथ्वीराजको ❋ सो कहु नाहीं परे दिखाय ।
खबरि मिली थी संयोगिनिको ❋ ऐहैं नाहिं पिथौरा राय ॥
मूरत धरिके दरवाजे पर ❋ यह अपने मन कीन्ह विचार ।
देखत सबके संयोगिनिने ❋ माला तुरत दई पहिराय ॥
देखि हाल यह संयोगिनिको ❋ राजा सबै गये खिसियाय ।
कै तौ ब्याह हो पिरथी संग ❋ कै तो जपो राम रट लाय ॥
देश देशके जो राजा थे ❋ सबने कूच दियो करवाय ।
सुनी हकीकत जैचंद राजा ❋ तुरतैं सोय रहो उर छाय ॥
बेगि बुलायो चन्द्रभाटको ❋ औ यह कही कन्नौजी राय ।
कैसे राजा पृथी राज हैं ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
बोले चन्द्रभाट राजासे ❋ तुम सुनि लेहु कन्नौजी राय ।
हैं वरदानी शिव शङ्करके ❋ अरु हैं शब्द वेधि चौहान ॥
महावीर हैं दिल्ली वारे ❋ रणमें एक शूर बलवान ।
गज भरि छाती पृथीराजकी ❋ शंका करैं कालकी नाहिं ॥
ऐसे महाराज दिल्ली पति ❋ जीतैं अवशि शत्रु रण माहिं ।
इतनी सुनिके चन्द्रभाटसे ❋ राजा जैचँद लगे बतान ॥
हमहिं दिखावो पृथ्वीराजको ❋ कैसे महाराज चौहान ।

कूच करायो चंद्र भाटने ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
करो बन्दगी महाराजको ❋ बहुतै खुशी भये नरराय ।
पृथीराज तब पूछन लागे ❋ अपनो हाल कहो कविराज ॥
चन्द्र भाट तब बोलन लागे ❋ सुनिये पृथीराज महाराज ।
रचो स्वयंवर संयोगिनिको ❋ जैचँद महाराज दरबार ॥
देश देशके राजा आये ❋ एकते एक शूर सरदार ।
तुम्हरी मूरति नृप बनवाई ❋ लो द्वारे पर दई धराय ॥
भयो बुलौवा संयोगिनिको ❋ माला लिये पहुँची आय ।
सिगरे राजनपै फिरि आई ❋ औ द्वारे पर पहुँची आय ॥
सूरत देखी दरवाजे पर ❋ माला तुरत दई पहिराय ।
कै तौ क्वांरि रहौं जन्मभर ❋ कै पिरथी सँग होय विवाह ॥
सांची सांची यह भाषति हौं ❋ मनमें यही हमारे चाह ।
देश देशके राजा चलि भये ❋ जैचँद सोच रहो उर छाय ॥
हमहिं बुलायो तब जैचंदने ❋ पूछो तुमहिं कनौजी राय ।
कही हकीकतिसबतुम्हरी हम ❋ भेजो तबहिं मोहिं नरनाथ ॥
तुमहिं बुलायो है देखनको ❋ सो तुम चलो हमारे साथ ।
इतनी सुनिके चन्द भाटसे ❋ बहुतै खुशी भये नरनाह ॥
अब हम लेहैं संयोगिनिको ❋ मनमें छाय गयो उत्साह ।
दासी पहुँची थी जो हमरी ❋ ताने कारज दियो बनाय ॥
यह मन सोचे पृथीराज तब ❋ चन्द्र भाटसे कही सुनाय ।
धीरज राखो अपने मनमें ❋ अबहीं चलि हैं साथ तुम्हार ॥
हुक्म दे दियो पृथीराजने ❋ सिगरे शूर होयँ तैयार ।
तुरत बुलायो हरी सिंहको ❋ ठाकुर चलो हमारे साथ ॥
देवी मरहठाको बुलवावौ ❋ तुमहू चलौ साथ नरनाथ ।
सब सामन्त शूर सँग लीन्हे ❋ औ कनउज भये तैयार ॥
बोले पृथीराज कान्हरसे ❋ चाचा सुनलो बात हमार ।
लश्कर लैयो तुम पीछेते ❋ लीजो साथ शूर बलवान ॥

आगे जैहैं हम कारज हित ❋ यह कहि चले वीर चौहान ॥
आठ रोजको मंजिलि करके ❋ गढ़ कनउजमें पहुँचे जाय ।
बाना बदलो पृथीराजने ❋ चन्दभाटको संग लिवाय ॥
लगी कचहरी जहँ जयचँदकी ❋ पहुँचे जाय चन्द कविराज ।
आगे आगे चन्दभाट ❋ पीछे पृथीराज नरराय ॥
करी बन्दगी चन्दभाटने ❋ जयचँद चौकी दई डराय ।
चंदभाट बैठे चौकीपर ❋ पीछे खड़े पिथौराराय ॥
नचैं कञ्चनी वा बँगलामें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
मचियाकेसँग मचिया रगड़ै ❋ मोढ़ा रगड़िरगड़ि रहिजाय ॥
शूरवीर योधा सब बैठे ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार ।
क्या छबि बरणौं राजसभाकी ❋ मानहुं इन्द्र केर दरबार ॥
मनमें सोचैं राजा जयचँद ❋ क्या यह खड़े पिथौराराय ।
मूँछपै हाथ धरो जैयचँदने ❋ चंदभाटने कही सुनाय ॥
हाथ न धरियो तुम मूछनपै ❋ इस उनहारि पिथौराराय ।
कड़ियाँ तड़कीं पृथीराजकी ❋ नयनन रही ललरी छाय ॥
सूरति देखत राजा जैचँद ❋ मनमें सोचि सोचि रहि जायँ ।
कैसे जाँच होय पिरथीकी ❋ यह तो चाकर परै दिखाय ॥
कोइ कोइ क्षत्री मनमें सोचैं ❋ मानो खड़े बीर चौहान ।
चन्दभाटको यह चाकर है ❋ पै यह जानि परत बलवान ॥
मतो विचारो तब जैचँदने ❋ बांदी जौन पिथौरा क्यार ।
ताहि बुलावौं सो देखतखन ❋ करिहैं लाज राज दरबार ॥
भयो बुलौवा तब बांदीको ❋ सो बीरा लै पहुँची आय ।
खड़ो देखिके पृथीराजको ❋ मनमें सोच रह्यो अतिछाय ॥
जो मैं लाज करूँ पिरथीकी ❋ तौ बाँधि जायँ पिथौराराय ।
आँखी मींजति गई सभामें ❋ राजै बीरा दियो गहाय ॥
शिर खुजलावति बांदी लौटी ❋ औ रनिवास पहुँची जाय ।
ना कछु जानिपरी महफिलमें ❋ जानि न परे पिथौरा राय ॥

राजा जैचँद अपने मनमें ❋ सोचैं बार बार घबराय ।
बिना बिचारे जो कछु करिहैं ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
जैचँद बोले सेनापतिसे ❋ बागन इनको देउ टिकाय ।
तीनौ चलिभये तब ड्योढ़ीते ❋ दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
मूरत देखी पृथीराजने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
स्याह पुतरियांलालीह्वैगईं ❋ औ जरि गये पिथौराराय ॥
बागमें पहुँचे चन्दभाट जब ❋ अपने तम्बू दिये तनाय ।
खबरि भेजि दइ चन्दभाटने ❋ आये यहां पिथौराराय ॥
सुनी खबरि जब संयोगिनिने ❋ आये पृथीराज नरराय ।
डेरा कीन्हो है बागनमें ❋ यह सुनि बहुत खुशीह्वै जाय ॥
सब सिंगार कियो पद्मिनिने ❋ पहिरो भूषण बसन बनाय ।
थार सीबरनको सजवायो ❋ बीरा तामें धरे बनाय ॥
साथ सहेलिनको लैलीन्हीं ❋ औ पलकीमें बैठी जाय ।
एक घरीको अरसा गुजरो ❋ सो बागनमें पहुँची जाय ॥
जहँपर बैठे पृथीराज थे ❋ तहँपर गई पद्मिनी नारि ।
पास पहुँची जब राजाके ❋ दीन्हो डारि कंठमें हार ॥
बीरा देके पांच पानको ❋ तुरत आरती धरी उतारि ।
लई बिजनिया फूलनवारी ❋ पृथीराजपै करै बयारि ॥
फिरिसंयोगिनि बोलन लागी ❋ सुनिये महाराज नरनाथ ।
हम प्रण कीन्हो है अपने मन ❋ करिहैं ब्याह तुम्हारे साथ ॥
नातर क्वाँरी रहौं जन्मभर ❋ नाहीं करौं ब्याहकी बात ।
इतनी सुनिके पिरथी बोले ❋ प्यारी सुनौ हमारी बात ॥
जो कछु मरजी नारायणकी ❋ ह्वैहै वही रची करतार ।
धीरज राखो अपने मनमें ❋ गुजरै घरी घरी पर वार ॥
डोला लैहैं अब हम तुमरो ❋ औ दिल्लीमें रखिहैं जाय ।
इतनी बानी सुनी पद्मिनिने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वै जाय ॥
चलीसंयोगिनि तब बगियाते ❋ औ महलनमें पहुँची जाय ।

सुनी खबरिया राजा जैचंद ❀ आये यहां पिथौराराय ॥
करी तयारी तब राजाने ❀ दीन्हो हुक्म कनौजीराय ।
दुइसै घोड़ा त्यार कराये ❀ हाथी तीस लिये सजवाय ॥
चीरा कलँगी शाल दुशाला ❀ मोहनमाला और रुमाल ।
थार सोबरनको सजवायो ❀ तामें धरे जवाहर लाल ॥
संग लेलियो सब काहूको ❀ औ चलिभये कनौजीराय ।
भेंट देनको राजा जैचंद ❀ फुल बगियामें पहुँचे जाय ॥
जबहीं देखो चन्दभाटने ❀ पृथीरायसे कही सुनाय ।
खड़े होउ अब तुम जल्दीसे ❀ बीरा राजे देउ गहाय ॥
बीरा लेके पृथीराजने ❀ सो जैचंदको दीन्हो जाय ।
हाथ दाबिदो तब जैचंदको ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
लोहू देखत परलै ह्वैगइ ❀ औ जरि गये कनौजीराय ।
चन्दभाटको यह चाकर नहिं ❀ यांको नाम पिथौराराय ॥
भेंट जो लाये थे देवेको ❀ चन्दभाटको दई गहाय ।
तुरतैं चलिभे राजा जैचन्द ❀ औ शूरनको लियो बुलाय ॥
हुक्म दे दियो राजा जैचंद ❀ अपनो डंका देउ बजाय ।
जान न पावैं दिल्ली वाले ❀ सबके मूंड़ लेउ कटवाय ॥
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❀ आगे बढ़े पिथौराराय ।
तीन कोस कनउजते उत्तर ❀ अपनो डेरा दियो लगाय ॥
कागद लीन्हो कलपीवारो ❀ अपनो कलमदान मंगवाय ।
लिखी हकीकत कान्हदेवको ❀ चाचा याहि पढ़ो मनलाय ॥
जल्दी आवो तुम दिल्लीते ❀ ह्वैहै यहां जङ्ग मैदान ।
पाती लैके धामन चलिभौ ❀ कान्हर मिले राहमें आय ॥
पाती दीन्ही तब धामनने ❀ कान्हर लीन्ही हाथ बढ़ाय ।
पाती पढ़ते कान्हदेवने ❀ अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
धावा करिदेउ तब जल्दीसे ❀ औ कनउजको लेउ दबाय ।
तीनि रोजकी मञ्जिलकरिके ❀ औ कनउजमें पहुँचे जाय ॥

तीनि लाखलश्करदिल्लीको ❀ एकसौ आठ सूर सरदार ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ बहुतै खुशी भये महाराज ॥
कान्हदेव औ हरी सिंहसे ❀ बोले पृथीराज महाराज ॥
अब तुम रारिकरौ कनउजमें ❀ औ डोलाको लेउ खंदाय ।
डोला लेहैं संयोगिनिको ❀ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
इतनी कहिके पृथीराजने ❀ अपनो घोड़ा लियो मंगाय ।
सो सजवाय लियो जल्दीसे ❀ ताप फांदि भयो असवार ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❀ पहुंचे नदी किनारे जाय ।
जहां महल था संयोगिनिको ❀ मछली तहां चुगावन लाग ॥
देखि संयोगिनि पृथीराजको ❀ तब बांदीको लियो बुलाय ।
थार भरायो एक मोतिनसे ❀ सो बांदीको दियो गहाय ॥
बांदी चलिभइ मोती लैके ❀ पृथीराजपै पहुंची जाय ।
बोले पृथीराज बांदीसे ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
कौने भेजो है तुमको यहँ ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ।
हाथ जोरिके बांदी बोली ❀ सुनियो महाराज चौहान ॥
हमहिं पठायो संयोगिनिने ❀ मोतियन थार देउ पहुंचाय ।
बैठि संयोगिनि है खिरकीमें ❀ सो तुम देखि लेउ महाराज ॥
नजरि बदलि गई पृथीराजकी ❀ संयोगिनि तन रहे निहार ।
ऐंड़ लगाय दई घोड़ाके ❀ सतखंडा पर पहुंचे जाय ॥
सूरत देखी पृथीराजकी ❀ पद्मिनि उठी भरहरा खाय ।
माला लैके संयोगिनिने ❀ पृथीराजको दई पहिराय ॥
हाथ जोरिके पद्मिनि बोली ❀ स्वामी सुनौं हमारी बात ।
एक अन्देशा मोहि आवत है ❀ जियरा सोचि सोचि घबराय ॥
लश्कर भारी है कनवजको ❀ थोड़ी फौज तुम्हारे साथ ।
कैसे जितिहौ तुम कनवजमें ❀ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
दियो भरोसा पृथीराजने ❀ प्यारी धरो धीर मनमाहिं ।
मुहरा मरि हैं हम जैचन्दको ❀ तुमको दिल्ली दिहैं दिखाय ॥

इतनी कहिके धीरज दीन्हो ❀ औ घोड़ापर भये सवार ।
चारि घरीको अरसा गुजरो ❀ अपनी फौज पहूँचे जाय ॥
हुक्म देदियो सेनापतिको ❀ लश्कर तुरत होय तैयार ।
यहांकि बातैं तौ यहँ छोड़ौ ❀ अब कनवजको सुनौ हवाल ॥
तुरत बुलायो सेनापतिको ❀ औ यह कही कनौजीराय ।
जल्दी सजवावो लश्करको ❀ मारू डंका देउ बजाय ॥
इतनी सुनिके रायलंगरी ❀ लश्कर तुरत पहूँचो जाय ।
हुक्म देदियो लश्करमें ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ॥
पहिल नगाड़ाके बाजत खन ❀ क्षत्री सबै भये तैयार ।
दुसर नगाड़ामें जिनबन्दी ❀ तिसरे बांधि लिये हथियार ॥
चौथे डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
चारि घरी केरे अरसामें ❀ पहुंचो समरभूमिमें जाय ॥
ठाढ़ी करखा बोलन लागे ❀ घूमन लागे लाल निसान ।
दोनों लश्करके अन्तरमें ❀ रहिगो आध कोस मैदान ॥
हुक्म दे दियो पृथीराजने ❀ सुनलो हरीसिंह सरदार ।
इज्जत राखि लेउ दिल्लीकी ❀ मारो फौज कनौजी क्यार ॥
इतनी सुनिके हरीसिंहने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
राय लंगरीने ललकारो ❀ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
डोला मँगाओ तुम पद्मिनिको ❀ औ खेतनमें देउ धराय ।
ज्याहिकी जीति होय दंगलमें ❀ सो डोलाको लेय उठाय ॥
सुनी बात यह हरीसिंहकी ❀ देही अग्नि ज्वाल ह्वै जाय ।
राय लंगरीने ललकारो ❀ सुनलो हरीसिंह चौहान ॥
डोला मिलिबेको नाहीं है ❀ चाहै कोटिक करौ उपाय ।
लड़े न जितिहौ तुम कनवजमें ❀ नाहक प्राण गँवायो आय ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वै गौ ❀ हल्ला तुरत दियो करवाय ।
खैंचि सिरोही लइ ज्वाननने ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
पैदलके सँग पैदल भिरिगै ❀ औ असवारनते असवार ।

हौदाके सँग हौदा अभिरे ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ॥
चलै सिरोही दोनों दलमें ❋ सबके मारु मारु रट लाग ।
चारि घरी भरि चली सिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
चार लाख तौ पैदल गिरिगे ❋ घोड़ा गिरिगै आठ हजार ।
हाथी गिरिगे तहँ बारहसै ❋ दिल्लीवारे दिये गिराय ॥
भजत सिपाही कनवजवारे ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
झुके सिपाही दिल्लीवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
भगत सिपाही अपने देखे ❋ राय लङ्करी कही सुनाय ।
जौन सिपाही रणते भागे ❋ ताके जीवनको धिक्कार ॥
नरक पड़ै सो जग दुख भोगै ❋ होवै नमक हरामी नावँ ।
ताते तुमको समझावत हौं ❋ कोई न धरो पिछारी पाँव ॥
समर खेतमें जो मरि जैहो ❋ हुइहै युगन युगन लौं नाम ।
खटिया परिके जो मरि जैहो ❋ कलिमें कोई न लैहै नाम ॥
जंग जीतिके जो घर चलिहो ❋ तुमरी तलब दिहैं बढ़वाय ।
दिया बढ़ावा रजपूतनको ❋ सबको आगे दियो बढ़ाय ॥
धीरजसिंह बढ़े आगेको ❋ हरीसिंहसे कही सुनाय ।
सम्हरो ठाकुर तुम घोड़ापर ❋ तुमरो काल पहूँचो आय ॥
घोड़ा बढ़ायो हरीसिंहने ❋ औ धीरजको दइ ललकार ।
दोनों शूरन झुरमुटह्वइगो ❋ धीरज खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका हरीसिंहपर ❋ ताने दीन्ही ढाल अड़ाय ।
तीन सिरोही हनि हनि मारी ❋ बचिगो शूर पिथौरा क्यार ॥
चौथी चोट करी धीरजने ❋ खाली मूठ हाथ रहिजाय ।
सोचै धीरज अपने मनमें ❋ अब ना बचिहैं प्राण हमार ॥
जौन सिरोहीसे गज काटे ❋ औ घोड़नके चारों पांव ।
तौन सिरोही धोखा दै गइ ❋ अब धौं कहा रची करतार ॥
हरीसिंहने तब ललकारो ❋ धीरज खबरदार ह्वइ जाउ ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लैलो तुम गाज हमार ॥

चोट चलाई हरीसिंहने ❁ धीरज ढाल अड़ाई आय ॥
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❁ गद्दी कटि मखमलकी जाय ।
शीश काटि लौ हरीसिंहने ❁ धीरज जूझि गये मैदान ॥
तीनिपहर भरि चली सिरोही ❁ संझाकाल रहो नियराय ।
सुनीखबरि जब राजा जैचंद ❁ धीरज जूझि गये रणमाहिं ॥
शङ्का मानी तब राजाने ❁ मनमें सोच रही बहु छाय ।
बंद लड़ाई भइ तेहि औसर ❁ सबने बन्द किये हथियार ॥
करो बसेरो राति भये पर ❁ भोरहिं उठे कनौजीराय ।
राय लंगरीको बुलवायो ❁ अरु यह हुक्म दियो फरमाय ॥
डोला सजावौ संयोगिनिको ❁ रणखेतनमें देउ धराय ।
जबहीं आवैं दिल्लीवारे ❁ सबके मूँड लेउ कटवाय ॥
हमा जमाको तुरत बुलायो ❁ तिनते जैचंद कही सुनाय ।
खबरदार रहियो डोला पर ❁ रखियो लाज हमारी जाय ॥
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै ❁ तौ सब जैहै काम नशाय ।
खबरि भेजिदइ राजमहलमें ❁ डोला तुरत होय तैयार ॥
डोला सजिगौ संयोगिनिको ❁ आयो समर खेत तत्काल ।
जितने शूर हते कनवजके ❁ सो डोलापर भये तयार ॥
यक हरिकारा दौरत आयो ❁ पृथीराजसे कही सुनाय ।
डोला आयो है खेतनमें ❁ अब तुम खबदार ह्वै जाउ ॥
इतनी सुनिकै दिल्लीपतिने ❁ अपने शूर लिये बुलवाय ।
हुक्म देदिये सब शूरनको ❁ अब डोला पर होउ तैयार ॥
डोला जैहै जो दिल्लीको ❁ दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ।
ऐसो समय नहीं मिलिहै फिरि ❁ रणमें खेलो जूझ अघाय ॥
इतनी सुनिकै सब शूरनने ❁ अपने बांधि लिये हथियार ।
धावा करिदौ सब सूरनने ❁ पहुँचे समर खेतमें जाय ॥
हरीसिंह बढ़िगे आगेको ❁ हमा जमासे कही सुनाय ।
डोला धरि तुम देउ खेतनमें ❁ जो जीतै सो लेय उठाय ॥

राय लंगरीने ललकारो ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
कौनसा क्षत्री है दुनियामें ❋ जो यह्नु डोला लेउ उठाय ॥
खेदिके मारौं मैं दिल्ली लौं ❋ सबके शीश लेउँ कटवाय ।
बातन बातन वतबढ़ ह्वइगौ ❋ ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
हल्ला ह्वइगो दोनों दलमें ❋ क्षत्री वीर रूप ह्वइ जायँ ।
हमा जमा बोले क्षत्रिनसे ❋ क्षत्रिउ सुनो हमारी बात ॥
जान न पावैं दिल्लीवाले ❋ सबके मूँड़ लेउ कटवाय ।
धावा करिदौ सब क्षत्रिनने ❋ सबके मारु मारु रटि लागि ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ खटखट चलन लगी तलवार ।
चले जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बरदवानको ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ।
कटि कटि शूर गिरैं धरती पर ❋ उठि उठि रुंड करैं तलवार ॥
चारि घरी भरि चली सिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
कटे भुसुण्डा तहँ हाथिनके ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़नके ❋ ऐसी विषम चली तलवार ।
गोविन्द राजाने ललकारो ❋ हैं जो शूर पिथौरा क्यार ॥
डोला धरिदेउ संयोगिनिको ❋ चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ।
इतनी सुनिकै हमा जमाने ❋ तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
झुरमुट ह्वइगो तब दोउनको ❋ अपनी अपनी चोट चलाय ।
चोट चलाई हमाजमाने ❋ अरुगोविन्दकोदियोगिराय ॥
जगो कबन्ध तहां गोविन्दको ❋ बहुतक क्षत्री दियो गिराय ।
लोलको झण्डा फिरो रुंड पै ❋ धरती गिरो रुंड तत्काल ॥
हमा जमापै हरीसिंहने ❋ अपनो तेगा दियो चलाय ।
छूटि जनेवा गौ तुरतै तब ❋ राय लंगरी पहुँचो आय ॥
तब ललकारो हरीसिंहको ❋ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
चोट आपनी तुम करलीजो ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछ्ताउ ॥
इतनी सुनिकै हरीसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ।

करो जड़का जब समुहे पर ❋ ताने दीन्ही ढाल अड़ाय ।
तीनि सिरोही हनि २ मारी ❋ राय लंगरी गये बचाय ॥
राय लंगरीने ललकारो ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
चोट तुम्हारी हम सह लीन्ही ❋ अब तुम खबरदार है जाउ ॥
इतनी कहिके तेगा मारो ❋ हरीसिंहको दियो गिराय ।
देखि हकीकत राजा कुंजर ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
राय लंगरीको ललकारो ❋ काहे दैहो प्राण गंवाय ।
डोला जैहै यह दिल्लीको ❋ चुप्पै लौटि कनौजै जाउ ॥
इतनी सुनिके राय लंगरी ❋ अपनो तेगा लियो निकारि ।
करो जड़ाका जब कुंजरपर ❋ खाली मूठ हाथ रहिजाय ॥
चोट चलाई नृप कुंजरने ❋ राय लंगरिहिं दियौ गिराय ।
सुनी खबरिया राजा जैचंद ❋ मारो गयो लंगरीराय ॥
परो सनाका तब लश्करमें ❋ जैचंद सोचि सोचि रहिजायँ ।
चार शूर कनवजके जूझे ❋ जूझे तीन पिथौरा क्यार ॥
बहुतक सेना गढ़ कनवजकी ❋ दिल्ली वालेन दई गिराय ।
क्षत्री बूड़ि गये लोहूसे ❋ डोला रक्त वरण है जाय ॥
कठिन लड़ाई भइ डोलापर ❋ बिपता कछू कही ना जाय ।
सोचि समझिके राजा जैचंद ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा हमरे दलमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ।
हुकुम पायके बजो नगाड़ा ❋ तुरतै फौज भई तैयार ॥
तीन लाख लश्कर सजवायो ❋ अपुना चले कनौजीराय ।
चारि घरीको अरसा गुजरो ❋ पहुँचे समर भूमिमें जाय ॥
जैचंद बोले सब क्षत्रिनसे ❋ यारो रखियो धर्म हमार ।
जो कहुँ डोला दिल्ली जैहै ❋ बूड़ै सात साखिको नाम ॥
नमक हमारो तुम खायो है ❋ अब गाढ़ेमें आवौ काम ।
पांव पिछारूको जो धरिहौ ❋ तो रजपूती जाय नशाय ॥
दियो बढ़ावा सब क्षत्रिनको ❋ क्षत्री बीर रूप हइ जायँ ।

खबरिपहुँचि गइ पृथीराजको ❋ आये साजि कनौजीराय ॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ कान्ह देवको लियो बुलाय ।
यहकहि दीन्ही उन कन्हरसे ❋ चाचा सुनौ हमारी बात ॥
कठिन लड़ाई है मुर्चापर ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ।
साथमें आये राजा जयचँद ❋ भारी शूर कनौजीराय ॥
डोला जैहै जो कनउजको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
दाग़ु लागि है चौहानोमें ❋ बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
इतनी सुनिकै कान्हदेवने ❋ अपनो लश्कर दियो बढ़ाय ।
बजे नगाड़ा दोनों दलमें ❋ क्षत्रियन खैंचिलई तलवार ॥
बढ़े सिपाही कनउजवाले ❋ खट खट चलन लगी तलवार ।
एक शूर कनउजके कहिये ❋ जो पंजून कनौजी क्वार ॥
बड़ो शूरमा थो जैचँदको ❋ रणमें कठिन करे तलवार ।
ज्यों किसान खेतीको काटै ❋ कतरैं जैसे तँबोली पान ॥
कठिनलड़ाईभइत्यहिअवसर ❋ अन्धा-धुंध चली तलवार ।
रंग बिरंगो डोला ह्वइगो ❋ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
पृथीराज कुंजरको टेरो ❋ औ यह बात कही समुझाय ।
कठिन लड़ाई है जयचँदकी ❋ अब गाढ़ेमें आवौ काम ॥
बड़ा भरोसो मोहि तुम्हारो है ❋ सो तुम करौ सामना आय ।
इतनी सुनिकै कुंजर बरने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
एक खेत जब डोलारहिगौ ❋ जहँ पंजून शूर सरदार ।
कुञ्जर बोले पंजूनीते ❋ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ॥
कैवर लीन्हों कुञ्जर बरने ❋ गांसी सेर भरे की खाय ।
मारो कैबर पंजूनीके ❋ सीधो निकरि गयो वा पार॥
भारी शूर गिरो कनवजके ❋ कुञ्जर डोला लौ उठवाय ।
पहुँचो डोला पृथीराजपै ❋ पिरथी हुक्म दियो करवाय ॥
देर करनकी नहिं ब्यरिया है ❋ डोला आगे देउ बढ़ाय ।
डोला बढ़िगौ तब आगेको ❋ अपनो डंका दियो बजाय ॥

जीतिको डंका जब बजवायो ❀ जयचँद गये सनाका खाय ।
आठकोस जब डोला बढिगौ ❀ जयचँद डोला घेरो जाय ॥
आगे आगे पृथीराज हैं ❀ पाछे चले कनौजीराय ।
कबहुँक डोला जैचँद छीनैं ❀ कबहुँक पिरथीलेयँ छिनाय ॥
जौन शूर छीनै डोलाको ❀ राखैं पांच कोश पर जाय ।
कोश पचासक डोला बढिगौ ❀ बहुतक क्षत्री गये नशाय ॥
लड़त भिड़त दोनोंदल आवैं ❀ पहुँचे सोरौंके मैदान ।
राजा जैचंदने ललकारो ❀ सुन लो पृथीराज चौहान ॥
डोला लै जैहौ चोरीसे ❀ तुम्हारो चोर कहैहै नाम ।
डोला धरि देउ तुम खेतनमें ❀ जो जीतै सो लेय उठाय ॥
इतनी बात सुनी पिरथीने ❀ डोला धरो खेत मैदान ।
हल्ला ह्वइगौ दोनों दलमें ❀ तुरतै चलन लगी तलवार ॥
झुरमुट ह्वइ गयो दोनों दलको ❀ कोता खानी चलै कटार ।
कोई कोई मारै बन्दूकनते ❀ कोइ कोइ देय सेलको घाव ॥
भाला छूटे नागदौनिके ❀ कहुँ कहुँ कड़ाबीनकी मारु ।
जैचँद बोले सब क्षत्रिनसे ❀ यारो सुनलो कान लगाय ॥
सदा तुरैया न बन फूलै ❀ यारौ सदा न सावन होय ।
सदा न माना उरमें जनिहैं ❀ यारौ समय न बारम्बार ॥
जैसे पात टूटि तरवरसे ❀ गिरिकै बहुरि न लागै डार ।
मानुष देही यह्व दुर्लभ है ❀ ताते करौ सुयशको काम ॥
लड़िकै सन्मुख जो मरिजैहों ❀ ह्वै है जुगन २ लौ नाम ।
झुके सिपाही कनउज वाले ❀ रणमें कठिन करै तलवार ॥
अपने पराओ न पहिचानै ❀ जिनके मारुमारु रट लाग ।
झुके शूरमा दिल्लीवाले ❀ दोनों हाथ लिये हथियार ॥
खट खट खट खट तेगा बोलै ❀ बोलै छपक छपक तलवार ।
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
कठिन लड़ाई भइ डोलापर ❀ तहँ बहि चली रक्तकी धार ।

ऊँचे खाले कायर भागे ❋ और रण दुलहा चले पराय ॥
शूर पैंतिसक पृथीराजके ❋ कनउजवारे दिये गिराय ।
एक लाख जूझे जैचँदके ❋ दिल्लीवारे दिये गिराय ॥
ऐसो समर भयो सोरौंमें ❋ अन्धाधुंध चली तलवार ।
आठ कोस पर डोला पहुँचे ❋ जीते जंग पिथोरा राय ॥
यक हरिकारा दौरत आवे ❋ रतीभानपर पहुँचो जाय ।
डोला लैगे दिल्लीवारे ❋ बहुतक क्षत्री भूमि गिराय ॥
सुनी खबरि जब रतीभानने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
हुक्म दे दियो सब लश्करमें ❋ तुरतै फौज होय तैयार ॥

रतीभानकी लड़ाई



सुमिरन करके नारायणको ❋ जगदंबाके चरण मनाय ।
समर बखानौ रतीभानको ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ॥
बजो नगाड़ा गढ़ कनउजमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
लश्कर चलिभौ रतीभानको ❋ डङ्का होन गोलमें लाग ।
धावा करिकै गढ़कनउजमें ❋ औ डोलाको घेरो जाय ॥
राति बसेरो करि खेतनमें ❋ भोरहि उठे बीर रतिभान ।
हुक्म देदिया सब क्षत्रिनको ❋ यारौ खबरदार होइ जाउ ॥
डोला जैहै जो दिल्लीको ❋ तो सब जैहै काम नशाय ।
हाथी आयो रतीभानको ❋ हौदा धरो सोबरन क्यार ॥
गद्दा परिगो मखमलवारो ❋ रेशम रस्सा दियो कसाय ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ गुरुगणपतिके चरण मनाय ॥
हाथी चढ़ि गये रतीभानजी ❋ तबहों असगुन भयो अगार ।
बोले पंडित रतीभानते ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
असगुन ह्वैगो है समुहेपर ❋ अब तुम लौटि जाउ महराज ।
काम तुम्हारो ना जैबेको ❋ इतनी मानो बात हमार ॥

यह सुनि बोले रतीभानजी ❋ पंडित सुनौ हमारी बात ।
शगुन बिचारैं बनिया बाटू ❋ जो धरिमौर बिआहन जायँ ॥
शगुन बिचारैं ना क्षत्रीजन ❋ जो रणचढ़िकै लोह चबायँ ।
पांव पिछारू हम ना धरिहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥

कुंडलिया

साईं समौ न चूकिये, खेलि शत्रुसों सार ।
दांव परे नहिं चूकिये, तुरत डारिये मार ॥
तुरत डारिये मार नरद काची करि दीजे ।
काची होय तो होय, जीति जगमें यश लीजे ॥
कहि गिरिधर कविराय युगन ऐसे चलि आई ।
सौ सौ सौहैं खाय शत्रुको मारै साईं ॥

डोला जैहै जो दिल्लीको ❋ बुड़ि है सात साखिको नाम ॥
दाग़ु लागि है राजपूतीमें ❋ औ जग ह्वैहै हँसी हमारि ।
हाथी बढ़ायो रतीभानने ❋ औ डोलाको घेरो जाय ॥
समुहे पहुंचे सो मुकुन्दके ❋ भारी जाय दई ललकार ।
डोला जैहै न दिल्लीको ❋ चाहे मूड़ मारि मरि जाउ ॥
यह सुनि बोले मुकुन्द ठाकुर ❋ तुम सुनि लेउ कनौजीराय ।
डोला लौटनको नाहीं हैं ❋ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
यह सुनि बोले रतीभान तब ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
डोला धरदेउ रनखेतनमें ❋ जो जीतै सो लेय उठाय ॥
इतनी सुनिके मुकुन्द ठाकुर ❋ डोला खेतन दियो धराय ।
झुर्मुट ह्वैगो दोनों दलमें ❋ खट खट चलन लगी तलवार ॥
रतीभान बोले मुकुन्दसे ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
चोट चलाइ लेउ अपनी तुम ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनिकै मुकुन्द ठाकुर ❋ अपनो भाला दियो उठाय ।
चोट चलाई रतीभानपर ❋ रतीभान गै चोट बचाय ॥

खैंचि शिरोही लइ मुकुन्दने ❋ लैके रामचन्द्रको नाम ।
करो जड़ाका जब चेहरापर ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
टूटि शिरोही गइ ठाकुरकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
मुकुन्द सोचे अपने मनमें ❋ हमरो काल रहा नगचाय ।
जौन शिरोहीसे गज काटे ❋ औ घोड़नके चारों पांव ॥
तौन शिरोही धोखा दैगइ ❋ हम पर रूठि गयो भगवान ।
हाथी बढ़ायो रतीभानने ❋ औ मुकुन्दसे कही सुनाय ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं ❋ अब लैलो तुम गाज हमार ।
इतनी कहिकै रतीभानने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
चेहरा मारो त्यहि समुहेपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ गद्दीकटि मखमलकी जाय ॥
कटिगइ कड़ियां हैं बख्तरकी ❋ उनको छूटि जनेबा जाय ।
मुकुन्द जूझि गये डोलापर ❋ पिरथी मनमें गये घबराय ॥
बड़ो शूरमा यहू मारो गौ ❋ को गाढ़ेमें ऐहै काम ।
जितने शूर हते पिरथी संग ❋ सबसे कहै वीर चौहान ॥
डोला आयो जो फिर जैहै ❋ तौ सब जैहै काम नशाय ।
डोला छीन लेउ जल्दीसे ❋ मारौं शूर कनौजी क्यार ॥
झूके शूरमा दिल्ली वाले ❋ सुनिकै हुक्म पिथौरा क्यार ।
झुरमुट होइगौ दोनों दलमें ❋ खटखट चलन लगी तलवार ।
कयागतिवरणोंत्यहिसमयाकी ❋ विपदा कछू कही ना जाय ॥
रतीभान केरे मुहरापर ❋ कोई शूर न आड़ै पांव ।
आठकोस जब दिल्ली रहिगइ ❋ तहँ पर बहुत चली तलवार ॥
चलै शिरोही जहँ मुठभेरो ❋ हा दैयागति कही न जाय ।
जौहर कीने रतीभानने ❋ मारे बड़े बड़े सरदार ॥
सोचत पृथीराज तेहि अवसर ❋ अबधौं कहा करे करतार ।
बड़ो शूर यह रतीभान है ❋ क्यों ना राज करै जैचंद ॥

सोचत देखो पृथीराजको ❋ कान्हदेवने कही सुनाय ।
काहे सोच करौ अपने मन ❋ तुमको कहां परी परवाह ॥
जबलौं प्राण रहैं देही में ❋ तबलौं लड़ौं शत्रुके साथ ॥
इतनी कहिके कान्हदेवने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
जाय पहूँचे समर खेतमें ❋ भारी जाय दीन ललकार ॥
जितने शूर हते दिल्लीके ❋ रतीभानने दिये गिराय ।
देखि हकीकत कान्हदेवके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
कान्हर बोले रतीभानसे ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
डोला धरि देउ रणखेतनमें ❋ जो जीतै सो लेइ उठाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखो कापर राम रिसायँ ।
यह मन भाई रतीभानके ❋ डोला खेतन दियो धराय'॥
हाथी बढ़ाय दियो आगेको ❋ कान्हदेवसे कही सुनाय ।
खबरदार रहियो समुहे पर ❋ तुम्हारो काल रहो नियराय'॥
इतनी कहिके गुर्ज उठायो ❋ सो समुहे पर दियो चलाय ।
ढाल अड़ाई कान्हदेवने ❋ जिनके अंग न आयो घाव ॥
फिर ललकारो रतीभानने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ।
करो जड़ाका जब समुहेपर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
ढालि फाटि गई गैंडावारी ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय ।
घाव आइगो तब मस्तकपर ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
तब ललकारो कान्हदेवने ❋ पृथ्वीराजसे कही सुनाय ।
डोला लौटे जो कनउजको ❋ बुड़िहै सात साखि को नाम ॥
दागु लागि है रजपूतीमें ❋ औ चौहानी जाय नशाय ।
टांके देदेउ तुम मस्तकमें ❋ तौ बैरीको देउँ गिराय ॥
एक घरी केरे जीवनमें ❋ डोला दिल्ली देउँ पठाय ।
इतनी सुनिके पृथ्वीराजने ❋ करमें लीन्हीं लाल कमान ॥
तीर खैंचिके तुरतै मारो ❋ गांसी झलकि रही वापार ।

कान्हदेव तुरतै तब लौटे ❋ रतीभानपै पहुँचे आय ॥
चली शिरोही तिन दोनोंकी ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
मारि शिरोही रतीभानके ❋ उनको छूटि जनेवा जाय ॥
जूझे रतीभान डोलापर ❋ पिरथी डोला दियो बढ़ाय ।
आई मूर्छा कान्ह कुँवरको ❋ उनहूँ दीन्हे प्राण गंवाय ॥
डोला पहुँचि गयो फाटकपर ❋ जैचंद डोला घेरो जाय ।
चंदभाट औ पिरथी रहिगे ❋ सिगरे जूझि गये सरदार ॥
सोचि समझिके पृथीराजने ❋ करमें लीन्हे लाल कमान ।
हाथ जोरि संयोगिनि बोली ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
तुमहिं मुनासिब यहु नाहीं है ❋ जो दादा पर डारौ हाथ ।
लाल कमान धरी पिरथीने ❋ जैचँद खांडा लियो उठाय ॥
देखि हकीकत संयोगिनिने ❋ हाथ जोरिके कही सुनाय ।
बात हमारी अब तुम मानौ ❋ ददुआ बार बार बलिजाय ।
तुमहिं मुनासिब यहु नाहीं है ❋ जो राजा पर डारो हाथ ॥
इतनी सुनिकै राजा जैचंद ❋ मनमें सोचि समझि रहिजाय ।
चन्दभाट आगेको बढ़ि गये ❋ औ जैचंदसे कही सुनाय ॥
जितने शूर हते दिल्लीके ❋ सो अब तुमने दिये गिराय ।
तुम्हरो दुसरिया कोई नाहीं ❋ सो तुम सुनौ कनौजीराय ॥
अब तुम छोड़ौ पृथीराजको ❋ कीरति चली अगारू जाय ।
इतनी सुनिकै राजा जैचंद ❋ कनउज कूच दियो करवाय ॥
गइ संयोगिनि रंग महलमें ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ।
पृथीराज राजा जैचंदको ❋ साखो कहिकै दियो सुनाय ॥
सुमिरन करिये नारायणको ❋ जो दीननपर रहत दयाल ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ अब महुबेको कहौं हवाल ॥

इति संयोगिनि स्वयंवर (रतीभानकी लड़ाई) संपूर्ण

श्रीः

अथ महोबेकी लड़ाई

★

सुमिरन

सुमिरन करिके नारायणको ❋ अरु गणपतिके चरण मनाय ।
देवी मैये आदि भवानी ❋ भूले अक्षर देहु बताय ॥
कोट कांगड़ेकी देवीको ❋ सुमिरौं बार बार शिर नाय ।
जिह्वा बैठो मातु शारदा ❋ ताते काम सिद्ध ह्वैजाय ॥
धौलागिरि पर्वतकी देवी ❋ निशिदिन पूजौं चरण तुम्हार ।
मोती लैके बीच बीचमें ❋ गूँधौं मोरसिरीको हार ॥
सो पहिरावौं जगदम्बेको ❋ होउ सहाय राज दरबार ।
देवी ललिता नैमिषारकी ❋ मुम्बादेवी मुंबई क्यार ॥
विन्ध्याचलकी विंध्यवासिनी ❋ हिरदै करें ज्ञान उजियार ।
देश कामरूकी कामेच्छा ❋ सुमिरनकरत जाहि संसार ॥
मातु संकटा हैं लखीमपुर ❋ मंदिर मातु शीतला क्यार ।
सिंह सवारी देवी गरजैं ❋ औ वैरीको करै सँहार ॥
दर्शन कीन्हें श्रीदेवीके ❋ जरि जरि पाप सब होत क्षार ।
पुनि मैं सुमिरौं श्रीगंगेजी ❋ भागीरथी नाम संसार ॥
जो अस्नान करें नित प्रातहि ❋ ताको तुरत होत निस्तार ।
छोड़ि सुमिरनी अब आगेमैं ❋ कहिहौं हाल महोबे क्यार ॥

सवैया

श्रीगिरिजापतिको विनवौं पुनि, मैं बिनवौं गिरिजेशदुलारो ।
अञ्जनि पुत्र बली हनुमान, तुम्हीं सब भांतिनसों रखवारो ॥
हर्षि हिये विनवौं सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारो ।
मैं मतिमन्द यथा मतिसों सबके हित गावत बीर पँवारो ॥

जेठ दशहराकी पर्वी परि ❀ गंगा जाजमऊ के घाट ।
देश देशसे मेला चलिभौ ❀ बुड़की होत गंग की धार ॥
करिया बोला गढ़ माड़ोमें ❀ जो जम्बै को राजकुमार ।
एक बात तुमते कहियतु हौ ❀ ददुआ बार बार बलिजाउँ ॥
जेठ दशहरा की पर्वी है ❀ बुड़की लेउँ गंगकी धार ।
है अभिलाषा यहु हमरे मन ❀ ददुआ हुक्म देउ फरमाय ॥
देश देशके राजा चलि गये ❀ गंगा जाजमऊके घाट ।
हमहूँ जैहौं जाजमऊमें ❀ करिहैं जाय गंग अस्नान ॥
दान दिहैं हम कछु विप्रनको ❀ जासो पाप दूरि होइ जायँ ।
इतनी सुनिकै जब्बै बोले ❀ बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
काम तुम्हारो न जैबोको ❀ इतनी मानो कहा हमार ।
बारा वर्षको पैसा होइगौ ❀ कनउज दई न एक छदाम ॥
जो सुनि पैहैं राजा जैचँद ❀ तुमरी कैद लिहैं करवाय ।
उहां ठकुराई है जैचँदकी ❀ भारी राज कनौजी क्यार ॥
बात हमारी बेटा मानौ ❀ घरमैं बैठि रहो अरगाय ।
हाथ जोरिकै करिया बोला ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
बैर तो तुमहींते जैचँदको ❀ ददुआ मेरे बघेलेराय ।
तौ तो बेटा मैं तुम्हरे हौं ❀ पैसा माफ लेउँ करवाय ॥
इतनी बात सुनी जम्बैने ❀ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
करी तयारी अब करियाने ❀ फौज कटीली लई सजाय ॥
आयो करिया रंगमहलको ❀ जहँपर हती बिजैसिनरानि ।
बोलीबिजैसिन तहँ करियाते ❀ भैया सुनौ हमारी बात ॥
जो तुम जैयो जाजमऊको ❀ लैयो कछू निशानी मोहि ।
उहांते करिया बदलत आवै ❀ अपने लश्कर पहुँचो आय ॥
बजै नगाड़ा दुइसै जोड़ी ❀ बाजे तुरही औ कण्डाल ।
कूच कराय दियो माड़ौते ❀ पहुँचे जाजमऊके घाट ॥
बहुत दान दीन्हों विप्रनको ❀ गंगामें करिकै असनान ।

बात याद आई बहिनीकी ❁ तब उठि चलो करिंघाराय ॥
तुरतै पहुँचो सो बजारमें ❁ ढूँढ़त फिरै नौलखा हार ।
तौलौं मिल गये माहिल ठाकुर ❁ सो करियाते लगे बतान ॥
लड़िका ह्वइके तुम राजाके ❁ ढूँढ़त फिरत नौलखा हार ।
तुमहिं हंसीको डर नाहीं है ❁ हो जम्बैके राजकुमार ॥
यह सुनि करिया बोलन लागे ❁ तुम सुनिलेउ महिल परिहार ।
सब बजारमें हम फिरि आये ❁ कहुँना मिलो नौलखा हार ॥
फिरिकै माहिल बोलन लागे ❁ ओ महराज करिंघाराय ॥
बात हमारी जो तुम मानो ❁ हम बतलावैं नौलखाहार ॥
नगर महोबा एक बस्ती है ❁ जहं पर बसैं चंदेलेराय ।
तिनघर रानी इक मलहना है ❁ सो वह बहिनी लगै हमार ॥
हार नौलखा वह पहिरे है ❁ चलिकै लूटि लेउ करवाय ।
टूटे फाटे पड़े चन्देले ❁ कोई फेंट बंधैया नाहिं ॥
यह मन भाय गई करियाके ❁ औ महुबेकी पकरी राह ।
यहांकि बातैं तौ यहं छोड़ौं ❁ अब आगेके सुनो हवाल ॥
रहिमल टोंडर दस्सराज औ ❁ चौथे बच्छराज महराज ।
ये रहवैया बकसर वाले ❁ चारौ वीर बनाफर राय ॥
मीरा ताल्हन बनरसवाले ❁ तिन नौ, पूत अठारह नाति ।
अलीअलामति औदरियाखां ❁ बेटा जानबेग मुलतान ॥
मियांबिसारति औ कल्लूखां ❁ कल्लनवेन और कल्यान ।
कारोबाना कार निशाना ❁ कारे घोड़नके असवार ॥
शिरपरचीरा है मुगलानी ❁ मीरा ताल्हन राजकुमार ।
जहां ठकुरई है जैचन्दकी ❁ तहं पर भयो बखेड़ा आय॥
वे फिरियादी कनउज चलिभये ❁ राजा जैचन्दके दरबार ।
जो रस्ता था महुबे ह्वइके ❁ वे महुबे पहुँचे आय ॥
पूंछन लागे हरिकाराते ❁ चारौ वीर बनाफर राय ।
हम सब जैहैं गढ़ कनउजको ❁ रस्ता हमहिं देउ बतलाय ॥

तब हरिकारा पूछन लागो ❀ अपनो काम देउ बतलाय ।
यह सुनि चारौ बोलन लागे ❀ धूरे भयो बखेड़ा आय ॥
हम फरियादी कनउज जैहैं ❀ राजा जय चन्दके दरबार ।
फिरि हरिकारा बोलन लागो ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
यह बस्ती है गढ़ महुबेकी ❀ यहँ पर वसत रजा परिमाल ।
बात बड़ी है परिमालैकी ❀ मानत जिनहिं कनौजी राय ॥
भयो बखेड़ा जो धूरे पर ❀ जो लिखि दिहैं रजापरिमाल ।
सोइ फैसला तुम्हरो ह्वइहै ❀ जाते काम सिद्ध ह्वै जाय ॥
कही हमारी जौ ना मनिहौ ❀ तुम्हरो काम होनको नाहिं ।
बात मानिलइ हरिकाराकी ❀ द्वारे गये चन्देले क्यार ॥
खाली सिदरी परिमालैकी ❀ तहँ टिकि रहे बनाफर राय ।
यकलँग ताल्हन बनरसवाले ❀ यकलँग पड़े बनाफर राय ॥
करिया आयो गढ़ महुबेमें ❀ वह जम्बैको राजकुमार ।
जहँपर फाटक चन्द्रवंशको ❀ तहई पड़े बनाफर राय ॥
बोला करिया तब फाटकपर ❀ औ रजपूतौ बात बनाउ ।
खबरि सुनावो चन्द्रवंशको ❀ औ मल्हनाते कहौ सुनाय ॥
हार नौलखा लै जल्दीसे ❀ हमरी नजर गुजारै आय ।
यह सुनि बोला वनरसवाला ❀ हम बोले तुरत बनाफर राय ॥
तीन रोजसे गढ़ महुबेमें ❀ हम सब परे परौने आय ।
हाल हमारो ना जानी है ❀ हम परदेश रहत महराज ॥
हुक्म दे दियो तब करियाने ❀ कछु क्षत्रिनसे कही सुनाय ।
बजै कुल्हाड़ा या फाटक पर ❀ औ धरतीमें देउ मिलाय ॥
महल लूटि लेउ परिमालैको ❀ सिगरो गहनो लेउ उठाय ।
बजो कुल्हाड़ा तब फाटकपर ❀ देखन लाग बनाफर राय ॥
मीरा ताल्हन और बनाफर ❀ सो आपसमें लगे बतान ।
तीन रोजसे गढ़ महुबेमें ❀ खायो नमक चन्देले क्यार ॥
सुखसे पानी पियो यहांपर ❀ सो हाड़नमें गयो समाय ।

हीनी होइहै चन्द्रवंशकी ❀ तौ जग होइहै हँसी हमारि ॥
दागु लागि है रजपूतीमें ❀ और क्षत्रीपन जाय नशाय ।
सबहुनमिलिकेयहमतकीन्हों ❀ प्राणनको दौ मोह विसार ॥
खैंचि शिरोही यह लँग होइकै ❀ चारों वीर बनाफरराय ।
एक ओर तौ ताल्हन पहुँचे ❀ सूबा जौन बनारस क्यार ॥
ताल्हन बोले सब बेटोंसे ❀ तुम सब सुनो हमारी बात ।
याही दिनको हम पालो है ❀ अपनो हुनर देउ दिखलाय ॥
काज पराये जो मरि जैहौ ❀ पक्का कबर दिहौं चुनवाय ।
जंग जितिहौ जौ दंगलमें ❀ होइहै जुगन जुगन लौ नाम ॥
सीधा रस्ता है जन्नत का ❀ तुमको कौन पड़ी परवाहि ।
इतनी सुनिलइउन लड़िकनने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
बादल गरजैं ज्यों भादोंमें ❀ बिजली कड़कि कड़कि रहिजाय ।
ऐसे गरजैं बनरसवाले ❀ बनता बरन करी ना जाय ॥
सबमिलिझपटेत्यहिकरियापर ❀ जिनके मारु मारु रटिलागि ।
गड़बड़ परिगौ गढ़ महुबेमें ❀ बिपता कछू कही ना जाय ॥
जहां भीर देखैं करियाकी ❀ तहँ घुसि परे बनाफरराय ।
मारि शिरोरी चहला उठिगौ ❀ सब दल रैन बैन होइ जाय ॥
जौन रिसाला ताल्हन पैठे ❀ त्यहि धरतीमें देयँ गिराय ।
ऐसा काटा दल करियाका ❀ जैसे खेती लूनै किसान ॥
बड़े लड़ैया बनरस वाले ❀ तहँ पर बीति रहा घमसान ।
मूँडनके तहँ ढेर लागिगे ❀ औ लोथिनपर लोथि दिखाय॥
करिया भागि गयो माड़ौको ❀ नाहीं मिलो नौ लखा हार ।
सुनी खबरि जब परिमालैने ❀ औ मल्हनाने सुनो हवाल ॥
परे परौने जो द्वारे पर ❀ तिनने राखी लाज हमारि ।
आय चँदेले दरवाजे पर ❀ औ ठकुरनसे लगे बतान ॥
जो तुम होते ना महुबेमें ❀ तौ सब जाती लाज हमारि ।
धर्म हमारो तुमने राखो ❀ तुम्हरो जन्म धन्य संसार ॥

इतनी कहिकै तब चन्देले ❋ अपने बँगला गये लिवाय।
खातिर करिकै उन सबहुनकी ❋ मालिक करो चन्देले राय॥
राजपाट औ धन दौलतिके ❋ मालिक भये बनाफरराय।
फौजके मालिक ताल्हासैयद ❋ सूबा जौन बनारस क्यार॥
मल्हना बोली परिमालेसे ❋ स्वामी सुनो हमारी बात।
ब्याह करावो इन ठकुरनको ❋ लड़िका जौन बनाफर राय॥
तौ ये बने रहैं महुबेमें ❋ नाहीं कबहुँ जायँ परदेश।
देवै ब्रह्मा दुइ बहिनी हैं ❋ लड़िका दस्सराज बछराज॥
ब्याह रचावो तिन दोनोंका ❋ तुम्हरे काम सिद्ध होइ जायँ।
इतनी सुनिकै परिमालैने ❋ अपनो नेगी लियो बुलाय॥
टीका मँगवाय लियो जल्दीते ❋ औ लड़िकनको लिये बुलाय।
दस्सराज औ बछराजको ❋ टीका तुरते लियो चढ़ाय॥
एकहि मड़येमें दोनोंकी ❋ भांवरि तुरत लई करवाय।
बिदा कराय लई बहुवनको ❋ औ द्वारे पर पहुँचे आय॥
जितनी रानी चन्द्रवंशकी ❋ सो द्वारे पर पहुँची धाय।
दोनों बहुवनको संग लीन्हीं ❋ राखी रंगमहलमें जाय॥
हार नौ लखा मल्हना लैके ❋ सो देवैको दौ पहिराय।
जौन नौलखा के लेनेको ❋ चढ़िके आयो करिंघाराय॥
औरों रानी चन्द्रवंशकी ❋ उनहूँ हार दियो पहिराय।
अनँद बधैया महुबे बाजे ❋ घर घर भयो मंगलाचार॥
फिरिकै मल्हना बोलन लागी ❋ स्वामी सुनो हमारी बात।
स्याने लड़िका अरु बहुएं हैं ❋ इनको महल देउ बनवाय॥
नहीं गुजारा इन महलनमें ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं।
इतनी सुनिकै चन्देलेने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय॥
महुबे केरे आध कोस पर ❋ दशहर पुरवा दियो बसाय।
सुन्दर महल सजे पुरवामें ❋ तहँ बसि गये बनाफरराय॥
वही सालमें आल्हा जन्मे ❋ हैं जो धर्मराज औतार।

दस्सराजकी रनि दिवलासे ❋ आल्हा प्रगट भये संसार ॥
बच्छराजकी रनि ब्रह्मासे ❋ श्री सहदेव लीन अवतार ।
पांडवकुलमें जो तरवरिहा ❋ जगमें प्रगटि भयो मलखान ॥
ब्रह्मा जन्म लियो मल्हनासे ❋ है जो अर्जुनको अवतार ।
रतीभानकी रनि तिलकासे ❋ पांडव नकुल केर अवतार ॥
लाखनि राना गढ़कनउजमें ❋ जाको नाम प्रगट संसार ।
वही साल केरे अन्तरमें ❋ ढेबा आनि धरो अवतार ॥
रही गर्भसे दिवला रानी ❋ योधा भीमसेन औतार ।
ऊदनि नामक गढ़ महुबेमें ❋ ह्वैगे प्रगट आय संसार ॥
बच्छराजकी रनि ब्रह्माके ❋ आयो गर्भमाहिं सुलिखान ।
दस्सराज औ बच्छराज ये ❋ दोनों रहैं एकही साथ ॥
नित नित जावैं नगर महोबे ❋ मानैं हुक्म चँदेले क्यार ।
दोनों भाई समरथ होइगे ❋ निशिदिन करैं राजको काज ॥
धनि धनि माता परमेश्वरकी ❋ अचरज होत देखि सब काज ।
पांय पनहियां ना जिनके हैं ❋ तिनको प्रभू देत गजराज ॥
यहांकि बातैं तो यहिं छोड़ौं ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
यकदिन ताल्हन बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ॥
हाल बतावौ तुम अपनो म्वहिं ❋ क्यों ना हाथ गहो हथियार ।
बोले राजा तब ताल्हनसे ❋ सय्यद सुनौ हमारो हाल ॥
नगर चँदेलीके हम राजा ❋ बहुदिन करो राजको काज ।
भैया हमरो यक चन्द्राकर ❋ त्यहि हम सौंप दियो सब राज ॥
ब्याह कियो हम गढ़महुबेमें ❋ सुनिके सुघरि मल्हदे रानि ।
इच्छा देखी रनि मल्हनाकी ❋ तब हम रहे महोबे आय ॥
ससुर हमारे मालवन्त थे ❋ जिनके पुत्र महिल परिहार ।
तिनहिं बसायो हम उरईमें ❋ महुबे कियो राजदरबार ॥
भरतखण्डमें जितने योधा ❋ हमने जीति लिये तत्काल ।
बावनगढ़के राजा जीते ❋ जीते बड़े बड़े भूपाल ॥

मार न खाई काहु बलीकी ❋ सिगरो हालि गयो संसार ।
रहा मुकाबिल ना कोई योधा ❋ खांडा सागर धरो पखार ॥
अमर गुरूकी कसम खायली ❋ अब ना गहूँ हाथ हथियार ।
बहुत वर्ष बीते महुबेमें ❋ हम ना गहों हाथ हथियार ॥
माया परबल है ईश्वरकी ❋ सो प्रभु राखो धर्म हमार ।
तुमहिं पठायो परमेश्वरने ❋ तुमने राखी लाज हमार ॥
इतनी सुनिकै सैयद बोले ❋ तुम सुनि लेउ रजा परिमाल ।
जहां पसीना गिरे तुम्हारो ❋ तहाँ दे देउँ रक्तकी धार ॥
ऐसे बात भई सैयदसे ❋ बहुते खुशी भये परिमाल ।
हाल सुनाऊँ अब आगेको ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
मीरा ताल्हन बनरसवाले ❋ बेटा नाती संग लिवाय ।
कोइ कारजहित गये बनारस ❋ पाई खबरि महिल परिहार ॥
माहिल चलिभे तब उरईते ❋ लिल्ली घोड़ी पर असवार ।
आठ रोजको धावा करिकै ❋ गढ़ माड़ौमें पहुँचे जाय ॥
जहां कचहरी थी जंबैकी ❋ माहिल उतरि परे अरगाय ।
करी बन्दगी तब जंबैको ❋ घोड़ी थामि लई थनवार ॥
आवो आवो उरई वाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
माहिल बोले तब राजाते ❋ तुम सुनि लेउ बघेले राय ॥
मीरा ताल्हन बनरस पहुँचे ❋ खाली पड़ा महोबा गाँव ।
फेट बँधैया तहँ कोइ नाहीं ❋ चलिके लूटि लेउ करवाय ॥
औसर चूके फिरि पछितैहो ❋ आवै घड़ी न बारंबार ।
यह मन भाय गई करियाके ❋ औ महुबेको भयो तयार ॥
माहिल चलिभै गढ़ माड़ौसे ❋ औ उरईमें पहुँचे आय ।
राजा जंबैने ललकारो ❋ बेटा सुनौ करिंघाराय ॥
काम तुम्हारो ना जंबैको ❋ ना महुबेपर होउ तयार ।
तुमहिं लूटिबो ना सोहत है ❋ तुम राजनके राजकुमार ॥
कही न मानी वा करियाने ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।

आठ रोजको धावा करिके ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
आधिरात केरे अमलामें ❋ दशपुरवामें पहुँचो जाय ।
सोवत बांधो दस्सराजको ❋ बच्छराजको लियो बँधाय ॥
महल लूटिलो उन दोउनको ❋ सिगरो गहनो लियो उठाय ।
हार नौ लखा देवै पहिरे ❋ सोऊ तुरतै लियो छिनाय ॥
माल खजाना चंद्रवंशको ❋ सब लेलियो करिंघाराय ।
गज पचशावद दस्सराजको ❋ सो करियाने लियो खुलाय ॥
लाखा पातुर दस्सराजकी ❋ घोड़ा पपीहा लियो मँगाय ।
जोन वस्तु देखी सम्मुहे पर ❋ सो लै लियो करिंघाराय ॥
करी बीरता क्या करियाने ❋ चोरी करी महोबे माहिं ।
लानति ऐसी रजपूतीपर ❋ तेगा बांधनको धिक्कार ॥
माल पराया जो कोउ ताकै ❋ चोरी करै पराई आय ।
धोखा देवै जो काहूको ❋ ताको बार बार धिक्कार ॥
पर उपकार करै दुनियामें ❋ सब विधि सुखी करै नरनार ।
काम बनावै जो काहूको ❋ ताको जन्म धन्य संसार ॥
करिया पहुँचो गढ़ माड़ौमें ❋ जीतको डङ्का दियो बजाय ।
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ पत्थर कोल्हू दियो पिराय ॥
शीशकाटिकै दोउ भैयनको ❋ सो बरगदमें दियो टँगाय ।
हार नौ लखा देवै वारो ❋ पहिरौ नित्य बिजैसिनि रानि ॥
नित उठि नाचै लाखा पातुरि ❋ राजा जंबैके दरबार ।
गज पचशावद दस्सराजको ❋ तापर चढ़ै करिंघाराय ॥
हियांकि बातें तो यहँ छोड़ौ ❋ अब महुबे की सुनौ हवाल ।
राम बनावै तो बनि जावै ❋ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
देवैं ब्रह्मा दोनौं रोवैं ❋ हा! दैयागति कही न जाय ।
सुनी खबरि जब परिमालैने ❋ तुरतै गिरे धरनि मुरझाय ॥
जितनी रानी चन्देलेकी ❋ सबने छांड़ि दई डिडकार ।
मल्हना रानी रोवन लागी ❋ बिपदा कछू कही ना जाय ॥

दैदै हांकै रनियां रोवैं ❁ कोई धीर धरैया नाहिं ।
कछुक दिनामें ताल्हन सैयद ❁ आये नगर महोबे माहिं ॥
सुनी हकीकत गढ़ महुबेकी ❁ सैयद गिरै मूरछा खाय ।
हाय हाय करि रोवन लागे ❁ अब कहँ मिलैं धर्मके भाय ॥
कहाबिगारो तिन करियाको ❁ बिन तकसीर सताओ आय ।
धोखा दीन्हो यहु कायरने ❁ करिया तेरो बुरो ह्वइजाय ॥
अब कहँ पैहैं हम भैयनको ❁ यहु दुखदियौ मोहिं करतार ।
धावा मारौं जौ माड़ौपर ❁ तो कछु काम बननको नाहिं ॥
कठिन लड़ाई है माड़ौकी ❁ कोई शूर बचनको नाहिं ।
बारह कोसन बबुरी बन हैं ❁ औ लोहागढ़ कोट कराल ॥
कहा हकीकति बन्दूकनकी ❁ तोपनिशाना ना अनियाय ।
देवै बोली तब सैयदसे ❁ सैयद सुनो हमारी बात ॥
अब तुमपालौ सब लड़िकनको ❁ सिगरो दुःख देउ विसराय ।
कबहूँ लायक लड़िका ह्वइहैं ❁ माड़ौ लिहै बापको दांव ।
तबहीं चुरियां हम तोड़ैंगी ❁ मिटिहैं तबहिं पेटको डाहु ॥
सुनिकै बातें रनि देवैकी ❁ सैयद धीर धरो मन माहिं ।
तीनि महीनेके वीतेपर ❁ ऊदनि आनि धरो औतार ॥
कछु दिन बीते रनि ब्रह्माके ❁ सुलिखे आनि धरो औतार ।
देवै बोली तव बांदीते ❁ बांदी सुनले बात हमारि ॥
मुँहना देखौं या लड़िकाको ❁ जियतैं याहि देउ फिंकवाय ।
रँडिया ह्वैइके बेटा जन्मा ❁ कहिहैं सबै नगर नर नारि ॥
बांदी बोली तब देवैते ❁ रानी सुनो हमारी बात ।
राजपाट धनसम्पति मिलिहैं ❁ लड़िका फेरि मिलनको नाहिं॥
पुत्र बड़ो फल है दुनियामें ❁ पालो याहि मेंटि तकरार ।
बहुतक समुझायो बांदीने ❁ देवैको मन नाहिं समाय ॥
कर्महीन यह बालक जन्मा ❁ याने डारी बाप मराय ।
टारौ टारौ मेरे समुहेसे ❁ औ जङ्गलमें देहु फिंकाय ॥

फिरिकै बांदी बोलन लागी ❋ रनियां बार बार बलिजाउँ ।
बिरवा सींचत सब दुनियांमें ❋ यह आगेको ऐहै काम ॥
बड़े प्यारसे याका पालौ ❋ माड़ौ लिहैं बापको दावँ ।
मनै हमारे ऐसी आवै ❋ ह्वइहैं सबै तुम्हारे काम ॥
ताते तुमको समझावति हौ ❋ रानी मानौ बात हमारि ।
फेंकनयोग्य नहीं यहु बालक ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं॥
बात न मानी एक देवैने ❋ औ बांदीते कही सुनाय ।
हुक्म अदूली जौ तू करिहै ❋ तेरो पेटु दिहौं पड़वाय ॥
जल्दी लेजा या लड़िकाको ❋ औ समुहेते जाउ पराय ।
लड़िका लीन्हों तब बांदीने ❋ औ मल्हना पै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै बांदी बोली ❋ रानी सुनो हमारी बात ।
बालक जन्मा रनि देवैने ❋ औ यह हमसे कही सुनाय ॥
बनमें फेको या लड़िकाको ❋ हमको हँसिहै सकल जहान ।
रंडिया ह्वइकै बालक जन्मा ❋ हमरे जीवनको धिक्कार ॥
इतनी बात सुनी मल्हनाने ❋ तब राजाको लियो बुलाय ।
हाल बतायो सब देवैको ❋ सुनतै सुन्न भये परिमाल ॥
केहि मति मारी है देवैकी ❋ क्याकहुं अक्किल गई हिराय ।
विष्णु बड़े हैं ज्यों देवनमें ❋ वेदन सामवेदको गान ॥
तैसेइ पुत्र बड़ो दुनियांमें ❋ औ देहीमें नैन प्रधान ।
छाती चौड़ी या लरिकाकी ❋ नैना हिरनाकी अनुहारि ॥
ऊँचो माथो मुख सुन्दर है ❋ अच्छे लक्षण परै दिखाय ।
शूरवीर ह्वइहै यह बालक ❋ रानी वचन करो परमान ॥
बहुत हेतसे याको पालौ ❋ मनमें करौ न सोच विचार ।
बानी सुनिकै मल्हना रानी ❋ मनमें बहुत खुशी होइ जाय ॥
लैके लड़िका मल्हनारानी ❋ पालन करन लगी करिप्यार ।
एक दूधको ब्रह्मा पीवै ❋ दूजो पिये उदयसिंह राय ॥
दूध पियावैं अमखुरवनसे ❋ दोनों पुत्र गोद बैठाय ।

दिन दिन बढ़नलाग नरऊदनि ❁ योधा भीमसेन औतार ॥
बहुत प्यारसे मल्हना पालै ❁ अमखुरवनसे दूध पिलाय ।
कछु दिन बीते चन्द्रवंशमें ❁ उपजा आय पुत्र रणजीत ॥
अल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❁ ढेबा रणजित औ सुलिखान ।
यहिविधिप्रगटेसातोंलड़िका ❁ शोभा कछू कही न जाय ॥
खेलत डोलैं सब आंगनमें ❁ सबको मल्हना करै दुलार ।
आल्हा बोले रनिमल्हनासे ❁ मैं तरवरिहा पूत तुम्हार ॥
बोली मल्हना तब आल्हासे ❁ जुग जुग जियो लड़ैतेलाल ।
सब तरवरिया पूत हमारे ❁ पानी पिऔं उतारि उतारि ॥
नितनितलाड़करैलड़िकनको ❁ ह्वैके खुशी मल्हनदे रानि
सुन्दर सुन्दर कपड़ा लैके ❁ सो लड़िकनको दिये पहिराय ॥
कड़ा सोबरनके पहिराये ❁ चीरा कलँगी दई बँधाय ।
लै तलवारैं छोटी छोटी ❁ सो लड़िकनको दई गहाय ॥
इन्द्रा नाई चन्द्रवंशको ❁ ताको मल्हना लियो बुलाय ।
नाई आयो जब महलनमें ❁ तब मल्हनाने कही सुनाय ॥
तुम लैजावो इन लड़िकनको ❁ जहँ दरबार चन्द्र सरदार ।
संग लेलियो इन लड़िकनको ❁ नाई गयो राज दरबार ॥
जबहीं लड़िका बंगला पहुँचे ❁ तुरतै उठे रजा परिमाल ।
बहुत प्यारसे लै लड़िकनको ❁ अपनी छाती लियो लगाय ॥
दई मिठाई सब लड़िकनको ❁ औ मल्हनाको दियो पठाय ।
उठी कचहरी जब राजाकी ❁ महलन गये चन्देले राय ॥
यक ललकार दई मल्हनाको ❁ रानी अक्किल गई तुम्हार ।
वंश नशैबेको लागी हौ ❁ बंगलै लड़िकन दियो पठाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोली ❁ स्वामी सुनो हमारी बात ।
दूध पूत नाहीं छिपिबेको ❁ नाहीं छिपै सम्पदा राज ॥
अबहिं तो लड़िका बंगला पहुँचे ❁ भोरहि खेलत फिरैं शिकार ।
ये सब लड़िका समरथ होइहैं ❁ यक दिन प्रगट होय संसार ॥

इतनी बात सुनी मल्हनाकी ❋ मनमें खुशी भये महराज ।
राम बनावै सो बनिजावै ❋ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय॥
कछुक दिना बीते महुबेमें ❋ आये अमरनाथ महराज ।
खबरि पहुँचि गई रंगमहलमें ❋ आये अमर गुरू महराज ॥
मल्हना दिवला ब्रह्मा रानी ❋ सब मिल आय गईं तत्काल ।
करि परिकर्मा अमरनाथकी ❋ सातों लड़िका करे अगार ॥
लड़िका डार दिये चरणोंमें ❋ हाथ जोरिके कही सुनाय ।
शरण तुम्हारी सब लड़िका हैं ❋ जानौं इनहिं आपनो दास ॥
दाया करिकै इन लड़िकनपर ❋ अपनो हाथ धरौ महराज ।
चारों ओर बसत बैरी हैं ❋ केहि विधि बनै हमारे काज ॥
यह सुनि बोले अमरनाथजी ❋ रानी सुनौ महोबे क्यार ।
सोच त्यागि देउ तुम जियरासे ❋ सबविधि भला करै करतार ॥
ये सब लड़िका समरथ होइहैं ❋ होइहैं सबै तुम्हारे काम ।
साखा चलिहै बावन गढ़में ❋ जिति हैं बड़े बड़े बलवान ॥
इतनी कहिकै अमर गुरूने ❋ लड़िका ठाढ़ करे अगार ।
सूरति देखि उन लड़िकनकी ❋ मनमें खुशी भये गुरुराय ॥
पीठी ठोंकी जब आल्हाकी ❋ तब यह कही गुरू महराज ।
जगमें तुम्हरो साखा चलिहैं ❋ सोइहैं जीति समरके माहिं ॥
पीठी ठोंकी फिर ऊदनकी ❋ बोले अमरनाथ तत्काल।
वज्रकि देही या लड़िकाको ❋ जामें गड़ै नाहिं हथियार ॥
हाथ फिरायो नर मलिखेपर ❋ काया सबै वज्र होइ जाय ।
हाथ बढ़ावन लगे पाँवपर ❋ तब ब्रह्माने कही सुनाय ॥
पाँव न छुइयो तुम चेलाके ❋ नहिं घटिजैहै धर्म हमार ।
यह सुनि बोले अमर गुरूजी ❋ रानी सुनौ बनाफर क्यार ॥
सिगरी काया भई वज्रकी ❋ याके तलुअनमें है काल ।
शस्त्र लागिहै जब तलवामें ❋ तब ना बचै तुम्हारो लाल ॥
फिर कर परसा ब्रह्मानँदपर ❋ सारा देह बज्र होइ जाय ।

तुम्हरि बरोबरिको ताहर है ❋ नहिं दूजेकी पार बसाय ॥
हाथिफिरायौफिरिसुलिखेपर ❋ काया वज्र रूप होइ जाय ।
तुम्हरी बरनी है धांधूसे ❋ ना दूजेसे काल तुम्हार ॥
फिर कर परसा नर ढेबापर ❋ औ रणजितपर फेरो हाथ ।
बज्रकी काया करी गुरूते ❋ अपनी मढ़ी पहुँचे जाय ॥
आल्हा ऊदनि मलखे ढेबा ❋ ब्रह्मा रणजित औ सुलिखान ।
सातौं लड़िका दिन दिन बाढ़ैं ❋ खेलैं राजमहलके माहिं ॥
करै चौकसी रानी मल्हना ❋ सबको देखि देखि खुश होय ।
राम बनावै सो बनि जावै ❋ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय॥
सोई बनाई रघुनन्दनने ❋ समरथ भये बनाफरराय ।
ताल्हन सैयद बनरसवाले ❋ जो सब लड़िकनके उस्ताद ॥
युक्ति बताई सब लरिबेकी ❋ दीन्हें अस्त्र शस्त्र सिखलाय ।
आल्हा मलिखे औ बघऊदनि ❋ चौथे ब्रह्मा राजकुमार ॥
चारों लड़िका भये जोरावर ❋ जिनके बलको नाहिं सम्हार ।
मलिखे ऊदनिके समुहेपर ❋ बिरला शूर गहै हथियार ॥
जो कोई देखै इन लड़िकनको ❋ मनमें बहुत खुशी होय जाय ।
फिरि तदबीर करी मल्हनाने ❋ सातौ लड़िका लिये बुलाय ॥
सात बछेड़ा बड़ी राशिको ❋ सो मगवायो मल्हनदे रानि ।
घोड़ाहरिनाग बड़ी राशिको ❋ सो आल्हाको दियो मगाय ॥
घोड़ाकरिलिया बड़ी राशिको ❋ सो ब्रह्माको दियो गहाय ।
घोड़ी कबूतरी बड़ी राशिकी ❋ सो मलिखेको दई गहाय ॥
घोड़ा बेंदुला मल्हना लैके ❋ सो ऊदनिको दई पकराय ।
घोड़ा मनुरथा मल्हना लैके ❋ सो ढेबाको दियो गहाय ॥
घोड़ीहिरौंजिनि मल्हना लैके ❋ सो सुलिखेको दई गहाय ।
घोड़ी हिरौंजिनि दुसरी लैकै ❋ सो रणजितको दइ पकराय ॥
फिरि हँसि बोली मल्हनारानी ❋ लड़िकौ सुनौ हमारी बात ।
भोर होत खन झाबर जैयो ❋ वनमें खेलियो जाय शिकार ॥
हिरना लैहै जो जंगलसे ❋ सो तरवरिहा पूत हमार ।

भोर होतही सिगरे लड़िका ❋ अपने घोड़न पर असवार ।
जायके पहुँचे सब झाबरमें ❋ बनमें खेलत फिरत शिकार ॥
तीनि पहर जङ्गलमें होइगे ❋ ना काहूको मिले शिकार ।
आल्हा मलिखे ब्रह्मा ढेबा ❋ रणजित और बीर मलिखान॥
ये सब लौटि गये महुबेको ❋ ठाढ़ो ऊदनि करै बिचार ।
ना शिकार वनमें हम पाई ❋ क्यहिविधि जैहौं नगर महोब॥
तोलौं हिरना यक जङ्गलसे ❋ रस बेंदुलके भगो अगार ।
घोडा बेंदुलाको धरि दाबो ❋ औ हिरनाके परो पिछार ॥
हिरना पहुचो सो उरईमें ❋ औ बगियामें गयो समाय ।
ऊदनि ढूँढे वा हिरनाको ❋ बगिया गर्द दई करवाय ॥
तब ललकारो तहँ मालीने ❋ ओ राजनके राजकुमार ।
कौन देशके तुम ठाकुर हौ ❋ बगिया गर्द दई करवाय ॥
जो सुनिपैहैं माहिल ठाकुर ❋ तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ।
इतनी सुनिकै ऊदन तड़पे ❋ औ मालीसे कही सुनाय ॥
देश हमारो नगर महोबा ❋ जहँपर बसत रजा परिमाल ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
कौनसो क्षत्री है दुनियामें ❋ जो मेरो घोड़ा लेइ छिनाय ।
इतनी कहिकै उदनि चलिभै ❋ औ महुबेमें पहुँचे आय ॥
एक पहर केरे अरसामें ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचे आय ।
दूसरे दिनसबलड़िकाचलिभे ❋ बनमें खेलन गये शिकार ॥
हिरना मारो सबने मिलिकै ❋ सो मलहनाके धरो अगार ।
करै सवारी सब घोड़नपर ❋ नित २ खेलन जायँ शिकार॥
सुनिसुनिबातैंसबलड़कनकी ❋ बहुत खुशी होयँ परिमाल ।
आल्हा ऊदनि मलिखेसुलिखे ❋ माड़ौं लिहैं बापके दांव ॥
तौनि लड़ाई आगे कहि हौं ❋ यारो सुनियो कान लगाय ।
सुमिरन करिके नारायणको ❋ जो दीननपर रहत दयाल ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ अब माड़ौको कहौं हवाल ।

इति महोबेकी लड़ाई सम्पूर्ण

श्रीः

अथ माड़ौकी लड़ाई

★

सुमिरन--दोहा

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सवैया

हे भगवन्त अनन्त बली जन, आपन केरि बिनै उर धारहु ।
मोह मदादि विकार महत्तम, शीघ्र कृपा करिके निरवारहु ॥
दासकि आश दयाकरि सारहु, आनि परे सोइ संकट टारहु ।
आरत दीन पुकारत हौं, जन को भवसागर पार उतारहु ॥
राम बामदिशि श्रीसीताजी ❋ सोहत लखन दाहिनी ओर ।
भरत शत्रुहन बाम बिराजत ❋ पांचौ मूर्ति सोह इकठौर ॥
पग लटकाये रामचंद्रजी ❋ चापत चरण बीर हनुमान ।
सिंहासनपर हैं रघुनन्दन ❋ नितकल्याण करनयह ध्यान॥
सुयश सुनत श्रीरामचंद्रको ❋ निशिदिन पवनपुत्र हनुमान ।
हौसब लायकसुर सुखदायक ❋ नायक सुभट बुद्धि आगार ॥
हे प्रभु तुम्हरे चरणकमलपर ❋ शिर धरि विनय करौं बहुबार।
गावन चाहत गुण वीरनके ❋ बेड़ा खेइ लगावहु पार ॥
प्रात सुमिरिये जगदम्बेको ❋ भोरहि लेउ रामको नाम ।
बहुरि सुमिरिये जगदम्बेको ❋ जाते होंय सिद्धि सब काम ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगेमैं ❋ कहिहौं हाल करिंघा क्यार ।
जैसे मारो आल्हा ऊदनि ❋ औ जम्बै को कियो सँहार ॥
बदलो लैके अपने बापको ❋ माड़ौ खोदि करायो ताल ।
जीति बखान करौं आल्हाकी ❋ हितसे सुनो वृद्ध अरु ज्वान ॥

चारौ युगसे है चलिआई ❀ यह मर्याद प्रगट संसार।
जो कोउ मारत है काहूको ❀ ताको हनत आपु करतार॥
बिना बिचार किये रावणने ❀ बनमें हरी जानकी माय।
मारि गिरायो त्यहि रघुनन्दन ❀ औ सब दीन्हो वंश नशाय॥
बाली बानरको त्रेतामें ❀ मारो बिना हेतु रघुनाथ।
उसी बालिने व्याधिरूप होइ ❀ बदलो लियो कृष्णके साथ॥
पिता पातकी होत जासुको ❀ ताको पुत्र कुढ़त दिनरात।
पुत्र पातकी होत जासुको ❀ ताको सभी गोत्र नशिजात॥
बिना कसूर मारे करियाने ❀ सोवत दस्सराज बछराज।
समय आयगो जब करियाको ❀ मारो गयो मेटि सब राज॥
सो सब आल्हावर्णन करिहौं ❀ यारो सुनियो कान लगाय।
भई लड़ाई गढ़ माड़ौमें ❀ जीते जंग बनाफर राय॥
गांसि बखानौं बघऊदनिकी ❀ औ तलवार वीर मलिखान।
शकुन बखानौं मैं ढेबाको ❀ सैयद केर युद्ध घमसान॥
कछुक बखान करौं आल्हाकी ❀ नौसे झंडा चलत अगार।
बारह वर्ष केर ऊदनि भे ❀ देही सबे सजे हथियार॥
घोड़ा बेंदुलाको मँगवायो ❀ तापर फांदि भयो असवार।
जायके पहुँचे तब पनिघटपर ❀ विषधर उरईके मैदान॥
पानी भरती जहँ पनिहारी ❀ तिनसो ऊदनि कही सुनाय।
घोड़ा हमारो यह प्यासो है ❀ सो तुम पानी देउ पिआय॥
बोला बांदी तब माहिलकी ❀ ओ परदेशी बात ओनाउ।
कौन गांवके तुम ठाकुर हो ❀ अपनो नाम देउ बतलाय॥
इतनी सुनिके ऊदनि बोले ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात।
नगर महोबा यक बस्ती है ❀ जहँपर बसैं रजा परिमाल॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ ऊदनि है नाम हमार।
यह सुनि बांदी बोलन लागी ❀ घोड़े पानि पिऐहौं नाहिं॥

माहिल राजाकी बांदी हौं ❀ राजे खबरि सुनैहौ जाय ।
जो सुनि पैहैं माहिल ठाकुर ❀ तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
कही हमारी ऊदनि मानो ❀ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ।
इतनी सुनिकै ऊदनि जरिगे ❀ औ गुलेलको लियो उठाय ॥
जितनी गागरि थीं पनिघटपर ❀ ऊदनि फोरि दई तत्काल ।
हांकि बछेरा ऊदनि चलिभै ❀ औ महुबेकी पकरी राह ॥
रोवत बांदी गइ महलनमें ❀ औ माहिलसे कही सुनाय ।
माहिल ठाकुर तुम्हरे राजमें ❀ ऊदनि इज्जत लई हमारि ॥
जितनी गागरि थीं पनघटपर ❀ सो सब ऊदनि दई गिराय ।
सुनी बात जब सब बांदी को ❀ माहिल अग्निज्वाल होइ जाय॥
लैके कागद कलपीवारो ❀ अपनो कलमदान ले हाथ ।
पहिले लिखिकै सरनामाको ❀ ता पीछेते लिखी जुहार ॥
लिखी हकीकत ता पाछूसे ❀ पढ़ियो याहि चँदेलेराय ।
तुम्हरे घरके जो रहुआ हैं ❀ नित उठि रारि मचावत आय॥
ऊदनि लड़िका जो तुम्हरे घर ❀ सो उरईमें उरझ्यो आय ।
जितनी गागरि थीं पनघटपर ❀ सो गुल्लनसों दई गिराय ॥
उधम मचायो यहँ सखियनसँग ❀ सो तुम तुरत देउ समुझाय ।
कबसे ऊदनि भये जोरावर ❀ कबसे कमर बँधी तलवार ॥
टँगी खोपड़िया दस्सराजकी ❀ माड़ौ लेयँ बापको दांव ।
चिट्ठीलिखिकै यहु माहिलने ❀ सो धावनको दइ पकराय ॥
धावन चलिभौ तब उरईसे ❀ औ महुबेमें पहुँचो जाय ।
जाय पहुँचो जब फाटकपर ❀ तब साँड़िनीको दियो बिठाय॥
धावन उतरि परो जल्दी से ❀ औ डचोढीमें पहुँचो जाय ।
लगी कचहरी चन्देलेकी ❀ भारी लागि रहो दरबार ॥
पांच हाथ ऊँचा सिंहासन ❀ तापर तपै रजा परिमाल ।
सात कदमसे करी बंदगी ❀ धावन रहिगौ माथ नवाय ॥
नजर बदलि गइ चन्देलेकी ❀ औ धावन तन रहे निहारि ।

लैके पाती सो धावनने ❋ त्यहि गद्दी पर दई चलाय ।
पाती लैके परिमालैने ❋ आँकुइ आँकु नजरि करिजायँ ॥
लइ लेखनी कर कंचनकी ❋ उत्तर लिखो रजा परिमाल ।
चिट्ठी भेजत हौं उत्तरमें ❋ पढ़ियो यहि माहिल परिहार ॥
जैसेइ लड़िका ये हमरे हैं ❋ तैसेइ लड़िका लगैं तुम्हार ।
दोष न मानौ इन लड़िकनको ❋ इनको माफ करो तगशीर ॥
गागरि माटीकी फोरी हैं ❋ कहु सोनेकी देउ पठाय ।
बात चलैयो न माड़ौकी ❋ कलहा दस्सराजको लाल ॥
जो सुनि पैहै ऊदनि बाँकुड़ा ❋ तुरते त्यारी लिहै कराय ।
जो चढ़ि जैहै गढ़ माड़ोको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बारी उम्मिरिके लड़िका हैं ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ।
पाती लिखिकै परिमालैने ❋ सो धावनको दई गहाय ॥
धावन चलिभौ गढ़ महुबेसे ❋ औ उरईमें पहुँचो जाय ।
लैके पाती चन्देलेकी ❋ सो माहिलको दई गहाय ॥
खोलिकै पाती माहिल बाँची ❋ मुँहसे कछू न आई बात ।
तीनि महीनाके बीतेपर ❋ फिरिकैं ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला नाचत आवै ❋ ऊदनि खेलत फिरैं शिकार ।
मनमें आई बघऊदनिके ❋ औ उरईकी पकरी राह ॥
एक पहर केरे अरसामें ❋ फुलबगिया में पहुँचे जाय ।
जोड़ी मारी एक हिरनाकी ❋ बगिया गर्द बर्द होइ जाय ॥
देखि हकीकति माली चलिभौ ❋ औ अभईतर पहुँचो जाय ।
कही हकीकति त्यहि बगियाकी ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
ऊदनि आये हैं महुबेते ❋ यहँ पर उधम मचायो आय ।
जोड़ी मारी है हिरनाकी ❋ बगिया गर्द दई करवाय ॥
अभई चलिभे तब दंगलसे ❋ औ ऊदनि तर पहुँचे आय ।
यह ललकार दई ऊदनिको ❋ क्यों तुम उधम मचायो आय ॥
काहि बगिया गर्द कराई ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हार ।

जल्दी चले जाउ समुहेसे ❋ नहिं घोड़ासे दिहौं गिराय ।
इतनी सुनते ऊदनि जरिगे ❋ नैना अग्नि ज्वाल होइ जायँ ॥
उतरि बेंदुलासे भुइँ आये ❋ औ अभई ढिग पहुँचे आय ।
डारि पेंच इक यकदस्तीको ❋ औ अभईको दियो गिराय ॥
बाँह परिके झटका दीन्हो ❋ औ घोड़ापर भयो सवार ।
लैकै जोड़ी सो हिरनाकी ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
यक हरकारा बदलति आवै ❋ औ माहिलतर पहुँचो जाय ।
करी बन्दगी तब माहिलको ❋ औवगियाको कहो हवाल ॥
ऊदनि आये थे महुबेसे ❋ बगिया गर्द दई करवाय ।
बाँह उखारी तिन अभईकी ❋ महुबे घोड़ा गये भगाय ॥
इतनी सुनिकै माहिल जरि गये ❋ औ बगियामें पहुँचे जाय ।
गोदी ले कै उन अभईको ❋ औ पलकीमें दौ पौढ़ाय ॥
सो पठवाइ दियो महलनको ❋ लिल्ली घोड़ी लई मँगाय ।
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
तीनि पहर केरे अरसामें ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचे जाय ।
लगी कचहरी चन्देलेकी ❋ अजगर लागि रहो दरबार ॥
जाय पहूँचे सो समुहे पर ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
करी बन्दगी तब माहिलने ❋ तब हँसि कही रजापरिमाल ॥
हाल बताओ तुम उरईको ❋ काहे बदन गयो मुरझाय ।
बोले माहिल तब राजासे ❋ तुम सुनिलेउ चँदेलेराय ॥
तुमने पालो है ऊदनिको ❋ दूजी करी हमारे साथ ।
उरई केरी फुलबगियाको ❋ ऊदनि गर्द दियो करवाय ॥
बाँह उखारि दई अभईकी ❋ दाख छुहारे दिये उजारि ।
कबसे जोरावर ऊदनि हैगे ❋ कबसे बाँधि लिये हथियार ॥
करिया आयो गढ़ माड़ौसे ❋ जो जम्बैको राजकुमार ।
दस्सराज औ बच्छराजकी ❋ तुरतै मुश्क लई बंधवाय ॥
गज पचशावद लाखापातुर ❋ घोड़ा पपीहा सङ्ग लिवाय ।

महल लूटिलौ चन्द्रवंशको ❋ हार नौलखा लियो लुटाय।
माल खजानेको लै लीन्हो ❋ माड़ौ गयो करिंगा राय॥
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ पत्थर कोल्हू दियो पेराय।
टँगी खोपड़ियादस्सराजकी ❋ क्यों लेयँ बापको दाउँ॥
कबसे जोरावर ऊदनि ह्वैगे ❋ कबसे कमर धरी तलवारि।
परिहै समुहै जब करियाके ❋ तब सब होश बंद होय जायँ॥
इतनी सुनि लइजबमाहिलकी ❋ बोले तुरत रजा परिमाल।
जो नुक्सान करो ऊदनिने ❋ हरजा दुगुनो दिहैं तुम्हार॥
चर्चा करिहो जो माड़ौकी ❋ तो सब जैहैं काम नशाय।
जो सुनि पैहै ऊदनि बांकुड़ा ❋ कलहा पूत दिवलदे क्यार॥
त्यारी करिहै वह माड़ौकी ❋ जो मरिबेको नाहिं डेराय।
कान आवाज परी ऊदनिके ❋ तुरतै हाथ जोरि रहिजाय॥
कौन करिंघा है माड़ौको ❋ ददुआ हाल देउ बतलाय।
टँगी खुपड़िया कहँ दादाकी ❋ कौने कोल्हू दियो पिराय॥
करो बहाना तब राजाने ❋ औ ऊदनिको दियो जवाब।
कठिन लड़ाई भइ पैरागढ़ ❋ तिहईं जूझे बाप तुम्हार॥
और नाम वाको सिलहट है ❋ वाही गढ़के हैं दुइ नाम।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ तब माहिलसे कही सुनाय॥
चर्चा कीन्ही जो माड़ौकी ❋ सो सब हाल देउ बतलाय।
यह सुनि माहिल बोलन लागे ❋ तुम देवैसे पूछौ जाय॥
हाल हमारो न जानो है ❋ देवै हाल दिहै बतलाय।
इतनी सुनिकै ऊदनि तड़पे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय॥
छुटा पसीना सब देहीसे ❋ चोली खंड खंड ह्वइ जाय।
छाय लालरी सब नैननमें ❋ त्योरी चढ़ी उदयसिंह क्यार॥
यक ललकार दई माहिको ❋ मामा तेरो बुरा होइ जाय।
चर्चा करिकै गढ़ माड़ौकी ❋ फिरि कछुहाल बतायो नाहिं॥
बदलो लेहौं अपने बापको ❋ तब जियराको डाहु बुझाय।

मूँड़ काटिके मैं जम्बैको ❋ सो महुबेमें दिहौं टँगाय ॥
मारिशिरोहिनचहला करिहौं ❋ माड़ौं खोदि करैहौं ताल ।
शीशकाटि लेहौं करियाको ❋ माल खजाना लिहौं लुटाय ॥
इतनी कहिके ऊदनि चलिभे ❋ मुखपर रही लालरी छाय ।
कपड़ाभीजि गये ऊदनिके ❋ पहुँचे रंग महलमें आय ॥
जहां पै बैठी माता देवै ❋ तहँपर गये उदयसिंहराय ।
हाथ जोरिके ऊदनि ठाढ़े ❋ माता देखि देखि रहिजाय ॥
बोली देवै तब ऊदनिसे ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
छुटो पसीना क्यों देहीसे ❋ क्यों मुखरही लालरी छाय ॥
क्या काहूने कछु कहि दीन्हों ❋ या कहुं भयो बखेड़ा जाय ।
हाल बतावौ तुम जल्दीसे ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबड़ाय ॥
इतनी कहिकै बांह पकरिलइ ❋ औ छातीसे लियो लगाय ।
कौन मुसीबत तुमपर परि गइ ❋ बेटा कहो मर्मकी बात ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ माता बार बार बलिजाउं ।
हालबताओ तुम सांचौ मोहिं ❋ नाहीं पेटु मारि मरिजाउं ॥
को है राजा माड़ौवाला ❋ को जम्बैको राजकुमार ।
कौने मारे बाप हमारे ❋ काको नाम करिंघाराय ॥
टंगी खुपड़िया हैं दादाकी ❋ हमरे जीवनको धिक्कार ।
इतनी बात सुनी देवैने ❋ मनमें गई सनाका खाय ॥
देवै सोची तब अपने मन ❋ माहिल तेरो बुरो होइ जाय ।
वंश नशैबे को लागो है ❋ जो यह चर्चा दई सुनाय ॥
सोचि समझिकै देवै बोली ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
बात न भावै म्वहिं काहूकी ❋ होनी होनहार होइ जाय ॥
कर्मलिखोफल सब भोगत है ❋ जो कछु हमरे लिखी लिलार ।
सो हम भोगिरहीं दुनियामें ❋ भावी प्रबल होत संसार ॥
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ माना हम मनबेके नाहिं ।
सांप डँसि गयो माता हमको ❋ सो विष गयो देहमें छाय ॥

काढ़ि कटारी लइ ऊदनिने ❋ सो छातीसे लई लगाय ॥
हाल बतैहो ना माता तुम ❋ तौ मैं देहौं जान गँवाय ।
देखि हकीकत तब ऊदनिकी ❋ देवै हाल बतावनि लागि ॥
रोवन लागी देवै माता ❋ नयनन बहै नीरकी धार ।
क्यागतिवरणौतेहिसमयाकी ❋ विपदा कछू कही ना जाय ॥
करिया आयो गढ़ माड़ौको ❋ जो जम्बैको राजकुमार ।
आयके पहुँचो गढ़ महुबेमें ❋ राजा चन्द्रवंशके द्वार ॥
फाटक बन्द हते द्वारेके ❋ तहँई हते बनाफरराय ।
हार नौलखा मांगन लागो ❋ ना काहूने दियो जवाब ॥
तबहिं फाटक तोड़न लागो ❋ तुरतै वजन कुल्हाड़ा लाग ।
तुरत सलाह करी ताल्हनते ❋ चारों बीर बनाफरराय ॥
सबमिलिझपटेतबकरियापर ❋ अपनी खैंचि खैंचि तरवार ।
मारिशिरोहिनिचहलाकरिदिये ❋ ऐसी कठिन करी तलवारि ॥
करिया भागि गयो माड़ौको ❋ नाहीं मिलो नौलखा हार ।
कछु दिन बीते माड़ौवारो ❋ फिरि चढ़ि आयो करिंघाराय ॥
आधी राति केरे अमलामें ❋ दशहर पुरवा लियो लुटाय ।
सोवत बांधो तुम्हरो बापको ❋ औ चाचाको लियो बंधाय ॥
हार नौलखा हमसे छीनो ❋ घोड़ा पपीहा लियो छोराय ।
लाखा पातुर तुम्हरे बापको ❋ सो ले गयो करिंघा राय ॥
गजपचशावद तुम्हरे बापको ❋ तापर चढ़ै करिंघा राय ।
बांधि ले गयो सो दोनोंको ❋ सो माड़ौमें पहुंचे जाय ॥
पत्थर कोल्हूमें पिरवायो ❋ खोपड़ि बरगद दई टंगाय ।
जौन मुसीबत हम पर परिगई ❋ सो कछु बिपति कहीना जाय ॥
बारह वर्षसे मैं रंडिया हौं ❋ चूरी एक उतारी नाहिं ।
जबक्यहुलायकलड़िकाहोइहैं ❋ माड़ौ लिहैं बापको दाउं ॥
चुड़ी उतरिहौं तब सागरपर ❋ तौ छातीकी डाहु बुझाय ।
इतनो सुनिलइ जब ऊदनिने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥

तड़पे ऊदनि तब माता से ❋ तुम सुनि लेउ दिवलदे माय ।
बदलो लेहौं मैं ददुआ को ❋ माड़ौ खोदि करैहौं ताल ॥
शीश काटिकै मैं करियाको ❋ औ जम्बैको शीश उतारि ।
सो टँगवाय दिहौं महुबेमें ❋ दूनी लूटि लिहौं करवाय ॥
वंश नशैहौं मैं करियाको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ।
इतनी सुनिकै देवै बोली ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
कही हमारी बेटा मानौ ❋ घरमें बैठि रहो अरगाय ।
कठिन मवासी गढ़ माड़ौ है ❋ तुमपर मारु सही ना जाय ॥
बारह कोसको बबुरी बन है ❋ औ लोहागढ़ कोट कराल ।
जहं गति नाहीं है मानुषकी ❋ ना काहूकी पार बसाय ॥
उमरि तुम्हारी बहु थोरी है ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ।
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनिलौ वचन हमार ॥
जबलौं बदला हमना लेहैं ❋ मिटिहै नाहिं जिगरको घाउ ।
बात मानिहैं ना तुम्हरी हम ❋ चलिकै लिहै बापको दाउं ॥
देवै पहुंची लै ऊदनिको ❋ जहंपर हती मल्हनदे रानि ।
बात सुनाई सब देवैने ❋ औ मल्हनाको कही सुनाय ॥
अब तुम हटिकौ उन ऊदनिको ❋ हमरी कही न मानौ बात ।
मल्हना समुझावै ऊदनिको ❋ मैं बेटाकी लेउं बलाय ॥
कछु दिन बीतेपर समरथ होय ❋ माड़ौ लिहौ बापको दाउं ।
अबहिं उमरि तुम्हरी थोरी है ❋ काहे देहौ प्राण गंवाय ॥
जीवनधन हो तुम सब हमरे ❋ नाते मानौ कही हमार ।
कठिन लड़ाई है माड़ौकी ❋ जहं मानुषकी नाहिं बिसाय ॥
बज्रकी देही है करियाकी ❋ जामें नाहिं गड़ै हथियार ।
इतनी बात सुनी ऊदनि तब ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजायं ॥
हंसी खुशीसे आशा देदेउ ❋ माता हम मनिबेके नाहिं ।
जो कछु बात कहो माता तुम ❋ हमरे मन में नाहिं समाय ॥
तुरत पठावौ म्वहिं माड़ौको ❋ लड़िकै लेउ बापको दाउं ।

यहसुनि मल्हना सोचन लागी ❃ अब मैं हुक्म देउं फरमाय।
कही हमारी यह ना मनिहैं ❃ कलहा देवकुँवरि को लाल॥
हुक्म देदियो तब मल्हनाने ❃ जुग जुग जिवो पुत्र हमार।
विजय पाइहौ गढ़ माड़ौमें ❃ जगमें होय तुम्हारो नाम॥
सवा लाखको कंकन लैके ❃ सो ऊदनिके दियो बंधाय।
पीठि ठोंकी रनि मल्हनाने ❃ माड़ौ लियो बापको दाउं॥
ऊदनि संग लिये देवैने ❃ औ आल्हातर पहुंची जाय।
सैयद बैठे थे तहंवापर ❃ उनसे देवै लगी बतान॥
जेठ हमारे तुम लागत हो ❃ हमरी बात सुनो मनलाय।
ऊदनि बिचले हैं माड़ौको ❃ हमरी कही न मानैं बात॥
संगै जैयो तुम ऊदनिके ❃ माड़ौ जूझ खिलैयो जाय।
कठिन मवासी गढ़ माड़ौ हैं ❃ रहि रहि मेरो जिया घबराय॥
ऊदनि बोले सुनि आल्हासे ❃ दादा जल्द होय तैयार।
बदलो लैहौं मैं ददुआको ❃ तब जियराका डाहु बुझाय॥
आल्हा बोले तब ऊदनिसे ❃ भैया अक्किल कहां तुम्हार।
थोरी उम्मिरिके हम सब हैं ❃ बदला सहज मिलनको नाहिं॥
टंगी खोपड़िया ज्यौं दादाकी ❃ तैसेइ खुपड़ी टंगे हमारि।
ऊदनि तड़पे तब आल्हासे ❃ दादा बोलो बात सम्भार॥
जिनके लड़िका समरथ होइगे ❃ क्यों न लेयँ बापको दाउं।
सात कोठरीमें ना बचिहैं ❃ जा दिन ऐहै काल हमार॥
थोड़ी फौज देउ जल्दीसे ❃ माड़ौ कूच जाउँ करवाय।
तुम सब घरमें सुखसे बैठो ❃ इकला जायं करौं तलवार॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले ❃ ऊदनि धीर धरो मनमाहिं।
संघै चलिहौं मैं माड़ौ को ❃ चलिके लिहौं बापको दाउं॥
शीश काटि लैहौं करियाको ❃ औ जम्बैको डरिहौं मारि।
नींव खोदिकै गढ़माड़ौकी ❃ नदी नर्मदा दिहौं बहाय॥
सोच करौ नाकछु जियरामें ❃ औ माड़ौ को होउ तयार।

ऊदनि मलखे दोनों बिचले ❋ औ माड़ौको भये तयार ।
ऊदनि बोले तब सैयदसे ❋ चाचा सुनौं हमारी बात ॥
बाप हमारे सरग पधारे ❋ तुम्हरी गोद गये बैठार ।
देउ सलाह हमैं चाचा तुम ❋ कैसे मिलै बापको दाउं ॥
बड़ो भरोसो म्वहिं तुम्हरो है ❋ अब गाढ़ेमें आओ काम ।
यह सुनिताल्हनबोलन लागे ❋ बेटा सुनो उदयसिंह राय ॥
जब लों जीवै बनरस वाला ❋ तुमको कौन परी परवाह ।
कठिन मोरचा जहंपर देखौं ❋ तहं सैयदको देउ बतलाय ॥
जहां पसीना गिरे पूतको ❋ तहं दै देउ रक्तकी धार ।
इतनी बात सुनी सैयदकी ❋ ऊदनि बहुत खुशी होइ जायँ॥
बोले मलिखे तब ढेबासे ❋ भैया सगुन बिचारन लाग ।
समरसारकी पोथी लैके ❋ ढेबा सगुन बिचारन लाग ॥
ढेबा बोलो तब मलिखेसे ❋ भैया सुनौ हमारी बात ।
सगुन हमारो यह भाषत है ❋ माड़ौ काम सिद्ध होइ जाय ॥
रूप बनावो तुम योगिनको ❋ माड़ौ सबै लेउ पंजियाय ।
हालु जानिकै सब माड़ौको ❋ तुरतै लेउ बापको दाउँ ॥
इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ बहुतक थान लिये मगवाय ।
सो रंगवाये सब गेरूसे ❋ पांच गुदरियां लईं सिलाय ॥
हीरा मोती मूंगा लैके ❋ सो गुदरिनमें दिये टँकाय ।
कड़ा सोबरनके हाथन मां ❋ टोटिन जड़े जवाहिर लाल ॥
बाइस परतन की गुदरी हैं ❋ जिनमें छिपे पांच हथियार ।
कुण्डल सोहत हैं काननमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
हाथ सुमिरनी सब जोगिनके ❋ मुहसे रामराम रट लागि ।
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ पंचये सैयद भये तयार ॥
बोले मलिखे पुनि आल्हासे ❋ दादा सुनौ हमारी वात ।
अलख जगावो गढ़ महुबेमें ❋ मांगौं महल मल्हनदे क्यार ॥
महल चेतावौ फिर माताको ❋ ना पहिचानै दिवलदे माय ।

तब हम जनिहैं अपने मनमें ❁ माड़ौ लिहैं बाप को दाउँ ।
सुनिकै बातैं नर मलिखेकी ❁ सबके मनमें गईं समाय ॥
तब सारंगी सैयद लैलई ❁ आल्हा डमरू लई उठाय ।
लो इकतार नर मलिखेने ❁ ढेवा खँजरी लई उठाय ॥
लई बांसुरी बघऊदनिने ❁ औ चलि भयो एकही साथ ।
रागरागिनी गावन लागे ❁ जितने उठै बीर बैताल ॥
ठुमकी टप्पा भजन रेखता ❁ जोगी गावैं राग मलार ।
धुरपद सोरठ औ तिल्लाना ❁ गजल तर्जपर तोरैं तान ॥
डगरत चलिभै पांचो जोगी ❁ रंगमहल तर पहुँचे जाय ।
अलख जगाई दरवाजेपर ❁ सिगरे मोहि गये नरनारि ॥
सूरति देखी जब जोगिनिकी ❁ बांदी जौनि मल्हनदे क्यार ।
पांच योगिया ऐसे आये ❁ जिनके रूप न बरने जायं ॥
इतनी सुनिकै मल्हना चलिभइ ❁ दरवाजे पर पहुंची आय ।
रूप देखि कै तिन जोगिनको ❁ मल्हना बहुत खुशीहोइजाय ॥
भिक्षा दैकै मल्हना बोली ❁ योगियो हाल देउ बतलाय ।
कौन देशके तुम जोगी हौ ❁ काहे डारे मूंड मुंडाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❁ माता सुनौ हमारी बात ।
धोखे न रहियो तुम जोगिनके ❁ हमरो नाम उदयसिंहराय ।
बदलो लेहौं हम दादाको ❁ तासों डारो मूंड मुंडाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❁ जुग जुग जियो लड़ैते लाल ।
अब हम जानी अपने मनमें ❁ माड़ौ लिहौ बापको दाउं ॥
इतनी सुनिकै योगी चलिभै ❁ जहं पर महल दिवलदे क्यार ।
तहंपर पांचौ योगी पहुंचे ❁ महलन अलख जगावन लाग॥
कान अवाज परी देवैके ❁ तब लगि बांदी कही सुनाय ।
पांच योगिया ऐसे आये ❁ मानौ राम लखन औतार ॥
इतनी सुनिकै देवै चलिभइ ❁ औ फाटकपर पहुंची आय ।
रूप देखिकै तिन योगिनको ❁ देवै उनसे लगी बतान ॥

कौन देशते तुम आये हो ❀ योगिऔ कहां तुम्हारो ठांव ।
बहुत पियारे हमको लागो ❀ योगिऔ करो इहां विसराम ॥
लड़िका हमारे सब लायकहैं ❀ तुम्हरी सेवा करैं बनाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ माता सुनो हमारी बात ॥
लड़िका तुम्हरे हम लागत हैं ❀ कुंछा लिये रहिउ नौमास ।
ना पहिचानो तुमने माता ❀ समुहे सैयद खड़े तुम्हार ॥
ड्योढ़ी मंगिहैं रनिकुशलाकी ❀ माड़ो सबै लिहैं पंजिआय ।
भेद जानिके लोहागढ़को ❀ माड़ो खोदि करैहौं ताल ॥
यह सुनि देवै बहुत खुशी भई ❀ औ हँस कही दिवलदे माय ।
अब हम जानी अपने मनमें ❀ माड़ौ लिहो बापको दाउं ॥
भुजबलपूजि दिये लड़िकनके ❀ टीका करो दिवलदे माय ।
पीठी ठोंकी सब लड़िकनके ❀ जुग जुग जिऔ लड़ैते लाल ॥
ज्यों जल बाढ़ै श्रीगङ्गामें ❀ तुम्हरी रण बाढ़ै तलवार ।
युद्ध देखि हैं गढ़ माड़ोकी ❀ हमहूं चलिहैं साथ तुम्हार ॥
इतनी सुनिकै जोगी चलिभे ❀ औ लश्करमें पहुंचे आय ।
बाना बदलो तब क्षत्रीको ❀ तुरत नगड़ची लियो बुलाय ॥
बीरा दैकै सैयद बोले ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ।
बजै नगाड़ा गढ़ महुबेमें ❀ लश्कर सजै बनाफर क्यार ॥
बरनी ह्वइ गइ गढ़ माड़ोकी ❀ अब ना राखौ देर लगाय ।
बजो नगाड़ा तब महुबेमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बोलि दरोगा तोपन वारो ❀ चीरा कलंगी दई इनाम ।
तोपैं सजवाऔ जल्दीसे ❀ औ चरखिनपर देउ चढ़ाय ॥
तोप कालिकाको सजवायो ❀ तोप संकटा लई सजाय ।
हनू हंकारनि गर्भ गिरावनि ❀ तोप भवानी लई सजाय ॥
सूर्यलपक्कनि चन्द्रझपक्कनि ❀ दोनौं तोपैं लई सजाय ।
बिजुली तड़पनि तोप सजाई ❀ भैरों तोप लई सजवाय ॥
बुर्ज मरोरनि पर्वत ढावनि ❀ किला तुड़ावनि लई सजाय ।

तोप लछिमनाको सजवायो ❋ बंबकि तोप लई सजवाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ॥
बोलि दरोगा हाथिन वारो ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
हाथी सजवावौ जल्दीसे ❋ जिनको सजत न लागै वार ॥
हुक्म पायकै चला दरोगा ❋ हाथी सबै सजावन लाग ।
बड़े बड़े हाथी सजवाये ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
हाथी दुइदन्ता सजवाये ❋ औ इकदन्ता लिये सजाय ।
भोरागज अंगद पंगद गज ❋ औ मलियागिरि लिये सजाय ॥
मैनकुंज धौलगिरि साजे ❋ भूरा हाथी लिये सजाय ।
मकुना हाथी सब सजवाये ❋ मुड़िया हौदा दिये धराय ॥
डारिके गद्दा मखमलवारे ❋ तिनपर हौदा दिये धराय ।
जड़े जवाहर अम्बारिनमें ❋ झालरि लगी मोतियन क्यार ॥
एक एक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ।
बोलि दरोगा घोड़नवारो ❋ हाथन कड़ा दिये डरवाय ॥
घोड़ा साजि लेउ जल्दीसे ❋ ना अब राखौ देर लगाय ।
हुक्म पायकै चलौ दरोगा ❋ घोड़ा तुरत सजावन लाग ॥
कच्छी मच्छी घोड़ा साजे ❋ ताजी मुस्की लिये सजाय ।
लख्खा गर्रा हरियल साजे ❋ पँचकल्याणी लिये सजाय ॥
सब्जा सुर्खा घोड़ा साजे ❋ औ दरियाई लिये सजाय ।
श्यामकर्ण घोड़ा सजवाये ❋ औ सुखभञ्जन करे तयार ॥
चौधरि चाल कबूतर साजे ❋ घोड़ा सपेदा लिये सजाय ।
घोड़ा पचरंगा सब रंगा ❋ घोड़ि हिरौंजिनि करी तयार ॥
केसरि डारि दई मेहदीमें ❋ चारौं सुम्म दिये रँगवाय ।
पूँछ रँगाई सब घोड़नकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
धरि कठिलानी तिन घोड़नपर ❋ ऊपर जीन दिये धरवाय ।
दई लगामें तब कंचनकी ❋ औ चांदीकी डारि रकाब ॥
लगे बकसुआ हैं सोनेके ❋ औ रेशमके तंग कसाय ।

लैले कलँगी मोतिचूरकी ❋ सो कल्लनपर दई धराय ॥
डेढ़पहर केरे अरसामें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
मलिखे ऊदनि बदलत आये ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
ऊदनि बोले तब क्षत्रिनमें ❋ भैया सुनौ हमारी बात ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार ॥
काज हमारा अब अटको है ❋ सो गाढ़ेमें आवौ काम ।
कठिन लड़ाई है माड़ौकी ❋ जहँपर जंबै को है राज ॥
जिनको प्यारी हों घर तिरिया ❋ सो सब छोरि धरो हथियार ।
जिन्हें पियारी परम भगौती ❋ सो सब चलो हमारे साथ ॥
जीतिके ऐहो जो माड़ौसे ❋ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ।
प्राणसे प्यारे हमको होइहौ ❋ हमरी बिपति बटैहो जाय ॥
इतनी सुनिलइ जब क्षत्रिनने ❋ तब ऊदनिसे कही सुनाय ।
निमक चन्देलेको खायो है ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ॥
पांव पिछारू हम ना धरिहैं ❋ देहैं जियत तुम्हारो साथ ।
जहांपसीना तुम्हरो गिरिहैं ❋ तहं दैदेयं रक्तकी धार ॥
इतनी कहिके सिगरे क्षत्री ❋ अपनी करन तयारी लाग ।
पांचौ कपड़ा क्षत्रिन पहिरे ❋ पांचो बांधिलिये हथियार ॥
पहिरे नीचेसे कपची बंद ❋ औ ऊपरसे कुलह कबार ।
तिनके ऊपर बख्तर पहिरे ❋ जामें नाहिं गड़े तलवारि ॥
पगड़ी सुरखैं है माथेपर ❋ ऊपर कुण्डी लई औंधाय ।
सजिकै क्षत्री सब ठाढ़े भे ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
ताल्हा सैयद बनरसवाले ❋ सोऊ सजिके भये तयार ।
सजिके ठाढ़े भे ब्रह्मानंद ❋ औ सजि गये बनाफरराय ॥
यकयकजिरहैंदुइदुइ बख्तर ❋ कंमर दुइ बांधि तलवार ।
पहिरे जामा सब केसरिया ❋ औ माथेपर तिलक सुहाय ॥
सुर्ख पगड़िया शिरपर सोहै ❋ औ कलंगीकी अजब बहार ।
सजिकै चलिभये सब जल्दीसे ❋ देविकि मठिया पहुंचे जाय ॥

पूजन करिकै जगदम्बेको ❀ औ देवीको शीश नवाय।
करिकै पूजा नीलकंठकी ❀ मनियां सुमिर महोबे क्यार॥
करिकै बितती जगरानीकी ❀ होउ सहाय कालिका माय।
पूजाकरिकेसबियां चलिभये ❀ जहं दरबार चंदेले क्यार॥
जायके पहुंचे सब राजापै ❀ दोनों हाथ जोरि रहि जायं।
आज्ञा दैदेउ अपने मुंहसे ❀ माड़ौ लेयं बापको दाउं॥
पीठि ठोंकि दइ चन्देलेने ❀ तुम्हरे कामसिद्धि होइ जायं।
बोले राजा तुनि आल्हासे ❀ बेटा बहुत रहेउ होशियार॥
कठिन किला है लोहागढ़को ❀ जालिम बहुत करिंघाराय।
जम्बै राजाके समुहे पर ❀ बिरला शूर गहे तलवार॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा सुनौ हमारी बात।
पांव पिछारी हमना धरिहैं ❀ चाहैं धजी धजी उड़िजाय॥
जीवत रहिहैं तो फिर मिलिहैं ❀ ददुआ हुक्म देउ फरमाय।
फिरिकै राजा बोलन लागे ❀ अब तुम सुनौ युद्धकी बात॥
रीति नीतिसे जो कोउ बर्तै ❀ ताकी कबहुं होय नहिं हार।
हाहा खातेको ना मारै ❀ ना तिरियापर डारे हाथ॥
बालक बूढ़ेको ना मारै ❀ ना भागेके परै पिछार।
पहिली चोट करै कबहूं ना ❀ ना निर्बल पर करै प्रहार॥
ताको मारै ना काहूविधि ❀ जाके पास नाहिं हथियार।
पांव पिछारूको न हटावै ❀ ताकी जीति होय सबकाल॥
यही धर्म है सब क्षत्रिनको ❀ बर्तैं समरभूमिके माहि।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ तब राजासे कही सुनाय॥
यह सब बातैं हम सब मनिहैं ❀ चाहे प्राण रहैं की जाय।
इतनी कहिकै सबियां चलिभै ❀ औ मल्हनातर पहुँचे जाय॥
चरन लागिकै रनिमल्हनाके ❀ दोनों हाथ जोरि रहिजाय।
पीठी ठोकी रनि मल्हनाने ❀ औ लड़िकनसे कही सुनाय॥
अबकी बिछुरेफिरिकबमिलिहौ ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय।

हाथ जोरिके ऊदनि बोले ❋ माता वचन करौ परमान ॥
आठ महीनाके बीतेपर ❋ नवयें ऐहौं नगर महोब ।
इतनी सुनिकै मल्हना बोली ❋ तुम्हरे कामसिद्धि होइ जायँ ॥
चरणलागिके ऊदनि चलिभें ❋ अपनी फौज पहूंचे जाय ।
बोलि नगड़चीको बीरा दौ ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगारागढ़ महुबेमें ❋ लश्कर चलै वनाफर क्यार ।
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुसियार ॥
चोट नगाड़ाके बाजत खन ❋ लश्कर चला महोबे क्यार ।
कूच कराय दियो माड़ौको ❋ डंका होन गोलमें लाग ॥
घोड़ी सिंहिनि पर सैयद हैं ❋ दाढ़ी रही तोंदपर छाय ।
घोड़ा करिलियापर आल्हाहैं ❋ घोड़ी कबूतरीपर मलिखान ॥
घोड़ा हरनागरपर ब्रह्मा हैं ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ।
घोड़ा बेंदुलापर ऊदनि हैं ❋ शोभा एक न बरणी जाय ॥
संगै डोला रनि देवैको ❋ गढ़ माड़ौको करो पयान ।
धावा करिके राति दिनको ❋ क्षत्रिनगिनी धूप ना छाह ॥
सत्रह दिना केरे धावामें ❋ बबुरी बनमें पहुँचे जाय ।
डेरा डारि दिये धूरेपर ❋ ऊंचे ठाढ़े करे निसान ॥
तंग छोरिदे सब घोड़नकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
फेंटैं छुटि गईं सब क्षत्रिनकी ❋ सबने छोरि धरे हथियार ॥
तम्बू लागे बन्नातनके ❋ ऊपर धर्मध्वजा फहराय ।
सुर्खी देखि परै तंबुअनकी ❋ झण्डन रही लालरी छाय ॥
तोपैं फैलीं तीनि कोसलौं ❋ पेटी भरी बरूदन क्यार ।
सो दल परिगौ तीनि कोसलौं ❋ तंबुअन रही लालरी छाय ॥
घोड़ा बंधिगे तीन कोसलौं ❋ माला चमकि चमकि रहजाय।
हाथी बंधिगै तीन कोसलौं ❋ औ अड़ि गयो दांतसे दांत ॥
बारह कोसी चौगिरदामें ❋ झण्डा गड़ौ महुबियन क्यार।
कहुं कहुं क्षत्री करैं रसोई ❋ कहुं कहुं मुद्गर रहे फिराय ॥

कहुं कहुं पंडितपोथी बांचै ❋ कहुं कहुं नाच कञ्चिनिन क्यार।
दश दिन बीति गये डेरनमें ❋ यक दिन कही उदयसिंहराय॥
कौन नींद दादा सोवत हौ ❋ अब चढ़ि लेउ बापको दावं।
इतनी सुनिलइ जब आल्हाने ❋ तब ढेबाको लियो बुलाय॥
सगुन बतावौ ढेबा भैया ❋ कैसे मिलै बापको दाउं।
पोथी लैकै समरसारकी ❋ ढेबा सगुन बिचारन लाग॥
बोले ढेबा तब आल्हासे ❋ दादा जल्दी होउ तयार।
बाना बदलो तुम क्षत्रिनको ❋ जोगी बनौ बनाफर राय॥
अलख जगावौ पहिलेचलिकै ❋ तुम्हरो काम सिद्ध होइ जाय।
इतनी सुनिकै नुनि आल्हाने ❋ तुरत गुदरियां लईं मंगाय॥
पांचौ जोगी बने तहांपर ❋ अपने बाजा लियो उठाय।
तिलक लगायो रामानन्दी ❋ देही लई विभूति रमाय॥
आल्हा ऊदनि ढेबा सैयद ❋ पंचये सजे बीर मलिखान।
ब्रह्मानंद छांड़े लश्करमें ❋ तिनसे आल्हा कही सुनाय॥
कठिन देश है मारवाड़को ❋ भैया बहुत रहेउ हुशियार।
पांचौ जोगी डगरत चलिभे ❋ औ देवैतर पहुंचे जाय॥
आवत देखो जब जोगिनको ❋ देवै उठी भरहरा खाय।
थार सुबरनको मंगवायो ❋ चौमुख दीयना धरो बनाय॥
आरति लेके देवै आई ❋ सब जोगिनपर धरी उतारि।
माथ नायकै तब देवैके ❋ औ चलिबेको भये तयार॥
छोड़ि आसरा जिंदगानीको ❋ अपने माया मोह बिसराय।
पांचौ जोगी डगरत चलिभै ❋ अपने बाजा दिये बजाय॥
बजी सरंगी तब सैयदकी ❋ आल्हा डमरू दई बजाय।
बजो इकतारा नरमलिखेको ❋ ढेबा खंजरी दई बजाय।
बजो बंसुरियाबघऊदनिकी ❋ गावन लागे राग मलार।
क्यागतिबरणौंत्यहिसमयाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
जोगी लांघि गये बबुरीवन ❋ औ फाटकपर उरके जाय।

बोलो दरवानी जोगिनसे ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशसे तुम आये हो ❀ आगे कहां तुम्हारो काम ।
बोले आल्हा दरवानी से ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
हम रहवैया बङ्गालेके ❀ औ गोरखपुर कुटी हमार ।
आगे जैहैं हिंगलाजको ❀ फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
खर्च निवरिगो है कम्मरसे ❀ सो हम भिक्षा मंगिहैं जाय ।
बोलो हरकारा जोगिनसे ❀ बाबा धीर धरौ मनमाहिं ॥
हुक्म पायके हम राजाको ❀ फाटक तुरत दिहैं खुलवाय ।
फिर हरकारा गौ डचोढ़ीमें ❀ जहं जम्बै को राजकुमार ॥
राजा अनुपी जहं बठोथो ❀ तुरतै करी बन्दगी जाय ।
बोलो हरकारा अनुपीसे ❀ ओ महराज गरीब नेवाज ॥
जोगी पांच खड़े द्वारेपर ❀ जिनके रूप न बरने जाय ।
हुक्म जो पाऊँ महाराजको ❀ फाटक तुरत देउं खुलवाय ॥
इतनी सुनिलइ दरवानीसे ❀ तब अनुपीने दियो जवाब ।
फाटक खोलि देउ द्वारेके ❀ औ जोगिनको लाउ लिवाय ॥
गौ हरकारा तब द्वारेपर ❀ औ फाटकको दियो खुलाय ।
पांचौ जोगी तब भीतर गे ❀ औ डचोढ़ीमें पहुंचे जाय ॥
सम्मुहे अनुपीको देखतखन ❀ बायें करसे करी सलाम ।
गुस्सा होइके अनुपी बोले ❀ इन जोगिनको देउ निकारि ॥
हैं बेअक्किल यह जोगी सब ❀ इन बायें कर करी सलाम ।
इतनी सुनिकै ऊदनि तड़पे ❀ औ अनुपीसे कही सुनाय ॥
ध्यान तुम्हारो कहं राजा है ❀ कछु तौ मनमें करौ विचार ।
जौन हाथसे जपैं सुमिरनी ❀ नित उठि लेयँ रामको नाम ॥
तौन हाथसे करैं बन्दगी ❀ हमरो जोग भङ्ग होइ जाय ।
दहिने बैठे थे टोडरमल ❀ सो अनुपीसे लगे बतान ॥
मुंह ना लागौ इन जोगिनके ❀ ना इनको तुम लेउ शराप ।
अपने कर्तबमें पक्के हैं ❀ इनपर तेज रहो है छाय ॥

देखि तमासा लेउ इनको तुम ❋ औ भिक्षाको देउ मगाय ।
इतनी सुनिके अनुपी बोले ❋ जोगिया कर्तब देउ दिखाय ॥
सुनतै जोगी बहुत खुशी ह्वै ❋ अपने बाजा दिये बजाय ।
बजी खंजरी तहं ढेबाकी ❋ बंसुरी बजी उदयसिंह क्यार ॥
बजो इकतारा नरमलिखेको ❋ आल्हा डमरू दई बजाय ।
बजी सारंगीतब सैयदकी ❋ दाढ़ी रही तोंदपर छाय ॥
नाचे ऊदनि त्यहिसमयापर ❋ अनुपी मोहि मोहि रहिजाय ।
डारि मोहनी दइ बंगलामैं ❋ तब अनुपीने कही सुनाय ॥
बहुत पियारे बाबा लागौ ❋ कछुदिन यहंपर करो मुकाम ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
आजु रमानो तुम्हरो बंगला ❋ भोरहिं हमें रमानी बाट ।
बहता पानी रमता योगी ❋ इनको ठीक ठिकाना नाहिं ॥
पक्के जोगी जो कर्तबके ❋ तिनको कौन सकै बिरमाय ।
भिक्षा मंगिहैं हम माड़ौमें ❋ जेहैं हिंगलाज महराज ॥
इतनी बात सुनी जोगिनकी ❋ अनुपी तोड़ा लये मंगाय ।
सो पकराय दिये जोगिनको ❋ मनमें बहुत खुशी होइ जायं ॥
चलिभये जोगी तब बंगलासे ❋ औ माड़ौकी पकरी राह ।
पहर एकको अरसा गुजरो ❋ औ फाटकपर पहुंचे जाय ॥
अलख जगाई दरवाजेपर ❋ तब दरवानी दियो जवाब ।
कहांसे आये औ कहं जैहौ ❋ बाबा हाल देउ बतलाय ॥
जोगी बोले दरवानीसे ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
देश हमारो बंगाला है ❋ आगे हिंगलाज को जायं ॥
बोलो दरवानी जोगिनसे ❋ योगियो बारबार बलिजाउं ।
चारि महीना चौमासा लौ ❋ बाबा यहां करौ बिसराम ॥
धुनी रमाय देउं फाटकपर ❋ ठाढ़े खिदमत करौं तुम्हारि ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ ठाकुर अक्किल गई तुम्हारि ॥
रमता योगी बहता पानी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय ।

हम सब जैहैं हिंगलाजको ❀ होवै घरी घरी पर ब्यार ॥
खर्चा घटने पर यहं आये ❀ फाटक जल्द देउ खुलवाय ।
भिक्षा मंगिहैं गढ़ माड़ौमें ❀ भोरहि कूंच जायं करवाय ॥
इतनी सुनिकै दरवानीने ❀ तुरतै फाटक दियो खुलाय ।
डगरत चलिभये पांचौयोगी ❀ बवन बजरिया पहुंचे जाय ॥
गावत नाचत जोगी आये ❀ जोगी चले बजार बजार ।
लगी दुकानैं हलवाइनकी ❀ औ बनियनकी लगी बजार ॥
साहूकार बजाज जौहरी ❀ औ दूकान तंबोलिन क्यार ।
सजी दुकानै गोटावारी ❀ बैठे बड़े बड़े उमराव ॥
डारि मोहिनी दई बजारमें ❀ बहुत करि दइ बन्द दुकान ।
सुने रागिनी जो जोगिनकी ❀ बाजा सुने योगियन क्यार ॥
मोहित होइगे नर नारी सब ❀ घरकी सुधि बुधि दई बिसारि ।
तिरिया मोहीं गढ़ माड़ौकी ❀ देखत रूप जोगियन क्यार ॥
कोई देवै छल्ला मुँदरी ❀ काहू माला दइ पहिराय ।
साल दुशाला काहू दीन्हे ❀ काहु आरती दइ उतारि ॥
नाचत गावत जोगी चलिभये ❀ औ पनिघटपर पहुंचे जायं ।
पानी भरतीं जो पनिहारी ❀ सो सब मोहि मोहि रहिजाय ॥
कोइ घबड़ाको फांसत रहिगइ ❀ कोई कुवां रही लरकाय ।
पानी भरनो भूलि गई सब ❀ तनकी सुधिबुधि दई बिसारि ॥
रूपा बांदी रनि कुशलाकी ❀ सो पनिघटपर पहुंची आय ।
बांदी मोहि गई रानीकी ❀ देखो रूप योगियन क्यार ॥
डेढ़पहर कुअँटापर होइगो ❀ सिगरो प्यास मरै रनिवास ।
कछु सुधि आई तब बांदीको ❀ बांदी रंगमहलको जाय ॥
कुसला रानीने ललकारो ❀ बांदी तेरो बुरो होइ जाय ।
डेढ पहर कुअंटा पर लागो ❀ सिगरो प्यास मरै रनिवास ॥
क्या काहूसे आंखी लागी ❀ क्या बांदी कहुं करो भतार ।
देर लगाई क्यों कुअंटापर ❀ सो तू हमैं देय बतलाय ॥

हाथ जोरिके बांदी बोली ❋ रानी सुनौ हमारी बात ।
पांच जोगिया ऐसे आये ❋ जिनको रूप न बरनो जाय ॥
उमरि बीतगइ मेरिमाड़ौमें ❋ अस जोगी ना परे दिखाय ।
सबै रागिनी जोगी गावैं ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
एक जोगिया ऐसो नाचे ❋ जैसे वनमें नाचे पुछारि ।
कुसला बोली तब बांदीसे ❋ रूपा अक्किल कहां तुम्हारि ॥
रूपकि आगरि मेरि बेटी है ❋ ऐसो रूप नाहिं संसार ।
बोली बांदी हाथ जोरिके ❋ रानी वचन करौ परमान ॥
ऐसे सुन्दर वे योगी हैं ❋ मानहुं राम लखन औतार ।
मुख नरियारे सुरत सांवरे ❋ नैना हिरनाकी अनुहार ॥
हुक्म तुम्हारो रानी पाऊं ❋ अबहीं उनको लाउं बुलाय ।
हुक्म दे दियो तब रानीने ❋ वांदी गई योगियन पास ॥
दोउ करजोरे बांदी बोली ❋ योगियो सुनो हमारी बात ।
तुम्हरो बुलौआ है महलनमें ❋ महलन करो तमासा आय ॥
भिक्षा पैहो मुंह मांगी तुम ❋ जल्दी चलो हमारे साथ ।
इतनी बात कही जोगिनने ❋ मनमें बहुत खुशी होइ जायं ॥
जोई रोगीके मन भावै ❋ सो बैद बताई आय ।
संगे चलि भये पांचौं जोगी ❋ औ डचोढ़ीपै पहुंचे आय ॥
बोली बांदी तब जोगिनसे ❋ जोगिन पैयां परो तुम्हार ।
कछुकबिलमियो दरवाजेपर ❋ महलन खबरि देउं पहुंचाय ॥
बांदी चली गई महलनको ❋ जोगी ठाढ़े पंवरि दुआर ।
घोड़ा पपीहा गजपचशावद ❋ सो आल्हाके परो निगाह ॥
यादि आइगइ तब आल्हाको ❋ आल्हा तुरत गयो पहचान ।
तुरतै आल्हा रोवन लागे ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
कौने कारण दादा रोवौ ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ भैया सुनो हमारी बात ॥
गजपचशावद यहु दादाको ❋ सो हम तुरत लियो पहिचान ।

घोड़ा पपीहा है चाचाको ❋ तापर चढ़त करिंघाराय ।
इतनो सुनिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ॥
फांदि सवार होउं घोड़ापर ❋ औ लश्करमें राखौं जाय ।
तुरतै सैन करी मलिखेने ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि ॥
चोर कहैहो तुम दुनियामें ❋ जो घोड़ाको लिहौ चुराय ।
उहिदिन चढ़ियौयाघोड़ापर ❋ जेहिदिन लेउ बापको दांव ॥
पांचौ जोगी आगे बढ़ि गये ❋ दुसरे फाटक पहुंचे जाय ।
पत्थर कोल्हू तहंपर देखो ❋ पेड़ बरगदा परो दिखाय ॥
टंगी खुपड़िया जो बरगदमें ❋ सो आल्हाने लई पहिंचानि ।
बुर्ज एक देखो तहंई पर ❋ तापर सूखि रही हड़वार ॥
जोगी पहुंचे जब समुहेपर ❋ आभा बोलि उठी तत्काल ।
हमरे बेटा जोगी ह्वइ गये ❋ हमरो छुटो भरोसा आज ॥
हम यह जानी थी अपने मन ❋ लड़िकै गया दिहैं करवाय ।
कबहुंक समरथ लड़िका होइहैं ❋ माड़ौ लिहैं हमारे दाउं ॥
यह सुनि आल्हा रोवन लागे ❋ तहं छांड़ि दई डिडकार ।
लौटिके ऊदनि देखन लागे ❋ औ आल्हासे लगे बतान ॥
अब क्यों रोवत हो दादा तुम ❋ सांचो हाल देउ बतलाय ।
कौन जानवरकी खोपरी है ❋ सो बर्गदमें परै दिखाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय ।
टंगी खोपरिया है दादाकी ❋ औ चाचाकी परत दिखाय ॥
यही हड़ावर है बुर्जीपर ❋ जो कोल्हूमें दई पेराय ।
राजा जम्बै औ करियाने ❋ बरगद खोपड़ी दई टंगाय ॥
इतनी बात सुनि ऊदनिने ❋ औ बरगद तर पहुंचो जाय ।
झपटि खोपरी ऊदनि पकरी ❋ औ छातीसे लई लगाय ॥
रोयके ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं ।
बदलो लीन्हे बिन ना जैहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायं ॥
खोपड़ी मिलिहैं की खुपड़ीमें ❋ की सागरमें दिहैं बहाय ।

बोली आभा दस्सराज की ❋ धनि धनि मेरे लड़ैते लाल ।
अब हम जानी अपने मनमें ❋ हमरी गया दिहो करवाय ॥
तौलौं बादी दाखिल होइ गई ❋ औ जोगिन तर पहुंची आय ।
रोवत देखो जब योगिनको ❋ तब जोगिनसे कही सुनाय ॥
काहे रोवत हौ जोगिऔ तुम ❋ सो तुम हमहि देउ बतलाय ।
तुम हौ लड़िका केहु राजाके ❋ चलिकै रूप छिपायो आय ॥
खबरि सुनैहौं मैं राजाको ❋ सबको पेटु दिहौं फरवाय ।
मलिखे बोले तब बांदीसे ❋ बांदी लौटि जीभ मुंह दाब ॥
भूत चुरैले हैं बरगद पर ❋ आभा बोलि बोलि रहिजायं ।
छोटे जोगीको डर लागो ❋ सो यह रोय रोय रहिजाय ॥
बांदी बोली तब जोगिनसे ❋ तुमरो चित्त गयो भरमाय ।
दस्सराज औ बच्छराजकी ❋ करिया लायो मुस्क बंधाय ॥
पत्थर कोल्हू तिनहिं पिरायो ❋ बरगद खोपरी दई टंगाय ।
आल्हा ऊदनि मलिखे सुलिखे ❋ तिनको नाम रटत दिनराति ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ बांदी सुनो हमारी बात ।
हम ना जैहैं अब महलनमें ❋ जो सुनि लिहैं बघेलेराय ॥
पत्थर कोल्हूमें पिरवैहैं ❋ नाहर लेहैं जान हमार ।
इतनी सुनिकै बांदी बोली ❋ जोगिऔ वचन करो परमान ॥
कछू न डरपो अपने मनमें ❋ जोगियौ बार बार बलि जाउं ।
दियोदिलासा तिनजोगिनको ❋ जोगी रंगमहलको जायं ॥
रङ्गमहल देखो जम्बैको ❋ जोगी बहुत खुशी होय जायं ।
मलयागिरिकी लगीं खिरकियां ❋ चंदन महकि महकि रहिजायं ॥
जहां झकोर लेयं झंझरिनसे ❋ सुन्दर मन्द सुगन्ध बयारि ।
हंस हिलोर लेयं सागरपर ❋ औ छज्जनपर नाचै मोर ॥
खम्भा लागे रतन जड़ाऊ ❋ छौनी मोर पंख की लागि ।
रंग बिरंगे सतखण्डा हैं ❋ बनता बरन करी ना जाय ॥
करी खबर तब यह बांदीने ❋ जोगी आये पंवरि दुआर ।

परदा करिकै रानी बैठी ❋ औ जोगिन तन रही निहारि ॥
तब ललकारो रानी कुशला ❋ बांदी तेरो बुरो होइ जाय ।
कैसे जोगी तू लै आई ❋ तेरो पेट्टु दिहौं फरवाय ॥
छलकरि लाई तू जोगिनको ❋ ये ना जोगी परैं दिखाय ।
ये तो लड़िका केहु राजनके ❋ इन छल करो यहांपर आय ॥
चौड़ी छाती इन जोगिनकी ❋ मारू सिंह बरन करिहांव ।
मोरवा जिनके चढ़ा उतारू ❋ नयनन रही लालरी छाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ रानी सुनो हमारी बात ।
सूखा परिगौ देश हमारे ❋ बारे मरिगे बाप हमार ॥
बिकल हमारी माता ह्वइ गइ ❋ बेंचो हमहिं जोगिन हाथ ।
रूप विधाता हमको दीन्हे ❋ सो हम कहां छिपावैं जाय ॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❋ यह तुम हमें कहौं समुझाय ।
हीरा मोती लाल जवाहिर ❋ सो गुदरिनमां परत दिखाय ॥
कौन देशमें गुदरी पाई ❋ सो तुम सांची देउ बताय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ औ रानीको दियो जवाब ॥
हम सब चलिभै बंगालेसे ❋ औ कनउजमें पहुंचे जाय ।
बहुत खुशी होइ राजाजैचंद ❋ पांचौ गुदड़ी दई बनाय ॥
कड़ा सुबरनके हाथनमां ❋ सौ डरवाये कनौजी राय ।
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगिउ वचन करौ परमान ॥
नाचदिखावौ अब हियनापर ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
डमरू बाजो जब आल्हाको ❋ बजी बेन बीर मलखान ॥
बजी सरंगी तह सैयदकी ❋ खंजरी ढेबा दई बजाय ।
बजी बसुरिया बघ ऊदनिकी ❋ शोभा एक न बरनी जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ ऊदनि तान सुनावन लाग ।
डारि मोहनी दइ महलनमां ❋ सिगरो मोहि गयो रनिवास ॥
फिरिकै ऊदनि नाचन लागे ❋ जैसे बनमें नचै पुछारि ।
परदा लौटा तब रानीको ❋ औ जोगिनको देखन लागि ॥

हार नौलखा रानी पहिरे ❋ सो ऊदनिकी परी निगाह ।
मोह आयगो तब ऊदनिको ❋ हिचकी बंधी उदयसिंह क्यार ॥
सुरखी आय गई मुखड़ापर ❋ नैनन रही लालरी छाय ।
कुहनी मारी तब सैयदने ❋ औ सैननसे कही बुझाय ॥
रारि मचैहौ जो हियना पर ❋ तुमरी जान बचैगी नाहिं ।
ना कौइ घोड़ा हैं चढ़िबेको ❋ ना है फौज कटीली साथ ॥
गुस्सा गेकि लेउ जल्दीसे ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
देखि खोपरी ऊदनि रोये ❋ नयनन बही नीरकी धार ॥
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगियो भेद देउ बतलाय ।
छोटा जोगी क्यों रोवत है ❋ खोपरी देखि देखि रहिजाय ॥
इतनी सुनिकै सैयद बोले ❋ रानी सुनि लेउ वचन हमार ।
टंगी खोपड़ी हैं बरगद पर ❋ औ जो सूखि रही हड़वार ॥
भूत चुरैलैं हैं द्वारेपर ❋ आभा बोलि बोलि रहिजाय ।
देखि हकीकत छोटा जोगी ❋ मनमें बहुत गयो घबड़ाय ॥
डरके मारे यहु रोवत है ❋ रानी वचन करौ परमान ।
किसकी खोपड़ी हैं बरगदपर ❋ कैसे सूखि रही हड़वार ॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❋ जोगिऔ हाल देउं बतलाय ।
करिया बेटा इकदिन चढ़िगौ ❋ महुबे लूटि मचाई जाय ॥
गज पचशावद घोड़ा पपीहा ❋ लाखा पातुर संग लिवाय ।
दस्सराज औ बंच्छराजको ❋ लायो बांधि करिंघाराय ॥
पत्थर कोल्हूमें पेरवायो ❋ खोपड़ी बरगद दई टंगाय ।
टंगी हड़ावर है उनहींकी ❋ आभा बोलि बोलि रहिजाय॥
जो कोउ क्षत्री महुबेमें होवै ❋ सोई आय इनहिं लै जाय ।
गंगाजीमें इनहिं सिरावै ❋ तहंई पिण्डा देय बनाय ॥
गया करै जो इन दोउनको ❋ तबही तुरत मुक्ति ह्वै जाय ।
काहे डरपि गयो योगी यहु ❋ द्वारे कछू भरम है ज्याय ॥
अब तुम नाच करो महलनमां ❋ तुमको कौन परी परवाह ।

बाजा बजाये तब जोगिनने ❋ नाचन लगे उदयसिंह राय ॥
तान मरोरा ऊदनि गावै ❋ महलन दई मोहनी डारि ।
नचै बेंदुलाको चढ़वैया ❋ रनिया मोहि मोहि रहिजायं ॥
तीनि घरी भरि ऊदनि नाचै ❋ रानी बहुत खुशी ह्वै जाय ।
चौकी डरवाई चंदनकी ❋ औ जोगिनसे कही सुनाय ॥
जोगिऔ बैठो तुम चौकिनपर ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कहांसे आये औ कहं जैहो ❋ तुम्हरो गुरु कौन महराज ॥
कौन तपस्या खण्डित ह्वैगइ ❋ बारे डारे मुंड मुड़ाय ।
बोल सुहावन ऊदनि बोले ❋ औ रानिन कोदियो जवाब ॥
हम रहवैया बंगालेके ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि ।
गोरखनाथ गुरू हमरे हैं ❋ अब हम हरद्वारको जायँ ॥
हरद्वारकी बुड़की लैकै ❋ जैहैं हिङ्गलाज महरानि ।
दर्शन करिके तहँ देवीके ❋ आगे सेतुबंधको जायं ॥
कोइ तपस्या नहिं खण्डित है ❋ हम नित लेयं रामके नाम ।
तीरथ तीरथ नित घूमत हैं ❋ हमको कौन पड़ी परवाहि ॥
फिरकैं रानी पूंछन लागी ❋ जोगियो मानो बात हमार ।
चारि महीना चातुरमासा ❋ सुखसे करो यहां विसराम ॥
करिया बेटा जो हमरो है ❋ ठाढ़ो खिदमति करै तुम्हारि ।
बिजमा बेटी जो हमरी है ❋ ठाढ़ी तुमपर करै बयारि ॥
जब तुम जैहो गढ़ माड़ौसे ❋ छकड़न माया दिहौं भराय ।
भूखे होवो राजपाटके ❋ तौ हम राज देयं दिखवाय ॥
ब्याहके भूखे जोगी होवौ ❋ तो हम ब्याह देयं करवाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे तड़पे ❋ रानी अकिल गई तुम्हारि ॥
हम हैं बंगालेके जोगी ❋ हमको कहां ब्याहसे काम ।
पाप कि बातैं रानी बोलौ ❋ नाहीं हमहिं गजकी राह ॥
रमता जोगी बहता पानी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय ।
आजु रमानो महल तुम्हारो ❋ भोरहि हमैं रमानी वाट ॥

इतनी कहिकै जोगी चलिभै ❋ रानी चरण गई लपटाय।
हाथ जोरिकै रानी कुशला ❋ तिन योगिनसे लगी बतान॥
तनिकबिलमियो दरवाजे पर ❋ अबहीं भिक्षा देउं मगाय।
मोती मंगवायो रानीने ❋ सो थारीमें लिये धराय॥
सो दै दीन्हे तिन जोगिनको ❋ जोगिओ तीनिजन्मलौंखाउ।
मूठी यक मोतिनकी लैके ❋ ऊदनि नथुनन लई लगाय॥
मोती सूंघे ऊदनि बांकुड़ा ❋ भोरे बने उदयसिंहराय।
कौन रूखमें यहु लागतफल ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय॥
देखि हकीकति रानी सोची ❋ हा विधना गति कही न जाय।
बारे बारे जोगी ह्वै गये ❋ अपने डारे मूंड़ मुंड़ाय॥
फल नाहीं यह काहु रूखके ❋ इनको मोती कहैं जहान।
इतनी सुनते ऊदनि तड़पे ❋ मोती सबै दिये बिथराय॥
यह मोती हमको ना चहिये ❋ इनको लागत चोर बटमार।
देउ निशानी कछु रानी तुम ❋ जैसे दई तिलकदे रानी॥
तिलका रानीगढ़कनउजकी ❋ ताने दियो नौलखा हार।
हार नौ लखा रानी देहौ ❋ तुम्हरो लेहैं नाम जहान॥
यह सुनि राना सोचन लागी ❋ जामें लगे नाहिं कछु दाम।
लूटिमें पायो यह हरवा है ❋ सो जोगिनको दिहौं इनाम॥
नाम बखनिहैं जोगी हमरो ❋ औ यश छाय रहै संसार।
सोचिकै रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ पैयां परौं तुम्हार॥
कछुक ठहरियोतुममहलनमां ❋ मैं बेटीको लेउं बुलाय।
देखि तमासा बेटी लेवै ❋ तब हम दिहैं नौलखा हार॥
इतनी कहिकै रानी कुशला ❋ तब बांदीसे कही सुनाय।
जल्द बुलाय लाउ बेटीको ❋ बेटी देखि तमासा लेइ॥
इतनी सुनिके बांदीचलिभइ ❋ औ बेटीतर पहुँची जाय।
बिजमा सोवै सतखण्डपर ❋ बांदी तुरत जगायो जाय॥
हाथ जोरिकै बांदी रहिगइ ❋ औ बेटीसे लगी बताय।

तुमहि बुलायो है रानीने ❀ महलन भयो तमासा आय ॥
पांच जोगिया ऐसे आये ❀ जिनके रूप न बरने जाय ।
मनमें समुझि गई बेटी तब ❀ आये महल उदयसिंहराय ॥
बीरा बनायो पांच पानको ❀ बिजमा तुरत कियो सिंगार ।
लैके बीरा बिजमा उतरी ❀ औ मातातर पहुंची आय ॥
मोहित ह्वैगइ बिजमा बेटी ❀ देखत रूप जोगियन क्यार ।
तुरतै बीरा दो ऊदनिको ❀ ऊदनि बीरा लयो चबाय ॥
बिजमा बेटी देखन लागी ❀ अपनी तिरछी नजरि मिलाय ।
नैन बाण लागे ऊदनिके ❀ ऊदनि गिरो भूमि मुरझाय ॥
मूर्छा आय गई बिजमाको ❀ सोऊ गिरी भरहरा खाय ।
देखि हकीकत कुशला रानी ❀ तुरतैं अग्निज्वाल ह्वै जाय ॥
रूप देखिकै मेरि बेटीको ❀ जोगी गिरो तड़ाका खाय ।
एकौ जोगी यह नाहीं हैं ❀ है यह छलिया राजकुमार ॥
उठि जा बांदी तू जल्दीसे ❀ औ करियाको लाव बुलाय ।
मूंड़ कटैहौं इन जोगिनको ❀ औ कोल्हूमें दिहौं पिराय ॥
इतनी सुनतै मलिखे तड़पे ❀ औ रानीसे कही सुनाय ।
जो मरिजैहै छोटो जोगी ❀ महलन आगी दिहौं लगाय ॥
अबही शाप दिहौं महलनमें ❀ तुरतै राज्य भंग ह्वै जाय ।
इतनी सुनतै रानी कांपी ❀ औ जोगिनसे लगी बतान ॥
काहे मूर्छा भइ जोगीको ❀ सो तुम हमहिं देउ समुझाय ।
बात बनाई तब ढेबाने ❀ औ रानीको दियो जवाब ॥
बीरा दीन्हो जो बेटीने ❀ तामें दई तमाकू डारि ।
लागि तमाकू गइ जोगीको ❀ तब गिरि परो भूमि मुरछाय ॥
मूर्छा जागी जब ऊदनिकी ❀ तुरतै उठे उदय सिंहराय ।
मूर्छा जागी जब बिजमाकी ❀ तब रानीने कही सुनाय ॥
पीक तमाकूकी लागतखन ❀ जोगी गिरो भूमि भहराय ।
तुम क्यों भूमि गिरी मूर्छित होइ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥

बोली बिजमा तब मातासे ❋ माता सुनो हमारी बात ।
बारे उम्मरि के जोगी हैं ❋ इन क्यों डारो मूड़ मुँड़ाय ॥
रूप देखिकै इन जोगीकी ❋ हमरे सोच गयो उरछाय ।
पांवखसकिगयोतबसिढ़ियनसे ❋ हम गिरि परीं भूमि भहराय ॥
सुनी बात जब यह रानीने ❋ तब योगिनसे कही सुनाय ।
करोतमासाफिरि जोगिउ तुम ❋ अपने बाजा दियो बजाय ॥
इतनी सुनिलइ जब जोगिनने ❋ अपने बाजा दियो बजाय ।
गावन लागे सब जोगी मिलि ❋ फिरिकै तान सुनावन लाग ॥
तान मरोरा ऊदनि गावैं ❋ महलन दई मोहिनी डारि ।
जितनीं तिरियां महलन बैठी ❋ सो सब मोहि मोहि रहिजायं ॥
काहू दीन्हें छल्ला मुंदरी ❋ काहू हरवा दियो उतारि ।
मूंगा मोती काहू दीन्हें ❋ काहू माला दियो पहिराय ॥
कुशला रानी मोहित होइकै ❋ दीन्हो तुरन्त नौलखा हार ।
चलिभये जोगी तब महलनसे ❋ तुरतै उठी विजैसिन रानि ॥
पहुंचे जोगी तब खिरकीके ❋ जहंपर बिजमा खड़ी अगार ।
बांह पकरिलइ त्यहिऊदनकी ❋ सतखण्डापर पहुंची जाय ॥
बिछो पलंग रहै जहं अंटापर ❋ तापर ऊदनि दिये बिठाय ।
बैठत बिजमा बोलन लागी ❋ तुम महुबेको राजकुमार ॥
नाम तुम्हारो उदयसिंह है ❋ तुम छल करो यहां पर आय ।
अबहिं बुलैहैं मैं भैयाको ❋ डरिहैं तुमहिं जानसे मारि ॥
बोले ऊदनि तब बिजमासे ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि ।
कितनेउ ऊदनिकी मूरतिके ❋ हैं कितनेहू सुरति हमारि ॥
कहंपर देखो तुम ऊदनिको ❋ सो तुम सांची देउ बताय ।
इतनी सुनिकै बिजमा बोली ❋ तुम सुनि लेउ महोबिया ज्वान ॥
अभई लड़िका जो माहिलको ❋ ताको सिरउज भयो बिआहु ।
तुम बरातमें तहं आये थे ❋ बांधे शीश बैजनी पाग ॥
हमहूं न्योते गई तहां पर ❋ देखों तुमहिं उदयसिंहराय ।

मड़ये भीतर हम ठाढ़ी थीं ❀ तुमहूं गयो तहां नगिचाय ।
मारी कुहनी तुभ छातीमें ❀ चोली गई हमारी टूटि ॥
सूरति देखी तब तुम्हरी हम ❀ औ अपने मन कियो विचार ।
ब्याह होय मेरो ऊदनि संग ❀ नाहीं रहौं जन्मभरि क्वांरि ॥
बहुत वर्ष साधे तुम्हरे हित ❀ हमरे हिये बसौ दिन राति ।
क्यों नहिं तुमको हम पहिचानौं ❀ स्वामी मेरे उदयसिंहराय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि हंसिकै ❀ औ बिजमासे कही सुनाय ।
अब हम जानो रानी बिजमा ❀ तुमने हमैं लिये पहिचान ॥
तुम्हरे कारन जोगी हुइकै ❀ हम माड़ौमें पहुंचे आय ।
यह सुनि बिजमा बोलन लागी ❀ अबहीं भांवरि लेउ डराय ॥
ऊदनि बोले तब बिजमासे ❀ प्यारी धीर धरो मनमाहिं ।
ब्याह न करिहैं हम चोरीसे ❀ न हम करैं चोरको काम ॥
जो तुम ब्याह करो चाहौ तौ ❀ सखियां हाल देउ बतलाय ।
बदलो लैहैं हम दादाको ❀ त्यहि दिन होय तुम्हारो ब्याह ॥
बिजमा बोली तब ऊदनिसे ❀ गंगा करौ हमारे साथ ।
होय भरोसो तब हमरे मन ❀ तुमको हाल लेऊं बतलाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ।
कसम खायलइ तुरतै ऊदनि ❀ रानी वचन करौ परमान ॥
बिना ब्याहके जो तोहि छांड़ौं ❀ तौ म्वहिं सो लौटि भगौतीखाय ।
इतनी सुनिलइ जब बिजमाने ❀ मनमें बहुत खुशी होइ जायं ॥
सुनौ हाल अब गढ़ माड़ौको ❀ सो तुम समझि लेउ मनमाहिं ।
कठिन किला है लोहागढ़का ❀ जहंपर जम्बै बाप हमार ॥
बिनासुरंग जो नहिं टूटनको ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ।
किला दूसरे झांसीगढ़ है ❀ जहंपर तपे करिंघाराय ॥
बारहदरी कठिन बैठक है ❀ जहंपर सूरज भाइ हमार ।
तोप लगावो तुम बबुरीवन ❀ तुम्हरो काम सिद्ध होइ जाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ अब तुम हुक्म देउ फरमाय ।

हेरत बाट खड़े सब ह्वइ हैं ❋ द्वारे खड़े बनाफरराय ।
यह सुनि बिजमा बोलन लागी ❋ तुरतै भोजन करौं तयार ॥
भोजन करि लेउ सतखंडापर ❋ औ फिरि सेज देउं बिछाय ।
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ बिजमाको दियो जवाब ॥
क्वांरे भोजन जो हम जीमैं ❋ क्वांरे धरै सेजपै पांव ।
हाथ जो डारैं हम तिरियनपर ❋ तो सब क्षत्री धर्म नशाय ॥
डाहु बुझैहैं तब छातीको ❋ जब हम लिहैं बापको दावं ।
तबहिं ब्याह करिहैं तुम्हरो संग ❋ धरिहैं तबहिं सेजपर पांव ॥
धीरज राखो अपने मनमें ❋ पूर्न होइहैं काम तुम्हार ।
इतनी कहिकै ऊदनि चलि भये ❋ औ द्वारे पर पहुंचे आय ॥
आल्हा मलिखे ढेबा सैयद ❋ हेरैं बाट उदयसिंह क्यार ।
आल्हा बोले तब मलिखेसे ❋ भैया सुनो हमारो बात ॥
ऊदनि बिछुर गये महलनमें ❋ ताको करिहौ कौन उपाय ।
इतनी कहते ऊदनि पहुंचे ❋ आल्हा बहुत खुशी होइजायं ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ भैया हाल देउ बतलाय ।
काहे देर लगी अंटापर ❋ ताको भेद कहौ समुझाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा बनिगौ काम हमार ।
बेटी बिजमा जो जम्बैकी ❋ देखत हमहिं गई पहिचानि ॥
ब्याह करनको हमसे बोली ❋ गंगा हमसे लई उठवाय ।
भेद बतायो तब बिजमाने ❋ माड़ौ लेउ बापको दाऊं ॥
तब ललकारो उन आल्हाने ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हार ।
ब्याहु जो करिहौ तुम बैरीघर ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
जब सुधि ऐहैं भाई बापकी ❋ डरिहै तुमहि जानसे मारि ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ काहे करो वृथा तुम बात ॥
ब्याह न होइहै यह बैरीघर ❋ दादा-धीर धरौ मनमाहिं ।
बदलो लेवे हम आये हैं ❋ नाहीं हमहिं ब्याहसे काम ॥
ऐसे बात करत सब चलि भये ❋ औ लोहागढ़ पहुंचे जाय ।

फौज कटीली लोहागढ़की ❀ देखी सबै बनाफरराय ॥
तोपें जितनी थीं तहंवापर ❀ सो सब देखी दृष्टि पसारि ।
फाटक देखो लोहागढ़को ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
पनियां सोते खंदग तेहरे ❀ ऊपर गर्भ गिरावन तोप ।
ऐसो फाटक आल्हा देखो ❀ तब आपुसमें लगे बतान ॥
कठिन किला है लोहागढ़को ❀ कैसे मिले बापको दाउं ।
ऊदनि बोले तब आल्हासे ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
मरजी होइ जो नारायनकी ❀ माड़ो लिहैं बापको दाउं ।
जोगी आये जब डचोढ़ीपर ❀ अपने बाजा दिये बजाय ॥
बोली दरवानी जोगिनसे ❀ बाबा हाल देउ बतलाय ।
कहांसे आये औ कहं जैहो ❀ सो तुम हमहिं कहो समुझाय ॥
मलिखे बोले दरवानीसे ❀ है गोरखपुर कुटी हमारि ।
हम तो आये बंगालेसे ❀ आगे हरिद्वारको जाय ॥
भिक्षा मंगिहैं हम राजासे ❀ फाटक जल्दी देउ खोलाय ।
इतनी सुनिकै दरवानीने ❀ फाटक तुरत दियो खुलवाय ॥
जोगी चलिभये तब भीतरको ❀ औ बंगला ढिग पहुंचे जाय ।
लगी कचहरी तहं जम्बैकी ❀ भारी लागिरहा दरबार ॥
अलख जगाई तहं जोगिनने ❀ अपनी तान सुनावन लाग ।
नजरिबदलगई तब जम्बैकी ❀ औ जोगिनतन रहे निहारि ॥
रूप देखिकै तिन जोगिनको ❀ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
जल्दी लावौ इन जोगिनको ❀ यहं पर करैं तमाशा आय ॥
गौ हरकारा तब जोगिनपै ❀ बाबा चलो हमारे साथ ।
तुमहिं बुलायो है राजाने ❀ अपने नाच देउ दिखलाय ॥
इतनी सुनतै जोगी चलिभये ❀ पहुंचे जहां राज दरबार ।
मचियाके संग मचिया रगड़ैं ❀ मोढ़ा रगड़ि रगड़ि रहिजाय ॥
बड़ बड़ क्षत्री बंगला बैठे ❀ टिहुना धरे नग्न तलवार ।
राजा जम्बैके दहिनेपर ❀ बैठो बीर करिंघाराय ॥

सोने सिंहासन राजा बैठे ❋ ऊपर चौर ढुरै गजगाह।
पांच हाथ ऊंचा सिंहासन ❋ तापर तपैं बघेलाराय॥
जोगी पहुंचे जब समुहे पर ❋ बायें करसे करी सलाम।
गुस्सा राजा जम्बै होइकै ❋ हरकारा से कही सुनाय॥
टारौ समुहेसे जोगिनको ❋ इन बायें कर करी सलाम।
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पै ❋ औ राजासे लगे बतान॥
जौन हाथसे जपैं सुमिरनी ❋ नित उठिलेयं रामको नाम।
तौन हाथसे करैं बन्दगी ❋ हमरो योग भंग होइ जाय॥
यह सुनि राजा जम्बै बोले ❋ जोगिउ सांचो ज्ञान तुम्हार।
सांचो गुरुके तुम चेला हो ❋ सांचो हाल देउ बतलाय॥
कहंपर गुदड़ी तुमने पाई ❋ जिनमें जड़े जवाहिर लाल।
कड़ा सूबरनके कहं पाई ❋ सो तुम हमहिंदेउ बतलाय॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ तुम सुनलेउ बघेले राय।
डगरत आये हम कनवजमें ❋ जहं दरबार कनौजी क्यार॥
करो तमाशा हम बंगलामें ❋ मोहितु भये कनौजी राय।
कड़ा सूबरनके हाथनमां ❋ सो जैचंदने दिये डराय॥
पांच गुदड़ियां उन बनवाई ❋ हम पांचौंको दई इनाम।
तब फिरि जम्बै बोलन लागे ❋ औ जोगिनसे लगे बतान॥
एक अदेशा है हमरे जिय ❋ सोउ हाल देउ बतलाय।
दाग बनो सबके माथे पर ❋ मानहुं बंधत बैंजनी पाग॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ राजा सुनौ हमारी बात।
मांगिकै कनउजमहुबे आये ❋ जहंपर बसत रजापरिमाल॥
करो तमाशा हम महुबेमें ❋ मोहित भये चन्देले राय।
दई बांसुरी यह सोने की ❋ सो हम तुरतै दई बजाय॥
आल्हा ऊदनि दुइ भैया हैं ❋ जो मरिबेको नाहिं डेरायं।
देखि तमाशा तिन दोउनने ❋ चीरा कलंगी दई इनाम॥
चारि महीना चातुरमासा ❋ सागर डेरा दिये डराय।

पाग बैंजनी शिरपर बांधी ❋ रहिके चारिमास महराज ॥
सोई दाग परो माथे पर ❋ राजा वचन करो परमान ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ अब तुम नाच देउ दिखलाय ॥
बजी सरंगी तब सैयदकी ❋ डमरू आल्हा दई बजाय ।
बजो इकतारा नरमलिखेको ❋ ढेबा खञ्जरी दई बजाय ॥
बजी बांसुरी बघऊदनिकी ❋ शोभा एक न वरनी जाय ।
थामि बांसुरी लइ ऊदनिने ❋ अपनी तान सुनावन लाग ॥
राग रागिनी ऊदनि गाई ❋ बंगला दई मोहिनी डारि ।
ऊदनि नाचैं त्यों बंगलामें ❋ जैसे बनमें नाचैं पुछारि ॥
जितने क्षत्री वहं बैठे थे ❋ सो सब मोहि गये तत्काल ।
कोई देवे शाल दुशाला ❋ मोहन माला देइ इनाम ॥
कंठा मुंदरी तोड़ा लैकै ❋ क्षत्री देन लगे त्यहिकाल ।
जो कोउ देन लगै जोगिनको ❋ जोगी तुरत देइं लौटारि ॥
हम नहिं भूखे हैं दौलत के ❋ जाको छीन लेयं बटमार ।
चौकी मंगवाई राजा ने ❋ सो जोगिनको दई डराय ॥
बैठो जोगी तुम चौकी पर ❋ औ सब हाल देउ बतलाय ।
कौन देशसे तुम आवत हो ❋ आगे कौन देशको जाउ ॥
किसके चेला तुम जोगी हो ❋ अपनी कुटी देउ बतलाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
देश हमारा बंगाला है ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि ।
गोरखनाथ गुरू हमरे हैं ❋ अब हम हरिद्वारको जायँ ॥
बुड़की लैकै गंगाजी की ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ।
बोले जम्बै फिरि जोगिनसे ❋ जोगिऔ करौ हियां विसराम ॥
जो कुछ खर्चा तुम्हरौ लगिहै ❋ सो सब देहैं तुमहिं मँगाय ।
इतनी कहिकै राजा जम्बै ❋ सोने कलँगी दई इनाम ॥
बोले ऊदनि तब राजासे ❋ तुम सुनि लेउ बघेलेराय ।
आजु रमानो तुम्हरो बंगला ❋ भोरहि हमहिं रमानी बाट ॥

बहता पानी रमता जोगी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय ।
फिरिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा सुनि लेउ अर्ज हमारि ॥
लाखा पातुर जो तुम्हरी है ❋ ताको नाच देउ दिखलाय ।
सुनी खबरिया हम काशीमें ❋ तब यह शहर मंझायो आय ॥
नीके गावै नीके नाचै ❋ मानौ इन्द्र अप्सरा नारि ।
बात मांनिकै तब जम्बैने ❋ लाखा पातुर लई बुलाय ॥
बाजो तबला ब्रजवासिनको ❋ ठाढ़ी भई साजि सब साज ।
बजी सरंगी तब बंगलामें ❋ औ गति लगी मंजीरन क्यार ॥
लाखा पातुर नाचन लागी ❋ औ फिरितांन सुनावन लागि ।
क्यागतिवरणौंत्यहिअवसरकी ❋ जोगी बहुत खुशी ह्वैजायँ ॥
लाखा पातुर नाचति आई ❋ जब जोगिन तर पहुंची आय ।
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❋ दादा मानौ वचन हमार ॥
लाखा पातुर है महुबे की ❋ ताको दिहौं नौलखाहार ।
यह सुनि आल्हा हटकन लागे ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि ॥
देखि जो पैहैं राजा जम्बै ❋ सबकी कैद लिहैं करवाय ।
हटकी मानी ना ऊदनने ❋ तुरत नौलखा दियो गहाय ॥
हालजानि लियो तब लाखाने ❋ हरवा तुरत लियो पहिचानि ।
सूरत देखी जब सैयदने ❋ तब अपने मन कियो विचार ॥
ये तौ लड़का हैं महुबेके ❋ माड़ौ लिहैं बापको दाउं ।
करो इशारा लाखा पातुर ❋ तुम सब कूच जाउ करवाय ॥
जानि जो पैहैं राजा जम्बै ❋ अबहीं तुमहिं लिहैं बंधवाय ।
समुझि इशारा लाखा पातुर ❋ ऊदनि तुरतै दियो जवाब ॥
लैहैं बदला हम दहुआको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ।
बारह बरस रहिउ माड़ौ तुम ❋ अब महुबेको होउ तयार ॥
इतनी कहिकै जोगी चलिभै ❋ फाटक निकर गये वापार ।
लाखा पातुर हार छिपावै ❋ नाचै भाव बताय बताय ॥
आंचर उड़ो जबहिं लाखाको ❋ हरवा चमकि चमकि रहि जाय ।

हरवा देखि लियो राजाने ❋ तब लाखासे कही सुनाय ॥
है यह हरवा गढ़ महुबेको ❋ पायो कहां नौलखा हार ।
यह सुनि लाखा पातुर बोली ❋ औ राजासे लगी बतान ॥
बारह बरसै भइँ माड़ौमें ❋ कबहुँ न मिलो नौलखा हार ।
राइ चलंते जोगी आये ❋ सो दै गये नौलखाहार ॥
इतनी सुनतै परलै ह्वैगइ ❋ जम्बै बहुत गये घबराय ।
बोले जम्बै तब करियासे ❋ बेटा तनिक महललौं जाउ ॥
हार नौलखा जल्दी लावो ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ।
इतनी सुनतै करिया चलिभौ ❋ खटकतजाय भुजनपर ढाल ॥
जूता लपेटा मरकत आवै ❋ जाको चलत न लागै वार ।
जहँपर बैठी कुशला रानी ❋ आयो तहां करिंघाराय ॥
सूरत देखी जब बेटाकी ❋ तुरतै उठी कुशलदे रानि ।
लई बिजनियां करफूलनकी ❋ सो करियापर करै बयारि ॥
पूछन लागी तब करियासे ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ।
कौन कामको तुम आये हो ❋ सो तुम सांची देउ बतलाय ॥
करिया बोलो हाथ जोरिके ❋ औ मातासे कही सुनाय ।
हमको भेजा है दादाने ❋ लावो जाय नौलखाहार ॥
करो बहाना तब कुशलाने ❋ औ करियासे कही सुनाय ।
हरवा टूटि गयो कछु दिनसे ❋ सो पटवाघर दियो पठाय ॥
बोलो करिया तब कुशलासे ❋ टूटो हार देउ मँगवाय ।
खाय सनाका गइ रानी तब ❋ मनमें बहुत गई घबराय ॥
बोली कुशला तब करियासे ❋ बेटा कछू कही ना जाय ।
पांच जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरणे जायँ ॥
करो तमाशा तिन जोगिनने ❋ महलन दई मोहिनी डारि ।
हार नौलखा हमसे माँगी ❋ हमने हरवा दियो उतारि ॥
भारी भूल भई हमसे यह ❋ हमरी मति मारी भगवान ।
यह अनहोनी हमसे होगइ ❋ ताको अब न कछू उपाय ॥

इतनी बात सुनी करियाने ❋ मनमें गयो सनाका खाय ।
उहांसे करिया बदलति आयो ❋ औ जम्बैतर पहुंचो आय ॥
हाल बतायो तब हरवाको ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
अबहीं बेटा तुम चलि जावो ❋ औ जोगिनको लावौ बांधि ॥
जोगी नाहीं वे भोगी हैं ❋ केहु राजनके राज कुमार ।
घर घर माड़ौ उन पंजियाई ❋ औ सब लश्कर लिया मंझाय ॥
करिया चलि भयो तब बंगला से ❋ पचपेड़नकी पकरी राह ।
तीन घरीको अरसा गुजरो ❋ औ जोगिनतर पहुंचो जाय ॥
तुरत अवाज दई जोगिनको ❋ जोगियो सुनौ हमारी बात ।
तुमहिं बुलायो है राजने ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ हमरो वचन करौ परमान ।
हुक्म नहीं है गुरू हमरेको ❋ जो हम धरैं पिछारू पांव ॥
सुनतै करिया राहुट होइगा ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
यक ललकार दई करियाने ❋ अपनो खैंचि लई तलवार ॥
पांव जो धरिहौ तुम आगेको ❋ तो हम दिहैं जानसे मारि ।
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पे ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
देखिहकीकति मलिखे जरिगये ❋ उनहूं खैंचि लई तलवार ।
मलिखे खैंचत ढेबा खैंची ❋ औ करियाको घेरा जाय ॥
धोखे न रहियो तुम जोगिनके ❋ मारौं राज्यभंग ह्वइजाय ।
सोचो करिया अपने मनमें ❋ ये महुबेके राजकुमार ॥
मुंह जो लगिहौं इनजोगिनके ❋ हमरो प्राण बचैगो नाहिं ।
उनहीं पायन करिया लौटो ❋ औ बंगलामें पहुंचो आय ॥
हाथ जोरिकै करिया बोलो ❋ ददुआ सुनो हमारी बात ।
धोखे रहियो ना जोगिनके ❋ वे महुबेके राजकुमार ॥
गुस्सा होइकै उन जोगिनने ❋ हमपर खैंचि लई तलवार ।
इतनी बात सुनी जम्बैने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
बोले जम्बै तब सूरजसे ❋ बेटा लश्कर लेउ सजाय ।

आये महोबिया हैं माड़ौमें ❋ सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिकै सूरज चलिभै ❋ अपनी फौज सजावन लाग ।
राम बनावै सो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय ।
हियांकि बातैं तौ हियई रहिं ❋ अब आगेको सुनो हवाल ॥
डगरत आये पांचो जोगी ❋ औ बबुरीबन पहुंचे आय ।
जहं पै तंबुआ रनि देवैको ❋ हेरैं बाट जोगियन क्यार ॥
तौलौं जोगी दाखिल होइगे ❋ देवै बहुत खुशी होइ जाय ।
थार सूबरनको मंगवायो ❋ तामैं चौमुख दियना बारि ॥
करीआरती सब लड़िकनपर ❋ औ तंबुवनमें पहुंचे जाय ।
बोले ऊदनि तब मातासे ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
घर घर माड़ौ हम पंजिआई ❋ औ महलनमें पहुंचे जाय ।
देखि तमाशा कुशलारानी ❋ हमको दियो नौलखा हार ॥
तुम्हरो हरवा माता लैके ❋ हम लाखाको दियो गहाय ।
कोट मंझायो हम लोहागढ़ ❋ देखी फौज बघेले क्यार ॥
यक तकरार भई करियासे ❋ सो समुहेसे गयो पराय ।
खबरि पहुंचि गइ है जम्बैको ❋ आये यहां महोबिया ज्वान ॥
इतनी बात कही देवैसे ❋ फिरि ढेबासे कही सुनाय ।
पांजि देखिहैं अब नद्दीकी ❋ भैया चलो हमारे साथ ॥
इतनीकहिकै ऊदनि चलि भये ❋ औ ढेबाको संग लिवाय ।
नदी नर्मदा पर चलि आये ❋ औ धोबिनसे लगे बतान ॥
पांजि बताय देउ नद्दीकी ❋ तब धोबिनने कही सुनाय ।
पांच खेत पश्चिमको हटिकै ❋ सीधे उतरि जाउ वा पार ॥
इतनी सुनिकै दोनों चलि भये ❋ पहुंचे पांच खेत पर जाय ।
नदी मझाई तहं दोउ जनने ❋ सो कम्मरसे परी दिखाय ॥
लग्गी गाड़ि दई बांसनकी ❋ अपनो चीन्हा दियो बनाय ।
ध्वजा बांधिकै उन बांसनमें ❋ औ चलि भये लहुरवा भाय ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❋ अपने तंबुअन पहुंचे आय ।

बैठे आल्हा जेहि तम्बूमें ❋ ऊदनि जाके करी सलाम ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
नदी नर्मदा जहं थाही है ❋ तहं हम चीन्हा दियो बनाय ॥
फौज उतारि लिहै जल्दीसे ❋ अब आगेको करो विचार ।
बारह कोसमें बबुरी वन है ❋ चहुंदिशि रही अंधेरिया छाय ॥
राह न सूझिपरै काहूको ❋ कैसे जायं फौज असवार ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ बबुरी बनको देउ कटाय ॥
चन्दन बढ़ईको बुलवावो ❋ नवसै बढ़ई संग लिवाय ।
हुक्म पायकै बघऊदनिने ❋ चन्दन बढ़ई लियो बुलाय ॥
नौसै बढ़ई संगै लीन्हें ❋ औ बबुरी बन पहुंचे जाय ।
बजो कुल्हाड़ा बबुरी बनमें ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
कहुं कहुं बिरवा छोड़त जैयो ❋ घैहा जहां करैं विसराम ।
सैयद बोले सब लड़िकनसे ❋ बढ़ई देहैं देर लगाय ॥
जाय पहुंचो बबुरी बनमें ❋ जल्दी काटि करो खरिहान ।
सिगरे लड़िका उठि ठाढ़भै ❋ बहुतक उठे महोबिया ज्वान ॥
खांडा लीन्हों केहु क्षत्रीने ❋ औ बबुरी बन पहुंचे जाय ।
झुके महोबिया बबुरी बनमें ❋ लै बजरंग बलीको नाम ॥
सवा पहर केरे अरसामें ❋ सब बन काटि करो खरिहान ।
कहु कहु बिरवा काटत छोड़े ❋ घैहा करिहैं जहां मुकाम ॥
खबरि सुनाई तुनि आल्हाको ❋ सब बबुरीबन दियो कटाय ।

अनूपी व टोंडरमलकी ऊदनिसे लड़ाई



संझा तारनि तुमको गैये ❋ घर घर दिया जलायो आय ॥
डगरत गौवैं घर घर आई ❋ उड़ि उड़ि पंछिन लीन्ह बसेर ।
बेटा अनुपी जो जम्बैको ❋ रणमें एक शूर सरदार ॥

लगी कचहरी जहं अनुपीकी ❋ भारी लागि रहा दरबार ।
दहिने बैठे तहं टोंटरमल ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
रेख उठन्ते क्षत्री बैठे ❋ टिहुना धरे नांगि तलवार ।
मचियाके संग मचिया रगड़े ❋ मोढ़ा रगड़ि रगड़ि रहि जायं ॥
इक हरकारा दौरति आयो ❋ सो टोंडरपुर पहुंचो आय ।
अनुपी बैठो जो सम्मुहेपर ❋ धावन तहां गयो नियराय ॥
करी बन्दगी हरकाराने ❋ औ अनुपीसे कही सुनाय ।
आये महोबिया बबुरीवनमें ❋ सिगरो जंगल दियो कटाय ॥
इतनी सुनते अनुपी जरि गये ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
तुर्त नगड़ची को बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगाड़ा मेरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर देउ चढ़ाय ।
हुक्म पायके चलो दरोगा ❋ तोपैं सबैं सजावन लाग ॥
हनूहंकारिनिकिलागिरावनि ❋ भैरों तोप लई सजवाय ।
बुर्ज मरोरनि औ घनगर्जनि ❋ तोप संकटा लई सजवाय ॥
सूर्य लपक्कनिचन्द्र झपक्कनि ❋ किला धसक्कनि लई सजाय ।
बिजलीतड़पनि पर्वत फाटिनि ❋ तोप लक्ष्मना करी तयार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं टोंडरपुरकी ❋ सो सब साज भई तैयार ।
हाथीवालेको बुलवायो ❋ सिगरे हाथी करौ तयार ॥
हुक्म पायके चलो दरोगा ❋ हाथी सबै सजावन लाग ।
सिंगल द्वीपी हाथी साजे ❋ मकुना हाथी लिये सजाय ॥
धौलागिरि हाथी सजवाये ❋ हाथी भूरो लिये सजाय ।
मैनकुञ्ज मलयागिरि साजे ❋ भौंरा हाथी करे तयार ॥
अङ्गदगिरि पङ्गदगिरि साजे ❋ कजरी बनके करे तयार ।
हाथी यदमाते सजवाये ❋ खूनी हाथी लिये सजाय ॥
हाथी चकदन्ता सजवाये ❋ औ दुइदन्ता लिये सजाय ।

जितने हाथी टोंडरपुरके ❋ सो सब साज भये तैयार ॥
डारिकै गद्दा इन हाथिनपर ❋ रेशम रस्सा दिये कसाय ।
हौदा धरिगे हैं चांदीके ❋ ऊपर कलश सूबरन क्यार ॥
यक यक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ।
कहंलग वरनौं मैं हाथिनको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
घोड़न वाले को बुलवायो ❋ सिगरे घोड़ा करौ तयार ।
हुक्म पायकै चलो दरोगा ❋ घोड़ा सबै सजावन लाग ॥
गर्रा भर्रा पंचकल्यानी ❋ रसकी मुसकी करे तयार ।
घोड़ा काबुली सब सजवाये ❋ औ दरियाई लिये सजाय ॥
भुइं लोठन कुम्मैत बछेरा ❋ सब्जा घोड़ा करे तयार ।
चितला नकुला घोड़ा साजे ❋ औ जलपातुर लिये सजाय ॥
ताजी तुर्की हरियल सुर्खा ❋ लक्खा कुब्जा लिये सजाय ।
घोड़ा सब रंगा सजवाये ❋ अर्बी घोड़ा लिये सजाय ॥
जितने घोड़ा टोंडरपुरके ❋ सो सब साजि भये तैयार ।
धरिकठिलानी इन घोड़नपर ❋ ऊपर जीन दीन धरवाय ॥
लगे बकसुवा हैं सोनेके ❋ रेशम तंग दिये खिंचवाय ।
डारि रकाबैं चांदीवारी ❋ औ कञ्चनकी लगी लगाम ॥
कहंलग बरनौं मैं घोड़नको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
फिर सब क्षत्री साजन लागे ❋ जिनको सजत न लागे बार ॥
जितना गहना रजपूतीका ❋ क्षत्रिन पहिरि लियो तत्काल ।
बजो नगाड़ा टोंडरपुरमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पांय ॥
चौथे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री निकरे बाग मरोरि ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथपर असवार ॥
लश्कर चलिभयो टोंडरपुरसे ❋ तोपैं चली फौजके साथ ।
पहिया ढुरकैं इन तोपनके ❋ करकत जायं सेंदुरिया वान ॥

राजा अनुपी साजन लागे ❋ जो जम्बै को राजकुमार ।
करि अस्नान् ध्यान पूजा करि ❋ धोती पहिरि पोतियाक्यार ॥
सुमिरन करिकै श्रीगणपतिको ❋ लै बजरंग बली को नाम ।
लंग चढ़ाई रेशमवारी ❋ जामें नाहिं गड़ैं हथियार ॥
सब्ज बनाती अनुपी पहिरे ❋ ताके ऊपर कुलह कबार ।
झिलम साबरी तापर पहिरे ❋ जामें गड़ैं नाहिं हथियार ॥
ताके ऊपर बखतर पहिरे ❋ जामें सेल्ह बिलौंचा खाय ।
टोप झलरिया धरि माथेपर ❋ गोली लगत चीप होइ जाय ॥
अगल वगलमें दुइ पिस्तौलैं ❋ बायें ओर गैंडकी ढाल ।
भाला सोहै नागदौनिको ❋ दहिने सिंहिनी मूठिकटार ॥
छप्पन छुरियां कम्मर बांधे ❋ कलहा दुइ बांधे तलवार ।
लाल कमनियां मुलतानीको ❋ जोड़ी कड़ाबीन की बांधि ॥
घोड़ा सुर्खा को सजवायो ❋ तापर अनुपी भयो सवार ।
दहिने सजिगे हैं टोडरमल ❋ घोड़ा सब्जा पर असवार ॥
लश्कर आवै यह अनुपीको ❋ डंका होत गोलमें जाय ।
पहर एकको अरसा गुजरो ❋ पहुंची फौज समर मैदान ॥
राम बनावै सो बनिजावै ❋ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ।
यहांकि बातैं तो यहं छोड़ौ ❋ अब आगेके सुनो हवाल ॥
सुनी खबरियां बघऊदनिने ❋ आई फौज बघेले क्यार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फांदि भये असवार ॥
घोड़ा मनुरथापर ढेबा चढ़ि ❋ दोनों चले एकही साथ ।
जाय पहुंचे दोउ लश्करमें ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्रिन सबै भये हुशियार ।
पहिले डङ्काके जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पांय ।
चौथे डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर चला बनाफर क्यार ॥
नदी नर्मदापर लश्कर सब ❋ पहुंचा चारि घरीमें जाय ।

परो उतारा है नद्दी पर ❋ लश्कर उतरि गयो वा पार ।
चारि घरीकेरे अरसामें ❋ पहुँची फौज समर मैदान ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो तीस खेत मैदान ।
घोड़ा बेंदुलाका चढ़वैया ❋ रानी देवकुवँरिको लाल ॥
घोड़ा बढ़ायो त्यहि आगेको ❋ औ अनुपीपै पहुँचो जाय ।
समुहे देखो जब ऊदनिको ❋ तब अनुपीने दियो जवाब ॥
कौन देशको तुम ठाकुर हो ❋ काहे धुरो दबायो आय ।
काहे बबुरीबन कटवायो ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
नगर महोबा एक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं चँदेलेराय ॥
तिनके घरके हम लड़िका हैं ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ।
हम कटवायो है बबुरीबन ❋ माड़ौ लिहैं बापको दाउँ ॥
इतनी सुनितै अनुपी जरिगै ❋ औ ऊदनिसे लगे बतान ।
ऊदनि लौटि जाउ महुबेको ❋ काहे काल रहो नियराय ॥
प्राण बचाय जाउ जल्दीसे ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
ऊदनि बोले तब अनुपीसे ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बदलो लेहैं हम माड़ौमें ❋ तब हम जैहैं कूच कराय ।
जो जो चीजें हमको चहियें ❋ सो तुम तुरत देउ मँगवाय ॥
तौ हम लौटि जाय महुबेको ❋ नाहीं खबरदार होइ जाउ ।
घोड़ा पपीहा महुबेवालो ❋ लाखा पातुर देउ मँगाय ॥
हार नौलखा गजपचशावद ❋ सो तुम तुरत देउ मँगवाय ।
रानी बिजमाको डोलासजि ❋ लावो शीश करिघा क्यार ॥
मुश्त बाँधिकै तुम जम्बैकी ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ।
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❋ अनुपी अग्निज्वाल होइ जाय ॥
अनुपी बोले टोडरमलसे ❋ भाई खबरदार होइजाय ।
जान न पावैं महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ।

इतनी सुनतै टोडरमलने ❀ तुरत खलासी लियो बुलाय ।
हुक्म दैदियो टोंडरमलने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म पायके चलो खलासी ❀ थैली लई बरूदन क्यार ।
थैली डारी बारूदनकी ❀ ऊपर गोल दिये डरवाय ॥
रंजक धरिकै बत्ती दैदेइ ❀ धुवना रहो स्वर्ग मँडराय ।
लौटे ऊदनि अपने दलमें ❀ औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ मेरी तोपनमें ❀ इन पाजिनको देउ उड़ाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुवना रहो स्वर्गमें छाय ॥
छाय अँधेरिया गइदशहूँदिशि ❀ अब कछु रहो ठिकाना नाहिं ।
अररर अररर गोली छूटैं ❀ सरसर परी तीरकी मारु ॥
सननन सननन गोली छूटैं ❀ कहकह करैं अगिनियां बान ।
दोनों फौजनके संगममें ❀ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
जेहि हाथीके गोला लागै ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ।
जौन ऊँटके गोला लागै ❀ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जेहि घोड़ाको ❀ चारो सुम्म गर्द ह्वै जाय ।
गोला लागै जेहि क्षत्रीके ❀ ताकी त्वचा स्वर्ग मँडराय ॥
गोलाजँजिरहा जेहिके लागै ❀ ताके हाड़ मास छुटिजाँय ।
बंबको गोला जेहिके लागै ❀ सो लत्ता अस जाय उड़ाय ॥
बानको डंडा जेहिके लागै ❀ ताके दुइ खंड होइ जायँ ।
भारी गोला ज्यहिके लागै ❀ मानो गिरह कबूतर खाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ कोइ कुँवर न टारै पाउँ ।
तोपैं धैंधैं लाली ह्वैगईं ❀ तिनपर हाथ धरा ना जाय ॥
चढ़ी कमनियां पानी ह्वैगइं ❀ चुटकिनके गै मांस उड़ाय ।
तोप रहकला पीछे छांड़े ❀ रहि गयो चारि कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ लम्बे बन्द करै हथियार ।
सांगैं चलन लगी दोनों दल ❀ ऊपर बर्छिनकी दइ मारु ॥
छुटे पिचक्का है लोहुनके ❀ औ बुबकारिन बोलैं घाव ।

हौदा भरिगे तहं लोहूसे ❋ औ चुचुआत फिरै असवार।
बूड़ि जुल्फियां गइं लोहूसे ❋ चरबी अंग गई लपटाय॥
भारी मारु भई बाँछिनकी ❋ भारी भई सांगकी मारु।
टूटिकै भाला दुइखंडा भये ❋ लटुआकटि बाँछिनके जायं॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो डेढ़ कदम मैदान।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खट खट चलन लगी तलवार॥
चलैं जुनब्बो औ गुजराती ❋ ऊना चले बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैं केशरियाज्वान॥
पैदल अभिरि गये पैदल संग ❋ औ असवारनसे असवार।
हौदा मिलिगे हैं हौदन संग ❋ हाथिन अड़ौ दांतसे दांत॥
बारह कोसीके गिरिदामें ❋ चारों ओर चलै तलवार।
पैदल गिरिगे पैग पैगपर ❋ उनके दुदुइ पैग असवार॥
रेख उठंते क्षत्री कटिगे ❋ तिनघर तिरियन कौन हवाल।
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी उनहार॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिनके ❋ धरती गिरैं करौंटा खाय।
कटिगे कल्ला जिन घोड़नके ❋ सो गिरिपरे भूमि भहराय॥
कटि भुजदंडे रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार।
डारी ढालैं जो लोहू में ❋ मानौं ताल फूल उतरायं॥
परे दुशाला हैं लोहूमें ❋ मानौं नदी परो सेवार।
हैं बन्दूकैं जो लोहूमें ❋ मानो नाग रहै मन्नाय॥
डारे घैहा हैं खेतनमें ❋ जिनके प्यास प्यास रटिलागि।
मोहर कटोरा पानी ह्वै गयो ❋ रणमें कोइ न पूछै बात॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं सुनाय सुनाय।
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको ❋ दूनी तलब दिहौं करवाय॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार।
झुके सिपाही महुबेवारे ❋ दोनों हाथ करैं तलवार॥
तीनि लाखसे अनुपी आयो ❋ रहि गये डेढ़ लाख असवार।

भगे सिपाही मारवाड़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
गोला फूटिगो भर्रा परि गयो ❋ लश्कर अनी बिकल होइ जाय ॥
कोऊ रोवै माइ बापको ❋ कोऊ लड़िकनको चिल्लाय ।
कोऊ रोवै घर तिरियाको ❋ बेटा कौन लगे है पार ॥
लंबी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह ।
छोड़ि नौकरी हम अनुपीकी ❋ बनमां बेंचि लकड़ियां खाब ॥
भेड़हा आये हैं महुबेसे ❋ सो मनइनके करैं अहार ॥
ऊंचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ।
भांग उतरि गइ भंगेड़िनको ❋ गांजा वाले गये बहाय ॥
झुके अफीमी रणके भीतर ❋ पलकैं उघरि उघरि रहिजायँ।
झुके सिपाही महुबे वाले ❋ जिनके मारु मारु रटलागि ॥
भगत सिपाही अनुपी देखे ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जहां बेंदुलाको चढ़वैया ❋ अनुपी तहां पहुँचो जाय ॥
बोले अनुपी तब ऊदनिसे ❋ नाहक प्राण गंवाये आय ।
अबहूं लौटि जाउ महुबेको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ बेटा सुनो बघेले क्यार ।
ऊदनि लौटनके नाहीं हैं ❋ चाहै प्राण रहैं की जाय ॥
बदला लैके अपने बापको ❋ महुबे कूच जाब करवाय ।
इतनी सुनतै अनुपी जरिगे ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
नौ नौ रुपियाके नौकर हैं ❋ काहे कटा दिहौ करवाय ।
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ दुइमें एकु आंकु रहिजाय ॥
यह मन भाई बघऊदनिके ❋ तब अनुपीने कह्यो सुनाय ।
पहली चोट करौ ऊदनि तुम ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ अनुपी सुनौ हमारी बात ।
वंश हमारे यहै रीति है ❋ आगे कुलाकुला ब्यौहार ॥
चोट अगारी हम ना मारैं ❋ ना भागेके परैं पिछार ।
बालक बूढ़ेको ना मारैं ❋ ना तिरियापर डारैं हाथ ॥

ना हम मारैं गो ब्राह्मणको ❋ ताते करो चोट तुम आय ॥
इतनी सुनिकै तब अनुपीने ❋ अपनी खैंचि कमनियां हाथ ।
गांसी खावे सेर भरेकी ❋ तापर फौज जमावन लाग ॥
खैंचि कमनियां भुजदंडनपर ❋ हियरा डाटि उदैसिंह क्यार ।
कैवर छांड़ो जब सम्मुहेपर ❋ ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
सांग उठाई फिर अनुपीने ❋ सो ऊदनिपर धमकी आय ।
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो ❋ नीचे सांगि गिरी अरराय ॥
देखि हकीकत अनुपी बोले ❋ अबहुं मानो कही हमारि ।
चुप्पै लौटि जाउ महुबेको ❋ नाहक देहो प्राण गंवाय ॥
इतनी सुनते ऊदनि हंसिकै ❋ औ अनुपीको दियो जवाब ।
धर्म क्षत्रियनके नाहीं हैं ❋ रणमें धरैं पिछारू पाँव ॥
वार तीसरी अनुपी करिलेउ ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ।
गुस्सा ह्वइकै तब अनुपीने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
करो जड़ाका बघऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
तीन शिरोही गहिगहि मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव ॥
टूटि शिरोही गइ अनुपीकी ❋ खाली मूठ हाथ रहिजाय ।
तबहीं अनुपी सोचन लागे ❋ हमरो काल रहो नियराय ॥
आजु शिरोही धोखा देगई ❋ हमरे प्राण बचनके नाहिं ।
ऊदनि बोले तब अनुपीसे ❋ अनुपी खबरदार ह्वइजाउ ॥
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब कचलोहिया देखुहमारी ।
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
करो जड़ाका तब अनुपीपर ❋ बायें उठी गैण्डकी ढाल ।
ढाल फाटि गई गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छूटि जनेवा गौ अनुपीको ❋ अनुपी गिरे भूमि भहराय ।
देखि हकीकत टोंडरमलने ❋ भारी जाय दई ललकार ॥
सम्हरौ ऊदनि तुम घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नगिचाय ।
गुर्ज उठायो टोंडरमलने ❋ भारी जाय दई ललकार ॥

घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़िगयो ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय ।
खैंचि शिरोही लइ टोंडरने ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय ॥
तीन शिरोही टोंडर मारी ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय ।
खाली मूठी हाथ जब रहिगइ ❋ टोंडर गये सनाका खाय ॥
आजु शिरोही धोखा दइगइ ❋ हमरो काल पहूँचो आय ।
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ औ टोंडरको दियो गिराय ॥
मुश्क बाँधिलइ टोंडरमलकी ❋ औ ढेबासे कही सुनाय ।
यह है बँधुवा गढ़ माड़ौका ❋ यहि लश्करमें देउ पठाय ॥
बँधुआ लैकै ढेबा चलिभौ ❋ औ बबुरी बन पहुँचे जाय ।
बारहदरी गये ऊदनि तब ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
पहिली लड़ाई टोंडरमलकी ❋ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
दुसरी लड़ाई सूरजमलकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥

सूरजमलकी लड़ाई



सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ।
आदिसरस्वतिकोसुमिरनकरि ❋ माता कंठ विराजो आय ॥
सांझ सुमिरिये जगदंबेको ❋ भोरहि लेउ रामको नाम ।
भोलानाथ जपौ निशिवासर ❋ जाते होय ग्रंथ सरनाम ॥
विधवा ह्वइकै पान चबावै ❋ नैहर तिरिया करै सिंगार ।
ज्यहि किसान घर बरै न दीपक ❋ त्यहिघर कुशल करै करतार ॥
बारहदरी की सुन्दर बैठक ❋ बारहदरी प्रकट संसार ।
लगी कचहरी सूरजमलकी ❋ अजगर लागि रहो दरबार ॥
यक हरकारा बदलति आयो ❋ बारहदरी पहूँचो आय ।
करी बन्दगी सूरजमलको ❋ औ सब हाल सुनायो आय ॥
लश्कर आयो गढ़ महुबेसे ❋ औ बबुरीवन पहुँची आय ।
आल्हा ऊदनि दुइ भैया हैं ❋ तिन बबुरीवन दियो कटाय ॥

भई लड़ाई बबुरी बनमें ❋ सिगरो लश्कर गयो बिलाय ।
अनुपी जूझि गये खेतनमें ❋ चलिकै लाश लेउ उठवाव ॥
ऊदनि बांधिलियो टोडरको ❋ औ लश्करमें दियो पठाय ।
इतनी सुनिकै सूरज नरि गये ❋ नैना अग्निज्वाल होइ जायं ॥
हुक्म दे दियो तब जल्दीसे ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ।
बजा नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
गलिन गलिन घूमें हरकारा ❋ औ ललकार दई कोतवाल ।
क्षत्रिन तयार होउ जल्दी तुम ❋ अपने बांधि बांधि हथियार ॥
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❋ अपने बांधि लियो हथियार ।
अपने अपने सब घोड़नपर ❋ क्षत्रिय निकरे बाग मरोरि ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
जितनी तोपैं थीं सूरजकी ❋ सो सब साजि करी तैयार ॥
जितने हाथी थे सूरजके ❋ सबपर हौदा धरे बनाय ।
जितने घोड़ा घुड़शालामें ❋ काठी एक साथ खिंचवाय ॥
जितने पैदल थे लश्करमें ❋ कमरैं एक साथ खिंचवाय ।
मारू डंकाके बाजत खन ❋ सिगरी फौज भई तैयार ॥
चलिभयोलश्करसूरजमलको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
कोउ कोउ घोड़ा हंसचालपै ❋ कोउ कोउ मंदचालपै जाय ॥
कोइकोइपबियनकोइरोहानन ❋ कोउ २ तितिर चालपै जाय ।
बाग फिरावै कोइ दुलकिनपर ❋ कोऊ हिरन चालपै जाय ॥
हंस चालपै मोर चालपै ❋ कोऊ चाल सागमनि जाय ।
कोऊनालकिनकोउपालकिन ❋ कोऊ गजरथपर असवार ॥
खरखर खरखर ते रथ दौरैं ❋ रब्बा चलैं पवनके साथ ।
पहिया ढुरिके तिन तोपनके ❋ कर्कत जाय सेन्दुरिया बान ॥
करी तयारी सूरजमलने ❋ घट गंगा जल लिये मंगाय ।
करि अस्नान ध्यान डचोढ़ीमें ❋ धोती पहिरि पोतियाकेरि ॥
डारि आसनी रेशमवाली ❋ सूरज बैठि गये हरखाय ।

चन्दनरगरोमलिया गिरिको ❀ सोने कटोरा धरो उतारि ॥
पूजन करिकै गणनायकको ❀ लेकै महादेवको नाम ।
चन्दन दीन्हो निजमस्तकपर ❀ भुजदंडनपर लियो लगाय ॥
लंग चढ़ाय लई रेशमकी ❀ जामें गड़ै नाहिं हथियार ।
पहिले पहिरे वस्त्र बनाती ❀ ताके ऊपर कुलह कबार ॥
तेहिपर पहिरे झीलम अपनी ❀ जामें टूटि जाय तलवार ।
ताके ऊपर बख्तर पहिरे ❀ जामें सेल नाहि अनियाय ॥
टोप झलरिया धरि माथेपर ❀ गोली लगत चीप होइजाय ।
बारहछुरियां कम्मर बांधे ❀ कलहा दुइ बांधे तलवार ॥
अगल बगलमें दुइ पिस्तौलैं ❀ दहिने सिहिनि मूठ कटार ।
भाला सोहै नागदौनिका ❀ बायें ओर गैंड़की ढाल ॥
जोड़ी बांधे कड़ावीनकी ❀ गोली टका भरेकी खाय ।
लैके पटुका कम्बर बांधे ❀ कम्बर तीनि तीनि बलखाय ॥
लाल कमनिया हैं मुलतानी ❀ गांसी डेढ़ सेरकी खाय ।
सजिकै सूरजमल ठाढ़े भये ❀ मानौं इन्द्र अखाड़े जायँ ॥
हरियल घोड़ा सूरजमलको ❀ तापर फांदि भये असवार ।
घूमैं झंडा दरियाइनके ❀ लश्कर रही लालरी छाय ॥
सूरज बोले सब क्षत्रिनसे ❀ यारो सुनियो कान लगाय ।
नमक हमारो तुम खायो है ❀ सो हाड़नमें गयो समाय ॥
पांव पिछारू तुम नाधरियो ❀ रणमें रखियो धर्म हमार ।
बोले क्षत्री सूरजमलसे ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
गंगा कीन्हीं सब हिंदुनने ❀ औ तुर्कनकी उठी कुरान ।
हम ना भगिहैं रणसमुहेसे ❀ चाहे प्राण रहै कि जायं ॥
लश्कर आया सूरजमलको ❀ औ खेतनमें पहुंचो आय ।
बाजन लागी हैं रणभेरी ❀ बाजैं तुरही औ कंडाल ॥
ढाढी करखा बोलन लागे ❀ क्षत्री बीर रूप होइ जायं ।
लासपड़ी थी जहं अनुपीकी ❀ सूरज हुआ पहूंचे जाय ॥

उतरि बछेराते भुइं आये ❋ औ अनुपीको लियो उठाय ॥
लाश लेटाय दई नलकी में ❋ सो माड़ौको दई पठाय ।
फांदि बछेरापर चढ़ि बैठे ❋ औ मुरचापर पहुँचे जाय ॥
आधकोसको टप्पा रहिगयो ❋ सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ।
सिंहकी गरजनि सूरज गरजे ❋ भारी जाय दई ललकार ॥
कौन सो क्षत्री चढ़ि आयो है ❋ ज्यहि बबुरीबन दियो कटाय ।
कौन मारो है अनुपीको ❋ औ टोंडरको लियो बंधाय ॥
कौन शूरमा है महुबेको ❋ लो समुहे होइ देइ जवाब ।
कान अवाज परी ऊदनिके ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले ऊदनि सूरजमलसे ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
हम चढ़ि आये हैं महुबेसे ❋ हम बबुरीबन दियो कटाय ॥
हमने मारो है अनुपीको ❋ औ टोंडरको लियो बंधाय ।
हमहिं शूरमा हैं महुबेके ❋ हमरो उदयसिंह है नाम ॥
बदला लेहैं अपने बापको ❋ माड़ौ खोदि करैहैं ताल ।
इतनी सुनिकै सूरज जरिगे ❋ देही अग्निज्वाल होइ जाय ॥
गुस्सा होइकै सूरज बोले ❋ औ यहु हुक्म दीन फरमाय ।
बत्ती देदेउ मेरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देऊँ उड़ाय ॥
जान न पावैं महुबे वाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
झुके खलासी तोपनवाले ❋ सो तोपन पर पहुँचे जाय ॥
लैकै थैली बारूदनकी ❋ सो तोपन में दई डराय ।
गोला डारि दिये तोपनमें ❋ सुम्मा मारैं बारम्बार ॥
रंजक धरिदइ तब प्यालनमें ❋ बत्ती ऊपर दई लगाय ।
धुआँ उड़ानो आसमानलौं ❋ दल में रही अंधेरिया छाय ॥
हुक्म देदियो बघ ऊदनिने ❋ तोपत बत्ती दियो लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ अब कछु रहो ठिकाना नाहिं॥
अररर अररर गोला छूटैं ❋ कह कह करैं अगनिया बान ।
सननन सननन गोली छूटैं ❋ सरसर परी तीरकी मारु ॥

गोला पहुंचे तीनि कोसलौं ❋ गोली आधकोसलौं जाय ।
मारैं तीरन जे कमनैता ❋ गोलिन मारैं बरकन्दाज ॥
चढ़ी कमनिया गांसी लागै ❋ साखी निकरि जाय वा पार ।
एक पहरभरि गोला बरसो ❋ कोई रजपूत न टारैं पाव ॥
तोपैं धैधैं लाली होइ गइं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जाय ।
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❋ पैदल पलटन बढ़ी अगार ॥
लइ बन्दूकैं तब क्षत्रिनने ❋ लै बजरंगवलीको नाम ।
रिमझिमरिमझिमगोलीबरसै ❋ मानौ मघाबूंद झरिलाय ॥
बैंर पलीता बन्दूकनमें ❋ दागैं कड़ाबीन हथियार ।
गोली लागै ज्यहि हाथीके ❋ सो गज तीनि कदम हटिजाय ॥
गोली लागै जौन ऊटके ❋ सो गिरि परै भूमिभहराय ।
गोली लागै ज्यहि घोड़ाके ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोली लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरि परै तुरत मैदान ।
काल नहीं जिनको रणभीतर ❋ उनके गोली ना नगिचाय ॥
जिनका काल लिखा खेतनमें ❋ सम्मुहे लगै निशाना जाय ।
तीनि घरी बन्दूकैं बाजीं ❋ ज्वानन हाथ सुस्त पड़ जाय ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ।
हल्ला होइ गयो रणखेतनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तरवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजैं ❋ बोलैं छपक छपक तरवार ।
चलैं जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं वर्दमानके ❋ कटिकटिगिरैं सुघरूआ ज्वान ।
पैदलके सँग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ॥
हौदाके संग हौदा अभिरे ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
सात कोसलौं चलै शिरोही ❋ रणमें बीत रहो घमसान ॥
पैदलके संग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
कल्ला कटि गये जिन घोड़नके ❋ धरती गिरैं करौंटा खाय ।

कटि भुजदंडै रजपूतनकी ❀ चेहरा कटे सिपाहिन केर ।
घैहा डारे जे रणभीतर ❀ तिनके प्यास प्यास रटिलागि ॥
हलुके घायनके सहजादे ❀ उठि उठि फेरि करैं तलवार ।
शूर सिपाही सम्मुहे जूझैं ❀ कायर ले ले भगे परान ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रण दुलहा चले बराय ।
चारि लाखसे सूरज आये ❀ रहिगे दुई लाख असवार ॥
घोड़ा बेंदुलाको चढ़वैया ❀ ऊदनि कहै पुकारि पुकारि ।
नमक चँदेलेको खायो है ❀ सो हाड़नमें गयो समाय ॥
भागि न जैयो कोइ खेतनसे ❀ रखियो धर्म चन्देले क्यार ।
रणके सम्मुहेसे जो भगिहौ ❀ बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
मानुष देही यहु दुर्लभ है ❀ यारो जन्म न बारंबार ।
सम्मुहे लड़िके जो मरि जैहौ ❀ ह्वैहै जुगन जुगनलौं नाम ॥
जैसे पात टूटि तरुवरसे ❀ गिरिके बहुरि न लागै डार ।
जो मरिजैहौ खटिया परिकै ❀ कोउ न नाम लिहै संसार ॥
बदला मिलिहै जो दादाको ❀ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ।
दियो बढ़ावा जब ऊदनिने ❀ क्षत्री बीर रूप ह्वै जायं ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
घोड़ा बढ़ायो बघऊदनिने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
जैसा भेड़हा भेड़िन पैठे ❀ औ वन सिंह बिडारे गाय ।
तैसे झपटा ऊदनि बांकुड़ा ❀ सब दल रैन बैन होइजाय ।
जैसे पान तंबोली कतरे ❀ जैसे खेती लुनै किसान ॥
तैसेइ ऊदनि दलमें पैठे ❀ क्षत्रिन काटि करो खरिहान ।
बर्षाऋतुमें ज्यों जल बरसै ❀ त्यों रण बहै रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❀ रणमें कठिन करैं तलवार ।
भगे सिपाही मारवाड़के ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
भगत सिपाही सूरज देखे ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
सूरज ललकारो ऊदनिको ❀ ठाकुर सुनो महोबे क्यार ॥

नौकर चाकर जे क्षत्री हैं ❋ काहे डरिहौ मूडं कटाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एक आकुं रहिजाय ।
यह मन भाई बघऊदनिके ❋ तब सूरजने कही सुनाय ॥
चोट आपनी ऊदनि करिलेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ।
बोले ऊदनि तब सूरजसे ❋ पहिली चोट करत हम नाहिं ॥
चोट आपनी सूरजकरिलेउ ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ।
लई कमनियां तब सूरजने ❋ गांसी डेढ़ सेरकी खाय ॥
फोंक जमाई कैबर लैकै ❋ औ गांसीको लियो चढ़ाय ।
खैंचि कमनियां भुजदंडनपर ❋ तीबा मर मर होय कमान ॥
हियरा डटिके तब ऊदनिको ❋ समुहे छांड़ि कैबरी दीन ।
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो ❋ बचिगयोदस्सराजको लाल ॥
सांग उठाई तब सूरजने ❋ औ ऊदनि पर दई चलाय ।
घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़ि गयो ❋ नीचे सांग गिरी अरराय ॥
बोले सूरज तब ऊदनिसे ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
कही हमारी ऊदनि मानौ ❋ काहे देहौ प्राण गंवाय ॥
हंसिकै ऊदनि बोलन लागे ❋ बेटा सुनौ बघेले क्यार ।
घोड़ा पपीहा हार नौलखा ❋ गज पचिशावद देउ मंगाय ॥
डोला दैदेउ तुम बिजमाको ❋ लाओ शीश करिंघा क्यार ।
तौ हम लौटिजायं महुबेको ❋ भोरहि कूंच जायं करवाय ॥
इतनी कहतै परलै होइगइ ❋ सूरज अग्निज्वाल होइजाय ।
खैंचि सिरोही लइ सूरजने ❋ औ ऊदनि पर राखी जाय ॥
ढाल अड़ाई बघऊदनिने ❋ उनकी टूटि शिरोही जाय ।
होश बन्द भये तब सूरजके ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
सोचैं सूरज अपने मनमें ❋ हमरो काल पहूंचो आय ।
जौन तेगसे हम गज काटे ❋ औ घोड़नके काटे पांव ॥
सोइ शिरोही धोखादै गइ ❋ अब ना बचि हैं प्राण हमार ।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❋ औ सूरजसे कही सुनाय ॥

चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं ❀ अब तुम खबदार होइ जाउ ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❀ लै बजरंगबलीका नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❀ औ सूरजपर दई चलाय ।
करो जड़ाका जब समुहेपर ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटिगइ सूरजमलकी ❀ चांदी फूल गिरै महराय ।
सूरज गिरिगै तब घोड़ासे ❀ सबदल रैनबैन होइ जाय ॥
जूझे सूरज रणखेतनमें ❀ जीते जंग उदयसिंह राय ।
दुसरि लड़ाई यह माड़ौकी ❀ सो हम कहिकै दई सुनाय ॥
तिसरि लड़ाई है करियाकी ❀ यारौ सुनियो कान लगाय ।

करियाकी लड़ाई



कुण्डलिया

मनमें धीरज धारिकै, कीजै जप तप दान ।
लावै मनमें कृष्णके, पद सरोजका ध्यान ॥
पदसरोजका ध्यान मान यह वचन हमारा ।
भवसागर नहिं अन्त कृष्णका लेय सहारा ॥
नारायण धरि ध्यान अरे मन चेत पियारा ।
भजै नहीं हरिनाम मूढ़ डूबै मझधारा ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ।
कहौं लड़ाई अब करियाकी ❀ यारौ सुनौ त्यागि सब काम ॥
यक हरकारा बदलति आवै ❀ अपनी सँड़िनीपर असवार ।
जहां कचहरी थी करियाकी ❀ अजगर लागि रहो दरबार ॥
रेख उठन्ते क्षत्री बैठे ❀ टिहुना धरै नगिन तलवार ।
नचैं कंचनी वा बंगलामें ❀ पहुंचो तहां शुतर असवार ॥
सांकर खैंचत सांड़िनि बैठी ❀ धावन उतरि परो अरगाय ।
समुहे पहुंचो जब करियाके ❀ धावन करी बन्दगी जाय ॥

नजरिबदलिगइतब करियाकै ❋ धावन हाथ जोरि रहिजाय ।
अर्ज गुजारी तब धावनने ❋ तुम सुनि लेउ करिंघाराय ॥
आये महुबिया हैं महुबेसे ❋ सब बबुरीबन दियो कटाय ।
अनुपी ठाकुर रणमें जूझे ❋ टोंडर बांधि लिये मैदान ॥
सूरजमल जूझे खेतनमें ❋ तिनकी लाश लेउ उठवाय ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❋ तिन करिदई वंशकी हानि ॥
इतनी बात सुनी करियाने ❋ सिगरी देह गई थर्राय ।
होश बन्द भये तब करियाके ❋ मनमें गयो सनाका खाय ॥
धीरज धरिकै फिरि अपने मन ❋ तुरतै उठा करिंघाराय ।
चलिभयोकरियातबडचोढ़ीसे ❋ सिगरी सभा उठी महराय ॥
जुता लपेटा मरकत आवै ❋ खटकत जाय भुजनपर ढाल ।
बोलि नगड़चीको बीरा दै ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
बजै नगारा मेरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ हाथी सबै लेउ सजवाय ।
घोड़नवालेको बुलवायो ❋ घोड़ा सगरे लेउ सजाय ॥
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
डेरन डेरन खबरैं होइ गइं ❋ क्षत्री करन तयारी लाग ॥
गद्दा डारि दिये हाथिनपर ❋ रेशम रस्सा दिये कसाय ।
ताके ऊपर हौदा धरि दिये ❋ हाथी साजि भये तैयार ॥
धरि कठनाली सब ऊंटनपर ❋ बल बल करैं सांड़िया ठाढ़ ।
जीन धराय दिये घोड़नपर ❋ ऊपर तंग दिये कसवाय ॥
गद्दा डारे मखमलवारे ❋ औ चांदीकी डारी रकाब ।
जितना गहना रजपूतीकी ❋ क्षत्री पहिरि भये तैयार ॥
बजे नगाड़ा बारह जोड़ी ❋ बाजै तुरही औ कंडाल ।
शाहाबादी दुइ भैया हैं ❋ रंगा बंगा शूर पठान ॥
बोला करिया उन दोउनते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।

आये महुबिया महुबेवाले ❃ सबकी कटा देउ करवाय ॥
लश्कर लूटि लेउ महुबेकी ❃ तुम्हरी लूट माफ होइ जाय ।
पारस पूजा है महुबेमें ❃ लोहा छुवत सोन होइ जाय ॥
सोऊ लूटि लेब महुबेते ❃ जल्दी साजि होउ तैयार ।
इतनी सुनिकै दोनों चलि भये ❃ अपने घोड़ा लिये सजाय ॥
कूदि सवार भये घोड़नपर ❃ रंगा बंगा शूर पठान ।
हुक्म करायो तब करियाने ❃ हथि पचशावद करो तयार ॥
घोड़ा पपीहाको सजवावो ❃ संगै कोतल चलै हमार ।
एक घरीको अरसा गुजरो ❃ दोनों साजि भये असवार ॥
करी तयारी तब करियाने ❃ जो जम्बैको राजकुमार ।
सोने चौकी तब डरवाई ❃ औ गंगाजल लियो मंगाय ॥
करि स्नान ध्यान जल्दीसे ❃ धोती पहिरि पोतिया क्यार ।
डारि आसनी रेशमवाली ❃ तापर बैठि करिंघाराय ॥
पूजन करिकै गणनायकको ❃ करिकै इष्टदेवको ध्यान ।
सुमिरन करके हनूमानको ❃ माथे चन्दन लियो लगाय ॥
पहिरि पैजामा मिसरूवाला ❃ जामा पहिरि दुदामी क्यार ।
बांधो पटुका कसि कम्मरमें ❃ दहिने लीन्हो छुरसि कटार ॥
अगल बगलमें दुइ पिसतौलैं ❃ बायें भुजा गैंडकी ढाल ।
तेगा बांधो बर्दवानको ❃ भाला नागदौनिको हाथ ॥
टोप झलरिया धरि माथेपर ❃ ऊपर कुंडी लइ औंधाय ।
साजिकरिंघा जब ठाढ़ो भयो ❃ मानौ इन्द्र अखाड़े जायं ॥
हथिपचशावदसजिके आयो ❃ घोड़ा षपीहा पहुंचो आय ।
सिढ़ी लगाई मलयागिरिकी ❃ औ हौदापै पहुंचो जाय ॥
पहिलो पांव धरो हौदामें ❃ समुहे भई तड़ाका छींक ।
अपने पंडितको बुलवायो ❃ औ यह कही करिंगाराय ॥
साइति देखो तुम जल्दीसे ❃ समुहे भई छींक ठहनाय ।
पंडित बोले तब करियासे ❃ बेटा सुनौ बघेले क्यार ॥

सगुनबिगरि गयो हाथीपर ❀ ताते लौटि जाउ महराज ।
घात चन्द्रमा पीछे परि गयो ❀ समुहे दृष्टि शनीचर केरि ॥
राहु बारहें हैं गोचर में ❀ अठये परी बृहस्पति आय ।
बिरवा सींचेउ तुम बब्बुरको ❀ अब फलमिलै कहांते आम ॥
बिना अपराध जाय महुबेमें ❀ मारे दस्सराज बछराज ।
शीश काटिके दोउ भैयनके ❀ सो बरगदमें दियो टंगाय ॥
आधी राति केरे अमलामें ❀ महुबे लूटिं लई करवाय ।
नित उठिकोसैंतिनकीतिरिया ❀ कीन्हों बिना बिचारे काम ॥
ताते तुमको हम हटकत हैं ❀ चाहो कुशल करिंघाराय ।
घरमें बैठि रहो चुपके होय ❀ काहे प्राण गवैंहो जाय ॥
इतनी बात सुनी पंडितसे ❀ तब करियाने दइ ललकार ।
पंडित ओट होउ आगेसे ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय ॥
हम तो लड़िका हैं क्षत्रिनके ❀ हमको कहां सगुनसे काम ।
सगुन बिचारैं बनिया बाटू ❀ नित उठि करैंबनिज ब्योपार ॥
सगुन बिचारैं क्या क्षत्री होय ❀ जो रण चढ़िकै लोह चबाय ।
इतनी कहिकै हाथी ऊपर ❀ चढिकै चलो करिंघाराय ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर चलो करिंघा क्यार ।
दबति अंधरिया दलमें आवै ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
धूरि उड़ानी आसमान लौं ❀ चहुंदिशि रही अंधेरिया छाय।
ढुरके पहिया जिन तोपनके ❀ रब्बा चले पवनके साथ ॥
खरखर खरखर खर रथ दौरे ❀ करकत जायं सेंदुरिया बान ।
भारी लश्कर मारवाड़को ❀ तहं पैदलको नाहिं सुमार ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❀ पहुंचो समर भूमिमें जाय ।
लश्कर आयो गढ़ महुबेको ❀ सो खेतनमें पहुंचो जाय ॥
करिया पहुँचो समरभूमिमें ❀ औ सूरज पै पहुँचो जाय ।
उतरि कै हाथीसे भुइ आवा ❀ औ सूरजको लियो उठाय ।
लाश धराय दई नलकीमें ❀ औ माड़ौको दियो पठाय ।

फिरिके चढ़िगोपचशावदपर ❋ करिया हाथी दियो बढ़ाय ॥
करिया गरजा तब हौदामां ❋ ज्योंघल गाजगर्जि रहिजाय ।
यक ललकार दई करियाने ❋ क्यहि बबुरीबन दियो कटाय ॥
किसने मारो है अनुपीको ❋ औ सूरजको दियो गिराय ।
कौन शूर है गढ़ महुबेको ❋ सो समुहे होइ देइ जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ औ करिया को दियो जवाब ।
हम कटवायो है बबुरीबन ❋ औ अनुपीको दियो गिराय ॥
हमहीं मारो है सूरजको ❋ हमहीं शूर महोबे क्यार ।
लानति तुम्हरी रजपूतीपर ❋ तेगा बंधिबेको धिक्कार ॥
चोरी करी जाय महुबेमें ❋ सोवत बांधे बाप हमार ।
बदला लेहैं हम दादाको ❋ माड़ौ खोदि करैहैं ताल ॥
जो गति कीन्ही तुम महुबेमें ❋ सो गति करौं तुम्हारी आज ।
करहु वीरता अब समुहेपर ❋ मनके मेट लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै परलै होइ गइ ❋ करिया अग्नि ज्वाल होइ जाय ।
तुरत खलासीको बुलयायो ❋ औ यहुहुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती देदेउ मेरी तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ।
फौज लूटि लेउ गढ़महुबेकी ❋ तुम्हरी लूटि माफ होइजाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❋ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
ऊदनि लौटे अपने दलमें ❋ तोपन बत्ती दई लगवाय ॥
धुआं उड़ानो आसमानलौं ❋ सविता रहे धुन्धिमें छाय ।
चहुदिशिगोला छूटन लागे ❋ कहकह करैं अगिनियां बान ॥
सननन सननन गोली छूटै ❋ सर सर परे तीरकी मारु ।
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
गोला लागै जौन ऊंटके ❋ सोगिरि परै धरनि भहराय ।
गोला लगै ज्यहि घोड़ाके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वइजाय ॥
गोला लागे ज्यहि क्षत्रीके ❋ सीधा स्वर्गलोकको जाय ।
गांसी लागे ज्यहि क्षत्रीके ❋ सूखी निकरि जाय वा पार ॥

पहर एक भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन होइ जायँ ।
हाथ न धरो जाय तोपनपर ❀ तोप लड़ाई परी पछार ॥
दोनों लश्करके अन्तरमें ❀ रहि गयो पांच पैग मैदान ।
सांग उठाई सब क्षत्रिनने ❀ सांगे चलन लगी तत्काल ॥
छुटै पिचक्का जहं लोहूके ❀ औ बुबकारिन बोलै घाव ।
चारिघरी भरि बजो सांगड़ा ❀ भारी बही रक्तकी धार ॥
शेरबचा पिस्तौल तमंचा ❀ औरौ कड़ाबीनकी मारु ।
कठिन लड़ाई भइ मुरचापुर ❀ दलमें रही लालरी छाय ॥
घोड़ा बेंदुला नाचत आवै ❀ ऊदनि कहैं सुनाय सुनाय ।
भागि न जैयो कोउ समुहेंसे ❀ यारौ रखियो धर्म हमार ॥
पांव पिछारू जो तुम धरिहौ ❀ बुड़िहैं सात साखिको नाम ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❀ तुम सब भैया लगो हमार ॥
सदा तुरैया ना बन फूलै ❀ यारो सदा न जीवन होय ।
सदा न माता उरमें धारै ❀ यारौ जन्म न बारम्बार ॥
पानी दै दै रजपूतनको ❀ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ।
बढ़े सिपाही महुबेवाले ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
खटखट खटखट तेगा बाजै ❀ बोले छपक छपक तलवार ।
चलै चुनव्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवानकै ❀ कटि २ गिरैं सुघरुआ ज्वान ।
छाती मिल गइ तहँ छातीसे ❀ हौदा हौदाते मिलि जायँ ॥
पैदल मिलिगे हैं पैदलते ❀ औ असवारनते असवार ।
चलै सिरोही दोनों दलमें ❀ क्षत्रिन मारु मारु रटिलागि ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़नके ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
कटे भुसुंडा हैं हाथिनके ❀ औलोथिन पर लोथि दिखायँ ॥
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तरवार ।

क्षत्री भीजि गये लोहूते ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
कोऊ रोवत है लरिकनको ❋ कोऊ पुरखिनको चिल्लाय ।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ औ रण दुलहा चले बराय ॥
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेकी पकरी राह ।
भगत सिपाही करिया देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
खोलि जंजीर दई हाथीकी ❋ औ हाथीसे कही सुनाय ।
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ॥
मारि भगावो सब लश्करको ❋ अब गाढ़में आवौ काम ।
जल्दी बांधि लेउ ऊदनिको ❋ ऐसो समय मिलनको नाहिं ॥
शाहाबादी रंगा बंगा ❋ तिनते करिया कही सुनाय ।
थोरि उमरियाहै ऊदनिकी ❋ त्यहि करि दई बंशकी हानि ॥
जान न पावै कोउ महुबेको ❋ सबके मूँड़ लेउ कटवाय ।
इतनी सुनते रंगा बंगा ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
करिया बढ़िगयो तब आगेको ❋ हाथी लश्कर गयो समाय ।
फेरि साँकरि षचशावदने ❋ औ क्षत्रिनको काटन लाग ॥
सांकरि मारै ज्यहि घोड़ाके ❋ त्यहि धरतीमें देय गिराय ।
मारै सांकरि जिन क्षत्रिनके ❋ सो गिरि परै भूमि भहराय ॥
बिचलो हाथी दलके भीतर ❋ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वइ जाय ।
हटे सिपाही महुबेवाले ❋ कोइ न धरै अगारू पांव ॥
बोला करिया तब ऊदनिसे ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
कही हमारी अबहूँ मानौ ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ करिंघाराय ।
हार नौलखा लाखा पातुर ❋ सो तुम हमहिं देउ मँगवाय ॥
हथिपचशावदखाली करिदेउ ❋ घोड़ा पपीहा देउ गहाय ।
शीश काटिकै नृप जम्बैको ❋ हमरी नजर गुजारो आय ॥
डोला साथ करौ बिजमाको ❋ तौ हम लौटि महोबे जायँ ।
बदला लेहैं हम ददुआको ❋ तब छाती को डाहु बुझाय ॥

बिना कामके हम ना जैहैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ।
इतनी सुनतै करिया तड़पा ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
ऊदनि सम्हरि जाउ घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ।
चोट आपनी ऊदनि करि लेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ॥
बोले ऊदनि तब करियासे ❋ तुम सुनि लेउ करिंघाराय ।
बालक बूढ़ेको ना मारैं ❋ ना भागेके परे पिछार ॥
हा हा खातेको ना मारैं ❋ ना तिरिया पर डारैं हाथ ।
चोट अगारू हम ना खेलैं ❋ ना हम धरैं पिछारू पांव ॥
चोट आपनी करिया करिलेउ ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी बात सुनि करियाने ❋ अपनी लीन्हीं सांग उठाय ॥
सो धरि धमकी बघऊदनिपर ❋ ऊदनि बदलि पैंतरा जायँ ।
चोट बचाय लई फुर्तीसे ❋ बचिगो उदयसिंह बलवान ॥
गुर्ज उठायो तब करियाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय ।
घोड़ा बेंदुला दहिने ह्वैगयो ❋ नीचे गुर्ज गिरी अरराय ॥
ऊदनि झपटे तब करियापर ❋ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ।
करो जड़ाका यक हौदापर ❋ छतुरी टूक टूक होइ जाय ॥
देखि हकीकति करिया गरजा ❋ औ हाथीते कही सुनाय ।
जल्दी बाँधिलेउ ऊदनिको ❋ राखौ धर्म बघेले क्यार ॥
दाबि बेंदुला ऊदनि आये ❋ औ करियाको दई ललकार ।
चोट तुम्हारी हम सहिलीन्ही ❋ अब लैलेउ हमारी गाज ॥
सांग उठाई बघ ऊदनिने ❋ औ करियापर दई चलाय ।
पहिले मारौ पीलवानको ❋ दूजे हनो कुलफबरदार ॥
तिसरी चोट करी हौदापर ❋ सो हौदामें गई समाय ।
सांग धमक्की तब करियापर ❋ करिया गिरो भरहरा खाय ॥
होश रहा नहिं कछु देहीमें ❋ मूर्छित भयो करिंघाराय ।
गुस्सा आई तब हाथीको ❋ अपनी साँकर दई घुमाय ॥
सांकरि फेरत ऊदनि गिरिगै ❋ ना देहीकी रही सँभार ।

घोड़ा बेंदुला थरथर कांपै ❋ देखत हाल उदयसिंह क्यार ॥
आधघड़ीको अरसा गुजरो ❋ कछु कछु भयो चेत तनमाहिं ।
जागी मूर्छा बघऊदनिकी ❋ तब घोड़ा पर भये सवार ॥
सांकरि फेरि फिरि हाथींने ❋ औ ऊदनिको दियो गिराय ।
ऊदनि गिरतै परलै होइगइ ❋ घोड़ा भागो उदयसिंहक्यार ॥
तुरतै बांधि लियो ऊदनिको ❋ अब कोउ धीर धरैया नाहिं ।
फौजैं भागि गईं महुबेकी ❋ हाथी खड़ा खेत रहिजाय ॥
रुपना वारी दौरत आयो ❋ औ बबुरी बन पहुंचो जाय ।
लगी कचहरी जहँ आल्हाकी ❋ तम्बू जहँ दिवलदेक्यार ॥
करी बन्दगी जब रुपनाने ❋ आल्हा पूछो हाल हवाल ।
खबरि सुनावो तुम लश्करकी ❋ औ सब हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोलो ❋ तुम सुनिलेउ बनाफरराय ।
सांकरी फेरी पचशावदने ❋ औ ऊदनिको लीन्हों बांधि ॥
बिचलो हाथी महुबेवालो ❋ लश्कर भागो महोबे क्यार ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहींथी ❋ ऊदनि अकिले दिये पठाय ॥
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ औ सैयदसे कही सुनाय ।
करौ चढ़ाई अब माड़ौको ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
बोले आल्हा फिरि मलिखेते ❋ भैया जल्द होउ तैयार ।
ऊदनि बंधि गये हैं माड़ौमें ❋ हम तुम चलिकै लेय छोड़ाय॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजै नगाड़ा मेरे दलमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ॥
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री करी तयारी लाग ।
पहिल नगाड़ामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
चौथ नगाड़ाके बाजतखन ❋ लश्कर चलो बनाफरक्यार ॥
रुपना दौरो तब देवैतर ❋ औ सब हाल सुनावन लाग ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं हैं ❋ अकिले ऊदनि दिये पठाय ॥

ऊदनि बंधिगे हैं माड़ौमें ❋ लश्कर तिड़ीबिड़ी होइ जाय ।
देवै सोची तब अपने मन ❋ यह बल नाहिं करिंघा क्यार ॥
हथिपचशावद जौहर कीन्हे ❋ बांधे मेरे उदयसिंहराय ।
तौलौं मलिखे गै देवेतर ❋ मलिखे हाथ जोरि रहिजायँ ॥
कही हकीकति बघऊदनिकी ❋ मैं चाचीकी लेउं बलाय ।
हथि पचशावद साकल फेरी ❋ औ ऊदनिको लियो बँधाय ॥
घोड़ा बेंदुला रणसे भागो ❋ अब हाथीसे कहा बसाय ।
हम सब खपिजावैं माड़ौमें ❋ पगियाबन्द बचैगो नाहिं ॥
चाची भेंटि लेउ जल्दीसे ❋ अब हम मिलैं सरगमें आय ।
यह सुनि देवै बोलन लागी ❋ बेटा सावधान होइ जाउ ॥
हथि पचशावद है मह्नुबेको ❋ हमने सेवा करी बनाय ।
दोहरे रातिब हमने दीन्हे ❋ देखत हमहिंलिहै पहिचान ॥
हाल सुनैहैं हम पिछलो जब ❋ सांकरि तबहिं फिरैहै नाहिं ।
संग तुम्हारे हमहूं चलिहैं ❋ तुम कछु करो न सोच विचार॥
इतनी कहिके रनिदेवैने ❋ अपनी पालकी लई मँगाय ।
थार सुबरनको मंगवायो ❋ तामें आरती लई सजाय ॥
रोरी अक्षत मेवा लैके ❋ करिकै इष्टदेवको ध्यान ।
चढ़ी पालकी पर देवै तब ❋ औ माड़ौकी पकरी राह ॥
चलिभे मलिखे तब तम्बूते ❋ घोड़ी कबुतरी लई मंगाय ।
बोले मलिखे तब घोड़ीसे ❋ हमरी बात सुनौ मनलाय ॥
तुमको पालो है मल्हनाने ❋ बहुतै सेवा करी बनाय ।
माह महेला तुमको दीन्हे ❋ औ सावनमें कड़ुवा तेल ॥
कठिन मारु है गढ़ माड़ौकी ❋ अब असमयमें आवो काम ।
इतनी सुनिकै घोड़ी कबुतरी ❋ समुझे रहिगइ माथ नवाय ॥
सुम्म उठाये आसमाको ❋ फिर हटि धरो अगारू पांव ।
हालु जानिलौ तब मलिखेने ❋ तुरतै फांदि भये असवार ॥
घोड़ाकरिलियात्यार करायो ❋ आल्हा फांदि भये असवार ।

ताला सैयद बनरसवाले ❀ घोड़ी सिंहिन पर असवार ॥
घोड़ा मनुरथाको सजवायो ❀ ढेबा फाँदि भयो असवार।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❀ तापर ब्रह्मानन्द सवार॥
सुमिरन करिके महादेवको ❀ मनियां सुमिरि महोबे क्यार।
घोड़ी बढ़ाई नर मलिखेने ❀ औ लश्करमें भये अगार॥
सबसे पहले देवै रानी ❀ सो हाथी पर पहुँची जाय।
तुरतै उतरि परी पलकीते ❀ औ हाथीसे कहीं सुनाय॥
क्या तू भूल गया महुबेको ❀ भूला अबहिं रजा परिमाल।
क्या तू भूला रनि देवैको ❀ जो अब तेरे खड़ी अगार॥
निमक हमारो तूने खायो ❀ औ पचशावद बात बनाउ।
ऊदनि बेटा मोहि रँड़ियाको ❀ तूने बाँधि लियो मैदान॥
तुम्हैं मुनासिब यहु नाहीं है ❀ मैं हाथीकी लेउँ बलाय।
ज्यहिदिनकरियाधोखाकरिकै ❀ औ दशपुरवा लियो लुटाय॥
हार नौलखा लाखा पातुर ❀ घोड़ा पपीहा लियो खुलाय।
तुमको साथ लियो करियाने ❀ तुम दुश्मनकी करी सहाय॥
वंश नशैबेको लागे हौ ❀ तुमको भारी लगै सराप।
बदला लेने लड़िका आये ❀ अपनो लेन बापको दाउं॥
टंगी खोपड़िया हैं राजाकी ❀ हमहूं चुरी उतारी नाहिं।
काहु सायत लड़िका होइहैं ❀ माड़ौ लिहैं बापको दाउं॥
सो तुम बांधि लियो ऊदनिको ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं।
याही दिनको हम पाला था ❀ की गाढ़में ऐहौ काम॥
तेहिते तुमको समझावतिहौं ❀ तुम बेटनकी करौ सहाय।
जीतिकै चलिहो जो महुबेको ❀ दूनों रातिब दिहौं बढ़ाय॥
निमक हरामी अबना करियो ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय।
बातें सुनिकै रनि देवलकी ❀ हाथी तुरत गयो पहिचानि॥
शरम खायकै पचशावदने ❀ सांकरि दई भूमि पर डारि।
राम बनावैं सो बनिजावैं ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय॥

यहांकि बातैं तौ यहं छोड़ो ❋ अब करियाको सुनो हवाल ।
मूर्छा जागी जब करियाकी ❋ हौदा उठी भरहरा खाय ॥
बंधो देखिकै बघ ऊदनिको ❋ मनमें बहुत खुशी होइ जाय ।
जब कछु होश भयो ऊदनिको ❋ ऊदनि सोचि सोचि रहि जाय॥
बंधो देखिकै अपने मनमें ❋ ऊदनि बहुत गये घबराय ।
तौलौं दलमें मलिखे पहुंचे ❋ घोड़ी कबुतरी दई बढ़ाय ॥
जहंपर हाथी था करियाको ❋ तहंपर गये बीर मलिखान ।
गरजे मलिखे तब घोड़ीपर ❋ केहि रजपूत लियो अवतार ॥
कौने बांधो है ऊदनिको ❋ सो समुहे होय देय जवाब ।
इतनी सुनिकै करिया बोलो ❋ औ मलिखेको दियो जवाब ॥
हमने बांधोहै ऊदनिको ❋ हम रजपूत लियो अवतार ।
उमिरि तुम्हारी यह थोरी है ❋ ताते लौटि महोबे जाउ ॥
जो गति कीन्हों दस्सराजकी ❋ सो गति करौं उदयसिंह क्यार ।
इतनी बात सुनी करियाकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
बोले मलिखे तब करियाते ❋ तुम सुनिलेउ करिंघाराय ।
लाखा पातुर घोड़ा पपीहा ❋ सो तुम हमहिं देउ मंगवाय ॥
हार नौलखाको मंगवावो ❋ डोली देउ बिजैसिन क्यार ।
हथिपचशावद खाली करिदेउ ❋ अबहीं सबै रारि मिटि जाय ॥
नातर जीवत ना छोडूंगा ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय ।
बदला लेहैं हम दादा को ❋ चाहैं प्राण रहैं की जाय ॥
सुनतै गरजा माड़ौवाला ❋ जाको नाम करिंघाराय ।
चोट आपनी मलिखे करिले ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ पहिली चोट करत हम नाहिं ।
चोट आपनी तुम करिलीजो ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ॥
सुनतै करिया सांग उठाई ❋ सो मलिखेपर दई चलाय ।
घोड़ी कबुतरी दहिने होइगइ ❋ नीचे गिरी सांग अरराय ॥
तेगा लैके तब करियाने ❋ सो मलिखेपर दियो झुकाय ।

ढाल उठाई नर मलिखेने ❀ अपनी लीन्ही चोट बचाय ॥
बोलत मलिखे तब करियासे ❀ अब तुम खबरदार होइजाउ ।
ऐड़ लगाई तब घोड़ीके ❀ औ मस्तीक अड़ाये पांव ॥
करो जड़ाका यक हौदामें ❀ छतुरी टूक टूक होइ जाय ।
डंका कटि गयो है हौदाको ❀ सोने कलश गिरो अरराय ॥
गदगद गदगद करै महावत ❀ हाथी बैठि खेतमें जाय ।
सूंड़ि लपेटि लई हाथीने ❀ औ दांतनमें लई दबाय ॥
मलिखे पहुंचे तब ऊदनिपै ❀ औ ऊदनिको दियो छुड़ाय ।
रूपना लायो घोड़ा बेंदुला ❀ ऊदनि फांदि भये असवार ॥
चढ़िगै मलिखे तब घोड़ीपर ❀ दोनों तुरत भये तैयार ।
तौलौं लश्कर गढ़ महुबेको ❀ पहुचो समर भूमिमें आय ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवार ।
फौज देखिकै गढ़ महुबेकी ❀ करिया बहुत गयो घबड़ाय ॥
देखि हकीकति पचशावदकी ❀ सोचन लाग करिंघाराय ।
धोखा दीन्हो है हाथी ने ❀ अब हम करिहैं कौन उपाय ॥
घोड़ा पपीहा जो कोतल है ❀ सो मंगवायो करिंघाराय ।
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो ❀ वह जम्बैको राजकुमार ॥
देवै पहुँची तब हाथी पै ❀ औ गजमस्तक पूजन लागि ।
करो रोचना रनि देवैने ❀ औ आरती उतारन लागि ॥
बोली देवै फिरि हाथी से ❀ हथि पचशावद बात ओनाउ ।
तुमको सौंपतिहौं लड़िकनको ❀ रखियो धर्म चंदेले क्यार ॥
बोली देवै तब आल्हा से ❀ अब हाथी पर होउ सवार ।
तुम्हरे दादाको हाथी है ❀ मनमें करौ न सोच विचार ॥
इतनी बात सुनी आल्हाने ❀ तब हाथीपे पहुंचे जाय ।
चरण लागिकै महतारीके ❀ लै बजरंगबली को नाम ॥
आल्हा चढ़िगे पचशावदपर ❀ औ हौदा में बैठे जाय ।
बोले आल्हा सब क्षत्रिनसे ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥

जीतिकै चलिहौ जब माड़ौते ❋ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ।
इतनी बात सुनी क्षत्रिनने ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइजायँ ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रटि लागि ।
चलै शिरोही मानाशाही ❋ औ बूंदी की असल कटार ॥
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकै बर्दवान के ❋ कटि कटि गिरै सुघरुवा ज्वान ॥
भगे सिपाही मारवाड़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
बडे लडैया महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
मुर्चन मुर्चन नचत बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं सुनाय सुनाय ।
भागि न जैहौ कोउ मोहराते ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौं ❋ तुम सब भैया लगौ हमार ।
जीतिकै चलिहौ जब महुबेको ❋ सोने कड़ा दिहौं डरवाय ॥
बढ़े सिपाही महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवार ।
ऊंचे खाले कायर भागे ❋ जे रण दुलहा चले बराय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊदनि दाबो ❋ औ करियापै पहुंचे जाय ।
बोले ऊदनि तब करियाते ❋ तुम सुनिलेउ करिंघाराय ॥
चोट आपनी तुम अब करिलेउ ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी बात सुनी करियाने ❋ तब रंगाते कही सुनाय ॥
थोरी उम्मरिको ऊदनि है ❋ याको देहु जानते मारि ।
इतनी सुनिकै रंगा बोलो ❋ औ ऊदनिते लगो बतान ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ रणमें खेलौ जूझ अघाय ।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ औ रंगाते कही सुनाय ॥
चोट आपनी रंगा करिलेउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ।
खैंचि शिरोही लइ रंगाने ❋ सो ऊदनिपर राखी जाय ॥
चेहरा मारो जब ऊदनिको ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ।
तीनिशिरोही गहि गहिमारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव ॥
टूटि शिरोही गइ रंगाकी ❋ रंगा मनमें सोचन लाग ।

ऊदनि ललकारो रंगाको ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ सो रंगापर राखी जाय ।
रंगा गिरि गयो जब धरतीमें ❋ तब बंगाने दियो जवाब ॥
सम्हरो ऊदनि तुम घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल पहूंचो आय ।
घोड़ा बढ़ायो तब ढेबाने ❋ औ बंगाको दियो जवाब ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एकु आंकु रहिजाय ।
यह मन भाय गई बंगाके ❋ बंगा खैंचि लई तलवारि ॥
चेहरा मारो जब ढेबाको ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
टूटि शिरोही गइ बंगाकी ❋ बंगा सोचि सोचि रहिजाय ॥
जौन शिरोहीसे गज काटे ❋ औ घोड़नके चारौं पांव ।
सोइ शिरोही धोखा दैगइ ❋ हमरो काल रहो नियराय ॥
बोलो ढेबा तब बंगाते ❋ अब तुम खबरदार होइजाउ ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लैले तू गाज हमारि ॥
खैंचि शिरोही ढेबा लीन्ही ❋ औ बंगापर राखी जाय ।
करो जड़ाका जब चेहरापर ❋ बायें उठी गैंडकी ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय ।
बारह कड़ियां कटि बख्तरकी ❋ बंगा गिरो भरहरा खाय ॥
बंगा जूझि गयो खेतनमें ❋ करिया सोचि २ रहिजाय ।
रंगा बंगा दोनों जूझे ❋ को गाढ़े में ऐहैं काम ॥
करिया पहुंचो तब ढेबापर ❋ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय ।
चोट बचाई तब ढेबाने ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लटुवा लागि गयो घोड़ाके ❋ घोड़ा तीन पैग हटि जाय ।
देखि हकीकत बघ ऊदनिने ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही ऊदनि लीन्ही ❋ सो करियापर राखो जाय ।
बायेंसे घोड़ा दहिने ह्वइगो ❋ करिया लैगा चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो तब करियाने ❋ औ ऊदनिपर दियो चलाय ।
चोट बचाई बघ ऊदनिने ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥

लगो लपेटा रसबेंदुलके ❀ घोड़ा पांच कदम हटिजाय ।
बढ़िगे ऊदनि तब आगेको ❀ औ मलिखे ते कही सुनाय ॥
बरनी तुम्हारीको नहिं करिया ❀ नाहक राखी देर लगाय ।
मारि गिरावो यहि खेतनमें ❀ दादा मेरे वीर मलखान ॥
इतनी बात सुनी मलखेने ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ।
यक ललकार दई करियाको ❀ बेटा सुनो बघेले क्यार ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❀ देखैं कापर राम रिसायं ।
यह मन भाय गई करियाके ❀ अपनी लई कमनिया हाथ ॥
फोंक जमाई सिंदोहीकी ❀ गांसी गजबेलीको लागि ।
खैंचि कमनियां भुजदंडनपर ❀ समुहे छोंड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ी हटिगइ नरमलिखेकी ❀ तिनको राखि लियो भगवान ।
सांग उठाई तब करियाने ❀ औ मलिखेपर दई चलाय ॥
बायें घोड़ी दहिने ह्वैगइ ❀ नीचे गिरी सांग अरराय ।
खैंचि शिरोही लइ करियाने ❀ सो मलिखेपर राखी जाय ॥
घोड़ी उड़ गइ तब ऊपरको ❀ बचि गइ चोट करिंघा क्यार ।
करिया सोचै अपने मनमें ❀ ये क्षत्री हैं बुरी बलाय ॥
बोले मलिखे तब करियाते ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
शस्त्र तुम्हारे सब झूठे हैं ❀ हम ना रखैं ऐसे हथियार ॥
बोला करिया तब मलिखेते ❀ काहे बहुत करो अभिमान ।
अबकि उचौनीतुमना बचिहौ ❀ तुम्हरो काल पहूंचो आय ॥
हंसिके ज्वाब दियो मलिखेने ❀ तुम सुनि लेउ करिंघाराय ।
पुष्य नक्षत्रमाहिं जन्मा हौं ❀ औ गुरु परो बारहें आय ॥
और देवताकी गिनती क्या ❀ शंका करौं कालकी नाहिं ।
चोट आपनी फिरिकै करिलेउ ❀ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ॥
इतनी बात सुनी करियाने ❀ अपनो कड़ाबीन लै हाथ ।
कल धरि दाबी कड़ाबीनकी ❀ समुहे गोली दई चलाय ॥
गोली झेली नर मलिखेने ❀ तुरतै लगत चीप ह्वइ जाय ।

तब ललकारो नर मलिखेने ❋ अब तुम सावधान ह्वइजाउ ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❋ लै बजरंगबली को नाम ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ॥
चेहरा मारो तब करियाको ❋ औ धरतीमें दियो गिराय ।
उतरे ऊदनि तब घोड़ाते ❋ औ चेहरा को लियो उठाय ॥
जायकै पहुंचे पुनि आल्हापै ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय ।
बैरी मारि दियो खेतनमें ❋ देखो शीश करिंघा क्यार ॥
कूच करायो तब महुबेते ❋ तब मल्हनाने कही सुनाय ।
अबके बिछुरे तुम कब ऐहो ❋ बेटा हमहिं देउ बतलाय ॥
तब हम अवधिबदी मल्हनासे ❋ ऐहैं लौटि मास नवमाहिं ।
अवधि बीतगइ गढ़माडौमें ❋ हेरति ह्वइहैं बाट हमारि ॥
धीरज देन हेत मल्हनाके ❋ दादा शीश देउ पहुंचाय ।
शीश देखिके यह करियाको ❋ धीरज धरैं रजा परिमाल ॥
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ तब रुपनाको लियो बुलाय ।
बोले आल्हा तब रुपनासे ❋ तुम महोबेको होउ तयार ॥
शीश करिंघाको लै जावो ❋ धीरज धरैं मल्हनदे रानि ।
लौटिकै ऐओ तुम जल्दीसे ❋ औ सब खबरि सुनायो आय॥
हुक्म पायकै रुपना चलिभौ ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
राम बनावै सो बनिजावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
हियांकी बातैं तो हिंय छोड़ो ❋ अब महुबेके सुनो हवाल ।
अवधि बीत गई जब आवनकी ❋ मल्हना बार बार पछिताय ॥
तिलका मल्हना दोनों रानी ❋ दिन दिन वाट हेर घबरायँ ।
राति राति भरि करै अंदेशा ❋ दिनभरि खड़े खड़े रहिजाय॥
यकदिन ठाढ़ी मल्हनारानी ❋ हेरै बाट लड़िकवन क्यार ।
तौलौं माहिल दाखिल ह्वइगे ❋ औ मल्हनापै पहुंचे जाय ॥
बोले माहिल तब मल्हनासे ❋ काहे बदन गयो कुम्लिाय ।
कौन अंदेशा हैं जियरामें ❋ बहिनी हमहिं देउ बतलाय ॥

इतनी सुनिकै मल्हना बोली ❋ बीरन सुनौ हमारी बात ।
नवयें महीनाका सब कहि गये ❋ ताको एक बरस होइ जाय ॥
लड़िका लौटे ना माड़ौते ❋ रहिरहि तेरो जिया घबड़ाय ।
बहुतक सेयौ मैं लड़िकनको ❋ तिनकी खबरि मिली कछु नाहिं ॥
इतनी सुनते माहिल बोले ❋ बहिनी कछू कही ना जाय ।
यक हरकारा गढ़ माड़ौका ❋ सो उरईमें पहुंचो आय आय ॥
एक मुकाम करो बगियामें ❋ हमने पूछो हाल हवाल ।
कही हकीकति हरकाराने ❋ सब खपि गये बनाफर राय ॥
कोइ न बचिहैं अब महुबेमें ❋ फिर दुख नींद पहुंची आय ।
सुनी खबरि जब यहु मल्हनाने ❋ भुइंमें गिरी तड़ाका खाय ॥
तिलका गिरि गइ रंगमहलमें ❋ अब कछु रहो ठिकाना नाहिं ।
मल्हना तिलकाके रोवतखन ❋ सिगरो रोय उठो रनिवास ॥
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ अब कहं मिलिहैं पूत हमार ।
महुबो घर घर सूनो होइ है ❋ जबहीं बैरी करहिं चढ़ाय ॥
फेंट बंधैया कोउ नाहीं हैं ❋ औ कोउ धीर धरैया नाहिं ।
सुनी खबरि जब चन्देलेने ❋ तुरतै गिरे भूमि महराय ॥
लड़िका चढ़िगे गढ़माड़ौको ❋ होनी कोइ मिटैया नाहिं ।
बहुत विलाप करो राजाने ❋ सबने छांड़ि दई डिडकार ॥
बिपदा परिगइ है महुबेमें ❋ रानी रोवै जार बेजार ।
बोले माहिल तब मल्हनासे ❋ बहिनी धीर धरो मन माहिं ॥
लिखी विधाताकी को मेटै ❋ जो कछु होनहार होइजाय ।
देओ तिलांजलि लड़िकनको ❋ घरमें बैठि रहो मनमारि ॥
इतनौं कहिकै माहिल चलिभे ❋ औ उरईकी पकरी राह ।
तौलौ रूपना महुबे पहुंचो ❋ जहं दरबार चंदेले क्यार ॥
तहां पालकी जाय उतारी ❋ औ राजाको करी सलाम ।
नजरिबदलगइ परिमालैकी ❋ औ रूपनासे कही सुनाय ॥
हाल बतावौ तुम माड़ौको ❋ रहि रहि मेरो जिया घबड़ाय ।

बदी उड़ानी है लड़िकनकी ❋ साँचो हाल देउ बतलाय ॥
शिरलायेहोक्यहिलड़िकाको ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय।
इतनी सुनिकै रूपना बोलो ❋ ऐसि न कहो चँदेलेराय ॥
सिगरे लड़िका कुशलक्षेम हैं ❋ माड़ौ लेत बापको दाउँ।
चारिहु लड़िका जो जम्बैके ❋ मारे खेत बनाफरराय ॥
मूड़ काटिकै यहु करियाको ❋ सो हमरे संग दियो पठाय।
इतनी सुनतै उठे चँदेले ❋ औ पलकीपै पहुँचे जाय ॥
शीशदेखिलौ जब करियाको ❋ बहुतै खुशी भये परिमाल।
बोले राजा तब रूपनासे ❋ पलकी रंगमहल लै जाउ ॥
तनिक देर करिहौ हियँनापर ❋ रानी पेटु मारि मरि जाय।
इतनी सुनतै रूपना चलिभौ ❋ तुरत पालकी लई उठाय ॥
पलकी पहुँची जब फाटकपर ❋ सो मल्हनाके परी निगाह।
देखो खून भरी पलकी जब ❋ मल्हना गिरी भूमिमुरझाय ॥
हाथ जोरिकै रूपना बोलो ❋ माता सावधान ह्वै जाउ।
कुशलक्षेमसे सब लड़िका हैं ❋ माड़ौ लियौ बापको दाउँ ॥
जल्दी उठिकै माता बैठो ❋ देखो शीश करिंघा क्यार।
कान अवाज परी मल्हनाके ❋ सुनतै उठी भरहरा खाय ॥
शीश देखिलौ जब करियाको ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वै जाय।
खबरि सुनाई यहु झूठी तुम ❋ माहिल तेरो बुरा ह्वइजाय ॥
बोली मल्हना फिरि रूपनासे ❋ महलन करैं रसोइं त्यार।
सो तुम जेंइ लेउ जल्दीसे ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
हाथ जोरिकै रूपना बोला ❋ माता हम रुकबेके नाहिं।
जोलौं हम ना माड़ौ जैहैं ❋ तोलौं सब जैहैं घबराय ॥
चलती बेरा यह कहि दीन्ही ❋ आल्हा ऊदनि औ मलिखान।
इनहीं पाँयँ रूपन ऐयौ ❋ सबकी खबरि सुनैयौ आय ॥
तेहिते भोजन हमना करिहैं ❋ माता हुक्म देउ हम जायँ।
इतनी कहिकै रूपना चलिभौ ❋ औ माड़ौकी पकरी राह ॥

हियांकीबातैंतो हियँ छोड़ो ❋ अब माड़ौकी सुनो हवाल ।
सुनी खबरि जब यह जम्बैने ❋ करिया जूझो पुत्र हमार ॥
मूर्छा आय गई जम्बैने ❋ औ गिरि परे धरनि भहराय ।
क्या गति बरणौं राजसभाकी ❋ बिपदा कछू कहीना जाय ॥
मूर्छा जागी जब राजाकी ❋ सोचन लगे बघेलेराय ।
पूत कपूत होय जो कुलमें ❋ बंटाधार होय परिवार ॥
पूत सपूत होय दुनियांमें ❋ आवै मात पिताके काम ।
गड़वा खोदै जो काहूको ❋ ताके लिये कूप तैयार ॥
जैसी करनी तैसी भरनी ❋ है यह बात प्रगट संसार ।
सोचत सोचत राजा जम्बै ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
आवत देखो जब राजाको ❋ रानी उठी भरहरा खाय ।
हाथ बिजनियां लै फूलनकी ❋ सो राजापर करै बयारि ॥
रानी पूँछै तब राजासे ❋ स्वामी हाल देउ बतलाय ।
काहे मुखड़ा झूरो परिगो ❋ काहे सोच रहो है छाय ॥
बोले राजा तब रानीसे ❋ हमसे कछू कही ना जाय ।
चारौं बेटा रणखेतनमें ❋ महुबेवाले दिये गिराय ॥
वंश नशाय गयो हमरो सब ❋ अब हम करिहैं कौन उपाय ।
ऊदनि लड़िका दस्सराजको ❋ सबसे छोटो राजकुमार ॥
बड़ो लड़ैया सो लड़िका है ❋ त्यहिं करदई वंशकी हानि ।
सिगरो लश्कर मारि गिरायो ❋ हथिपचशावद लियो छुड़ाय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❋ बेड़ा कौन लगैहै पार ।
उड़न बछेड़ा है सबहुनके ❋ ना काहूकी पार बसाय ॥
इतनी बात सुनी रानीने ❋ तब राजासे कही सुनाय ।
नाहक मारो दस्सराजको ❋ खोपरी बरगद दई टँगाय ॥
हाथ दै दियो जौ बाँबीमें ❋ क्यों ना डँसै कालिया नाग ।
बातैं करिकै राजा रानी ❋ दोनों गिरे मूरछा खाय ॥
हाय हाय करि रानी रोई ❋ अब कहँ मिलिहैं पूत हमार ।

यह दुख देखो जब बिजमाने ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजाय ॥
राजा रानी जहँ मुर्छितहैं ❀ बिजमा तहां पहुँची आय ।
धीरज राखो अपने जियमें ❀ अब हम करिहै कछू उपाय ॥
भारी खटका है ऊदनिको ❀ सो हम खटका दिहैं मिटाय ।
कैद करिलिहौं मैं ऊदनिको ❀ तुम्हरो काम सिद्धि होइ जाय॥
दियो दिलासा यहु राजाको ❀ औ चलिभइ बिजैसिनिरानि ।
जादूवाली पुड़िया लेके ❀ पहुँची तुरत फौजमें जाय ॥
मर्दकिसूरति बिजमा होइ गइ ❀ जादू गुडका लियो दबाय ।
भैरौंवाली पुड़िया लेके ❀ सो आल्हापर दई झुकाय ॥
नजरबंद भइ तब आल्हाकी ❀ औ फिरि जीन बंद होइ जाय।
लैके पुड़िया नारसिंहकी ❀ सो मलिखेपर दई चलाय ॥
बंद जबान भई मलिखेकी ❀ औ सब भूलि गयो सब ज्ञान ।
बीर महमदाकी पुड़ियालै ❀ नर ढेबा पर राखी जाय ॥
नजरि बंद भइ तब ढेबाकी ❀ नाकछु सूझि परै त्यहि ठौर ।
डारि मसानी सब लश्करमें ❀ सबको देखि परै अँधियार ॥
पुड़िया लैके यक जादूकी ❀ सो ऊदनिपर दई चलाय ।
मैढ़ा करिलौं बघऊदनिको ❀ झारखण्डमें राखौ जाय ॥
गुरू झिलमिलाकी मठियामें ❀ मेढ़ा बांधि दियो तत्काल ।
बिजमा बोली तब बाबासे ❀ मैं लाई हौं चोर चुराय ॥
चोर महोबेको भारी है ❀ तासे बहुत रह्यो हुशियार ।
इतनी कहिकैबिजमा चलिभइ ❀ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
जादू फेरि लियो लश्करसे ❀ जादू उतरि गई तत्काल ।
जबहीं होश भयो आल्हाको ❀ तब मलिखेसे लगे बतान ॥
काहे मलिखे यह कैसी भइ ❀ ऊदनि नाहीं परत दिखाय ।
इतनी सुनिकै तब ढेबासे ❀ नर मलिखेने कही सुनाय ॥
सगुन बतावौ ढेबा भैया ❀ कहँ हरि गयो लहुरवा भाय ।
सगुन बिचारो तब ढेबाने ❀ औ मलिखेको दियो जवाब ॥

बिजमा बेटी जो जम्बैकी ❀ ताने हरै उदयसिंहराय ।
मेढ़ा करि लियो है जादूते ❀ झारखण्डमें राखो जाय ॥
गुरू झिलमिलाकी मठिया है ❀ तहँपर बँधो लहुरवा भाय ।
यह सुनि अल्हा बोलन लागे ❀ औ ढेबासे लगे बतान ॥
जतन बतावौ ढेबा भैया ❀ कैसे मिलै लहुरवा भाय ।
यह सुनि ढेबा जतन बताई ❀ जोगिन गुदरी लई मंगाय ॥
इतनो सुनिकै नर मलखेने ❀ जोगिन गुदरी लई मँगाय ।
बाना बदलो नर ढेबाने ❀ जोगी बने बीर मलिखान ॥
रामानन्दी तिलक लगायौ ❀ अंग विभूती लई रमाय ।
गुदरी पहिरि लई दोनोंने ❀ इकइक लई सुमिरनी हाथ ॥
डमरू लैलई नर ढेबाने ❀ बँसुरी लई वीर मलिखान ।
दोनों चलिभे झारखण्डको ❀ औ मठियामें पहुँचे जाय ॥
गुरू झिलमिलाके समुहेपर ❀ जोगिन अलख जगाई जाय ।
डमरू बाजी नर ढेबाकी ❀ बँसुरी बजी बीर मलिखान ॥
राग रागिनी गावन लागे ❀ औ जोगिनसे दई मोहनी डारि ॥
गुरू झिलमिला बोलन लागे ❀ औ जोगिनसे लगे बतान ॥
कौन देशसे तुम आये हो ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ।
कौन गुरूके तुम चेला हो ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
इतनी सुनिके मलिखे बोले ❀ बाबा सुनौ हमारी बात ।
देश हमरो बङ्गाला है ❀ औ गोरखपुर कुटी हमारि ॥
गुरु गोरख हैं गुरू हमारे ❀ आगे हरद्वारको जायँ ।
राह बताय देउ बाबा तुम ❀ सीधे हरद्वारको जायँ ॥
गुरू झिलमिला बोलन लागे ❀ जोगिउ राह दिहौं बतलाय ।
करौ तमाशा तुम मठियामें ❀ फिरि हम रस्ता दिहौं बताय ॥
इतनी सुनिके दोनों जोगी ❀ अपने बाजा दिये बजाय ।
भांति भांतिके राग सुनाये ❀ बाबा बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
मलिखे नाचैं वा मठियामें ❀ शोभा कछू कही न जाय ।

मोहित ह्वइकै बाबा बोले ❀ जोगिओ यहां करौ बिसराम ।
डेरा डारि देउ मठियामें ❀ नित उठि सेवा करौं तुम्हारि ॥
मलिखे बोले तब बाबाते ❀ बाबा बोलौ वचन सम्हारि ।
रमता जोगी बहता पानी ❀ इनको कौन सकै बिरमाय ॥
जल्दी भिक्षा बाबा लावौ ❀ औ तुम रस्ता देउ बताय ।
इतनी सुनिकै बाबा बोले ❀ फिरिकै हर्मांहि सुनावौ तान ॥
तान सुनाई तब जोगिनने ❀ बाबा मोहि मोहि रहिजाय ।
बोले बाबा तब जोगिनसे ❀ अब तुम नाच देउ दिखलाय ॥
जो कुछ मँगिहौ सो हम देहैं ❀ अपनो कर्तब देउ दिखाय ।
इतनी सुनतै ढेबा मलिखे ❀ दोनों तान सुनावन लाग ॥
ध्रुपद धनाश्री औ तिल्लाना ❀ गजल पर्ज पर तोरे तान ।
गुरू झिलमिला बहुत खुशी ह्वइ ❀ दोउ जोगिनसे कही सुनाय ॥
मांगो मांगो तुम मठियामें ❀ जो कछु इच्छा होय तुम्हारि ।
मेढ़ा मांगो तब मलिखेने ❀ बाबा सुनत गयो घबराय ॥
यह तो मेढ़ा है बिजमाको ❀ सो तौ हम देवेको नाहिं ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❀ बाबा बिगड़ी बात तुम्हारि ॥
कहिकै बदलति हौ बाबा तुम ❀ तुम्हरो योग भङ्ग ह्वै जाय ।
बाबा मनमें कायल ह्वै गये ❀ खोलिकै मेढ़ाको दिये पकराय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ बाबा सुनो हमारी बात ।
चेला करिहैं या मेढाको ❀ बाबा मानुष देउ बनाय ॥
इतनी सुनिकै गुरू झिलमिला ❀ अपनी झोरी लई उठाय ।
डारिकै जाई वा मेढापर ❀ मानुष करो लहुरवा भाय ॥
तीनों चलिभे तब मठियासे ❀ बघऊदनिने कही मनाय ।
जबहीं सुनिहैं रानी बिजमा ❀ फिरिकै जादू दिहैं चलाय ॥
बात मानि लेउ मलिखे दादा ❀ याको डारौ जानसे मारि ।
बिषको पुड़िया यह बाबा है ❀ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी बात सुनी मलिखेने ❀ औ मठियामें पहुँचे जाय ।

गुरू झिलमिलाने फिर पूँछो ❋ अब क्यों मठी मँझाई आय ॥
बोले मलिखे तब बाबासे ❋ हमको पानी देउ पिलाय ।
गुरू झिलमिला गडुवा लेके ❋ औ कुअटापर पहुँचे जाय ॥
पानी भरन लगे बाबा जब ❋ मलिखे मार दई तलवार ।
शीश काटि लियो उन बाबाको ❋ जादू झोरी लई उठाय ॥
डगरत चलिभे तीनों जोगी ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ।
आल्हा देखो जब ऊदनिको ❋ तुरतै छाती लियो लगाय ॥
कही हकीकति नर मलिखेने ❋ आल्हा बहुत खुशी है जाय ।
बोले ऊदनि तुनिआल्हासे ❋ दादा सुनो हमारी बात ॥
तोप लगावो अब लोहागढ़ ❋ औ फाटकको देउ गिराय ।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ भैया धीर धरो मनमाहिं ॥
करी सलाह तहां आल्हाने ❋ यक हरकारा देउ पठाय ।
बिना लड़ाई जो कारज होय ❋ तौ क्यों लड़ैं बघेले साथ ॥
बैर हमारो था करियासे ❋ सो खेतनमें दियो गिराय ।
वंश नशाय दियो जम्बैको ❋ अब क्यों रारि बढ़ावैं जाय ॥
हार नौलखा लाखा पातुर ❋ औ खोपरिनको देइँ पठाय ।
तौ हम लौटि जायँ महुबेको ❋ काहे भङ्ग करे सब साज ॥
इतनी सुनिकै ताल्हन बोले ❋ है यह ठीक तुम्हारी बात ।
जल्दी भेजि देउ धावनको ❋ पूरन होय तुम्हारो काम ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ।
जल्दी आवै हरकारा यक ❋ सो जम्बैपै दिहैं पठाय ॥
यह मन भाय गई सबहीके ❋ यक हरकारा लियो बुलाय ।
राम बनावैं सो बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥

जम्बैकी लड़ाई



सुमिरन करिकै श्रीगणपतिको ❋ औ गिरजाके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई अब जम्बै की ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥

यक हरकारा दाखिल ह्वै गयो ❁ जहँ दरबार बनाफर क्यार ।
कागज लैके कलपीवालो ❁ अपनो कमलदान लै हाथ ॥
लिखी हकीकत तब आल्हाने ❁ पढ़ियो याहि बघेलेराय ।
होवै इच्छा जो लड़नेकी ❁ तौ तुम लड़ौ हमारे साथ ॥
रारि मिटावनकी इच्छा होय ❁ तौ तुम सुनौ हमारी बात ।
हार नौखला लाखा पातुर ❁ डोला साजिबिजेसिन क्यार ॥
बावन बचुका पश्मीनाके ❁ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
खोपरी लावो हमरे बापकी ❁ औ आधीनी करो बनाय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे संग ❁ पगिया बन्द बचैगो नाहिं ।
चिट्ठी लिखिकै यह आल्हाने ❁ सो धावनको दई गहाय ॥
धावनचलिभयो तबलश्करसे ❁ औ माड़ौमें पहुँचो जाय ।
जहाँ कचहरी थी जम्बैकी ❁ धावन उतरि परो अरगाय ॥
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे ❁ अजगर लागि रहा दरबार ।
बात बनाफरकी होती रहै ❁ सबपर रही उदासी छाय ॥
धावन पहुँचि गयो सम्मुहेपर ❁ औ जम्बैको करी सलाम ।
सात पैगसे कुन्नस करिके ❁ पाती गही दई चलाय ॥
नजरि बदलि गइ तब जम्बैकी ❁ पाती तुरतै लई उठाय ।
खोलिकै पाती जम्बै बाँची ❁ मनमें बहुत खपा ह्वइ जाय ॥
तुरत बुलवावो तब पंडितको ❁ साइति हमैं देउ बतलाय ।
तोप लगैहौ लोहागढ़में ❁ महुबेवालेन दिहौं उड़ाय ॥
इतनी सुनिकै पंडित बोले ❁ गिनिकै मीन मेष बतलाय ।
साढ़े साती पड़ौ सनीचर ❁ अठयें पड़ी बृहस्पति आय ॥
अब ना बचिहौ रणखेतनमें ❁ सम्मुहे काल विराजो आय ।
करो मित्रता तुम आल्हासे ❁ जो माँगै सो देउ पठाय ॥
भलो तुम्हारो है याहीमें ❁ इतनी मानौ कही हमारि ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❁ पंडित सुनौ हमारी बात ॥
यक दिन मरना है सबहीको ❁ खटिया परिकै मरै बलाय ।

सन्मुख रणमें हम मरि जैहैं ❋ होइहै जुगन जुगन लौं नाम ॥
डोला माँगत है बेटीको ❋ ओछी जाति बनाफर केरि ।
अहीं टुकरहा परिमालैके ❋ औ चंदेले केर गुलाम ॥
दाग़ु लागिहैं रजपूतीमें ❋ हमरो जियत मरन होइ जाय ।
जीवत डोला हम ना देहैं ❋ चाहै प्राण रहै की जाँय ॥
इतनी कहिके राजा जम्बै ❋ फिरि पाती को लिखो जवाब ।
लिखी हकीकत यह जम्बैने ❋ पढ़ियो याहि बनाफर राय ॥
जीवत डोला हम ना देहैं ❋ नाहक रारि बढ़ाई आय ।
चुप्पै लौटि जाउ महुबेको ❋ नाहीं लिहौं मूँड़ कटवाय ॥
जो गति कीन्ही दस्सराजकी ❋ सो गति करौं तुम्हारी आय ।
ताते लौटि जाउ जल्दीसे ❋ इतनी मानो कही हमार ॥
पाती लिखि दइ यह जम्बैने ❋ औ धावन को दई गहाय ।
चला साँड़िया गढ़ माड़ौते ❋ औ लश्करमें पहुँचो आय ॥
जहाँ कचहरी थी आल्हाकी ❋ समुहे धावन गयो नगिचाय ।
करी बन्दगी नुनि आल्हाको ❋ पाती गही दई चलाय ।
काढ़ि करतनीते बँद काटो ❋ कोरो कागद दियो चलाय ।
पाती बाँची जब आल्हाने ❋ ग़ुस्सा गई देहमें छाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
बजै नगाड़ा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
तोप दरोगा को बुलवायो ❋ सिगरी तोपैं करौ तयार ।
हाथिनवाले को बुलवायो ❋ हाथी सिगरे होयँ तयार ॥
घोड़नवाले को बुलवायो ❋ घोड़ा सबै लेउ सजवाय ।
हुक्म मानिकै चला दरोगा ❋ लश्कर सबै सजावन लाग ॥
जितनी तोपैं थी महुबेकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
जितने हाथी थे लश्करमें ❋ हौदा एक साथ धरिजायँ ॥
जितने घोड़ा थे लश्करमें ❋ काठी एक साथ खिच जायँ ।
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥

पहले डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्रिन बांधि लिये हथियार ॥
दूसरे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्रिन धरे रकाबन पांय ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बांके घोड़नके असवार ॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
हाथी सजवायो पचशावद ❀ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ी सिंहिनि सजिकै आई ❀ सैयद फांदि भये असवार ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❀ मलिखे फांदि भये असवार ॥
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❀ ऊदनि फांदि भये असवार ।
घोड़ा मनुरथा सजिकैआयो ❀ ढेबा फांदि भये असवार ॥
तीनि घड़ीके अरसा गुजरो ❀ लोहागढ़में पहुँचो आय ।
हुक्म दे दियो तब आल्हाने ❀ जल्दी तोपैं देउ लगाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❀ लोहागढ़को देउ उड़ाय ।
यक हरकारा दौरत आयो ❀ औ जम्बैतर पहुँचो आय ।
काहे गाफिल तुम बैठेहो ❀ चढ़िके आय बनाफर राय ।
फाटक घेरि लियो आल्हाने ❀ अब लड़िबेको होउ तयार ॥
इतनी बात सुनी जम्बैने ❀ सुनतै उठे भरहरा खाय ।
हुक्म देदियो तब जम्बैने ❀ सिगरी तोपैं देउ चढ़ाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❀ महुबेवाले न देउ उड़ाय ।
इतनी सुनते झुके खलासी ❀ सिगरी तोपैं दई चढ़ाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❀ धुँअना रहो सरगमें छाय ।
दगी सलामी आल्हा दलमें ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुवां उड़ानो आसमानलौ ❀ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय ।
गोला चलन लगे दोऊ दल ❀ अन्धाधुन्ध कहो ना जाय ॥
ओलाके सम गोला बरसैं ❀ मानौं मघा बूँद झरिलागि ।
खलभलपरिगौ दोनों दलमें ❀ क्षत्री गिरैं भूमि भहराय ॥
तकि तकि गोला मलिखे मारे ❀ लोहागढ़में ना अनिआय ।
गोला छूटे लोहागढ़से ❀ कोऊ कुँवर न आड़ै पांव ॥

गोला लागै लोहागढ़में ❀ तुरतै टूक टूक होइ जाय।
तीन पहर भरि गोला छूटे ❀ चुटकिनके गै मांस उड़ाय॥
तोपैं धँधैं लाली होगइँ ❀ औ लोहागढ़ टूटो नाहिं।
कन्नें झरि गये सब तोपनके ❀ तोप दरोगा दियो जवाब॥
मोरे भरोसे तुम रहियो ना ❀ यहँ तोपनकी नाहिं बसाय।
सुनतै आल्हा सोचन लागे ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय॥
जितनी लकड़ी हैं बबुरीबन ❀ सो छकड़नते लेउ मँगवाय।
सो भरवाय देउ खन्दकमें ❀ नीचे सुरंग देउ लगवाय॥
इतनी बात सुनी आल्हाने ❀ तब यह हुक्म दियो फरमाय।
लावौ झांखर बबुरीबनते ❀ सो खन्दकमें देउ डराय॥
दीन्हों हुक्म सफरमैनाको ❀ जल्दी देवौ सुरंग लगाय।
इतनी सुनतै लोहागढ़में ❀ तुरतै सुरंग लगावन लाग॥
झांखर आये बबुरीबनसे ❀ सो खन्दकमें दिये डराय।
पीपा भरि भरि बारूदनके ❀ सो सुरंगमें दिये झुकाय॥
बत्ती दैदइ जब बरूदमें ❀ सीसो पिघलि २ रहिजाय।
उड़ी दिवालैं लोहागढ़की ❀ मिट्टी आसमान उड़िजाय॥
तोपैं गिरि गईं तब ऊपरसे ❀ मलिखे धावा दियो करवाय।
छत्री पहुँचि गये फाटकपर ❀ सबने खैंचि लईं तलवार॥
जितना लश्कर था फाटकपर ❀ सो सब काटि करो खरिहान।
लोहागढ़ फाटक माड़ौको ❀ सो धरतीमें दियो मिलाय॥
रैयत रोवै गढ़ माड़ौको ❀ करिया तेरो बुरो ह्वइजाय।
आपु नशाय गयो अपनेगुन ❀ औ रैयतको दियो बिगार॥
कालआय गयो अब जम्बैको ❀ बैठी बरैं दईं उड़ाय।
खलबल परिगो सब रैयतमें ❀ सबके भूलि गयो अवसान॥
बढ़े सिपाही मड़ुबेवाले ❀ फाटक निकरि गये वा पार।
आगे आगे पैदल बढ़ि गये ❀ पीछे पीछे चले सवार॥
ताके पीछे हाथिनवाले ❀ तोपैं आगे दईं बढ़ाय।

सैयद कूदे अली अली करि ❋ हिंदू कूदि परे कहि राम ।
ऐसे कूदे गढ़ माड़ौमें ❋ जैसे लंकामें हनुमान ॥
दौरत आयो यक हरकारा ❋ सो जम्बैतर पहुँचो जाय ।
खबरि सुनाई तब जम्बैको ❋ औ महराज बघेलेराय ॥
सुखसे बैठे हो बँगलामें ❋ अब दुख नींद पहूँची आय ॥
धावा करि दियो आल्हाने ❋ लोहा फाटक दियो गिराय ।
इतनी सुनतै परलै होइगइ ❋ जम्बै बहुत गये घबराय ॥
तुरतै जम्बै उठि ठाढ़े भये ❋ सिगरी सभा उठी भहराय ।
हुक्म दैदियो तब जम्बैने ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजै हमरे दलमें ❋ लश्कर सजत न लागै बार ।
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढिगै ❋ बाँके घोड़नके असवार ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथ पर असवार ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला बघेले क्यार ।
राजा जम्बै करी तयारी ❋ औ गंगाजल लियो मँगाय ॥
करि अस्नान लियो राजा तब ❋ चन्दन चौकी लई मँगाय ।
पूजन करिकै गणनायकको ❋ करिकै इष्टदेवको ध्यान ॥
चन्दन रगरो मलयागिरिको ❋ औ माथेमें लियो लगाय ।
जामा पहिरि लियो जल्दीसे ❋ ऊपर बख्तर लीन्हों धारि ॥
टोप झलरिया धरि माथेपर ❋ ऊपर कुंडी लइ औंधाय ।
बारह छुरियां कम्मर बाँधी ❋ जम्बै दुइ बाँधी तलवारि ॥
दुइ पिस्तौलै अगल बगलपर ❋ बायें सिंहिनि मूठि कटार ।
जितने शस्तर रजपूतीके ❋ जम्बै साजि भये तैयार ॥
भौरानँद हाथी सजवायो ❋ लैके रामचन्द्रको नाम ।

सिढ़ियनसिढ़ियन जम्बैचढ़िगे ❀ औ हौदामें बैठे जाय ।
हाथी चलि भयो तब जम्बैको ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
दोनों सेना एकमिल होइ गईं ❀ खटखट चलन लगी तलवारि ।
चलै दुधारा दक्खिनवाला ❀ कोताखानी चलै कटार ॥
खाँड़ा बाजै रणके भीतर ❀ गोली चलै दनाक दनाक ।
कहँलगि वरनौं मैं त्यहि औसर ❀ रणमें चलैं सबै हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ सबके मारु मारु रट लागि ।
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नोकर चाकर तुम हमरे ना ❀ तुम सब भैया लागो हमार ।
जीतिके चलिहौ जो महुबेको ❀ सोने कड़ा दिहौं डरवाय ॥
दिये बढ़ावा बघऊदनिने ❀ क्षत्री वीर रूप होइ जायँ ।
जैसे लड़िका गबडी खेलै ❀ गिन गिन धरैं अगारू पांव ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
जाम्बे बढ़िगे तब आगेको ❀ औ ऊदनिको दइ ललकार ॥
कौन शूरमा है महुबेको ❀ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ।
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❀ दुइ मस्तीक अड़ाये पांव ॥
सोने कलश जो थे हौदाके ❀ सो ऊदनिने दियो गिराय ।
रिसहा होइके तब ऊदनि पर ❀ जम्बै लीन्हों गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो बघ ऊदनि पर ❀ घोड़ा पांच कदम हटि जाय ।
लगो चपेटा एक घोड़ाके ❀ घोड़ा खड़ो खड़ो थर्राय ॥
खैंचि शिरोही लइ ढेबाने ❀ सो जम्बैपर दई चलाय ।
चोट बचाई तब जम्बैने ❀ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा तब घोड़ाके ❀ सो समुहेते गयो बराय ।
राजा जम्बैकी डपटनिमें ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वइजाय ॥
क्षत्री हटिकै सब समुहेते ❀ कोऊ कुँवर न आड़ै पाँव ।
अकिले जम्बैकी धमकिनमें ❀ भागन लगे महोबिया ज्वान ॥

ऊँचे खाले भागन लागे ❀ औ नारेनकी पकरी राह ।
बाँधि लंगोटा कोउ कोउ क्षत्री ❀ देही अङ्ग विभूति रमाय ॥
हमैं न मरियो हमैं न मरियो ❀ हम भिक्षाके माँगनहार ।
भिक्षा माँगन हम आये थे ❀ तौलौं चलन लगी तलवारि ॥
जो क्षत्रिनकी ढालैं गिरगइँ ❀ तिनकी लईं बचुकिया बाँधि ।
प्राण पियारे जिन क्षत्रिनके ❀ काँधे लईं बचुकिया डारि ॥
हमैं न मरियो हमैं न मरियो ❀ हम ढालनके बेचनहार ।
ढालैं बेचन हम आये थे ❀ तौलौं चलन लगी तलवारि ॥
कोऊ लरिकनको रोवत हैं ❀ कोउ पुरखिनको चिल्लाय ।
कठिन लड़ाई भइ जम्बै सँग ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
देखि हकीकत तब जम्बैकी ❀ मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ।
बोले मलिखे सुनि आल्हासे ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
जौहर कीन्हे हैं जम्बैने ❀ सब दल रैन बैन ह्वइजाय ।
हमरी बरनीको नाहीं है ❀ लेओ तुरत जंजीरन बाँधि ॥
तुम्हरी बरनीको जम्बै है ❀ दादा लेउ जँजीरन बाँधि ।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
लै जँजीर तुरत आल्हाने ❀ पचशावदको दइ पकराय ।
साँकरि फेरी जब हाथीने ❀ सब दल रैन बैन ह्वइजाय ॥
भगे सिपाही माड़ौ वाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
भगत सिपाही जम्बै देखे ❀ अपने हाथी दियो बढ़ाय ॥
जम्बै बोले तब आल्हाते ❀ सुन लेउ दस्सराजको लाल ।
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❀ देखै कापर राम रिसायँ ॥
चोट आपनी आल्हाकरिलेउ ❀ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ।
बोले आल्हा तब जम्बैते ❀ तुम सुनिलेउ बघेलेराय ॥
चोट अगाऊ हम ना खेलैं ❀ ना भागेके परैं पिछार ।
हाहा खातेको ना मारैं ❀ नाहीं हुक्म चँदेले क्यार ॥

चोट आपनी राजा करि लेउ ❋ मनके मेट लेउ अरमान ।
इतनी सुनिकै तब जंबैने ❋ करमें लीन्ही लाल कमान ॥
तीर निकासे यक तरकससे ❋ सो हौदापर दियो जमाय ।
बाण चलाय दियो समुहेपर ❋ आल्हा लैगे तीर बचाय ॥
साँगि चलाई तब जंबैने ❋ आल्हा हाथी दियो हटाय ।
बचिगै आल्हा तब हौदामें ❋ नीचे गिरी साँग अरराय ॥
पाँच कदम जब आल्हा रहिगे ❋ तब जम्बैने कही सुनाय ।
दूबा बचिगौ हो आल्हा तुम ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
आल्हा ज्वाब दियो जम्बैको ❋ तुम सुनि लेउ बघेले राय ।
पाँउ पिछारू हम ना धरिहैं ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ॥
तिसरि उचौनी औरौ करिलैउ ❋ नाहीं सरग बैठि पछिताउ ।
इतनी सुनिकै तब जंबैने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
चेहरा मारो जब आल्हाको ❋ आल्हा दीन्ही ढाल अड़ाय ।
तीनि शिरोही जम्बै मारी ❋ तुरतै टूटि गई तलवारि ॥
देखि हकीकति राजा जम्बै ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
आज शिरोही धोखा दै गइ ❋ हमरो काल पहूँचो आय ॥
तब ललकार दई आल्हाने ❋ अब तुम सावधान होइजाव ।
इतनी कहिकै नुनि आल्हाने ❋ अपनी लीन्ही ढाल उठाय ॥
औझड मारी तब जल्दीसे ❋ तुरत महावत दियो गिराय ।
गिरत महावत परलै ह्वैगइ ❋ जंबै लई कटारी काढ़ि ॥
हौदामिलि गयो है हौदासँग ❋ हाथी अड़ो दांतसे दांत ।
चारि घरीभरि चली कटारी ❋ मनमें कोउ न मानै हारि ॥
हाथी पचशावदसे बोले ❋ आल्हा मण्डलीक औतार ।
बैरी समुहे यह ठाढ़ौ है ❋ ताके ले जँजीरन बाँधि ॥
चलिकै भेटौ परिमालेसे ❋ मैं हाथीकी लेउँ बलाय ।
फेरी साँकरि तब हाथीने ❋ तुरतै हौदा दियो गिराय ॥

आल्हा बांधि लियो जम्बैको ❋ लश्कर भागो बघेले क्यार ।
बहुत खुशी है महुबेवाले ❋ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ ताला सैयद संग लिवाय ।
जहाँ खजाना रह जंबैको ❋ तहँ सब गये महोबिया ज्वान ॥
जौन सिपाही थे पहरापर ❋ सबकी कटा दई करवाय ।
सिगरे छकड़ा लश्करवाले ❋ सो जोतवाये बनाफर राय ॥
कुलुफ तोरिकै तब आल्हाने ❋ माल खजाना लियो लदाय ।
लूटि कराई गढ़ माड़ौमें ❋ तुरतै छकड़ा दिये जोताय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ बबुरी वनको दई पठाय ।
हाथी घोड़ा रथ लुटवाये ❋ औ सब लूटि लिये हथियार ॥
लूटि मारिकै लोहागढ़से ❋ आल्हा रङ्गमहलको जायँ ।
बोले आल्हा हरकारासे ❋ तुम माताको लाउ लिवाय ॥
धावन चलि भयो तब जल्दीसे ❋ बबुरी बनमें पहुँचो जाय ।
जहँ पर माता देवै बैठी ❋ धावन हाथ जोरि रहिजाय ॥
तुमहिं बुलायो है आल्हाने ❋ जल्दी चलो हमारे साथ ।
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ देवै तापर भई सवार ॥
चली पालकी रनि देवैकी ❋ औ द्वारे पर पहुँची आय ।
आल्हा उतरि परे हाथीते ❋ औ देवैतर पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि तब मातासे ❋ रानी कुशले लेउ बुलाय ।
देवै बोली तब बांदीते ❋ तुम रानीको लाउ बुलाय ॥
बांदी आई तब कुशलापै ❋ औ रानीते कही सुनाय ।
तुमहि बुलायो है देवैने ❋ द्वारे चलौ हमारे साथ ॥
सुनत खबरिया रानी कुशला ❋ मनमें गई सनाका खाय ।
होश बन्द भये तब रानीके ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाय ॥
बोले कुशला तब ऊदनिते ❋ तुम समरत्थ उदयसिंहराय ।
हाथनडरियो तुम तिरियनपर ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥

बोले ऊदनि तब कुशलाते ❋ माता सुनौ करिंघा क्यार ।
हाथ न मैं तिरियनपर डारैं ❋ ना भागेके परे पिछार ॥
बैर हमारो था करियाते ❋ सो हम खेतन दियो गिराय ।
चीरा कलँगी मेरे बापको ❋ डोला साजिबिजैसिन क्यार ॥
हार नौखला लाखा पातुर ❋ सो तुम तुरत देउ मँगवाय ।
बावन बचुका पश्मीनाके ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
जो कछु मांगो बघ ऊदनिने ❋ सो सब रानी दियो मगाय ।
आल्हा चलि भै तब कोल्हुनपै ❋ डोला संग दिवलदे क्यार ॥
यक ओर डोला है कुशलाको ❋ संगै चले महोबिया ज्वान ।
पेड़ बरगदा को जहँ ठाढ़ो ❋ तहँ पर गये बनाफर राय ॥
झपटि खोपरी ऊदनि लीन्हीं ❋ सोने थार लियो मँगवाय ।
आरति सजवाई थारामें ❋ तामें खोपरी लई धराय ॥
मलिखे आल्हा बैला बनिगे ❋ ऊदनि कातर दियो फिराय ।
ढेबा बहादुर लै जम्बैको ❋ पत्थरकोल्हू दियो दबाय ॥
रानी कुशला देखैं ठाढ़ी ❋ राजा जम्बै दिये पिराय ।
शीश काटिकै तब जम्बैको ❋ सोऊ थार दियो धरवाय ॥
बोली आभा दस्सराजकी ❋ जुगजुग जियो लड़ैते लाल ।
डाहु बुझाय गयो छातीकी ❋ बैरी कोल्हू दियो पिराय ॥
गया हमारी अबतुम करिकै ❋ खोपरी गंगा देउ सिराय ।
बोली आभा तब जम्बैकी ❋ सुनिलेउ दस्सराजके लाल ॥
वंश नाश हमारो तुम कीन्हो ❋ कोऊ पानि दिवैया नाहिं ।
खोपरी हमारी तुम गङ्गामें ❋ दाया करिकै देउ सिराय ॥
हालु देखिकै रानी कुशला ❋ तुरतै गिरी भूमि भहराय ।
देखि हकीकत ऊदनि बोले ❋ रानी सुनौं बघेले केरि ॥
जैसी करनी तैसी भरनी ❋ है यह जाहिर सकल जहान ।
गड़हा खोदै जो काहूको ❋ ताके लिये कुवां तैयार ॥

कछु अपराध नहीं हमरो है ❋ मनमें समुझि लेहु महरानि ।
जो जो देखा तुम आंखिनते ❋ सो सब कर्म करिंघा क्यार ॥
धर्मकी माता हौ हमरी तुम ❋ बैठो राज करो गढ़ माहिं ।
जो कोउ बैरी तुमहिं सतावै ❋ तुरतै खबरि दिहौ पहुँचाय ॥
हम चढ़ि ऐहैं गढ़ महुबेते ❋ औ बैरिनको दिहैं भगाय ।
ऐसे धीरज ऊदनि दैके ❋ रनि कुशलाको दौ समुझाय ॥
लैके डोला रनिबिजमांको ❋ राखो महल दूसरे आय ॥
ऊदनि बोले तब आल्हासे ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
बात हारि गये हम बिजमाते ❋ हमने गंगा लई उठाय ॥
खंभ गड़ावो रंगमहलमें ❋ भांवरि तुरत लेउँ डरवाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ ना बैरीघर करैं बियाहु ॥
जब सुधि करिहैं अपने घरकी ❋ तुमको दिहैं जानसे मारि ।
मनमें समुझि लेउ ऊदनि तुम ❋ याको देउ जानते मारि ॥
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❋ दादा वचन करौ परमान ।
हाथु न डारिहैं हम तिरियापर ❋ रणमें झूँठि परै तलवार ॥
बोले आल्हा तब मलिखेते ❋ तुम बिजमांको डारौ मारि ।
इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ अपनी खैंचि लई तरवारि ॥
करो जड़ाका रनिबिजमांपर ❋ तुरतै छूटि जनेवा जाय ।
बिजमा बोली तब घायल ह्वय ❋ तुम सुनि लेउ उदयसिंहराय ॥
हमने जानी थी अपने मन ❋ कछु दिन करिहैं भोगबिलास ।
सो तुम धोखा दियो बीचमें ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
जो तुम मरते अपने करसे ❋ तो छुटि जातो दुःख हमार ।
जेठ हमारे मलिखे लागत ❋ तुम सुनिलेउ हमारो शाप ॥
मारे जैहो तुम धोखाते ❋ जहँ न ह्वइहैं भाइ तुम्हार ।
जैसो कीन्ही तुम हमरे सँग ❋ तैसी होय तुम्हारे साथ ॥
सुनिसुनिबातैंयहबिजमांकी ❋ मोहमें फँसे उदयसिंहराय ।

बांह पकरिकै तब ऊदनिने ❋ औ बिजमाते कही सुनाय ॥
अबकीबिछुरीतुमकबमिलिहौ ❋ सांची हमैं देउ बतलाय ।
यहसुनि बिजमा बोलन लागी ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
हम अबजन्मलिहैंनरवरगढ़ ❋ औ फुलवाहोय नाम हमार ।
काबुल जैहौ जबघोड़नहित ❋ तब फिरि ह्वइहै भेंट हमारि ॥
इतनी बात कहत बिजमाने ❋ तुरतै दीन्हे प्राण गवाय ।
लास उठाय लई ऊदनि ने ❋ सो नदीमें दई बहाय ॥
हाथि पचशावदत्यारखड़ाथा ❋ आल्हा तापर भये सवार ।
घोड़ी कबूतरीपर मलिखे हैं ❋ सैयद सिंहिनिपर असवार ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा रहैं ❋ देवै पलकी पर असवार ।
घोड़ा बेंदुला पर ऊदनि हैं ❋ लाखा पातुर संग लिवाय ॥
चली सवारी गढ़ माड़ौते ❋ औ बबुरीबन पहुँचे आय ॥
जहांपर तम्बू रहै ब्रह्माको ❋ तहँ सब उतरिपरे अरगाय ।
शूर सिपाही महुबेवाले ❋ तिनको आल्हा लियो बुलाय॥
काहुइ दीन्हो शाल दुशाला ❋ काहुइ दियो मोतियन हार ।
काहुक कड़ा दियो सोनेके ❋ चीरा कगँली दई इनाम ॥
तलब बढ़ाय दई काहूकी ❋ काहुइ मोहरें दईं इनाम ।
हाथ जोरिकै मलिखे ऊदनि ❋ रनि देवैते कही सुनाय ॥
करिहैं गया जाय दादाकी ❋ माता हुक्म देउ फरमाय ।
हुक्म पायकै तब देवैको ❋ ऊदनि और बीर मलिखान ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ दोनों गया करनको जायँ ।
लश्करचलिभयोनुनिआल्हाको ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
कछुक दिना मारगमें बीते ❋ महुबो धुरो दबायो जाय ।
रुपना बारीको आल्हाने ❋ गढ़ महुबेमें दियो पठाय ॥
खबरि सुनावौ तुम राजाको ❋ आये जीति बनाफर राय ।

रूपना चलि भयो तब जल्दीते ❋ अपनी घोड़ीपर असवार ॥
जायके पहुँचो तब डचोढ़ीपे ❋ जहँ दरबार चँदेले क्यार ।
करी बन्दगी परिमालैको ❋ औ लश्करको कहो हवाल ॥
जीतिकै आवत हैं माड़ौते ❋ आल्हा आदि शूर सरदार ।
हमहिं पठायो है आगेको ❋ जल्दी खबरि सुनावन काज ॥
ठाढ़ी मल्हना है अंटापर ❋ हेरै बाट बनाफर केरि ।
कोश दुइकते झंडा देखे ❋ रानी सोचि २ रहिजाय ॥
केहिको लश्कर यहु चढ़ि आयो ❋ रहि गयो एक कोश मैदान ।
पचशावद हाथी पहिचानो ❋ ब्रह्मानँदको लौ पहिचानि ॥
आल्हा ठाकुर सुलिखे ढेबा ❋ औ सैयदको लौ पहिचानि ।
तुरतै उतरी सतखंडाते ❋ औ सत सखियाँ लईं बुलाय ॥
साजि आरती मल्हना रानी ❋ लागी करन मंगलाचार ।
तौलौं आई फौज कटीली ❋ जयको डंका दियो बजाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❋ आयो जीत बनाफर राय ।
आल्हा ब्रह्मा सुलखे उतरे ❋ दरवाजेपर पहुँचे आय ॥
चरण लागिकै रनि मल्हनाके ❋ सो माथेमें लियो लगाय ।
हाथ पकरिकै रानी मल्हना ❋ लड़िकन छाती लियो लगाय ॥
करी आरती सब लरिकनपर ❋ माथे टीका दियो लगाय ।
कुशल क्षेम पूछी सबहीकी ❋ तब आल्हाने दियो जवाब ॥
सब प्रताप माता तुम्हरो है ❋ माता लियो बापको दांव ।
चारौं बेटा राजदुलारे ❋ सो खेतनमें दिये गिराय ॥
राजा जम्बैको कोल्हूमें ❋ जियतै समुहे दियो पेराय ।
सुनतै राजा बहुत खुशी ह्वै ❋ पीठी पर दई हाथ फिराय ॥
बोलीं मल्हना तब लरिकनते ❋ जुग जुग जिवो लड़ैते लाल ।
आल्हा ब्रह्मा सुलिखे ढेबा ❋ पँचयें सैयद संग लिवाय ॥
पांचौ पहुँचे तब बँगलामें ❋ जहँ दरबार चँदेले क्यार ।

करी बन्दगी परिमालैको ❀ दोनों हाथ बांधि रहि जायँ ॥
सबहिं बिठायो चन्देलेने ❀ औ सब पूछो हाल हवाल ।
हाल बतायो सब आल्हाने ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ॥
हुक्म दे दियो तब राजाने ❀ घर घर होय मंगलाचार ।
अनंद बधैया महुबे बाजी ❀ बाजा बजन लगे चहुँओर ॥
भिक्षुक याचक सिगरे आये ❀ बहुतक सोना दियो लुटाय ।
गयाते लौटे मलिखे ऊदनि ❀ दिवला तिलका भई तयार ॥
चुरीं उतारीं तब सागरपर ❀ औ महलनमें पहुँचीं आय ।
इतनी लड़ाई भइ माड़ौमें ❀ सो हम कहिके दई सुनाय ॥
सिरसा गढ़ छीनो पारथसे ❀ आगे सुनियो कान लगाय ।
समय समय पर आल्हा गावौ ❀ नित उठि लेउ रामको नाम ॥
सीता राम मनाय हियेमहँ ❀ सुमिरो कृष्णचन्द्र घनश्याम ।

इति माड़ौकी लड़ाई समाप्त ।

श्री :

सिरसाकी पहिली लड़ाई

मलिखान विजय.

सुमिरन-गजल

प्रथमगणराजपदपंकज मनाऊँ, मनोरथ सर्वदा सुखसिद्धि पाऊँ
गले बैडूर्य माला रक्त चंदन, मुकुट मस्तकपै उपमा कैसे गाऊँ
खड़ी सब ऋद्धि सिद्धि हाथ जोड़, मैं सोनेका चँवरतुमपरडुलाऊँ
करूँ पूजा वचनमनक्रम तुम्हारी, चरणरजप्रेमसे शिरपर चढ़ाऊँ
तुम्हीं हो सिद्धिदाता जक्तमें एक, तुम्हारा द्वारतजिकिसद्वार जाऊँ
करौइसदासपर अपनी कृपा तुम, फतेहसिरसा सभीको कह सुनाऊँ
लागत भादौंकी तिथि आठैं ❋ शुभदिन आनिपरो बुधवार ।
आधीरात केरे अमलामें ❋ चन्दा उदय भयो त्यहिबार ॥
समय सुहावन अति मनभावन ❋ पावन जगत रूप कल्यान ।
मथुरा माहिं रूपगुणसागर ❋ प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
अस्तुतिकीन्हीं सबदेवनमिलि ❋ जयजयकृपासिन्धु करतार ।
जब जब भीर परति भक्तनपर ❋ तब तब आप लेत अवतार ॥
तुम्हरी लीला सब जग जाहिर ❋ जानत सकल वृद्ध अरु बाल ।
घट घटवासी अविनाशी हो ❋ गो द्विजरक्षक दीनदयाल ॥
निज लीला करि सब सुखदेहौ ❋ हरिहो सकल भूमिको भार ।
रक्षा करिहौ निज भक्तनकी ❋ ह्वैहै प्रगट सुयश संसार ॥
करि अस्तुति सब देव सिधारे ❋ मायाप्रबल कृष्णघनश्याम ।
द्वार कपाट खुले तेहि अवसर ❋ सोये द्वारपाल त्यहि याम ॥
श्रीवसुदेव देवकी दोनों ❋ बन्धन मुक्त भये तत्काल ।
प्रगटि रूपसमुझाय बात सब ❋ बिहरन लगे कृष्णह्वै बाल ॥

लखिशिशुरूपमातुपितु दोनों ❋ बँधि गये मोहपाशके जाल ।
कंठ लगाय लियो बालकको ❋ विस्मयविवश चूमि मुखलाल ॥
देवकिसुता मोहवश बोली ❋ सुनिये सौम्यरूप भरतार ।
कीजै यत्न वेगि बालक हित ❋ जासों बचे बाल सुखसार ॥
तब वसुदेव चले कृष्णहि लै ❋ वर्षत मन्द मन्द जलधार ।
यमुनानिकट गये जेहिअवसर ❋ उमड़ी जहां नीरकी धार ॥
कृष्ण चरणपरशनहित यमुना ❋ उमड़ी विकल चित्त वसुदेव ।
चरण बढ़ायो कृष्णचन्द्र तब ❋ घटिगो नीर जानि पदभेव ॥
यमुना पार उतरि गोकुलमें ❋ पहुँचे तात सहित सुरराय ।
यशुदा निकट देखि कन्यातहँ ❋ हर्षित चित्त भये मनमाहँ ॥
लई बालिका तेहि अवसरमें ❋ तुरतै भवन फिरे वसुदेव ।
आय पहूँचो तब मथुरामें ❋ जान्यो नाहिं काहुने भेव ॥
तुरतै कन्या रोवन लागी ❋ पाई खबर कंस नरनाह ।
आय पहूँच्यो असुरराज तहँ ❋ लीन्हीं झपटि सुता रिसियाय॥
पटकन चाह्यो ताहि शिलापर ❋ सो उड़िगई तुरत आकाश ।
उत श्रीकृष्णचन्द्र गोकुलमें ❋ प्रगटे मनहुँ चन्द्र परकाश ॥
भई बधाई तहँ घर घरमें ❋ सो मैं कहँ लगि करौं बखान ।
नन्द यशोदादिक नर नारी ❋ फूले अंग नाहिं समियान ॥
लीलाकरिकरिनित गोकुलमें ❋ प्रभुने मातपितहि सुख दीन ।
ब्रजमंडलके लोग लुगाई ❋ हुइ गये कृष्णभक्तलवलीन ॥
श्रीवृन्दावन धाम विहारी ❋ वन वन धेनु चराई आय ।
श्रीगोपाल सन्त हितकारी ❋ हारी सकल जगत संताप ॥
मारि पूतना हति सकटासुर ❋ बक अरु तृणावर्तको मार ।
गर्व नशायो इन्द्रदेवको ❋ यक अंगुरीपर धरो पहार ॥
केशी व्योमासुर वृषभासुर ❋ मारे कंस आदि खलराज ।
रक्षा कीन्ही पांडव कुलकी ❋ सारथि बने भक्तके काज ॥
कृष्णचन्द्र छबि परममनोहर ❋ शारद सुयश कहत सकुचाय ।

कोटिकाम उपमालघु लागत ❋ केहिविधिवरणिसकेकविराय ॥
सागरसुयशअगमयदुनन्दन ❋ मम मतिमशकरूप अज्ञान ।
शेष शंभु विधि पारन पावत ❋ मैं करि सकौं कौन गति गान ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगे मैं ❋ वरणौं सुयश बीर मलिखान ।
सिरसा छीन लियो पारथसे ❋ करिकै युद्ध घोर घमसान ॥
रामप्रतापप्रगटजिमिदिनकर ❋ पर्वत पाप होत जरि छार ।
तिमिपरिमालप्रतापसुनेजग ❋ निर्बल मानि गये सुनि हार ॥
राम नाम शत मूरि सजीवनि ❋ हरिजन अमर होत जपिनाम ।
उत्तर गगन पथको निरखौ ❋ ध्रुवकी ज्योति दिपतिसुर धाम ॥
रामभक्त जलमें नहिं डूबत ❋ अग्नि न सकति रामहू जारि ।
जन प्रह्लाद भक्तिबल उबरो ❋ दहकति अग्नि भई फुलवारि ॥
रामचन्द्र अरु भरतलालजी ❋ लक्ष्मण शत्रुदमन सुतचारि ।
जबसे प्रगटे अवधपुरीमें ❋ दशरथ अभय भये शरधारि ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❋ ढेबा आदि बीर भयकाल ।
जबसे उपजे गढ़ महुबेके ❋ जगि गये भाग रजापरिमाल ॥
धन्य भाग माता कौशल्या ❋ जिसके पुत्र भये भगवान ।
धन्य कुक्षि रानी तिलकाकी ❋ जन्मे प्रबल बीर मलिखान ॥
पुत्र सपुत्र जने देवैने ❋ प्रगटो दस्सराजको नाम ।
कुलदीपक तिलकाने जायो ❋ उमँगे वत्सराज सुरधाम ॥
मंगल मोद बढ़े दुख नाशे ❋ महुबो नगर बनो सुरधाम ।
पवन रूप है शोभा लहरी ❋ पुनि परिमाल भये सरनाम ॥
जबते जन्म लियो तिलकासे ❋ बलनिधि शूरवीरमलिखान ।
शंका बढ़न लगी महुबेकी ❋ कांपन लगे सुभट बलवान ॥
धर्मपुत्र राजाने समुझो ❋ सेयो प्राण तुल्य निजधाम ।
नयन ओटपलभरिनहिंराखो ❋ मुखलखि सकलबिसारे काम ॥
तरुण अवस्थाने मधुप्यायो ❋ फड़कन लगी भुजा मलिखान ।
तरुवर मलन लगो चरणनमें ❋ रणमें हनन लगो बलवान ॥

यौवन रूप सिन्धुमें उमँगो ❋ पकड़ी मौजरूप तलवारि।
गिरिवरडील महाअभिमानी ❋ खसक परे शस्त्र शर डारि॥
बालक वयसि गई ऊदनिकी ❋ आई तरुण अवस्था धाय।
भुजबल उठन लगो रिउनीसे ❋ पकड़न लगो सिंह बन जाय॥
निर्भरबीर उदयसिंहउपज्यो ❋ जन्मोअभयसिंह मलिखान।
संपति लाय भरी महुबेमें ❋ लैलै महाबलिनसो मान॥
जित दोउ वीर समरको गवनैं ❋ भागैं हांक सुनत महिपाल।
ऐसे नर महुबेमें उपजे ❋ जगमें अहोभाग परिमाल॥
जैसे राजा रामचन्द्रके ❋ योधा अंगदादि हनुमान।
तैसे ही परिमाल भूपके ❋ बलनिधिउदयसिंहमलिखान॥
बड़ बड़ नामी वीर बहादुर ❋ जिनकी हती जगतमें धाक।
अनी जोरि ऊदनिसे अटके ❋ ह्वैगये समरभूमिमें खाक॥
कृपारूप जगदीश्वर चितये ❋ नितनव बढ़न लगे परिमाल।
सुभटवीर सेना धनसम्पति ❋ बाढ़न लगी पाय शुभकाल॥
गढ़पति शूर वीरभट योधा ❋ राजा राजकुँवर सरदार।
छत्रपती रणधीर बहादुर ❋ हाजिर रहन लगे दरबार॥
कनक कोटपर झण्डा लहरै ❋ सोहत चित्र विश्वभगवान।
ऊपर नामा चन्देलेको ❋ नीचे उदयसिंह मलिखान॥
सुखसमेतनानाविधिसम्पति ❋ महुबे भोगि रहे परिमाल।
परजा सुखी सुखी पशु पक्षी ❋ योधा सुभट बजावैं ताल॥
सुरमुनिऋषीज्ञाननिधिभाषत ❋ दर्शन प्रगट जगतमें बात।
जापर दया होत भगवतकी ❋ दुर्लभ काज सुलभ दिखलात॥
गोपदरूप अगमनिधिलागत ❋ दहकत अग्नि होइ फुलवारि।
मृत्युमातसमअमृतपियावति ❋ विन रण किये भजत रिपुहारि॥
जैसे इंद्रपुरी मनभावनि ❋ सब सुखखानि लेउ पहिचानि।
तैसेइ धन्य धरणि महुबेकी ❋ भट निर्मोह वीरकी खानि॥
कंचनभवनविविधरगरचना ❋ अद्भुत इंद्र मनोहर जाल।

रत्न जटित सिंहासन शोभित ❀ बैठे न्याय करैं परिमाल ॥
आजु दया है परिमालै पर ❀ श्रीसच्चिदानंद भगवान ।
शूलहु सुमन होत हाथनमें ❀ दर्शत लाल छुवत पाषाण ॥
पारस पूजा चन्देले घर ❀ लोहा छुवत सोन ह्वै जाय ।
महिमा जिनकी सब जग जानै ❀ केहि विधिबरनि सकै कबिराय॥
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी ❀ भारी लागि रहो दरबार ।
पाँच हाथ ऊँचो सिंहासन ❀ तापर तपै शूर सरदार ॥
बारह द्वारीके बँगला हैं ❀ तेरह द्वारीके दह्लान ।
खम्भ अठासीकी बैठक है ❀ चौबिसकी चौपाल बखान ॥
एक अलँग पर ताला सैयद ❀ बैठा एक ओर मलिखान ।
एक अलँग पर ढेबा बैठा ❀ यकलँग उदयचन्द्र बलवान ॥
नचै कंचनी वा बँगलामें ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
वाहि समैयाके अवसरमें ❀ मलिखे उठो चित्त हर्षाय ॥
उतरि सिंहासनसे भुइँ आया ❀ बोला हाथजोरि मलिखान ।
एकबात तुमसो कहियतु हौं ❀ दादा मंडलीक बलवान ॥
बहुत दिनासे वनवेलिनमें ❀ हम नहिं खेलन गये शिकार ।
हुक्म तुम्हारो जो मैं पाऊँ ❀ तो घोड़ीपर होउँ सवार ॥
गुस्सा ह्वैके तब आल्हाने ❀ नरमलिखेसे कही सुनाय ।
पड़ी तवाही गढ़ माड़ौकी ❀ अब तक भयो होश कछुनायँ ॥
है तू जालिम भैया मलिखे ❀ तेरा कोउ न पावै पार ।
कोइ तो मारै है शेरनको ❀ तू बीरनके करै शिकार ॥
उछल बछेरीपर उड़ि लागे ❀ पहुंचे जाय समुन्दर पार ।
रारि मचावै केहु साबंतसे ❀ तौ दिन राति चलै तलवार ॥
फिरि ना बचिहैं महुबेवारे ❀ मारे जायं सकल सरदार ।
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❀ दादा मण्डलीक अवतार ॥
पहिली गारी पर ना बोलूं ❀ ना दूजी पर करौं बिगार ।
तीजी गारी पर ना छाडूं ❀ मुखमें धांसि देउं तलवार ॥

हुक्म देदियो तब आल्हाने ❋ मलिखे तुरत भयो तैयार ।
घोड़ी कबुतरीको सजवायो ❋ तापर फांदि भयो असवार ॥
ऐंड़ लगाई जब घोड़ीके ❋ घोड़ी आसमान उड़िजाय ।
सर सर सर सर छुटी बछेरी ❋ जैसे कला कबूतर खाय ॥
सिरसा गढ़केरे जंगलमें ❋ घोड़ी उतरि परी तेहिकाल ।
जहाँ शिकार करत वन डोले ❋ पारथ नाथ पिथौरालाल ॥
हिरण एक घेरा पारथने ❋ सो मलिखेकी परी निगाह ।
झपटि गिरायो नरमलिखेने ❋ तब पारथने करी निगाह ॥
लौटि गर्दना नाहरकेसा ❋ सो मलिखेको रहा निहार ।
बोला पारथ नर मलिखेसे ❋ ओ राजनके राजकुमार ॥
कौन देशके तुम बासी हौ ❋ आगे कहा तुम्हारो नाम ।
हमरी सीमाके अन्तरमें ❋ तुम्हरो यहां कौन सो काम ॥
क्यों शिकार हमरी तुम मारी ❋ क्यों कमवख्ती लगी तुम्हारि ।
बड़ी दूरसे हम लाये थे ❋ सो तुम हमरी हनी शिकार ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ तौ सम्मुहेसे जाउ बराय ।
छोड़ि शिकार देउ हमरो तुम ❋ नाहीं तेगा देउ चलाय ॥
इतनी सुनिके मलिखे तड़पा ❋ औ पारथसे कही सुनाय ।
यह सीमा है गढमहुबेकी ❋ तू है कौन देशके राय ॥
बारह कोसनके गिरदेमें ❋ हमने तुझे रखा कहुँ नायँ ।
अबतू आया कौनकाजहित ❋ सो तू हमहिं देय बतलाय ॥
पटिया नाहीं तेरे बापके ❋ जो चलि आयो हमारे गावँ ।
सिंहाँ बिचरत हैं या बनमें ❋ यामें गीदड़ का क्या काम ॥
इतनी सुनिलइ तब पारथने ❋ बोली गई करेजे पार ।
बोला पारथ तब मलिखेसे ❋ सुन ले बच्चा वचन हमार ॥
यह है सीमा मेरे बापकी ❋ जो है शब्दवेधि चौहान ।
गढ़ दिल्लीपति पृथ्वीराज हैं ❋ जिनको जानत सकल जहान ॥
यहांका राजा बच्छराज था ❋ जो महुबेका राजकुमार ।

जा दिन मरिगा बच्छराज नृप ❀ सिरसा भयो बिना सरदार ॥
तब ही राजा पृथीराजने ❀ यहु दिल्लीमें लियो मिलाय ।
सिरसा गढ़का यह जंगल है ❀ सिरसा तीन कोस रह जाय ॥
यहांपै राज हमारो कहिये ❀ पारथ नाम पिथौरालाल ।
सीमा नाहीं यह तुम्हरी है ❀ नाहीं राज रजापरिमाल ॥
इतनी बात सुनी पारथकी ❀ तब हँसि कही बीर मलखान ।
भली बताई पारथ ठाकुर ❀ हो तुम धन्य बीर चौहान ॥
मैं हूँ बेटा बच्छराजका ❀ औ मलिखान हमारो नाम ।
सिरसागढ़ है मेरे बापको ❀ तहँ तुम कियो आपनो धाम ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❀ खाली करो सिरसवां गाँव ।
इतनी बात सुनी मलिखेकी ❀ तब पारथने दियो जवाब ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❀ तो तुम खाली लिहो करवाय ।
कौन हौसला तुम राखत हौ ❀ जो सिरसाको लेउ छिनाय ॥
बोले मलिखे तब पारथसे ❀ तुम सुनिलेउ धनी चौहान ।
खाली सिरसा मैं करवाऊँ ❀ तौ मेरो नाम बीर मलखान ॥
कितिक साहिबी पृथीराजको ❀ जो हमरो गढ़ लियो दबाय ।
दई चुनौती सोमेश्वरकी ❀ जिनके पुत्र पिथौराराय ॥
जो तुम खैर आपनी चाहौ ❀ खाली करि देउ गांव हमार ।
खाली करिहौ ना सिरसा जो ❀ तौ लै लेउँ तेगकी धार ॥
आठ दिनामें खाली करिदेउ ❀ नातर दिल्ली लिहौं छिनाय ।
तख्त लौटिके बादशाहको ❀ दिल्ली गर्द दिहौं करवाय ॥
इतनी सुनतै पारथ जरिगा ❀ औ मलिखेसे कही सुनाय ।
ऐसे शूर कहूँ नहिं देखौं ❀ जो सिरसाको लेय छिनाय ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वैगै ❀ औ बातनमें बाढ़ी रार ।
गुस्सा हुइके तब पारथने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
हिरना धरिदेउ तुम हियनापर ❀ चुप्पे लौटि महोबे जाउ ।
नाहीं चोट आपनी करिलेउ ❀ क्यों फिरि स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥

मलिखे बोले तब पारथसे ❋ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ।
चोट अगाऊ हम नहिं खेलैं ❋ नहिं भागेके परैं पिछार ॥
पैर पिछारूको नहिं राखैं ❋ ना तिरियापर करैं हथ्यार ।
चोट आपनी पारथ करिलेउ ❋ ना कछु मनमें करौ विचार ॥
फूलिकै पारथ गरगज हुइगा ❋ अपनी म्यान करी तलवार ।
साँगि उठाई मन पक्केकी ❋ जो चिंतामणि गढ़ी लुहार ॥
चेहरा डाटिके नर मलिखेको ❋ ऊपर सांगि धमक्की जाय ।
बांयेंसे घोड़ी दहिने हुइ गइ ❋ नीचे सांगि गिरी अरराय ॥
गुर्ज उठायो तब पारथने ❋ औ फिरि खैंचि लई तलवार ।
घोड़ी उड़िगइ आसमानको ❋ तुरते गुर्ज भूमि गिरि जाय ॥
शंका मानो तब पारथने ❋ औ फिरि खैंचि लई तलवार ।
दांत बतीसोंको धरि दाबो ❋ औ मलिखेपर कीन्हीं वार ॥
ढाल उठाय दई मलखेने ❋ ताकी लीन्हीं चोट बचाय ।
तीन वार पारथने कीन्हे ❋ मलिखे तीनौं लियो बचाय ॥
होश बिगरि गये तब पारथके ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
सोचै पारथ अपने मनमें ❋ है यह बड़ा बीर रणराय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❋ औ पारथसे कही सुनाय ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्हीं ❋ लीजै हमरी चोट बचाय ॥
यह कहि चोट करी मलिखेने ❋ पारथ दीन्ही ढाल अड़ाय ।
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
घोड़ा भागि चला पारथका ❋ ना रोकेसे रुकी लगाम ।
पारथ भागि गयो सिरसाको ❋ मलिखे गयो आपने गाँम ॥
पारथ सोचै अपने मनमें ❋ औ पलँगापर करै विचार ।
रैनि समैया नींद न आई ❋ बोली तासु पद्मिनी नार ॥
स्वामी निधड़क तुम सोवत थे ❋ जैसे विपिनमाँहि मृगराज ।
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❋ स्वामी नींद न आई आज ॥
बोला पारथ तब रानीसे ❋ तुम सुनि लेउ पद्मिनी नार ।

सिरसा केरे तीनि कोस पर ❋ हम बन खेलन गये शिकार ॥
आज मिलाप भयो बैरीसे ❋ निंदिया कूच गई करवाय ।
बहुत दिना सुखसे सोये हम ❋ अब दुख नींद पहुँची आय ॥
मलिखे बेटा बच्छराजका ❋ ताने हमरी हनी शिकार ।
सिरसा माँगै अपने बापका ❋ जाकी कठिन चलै तलवार ॥
आठ दिनाकी मुहलति दैके ❋ हमरो घोड़ा दियो भगाय ।
बड़ो लड़ैया महुबेवारे ❋ सिरसा खाली लिहैं कराय ॥
इतनी बात सुनी रानीने ❋ मनही मनमे गइ मुरझाय ।
पोच पुरुषकी तिरिया जैसे ❋ अपने मनहीमन पछिताय ॥
यहांकी बातैं तो यहँ छांड़ौ ❋ अब महुबेको करौं बखान ।
जहां कचहरी लगि आल्हाकी ❋ तहँपर गयो बीर मलखान ॥
हाथ जोरिकै मलिखे बोले ❋ दादा मंडलीक अवतार ।
न्यारा किला हमहिं बनवावौ ❋ न्यारा बँगला फौज हमार ॥
तापर ज्वाब दियो आल्हाने ❋ मैं भैयाकी लेउँ बलाय ।
हम तो ताबे परिमालैके ❋ वो सरदार चँदेलेराय ॥
तुम चलिजावौ गढ़महुबेको ❋ राजा चन्द्र वंश दरबार ।
जो कोइ गढ़िया देयँ चँदेले ❋ तामें जाय रहौ सरदार ॥
इतनी सुनि लेइ नर मलिखेने ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय ।
फिरिकै मलिखे बोलन लागे ❋ चाचा सुनौ तलंसीराय ॥
जा दिन मरि गये पिता हमारे ❋ तुम्हरो गोद गये बैठाय ।
छोटी गढ़िया हमको मिलिजा ❋ ऐसी जतन देउ बतलाय ॥
इतनी सुनिकै तालहन बोले ❋ बेटा सुनौ बीर मलिखान ।
सीम दबाई दिल्लीपतिने ❋ जो है पृथिराज चौहान ॥
सिरसागढ़ तुम्हरे चाचाको ❋ सो पिरथीने लियो दबाय ।
अपनो सिरसा जाकर लेलो ❋ चाहै रार मार बढ़ जाय ॥
अब तुम जावौ गढ़ महुबेमें ❋ औ राजासे कहौ सुनाय ।
जाय माँगियो तुमकोइगढ़िया ❋ तुमको देयँ चन्देलेराय ॥

जोई रोगीके मनमें भावै ❋ सोई वैद बताई आय ।
कूदि बछेरी पर चढ़ बैठो ❋ औ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
जुरी कचहरी चन्देलेकी ❋ बैठे बड़े बड़े उमराय ।
क्या छबि बरणौं वा बँगलाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
मलिखे पहुँच गये बँगलामें ❋ लैकै रामचन्द्रको नाम ।
पांच पैगसे शीश झुकायो ❋ औ ढिग जाकर कियो प्रणाम ॥
सूरति देखी जब मलिखेको ❋ क्षत्री सोचि सोचि रहिजायँ ।
सब मुख देखि रहे मलिखेको ❋ बँगला सूनसान होइ जाय ॥
नजरि बदलि गई चन्देलेको ❋ देखा बच्छराजका लाल ।
हाथ पकरिकै लै गोदीमें ❋ लो बैठाय रजा परिमाल ॥
बोले राजा नर मलिखेसे ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❋ जो मुरझाय रहे यहि काल ॥
हाथ फेरिकै पुनि पीठपर ❋ बोले वचन प्रेम रससानि ।
रे मलिखान वीर भट नागर ❋ बलनिधिसुयशबुद्धिकी खानि ॥
राज बढ़ायो तैं महुबेको ❋ सम्पति भरी भवनमें लाय ।
कञ्चन कोट धाम रचि डारे ❋ यशकी ध्वजा स्वर्ग लहराय ॥
बहु रणविषम युद्धहम कीन्हे ❋ निरखे विविध भाँति मैदान ।
शूर वीर क्षत्री भट जांचे ❋ परखे समर भूमिमें ज्वान ॥
तोसों नर निशंक नहिं देखो ❋ मैं मथिचुको सकल संसार ।
धन्यवाद बलको क्या भाषौं ❋ है सहदेव केर अवतार ॥
एक जीभ अगणित यश तेरे ❋ बरणौं कौन यत्न सब तात ।
कुलदीपक कर्ताने सिरजो ❋ तोसो सुभग भये पितु मात ॥
इन्द्रलोकलगि पदवी धरिदई ❋ करि दिये क्षत्रपती परिमाल ।
मम हित लागि प्राणपन हारे ❋ निशिदिन रही शीशपर ढाल ॥
जो सुत तोहिं समर्पण करि देउँ ❋ अपनो माल मुलक तन प्राण ।
फिरि कोइ पूछे मेरे मनसे ❋ तोसो उऋण नहिं मलखान ॥
दलगढ़राज धामधनसम्पति ❋ जो तोहि वस्तु जहाँ दिखलाय ।

आजु मांगिले राजद्वारमें ❋ कहि देउँ एवमस्तु हर्षाय ॥
मैं क्या देउ आप उठि लेले ❋ जो प्रिय लागे राजधनधाम ।
सकलवस्तुसम्मुखयहदर्शति ❋ फिरि क्या लाभ बताये नाम॥
सारे सोच हमारे मिटि गये ❋ जबसे तुम पकड़ी तलवार ।
समरथ लड़िका जिनकेहोइगे ❋ पुरिखन कहां रही दरकार ॥
हाथ जोरि मलिखेशिरनायो ❋ बोला दीन वचन बिलखाय ।
लज्जित करत नाथ मलिखेको ❋ अवगुणकहतसुयश दिखलाय॥
जो यहराजसुयशमम भाषत ❋ सो इस योग्य कहां मलिखान।
मैं तो अधम क्रूर कायरखल ❋ निरखत समर तजत धनुबान॥
मैं रणमाहिं विजयनहिं पाई ❋ भाषौं सत्य बात महराज ।
केवल नाथ प्रताप आपके ❋ मोसे बने समरमें काज ॥
मैं यह नाथ सकल विधिजानौं ❋ जो तुम सुयश कहत हर्षाय ।
पिता सदा सुतको मनराखत ❋ मोपै दया करत हित लाय ॥
कोई आपदा हमपर नाहीं ❋ चाचा चहिये दया तुम्हार ।
हाथ धरे राखौ पीठीपर ❋ जासो होवै भला हमार ॥
यह क्या कहत आजुमलिखेसे ❋ मोसे मांगु राज धन धाम ।
अतिआश्चर्य सुनतमन व्यापे ❋ किसके करे कहा हम काम ॥
आप कौन अरु कोहैं मलिखे ❋ किसको राजपाट धन धाम ।
किसकी वस्तु किसेलै सौंपत ❋ क्या कहि पुत्र लजावौ नाम ॥
किसको देत राजधनसम्पति ❋ क्या मनमाहिं विचारो तात ।
आजुपवन उलटी क्यों लहरत ❋ अनुचितकहतदयानिधिबात॥
बिलग न मानौ राजसभामें ❋ तो मैं अर्ज करौं महराज ।
वृथा उमरि हमने सब खोई ❋ निष्फल भये सकलजगकाज॥
तुम तौ कहत हते भवननमें ❋ हमको सकल पुत्र यकतार ।
आजु प्रगट हमको यह दर्शन ❋ हम हैं और वृक्षकी डार ॥
क्या तुम पुत्र गिनो ब्रह्महिको ❋ हमको और गिनौ नरनाथ ।
जो तुम उऋण होत दुनियामें ❋ धरि कछु वस्तु हमारे हाथ ॥

नाथहि पिता भ्रात ब्रह्माको ❋ मल्हनै गिनो दासने मात ।
तुमहूँ हमें पुत्र सब मानो ❋ सो क्या अहै स्वप्नकी बात ॥
तुम तो उऋण भये मलिखेसे ❋ जगमें युवावयस पहुँचाय ।
हमसे कहो कौन व्रत साधैं ❋ तुमसे उऋण होयँ नरराय ॥
तन मन प्राण आदि मलिखेके ❋ आवैं महाराजके काम ।
नाथ हेतु यह शिरलगिजावै ❋ तौ मैं जीत जाउँ सुरधाम ॥
जैसे आजु नाथहित वर्तत ❋ तैसेइ सदा रहौ प्रतिपाल ।
मैं प्रतिकार सकल भरिपाये ❋ आगे नाथ करौ जनिख्याल ॥
शीश उठायो परिमालैने ❋ बोले हाथ पकरि समुझाय ।
पितहि जानिहमसेकछु लैलेउ ❋ मेरो पुत्र चित्त शिथिलाय ॥
हाथ जोरि चरणन शिर नायो ❋ उठिकै अर्ज करी मलखान ।
युग युग जिऔ इंद्रपद भोगौ ❋ जबलगस्वर्गदिपैं शशिभान ॥
अर्ज करत शंकामन ब्यापत ❋ चुपके रहत चित्त घबराय ।
ताते हाथ जोरि शिर नावत ❋ मेरी खता माफ ह्वै जाय ॥
इन भुजसे दल गढ़ संहारे ❋ जीते महाबलिनके राज ।
सो फैलाय वस्तु क्या मांगौ ❋ कोविधितजौं जगतको लाज ॥
माल मुल्क राजनके लूटे ❋ हरि धनद्रव्य राज इकसाथ ।
अर्पण करदिये महाराजके ❋ तिनपर नाथ धरौं क्या हाथ ॥
आपुहि नाथ न्यावनिरवारौ ❋ जो मैं सौंपिचुक्योंधनधाम ।
इस जिह्वासे फिरिक्यामांगौं ❋ क्या मैं कुटिल होउँ सरनाम ॥
जबलग आपु राजपर बैठे ❋ मह्वुबे भोग करौ सुखसाज ।
जबजगत्यागिस्वर्गको गवनौ ❋ ब्रह्मा भ्रात करै यह्व राज ॥
मैं नहिं भाग लेत भ्राताको ❋ जिसको गिनो प्राण आधार ।
कछु मति नाथकहौ मलिखेसे ❋ क्यों शिर लेत अयशको भार ॥
हां जो दया करत मलिखे पर ❋ बारम्बार कहत महराज ।
तौ इक अर्ज करत स्वामीसे ❋ रखियो हाथ गहेकी लाज ॥
सुनतहि महाराज उठि बोले ❋ करि अतिप्रेमप्रीतिहित प्यार ।

जौन मनोरथ जियमें राखे ❋ कहिदे आजु राजदरबार ॥
वचनसुनत मलिखेउठि बोल्यो ❋ दोउ करजोरि चरणशिरनाय ।
इच्छा प्रगट करत स्वामीसे ❋ सुनते दया लहरि ह्वै जाय ॥
सिरसागढ़ जो मेरे बापको ❋ जो पिरथीने लियो दबाय ।
हुक्म तुम्हारो जौ मैं पाऊँ ❋ तौ पारथसे लेउँ छिनाय ॥
मारि भगाऊँ मैं पारथको ❋ सिरसा फेरि करौं आबाद ।
किलाबाँधि धुरिपै अड़िबैठों ❋ तुम्हरी करौं राजमरजाद ॥
चौकी होवै गढ़ महुबेकी ❋ धुर पर पड़े रहैं बलवान ।
जब दल सिंधु झुकै दिल्लीसे ❋ पहले लहरिलेय मलिखान ॥
इतनी बात सुनी मलिखेकी ❋ राजा सोचि सोचि रहिजाय ।
जो मैं हुक्म देउँ सिरसा को ❋ भारी भूप पिथौरा राय ॥
होय लड़ाई जो सिरसा पर ❋ तौ सब वंश तहाँ खपिजाय ।
कही हमारी जौ मानै यह ❋ ताते याहि देउँ समुझाय ॥
बहुतै समुझायो राजाने ❋ औ छातीसे लियो लगाय ।
हाथ फेरि पीठीपर बोले ❋ बेटा तुम्हैं कौन परवाह ॥
कहो तो महुबा खाली कर दूँ ❋ कहु जगनेरी करूँ तुम्हार ।
कहो बसादूँ किला कलिंजर ❋ कहु पटनाको देहुं सम्हार ॥
तुम मति अटको पृथीराजते ❋ सदा सदाको बैर बंधाय ।
जीवत रारि नांहि मिटनेकी ❋ बेटा सभी फौज खप जाय ॥
हाथ जोरिकै मलिखे बोला ❋ तुम सुनिलेउ चन्द्र सरदार ।
हंसी खुशीसे आज्ञा दै दो ❋ मनमें करौ न शोच बिचार ॥
सिरसा जीति लेउं पारथसे ❋ जल्दी हुक्म देउ फरमाय ।
किला बनाऊं मैं धूरेपर ❋ बैठों जाय भूमि अपनाय ॥
जिससे उत्तर धुर कनउजको ❋ दक्षिण मदन सिंहको ठाउं ।
पश्चिम धूरो है दिल्लीको ❋ आज्ञा देउ तुरत च ढ़जाउं ॥
चौकी होवै गढ़ महुबेकी ❋ धुर पर पड़े रहैं बलवान ।
जब दल सिंधुँ झुके दिल्लीसे ❋ पहले लहरि लेय मलिखान ॥

इतनी बात कही मलखेने ❀ सुनतै सुन्न भये परिमाल ।
आल्हा मनमें सोचन लागे ❀ ऊदनि तकनलगोजिमिब्याल ॥
आल्हा ऊदनि चलि आये थे ❀ बातैं सुनन बीर मलखान ।
नृपके एक ओर बैठे थे ❀ बैठे ब्रह्मानन्द मलखान ॥
शूर बीर भट कोइ न बोले ❀ को भरिसकै कालकी साख ।
विषधर छुअत भ्रातको जानो ❀ बोलो उदयसिंह करि माख ॥
भूमि काट लो चौहाननकी ❀ धुरपर किला लेउ बनवाय ।
इर्द गिर्दके गढ़ संहारौ ❀ सिरसा गांव लेउ अपनाय ॥
तोपैं साजि धरौ रिउनीपै ❀ झंडा गाड़ि देउ हर्षाय ।
जो कोइ निरखै गढ दिल्लीसे ❀ लहरत राजध्वजा दिखलाय ॥
अपनो तिलक आप करि बैठौ ❀ धारौ छत्र लाल जड़वाय ।
निर्भय राज करौ सुख सोवौ ❀ क्या करि सकैं पिथौराराय ॥
पर इक सीख सुनो ऊदनिकी ❀ राखौ दूत सदा दुइ चारि ।
जो मगविचारि पवनगतिकाटैं ❀ दामिनि रूप चलैं हुंकारि ॥
हाजिर बने रहैं मजलिशमें ❀ सन्मुख खड़े रहैं तैयार ।
निरखत दिशा रहैं दिल्लीकी ❀ परखत रहैं गगन गुब्बार ॥
जब दल उमड़ै गढ़ दिल्लीसे ❀ आवत जचैं धनी चौहान ।
अन्धकार दुनियाँमें लागै ❀ चहुँदिशि शमुझ परै सुन्सान ॥
तब वे दूत पवन गतिगवनैं ❀ ना मगमध्य करै जलपान ।
खबरि सुनावैं गढ़ महुबेमें ❀ गढ़में घिरे जात मलिखान ॥
तौ भट शूर वीर महुबेके ❀ उड़िकै जाय परै तत्काल ।
आल्हा ऊदनि ब्रह्मा ढेबा ❀ शिर पर बनैं भ्रातके ढाल ॥
यहु भी बात प्रगटसबदर्शहि ❀ को को गहै विपति में हाथ ।
को को बीर प्राणके अगरे ❀ जो शिर देहिं तुम्हारे साथ ॥
एक बात जिह्वा पर आवै ❀ पै कछु खौफ खाय रुकि जाय ।
जो तुमखता माफकरिडारौ ❀ तौ मैं अर्ज करौं शिर नाय ॥
करिमदमान चुप्पमत रहियो ❀ फिर गढ़सहित धूरि हुइ जाउ ।

समाचार जल्दी लिखि भेजो ❋ चूके समय स्वर्ग पछिताउ ॥
जैसेइ वचन सुने ऊदनिके ❋ लागे हृदयमध्य जिमि बान ।
क्रोध अग्नि तनमें उठि भभकी ❋ बोल्यो नजरि जोरि मलिखान॥
कायर खबरि करइ संकटमें ❋ सायर सिंह तकै नहिं आस ।
बलके हीन समर लखि काँपै ❋ रणसे शूर करहिं क्या त्रास ॥
क्या भयचिंता नर मलिखेको ❋ जो दल साजि चढ़ैं चौहान ।
शब्दवेधि क्या कालु न आवै ❋ क्या परवाहि वीर मलिखान ॥
सिंहहिं घिरत सुने वन भीतर ❋ कबहुँ न घिरत सुने खर स्यार ।
शूरहि कटत सुने रणगढ़में ❋ कटत न सुने चोर बट मार ॥
बड़ बड़ सुभट वीर नर उपजे ❋ सबको कियो कालके ग्रास ।
मैं क्या वस्तु सकल तनुधारी ❋ इकदिन लेहिं स्वर्गमें वास ॥
तुमहीं कहो अमर को रहिहै ❋ जो जन प्रगट भये तनुधारि ।
मृत्युगरल किसको नहिं व्यापो ❋ जगमें रहत कौन नरनारि ॥
दुखसुख रोग विपति रणपीड़ा ❋ यह सब बने स्वर्गके बाट ।
देखु बीर जगसे सुरपुरको ❋ निशिदिन रमत पाटके पाट ॥
बिलग न मानौ राज सभामें ❋ तौ मैं कहूँ उदयचँदराय ।
संकट परे कौन नहिं लरजै ❋ को नहिं शरण तकै भय खाय ॥
नाम लेत लज्जा मन व्यापै ❋ रोवत जीभ क्रोध उमगाय ।
तुम्हीं बीर चित्तमें सोचौ ❋ इकलँग सत्यवृथा जँचिजाय ॥
कौन हितू है गढ़ महुबेमें ❋ मैं नहिं धरी शीशपै ढाल ।
सबकी बिपती लई मलिखेने ❋ अब कोऊ बीर बजाओ गाल ॥
बंदि छोड़ाई भट वीरनकी ❋ कूदो विपति अग्निमें साथ ।
जो कोइ डूबो दुखसागरमें ❋ मैं उठि गहो भँवरके साथ ॥
जे नर शरण तकत मलिखेकी ❋ उनकी आस तकै मलिखान ।
व्यर्थहि क्षीर दियो माताने ❋ क्यों नहिं गरल करायो पान ॥
सुत मंत्री परिवार सनेही ❋ संकट परे करे मोहिं यादि ।
विपति परे तिनकी मग हेरौं ❋ तौ मैं जन्म गवाँयो वादि ॥

लज्जित हुइ ऊदनि शिर डारो ❋ आल्हा शिथिल भये सकुचाय ।
क्रोधवन्त मलिखेको निरखो ❋ बोले महाराज समुझाय ॥
जो तू कहत प्रगट सब दरशै ❋ भाषत सत्य परस्पर बात ।
पर मैं पितारूप तोहि बरजौं ❋ सुन यह बात कान धरि तात ॥
कठिन दांव है शब्दबेधिको ❋ सागर अगम कटक चौहान ।
भीषण युद्ध करै दिल्लीके ❋ तू मति छेंड़ करै मलिखान ॥
किला बांधि धुरपै मति बैठे ❋ कहनो मातु पुत्र हठ त्यागु ।
अँगुली आप करत बांबीमें ❋ रे डँसि लेहि कालिया नाग ॥
सागर अगम कटक दिल्लीको ❋ इकलँग मगर रूप चौहान ।
क्यों तू आप भँवरमें कूदत ❋ पार न पाय सकै मलिखान ॥
बार बार तोकौं मैं बरजौं ❋ मति करु लाल बलीसे माख ।
तू मैं क्या सिगरे सुत भ्राता ❋ होवै समर भूमिमें राख ॥
वचन सुनत मलिखे तब बोल्यो ❋ जँचि गइ नाथ चित्तकी बात ।
कारण समुझि लियो मलिखेने ❋ जो तुम हुक्म देत सकुचात ॥
स्वामी आप चित्त यह सोचत ❋ जो यह छेंड़ करै मलिखान ।
आपु मरै तो क्या भय चिंता ❋ हमरो नाश करै सुत प्रान ॥
जब दल उमड़ैगो दिल्लीसे ❋ पकड़े शब्दवेधि धनुवान ।
विपति भार मेरे शिर आवै ❋ छीजे कटक सुभट मदमान ॥
यह संशय जियमें जनिलावौ ❋ मैं नहिं देहुँ त्रास कछु नाथ ।
संकट परै तुम्हैं नहिं हेरौं ❋ यह प्राण नाथ प्राणके साथ ॥
पृथीराजक्या शिवचढ़ि आवैं ❋ अर्जुन धनुष बाण लै साथ ।
अपने गढ़की समर भूमिमें ❋ मैं नहिं लड़ौं बन्धु लै साथ ॥
शीश डारि राजा मन सोचे ❋ उलटे सीख देख मलिखान ।
बेढब बातबढ़ति मजलिशमें ❋ क्या कर्तव्य विश्वभगवान ॥
हाथ पकरि हियमें लपटायो ❋ बोले वचन प्रेममें सानि ।
दुबिधा भरमसकलसुत तजिदे ❋ मेरी सीख सुधा सम जान ॥
जो मैं प्राण गिनौं ब्रह्माको ❋ तौ तोहिं शीश गिनौं मलिखान ।

तू सुत अधिक पुत्र ब्रह्मासे ❋ घटको निरखि रहे भगवान ॥
जो हठ करि ब्रह्मा गज माँगे ❋ खर नहिं देहुँ चढ़नके काज ।
तू सुत नेक कहै जिह्वासे ❋ तो दै देउँ सम्पदा राज ॥
सो तू राजपाट नहिं चाहत ❋ आज्ञा माँगि रहो प्रियलाल ।
जो अनहित तोसों मैं करतो ❋ देतो हुक्म सुनत तत्काल ॥
राज देत तुमको नहिं हटकौं ❋ फिर क्यों हुक्म देत सकुचाउँ ।
राजपाट धन दल गढ़ कैसे ❋ तोपै प्राणसहित बलिजाउँ ॥
फिरिकै राजा बोलन लागे ❋ सुनले पुत्र बीर मलिखान ।
तू नहिं बिलग पुत्र मनतनसे ❋ तेरे संग हमारे प्राण ॥
एक बिसे तोको दुख व्यापै ❋ हमको बीस बिसे प्रियलाल ।
बाल खसतु तेरो सुनि पावैं ❋ मेरे शीश बिराजै काल ॥
हम इस योग कहां पृथ्वीपर ❋ जो तू शरण गहै मलिखान ।
जो तेरो आपुहि मुख निरखत ❋ आगम सोचि जपत भगवान ॥
तू मत टेरिये दुख संकटमें ❋ पर मैं कहे देत प्रियलाल ।
समर होत कानन सुनि पाऊँ ❋ शिरपर ढाल बनौं तत्काल ॥
चरणपकड़ि तब मलिखे बोले ❋ है कहँ महाराजको ध्यान ।
जब तुम ढाल शीशपर बैठे ❋ फिर क्याफिक्र करे मलखान ॥
तुम सब योगपिता परमानँद ❋ जगके क्षत्र सुयशके भान ।
जबलग तालमनुज तननाशै ❋ राखै अमर महि भगवान ॥
बाल अबुद्धि भाषिनहिं जानौं ❋ मेरै कौन वचनकी साख ।
हम कछु कहीआप कछुसमुझे ❋ सीधी बात जँची जियमाख ॥
तुम तौ दया करत मलिखेपै ❋ बहुविधि सीख देत लखिहानि ।
मैं मतिमन्द एक नहिं समझौं ❋ औरौ अनलहेतु दुखमानि ॥
यह मति नाथ चित्तमें जनियो ❋ इसको बहुत भयो मदमान ।
बात न सुनै वचन नहिं मानै ❋ आज्ञा भंग करै मलिखान ॥
कोविधिमें किसकीक्या मानौ ❋ मोको नाथ कहां अखत्यार ।
वही बात हिरदैमें व्यापति ❋ जो कछु कर्म रची करतार ॥

तुम तो वही पिता परमालै ❋ मैं सोइ पुत्र वही हितभाय ।
पर वह पान जगतीसे उड़िगइ ❋ स्वामी शीख पेश नहिंजाय ॥
जो मैं नाथ वचन नहिमानत ❋ मरजी गिनौ विश्व भगवान ।
विधिगतिसमुझिहुकमदैडालो ❋ अपने काज लगै मलिखान ॥
शीश फेरि राजा फिर बोले ❋ तू खुद पुत्र करै विष पान ।
कालकर्म औ जगदीश्वरको ❋ मिथ्या दोष देत मलिखान ॥
तू यह भाषि रहो मजलिसमें ❋ जो दलसाजि चढ़ै चहुँआन ।
अकिले लड़ौ कुमक नहिंचाहौ ❋ चाहे दूर होयँ तन प्रान ॥
बिरवासे तरुवर करवाये ❋ निसदिन क्षीर कराये पान ।
वस्त्र शस्त्र तनमें सजवाये ❋ सो अब करन लगे मदमान ॥
हाथ बांधि उठिकै पद पकड़े ❋ बोले दीन वचन मलिखान ।
कौन बात स्वामी मनसोचत ❋ किससे कौन करै मदमान ॥
तुम प्रतिपालक पितुमलिखेके ❋ मलिखे पुत्र तुम्हारो नाथ ।
क्या पदवी जगमें नशिजावै ❋ जो तुम शरण पसारौं हाथ ॥
पर मैं सत्य चरण गहि भाषौं ❋ कलि मरजाद जगत व्योहार ।
जो कोइ आप भँवरमें कूदै ❋ ताको कौन करै निस्तार ॥
मैं खुद अग्निकुण्डमें कूदौं ❋ आपुहि धरों शीशपर गाज ।
कालहिदेखिशरण भजिमांगौं ❋ तौ कत रमै जगतकी लाज ॥
करिविष पान सुधाको दौड़ौं ❋ तौ मोहिं जगत कहै मतिवाम ।
समर नाधि शरणागत आवौं ❋ यहिसे भलो गमन सुरधाम ॥
मांझधारमें मैं कूदत हौं ❋ कोउ नहिं नाव लगैयो आनि ।
बनमें छेड़त हौं सिंहनको ❋ कोउ मतिढाल अड़ैयो आनि ॥
प्रज्वलित अग्नि करत मैं आपुइ ❋ क्यों कोइ और बुझावै आनि ।
जानि मानिमैं विष पीवत हौं ❋ क्यो कोइ सुधा पियावै आनि ॥
पौरुष जांचि लियोभुजबलको ❋ आशा देखि लई भगवान ।
संकट शिलाशीशपै धरिलइ ❋ तौ यह अर्जकरी मलिखान ॥
वयसि गँवाई सिवकाईमें ❋ कबहुँ न चरण गहे हठठानि ।

आज्ञु वचन स्वामीसे मांगौं ❀ आज्ञा देहु टहलुआ जानि ।
सुनिपरिमाललखी पुनि बोले ❀ आज्ञा देत वीर सकुचाउँ ॥
अबहूँ मातु पुत्र हठ तजि दे ❀ रे मत लेइ सिरसवां गाउँ ।
श्वाससाधि मलिखे बोले पुनि ❀ तुमतो कहते हते महराज ॥
जो तू कहे पुत्र सो पावै ❀ ताकी करौ दयानिधि लाज ।
कही प्रथम जो तुम मजलिशमें ❀ जो तू लेहि राज धनमाल ॥
जौन वस्तु मुखसे सुत मांगु ❀ हितसे सौंपि देउँ तत्काल ।
सत्य वचन सुर नरमुनि भाषैं ❀ कहनी सहज जगतमें बात ॥
करनी कठिन होती दुनियामें ❀ रहनी गिनो कालकी घात ।
किसको कौन देहि धनसंपति ❀ किसके कौन सँभारै काज ॥
मुखसे कहन आपको दुर्लभ ❀ कब दै सकत सम्पदा राज ।
गहरी स्वाँस लई राजाने ❀ विधिके हाथ लिखे सब काज॥
लाभु न जानि परो बर्जनमें ❀ बोले राम सुमिरि महराज ।
जाउ पुत्र हम आज्ञा देदी ❀ लड़िके लेउ सिरसवां जाय ॥
गणपतिसुमिरिसिंहसम गवनौ ❀ धुरपर किला बनावौ जाय ।
भय मतिमनियो शब्द बेधिसे ❀ रणनधिकोट बनावो डाटि ॥
रे सुत इन्द्रधाम रचिडरिये ❀ चहुंलगिविपिनबिकटकोकाटि।
कमर खींचि धनुषबाण उठावो ❀ बेटा करौ सुयशको काम ॥
ऐसो नाध नधौ पृथ्वीपर ❀ होवै वत्सराजको नाम ।
आज्ञा श्रवण करी मलिखेने ❀ उमंगो सिंधुरूप हरषाय ॥
मीन दीन जिमि शुभजल पावै ❀ तिमि सुखलहे मनोरथ पाय ।
दौड़ि चरण राजाके पकड़े ❀ बहुविधि विनय करो शिरनाय ॥
धर्मरूप तुम पितु परमानंद ❀ मोहिं सुख भो प्रभु आज्ञा पाय।
संशयनिधि मनमें लहरतु हो ❀ डूबे जात हते मम प्रान ॥
आज्ञा नाव नाथकी ह्वै गइ ❀ जगमें उबरि गयो मलिखान ।
बांह पकरि तब नरमलिखेकी ❀ बोले भूप शीश धरि हाथ ॥
सदा पुत्र जगमें सुख भोगो ❀ निशिदिन रहै वीरता साथ ।

ले धनु बाण आप पकड़ायो ❋ बोले महाराज करि ध्यान ॥
सन्मुख चन्द्र लग्न दिगद्वारी ❋ करिजा आजुगमन मलिखान ।
जो धन मालशस्त्र दल चाहै ❋ निर्भय भाषु राजदरबार ॥
जौन वस्तु तोको सुत चहिये ❋ तेरे संग करौं तैयार ।
मुनिपद पकड़ि कही मलिखेने ❋ जबसे दया करी महराज ।
नाथ मनोरथ सब भरिपाये ❋ बनिगे सकल दासके काज ॥
दयासिंधु मोहिं कछु नहिं चहिये ❋ यह धनुबान हतो दरकार ।
सो तुम सौंपिचुके मलिखेको ❋ फिरि क्या अर्ज करौं दरबार ॥
इतनी कहि राजहिं शिरनायो ❋ दुर्गे सुमिरि गह्यो धनु बान ।
भेंट भांटिके सब भ्रातनको ❋ तहंते गमन कियो मलिखान ॥
जायके पहुचा रंगमहलमें ❋ मल्हना चरण शीश धरिमाथ ।
कीन्ह प्रणामभंवर मलिखेने ❋ ठाढ़ो भयो जोरि दोउ हाथ ॥
कही हकीकति सब मलिखेने ❋ आज्ञा दई मल्हनदे रानि ।
तहंते चलिभा बीर बांकुड़ा ❋ माता चरण छुए मनमानि ॥
कही हकीकति सब मातासे ❋ तिलका सोचि समुझि सकुचाय ।
आज्ञा दीन्ही सुत अपनेको ❋ भुजबल पूजि दिये हर्षाय ॥
चरण पूजिकै जगदम्बेके ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
कूदि बछेड़ीपर चढ़ि बैठा ❋ इकला चला शूर सरदार ॥
बाल वयसके मित्र सनेही ❋ जुरि मिलिसकलएकसौसात ।
अस्त्र शस्त्र लै धुरपै भेंटे ❋ बोले हाथ पकड़ि सुनु तात ॥
जन्मे संग साथ नित खेले ❋ इकढिग बैठि गंवाईं राति ।
हम घर रहैं आपुवन गवनै ❋ अनुचित बातमित्र दिखलाति ॥
प्रीति पंथमें हम लुटि बैठे ❋ जबसे लियो हाथमें हाथ ।
भामिनि भवनसकलधनत्यागैं ❋ पर नहिं तजैं आपको साथ ॥
संग चलहिं संगहि संग बैठैं ❋ संगहि करैं समर संग्राम ।
संग शीश रणमें कटवावैं ❋ संगहि मित्र चलैं सुरधाम ॥
भुजापकड़िमलिखेहंसिबोल्यो ❋ मैंने उऋण करे सब यार ।

यारो लौटि जाउ महुबेको ❋ क्यो वनमांझ फिरौगे ख्वार ॥
कठिन पन्थ है नरमलिखेको ❋ जाकी बाट तेगकी धार ।
काल सिंह पदपदपर गर्जत ❋ दुर्लभ समुझि परे निस्तार ॥
क्योंतुमसाथविपिनकोगवनो ❋ तजितजि गोत कुटुम्ब परिवार ।
मैं तो आप अग्निमें कूदत ❋ तुम मति होउ संगमें छार ॥
जो जगदीश प्राण नहिं नाशैं ❋ जगमें मिलन होय बहुबार ।
जो कहुँ काल आयलै गवनो ❋ तो हम स्वर्गमिलैं लाचार ॥
हाथ जोरि सबने शिरनायो ❋ बोले सजलनयन बलवान ।
अनुचित बात कहत जिह्वासे ❋ हमको लाज लगै मलिखान ॥
सुखमें संग सदा मिलि बैठे ❋ दुखमें दूरि बसहिं तोहिं त्यागि ।
परगट प्यार गुप्तमें अनहित ❋ ऐसी लागै प्रीतिमें आगि ॥
किसकीप्रीतिरीतिहितकिसको ❋ कैसी लोकलाज है नाथ ।
धर्मपन्थमें हम विचरत हैं ❋ को खल जात तुम्हारे साथ ॥
हम चोला तुम प्राण हमारे ❋ फिर तुम कहो बीरमलिखान ।
कौन यत्न है संसारीमें ❋ जो तन रहै मित्रबिन प्रान ॥
बहुविधि सीख दई समझाये ❋ बजै बहुत भांति मलिखान ।
कोउ नहिं मित्र भवनकोगवनो ❋ आगे बढ़ खींचि धनुबान ॥
जुरिमिलिसकलवीरभटगवने ❋ जैसे सिंह जाय तर्राय ।
मदनरूप घोड़न पर लहरैं ❋ मानौ सिंधु हिलोरा खाय ॥
इहिविधिगवनकियो मलिखेने ❋ अब महुबेके सुनौ हवाल ।
सबियां बैठे थे बंगलामें ❋ बोले बिहँसि रजापरिमाल ॥
सिरसा गढ़के सर करनेको ❋ इकला गया भँवरमलिखान ।
जो कहुँ मलिखे मारो जैहै ❋ हमको हँसिहैं सकल जहान ॥
जिनका भैया ऐसा टरिगा ❋ तिन बैठनको धिक्कार ।
फौज सजाय लेउ जलदीसे ❋ औ सिरसापर होउ तयार ॥
सुनिकै बोला बनरसवाला ❋ तुम सुनि लेउ चंदेले राय ।
जबतक जीवै ताला सैयद ❋ तुमको कौन पड़ी परवाह ॥

तोप दरोगाको बुलवाया ❋ सुबरन कड़ा दियो डरवाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं जो महुबेमें ❋ तिनको तुरत लेउ सजवाय ॥
हाथी वारेको बुलवाया ❋ सिगरे हाथी लेउ सजाय ।
घोड़ा वारेको बुलवाया ❋ घोड़ा सभी लेउ सजवाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवाया ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ।
बजो नगाड़ा गढ़ महुबेमें ❋ लश्कर गये उदयसिंहराय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिन पर दई चढ़ाय ।
जितनी तोपैं तुपखानेमें ❋ सो सजवाई उदयसिंहराय ॥
हाथी साजे कजरी बनके ❋ जो फौजनके रहत अगार ।
फौज विडारन हाथी साजे ❋ औ गज भूरा करे तयार ॥
साकलद्वीपी हाथी साजे ❋ सुबरन हौदा दिये धराय ।
जितने हाथी थे महुबेमें ❋ ऊदनि सबै लिये सजवाय ॥
कच्छी मच्छी घोड़ा साजे ❋ ताजी तीनि पांय ठहराय ।
हरियल मुश्की पँचकल्यानी ❋ घोड़ा सबै लिये सजवाय ॥
चौधर चाल कबूतर साजे ❋ औ दरियाई लिये सजवाय ।
लकवा गर्रा और कुमैता ❋ समुदा घोड़ा लिये सजवाय ॥
श्यामा कज्ञा तुर्की साजे ❋ अबलख घोड़ा लिये सजवाय ।
सुन्दर टांगन और सपेदा ❋ औ सबरंगा लिये सजाय ॥
बलख बुखारेसे आये थे ❋ सो सजवाये उदयसिंहराय ।
जीन सुनहरी तिन धरवाये ❋ रेशम तंग दिये कसवाय ॥
भई तयारी अब फौजनकी ❋ यारो सुन लो कान लगाय ।
खुल गये ताले आमखासके ❋ क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
पहले पहिरीं लाल कुरतियां ❋ ताके ऊपर कुलह कबार ।
ताके ऊपर सोना संकर ❋ जामें नाहिं गड़ै तलवार ॥
ऐसा बख्तर पहिरि सिपाही ❋ जामें सांगि बिलौचा खाय ।
टोप झिलमिला धरि माथेपर ❋ ऊपर कुण्डी लइ लौटाय ॥
छप्पन छुरियां हनि हनि बांधी ❋ औ गुजराती हने कटार ।

अगल बगलपरदुइ पिस्तौलैं ❋ दहिने दुइ झूमैं तलवार ॥
लई कमनियां मुलतानीकी ❋ औ बूँदीकी असल कटार ।
सजिकै गहना रजपूतीका ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
पहले डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
दुसरे डंकाके बाजत खन ❋ सिगरे फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
कोइ नालकिन कोइ पालकिन ❋ कोइ गज रथ भये सवार ॥
हाथी पचशावद सजवाया ❋ तापर आल्हा भये सवार ।
ताला सैयद बनरसवाला ❋ घोड़ी सिंहिनिपर असवार ॥
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा है ❋ घोड़िहिरौंजिनपर सुलिखान ।
घोड़ा बेंदुला त्यार कराया ❋ तापर उदयसिंह बलवान ॥
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनसे ❋ यारो सुनियो कान लगाय ।
पाँव पिछारू को ना धरियो ❋ नहिं सब जैहैं काम नसाय ॥
पाँव पिछारू जो तुम धरियो ❋ जो क्षत्रीपन जाय नशाय ।
इतनी सुनिकै क्षत्री बोले ❋ तुम सुनि लेउ उदय सिंहराय ॥
रोम रोममें सेला लागै ❋ लागै तिल तिलपर तलवार ।
अंगुल अंगुल गोली लागै ❋ नाहीं टारैं पैर पिछार ॥
निमक जो खाया चन्देलेको ❋ सो बोटिनमें गया समाय ।
बोटी कटि कटि गिरैं खेतमें ❋ ना हम धरैं पिछारू पायँ ॥
कूच नगाड़ाको बजवावौ ❋ सिगरी फौज चलै तत्काल ।
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनसे ❋ उमँगो दस्सराजको लाल ॥
कूच नगाड़ाको बजवाया ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
धौसा बाजि रहा लश्करमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
दबति अँधिरिया दलमें जावै ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
धूरि उड़ानो आसमानलौं ❋ सूरज रहे धुँधिमें छाय ॥
नौसे झण्डा दलमें सोहैं ❋ लश्कर रही लालरी छाय ।
राह पकरि लई गढ़ सिरसाको ❋ डंका होत गोलमें जाय ॥

हाथी चलते चाल लहरुआ ❋ घोड़े सुघर हिरनकी चाल ।
छमछमछमछम बजैं पैंजनी ❋ दमकै अष्टधातुकी नाल ॥
लहर लहर लहरै सब बल्लम ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
फौजैं चली जाय महुबेकी ❋ शोभा वरनि करी न जाय ॥
यहाँकि बातैं तौ यहँ छाँड़ौ ❋ अब मलिखेको सुनो हवाल ।
घोड़ी कबुतरीको चढ़वैया ❋ बाँका बच्छराजका लाल ॥
चलत चलत बाहनपुर पहुँचो ❋ जहँ धुर लगा सिरसवाँजान ।
सब भट उतरि परे घोड़नते ❋ सीमा पूजि करैं जलपान ॥
तीनि पहर धुरपर सब लौटे ❋ फिरिउठि सुभट भये असवार ।
पवन बेग घोड़ा हंकारे ❋ ह्वैगये बिल्ह नदीके पार ॥
तीनिकोस जब सिरसा रहिगा ❋ तहँपर उतरि परे मलिखान ।
डेरा डारि दियो तहँना पर ❋ संगै उतरि परे बलवान ॥
रात्रि बिताय प्रात उठि बैठे ❋ विधिवत जाय करी अस्नान ।
अस्त्र धोय मंत्रनकरि शोधा ❋ शुचि ह्वै करो इष्टको ध्यान ॥
माता चरण हृदयमें धारे ❋ सुमिरे बच्छराज महराज ।
हे मम पिता स्वर्गवासी तुम ❋ रखियो बिंदुअंशकी लाज ॥
सुमिरन करि मल्हनहिं शिरनायो ❋ सुमिरे प्रेमसहित परिमाल ।
फिरहंसिहेरि कही गणपतिसो ❋ रखियो लाज गौरिके लाल ॥
सब पुरवासी गढ़ महुबेके ❋ सेवैं भ्रात सहित परिवार ।
सब स्मरण करे मलिखेने ❋ उनके शीश नाय बहुबार ॥
लैके कागद कलपीवाला ❋ अपनी कलमदवात सम्हाल ।
पहले लिखिके सरनामाको ❋ फिरि पारथको लिख्यो हवाल ॥
इच्छा तुम्हारी जो लड़िनेकी ❋ अपना खेत बुहारो आय ।
नाहीं मनसा जो लड़िबेकी ❋ सिरसा खाली देउ कराय ॥
किला हमारो हमको दैदो ❋ नातर आय युद्ध मैदान ।
बल पौरुष अपनो दिखरावो ❋ तुमपर आय गये मलिखान ।
याबिधि अंकलिखेचिठियामें ❋ ऊपर दीन्ही मोहर लगाय ।

बन्द लिफाफामें तुरतै करि ❋ औ धामनको दई गहाय ॥
धामनचलिभागढ़सिरसाको ❋ औ गढ़ियामें पहुंचा जाय ।
बड़े बजारनमें आया जब ❋ नगरी देखि देखि रहिजाय ॥
हीरनकी तहं ढेरी लगिरहिं ❋ और मुहरनके बक्स भराय ।
धामन मनमें मगन हो गया ❋ फूले अंग नाहिं समियाय ॥
जा दिन टूटेगा गढ़सिरसा ❋ इन ढेरिनको लेउं उठाय ।
देखत देखत धामन पहुंचा ❋ औ बंगलामें उरछो जाय ॥
लगी कचहरी जहं पारथकी ❋ बैठे बड़े बड़े बलवान ।
बारह द्वारीके बंगला हैं ❋ तेरह द्वारीके दह्लान ॥
खम्भ अठासीकी बैठक है ❋ चौबिस खुम्भ बनी चौपाल ।
पांच हाथ ऊंचा सिंहासन ❋ तापर तपै पिथौरा लाल ॥
कीमख्वाबके फर्श बिछे हैं ❋ तिनपर अतरनके छिरकाव ।
सीसी चटक रही बंगलेमें ❋ औ खुशबोइन उड़े गुलाब ॥
देश देशके क्षत्री बैठे ❋ बनता वरण करी ना जाय ।
खिंचे सपिंडारे बंगलामें ❋ मुरली अधर मरोड़ा खाय ॥
जोड़ी बाजै अलगोजनकी ❋ औ मुरचंग बजे दो चार ।
नचैं कंचनी वा बंगलेमें ❋ लड़िका नचैं बगतु अनक्यार॥
तहं हरकारा दाखिल ह्वैगा ❋ लैके नारायणको नाम ।
पांच कदमते मुजरा कीना ❋ धारे जाकर करी सलाम ॥
चिठिया डारि दई गद्दीपर ❋ धामन रहिगा माथ नवाय ।
नजरि बदलि गइ तब पारथको ❋ तुरतै पाती लई उठाय ॥
पाती बांचत परलै ह्वैगइ ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
लौटि जवाब लिखो चिट्ठीका ❋ मलिखे सावधान हो जायं ॥
कठिनमवासी गढ़सिरसाकी ❋ सीधे किला मिलैगो नायं ।
जंगजीतिकै सिरसा लेलो ❋ जाको देय शारदा माय ॥
चिट्ठी दैदी चोपदारको ❋ सो लै चला शुतर असवार ।
तौलौं लश्कर गढ़ महुबेको ❋ पहुंचो आय बिल्हके पार ॥

उठी निगाह भंवर मलिखेकी ❀ औ लश्कर तन रहा निहार ।
झण्डा देखे गढ़ मुहुबेके ❀ मनमें खुशी भयो सरदार ॥
जहं था तम्बू नर मलिखेको ❀ लश्कर तहां पहूंचो जाय ।
तनिगे तंबू गढ़ धुरखेतनमें ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
बड़ बड़ तंबू गढ़ महुबेमें ❀ जिनकी छुटि रहि जर्दकनात ।
झण्डा गड़ि गये हैं खेतनमें ❀ जिनकी लालध्वजा फहरात ॥
हाथी बँधि गये हथिखानेमें ❀ घोड़ा लगे थानसे जाय ।
कमरैं खुलि गईं सब ज्वाननकी ❀ सबने डेरा दिये लगाय ॥
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी ❀ अजगर लागि रहा दरबार ।
आल्हा मलिखे ऊदनि ढेबा ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
तौलौं धामन दाखिल ह्वइगो ❀ औ दरबार पहूँचो आय ।
सात कदमसे करी बन्दगी ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिके पाती आल्हा बांची ❀ आँकुइआँकु नजरि करिजाय ।
बाचि सुनाई नर मलिखेको ❀ मलिखे अग्निज्वाल होइ जाय ॥
तोप दरोगाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ॥
सबै दरोगोंको बुलवायो ❀ जल्दी फौज करो तयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिन बन्दी ❀ दुसरे बांधि लीन हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
लगे मोरचा धुरखेतनमें ❀ कछु तारीफ करी नाजाय ॥
यहाँकि बातैं तौ यहँ छांड़ौ ❀ आगे हाल सुनो मन लाय ।
राम बनावैं सो बनिजावै ❀ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ॥
बोला पारथ रजपूतनसे ❀ मैं क्षत्रिनकी लेउँ बलाय ।
जितनी तोपैं हैं गढ़िया मे ❀ सब चरखिन पर देउ चढ़ाय ॥
जितने हाथी हथखानेमें ❀ मुंडा हौदा देउ धराय ।

जितने घोड़ा घुड़शालनमें ❋ काठी एक संग पड़जायँ ॥
पैदलपलटन जितनी कहिये ❋ सो सब सजिकै होय तयार ।
अब चढ़ि आये महुबेवारे ❋ दिन औ राति चलै तलवार ॥
निमक जो खायो चौहाननका ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ।
पांव पिछारू जो कोइ धरिहैं ❋ ताको तुरत दिहौं उड़वाय ॥
सुनतै सबके होश बन्द भये ❋ क्षत्री काननमें बतलायँ ।
कहांके जन्मे कहँ पैदा भे ❋ कहँ खम्बीर झुलम्मे आय ॥
कहांकि भीर कहां पर आई ❋ बँगला सूनसान ह्वै जाय ।
जो जो नाम सुनै मलिखेका ❋ तिनकी बँधी फेंट खुलिजाय ॥
जो कोई नाम सुनै ऊदनिका ❋ करसे छूटि परै तलवार ।
डौंडी पिटगइ गली गलीमें ❋ कूँचे और बजार बजार ॥
बहुतक कायर सटकन लागे ❋ लुटिया लै झाड़ेको जायँ ।
लानति ऐसी नोकरियापर ❋ हमतौ बेंचि लकरिया खायँ ॥
यह गति होरहि सब क्षत्रिनकी ❋ कायर सहमि सहमि रहिजाय ।
दहसत गालिब है पारथकी ❋ डरते कान हिलावत नायँ ॥
डंका बाजो जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नपर असवार ॥
जितनी तोपें थीं गढ़ियामें ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
सो बढ़वाय दई आगेको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
जितनी फौज हती पारथकी ❋ दो घंटेमें भई तयार ।
हाथी साजि गयो पारथको ❋ हौदा बीच भयो असवार ॥
जा दिशि मारैं थीं तीरनकी ❋ ता दिशि ढाल लई अड़ाय ।
जा दिशि मारैं बन्दूकनकी ❋ लोहा तवा लिये जड़वाय ॥
कूचको डंका बाजन लागो ❋ लश्कर कूच दीन्ह करवाय ।

चार घरी केरे अरसामें ❀ अपना खेत बुआरा आय ॥
लगे मोरचा अब तोपनके ❀ कछु तारीफ करी ना जाय ।
हुक्म देदिया तब पारथने ❀ तोपन आगी देउ लगाय ॥
इतनी सुनिकै उठे खलासी ❀ औ तोपनपर पहुँचे जाय ।
बत्ती देदइ उन तोपनमें ❀ धुँअना रहो सरग मँडराय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ रण होन लाग घमसान ।
अररररररर गोला छूटे ❀ कह कह करें अगनिया वान ॥
सननन सननन गोला छूटे ❀ सररर परी तीरकी मारु ।
दोनों फौजनके संगममें ❀ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
गोला लागै जेहि हाथीके ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहि जाय ।
गोला लागै जौन ऊँटके ❀ दलमें गिरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़नके ❀ चारो सुम्म गर्द है जायँ ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❀ तिनकी त्वचा स्वर्ग मँड़राय ॥
बंबको गोला जिनके लागै ❀ तिनके हाड़ मांस छुटि जायँ ।
गोला जँजीरहा जिनके लागै ❀ सो लत्तासे जायँ उड़ाय ॥
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानो गिरा कबूतर खाय ।
बानको डंडा जिनके लागै ❀ तिनके दुइखंडा हो जायँ ॥
तोपैं धैधैं लाली हुइगइं ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ।
चढ़ी कमनियां पानी हुइगइं ❀ चुटकिनके गै मांस उड़ाय ॥
तोप रहकला पीछे छांडे ❀ लंबे बन्द करैं हथियार ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ रहिगे पांच पेग असवार ॥
सांगैं चलन लगीं दोनों दल ❀ ऊपर बर्छिनकी भइ मार ।
छुटैं पिचक्का जे लोहुनके ❀ जहँ बहि चली रक्तकी धार ॥
बूड़िज़ुलफियां गइं क्षत्रिनकी ❀ चर्बी अंग गईं लपटाय ।
मानहुँ टेसू वनमें फूले ❀ ऐसी रही लालरी छाय ॥
हौदा भरि गये है लोहूसे ❀ औ चुचुआत फिरैं असवार ।
चारि घरी भरि बजौ सांगड़ा ❀ भारी भई सांगकी मार ॥

भाला टूटिके दोना है गये ❋ सबियां हारिमानिगये ज्वान ।
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो डेढ़ कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही रजपूतन लइ ❋ नंगी चलन लगी तलवार ।
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
खटखट खटखट तेगा बाजै ❋ बोलै छपक छपक तलवार ।
तेगा चमकैं वर्दमानके ❋ औ बूँदीकी असल कटार ॥
पैदलके संग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ।
हौदाके सँग हौदा मिलि गये ❋ ऊपर पेश कब्जकी मार ॥
पैग पैगपर पैदल गिरि गये ❋ उनके दुइ दुइ पग असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
कछ्छा कटि गये जिन घोड़नके ❋ धरती गिरे भरहरा खाय ।
कटैं भुशुण्डा जिन हाथिनके ❋ धरणी गिरे करौंटा खाय ॥
कटे भुजदंडै रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
पड़े दुशाला हैं लोहुनमें ❋ जनु नदीमें पड़ो सिवार ॥
पगिया डारीं जे लोहुनमें ❋ मानौं ताल फूल उतरायँ ।
ढालैं डारी हैं लोहुनमें ❋ यारौ कछुआसी उतरायँ ॥
पड़ी बूँदके हैं लोहुनमें ❋ मानौं नाग रहे मन्नाय ।
घैया डारे रणमें लोटैं ❋ दलमें मारुइ मारु सुहाय ॥
मुर्चन मुर्चन नचे कबुतरी ❋ मलिखे कहैं पुकारि पुकारि ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगो हमार ॥
पाँव पिछारीको नहिं धरियो ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
सिरसागढ़ जोहमको मिलिहै ❋ सबकी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा सब क्षत्रिनको ❋ मलिखे आगे दिये बढ़ाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ अपनो मया मोह बिसराय ॥
दोनों हाथन करैं शिरोही ❋ अरु आगेको पाँव बढ़ाय ।
बढ़ि बढ़ि हाथ करैं महुबेके ❋ मारु मारु रट रहे लगाय ॥
जैसे भिड़हा भेड़िन पैठे ❋ जैसे सिंह बिडारे गाय ।

सुआ सुपारी जैसे कतरै ❀ त्यों दलकाटिके दियो बिछाय ॥
फौजके क्षत्री भागन लागे ❀ पारस गया सनाका खाय ।
बड़े लड़ैया महुबेवारे ❀ जिनसे कछू पेश ना पाय ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रण दुलहा चले बराय ।
भेष बदलिकै क्षत्री भागे ❀ औ दैयागति कही ना जाय ।
आधे ज्वान कटे पारथके ❀ तिनसे आध महोबे क्यार ॥
तलुवा उखड़े चौहाननके ❀ रणमें मानि गये सब हार ।
जा दिन गरजा नरमलिखे हैं ❀ अपनो करी रिसाला त्यार ॥
छुटै कबुतर ज्यौं दड़वेसे ❀ औ वनमेंसे छुटे पुछार ।
ऐसे छूटे महुबे वारे ❀ घोड़ा हिरन डाक भरमार ॥
तोप मोरचा छीन लियो है ❀ सबियां छीनि लियो औजार ।
फौजें भागि गई सिरसाको ❀ तबहीं सूर्य अस्त हो जायँ ॥
इकला पारथ रन खेतनमाँ ❀ अब कोइ धीर धरैया नायँ ।
स्वायशिकश्त गयो पारथ तब ❀ जीते जंग बनाफर राय ॥
पारथ भागि गयो सिरसाको ❀ मनमें बहुत गये घबराय ।
इत सब क्षत्री महुबे वारे ❀ अपने डेरनको चलि जायँ ॥
कमरैं खोलि दई ज्वानने ❀ अपनी करी रसोई जाय ।
भोर होतही पारथ ठाकुर ❀ मनमें सोचि समुझि सकुचाय॥
चिट्ठी भेजी गढ़ दिल्लीको ❀ दादा सुनौ पिथौराराय ।
आये महुबिया महुबे वारे ❀ सब दल कटा दियो करवाय ॥
मारि भगायो सब लश्करको ❀ अब कोइ नाहीं चलत उपाय ।
कुमक आपनी दादा भेजो ❀ नातर सिरसा लिहैं छिनाय ॥
इहिविधिचिट्ठीलिखिपारथने ❀ सो दिल्लीको दई पठाय ।
चिठिया पहुँची पृथीराजपैं ❀ पाती बाँचत गये खिसियाय ॥
चौड़ा धांधूको ललकारो ❀ चन्दन बेटा लियो बुलाय ।
हुक्म सुनाय दियो तीनोंको ❀ जल्दी लश्कर लेउ सजाय ॥
भई लड़ाई गढ़ सिरसा पर ❀ पारथ हारि गयो रणमाय ।

करौ चढ़ाई अब जल्दीसे ❃ महुबो गर्द देउ करवाय।
इतनी सुनतै चौड़ा धाँधू ❃ चन्दन उठे भरहरा खाय॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❃ सोने कड़ा दियो डरवाय।
डंका दैदेउ मेरी लश्करमें ❃ जल्दी फौज लेउ सजवाय॥
बजो नगाड़ा गढ़ दिल्लीमें ❃ क्षत्री भये सबै हुशियार।
पहले डंकाके जिनबन्दी ❃ दुसरे बांधि लियो हथियार॥
तिसरे डंकामें बाजत खन ❃ क्षत्री फांदि भये असवार।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❃ बाके घोड़नके असवार॥
साठि शूर औ सोलह सांवत ❃ आठौ धवल भये तैयार।
हाथी एकदन्ता सजवायो ❃ तापर चौड़ा भयो सवार॥
भौरानँद गजपर धांधू है ❃ चन्दन सबजा पर असवार।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❃ बांके घोड़न पर असवार॥
सात लाख लश्कर दिल्लीको ❃ तुरतै कूच दियो करवाय।
धूरि उड़ानी आसमानलौं ❃ सूरज रहे धुंधिमें छाय॥
नौसै जोड़ी बजै नगाड़ा ❃ नौसै धौंसा बजत अगार।
नौसै झंडा चले अगारू ❃ जिनको चलत न लागै बार॥
बावन झंडा हैं निशानके ❃ डंका होत गोलमें जाय।
तुर तुर तुर तुर तुरही बाजै ❃ डफला अलग रहा बन्नाय॥
फिर मन सोचे पृथीराज नृप ❃ इक हरकारा लियौ बुलाय।
पाती लिखिदइ धीरसिंहको ❃ जो रणशूर बीर नरराय॥
पहिले लिखिकै सरनामाको ❃ लिखिदौ समाचार समुझाय।
भई लड़ाई गढ़ सिरसामें ❃ जीते जँग बनाफरराय॥
पारथ हारि मानि सिरसामें ❃ पाती हमहिं दई पहुँचाय।
कुम्मक भेजी हम दिल्लीसे ❃ लश्कर सात लाख चढ़वाय॥
तुमहूँ भाई हमारे लागत ❃ अपनी फौज लेउ सजवाय।
जल्दी पहुँचि जाउ सिरसापर ❃ महुबो लूटि लेउ करवाय॥
इहिविधिपातीराजालिखिकै ❃ सो धामनको दइ पकराय।

धीरसिंह सरदार कहावे ❋ ताको पाती दीजो जाय ॥
ऐसा वीर नहिं पृथिवीपर ❋ तासे आय करै तकरार ।
पाती लैके धामन पहुँचा ❋ औ धीरजके धरी अगार ॥
पाती बांची धीरसिंहने ❋ अपनो लश्कर लियो सजाय ।
जाय पहूँचो गढ़ सिरसामें ❋ जहँपर फौज पिथौराराय ॥
दोनों फौजें सिरसा पहुँची ❋ पारथ बहुत खुशी है जाय ।
सुनी खबरिया जब आल्हाने ❋ धीरजसिंह पहुँचा आय ॥
बड़ो शूरमा धीर कहावे ❋ तासों कछू पेश ना जाय ।
फिर कछु सोचे आल्हा ठाकुर ❋ ताको बल लेहौं अजमाय ॥
घोड़ा पपीहा त्यार कराया ❋ बापर फांदि भये असवार ।
घोड़ा डारि दिया दुलकीपर ❋ जौ रोकेसे नाहिं सम्हार ॥
उतरे धीरज सांवत आवै ❋ अपने हाथी पर असवार ।
धीरज पूछे पीलवानसे ❋ आगे आवत कौन सवार ॥
तौलौं आल्हा सम्मुहे पहुँचे ❋ तब धीरजने कही सुनाय ।
घोड़ा बचाय लेउ सम्मुहेसे ❋ जल्दी घोड़ा लेउ हटाय ॥
बोले आल्हा तब धीरजसे ❋ ठाकुर सुनौ बात मन लाय ।
कट्टर घोड़ा यह हमरो है ❋ ताते हाथी लेउ हटाय ॥
इतनी सुनतै धीरसिंहके ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
सांगि उठाई मन पक्केकी ❋ सो आल्हापर दई चलाय ॥
चोट बचाई तब आल्हाने ❋ नीचे सांगि गिरी अरराय ।
दुसरी सांगि लई धीरजने ❋ सो आल्हापर दई चलाय ॥
सांगिपकरिलइ तब आल्हाने ❋ सो धीरज ना सके छुड़ाय ।
हौदा गिरन लगो हाथीसे ❋ धीरज छांडि दई खिसियाय ॥
उतरे धीरज तब हाथीसे ❋ औ आल्हासे कही सुनाय ।
कौन शूरमा तुम राजा हौ ❋ सो तुम हमहिं देइ बतलाय ॥
नगर महोबा यक वस्ती है ❋ जामें बसे रजा परिमाल ।
तिनके घरमें हम उपजे हैं ❋ राजा दस्सराजके लाल ॥

नाम हमारो सुनि आल्हा है ❋ सुनिये धीरसिंह सरदार ।
तुम्हरे मिलबेको आये थे ❋ जो तुम मिले मोहिं मगझार ॥
बहुत खुशी हमरो मन ह्वइगो ❋ सो तुम मिले आज महराज ।
इतनी बात सुनी धीरजने ❋ बहुतै खुशी भयो शिरताज ॥
धनिधनिआल्हातुमकोकहिये ❋ धनि धनि दस्सराज भूपाल ।
ऐसे शूर वीर महुबेमें ❋ क्यों नहिं राजकरैं परिमाल ॥
करी मित्रता तब धीरजने ❋ तुम सब लायक मित्र हमार ।
बोले आल्हा तब धीरजसे ❋ तुम सुनि लेउ शूर सरदार ॥
करी अदावत पृथीराजने ❋ हमरो सिरसा लिह्यो दबाय ।
उनसे सिरसा हम माँगा था ❋ सो उन दीन्ही फौज चढ़ाय ॥
तुम समुझाय देउ पारथको ❋ हमरो सिरसा देइँ गहाय ।
दसदस रुपयाके नौकर हैं ❋ काहे कटा दिहैं करवाय ॥
इतनी सुनिकै धीरज बोले ❋ तुम सुनि लेउ बनाफर राय ।
मनके बढ़िया दिल्लीवाले ❋ सो हटकेसे मनिहैं नायँ ॥
हमहिं पठायो थे कुम्भकको ❋ हम नहिं चाहत हारि तुम्हार ।
करी मित्रता है हम तुमसे ❋ अब तुम हो गये मित्र हमार ॥
जंग जीतिकै सिरसा लेलो ❋ अपनो कब्जा लेउ कराय ।
इतनी कहिकै धीरज चलिभे ❋ अपने लश्कर पहुँचे जाय ॥
तुरत बुलाय लियो पारथको ❋ सबविधिताहि कही समुझाय ।
कही न मानी तेहि धीरजकी ❋ औ लश्करमें पहुँचो आय ॥
बजो नगाड़ा गढ़सिरसामें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नपर असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
इक हाथीपर पारथ चढ़िगा ❋ इकपर चढ़ा चौड़िया राय ॥
इक हाथीपर धांधू चढ़िगा ❋ इकपर हैं चन्दन सरदार ।
इक हाथीपर धीरज सांवत ❋ अपने कसि लीन्हे हथियार ॥
जाय पहुंचे रणखेतनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।

मारू बाजा बाजन लागे ❋ आल्है खबरि पहूंची जाय ॥
फौज सजाई तब ऊदनिने ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
पांचौं बस्तर पांचौं शस्तर ❋ पंजा गही ढाल तलवार ॥
फौज कटीली महुबे वारी ❋ रणखेतनमें उरझी जाय ।
रणके बाजे बाजन लागे ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
पारथ बोला सब योधनसे ❋ सुनियो वीर बनाफरराय ।
एक एकसे होय लड़ाई ❋ अन्धाधुन्ध होयगी नायँ ॥
धर्म युद्ध खेतनमें करलो ❋ जाको देह विष्णु करतार ।
जोकोउजीतिजायसिरसाको ❋ सो गद्दीका होय सरदार ॥
यह मन भाय गई आल्हाके ❋ तब पारथसे कही सुनाय ।
यही बात हमको भाई है ❋ अभिरौ एक एकसे आय ॥
पारथ मलिखेकी बरनी भइ ❋ चन्दन उदयसिंह जुटिजायँ ।
धीरजकी बरनी ताल्हनसे ❋ आल्हा और चौंड़ियाराय ॥
धांधू ढेबाकी बरनी है ❋ ऐसे जुटे समर मैदान ।
अपने अपने शस्त्र चलावैं ❋ ताकैं दाँव घात बलवान ॥
बाल खिलारी महुबे वारे ❋ औ छलबलिया पट्टे बाज ।
अष्टधातुकी काया जिनकी ❋ नहिं हथियार गढ़ैं महराज ॥
ताल्हा सैयदके चेले हैं ❋ सो काहूका अस्त्र न खायँ ।
एक पहरतक भई लड़ाई ❋ शोभा बरनि करी ना जाय ॥
पहलि लड़ाई भइ साँगिनकी ❋ दूजी भाला लट्टूदार ।
तिसरि लड़ाई भइ तेगाकी ❋ चौथी मारु भई तलवार ॥
पचईं लड़ाई पेशकब्जकी ❋ छठी लड़ाई चली कटार ।
ताके पीछे कुस्ती होगइ ❋ ज्यादा कहा करूँ तकरार ॥
पारथ हारि गया मलिखेसे ❋ जीता जङ्ग भँवर मलिखान ।
चन्दन हारा बघ ऊदनिसे ❋ जीता उदयसिंह बलवान ॥
धीरज हारि गया ताल्हनसे ❋ ऐसा पड़ा हारका दांव ।
चौड़ा हारा पुनि आल्हासे ❋ धांधू ढेबासे तेहि ठांव ॥

मलिखे गरजा धुरखेतनमें ❋ जैसे सिंह विपिनके मायँ ।
रिसलदारको वेगि बुलायो ❋ अब क्यों राखी देर लगाय ॥
जितनै घोड़ा हैं लश्करमें ❋ एकै संग छुटैं असवार ।
पैदल पलटनकी बरणी है ❋ औ तोपनको करौ अगाह ॥
आगे आगे चलैं रिसाले ❋ जिनमें पैदल पलटन जायँ ।
ताके आगे तुपखाना हैं ❋ जिनके पहिया सरकत जायँ ॥
घोड़ा चले जात चालोंसे ❋ तेगा चमकि चमकि रहिजायँ ।
भाला घुमावैं नागदौनिके ❋ जिनमें उड़त चिड़ी बिधजायँ ॥
साँगैं चमकि रहीं दल भीतर ❋ नंगी चमकि रही तलवार ।
झुके सिपाही महुबे वारे ❋ अपनी खैंच खैंच तलवार ॥
इक मोहरे पर शोभा सुनरा ❋ इक पर चिन्तामणि लुहार ।
इक मोहरे पर कल्लूमुंशी ❋ इक पर नवल शूर सरदार ॥
इक मोहरे पर ताला सैयद ❋ जो है बनरसका सरदार ।
इकपर डटिगा ढेबा बहादुर ❋ इकपर मंडलीक अवतार ॥
इक मोहरे पर दस्सराजका ❋ मार मार करै मलिखान ।
इक मोहरे पर बच्छराजका ❋ कलहा उदयसिंह बलवान ॥
सारी पलटन और रिसाले ❋ एकै बार झुकाये जाय ।
पड़ पड़ पड़ पड़ होती आवैं ❋ ज्वानन मार मार सोहाय ॥
तड़ तड़ तड़ तड़ तासे बाजैं ❋ जंगी ढोल रहे झहनाय ।
शंख तुरी रणसिंहा बाजैं ❋ भैरौं मदन जहां घहराय ॥
रिमझिम रिमझिम गोली बरसैं ❋ सनन तीर करैं घमसान ।
बान अगिनियां छूटन लागे ❋ दलको भूनत भार समान ॥
तीर कमनियां जो मुलतानी ❋ कारी नागिनसी मन्नाय ।
जैसे साप बिलोंमें जावैं ❋ त्यों ज्वाननके अंग सुमायँ ॥
चलै शिरोही मानासाही ❋ औ बूँदीकी असल कटार ।
चलै जुनब्बी औ अहिगर्वी ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
चलै सकेला पानीपतका ❋ खपरी झरि झरि परत अगार ।

खट खट खट खट तेगा बाजैं ❁ बोले छपक छपक तलवार ॥
कल्ला कटिगे हैं घोड़नके ❁ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
कटि कटि शीश गिरैं धरतीपर ❁ उठि उठि रुण्ड करैं तलवार ॥
उतते बढ़ि गये दिल्लीवारे ❁ इतसे बढ़े बनाफरराय ।
दोनों सेना इकमिल हुइ गईं ❁ ना तिल परो धरनिमें जाय ॥
ज्यों सावनमें छुटै फुहारा ❁ भादौं बरसै मेघ मलार ।
मलिखे ऊदनिके मोहरापर ❁ बिरला शूर गहै तलवार ॥
हाथी पंचशावद आल्हाका ❁ जो दल कालरूप बलवान ।
सांकरि फेरै दलके भीतर ❁ क्षत्रिन काटि करै खरिहान ॥
धावा परि गये बन्नाफरके ❁ अब कोइ बीर न परे अगार ।
केहिकी जननी नाहर जन्मा ❁ जो सम्मुहे पकरै हथियार ॥
सर सर सर सर छुटै बछेरा ❁ ज्यों बनमेंसे छुटै बिजार ।
ऐसे छूटैं मह्बे वारे ❁ दोनों हाथ करैं तलवार ॥
देखत हल्ला चौड़ा पड़ गया ❁ औ सब भागि गये चौहान ।
छूटी फौजैं मह्बे वारी ❁ फाटक घेरि लिया मलिखान ॥
आल्हाने तौ हाथी हूला ❁ जेहिका रूप हुआ बिकराल ।
फेंकै संकल जब खेतनमें ❁ क्षत्री भागि जायँ तत्काल ॥
फाटक तोड़ा गढ़सिरसाका ❁ धँसिगा किलामाहि मलिखान ।
ऐसे कूदे मह्बे वारे ❁ जैसे लंकामें हनुमान ॥
लूटि मचाय दई सिरसामें ❁ लूटन लागे हाट बजार ।
बनियां रोवैं मारि दुहत्ती ❁ मूँड़ी धुनैं सभी सहुकार ॥
जबहीं नाम सुने मलिखेका ❁ रोवत बालक बंद होइ जाय ।
हाथ जोरिकै बनियां बोले ❁ हो रणजीत बनाफरराय ॥
पहले रैयति थी पारथकी ❁ अब तुम हमरो हो सरदार ।
काहे लूटत अपनी रैयति ❁ हम सब ताबेदार तुम्हार ॥
इतनी सुनि लइ नर मलिखेने ❁ दीन्ही लूट बंद करवाय ।
सब सिरसा काबूमें करिके ❁ अपनो कब्जा लियो बिठाय ॥

पारथ भागि गयो दिल्लीको ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
हाथ जोरिके पारथ बोला ❋ दादा सुनो शूर सरदार ।
जल्द सजाय लेउ लश्करको ❋ औ सिरसा पर होउ तयार ॥
हमरी सिरसा हमहिं दिलावो ❋ तुम सब लायक बाप हमार ।
इतनी सुनिके पिरथी बोले ❋ बेटा सुनो बात मनलाय ॥
छोटी गढ़िया वह सिरसा है ❋ कछु दिन धीर धरो मनमाय ।
मनके बढ़िया महुबे वारे ❋ केहु खातिरमें लावत नाहिं ॥
दांव लगैगा केहु समयापर ❋ लेवें जंग जीत रणमाहिं ।
पारथ बैठि रहा दिल्लीमें ❋ अब सिरसाको सुनो हवाल ॥
जाय कचहरी दाखिल ह्वैगो ❋ राजा बच्छराजको लाल ।
करी सजावट गढ़सिरसाकी ❋ सुबरण कलश दिये टँगवाय॥
बिछे गलीचा हैं मखमलके ❋ ऊपर टँगी चांदनी जाय ।
करी कचहरी मलिखे ठाकुर ❋ भेंटैं देन लगे धनवान ॥
अपनी कृपा करी नारायण ❋ सिरसा बसे वीर मलिखान ।
बोले तालहन तब मलिखेसे ❋ बेटा सुनो बात मनलाय ॥
अब तुम राज करो सिरसामें ❋ पालौ प्रजा पुत्र समताय ।
जितना लश्कर तुमको चहिये ❋ सो तुम लेउ भँवर मलिखान॥
फिर हम जावैं गढ़ महुबेको ❋ बोला तुरत बीर मलिखान ।
बारह पलटन बीस रिसाले ❋ दस तुपखाने देउ छुड़ाय ॥
कल्लू मुंशी शोभा सुनरा ❋ चिंतामणि लुहार रणराय ।
जो जो मांगा नरमलिखेने ❋ सो सो दिया तलंसीराय ॥
त्यारी करदई गढ़ महुबेकी ❋ जयको डंका दियो बजाय ।
आल्हा ऊदनि ढेबा बहुादुर ❋ महुबे पहुँच गये तत्काल ॥
सुनी खबरि जब यह राजाने ❋ बहुतै खुशी भये परिमाल ।
बजी बँधाई गढ़ महुबेमें ❋ औ विप्रनको दीन्हे दान ॥
इहिविधिजीतिलियोसिरसागढ़ ❋ नामी भये वीर मलिखान ।
किला सिरसवां नरमलिखेने ❋ नये सिरेसे दियो बसाय ॥

करी सजावट सब नगरीकी ❋ चौपड़हाट दीन्ह सजवाय ।
फिर एक नया किला बनवाया ❋ सुन्दर रत्नजटित सब धाम ॥
नाना भवन विविध रंग रचना ❋ मानहुँ इन्द्रकेर सब ठाम ।
चौंसठि बुर्ज चारि नवखंडी ❋ जिनपै बैठि स्वर्ग दिखलाय ॥
चारिहुँ ओर हाटअति सोहैं ❋ लखिमन मोहि मोहि रहि जाय।
कंचन कलश धरे कँगुरन पर ❋ रबिकी किरण प्रकाशी आनि॥
दुइदुइ लाल जड़े तिन ऊपर ❋ रविशशि झिपन लगे द्युतिमान।
कोयश बरणि सकै धरणीमें ❋ मानहुँ इन्द्रलोक दिखलाय ॥
पवन रूप मन्मथ जहँ लहरै ❋ चूमैं कलश अप्सरा आय ।
न्यारे राजभवन शतखंडा ❋ न्यारी न्यायनिवारणशाल ॥
सबपै कलश धरे सुबरणके ❋ लोरैं माथ माथमें लाल ।
अथल अगमखाईके निरखत ❋ डूबो जात लज्जिपाताल ॥
खाई क्या गढ़की रखवारी ❋ लहरैं बदन पसारे ब्याल ।
जोकोइजन तटपैलिखिनिरखै ❋ सूझन लगे स्वर्गपाताल ॥
चकित धरणि आकाश निहारैं ❋ रसगतिसमुझि परै भवजाल ।
तीन द्वार गढ़के रखवाये ❋ तिनपैं बज्र लगे हैं डाटि ॥
रक्षा हेत द्वार वीरनने ❋ धरिदियेद्वारशिखरगिरिकाटि।
उत्तर द्वारो गढ़ कनउजको ❋ पूरब सिम्त महोबे नाम ॥
सिंह पौरि पश्चिमको द्वारो ❋ जाके परे राज सुखधाम ।
पुर रखवारे जहँ तहँ डोलैं ❋ लीन्हें अस्त्र शस्त्र बहुभांति ॥
इहिविधि गढ़नवीनकी शोभा ❋ वर्णन करत चित्त सकुचात ।
जगमें सदा रीति चलि आई ❋ अबलग बांति रहे व्योहार ॥
जाकी बात बनत लखिपावै ❋ ताकी ओर होय संसार ।
बड़ बड़ सुभटबीर नरकेहरि ❋ जिनकी हती समरमें धाक ॥
तिनभजि शरणगही मलिखेकी ❋ प्रण तजि डारि सुयशपै खाक।
देश देशके वीर बहादुर ❋ विनरण त्यागि २ निजवास॥
आपुहि आनि बसे सिरसामें ❋ मनसे बने वीरके दास ।

एक एकसे अधिक कन्हैया ❀ भरती भये फौजमें आय ।
जो रणसुनत शस्त्रगहि विहँसै ❀ जिमि हंसिपरै रंकधनपाय ॥
युवा बयसके नर अभिमानी ❀ मनमें भरे फिरैं उरमाल ।
निशिदिनबाट लखैं दिल्लीकी ❀ कबलग जगै धनी चौहान ॥
इहिविधि बहुतबीरभट आये ❀ सबको धीर दई चुपकारि ।
आपुहि आनि भरे लश्करमें ❀ उमगन लगे खींचि तलवारि ॥
सिंहआनिसिंहनसोमिलिगये ❀ ताकन लगे वधिकके प्राण ।
हंस हंस मिलि नभ उड़ि बैठे ❀ अब नहीं चलैं भीलके बान ॥
पारब्रह्म हरिको गति निरखौ ❀ क्या संयोग करे इकसार ।
कीच कीचमें लय ह्वै बैठे ❀ जलमें जाय मिले जलधार ॥
गतिनहिंजानपरै भगवतकी ❀ पलमें पलटि देहि संसार ।
क्षणमहँ विश्व क्षार करिडारै ❀ मायाप्रबल विश्व आधार ॥
मलिखे बैठे अमन चमनसे ❀ इक दिन दूत करो तैयार ।
विनय पत्र महुबेको भेजो ❀ इहिविधि लिखा प्रेम ब्यौहार॥
हे प्रतिपाल पिता चन्देले ❀ तुमको विनय करौं शिरनाय ।
युगयुगजियौअटलपदभोगौ ❀ जबलगि सिन्धु अगम लहराय॥
जो मैं चरण परसि महुबेमें ❀ तुमसे विदा भयो महराज ।
केवल नाथ प्रताप आपके ❀ बनि गये सकलदासके काज ॥
रण तो नये विघ्न बहु उपजे ❀ पर जय कुशलकरी भगवान ।
गढ़ गंभीर विपिनमें बनिगौ ❀ सिरसा माँहि मिलाऔ आन ॥
अब यह विनय करौं चरणनमें ❀ अंगीकार करौ है ग्वाल ।
जननी औ मम मित्र कुटुम्बी ❀ सिरसहि भेजि देउ तत्काल ॥
समाचार परमानँद पाये ❀ हर्षित करो इष्टको ध्यान ।
फिरि यश कहनलगे मलिखेकी ❀ नरने मेटि लिये अरमान ॥
फिरि उठि राजमहलमें आये ❀ सबको टेरि कही हर्षाय ।
समाचार मलिखेके आये ❀ वनमें कोट लियो बनवाय ॥

यहि पश्चात देखि शुभसायति ❋ राजा साजि वाजि सुखपाल ।
तिलका औ सब मित्र कुटुंबी ❋ सिरसहि भेजि दिये तत्काल ॥
कुशलक्षेम सिरसामें पहुँची ❋ माता उतरि परी सुखधाम ।
रैनिवासके शतखंडा पर ❋ रानी जाय भई निष्काम ॥
तिलकामाता बहुतखुशी भइ ❋ धनि मलिखान लड़ैतेलाल ।
मन्त्री खुशी खुशी पुरवासी ❋ मिट गये सकलसंकटा जाल ॥
शूर बीर गढ़पति भटयोधा ❋ मन्त्री राजकुँवर सरदार ।
बुद्धिमान सज्जन गुणसागर ❋ हाजिर रहन लगे दरबार ॥
राजा शीश नवैं मलिखेको ❋ गढ़पति बाजु देहिं शिरनाय ।
जो कोइ शिरसासे शिर फेरहिं ❋ वे शिर धुनै स्वर्गमें जाय ॥
चहुँलग धाकभइ मलिखेकी ❋ बलनिधि शूरवीर थरीयँ ।
वैरी नाम सुनत तनु त्यागैं ❋ योधा दृष्टि देखि घबरायँ ॥
हितू हँसैं मन्त्री सुख भोगैं ❋ परजा सुखी खुशी नरनारि ।
चोर चुगुलयमपुरको रमिगे ❋ वैरी ब्यारि भये पुनहारि ॥
पक्षी केलि करैं जंगलमें ❋ मधुरी पवन चलै सुखवारि ।
मन चाहे नभसे जल बरसे ❋ वनवन फूलि रही फुलवारि ॥
बलिपुरगढ़पड़ियलऔबिषगढ़ ❋ जीतिके गढ़में लिये मिलाय ।
पूरन कला भई मलिखेकी ❋ गढ़पति मिलन लगे भयपाय ॥
जितनी कला बढ़ै मलिखेकी ❋ उतनेहिं दिये रजापरिमाल ।
तेगा विदित होय सिरसाकी ❋ गरुई होय महोबे ढाल ॥
ज्योंज्योंसुयशबढ़ैमलिखेको ❋ त्यों त्यों महाराज गरुआयँ ।
नित नव सुक्ख बढ़ै महुबेमें ❋ मल्हना पुत्र सहित हर्षाय ॥
क्यो नहिं खटकमिटैहिरदैसे ❋ क्योंनहिंनाथ होयँ निष्काम ।
चौकी बनिगइ गढ़ महुबेकी ❋ जबसे लियासिरसवाँ गाम ॥
माख करत थे जो महुबेसे ❋ जिनसे जीत हते परिमाल ।
बीनि बीनि मलिखे ऊदनिने ❋ करिदै लोथिखोंचिके खाल ॥
जोधा थकित करे ऊदनिने ❋ बलनिधिशिथिलकरेमलिखान ।

चहुं लग देश पट्टकरि डारो ❋ इकलग शून्य परे मैदान ॥
तोबी लै तोमर वन विचरे ❋ हरिपद भजन लगे करिछाप ।
ज्ञानबुद्धिमनसे रम करि गये ❋ जब मुनिपरी ध्यानमें टाप ॥
सौ सौ कोश भजे सोलंखी ❋ उड़िगै सिन्धुपार परिहार ।
अर्गल छाड़ि गये नरगौतम ❋ पानी डारि गये पम्मार ॥
जैसवार झीने मन परिगै ❋ रणमें डारि गये धनु बान ।
वैसे अवस्था गतिकरि बैठे ❋ खटका करन लगे चौहान ॥
बड़े बड़े समर करे ऊदनिने ❋ पकड़ो धनुषवीर मलिखान ।
भाग बली हैं चन्देलेके ❋ सबमें विजय दई भगवान ॥
छब्बिस गढ़ ऊदनिने जीते ❋ छब्बिस विजय करे मलखान ।
अभय चित्त राजा है बैठे ❋ मनसे उतरि गये चौहान ॥
दल गढ़ सुभट बढ़े राजाके ❋ मनमें उपज गये मदमान ।
पैसा तोरि लियौ दिल्लीको ❋ बिसरो खौफ धनी चौहान ॥
समय निहारो शब्दबेधिने ❋ निरखे भागवन्त परिमाल ।
तेजवान दोनों भट जाने ❋ रहिगै ऐंठि ग्वैंठि जिमि व्याल॥
सकल लड़ाई नरमलखेकी ❋ जो हम कहे यहां मनलाय ।
गाथा बहुत बढ़ै आल्हाकी ❋ तासों पूरण करी सुनाय ॥
ऊदनि मलखेको पुरुषारथ ❋ सो कहं लग मैं करौं बखान ।
ताते यह संक्षेप सुनायो ❋ सज्जन लेहिं आप सब जान ॥
पहिली लड़ाइ यह सिरसाकी ❋ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
जैसे ब्याह भयो आल्हाको ❋ राजा नैपाली घर जाय ॥
नैनागढ़में भई लड़ाई ❋ सो आगे लिख दिहैं सुनाय ।
समय पाय तुम आल्हा गावो ❋ सुमिरौ नित्य राम रघुराय ॥

इति सिरसागढ़की पहिली लड़ाई संपूर्ण

श्रीः

अथ नैनागढ़की लड़ाई

★

(आल्हाका ब्याह)

दोहा—सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरण करकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
ब्याह सुनावौं मैं आल्हाको ❋ यारो सुनौ छोड़ि सब काम ॥
राजा नेपाली नैनागढ़ ❋ ज्यहिघर अमरढोलघहराय ।
हैं बरदानी इन्द्रदेव के ❋ जो मरिबेको नाहिं डेराय ॥
ताकी बेटी सुनवाँ कहिये ❋ जाने जादू पढ़े बनाय ।
रूपकी अगरी बेटी सुनवाँ ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
नितनितखेलकरै सखियनसँग ❋ एकदिन सखियन कही सुनाय ।
बारह वर्ष केरि उम्मिरि भइ ❋ तुम्हरो कहूँ न करो विवाह ॥
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ या धनहीन भये महराज ।
इतनी बात सुनी सुनवाँने ❋ मनमां बहुत गई खिसियाय ॥
तुरतै पहुंची रंगमहलमें ❋ माता लीन्ही कण्ठ लगाय ।
पूछन लागी सो सुनवांसे ❋ बेटी हाल देउ बतलाय ॥
कौन सोच है तुम्हरे जियमें ❋ सो सब हमहिं देउ समझाय ।
हाथ जोरिकै सुनवां बोली ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
ताना देती सखी सहेली ❋ क्यों न तुम्हरो भयो विवाह ।
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❋ या धनहीन भये महराज ॥
रानी बात सुनी बेटी बेटीकी ❋ अपने मनमें सोचन लागि ।
ब्याह योग बेटी यह ह्वै गइ ❋ जल्दी याको करैं विवाह ॥

दियो भरोसा तब रानीने ❋ बेटी धीर धरो मनमाहिं ।
ब्याह तुम्हारो जल्दी होइ है ❋ अबहीं टीका दिहौ पठाय ॥
राजा आये रंगमहलमें ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
बारह वर्ष केरि बेटी भइ ❋ ताको जल्दी करौ विवाह ॥
तुमहिं हँसौआको डर नाहीं ❋ अबहीं टीका देउ पठाय ।
इतनी बात सुनी राजाने ❋ तब रानीते कही सुनाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ जल्दी टीका दिहैं पठाय ।
इतनी कहिकै राजा चलि भये ❋ औ दरबार पहूँचे जाय ॥
लैके कागद कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ।
लिखी हकीकति नैपालीने ❋ सब टीकाको लिखो हवाल ॥
अमरढोल है हमरे घरमें ❋ सेना सुनत अमर ह्वइ जात ।
कठिन लड़ाई है जोगीकी ❋ औ भोगाकी है तलवार ॥
जंग जीतिकै बेटी ब्याहैं ❋ सो हमारे घर करै विवाह ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारौं नेगी लिये बुलाय ॥
तीनि लाखको टीका लैके ❋ सो चारौंको दो सौंपाय ।
होय जो क्षत्री उत्तम कुलको ❋ सो टीकाको लेइ चढ़ाय ॥
अच्छे घर टीका ले जैयो ❋ एक न जैयो नगर महोब ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो हम तुमहिं दियो बतलाय ॥
इतनी सुनिकै नेगी चलि भये ❋ बिजया बेटा संग लिवाय ।
पहिले पहुँचे गढ़ दिल्लीमें ❋ टीका फेरि दियो चौहान ॥
तहँते पहुँचे गढ़ कनउजमें ❋ जैचँद टीका दियो फिराय ।
देश देशमें टीका पहुँचो ❋ सबने टीका दौ लौटाय ॥
लौटिकै नेगी गये नैनागढ़ ❋ औ राजासे कही सुनाय ।
देश देशमें हम फिरि आये ❋ टीका कोइ कबूलै नाहिं ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❋ मनमें बहुत गये शरमाय ।
रचो स्वयंवर तब राजाने ❋ धूरे डंका दियो धराय ॥
यह प्रण कीन्हो नैपालीने ❋ जो कोउ डंका देइ बजाय ।

तेहि राजाघर बेटी ब्याहौं ❀ खबरैं देश देश ह्वै जायँ ॥
राजा आये देश देशके ❀ औ नैनागढ़ पहुँचे आय ।
तम्बू लगि गये हैं धूरेपर ❀ झण्डन रही लालरी छाय ॥
नजरि गुजारी सब राजाने ❀ औ राजाते कही सुनाय ।
तुम्हरी बरोबरिके हम नाहीं ❀ जो तुम्हरे घर करैं विवाह ॥
सदा सहायक हम तुम्हरे हैं ❀ सो तुम जानि लेउ महराज ।
राम बनावैं तौ बनि जावैं ❀ बिगरी बनत बनत बनि जाय ॥
हाल सुनो अब रनसुनवाँको ❀ सुनवाँ मनमें करै विचार ।
या तो ब्याह होय आल्हासँग ❀ नातर रहिहौं सदा कुँवारि ॥
कागद लीन्हों कलपीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ ।
लिखी हकीकत बघऊदनिको ❀ पढ़ियो याहि उदैसिंहराय ॥
टीका भेजो हमरे बापने ❀ सब राजनने दौ लौटाय ।
हम प्रण कीन्ही यह अपने मन ❀ देवर मानौ वचन हमार ॥
कीतौ ब्याह होय आल्हासँग ❀ ना दूजे सँग होय विवाह ।
तुम सब लायक हौ महुबेमें ❀ भाँवरि आय लेउ डरवाय ॥
बाना राखे हौ क्षत्री का ❀ औ तरवारि गहेकी लाज ।
खबरि न लेहौ जो हमरी तुम ❀ तो रजपूतीको धिक्कार ॥
या तौ ब्याहौ तुम भैयाको ❀ या घर छोरि धरौ हथियार ।
यहिविधिपाती सुनवां लिखिकै ❀ सो डोरामें दई बँधाय ॥
सुआ निकारि लियो पिंजराते ❀ औ तोतासे कही सुनाय ।
पाती दीजौ तुम ऊदनिको ❀ यह कहि पाती दई बँधाय ॥
जल्दी जावौ गढ़ महुबेको ❀ हमरो कारज देउ बनाय ।
इतनी सुनिके सुअना चलिभौ ❀ औ महुबेको पकरी राह ॥
तीन दिनाको धावा करिकै ❀ गढ़ महुबेमें पहुँचो जाय ।
सुअना उतरो फुलबगियामें ❀ बैठो एक वृक्ष पर जाय ॥
वही समैया फुलबगियामें ❀ आये तहां उदयसिंह राय ।
बैठो देखो यक तोताको ❀ पाती बँधी कण्ठके माहिं ॥

बोले ऊदनि तब तोताते ❀ सुअना हमैं देउ बतलाय ॥
कौन देशसे तुम आये हौ ❀ आगे कौन देशको जाउ ।
जो तुम आये होउ महुबेमें ❀ तुम चलौ हमारे साथ ॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ ऊदनि है नाम हमार ।
इतनी सुनिकै सुअना उतरो ❀ औ ऊदनितर पहुँचो आय ॥
देखी पाती बघऊदनिने ❀ तापर पढ़ो आपनो नाम ।
पाती खोली तब ऊदनिने ❀ औ सुनवाँको पढ़ो हवाल ॥
बहुत खुशीह्वैइऊदनिचलिभये ❀ औ तोताको साथ लिवाय ।
जहां कचहरी परिमालैकी ❀ तहँ पर गये उदयसिंहराय ॥
करी बन्दगी परिमालैको ❀ तुरतै पाती दई गहाय ।
मलिखे बैठे तहँ दहिने पर ❀ पाती पढ़ी रजा परिमाल ॥
पढ़िकै पाती चन्देलेने ❀ सो गद्दी तर लई दबाय ।
ताल्हा सैयद ढेबा बहादुर ❀ आल्हा आदि शूर सरदार ॥
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे ❀ सो राजातन रहे निहार ।
हंसिकै मलिखे बोलन लागे ❀ दद्दुआ हाल देउ बतलाय ॥
कहांकी पाती यह आयी है ❀ जो गद्दीतर लई दबाय ।
बोले राजा तब मलिखेते ❀ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
पाती आई नैनागढ़ते ❀ रानी सुनवां दई पठाय ।
टीका भेजो सब राजनके ❀ काहू ब्याह कबूलो नाहिं ॥
तब यह पाती गढ़ महुबेमें ❀ सुनवां लिखिकै दई पठाय ।
अमरढोल है नैपालीके ❀ लड़िका कठिन करैं तलवारि ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है ❀ ताते हाल सुनायो नाहिं ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ तुमको जानत सकल जहान ॥
तुमहि हँसौआको डरनाहीं ❀ दादा अक्किल कहां तुम्हारि ।
ब्याहु फेरिहो जो महुबेते ❀ तो जग ह्वैहै हँसी तुम्हारि ॥
दागु लागि है रजपूतीमें ❀ जो यह ब्याह दियौ लौटाय ।
इतनी बात कही मलिखेने ❀ औ ऊदनिने कही सुनाय ॥

करौ तयारी नैनागढ़की ❀ औ आल्हाका रचौ विवाह ।
इतनी बात सुनी राजाने ❀ मनमें गये सनाका खाय ॥
जायके पहुँचे रंगमहलमें ❀ औ मल्हनाते कही सुनाय ।
पाती आई नैनागढ़ते ❀ रानी सुनवां दई पठाय ॥
ब्याह लिखो है वा पातीमें ❀ रहि रहि मेरे प्राण घबराय ।
कठिन लड़ाई नैपालीकी ❀ ज्यहिघर अमरढोल घहराय ॥
जोगा भोगा दोनों लड़िका ❀ तिनकी जगजाहिर तलवार ।
देश देश टीका फिरि आयो ❀ काहू ब्याहु कबूलो नाहिं ॥
मलिखे ऊदनि दोनोंलड़िका ❀ अपनी त्यारी दई कराय ।
तुम समुझाय देउ दोनोंको ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै मलिखे ऊदनि ❀ दोनों लड़िका लिये बुलाय ।
बोली मल्हना तिन दोनोंते ❀ बेटा मानौ कही हमारि ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ ❀ जहँपर अमर ढोल घहराय ।
लड़ै न जितिहौ नैपालीते ❀ तासे बैठी रहौ अरगाय ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ माता सुनौ हमारी बात ।
आल्हा ब्याहनका रहिहैं ना ❀ यहुदिन कहिबेको रहिजाय ॥
जो हम बैठ रहैं महुबेमें ❀ बूड़ै सात साखिको नाम ।
अमर नहीं है कोउ दुनियामें ❀ माता समुझि लेउ मनमाहिं ॥
ब्याह रचैहैं हम आल्हाको ❀ चाहै प्राण रहै की जाहिं ।
हँसी खुशीते आज्ञा देदेउ ❀ माता हम मनिबेके नाहिं ॥
इतनी सुनिकै मल्हना सोची ❀ मनिहै नाहिं बात मलिखान ।
बोली मल्हना तब मलिखेते ❀ तुम्हरो काम सिद्ध हो जाय ॥
दिवला तिलकाको बुलवायो ❀ औ सब सखियां लईं बुलाय ।
सब मिलि मंगलगावन लागीं ❀ तब पंडितको लियो बुलाय ॥
चूड़ामणि पंडित जब आये ❀ तिनसो मल्हना पूछन लागि ।
साइत देखो तुम पत्रामें ❀ तबहीं तैल देयँ चढ़वाय ॥

खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ सब सामान करौ तैयार ॥
तैल चढ़ावौ तुम आल्हाको ❋ अबहीं साइति लेउ सधाय ।
ऊदनि बोले नर ढेबाते ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ॥
समरसारकी पोथी लैके ❋ ढेबा सगुन बिचारन लाग ।
काम तुम्हारो पूरन होइहैं ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय ॥
मल्हना रानी नेग करावै ❋ सखियां करैं मंगलाचार ।
बेदी रचवाई आंगन में ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ॥
चूड़ामणि पंडित तहँ बैठे ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय ।
बारह रानी परिमालैकी ❋ सो मंडपमें पहुँची आय ॥
तुरत बुलाय लियो आल्हाको ❋ औ चौकीपर दियो बिठाय ।
सातसुहागिनमिलिआल्हाको ❋ मड़ये तैल दियो चढ़वाय ॥
नहखुर होन लाग मंडपमें ❋ नेगी झगरि झगरि रहिजायँ ।
सबको नेग दियो रानीने ❋ औ मुँह मांगो दियो इनाम ॥
कपड़ा पहिनाये आल्हाको ❋ तुरत पालकी लई मंगाय ।
आल्हा बैठि गये पालकीमें ❋ दूलह बने बनाफर राय ॥
चली पालकी तुनिआल्हाकी ❋ औ कुँअटापर पहुँची जाय ।
बैठी देवै जब कुँअटापर ❋ तब मल्हनाने कही सुनाय ॥
हमने पालो हैं आल्हाको ❋ हमहीं कुँवा बियैहैं जाय ।
यहकहिमल्हनागइकुअटापर ❋ औ दोउ पाय दिये लटकाय ॥
पहिली भांवरिपग धरतैखन ❋ आल्हा मल्हनै लियो उठाय ।
प्राणदान माता हम दीन्हें ❋ राखौ धीर मल्हनदै माय ॥
दई अशीश तबहिं मल्हनाने ❋ जुगजुग जियो लड़ैते लाल ।
चरणलागिकै रनिमल्हनाके ❋ आल्हा माथे लियो लगाय ॥
चरण छुये दिवला तिलकाके ❋ सब रानिनको कियो प्रणाम ।
कूदि पालकीपर चढ़िबैठे ❋ पलकी चली बनाफर क्यार ॥
पलकी पहुँची जब लश्करमें ❋ मलिखे डंका दियो बजवाय ।
लैके कागद कल्पीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥

सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❋ ऊदनि पाती लिखी बनाय ।
लिखो वन्दगोरनिसुनवांको ❋ जा पाछेते लिखो हवाल ॥
तुमहिं बियाहनआल्हाआवत ❋ भौजी धीर धरो मनमाहिं ।
बिना ब्याहके हम नहिं लौटें ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥
ऐसी पाती ऊदनि लिखिकै ❋ तुरतै दई कण्ठमें बांधि ।
सुआ उड़ानो तब महुबेते ❋ नैनागढ़की पकरी राह ॥
राम बनावैं तौ बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय ।
ऊदनि पहुँचे फिरि लश्करमें ❋ तोप दरोगा लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो बघऊदनिने ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर देउ चढ़ाय ॥
बोलि दरोगा घोड़नवालो ❋ चीरा कलँगी दई इनाम ।
अच्छे घोड़ा गढ़ महुबेके ❋ सिगरे साजि करौ तैयार ॥
जीन धरावौ सब घोड़नपर ❋ रेशम तंग देउ कसवाय ।
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ तासो ऊदनि कही सुनाय ॥
बड़ी राशिके जितने हाथी ❋ सो सब साजि करौ तैयार ।
हाथी एकदंता सजवावौ ❋ औ दुइदंता लेउ सजाय ॥
मैनकुञ्ज भौंरागिरि कहिये ❋ मकुना हाथी लेउ सजाय ।
धौलागिरि हाथी सजवावौ ❋ भूरा हाथी लेउ सजाय ॥
सुड़िया हौदा तुम कसवावौ ❋ चारों ओर चलै तलवार ।
इतनी सुनिकै चला दरोगा ❋ सिगरे हाथी करे तैयार ॥
डारै गद्दा मखमलवाले ❋ ऊपर हौदा दिये कसाय ।
यक यक हाथीके हौदामें ❋ बैठे चारि चारि असवार ॥
बड़ी राशिके जितने घोड़ा ❋ सो सब साजि भये तैयार ।
लक्खा गर्रा घोड़ा साजे ❋ औ कुम्मैत भये तैयार ॥
हरियलमुश्की घोड़ासजिगे ❋ पँच कल्यानी भये तैयार ।
अर्बी तुर्की औ तातारी ❋ सब्जा सुर्खी भये तैयार ॥
पूँछ रंगाय दई घोड़नकी ❋ औ सब जेवर दै पहिराय ।

धरिकठिनाली तिन घोड़नपर ❋ ऊपर जीन दिये कसवाय ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❋ लश्कर साजि भयो तैयार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
मलिखे ढेबा लाला सैयद ❋ चौथे ऊदनि संग लिवाय ।
जहां कचहरी चन्देलेकी ❋ तहं पर करी बन्दगी जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
हाथ फेरि दियो तब पीठीपर ❋ तुम्हरो काम सिद्धि होय जाय ॥
करौ तयारी नैनागढ़की ❋ औ आल्हाको करो विवाह ।
इतनी सुनिकै चारौं लौटे ❋ अपनी करन तयारी लाग ॥
ताला सैयद बनरसवाले ❋ घोड़ी सिंहनीपर असवार ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
गजपचशावदघोड़ाकरिलिया ❋ सो सजवायो बीर मलिखान ।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर जगनिक भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ।
मन्ना गूजर महुबेवालो ❋ सो बरातको भयो तयार ॥
जानवेग सुल्तान बहादुर ❋ अली अलामति औ दरियाय ।
अपने घोड़नपर चढ़ि बैठे ❋ लैके खुदानबीको नाम ॥
मारू डंकाके बाजतही ❋ सबने कूच दियो करवाय ।
राह पकरि लइ नैनागढ़की ❋ लै बजरंग बलीको नाम ॥
सात रोजको धावा करिके ❋ नैनागढ़में पहुंचे जाय ।
तीनकोस नैनागढ़ रहि गयो ❋ अपने डेरा दिये डराय ॥
पांचकोशलौं लश्कर परिगयो ❋ तंबुअन रही लालरी छाय ।
फेंटै छुटि गइं रजपूतनकी ❋ अपने खोलि धरे हथियार ॥
हौदा उतरि गये हाथिनके ❋ घोड़न जीन दिये उतराय ।
चढ़ी रसुइयां उमरावनकी ❋ शोभा कछु कही ना जाय ॥
ऊदनि मलिखे दोनों चलिभे ❋ औ बागनमें पहुंचे जाय ।
जहं पर डंका नेपालीको ❋ ऊदनि डंका दियो बजाय ॥

चोब नगारेके बाजतखन ❀ धावन कूच दियो करवाय ।
जाय पहूंचा नैपालीपै ❀ झुकिकै करी बन्दगी जाय ॥
कही हकीकति त्यहि डंकाकी ❀ ओ महराज गरीबनेवाज ।
आई बरायत काहु देशकी ❀ चोब नगारा दियो बजाय ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❀ अपने लरिका लियो बुलाय ।
हुक्म देदियो तब जल्दीसे ❀ जल्दी खबरि सुनावौ आय ॥
कौन सो राजा चढ़ि आयो है ❀ कौनने डंका दियो बजाय ।
इतनी सुनतै लरिका चलिभये ❀ औ बागनमें पहुंचे जाय ॥
ऊँचे चढ़िकै देखन लागे ❀ भारी लश्कर परो दिखाय ।
देखि हकीकति लड़िका लौटे ❀ नैपालीपै पहुँचे आय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा ❀ तीनों खबरि सुनावन लाग ।
लश्कर डारो पांच कोसलौ ❀ तँबुअन रही लालरी छाय ॥
आई बरात कोइ राजाकी ❀ कोसन झंडा परे दिखाय ।
हियांकि बातैं तौ हियं छांड़ो ❀ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
ऊदनि बोले नर मलिखेसे ❀ दादा सुनौ हमारी बात ।
कौन नींदमें तुम सोवत हो ❀ जल्दी पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ सो तंबूमें पहुंचे आय ।
खोलि पत्तरा देखन लागे ❀ अच्छी साइति दई बताय ॥
रूपनाबारीको बुलवावौ ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
इतनी सुनते नर मलिखेने ❀ रूपनाबारी लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब रूपनाको ❀ ऐपनवारीको लै जाउ ।
बोलेउ रूपना तब मलिखेते ❀ हमना मूंड कटैहैं जाय ॥
कठिन मारु है नैपालीकी ❀ हमते मारु सही ना जाय ।
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पे ❀ रूपन अक्किल गई तुम्हारि ॥
मुखते हीनी तुम बोलत हौ ❀ हमरे सुनिबेको धिक्कार ।
भाई ब्याहनको रहिहैं ना ❀ कहुहिन कहिबेको रहिजाय ॥
ऐपनवारी तुम लेजावो ❀ जल्दी कूँच जाउ करवाय ।

तुमको नेगी हम समझैं ना ❀ घरके भैया लगो हमार ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❀ घोड़ा करेलिया देउ मँगाय ।
पाग बैंजनी हमको दैदेउ ❀ औ आल्हाकी ढाल तलवार ॥
जो जो चाह्यो त्यहि रुपनाने ❀ सो सब तुरतै दियो मंगाय ।
करी तयारी तब रुपनाने ❀ ऐपनवारी लई मंगाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठो ❀ नैनागढ़में पहुँचो जाय ।
ठाढ़े दरवानी द्वारेपर ❀ सो रुपनाते लगे बतान ॥
कौन देशते तुम आयो हौ ❀ आगे कौन देशको जाउ ।
रुपना बोलेउ दरवानीते ❀ तुम सुन लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबा इकबस्ती है ❀ जहँपर बसैं रजापरिमाल ।
तहँते ब्याहन आल्हा आये ❀ रुपनवारी नाम हमार ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ हमरो नेग देउ मंगवाय ।
खबरि सुनावौ तुम राजाको ❀ नेगी ठाढ़ो पँवरि दुआर ॥
यह सुनि बोलेउ दरवानी तब ❀ अपनो नेगु देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ❀ तुमहूं सुनि लेउ नेग हमार ॥
चलै शिरोही यहं द्वारेपर ❀ औ बहि चलै रक्तकी धार ।
इतनी सुनतै गयो दरवानी ❀ औ राजासे कही सुनाय ॥
बारी आयो है महुबेको ❀ ऐपनवारी लीन्हे ठाढ़ ।
नेग आपनो वह मांगत है ❀ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
इतनी सुनतै नैपालीको ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ।
जोगा भोगाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बांधिकै लावौ तुम बारीको ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
तौलौं रुपना दाखिल ह्वैगो ❀ औ गद्दीपै पहुँचो आय ॥
नजरि बदलि गइ नैपालीकी ❀ औ रुपनातन रहै निहारि ।
करी बन्दगी तब रुपनाने ❀ ऐपनवारी दई चलाय ॥
तब नैपाली बोलन लागे ❀ औ रुपनाते पूंछन लाग ।
कौन देशते तुम आये हौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥

बोल्यो रुपना तब राजाते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
हम तो आये हैं महुबेते ❋ रुपनाबारी नाम हमार ॥
आल्हा आये हैं ब्याहनको ❋ ऐपनवारी दई पठाय ।
नेग हमारो जल्दी चहिये ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
इतनी सुनतै नैपालीके ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायं ।
बड़े बड़े क्षत्री बँगला बैठे ❋ ठिहुना धरे नग्न तलवार ॥
बोले नैपाली क्षत्रिनते ❋ याको देउ जानते मारि ।
जान न पावै यह द्वारेते ❋ तुरतै मूंड़ लेउ कटवाय ॥
बैठे क्षत्री एक हजार जहं ❋ सो सब उठे भरहरा खाय ।
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्हीं ❋ तुरतै चलन लगी तलवार ॥
पूरन ठाकुर पटनावालो ❋ ताने लीन्ही गुर्ज उठाय ।
गुर्ज धामको जब रुपनापर ❋ रुपना ले गयो चोट बचाय ॥
सांग उठाई जो रुपनाने ❋ सो पूरनपर दई चलाय ।
लगौ चपेटा जब पूरनको ❋ पूरन गिरो भरहरा खाय ॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ बारी कठिन करै तलवारि ॥
जाय पहूँचो जब गद्दीपर ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
ऐड़ लगाय दई घोड़ाके ❋ घोड़ा निकरि गयो वा पार ॥
रुपनै घेरो सब क्षत्रिनने ❋ द्वारे चलन लगो तलवारि ।
रंग बिरंगे रुपना ह्वइगो ❋ घोड़ा रक्त बरन ह्वइजाय ॥
क्षत्री भागि गये आगेते ❋ रुपना निकरि गयो वापार ।
देखि तमाशा यह बारीको ❋ नैपालीने कही सुनाय ॥
नेगी जालिम है महुबेको ❋ अकिले करी कठिन तलवारि ।
जिनके नेगी ऐसे जालिम ❋ तिन क्षत्रिनते कहा बसाय ॥
यह सुनि जोगा भोगा बोले ❋ दादा धीर धरहु मनमाहिं ।
जितने आये हैं महुबेते ❋ सबकी कटा दिहैं करवाय ॥
यह कहि जोगाभोगा चलिभयो ❋ औ लश्करमें पहुंचे जाय ।

बोलि दरोगा तोपनवालो ❁ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❁ सो चरखिनपर देउ चढ़ाय ।
हाथिनवालेको बुलवायो ❁ चीरा कलँगी देइ इनाम ॥
हाथी सजवावौ जल्दीते ❁ औ लड़िबेको होउ तयार ।
घोड़नवालेको बुलवायो ❁ सिगरे घोड़ा लेउ सजाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❁ क्षत्री सजिकै होयँ तयार ।
डंका बाजो नैनागढ़में ❁ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❁ क्षत्रिन बांधि लिये हथियार ।
पहिल नगारामें जिनबन्दी ❁ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❁ क्षत्रिन धरे रकाबन पाय ।
चन्द्रवंश राठौर भदावर ❁ औ परिहार गुटैयाटार ॥
सूरजवंशी औ रघुवंशी ❁ क्षत्री सबै भये तैयार ।
कछवाहे पँवार यादव सब ❁ औ काबुलिया भये तयार ॥
बूँदीवाले औ हाड़ावाले ❁ औ गहलौत गौर चौहान ।
मारवाड़के सजे सिपाही ❁ तोमर वंशी भये तयार ॥
जितने क्षत्री नैनागढ़के ❁ सो सब साजि भये तयार ।
तोपैं सजि गइं नैनागढ़की ❁ सो आगेको दई जुताय ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❁ जोगा भोगा चले अगार ।
झंडा घूमैं दरियाइनके ❁ घूमत जावै लाल निशान ॥
लश्कर पहुँचि गयो धूरेपर ❁ मुर्चा बन्दी दई कराय ।
राम बनावै तौ बनिजावै ❁ बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
यहांकी बातैं तौ यहं छांड़ो ❁ अब आगेको सुनो हवाल ।
रंग बिरंगो रूपना देखो ❁ तब हंसि कही बीरमलिखान॥
कैसो गुजरी दरवाजेपर ❁ रूपन हाल देउ बतलाय ।
इतनी सुनिकै रुपना बोलो ❁ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
कठिन लड़ाई नैपालीकी ❁ हमते कछू कही ना जाय ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❁ औ बहि चली रक्तकी धार ॥

जबही नाम सुनो महुबेको ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ।
झुके सिपाही नैनागढ़के ❀ आमाझोर चली तलवार ॥
काम तुम्हारो हम करिआये ❀ दहिने भई शारदा माय ।
अब क्यों गाफिल तुम बैठे हो ❀ शिरपर फौज पहूँची आय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❀ दादा सावधान होइ जाउ ।
फौज आय गई नैनागढ़की ❀ अब लरिबेको हो तयार ॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
चौथे डंकाके बाजतखन ❀ लश्कर चला महोबे क्यार ।
घोड़ी कबुतरीत्यार खड़ीथी ❀ मलिखे फांदि भये असवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❀ ऊदनि फांदि भये असवार ।
चारिघरीको धावा करके ❀ रणखेतनमें पहुंचे जाय ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहिगो आध कोश मैदान ।
घोड़ा बढ़ाय दियो ऊदनिने ❀ औ जोगापै पहुंचे जाय ॥
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❀ तब जोगाने कही सुनाय ।
कौन देशते तुम आये हो ❀ आगे कहा तुम्हारो नाम ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ औ जोगाको दियो जवाब ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❀ जहंपर बसैं रजा परिमाल ॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ ऊदनि है नाम हमार ।
भाई ब्याहनको हम आये ❀ तुरतै भांवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनतैं जोगा जरिगये ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ।
ऊदनि लौटि जाउ महुबेको ❀ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
ब्याह न होइहैं हियं आल्हाको ❀ ओछी जाति बनाफर राय ।
धोखे रहियो ना माड़ौके ❀ जहं ले लियो बापको दांव ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है ❀ सबके लेहौं शीश कटाय ।

कुशल आपनी जो तुम चाहो ❋ अपनो कूच जाय करवाय ॥
इतनी बात सुनी जोगाकी ❋ तव हंसि कहीं उदैसिंह राय ।
बढ़िकै बातैं तुम बोलत हो ❋ नाहक रारि करत बिन काज ॥
रारि बढ़ैहो जो हमरे संग ❋ सबको कैद लिहौं करवाय ।
डंड बांधिकै नेपालीकी ❋ सातो भांवरि लिहौं डराय ॥
बिना विवाहे हमना जैहैं ❋ चाहै प्राण रहे की जायं ।
सुनतै जोगा गुस्सा होइकै ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती देदेउ मेरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउं उड़ाय ।
जान न पावैं मड़ुबेवाले ❋ सबकी कटा देउं करवाय ॥
इतनी सुनतै झुके खलासी ❋ औ तोपनपर पहुंचे जाय ।
लैके थैली बारूदनकी ❋ सो तोपनमें दई झुकाय ॥
गोला डारि दिये तोपनमें ❋ ऊपर रंजक दई धराय ।
दैदेइ बत्ती उन तोपनमें ❋ धुअंना रहेउ सरगमें छाय ॥
लौटे ऊदनि अपने दलमें ❋ तोपन बत्ती दई लगवाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ चहुंदिशिरही अंधेरिया छाय ॥
तोपैं छूटी दोनों दलमें ❋ गोला चलन लगे तत्काल ।
अररर अररर गोला छूटैं ❋ कह कह करै अगिनियां बान ॥
सननन सननन गोली छूटैं ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
दोनों फौजनके अन्तरमां ❋ अन्धाधुन्ध तोपनकी मारु ॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ।
गोला लागै जौन ऊंटके ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़नके ❋ सो गिरि परै भूमि भहराय ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सर्ग मड़राय ॥
बम्बको गोला जिनके लागै ❋ तिनको लगै ठिकाना ना
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके हाड़मांस छुटि
छोटी गोली जिनके लागै ❋ मानौं गिरह कबूत
बानके डंका जिनके लागैं ❋ तिन के दुइ खण्डा

चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ कोइ रजपूत न टारै पांव ।
तोपैं धैंधैं लाली होइ गइं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायं ॥
चढ़ी कमनियां पानी होइ गइं ❋ चुटकिनकेगे मांस उड़ाय ।
तोप रहकला पीछे छांड़े ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगा पांच कदम मैदान ॥
सांगै चलन लगी दोनों दल ❋ ऊपर बर्छिनकी भइ मारु ।
छुटे पिचक्का जहँ लोहुनते ❋ औ बुबकारिन बोलैं घाव ॥
बूड़ि जुलफियां गइँ लोहुनते ❋ चर्बी अङ्ग गई लपिटाय ।
हौदा भरिगये तब लोहुनते ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार ॥
तीन घरीभरि बजो सांगड़ा ❋ भारी भइ बर्छिनकी मारु ।
भाला टूटिके दोना ह्वइ गये ❋ लट्टुवा कटि बर्छिन के जाय ॥
यहौ लड़ाई पाछे परिगइ ❋ अब आगेके सुनौ हवाल ।
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार ॥
खट खट खट चलै शिरोही ❋ बोलै छपक छपक तलवार ।
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
तेगा चटकै बर्दवानका ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ।
पैदल अभिरे तहँ पैदल संग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलि गये ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दात ।
आठ कोस केरे गिरदामें ❋ चारों ओर चलै तलवार ॥
पैदल गिर गये पैग पैगपर ❋ उनके दुइदुइ पैग असवार ।
रेख उठंते क्षत्री गिर गये ❋ उन तिरियन घर कौन हवाल ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ।
कटि गये कह्वा जिन घोड़नके ❋ धरती गिरे करौंटा खाय ॥
कटि भुजदण्डैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटै सिपाहिन क्यार ।
पगिया डारी जो लोहूमें ❋ मानौ ताल फूल उतरायँ ॥
परे दुशाला जे लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार ।

ढालैं डारी हैं लोहूमें ❋ मानौं कछुवासी उतराय ॥
परी बँदूकै हैं लोहूमें ❋ मानौ नाग रहे मन्नाय ।
डारे घैहा रणमें लौटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रट लागि ॥
मोहर कटोरा पानी ह्वइगौ ❋ रणमें कोइ न पूंछे बात ।
झुके सिपाही मह्वुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि ॥
मुर्चंन मुर्चंन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार ॥
काम हमारे पूरन ह्वइहैं ❋ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ।
दै दै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥

कुण्डलिया

कीजै रणमें आयकै, यारौ युद्ध अघाय ।
दुशमनको हनि डारिये, आगे धरिये पाँय ॥
आगे धरिये पाँय मोह मनमें नहिं कीजे ।
रणमें करि संग्राम पाँव पाछे नहिं दीजै ॥
हितसों करिकै ध्यान शूरता यही बिचारौ ।
रणते कायर भगैं शूर भागैं नहिं यारौ ॥ १ ॥

बढ़े सिपाही मह्वुबेवाले ❋ अपनो मयामोह बिसराय ।
भगे सिपाही नैनागढ़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ औ रणदुलहा चले बराय ।
कोऊ रोवत हैं लड़िकनको ❋ कोऊ पुरिखनको चिल्लाय ॥
कोऊ रोवै घरतिरियनको ❋ अबहीं लाये गोनवाँ चार ।
तीन लाखते जोगा आयो ❋ रहि गयो डेढ़लाख असवार ॥
भगत सिपाही जोगा देखौ ❋ तब भोगाते कही सुनाय ।
खबरि सुनावौ तुम राजाको ❋ रहि गयो डेढ़लाख असवार ॥
डेढ लाख क्षत्री रण जूझे ❋ मह्वुबेवालेन दिये गिराय ।
इतनी सुनतै भोगा झपटेउ ❋ औ नैनागढ़ पहुँचो जाय ॥

जहां कचहरी नैपालीकी ❋ भोगा हाल सुनावन लाग ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
तीनि लाख लश्कर हम लैगे ❋ रहिगै डेढ़ लाख असवार ।
डेढ़ लाख जूझे रणभीतर ❋ महुबेवालेन दिये गिराय ॥
दश हजार महुबेके जूझे ❋ ऐसी कठिन करी तलवार ।
सुनवां बहिनीके कारणते ❋ सिगरी फौज गई बिल्लाय ॥
ब्याह जो ह्वइहै कहुँ आल्हासंग ❋ कोइ न पियै घड़ाको पानि ।
इतनी बात सुनी राजाने ❋ तब भोगाको दियो जवाब ॥
धीरज राखौ अपने जियमें ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय ।
राजा उठिके गये महलमें ❋ औ लै आये ढोल उठाय ॥
अमर ढोल लै दइ भोगाको ❋ यहु दलमाहिं बजावौ जाय ।
मूर्छा जगिहै सब शूरनकी ❋ तुम्हरो काम सिद्धि होइ जाय ॥
लैकै ढोल गयो भोगा तब ❋ औ लश्करमें पहुँचो जाय ।
ढोल बजाय दई भोगाने ❋ क्षत्री उठे भरहरा खाय ॥
सुनतै घैहा उठि ठाढ़े भये ❋ जिनके मारु मारु रट लागि ।
हल्ला करि दियो जब जोगाने ❋ खट खट चलन लगी तलवार ॥
झुके सिपाही नैनागढ़के ❋ बढ़ि बढ़ि धरैं अगारी पांव ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ संझाकाल रहो नियराय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
एक बात अनहोनी होइ गइ ❋ ताको करिहौ कौन उपाय ॥
गिरे सिपाही फिरि उठिबैठत ❋ हमते लड़न लगत तत्काल ।
लड़ै हमारे कुछ ना होइहै ❋ ताते मूर्चा देउ हटाय ॥
कछु विचारिकरिकैफिरिलड़िहैं ❋ अपनो मतलब लिहैं बनाय ।
हुक्म फेरिकै बघऊदनिने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय ॥
लश्कर लौटि परो महुबेको ❋ औ डेरनपर पहुँचो जाय ।
सोचि समुझिके बघऊदनिने ❋ नैनागढ़की पकरी राह ॥
जहां महल है रनि सुनवांका ❋ पहुँचै तहां उदयसिंह राय ।

सुनवां ठाढ़ी सतखंडापर ❋ सो ऊदनितन रही निहारि ॥
सुरति सांवरे मुख नरियारे ❋ नैना हिरनाके उनहार ।
घोड़ा बेंदुला नाचत आवै ❋ शिरपर बंधी बैजनी पाग ॥
महल तरे ऊदनि आये जब ❋ सुनवां तुरत गई पहिचान ।
जूझको कंकन करमें देखो ❋ ओ सब लक्षण लिये मिलाय ॥
सिढ़ियनसिढ़ियनसुनवांउतरी ❋ औ खिरकीपै पहुंची आय ।
सुनवां रानी पूछन लागी ❋ देवर हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
लिखिकै पाती हमको भेजी ❋ आवौ साजि उदयसिंहराय ॥
फौज नशावनको लागी हौ ❋ तुम करि दिहो वंशकी हानि ।
जौन सिपाही हम मारत हैं ❋ सो उठि लरत हमारे साथ ॥
गिरे सिपाही क्यों उठि बैठत ❋ सो तुम हाल देउ बतलाय ।
भेद बताय देउ लश्करका ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
तापर ज्वाब दियो सुनवांने ❋ देवर सुनौ उदयसिंहराय ।
धोखे रहियो ना माड़ोके ❋ जहं लै लियो बापको दांव ॥
कठिन मवासी नैनागढ़ है ❋ जहंपर अमर ढोल घहराय ।
अम्मरढोल सुनै जो क्षत्री ❋ गिरिकै उठै भरहरा खाय ॥
यहु बरदान दियो इन्दरने ❋ सो हम भेद दियो बतलाय ।
पार न पैहो तुम नैनागढ़ ❋ तुमको जतन देउं बतलाय ॥
भोर होतही देवी पूजन ❋ ऐहौं अमर ढोल लै साथ ।
माली होइकै मठिया ऐयो ❋ तुमरो कामसिद्धि ह्वइजाय ॥
इतनी सुनतै ऊदनि लौटे ❋ औ लश्करमें पहुंचे आय ।
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा सुनौ वीर मलिखान ॥
नैना गढ़में हम ह्वइ आये ❋ सुनवां हाल दियो बतलाय ।
राति गुजार गइ जब लश्करमें ❋ भोरहिं उठे उदयसिंराय ॥
घोड़ा बेंदुलापर चढ़ि बैठे ❋ औ मठियापै पहुंचे जाय ।
माली बनिगे ऊदनिबांकुड़ा ❋ घोड़ा पीछे दियो बंधाय ॥

लैके डलिया कर फूलनकी ❋ बैठे सम्हरि उदयसिंह राय ।
यहविधि पहुँचे ऊदनिबांकुड़ा ❋ अब सुनवांको सुनो हवाल ॥
सुनवां उतरी भोर होतखन ❋ पहुंची रंगमहलमें जाय ।
रानी देखो जब बेटीको ❋ पूँछन लागी हाल हवाल ॥
कौन कामको तुम आई हो ❋ सो तुम हाल देउ बतलाय ।
बोली सुनवां तब मातासे ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
पूजन जैहैं मैं देवीको ❋ अम्बर ढोल देउ मँगवाय ।
सुनतैं रानी बोलन लागी ❋ ढोल न दैहैं बाप तुम्हार ॥
यहसुनि सुनबां तुरतैं बोली ❋ माता वचन करौ परमान ।
ढोल न पैहौ जो पूजनको ❋ तो हम पेटु मारि मरिजाउं ॥
इतनी सुनतै रानी चलिभइ ❋ औ राजापै पहुँची जाय ।
हाथ जोरिकै रानी बोली ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
देवी पूजन बेटी जैहैं ❋ अम्मर ढोल देउ मंगवाय ।
बोले राजा तब रानीते ❋ अम्मरढोल मिलनको नाहिं ॥
तब फिरि रानी बोलनलागी ❋ हमरे वचन करौ परमान ।
जौ न दैहौ अमरढोल तुम ❋ बेटी दैहैं प्राण गंवाय ॥
तीनि घरी पूजामें लगिहैं ❋ नाहक रारि बढ़ावत आज ।
ढोल मंगाय देउ जल्दीते ❋ जामें दोउ धर्म रहिजायं ॥
बाति मानि लइ तब राजाने ❋ अम्मर ढोल दई मंगवाय ।
ढोलक लैके रानी आई ❋ औ सुनवांको दई गहाय ॥
बहुत खुशीहइ सुनवा बेटी ❋ अपनी सखियां लई बुलाय ।
देवी पूजन सुनवां चलिभइ ❋ औ मठियामें पहुंची जाय ॥
ढोल बजावत सुनवां आई ❋ बैठे जहां उदयसिंहराय ।
करो इशारा तब ऊदनिको ❋ अम्मरढोल दई धरवाय ॥
पूजा करन लगी मठियामें ❋ ऊदनि ढोलक लई उठाय ।
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❋ औ लश्करमें पहुंचे जाय ॥
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❋ दादा मेरे बीर मलिखान ।

अमर ढोल यह हम लै आये ❋ अब ना राखो देर लगाय ॥
कूच कराय देव लश्करको ❋ गुजरै घरी घरीपर ब्याह ।
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ तुरत नगड़ची लिये बुलाय ॥
डंका बाजे मेरे लश्करमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
ऊदनि चढ़िगये रसबेंदुलपर ❋ घोड़ी कबुतरीपर मलखान ॥
ताल्हा सैयद हैं सिहिनिपर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ।
जगनिकचढ़ि गये हरनागरपर ❋ औ लश्कर संग भये तयार ॥
रूपना बारी महुबेवाला ❋ घोड़ा पपीहापर असवार ।
मन्ना गूजर जो महुबेको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ॥
सब दल सजिगौ महुबेवालो ❋ डंका होन गोलमें लाग ।
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
फौज पहूंची जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई करवाय ।
चलो सांड़िया रणखेतनमें ❋ औ नैनागढ़ पहुंचो जाय ॥
खबरि सुनाई नैपालीको ❋ लश्कर खेत पहुंची आय ।
इतनी सुनतै नैपालीने ❋ अपनो बेटा लियो बुलाय ॥
पटनावालो पूरन राजा ❋ ताको तुरत लियो बुलवाय ।
फौज सजाय लेउ जल्दीसे ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ तुरतै कूच जाउ करवाय ।
जोगा भोगा बिजया बेटा ❋ चौथे पूरन संग लिवाय ॥
हुक्म पायकै चारौं चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुंचो जाय ।
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा नैनागढ़में ❋ लश्कर तुरत होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥

पहिले नगारामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
तीनों लरिका नैपालीके ❀ अपने घोड़नपर असवार ।
राजा पूरण संग चलिभये ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❀ जोगा घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जोगा बोले आगे बढ़िकै ❀ भारी जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आया है ❀ सो समुहे होइ देइ जवाब ॥
ऊदनि बढ़िगे तब आगेको ❀ औ समुहे ह्वइ देइ जवाब ।
हमीं शूरमा चढ़ि आये हैं ❀ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
व्याहन आये हम भैयाको ❀ सो तुम भांवरि देउ डराय ।
रारि बढ़ावौ ना आगेको ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
इतनी सुनतै जोगा जरि गये ❀ नैना अग्निज्वाल होय जाय ।
बोलेउ जोगा बघऊदनिते ❀ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
धोखे रहियो ना माड़ौके ❀ जहँ लैलियो बापको दाउँ ॥
जितने आये हौ महुबेते ❀ सबको कटा दिहौं करवाय ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिना बियाहे हम ना जैहैं ❀ चाहे प्राण रहैं की जाय ।
बातन बातन बतबढ़ ह्वैगे ❀ औ बातनमें बाढ़ी रारि ॥
हुक्म सुनाय दियो जोगाने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
मारि भगावौ इन पाजिनको ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❀ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
ऊदनि लौटे तब लश्करमें ❀ तोपन बत्ती दई लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुँवना रहो सरग मंडराय ।
गोला चलन लगे दोनों दल ❀ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
तीनि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरण ह्वइजायं ।
तोपैं छाड़ि दई क्षत्रिनने ❀ जिनपर हाथ धरो ना जाय ॥
दोनों सेना यकमिल ह्वइगइं ❀ ज्वानन हाथ गही तलवारि ।

झुके सिपाही दोनों दलके ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❀ औ असवारनते असवार ।
हौदाके सँग हौदा मिलि गये ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ॥
पैदल गिरि गये पैग पैगपर ❀ उनके दुइ दुइ पैग असवार ।
हाथी गरि गये बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
मुर्चन मुर्चन नचैं बेंदुला ❀ ऊदनि कहै पुकारि पुकारि ।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
बोले ऊदनि त्यहि रूपनाते ❀ भैया बहुत रहेउ हुशियार ।
ताल्हा सैयद बनरसवाले ❀ तिनते ऊदनि कही सुनाय ॥
सावधान मुर्चापर रहियो ❀ चाचा रखियो धर्म हमार ।
ऊदनि बोले फिरि ढेबाते ❀ भैया बहुत रहेउ हुशियार ॥
मामा जगनिकते फिरि बोले ❀ मामा सावधान होइ जाउ ।
कठिन लड़ाई नैनागढ़की ❀ मामा रखियो धर्म हमार ॥
ढेबा दबि गयो तब उत्तरको ❀ सैयद दक्खिनको दबि जायँ ।
जगनिकपहुँचि गयो पश्चिमको ❀ मन्ना पूरबको दबिजाय ॥
मन्ना गूजर रूपन बारी ❀ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
मलिखे ठाकुरकी धमकिनमें ❀ सब दल रैन बैन ह्वइजाय ॥
जौन गोल होइ मलिखे निकरैं ❀ तहँपर काटि करैं खरिहान ।
नचै बेंदुला बघ ऊदनिको ❀ भाला नागदौनिको हाथ ॥
क्यागतिबरणौंत्यहिअवसरकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
बाइस हौदा खाली करिकै ❀ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
जायकै पहुँचे तब जोगापर ❀ औ ऊदनिने कही सुनाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❀ देखें कापर राम रिसांय ॥
यहु मन भाय गई जोगाके ❀ तब ऊदनिने लगो बतान ।
तुम परदेशी हौ नैनागढ़ ❀ पहली चोट करौ तुम आय ॥
इतनी सुनकै ऊदनि बोले ❀ जोगा सुनौ हमारी बात ।
पहिल उचौनी हमना खेलैं ❀ ना भागेके परैं पिछार ॥

चोट चलाय लेउ अपनी तुम ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी सुनतै तब जोगाने ❀ करमें लीन्हीं लालकमान ॥
तीनि कमनियां भुजदंडनपर ❀ समुहे कैबर दियो चलाय ।
घोड़ा बेंदुला दहिने ह्वइगयो ❀ कैबर निकरि गयो वापार ॥
बचिगै ऊदनि रस बेंदुलपर ❀ जोगा लीन्हीं सांग उठाय ।
सो धरि धमकी बघऊदनिपर ❀ ऊदनि लैगये चोट बचाय ॥
बोले जोगा तब ऊदनिते ❀ ऊदनि सुनो हमारी बात ।
चुप्पै लौटि जाउ महुबेको ❀ अबहूँ मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ हम ना धरैं पिछारू पाँव ।
चोट आपनी औरौ करिलेउ ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी बात सुनी जोगाने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब ऊदनिने ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही जोगा मारी ❀ ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ।
कावा दैकै बघ ऊदनिने ❀ अपनो भाला दियो चलाय ॥
लगो चपेटा तब घोड़ाके ❀ घोड़ा पांच कदम हटिजाय ।
यह गति देखी जब जोगाकी ❀ तब भोगाने दियो जवाब ॥
सम्हरो ऊदनि तुम घोड़ापर ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
मलिखे आइ गये समुहेपर ❀ औ भोगाको दियो जवाब ॥
खबरदार घोड़ा पर बैठो ❀ तुमपर रहेउ काल मँडराय ।
इतनी सुनतै भोगा जरिगे ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब समुहेपर ❀ मलिखे लेगे चोट बचाय ।
गुर्ज उठाय लियो मलिखेने ❀ सो भोगापर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ाके ❀ घोड़ा बीस कदम हटिजाय ।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❀ औमलिखेते कही सुनाय ॥
हाथ चलैयो ना भोगापर ❀ नहिं कछुकाम बनैगो नाहिं ।
नेगु करैहै को मड़येतर ❀ ताते मानौ बात हमारि ॥
इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❀ तब हटि गये वीर मलिखान ।

घोड़ी बढ़ाय दई आगेको ❋ समुहे गोल गये समुझाय ॥
मलिखे ऊदनि दोनों बिचले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
भगे सिपाही नैनागढ़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
तीनि लाख लश्कर जोगाको ❋ रहि गये एक लाख असवार ।
कठिन लड़ाई भइ धूरैपर ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऊंचे खाले कायर भागे ❋ जे रण दुलहा चले बराय ।
भागो लश्कर नैपालीको ❋ महुबेवाले परे पिछार ॥
जोगा भोगा सोचन लागे ❋ अब लश्करको भयो विनाश ।
दोनों चलि भये नैनागढ़को ❋ औ दरबार पहूँचो जाय ॥
करी बन्दगी नैपालीकी ❋ औ लश्करको कहो हवाल ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ सब दल काटि करो खरिहान ॥
लश्कर भागि गयो खेतनते ❋ ताको करिहौ कौन उपाय ।
इतनी सुनतै नैपाली तब ❋ मनमें बहुत गयो घबराय ॥
चलि भये राजा फिर डयोढ़ीते ❋ आम खासमें पहुंचे जाय ।
देखि कोठरी तब राजाने ❋ अमर ढोल ना परी दिखाय ॥
देखि हकीकति राजा सोचैं ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
राजा लौटि परे बंगलाको ❋ औ लरिकनते कही सुनाय ॥
चोरी ह्वइगइ अमर ढोलकी ❋ सो लै गये बनाफरराय ।
चलि भये राजा तब बंगलासे ❋ देविकी मठी पहूंचो जाय ॥
पूजा करिकै जगदम्बाकी ❋ औ फिरि होम दियो करवाय ।
शीश चढ़ावनके हित राजा ❋ अपने मनमें कियो विचार ॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ राजा धीर धरो मनमाहि ।
ढोलक पाई तुम इन्दरते ❋ सो हम ढोलक दिहैं मंगाय ॥
इतनी सुनते राजा लौटे ❋ औ दरबार पहूंचे जाय ।
देवी पहुँची इन्द्रलोकमें ❋ औ वह ढोलक मांगन लागि ॥
बोले इंदर तब देवनते ❋ अबही मृत्युलोकको जाउ ।
अमरढोल लावो जल्दीसे ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥

देव झपटि गये मृत्युलोकको ❋ लाये अमरढोल तत्काल ।
बोले इंदर तब देवीते ❋ देवी सुनौ हमारी बात ॥
आल्हा अम्मर हैं दुनियामें ❋ यह बर दियो शारदा माय ।
काम नशैहैं सब आल्हाके ❋ जो अब ढोलक दिहौ गहाय ॥
हुक्म दै दियो यह इन्दरने ❋ औ देवनसे कही सुनाय ।
ढोलक फोरि देउ जल्दीते ❋ जामें दुऔ धर्म रहि जायँ ॥
देवी चलि भइ इन्द्रलोकते ❋ औ मठियामें पहुंची आय ।
सपना दीन्हों नैपालीको ❋ इन्दर ढोलक दई फुरवाय ॥
करौ लड़ाई तुम कोई विधि ❋ अपनो कारज लेउ बनाय ।
भोर होत खन नैपालीने ❋ अपनो कलमदान मंगवाय ॥
लैकै कागज कलपीवालो ❋ अरिनन्दनको लिखो हवाल ।
पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखो जुहार ॥
तेहिते पीछे लिखी हकीकति ❋ याको पढ़ियो चित्त लगाय ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहंपर बसत रजापरिमाल ॥
तहंते आल्हा ब्याहन आये ❋ ओछी जाति बनाफरराय ।
जो कहुं ब्याह होय आल्हा संग ❋ तौ रजपूती जाय नशाय ॥
जल्दी आवो सुन्दर बनते ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❋ जिनते हारि गई तलवारि ॥
यहिविधिचिट्ठी राजालिखिकै ❋ सो धावनको दई गहाय ।
लैकै पाती धावन चलि भयो ❋ औ सुन्दर बन पहुंचो जाय ॥
जहां कचहरी अरिनन्दनकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी अरिनन्दनकी ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदल गइ अरिनन्दनकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
खोलिकै पाती राजा बांची ❋ आंकुइ आंकु नजरि कैजाय ॥
तुरत नगड़ची को बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
बजो नगाड़ा तब लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।

तीसरे डंकाके बाजत खन ❁ क्षत्रिन धरे रकाबन पांव ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❁ बांके घोड़नपर असवार ॥
पैदल सजि गये सुन्दर बनके ❁ जिनके सजत न लागीबार ।
चौथे डंकाके बाजत खन ❁ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
करी तयारी तब अरिनन्दन ❁ घट गंगाजल लियो मंगाय ।
करि अस्नान ध्यान शंकरको ❁ पूजी बहुरि शारदा माय ॥
चन्दन दीन्हो निज माथेपर ❁ भुजदंडनमें लियो लगाय ।
लंग चढ़ाई रेशमवाली ❁ जामें तेगा नहिं अनियाय ॥
बारह छुरियाँ कम्मर बांधे ❁ कलहा दुइ बांधे तलवारि ।
अगलबगलपर दुइ पिस्तौलें ❁ दहिने सिंहिनि मूंठि कटार ॥
भाला सोहैं नागिदौनिको ❁ बायें ओर गैंड़की ढाल ।
अपनो हाथी त्यार करायो ❁ औ अरिनन्दन भयो सवार ॥
लश्करचलिभयोअरिनंदनको ❁ नैनागढ़की पकरी राह ।
तीनि दिना मारगमें लागे ❁ औ धूरेपर पहुंचे जाय ॥
लश्कर उतरि परो नदीपर ❁ अपने डेरा दिये लगाय ।
नावैं भेजि दई नदीपर ❁ तिनपर नाच दियो करवाय ॥
वही समैया आल्हा आये ❁ नदी करन हेत स्नान ।
नचैं कञ्चनी तहं नावनपर ❁ जिनकी शोभा कही न जाय ॥
तान मनोहर तिनकी सुनिकै ❁ आल्हा निकट पहूंचे जाय ।
सूरति देखी अरिनन्दनते ❁ तब आल्हाते पूछन लाग ॥
कहांके वासी तुम ठाकुर हो ❁ आगे काह तुम्हारो नाम ॥
बोले आल्हा अरिनन्दनते ❁ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
हम रहवैया हैं महुबेके ❁ जहंपर बसत रजा परिमाल ॥
तिनके घरमें हम उपजेहैं ❁ राजा दस्सराजके लाल ।
नाम हमारो सब जानत है ❁ आल्हा नाम प्रगट संसार ॥
इतनी बात सुनी अरिनन्दन ❁ तब आल्हाते लगे बतान ।
नगर महोबेमें पारस है ❁ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥

बड़े प्रतापी चन्देले हैं ❀ तुम्हरो नाम जगत सरनाम ।
हियां नावपर तुम चढ़ि आयो ❀ देखो नाच कञ्चनिन क्यार ॥
इतनी सुनिकै राजा चढ़िगै ❀ राजा चौकी दई डराय ।
बैठिकै आल्हा देखन लागे ❀ सुन्दर नाच कञ्चनी क्यार ॥
देखि दुचित्तो तब आल्हाको ❀ राजा नाव दई खुलवाय ।
मारौ धक्का मल्लाहनने ❀ लागी जाय नाव वा पार ।
कैद कराय लई आल्हाको ❀ सुन्दर बनकी पकरी राह ॥
बहुतदेर आल्हाको ह्वइगइ ❀ ऊदनि सोचि सोचि रहि जाय ।
तौलौं रुपना आय पहूँचो ❀ ताते ऊदनि पूछन लाग ॥
आल्हा दादाको कहँ छांडेउ ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
इतनी सुनिकै रुपना बोलेउ ❀ हमते कछू कही ना जाय ॥
जो अरिनन्दन सुन्दरबनके ❀ सो नदी पर पहुँचे आय ।
नाव लगवाई जब नदीमें ❀ तिनपर नाच दियो करवाय ॥
आल्हा निकट गये नावनके ❀ अरिनन्दनने लियो बुलाय ।
ऊंची चौकी तिन डरवाई ❀ आल्हा बैठि गये अरगाय ॥
देखिदुचित्ता जब आल्हाको ❀ राजा नाव दई खुलवाय ।
पार लागिगइ जब नौका वह ❀ आल्हा कैद लियो करवाय ॥
कूच कराय दियो अरिनन्दन ❀ सुंदरबनको गयो लिवाय ।
मलिखे सोचैं अपने मनमें ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❀ अबहीं कैद लेयं छुड़वाय ।
ऊदनि बोले तब मलिखेते ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
तुरत बुलाय लियो ढेबाको ❀ भैया सगुन देउ बतलाय ।
खोलि पत्तरा ढेबा बोलेउ ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
रूप बनाओ सौदागरको ❀ घोड़ा बेंदुला लेउ सजाय ।
घोड़ाकरेलियाको सजवायो ❀ औ सुन्दर वन जाउ लिवाय ॥
करौ बहना तुम बेचनको ❀ आल्हे लैयो सङ्ग लिवाय ।
इतनी सुनते ऊदनि बांकुड़ा ❀ घोड़ाकरेलिया लियो मंगाय ॥

घोड़ा बेंदुलाको मँगवायो ❀ औ कठलानी दई धराय ॥
तंग खिचाय दिये रेशमके ❀ सुन्दर जीन दिये कसवाय ।
डारि रकाब दइ चांदीकी ❀ बारन मोती दिये पुराय ॥
कलंगी लैके मोतीचूरकी ❀ सो धरवाई उदयसिंहराय ।
डारि हमेलैं दई कण्ठनमें ❀ माथे हीरा दिये धराय ॥
झूला डारि दई मखमलकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
रूप बनायो सौदागरको ❀ ऊदनि कूच दियो करवाय ॥
चारि दिना मारगमें बीते ❀ सुन्दरबनमें पहुँचे जाय ।
लगी कचहरी अरिनन्दनकी ❀ अजगर लागि रहो दरबार ॥
ऊदनि पहुँचे जब फाटकपर ❀ दरवानीने कही सुनाय ।
कौन देशके तुम वासी हो ❀ औ है कहा तुम्हारो काम ॥
बोले ऊदनि दरवानीते ❀ राजै खबरि सुनावो जाय ।
यक सौदागर है घोड़नको ❀ अच्छे घोड़ा लेउ खरीद ॥
इतनी सुनतै दरवानीने ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ।
सौदागर आयो घोड़नको ❀ सो तुम देखि लेउ महराज ॥
ऐसे घोड़ा हम ना देखे ❀ जिनको रूप न बरनो जाय ।
इतनी सुनतै दरवानी तब ❀ अरिनन्दनने कही सुनाय ॥
जल्दी भेजौ तुम घोड़नको ❀ सौदागरको देउ पठाय ।
सुनतै लौटा दरवानीते ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
ओ सौदागर काबुलवाले ❀ जल्दी घोड़नको लै जाउ ।
ऊदनि चलिभयेलै घोड़नको ❀ बीच कचहरी पहुंचे जाय ॥
देखे घोड़ा अरिनन्दनने ❀ औ सौदागर बात ओनाउ ।
मोल बतावौ इन घोड़नको ❀ सांचे दाम देउ बतलाय ॥
ऊदनि बोले तब राजाते ❀ राजा सुनौ हमारी बात ।
बड़े मोलके ये घोड़ा हैं ❀ अबहीं मोल बतैहैं नाहिं ॥
पहिले फेरि लेउ घोड़नको ❀ इनकी चाल लेउ पहिचान ।
तबहीं कीमति मालुम हुइ है ❀ सो तुम जानि लेउ महराज ॥

इतनी बात सुनी अरिनन्दन ❀ सब क्षत्रिनको लियो बुलाय।
चाल दिखावौ इन घोड़नकी ❀ हमरे सम्मुहे देउ फिराय॥
जो क्षत्री सम्मुहे पर आवै ❀ सो घोड़नको देखि डराय।
ज्वाब दै दियो सब क्षत्रिनने ❀ हमते ये फिरिबेके नाहिं।
बोले ऊदनि तब राजाते ❀ राजा वचन करौ परमान॥
घोड़ा लाये हम काबुलते ❀ बेंचे पांच महोबे माहिं।
दुइ घोड़ा झुन्नागढ़ बेंचे ❀ ये उड़ि जायं पवनके साथ॥
होय ज्वान जो झुन्नागढ़का ❀ या कोउ होय महोबियाज्वान।
तेहि बुलवावौ यहि समयापर ❀ सो घोड़नको लेउ फिराय॥
इतनी सुनतै अरिनन्दनने ❀ तब आल्हाको लियो बुलाय।
औ यह हुक्म दियो आल्हाको ❀ घोड़ा फेरि दिखावौ आय॥
कैद माफ तुम्हरी करि देहैं ❀ जो तुम चाल देय दिखलाय।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❀ सुमिरेउ कृष्णचन्द्रभगवान॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम।
कूदि बछेरापर चढ़ि बैठे ❀ ऊदनि करो इशारा आय॥
ऊदनि चढ़ि गये रसबेंदुलपर ❀ मनियां सुमिरि महोबेक्यार।
ऐंड़ लगाय दई घोड़नके ❀ फाटक निकरि गये वा पार॥
धावा मारो एक दिनाको ❀ औ लश्करमें पहुँचे जाय।
करी बन्दगी नर मलिखेको ❀ औ ऊदनिने कही सुनाय॥
करौ तयारी अब लड़िबेको ❀ दादा भांवरि लेउ डराय।
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❀ लश्कर सबै होय तैयार।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लियो हथियार।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्रिन धरे रकाबन पांव॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़ि गये ❀ बांके घोड़नके असवार।
घोड़ बेंदुलापर ऊदनि हैं ❀ घोड़ी कबुतरीपर मलिखान॥

हथिपचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा हरनागरपै जगनिक है ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ।
घोड़ा करेलियापर सुलिखे है ❋ सैयद सिंहिनपर असवार ॥
मन्ना गुजर महुबेवाला ❋ सोऊ तुरत भयो तैयार ।
रुपना बारी महुबेवाला ❋ घोड़ी हिरौंजिनिपर असवार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर चल्यो बनाफरक्यार ।
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनते ❋ यारो सुनौ हमारी बात ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❋ तुम सब भैया लगौ हमार ।
जोतिके चलिहौ जब महुबेको ❋ सबकी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा सब क्षत्रिनको ❋ औ आगेको दियो बढ़ाय ।
लश्कर पहुंचो रणखेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
खबरि सुनी जब नैपालीने ❋ तीनौ लरिका लियो बुलाय ।
जल्दी लश्कर तुम सजवावो ❋ महुबेवारेन देउ भगाय ॥
जोगा भोगा बिजया बेटा ❋ तीनों लश्कर पहुंचे जाय ।
हुक्म दे दियो तब लश्करमें ❋ डंका तुरत दियो बजवाय ॥
बजो नगाड़ा नैना गढ़में ❋ क्षत्री होन लगे तैयार ।
मारू डंकाके सुनतै खन ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
तीनों लरिका नैपालीके ❋ तुरतै घोड़न भये सवार ।
पूरन राजा पाटनवालो ❋ अपने हाथीपर असवार ॥
लश्कर चलि भयो नैनागढ़ते ❋ औ खेतनमें पहुंचो जाय ।
आगे बढ़िकै जोगा बोला ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
कूच कराय जाउ महुबेको ❋ नाहक देहौ प्राण गंवाय ।
बोले ऊदनि तब जोगाते ❋ जल्दी भांवरि देउ कराय ॥
कही हमारी जोगा मानौ ❋ नाहक रारि बढ़ावत आय ।
इतनी सुनिकै जोगा बोलेउ ❋ यहंपर ब्याह होनको नाहिं ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ अपनो कूंच जाउ करवाय ।
इतनी सुनतै ऊदनि तड़पे ❋ औ जोगाको दियो जवाब ॥

ब्याहकै जैहैं नैनागढ़ते ❋ हमरो नाम उदयसिंह राय ।
हम हैं लड़िका दस्सराजके ❋ रानी देवकुंअरिके लाल ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगै ❋ औ बातनमें बढ़िगइ रारि ।
जोगा लौटि परो लश्करमें ❋ तोपन बत्ती दई लगवाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ गोला चलन लगे तत्काल ।
अररर अररर गोला छूटैं ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन होइ जायँ ।
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
खट खट खट खट तेगा बाजै ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
झुके सिपाही महुबे वाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही नैनागढ़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
भगत सिपाही जोगा देखे ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जोगा बोलेउ तब ऊदनिते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
शूर जुझायेते का पैहौ ❋ हम तुम खेलैं जूझ अघाय ॥
यहु मन भाइ गई ऊदनिके ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
चोट आपनी जोगा करिलेउ ❋ मनके मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी बात सुनी जोगाने ❋ तुरतै लीन्हीं लाल कमान ।
हिकरा डटिके बघऊदनिको ❋ समुहे छांड़ि कैबरी दीन्ह ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो ❋ कैबर निकरि गयो वापार ।
भाला लैकै फिरि जोगाने ❋ बघऊदनिपर दियो चलाय ॥
बचिगा बेटा दस्सराजका ❋ जोगा खैंचि लई तलवार ।
चोट चलाई जब ऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ जोगाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहि जाय ।
जोगा सोचे अपने मनमें ❋ हमरो काल रहो नियराय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ औ जोगाको दियो गिराय ।
भुजा पकरिकै त्यहि जोगाकी ❋ ऊदनि लियो जंजीरन बांधि ॥
देखि हकीकत यहु भोगाने ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।

घोड़ी दाबे मलिखे आये ❀ औ भोगाते कही सुनाय ॥
खबरदार घोड़ापर रहियो ❀ तुमपरि आय गयो मलिखान ।
इतनी सुनतै भोगा ठाकुर ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका नर मलिखेपर ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
तीनि शिरोही भोगा मारी ❀ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ॥
ढालकि औझड़ मलिखे मारी ❀ औ भोगाको दियो गिराय ।
दंड बांधिलइ तब भोगाकी ❀ तुरतै कैद लई करवाय ॥
यह गति देखी जब बिजयाने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
ढेबा आय गयो सम्मुहे पर ❀ औ बिजयाते कही सुनाय ॥
हमरी तुमरी अब बरनी है ❀ देखे कापर राम रिसायँ ।
इतनी सुनकै तब बिजयाने ❀ तुरतै खैंचि लई तलवारि ॥
सो धरि धमकी नर ढेबापर ❀ ढेबा दीन्हो ढाल अड़ाय ।
तीनि शिरोही बिजया मारी ❀ ताकी टूटि गई तलवारि ॥
बिजया सोचै अपने मनमें ❀ हमरो काल रहेउ नियराय ।
ढालकि औझड़ ढेबा मारी ❀ औ बिजयाको दियो गिराय ॥
मुश्कबांधिकैत्यहिबिजयाकी ❀ तुरतै लई कैद करवाय ।
देखि हकीकति पूरन राजा ❀ अपनो हाथी लियो बढ़ाय ॥
तौलौंजगनिकदाखिलह्वैगये ❀ औ पूरनको घेरचो आय ।
सम्हरिकै बैठो तुम हाथीपर ❀ तुम्हरो काल रहेउ नगिचाय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो जगनिकने ❀ दुइ मस्तीक अड़ाये पांव ।
करो जड़ाका इक हाथीपर ❀ मारि महावत दियो गिराय ॥
देखि तमाशा पूरन राजा ❀ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय ।
सोधरिधमके उनजगनिकपर ❀ जगनिकले गये चोट बचाय ॥
घोड़ा बढ़ाये फिर जगनिकने ❀ सो हौदापर पहुंचे जाय ।
खैंचि शिरोही लइ जगनिकने ❀ सो हौदामें दियो चलाय ॥
चोट बचाय लियो पूरनने ❀ मनमें बहुत गये घबराय ।
कलशा गिरि गये अम्बारीके ❀ सोने फूल गिरे झन्नाय ॥

गाफिल करिकै उन पूरनको ❀ जगनिक लीन्हों कैद कराय ।
चारौ बंधि गयें जब खेतनमें ❀ लश्कर रैन बैन होइ जाय ॥
लश्कर लौटि परो आल्हाको ❀ औ डेरापर पहुंचो जाय ।
जीति देखिकै तुनि आल्हाकी ❀ माहिल उरई के परिहार ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे ❀ नैनागढ़की पकरी राह ।
जहां कचहरी नैपालीकी ❀ माहिल तहां पहूँचे जाय ॥
उतरि बछेरीते भुँइ आये ❀ नैपालीको करी सलाम ।
नजरि बदलि गइ नैपालीकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय
माहिल बोले तब राजाते ❀ हमते कछू कही ना जाय ॥
बड़े शूर हैं महुबेवाले ❀ तिनको कोउ जितैया नाहिं ।
बांधे लड़िका सब तुम्हरे उन ❀ औ पूरनको लियो बँधाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❀ ताते ब्याह मुनासिब नाहिं ।
जतन बतावैं हम तुमको अब ❀ सो तुम मानि लेउ महराज ॥
करि आधीनी तुम आल्हाते ❀ लावो अपने सँग लिवाय ।
क्षत्री बठारो कोठरिनमें ❀ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिलइ नैपालीने ❀ तब चलिबेको भये तयार ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❀ नेगी लीन्हे संग लिवाय ॥
चलिभयो राजा नैनागढ़ते ❀ आये जहां बनाफर राय ।
तहं नैपाली पूछन लागे ❀ औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
कौनसो तम्बू है आल्हाको ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
रूपना बारी बोलन लागेउ ❀ नैपालीते कही सुनाय ॥
ऊंचा तंबू है आल्हाको ❀ झंडा लाल बरन फहराय ।
चोपदार द्वारेपर ठाढ़े ❀ तहं तुम चले जाउ महराज ॥
तब नैपाली गयो तंबूमें ❀ औ आल्हाको करी जोहार ।
सूरति देखी नैपालीको ❀ आल्हा चौकी दई डराय ॥
करी अधीनी नैपालीने ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल ।

धन्य भाग्य रानी देवैके ❋ जहँ तुम आनि लियो औतार॥
धन्य भाग्य है परिमालेके ❋ जिनघर तुम समान सरदार।
धनिधनि नगर महोबा कहिये ❋ प्रगटे जहां बनाफरराय॥
धन्य भाग्य हमारी बेटीके ❋ ऐसे शूर मिले घर आय।
अबहीं साइति है ब्याहेकी ❋ देवा लग्न करो तुम ब्याह॥
होयँ घरैया जो तुम्हरे कोउ ❋ सो सब चलैं हमारे साथ।
बातें सुनिकै नैपाली की ❋ तुरतै कही बीर मलिखान॥
डंका बाजै हमरे दलमें ❋ लश्कर साजि होय तैयार।
बोले नैपाली मलिखेते ❋ तुम सुनि लेउ बनाफरराय॥
काम नहीं है तहँ लश्करको ❋ अकिले आल्है देउ पठाय।
तुरतै भांवरि करि आल्हाकी ❋ अबहीं विदा दिहौं करवाय॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ तुम घटि करौ हमारे साथ।
सुनतै राजा नैपालीने ❋ तुरतै गंगा लई उठाय॥
सांची मानि लई आल्हाने ❋ अपनी त्यारी दई कराय।
मलिखे सुलिखे ऊदनि ढेबा ❋ मन्ना गूजर भयो तयार॥
रूपना बारी ताल्हन सैयद ❋ अपनी त्यारी दई कराय।
चारौ नेगी संग लिवाये ❋ आल्हा पलकी भये सवार॥
चली पालकी जब आल्हाकी ❋ जोगा भोगा दियो छोड़ाय।
बिजया बेटा औ पूरनकी ❋ तुरतै कैद दई छुड़वाय॥
आठ घरौआ औ सब नेगी ❋ नैगागढ़में पहुंचे आय।
जाय पहूंचे दरवाजेपर ❋ तब नैपाली कही सुनाय॥
मंड़वा गाड़ि देउ आंगनमें ❋ चारौ नेगी लेउ बुलाय।
इतनी सुनि जोगा भोगाने ❋ सिगरे नेगी लिये बुलाय॥
मँड़वा गड़वायो आंगनमें ❋ सखियां करैं मंगलाचार।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ ब्याहकि वेदी दई बनाय॥
करी सलाहैं नैपालीने ❋ सब लरिकनको लियो बुलाय।
दुइ हजार क्षत्री बुलवाये ❋ सो कोठरिनमें दिये छिपाय॥

भयो बुलौवा तुनि आल्हाको ❋ सब मड़येतर पहुँचे जाय ।
फाटक बन्द भयो द्वारेको ❋ तुरतै ब्याह होन तब लाग ॥
पहिली भांवरिके परतै खन ❋ जोगा खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब आल्हापर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भांवरिके परतै खन ❋ भोगा खैंचि लई तलवारि ।
चोट चलाई जब आल्हापर ❋ ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तिसरी भांवरिके घूमत खन ❋ बिजया खैंचि लई तलवारि ।
कीन्ही चोट जबहिं आल्हापर ❋ ढेबा ले गयो चोट बचाय ॥
घाव न आयो कछु आल्हाके ❋ दहिने भई शारदा माय ।
चौथी भांवरिके परतै खन ❋ राजा जादू लियो उठाय ॥
जादू डारि दियो सबहिनपर ❋ सबके होश बन्द ह्वइजाय ।
सुनवां सोच करै अपने मन ❋ अब सब जैहै काम नशाय ॥
वीर महमदावाली पुरिया ❋ सो सुनवांने दई चलाय ।
भई लड़ाई तब जादूकी ❋ भांवरि फिरी बनाफरराय ॥
बोली सुनवां बघ ऊदनिते ❋ अबहीं बिदा लेउ करवाय ।
सुनतै ऊदनि रूपनै बोलेउ ❋ भैया सुनो हमारी बात ॥
पलकी लावौ दरवाजेते ❋ अबहीं बिदालेयँ करवाय ।
सुनतै रूपना गयो द्वार पर ❋ तुरत पालकी लाओ लिवाय ॥
सुनवां बैठि गई पलकीमें ❋ राजा हल्ला दियो कराय ।
जान न पावैं मड़ुबे वाले ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
क्षत्री निकरि परे कोठरिनते ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार ।
बहुत लड़ाई भइ आंगनमें ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया मड़ुबेवाले ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
बहुतक भागि गये समुहैते ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
जोगा भोगा औ बिजयाकी ❋ मुश्क बांधि लई तत्काल ।
चली पालकी रनिसुनवांकी ❋ तीनौ भैया बढ़े अगार ॥
धावा करि दियो नैपालीने ❋ अपनो लश्कर संग लिवाय ।

खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवार॥
आठौ शूर महोबेवाले ❀ तहंपर कठिन करी तलवार।
सबके पीछे आल्हा रहि गये ❀ ऊपर परी गुर्जकी मार॥
पहुंचे नैपाली आल्हापै ❀ अपनी जादू दई चलाय।
कैद कराय लियो आल्हाको ❀ औ क्षत्रिनते कही सुनाय॥
हाथ चलैयो ना आल्हापर ❀ तीनों लड़िका बंधे हमार।
आल्है बांधि लेउ बदलेमें ❀ चुंगल दहक देउ डरवाय॥
ऐसे दहक परे आल्हा तब ❀ अब लश्करके सुनौ हवाल।
ऊदनि बोले नर मलिखेते ❀ दादा करिहौ कौन उपाय॥
पता नहीं है कहुं भैयाको ❀ ताको अब कछु करो उपाय।
भयो बुलौवा तब ढेबाको ❀ भैया सगुन देउ बतलाय॥
भैया लश्करमें नाहीं हैं ❀ सो कहं मिलिहैं देउ बताय।
खोलिके पत्रा ढेबा देखो ❀ औ मलिखेते कही सुनाय॥
आल्है बांधो नैपालीने ❀ चुंगुल दहक दियो डरवाय।
जाय छुड़ावौ सौदागर बन ❀ अपनो घोड़ा लेउ सजाय॥
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ तब सुनवाते कही सुनाय।
बाप तुम्हारे गंगा करिकै ❀ फिरि घटि करी हमारे साथ॥
बोली सुनवां तब ऊदनिते ❀ हमहूं चले तुम्हारे साथ।
घोड़ाकरिलियाकोसजवावौ ❀ औ सजिलेउ बेंदुला घोड़॥
खोज लगैहैं हम बालमकी ❀ तुम्हरो काम सिद्ध होइजाय।
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❀ ऊदनि फांदि भये असवार॥
घोड़ा करिलिया कोतल ह्वैकै ❀ संगै सुनवैं लियो लिवाय।
जाय पहूँचे नैनागढ़में ❀ औ मालिनि घर करो मुकाम॥
सुनवां बोलीत्यहि मालिनते ❀ पोहपा सुनौ हमारी बात।
हाल हमारो कोउ जानै ना ❀ पहुंचो राजद्वारमें जाय॥
देखिकै आवौ तुम बालमको ❀ हमको खबरि सुनावौ आय।
बोली मालिनि रनिसुनवांते ❀ अबहीं तुमहिं देउ बतलाय॥

शीशमहलमें आल्हा मिलिहैं ❀ पहुँचो गूजरि रूप बनाय।
इतनी सुनतै रनिसुनवांनें ❀ गूजरि रूप धरो तत्काल॥
धरी दहेंड़ी तब माथेपर ❀ औ महलनमें पहुँची जाय।
सूरति देखी जब गूजरिकी ❀ तब आल्हाने कहा सुनाय॥
बहुत पियारी हमको लागौ ❀ दहीको मोल देउ बतलाय।
बोली सुनवां तब आल्हाते ❀ गढ़ चित्तौर है देश हमार॥
मोहन राजाकी बेटी हौं ❀ तुम्हरी कैद लिहौं छुड़वाय।
देउ निशानी तुम हमको कछु ❀ आय छुड़ैहैं बापु हमार॥
इतनी सुनते काढ़ि अंगूठी ❀ सो सुनवा को दइ पकराय।
पहिरिमुँदरियासुनवांचलिभइ ❀ ओ मालिनि घर पहुँची जाय॥
बोली सुनवां बघ ऊदनिते ❀ देवर सुनौ हमारी बात।
जल्दी पहुँचो शीशमहलमें ❀ दोनों घोड़ा साथ लिवाय॥
ऊदनि चलिभये सौदागर बनि ❀ शीशमहलमें पहुँचे जाय।
जबहीं पहुँचे दरवाजेपर ❀ दरवानीने कही सुनाय॥
कौन देशसे तुम आये हौ ❀ यहांपर कौन तुम्हारो काज।
बोले ऊदनि दरवानीसे ❀ गढ़ काबुल है देश हमार॥
घोड़ा लाये हैं बेंचनको ❀ राजहिं खबरि सुनावौ जाय।
गयो दरवानी तब भीतरको ❀ औ घोड़नको कह्यो हवाल॥
राजा आये दरवाजेपर ❀ ऊदनि करी बंदगी आय।
देखी सूरति जब घोड़नकी ❀ राजा मोहि मोहि रहिजायँ॥
ऊदनि बोले तब राजाते ❀ ओ महराज गरीबनेवाज।
चाल देखिकै इन घोड़नकी ❀ पीछे कीमत देउ चुकाय॥
इतनी सुनिकै नैपालीने ❀ बहुतक क्षत्री लिये बुलाय।
चाल दिखाय देउ घोड़नकी ❀ तब क्षत्रिनने दियो जवाब॥
बहुतै चंचल ये घोड़ा हैं ❀ हमरे फेरनके हैं नाहिं।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ राजा सुनौ हमारी बात॥
बड़े चढ़ैया हैं दिल्लीके ❀ या महुबेके राजकुमार।

होय जो क्षत्री इनमें कोऊ ❋ सो घोड़नको दिहैं फिराय ॥
इतनी सुनतै नैपाली ने ❋ आल्है तुरत लियो बुलवाय ।
चाल दिखाय दियो घोड़नकी ❋ तुम्हरी कैद माफ होइ जाय ॥
देखि इशारा बघऊदनिको ❋ आल्हा बहुत खुशी होइ जायं ।
कूदि बछेड़ापर चढ़ि बैठे ❋ औ तंबुअनकी पकरी राह ॥
चारि घरीके तब अरसामें ❋ तंबुअन बीच पहूंचे जाय ।
सुनी खबरिया रनि सुनवांने ❋ तंबुअन गये बनाफर राय ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ औ लश्करमें पहुंची जाय ।
जोगा भोगा औ बिजयाकी ❋ तुरतै मुश्क दई खुलवाय ॥
धीरज दैकै उन तीनोंको ❋ आल्हा बहुत कीन्ह सन्मान ।
बहुत खुशी ह्वइ जोगा भोगा ❋ बिजया ठाकुर करी सलाम ॥
तीनों चलि भये नैनागढ़को ❋ पहुंचे चारि घरीमें जाय ।
हाल सुनायो नैपालीको ❋ कलहा दस्सराजको लाल ॥
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ सातौं भांवरि लई डराय ।
शूर प्रगट भये हैं महुबेमें ❋ क्यों ना राज्य करैं परिमाल ॥
राम बनावै तौ बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय ।
हियांकि बातैं तौ यहं छोड़ौ ❋ अब आल्हाको सुनो हवाल ॥
आल्हा बोले बघऊदनि ते ❋ भैया कूच दियो करवाय ।
आज्ञा सुनिकै उदयसिंहने ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
डेरा उखरि गये धूरेते ❋ जीतिको डंका दियो बजवाय ।
धावा करिकै सात रोजमें ❋ महुबे धुरो दबायो जाय ॥
रोज आठवें मदनताल पर ❋ सबने डेरा दियो डराय ।
फेट छूटि गई रजपूतनकी ❋ महुबे खबरि दई पहुंचाय ॥
रुपना बारी महुबे आयो ❋ दरवाजेपर पहुंचो जाय ।
ठाढ़ी मल्हना जहँ ड्योढ़ीपर ❋ हेरै बाट लरिकवन क्यार ॥
तौलौं रुपना दाखिल ह्वइगो ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ।

कठिन लड़ाई भै नैनागढ़ ❋ भारी बही रक्तकी धार ॥
जंग जीतिकै सब लरिकनते ❋ सातौ भांवरि लई डराय ।
काम बनि गयो नैनागढ़में ❋ माता सब परताप तुम्हार ॥
बिदा कराय लई सुनवांकी ❋ संगै डोला लियो फदाय ।
आइ बरायत मदनतालपर ❋ आगे खबरि दई पहुँचाय ॥
इतनो सुनिकै रानी मल्हना ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ।
खबरि फैलिगई रंगमहलमें ❋ आये ब्याहि बनाफरराय ॥
करी तयारी रनिमल्हनाने ❋ सखियां करैं मंगलाचार ।
उनहीं पांयन रुपना लौटो ❋ औ बरातमें पहुँचा आय ॥
खबरि सुनाई रंगमहलकी ❋ महलन होत मंगलाचार ।
इतनी सुनतै बघऊदनिने ❋ चूड़ामणिको लियो बुलाय ॥
साइत देखो घर जैबेकी ❋ अब पलपलपर होत अव्यार ।
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ अबही डोला देउ पठाय ॥
साइत नीकी है जैबेकी ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
भई तयारी तुनि आल्हाकी ❋ पालकी साथ सुनवंदे केरि ॥
आइपालकी रनि सुनवाकी ❋ हाथी खड़ा बनाफर क्यार ।
करी तयारी रनि मल्हनाने ❋ चौमुख दियना धरो बनाय ॥
साजि आरती मल्हनारानी ❋ देवै ब्रह्मा लई बुलाय ।
बारह रानी परिमालेकी ❋ सो लै थार पहूँची आय ॥
भयो बुलौआ तब आल्हाको ❋ संग चली सुनवंदे रानि ।
परिछनि कीन्हीं रनिमल्हनाने ❋ ऊपरि आरति लई उतारि ॥
सुनवां आल्हाको सँग लैकै ❋ सो महलनमें राखे जाय ।
आल्हा पांव छुये मल्हनाके ❋ औ माथेमें लिये लगाय ॥
देवै ब्रह्माके पद छुइ कै ❋ सबके चरण छुये मनलाय ।
बजी बधाई गढ़ महुबेमें ❋ घर घर भयो मंगलाचार ॥
सुनवां रानीने मल्हनाके ❋ हितते चरण छुये तब आय ।

भेंटमें दीन्हों करकंगन यक ❋ मल्हना दियो नौलखाहार ॥
मुख दिखराईमें रानिन सब ❋ बहु आभूषण दियो उतारि ।
परजा झगरे गढ़ महुबेके ❋ सबको मल्हना दियो इनाम ॥
ऊदनि पहुंचि गये लश्करमें ❋ सबको खिलतैं दईं बंटाय ।
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❋ आये जीति बनाफरराय ॥
आदर करिकै सब राजनको ❋ ऊदनि विदा दई करवाय ।
जितने राजा आये बराती ❋ अपने देश पहुंचे जाय ॥
ऐसे ब्याह भयो आल्हाको ❋ सो हम कहिकै दियो सुनाय ।
सांच झूंठ परमेश्वर जानैं ❋ पै हम सांचो दई बताय ॥
ब्याह सुनैहैं अब मलिखेको ❋ यारौ सुनिये कान लगाय ।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥
समय समयपर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।

इति नैनागढ़की लड़ाई समाप्त

श्री :

मलिखानका ब्याह

★

अथ पथरीगढ़ (कसौंदी) की लड़ाई

दोहा

भोलानाथ मनाय उर, धारि हिये घनश्याम ।
ब्याह कहौं मलिखानको, जो सहाय सियराम ॥ १ ॥

इतनी बेरिया अब क्या गैये ❋ शारद किसको लीजे नाम ।
आदि भवानीके गुण गैये ❋ जाते होयँ सिद्ध सब काम ॥
मातु सरस्वतीको सुमिरन करि ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
बीर पंवारा मैं गावत हौं ❋ होउ सहाय राम बलधाम ॥
पथरीगढ़ औ बिसहिन कहिये ❋ तिसरो कोट कसौंदी नाम ।
तीनि नाम हैं एक नगरके ❋ ब्याहे तहां वीर मलिखान ॥
तहँको राजा गज राजा है ❋ शंका करै कालकी नाहिं ।
श्यामाभगतिन गजराजाघर ❋ जो जादूमें बुरी बलाय ॥
घोड़ा अगनियां गजराजाको ❋ जो फौजनको देय भगाय ।
गजमोतिन बेटी राजाकी ❋ जाको रूप ना बरनो जाय ॥
सोहै चन्द्रमुखी मृगनैनी ❋ शोभा अङ्ग अङ्ग रहि छाय ।
बारह वर्षकेरि गजमोतिनि ❋ नित सखियनसंग खेलनजाय॥
यकदिनखेलनहितसखियनसंग ❋ फुलबगियामें पहुंची जाय ।
एक सखी उनमेंते बोली ❋ बेटी सुनौ विसेने क्यार ॥
तुम हौ बेटी गजराजाकी ❋ हैं परतापी बाप तुम्हार ।
बहुत पियारी हौ माताकी ❋ तुम्हरो कीन्हो नाहिं विवाह ॥
तुम्हरे संगकी जे सखियां हैं ❋ ब्याही सबै गइ ससुरारि ।

क्या धनहीन भये गजराजा ❀ या कुल घटो बिसेने क्यार ॥
इतनी बात सुनी गजमोतिनी ❀ मनमें बहुत गई खिसियाय ।
संगछोड़िदियोसबसखियनको ❀ औ माता ढिग पहुँची आय॥
आवत देखो जब माताने ❀ बेटिहिं लीन्हो कण्ठ लगाय ।
देखि अनमनीगजमोतिनको ❀ तब माताने कही सुनाय ॥
काहे बेटी तुम अनमनि हौ ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ।
बोली गजमोतिन माताते ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥
संग सहेली जो हमरी हैं ❀ हमपर करैं हँसौवा आय ।
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❀ जो तुम्हरो नहिं करत विवाह॥
इतनी बात सुनी माताने ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजाय।
दियो दिलासा तब बेटीको ❀ अबही टीका दिहौं पठाय ॥
राजा आये रंगमहलमें ❀ तब रानीने कही सुनाय ।
बारह वर्षकि बेटी ह्वैगइ ❀ क्यों नाहीं कहुँ करो विवाह ॥
टीका भेजि देउ बेटीको ❀ इतनी मानौ बात हमारि ।
इतनी सुनिकै राजा चलिभये ❀ औ दरबार पहूँचे जाय ॥
सूरज बेटाको बुलवायो ❀ चारौ नेगी लिये बुलाय ।
टीका बेटीको लै जावौ ❀ केहु राजाको देउ चढ़ाय ॥
एक न जैयो नगर महोबे ❀ जहँपर बसैं बनाफरराय ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❀ कोइ न पियै घड़ा को पानि ॥
दाग्यु लागि हैं रजपूतीमें ❀ बुड़ि है सात साखिको नाम ।
इतनी कहिकै गजराजाने ❀ सब समान लियो मंगवाय ॥
पांच पालकी नब्बे गजरथ ❀ अच्छे घोड़ा एक हजार ।
साल दुशाला मोहनमाला ❀ चीरा कलँगी दई सौंपाय ॥
थार मँगायो यक सोनेका ❀ कीमखाबके थान मँगाय ।
तोड़ा लैके दुइ मोहरनके ❀ सोउ थारमें दियो धराय ॥
टीका लैके तीनि लाखको ❀ सो नेगिनको दियो गहाय ।
टीकालैके नेगी चलि भये ❀ सूरज बेटा संग लिवाय ॥

करी बन्दगी गजराजाको ❁ औ दिल्लीकी पकरी राह ।
सात रोज मारगमें बीते ❁ तब दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
रात बसेरा करि बागनमें ❁ भोरहि करन तयारी लाग ।
तीन घरीको अरसा गुजरो ❁ औ फाटकपर पहुँचो जाय ॥
बोला दरवानी सूरजसे ❁ अपने हाल कहौ समुझाय ।
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❁ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
यह सुनि सूरज बोलन लागे ❁ राजा खबरि देउ पहुंचाय ।
पथरी गढ़ते सूरज आये ❁ गज राजाके राज कुमार ॥
टीका लाये हैं बहिनीका ❁ सोउ टीकाको लेउ चढ़ाय ।
उनहीं पायन गयो दरवानी ❁ राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बुलौआ तब सूरजको ❁ सो दरवार पहूँचे जाय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❁ पाती गद्दी दई चलाय ॥
पाती बांची पृथीराजने ❁ तुरतै पाती दई लौटाय ।
ब्याहु न करिहैं हम पथरीगढ़ ❁ ना हमफौज कटैहैं जाय ॥
ज्वाब पायके सूरज चलि भये ❁ औ कनउजमें पहुंचे जाय ।
लगी कचहरी जहँ जयचँदकी ❁ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
पाती दीन्ही सूरजमलने ❁ जयचँद पाती बांचन लाग ।
पाती फेरि दई जयचंदने ❁ ना बिसहिनमें रचैं विवाह ॥
कठिन मवासी कोट कसौंदी ❁ जहँ पर तपैं बिसेने राय ।
श्यामा भगतिन जादू फूँके ❁ लश्कर सूनसान ह्वइजाय ॥
फौज हमारी ना भारू है ❁ ना कुपियारो पुत्र हमार ।
पाती लैके सूरज लौटे ❁ औ उरईकी पकरी राह ॥
भेंट होइगै बघ ऊदनिते ❁ ऊदनि खेलन गये शिकार ।
राह चलन्ते सूरज देखे ❁ ऊदनि तुरत लियो पहचान॥
हँसिकै ऊदनि पूछन लागे ❁ ठाकुर हाल देउ बतलाय ।
कौन कामको तुम आये हौ ❁ सांची हाल कहौ समुझाय ॥
करो बहाना तब सूरजने ❁ आये करन गंग असनान ।

बोले ऊदनि तब सूरजते ❋ चारों नेगी संग तुम्हार ॥
बात बतावो तुम सांची अब ❋ नाहक बात बनावत आप ।
यह सुनि सूरज बोलन लागे ❋ टीका लिये बहिनिको जात ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❋ टीका कोउ काबूले नाहिं ।
अब हम जैहैं गढ़ उरईको ❋ जहँपर बसैं महिल परिमाल ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ सूरज सुनौ हमारी बात ।
लरिका तुमको हम बतलावैं ❋ सो टीका तुम देउ चढ़ाय ॥
बेटा कहिये बच्छराजके ❋ जिनको नाम बीरमलिखान ।
टीका चढ़ावौ तुम महुबेमें ❋ जहँपर बसैं रजा परिमाल ॥
तापर ज्वाब दियो सूरजने ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि ।
हुक्म नहीं है गज राजाको ❋ ओछी जाति बनाफर राय ॥
नगर महोबे हम ना जैहैं ❋ हटको हमहिं बिसेने राय ।
इतनी बात सुनी सूरजकी ❋ ऊदनि अग्निज्वाल ह्वै जाय ॥
चन्द्र वशके चन्देले हैं ❋ ना कुलहीन रजा परिमाल ।
खोटी बातैं क्यों बोलतु हौ ❋ हमको जानत सकल जहान ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़में ❋ है नैपाली ससुर हमार ।
अब ना हीनी मुखदे कहियो ❋ टीका महुबे देउ चढ़ाट ॥
बात हमारी सूरज मानो ❋ नहिं सब जैहै काम नशाय ।
यह सुनि सूरज सोचन लागे ❋ टीका महुबे देउँ चढ़ाय ॥
बिना चढ़ाये जो हम जैहैं ❋ तौहू बात बनैगी नाहिं ।
ब्याह तो करनो है काहू घर ❋ देखैं नगर महोबा जाय ॥
चलि भये सूरजतबऊदनि संग ❋ पहूँचे नगर महोबे आय ।
शोभा देखी गढ़ महुबेकी ❋ सूरज खुशी भये मनमाहिं ॥
लागो कचहरी परिमालैकी ❋ भस्माभूत लगो दरबार ।
ताल्हा सैयद बनरसवाले ❋ आल्हा और बीर मलिखान ॥
ब्रह्मा ढेबा सुलखे बैठे ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार ।
मोढ़ाके सँग मोढ़ा रगड़ैं ❋ टिहुना रगड़ि रगड़ि रहि जायँ ॥

ऊदनि पहुँचि गये सूरज सँग ❋ राजै करी बन्दगी जाय ।
करी बुन्दगी सूरजमलने ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा बांची ❋ औ गद्दी तर लई दबाय ।
बोले आल्हा तब राजाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशकी यहु पाती है ❋ काहे पाती लई दबाय ।
बोले राजा सुनि आल्हाते ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
यह है चिट्ठी गढ़ बिसहिनकी ❋ गज राजाने दई पठाय ।
टीका आयो है बिसहिनते ❋ को बिसहिनमें करै विवाह ॥
बात हमारी बेटा मानौ ❋ टीका तुरत देउ लौटाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा कहँ है ध्यान तुम्हार ॥
दतिया मारि उड़ीसा मारो ❋ बाजी सेतुबंद लौटाय ।
अटक पारलौं झंडा गाड़ा ❋ जीते खुरासान गुजरात ॥
धुरदक्खिनते औ काबुल लग ❋ बाजी टाप बेंदुला क्यार ।
घरमें आयो टीका फेरे ❋ तौ रजपूती जाय नशाय ॥
तुमहि हँसोआका डर नाहीं ❋ तुमको जानत सकल जहान ।
टीका लौटनको नाहीं है ❋ चाहे प्राण रहैं की जाय ॥
ब्याह रचाय लेउ मलिखेको ❋ टीका तुरत लेउ चढ़वाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ औ ढेबाते कही सुनाय ॥
सगुन बताय देउ जल्दीते ❋ ढेबा सगुन बिचारन लाग ।
खोलि पत्तरा ढेबा देखौ ❋ औ राजाते लगेउ बतान ॥
काम तुम्हारो पूरन होइहै ❋ अबहीं टीका लेउ चढ़ाय ।
इतनी सुनतै परिमालैने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
करौ तयारी रंगमहलमें ❋ टीका चढ़ै बीर मलिखान ।
खबरि पहुँचि गइ रंगमहलमें ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
करी तयारी रनि मल्हनाने ❋ लागे होन मंगला चार ।
आँगन लिपवायो गोबरसे ❋ मोतिन चौका दई पुरवाय ॥
कलश धराय दियो सोनेको ❋ चन्दन चौकी दई डराय ।

देवै ब्रह्मा दोनों आये ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
भयो बुलौआ तब सूरजको ❋ बैठे चौक बीरमलिखान ॥
पूजा होन लगी गणपतिकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
पग परछाले तब सूरजने ❋ माथे रुचना दियो लगाय ॥
बीरा दीन्हो सूरजमलने ❋ चाब्यो पान बीर मलिखान ।
सोने चांदीको गहनो लै ❋ सब नेगिनको दियो गहाय ॥
ऊदनि पहुँचे रंगमहलमें ❋ सोनेको डब्बा लिये उठाय ।
चारो नेगी जो सूरजके ❋ तिनको गहना दो पहिराय ॥
गहना बचि गयो जो डब्बामें ❋ सो नेगिनको दौ पकराय ।
बाकी नेगी जो बिसहिनिके ❋ तिनको गहना दिहौ बँटाय ॥
यह गति देखी जब सूरजने ❋ मनमें खुशी भये सुखपाय ।
बोले सूरजमल पंडितसे ❋ ब्याहकी साइति देउ बताय ॥
साइति देखी चूड़ामड़िने ❋ माघ महीना दियो बताय ।
शुक्कपक्ष तेरसि तिथि नीकी ❋ होवै ब्याह बीर मलिखान ॥
सुनिकै साइति सूरजचलि भये ❋ औ बिसहिनकी पकरी राह ।
सुनी खबरि जब यहु माहिलने ❋ टीका चढ़ो बीर मलिखान ॥
लिल्ली घोड़ीको मँगवायो ❋ तापर फाँदि भये असवार ।
राह पकरि लइ पथरीगढ़की ❋ पहुँचे आठ दिनामें जाय ॥
जहां कचहरी गज राजाकी ❋ पहुँचे तहां महिल परिहार ।
उतरिकै लिल्लीते भुँइ आये ❋ घोड़ी थामि लई थमवार ॥
करी बन्दगी गज राजाको ❋ तब राजाकी परी निगाह ।
आवौ आवौ उरईवाले ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
हाल बताय देउ उरईको ❋ अपनो कुशल देउ बतलाय ।
यह सुनि माहिल बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ बिसेने राय ॥
कुशल क्षेम है गढ़ उरईमें ❋ बैठे गज करौं महराज ।
एक बात अनहोनी ह्वैगइ ❋ सो सुनिलेउ बिसेने राय ॥
टीका चढ़िगा गढ़ महुबेमें ❋ सूरजमलने दियो चढ़ाय ।

जाति बनाफरकी ओछी है ❋ कोइ न पियै घड़ाको पानि ॥
बात होति रहै गज राजाते ❋ तौलौं सूरज पहुँचे आय ।
करी बन्दगी जब सूरजने ❋ तिनते राजा कही सुनाय ॥
कहाँ चढ़ायो तुम टीकाको ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ॥
बोले सूरज तब राजाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
टीका चढ़ायो हम महुबेमें ❋ जहँ परिमाल चन्द्र सरदार ॥
बोले राजा तब सूरजते ❋ बेटा अक्किल गई तुम्हारि ।
कहे हमारी तुम ना मानी ❋ जल्दी टीका लेउ फिराय ॥
व्याह जो ह्वइहै गढ़ महुबेमें ❋ तौ रजपूती जाय नशाय ।
यह सुनि सूरज बोलन लागे ❋ ददुआ हाल देउँ बतलाय ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❋ काहू टीका चढ़ायो नाहिं ।
चारि कोसकी फेरु खायके ❋ हम उरईकी पकरी राह ॥
राह चलन्ते ऊदनि मिलि गये ❋ पूछन लागे हाल हवाल ।
करो बहाना हम बहुतेरो ❋ ऊदनि जानि गये सब हाल ॥
टीका चढ़वायो ऊदनिने ❋ टीका अब फिरबेको नाहिं ।
बड़ लड़ैया हैं महुबेके ❋ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
जबहीं ब्याहन बिसहिन आवैं ❋ तबहीं लीजो शीश कटाय ।
हियाँकी बातै तौ हियँ छाड़ौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
माहिल लौटि परे उरईको ❋ पहुँचे आठ रोजमें आय ।
लाग महीना माघ मासको ❋ महुबे होन तयारी लाग ।
न्योता भेज्यो सब राजनको ❋ राजा दस्सराजके लाल ॥
रूपन राजा सिरँउजवाले ❋ औ जैचंद कनोजी राय ।
न्योता भेज्यौ नैनागढ़में ❋ राजा नैपाली दरबार ॥
न्योता भेज्यौ गढ़ दिल्लीको ❋ जहँपर बसै वीर चौहान ।
न्योता भेज्यौ गढ़ उरईको ❋ जहँपर बसैं महिल परिहार ॥
न्योता भेज्यौ बौरीगढ़में ❋ राजा बीरसाह दरबार ।
न्योता भेजि दियो पतउँजको ❋ जहँपर राजा मदनगोपाल ॥

न्यौता पहुंच्यो जिन राजाके ❋ सो महुबेमें पहुंचे आय ॥
लश्कर परिगयो सब बागनमें ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
कोऊ परिगयो कनवांखेरे ❋ कोऊ खजुहागढ़ मैदान ॥
कोऊ परिगयो मदनतालपर ❋ कोउ बैरागी तालपै आय ।
घोड़ा बेंदुलापर ऊदनि चढ़ि ❋ सब राजनको मिले अगार ॥
आदरभाव करो सबहीको ❋ फिरि महुबेमें पहुंचे आय ।
समाचार राजाते कहिके ❋ अपनी करन तयारी लाग ॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
डंका बाजै गढ़ महुबेमें ❋ लश्कर साजि होय तैयार ॥
बोलि दरोगा तोपनवालो ❋ मोतिन माला दई इनाम ।
बड़ि २ तोपनको सजवावौ ❋ सो आगेको देउ जुताय ॥
बोलि दरोगा घोड़नवाले ❋ चीरा कलँगी दई इनाम ।
बड़े बड़े घोड़नको सजवावौ ❋ औ बरातको होउ तयार ॥
जितने घोड़ा सुघर चालके ❋ सो सब साजि करौ तैयार ।
जीन सोनहले धरि घोड़नपर ❋ रेशम तंग देउ कसवाय ॥
पूँछ रंगाय देउ केसरिते ❋ औ मेंहदीते सुम्म रंगाय ।
डारि हमेलैं देउ कल्लनपर ❋ माथे कलँगी देउ धराय ॥
बोलि दरोगा हाथिनवालो ❋ मोहनमाला दई गहाय ।
बड़ी राशिके जे हाथी हैं ❋ सो बरातको देउ सजाय ॥
करौ तयारी तुम जल्दीते ❋ दीन्हों हुक्म शूर सरदार ।
डंका बाज्यो गढ़ महुबेमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बोले ऊदनि तब क्षत्रिनते ❋ यारो सुनौ हमारी बात ।
जिनहिं पियारी घर तिरिया है ❋ सो सब तलब लेउ घर जाउ ॥
जिनहिं पियारी परम भगौती ❋ सो सब चलौ हमारे साथ ।
यहु दिन कहिबेको रहिजैहैं ❋ होइहैं ब्याह बीर मलिखान ॥
ब्याह रचायो पथरीगढ़में ❋ चलिहै रात दिना तलवारि ।
कठिन मोरचा है बिसहिनका ❋ है गुजरात देश सरनाम ॥

जितने क्षत्रिय थे तरवरिहा ❋ सो सब सजन लगे तत्काल ।
जितने कायर थे लश्करमें ❋ सो सब घरको भये तयार ॥
ऊदनि लौटे रंगमहलको ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय ।
करौ तयारी अब माता तुम ❋ सिगरे नेग करो तत्काल ॥
सखी बुलाई रनि मल्हनाने ❋ महलन होय मंगलाचार ।
चौक पुराय दई आंगनमें ❋ चन्दन चौकी दई डराय ॥
पंडित वेद उचारन लागे ❋ औ मलिखेको लियो बुलाय ।
चंदन चौकी पर बैठायो ❋ तुरतै तेल दियो चढ़वाय ॥
झगरो नाऊ जब मल्हनाते ❋ मल्हना पुरवा दियो इनाम ।
करिके उबटन तब नाऊने ❋ गंगाजलते दियो अन्हवाय ॥
भयो बुलौवा फिरि दरजीको ❋ ताने कपड़ा दियो पहिराय ।
मौर बांधिकै रनिमल्हनाने ❋ सबको नेग दियो मंगवाय ॥
आइ पालकी दरवाजेपर ❋ बैठे जाय बीर मलिखान ।
चली पालकी दरवाजेपर ❋ औ कुँअटापर पहुंची जाय ॥
देवै ब्रह्मा संगै चलि भये ❋ आगे चली मल्हनदे रानि ।
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ साथ भईं तैयार ॥
मोहन लड़िका बीरसाहको ❋ लीन्हों गोद बीर मलिखान ।
भांवरि परन लगीं कुँअटापर ❋ ब्रह्मा रही पांव लटकाय ॥
पहिली भांवरिके पग धरतै ❋ तब धरि बंहियां लियो उठाय ।
बाग लगैहों तुम्हरे नामकी ❋ माता धीर धरौ मनमाहिं ॥
चरण लागिकै सब काहूके ❋ मलिखे माथे लियो लगाय ।
हाथ फेरि दियो रनिमल्हनाने ❋ जुग जुग जियो लड़ैतेलाल ॥
मलिखे बैठि गयो पलकीमें ❋ मल्हना रंग महलको जाय ।
देवै ब्रह्मा बारह रानी ❋ सब मिलि गईं महल यक साथ ॥
मलिखे पहुंचि गये लश्कर में ❋ लश्कर सजा महोबे क्यार ।
हथिपचशावद त्यार करायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फांदि भये असवार ।

घोड़ा मनुरथा पर ढेबा हैं ❋ घोड़ी हिरौंजिनपरसुलिखान ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानन्द सवार ।
खुनखुनकोरी मदनगड़रिया ❋ मन्ना गूजर भयो सवार ॥
जितने शूर हते महुबेके ❋ सो बरातको भये तयार ।
घोड़ी कबुतरी नरमलिखेकी ❋ सोऊ कोतल चली अगार ॥
जितने भूप बराती आये ❋ सो सब चले चित्त हरषाय ।
राह पकरि लइ पथरीगढ़की ❋ डंका होन गोलमें लाग ॥
आठ रोज मारगमें बीते ❋ बिसहिन आठकोश रहिजाय ।
डेरा डारे तब धूरे पर ❋ ऊँचे तम्बू दिये तनाय ॥
फेटैं खुलि गईं रजपूतनकी ❋ क्षत्री करन रसोईं लाग ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ अब पंडितको लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौवा चूड़ामणिको ❋ पंडित साइत देउ बताय ।
ऐपनवारी तुम पठवावो ❋ तुम्हरो काम सिद्धह्वइजाय ॥
इतनी सुनके बघ ऊदनिने ❋ रूपना बारी लियो बुलाय ।
ऐपनवारी तुम लै जावो ❋ तब रूपनाने दियो जवाब ॥
कठिनमारू है गढ़विसहिनकी ❋ हम ना शीश कटैहैं जाय ।
बोले ऊदनि तब रूपनाते ❋ भैया घटि गयो ज्ञान तुम्हार ॥
तुमको नेगी हम समझौ ना ❋ तुम तो भैया लगौ हमार ।
यहु दिन कहिबेको रहिजैहैं ❋ ह्वइहैं ब्याह बीर मलिखान ॥
अबना हीनी तुम कहियो कछु ❋ नहिं तो जैहैं काम नशाय ॥
बोलेउ रूपना तब ऊदनिते ❋ घोड़ी कबुतरी देउ मँगवाय ।
ढाल मँगाय देउ जल्दीते ❋ औ तलवारि बीर मलिखान ॥
जो जो माँगेउ रूपना बारी ❋ सो ऊदनिने दियो मँगाय ।
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठो ❋ ऐपनवारी लई उठाय ॥
सब हथियार बाँधि रूपनाने ❋ गढ़ बिसहिनकी पकरी राह ।
चारि घरी केरे अरसामें ❋ सो फाटकपर पहुँचो जाय ॥
बोल्यो दरवानी रूपनाते ❋ सुन परदेशी बचन हमार ।

कौन देश में घर तुम्हरोहै ❋ यहँपर काह तुम्हारो काम ।
तापर ज्वाब दियो रुपनाने ❋ रूपन वारी नाम हमार ॥
हम रहवैया हैं महुबेके ❋ ब्याहन आये बीर मलिखान ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजैं खबरि सुनावौ जाय ॥
नेगु हमारो जल्दी भेजो ❋ म्वहिं बरातको होत अब्यार ।
बोला दरबानी रुपनाते ❋ अपनो नेगु देउ बतलाय ॥
रुपना बोलेउ दरवानीते ❋ जल्दी खबरि देउ पहुँचाय ।
नेगु हमारो यह होत हैं ❋ द्वारे कठिन चलै तलवारि ॥
इतनी सुनिकै दरबानीने ❋ राजै खबरि सुनाई जाय ।
नेगी आयो है महुबेते ❋ मांगत नेगु आपनो आय ॥
ऐपनवारी लीन्हे ठाढ़ो ❋ रूपन वारी नाम बताय ।
नेग बतावत हैं अपनो यहु ❋ द्वारे कठिन चलै तलवार ॥
इतनी सुनिकै गजराजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ।
हुक्म सुनाय दियो सूरजको ❋ बेटा सुनो हमारी बात ॥
बारी आयो है महुबेते ❋ ताको लेउ जँजीरन बांधि ।
सूरज चलि भये तब द्वारेको ❋ तोलौं रुपना पहुँचो आय ॥
करी बंदगी गजराजाको ❋ ऐपनवारी दई चलाय ।
नेगु हमारो जल्दी दैदेउ ❋ हमको पल पल होत अब्यार ॥
गुस्सा ह्वैकै गजराजाने ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
मूँड़ काटि लेउ या बारीको ❋ देखो कहूँ भागि न जाय ॥
इतनी सुनते मानसिंहने ❋ तुरतै दीन्हो गुर्ज चलाय ।
घोड़ी कबुतरी दाहिने होगइ ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
भाला लैकै तब रुपनाने ❋ मानसिंहपर दियो चलाय ।
धरती गिर गये मानसिंह तब ❋ लाग्यो घाव शीश मैं आय ॥
नोक चलाई त्यहि भालाकी ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
ऐंड़ लगाई तब घोड़ीके ❋ फाटक निकरि गयो वापार ॥
रुपनै घेरो दरवाजे पर ❋ क्षत्रियन खैंचि लई तलवारि ।

चली शिरोही तहँ रुपनापर ❋ रुपनाकठिन करै तलवारि ॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❋ रुपना लालबरन ह्वैजाय ।
कठिन लड़ाई भई द्वारेपर ❋ औ बहि चली रक्तका धार ॥
ऍड़ लगाय दई घोड़ीके ❋ औ बरातमें पहुंचो जाय ।
आवत देखो जब रुपनाको ❋ ऊदनि गयो सनाका खाय ॥
नेरे आय गयो रुपना जब ❋ तब हँसि कहौ उदयसिंहराय ।
कैसी गुजरी दरवाजेपर ❋ कैसे लालबरन दिखराय ॥
घाव आ गयो क्या देहीमें ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ।
रुपना बोलेउ तब ऊदनिते ❋ द्वारे कठिन चली तलवार ॥
हमैं भगवती दाहिनि ह्वैगइ ❋ हम करि आये काम तुम्हार ।
मारि भगायो सब क्षत्रिनको ❋ द्वारे बही रक्तकी धार ॥
यह गति देखी जब माहिलने ❋ लिल्ली घोड़ी भये सवार ।
जाय पहूंचे गढ़ बिसहिनमें ❋ जहं दरबार बिसेने क्यार ॥
लिल्ली घोड़ीते भुइं आये ❋ घोड़ी थाम लई थनवार ।
करी बन्दगी गजराजाको ❋ माहिल रहिगे माथ नवाय ॥
नजरि बदल गई गजराजाकी ❋ औ माहिलते लगे बतान ।
हाल बताय देउ अपनो तुम ❋ औ उरईको कहो हवाल ॥
बोले माहिल गजराजाते ❋ राजा सुनो हमारी बात ।
ब्याह न करियोतुममलिखेसंग ❋ ओछी जात बनाफरराय ॥
ब्याह जो ह्वइहै गढ़ महुबेमें ❋ बुड़िहैं सात साखिको नाम ।
दागु लागिहैं रजपूतीमें ❋ कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
बड़ लड़ैया हैं महुबेके ❋ शंका करत कालकी नाहिं ।
लड़ न जितिहौतुमलरिकनते ❋ कलहा देवकुवरिके लाल ॥
ज्यहिकी लड़िकी नीकी देखैं ❋ जोरावरिते करैं विवाह ।
बात हमारी राजा मानो ❋ तौ हम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
जाय टिकावो पथरीगढ़में ❋ जहुं ना गड़ै मेख भुंइ माहिं ।
जहर घोरावो तुम शर्बत में ❋ सो जल्दीते देउ पठाय ॥

पियतै क्षत्री सब मरिजैहैं ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय।
इतनी सुनिकै गजराजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय॥
भली बताई माहिल ठाकुर ❋ हम सब मानी बात तुम्हारि।
शरबत घोरवावौ जल्दीते ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय॥
यह सुनि शरबतको घोरवायो ❋ चारौं नेगी संग लिवाय।
सूरजचलिभयेगढ़बिसहिनते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय॥
कहँपर तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय।
सूरज पूछो दरवानीते ❋ दरवानीने दियो बतलाय॥
सूरज पहुँचे तब तम्बूमें ❋ चारौ नेगी संग लिवाय।
करी बन्दगी नुनि आल्हाको ❋ औ शरबतको दियो धराय॥
बोले सूरजमल आल्हाते ❋ पथरीगढ़को होउ तयार।
तहँ जनवासा तुम सबको है ❋ अपने तम्बू दियो तनाय॥
इतनी सुनिकै मलिखे ठाकुर ❋ बघऊदनिको संग लिवाय।
घन लैलीन्हों अपने करमें ❋ ऊदनि मेखैं लईं उठाय॥
मेखैं गाड़ी पथरीगढ़में ❋ अपने तम्बू दियो तनाय।
बोले सूरज तब आल्हाते ❋ शरबत सबको देउ बँटाय॥
इतनो सुनिकै नुनि आल्हाने ❋ सोने कटोरा लियो मँगाय।
जबहीं शरबत आल्हा मांग्यो ❋ सम्मुहे छींक भई ठहनाय॥
भयो बुलौआ तब ढेबाको ❋ भैया सगुन देउ बतलाय।
ढेबा बोले तब आल्हाते ❋ शरबत सबै देउ फिकवाय॥
जहर मिलाया यह शरबत है ❋ दादा वचन करो परमान।
इतनी सुनकै बघऊदनिने ❋ अपनो कुत्ता लियो बुलाय॥
थोरा शरबत ऊदनि लैके ❋ सो कुत्ते को दियो पिलाय।
शरबत पियतै कुत्ता गिरिगो ❋ ऊदनि शरबत दियो फेंकाय॥
मारि भगाये चारौ नेगी ❋ औ सूरजते कही सुनाय।
घटिहा राजाके लरिका हौ ❋ तुम घटि करी हमारे साथ॥

लौटे सूरज तब बराततें ❋ औ झुन्नागढ़ पहुँचे आय।
जहां कचहरी गज राजाकी ❋ सूरज नेकै करी सलाम॥
बोले सूरज गज राजाते ❋ दादा कछू कही ना जाय।
बड़े सगुनियां महुबेवाले ❋ शरबत खंदक दियो फेंकाय॥
मेख गाड़ि दई पथरीगढ़में ❋ औ नेगिनको दियो भगाय।
सूरज बात करन ना पाये ❋ तौलौं माहिल पहुँचे आय॥
तब गजराजा पूछन लागे ❋ अब तुम जतन देउ बतलाय।
बोले माहिल तब राजाते ❋ राजा वचन करो परमान॥
लड़े न जितिहौ तुम आल्हाते ❋ ताते करौ अधीनी जाय।
बिनती करिकै लरिका लावौ ❋ औ खंदकमें देउ डराय॥
इतनी सुनिकै गज राजाने ❋ मोहरन तोड़ा लियो मँगाय।
कूच करायो गढ़बिसहिनते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय॥
करी अधीनी गज राजाने ❋ दीन्ही नजरि सामुहे जाय।
हाथ जोरि बोले गज राजा ❋ हमरे कुला यही ब्योहार॥
लरिका अकेला तुम भेजवावो ❋ सातो भांवरि देउँ डराय।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा कछु छल परै दिखाय॥
ऊदनि बोले तब कुअँनापर ❋ जो छल करिहै साथ हमार।
गर्द कराय देउं बिसहिनिको ❋ मारो राज्य भंग ह्वैजाय॥
लई शिरोही तब मलिखेने ❋ औ चलिबेको भये तयार।
बोले गज राजा मलिखेते ❋ यह हथियार संग ना जाय॥
देश हमारे यहै रीति है ❋ सो तुम सुनौ बनाफर राय।
गंगाजल भरि कलश मंगायो ❋ सो आल्हाने दियो धराय॥
जहर मिलायो शर्बत भेज्यो ❋ तातै नाहिं रह्यो इतबार।
गंगा उठाई गज राजाने ❋ औ आल्हाते लगे बतान॥
जो कोउ घाटि करै तुम्हरे संग ❋ ताको लौटि भगौती खाय।
इतनी सुनतै नुनि आल्हाने ❋ तुरत पालकी लई मंगाय॥

मलिखे बैठि गये पलकीमें ❋ सो गज राजा चले लिवाय ।
चारि घरीको अरसा गुजरो ❋ पलकी भीतर पहुंची जाय ॥
हुक्म देदियो गजराजाने ❋ फाटक बन्दी देउ कराय ।
हुक्म होतही फाटक लगि गये ❋ अपने ताले दिये डराय ॥
चौक चांदनी पलकी पहुंचो ❋ तब क्षत्रिनते कही सुनाय ।
जान न पावैं महुबेवाले ❋ इनको शीश लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिके सब क्षत्रिनने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
मलिखैं सोचै अपने मनमें ❋ इन घटि करी हमारे साथ ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
बांस निकारि लियो पलकीको ❋ मलिखे दई बांसकी मारु ॥
मलिखे ठाकुर बांसन मारै ❋ क्षत्री रेन बेन होइ जायँ ।
देखि हकीकति गज राजा तब ❋ दोनों हाथ जोरि भै ठाढ़ ॥
देश हमारे यहै रीति हैं ❋ द्वारे चलै कठिन तलवारि ।
बोले मलिखे गज राजा ते ❋ तुम छल करो हमारे साथ ॥
छलिके हमको तुम लै आये ❋ यहँ पर मारु दई करवाय ।
करी अधीनी फिरि राजाने ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ॥
रीति हमारे कुल ऐसी है ❋ डंड बांधिके होय विवाह ।
ऐसी कहिकै गंगा कीन्ही ❋ औ मलिखेको लियो बँधाय ॥
चली पालकी नरमलिखेकी ❋ पहुँची सिंह पवँरिपर जाय ।
चंदन खंभा जहँ गाड़ा था ❋ तामें मलिखे दिये बँधाय ॥
हरे बांस आये बगियाते ❋ बासन मारु दई करवाय ।
जामा पहिरे जो देहीमें ❋ सो सब टूक टूक ह्वइजाय ॥
बांस पैठि गयौ तब पीठीमें ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
बांदी देख्यो सतखंडाते ❋ गजमोतिनिते कही सुनाय ॥
लरिकाछलिकै यहँ लै आये ❋ बांसन मारु दई करवाय ।
बाप तुम्हारे वैरी ह्वइगये ❋ जो घटि करत तुम्हारे साथ ॥

जा बरातमें गंगा कीन्ही ❁ लाये साथ वीर मलिखान ।
इतनी सुनिकै बेटी चलिभइ ❁ आई जहां बंधे मलिखान ॥
बोली बेटी गज राजाते ❁ बंधुआ कौन देशको आय ।
काहे बांसन मार करावत ❁ दद्दुआ हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि बोले गजराजा तब ❁ यह है बंधुआ ऋणी हमार ।
पैसा मारो सात बरसको ❁ ताते दई बांसकी मार ॥
कंकन देखेउ जब हाथेमा ❁ बेटी तुरत गई पहिचान ।
बोलन लागी गजमोतिनि तब ❁ दादा सुनौ हमारी बात ॥
ये तो स्वामी हमरे आहीं ❁ तुम ना करो सोचि यह काम ।
मुश्क खोलिदेउ मोरे बालमकी ❁ दद्दुआ बार बार बलि जाउँ ॥
बात सुनी जब यह मलिखेने ❁ अपने मनमें गये लजाय ।
गुस्सा आय गयी देहीमें ❁ फरकी भुजा बीर मलिखान ॥
भुजबल मसके नर मलिखेने ❁ कड़िया टूक टूक ह्वइजायँ ।
खंभउखारिलियो मलयागिरि ❁ औ क्षत्रिनपै पहुंचे जाय ॥
खैंचि शिरोही क्षत्रिन लीन्हो ❁ महलन कठिन चलै तलवार ।
मलिखे खंभा ज्यहिके मारैं ❁ सो गिरि परै भूमिमें जाय ॥
क्षत्री भागि गये आगेते ❁ अकिले खड़े बीर मलिखान ।
बोले राजा हाथ जोरिकै ❁ तुम समरत्थ बनाफर राय ॥
नेगु आपनो हमने पायो ❁ अबहीं भांवरि देउँ डराय ।
खंभा धरिकै मलयागिरिको ❁ औ पलकीमें बैठे जाय ॥
फिरिकै धोखा दै राजाने ❁ मलिखेकी लइ दंड बंधाय ।
दहक एक रहै जो द्वारेपर ❁ तामे तुरतै दियो डराय ॥
यह गति देखी जब बांदीने ❁ गजमोतिनिते कही सुनाय ।
बालम तुम्हरे खंदक डारे ❁ ताको अब कछु करो उपाय ॥
बोली गजमोतिनि बांदीते ❁ चलिकै हमहिं देहु बतलाय ।
कौन खंदकमें बालम हैं ❁ यह सुनि बांदी दियो जवाब ॥
शीश महलके पीछे खंदक ❁ तेलिया नाम कहत संसार ।

दिवसबीतिगयोज्योंत्योंकरिकै ❀ संझाकाल रह्यो नियराय ।
आधी रातीकेरे अमलामें ❀ गजमा भोजन किये तयार ॥
सो धरवाय लिये थारीमें ❀ औ गंगाजल लियो धराय ।
जाय पहूँची गजमोतिनि तब ❀ जहँपर परे बीर मलिखान ॥
रेशम रस्सा लै गजमोतिनि ❀ सो दाहकमें दौ लटकाय ।
बोली गजमोतिनि मलिखेते ❀ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
जल्दी निकरौ तुम खंदकते ❀ अपनी लावौ फौज सजाय ।
दादा हमरे बैरी ह्वइ गये ❀ तुमको खंदक दियो डराय ॥
स्वामी भोजन मैं लाई हौं ❀ सो तुम जेयँ लेउ ज्योंनार ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ रानी सुनौ हमारी बात ॥
घटिहा राजाकी बेटी हौ ❀ ज्यहि घट करी हमारे साथ ।
तुम क्यों आई हो दाहकपर ❀ नाहक रूप दिखायो आय ॥
इतनी बात सुनी बेटीने ❀ तब मलिखेते लगी बतान ।
हम व्रत कठिन कियो तुम्हरे हित ❀ करिहौं ब्याह तुम्हारे साथ ॥
नातरु क्वांरी रहौं जन्मभरि ❀ या मैं पेटु मारि मरि जाउँ ।
जल्दी निकरो अब स्वामी तुम ❀ औ यह जेयँ लेउ ज्योंनार ॥
बोले मलिखे तब रानीते ❀ रानी बात सुनौ धरि ध्यान ।
तुम्हरे काढ़े जौ हम निकरैं ❀ तौ रजपूती जाय नशाय ॥
चोराचोरी हम ना निकरैं ❀ ना हम करैं चोरको काम ।
क्वांरे भोजन हम ना करिहैं ❀ नहिं रजपूती धर्म नशाय ॥
जौ तुम रानी हमको चाहौ ❀ आल्है खबरि देउ पहुँचाय ।
सुनिकै चलिभै गजमोतिनि तब ❀ औ पत्थरको दौ सरकाय ॥
आई गजमोतिनि महलामें ❀ सतखंडापर पहुँची जाय ।
लैकै कागद कलपीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
पहिले लिखिकै सरनामाको ❀ फिरि आल्हाको लिखी सलाम ।
लिखी हकीकति गजमोतिनिने ❀ तुम सुनि लेउ बनाफर राय ॥
तुमहिं मुनासिब यहु नाहीं थी ❀ अकिलो भैया दियो पठाय ।

हियँ छल कीन्हे बाप हमारे ❋ चुंगल दहक दीन डरवाय ।
सुखकी निंदिया तुमसोवतहौ ❋ खंदक बालम परे हमार ॥
जल्दी आवौ तुम बराततै ❋ औ भैयाको लेउ निकारि ।
लिखी हकीकतगजमोतिनने ❋ अपनी मालिन लई बुलाय ॥
करी अधीनी गजमोतिनने ❋ मालिन सुनौ हमारी बात ।
विपति सतावै सब काहूको ❋ मालिन विपति परै संसार ॥
बिपता परिगै हमपर है यहु ❋ सो तुम कारज करो हमार ।
चिट्ठी लै जाओ बरातमें ❋ सो आल्हाको देउ गहाय ॥
मालिन बोली गजमोतिनते ❋ बेटी सुनौ हमारी बात ।
फाटक बन्दी है बिसहिनमें ❋ कैसे जायँ बनाफर पास ॥
इतनी सुनिकै बेटी बोली ❋ तुमको जतन देउँ बतलाय ।
करौ बहाना दरवानीते ❋ औ यह कहियो बात बनाय ॥
हमहै मालिन गज मोतिनिकी ❋ बगिया फूल लेनेको जायँ ।
इतनी सुनिकै मालिन चलिभइ ❋ औ फाटकपै पहुँची जाय ॥
चिट्ठी लीन्ही गजमोतिनकी ❋ सो जूरामें लई छिपाय ।
सूरति देखी जब मालिनिकी ❋ तब सूरजने कही सुनाय ॥
यहै खबरुआ है बरातको ❋ तुरतै लूटि लेउ करवाय ।
इतनी सुनतै क्षत्री झपटे ❋ औ मालिनिको लूटन लाग ॥
काहू लूट्यो गरको हरवा ❋ काहू माला लई निकारि ।
काहू लूट्यो मुंदरी छल्ला ❋ काहू छपड़ा लिये उतारि ॥
यह गति देखत मालिन रोई ❋ औ सूरजते कही सुनाय ।
हमतोमालिनि गजमोतिनकी ❋ बगिया फूल लेनको जाय ॥
अबहीं कहिहौं मैं बेटीते ❋ सूरज लूटि लई करवाय ।
इतनी सुनिकै सूरज सोचै ❋ बहिनी देहैं कठिन सराप ॥
सोचि समुझिकै गहनो फेरयो ❋ फाटक तुरत दियो खुलवाय ।
तुम ना कहियो गजमोतिनते ❋ की सूरज लइ लूट कराय ॥
इतनी सुनिकै मालिनि चलिभइ ❋ औ बरातमें पहुँची जाय ।

जहँपर तम्बू है माहिलको ❋ मालिन तहां पहुंची जाय ॥
मालिनि आवत माहिल देखे ❋ तब मालिनते पूछन लाग ।
कौने तुमको यह भेज्यो है ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
मालिन बोली तब माहिलते ❋ आल्है खबरि सुनैहैं जाय ।
कौनसो तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम जल्दी देउ बताय ॥
माहिल बोलो तब मालिनिते ❋ हमहीं आल्हा हैं सरनाम ।
हाल बताय देउ मलिखेको ❋ औ विवाहको कहौ हवाल ॥
खोलौ जूरा तब मालिनिने ❋ तुरते पाती दई गहाय ।
पाती बांची जब माहिलने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
लैके चाबुक माहिल राजा ❋ तब मालिनिको मारन लाग ।
तुम ना कहियौ यह काहूते ❋ ऊभे परे बीर मलिखान ॥
जल्दी लौटिजाउबिसहिनिको ❋ नाहीं दिहौं जानते मारि ।
रोवत रोवत मालिनिचलिभै ❋ तौलौं मिले उदयसिंहराय ॥
ऊदनि बोले तब मालिनिते ❋ काहेबिलखि बिलखि रहिजाउ ।
हाल बताय देउ जल्दीते ❋ तब मालिनिने कही सुनाय ॥
आये महुबिया महुबेवाले ❋ ब्याहनहेत बीर मलिखान ।
छलिकै लरिका राजाले गये ❋ तहंपर डंड दई बंधवाय ॥
मारु करायदई बांसनकी ❋ फिरि खंदकमें दियो डराय ।
रोयकैपातीलिखिगजमोतिनि ❋ लिखिकै हमको दई गहाय ।
सो छिनवाय लई आल्हाने ❋ हमपर मारु दई करवाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि जर गये ❋ औ मालिनिते लगे बतान ।
कौन सो तम्बू है आल्हाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
लौटी मालिनि तब ऊदनि संग ❋ औ माहिलको दियो बताय ।
देखो ठाढ़े हैं आल्हा वे ❋ इनहीं मारु दई करवाय ॥
बोले ऊदनि तब माहिलते ❋ मामा अक्किल गई तुम्हारि ।
काहे मालिनिको मारो तुम ❋ काहे पाती लई छिनाय ॥
बात बनाई तब माहिलने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।

कछु अपराध नहीं हमरो है ❀ भैया समुझि लेउ मनमाहिं ।
मालिनि टेरत यह आवतिहै ❀ मलिखे ऊभे दिये डराय ॥
जोसुनिपावतकोउबिसहिनिका ❀ पाती लेतो तुरत छुड़ाय ।
खबरि पहुँचतीना आल्हापै ❀ तौ ना बनतो काम तुम्हार ॥
ताते पाती हमने छीनी ❀ सो यह लेउ उदयसिंहराय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ मामा जाने काम तुम्हार ॥
लावौ पाती तुम जल्दीते ❀ हम सब लेहैं काम बनाय ।
पाती दीन्हीं तब माहिलने ❀ ऊदनि लीन्ही हाथ पसारि ॥
लैकै पाती तब माहिलते ❀ औचलि भये उदयसिंहराय ।
पहुँचे ऊदनि तब आल्हाढिग ❀ मालिनि अपने संग लिवाय॥
करो इशारा जब मालिनिको ❀ मालिनि पाती दई गहाय ।
खोलिकै पाती आल्हा बांची ❀ मनमें गये सनाका खाय ॥
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❀ दादा हाल देउ बतलाय ।
कैसी पाती यह आई है ❀ काहे सोचि रहो मनछाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❀ भैया कछू कही नाजाय ।
घटिया राजा गज राजा है ❀ झूठी गंगा लई उठाय ॥
छलिकै मलिखेको सँग लैगो ❀ बांसन मारू दई करवाय ।
डंड बांधिकै नर मलिखेकी ❀ चुङ्गल दहक दीन डरवाय ॥
पाती भेजी गजमोतिनिने ❀ औ मालिनिको दियो पठाय ।
इतनी कहिकै सुनि आल्हाने ❀ तुरतै गहना लियो मँगाय ॥
सो दैदीन्हों त्यहि मालिनिको ❀ औ यह कही बनाफरराय ।
तुम कहि दीजो गजमोतिनिते ❀ सातौं भाँवरि लिहैं डराय ॥
धीरज राखो अपने मनमें ❀ आवत साजि बनाफरराय ।
चलि भइ मालिनितबबराततेः ❀ औबिसहिनिमें पहुँची जाय ॥
खबरि सुनाई गजमोतिनिको ❀ बेटी धीर धरो मनमाहिं ।
गहना दीन्हो मोहिं आल्हाने ❀ औ यह कही बनाफरराय ॥
तुम यहु कहियौ गजमोतिनिते ❀ सातौं भाँवर लिहैं डराय ।

हियाँकि बातैं तो हियँ छाँड़ो ❋ अब आगेको सुनो हवाल ।
बोले आल्हा बघऊदनिते ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
हुक्म पायकेऊदनि चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर साजि होय तैयार ।
डंका बाज्यो तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन धरे रकावन पायँ ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
चौथे डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला बनाफर क्यार ॥
ठाढी करखा बोलत आवै ❋ झूमत आवैं लाल निशान ।
दबति अँधेरिया दलमें आवै ❋ हाहाकारी बीतत जाय ।
यक हरकारा बदलत आयो ❋ गज राजापै पहुँचो आय ।
हाथ जोरिकै बोलन लाग्यो ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
लश्कर आयो है महुबेको ❋ सो तुम खबरदार ह्वइजाउ ।
बिसहिनि घेरिलियो आल्हाने ❋ ताको जल्दी करो उपाय ॥
इतनी सुनते गजराजाने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ।
फिरि बुलवायो कांतामलको ❋ मानसिंहको लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तीनौ जनको ❋ जल्दी फौज लेउ सजवाय ।
जितने आये हैं महुबेको ❋ सबके मूड़ लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिकै तीनौ चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
बोलि नगरचीको बीरा दे ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
डंका बाजै मेरे लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ।
बजौ नगाड़ा गढ़बिसहिनिमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फाँदि भये असवार ॥
लश्करचलिभयोगढ़बिसहिनिको ❋ डंका होन गोलमें लाग ।

दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहि गयो आठ खेत मैदान ।
घोड़ा बढ़ाय दियो सूरजने ❀ आगे जाय दई ललकार ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❀ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ।
ऊदनि बढ़ि गये तब आगे को ❀ औ सूरजको दियो जवाब ॥
हम चढ़ि आये हैं महुबेते ❀ हमरो नाम उदयसिंह राय ।
घटिहा राजाके लड़िका हौ ❀ झूंठी गंगा लई उठाय ॥
छलिकैले गयो नर मलिखेको ❀ औ खन्दकमें दियो डराय ।
तुम्हैं मुनासिब यहु नाहीं थी ❀ जो छल करो हमारे साथ ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❀ सातौ भाँवरि देउ डराय ।
जो ना मनिहौ कहा हमारो ❀ मरिहौं राज्यभंग होइ जाय ॥
तख्त लौटिकै गज राजाको ❀ सबकी मुश्कें लिहौं बँधाय ।
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगौ ❀ औ बातनमें बाढ़ी रारि ॥
गुस्सा ह्वइकै सूरज बोले ❀ मानसिंहते कही सुनाय ।
जान न पावैं महुबे वाले ❀ सबकी कटा देउ करवाय ॥
हल्ला ह्वइगयो सब लश्करमें ❀ क्षत्रिन खैंचि लईं तलवारि ।
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ खट खट चलन लगी तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल सँग ❀ औ असवारनते असवार ।
चारि घरी तहँ चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया महुबे वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ जिनके मारु मारु रट लागि ॥
पैदल गिरि गये पैग पैगपर ❀ दुइदुइ पैग गिरे असवार ।
हाथी गिरिगये बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वतकी अनुहारि ॥
कल्ला कटि गये हैं घोड़नके ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
मुर्चा हटिगो गजराजाको ❀ लश्कर रेन बेन ह्वइजाय ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❀ अपना उठे भरहरा खाय ।
तोप दरोगाको बुलवायो ❀ चीरा कलँगी दियो इनाम ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपर देउ चढ़ाय ।

हुक्म पायकै चला दरोगा ❋ सिगरी तोपैं लईं सजाय ॥
सो पठवाय दई आगेको ❋ औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ।
मुर्चा बन्दी तब करवाई ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
मारि भगावौ तुम लश्करको ❋ यारौ खेदि महोबिया ज्वान ।
जान न पावै कोउ महुबेको ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारौ रखियो धर्म हमार ॥
झुके खलासी बिसयनवाले ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
धुवाँ उड़ानौ आसमानलौं ❋ सविता रहे धुंधिमें छाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
गोला छूटैं दोनों दलमें ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
अररर अररर गोला छूटैं ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय ।
एक पहर भरि गोला बरसो ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वइगईं ❋ कीन्हौ बन्द तोपनकी मारु ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ॥
झुरमुटहोइगयो दोउलश्करमें ❋ बढ़िके चलन लगी तलवारि ।
खटखट खटखट तेगाबाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवारि ॥
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ औ बूँदीकी असल कटारि ।
चलै शिरोही मानासाही ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै वर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ।
तीनिलाखलश्करबिसहिनिको ❋ रहिगये डेढ़लाख सब ज्वान ॥
देखि हकीकत सूरज ठाकुर ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
बोले सूरज बघ ऊदनिते ❋ तुम सुनि लेउ उदैसिंह राय ॥
शूर जुझायेते का पैहौ ❋ हम तुम खेलैं जूझ अघाय ।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले ऊदनि सूरजमलते ❋ अपनी चोट करौ तुम आय ।
इतनी सुनिकै सूरजठाकुर ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥

करो जड़ाका जब ऊदनिपर ❋ बांये उठी गैंड़की ढाल ।
तीन शिरोही गहि गहि मारी ❋ ऊदनि लै गये चोट बचाय ॥
ऊदनि बोले तब सूरजते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
चोट तुम्हारी हम सहि लीन्ही ❋ अब लै लेउ हमारी सेल्ह ॥
यह कहि गुर्ज लियो ऊदनिने ❋ औ सूरजपर दियो चलाय ।
लगो चपेटा जब घोड़ेके ❋ सूरज घोड़ा गयो भगाय ॥
देखि हकीकति कांतामलने ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
खैंचि शिरोही लइ कांतामल ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ऊदनिने ❋ तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ।
भाला लैकै बघऊदनिने ❋ कांतामलपर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा कांतामलके ❋ अपनो घोड़ा गये भगाय ।
ढेबा बढ़ि गयो तब आगेको ❋ मानसिंहपै पहुँचो जाय ॥
बैठे मानसिंह हौदामें ❋ ढेबा दीन्हीं सांग चलाय ।
घाव आय गयो मानसिंहके ❋ मुर्चा हटो बिसेने क्यार ॥
सूरज आये गज राजापै ❋ हाथ जोरिके कही सुनाय ।
बड़े सूरमा हैं महुबेके ❋ जिनते कछू न पार बसाय ॥
इतनी सुनिकै गजराजा तब ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
श्यामा भगतिनिपहँ राजा गये ❋ औ सब हाल सुनायो जाय ॥
ब्याह जो ह्वैहै गढ़ महुबेमें ❋ तौ क्षत्रिपन जाय नशाय ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ ताते जादू देउ चलाय ॥
जितने आये हैं महुबेते ❋ सब पर देउ मोहनी डारि ।
इतनी सुनकै श्यामा भगतिनि ❋ सूरजमलको संग लिवाय ॥
श्यामाचलिभइ गढ़बिसहिनते ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ।
जहँपर लश्कर था महुबेको ❋ श्यामा जादू लियो उठाय ॥
डारि मशान दियो लश्करमें ❋ सबके होश बंद ह्वइ जायँ ।
ढेबा बचि गयो त्यहि लश्करमें ❋ सो आल्हापै पहुँचो जाय ॥

हाल सुनायो सब लश्करको ❋ औ जादूको कह्यो हवाल ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ औ ढेबाते कही सुनाय ॥
जल्दी जाओ तुम महुबेको ❋ सुनवैं लावौ संग लिवाय ।
इतनी सुनतै ढेबा चलिभौ ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
तीन रोजको धावा करिकै ❋ महुबे बीच पहूँचे जाय ।
देवै ठाढ़ी थी द्वारे पर ❋ सो ढेबाते लगी बतान ॥
हाल बतावौ तुम बरातको ❋ औ लश्करको कहौ हवाल ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ हमते कछू कही न जाय ॥
श्यामा भगतिनि जादू डारी ❋ लश्कर सुन्नसान होइ जाय ।
कान अवाज परी सुनवांके ❋ सो ढेबापै पहुँची आय ॥
पूँछन लागी सो ढेबाते ❋ देवर हाल देउ बतलाय ।
लाल बरात कहां तुम छांड़ी ❋ औ कहँ छांड़ी कटीली फौज ॥
इतनी सुनतै ढेबा बोलो ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
श्यामा भगतिनि जादू कीन्ही ❋ लश्करके गये होश उड़ाय ॥
सुन्नसान लश्कर सब ह्वइगो ❋ ऊभे परे बीर मलिखान ।
अकिले तम्बूमें आल्हा हैं ❋ तुम्हरी याद करी महराज ॥
करौ तयारी तुम जल्दी ते ❋ औ तुम चलौ हमारे साथ ।
इतनी सुनतै सुनवां चलिभई ❋ देवीकी मठी पहुँची जाय ॥
पूजन करिकै जगदम्बाको ❋ अपनो शीश चढ़ावन लागि ।
आभा बोली तब देवीकी ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वै जाय ॥
अमृत दीन्हों जगदम्बाने ❋ यहु लै जाउ सुनवंदे रानि ।
अमृत छिड़कि दिहौ लश्करमें ❋ उठिहैं फौज बनाफर क्यार ॥
अमृत लैकै सुनवां लौटी ❋ जगदम्बेको शीश नवाय ।
सुनवां आई रनि देवै पहँ ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
चरण लागिकै निज सासुनकी ❋ औ चलिबेको भई तयार ।
घोड़ा पपीहाको सजवायो ❋ तापर सुनवां भई सवार ॥
सुमिरण करकै नारायणको ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।

कूच कराय दियो महुबेते ❋ नर ढेबाको संग लिवाय ॥
तीनि दिनाको धावा करिकै ❋ पथरीगढ़में पहुँची जाय ।
करी बन्दगी तुनि आल्हाको ❋ औ यह सुनवां लगी बतान ॥
काम तुम्हारो पूरण ह्वइहै ❋ स्वामी धीर धरो मनमाहिं ।
अमृत लेकै सुनवां चलिभइ ❋ औ लश्करमें पहुंची आय ॥
लश्कर रहैं जहां महुबेको ❋ तहंपर अमृत दियो डराय ।
मूर्छा जागी सब लश्करकी ❋ जागे उदयसिंह बलवान ॥
ऊदनि आये रनि सुनवांपै ❋ तुरतै चरण छुये मन लाय ।
हथिपचशावद त्यारकरायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
धावाकरिदो गढ़बिसहिनिको ❋ सबके मारु मारु रट लाग ।
यक हरकारा बदलत आयो ❋ औ राजाते कह्यो हवाल ॥
लश्कर आयो है आल्हाको ❋ जल्दी लश्कर लेउ सजाय ।
इतनी सुनते गजराजाने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
लश्करसजवायोबिसहिनिको ❋ ज्यहिको सजत न लागी ब्यार ।
बजो नगारा तब बिसहिनिको ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ॥
मानसिंह सूरज कांतामल ❋ तीनौ साजि भये तैयार ।
कूचकराय दियो लश्करको ❋ औ मूर्चा पर पहुंचे जाय ॥
हुक्म दै दियो सूरजमलने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ लश्कर रही अंधेरिया छाय ॥
गोला छूटै दलके भीतर ❋ अब ना सूझै अपन बिरान ।
बीस कदमके तहं अन्तरमें ❋ गोला चलै दनाक दनाक ॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ मानौं चोर सैंध दैजाय ।
गोला लागै जौन ऊंटके ❋ सो गिरिपरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़ाके ❋ चारौं सुम्म गर्द ह्वइजाय ।
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै करौंटा खाय ॥
गोला जँजीरहा जिनके लागै ❋ तिनके हाड़ मांस उड़िजायं ।
बंबका गोला जिनके लागै ❋ सो लत्ता अस जायँ उड़ाय ॥

चारि घरीभरि गोला बरसो ❋ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
तोपैं धैं धैं लाली होगइं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायं ॥
मारु बन्द भइ तब तोपनको ❋ क्षत्रिन खैंच लई तलवार ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ अन्धाधुन्ध चली तलवार ॥
चारि घरीभरि चली शिरोही ❋ भारी बही रक्तकी धार ।
पगपैगपर पैदल गिरिगये ❋ उनके दुदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसेपर हाथी गिरि गये ❋ छोटे पर्वतकी अनुहार ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रट लागि ॥
भगे सिपाही झुन्नागढ़के ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी जब सूरजमलने ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
समुहे देखो बघऊदनिको ❋ तिनते सूरज कही सुनाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखैं कापर राम रिसायं ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
खैंचि शिरोही सूरजमलने ❋ बघऊदनिपर दई चलाय ॥
तीनि शिरोही सूरज मारी ❋ ऊदनि लीन्हे चोट बचाय ।
टूटि शिरोही गइ सूरजकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
धोखा देके तब सूरजको ❋ दहिने गयो उदयसिंह राय ।
ढालकि ओझड़ ऊदनि मारी ❋ सूरज गिरे भूमि भहराय ॥
उतरि बेंदुलाते भुंइ आये ❋ औ सूरजको लियो बँधाय ।
देखि हकीकति कांतामलने ❋ आगे घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ जल्दीते ❋ सो ऊदनि पर राखी जाय ।
ढाल अड़ाई उदयसिंहने ❋ तीनों चोटैं लई बचाय ॥
गाफिल करिकै कांतामलको ❋ ऊदनि लीन्ही डंड बँधाय ।
कांता बँधतैं परलै हैगइ ❋ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वइजाय ॥
खबरि सुनी जब गजराजाने ❋ दोनों बेटा बँधे हमार ।
राजा चलिभै तब ड्योढ़ीते ❋ औ भगतिनपै पहुँचे जाय ॥
हाल सुनायो सब लश्करको ❋ श्यामा जादू लियो उठाय ।

जादू लैके श्यामा चलिभइ ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ॥
घोड़ाअगिनियाँ त्यार करायो ❋ औ गज राजा भये सवार ।
फौज सजाय लई अपनी सब ❋ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
दाबे घोड़ा राजा आये ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
कौने बाँधे पुत्र हमारे ❋ सो समुहें ह्वइ देय जवाब ॥
बोले ऊदनि गज राजाते ❋ राजा सुनौ हमारी बात ।
हमने बाँधे पुत्र तुम्हारे ❋ हमरो उदयसिंह है नाम ॥
धुर दक्खिनसे सेतबन्धलों ❋ बाजी टाप बेंदुला क्यार ।
दतिया मारि उड़ीसा मारो ❋ सोसब जानत सकल जहान॥
झंडा गाड़्यो अटकपारलौं ❋ मार्‌यो राज्य कमायूँ क्यार।
पेशावर मुल्तान जो कहिये ❋ बूँदी थहर थहर थर्राय ॥
सांझ होतही मेवातिनकी ❋ तिरिया हनि हनि देयँ केवाय।
आवत ह्वइहैं ऊदनि ठाकुर ❋ ठाढ़े महल लिहैं लुटवाय ॥
गर्व ना राख्यो केहु राजाके ❋ हमको जानत सब संसार ।
भलो आपनो जो तुम चाहो ❋ सातौ भाँवरि देउ डराय ॥
दूजी करिहौ जो हमरे सँग ❋ मरिहौ राज्य भङ्गह्वइजाय ।
बिना बिवाहे हम ना जैहैं ❋ सो तुम वचन करौ परमान ।
इतनी सुनतै राजा जरि गये ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
बोले गज राजा ऊदनि ते ❋ क्याकमबख्ती लगी तुम्हारि ॥
बढ़ि बढ़ि बातैं तुम मारतहौ ❋ अबही मूड़ लिहौं कटवाय ।
ताते लौटि जाउ महुबेको ❋ दोनों लड़िका देउ छोड़ाय ॥
बोले ऊदनि तब राजातै ❋ तुम सुन लेउ बिसेनेराय ।
जेहिकी बिटिया अच्छी देखैं ❋ जोरा जोरी करैं बियाहु ॥
रीत हमारे यह चलि आई ❋ ताते मानौ कही हमारि ।
रारि बढ़ैहौ जो राजा तुम ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगै ❋ औ बातनमें बाढ़ी रारि ।
हुक्म दे दियो गजराजाने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥

झुके खलासी झुन्नागढ़के ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ।
धुआं उड़ानो आसमानमें ❀ सविता रहे धुँधिमें छाय ॥
गोला छूटे दोनों दलमें ❀ सरसर परी तीरकी मारु ।
सननन सननन गोली छूटै ❀ कहकह करै अगिनियांबान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लालबरन ह्वैजायँ ।
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहै पुकारि पुकारि ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❀ तुम सब भैया लगौ हमार ॥
भागि न जैयो कोउ समुहेते ❀ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय ।
सन्मुख लरिकै जो मरि जैहौ ❀ ह्वैहै जुगन जुगनलों नाम ॥
खटिया परिकै जो मरि जैहौ ❀ जगमें कोउ न लैहैं नाम ।
जीतिके चलिहो जौ महुबेको ❀ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ॥
दै दै पानी रजपूतनको ❀ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ जिनके मारुमारु रटि लागि॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि।
पैदलके सँग पैदल भिरिगये ❀ औ असवारनते असवार ॥
चलै शिरोही मानासाही ❀ ऊना चलै विलायत क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दमानके ❀ कटिकटिगिरैकेसरियाज्वान ॥
चारि घरीभरि चली शिरोही ❀ औ बहिचली रक्तकी धार ।
भगे सिपाही गज राजाके ❀ सब दल रेन बेन ह्वैजाय ॥
बोले राजा तब श्यामाते ❀ भगतिन सुनौ हमारी बात ।
करतब अपनो तुम दिखलावौ ❀ अपनो जादू देउ चलाय ॥
अगिनिकिपुड़ियालइश्यामाने ❀ सो लश्करमें दई बरसाय ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❀ श्यामा आगी दई चलाय ॥
पानिकि पुड़िया लै सुनवांने ❀ सो लश्करमें दई चलाय ।
अगिनिशांतभइसबलश्करकी ❀ श्यामा गई सनाका खाय ॥
तकितकि जादू श्यामा मारै ❀ सुनवां जादू देय उड़ाय ।

चिल्हियावनिगेश्यामाभक्तिनि ❀ सुनवाँ बाज बनी तत्काल ॥
दोनों उड़ि गईं आसमानको ❀ दोऊ लड़न लगीं त्यहिकाल ।
एक घरी तहँ भई लड़ाई ❀ फिरि उड़िगिरींधरनिपर आय ॥
बोली सुनवाँ बघऊदनिते ❀ श्यामहिं देउ जानते मारि ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❀ भौजी सुनो हमारी बात ॥
हाथ जो डरिहैं हमतिरियापर ❀ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ।
ऊदनि उतरे रसबेंदुलते ❀ औ श्यामापै पहुँचे जाय ॥
जूरा काटि लियो भगतिनिको ❀ जादू सबै झूँठ परिजाय ।
देखि हकीकति यह गज राजा ❀ घोड़ा अगिनियाँ दियो बढ़ाय ॥
पूँछ घुमाई जब घोड़ाने ❀ लश्कर जरनलग्यो तत्काल ।
बोली सुनवाँ तब ऊदनिते ❀ देवर मानो बात हमारि ॥
पूँछ काटि लेउ या घोड़ाकी ❀ तौ सब काम सिद्ध ह्वैजायँ ।
धोखा दैकै तब राजा को ❀ ऊदनि दीन्हीं पूँछ उड़ाय ॥
पूँछ कटिगइ जब घोड़ाकी ❀ राजा गये बहुत घबराय ।
घोड़ाअगिनियाश्यामाभक्तिनि ❀ दोनों भये तेजते हीन ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ लैकै महादेव को नाम ।
घोड़ा बढ़ाय दियो राजाने ❀ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
लई कमनियां गज राजाने ❀ कैबर खैंचि लियो अरगाय ।
फोंक जमाई सिंदोहीकी ❀ औगजबेलिकि गांसी लागि ॥
खैंचिकमनियां भुजदंडनपर ❀ तीबा मरमर होय कमान ।
छाती डटिकै तब आल्हाकी ❀ सम्मुहे छांड़ि कैबरी दीन्ह ॥
हथिपचशावद दहिने ह्वैगो ❀ कैबर निकरि गयो वा पार ।
खैंचि शिरोही गजराजा तब ❀ सो आल्हा पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई आल्हाने ❀ तापर भयो जड़ाका जाय ।
टूटि शिरोही गइ राजाकी ❀ राजा मनमें गये सकाय ॥
तौलौं ऊदनि बदलति आये ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
तुम्हरी बरनीको राजा है ❀ याको लेउ जँजीरन बांधि ॥

लैके सांकल तब आल्हाने ❀ पचशावदको दई पकराय ।
बांधि लेउ तुम गजराजाको ❀ गज पचशावद बात ओनाउ ।
सांकल फेरी तब हाथीने ❀ औ राजाको दियो गिराय ॥
देड बांधिलइ तब आल्हाने ❀ औ हौदामें दियो कसाय ।
कूच कराय दियो लश्करते ❀ फाटक पर उरके जाय ॥
जीतिको डंकातब बजवायो ❀ गजराजाते कही सुनाय ।
कौन दाहकमें मलिखे हैं ❀ सो तुम जल्दी देउ बताय ॥
हाथ जोरि बोले गज राजा ❀ हमहीं चलिकै दिहैं बताय ।
संग लैलियो गजराजाको ❀ औ खन्दकपै पहुँचे जाय ॥
पत्थर टारि दियो ऊभेको ❀ रेशमरस्सा दौ लटकाय ।
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❀ दादा सुनौ बीर मलिखान ॥
जल्दी निकरौ तुम दाहकते ❀ अबहीं भांवरि लिहौ डराय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❀ तुम सुनि लेउ लहुरबा भाय ॥
भारी घाव लगे देहीमें ❀ लोह जंजीरन कसे बनाय ।
कैसे निकरैं हम ऊभेते ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब मलिखेते ❀ दादा सुनौ हमारी बात ।
पुष्य नछत्तरमें जन्मे हौ ❀ बरहें परी बृहस्पति आय ॥
यकसौ कुंजरको बल राखो ❀ शंका तुमहिं कालकी नाहिं ।
मुखते हीनी तुम बोलत हौ ❀ क्या बलघटो बीर मलिखान ॥
इतनी सुनतै भुजबल मसके ❀ सांकल तोरि दई मलिखान ।
उछलिकै आये तब ऊभेपर ❀ औ आल्हाको करो प्रणाम ॥
बिनती कीन्ही गजराजाने ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
मुश्कछोरिदेउ तुम लरिकनकी ❀ अबहीं भांवरि देउँ डराय ॥
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❀ सबकी कैद दई छुड़वाय ।
गङ्ग उठवाई उन तीनोंते ❀ औ पण्डितको लियो बुलाय ॥
साइति पूँछि लई भौंरिनकी ❀ राजा करन तयारी लाग ।
माहिल पहुँचे गज राजापै ❀ नैकै करी बन्दगी जाय ॥

बोले माहिल गज राजाते ❋ राजा मानौ कही हमारि ॥
ब्याह जो करिहौ गढ़ महुबेमें ❋ बुड़िहैं सात साखिको नाम ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ हम यक जतन देइँ बतलाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ तिनको मड़ये लेउ बुलाय ।
शूर छिपावौ तुम कोठरिनमें ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
यह मन भाई गजराजाके ❋ तुरतै मडवा दियो गड़ाय ।
शूर बुलाये गजराजाने ❋ सो कोठरिनमें दियो छिपाय ॥
चौक पुराय दई आंगनमें ❋ ऊंची चौकी दई डराय ।
कलश धराय दिये सोनेके ❋ औ सूरजको लियो बुलाय ॥
बोले राजा सूरजमलते ❋ जल्दी तुम बरातको जाउ ।
जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ सो पथरीगढ़ पहुँचे जाय ॥
सूरज चलि भये तब ड्योढ़ीते ❋ औ पथरीगढ़ पहुँचे जाय ।
बैठे आल्हा जहँ तम्बूमें ❋ सूरज नैकै करी सलाम ॥
बोले सूरज तब आल्हाते ❋ हमरे कुला यहै ब्योहार ।
जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ सो सब चलैं हमारे साथ ॥
इतनी बात सुनी आल्हाने ❋ अपनी करन तयारी लाग ।
आल्हा ऊदनि मलखे ढेबा ❋ सुलखे बांधि लिये हथियार ॥
मोहन बेटा बीरशाहको ❋ जो बौरीगढ़को सरदार ।
लाखनि ब्रह्मा जोगा भोगा ❋ जगनिक बांधिलिये हथियार ॥
बारह क्षत्री तुरतै सजि गये ❋ ताल्हन सजे बनारस क्यार ।
सबै घरौआ घोड़नचढ़ि गये ❋ पलकी चढ़े बीरमलिखान ॥
चली पालकी पथरीगढ़से ❋ औ द्वारेपर पहुँची जाय ।
उतरि सवारिनते भुइँ आये ❋ बारहु शूर महोबे क्यार ॥
भयो बुलौआ तब मड़येको ❋ सब मड़ये तर पहुँचे जाय ।
मलिखे बैठि गये चौकी पर ❋ पंडित वेद उचारन लाग ॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❋ लागे होन मंगलाचार ।
आई गजमोतिनि मड़येतर ❋ पंडित गांठि दई जुरवाय ॥

होम कराय दियो पंडितने ❋ भांवरि परन लगी तत्काल ।
पहिली भांवरिके परतैखन ❋ सूरज खैंचि लई तलवारि ॥
चोट लगाई नरमलिखेपर ❋ ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ।
दुसरी भांवरि मलिखे घूमे ❋ कांतामल दइ तेग चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब सुलिखेने ❋ औ बचि गयो बीरमलिखान ।
तिसरी भांवरिके परतैखन ❋ क्षत्रिन खैंचिलई तलवार ॥
चली शिरोही वा मड़येमें ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
टूक टूक मड़येके ह्वैगये ❋ क्षत्री भगे बिसेने क्यार ॥
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा खंभ लेउ गड़वाय ।
भांवरि चारौं जो बाकी हैं ❋ सोऊ अबही लेउ डराय ॥
मांड़व गाड़ो तब सांगनको ❋ ढालन मड़वा दियो छवाय ।
चारों भांवरि जो बाकी रहैं ❋ घूमे तुरत बीर मलिखान ॥
चली शिरोही फिर मड़येतर ❋ चर्बी खंभ गई लपिटाय ।
चुनरी भीजि गई लोहूते ❋ मलिखे रक्त बरन होइ जाय ॥
एक हजार शूर बिसहिनके ❋ नौसै जूझि गये तत्काल ।
एक सौ जोधा बाकी रहिगै ❋ सो खिरकिनते गये बराय ॥
कांतामल औ सूरजमलकी ❋ आल्हा डंड लई बँधवाय ।
मुश्क बांधिकै गजराजाकी ❋ सातो भांवरि लई डराय ॥
बोले ऊदनि गजराजाते ❋ अब तुम भात लेउ बनवाय ।
भातके गरजी हम क्षत्री सब ❋ महलन भोजन होय तयार ॥
इतनी कहिके ऊदनिचलिभये ❋ सब शूरनको संग लिवाय ।
उठी पालकी नरमलिखेकी ❋ जनवासेकी पकरी राह ॥
सबमिलि पहुँचगयेपथरीगढ़ ❋ जान्यो हाल महिलपरिहार ।
लिल्ली घोड़ीपर चढ़ि बैठे ❋ औ बिसहिनकी पकरी राह ॥
जहां कचहरी गजराजाकी ❋ पहुँचे उरईके परिहार ।
करी बन्दगी गजराजाको ❋ तब राजाने कही सुनाय ॥

बड़े शूरमा हैं महुबेके ❀ जिनते हारि गई तलवारि ॥
सातौं भांवरि उन डरवाईं ❀ दोनों बेटा लिये बँधाय ।
भातखानको अब वे कहगये ❀ सो कछु जतन देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब राजाते ❀ तुम सुनि लेउ बिसेने राय ।
जो वे कहि गये भातखानेको ❀ सबको काल रह्यो नियराय ॥
बिनती करिकै तुम आल्हाते ❀ लावौ साथ घरौआ ज्वान ।
बिन हथियार साथ लै आवो ❀ सबके मुंड लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ धनि धनि उरईके परिहार ।
भली बताई माहिल ठाकुर ❀ हमने मानी बात तुम्हारि ॥
तुरतै भात त्यार करवायो ❀ महलन भई रसोई त्यार ।
शूर बुलाये गज राजाने ❀ दोहरे तेगा दिये बँधाय ॥
सो बैठारि दिये कोठरिनमें ❀ जनवासेको भये तयार ।
संग लै लियो सब नेगिनको ❀ औ बरातमें पहुँचे जाय ॥
जहँपर तम्बू था आल्हाको ❀ पहुँचे तहां बिसेने राय ।
लगी कचहरी तुनि आल्हाकी ❀ अजगर लागि रहा दरबार ॥
एक अलँग ताल्हन सैयद हैं ❀ बैठे एक ओर मलिखान ।
एक अलँगपर ढेबा बहादुर ❀ यकलंग उदयसिंह बलवान ॥
एक अलँगपर लाखनिराना ❀ जिनके लाखनके ब्योहार ।
एक अलँग ब्रह्मानन्द बैठे ❀ मानहुं इन्द्र देव सरदार ॥
जगनिक बैठे जगनेरीके ❀ जोगा भोगा औ सुलिखान ।
मोहन बैठे बौरीगढ़के ❀ बैठे बड़े बड़े बलवान ॥
नचै कंचनी वा समयापर ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
जबहीं झोंक देत नैननकी ❀ क्षत्रिन लगत कामके बान ॥
तीनि हाथ ऊंचा सिंहासन ❀ तापर तपै बनाफरराय ।
तौलौं पहुंचि गये गजराजा ❀ औ आल्हाको करी सलाम ॥
नजरि बँदलिगइतुनिआल्हाकी ❀ ऊंची चौकी दई डराय ।

तुरतै बैठि गये गजराजा ❀ तब आल्हाने कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आये हो ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले गजराजा आल्हाते ❀ हमरे कुला यहै ब्यौहार ॥
जितने शूर हते भौंरिनमें ❀ उतनेइ भात खानको जायँ ।
त्यार रसोईं है महलनमें ❀ सब उठि चलैं हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै तुनि आल्हाने ❀ सब शूरनते कही सुनाय ।
करौ तयारी अब चलिबेकी ❀ चलिकै जेइँ लेउ ज्योंनार ॥
बारहु शूर उठे एकै सँग ❀ अपने बांधि लिये हथियार ।
तब गजराजा बोलन लागे ❀ दुबिधा छोड़ि देउ महराज ॥
बिन हथियार चलौ हमरे संग ❀ हमरे कुला यहै ब्यौहार ।
अब हम दूजी कछु करिहैं ना ❀ मानो सांचे बचन हमार ॥
हौ समरत्थ सबै लरिका तुम ❀ धनि रजपूत लियो औतार ।
गडुआ लैकै गंगाजलको ❀ बारह शूर भये तैयार ॥
चली पालकी नरमलिखेकी ❀ सिगरे शूर चले एक साथ ।
जाय पहुँचे दरवाजे पर ❀ तुरतै पलकी धरी उतारि ॥
उतरे मलिखे तब पलकीते ❀ औ मड़येमें पहुँचे जाय ।
लैलै गडुआ कर सोनेको ❀ सब चौकामें बैठे जाय ॥
करी चौकसी गजराजाने ❀ फाटक बन्द दिये करवाय ।
डारि पत्तलैं दईं राजाने ❀ उनपर भात दियो परसाय ॥
नेग मँगाय दियो गजराजा ❀ सोने कंगन रतन जड़ाय ।
कौर उठायो जब मलिखेने ❀ राजा हल्ला दियो कराय ॥
क्षत्री निकरि परे कोठरिनते ❀ अपनी लिये हाथ तलवारि ।
देखि हकीकति ऊदनि बोले ❀ घटिहै भूप बिसेना राय ॥
बिन हथियार संग निज लाये ❀ औ घटि करी हमारे साथ ।
सुमिरिन करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ॥
बारहु शूर उठे महुबेके ❀ गडुआ हाथमें लियौ उठाय ।

गड्डवा मारैं ज्यहि क्षत्रीके ❀ सो गिरिपरै धरनि भहराय ॥
चारिघरी भरि गड्डवा मारो ❀ चौकी पाटा लिये उठाय ।
बड़े खिलारी महुबेवाले ❀ सब क्षत्रिनको दियो गिराय ॥
बचे बचाये क्षत्री भागे ❀ मड़ये बही रक्तकी धार ।
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
भात न छोड़ौ पतरिनपरको ❀ बैठिके जेइं लेउ ज्योंनार ।
इतनी सुनिकै बारहु क्षत्री ❀ लोथिन ऊपर बैठे जाय ॥
भातु खान लागे सबहीमिलि ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
देखि हकीकतिगजमोतिनने ❀ निज मातासे कही सुनाय ॥
लडिकै जितिहैं ना दादा अब ❀ ताते जल्द देउ समुझाय ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❀ माड़ौ लिये बापको दाउँ ॥
जंग जीतिकै नैनागढ़में ❀ सातौं भांवरि लईं डराय ।
इतनी सुनिकै रानी चलिभइ ❀ औ राजापै पहुंची जाय ॥
हाथ जोरिकै रानी बोली ❀ स्वामी मानौ बात हमारि ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❀ इनते तुम जीतनके नाहिं ॥
सोच करौ ना कछु जियरामें ❀ बेटी बिदा देउ करवाय ।
इतनी बात सुनी गजराजा ❀ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
बोले राजा तुनि आल्हाते ❀ हमरी चूक माफ होइ जाय ।
करौ तयारी अब बरातको ❀ अबहीं बिदा देउँ करवाय ॥
यह सुनि ऊदनि उठि ठाढ़े भये ❀ फाटक बन्द दियो खुलवाय ।
शूरबारहौं चलि बिसहिनते ❀ पथरीगढ़में पहुँचे जाय ॥
हुक्म दै दियो सब लश्करमें ❀ अब महुबेको होउ तयार ।
तौलौं नाई गजराजाको ❀ सो आल्हापै पहुँचो आय ॥
हाथ जोरिकै नाई बोलेउ ❀ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ।
हुक्म दियो है गज राजाने ❀ तुरत पालकी देउ पठाय ॥
बिदा कराय देउँ बेटीको ❀ अब न राखो देर लगाय ।

इतनी सुनिकै बघऊदनिने ❀ गहनेको डब्बा लियो मंगाय॥
संग पालकी लै बराततै ❀ बिसहिनगढ़की पकरी राह।
गई पालकी दरवाजेपर ❀ ऊदनि डब्बा लियो उठाय॥
जितने नेगी गज राजाके ❀ सबको गहनो दौ पहिराय।
भई तयारी गजमोतिनकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय॥
सिगरे गहने बेटी पहिरे ❀ अंग अंगमें सजे बनाय।
रूपकिआगरिसोगजमोतिनि ❀ तापर भूषण लिये रचाय॥
सजिकैठाढ़ी भइगजमोतिनि ❀ मानौं लक्ष्मी सजी बनाय।
भेंटन लागी निज माताको ❀ भेंटी बहुरि सहेलिन साथ॥
शीश नायकै गजराजाको ❀ औ पालकिमें बैठी जायँ।
सुमिरनकरिकैगजमोतिनिको ❀ सखियां रोय रोय रहिजायँ॥
चली पालकीगजमोतिनिकी ❀ औ बरातमें पहुंची आय।
आई पालकी जनवासेमें ❀ आल्हा हुक्म दियो फरमाय॥
कूच कराय देउ फौजनको ❀ औ महुबेको होय तयार।
इतनी सुनिकै बघ ऊदनिने ❀ लश्कर हुक्म दियो करवाय॥
कूच कराय देउ लश्करको ❀ औ महुबेको होय तयार।
आयेभिखारीगढ़बिसहिनिके ❀ ऊदनि मोहरैं दई लुटाय॥
चले महोबियागढ़बिसहिनिते ❀ औ महुबेकी पकरी राह।
आठ रोज मारगमें बीते ❀ महुबो धुरो दबायो जाय॥
रुपना बारीको बुलवायो ❀ सो आगेको दियो पठाय।
मल्हना रानी अंटा ठाढ़ी ❀ हेरै बाट बरायत केरि॥
तौलौं रुपना दाखिल ह्वैइगा ❀ दोनों हाथ जोरि रहिजाय।
बोली मल्हना तब रुपनाते ❀ बेटा हाल देउ बतलाय॥
कैसी गुजरी पथरीगढ़में ❀ सो सब हाल कहो समुझाय।
रुपना बोलेउ तब मल्हनाते ❀ माता सुनौ हमारी बात॥
घटिहाराजा बिसहिनिवालो ❀ बहुछल कियो बनाफर साथ।

पुण्य तुम्हारो दहिने ह्वैगो ❁ आये ब्याहि बीर मलखान ॥
करो तयारी अब परछनिको ❁ बहुअरि जल्दी लेउ उतारि ।
इतनी बात सुनी मल्हनाने ❁ मनमें बहुत खुशी ह्वै जाय ॥
देवै ब्रह्माको बुलवायो ❁ बारहु रानी लईं बुलाय ।
सखियां बुलवाईं महुबेकी ❁ लागे होन मङ्गलाचार ॥
थार सूबरणको मँगवायो ❁ चौमुख दियना दिया बराय ।
करी तयारी रानिमल्हनाने ❁ औ रूपनाते कही सुनाय ॥
जल्दी भेजि देउ पलकीको ❁ महलन त्यारी दई कराय ।
रूपना चलिभयो तब बरातको ❁ औ ऊदनि पै पहुँचो जाय ॥
रूपना बोलेउ बघ ऊदनिते ❁ जल्द पालकी देउ पठाय ।
चलीपालकी गजमोतिनकी ❁ औ द्वारेपर पहुँची जाय ॥
आईं बरायत जब महुबेमें ❁ झंडन रहीं लालरी छाय ।
मल्हना रानी द्वारे आईं ❁ देवै ब्रह्मा संग लिवाय ॥
बारह रानी चंदेलेकी ❁ सोऊ द्वारे पहुँची आय ।
सखियां मंगल गावन लागीं ❁ परछनि होन लगी तत्काल ॥
बहू उतारि लई मल्हनाने ❁ रंग महलमें गईं लिवाय ।
नेगचार कीन्हीं सबने मिलि ❁ दान दक्षिणा दई बँटाय ॥
मलिखे पांव छुये मल्हनाके ❁ सो माथेमें लिये लगाय ।
देवै ब्रह्माके पद छुइकै ❁ सबके चरण छुये मनलाय ॥
बजी बधाई गढ़ महुबेमें ❁ घर घर भयो मंगलाचार ।
परजा झगरैं गढ़ महुबेकी ❁ सबको मल्हना दियो इनाम ॥
ऊदनि पहुँच गये लश्करमें ❁ सबको लिखतैं दई बँटाय ।
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❁ आये जीति बनाफरराय ॥
जितने बराती महुबे आये ❁ सबको मिले उदयसिंहराय ।
आदर करिकै सब राजनको ❁ ऊदनि बिदा दियो करवाय ॥
सबै बराती जो राजा थे ❁ अपनो कूच दियो करवाय ।

जितने बराती थे महुबेके ❁ अपने घरन पहूँचे जाय ॥
ऐसे ब्याह भयो मलिखेके ❁ सो हम कहिके दियो सुनाय ।
सांच झूठ परमेश्वर जानैं ❁ पै हम सांची कही बनाय ॥
नित उठि सुमिरो शिवशंकरको ❁ करिहैं भोला नाथ सहाय ।
सुनौ सुनावौ यहु आल्हा तुम ❁ बाढ़ै ज्ञान बुद्धि सरसाय ॥
कहौं हकीकति बौरीगढ़की ❁ जेहि विधि आये उदयसिंहराय।
समय समय पर आल्हा गाओ ❁ नित उठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महं ❁ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।

इति मलिखानका ब्याह संपूर्ण

श्रीः

अथ चंद्रावलिकी चौथी

★

(बौरीगढ़की लड़ाई)

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सम्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया

जाहि मनाय बनाय प्रपंच, बिरंचि रच्यो बिरच्यो जगतीको ।
विष्णु करैं प्रतिपालन लालन, पाय सहाय अलक्ष्य गतीको ॥
शंकर सृष्टि सँहारत जा बल, फर्क न आवत एक रतीको ।
ध्यान करौं त्यहि सूरसतीको, उदारमती सिरी पारवतीको ॥
लगत महीना शुभ भादौंका ❀ तिथि अष्टमी और बुधवार ।
मथुरा माहिं रूप गुण आगर ❀ लीन्हो कृष्णचन्द्र औतार ॥
आधी राति समय मनभावन ❀ पावन रूप काल कल्यान ।
भक्त उबारन हेत जगतमहँ ❀ प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान ॥
माया प्रगट करी स्वामीने ❀ लीला करी भक्तके काज ।
महिमा प्रभुकी सब जगजाहिर ❀ जानत सकल देव सिरताज ॥
चरित अनूपम कृष्णचन्द्रके ❀ गावत साधुसन्त मनलाय ।
पावत भक्ति सुखद यदुवरकी ❀ हितकरि जगतमाहिं हर्षाय ॥
लगो महीना जब सावनका ❀ घर घर परे हिंडोला आय ।
होनलाग त्योहार तीजको ❀ सखियां गावैं राग मलार ॥
ठाढ़ी मल्हना सतखंडापर ❀ अपने मनमहँ करै विचार ।
सुधि नहिं पाई चंद्रावलिकी ❀ घरघर बिटियां आइं बुलाय ॥
जबते ब्याहि गई चन्द्रावलि ❀ तबते मिली नाहिं म्वहिं आय ।
सोच करत थी मैं अपने मन ❀ समरथ लरिका होयँ हमार ॥

चौथी लेहैं चन्द्रावलि की ❀ तब हम मिलिहै हाथ पसारि ।
अस विचारिकै मल्हनारानी ❀ लैलै नाम चन्द्रावलि क्यार ॥
रोवन लागी सतखंडापर ❀ तोलौं आये उदयसिंहराय ।
कान अवाज परी ऊदनिके ❀ ऊदनि हाथ जोरि रहिजायँ ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हनाते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कौन बातको माता रोवौ ❀ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय ॥
करो बहाना तब मल्हनाने ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
घरघर बिटिया सावन गावैं ❀ अपनौ करैं तीज त्योहार ॥
हमरेघरमां कोउ उपजी नहिं ❀ करती आज तीज त्योहार ।
इतना सुनिकै ऊदनि बोले ❀ अपनी लई कटारी काढ़ि ॥
पेटु मारि अबहीं मरिजैहौं ❀ नाहीं सांची देउ बताय ।
केहिकै बेटी चन्द्रावलि हैं ❀ को है बीरशाह महराज ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❀ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
बहिनि तुम्हारी यक चंद्रावलि ❀ सो बौरीगढ़ गई विवाहि ॥
जबते ब्याहि गई चन्द्रावलि ❀ काहू बिदा कराई नाहिं ।
कोउ न उपजो अस महुबेमें ❀ जो बेटीको लावै लिवाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ माता हमहिं बतायो नाहिं ।
कैसे ब्याह भयो बहिनीको ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❀ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
उमरि तुम्हारी तब थोरी थी ❀ ताते तुमहिं बतायो नाहिं ॥
बहिनि तुम्हारी चन्द्रावलि जो ❀ जाकौ रूप कह्यो ना जाय ।
खबरि फैल गई देश देशमें ❀ बेटी सुघरि चन्देले केरि ॥
ऐसी सुन्दरि है चन्द्रावलि ❀ मानो प्रगट पद्मिनी नारि ।
राजा बीरशाह बौरीको ❀ लश्कर साथ लाय हियँ आय ॥
एक कोशपर डेरा कीन्हों ❀ चिट्ठी महुबे दई पठाय ।
लिखी हकीकति बीरशाहने ❀ पढ़ियो याहि चन्देले राय ॥
बेटा ब्याहन हम आये हैं ❀ तुम बेटीको करो विवाह ।

ऐसी पाती पढ़ी चँदेले ❋ तुरतै हमहिं लियो बुलवाय ॥
हाल सुनायो सब पातीको ❋ औ फिरि पूछी उचित सलाह ।
सो सुनि ज्वाब दियो हमने तब ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
करिहौ व्याह कोउ राजाके ❋ आखिर बेटी रहे न क्वांरि ।
स्यानी बेटी है अपने घर ❋ ताते मानहु बात हमारि ॥
उत्तम कुल है बीरशाहको ❋ यादव वंश बीर विख्यात ।
बेटा सुन्दर इन्द्रसेन है ❋ बेटी व्याह देउ महराज ॥
पारसपूजा है तुम्हरे घर ❋ दायज देउ उचित सुखपाय ।
बात हमारी सुनि राजाने ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखीहकीकति बीरशाहको ❋ पढ़ियो याहि यादवाराय ।
नाम हमारो तुम जानत हौ ❋ जगमें विदित रजापरिमाल ॥
बड़े बड़े क्षत्री हम जीते हैं ❋ सबकी हारि गई तलवारि ।
जब हम जानी अपने मनमें ❋ सम्मुख कोउ लड़ैया नाहिं ॥
तब हम खाँड़ा धरि समुद्रमें ❋ मानी अमर गुरूकी आनि ।
नहिं हथियार छुवैं रणमें हम ❋ हमरे मित्र सकल सरदार ॥
करिया आयो माड़ौ वाला ❋ आधीरात जानि तेहिकाल ।
सोवत बाँध्यो दस्सराजको ❋ बच्छराजको लियो बँधाय ॥
पुनि लुटवायो दशपुरवा सब ❋ ना विपदा की रही शुमार ।
निर्बलजानिकै गढ़ महुबेको ❋ तुमहूं लश्कर लाये सजाय ॥
करी चढ़ाई जब बौरीगढ़ ❋ तब तुम कहां हते महराज ।
मित्र बने तहँ बाप तुम्हारे ❋ सो तुम हमहिं भूलि गये आज ॥
लिख्यो व्याह जो तुम पातीमें ❋ सो तुम सुनौ यादवा राय ।
बेटी स्यानी हैं हमरे घर ❋ सो हम देहैं व्याह रचाय ॥
धीरज राखो अपने मनमें ❋ ह्वैइहै व्याह पद्मिनी क्वार ।
यह विधिपाती लिखि राजाने ❋ औ धावनको दई गहाय ॥
धावन चलिभयो तब जल्दीते ❋ बीरशाहपै पहुँचो जाय ।
पाती दीन्हौं बीरशाहको ❋ सो लै तुरतै बांचन लाग ॥

पढ़ी हकीकति जब पातीकी ❀ मनमें बहुत गये शरमाय।
ज्वाब लिख्योफिरि बीरशाहने ❀ पढ़ियो याहि चँदेले राय॥
जो तकसीर भइ हमते कछु ❀ सो तुम माफ करौ महराज।
करौ तयारी अब जल्दीते ❀ जासों होय ब्याहको काज॥
पढ़ी हकीकति चन्देलेने ❀ बहुतै खुशी भये परिमाल।
करी तयारी सब ब्याहकी ❀ घर घर भयो मंगलाचार॥
खबरि भेजि दइ बीरशाहको ❀ सोऊ करन तयारी लाग।
सजी बरात इन्द्रसेनकी ❀ आई चन्द्रवंशके द्वार॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❀ पंडित वेद उचारन लाग।
नेग योग होइब्याह भयो तब ❀ बेटी बिदा दई करवाय॥
उमिरि तुम्हारी तब थोरी थी ❀ लरिया सबै रहे लाचार।
कठिन यादवा बौरीवाले ❀ ताते हाल बताओ नाहिं॥
देख्यो नाहीं हम बेटीको ❀ बारह बरस भये यहिकाल।
सो सुधि आई म्वहिं बेटीकी ❀ तब हम रोय उठी लै नाम॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ माता सुनौ हमारी बात।
बिदा करैबेको हम जैहैं ❀ हमको खर्चा देउ मँगाय॥
मल्हना बोली तब ऊदनिते ❀ बेटा मानौ कही हमारि।
बैरि तुम्हारे देश देश हैं ❀ नाहक रारि बढ़ैयो जाय॥
काम तुम्हारो ना जैबेको ❀ कोई चुगुली करिहै जाय।
यहसुनि बोले बघ ऊदनि तब ❀ माता सोच देउ बिसराय॥
कही तुम्हारी हमना मनिहैं ❀ ताते त्यारी देउ कराय।
बिदा करै हैं हम बहिनीकी ❀ चाहैं प्राण रहैं की जायँ॥
इतनी कहिकै ऊदनि चलि भये ❀ औ परिमाल कचहरी जायँ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❀ दादा सुनौ हमारी बात॥
खर्च मँगाय देउ हमको तुम ❀ मैं बौरीगढ़ होउँ तैयार।
बिदा करैहौं मैं बहिनीको ❀ घरपर आय करैं त्यौहार॥
इतनी बात सुनो ऊदनिकी ❀ तब राजाने कही सुनाय।

काम नहीं है कछु जैबेको ❋ बेटा मानौ बात हमारि ॥
चाह नहीं है हमैं बिदाकी ❋ ना बेटीते काम हमार ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा हम मनिबेको नाहिं ॥
बिदा करैहैं हम बहिनीकी ❋ अबहीं खर्च देहु मँगवाय ।
जौ मैं बेटा देवे वालो ❋ तुरतै बिदा लेउँ करवाय ॥
इतनी सुनिकै राजाचल भये ❋ औ मल्हनापै पहुँचे जाय ।
सूरति देखी जब राजाकी ❋ मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
बोले राजा तब मल्हनाते ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि ।
हाल बतावो तुम बौरीकी ❋ ऊदनि एक न मानत बात ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
पारस पूजा तुम्हरे घरमें ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥
दौलति चहिये सब काहूँको ❋ सो तुम तहां देउ पहुँचाय ।
बिदा करि देहैं बौरीवाले ❋ राजा मानौ बात हमारि ॥
सुनी बात जब रनिमल्हनाकी ❋ राजाके मन गई समाय ।
त्यारी करि देइ परिमालेने ❋ साठि पालकी दई सजाय ॥
अस्सी गजरथ चालिस हाथी ❋ सुन्दर घोड़ा एक हजार ।
बारह तोड़ा मोहरनवाले ❋ बीस दुसाला औ रूमाल ॥
सवा लाखकी चौरा कलँगी ❋ सो ऊदनिको दियो गहाय ।
सात लाखकी सब सामग्री ❋ सो ऊदनिको दइ सौंपाय ॥
बावन मट्का मल्हना साजे ❋ तिनपर रंगति दई कराय ।
बोले राजा तब ऊदनिते ❋ पृथ्वीराजते मिलियो जाय ॥
पहिले जैयो तुम दिल्लीको ❋ जैसी कहैं बीर चौहान ।
तैसी करियो तुम बौरीमें ❋ यह सुनि चले उदयसिंहराय ॥
नाऊ बारी भाँट पुरोहित ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फांदि भयो असवार ॥
करी बन्दगी परिमालेको ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ।
ताही अवसर माहिल आये ❋ लिल्ली घोड़ीके असवार ॥

हाल बतायो ना काहूने ❋ माहिल सबते पूछन लाग ।
अहिरको लरिका यक उरईको ❋ जाको महुबे भयो विवाह ॥
तौलौं मिलिगौ सो माहिलको ❋ ताने हाल कह्यो समुझाय ।
सुनिकै माहिल तुरतै चलि भये ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
खबरि पठाई थीं पहिलैते ❋ लिखिकै हाल उदैसिंहराय ।
तौलौं माहिल दाखिलह्वै गये ❋ पृथ्वी राजको करी सलाम ॥
सूरति देखी जब माहिलकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
आवौ बैठो उरई वाले ❋ यह हँसि कही पिथौरा राय ॥
माहिल बोले पृथ्वीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ।
करी सलाहैं चन्देलेने ❋ दिल्ली चलिकै लेत लुटाय ॥
पहिले भेजो हैं ऊदनिको ❋ ऐहैं बहुरि बीर मलिखान ।
करो बहाना बौरीगढ़को ❋ सो तुम मानौ बात हमारि ॥
यह सुनि बोले पृथ्वीराज तब ❋ ऐसि न कहौ महिलपरिहार ।
काहे दिल्ली वे लुटवैहैं ❋ उनको कौन परी परवाहि ॥
क्या तकसीर करी उनकी हम ❋ कासे दिल्ली लिये लुटाय ।
जब तुम आवत हो दिल्लीको ❋ तब तुम झूँठी कहत बनाय ॥
यह सुनि मनमें कायल ह्वैकै ❋ औ चलिभये महिलपरिहार ।
राह पकरिलइ बौरीगढ़की ❋ अब ऊदनिको सुनो हवाल ॥
ऊदनि पहुँचे गढ़ दिल्लीमें ❋ बागमें डेरा दियो डराय ।
जब सुधि पाई पृथ्वीराजने ❋ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
बोले पृथ्वीराज सूरजते ❋ तुम ऊदनिको लावो लिवाय ।
यह सुनि चलि भये तब सूरजमल ❋ औ बागनमें पहुंचे जाय ॥
करी बन्दगी सूरजमलने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
तुमहि बुलायो है राजाने ❋ सो तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभै ❋ पृथ्वीराजपै पहुंचे जाय ।
करी बन्दगी पृथ्वीराजको ❋ दोनों हाथ जोरि रहिजाय ॥

नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❋ तुरतै छाती लियो लगाय ॥
कहांकि त्यारी करी उदयसिंह ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले ऊदनि पृथीराजते ❋ हम बौरीको भये तयार ॥
विदा करैहैं हम वहिनीको ❋ यह सुनि कही पिथौराराय ।
जालिम राजा है बौरीको ❋ ताते लौटि महोबे जाउ ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ राजा हम मनिबेको नाहिं ।
बिदा न करिहैं चन्द्रावलिको ❋ तौ हम बौरी लिहैं लुटाय ॥
बिदा करैहैं हम बहिनीको ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
यह सुनि पृथीराज सोचे मन ❋ ऊदनि कही न मनिहैं बात ॥
चीरा कलँगी सवालाखकी ❋ पृथीराजने लई मँगाय ।
सो दैदीन्हों बघ ऊदनिको ❋ यह बौरीमें दीजौ जाय ॥
बिदा करिदिहै चन्द्रावलिको ❋ तुम्हरे कामसिद्धि ह्वइ जाय ।
खबरि सुनी जब रानिअगमाने ❋ तब ऊदनिको लियो बुलाय ॥
सखियां ठाढ़ी जो महलनमें ❋ सो ऊदनितन रही निहारि ।
चरन लागिकै रनि अगमाके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय ॥
बोली अगमा बघ ऊदनिते ❋ तुम सुनि लेउ उदयसिंहराय ।
कठिन यादवा बौरीवाले ❋ तुमसे मारू सही ना जाय ॥
ताते मानौ कही हमारी ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
बिदा करैहैं हम बहिनीको ❋ तब हम लौटैं नगर महोब ।
बिदा न करिहैं बीरशाह जो ❋ मरिहौं राज्य भंग ह्वइजाय ॥
यहसुनि अगमा सोचन लागी ❋ कलहा दस्सराजको लाल ।
यहु ना मनिहैं कही हमारी ❋ याको नाम उदैसिंह राय ॥
लहर पटोरैं सवालाखकी ❋ रनि अगमाने लई मँगाय ।
सो पकराय दई ऊदनिको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
भेट दीजियो यहु समधिनको ❋ तुम्हरो काम सिद्धि होइ जाइ।
चरण लागिकै रनि अगमाके ❋ तुरतै चले उदयसिंहराय ॥

कई रोजकी मंजिल करिकै ❋ बौरी गढ़में पहुँचे जाय ।
आठ कोश जब बौरी रहिगइ ❋ अपनो डेरा दियो लगाय ॥
कागद लैके कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै साथ ।
लिखी हकीकति बघऊदनिने ❋ पढ़ियो बीरशाह महराज ॥
सिद्धिश्री नारायण लिखिकै ❋ तां पाछेते लिखी जोहार ।
लिखी हकीकति फिरि चौथीकी ❋ औ महुबेको लिखो हवाल ॥
बिदा करावन हम आये हैं ❋ बघ ऊदनि है नाम हमार ।
ऐसी पाती ऊदनि लिखिकै ❋ सो धावनको दई गहाय ॥
धावन चलिभौ पाती लैके ❋ बौरीगढ़में पहुंचो जाय ।
लगी कचहरी बीरशाहकी ❋ धावन नैके करी सलाम ॥
पाती धरिदइ त्यहि गद्दीपर ❋ सो राजाने लई उठाय ।
खोलिकै पाती राजा देखी ❋ मनमें बहुत खुशी होइजाय ॥
जोरावर लरिका बुलवायो ❋ औ पातीको कह्यो हवाल ।
जबते ब्याह भये महुबेमें ❋ सुधि नहिं लई काहुने आय ॥
लरिका आयो है महुबेते ❋ जाको नाम उदयसिंहराय ।
जल्दी लावौ तुम ऊदनिको ❋ सुनि जोरावर भयो तयार ॥
लरिका चलिभयोबीरशाहको ❋ औ ऊदनिपै पहुँचो जाय ।
करी तयारी बीरशाहने ❋ अपनो बँगला लियो सजाय ॥
जैसी पगिया रहै राजाकी ❋ तैसी सबको दई बँधाय ।
इकरंगकलँगी सबके शिरपर ❋ बीरशाहने दई लगाय ॥
एक उमरिया सब काहूकी ❋ एकै बाना लियो बनाय ।
ना पहिचान होय राजाकी ❋ यहि बिधिबँगलासज्योबनाय॥
एक हरकारा दौरत आयो ❋ औ ऊदनिते लगो बतान ।
लरिका आयो बीरशाहको ❋ सो तुम उठिकै करो जोहार ॥
ऊदनि उठिकै तुरतै आये ❋ जोरावरको करी जोहार ।
बोले जोरावर तब ऊदनिते ❋ तुम सुन लेउ उदयसिंहराय ॥
तुमहिं बुलायो है राजाने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ।

इतनी बात सुनी ऊदनिने ❋ घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❋ औ चलि भये उदेसिंहराय ।
जहां कचहरी वीरशाहकी ❋ अपनो घोड़ा नचायो जाय ॥
क्षत्री देखि रहे ऊदनि तन ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
रूप सांवरो वय ऊदनिको ❋ नैना हिरनाकी उनहार ॥
मोहित ह्वइ गये तब क्षत्री तहँ ❋ कोउ न आंखी सकै मिलाय ।
ऊदनि देखो वा बँगलाको ❋ औ क्षत्रिन तन रहे निहारि ॥
एकै उम्मरिके क्षत्री सब ❋ सोहैं पाग शीश यकसार ।
एकै तुरी एक निशाना ❋ एकै रंग क्षत्रियन क्यार ॥
ऊदनि सोचैं अपने मनमें ❋ धोखा दियो यादवा राय ।
जानि प्रताप देखि राजाको ❋ ऊदनि राते करी सलाम ॥
चिट्ठी लैकै परिमालैकी ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ।
जो सामान गये लै ऊदनि ❋ सो राजाके धरो अगार ॥
देखी सामान जब चौथीकी ❋ राजा बहुत खुशी ह्वइजाय ।
पाती बांची परिमालैकी ❋ आंकुइ आंकु देखि सुखपाय॥
हृदय लगाय लियो ऊदनिको ❋ औ यह कही यादवा राय ।
सुधि बिसराय दई बौरीकी ❋ कबहुँ न आये हमारे देश ॥
चौथी पाई हम राजी भये ❋ धीरज धरो उदयसिंहराय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
मट्ठुका लाये हम चौथीके ❋ महलन अबहिं देउ पठवाय ।
बोले राजा जोरावरते ❋ महलन खबरि देउ पहुँचाय ॥
इतनी सुनिकै जोरावरने ❋ महलन खबरि दई करवाय ।
सखियां बुलवाई राजाने ❋ महलन होय मंगलाचार ॥
नगर सजायो बीरशाहने ❋ सिगरी गलियां दई सजाय ।
बन्दनवारी घर घर बँधि गई ❋ द्वारे द्वारे कलश धराय ॥
जहँ तहँ बाजा बाजन लागे ❋ नौबत झरन लगी नृपद्वार ।
बजै नगारा गलियारेनमां ❋ शोभा कछू कही न जाय ॥

भयो बुलौआ बघऊदनिको ❋ महलन चले उदयसिंहराय ।
घोड़ा बेंदुला नाचत जावै ❋ संगै चलो काफिला जाय ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलिने ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ।
ऊदनि निकसैं जौन गलीह्वै ❋ तहां गलीचा बिछे अगार ॥
फूल बरसि रहे तहँ ऊपरते ❋ सखियां रहीं अबीर उड़ाय ।
अतर गुलाबन की झरि लागी ❋ छज्जन रहीं लालरी छाय ॥
छुटैं पिचक्का कहुँ केसरिके ❋ गलियां महकि महकि रहिजायँ ।
सुंदर रूप देखि ऊदनिको ❋ तिरिया मोहि मोहि रहिजायँ ॥
धनि धनि कहिये उनकी माता ❋ ज्यहिकी कोखि लियो औतार ।
शोभा देखी बौरीगढ़को ❋ ऊदनि बहुत खुशी ह्वैजायँ ॥
धीरे धीरे चले उदैसिंह ❋ औ द्वारे पर पहुँचे जाय ।
लगी सलामी दरवाजेपर ❋ शोभा एक न बरणी जाय ॥
रंग महलके दरवाजेपर ❋ ऊदनि घोड़ा नचायो जाय ।
रानी आई बीरशाहकी ❋ लीन्हें थार सूबरन क्यार ॥
भुजबल पूजे बघऊदनिके ❋ तुरत आरती धरी उतारि ।
उतरे ऊदनि रसबेंदुलसे ❋ औ रानीके समुहे आय ॥
चरण लागिकै महारानीके ❋ सो माथेमें लियो लगाय ।
लहर पटोरे ऊदनि लैकै ❋ सो रानीके धरे अगार ॥
भट्ठका लै कै सब चौथीके ❋ सो ऊदनिने धरी अगार ।
जो सामान गये लै ऊदनि ❋ सो समुहे सब दियो धराय ॥
सोने चांदीको गहना लैकै ❋ सो नेगिनको दियो पठाय ।
बाकी गहना ऊदनि लैकै ❋ सो रानीको दौ पकराय ॥
बाकी नेगी रहे होयँ जो ❋ तिनको दीजै आपु बँटाय ।
नेगी खुशी भये बौरीके ❋ औ तारीफ करन सब लाग ॥
युग युग जीवौ ऊदनिठाकुर ❋ ऐसे कबहुँ न मिल्यो इनाम ।
चन्द्रावलि आई तुरतै तहँ ❋ औ ऊदनिके गइ लिपटाय ॥
हाल पूँछिकै बघ ऊदनिको ❋ पूँछी कुशल महोबे केरि ।

तौलौं माहिल दाखिल ह्वइ गये ❋ जो परिहार गोटैया टार ॥
जहां कचहरी बीरशाहकी ❋ माहिल तहां पहूँचे जाय ।
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ औ राजाको करी सलाम ॥
नजरि बदलि गइ बीरशाहकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ।
आवौ बैठो उरई वाले ❋ अपनो हाल कहो समुझाय ॥
बोले माहिल तब राजाते ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
बात बिगरि गइ गढ़ महुबेमें ❋ गुस्सा भये रजा परिमाल ॥
आल्हा ऊदनिको महुबेते ❋ चन्देलने दियो निकारि ।
तब खिसियाने दोनों भैया ❋ औ बौरीको कियो पयान ॥
ऊदनि आये हैं तुम्हरे घर ❋ तुरतै लैहैं बिदा कराय ।
लैकै जैहैं चन्द्रावलिको ❋ अपनी दासी लिहैं बनाय ॥
दाग लागिहै तुम्हरे कुलमें ❋ ताते मानौ बात हमारि ।
बिदा न करियो तुम ऊदनि सँग ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
जानते मारौ तुम ऊदनिको ❋ औ खन्दकमें देउ गिराय ।
बात मानि लई बीरशाहने ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
होय रसोइयां जो ऊदनिको ❋ तामें जहर दियो मिलवाय ।
भई रसोई रंगमहलमें ❋ सबमें जहर दियो मिलवाय ॥
भयो बुलौआ बघऊदनिको ❋ ऊदनि बांधि लिये हथियार ।
इन्द्रसेन बोले ऊदनिते ❋ ऊदनि छोरि धरो हथियार ॥
दुसरी करिहैं ना तुमते हम ❋ नाहक बांधि लिये हथियार ।
यह सुनि ऊदनि सीधे मनसे ❋ अपने छोरि धरे हथियार ॥
गडुआ लै लियो एक हाथमें ❋ औ चलि गये उदैसिंहराय ।
ऊदनि पहुँचे जब चौकामें ❋ औ भोजनको भये तयार ॥
सातौ बेटा बीरशाहके ❋ सोऊ तहां पहूँचो जाय ।
चन्द्रावलि बैठी खिरकीमें ❋ सो ऊदनि तन रही निहारि ॥
करो इशारा चन्द्रावलिने ❋ ऊदनि समुझि गये मनमाहिं ।
थारा बदलो इन्द्रसेनका ❋ इन्द्रसेन तब कही सुनाय ॥

काहे बदलो थार हमारो ❋ तब यह कही उदयसिंहराय ।
देश हमारे यहै रीति है ❋ बहनोईको बदलैं थार ॥
इतनी सुनतै सातौ बेटा ❋ तुरतै अग्निज्वाल ह्वइजाय ।
लैके गडुआ सातौ झपटे ❋ औ ऊदनिको मारन लाग ॥
ऊदनि उठिकै गडुआ लीन्हों ❋ तिनकी चोट बचावन लाग ।
चोट बचाई बघऊदनिने ❋ महलन गड़बड़ दियो मचाय ॥
सातौ बेटा घायल कीन्हें ❋ तब सब मनमें गये लजाय ।
हल्ला ह्वइगौ तब महलनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
ऊदनि गडुआ ज्यहिके मारैं ❋ त्यहि धरतीमें देयँ गिराय ।
बज्रकी देही है ऊदनिको ❋ ऊदनि भीमसेन औतार ॥
कलहा बेटा दस्सराजको ❋ काहू भांति न मानै हार ।
गडुआ छांड़ि दियो ऊदनिने ❋ औ यक पाटा लियो उठाय ॥
पाटन मारैं ऊदनि ठाकुर ❋ क्षत्री रेन बेन ह्वइ जायँ ।
देखि हाल यह चन्द्रावलिने ❋ अपने पतिकी लै तलवारि ॥
सो दै दीन्हीं बघऊदनिको ❋ ऊदनि मनमें कियो विचार ।
जो हम मारैं या तेगाते ❋ तौ रजपूती धर्म नशाय ॥
तेगा डारि दियो ऊदनिने ❋ बीचमें घिरे उदैसिंहराय ।
सातौ बेटा बीरशाहके ❋ तिनने धोखा दियो बनाय ॥
बांधि जंजीरन लौ ऊदनिको ❋ चुंगुल दहक दियो डरवाय ।
शिला धरि दियो यक ऊपरते ❋ पोहपा मालिनि देखै ठाढ़ि ॥
मालिनि पहुँची सतखंडापर ❋ चन्द्रावलिते लगी बतान ।
ऊदनि बँधि गये हैं महलनमें ❋ चुंगुल दहक दियो डरवाय ॥
सुनी हकीकति चन्द्रावलिने ❋ मनमें बहुत गई घबराय ।
भोजन त्यार कियो चन्द्रावलि ❋ सो थारामें दियो धराय ॥
रेशम रस्सा लै चन्द्रावलि ❋ औ दाहकपर पहुँची जाय ।
टारि पिहनियां तेहि ऊपरकी ❋ रेशम रस्सा दौ लटकाय ॥
निकरो भैया तुम चुंगुलते ❋ भोजन करौ उदैसिंहराय ।

बोले ऊदनि चन्द्रावलिते ❀ बहिनी मानौ बात हमारि ॥
खबरि भेजि देउ तुम महुबेको ❀ ऊभे परे उदैसिंहराय ।
तुम्हरे काढ़े जो हम निकरैं ❀ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
भोजन करिहैं ना खन्दकमें ❀ जल्दी खबरि देउ पहुंचाय ।
इतनी सुनिकै चन्द्रावलि गइ ❀ सतखण्डापर पहुँची जाय ॥
सोचन लागी अपने मनमें ❀ कैसे खबरि देउँ पहुँचाय ।
करि विचार तब चन्द्रावलिने ❀ औ यकपाती लिखी सुधारि ॥
लिख्योहाल सब बघऊदनिको ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ।
अकिले भेजि दियो ऊदनिको ❀ सो ऊभेमें दियो डराय ॥
हीरा मनि तोताको लैकै ❀ पाती गरे दई बँधवाय ।
बोली चन्द्रवलि सुअनाते ❀ तोता सुनौ हमारी बात ॥
पाती लैकै महुबे जावौ ❀ औ माताको दीन्ह्यो जाय ।
माता हमरी मल्हना रानी ❀ जो है महुबेकी महरानि ॥
सुआ उड़ानो गढ़ बौरीमें ❀ माहिल देखि गये पहिचान ।
सुअना पहुँच्यो नरवरगढ़में ❀ औ बगियामें पहुँचो जाय ॥
माहिल देखो जब सुअनाको ❀ तब राजापै पहुंचो जाय ।
करी बन्दगी झुक नरपतिको ❀ राजा चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल तब राजाते ❀ बैठे राज करौ महराज ॥
वस्तु एक देखी उत्तम हम ❀ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ।
तोता आयो एक बगियामें ❀ सो पकराय लेउ महराज ॥
ताहि पठाय दियो महलनमें ❀ पै यह जल्दी करौ उपाय ।
हुक्म दैदियो तब नरपतिने ❀ मकरंदीते कही सुनाय ॥
जल्दी जावौ फुलबगियामें ❀ औ तोताको लेउ पकराय ।
चलि भये मकरंदी बँगलाते ❀ एक बहेलिया लियो बुलाय ॥
तोता पकरायो मकरंदने ❀ औ महलनमें दियो पठाय ।

माहिल चलिभै नरवरगढ़ते ❀ औ उरईकी पकरी राह ॥
तोता पहुँचो जब महलनमें ❀ रानी देखि खुशी ह्वइजाय ।
पाती खोली सो रानीने ❀ औ सब हाल पढ़ो मनलाय ॥
हालु जानिकै बघ ऊदनिको ❀ पाती तुरत दई बँधवाय ।
बोली रानी त्यहि तोताते ❀ जल्दी जावो नगर महोब ॥
खबरि जनावोरनिमल्हनाको ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
इतनी सुनतै सुवा उड़ानो ❀ औ महुबेमें पहुँच्यो जाय ॥
ठाढ़ी मल्हना शतखण्डा पर ❀ हेरै बाट उदयसिंह केरि ।
सुअना पहुँच्यो रनिमल्हनापै ❀ तब मल्हनाने कही सुनाय ॥
कहांकि पाती तोता लाये ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
यह कहि मल्हना पाती खोली ❀ औ पातीको पढ़ो हवाल ॥
बोली मल्हना तब सुवनाते ❀ चन्द्रावलिते कहियो जाय ।
लश्कर आवत है महुबेते ❀ तुरतै बिदा लिहैं करवाय ॥
इतनी कहिकै पाती लिखिकै ❀ सो सुवनाके गरे बँधाय ।
सुवा उड़ानो तब महुबेते ❀ बौरी गढ़की पकरी राह ॥
मल्हना बुलवायो रूपनाको ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
जल्दी जावौ तुम सिरसाको ❀ औ मलिखेको लाउ बुलाय ॥
उनही पाँयन रूपना चलिभौ ❀ औ सिरसामें पहुंचो जाय ।
करी बन्दगी नरमलिखेको ❀ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
तुम्हहिं बुलायो है मल्हनाने ❀ अबहीं चलो हमारे साथ ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❀ मलिखे फांदि भये असवार ॥
चारि घरी मारगमें बीते ❀ औ महुबेमें पहुंचे आय ।
उतरि बछेरीते भुइं आये ❀ औ मल्हनापै पहुंचे जाय ॥
चरणलागिकै रनिमल्हनाके ❀ सो माथेमें लियो लगाय ।
पाती भेजी जो चन्द्रावलि ❀ सो मल्हनाने दई पकराय ॥
पाती बांची जब मलिखेने ❀ तब मल्हनाते लगे बतान ।
माता जैहैं हम बौरीगढ़ ❀ लैहै चौथी तुरत लिवाय ॥

मलिखे चलिभे तब महलनते ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
कही हकीकति तब आल्हाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
हाल सुनो जब यहु आल्हाने ❋ मनमें बहुत गयो घबराय ॥
बोले आल्हा नर ढेबाते ❋ भैया सगुन देउ बतलाय ।
सगुन बिचारो तब ढेबाने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
रूप जोगियनको धारो तुम ❋ तुम्हरो काम सिद्धह्वइ जाय ।
इतनो सुनिकै तुनि आल्हाने ❋ जोगिन गुदरी लई मँगाय ॥
हुक्म दै दियो नर मलिखेको ❋ सिगरी फौज लेउ सजवाय ।
इतनी सुनिकैमलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
बजै नगारा गढ़ महुबेमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन फाँदि भये असवार ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ ब्रह्मानन्द भये असवार ।
घोड़ी कबुतरी त्यार करायो ❋ तापर ढेबा भयो असवार ॥
घोड़ा मनुरथा त्यार करायो ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई जोताय ॥
मारू डंकाके बाजतखन ❋ लश्कर चला महोबे क्यार ।
पांच रोज मारगमें बीते ❋ गढ़ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो बागनमें ❋ मलिखे घोड़ी दई बढ़ाय ।
पहुँचे मलिखे गढ़ दिल्लीमें ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
उतरि बछेरीते भुइं आये ❋ घोड़ी थामि लई थनवार ।
करी बन्दगी पृथ्वीराजको ❋ सन्मुख जायबीर मलिखान ॥
सूरति देखी जब मलिखेकी ❋ तब पिरथीने कही सुनाय ।
आवौ बैठो सिरसावाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥

ऊँची चौकी उन डरवाई ❋ बैठे तुरत बीर मलिखान ।
मलिखे बोले पृथवीराजते ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
बिदा करावनगै ऊदनि जब ❋ बौरीगढ़में पहुंचे जाय ।
घाटि करी तहँ बीरशाहने ❋ ऊदनि खन्दक दियो डराय ॥
हुक्म तुम्हारो जो होवै म्वहिं ❋ बौरी गर्द देउँ करवाय ।
कुम्मक अपनी हमको दैदेउ ❋ अबहीं कूच जाउँ करवाय ॥
इतनी बात सुनी पिरथीने ❋ तब सूरजको लियो बुलाय ।
बोले पृथीराज सूरजते ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
जल्दी त्यार होउ बैरीको ❋ संगे जाउ फौज लै साथ ।
चौड़ा ब्राह्मणको बुलवायो ❋ तासो पिरथी कही सुनाय ॥
संगै जावौ तुम मलिखेके ❋ बीरशाहते कहियो जाय ।
विदा कराय देयँ आल्हासँग ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै चौड़ा चलिभौ ❋ सूरजमलको संग लिवाय ।
हाथीयकदन्तापर चौड़ा चढ़ि ❋ सूरज सब्जापर असवार ॥
फौज सजाय लियो जल्दीते ❋ अपनी कूच दियो करवाय ।
दोनों लश्कर संगै चलिभइ ❋ औ बौरीकी पकरी राह ॥
सात रोजको धावा करिकै ❋ बौरी धुरो दबायो जाय ।
तीनिकोश जब बौरी रहिगइ ❋ मलिखे डेरा दियो डराय ॥
फँटै छुटिगइं रजपूतनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
जीन उतरिगइ सबघोड़नको ❋ क्षत्री करन रसोई लाग ॥
फिरि विश्राम किये सबहीने ❋ भोरहि उठे बीर मलिखान ।
बोले मलिखे तुनिआल्हाते ❋ दादा गुदरी लेउ मँगाय ॥
रूप बनावौ अब जोगिनको ❋ औ ऊदनिको लेउ छुड़ाय ।
हुक्म दैदियो तब आल्हाने ❋ चारौ गुदरी लई मँगाय ॥
गुदरी पहिरि लई चारोंने ❋ अपने बाजा लिये उठाय ।
लई बँसुरिया ब्रह्मानन्दने ❋ डमरू लिये बीर मलिखान ॥
लियोयकतारातुनिआल्हाने ❋ खंझरी ढेबा लई उठाय ।

डगरत चलिभै चारौं जोगी ❋ औ बौरीकी पकरी राह ॥
जोगी आये जब फाटपर ❋ दरवानीते दियो जवाब ।
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनौ हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे दरवानीते ❋ फाटक जल्द देउ खुलवाय ।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
भिक्षा मँगिहैं हम बौरीमें ❋ गढ़में अलख जगैहैं जाय ।
इतनी सुनतै दरवानीने ❋ तुरतै फाटक दियो खुलाय ॥
जोगी चलि भये तब आगेको ❋ अपने बाजा दियो बजाय ।
गावत चलि भये चारौ जोगी ❋ रैयत मोहि मोहि रहिजायँ ॥
रूपके आगर जोगी देखे ❋ सब अपने मन करैं विचार ।
बड़े तेजसी ये जोगी हैं ❋ इनको धन्य घड़ी औतार ॥
काहू दीन्हें साल दुशाला ❋ मोहनमाला दई इनाम ।
जोगी पहुँचे दरवाजेपर ❋ अपनी अलख जगावन लाग॥
केशरि बांदी जो रानीकी ❋ सो जोगिनतन रही निहारि ।
मोहित ह्वैके केशरि बांदी ❋ महरानी पै पहुँची जाय ॥
हाथ जोरिकै बाँदी बोली ❋ रानी सुनौ हमारी बात ।
चारि जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरणे जायँ ॥
नीके गावैं नीक बजावैं ❋ सो तुम देखि लेउ महरानि ।
हुक्म दै दियो तब रानीने ❋ जोगिन अबहीं लाउ बुलाय ॥
उनहीं पाँयन बांदी आई ❋ औ जोगिनते कही सुनाय ।
तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ महलन करौ तमाशा आय ॥
जोगी चलि भये रंगमहलको ❋ औ डचोढ़ीपर पहुंचे जाय ।
रानी आई दरवाजेपर ❋ देखौ रूप जोगियन क्यार ॥
संग सहेली जो रानीके ❋ सो सब मोहिं गईं तत्काल ।
बोली रानी तब जोगिनते ❋ जोगिऔ नाच देउ दिखलाय॥
बजी बंसुरिया तब ब्रह्माकी ❋ ढेबा खंजरी दई बजाय ।
बजो यकतारा तुनि आल्हाको ❋ डमरू बजा बीर मलिखान ॥

राग रागिनी गावन लागे ❋ गावन लागे राग मलार ।
मोहित ह्वैकै रानी बोली ❋ जोगियौ सुनौ हमारी बात ॥
डेरा डारि देउ महलनमें ❋ नित उठि सेवा होय तुम्हारि ।
बोले मलिखे तब रानीते ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
बहता पानी रमता जोगी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय ।
आज रमानी यह डचोढ़ी है ❋ हमको भोर रमानी बाट ॥
सुनी खबरि जब चन्द्रावलिने ❋ तब बांदींसे कही सुनाय ।
सासुल हमारीते कहिया यह ❋ जोगिनि यहां देयँ पहुँचाय ॥
हमहूँ देखिहैं आजु तमासा ❋ हमरो जन्म सुफल ह्वइजाय ।
बांदी चलिभइ चन्द्रावलिकी ❋ औ जोगिनपै पहुँचो जाय ॥
हाथ जोरिकै बांदी बोली ❋ रानी मानौ बात हमारि ।
बहू देखिहैं आजु तमासा ❋ सो जोगिनको रहीं बुलाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ सुनौ हमारी बात ।
देखि तमाशा बहुअर लेवै ❋ अब तुम बांदीके सँग जाउ ॥
इतनी सुनिकै जोगी चलिभये ❋ चन्द्रावलिपै पहुँचे जाय ।
देखो चंद्रावलि जोगिनको ❋ औ जोगिनते कही सुनाय ॥
रूप तुम्हारो नहिं जोगिनको ❋ तुम राजनके राजकुमार ।
कैसे कैसे तुम जोगी हौ ❋ साँचे हाल देउ बतलाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ चन्द्रावलिते कही सुनाय ।
रूप विधाता हमको दीन्हे ❋ सुखसे भजन करत दिनरात ॥
करो तमाशा हम कनउजमें ❋ जयचँद खुशी भये तत्काल ।
गुदरी बनवाई राजाने ❋ फिरि हम महुबे पहुँचे जाय ॥
करो तमाशा जब महुबेमें ❋ जहँपर बसै रजा परिमाल ।
मल्हना रानी बहुत खुशीह्वइ ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
यह सुनि बोली चन्द्रावलितब ❋ मल्हना माता लगै हमारि ।
ब्रह्मा भैया हमरे लागैं ❋ जोगिउ मानौ बात हमारि ॥
जब तुम जैयो नगर महोबे ❋ तहँपर खबरि सुनायो जाय ।

बिदा करावन ऊदनि आये ❁ ऊदनि ऊमे दिये डराय ॥
तिनहिं छुड़ावन आल्हा आवैं ❁ आवैं संग बीर मलिखान ।
भैया आवैं ब्रह्मानंद यहँ ❁ औ ऊदनिको लेयँ छोड़ाय ॥
यह सुनि बोले मलिखे तुरतै ❁ बहिनी सुनौ हमारी बात ।
ब्रह्मा ठाढ़े हैं समुहे पर ❁ आल्हा समुहे खड़े तुम्हार ॥
ढेबा बहादुर हैं समुहे पर ❁ हमरो नाम कहत मलिखान ।
कौने दाहक पर ऊदनि हैं ❁ बहिनी हमहिं देउ बतलाय ॥
चन्द्रावलि बोली मलिखेते ❁ बीरन सुनो हमारी बात ।
खंदक एक महलके पीछे ❁ तामें परे उदैसिंह राय ॥
इतनी सुनतै जोगी चलि भये ❁ औ खन्दकपै पहुँचे जाय ।
खंदक देखि गये लश्करमें ❁ तहँते सुरंग खोदावन लाग ॥
सुरंग खुदायो बघऊदनि लग ❁ तुरतै ऊदनि लिये निकारि ।
ऊदनि पहुँचे जब लश्करमें ❁ झुकिकै आल्है कियो प्रणाम ॥
मलिखे ढेबा औ ब्रह्माको ❁ कियो प्रणाम जोरि दोउ हाथ ।
दगी सलामी फिरि लश्करमें ❁ तुरतै नाच होन तब लाग ॥
बोले मलिखे तब आल्हाते ❁ दादा जल्द होउ तैयार ।
इतनी बात सुनी आल्हाने ❁ तुरतै हुक्म दियो करवाय ॥
डंका बाजे हमरे दलमें ❁ लश्कर जल्द होय तैयार ।
डंका बाज्यो तब लश्करमें ❁ क्षत्री करन तयारी लाग ॥
पहिले डंकामें जिन बंदी ❁ दुसरे बांधि लियो हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❁ क्षत्री फांदि भयो असवार ॥
मारू डंकाके बाजतखन ❁ लश्कर कूच दियो करवाय ।
हथि पचशावद त्यार करायो ❁ तापर आल्हा भयो सवार ॥
घोड़ी कबूतरी त्यार कराई ❁ तापर चढ़े बीर मलिखान ।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❁ तापर ब्रह्मानन्द सवार ॥
घोड़ा मनुरथा त्यार करायो ❁ तापर ढेबा भयो सवार ।
सब्जा घोड़ाको सजवायो ❁ तापर सूरज भये सवार ॥
हाथी यकदन्ता सजवायो ❁ तापर चढ़ा चौंडिया राय ।

लश्कर चलि भयो महुबेवालो ❀ डंका होन गोलमें लाग ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो आगेको दई जोताय ।
चारि घरीके तब अरसामें ❀ बौरी गढ़को घेरो जाय ॥
खबर पहुँचि गई बीरशाहको ❀ लाये फौज बनाफरराय ।
इतनी सुनते बीरशाहने ❀ सातौ बेटा लिये बुलाय ॥
बोले बीरशाह लरिकनते ❀ जल्दी खबरि सुनावौ आय ।
कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❀ ताको तुरत लेउ बंधवाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दीसे ❀ औ लरिबेको होउ तैयार ।
इतनी सुनते सातो चलि भये ❀ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
हुक्म दे दियो अपने दलमें ❀ जल्दी फौज होय तैयार ।
बजा नगारा बौरीगढ़में ❀ क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
लश्कर त्यार भयो बौरीको ❀ डंका होत गोलमें जाय ।
लश्कर चलि भयो गढ़बौरीको ❀ औ खेतनमें पहुँचो जाय ॥
थोड़े क्षत्री सूरज लीन्हे ❀ जोरावरको संग लिवाय ।
जायकै पहुंचे दोउ आगेको ❀ भारी जाय दई ललकार ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❀ सो समुहें ह्वइ दियो जवाब ।
घोड़ी बढ़ाई मलिखे ठाकुर ❀ औ समुहें ह्वइ दियो जवाब ॥
हम चढ़ि आये हैं महुबे ते ❀ हमरो नाम बीर मलिखान ।
बिदा करावन ऊदनि आये ❀ तुमने कैद लई करवाय ॥
तुम तो हमरे बहनोई हौ ❀ क्यों घट करी हमारे साथ ।
कैद छोड़ि देउ तुम ऊदनिकी ❀ औ फिर बिदा देउ करवाय ॥
रारि बढ़ावत हौ नाहक तुम ❀ हमरे वचन करौ परमान ।
बोले सूरज तब मलिखेते ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ॥
बिदा न करिहैं हम तुम्हरे संग ❀ चाहे लाखन करो उपाय ।
इतनी सुनतै मलिखे तड़पे ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
बोले मलिखे सूरजमलते ❀ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
बिदा न करिहौ जो बहिनीको ❀ मरिहौं राज भंग होइ जाय ॥
लूटि करैहौं मैं बौरीको ❀ हमको जानत सकल जहान ।

गुस्सा ह्वैकै तब सूरजने ❋ लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ मेरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उड़ाय ।
इतनी सुनते उठे खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुँवना रह्यो सरग मँडराय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ कहकह करैं अगिनिया बान ॥
कैबर छूटैं सररर सररर ❋ गोली चलैं सनाक सनाक ।
क्या गतिबरणौंत्यहिसमयाकी ❋ क्षत्रिन मारु मारु रट लागि ॥
तीन घरीलौं भई लड़ाई ❋ सबने खैंचि लई तलवारि ।
खट खट तेगा बाजन लागे ❋ बोलैं छपक छपक तलवारि ॥
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ मानाशाही चलै कटार ।
तेगा चटकै बर्दवान के ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
पैदलअभिरि गये पैदल सँग ❋ औ असवारनते असवार ।
भारी मारु भई दोनों दल ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥
हौदाके सँग हौदा मिलि गये ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
दोनोंलश्करयकमिलह्वइगये ❋ सबके मारु मारु रट लागि ॥
बढ़े सिपाही महुबेवाले ❋ अपनो मया मोह बिसराय ।
भगे सिपाही बौरीगढ़के ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
झुके महोबिया दलमें बिचले ❋ मुर्चा हटो यादवन क्यार ।

अथ राजकुमारोंकी लड़ाई

★

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय ॥
कहौं लड़ाई अब मलिखेकी ❋ अभिरे कुँवर यादवा राय ।
भगे सिपाही बौरीगढ़के ❋ सूरज घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जायकै पहुँचे नर मलिखेपै ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ।
कही हमारी मलिखे मानौ ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
बोले मलिखे सूरजमलते ❋ तुम बहनोई लगौ हमार ।

कैदछोड़ि देउ तुम ऊदनिकी ❀ बहिनीको बिदा देउ करवाय ॥
तौ हम लौटि जायँ महुबेको ❀ इतनी मानो कही हमारि ।
गुस्सा ह्वइकै तब सूरजने ❀ अपनी लीन्हीं सांग उठाय ॥
सो धरिधमकीनरमलिखेपर ❀ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ।
खैंचि शिरोही लइ सूरजने ❀ औ मलिखेपर राखी जाय ॥
चोट बचाई नरमलिखेने ❀ औ सूरजसे कही सुनाय ।
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
खैंचि सिरोही मलिखे लीन्हीं ❀ आल्हा हाथी दियो बढ़ाय ।
बोले आल्हा नरमलिखेते ❀ इनकी कैद लेउ करवाय ॥
हाथ चलैयो ना सूरजपर ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
ढालकि औझड़ मलिखेमारी ❀ औ सूरजको दियो बढ़ाय ॥
कसि भुजदन्डै सूरजमलकी ❀ मलिखे लियो जँजीरन बांधि ।
हाल देखि यहु जोरावरने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
यक ललकार दई मलिखेको ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करोजड़ाका जब मलिखेपर ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
ढालकि औझड़ मलिखेमारी ❀ जोरावरको लियो बँधाय ।
इक हरकारा दौरत आयो ❀ बीरशाहते कही सुनाय ॥
दोनों बेटा तुम्हरे बँधिगे ❀ लश्कर रेन बेन ह्वइजाय ।
इतनी सुनतै बीरशाहने ❀ इन्द्रसेनको लियो बुलाय ॥
फौज सजाय लेउ अपनी तुम ❀ महुबेवालेन देउ भगाय ।
इतनी सुनतै इन्द्रसेनने ❀ अपने भैया संग लिवाय ॥
हुक्म दै दियो निज लश्करमें ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❀ सिगरी सेना भई तयार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर चला यादवन क्यार ।
चारि घरीके तब अरसामें ❀ रणखेतनमें पहुँचे जाय ॥
घोड़ा बढ़ायो इन्द्रसेनने ❀ भारी जाय दई ललकार ।
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❀ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ॥

कौने बाँधो है भैयनको ❋ केहिके जमे करेजे बार।
घोड़ी बढ़ाई तब मलिखेने ❋ औ समुहे ह्वइ दियो जवाब॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम बहनोई लगो हमार।
घर घर बिटिया नैहर जावैं ❋ सावन मास जानि त्यौहार॥
बिदा करावन ऊदनि आये ❋ सो तुम ऊभे दिये डराय।
कैद छाड़ि देउ तुम ऊदनिकी ❋ बहिनीको बिदादेउ करवाय॥
तौ हम लौटि जायँ महुबेको ❋ अबही रारि सबै मिटजाय।
यह सुनि बोले इन्द्रसेन तब ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात॥
बिदा तुम्हारे सङ्गना होइहैं ❋ चाहै लाखन करौ उपाय।
गुस्सा होइकै मलिखे बोले ❋ चाहैं प्राण रहैं की जायँ॥
बिदा कराये बिन ना जैहैं ❋ हमरो नाम बीर मलिखान।
नाम हमारो तुम जानत हौ ❋ ना हम धरैं पिछारू पांव॥
गर्द कराय दिहौं बौरीको ❋ इनमें आगी दिहौं लगाय।
बिदा न करिहौ जो बहिनीको ❋ मारौं राज भंग होइ जाय॥
गुस्सा होइकै इन्द्रसेनने ❋ अपनी हुक्म दियो फरमाय।
मारि उड़ावौ इन पाजिनको ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय॥
इतनी सुनिकै झुके खलाशी ❋ औ तोपन पै पहुँचे जाय।
बत्ती दै दइ सब तोपनमें ❋ धुँअना रह्यो सरग मँडराय॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय।
अररर गोला छूटन लागे ❋ सननन परी तीरकी मारु॥
सननन सननन गोली छूटैं ❋ कह कह करैं अगिनियां बान।
चारि घरीभरि गोला बरसो ❋ अंधाधुन्ध तोपकी मारु॥
तोपैं धैं धैं लाली होइ गइँ ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
बन्द लड़ाई भइ तोपनकी ❋ लम्बे बन्द करै हथियार॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगौ तीन कदम मैदान।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगीतलवारि॥
चलै कटारी बूँदीवाली ❋ ऊना चलै विलायत क्यार।

तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरै केसिरह्वा ज्वान॥
चारि घरीभरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार।
बढ़े सिपाही महुबेवाले ❀ जिनकेमारु मारु रटि लागि॥
भगे सिपाही बौरीवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❀ समुहे गोला गये समुहाय॥
भगत सिपाही मोहन देखे ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय।
जायकै पहुँचे बघ ऊदनिपै ❀ भारी जाय दई ललकार॥
खबरदार रहियो घोड़ापर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय।
इतनी बात कही मोहनने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि॥
करो जड़ाका जब समुहेपर ❀ ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय।
तीनि शिरोही मोहन मारी ❀ ऊदनिके नहिं आयो घाव॥
भाला मारो तब ऊदनिने ❀ सो घोड़ाके लागो जाय।
घोड़ा गिरिगौ तुरतधरनिपर ❀ औ मोहनको लियो बँधाय॥
मोहन बांधे जब ऊदनिते ❀ जगमनि खैंचि लई तलवार।
तौलौं ढेबा समुहे आयो ❀ औ जगमनिते कही सुनाय॥
खबरदार रहियो घोड़ापर ❀ तुम्हरो काल रह्यो मँड़राय।
चेहरा मारो तब जगमनिने ❀ ढेबा लैगयो चोट बचाय॥
ढालकि औझड़ ढेबा मारी ❀ औ घोड़ाते दियो गिराय।
तुरत बँधाय लियो जगमनिको ❀ औ लश्करमें दियो पठाय॥
मोती पूरन दोनों भैया ❀ सोऊ बांधे उदैसिंह राय।
भैया बँधि गये इन्द्रसेनके ❀ मनमें गये सनाका खाय॥
बोले इन्द्रसेन क्षत्रिनते ❀ यारो राखो धर्म हमार।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❀ तुम सब भैया लगो हमार॥
मारौ लश्कर गढ़ महुबे को ❀ तौं रजपूती धर्म तुम्हार।
दैके पानी रजपूतनको ❀ औ आगेको दियो बढ़ाय॥
झुके सिपाही बौरीगढ़के ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि।
देखि हाल यदु नर मलिखेने ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय॥

चौंड़ा ब्राह्मण जहँ ठाढ़ा था ❀ पहुँचे तहां वीर मलिखान ।
बोले मलिखे तब चौंड़ाते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
कैद कराय लेउ जल्दीते ❀ कोऊ ज्वान भागि ना जाय ।
हाथी बढ़ायो तब चौंड़ाने ❀ समुहे गोल गयो समुहाय ॥
सांकल लेके एकदंताको ❀ चौंड़ा ब्राह्मण दई गहाय ।
हाथी बिचलो चौंड़ावालो ❀ काटन लाग फौजके ज्वान ॥
भगे ज्वान सब बौरीवाले ❀ ऊँचे खाले चले पराय ।
यह गति देखी इन्द्रसेन जब ❀ मनमें बहुत गये घबराय ॥
सुर्खा घोड़ा दाबे आये ❀ ओ मलिखेपै पहुँचे आय ।
बोले इन्द्रसेन मलिखेते ❀ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ ॥
इतनी कहिके नर मलिखेपर ❀ अपनो दीन्हों गुर्ज चलाय ।
चोट बचाई इन्द्रसेनकी ❀ औ बचि गये बीरमलिखान ॥
भाला मारो इक मलिखेने ❀ सो घोड़ाके गयो समाय ।
पैदल रहि गये इन्द्रसेन जब ❀ तब मलिखेने लियो बँधाय ॥
सातौ बेटा बीरशाहके ❀ बांधि गये समर खेत मैदान ।

अथ बीरशाहकी लड़ाई



सुमिरन करके रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ।
कहौं लड़ाई बीरशाहकी ❀ यारौ सुनौ छोड़ि सब काम ॥
इक हरकारा दौरत आयो ❀ बीरशाहपै पहुँचो आय ।
खबरि सुनाई बीरशाहको ❀ सातौ बेटा बँधे तुम्हार ॥
सुनत खबरिया परलै होइगइ ❀ राजा गये सनाका खाय ।
डंकावालेको बुलवायो ❀ औ यहु हुक्म दियो फरमाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ।
डंका बाज्यो जब सेनामें ❀ क्षत्री सजन लगे तत्काल ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।

तिसरे डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
भूरा हाथीको मँगवायो ❀ राजा ताहि सजावन लाग ।
हौदा धरिदौ त्यहि हाथीपर ❀ रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
कलश सोबरनके हौदामें ❀ शोभा कछू कही न जाय ।
तुरत सवार भयो राजा तब ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
एक पहरको अरसा गुजरो ❀ औ खेतनमें पहुँचे जाय ।
मुर्चाबन्दी उन करवाई ❀ औ हाथीको दियो चढ़ाय ॥
निकट पहुँचे बीरशाह जब ❀ तब राजाने कही सुनाय ।
कौने बांधो है लड़िकनको ❀ सो समुहे ह्वइ देइ जवाब ॥
इतनी सुनते नर मलिखेने ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ।
करिप्रणामहँसिकै मलिखे तब ❀ बोले सुनहु यादवा राय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❀ नाहक रारिकरत महराज ।
बिदा करावन ऊदनि आये ❀ तुम खंदकमें दियो डराय ॥
नहीं मुनासिब थी तुमको यह ❀ जो घटि करी हमारे साथ ।
अबहुँ तुम्हारो कछु बिगरो नहिं ❀ बहिनिको बिदा देउ करवाय ॥
कैद छोड़िदेउ तुम ऊदनिको ❀ तोसब रारिअबहिं मिटिजाय ।
बोले बीरशाह मलिखेते ❀ लरिकन कैद देउ छुड़वाय ॥
चुप्पे लौटि जाउ महुबेको ❀ इतनी मानौ कही हमार ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ राजा सुनौ हमारी बात ॥
बिदा न करिहौ जौ बहिनीको ❀ बौरी गर्द दिहौं करवाय ।
विना बिदाके हम ना लौटैं ❀ चाहैं प्राण रहैं की जाय ॥
तौलौं बढ़ि गयो चौड़ा ब्राह्मण ❀ सो राजाते लगो बतान ।
यह कहि दीन्हीं पृथीराजने ❀ तुरतै बिदा देयँ करवाय ॥
कही हमारी जौ ना मनिहौं ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❀ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
बिदा नकरिहैं हम आल्हा सँग ❀ चाहैं लाखन करौ उपाय ।
चौड़ा बोल्यो तब राजाते ❀ है यह हुक्म पिथौरा क्यार ॥

कही न मानैं बीरशाह जो ❀ बौरी गर्द देउ करवाय ।
इतनी सुनतै बीरशाहकी ❀ देही अग्निज्वाल ह्वइजाय ॥
हुक्म दे दियो तब राजाने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
हुक्म पायके उठे खलासी ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
छाय अंधेरिया गइ लश्करमें ❀ धुअँना रहो सरग मँडराय ।
दगी सलामी दोउ फौजनमें ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ सर सर परी तीरकी मारु ।
गोला छूटैं सननन सननन ❀ कहकह करैं अगिनियां बान ॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❀ मानौं चोर सेधि दे जाय ।
गोला लागै जौन ऊंटके ❀ सो गिरि परैं चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़नके ❀ चारौ सुम्म गर्द ह्वइजाय ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❀ सो लत्ता अस जायँ उड़ाय ॥
बंबको गोला जिनके लागै ❀ तिनके हाड़ मांस छुटि जायँ ।
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❀ तिनके दुइ खंडा ह्वइजाय ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ अंधाधुन्ध तोपकी मारु ।
तोपैं धँधैं लाली ह्वइ गइँ ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
तोप लड़ाई पाछे परिगइ ❀ लंबे बंद किये हथियार ।
दोनों फौजैं यकमिल ह्वइगइँ ❀ रहिगो तीनि कदम मैदान ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवार ।
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकै वर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरवा ज्वान ।
चारौं बयरिनको मसका है ❀ अन्धाधुन्ध चलै तलवारि ॥
घेहा डारे रणके भीतर ❀ जिनके प्यास प्यास रट लागि ।
पैदल अभिरे तहँ पैदल संग ❀ औ असवारनते असवार ॥
हौदा मिलि गये हैं हौदा संग ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
हाहाकारी रणमें बीतै ❀ कोऊ रंधो भात ना खाय ॥
बहला उठि गये हैं चर्बिनके ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।

ढाल डारी हैं लोहूमें ❁ जनु नदीमें परे सिवार ॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❁ दोनों हाथ करैं तलवार ।
एक ओरको ऊदनि दबिगो ❁ दबिगे एक ओर मलिखान ॥
एक ओरको ढेबा दबिगौ ❁ सबके मारु मारु रटि लागि ।
भगे सिपाही बीरशाहके ❁ जे रणदुलहा चले बराय ॥
ऊंचे खाले कायर भागे ❁ गांजावाले चले बराय ।
झुके अफीमी रणके भीतर ❁ पलक उघारैं औ रहिजायँ ॥
लंबी धोतिनके पहरैया ❁ तिन नारेनकी पकरी राह ।
देखि हकीकति यह लश्करकी ❁ राजा गये सनाका खाय ॥
गुस्सा ह्वइके बीरशाहने ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
जहंपर मुर्चा था मलिखेका ❁ राजा तहां पहूंचो जाय ॥
औ ललकार दई मलिखेको ❁ अब तुम खबरदार ह्वइ जाउ ।
इतनी कहिके बीरशाहने ❁ अपनो भाला लियो उठाय ॥
भाला मारी नरमलिखेके ❁ मलिखे लैगे चोट बचाय ।
मलिखे बढ़िगे नुनि आल्हापै ❁ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनीको राजा है ❁ तुरतै बांधि लेउ यहि काल ।
इतनी सुनतै नुनि आल्हाने ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
जाय पहूंचे बीरशाहपै ❁ औ राजाको करी जोहार ।
आल्हा बोले बीरशाहते ❁ राजा सुनौ हमारी बात ॥
कही हमारी राजा मानौ ❁ चौथिकि बिदा देउ करवाय ।
कैद छाड़ि देउ तुम ऊदनिकी ❁ नाहक रारि करत महराज ॥
यह सुनि बोले बीरशाह तब ❁ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ।
धोखे रहियो ना माड़ौके ❁ जहं लै लियो बापको दांव ॥
भागे बचिहौ ना महुबे लग ❁ याते लौटि जाउ तत्काल ।
आल्हा बोले तब गुस्सा ह्वइ ❁ हम ना धरैं पिछारी पांव ॥
धर्म क्षत्रियनको नाहीं है ❁ जो सम्मुहते जायँ बराय ।

बिदा करैहैं हम बहिनी की ❀ चाहे प्राण रहैं की जायँ ॥
इतनी सुनतै बीरशाहने ❀ अपनो भाला दियो चलाय ।
चोट बचाई तुनि आल्हाने ❀ बीरशाह लियो गुर्ज उठाय ॥
चोट चलाई तब आल्हा पर ❀ आल्हा हाथी दियो बढ़ाय ।
आल्हा बचिगे तब हौदामें ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
हाथी बढ़ायो तब आल्हाने ❀ हौदा हौदाते मिलिजाय ।
लई कटारी बीरशाहने ❀ सो आल्हापै दई चलाय ॥
चोट बचाय लई आल्हाने ❀ आल्हाके नहिं आयो घाव ।
टक्कर मारी पचशावदने ❀ औ अम्बारी दई गिराय ॥
आल्हा उतरे निज हौदाते ❀ औ राजाको लियो बँधाय ।
राजा बँधतै परलै ह्वइगइ ❀ लश्कर रेन बेन ह्वइ जाय ॥
झुके महोबिया तब आगेको ❀ बौरीगढ़में पहुँचे जाय ।
धावन भेजी एक डेरनपर ❀ ब्रह्मानँदको लियो बुलाय ॥
आल्हा बोले ब्रह्मानँदते ❀ गढ़में आगी देउ लगाय ।
इतनी सुनिके बीरशाहने ❀ तब आल्हाते कही सुनाय ॥
किसको लरिका यहु ठाढ़ो है ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
आल्हा बोले तब राजाते ❀ राजा सुनौ हमारी बात ॥
यहु है लरिका परिमालेको ❀ रनि मल्हनाने दियो पठाय ।
बिदा करावन यहु आयो है ❀ सो तुम रारि मचाई आय ॥
रानी भेजा था ऊदनिको ❀ सो तुम कैद लई करवाय ।
इतनी सुनते राजा बोले ❀ माहिल तेरो बुरो ह्वइजाय ॥
लाग हमारी कछु नाहीं है ❀ हम सब त्यारी दई कराय ।
तौलौं माहिल उरईवाले ❀ तिन यह हमते कही सुनाय ॥
गुस्सा होइकै परिमालैने ❀ आल्हा ऊदनि दिये निकारि ।
मन खिसियाने ऊदनि आये ❀ तुरतै लेहैं बिदा कराय ॥
बिदा जो करिहौ तुम बहुअरको ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ।

बिदा कराय महोबे जैहैं ❁ अपनी दासी लिहैं बनाय ।
गंगा कीन्ही माहिल ठाकुह ❁ तब हम मानि लियो सतिभाउ ॥
कैद कराई हम ऊदनिकी ❁ औ ऊभेमें दियो डराय ।
बात हमारी अब तुम मानो ❁ लरिकन कैद देउ छुड़वाय ॥
बिदा करि दिहैं हम बहुअरको ❁ हमरे वचन करौ परमान ।
धोखा ह्वइ गयो है हमते यहु ❁ माहिल आय बिगारो काम ॥
होनी प्रबल होति दुनियामें ❁ माया कठिन विश्व भगवान ।
इतनी सुनते नुनि आल्हाने ❁ सबकी कैद दई छोड़वाय ॥
राजा पहुँचे जब महलनमें ❁ तब रानीने कही सुनाय ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❁ स्वामी मानौ बात हमारि ॥
बिदा कराय देउ बहुअरकी ❁ काहे रारि करत महराज ।
गरुये नातेके लरिका हैं ❁ जिनघर पारसको अधिकार ॥
बात मानिकै यहु रानीकी ❁ राजा त्यारी दई कराय ।
आल्हा ऊदनि ब्रह्मानन्दको ❁ ढेबा और बीर मलिखान ॥
सबको बुलवायो राजाने ❁ औ आदरते लियो बिठाय ।
सातौ बेटा बीरशाहके ❁ सोऊ आय मिले तत्काल ॥
हँसी खुशीते सब भेटे तहँ ❁ शोभा एक न वरनी जाय ।
साजि आरती तब रानीने ❁ परछनि करी बहूकी आय ॥
चन्द्रावलि बैठी पलकीमें ❁ तुरत निछावरि दई कराय ।
उठी पालकी चन्द्रावलिकी ❁ औ डेरनपर पहुँची जाय ॥
चले महुबिया तब बौरीते ❁ जीतिको डंका दियो बजाय ।
कछुक दिनाको धावा करिकै ❁ पहुँचे गढ़ महुबेमें आय ॥
सुनी खबरि जब मल्हना रानी ❁ बारहु रानी साथ लिवाय ।
साजि आरती दरवाजेपर ❁ ठाढ़ी करैं मंगलाचार ॥
आई पालकी दरवाजे पर ❁ मल्हना बहुत खुशी ह्वइजाय ।
जाय उतारो चन्द्रावलिको ❁ औ महलनमें गई लिवाय ॥

बजी बधाई तब घर घरमें ❋ महुबे दगन सलामी लागि ॥
इतनी लड़ाई भइ बौरीमें ❋ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
सांच झूठ परमेश्वर जानै ❋ पै हम सांची कही बनाय ॥
आगे कहिहौं मैं ब्रह्माको ❋ दिल्लीमाहिं ब्याहको साज ।
जैसे ब्याह भयो बेलासंग ❋ यारौ सुनौ छोड़ि सब काम ॥
समय समय पर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोला नाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति चन्द्रावलिकी चौथी (बौरीगढ़) की लड़ाई समाप्त ।

अथ दिल्लीकी लड़ाई

★

ब्रह्मानन्द और बेलाका विवाह

दोहा—भोलानाथ मनाय उर, सीतापतिको ध्याय ।
ब्रह्मानंदको ब्याह अब, कहौं सुअवसर पाय ॥ १ ॥

सवैया

काहेको भूल्यो फिरे भटको कहुँ, अंत नहीं तुव काज सरैगो ।
रोज खुशामद लोगनकी करी, कोउ न हियकी पीर हरैगो ॥
कैलासके नायक दायक हैं; तुम ताहि भजौ दुख दूरि बहैगो ।
औघट घाट लगावत हैं सोइ, पारवतीपति पार करैगो ॥ १ ॥

मैं पद बन्दौं शिवशंकरके ❋ ज्यहि शिर गंग चन्द्रमा भाल ।
भोलानाथ नाम जगजाहिर ❋ धारे कंठ मुण्डकी माल ॥
शीघ्र प्रसन्न होत सेवकपर ❋ जगमें महादेव सरनाम ।
म्वहिं बरदान देहु गौरीपति ❋ कहिहौं शूरबीर संग्राम ॥
राजा दुर्योधन कलियुगमें ❋ प्रगटे पृथीराज ह्वइ नाम ।
भई द्रौपदी बेला ह्वइकै ❋ प्रगटी पृथीराज घर आय ॥
अर्जुन प्रगटे गढ़ महुबेमें ❋ जगमें ब्रह्मानंद सरनाम ।
बेटा कहिये परिमालके ❋ रनि मलहनाके राजकुमार ॥
पृथीराजकी रनि अगमाते ❋ बेला आनि धरो अवतार ।
क्या छबि बरनौं मैं बेलाकी ❋ जाको रूप न बरनो जाय ॥
पूर्ण चन्द्रमाके सम आनन ❋ शोभा अंग अंग रहि छाय ।
गजगामिनी सुघर मृगनैनी ❋ बोलै मनहुं कोकिला बैनी ॥
नित २ खेलन लगी सखिनसंग ❋ खेलै खेल अनेक प्रकार ।
बारह बरस केरि उम्मिरिमें ❋ बेला सबै किये सिंगार ॥

एक सखी बोली बेलाते ❋ बेटी सुनौ पिथौरा केरि ।
बहुत पियारी तुम राजाको ❋ रनि अगमाकी बहुत पियारि॥
जितनी सखियां तुम्हरे संगकी ❋ तिन सबको ह्वइ गयो विवाह ।
क्योंनहिंब्याहभयो तुम्हरोकहु ❋ क्या कुलहीन बाप तुम्हार ॥
बात सुनी जब यह सखियनते ❋ बेला मनमें गई लजाय ।
संगछांड़िकै सब सखियनको ❋ रंगमहलमें पहुँची जाय ॥
आवत देखो जब बेटीको ❋ अगमा लीन्हों कंठ लगाय ।
देखी अनमनि जब बेटीको ❋ रनि अगमाने कहौ समुझाय॥
काहे अनमनि तुम बेटी हौ ❋ सो म्वहिं हाल कहो समुझाय।
बेला बोली तब धीरेते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
जितनी सखियां हमरे सँगकी ❋ हमसे करै हसौआ आय ।
हमरे सँगकी जितनी सखियां ❋ तिन सबको ह्वइगयो विवाह ॥
इतनी बात सुनी रानीने ❋ बेटिहि कंठ लियो लपटाय ।
दियो दिलासा तब बेलाको ❋ बेटी धीर धरो मनमाहिं ॥
टीका भेजि दिहैं जल्दीते ❋ तुरतैं देहौं ब्याह रचाय ।
यह कहि अगमा उठिठाढ़ी भइ ❋ अपनो गडुआ लियो उठाय॥
जाय पहूँची महराजापै ❋ औ पलकी पर बैठी जाय ।
आदर करिकै पृथीराजने ❋ महरानीते कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आई हौ ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ।
हाथ जोरिकै रानी बोली ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
ब्याहन योग्य भई बेटी अब ❋ ताको अब कहुँ करो विवाह ।
टीका भेजि देउ जल्दीते ❋ इतनी मानौं बात हमारि ॥
यह सुनि राजा बोलन लागे ❋ रानी वचन करौ परमान ।
टीका भेजि दिहैं अबहीं हम ❋ प्यारी धीर धरौ मनमाहिं ॥
इतनी कहिकै राजा चलिये ❋ पहुँचे आय राज दरबार ।
चौंड़ा ब्राह्मणको बुलवायो ❋ औ ताहरको लियो बुलाय ॥

नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारों नेगी लिये बुलाय ।
सिगरो हाल कह्यो राजाने ❋ औ ताहरको संग लिवाय ॥
राजा पहुँचे रंगमहलमें ❋ टीका क्यार कियो सामान ।
थार सुबरनको मंगवायो ❋ औ नारियल लियो मंगवाय॥
साल दुशाला औ गहने सब ❋ मोहरन तोड़ा लियो मंगाय ।
कीनखाबके थान मँगाये ❋ हीरा मोती लिये मँगाय ।
अस्सीगजरथ साठि पालकी ❋ अच्छे घोड़ा एक हजार ॥
सब सामान मंगाय प्रेमते ❋ तीनि लाखको करो तयार ।
ताहर चौंडा औ नेगिनको ❋ सब सामान दियो सौंपाय ॥
कागद लैके कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ।
सिद्धि श्री नारायणलिखिके ❋ ता पाछेते लिखो जोहार ॥
चारौं नेगी ताहर बेटा ❋ चौंड़ा ब्राह्मण संग पठाय ।
सब सामग्री तीनि लाखकी ❋ सो टीकामें दई पठाय ॥
प्रथम लड़ाई है द्वारेकी ❋ मँड़ये कठिन चलै तलवारि ।
करन कलेवा लरिका ऐहैं ❋ तब हम लेहैं शीश कटाय ॥
जौ मंजूर हो जाको यह ❋ सो यह टीका लेय चढ़ाय ।
यहि विधि पाती पृथीराजने ❋ लिखिके बन्द दई करवाय ॥
चिट्ठी सौंप दई ताहरको ❋ औ यहहुक्म दियो फरमाय।
धर्म नीति यह जगजाहिर है ❋ कीजै ब्याह बरोबरि माहिं ॥
ताते तुमको समझावत हौं ❋ टीका जानि चढ़ैयो जाय ।
सबके टीका तुम लै जैयो ❋ एक न जैयो नगर महोब ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो तहँ बसत बनाफर राय ।
इतनी बात सुनी ताहरने ❋ है जो कर्णक्यार अवतार ॥
चौड़ा ब्राह्मणको सँग लैके ❋ चारौ नेगी संग लिवाय ।
कूच कराय दियो दिल्लीते ❋ औ चौंड़ाते कही सुनाय ॥
लरिका क्वांरे हैं झुन्नागढ़में ❋ गजराजाको राजकुमार ।
सुयश प्रगट है गजराजाको ❋ तहँई टीका देइं चढ़ाय ॥

इतनी कहिकै ताहरमलने ❋ झुन्नागढ़की पकरी राह ।
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे झुन्नागढ़में जाय ॥
लगी कचहरी गजराजाकी ❋ ताहर समुहे पहुँचे जाय ।
करी बन्दगी जब राजाकी ❋ तब राजाने लियो बिठाय ॥
समाचार पूँछो ताहरते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कौन काजहित इत आयेहो ❋ सो तुम हमहिं कहो समुझाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ राजा वचन करो परमान ।
हम हैं लड़िका पृथीराजके ❋ दिल्ली नगर हमारो धाम ॥
ब्याह काजहित हम आये हैं ❋ औ ताहर है नाम हमार ।
खोलिकै पाती टीका वाली ❋ सो गद्दी पर दई चलाय ॥
पाती बांची गजराजाने ❋ आँकुइ आँकुइ नजरि करिजाय।
पढ़ी हकीकति जब नीचेकी ❋ पढ़ते मनमें गये डराय ॥
पाती फेरि दई राजाने ❋ औ ताहरसे कही सुनाय ।
चाह नहीं है हमहिं ब्याहकी ❋ ना हम शीश कटैहैं जाय ॥
इतनी सुनतै ताहर लौटे ❋ अपनी कूच दियो करवाय ।
जाय पहूँचे नरवरगढ़में ❋ औ नरपतिकी करी सलाम ॥
पाती दीन्ही तब राजाको ❋ राजा पढ़िकै दई गिराय ।
ब्याहु न करिहैं हम दिल्लीमें ❋ नाहीं हमें ब्याह दरकार ॥
ताहर चलिभये तब नरवरते ❋ औ बूँदीमें पहुंचे जाय ।
टीका फेरि दियो गंगाधर ❋ ताहर बहुत गये शरमाय ॥
देश देश टीका फिरि आयो ❋ काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ।
ताहर बोले तब चौंड़ाते ❋ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥
बेला बैरिनि हमको ह्वइगइ ❋ नाहीं मिलो तासु बरजोग ।
हम तुम चलिहैं अब उरईको ❋ जहंपर बसत महिलपरिहार ॥
जहं बतलैहैं माहिल ठाकुर ❋ तहं हम टीका दिहैं चढ़ाय ।
यह कहि ताहर चौड़ा चलिभये ❋ औ उरईकी पकरी राह ॥
आठ दिनाकी मंजिल करिकै ❋ और उरईमें पहुंचे जाय ।

लगी कचहरी तहं माहिलकी ❀ ताहर उतरिपरे अरगाय ॥
करी बन्दगी जब माहिलको ❀ तब माहिलने कही सुनाय ।
आवौ बैठो दिल्ली वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन काम तुम्हरो अटको है ❀ काहे बदन रह्यो मुरझाय ।
इतनी सुनिकै ताहर बोले ❀ औ माहिलसे लगे बतान ॥
काह बतावैं मामा माहिल ❀ हमते कछू कही ना जाय ।
चारि मास मारगमें बीते ❀ बेला बैरिनि भई हमारि ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❀ काहू टीका चढ़ायो नाहिं ।
अब कहुँ लरिका हमहिं बतावौ ❀ तहँ हम टीका देउँ चढ़ाय ॥
बोले माहिल तब ताहरते ❀ लरिका लायक देयँ बताय ।
राजा अजैपाल कनउजमें ❀ जिनके उदय अस्तलौं राज ॥
तिनके बेटा रतीभान है ❀ जानै जिनहिं सकल संसार ।
लाखनि राना तिनको बेटा ❀ जेहि घर लाखनको व्योहार ॥
टीका चढ़ावौ तुम लाखनिको ❀ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वै जाय ।
इतनी सुनिकै ताहर चलि भये ❀ औ कनउजकी पकरी राह ॥
तीनि रोजकी मंजिल करिकै ❀ गढ़ कनउजमें पहुँचे जाय ।
ताहर पहुँचे जब ड्योढ़ीपर ❀ दरवानीने दियो जवाब ॥
कहँते आये औ कहँ जैहौ ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले ताहर दरवानीते ❀ राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
टीका लाये हम दिल्लीते ❀ सो राजा घर दिहैं चढ़ाय ।
इतनी सुनिकै दरवानीने ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ॥
भयो बुलौवा तब ताहरको ❀ ताहर तहां पहूँचे जाय ।
करी बन्दगी महाराजको ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
नजरि बदलि गइ तब जैचँदकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय ।
ताहर बैठि गये चौकी पर ❀ राजा पाती लई उठाय ।
पाती बांची जब जयचन्दने ❀ तब ताहरते कही सुनाय ।
चाह नहीं है हमहिं ब्याहकी ❀ टीका काहूं चढ़ावौ जाय ॥

ब्याह न करिहैं हम दिल्लीमें ❀ ना हम शीश कटैहैं जाय ।
इतनी सुनिकै ताहर चलि भये ❀ मनमें बहुत गये शरमाय ॥
कूच कराय दियो कनउजते ❀ औ उरईकी पकरी राह ।
तीनि कोस जब उरई रहिगइ ❀ तब बगियामें करो मुकाम ॥
तहाँ पहूँचे मलिखे ठाकुर ❀ बनमें खेलन गयो शिकार ।
भेंट ह्वइगई तहँ ताहरते ❀ पूँछन लगे बीर मलिखान ॥
कौन कामको तुम आये हो ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
करो बहाना तब ताहरने ❀ झूँठी बात बतावन लाग ॥
हम तो गये रहैं गंगाजी ❀ कीन्हो जाय गंग स्नान ।
बोले मलिखे तब ताहरते ❀ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ॥
तुम हौ लरिका बादशाहके ❀ काहे झूँठी कहत बनाय ।
नेगी चारि संग तुम्हरे हैं ❀ चौंड़ा ब्राह्मण संग तुम्हार ॥
सांचौ हाल हमहिं बतलावौ ❀ इतनी मानौ कही हमारि ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ हमरे वचन करो परिमाण ॥
टीका लाये हम बहिनीको ❀ सो कोउ ब्याह कबूलै नाहिं ।
बोले मलिखे तब ताहरते ❀ पाती हमहिं देउ दिखलाय ॥
लैकै पाती टीका वाली ❀ सो चौंड़ाने दई गहाय ।
पाती बाँची जब मलिखेने ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
बोले मलिखे तब ताहरते ❀ ताहर सुनौ हमारी बात ।
लरिका तुमको हम बतलैहैं ❀ ताके टीका देउ चढ़ाय ॥
नगर महोबेके परिमालै ❀ तिनको ब्रह्मानन्द कुमार ।
पारस पूजा है जिनके घर ❀ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥
टीका चढ़ावौ ब्रह्मानन्दको ❀ तुम्हरो काम सिद्ध ह्वइजाय ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ औ मलिखेते लगे बतान ॥
हुक्म नहीं है महराजाको ❀ हम ना जैहैं नगर महोब ।
मलिखे बोले तब ताहरते ❀ कारण हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन बातको राजा हटको ❀ क्या कुलहीन चँदेलेराय ।

चन्द्रवंश सुन्दरकुल जाहिर ❀ हैं नरनाह रजापरिमाल ॥
देश देशके राजा जीते ❀ जीते बड़े बड़े महिपाल ।
अमरनाथ गुरुकी आज्ञाते ❀ खाँडा सागर धरो पखारि ॥
इतनी सुनिकै चौंड़ा बोलो ❀ तुम सुनि लेउ बीर मलिखान ।
जाति बनाफरकी ओछी है ❀ संगति करी ओछि परिमाल ॥
दागु लागि गयो चन्द्रवंशमें ❀ टीका लगो रजा परिमाल ।
इतनी सुनतै मलिखे जरिगै ❀ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायँ ॥
बोले मलिखे तब चौंड़ाते ❀ मुखते बोलो बात सम्हारि ।
क्या कमबख्ती लगी तुम्हारी ❀ जो तुम हीनी कही बनाय ॥
आल्हा ब्याहे नैनागढ़में ❀ नैपाली घर भयो विवाह ।
हमरो ब्याह भयो पथरीगढ़ ❀ जानत हमहिं बीर चौहान ॥
मामा हमरे माहिल राजा ❀ जो हैं उरईके परिहार ।
कौन बातमें हम ओछे हैं ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
जो कछु धर्म कर्म क्षत्रिनमें ❀ तिनमें कौन कमी हममाहिं ।
पारथ जीति लियो दंगलमें ❀ अपनो सिरसा लियो छुड़ाय ॥
मोहरा मारो चौहाननको ❀ जानत हाल बीर चौहान ।
अपनदुसरिहा हम राखो ना ❀ जो समुहे ह्वइ देउ जवाब ॥
बड़े बड़े क्षत्री हमने जीते ❀ बाजी सेतबंदलौं टाप ।
कही हमारी अब तुम मानो ❀ टीका महुबे देउ चढ़ाय ॥
जैसे राजा पृथीराज हैं ❀ तैसेइ भूप रजा परिमाल ।
सुंदर लरिका ब्रह्मानंद हैं ❀ रणमें एकशूर सरदार ॥
लायक राजा परमालै हैं ❀ तिनघर टीका देउ चढ़ाय ।
जौ नहिं मनिहौ बात हमारी ❀ तौ सब जहैं काम नशाय ॥
लौटिकै टीका यहु ना जैहै ❀ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ औ चौंड़ाते लगे बताय ॥
देश देशमें हम ह्वइ आये ❀ काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ।
ताते बात मानि मलिखेकी ❀ टीका महुबे देउ चढ़ाय ॥

यह मन भाय गई चौड़ाके ❋ चलिभौ साथ बीरमलिखान ।
जाय पहूंचे गढ़ सिरसामें ❋ खातिर करी बीर मलिखान ॥
तिनहिं टिकाय दियो बंगलामें ❋ तुरत कबुतरी लई सजाय ।
कूदि बछेरीपर चढ़ि बैठे ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
एक पहरके तब अरसामें ❋ पहुंचे जाय राज दरबार ।
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ घोड़ी थाम लई थनवार ॥
करी बन्दगी चंदेलेको ❋ मलिखे हाथ जोरि रहिजाय ।
हाथ पकरिके चन्देलेने ❋ अपने पास लियो बैठाय ॥
बहुत प्रीतिसे राजा बोले ❋ बेटा कुशल कहौ समुझाय ।
हाथ जोरिके मलिखे बोले ❋ दादा चहिये दया तुम्हारि ॥
बैठे राज करौं सिरसामें ❋ है सब कुशल क्षेम महराज ।
एक बात मानौ दादा तुम ❋ जो कुछ अर्ज करौ यहिकाल ॥
टीका आयो है ब्रह्माको ❋ सो जल्दीते लेउ चढ़ाय ।
यह कहि पाती दिल्लीवाली ❋ सो राजाको दई गहाय ॥
पाती बांची चन्देलेने ❋ आंकुड़ आंकु नजरि करिजाय ।
बोले राजा तब मलिखेते ❋ तुम सुनि लेउ लड़ैते लाल ॥
टीका फेरि देउ दिल्लीको ❋ नाहीं हमहिं ब्याहकी चाह ।
ऐसा टीका हमहिं न चहिये ❋ लरिका कौन करे बलिदान ॥
कठिन मारु है चौहाननकी ❋ हमने छोरि धरे हथियार ।
खांडा धरि दियो हम सागरमें ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ दादा सुनो हमारी बात ।
टीका घरते जो लौटैहौ ❋ तौ जग हुइहै हंसी तुम्हारि ॥
क्या कुलहीने चन्देले हैं ❋ कहिकहि हँसिहैं सकल जहान ।
नाम तुम्हारो देश देशमें ❋ दादा समुझि लेउ मनमाहिं ॥
अपनो सिरसा हमने छीनो ❋ धूरे किल्ला लियो बनाय ।
मोहरा मारो चौहाननको ❋ सब राजाको लौ पँजियाय ॥
टीका फेरि देयँ घरते जो ❋ तौ क्षत्रीपन जाय नशाय ।

हमना फेरिहैं यहु टीका अब ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
दंड बांधिके महाराजकी ❋ सातौ भांवरि लिहौं डराय ॥
ब्याहि जो लावैं हम दिल्लीते ❋ तौ यह नाम बीर मलिखान ।
यह सुनि राजा बोलन लागे ❋ तुम रानीते पूंछो जाय ॥
जो कछु भावै तुम्हरे मनमें ❋ सोई करो लड़ैते लाल ।
इतनी सुनिके मलिखे चलिभे ❋ औ मल्हनापै पहुंचे जाय ॥
आवत देख्यो जब मलिखेको ❋ मल्हना उठी भरहरा खाय ।
हृदय लगाय लियो मलिखेको ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ॥
सुरति बिसारि दई हमरी तुम ❋ नित उठि हेरौं बाट तुम्हारि ।
आवत देखौं जब काहूको ❋ आये मनहुं बीर मलिखान ॥
कुशल क्षेम अब गढ़सिरसाको ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ।
कौन कामको तुम आये हौ ❋ सो सब हाल कहो समुझाय ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ माता हमपर दया तुम्हारि ।
कुशल क्षेम है गढ़ सिरसामें ❋ बैठे राज करौ महरानि ॥
सुरति तुम्हारी हम ना भूलैं ❋ नित उठि पूछौं हाल तुम्हार ।
मिलति खबरिया है मोको नित ❋ माता वचन करौ परमान ॥
इतनी कहिके नर मलिखेने ❋ पाती मल्हने दई गहाय ।
खोलिकै पाती मल्हना बांची ❋ औ मलिखेते लगी बतान ॥
टीका फेरि देउ अबहीं तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
मलिखे बोले तब मल्हनाते ❋ माता बोली वचन सम्हारि ॥
घरमें आया टीका फेरैं ❋ तौ रजपूती धर्म नशाय ।
होय हँसौआ देश देशमें ❋ औ बदनामी होय तुम्हारि ॥
मोहरा मरिहौं चौहाननको ❋ सातौं भांवरि लिहौं डराय ।
किला बनायो हम सिरसामें ❋ औ पारथको दियो भगाय ॥
ब्याह रचैहैं हम ब्रह्माको ❋ हमरो नाम बीर मलिखान ।
कौन बात को डर माता है ❋ टीका जल्दी लेउ चढ़ाय ॥
तब समझायो मछुला रानी ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय ।

मलिखे माननके नाहीं है ❋ ताते हुक्म देउ फरमाय ।
तौलों महलन ऊदनि आये ❋ औ मल्हनाको कियो प्रणाम ॥
करी बन्दगी नर मलिखे को ❋ औ मलिखेते पूछन लाग ।
कौन बात पूछत माताते ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
पाती लैकै तब मलिखेने ❋ सो ऊदनिको दई गहाय ।
खोलिकै पाती ऊदनि बांची ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजायँ ॥
बोले ऊदनि तब माताते ❋ माता त्यार करो सामान ।
टीका चढ़ाय लेउ जल्दीते ❋ माता मानौ वचन हमार ॥
मल्हना बोली तब ऊदनिते ❋ टीका अबहिं देउ लौटाय ।
तड़पे ऊदनि तब मल्हनाते ❋ माता अक्किल गई हिराय ॥
तुमहिं हँसौआको डरनाहीं ❋ घरते टीका देउँ फिराय ।
टीका लौटनको नाहीं है ❋ चाहौ आसमान टरिजाय ॥
जंग जीतिके गढ़ दिल्लीमें ❋ सातौ भांवरि लेउँ डराय ।
ब्रह्मा ब्याहौं पृथीराज घर ❋ तौ मैं दस्सराजको लाल ॥
फिरिकै बोली मछुला रानी ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय ।
तुमना हटिकौ बघऊदनिको ❋ ये नहिं मनिहैं कही तुम्हारि ॥
रणके दुलहा यह ऊदनि हैं ❋ हैं नरनाह बीर मलिखान ।
काम तुम्हारो पूरनि ह्वइहै ❋ ताते हुक्म देउ फरमाय ॥
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा उदयसिंह मलिखान ।
जो कछु इच्छा होय तुम्हारी ❋ सोई करो लड़ैते लाल ॥
इतनी सुनिकै नर मलिखेने ❋ रुपना वारी लियो बुलाय ।
तुरत पठाय दियो सिरसाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
जल्दी ले आयौ ताहरको ❋ टीका जल्दी देय चढ़ाय ।
हुक्म पायकै रुपना चलिभौ ❋ औ सिरसामें पहुँचो जाय ॥
बैठे सुलखे थे बँगलामें ❋ तिनको रुपना करि सलाम ।
रुपना बोल्यो तब सुलखेते ❋ तुम ताहरको देउ पठाय ॥
टीका चढ़िहैं ब्रह्मानंद को ❋ यह कहदई बीर मलिखान ।

इतनी बात सुनी रूपनाते ❀ सुलखे उठे भरहरा खाय ॥
ताहर चौड़ा औ नेगिनको ❀ तुरतै महुबे दियो पठाय ।
बोले मलिखे इत मल्हनाते ❀ माता सुनहु हमारी बात ॥
नाम तुम्हारो जगजाहिर है ❀ पारस पूजाको अधिकार ।
ताहर बेटा पृथीराजको ❀ आवत होइ ये नगर महोब ॥
त्यारी करहु जल्दमहलनमें ❀ सब सखियनको लेउ बुलाय ।
इतनी सुनतै रनि मल्हनाने ❀ घर घर खबर दई पहुँचाय ॥
त्यारी होन लगी महुबेमें ❀ घर घर होय मंगलाचार ।
कलश सोबरनके सजवाये ❀ सो द्वारन पर दिये धराय ॥
तुरत बुहारे गलियारे सब ❀ औ सतरंजो दई बिछाय ।
ठौर ठौर पर बाजन बाजैं ❀ नौबत झरन लगी त्यहिकाल ॥
बन्दनवार बँधी घर घरमें ❀ गलियन इतर दियो छिरकाय ।
मल्हना सखियां बुलवाईं सब ❀ झोरेनि दियो अबीर भराय ॥
चलै सोबरनकी पिचकारी ❀ छब्बन रही लालरी छाय ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ सो महलनमें पहुँचे जाय ॥
कलश मंगाय लियो सोनेको ❀ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
सखियां मंगल गावन लागीं ❀ शोभा कछू कही न जाय ॥
पंडित बुलवायो ब्रह्माको ❀ सो पाटापर बैठे आय ।
दिवला तिलका दोनों रानी ❀ तिसरी बहिन मल्हनदे रानि ॥
बारह रानी चन्देलेकी ❀ सब मिलि करैं मंगलाचार ।
आल्हा ऊदनि ढेबा आये ❀ आये साजि बीर मलिखान ॥
सब मिलि बैठ गये आंगनमें ❀ बैठे आय रजा परिमाल ।
पंडित वेद उचारन लागे ❀ बन्दी सुयश बखानन लाग ॥
ताहर चौंड़ा चारों नेगी ❀ सो महुबेमें पहुँचे आय ।
ताहर आये जब गलियनमें ❀ वर्षा होन फूलकी लागि ।
अतर गुलाबनकी झरि लागी ❀ गलियांमहकिमहकिरहिजायँ ।
छुटैं पिचका रंग केसरिके ❀ छब्बन रही लालरी छाय ॥

रंग बिरंगे कपड़ा ह्वइगये ❁ ताहर खुशी भये मनमाहि ॥
धनि धनि वस्ती यहु महुबेकी ❁ जामें बसत चँदेले राय ।
पारस पूजा है जिनके घर ❁ लोहा छुवत सोन होइजाय ॥
ताहर आये दरवाजेपर ❁ तुरतै उतरि परे अरगाय ।
चारो नेगी औ चौड़ा संग ❁ पहुंचे रंगमहलमें जाय ॥
नीचे ऊपर बघ ऊदनिने ❁ दीन्हें सात तवा धरवाय ।
ताहर पहुंचे जब आंगनमें ❁ नेगाचार होन तब लाग ॥
तीन लाखको टीका लाये ❁ सो ताहरने दियो धराय ।
रूप देखिकै ब्रह्मानंदको ❁ ताहर बहुत खुशी होइ जायं ॥
पूजा करिकै श्रीगणेशकी ❁ औ करि इष्टदेवको ध्यान ।
करो रोचना ब्रह्मानंदके ❁ माथे अक्षत दियो लगाय ॥
तवा धरे जो बघ ऊदनिने ❁ तिनपर ताहर करी निगाह ।
सांग धमक्की तब ताहरने ❁ सातौं तवा तोरि धंसिजायँ ॥
ताहर बोले तहं आंगनमें ❁ हमरे कुला यहै व्यवहार ।
सांग उखारैं जो ब्रह्मानंद ❁ तौ हम बीरा देयं खवाय ॥
देखि हाल यह राजा सोचे ❁ मल्हना बहुत गई घबराय ।
बोली मल्हना नर मलिखेते ❁ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
हमरे आगे तौ ऐसी भइ ❁ पाछे काह रची भगवान ।
ऊदनि बोले तब मल्हनाते ❁ धीरज धरे होत सब काम ॥
यह कहि ऊदनि उठि ठाढ़े भये ❁ औ ताहरते लगे बतान ।
छोटे भैया हम ब्रह्माके ❁ हम यह लेहैं सांग उखारि ॥
इतनो कहिकै बघ ऊदनिने ❁ तुरतैं लीन्ही सांग उखारि ।
ताहर बोले तब चौड़ाते ❁ दादा सुनौ हमारी बात ॥
ऐसे योधा हैं जिनके घर ❁ क्यों नहिं करैं रजा परिमाल ।
यह कहि ताहर बीरा लैकै ❁ ब्रह्मानंदको दियो खवाय ॥
ज्योंहीं बीरा लौ ब्रह्माने ❁ समुहे भइ तड़ाका छींक ।
बोली मल्हना तब मलिखेते ❁ अबहीं टीका देउ फिराय ॥

पुत्र हमारे क्वांरो रहिहैं ❀ नाहीं हमहि बहूकी चाह ।
ऊदनि समुझायो मल्हनाको ❀ माता समुझि लेउ मनमाहिं ॥
घरको आयो टीका फेरिहैं ❀ तौ जगह्वइहैं हंसी हमार ।
हम ना फेरिहैं अब टीकाको ❀ चाहै असगुन होय हजार ॥
जब हम त्यार भये माड़ौको ❀ पूजे भुजबल जबहिं हमार ।
माता सोचौ तुम अपने मन ❀ समुहे छींक भई ठहनाय ॥
तबहीं तुमने म्वहिंहिटको थे ❀ हम लै आये बापको दाउँ ।
मन नहिं भाई यहु मल्हनाके ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
पुत्र हमारो मारो जैहै ❀ ताते टीका देउ फिराय ।
इतनी सुनते नर मलिखेने ❀ अपनी लई कटारी काढ़ि ॥
धरी कटारी तब छातीपर ❀ औ मल्हनाते कही सुनाय ।
जो कहुँ टीका यहु फिरि जैहैं ❀ अपने लिहौं कटारी मारि ॥
इतनी सुनिकै मल्हना बोली ❀ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❀ सोई करौ बीर मलिखान ॥
ढोलक बजवाई मल्हनाने ❀ सखियां करैं मंगलाचार ।
जितने नेगी थे दिल्लीके ❀ गहना तिनहि दियो पहिराय ॥
बाकी गहना जितनौ रहिगौ ❀ सो चौड़ाको दौ पकराय ।
नेगी और होयँ दिल्लीमें ❀ दीजो जाय चौड़िया राय ॥
नेगी बुलाये तब महुबेके ❀ ताहर गहना दियो इनाम ।
नेगी निछावरि जबहीं ह्वइगइ ❀ तब ज्योनार दई करवाय ॥
भयो बुलौआ फिरि पंडितको ❀ ब्याहकि साइति देउ बताय ।
माघ वदी तेरसि भांवरिकी ❀ अच्छी साइति दई सुनाय ॥
बोले ताहर तब राजाते ❀ आज्ञा देउ जायं महराज ।
बहुत दिनाते हम घूमत हैं ❀ अब दिल्लीको करैं पयान ॥
आज्ञा देदइ तब राजाने ❀ ताहर उठिकै करी जुहार ।
सबको मिलिकै ताहर चलिभे ❀ नेगी ब्राह्मण संग लिवाय ॥
राह पकरिलइ गढ़ दिल्लीकी ❀ औ उरईमें पहुँचे जाय ।

आवत देखे जब ताहरको ❋ माहिल चौकी दई डराय ।
ताहर बैठे जब चौकी पर ❋ तब माहिलने कही सुनाय ॥
टीका चढ़ायो क्यहि राजाघर ❋ सो सब हाल कहौ समुझाय ।
ताहर बोले तब माहिलते ❋ मामा सुनौ हमारी बात ॥
कनउज पहुँचे हम टीका ले ❋ जैचँद तुरत कियो इनकार ।
तब हम आवत थे उरईको ❋ तौलौं मिले बीर मलिखान ॥
हमहिं संग लैगे महुबेको ❋ ब्रह्माको टीका लिया चढ़ाय ।
इतनी बात सुनी माहिलने ❋ मनमें बहुत गये खिसियाय ॥
चलि भये ताहर जब उरईते ❋ माहिल घोड़ी लई मँगाय ।
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
पाँच रोजकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे जाय राज दरबार ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ राजा चौकी दई डराय ॥
बोले राजा तब माहिलते ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
माहिल बोले तब राजाते ❋ हमते कछू कही ना जाय ॥
ताहर पहुँचे गढ़ महुबेमें ❋ तहँपर टीका दियो चढ़ाय ।
टीका फेरि लेउ महुबेते ❋ ओछी जाति बनाफरराय ॥
तौलौं ताहर चौंड़ा आये ❋ चारों नेगी संग लिवाय ।
बोले पृथीराज चौंड़ाते ❋ ब्राह्मण अक्किल गई तुम्हारि ॥
हमने हटके थे महुबेको ❋ तहँ तुम टीका दियो चढ़ाय ।
फेरिकै लावौ तुम टीकाको ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
देश देशमें हम फिरि आये ❋ काहू ब्याह कबूल्यो नाहिं ॥
चारिमास मारगमें बीते ❋ तौलौं मिले बीर मलिखान ।
लरिका बतलायो मलिखेने ❋ राजा चन्द्र वंश दरबार ॥
पारस पूजा है महुबेमें ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ।
इन्द्र धाम सम सो बस्ती है ❋ जहँपर तपत रजापरिमाल ॥
तिनको लरिका ब्रह्मानँद हैं ❋ जाको रूप न बरनो जाय ।

आल्हा ऊदनि जिनके घरमें ❀ जिनके बलको नाहिं सुमार ॥
आल्हा ब्याहे नैपाली घर ❀ औ गजराजा घर मलिखान ।
मामा माहिल हैं उनहूँके ❀ फिरि क्या घाटि क्षत्रियन माहिं॥
टीका लौटनको नाहीं है ❀ चाहै कोटिन करो उपाय ।
जब बरात आवै दिल्लीको ❀ सबकी लीजे कैद कराय ॥
इतनी सुनिकै माहिल चलि भये ❀ औ उरईमें पहुँचे आय ।
राम बनावै तौ बनि जावै ❀ बिगरी बनत बनत बनिजाय ॥
सुनो हाल अब गढ़ महुबेको ❀ ज्यहिविधिरच्यो ब्याहकोसाज ।
माघ महिना अबहीं लाग्यो ❀ महुबे होन तयारी लाग ॥
जितने राजा ब्योहारी थे ❀ तिनको न्योता दियो पठाय ।
लश्कर लैलै राजा आये ❀ औ महुबेमें पहुँचे आय ॥
डेरा परि गये ठौर ठौरपर ❀ तँबुअन रही लालरी छाय ।
सुनी खबरि जब यह माहिलने ❀ लिल्ली घोड़ी भये सवार ॥
राह पकरि लइ गढ़महुबेकी ❀ पहुँचे चारि घरीमें जाय ।
उतरिकै लिल्लीते भुइँ आये ❀ औ मल्हनापै पहुँचे जाय ॥
सूरति देखी जब माहिलकी ❀ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय ।
माहिल बोले रनि मल्हनाते ❀ बहिनी वचन करौ परमान ॥
अकिलो लरिका तुमलै आवो ❀ यह कहि दई पिथौराराय ।
यह कहि दीन्हीं पृथीराजने ❀ सातौ भाँवरि दिहौं डराय ॥
जो कहुँ अइहैं आल्हा ऊदनि ❀ ओछी जाति बनाफरराय ।
शीश काटिहौं उन दोउनके ❀ लरिका दिहौं जानते मारि ॥
अकिलो लरिका जो लैऐहौ ❀ सातौ भाँवरि दिहौं डराय ।
बिदा कराय दिहौं बेटीकी ❀ यह कहि पाती दई गहाय ॥
झूँठी पाती दई माहिलने ❀ बाँची तुरत मल्हनदे रानि ।
साँची बात मानि माहिलकी ❀ मल्हना पलकी लई मँगाय ।
ब्रह्मा बेटाको बुलवायो ❀ औ पलकीमें दियो बिठाय ।
संग करि दियो तब माहिलके ❀ औ माहिलते लगी बतान ॥

तुमको सौंपतिहौ लरिकाको ❋ बीरन बहुत रहेउ हुशियार ।
चली पालकी ब्रह्मानंदकी ❋ संगै चले महिल परिहार ॥
सुनी खबरिया जब ऊदनिने ❋ ब्रह्महि माहिल गये लिवाय ।
कूदि बेंदुलापर चढ़ि बैठे ❋ ओ महुबेमें पहुंचे आय ॥
जहंपर बैठी रानी मल्हना ❋ ऊदनि तहां गये नियराय ।
आवत देखो जब ऊदनिको ❋ मल्हना उठी भरहरा खाय ॥
चरणलागिकै रनिमल्हनाके ❋ ऊदनि माथे लियो लगाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ माता अक्किल गई तुम्हारि ॥
ब्रह्मै भेजि दियो माहिल संग ❋ अगुआ कियो महिलपरिहार ।
कटन मरनको आल्हा ऊदनि ❋ माहिल जेइं लेयं जेंवनार ॥
धोखा दैकै माहिल लैगे ❋ अब न मिलिहैं पुत्र तुम्हार ।
नाम हमारो सब राजनमें ❋ सो तुम खोई बात हमारि ॥
सबै बरात महुबे रहिगइ ❋ अकिले ब्रह्मै दियो पठाय ।
हम ना ऐहैं अब महुबेको ❋ यह कहि चले उदैसिंहराय ॥
मल्हना रानी देखत रहिगइ ❋ जिनको चलत न लागी ब्यार ।
ऊदनि पहुंचे दशपुरवामें ❋ सुनवां रानी पूछन लागि ॥
कौन अंदेशामें देवर हौ ❋ काहे वदन गयो कुम्हिलाय ।
बोले ऊदनि रनि सुनवांते ❋ हमते कछू कही ना जाय ॥
काह बतावौं मैं भौजीते ❋ अकिले माहिल गये बरात ।
माहिल आये गढ़ महुबेमें ❋ झूठी बातैं करी बनाय ॥
सीखमानिकै रनि मल्हनाने ❋ ब्रह्माको संग दियो पठाय ।
जन्मके बैरी माहिल मामा ❋ ताकत दावंघात दिनराति ॥
वंश नशावनको लागे हैं ❋ नित घटि करत हमारे साथ ।
सबै बराती महुबे रहि गये ❋ माहिल ब्रह्मै गये लिवाय ॥
अब बरातको हम ना जैहैं ❋ ना महुबेते काम हमार ।
यहसुनि सुनवां बोलन लागी ❋ देवर अक्किल कहां तुम्हारि ॥
रानी मल्हना तुमको पालो ❋ अपने कुचको दूध पिलाय ।

मारे जैहैं जो ब्रह्मा नंद ❀ तौ जग ह्वइहै हंसी तुम्हारि ॥
बदनामी होइहै सबही विधि ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ।
लाग नहीं है कछु मलहना की ❀ यह छल कियो महिलपरिहार ॥
काम बिगरिहैं जौ मलहनाको ❀ तुम्हरे जीवनको धिक्कार ।
बात हमारी देवर मानौ ❀ अबहीं कूच देउ करवाय ।
यह मन भाई बघ ऊदनिके ❀ औ सुनवांते कही सुनाय ॥
सीख तुम्हारी हमने मानी ❀ यह कहि चले उदैसिंहराय ।
जायके पहुँचे सो लश्करमें ❀ तुरतै डंका दियो बजाय ॥
डंका बाजो गढ़ महुबेमें ❀ क्षत्री तुरत भये हुशियार ।
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री साजि भये तैयार ।
कागद लीन्हो कलपीवालो ❀ ऊदनि कलमदान लै हाथ ॥
पातीलिखिदई नर मलिखेको ❀ तामें सबियाँ लिखी हवाल ।
छलिकै माहिल ब्रह्मा ले गये ❀ घटिया भूप महिल परिहार ॥
जान ना पावै माहिल राजा ❀ तुरतै कैद लेउ करवाय ।
पाती लैकै धावन चलिभौ ❀ औ सिरसामें पहुंचो जाय ॥
मलिखे बैठे सिंहासनपर ❀ धावन पाती दई गहाय ।
खोलिकै पांती मलिखे बांची ❀ औ सुलिखेको लियो बुलाय ॥
हाल बतायो सब सुलिखेको ❀ औ यह कही बीर मलिखान ।
माहिल लिये जात ब्रह्माको ❀ तिनकी कैद लेउ करवाय ॥
इतनी सुनिकैसुलिखे चलिभये ❀ अपनो लश्कर लियो सजाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❀ औ रस्ताको घेरो जाय ॥
आई पालकी ब्रह्मानंदकी ❀ लिह्री चढ़े महिल परिहार ।
सुलिखे मिलेजायमाहिलको ❀ तुरतै करी बन्दगी जाय ॥
बोले सुलिखे तब माहिलते ❀ मामा सुनौ हमारी बात ।
तुमहिं मुनासिब यदु नाहीं थी ❀ जो घटि करी हमारे साथ ॥
अकिले ब्रह्माको संग लीन्हो ❀ हैं यह कौन देशकी रीति ।

यह कहि डंडबांधिमाहिलकी ❋ लै फाटकपर दियो टँगाय ।
पठै पालकी दइ सिरसाको ❋ महुबै खबर दई पहुँचाय ॥
सजी बरायत गढ़ महुबेमें ❋ सिरसा होन नेग सब लाग ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ।
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा है ❋ कोतल चलो करेलिया घोड़ ॥
सजी सवारी परमालेकी ❋ औ महुबेते चली बरात ।
आल्हा आये जब सिरसामें ❋ औ फाटक पर परी निगाह ॥
टँगो देखिकै तब माहिलको ❋ तुरतै मुश्क दई खुलवाय ।
माहिल राजा रोवन लागे ❋ सुलिखे इज्जत लई हमारि ॥
अब ना जैहैं हम बरातको ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
मामा माहिल जौ ना जैहैं ❋ तौ को करिहैं काम हमारि ॥
तब ढेबा समझावन लागे ❋ मामा सुनो महिल परिहार ।
सोच करो नहिं कछु जियरामें ❋ औ बरातको होउ तयार ॥
जो नहिं चलिहौ तुम बरातको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
बात मान लेइ तब माहिलने ❋ औ बरातको भये तयार ॥
जितने घरौआ थे माहिलके ❋ सो ऊदनिने दइ लौटाय ।
अकिले संग लियो माहिलको ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
उठी सवारी ब्रह्मानंदकी ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
घोड़ी हिरौंजिनिको सजवायो ❋ तापर सुलखे भये सवार ।
सातदिनाको धावा करिके ❋ दिल्ली निकट पहूँचे जाय ॥
पांचकोश जब दिल्लीरहि गइ ❋ तँहपर डेरा दिये लगाय ।
फैटैं छुटिगइं रजपूतनकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतारि दिये घोड़नकी ❋ सब राजनने करो मुकाम ।
नाच होन लागी तँबुअनमें ❋ तबला ठमकि ठमकि रहि जाय ॥
ऊदनि बोले नुनि आल्हाते ❋ अब विवाहको करौ बिचार ।

जायके पूँछो तुम राजाते ❀ पहिले होय कौन सो काम ॥
इतनी सुनिकै आल्हा चलिभये ❀ पहुँचे जहां रजा परिमाल ।
करी बन्दगी चन्देलेको ❀ तब राजाने कही सुनाय ॥
कौन कामको तुम आये हौ ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले आल्हा परमालैते ❀ दादा सुनो हमारी बात ॥
पंडित अपनेको बुलवावौ ❀ ब्याहकी साइत देयँ बताय ।
भयो बुलौवा तब पंडितको ❀ सो तम्बूमें पहुँचे आय ॥
खोलि पत्तरा देखन लागे ❀ ब्याह महूरत दियो बताय ।
नीकी साइति दरवाजेकी ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ॥
इतनी सुनते नर मलिखेने ❀ रूपना बारी लियो बुलाय ।
ऐपनवारी तुम ले जावौ ❀ दिल्ली खबरि देउ पहुँचाय ॥
यह सुनि रूपना बोलन लागो ❀ हमना शीश कटैहैं जाय ।
कठिन मवासी गढ़ दिल्ली है ❀ भारी मारु पिथौरा केरि ॥
बोले ऊदनि तब रूपना ते ❀ रूपन अकिकल गई तुम्हारि ।
ब्रह्मा ब्याहनको ना रहिहैं ❀ यहुदिन कहिबेको रहिजाय ॥
मुखते हीनी तुम बोलत हौ ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ।
तुमको नेगी हम समुझैं ना ❀ तुम तौ भैया लागौ हमार ॥
इतनी सुनिकै रूपना बोलो ❀ लावौ हमहिं ढाल तलवारि ।
घोड़ा लावौ ब्रह्मावाला ❀ औ दै देउ बैजनी पाग ॥
तौ हम चले जायँ दिल्लीको ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
जो कछु मांगो तहँ रूपनाको ❀ ऊदनि तुरत दियो मंगवाय ॥
रूपना चलिभौ तब दिल्लीको ❀ ऐपनवारी लई उठाय ।
जाय पहूँचो जब फाटकपर ❀ दरवानीने कही सुनाय ॥
कहांते आये औ कहँ जैहो ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोलो रूपना दरवानीते ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
आई बरायत ब्रह्मानँदकी ❀ जो महुबेको राजकुमार ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ औ रूपन है नाम हमार ॥

खबरि सुनावौ महाराजको ❀ हमरी नेग देयँ मंगवाय ।
बोले दरवानी रूपनाते ❀ अपनो नेग देउ बतलाय ॥
सो बतलावैं हम राजाको ❀ तुम्हरी खबरि देयँ पहुंचाय ।
बोलो रूपना दरवानीते ❀ यह राजाते कहौ सुनाय ॥
बारी आयो है महुबेते ❀ मांगत नेग आपनो ठाढ़ ।
नेग हमारो यहै बतावो ❀ द्वारे चलै कठिन तलवारि ॥
यह सुनि चलिभौ दरवानी तब ❀ पहुंचो जाय राजदरबार ।
लगी कचहरी पृथीराजकी ❀ जो नरनाह बीर चौहान ॥
सोने सिंहासन पिरथी बैठे ❀ जामें जड़े जवाहिर लाल ।
हीरा चमकैं भांति भांतिके ❀ कलंगी फहर फहर फहराय ॥
गज भरि छाती पृथीराजकी ❀ औ नैननमें बरै मसाल ।
दुइ हजार क्षत्री तहँ बैठे ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ॥
देवी मरहठा दक्षिणवाला ❀ अंगद भूप ग्वालियर क्यार ।
धांधू बैठो राज सभामें ❀ ब्राह्मणशूर चौड़िया राय ॥
बीर भुगन्ता रहिमत सहिमत ❀ भूरा मुगल काबुली ज्वान ।
सातौ बेटा पृथीराजके ❀ बैठे तहां राजदरबार ॥
ताहर गोपी सूरज चन्दन ❀ सर्दनि मर्दनि राजकुमार ।
सतवां बेटा पारथ कहिये ❀ जो मरिबेको नाहिं डेराय ॥
करी बन्दगी दरवानीने ❀ औ राजाते लगो बतान ।
आई बरायत गढ़ महुबेते ❀ ऐपनवारी दई पठाय ॥
बारी ठाढ़ो है फाटक पर ❀ अबहीं नेग देउ पहुंचाय ।
नेग अपनो वह मांगत है ❀ द्वारे चलै कठिन तलवारि ॥
इतनी सुनकै दरवानी ते ❀ गुस्सा भये बीर चौहान ।
सूरज बेटाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
बांधि लै आवो वा बारीको ❀ हमरी नजरि गुजारो आय ।
यह सुनि तुरतै सूरज चलिभये ❀ अलँगा परी ढाल तलवारि ॥

देर देखिकै रूपना बारी ❋ समुहे तुरत पहूँचो जाय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ ऐपनबारी दई चलाय ॥
रूपना बोलो महाराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ।
हम हैं बारी परिमालेके ❋ हमरो नेग देउ मंगवाय ॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ तब ताहरते कही सुनाय ।
जान न पावै महुबेवाला ❋ याको शीश लेउ कटवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ ताहर हल्ला दियो कराय ।
छाड़ि आसरा जिंदगानीको ❋ रूपना खैंचि लई तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
जितने क्षत्रिन रूपनै घेरो ❋ उतने धरती दिये दिखाय ॥
रूपना आयो पृथीराजपै ❋ अपनो भाला लियो निकारि ।
नोकते तुरतै ऐपनवारी ❋ सो रूपनाने लई उठाय ॥
नेग हमारो जो बाकी है ❋ सो भंवरिनमें लेहौं आय ।
इतनी कहिकै रूपना चलिभौ ❋ फाटक निकरि गयो वापार ॥
रूपनै घेरचो गलियारनमें ❋ क्षत्री खैंचि खैंचि तलवारि ।
देखि हाल यह रूपना वारी ❋ लै तलवारि पहूँचो जाय ॥
रूपना मारे ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरि परै धरनि भहराय ।
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❋ गलियन बही रक्तकी धार ॥
बाग मरोरी हरनागरकी ❋ रूपना निकरि गयो वा पार ।
रूपना पहुँचो जब फौजनमें ❋ देखो ताहि रजा परिमाल ॥
खूनते बूड़ो रूपना वारी ❋ घोड़ा लाल वरन होइ जाय ।
पूछन लागे ऊदनि ठाकुर ❋ रूपन हाल देउ बतलाय ॥
कैसी गुजरी दरवाजेपर ❋ सो सब हाल कहौ समुझाय ।
रूपना बोल्यो तब ऊदनिते ❋ द्वारे चली कठिन तलवारि ॥
दुइ हजार क्षत्रिनने घेरो ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।
मोहरा मारो रजपूतनको ❋ ऐपनवारी लियो उठाय ॥

हाल सुनो जब यहु माहिलने ❀ तब ऊदनिते कही सुनाय ॥
अबहीं जैहैं हम दिल्लीको ❀ औ राजाते कहिहैं जाय ।
करिकै नेगचार द्वारे सब ❀ सातौ भांवरि देउ डराय ॥
इतनी कहिकै माहिल राजा ❀ लिल्ली घोड़ी भये सवार ।
जायके पहुँचे गढ़ दिल्लीमें ❀ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❀ घोड़ी थाम लई थनवार ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ राजा चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरई वाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
माहिल बोले महराजाते ❀ तुम सुनि लेउ पिथौराराय ॥
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❀ तिनते आप जीतिहो नाहिं ।
सीख हमारी राजा मानौं ❀ शर्बत अबहिं देव पहुँचाय ॥
जहर घोराय देउ शर्बतमें ❀ पियतै मरैं महोबिया ज्वान ।
बात तुम्हारी सब रहि जावै ❀ लाठी बिना सांप मरि जाय ॥
बात मान लइ पृथीराजने ❀ सूरज बेटा लियो बुलाय ।
नेगी और कहार बुलवाये ❀ तुरतै शर्बत दियो घोराय ॥
जहर घोराय दियो शर्बतमें ❀ नौसौ गगरी दईं भराय ।
सूरज चलिभये अगवानीको ❀ औ बरातमें पहुँचे जाय ॥
तम्बू पूछो परिमालैको ❀ दरवानीने दियो बताय ।
बैठे राजा जहँ गद्दीपर ❀ दहिने बैठे बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी सूरजमलने ❀ सिगरी बहिंगो दई धराय ।
बोले सूरज परिमालैते ❀ भेजो हमहिं बीर चौहान ॥
शर्बत लाये हम बरातमें ❀ सो क्षत्रिनको देउ बँटाय ।
करौ तयारी दरवाजेकी ❀ यह कहि दई बीर चौहान ॥
कियो इशारा तब मलिखेने ❀ ऊदनि बेलवा लियो मँगाय ।
हाथ कटोरा लौ ऊदनिने ❀ समुहें भई तड़ाका छींक ॥
ऊदनि सोचे तब अपने मन ❀ कोई कारन परै दिखाय ।
ढेबा सगुनियाको बुलवायो ❀ भैया सगुन देउ बतलाय ॥

बोले ढेबा सगुन देखिकै ❋ ऊदनि वचन करौ परमान ।
जहर घुरो है यह शर्बतमें ❋ क्षत्री पियत तुरत मरि जायँ ॥
शर्बत दीजो न काहूको ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
इतनी सुनतै ऊदनि ठाकुर ❋ कुत्ता एक लियो बुलवाय ॥
शर्बत प्यायो तेहि कुत्ताको ❋ कुत्ता तुरत गयो मुरझाय ।
गुस्सा ह्वैकै तब ऊदनिने ❋ सिगरो शर्बत दियो फँकाय ॥
नेगी आये जो दिल्लीके ❋ तिनको ऊदनि मारन लाग ।
नेगी भागे सूरज भागे ❋ पहुँचे गढ़ दिल्लीमें जाय ॥
करी बन्दगी बादशाहको ❋ औ बरातको कह्यो हवाल ।
बड़े सगुनियाँ हैं महुबेके ❋ जिनको सगुन न खाली जाय ॥
तुमने शर्बत जो भेजा था ❋ सो खन्दकमें दियो फँकाय ।
सो सब ऐहैं दरवाजेपर ❋ ताको अब कछु करौ उपाय ॥
बोले माहिल तब राजासे ❋ औ महराज गरीब निवाज ।
सीख हमारी राजा मानौ ❋ तौ हम जतन देइँ बतलाय ॥
बाँस गाड़िदेउ दरवाजेपर ❋ ऊपर कलशा देउ धराय ।
जौंरा भौंरा मदमाते करि ❋ दोनों हाथी देउ छुड़ाय ॥
आवै महोबिया जब द्वारेपर ❋ तब कहि दीजो बात सुनाय ।
हमरे कुलमें यहै रीति है ❋ सो तुम जानि लेउ ब्योहार ॥
द्वार चार पीछेते ह्वैहै ❋ पहिले हाथी देउ पछार ।
कलश उतारि लेउ लग्गीते ❋ तौ हम भांवरि देयँ डराय ॥
सीख मानिलइ उन माहिलकी ❋ माहिल बहुत खुशी ह्वैजाय ।
माहिल चलिभये तब लिल्लीपर ❋ औ बरातमें पहुँचे आय ॥
पृथीराज पहुंचे ड्योढ़ीपर ❋ महलन खबरि दई करवाय ।
त्यारी होन लागी महलनमें ❋ पहुँचे महाराज तहँ जाय ॥
खंभ मंगाय मलयागिरिके ❋ सो आंगनमें दिये गड़ाय ।
मड़वा छाय गयो पाननते ❋ सोने कलश दियो धरवाय ॥

चौकी डरवाई चन्दनकी ❁ सखियां लईं सबै बुलवाय ।
करी तयारी दरवाजेपर ❁ द्वारे लग्गी दईं गड़ाय ॥
कलश सोबरनको तापरधरि ❁ हाथी मस्त लिये मंगवाय ।
सो छुड़वाय दिये द्वारे पर ❁ जौंरा भौंरा जिनको नाम ॥
हियां कि बातै तौ हियं छांड़ो ❁ अब आगेको सुनौ हवाल ।
बोले ऊदनि नर मलिखेते ❁ दादा त्यारी लेउ कराय ॥
करो दुआरौ ब्रह्मानन्दको ❁ अब ना राखो देर लगाय ।
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❁ लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
सजे बराती सब जल्दीते ❁ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❁ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
हौदा धरिदिये सब हाथिनपर ❁ घोड़न जीन दिये धरवाय ।
ऊँट पालकी गजरथ सजिगये ❁ जिनको सजत न लागी ब्यार ॥
यक यक हाथीके हौदापर ❁ चढ़िगे चारि चारि असवार ।
अपनी अपनी असवारिनपर ❁ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
तोपैं जोतवाईं आगेको ❁ लश्कर कूच दीन करवाय ।
चली पालकी ब्रह्मानन्दकी ❁ झंडन रही लालरी छाय ॥
झंडा घूमैं दरियायिनके ❁ बाजे तुरुही औ कंडाल ।
बायें बेंदुलाको चढ़वैया ❁ दहिने चले बीर मलिखान ॥
पाछे पालकी चंदेलेकी ❁ संगहि मंडलीक अवतार ।
सात कोसके चोगिरदामें ❁ हाहाकारी शब्द सुनाय ॥
धूरि उड़ानी आसमानलों ❁ सविता रहे धुन्धिमें छाय ।
खबरि पहूँची पृथीराजको ❁ आवत फौज महोबे केरि ॥
सातौ बेटा तब बुलवाये ❁ देवी मरहठा लिये बुलाय ।
पूरन राजा औ अंगदको ❁ चौड़ा धांधू लिये बुलाय ॥
हुक्म दै दियो इन सबहीको ❁ लश्कर जल्दी करो तयार ।
जितने राजा न्योते आये ❁ सब हाथिनपर भये सवार ॥

सातौ बेटा पृथीराजके ❋ सो घोड़नपर भये सवार ।
बजो नगारा गढ़ दिल्लीमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार ॥
पंडित बुलवायो राजाने ❋ द्वारे चौक दई पुरवाय ।
घट भरवायो गंगाजलते ❋ सो द्वारे पर दियो धराय ॥
पूजन करिकै श्रीगणेशको ❋ सब सामग्री दई धराय ।
ताहर बेटाको बुलवायो ❋ सो अगवानी दियो पठाय ॥
यक हरकाराको बुलवायो ❋ सो लश्करमें दियो पठाय ।
पहुँचै ताहर जब बरातमें ❋ औ आल्हको करी सलाम ॥
हमहिं पठायो अगवानीको ❋ अब द्वारेको होउ तयार ।
जबहीं पहुँचे सब द्वारेपर ❋ तब ताहरने कही सुनाय ॥
हमरे कुलमें यहै रीति है ❋ सो सुनिलेउ बनाफरराय ।
जो कोउ आवै दरवाजेपर ❋ पहिले हाथी देय पछारि ॥
हाथी झूमैं जौंरा भौंरा ❋ देखत जिनहिं शूर डरिजात ।
सांकल फेरी द्वउ हाथिनने ❋ लश्कर रेन बेन ह्वइ जाय ॥
यक ललकार दई हाथीको ❋ झपटे तुरत बीर मलिखान ।
दांत पकरि धरतीपर पटक्यो ❋ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
सूँडि पकरिकै बघ ऊदनिने ❋ दुसरो हाथी दियो पछारि ।
देखि हाल यह पृथीराज तब ❋ मनमें गये सनाका खाय ॥

अथ दरवाजेकी लड़ाई

★

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई दरवाजेकी ❋ शारद मोको होउ सहाय ॥
बोले ताहर आगे बढ़िकै ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
कलश उतारि लेउ लग्गीते ❋ तौ हम द्वारो देयँ कराय ॥
बोले मलिखे तब जगनिकते ❋ अबहीं कलशा लेउ उतारि ।
यह सुनि जगनिक आगे बढ़िगै ❋ औ लग्गीपै पहुँचे जाय ॥

ताहर बोले कमलापतिते ❀ ठाकुर सुनो हमारी बात ।
तुम्हरी बरनीके जगनिकहैं ❀ तुरतै लेउ जँजीरन बांधि ॥
इतनी सुनते कमलापतिने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
बढ़ि ललकारो जगनायकको ❀ ठाकुर सावधान ह्वइजाव ॥
हाथ चलैहौ जौ कलशापर ❀ तौ घोड़ाते दिहौं गिराय ।
इतनी सुनते जगनिक तड़पे ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
जगनिक पहुंचि गये हौदापर ❀ औ मस्तीक अड़ाये पांव ।
मारि महाउत कमलापतिको ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
देखि हकीकति कमलापतिने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
चेहरा मारो जगनायकको ❀ जगनिक दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही गहिगहि मारी ❀ जगनायक लइ चोट बचाय ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ जगनिक खैंचिलई तलवारि ॥
करो जड़ाका कमलापतिपर ❀ कमलादीन्ही ढाल अड़ाय ।
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली ❀ गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
बारह कड़ियां कटि बख्तरकी ❀ चांदी फूल गिरे झहनाय ।
घाव लागि गयो तब तोंदीमें ❀ कमला गिरेधरनि भहराय ॥
कमला जूझे दरवाजे पर ❀ ताहर मनमें गये घबराय ।
रहिमत सहिमत जिन्सीवाले ❀ तिनते ताहर कही सुनाय ॥
मोहरा मारो जगनायकको ❀ औ द्वारेते देउ भगाय ।
देखि हाल यह बघऊदनिने ❀ मन्ना गूजर लिये बुलाय ॥
फिरि समुझायो नर ढेबाको ❀ भैया बहुत रहेउ हुशियार ।
तुम्हरी बरनीके दोनों हैं ❀ भैया इनको दियो भगाय ॥
खैंचि शिरोही ली क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि ।
घैहा होइकै दरवाजेते ❀ रहिमत सहमत गये बराय ॥
भगे सिपाही पृथीराजके ❀ द्वारे कठिन चली तलवार ।
हुक्म दे दियो तब ताहरने ❀ तोपन वत्ती दियो लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपन पर ❀ तुरतै आगी दई लगाय ।

धुवां उड़ानो आसमानलौ ❋ द्वारे रही अंधेरिया छाय ॥
चहुंदिशि गोला छूटन लागे ❋ गोली मन्न मन्न मन्नाय ।
एक घरीलौं गोला छूटे ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
सातो बेटा पृथीराजके ❋ तिनहूं खैंचि लई तलवारि ।
खटखट खटखट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
दोनों फौजनके संगममें ❋ कोताखानी चलै कटार ।
पैदल अभिरि गये पैदलसंग ❋ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके संग हौदा मिल गये ❋ सबके मारु मारु रटि लागि ।
अँटके डंडा अम्वारिनके ❋ ऊपर पेश कब्जकी मारु ॥
चारि घरी भरि भई लड़ाई ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
घैहा डारे जे लोहूमें ❋ तिनके प्यासप्यास रटिलागि ॥
एक लाख क्षत्री दिल्लीके ❋ जूझे कठिन भयो संग्राम ।
ऊदनि पहुँचि गये लग्गीपे ❋ सोने कलशा लियो उतारि ॥
बोले ऊदनि तब ताहरते ❋ औरो रीति देउ बतलाय ।
देखि हाल यह पृथीराजने ❋ द्वारे चार दियो करवाय ॥
नेग चार करिकै द्वारेकी ❋ ब्याहकि साइति दइ बिचराय ।
हालु जानिकै माहिल राजा ❋ पहुंचे पृथीराज परजाय ॥
बोले माहिल उरईवाले ❋ तुम सुनि लेउ पिथोराराय ।
जो कहुं ब्याह होय महुबेमें ❋ कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
सीख हमारी राजा मानौ ❋ सोई करौ बीर चौहान ।
यह कहि पठवौ तुम बरातको ❋ हमरे कुला यहै ब्यौहार ॥
पहिले करिलेयँ समधौरा हम ❋ पाछे होय ब्याहको काम ।
सबै धरौआ औ चन्देले ❋ तिनको अबहीं लेउ बुलाय ॥
जबहीं आवैं महुबेवाले ❋ सबके मूँड़ लेउ कटवाय ।
यहु मन भाय गई पिरथीके ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥

पहिले करिकै समधोरा हम ❃ पाछे दैहैं ब्याह कराय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि चलि भये ❃ आये जहां रजा परिमाल ॥
हाल सुनायो समधोरेको ❃ तब उन पलकी लई मंगाय ।
तुरत पालकी पर चढ़ि बैठे ❃ औ द्वारेपर पहुंचे जाय ॥
गज भरि छाती पृथीराजकी ❃ औ नैननमें बरैं मसाल ।
तिनते कौन करै समधोरा ❃ क्यहि रजपूत लीन्ह अवतार ॥
सूरति देखी पृथीराजकी ❃ बोले ऊदनिते परिमाल ।
उमिरि हमारी बूढ़ी ह्वै गइ ❃ खांडा सागर धरौ पखारि ॥
है कछु धोखा समधोरेमें ❃ ताको अबहीं करौ उपाय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभै ❃ औ आल्हापै पहुंचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❃ दादा सुनि लेउ बात हमारि ।
नहिं है मनसा समधोरेकी ❃ गै परिमाल सनाका खाय ॥
तौलौं आय गये मलिखे तहँ ❃ तिनते ऊदनि कह्यो हवाल ।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❃ दादा मंडलीक अवतार ॥
जेठो भैया बाप बरोबर ❃ तुम समधोरा करौ बनाय ।
पान लगाओ पृथीराजके ❃ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❃ हथि पचशावद लियो मंगाय ।
सो सजवाय लियो जल्दीते ❃ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा बेंदुलापर ऊदनि चढ़ि ❃ घोड़ी कबुतरीपर मलिखान ।
तीनों चलि भये तब लश्करते ❃ औ द्वारेपर पहुंचे जाय ॥
सम्मुहे पृथीराज ठाढ़े थे ❃ आल्हा उतरि परे अरगाय ।
भयो सामना शब्दवेधिते ❃ जो नरनाह बीर चौहान ॥
दही लगायो तब छातीमें ❃ ऊपर पान दियो चिपकाय ।
जोधा ठाढ़े जो द्वारेपर ❃ देखैं सबै तमाशा ठाढ़ ॥
छाती मिलाई जब दोनोंने ❃ धरती गिरो पशीना आय ।
जाफ आइ गइ तिन दोनोंको ❃ सोचे पृथीराज महराज ॥
बड़े बली हैं महुबेवाले ❃ रानी देवकुँवरिके लाल ।

पृथीराज बोले आल्हाते ❋ तुम सुनि लेउ बनाफरराय ॥
अबहिं चढ़ावा तुम पठवावो ❋ जल्दी होय ब्याहको काज ।
इतनी सुनिके आल्हा चलिभे ❋ औ तम्बूमें पहुंचे आय ॥
लौटे पृथीराज द्वारेते ❋ औ ड्योढ़ीमें पहुंचे जाय ।
बोले आल्हा नर मलिखेते ❋ अबहिं चढ़ावा देउ पठाय ॥
डब्बा भेजि देउ गहनेको ❋ ब्याहके कपड़ा देउ मंगाय ।
इतनी सुनिकै नर मलिखेने ❋ गहने कपड़े लिये निकारि ॥
भयो बुलौवा तब रुपनाको ❋ सो तम्बूमें पहुंचो जाय ।
गहने कपड़ा दै रुपनाको ❋ औ सब हाल दियो बतलाय ॥
रुपना चलिभौ डब्बा लैकै ❋ औ ड्योढ़ीमें पहुंचो जाय ।
गहनो सौंपि दियो नेगिनको ❋ सब सामान दियो पकराय ॥
लैकै गहनो नेगी पहुंचे ❋ तुरतै रंगमहलमें जाय ।
भयो बुलौवा तब बेलाको ❋ सो मड़ये तर पहुंची आय ॥
संग सहेली थीं बेलाके ❋ सो गहनेको देखन लागि ।
देखिकै गहनो बेला जरिगइ ❋ औ सब गहनो दौ फैलाय ॥
बेला बोली एक सखीते ❋ गुस्सा रही देहमें छाय ।
गहनो लैकै जो आयो है ❋ ताको अबहीं लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौवा तब रुपनाको ❋ सो समुहेपर पहुंचो जाय ।
हाथ जोरिके रुपना ठाढ़ो ❋ बेला तासों कही सुनाय ॥
कलियुगवालो गहना लैकै ❋ ब्याहन आये साजि बरात ।
तुम यह कहौ जाय आल्हाते ❋ द्वापर गहनो देउ पठाय ॥
गहनो लावौ हथिनापुरको ❋ चुरियां चूनरि देउ पठाय ।
तौ तौ ब्याह होय दिल्लीमें ❋ नहिं सब लौटि महोबे जायँ ॥
यह सुनि चलिभो रुपना बारी ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय ।
हाथ जोरिकै रुपना बोल्यो ❋ दादा अब कछु करौ उपाय ॥
जो जो गहना तुमने भेजे ❋ सो बेलाने दौ फैलाय ।
गहनो मांगै द्वापरवालो ❋ चुरियां चुनरी पठइ मंगाय ॥

यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❃ दादा करिहौ कौन उपाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❃ भैया धीर धरौ मनमाहिं ॥
आल्हा चलिभये झारखंडको ❃ खांड़ा बिजुलिया लियोउठाय ।
जाय पहूंचे तब मंदिरमें ❃ अस्तुति करी बनाफरराय ॥
होम कियो श्रीजगदम्बाको ❃ अपने शीश चढ़ावन लागि ।
हाथ पकरि लौ तब देवीने ❃ औ आल्हाते लगी बतान ॥
कौनकाज हित शीश चढ़ावौ ❃ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
हाथ जोरिकै आल्हा बोले ❃ माता धर्म तुम्हारे हाथ ॥
ब्याह करन हित ब्रह्मानँदको ❃ हम दिल्ली लै गये बरात ।
बेला बेटी पृथीराजकी ❃ सो गहनेको रही मँगाय ॥
द्वापरवालो गहनो मांगै ❃ चुरियां चुनरी रही मँगाय ।
इतनी सुनतै देवी बोली ❃ आल्हा धीरधरौ मनमाहिं ॥
बैठे रहो यहां मंदिरमें ❃ अबहीं ह्वइहैं काम तुम्हार ।
इतनी कहिकै देवी चलिभइ ❃ पहुँची इन्द्र लोकमें जाय ॥
बोली देवी तब इन्दरसे ❃ अटको काज चँदेले क्यार ।
बेला बेटी पृथीराजकी ❃ है द्रौपदी केर अवतार ॥
गहना मांगै बहु द्वापरको ❃ चुरियां चुनरी रही मँगाय ।
इतनी सुनिकै इन्दरदेवने ❃ तब बासुकीको लियो बुलाय ॥
गहना लावो द्वापरवालो ❃ तब बेलाको होय विवाह ।
यह सुनि बासुकिगै पतालमें ❃ सिगरो गहनो लाये उठाय ॥
सो पकराय दियो देवीको ❃ तब बेलाको होय विवाह ।
आई देवी तब मंदिरमें ❃ आल्है गहनो दियो गहाय ॥
चुरियां चूनरि द्वापरवाली ❃ सो आल्हाको दइँ पकराय ।
लैकै गहना आल्हा चलिभये ❃ औ बरातमें पहुँचे आय ॥
रूपना बारीको बुलवायो ❃ औ सब गहनो दौ पकराय ।
गहना लैकै रूपना चलिभौ ❃ पहुंचो रंगमहलके द्वार ॥

गहनो पहुंचायो बेलापै ❀ बेला देख खुशी होइ जाय ।
हंसि हंसि गहना बेला पहिरो ❀ पूरन होइ गयो काम हमार ॥
चलिभयो रूपनातबडचोढ़ीते ❀ औ बरातमें पहुंचो जाय ।
हाल कह्यो सब तुनि आल्हाते ❀ पूरन ह्वइगो काम तुम्हार ॥
सुनो हाल जब यहु माहिलने ❀ अपनी घोड़ी लई सजाय ।
कूदि बछेरीपर चढ़िबैठे ❀ पहुंचे जहां पिथौराराय ॥
उतरि बछेरीते आगे चलि ❀ पृथीराजको करी सलाम ।
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❀ ऊंची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल तब राजाते ❀ अब तुम मानो बात हमारि ॥
होयं घरौआ जो महुबेके ❀ तिन मड़ये तर लेउ बुलाय ।
शूर बीर क्षत्री बुलवायो ❀ सो कोठरिनमें देउ छिपाय ॥
जबहीं आवैं महुबेवाले ❀ सबके मूंड लेउ कटवाय ।
बात मानिकै पृथीराजने ❀ तब माहिलते कही सुनाय ॥
भली बताई माहिल राजा ❀ रहिहैं दोनों धर्म हमार ।
दुइ हजार क्षत्री बुलवायो ❀ सो महलनमें दियो छिपाय ॥
मोती बेटाको बुलवायो ❀ ताते कही बीर चौहान ।
जल्दी जावौ तुम लश्करको ❀ औ आल्हाते कहियो जाय ॥
जल्दी त्यार होउ मंड़येको ❀ अबहीं भौंरी दिहैं डराय ।
हुक्म पायकै मोती चलिभे ❀ औ नेगिनको लीन्हैं साथ ॥
मोती पहुंचि गये लश्करमें ❀ औ आल्हापै पहुंचे जाय ।
करी बन्दगी तुनि आल्हाको ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
जितने घरौआ हैं महुबेके ❀ सो हमरे संग होयं तयार ।
शंका छोड़ि देउ जियराकी ❀ सातौ भांवरि दिहौं डराय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ।
गंगा कीन्ही तब मोतीने ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥

देश हमारे यहै रीति है ❀ आगे कुला कुला व्यौहार ।
जितने घरोआ होय बराती ❀ सोई साथ होयँ तैयार ॥
इतनी सुनिकै नुनि आल्हाने ❀ ब्रह्मा नन्दहि लियो बुलाय ।
पलकी मँगवाई तब ब्रह्माकी ❀ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
सजे घरौआ सब बरातके ❀ जिनको सजत न लागी ब्यार ।
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❀ जिनको जानत सकल जहान ॥
जोगा भोगा नैनागढ़के ❀ जिनकी जगजाहिर तलवारि ।
मोहन राजा बौरीवाले ❀ रणमें एक शूर सरदार ॥
ताल्हन सैयद बनरसवाले ❀ जिनकी बेड़ि बहै तलवारि ।
राजा जगनिक जगनेरीके ❀ जिनको भाला प्रगट जहान ॥
मन्ना गूजर महुबेवाले ❀ जो मरिबेको नाहि डेराय ।
यह दश शूर महोबेवाले ❀ तुरतै सजिकै भये तयार ॥
अपने घोड़नपर चढ़ि बैठे ❀ अपने बांधि बांधि हथियार ।
चली पालकी ब्रह्मानन्दकी ❀ संगमें चले घरौआ ज्वान ॥
जायकै पहुँचे फाटक भीतर ❀ मोती आगेको बढ़ि जायँ ।
मोती बोले पृथीराजने ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
आई पालकी ब्रह्मानन्दकी ❀ आये साथ घरौआ ज्वान ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
पहुँचि पालकी गइ डचोढ़ीमें ❀ ब्रह्मा उतरि परे अरगाय ।
जाय पहूँचे जब मड़येतर ❀ पंडित अक्षत दिये छड़ाय ॥
नेगचार करिकै मड़येतर ❀ तुरतै बेलहि लियो बुलाय ।
भयो गठिबंधनबरकन्याको ❀ पंडित होम दियो करवाय ॥
सखियां मंगल गावन लागी ❀ बन्दी सुयश बखानन लाग ।

अथ मड़येकी लड़ाई

सुमिरन करिकै नारायणको ❀ जगदम्बेके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई अब मड़येकी ❀ शारद मोंको होउ सहाय ॥

भौंरी परन लगी ब्रह्माकी ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
पहिली भांवरिके परतै खन ❋ सूरज खैंचि लई तलवारि ॥
कियो जड़ाका ब्रह्मानन्दपर ❋ जगनिक दीन्हीं ढाल अड़ाय।
दुसरी भांवरिके परतै खन ❋ चन्दन खैंचि लई तलवारि ॥
करी चोट जब ब्रह्मानन्दपर ❋ ढेबा लीन्ही चोट बचाय ।
तिसरी भांवरिके परतै खन ❋ मरदनि खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई जब ब्रह्मानन्दपर ❋ मन्ना लीन्ही चोट बचाय ।
चौथी भांवरिके परतैखन ❋ मरदनि खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका ब्रह्मानन्दपर ❋ जोगाने लइ चोट बचाय ।
भांवरि पँचईके परतैखन ❋ गोपी चोट चलाई आय ॥
भोगा सारो जो आल्हाको ❋ ताने लीन्ही चोट बचाय ।
छठई भांवरिके परतैखन ❋ पारथ खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब ब्रह्मापर ❋ ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ।
सतई भांवरिके परतैखन ❋ ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
करी चोट जब ब्रह्मानन्दपर ❋ मलिखे लीन्ही चोट बचाय ।
हल्ला ह्वइगौ फिरि मड़येमें ❋ निकरे शूर कोठरियन केर ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ मड़ये खूब चली तलवारि ॥
जितने क्षत्री सन्मुख आये ❋ महुबेवालेन दिये गिराय ।
सातौं बेटा पृथीराजके ❋ सबने खैंचि लई तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
कपड़ा भीजि गये लोहूते ❋ बेला खूनते गई नहाय ॥
बिकट लड़ाई भइ मड़येमें ❋ सातौ बेटा लिये बँधाय ।
सुनी खबर जब पृथीराजने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
चौंड़ा ब्राह्मण बोलन लागो ❋ द्रोणाचारजको अवतार ।
छोटा लरिका देवैवालो ❋ जाको नाम उदयसिंहराय ॥
बड़ो लड़ैया है बांको यहु ❋ ताने जौहर करे बनाय ।

धीरज राखो अपने मनमें ❀ मरिहौं ताहि अबहिं तहँजाय॥
इतनी कहिके चौड़ा चलि भयो ❀ औ मड़ये तर पहुंचो जाय।
करी अधीनी तहं चौड़ाने ❀ औ आल्हाते कही सुनाय॥
हौ सब लायक देवै वाले ❀ सातौं भांवरि लईं डराय।
बड़े शूर हौ तुम महुबेके ❀ तुमते कोउ जितैया नाहिं॥
कैदछांड़िदेउ अब लरिकनकी ❀ पूरन हूइगो काम तुम्हार।
इतनी सुनिके तुनि आल्हाने ❀ सबकी कैद दई छुड़वाय॥
कैद छूटि गइ जब लरिकनकी ❀ तब चौड़ाने कही सुनाय।
नेग जोग जो बाकी रहि गये ❀ सोऊ अबहिं लेउ करवाय॥
इतनी सुनिके तब आल्हाने ❀ बाकी नेग लियो करवाय।
नाउनि आई पृथीराजकी ❀ सो आल्हाते लगी बतान॥
लरिका भेजि देउ भीतरको ❀ जल्दी खाय कलेवा जाय।
अकिलो लरिका महलन जैहैं ❀ है यह हुक्म पिथौरा क्यार॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ हमरे कुला यहै ब्यौहार।
दूलह संग जाय सहबाला ❀ जेवैं तबहिं तौन ज्यौनार॥
यहसुनिनाउनिमहलनचलिभइ ❀ ब्रह्मा ऊदनि संग लिवाय।
बिछे गलीचा रंगमहलमें ❀ तापर दोनों बैठे जाय॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❀ पाई खबर चौड़िया राय।
लहंगा लुगरा चौंड़ा पहिरो ❀ चुरियां पहिरिपोतिया क्यार॥
गहनापहिरिलियोतिरियनको ❀ तुरतै लियो घूंघटा काढ़ि।
भेष जनानो चौड़ा करिकै ❀ पहुंचो रंगमहलमें जाय॥
जहर बुझाई एक छूरी लै ❀ सो कम्मरमें लई दबाय।
जहंपर बैठे ऊदनि ब्रह्मा ❀ तहं सखियनमें बैठो जाय॥
थार परोसो अगमा रानी ❀ सो दोनोंपे दियो धराय।
कौर उठायो जब ऊदनिके ❀ चौंड़ा दहिनी हनी कटार॥
घाव आय गयो तब ऊदनिके ❀ धरती गिरे मूरछा खाय।
देखि हाल यह बघऊदनिको ❀ तुरतैं चौंड़ा गयो घबराय॥
अगमा रानी रोवन लागी ❀ सिगरो रोय उठो रनिवास।

मोह आगयो ब्रह्मानन्दको ❀ उनहूं छांड़ि दई डिडकार ॥
रूप देखिकै बघऊदनिको ❀ अगमा रोय रोय रहिजाय ।
चौंड़ा ब्राह्मण तुम मरिजैयो ❀ तुमपर परै इन्द्रकी गाज ॥
धोखा दियो आय महलनमें ❀ चौंड़ा तेरो बुरो ह्वैजाय ।
जेहिके लरिका असमारोगौ ❀ कैसे जियै दिवलदे माय ॥
रोवत रोवत अगमा चलि भइ ❀ सतखण्डापर पहुंची जाय ।
रोवत देखौ जब माताको ❀ तब बेलाने कही सुनाय ॥
कौने कारण माता रोवौ ❀ सो म्वहिं हाल देउ बतलाय ।
बोली अगमा तब बेलाते ❀ हमते बिपति कही ना जाय ॥
मारो ऊदनिको चौंड़ाने ❀ धरिकै भेष मेहरिया क्यार ।
घाटि करी त्यहिं धोखा दैकै ❀ नाहीं कियो मर्दको काम ॥
खबरि पहुँचि है जब देवैको ❀ अपनो पेटु मारि मरि जाय ।
हनी कटारी है चौंड़ाने ❀ कैसे जियैं उदयसिंहराय ॥
इतनी सुनतै बेला चलि भइ ❀ औ ऊदनिपै पहुँची जाप ।
हाल देखिकै बघऊदनिको ❀ बेला छुरिया लई निकारि ॥
अपनी अँगुरी एक चीरिकै ❀ लोहू अपनो दियो चुवाय ।
घाव पूरिगौ जब ऊदनिको ❀ मूर्छा जगी उदयसिंह क्यार ॥
सम्मुहे देखो रनिबेलाको ❀ ऊदनि चरण गये लिपटाय ।
ऊदनि ब्रह्मा दोनों चलि भये ❀ औ पालकी पर भये सवार ॥
चली पालकी ब्रह्मानन्दकी ❀ औ बरातमें पहुँची जाय ।
जहँपर तम्बू चन्देलेको ❀ तहां पालकी धरी उतारि ॥
ब्रह्मा ऊदनि दोनों उतरे ❀ औ राजाको करी सलाम ।
घाव दिखायो बघऊदनिने ❀ देखैं खड़े बीर मलिखान ॥
हाल सुनायो सब ऊदनिने ❀ सुनिकै खुशी भये परिमाल ।
मोहरन तोड़ा उन लुटवायो ❀ दहिने भइ शारदा माय ॥
राजा बुलवायो आल्हाको ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
साइति पूँछि लेउ पंडितते ❀ मड़ुवे कूच देउ करवाय ॥

रुपनै भेजि देउ दिल्लीको ❁ अबहीं बिदा देयँ करवाय ।
भयो बुलौआ तब रुपनाको ❁ औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
चलिभौ रुपना तब लश्करते ❁ पहुंचो बीच कचेहरी जाय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❁ औ राजाते लगो बतान ॥
हमहिं पठायो चन्देलेने ❁ औ यह कही रजा परिमाल ।
साइति नीकी है अबहींकी ❁ जल्दी बिदा देउ करवाय ॥
बोले पृथीराज रुपनाते ❁ हमरे कुला यहै ब्योहार ।
गौने देहैं साल बीच हम ❁ यह राजाते कहियो जाय ॥
हैं सब लायक भूप चन्देले ❁ धनि धनि बीर बनाफरराय ।
जिन यह ब्याह करो दिल्लीमें ❁ यह सुनि रुपना करी सलाम ॥
चलिभौ रुपना गढ़दिल्लीते ❁ औ लश्करमें पहुँचो आय ।
ज्वाब सुनायो पृथीराजको ❁ आल्हा हुक्म दियो करवाय ॥
मेख उखारि देउ तम्बुअनकी ❁ लश्कर कूच दियो करवाय ।
हुक्म पायके भई तयारी ❁ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❁ औ महुबेकी पकरी राह ।
रुपनै भेजि दियो महुबेको ❁ मल्हनै खबरि सुनाई जाय ॥
सखियां बुलवाई मल्हनाने ❁ महलन होय मंगलाचार ।
आइ बरायत गढ़ महुबेमें ❁ महुबे दगन सलामी लागि ॥
आई पालकी ब्रह्मानन्दकी ❁ मल्हना आरति धरी उतारि ।
दान दक्षिणा और निछावरि ❁ सबको दीन्हीं तुरत बंटाय ॥
जितने बराती राजा आये ❁ सबकी बिदा दई करवाय ।
आल्हा ऊदनि मलिखे ब्रह्मा ❁ सबको मिले जोड़ि द्वउ हाथ ॥
चरण लागिके महतारीके ❁ सो माथेमें लिये लगाय ।
हाल बतायो सब दिल्लीको ❁ ऊदनि मल्हनै दौ समुझाय ॥
सालके भीतर गौनो ह्वइहैं ❁ माता सब परताप तुम्हार ।
ऐसो ब्याह भयो ब्रह्माको ❁ सो हम कहिके दियो सुनाय ॥
ब्याह सुनैहैं अब ऊदनिको ❁ करिहैं भोलानाथ सहाय ।

इति दिल्लीकी लड़ाई (ब्रह्माका ब्याह) सम्पूर्ण ।

श्रीः

अथ ऊदनिका ब्याह

★

(नरवरगढ़की लड़ाई)

दोहा—भोलानाथ मनाय उर, सीताराम सहाय।
अब ऊदनिको ब्याह मैं, कहौं सुअवसर पाय ॥ १ ॥

सवैया

रामको नाम बड़ो जगमें, सोइ रामको नाम रटै नर नारी।
रामको नाम तरी सेवरी, बहु तारे अजामिलते खल भारी ॥
रामको नाम लियो हनुमान, हते बहु निश्चर लंक मँझारी।
प्रेमते नेमते राम रटौ नित, रामको नाम बड़ो हितकारी ॥ २ ॥

कौने कारणको ब्रह्मा भै ❃ कौने हेत विष्णु भगवान्।
कौने कारण श्रीशंकर भै ❃ काहे प्रगट भये हनुमान ॥
क्यहि कारण अवतार रामको ❃ कौने कारणको घनमाल।
कौन हेत जग पवन देवता ❃ कौने हेतु अग्निकी ज्वाल ॥
कौने हेत भये धन्वन्तरि ❃ काहे लीन कृष्ण अवतार।
कौने कारण श्रीगणेश भै ❃ क्यहिं हित चन्द्र देव संसार ॥
जग उपजावनको ब्रह्मा भै ❃ रक्षा करन हेत भगवान।
जग संहारनहित शंकर भै ❃ लंका जारनको हनुमान ॥
रावण मारन हेत राम भै ❃ जल बरसावनहित घनमाल।
सुख सरसावन पवन देवता ❃ जगआनन्द अग्निकी ज्वाल ॥
रोग नशावनको धन्वन्तरि ❃ मार्‍यो कंस कृष्ण भगवान।
विघ्न नशावन हित गणेशजी ❃ जिनको जानत सकल जहान ॥
बाढ़ि बढ़ावनको समुद्रकी ❃ निशिमें पूर्ण चन्द्रमा जान।
ज्ञान बढ़ावन हित करै निरन्तर ❃ हितसे इष्टदेवको ध्यान ॥

नगर महोबा इक बस्ती है ❋ जहँपर बसैं रजापरिमाल ।
शूर बीर प्रगटे महुबेमें ❋ आल्हा आदि बली औतार ॥
बड़ बड़े योधा जगमें जीते ❋ जिनको नाम रजापरिमाल ।
बहुतक राजा मित्र बनाये ❋ बहुतक हने समर मैदान ॥
बावन किला जीति सर कीन्हे ❋ मानी हारि जगत भूपाल ।
मार न खाई केहु योधाकी ❋ सिगरे हारि गये महिपाल ॥
अपनदुसरिहा जब राखोना ❋ खांडा सागर धरो पखारि ।
कसमखाय लइ अमर गुरूकी ❋ अब ना गहौं हाथ हथियार ॥
भूप युधिष्ठि सो आल्हाभये ❋ ऊदनि भीमसेन बलवान ।
अर्जुन प्रगटे ब्रह्मानन्द ह्वइ ❋ औ सहदेव बीर मलिखान ॥
लगी कचहरी परिमालैकी ❋ बैठे बड़े बड़े बलवान ।
माहिल बैठे उरईवाले ❋ सो परिमालते लगे बतान ॥
नाम तुम्हारे देश देशमें ❋ जानत तुमहिं सकल संसार ।
घोड़ा काबुलते मंगवावौ ❋ जो गाढ़ेमें आवै काम ॥
कलश मंगाय लेउ सोनेको ❋ तापर बीरा देउ धराय ।
इतनी सुनते चन्देलेने ❋ तुरतै कलशा लियो मंगवाय ॥
पांच पानको बीरा लैके ❋ सो कलशापर दियो धराय ।
है कोउ क्षत्री हमरे दलमें ❋ जो काबुल पर पान चबाय ॥
भरी कचहरी क्षत्री बैठे ❋ सुनतै सबै गये घबराय ।
कोऊ बीरा तन देखै ना ❋ नाहीं मसा तलक मन्नाय ॥
तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❋ सो माहिलते लगे बतान ।
बीरा धरायो कौन कामको ❋ मामा हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले माहिल तब ऊदनिते ❋ तुम सुनि लेउ उदयसिंहराय ।
घोड़ा मंगावै हैं काबुलते ❋ राजा बीरा दियो धराय ॥
पान चबायो ना काहूने ❋ बहुतक क्षत्री गये बराय ।
तड़पिकै ऊदनि गै बीरापै ❋ औ बीराको लियो उठाय ॥
घोड़ा लैहैं हम काबुलते ❋ हमको खर्चा देउ मंगवाय ।

इतनी सुनिकै राजा बोले ❁ तुम ना जाउ लड़ैते लाल ॥
करत लड़ाई राह चलत तुम ❁ सहजै तोप देत लगवाय ।
चाह नहीं हमको घोड़नकी ❁ नहिं कछु अटको काम हमार ॥
पान चबाय लियो ऊदनिने ❁ औ राजाते कही सुनाय ।
नहीं धर्म है यहु क्षत्रिनको ❁ जो हठि धरैं पिछारी पांव ॥
दुबिधा छांड़ि देउ जियरेकी ❁ जल्दी खर्च देउ मंगवाय ।
इतनी सुनिकै चन्देलेने ❁ नर ढेबाते कही सुनाय ॥
कलहा लरिका देवैवाला ❁ यहु ना मानिहैं कही हमारि ।
तुमहूँ चले जाउ ऊदनि संग ❁ इतनी मानौ कही हमारि ॥
देश परायेमें जैहौ तुम ❁ करिहौ नाहि बखेड़ा जाय ।
मोहरै मँगवाई राजाने ❁ चौदह खच्चर दियो भराय ॥
फिरि समुझायो बघऊदनिको ❁ बेटा बहुत रह्यो हुशियार ।
होनहार ढेबा सब जानै ❁ जोगिन गुदरी लई उठाय ॥
ऊदनि ढेबा दोनों चलि भये ❁ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
डंका बजवावो लश्करमें ❁ अपनी फौज लई सजवाय ॥
सुनी खबरिया जब मल्हनाने ❁ तुरतै ऊदनि लिये बुलाय ।
बोली मल्हना बघऊदनिते ❁ बेटा हमहिं देउ बतलाय ॥
कहांकि त्यारी तुमने कीन्ही ❁ सो तुम जल्दी कहौ सुनाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❁ भेजत हमहिं चन्देले राय ॥
घोड़ा लैहैं हम काबुलते ❁ ढेबा जैहैं संग हमार ।
हँसी खुशीते आज्ञा दैदेउ ❁ तौ सब काम सिद्धि ह्वैजाय ॥
हुक्म दैदियो तब मल्हनाने ❁ ऊदनि चलि भये माथ नवाय ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❁ ऊदनि तापर भये सवार ॥
घोड़ा मनुरथाको सजवायो ❁ तापर ढेबा भये सवार ।
कूच कराय दियो महुबेते ❁ दशपुरवामें पहुँचे जाय ॥
आल्हा समुझायो ऊदनिको ❁ तुम ना जाउ लहुरवा भाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❁ दादा हम मनिबेको नाहिं ॥

बीरा चबायो हम काबुलको ❋ भेजो हमहिं रजापरिमाल ।
आल्हा सोचैं अपने मनमें ❋ यहु ना मनिहै कही हमारि ॥
हुकुम दै दियो तब आल्हाने ❋ चलिभै ऊदनि माथ नवाय ।
देवै सुनवां दोनों हटकैं ❋ ऊदनि एक न मानी बात ॥
सुनवां समुझायो ऊदनिको ❋ देवर बहुत रहेउ हुशियार ।
चरण लागिकै तब दोनोंके ❋ ऊदनि कूचि दियो करवाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ नरवरगढ़में पहुंचे जाय ।
बोले ऊदनि तब ढेबाते ❋ आगे कौन शहर दिखलाय ॥
करो बहाना तब ढेबाने ❋ नहिं कछु जानों हाल हमार ।
काम तुम्हारो यहँ नहिं अटको ❋ सीधे चले चलो तुम राह ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो ऊदनिने ❋ नरवरगढ़में पहुंचे जाय ।
गाय चरावत हते बरदिया ❋ तिनते ऊदनि पूछन लाग ॥
कौन शहर यह क्यहि राजाके ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले बरदिया तब ऊदनिते ❋ ओ परदेशी बात ओनाउ ॥
नरवरगढ़ है नाम शहरको ❋ नरपति राजाको है राज ।
मौरंगगढ़ है नाम दूसरो ❋ याही शहर केर दुई नाम ॥
यह सुनि ऊदनि घोड़ा हांको ❋ औ बागनमें करो मुकाम ।
अकिले ऊदनि चढ़ि घोड़ापर ❋ आगे घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ऊदनि पहुंचे जब पनिघटपर ❋ पनिहारिन तन रहे निहारि ।
रूप देखिके पनिहारिनिको ❋ ऊदनि खुशी भये मनमाहिं ॥
बोले ऊदनि पनिहारिनिते ❋ घोड़ैं पानी देउ पियाय ।
यह सुनि बोली इक पनिहारिनि ❋ औ परदेशी बात बनाउ ॥
हम पनिहारिनि हैं फुलवाकी ❋ पानी घोड़े पियैहैं नाहिं ।
हँसी करत हो क्यों हमते तुम ❋ अपनो घोड़ा जायँ भगाय ॥
हाल तुम्हरो राजा जनिहैं ❋ तुम्हरो घोड़ा लिहैं छिनाय ।
बोले ऊदनि पनिहारिनिते ❋ काहे घोड़ा जायँ भगाय ॥
काम बिगारो हम राजाको ❋ जो घोड़ाको लिहैं छिनाय ।

ऐसो क्षत्री हम ना देखैं ❋ हमते करै सामने बात ॥
पानी अपनो रहन देउ तुम ❋ घोड़ा लैहैं अनत पियाय ।
रूप देखिकै बघ ऊदनिको ❋ सब पनिहारिनि रहीं लोभाय ॥
यक पनिहारिनि बोलन लागी ❋ बहिनी मानौं बात हमारि ।
रूपको आगर यहु क्षत्री है ❋ केहु राजाको राजकुमार ॥
देखि जो पावै फुलवा रानी ❋ इनको तुरतै लेउ टिकाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
केहिकी बेटी फुलवा रानी ❋ सो तुम हमहिं कहो समुझाय ।
यह सुनि बोली पनिहारी इक ❋ ओ परदेशी बात ओनाउ ॥
फुलवा बेटी है राजाकी ❋ नित उठि फूलन तौली जाय ।
गुण अरु रूप शीलकी आगरि ❋ ज्यहि सुन्दरता कही न जाय ॥
परी निगाह जबहिं ऊदनिकी ❋ फुलबगिया तन रहे निहारि ।
पूँछन लागे ऊदनि ठाकुर ❋ यहु फुलबगिया केहिकी आय ॥
यह फुलबगिया है फुलवाकी ❋ ऊदनि तहां पहूँचे जाय ।
उतरि बेंदुलाते बगियामें ❋ अपनी दई मेख गड़वाय ॥
घोड़ा बेंदुला बांधि दियो तहँ ❋ तौलौं ढेबा पहुँचो आय ।
बोलेउ ढेबा तब ऊदनिते ❋ इतनी मानो कही हमारि ॥
काम नहीं कछु यहँ रहिबेको ❋ जल्दी मेख देउ उखराय ।
जो सुनि पैहैं नरपति राजा ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
घोड़ा लैबो मुश्किल ह्वैहै ❋ ताते कूच देउ करवाय ।
ढेबा समुझायो ऊदनिको ❋ मानी नाहिं उदैसिंहराय ॥
सोचि समुझिकै ऊदनि बोले ❋ भोरहिं कूच दिहैं करवाय ।
मोहर लेकै यक ऊदनिने ❋ सो ढेबाको दई गहाय ॥
रतिब लावौ तुम बजारते ❋ सो घोड़नको दिये खवाय ।
चलि भयो ढेबा तब जल्दीते ❋ तौलौं माली पहुँचौ आय ॥
बगिया देखी जब मालीने ❋ तब ऊदनिते लगो बतान ।
दाख छुहारनकी बगिया है ❋ काहे गर्द दई करवाय ॥

खबरि जो पैहैं नरपति राजा ❀ तुमको तुरते लिहैं बँधाय ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❀ अबहीं कूच जाउ करवाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ काहे राजा लिहैं बँधाय ॥
काह बिगारो हम नरपतिको ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
तोड़ा एक लियो ऊदनिने ❀ सो मालीको दियो गहाय ॥
राति भरेकी मुहलति दैदेउ ❀ भोरहिं जैहैं कूच कराय ।
बहुत खुशी होइ माली बोल्यो ❀ अब तुम दसदिनकरौ मुकाम ॥
इतनी कहिकै माली चलिभौ ❀ औ अपने घर पहुँचो जाय ।
मालिनि देखो जब मालीको ❀ तब मालीते पूंछन लागि ॥
काह भेंट पाई राजाते ❀ जो तुम बहुत खुशी मनमाहिं ।
इतनी सुनतै तोड़ा लैकै ❀ सो मालिनिको दियो गहाय ॥
उमिरि बीतिगइ नरवरगढ़में ❀ ऐसे कबहुं न मिलो इनाम ।
एक बटोही बगिया उतरो ❀ ताने तोड़ा दियो गहाय ॥
तुमहूं चली जाउ बगियालौं ❀ जातै करियो बात रिसाय ।
गुस्सा देखि तुमहिं राजीकरि ❀ तुरतै तोड़ा दिहै गहाय ॥
यह सुनि हिरिया तुरतै चलिभइ ❀ औ बगियामें पहुंची जाय ।
रूप देखिकै बघऊदनिको ❀ मालिनि बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
बोली मालिनि तब ऊदनिते ❀ अपनो कूच जाउ करवाय ।
दाख छुहारनकी बगिया है ❀ तुमने गर्द दई करवाय ॥
लैकै तोड़ा मोहरनवालो ❀ सो मालिनिको दियो गहाय ।
तबतौ मालिनि बोलन लागी ❀ औ ऊदनिते लगी बतान ॥
कौन देशके तुमवासी हौ ❀ आगे काह तुम्हारो नाम ।
ऊदनि बोले तब मालिनिते ❀ मालिनि सुनौ हमारी बात ॥
देश हमारा नगर महोबा ❀ जहंपर बसैं रजा परिमाल ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ ओ ऊदनि है नाम हमार ॥
यह सुनि हिरिया पूछन लागी ❀ ब्याहे कहां बनाफर राय ।
बोले ऊदनि तब मालिनिते ❀ नैनागढ़ में भयो विवाह ॥

सुनवां भौजी हमरी लागी ❋ हमरे वचन करौ परमान ।
बोली हिरिया तब ऊदनिते ❋ सुनवां बहिनी लगे हमार ॥
एक साथ खेली हम दोनों ❋ आगे पीछे भयो विवाह ।
हमरो ब्याह भयो नरवरगढ़ ❋ सुनवां पहुंची नगर महोब ॥
जैसे देवर हौ सुनवांके ❋ तैसेइ देवर लगौ हमार ।
मेख उखारि देउ बगियातै ❋ हमरे घरपर करो मुकाम ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि ठाकुर ❋ मनमें बहुत खुशी होइजाय ।
जोई रोगीके मन भावै ❋ सोई वैद बताई आय ॥
तौलों ढेबा दाखिल ह्वैगो ❋ ताते ऊदनि कह्यौ हवाल ।
बोले ढेबा तब ऊदनिते ❋ ऊदनि अक्किल गई तुम्हारि॥
घोड़ा खरीदन तुम आयेहौ ❋ जल्दी कूच देउ करवाय ।
बोले ऊदनि तब ढेबातै ❋ दादा मानौ बात हमारि ॥
रानी फुलवाको देखे बिन ❋ हम ना जैहैं साथ तुम्हार ।
इतना कहिकै ऊदनि चलिभये ❋ औ मालिनि घर पहुँचे जाय॥
तीनि महीना भये मालिनिघर ❋ एक दिन ऊदनि सोचन लाग ।
माया लाये जो महुबेते ❋ सो नरवरमें दई गँवाय ॥
फुलवा देखनको पाई नहीं ❋ ताको करिहौं कौन उपाय ।
सोचि समुझिकै बघऊदनिने ❋ नर ढेबाते कही सुनाय ॥
फुलवा रानी देखि न पाई ❋ सिगरी माया दई गँवाय ।
जतन बतावौ कछु दादा तुम ❋ जाते होवै काम हमार ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ हम यक जतन देयँ बतलाय ।
हार दुलरिया हिरिया गूँथै ❋ गूँधो जाय चौलरा हार ॥
इतनीसुनिकै ऊदनि चलि भये ❋ औ हिरियापै पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि तब हिरियाते ❋ अबहीं तुम बाजार लौं जाइ॥
रातिब लै आवौ घोड़नको ❋ हम हरवाको करैं तयार ।
चलिभे मालिनि तब बजारको ❋ ऊदनि लीन्हो हार उठाय ।
बिच बिच मोती ऊदनि गूँथे ❋ गूँधो तुरत चौलरा हार ।

फूल केतकी बिच बिच गूंथै ❀ सुन्दर हार करो तैयार ।
आई मालिन जब बजारते ❀ हरवा देखन कही सुनाय ॥
दुलरा हरवा हम नित गूंथैं ❀ तुमने गूंथो चौलरा हार ।
अब गूंथैं हम हरवाको ❀ तो जैबैको होय अन्यार ॥
बोले ऊदनि तब मालिनते ❀ तुम फुलवाते कहियो जाय ।
बहनौतिनि हमरी एक आई ❀ ताने गुथो चौलरा हार ॥
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभइ ❀ सतखण्डापर पहुंची जाय ।
फूलन तौलौ रनिफुलवाको ❀ औ पलंगापर दियो बिठाय॥
हरवा दीन्हों जब फुलवाको ❀ नैना अग्निज्वाल ह्वइजाय ।
बोली फुलवा तब मालिनिते ❀ तेरो डरिहौं पेटु फरवाय ॥
हार चौलरा कोने गूंथो ❀ करीं गांठी दियो बनाय ।
मोती गूँथे हैं हरवामें ❀ तुमको कहां मिले बतलाव ॥
मर्दको हाथ लगो हरवामें ❀ सांचो हाल देउ बतलाय ।
हाथ जोरिकै मालिनि बोली ❀ हमरी खता माफ ह्वइ जाय ॥
बहनौतिनि आई महुबेते ❀ ताने गुथो चौलरा हार ।
यह सुनि फुलवा बोलन लागी ❀ औ मालिनिते लगी बतान ॥
बहिनि हमारी तुम लगती हौ ❀ वह बहनौतिन भई हमारि ।
जल्दी लावो बहनौतिनको ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
इतनी सुनिकै हिरिया मालिनि ❀ मनमें गई सनाका खाय ।
मालिनि चलिभइ सतखण्डाते ❀ औ अपने घर पहुंची आय ॥
हाल सुनायो बघ ऊदनिको ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
फुलवा बुलायो बहनौतिनको ❀ सो अब केहिको जायं लिवाय॥
बोला ढेबा तब ऊदनिते ❀ अब तुम धरो जनानो भेष ।
देखा चाहो जो फुलवाको ❀ तौ तुम जल्द होउ तैयार ॥
मोहरैं पांच दई ऊदनिने ❀ ओ हिरियाते कही सुनाय ।
चुरियां बिछियां तुम लआवौ ❀ नथुनी लावौ त्यार कराय ॥
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभइ ❀ औ सुनार पै पहुंची जाय ।

नथुनी बनवाई जल्दीते ❋ चुरियां बिछियां लईं खरीदि॥
आई हिरिया बघ ऊदनिते ❋ लहंगा लुगरा लियो मंगाय।
लहंगा लुगरा ऊदनि पहिरो ❋ औ धरि लियो जनाना भेष॥
फुलवा रानीके देखिबेको ❋ ऊदनि डारी नाक छिदाय।
सब सिंगार कियो ऊदनिने ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
तुरत पालकी तब मंगवाई ❋ तापर चढ़े उदयसिंह राय।
चली पालकी बघ ऊदनिकी ❋ हिरियामालिनि संग लिवाय॥
पहुँचि पालकी गइ महलनमें ❋ औ खिरकीपै दई धराय।
उतरि पालकीते भुइँ आये ❋ घूँघट लियो हाथभरि काढ़ि॥
आगे आगे मालिनि चलिभइ ❋ पाछे चले उदयसिंह राय।
मालिनिचढ़िगइ सतखण्डापर ❋ संगै चढ़े उदयसिंह राय॥
बोली फुलवा तब हिरियाते ❋ ना बहनौतिनि लाईं लिवाय।
बोली मालिनि तब फुलवाते ❋ मैं तौ संगै लाईं लिवाय॥
समुहें ठाढ़ी बहनौतिनि है ❋ सो तुम देखो दृष्टि पसार।
हाथ भरेको घूँघट काढ़े ❋ दुलहिन बने उदयसिंह राय॥
ठाढ़ी देखो जब ऊदनिको ❋ तब फुलवाने कही सुनाय।
महल जनानो यह हमरो है ❋ घूँघट काहे लियो निकारि॥
यह सुनि मालिनि बोलन लागी ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात।
लाजशरमकी यहु गरुई हैं ❋ ताते घूँघट काढ़ो आय॥
इतनी सुनिकै रनि फुलवाने ❋ चन्दन पिढ़िया दई धराय।
आवौ बैठो यह पिढ़ियापर ❋ अपना हाल देउ बतलाय॥
मनमें ऊदनि सोचन लागे ❋ औ हिरियाते लगे बतान।
फुलवा बैठी हैं पलँगापै ❋ हम जो नीचे बैठे जाय॥
दागु लागि हैं रजपूतीमें ❋ औ क्षत्रीपन जाय नशाय।
बोली हिरिया तब फुलवाते ❋ हमरी खता माफ ह्वइजाय॥
नृप चन्देले हैं महुबेके ❋ जिनघर पारसको अधिकार।
उनकी बेटी एक चन्द्रावलि ❋ जाको रूप न बरनो जाय॥

ताकी मालिनि यह बहनोतिनि ❀ संगै खेलै पंसासारि ।
संगै बैठे इकपलँगा पर ❀ ताते पास लेउ बैठारि ॥
इतनी सुनिकै फुलवाहटि गइ ❀ औ सिरहाने बैठी जाय ।
पांयत खाली तुरतैकरि दो ❀ ऊदनि सोचि सोचि रहि जाय ॥
फुलवा बैठी सिरहानेमें ❀ औ हम पांयत बैठैं जाय ।
रणमें झूठी परै शिरोही ❀ बूड़े सात साखिको नाम ॥
छांड़ि आसरा जिंदगानीको ❀ अपनो मया मोह बिसराय ।
पांयत छांड़ि दियो ऊदनिने ❀ औ सिरहाने बैठे जाय ॥
फुलवा मनमें सोचन लागी ❀ है कछु कारण परत दिखाय ।
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ तुम बहनौतिनि लगौ हमारि ॥
हाल बताय देउ महुबेकी ❀ कैसे बसै चन्देले राय ।
मीठी बोली ऊदनि बोले ❀ ज्यों पिंजरामें बोलै लाल ॥
नगर महोबे बसैं चन्देले ❀ जिनघर पारसको अधिकार ।
आल्हा ऊदनि हैं जिनके घर ❀ जिनकी बेड़ि बहै तलवार ॥
सुखिया रैयति चन्देलेकी ❀ दुखिया कोउ न परै दिखाय ।
यह सुनि फुलवा पूछन लागी ❀ आल्हाको कहँ भयो विवाह ॥
कहां विवाहे ऊदनि ठाकुर ❀ सो तुम हमहि देउ बतलाय ।
इतनी सुनि ऊदनि मुसुक्याने ❀ औ फुलवाते कही सुनाय ॥
आल्हा ब्याहे रनि सुनवां संग ❀ नैनागढ़में भयो विवाह ।
ब्याह भयो नहिं कहुँ ऊदनिते ❀ क्वारे उदयसिंह बलवान ॥
बोली फुलवा फिरि ऊदनिते ❀ मर्दके ऐसे पांव तुम्हार ।
पिंडुरी तुम्हरी करीं करीं ❀ सो तुम सांची देउ बताय ॥
गाय भैंस मोरे बापके ❀ हम जंगलमें चराई गाय ।
तिनके पीछे हम दौरी हैं ❀ ताते पांय गये करांय ॥
इतनी सुनिकै फुलवा रानी ❀ सिगरी देह टटोलन लागि ।
कैसी कैसी बहनौतिनि हौ ❀ काहे देह गई करांय ॥
जौ तुम मालिनिहौं महुबेकी ❀ प्यारी बहु चन्द्रावलि केरि ।

पंसासारी तुम खेलो अब ❀ हमरे संग आजुकी राति ॥
फुलवा बोली तब मालिनिते ❀ बहनौतिनिको छोंड़े जाउ ।
भोर होत ही तुम यहँ ऐयो ❀ तब बहनौतिनि दिहैं पठाय ॥
इतनी सुनिकै हिरिया चलिभइ ❀ औ अपने घर पहुँची जाय ।
सुन्दर पलँगा रतन जड़ाऊ ❀ सो फुलवाने लियो मँगाय ॥
सो बिछवायो सतखंडापर ❀ फूल बिजनियां दई धराय ।
पंसासारी खेलन लागी ❀ आधीराति गई नगिचाय ॥
लियो बिजनियां फूलनवाली ❀ हांकन लगी फुलामति रानि ।
लगी बयरिया जब खेलनमें ❀ अंचरा उड़ो उदैसिंह क्यार ॥
तुरत निगाह परी फुलवाकी ❀ कमरमें देखि लई तलवारि ।
तब तौ फुलवा बोलन लागी ❀ हमने तुमहिलियोपहिचानि ॥
तुमहौ छलिया गढ़ महुबेके ❀ औ ऊदनि है नाम तुम्हार ।
झूठी कहिहौ जो हमते तुम ❀ तो बीरनको लिहौं बुलाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ देखो हमहिं कहां तुम जाय ।
पता बतावौ जो हमको तुम ❀ तौ हम मानहिं बात तुम्हार ॥
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ हमरे वचन करौ परमान ।
जब तुम गये रहौ माड़ौमें ❀ लीन्हों जाय बापको दाउँ ॥
तब हम देखा रहै तुमहिं तहँ ❀ जोगी रूप बनाफर राय ।
भेद बिजैसिनिते पूछो तुम ❀ औ लियो बापको दाउँ ॥
सो तुम यादि करो बातैं सब ❀ हमने तुमहिं लियो पहिचानि ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ तुमने भलो लियो पहिचानि ॥
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ अब तुम भांवरि लेउ डराय ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
चोरीचोरा ब्याह न करिहौं ❀ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय ।
लैहैं हम बरात महुबेते ❀ सातौ भांवरि लेयँ डराय ॥
बोली फुलवा तब ऊदनिते ❀ यहँ पर बीरनको है राज ।
कठिन मारु है नरवरगढ़की ❀ जानत तिनको सकल जहान ॥

काठको घोड़ा बान अजीता ❋ शेल्ह शनीचर है गढ़माहिं ।
जिनके मारे लश्कर विचलै ❋ कोउ शूर न आड़ै पांव ॥
धोखे रहियो ना माड़ौके ❋ जहँ लै लियो बापको दाउँ ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ रानी वचन करो परमान ॥
डंड बांधिकै मकरन्दीकी ❋ सातौ भांवरि लिहौं डराय ।
बिना वियाहे तुमहिं जो छांड़ौं ❋ तो म्वहिं खायँ कालिकामाय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ अब हम भांवरि लिहैं डराय ।
चारि पहर बीते अंटापर ❋ बोली तुरत फुलामति रानि ॥
भोजन जेइँ लेउ अंटापर ❋ अब हम करैं रसोई जाय ।
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❋ रानी सुनौ हमारी बात ॥
क्वांरे भोजन हम जेवैं ना ❋ औ ना धरैं सेजपर पांव ।
भोर भयेपै हिरिया मालिनि ❋ सतखंडापर पहुँची जाय ॥
बोली फुलवा तब मालिनिते ❋ अब तुम इनहिं घरै लै जाउ ।
भले मिलायो बहनौतिनिको ❋ यह सुनि हिरिया चली लिवाय ॥
उतरिकै दोनों सतखंडाते ❋ औ द्वारेपर पहुँचे आय ।
चढ़े पालकीपर जल्दीते ❋ पलकी चली उदैसिंह क्यार ॥
हिरिया मालिनि संगे चलिभइ ❋ मकरंद ठाकुर कही सुनाय ।
सांच बतावौ हिरिया मालिनि ❋ केहिकी बेटी लई चुराय ॥
संग पालकी हमरे करि देउ ❋ भोरहि देहैं घर पहुंचाय ।
हिरिया बोली तब मकरंदते ❋ यह बहनौतिनि लगै हमारि ॥
फुलवा बुलवायो देखनको ❋ सो हम फुलवै लाइ दिखाय ।
यहसुनिचलिभये मकरंदठाकुर ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
काम बिगारो तुमने मालिनि ❋ हम सब औते काम बनाय ।
डंड बांधिकै मकरंदीकी ❋ तुरतै लेते ब्याह कराय ॥
संग भेजि देतिउ मकरन्दके ❋ सब बनि जातो काम हमार ।
ऊदनि पहुँचे जब मालिनिघर ❋ तब ढेबाने कही सुनाय ॥

संग तुम्हारो हम ना करिहैं ❋ हम तो करैं मर्दको संग ।
सबते कहिहैं हम महुबेमें ❋ ऊदनि धरो जनानो भेष ॥
फुलवा रानीके देखिबेको ❋ ऊदनि डारी नाक छिदाय ।
यह सुनि ऊदनि कायल ह्वैगे ❋ अपनी काढ़ी तुरत कटार ॥
चर्चा करिहौ जौ महुबेमें ❋ अबहीं पेटु मारि मरिजाउँ ।
हँसिकै ढेबा बोलन लागे ❋ हमने परचौ लियौ तुम्हार ॥
हमने हंसी करी तुम्हरे संग ❋ तुमने मानि लई सतिभाउ ।
कछू न कहिहैं हम महुबेमें ❋ अब तुम हाल देउ बतलाय ॥
कैसी गुजरी सत खंडापर ❋ फुलवा कही कौन सी बात ।
हमहूं दिखिहैं रनिफुलवाको ❋ ताकौ कोई करौ उपाय ॥
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❋ हम तुम जोगी भेष बनाय ।
चलिकै देखैं रनिफुलवाको ❋ तौ सब काम सिद्धि ह्वैजाय ॥
इतनी सुनतै नर ढेबाने ❋ दोनों गुदरी लई निकारि ।
रामानन्दी तिलक लगायो ❋ देहीमें लइ भस्म रमाय ॥
सुघर मुद्रिका कानन पहिरी ❋ अपनी बांधि लई तलवारि ।
ऊपर पहिरी जोग गूदरी ❋ तुलसी माला लइ लटकाय ॥
लई बँसुरिया बघ ऊदनिने ❋ ढेबा खँजरी लई उठाय ।
दोनों जोगी डगरत चलिभये ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई दरवाजेपर ❋ बीच बजार पहूँचे जाय ।
राग रागिनी गावन लागे ❋ अपने बाजा दिये बजाय ॥
देखै रूप जौन जोगिनको ❋ तनकी सुरति देय बिसराय ।
नाचत गावत दोनों आये ❋ औ पनिघटपर पहुँचे जाय ॥
पानी भरतीं पनिहारिन जहँ ❋ सो जोगिन तन रही निहारि ।
एक पहर पनिघटपर ह्वैगो ❋ तिरिया मोहि मोहि रहिजायँ॥
बांदी सोचै चम्पावाली ❋ कह रानीते कहिहौं जाय ।
भरिकै गागरि बांदी चलिभइ ❋ औ महलनमें पहुँची जाय ॥

आवत देखो जब बांदीको ❀ तब रानीने कह्यो रिसाय ।
देर लगाई क्यों पनघट पर ❀ बांदी डरिहौं पेटु फराय ॥
हाथ जोरिकै बांदी बोली ❀ हमरी खता माफ ह्वइजाय ।
बालक आये दुइ जोगिनके ❀ शोभा कछू कही न जाय ॥
रूप जोगियनके देखेते ❀ तनकी सुरत जाय बिसराय ।
हुक्म होय जो रानी हमको ❀ अबहीं महलन लायँ लिवाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी ❀ अबहीं महलन लावौ जाय ।
बांदी चलिभइ तब जल्दीते ❀ औ जोगिनको चली लिवाय ॥
गावत गावत जोगी आये ❀ औ डचोढ़ीमें पहुँचे आय ।
कान आवाज परी राजाके ❀ तब जोगिनको लियो बुलाय ॥
जोगी आये जब समुहेपर ❀ बायें हाथते करी सलाम ।
राजा बोले तब गुस्सा ह्वइ ❀ इन जोगिनको देउ निकारि ॥
बायें हाथते करी बन्दगी ❀ हमरो करो आय अपमान ।
इतनी सुनिकै ऊदनि तड़पे ❀ औ राजाते लगे बतान ॥
जौन हाथसे जपैं सुमिरनी ❀ नित उठि लेयँ रामको नाम ।
तौन हाथते करी बन्दगी ❀ हमरो जोग भंग ह्वइ जाय ॥
यह सुनि राजा बहुत खुशीभै ❀ औ जोगिनते कही सुनाय ।
गुस्सा दूरि करौ अपनी तुम ❀ जोगिन सांचो नाम तुम्हार ॥
तान सुनाय देउ अपनी तुम ❀ औ तुम नाच देउ दिखलाय ।
इतनी सुनिकै बघ ऊदनिने ❀ अपनी बँसुरी दई बजाय ॥
बजी खंझरी नर ढेबाकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
राग रागिनी गावन लागे ❀ नाचने लगे उदयसिंराय ॥
जितने क्षत्री बँगला बैठे ❀ ते सब मोहि मोहि रहि जायँ ।
डारि मोहिनी दइ ऊदनिने ❀ नाहीं मसा तनक मन्नाय ॥
नचै कंचनी वा बँगलामें ❀ तिनको नाच बन्द ह्वइजाय ।
तान मरोरा ऊदनि गावैं ❀ पक्के महल उठे झन्नाय ॥

बहुत खुशी ह्वइ राजा बोले ❁ जोगिउ आजु करौ बिसराम ।
करै रसोई हमरो ब्राह्मण ❁ सो तुम जेंयलेउ जेंवनार ॥
बोले ऊदनि तब राजाते ❁ कहँ महराज तुम्हारो ज्ञान ।
करैं रसोई ब्राह्मण हमारी ❁ जो लगिजाय हाथमें दाग़ु ॥
ब्राह्मणदोष लगै हमको तब ❁ हमरो जोग भंग ह्वइ जाय ।
क्वारे भोजन हम जेंवत हैं ❁ कन्या करै रसोई त्यार ॥
तौ हम भोग लगाय महलमें ❁ अपने चले रास्ता जायं ।
बोले राजा तब मकरंदते ❁ फुलवा करै रसोई त्यार ॥
हुक्म सुनायो तब मकरंदने ❁ फुलवा करन रसोई लागि ।
चौका बैठे दोनों जोगी ❁ फुलवा भोजन धरे अगार ॥
फुलवै देखो जब ढेबाने ❁ तब ऊदनिते कही सुनाय ।
याही फुलवाके कारण तुम ❁ अपनी डारी नाक छिदाय ॥
महा सुन्दरी यह फुलवा है ❁ मानहुँ इन्द्र अप्सरा आय ।
भरिकै गडुआ गंगाजलते ❁ सो जोगिनपै दियो धराय ॥
करी अधीनी उन जोगिनते ❁ अब तुम जेंइ लेउ जेंउनार ।
ऊदनि सोचे अपने मनमें ❁ औ मनमें यह कियो विचार॥
क्वांरे भोजन जो हम करिहैं ❁ तौ सब क्षत्री धर्म नशाय ।
ऊदनि गिरि गये तब चौकामें ❁ आंखिन पुतरी लई चढ़ाय ॥
स्वांस साधिलइ बघ ऊदनिने ❁ लोटैं पोटैं औ रहिजायं ।
देखि हाल यह चम्पारानी ❁ नर ढेबाते लगी बतान ॥
रूप देखिकै मेरी बेटीको ❁ जोगी गिरिगा खाय पछार ।
अबहिं बुलैहौं मकरन्दीको ❁ तुरतै पेटु दिहैं फरवाय ॥
बोले ढेबा तब रानीते ❁ रानी बोले बात सम्हारि ।
पकरि चुरैलनलौ जोगीको ❁ ताते गिरो भरहरा खाय ॥
भरी चुरैलै हैं तुम्हरे घर ❁ तिन जोगीको पकरो आय ।
छोटो जोगी जौ मरिजैहै ❁ तुरतै तुमको दिहौं सराप ॥

ऐसे वैसे हम जोगी नहिं ❀ जो कछुबात कहे डरिजायँ ॥
यह सुनि डरिगइ चंपारानी ❀ नाउत वैद लिये बुलवाय ।
अपनी अपनी करि हारे सब ❀ कोऊ जतन पेश ना जाय ॥
चंपारानी रोवन लागी ❀ तब फुलवाने कही सुनाय ।
कौन बातको माता रोवौ ❀ सो तुम हमहि देउ बतलाय ॥
रानी बोली तब फुलवाते ❀ हमते कछू कही ना जाय ।
कौर उठावत जोगी गिरिगौ ❀ सिगरो कारज गयो नशाय ॥
महलन जोगी जौ मरिजैहैं ❀ तौ जग ह्वैहैं हँसी हमारि ।
इतनी सुनिकै फुलवा बोली ❀ हम जोगीको दिहैं जिआय ॥
फुलवा आई बघ ऊदनि पै ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
काहे मक्कर कियो महलनमें ❀ जो सुनि पैहैं भाय हमार ॥
बांधि पठैहैं तुमहिं दहकमें ❀ औ सब जैहैं काम नशाय ।
अब तुम लौटि जाउ महुबेको ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
साजि बरात लाय महुबेते ❀ सातौ भांवरि लेउ डराय ।
यह सुनि ऊदनि उठिठाढ़े भये ❀ औ चलिभये उदयसिंहराय ॥
संगै ढेबा बघऊदनि दोउ ❀ फाटक निकरि गयो वा पार ।
तुरतै पहुंचि गये मालिनि घर ❀ जोगिन गुदरी दई उतारि ॥
रानी पूछै तब फुलवाते ❀ जोगी गिरचो कौनसे हेत ।
बोली फुलवा तब रानीते ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥
कोऊ सुहागिन ऊपर झांकी ❀ छाया परी थारपर जाय ।
ताते जोगी तुरतै गिरगौ ❀ राखी आजु लाज भगवान ॥
हियांकि बातैं तौ हियँ छांड़ौ ❀ अब ऊदनिको सुनो हवाल ।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❀ अबकछु जतन देउ बतलाय ॥
माया लाये जो महुबेते ❀ सो नरवरमें दई गँवाय ।
ढेबा बोले तब ऊदनिते ❀ तुम सुनि लेउ उदयसिंहराय ॥
पागल बनिकै चलौ महोबे ❀ हम सब लैहैं काम बनाय ।
हम समुझैहैं परिमालैको ❀ औ आल्हाको दौं समुझाय ॥

कठिन चुरैलैं गढ़ नरवरकी ❋ सो ऊदनिके गई समाय ।
हिकमत बहुत करी नरवरमें ❋ औ सब माया दई लुटाय ॥
यह मन भाई बघऊदनिके ❋ बहुतक हरदी लई बटाय ।
सो लगवाय लई देहीमें ❋ औ महुबेको कियो पयान ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ सागर तीर पहूंचे जाय ।
कीरति सागर निकट बागमें ❋ अपनो तम्बू दियो तनाय ॥
पलंगा बिछिगा बघऊदनिका ❋ तापर परे उदयसिंहराय ।
चलिभौ ढेबा तब तम्बूते ❋ औ राजापै पहुंचो जाय ॥
करी बन्दगी परिमालैको ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
कैसे घोड़ा तुम लै आये ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोलो ढेबा तब राजाते ❋ घोड़ा सागर दिये बंधाय ।
घोड़ा सुन्दर हम लाये हैं ❋ चलिकै देखि लेउ महराज ॥
तब मँगवाई तुरत सवारी ❋ तापर चढ़े रजापरिमाल ।
जहंपर तम्बू था ऊदनिको ❋ पहुंचे तहां चन्देलेराय ॥
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
कैसे जरद देहो भइ यह ❋ ढेबा हमहिं देउ बतलाय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ राजा सुनौ हमारी बात ।
कठिन चुरैलैं गढ़ नरवरकी ❋ सो देहीमें गई समाय ॥
नाउत वैद सबहि बुलवायो ❋ सिगरी माया दई लुटाय ।
देखि आसरा न जीनेको ❋ तब महुबेमें पहुँचो जाय ॥
इतनी बात सुनी ढेबाकी ❋ राजा बहुत गये घबराय ।
सुनी खबरिया जब आल्हाने ❋ सोऊ तहां पहूँचो जाय ॥
बोले आल्हा चन्देलेते ❋ पठयो तुमहिं लहुरवा भाय ।
छोटा भैया जौ मरिजैहैं ❋ महुबे आगी दिहौं लगाय ॥
खबरि पहूंची जब देवैको ❋ माता विलखि विलखि रहिजाय ।
पूछै सुनवां तब देवैते ❋ काहें रोवौ सासु हमारि ॥
हाल बतायो तब देवैने ❋ तब सुनवांने कही सुनाय ।

तुम बुलवावौ हियँ ऊदनिको ❀ अबहिं चुरैलैं दिहैं उतारि ॥
रुपनै बुलवायो देवैने ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
रुपना चलिभौ दशपुरवाते ❀ औ सागरपर पहुँचो जाय ॥
बोलो रुपना परिमालते ❀ दादा सुनो हमारी बात ।
देवै बुलवायो ऊदनिको ❀ भेजो तुम हमारे साथ ॥
तुरतै पालकी तहँ धरवाई ❀ तापर ऊदनिको पौढ़ाय ।
चली पालकी बघऊदनिकी ❀ दशपुरवामें पहुँची जाय ॥
रानी सुनवांके द्वारे पर ❀ तुरत पालकी धरी उतारि ।
उतरी सुनवां सतखण्डासे ❀ औ पालकीपै पहुँची जाय ॥
हाथ पकरिकै उदयसिंहको ❀ सतखण्डापर गई लिवाय ।
लिये बिजनियां करफूलनकी ❀ सो ऊदनिपर करै बयारि ॥
सुनवां रानी पूछन लागी ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
रानी फुलवा तुम देखी कहुँ ❀ ताके मक्कर किये बनाय ॥
तुरतै ऊदनिने हँसि दीन्हों ❀ औ सुनवांते कही सुनाय ।
कैसे जानि गइउ भौजी तुम ❀ फुलवा मिली हमहिं उहँ जाय ॥
गंगा उठवाई हमते त्यहि ❀ सातों भांवरि लेउ डराय ।
यह सुनि सुनवां बोलन लागी ❀ को नरपति घर करै विवाह ॥
क्यहिकी छाती है बज्जरकी ❀ जो निज प्रान देनको जाय ।
काठको घोड़ा बान अजीता ❀ जिन घर शैलशनीचर आय ॥
हिरिया मालिनि है जालिम तहँ ❀ अपनी जादू देति चलाय ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❀ भौजी हम मनिबेके नाहिं ॥
ब्याह न ह्वइहै जौ नरवरमें ❀ तौ मैं पेटु मारि मरि जाउँ ।
सुनवां बोली तब ऊदनिते ❀ देवर धीर धरो मनमाहिं ॥
सोवत आल्हा रहैं जहांपर ❀ सुनवां तहां पहुँची जाय ।
चंदन छिरकि दियो आल्हापर ❀ सुनवां ठाढ़ी करै बयारि ॥
आल्हा जागि परे तुरते तब ❀ औ सुनवांको लियो बिठाय ।

बोले आल्हा तब सुनवांते ❋ काहे हमहिं जगायो आय ॥
कौन काम तुम्हरो अटको है ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
हाथ जोरिके सुनवां बोली ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
हमने बुलवायो ऊदनिको ❋ औ सब जानि लियो अहवाल ।
फुलवा बेटी जो नरपतिकी ❋ सो ऊदनिकी परी निगाह ॥
ब्याह करनको कहि आये हैं ❋ तुमते करौ बहाना आय ।
ब्याह रचौ अब तुम भैयाको ❋ इतनी मानो बात हमारि ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ हमते यह ह्वइबेकी नाहिं ।
फौज कटावैको नरवरमें ❋ को नरपतिघर करै विवाह ॥
कौन दुसरिहा मकरन्दाको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बिनती करिकै सुनवां बोली ❋ औ आल्हाते लगी बतान ॥
न्यौता भेजो नैनागढ़में ❋ तुरतै आवैं भाइ हमार ।
न्यौता पठवौ पथरीगढ़को ❋ औ दिल्लीको देउ पठाय ॥
न्यौता भेजि देउ बौरीगढ़ ❋ औ कनौजको देउ पठाय ।
खबरि भेजि देउ गढ़ सिरसाको ❋ जो चढ़ि आवैं बीर मलिखान ॥
बोले आल्हा तब सुनवांते ❋ यहु हमरे मन नाहिं समाय ।
तब तो सुनवां बोलन लागी ❋ तुम धरि लेउ जनानो भेष ॥
चुरियां बिछिया स्वामी पहिरो ❋ औ सब छोरि धरो हथियार ।
जाय विराजौ तुम पलँगापर ❋ हम ऊदनिको लैहैं ब्याहि ॥
जैसे पानमें चूना लागै ❋ डारे खैर लाल ह्वइजाय ।
तैसे बात लगी आल्हाके ❋ औ सुनवांते कही सुनाय ॥
जो कछु रानी हमते कहिहौ ❋ सो सब मनिहौं बात तुम्हारि ।
बोली सुनवां तब आल्हाते ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
न्यौता पठवौ तुम राजनको ❋ औ मलिखेको लेउ बुलाय ।
ब्याह रचावौ तुम ऊदनिको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
सुनतै चलिभे तुनि आल्हा तब ❋ औ डयोढ़ीमें पहुँचे जाय ।

रूपना बारीको बुलवायो ❋ औ सिरसाको दियो पठाय ।
संगै लावौ तुम मलिखेको ❋ यह सुनि रूपना कियो पयान ॥
जाय पहूँचो गढ़ सिरसामें ❋ औ मलिखेपै पहुँचो जाय ।
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ आल्हाको कहो सँदेश ॥
सुनते घोड़ीको मंगवायो ❋ औ चढ़िचले बीर मलिखान ।
मलिखे आये दसपुरवामें ❋ औ आल्हापै पहुँचे आय ॥
करी बन्दगी नर मलिखेने ❋ औ आल्हाते लगे बतान ।
काहे दादा तुम बुलवायो ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
आल्हा बोले तब मलिखेते ❋ भैया कछू कही ना जाय ।
घोड़ा खरीदन गये काबुलको ❋ ऊदनि भेजि दियो परिमाल ॥
पहुँचे ऊदनि जब नरवरगढ़ ❋ जहंपर नरपतिको है राज ।
फुलवा बेटी जो नरपतिकी ❋ सो ऊदनिके परी निगाह ॥
ब्याहकरनको यह कहि आये ❋ सो कैसे अब होय विवाह ।
कौनसो क्षत्री है दुनियामें ❋ जो नरवरगढ़ करै विवाह ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ दादा धीर धरौ मनमाहिं ।
मोहरा मरिहैं हम नरपतिको ❋ औ ऊदनिको लैहैं ब्याहि ॥
ऊदनि ब्याहनको रहिहैं ना ❋ यहु दिन कहिबेको रहिजाय ।
न्योता पठै देउ राजनको ❋ औ बरातको करो तयार ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❋ इक हरकारा करो तयार ।
तुरतै भेजि दियो झुन्नागढ़ ❋ यक बौरीगढ़ दियो पठाय ॥
न्यौता भेज्यो गढ़ दिल्लीको ❋ औ नैनागढ़ दियो पठाय ।
जितने ब्योहारी आल्हाके ❋ सबको न्यौता दियो पठाय ॥
यक हरकारा गयो सिरसागढ़ ❋ औ सुलिखेते कह्यो हवाल ।
करी तयारी तब सुलिखेने ❋ मन्ना गूजर लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब लश्करमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार ॥

घोड़ा सब्जाको सजवायो ❋ मन्ना गूजर भयो सवार ।
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर सुलिखान ॥
लश्कर चलिभो गढ़सिरसाते ❋ औ महुबेमें पहुंचो जाय ।
डेरा परिगे मदन तालपर ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ॥
सूरज आये झुन्नागढ़ते ❋ सागर डेरा दिये लगाय ।
आये यादवा बौरीवाले ❋ औ सागरपर करो मुकाम ॥
लश्कर आयो नैनागढ़को ❋ परो बैरागि तालपर जाय ।
आये राजा ब्योहारी सब ❋ जहं तहं डेरा दिये लगाय ॥
बोले मलिखे तुनिआल्हाते ❋ अपनो पंडित लेउ बुलाय ।
साइति पूँछि लेउ जल्दीते ❋ औ बरातको करो तैयार ॥
भयो बोलौवा चूड़ामणिको ❋ सो ढ्योढ़ीमें पहुँचे आय ।
साइति देखत पंडित बोले ❋ अबही तेल लेउ चढ़वाय ॥
आंगन लिपवायो जल्दीते ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
कलश सुबरनको धरवायो ❋ तापर दीपक दियो धराय ॥
भयो बोलावा बघ ऊदनिको ❋ औ पाटा पर दियो बिठाय ।
पंडित वेद उचारन लागे ❋ गौरी गणपति दियो पुजाय ॥
सखिया मंगल गावन लागीं ❋ चढ़ि गयो तेल लहुरवाक्यार ।
कंकन बँधिगयो बघऊदनिके ❋ औ सब नेग दिये करवाय ॥
नीमा जामा ऊदनि पहिरे ❋ शिरपर मौर धरोतहं जाय ।
सेरवा लेके चन्द्रावलि तब ❋ राई लोन उतारन लागि ॥
आई पालकी दरवाजे पर ❋ तापर चढ़े उदयसिंह राय ।
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारौ नेगी संगे जाय ॥
चली पालकी बघऊदनिकी ❋ औ कुअँटापर पहुँची जाय ।
जिनको ब्याही चन्द्रावलिथी ❋ तिनको इन्द्रसेन अस नाम ॥
गोद उठायो उन ऊदनिको ❋ औ कुअँटापर राखो जायं ।
रानी मल्हना परिमालेकी ❋ कुअँटा पांव दिये लटकाय ॥

पहुँचे ऊदनि जब कुँवटा पर ❀ औ धरि बहियां लियो उठाय।
प्राणदान माता दीन्हें हम ❀ माता वचन करो परमान॥
मल्हना रानी बोलन लागी ❀ जुगजुग जियो लड़ैते लाल।
चलिभे ऊदनि तब कुवटाते ❀ औ पलकीमें बैठे जाय॥
चली पालकी बघऊदनिकी ❀ औ लश्करमें पहुँची जाय।
सजी बरायत तब महुबेते ❀ शोभा एक कही ना जाय॥
लश्कर पहुँचि गये मलखे तब ❀ औ क्षत्रिनते लगे बतान।
जिनहिं पियारी घर तिरिया हैं ❀ सो सब तलब लेउ घर जाउ॥
जिनहिं पियारी परम भगौती ❀ सो बरातको होउ तयार।
शूर सिपाही इज्जतिवाले ❀ दहिनी धरैं मूच्छपर हाथ॥
पांव पछारी हम धरिहैं ना ❀ चाहे धजी धजी उड़िजायँ।
इतनी कहिके नर मलिखेते ❀ लश्कर डंका दियो बजाय॥
बजो नगारा गढ़ महुबेमें ❀ सिगरी फौज भई तैयार।
अपने अपने सब घोड़नपर ❀ क्षत्री फांदि भये असवार॥
हाथि चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ कोऊ गजरथ भये सवार।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❀ क्षत्री सबै भये सवार॥
हाथी पचशावद मँगवायो ❀ तापर आल्हा भये सवार।
घोड़ी कबुतरी पर मलिखे हैं ❀ घोड़ी हिरोंजिन पर सुलखान॥
मन्ना गूजर है सब्जापर ❀ ढेबा मनुरथापर असवार।
ताल्हन सैयद बनरसवाले ❀ घोड़ी सिंहनिपर असवार॥
जितने राजा न्योते आये ❀ सो सब सजिकै भये तयार।
चली बरायत गढ़ महुबेते ❀ नरवरगढ़की पकरी राह॥
आठ रोजकी मंजिल करिके ❀ नरवर आठ कोस रहिजाय।
डेरा डारि दिये धूरेपर ❀ अपने तम्बू दिये लगाय॥
सब्ज बनातनके तम्बू हैं ❀ सब्जी रही फौजमें छाय।
फेंटैं छुटिगईं रजपूतनकी ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि॥
जीन उतारि दियो घोड़नकी ❀ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार।

बारह कोशीके गिरदामें ❀ लश्कर परो महोबे क्यार ॥
चढ़ी रसुइँयां उमरावनकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
कहूँ गवैया गान सुनावैं ❀ कहुँ २ नाच कंचनिन क्यार ॥
राति बसेरो कर बरातको ❀ भोरहिं उठे बीर मलिखान ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ अबहीं साइति देउ बताय ॥
बोले पंडित नर मलिखेते ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
मलिखे बुलवायो रूपनाको ❀ औ रूपनाते कही सुनाय ॥
ऐपनवारी तुम लै जावो ❀ औ बरातको कह्यो हवाल ।
बोल्यो रूपना तब मलिखेते ❀ हम ना शीश कटैहैं जाय ॥
धोखे ना रहियो नैनागढ़के ❀ जहँ आल्हाको कियो विवाह ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ रूपना कहां तुम्हारो ध्यान ॥
ऊदनि ब्याहनको रहिहै ना ❀ यह दिन कहिबेको रहिजाय ।
मुँहते हीनी तुम बोलत हो ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
यह सुनि रूपना बोलन लागो ❀ पाग बैंजनी देउ मँगाय ।
घोड़ा बेंदुलाको मंगवावो ❀ ऊदनि केरि ढाल तलवारि ॥
ऐपनवारी हम लै जैहैं ❀ सब सामान देउ मँगवाय ।
इतनी सुनते नर मलिखेने ❀ घोड़ा बेंदुला दियो सजवाय ॥
पाग बैंजनी ऊदनिवाला ❀ सो रूपनाको दई गहाय ।
भाला दीन्हों नागदौनिको ❀ औ दे दई ढाल तलवारि ॥
ऐपनवारी लइ रूपनाने ❀ औ घोड़ेपर भयो सवार ।
चलि भयो रूपना तब लश्करते ❀ औ नरवरगढ़ पहुँचो जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजेपर ❀ दरवानीते कही सुनाय ।
कौन कामको तुम आये हौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❀ दरवानीते लगो बतान ।
हम तौ आये हैं महुते ❀ जहँपर बसत रजापरिमाल ॥
ब्याहन आये हम ऊदनिको ❀ रूपनवारी नाम हमार ।

ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ राजै खबरि सुनावौ जाय ॥
नेग हमारो जल्दी भेजैं ❀ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ।
चारि घरी मारि चलै शिरोही ❀ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
इतनी सुनिकै दरवानीने ❀ राजै खबरि सुनाई जाय ।
बारी आयो है महुबेते ❀ ऐपनवारी लीन्हे ठाढ़ ॥
नेग आपनो वह मांगत है ❀ द्वारे कठिन चलै तलवारि ।
सुनी हाल जब यह नरपतिने ❀ तब मकरंदको लियो बुलाय ॥
बांधिकै लावौ तुम बारीको ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
इतनी सुनिकै मकरंद चलिभै ❀ तौलौं रुपना पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तब नरपतिका ❀ ऐपनवारी दई चलाय ।
लगी कचहरी तहँ नरपतिकी ❀ क्षत्री बैठे आठ हजार ॥
राजा बिजयसिंह सिलहटको ❀ तासे नरपति कही सुनाय ।
मारौ मारौ या बारीको ❀ विजयसिंह लइ सांग उठाय ॥
चोट चलाई जो रुपनापर ❀ सो रुपनाने लई बचाय ।
भाला लेकै तब रुपनाने ❀ बिजयसिंहपर दियो चलाय ॥
लागो भाला विजयसिंहके ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।
हल्ला कर दियो सब क्षत्रीने ❀ औ रुपनाको घेरो जाय ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीका नाम ।
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❀ औ क्षत्रिनमें गयो समाय ॥
गड़बड़ करि दियो तहँ रुपनाने ❀ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
ज्वान पांचसौ रुपना मारे ❀ रुपना रक्तबरन ह्वइजाय ॥
करी बन्दगी तब नरपतिको ❀ ऐपनवारी लई उठाय ।
ऐंड़ लगाय दई घोड़ाके ❀ फाटक निकरि गयो वापार ॥
आवत देखो जब रुपनाको ❀ हँसिकै कही बीर मलिखान ।
कैसे गुजरी नरवरगढ़में ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना तब मलिखेते ❀ हमते कछू कही ना जाय ।
कठिन मारु है नरवरगढ़की ❀ द्वारे खूब चली तलवारि ॥

देवि शारदा दाहिन ह्वैगइ ❀ हम करि आये काम तुम्हार ।
हियांकी बातैं तौ हियँ छाड़ो ❀ अब नरपतिको सुनौ हवाल ॥
बोले नरपति मकरंदीते ❀ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ।
जिन घर नेगी ऐसे जालिम ❀ तिन क्षत्रिनके कौन हवाल ॥
ब्याह मुनासिब नहिं महुबेमें ❀ ओछी जाति बनाफरराय ।
यह सुनि मकरंद बोलन लागे ❀ दादा धीर धरौ मनमाहिं ॥
मारि भगैहौं मैं आल्हाको ❀ लश्कर कटा दिहौं करवाय ।
इतनी कहिकै मकरंद चलिभै ❀ औ लश्करमें पहुँचो जाय ॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❀ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजो नगारा नरवरगढ़में ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
घोड़ा हरियल त्यार करायो ❀ मकरंद तापै भयो सवार ।
मारू डंकाके बाजतखन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो आगेको दई जुताय ।
चारि घरीके तब अरसामें ❀ लश्कर खेत पहूँचो जाय ॥
इक हरकाराको बुलवाया ❀ औ आल्हापै दियो पठाय ।
सुनी खबरि जब नुनिआल्हाने ❀ तब मलिखेको लियो बुलाय ॥
खबरि सुनतही नरमलिखेने ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ।
मारू डंकाके बाजतखन ❀ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
जितने राजा आये बराती ❀ सबने बांधि लिये हथियार ।
अपनी अपनी असवारिनपर ❀ सिगरे क्षत्री भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ मारू डंका दियो बजाय ।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❀ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
घोड़ी बढ़ाय दई मलिखेने ❀ औ मकरंदपै पहुँचे जाय ।
आगे बढ़िकै मकरंद बोले ❀ औ मलिखेते लगे बतान ॥
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❀ अपने हाल देउ बतलाय ।

बोले मलिखे तब मकरंदते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
नगर महोबेते आये हम ❀ जहंपर बसत रजापरिमाल ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❀ औ मलिखे है नाम हमार ॥
ब्याहन आये हम ऊदनिको ❀ राजै खबरि देउ करवाय ।
सुनिकै बातैं नर मलिखेकी ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
बोले मकरंद तब मलिखेते ❀ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ।
धोखे न रहियो नैनागढ़के ❀ जहँ आल्हाको कियो विवाह ॥
मारि भगैहौं मैं महुबेलौं ❀ सबको शीश लिहौं कटवाय ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ जानो नाहीं हाल तुम्हार ॥
जेहिकी बिटियां नीकी देखैं ❀ जोरा जोरी करैं विवाह ।
हमते दुसरी जो कोउ राखैं ❀ मारैं राज भंग ह्वइ जाय ॥
फौज अपनी क्यों कटवैहो ❀ सातो भांवरि देउ डराय ।
कही हमारी मकरंद मानौ ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै मकरंद जरिगै ❀ औ यह हुक्म दियो करवाय ।
बत्ती दैदेउ मेरि तोपनमें ❀ इन पाजिनको देउँ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❀ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
धुआं उड़ानो आसमानलौं ❀ सविता रहे धुन्धमें छाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❀ सर सर परी तीरकी मारु ॥
सननन सननन गोली छूटैं ❀ कहकह करैं अगिनियां बान ।
गोला लागै जेहि हाथीके ❀ मानो चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै जौन ऊँटके ❀ सो गिरि परै चकत्ता खाय ।
गोला लागै जेहि घोड़ाके ❀ चारो सुम्म गर्द ह्वइ जायँ ॥
गोला लागै जेहि क्षत्रीके ❀ सो गिरि परै भरहरा खाय ।
बंबको गोला जिनके लागै ❀ तिनके हाड़मांस छुटि जायँ ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❀ सो लत्ता अस जाय उड़ाय ।
बानको डंडा जिनके लागै ❀ तिनके दुइ खण्डा ह्वइ जाय ॥

चारि घरीभरि गोला बरसो ❀ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ।
तोपैं धँधैं लाली ह्वै गईं ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जाय ॥
तोपकी लड़ाई पीछे परिगइ ❀ लंबे बंद करैं हथियार ।
दोनों फौजैं संगम ह्वै गईं ❀ रहि गयो डेढ़ कदम मैदान ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ।
खटखटखटखट तेगा बाजैं ❀ बोलैं छपक छपक तलवारि ॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुवाज्वान ।
चलैं जुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायति क्यार ॥
उठै कबंध बीर रण खेलै ❀ घैहा उठै कराहि कराहि ।
चारौ बयरियनका मसका है ❀ कौंधा चाल चलै तलवारि ॥
घैहा डारे रणमें लोटैं ❀ जिनके प्यास प्यास रटिलागि ।
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ जिनके मारु मारु रटिलागि ॥
हौदाके संग हौदा मिलि गयो ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
पैदलके संग पैदल अभिरे ❀ औ असवारनते असवार ॥
हाहाकारी रणमें बीतै ❀ कोऊ रंधा भात ना खाय ।
चहला उठिगे हैं चर्बिनके ❀ औ लोथिनके लगे पहार ॥
ढालैं डारी जो लोहूमें ❀ मानौ कछुआसी उतराय ।
पगिया डारी जो लोहूमें ❀ जनु नदीमें परो सिवार ॥
परी शिरोही हैं क्षत्रिनकी ❀ मानौ नागिनिसी मन्नाय ।
कोऊ रोवत है तिरियाको ❀ अबही लायें गौनवां चार ॥
कोऊ रोवै घर लरिकनको ❀ कोऊ पुरिखनको चिल्लाय ।
चारि घरी भर चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ औ रणदुलहा चलै बराय ।
भांग उतरि गइ भंगेड़िनकी ❀ गांजावाले चले पराय ॥
झुके अफीमी रणके भीतर ❀ पलकैं उघरैं औ रहिजायँ ।
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❀ तिन नारेकी पकरी राह ॥
कोउ कोउ क्षत्री करैं बहाना ❀ रणमें डारि देयँ हथियार ।

माटी लैकै सब देहीमें ❀ डरिकै लेयँ बिभूति रमाय ॥
हमैं न मारौ हमैं न मारौ ❀ हम भिक्षाके मांगनहार ।
हम बैरागी हैं काशीके ❀ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
भिक्षा मांगन हम आये थे ❀ तौलौं चलन लगी तलवारि ।
कोउ कोउ क्षत्री रोजगारीबनि ❀ ढालैं लेयँ पीठपर लादि ॥
हमहिंनमरियोहमहिंनमरियो ❀ हम ढालनके बेंचनहार ।
नीचे क्षत्री ऊपर मुरदा ❀ रणमें लेटि रहैं चुप साधि ॥
हाथी बिचलैं रणके भीतर ❀ उन क्षत्रिनपर धरि देयँ पांव ।
बिनही मारे वे मरि जावैं ❀ धोखे माहिं मौत ह्वैजाय ॥
भगे सिपाही नरवरगढ़के ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
घोड़ा बढ़ायो मकरंदीने ❀ औ मलिखेपर पहुँचो जाय ॥
बोले मकरंद नर मलिखेते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
दश दश रुपयाके नौकर हैं ❀ काहे डरिहौ शीश कटाय ॥
हम तुम खेलैं समर खेतमें ❀ दुइमा एकु कुरी रहिजाय ।
इतनी सुनतै नरमलिखेने ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
बोले मलिखे मकरंदीते ❀ पहिली चोट करौ तुम आय ।
घोड़ा बढ़ायो मकरंदीने ❀ औ यह कही सुनौ मलिखान ॥
सम्हारिकै बैठौ तुम घोड़ीपर ❀ तुम्हरो काल रहो नियराय ।
इतनी सुनतै घुण्डी खोली ❀ छाती रोपि दई मलिखान ॥
तीर चलायो मकरँदीने ❀ दहिने निकरि गये वापार ।
बचिगयोलरिका बच्छराजको ❀ दहिने भई शारदा माय ॥
बोले मकरंद नरमलिखेसे ❀ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ।
इतनी बात सुनी मकरंदते ❀ तब हँसि कही बीरमलिखान ॥
चोट आपनी औरौ करिलेउ ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ।
गुस्सा ह्वैकै तब मकरंदने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब सम्मुहेपर ❀ मलिखे दीन्ही ढाल अड़ाय ।
तीनि शिरोही मकरंद मारी ❀ उनके अंग न आयो घाव ॥

घोड़ी बढ़ाई नरमलिखेने ❀ मकरन्दीते कही सुनाय ।
सम्हरो मकरन्द अब घोड़ापर ❀ तुमपर आय गयो मलिखान ॥
गुर्ज उठायो नरमलिखेने ❀ सो मकरन्दपर दियो चलाय ।
लगो चपेटा जब घोड़ाके ❀ मकरन्द घोड़ा गये भगाय ॥
पहुँचे मकरन्द रंगमहलमें ❀ बान अजीता लियो उठाय ।
काठको घोड़ा शेलशनीचर ❀ सो मकरन्दने लियो उठाय ॥
जायके पहुँचे तब हिरियाघर ❀ औ हिरियाते कही सुनाय ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❀ लश्कर कटा दई करवाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❀ अब गाढ़में आवौ काम ।
लज्जा राखि लेउ हमरी तुम ❀ अबहीं चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै मालिनिचलिभइ ❀ अपनी जादू लई उठाय ।
मकरन्द पहुँचे जब लश्करमें ❀ मालिनि जादू दई चलाय ।
शेल शनीचरबान अजीता ❀ सो मकरन्दने दियो चलाय ।
लश्कर बिचलि गयो महुबेको ❀ क्षत्री सुन्न सान ह्वैजाय ॥
देखि हाल यह नरमलिखेने ❀ अपनी घोड़ी दई चलाय ।
सांग उठाई नर मलिखेने ❀ मकरन्दी पर दई बढ़ाय ॥
काठको घोड़ा ऊपर उड़ि गयो ❀ नीचे सांग गिरी अरराय ।
शेल चलायो मकरन्दीने ❀ सो घोड़ीके लागी आय ॥
घोड़ी कबुतरी लँगरी ह्वैगई ❀ मलिखे उतरि परे अरराय ।
मलिखे पहुंचे पँचपेड़वालग ❀ मकरन्द कटा दई करवाय ॥
जितने राजा आये बराती ❀ सबकी कैद लियो करवाय ।
सो पठवाय दियो नरवरगढ़ ❀ नाहीं मसा तलक मन्नाय ॥
तड़पे आल्हा तब ऊदनिते ❀ तुम करि दई वंशकी हानि ।
याही दिनको हम हटको थो ❀ नाहीं मानी कही हमारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ।
मौर उतारि धरो ऊदनिने ❀ शिर पर बांधि बैंजनी पाग ॥
कछनी बांधी बघऊदनिने ❀ कम्मरि दुइ बांधी तलवारि ।

घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर फांदिभये असवार ॥
ऊदनि आये जब लश्करमें ❋ देखी फौज महोबे केरि ।
सोचन लागे ऊदनि बांकुड़ा ❋ अपनो माया मोह बिसराय॥
खैंचि शिरोही लइ कम्मरते ❋ लश्कर धसे उदयसिंह राय ।
जैसे पान तमोली कतरै ❋ जैसे खेती लुने किसान ॥
तैसेइ ऊदनि दलमें विचले ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ मकरन्दीपै पहुँचे जाय ॥
करो जड़ाका मकरन्दीपर ❋ मकरन्द दीन्ही ढाल अड़ाय ।
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ सोन फूल गिरे झहनाय ॥
बोले मकरन्द तब ऊदनिते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ ।
गुर्ज उठायो जब मकरन्दने ❋ तब हिरियाने कही सुनाय ॥
हाथ न डरियो तुम लरिकापर ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइहै ❋ यह कहि जादू लियो उठाय ॥
जादू डारि दियो मालिनिने ❋ घोड़ा तुरत खड़ो रहिजाय ।
तब तौ मकरंद आगे बढ़िगै ❋ औ ऊदनिको लीन्हो बांधि ॥
मकरंद ऊदनिको संग लैकै ❋ नरवरगढ़में पहुँचे जाय ।
देखि हाल यह ढेबा चलिभौ ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय ॥
बोले ढेबा अब आल्हाते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
ऊदनि बांधि लियो मकरंदने ❋ औ नरवरमें राखो जाय ॥
सुनो हाल जब यह आल्हाने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
भैया जल्द जाउ महुबेको ❋ सुनवैं खबरि सुनावौ जाय ॥
चलि भौ ढेबा तब नरवरते ❋ औ महुबेमें पहुँचे आय ।
देवै ठाढ़ी दरवाजे पर ❋ हेरे बाट बरायत क्यार ॥
तौलौं ढेबा दाखिल ह्वइगै ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
साजि आरती देवै माता ❋ सो ढेबापर धरी उतारि ॥
हृदय लगाय लियो ढेबाको ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ।
कहां बरायत तुमने छाड़ी ❋ सो तुम हमहिं कहो समुझाय ॥

यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ हमते कछू कही ना जाय ।
जितने राजा गे बरातमें ❋ मकरन्द लीन्हे कैद कराय ॥
घायल घोड़ी भइ मलिखेकी ❋ औ बँधि गये उदयसिंहराय ।
जादू डारि दियो मालिनने ❋ लश्कर सुन्न सान ह्वइ जाय ॥
बहुतक क्षत्री मकरंदीने ❋ रण खेतनमें दिये गिराय ।
अकिले आल्हा हैं लश्करमें ❋ हमको पठयो नगर महोब ॥
इतनी सुनतै परलै ह्वइगइ ❋ देवै गिरी मूर्छा खाय ।
जो कहु ऊदनि मारे जैहैं ❋ बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
सुनी खबरि जब यह सुनवांने ❋ तब देवैपर पहुँची आय ।
पूँछन लागी नर ढेबाते ❋ देवरे हालदेउ बतलाय ॥
कहां बरायत तुमने छाड़ी ❋ सो तुम हमसे कहो सुनाय ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ भौजी सुनो हमारी बात ॥
जितनो लश्कर है महुबेको ❋ सब नरवरमें दियो गवाय ।
हिरिया मालिनि नरवरगढ़की ❋ ताने जादू दियो चलाय ॥
घोड़ी घायल भइ मलिखेकी ❋ लश्कर रेनबेन ह्वइजाय ।
मकरंदबांधिलियो ऊदनिको ❋ औ नरवर गढ़ राखौ जाय ॥
इतनी सुनतै रनि सुनवांने ❋ रनि देवैते कही सुनाय ।
इन्दल बेटा यहु छोटो है ❋ नहिंतौ चलती संग तुम्हारि ॥
काम बनैहौ मैं अपनो सब ❋ सासुल धीर धरो मनमाहिं ।
सब सामान लियो पूजाको ❋ औ इक साथ लइ तलवारि ॥
सुनवां चलिभइ रंगमहलते ❋ औ मठियामें पहुची जाय ।
करिकै पूजन श्रीदेवीको ❋ अपनो शीश चढ़ावन लाग ॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ अपनौ कारज देउ बताय ।
हाथ जोरि तब सुनवां बोली ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
ऊदनि ब्याहनगे नरवर गढ़ ❋ मकरंद लीन्ही कैद कराय ।
जितनी बरायत गइ महुबेमें ❋ सब पर जादू दियो चलाय ॥

कठिन मवासी नरवरगढ़ है ❋ कैसे बनै हमारो काम ।
बोली देवी रनि सुनवांते ❋ बान अजीता दिहौं हटाय ॥
काठको घोड़ा शैल शनीचर ❋ सोऊ तुरतै लिहौं छिपाय ।
लैकै अमृत दियो देवीने ❋ जादू पुरिया दई गहाय ॥
बोली देवी रनि सुनवांते ❋ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइजाय ।
यह सुनि चलिभइ सुनवां रानी ❋ श्रीदेवीको माथ नवाय ॥
आयकै पहुँची नरढेबा पै ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
अमृत दिया था जो देवीने ❋ सो ढेबाको दौ पकराय ॥
जल्दी जावो तुम नरवरको ❋ भई सहाय शारदा माय ।
इन्दल मिचले सँग जैबेको ❋ रनिसुनवांने दौ समुझाय ॥
चलि भयो ढेबा दशपुरवाते ❋ औ नरवरमें पहुँचे जाय
आल्हा बैठे थे तम्बूमें ❋ ढेबा करी बन्दगी जाय ॥
देवी पहुँची गढ़ नरवरमें ❋ शेल शनीचर लियो उठाय ।
काठको घोड़ा निर्बल करदौ ❋ बानअजीता लियो छिपाय ॥
बोले आल्हा नर ढेबाते ❋ भैया हाल देउ बतलाय ।
हाल सुनायो तब ढेबाने ❋ औ अमृतको दियो गहाय ॥
देवी शारदा दहिने ह्वइगइ ❋ पूरन ह्वइहै काम तुम्हार ।
बोले आल्हा तब ढेबाते ❋ अब मलिखेको लावौ जाय ॥
ढेबा चलिभो तब जल्दीते ❋ पहुँचो जहां बीर मलिखान ।
तुमहिं बुलायो तुनि आल्हाने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
मलिखे आये पँचपेड़वाते ❋ औ आल्हापै पहुँचे आय ।
मलिखे उतरि परे घोड़ीते ❋ औ आल्हाको कियो प्रणाम॥
हाल सुनायो तब आल्हाने ❋ भई सहाय शारदा माय ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
घोड़ा पपीहाको सजवायो ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ।
घोड़ा मनुरथा पर ढेबा चढ़ि ❋ पहुँचे तुरत फौजमें जाय ॥
अमृत छिड़कि दियोआल्हाने ❋ लश्कर उठा वनाफर क्यार ।

सब उठि बैठे महुबेवाले ❀ जिनके मारुमारु रटि लागि ॥
हुक्म देदियो तब आल्हाने ❀ लश्कर आगे दियो बढ़ाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ औ फाटक पर पहुँचे जाय ॥
इक हरकारा बदलत आयो ❀ औ मकरंदसे कही सुनाय ।
लश्कर आयो है महुबेको ❀ औ फाटकको घेरो जाय ॥
सुनतै चलिभे मकरंद ठाकुर ❀ अलँगा परी ढाल तलवारि ।
पहुँचे मकरंद तब लश्करमें ❀ तुरतै डंका दियो बजाय ॥
चोट नगाराके सुनतै खन ❀ लश्कर सजा बिसेने क्यार ।
मकरंद चलिभे फेरि लश्करते ❀ औ बँगलामें पहुँचे जाय ॥
बान अजीता शेल शनीचर ❀ सो तहँ नाहीं परो दिखाय ।
काठको घोड़ा निर्बल देखो ❀ मकरंद गये सनाका खाय ॥
घोड़ा मँगवायो मकरंद ठाकुर ❀ तापर तुरत भये असवार ।
हिरियामालिनिकोसँगलीन्हो ❀ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
आये मकरंद रणखेतनमें ❀ तब मलिखे बढ़ि कही सुनाय ।
कैद छोड़ि देउ तुम ऊदनिकी ❀ सातौ भांवरि देउ डराय ॥
रारि बढ़ावत हौ नाहक तुम ❀ दूजी करत हमारे साथ ।
इतनी सुनतै मकरन्दीने ❀ लश्कर हुक्म दियो करवाय ॥
मारि गिरायो इन पाजिनको ❀ सबकी कटा देउ करवाय ।
बढ़े सिपाही नरवरवाले ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ॥
पैदलअभिरि गये पैदलके सँग ❀ औ असवारनते असवार ।
खट खट तेगा बाजन लागे ❀ छूटन लगे अगिनियां बान ॥
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकै बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
चारिघरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही नरवरवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।

भगत सिपाही मकरंद देखे ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले मकरंद तब हिरियाते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ।
गुर्ज चलायो मकरन्दीने ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बजाय ॥
बोले मकरंद तब हिरियाते ❋ अब क्यों राखी देर लगाय ।
इतनी सुनतै हिरिया मालिनि ❋ अपनी जादू लई उठाय ॥
तकि तकि जादू मालिनि मारै ❋ सो मलिखेपर ना अनिआय ।
बोले मलिखे तब हिरियाते ❋ हमरो वचन करो परमान ॥
पुष्य नक्षत्रमाहिं जन्मा हूँ ❋ बरहें परे बृहस्पति आय ।
जादू टोनाकी गिनती क्या ❋ शंका हमहिं कालकी नाहिं ॥
यह कहि मलिखेगेहिरियापै ❋ औ मालिनिको दियो गिराय ।
जूरा काटि लियो जल्दी ते ❋ जादू सबै झूठ परिजाय ॥
यह गति देखी मकरन्दीने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ।
घोड़ा बढ़ाय दियो आगेको ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका नर मलिखेपर ❋ मलिखे लीन्हीं चोट बचाय ।
ढालकी ओझड़ मलिखे मारी ❋ औ मकरंदको दियो गिराय ॥
मकरन्दगिरिगै जब धरतीपर ❋ घोड़ा सात कदम हटिजाय ।
तुरतै मकरन्दको बांधो तहँ ❋ औ आल्हापै पहुँचो जाय ॥
फौज भागिगइ नरवरगढ़की ❋ राजै खबरि पहूँची जाय ।
खबरि सुनतही राजानरपति ❋ बहुत गरीबी भेष बनाय ॥
आये नरपति सुनि आल्हापै ❋ औ आधीनी कही सुनाय ।
तुम सब लायक महुबेवाले ❋ सातौ भांवरि दिहौं डराय ॥
कैद छांड़ि देउ मकरन्दीकी ❋ तुम्हरे काम सिद्धि ह्वइजाय ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❋ तुम ऊदनिको देउ छुड़ाय ॥
कैद छोड़ि देउ सब राजनकी ❋ सातौ भांवरि देउ डराय ।
यह सुनि तुरतै राजा नरपति ❋ सबकी कैद दई छुड़वाय ॥
कैदते छूटिकै ऊदनि ठाकुर ❋ सो आल्हापै पहुँचे आय ।

आल्हा छांड़ि दियो मकरंदको ❋ तब नरपतिने कही सुनाय ॥
साइति पूँछि लेउ पंडितते ❋ आल्हा पंडित लियो बुलाय ।
चूड़ामणि पंडित तब आये ❋ औ आल्हाते लगे बतान ॥
देवालग्न बहुत नीकी है ❋ अबहीं त्यारी लेउ करवाय ।
इतनी सुनिकै नरपति चलि भये ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
मड़वा छायो तब जल्दीते ❋ मोतिन चौक दई पुरवाय ।
कलश सोबरनको धरवायो ❋ औ सखियनको लियो बुलाय ॥
सखियां मंगलगावन लागीं ❋ पंडित वेद उचारन लाग ।
तौलौं आये माहिल राजा ❋ सो नरपतिते लगे बतान ॥
ब्याहजोकरिहौतुम ऊदनिसंग ❋ कोऊ न पिये घड़ाको पानि ।
दाग्र लागिहै रजपूतीमें ❋ ओछी जाति बनाफर केरि ॥
जतन बतावें हम तुमको यक ❋ सो तुम करो बिसेने राय ।
जितने घरौआ हैं महुबेके ❋ सो मड़येमें लेउ बुलाय ॥
शूर कोठरियनमें बैठावौ ❋ सबके मूंड लेउ कटवाय ।
बात मानिलइ यह माहिलकी ❋ क्षत्री दुइ हजार बुलवाय ॥
तिन्हैं छिपाय दियो कोठरिनमें ❋ औ नेगिनको संग लिवाय ।
पहुँचे मकरन्द तब बरातमें ❋ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
जितने घरौआ हैं तुम्हारे संग ❋ सो सब चलौ हमारे साथ ।
चली पालकी तब ऊदनिकी ❋ संगहि चले घरौआ ज्वान ॥
जबहीं पहुँचे सब महलनमें ❋ फाटक बन्द दियो करवाय ।
अहनी ताले उन डरवाये ❋ औ फिरि नेग होन सब लाग ॥
कन्यादान होन लागो तहँ ❋ पंडित गांठि दई जुरवाय ।
पंडित होम करावन लागे ❋ भांवरिपरन लगी ज्यहिकाल ॥
पहली भांवरिके परतै खन ❋ मकरन्द खैंचि लई तलवारि ।
चोट चलाई जब ऊदनिपर ❋ मलिखे दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भांवरिके परतैखन ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।

चली शिरोही तब मड़ये तर ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
टूक टूक मड़येके ह्वैगे ❀ खंभा गिरो भूमिपर आय ।
मड़वा गाड़ो तब साँगनको ❀ ढालन मंडप दियो छवाय ॥
कैद कर लियो मकरन्दीकी ❀ सातौ भांवरि लई डराय ।
हाथ जोरिकै नरपति बोले ❀ तुम समरत्थ बनाफर राय ॥
कैद छांड़िदेउ मकरन्दीकी ❀ अबहीं बिदा दिहौं करवाय ।
मकरंदि छोड़े तब आल्हाने ❀ औ राजाते कही सुनाय ॥
भात खवाय देउ हमको तुम ❀ औ फिर बिदा देउ करवाभ ।
यह सुनि खबरि करी महलनमें ❀ तुरतै भयो भात तैयार ॥
बोले नरपति तब आल्हाते ❀ तुम चलि जेइँ लेउ ज्यौंनार ।
इतनी सुनिकै अपने अपने ❀ सबने बांधि लिये हथियार ॥
बोले नरपति तब विनती करि ❀ हमरे कुल यहैं ब्योहार ।
दुसरी करिहैं ना तुमते हम ❀ तुम सब छोरि धरो हथियार ॥
बोले मलिखे तब नरपतिते ❀ तुम घटि करो हमारे साथ ।
गङ्गा कीन्हीं तब नरपतिने ❀ तब उन छोरिधरो हथियार ॥
लैकै गडुआ चले घरौआ ❀ औ चौकामें बैठे जाय ।
भात परोसों सबके आगे ❀ मकन्द क्षत्री लिये बुलाय ॥
भात खान नहिं तिनपाये थे ❀ तौलौं चलन लगी तलवारि ।
लैकै गडुआ उठे महोबिया ❀ औ क्षत्रिनको मारन लाग ॥
तीनि घड़ी भरि गडुअन मारो ❀ सबने पाटा लिये उठाय ।
हनिकै पाटा ज्यहिकै मारैं ❀ त्यहि धरतीमें देयँ गिराय ॥
क्षत्री भागि गये नरवरके ❀ तब नरपतिने कही सुनाय ।
अब हम जानी अपने मनमें ❀ तुम गाढ़ेमें ऐहौ काम ॥
ऐसे क्षत्री महुबे उपजे ❀ काहे न राज करैं परिमाल ।
बोले आल्हा तब नरपतिते ❀ अपने नेगी लेउ बुलाय ॥

नेगी बुलाये तब राजाने ❋ आल्हा गहनो दियो बँटाय ।
आई पालकी दरवाजेपर ❋ फुलवा बिदा होन तब लागि ॥
तोड़ा सात लियो मोहरनके ❋ सो ढेबाने दियो लुटाय ।
बिदा भई तब रनिफुलवाकी ❋ पलकी चली बरायत जाय ॥
जबहीं पहुँचे सब लश्करमें ❋ मलिखे मेख दई उखराय ।
तम्बू लदिगैं सब छकरनमें ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
आई बरात जब सागरपर ❋ सबने डेरा दिये डराय ।
रूपना बारी गयो महुबेमें ❋ मल्हने खबरि सुनाई जाय ॥
भई खबरि तब रंगमहलमें ❋ आये ब्याहि उदयसिंहराय ।
सखियां बुलवाई मल्हनाने ❋ महलन होय मंगलाचार ॥
भयो बुलौवां बघऊदनिको ❋ आवै साथ फुलामति रानि ।
आई पालकी दरवाजे पर ❋ परछन करी मल्हनदे रानि ॥
बहू उतारी रनि मल्हनाने ❋ औ महलनमें राखी जाय ।
दान दक्षिणा दै सबहीको ❋ घर घर भयो मङ्गलाचार ॥
अनँद बधाई बाजने लागी ❋ महुबे दगन सलामी लागि ।
जितने राजा आये बराती ❋ तिनकी बिदा दई करवाय ॥
ऐसे ब्याह भयो ऊदनिको ❋ सो हम कहिके दियो सुनाय ।
कोउ कोउ गावत हैं अम्मरगढ़ ❋ पै यह सांचो भयो विवाह ॥
सुमिरण करिकै नारायणको ❋ कहिहौं ब्याह वीर सुलिखान ।
कान लगाय सुनौ यारौ अब ❋ जैसे भयो युद्ध मैदान ॥

इति नरवरगढ़की लड़ाई (ऊदनिका ब्याह) समाप्त

श्री:

कमायूँगढ़की लड़ाई

★

सुलिखानका ब्याह

पहिले सुमिरौ श्रीगणपतिको ❋ जो गिरजाके राजकुमार ।
पिता जो कहिये शिवशंकरको ❋ जिनको यह छायो संसार ॥
सदा भवानी दाहिनि कहिये ❋ अरुसम्मुखपर सदा गणेश ।
पांच देव मिलि रक्षा करिहैं ❋ नित प्रति ब्रह्माविष्णु महेश ॥
चरण लागिके जगदम्बेके ❋ जो नित सिद्धि करैं परकाश ।
ऋद्धि सिद्धिको पूरण करिहैं ❋ जेहिकी ज्योतिदिपै आकाश ॥
काली सुमिरौं कलकत्तेकी ❋ जाको रूप न बरनो जाय ।
मनके कारज पूरण करि देउ ❋ चढ़िके सिंह सवारी माय ॥
सुमिरौं देवी पुनियां गिरिकी ❋ रक्षा करैं दासकी आय ।
सुमिरौं चंडी धौलागढ़की ❋ मुम्बा देवी मुम्बई माय ॥
पुनि मैं सुमिरौं देवलालिता ❋ हैं जो नैमिषारण्यकै माहिं ।
चक्र तीर्थकी हैं बुड़की जहँ ❋ पर्वी किये पापनशिजाहिं ॥
मात संकटा है लक्ष्मीपुर ❋ मन्दिर मातशीतला क्यार ।
जिनके दर्शनते सब पातक ❋ तुरतै नाश होत सब क्यार ॥
ज्वाला सुमिरौं कोटकांगड़े ❋ हिरदै करैं ज्ञान उजियार ।
देश कामरूकी कामक्षा ❋ सुमिरौं बार बार शिर धार ॥
विंध्याचलकी विन्ध्यवासिनी ❋ देवी रटौं नित्य धरि ध्यान ।
अन्नपूरणा श्री काशीजी ❋ बालात्रिपुर सुन्दरी जान ॥
रक्षा करणी चित्तभ्रम हरणी ❋ सब सुख करणी हैं महरानि ।
पूरण कीजै मनोकामना ❋ निशिदिन दास आपनो जानि ॥
पुनि मैं सुमिरौं श्रीगंगेको ❋ भागीरथी नाम विख्यात ।

सकल जगतकी तारन हारी ❋ माता धर्म तुम्हारे हाथ ॥
काशी कनउज कानपूर अरु ❋ सागर सेतु और हरद्वार ।
गंगाजीके तेज पुंजमें ❋ जरिजरि पाप होत सब छार॥
पाप नशावनि सन्त उबारनि ❋ नित अस्नान देति सुखधाम ।
शुभ वर दीजै गंगे माई ❋ पूरण सभी कीजिये काम ॥
मनसे सुमिरौं तब दुष्टनको ❋ हैं जो युगन युगन विख्यात ।
सतयुग सुमिरौं हिरण्याक्षको ❋ त्रेता दशकन्धर उत्पात ॥
द्वापर सुमिरौं मैं कंसासुरको ❋ जिसने युद्ध कृष्णसों कीन ।
कलिमें सुमिरौं मैं माहिलको ❋ भारतखण्ड क्षीणकर दीन ॥
माहिलभूपतिकी चुगलिनमें ❋ राजा बिगरि गये परिमाल ।
चुगली करि करि देश नशायो ❋ क्षत्री भये कालके गाल ॥
भारतयुद्ध कियो दुर्योधन ❋ सब नशि गये शूर बलवान ।
सोई प्रगट भये कलियुगमें ❋ करते क्यो न युद्ध समान ॥
जो नहिं लड़ते यह आपुसमें ❋ करते मित्रभाव व्योहार ।
यवनराज होता नहिं जगमें ❋ होतो नाहिं कष्ट नर नारि ॥
धन्य राज है अँगरेजनको ❋ जिनके राजा सर्वदुखनाश ।
सिंहगायहिलिमिलिबनविचरैं ❋ एकहि घाट बुझावैं प्यास ॥
धान पान महुबेमें उपजैं ❋ ना महुबेमें होय उखारि ।
क्षत्री उपजैं ना आल्हासम ❋ ना फिरि तपैं चन्द्रसरदार ॥
छोड़ि सुमिरनी अब आगेमें ❋ बरणौं ब्याह बीरसुलिखान ।
वर्षा ऋतुमें प्रेम भावते ❋ यारौ पढ़ौ सुमिरि भगवान ॥
एक समैया अपने मनमें ❋ कियो विचार बीरसुलिखान ।
दर्शन करिहौं शिवशंकरके ❋ ह्वैहों सुखी पाय वरदान ॥
भरिहौं काँवरि गंगाजलकी ❋ शंकर शीश चढ़ैहौं जाय ।
यह प्रण करिकैसुलिखे चलिभे ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
जहां कचहरी चन्देलेकी ❋ तहँपर गये बीरसुलिखान ।
करी बन्दगी परिमालेको ❋ सन्मुख खड़े छांड़ि अभिमान॥

नजरि बदलिगइ चन्देलेकी ❋ ओ सुलिखे तन रहे निहारि ।
बैठो बेटा बच्छराजके ❋ अपने मनको कहो विचार ॥
कौन कामको तुम आये हौ ❋ बेटा हाल देउ बतलाय ।
हाथ जोरि तब सुलखे बोले ❋ हमरी खता माफ ह्वै जाय ॥
यक अभिलाषा हमरे मनमें ❋ ददुआ हुक्म देउ फरमाय ।
दर्शन करके बद्रिनाथके ❋ शिवको कांवरि देउँ चढ़ाय ॥
हँसी खुशीसे आज्ञा दैदेउ ❋ अपनो कूच जाउँ करवाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ बेटा बैठि रहो अरगाय ॥
उमिरि तुम्हारी अति थोरीहै ❋ ताते मानो कही हमारि ।
यह सुनि सुलिखे बोलन लागे ❋ ददुआ चहिये हुक्म तुम्हार ॥
जो नहिं आज्ञा मोको देहो ❋ तौ मैं देहौं प्राण गवांय ।
इतनी सुनते चन्देलेने ❋ नरढेबाको लियो बुलाय ॥
यह कहि दीन्ही तब ढेबासे ❋ याको तीरथ देउ कराय ।
संगहि जावो तुम सुलिखेके ❋ मनमें बहुत रहेउ हुशियार ॥
हुक्म पायकै तब ढेबोने ❋ सुलिखे लीन्हे संग लिवाय ।
जायके पहुँचे गढ़ सिरसामें ❋ जहं दरबार बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
खर्च मंगाय देउ सुलिखेको ❋ इनको तीरथ लाउं कराय ॥
इतनी सुनिकै नरमलिखेने ❋ बहुतक समुझायो सुलिखान ।
हाथ जोरिकै सुलिखे बोले ❋ दादा सुनौ बीर मलिखान ॥
हम प्रण कीन्हों है अपने मन ❋ जैहो बद्रिनाथ दरबार ।
सोचन लागे मन मलिखे तब ❋ ये ना मनिहैं कही हमारि ॥
सुलिखे ढेबाको संग लैके ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
माता ब्रह्माके समुहेपर ❋ मलिखेहाथ जोरि रहिजाय ॥
त्यार भये सुलिखे तीरथको ❋ नाहीं मानत कही हमारि ।
जो अब हुक्म देउ माता तुम ❋ सोई मानौं हुक्म तुम्हार ॥
इतनी सुनिकै ब्रह्मा माता ❋ तब सुलिखेते लगी बतान ।

कौन बातको तुम भूखे हौ ❀ जो तीरथको भये तयार ॥
हाथ जोरिकै सुलखे बोलै ❀ माता सुनो हमारी बात ।
दर्शन करिहौं बद्रिनाथके ❀ शिवको कांवरि दिहौं चढ़ाय ॥
आज्ञा दै देउ अपने मुखते ❀ माता पैयां परौं तुम्हार ।
सुनतै ब्रह्मा आज्ञा दीन्ही ❀ मलिखे दीन्हों खर्च मँगाय ॥
लियो खजाना बारह खच्चर ❀ औसंग लीन्हीं साठ हजार ।
ढेबा आगमको जानत था ❀ जोगिन गुदरी लई सिलाय ॥
कांवरि लैकै रतन जड़ाऊ ❀ ऊपर मोती जड़े बनाय ।
लैके शीश गङ्गाजलको ❀ सो कांवरिमें दिया चढ़ाय ॥
पूजन करिकै शिव शंकरको ❀ जगदीश्वरको शीश नवाय ।
लैके कांवरि सुलिखे चलिभै ❀ अपनो कूच दियो करवाय ॥
जायके पहुँचो नगर महोबे ❀ जहँपर रही मलहनदे रानि ।
चरण लागिकै रनि मलहनाके ❀ सुलिखे कूच दियो करवाय ॥
धीरे धीरे एक मासमें ❀ पहुँचे हरिद्वारमें जाय ।
गौमुख गङ्गाजल भरवायो ❀ सो कांवरिमें लियो धराय ॥
डेढ़ महीनेके बीतेपर ❀ पहुँचे बद्रिनाथमें जाय ।
डेरा डारि दिये तीरथमें ❀ सुलिखे शिवपूजनको जाय ॥
गंगाजल कांवरिसे लैके ❀ चन्दन अक्षत दिये चढ़ाय ।
शिव अन्हवायो गंगाजलसे ❀ चन्दन अक्षत दियो चढ़ाय ॥
बिल्वपत्र अरु फूल चाढ़ाये ❀ धूप आरती धरी उतारि ।
बहु नैवेद्य धरी शंकर ढिग ❀ हाथ जोरिकै विनय सुनाय ॥
अस्तुति करिकै शिवशंकरकी ❀ सुलिखे कूच दियो करवाय ।
राह भूलिगै गढ़ महुबेकी ❀ पहुँचे शहर कमायूँ जाय ॥
डेरा डारि दियो सुलिखेने ❀ तब ढेबाने कही बुझाय ।
कूच कराय देउ जल्दीते ❀ इतनी मानौ कही हमारि ।
बोले सुलिखे तब ढेबासे ❀ नीको शहर कमायूँ क्यार ।
पांच मुकाम यहां करिहैं हम ❀ छठये कूच दिहैं करवाय ॥

राति बसेरो करि दोनोंने ❋ भोरहि उठे बीर सुलिखान ॥
सपनो देखो जो सुलिखेने ❋ सो ढेबासे कही सुनाय ।
एक बाग सुन्दर देखो हम ❋ मेवा दाख छुहारे क्यार ॥
तामें आई सात सखी संग ❋ सुन्दर एक नारि सुकुमारि ।
नाम कलावति वाको कहिये ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
फूल हार हमको पहिरायो ❋ औ हमरे संग कियो करार ।
कैतो होय ब्याह हमरे संग ❋ की मैं जहर खाय मरिजाउँ ॥
सपनो ऐसा हमने देखो ❋ ताको करिहो कौन उपाय ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ सुलिखे कूच देउ करवाय ॥
झूठो सपना यह देखो तुम ❋ ताते भरम देउ बिसराय ।
बेटी कलावति रतनसिंहकी ❋ सुनतै अग्नि ज्वाल ह्वैजाय ॥
कैद कराय लिहैं दोनोंकी ❋ जालिम रतनसिंह नरराय ।
कूच कराय देउ हियँनाते ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
सुलिखे बोले हाथ जोरिकै ❋ दादा सुनो हमारी बात ॥
कलावतीको हम देखँगे ❋ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
सोचि समुझिके तब ढेबाने ❋ जोगिन गुदरी लई निकारि ॥
बाना बदलो रजपूतीको ❋ जोगिन बाना लियो बनाय ।
सब हथियार बांधि दोउननने ❋ ऊपर गुदरी लइ लटकाय ॥
रामानन्दी तिलक लगायो ❋ हाथ सुमिरनी लई उठाय ।
डमरू लीन्हो ढेबा बहादुर ❋ बँसुरी लई बीर सुलिखान ॥
डगरत चलि भये दोनों जोगी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
धीरे धीरे दोनों जोगी ❋ बीच बजार पहुँचे जाय ॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ अपनो बाजा दिये बजाय ।
सब नरनारी मोहित ह्वइगइँ ❋ अपनी अपनी सुरति भुलाय ॥
मदन सेठ था वा नगरीमें ❋ वाने जोगी लियो बुलाय ।
बोले मदन सेठ जोगिनते ❋ जोगियो हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ ❋ आगे कौन देशको जाउ ।

नाम तुम्हारे क्या कहियत हैं ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
इतनी सुनत ढेबा बोलो ❀ मदन सेठसे कही सुनाय ।
देश हमारा बंगाला है ❀ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
दर्शन करिहैं जगदंबाके ❀ हमरो जन्म सफल ह्वै जाय ।
सुनि यह बातैं मदन सेठने ❀ उन जोगिनसे कही सुनाय ॥
करौ तमाशा तुम ड्योढ़ीपर ❀ तुमको भिक्षा देउँ मँगाय ।
डमरू बजाई तब ढेबाने ❀ सुलिखे बँसुरी दई बजाय ॥
राग रागिनी गावन लागे ❀ जिनमें उठैं बीर बैताल ।
सुलिखे नाचे तेहि ड्योढ़ीपै ❀ सब नर नारी भये बिहाल ॥
तान मरोरा गावन लागे ❀ ठुमरी सोरठ औ कल्यान ।
धुरपद गावैं औ तिल्लाना ❀ गजल फर्जपर तोरैं तान ॥
नर नारी सब मोहित ह्वैगे ❀ तन मनकी गये सुरत भुलाय ।
कान अवाज परी पदुमाके ❀ अपनी बांदी लई बुलाय ॥
पूछन लागी तब बांदीसे ❀ को यह कियो तमाशा आय ।
कहँपै डमरू यह बाजत है ❀ कौने राग अलापे आय ॥
खबरि लै आयो तुम जल्दीसे ❀ मोको हाल बतावौ आय ।
उनहीं पायँन बांदी चलिभइ ❀ औ जोगिनपै पहुँची जाय ॥
लखिकै सूरत उन जोगिनकी ❀ बांदी मोहि मोहि रहि जाय ।
चारि घरी भरि देखि तमाशा ❀ उन जोगिनसे कही सुनाय ॥
कहांसे आये औ कहँ जैहौ ❀ बाबा हाल देउ बतलाय ।
सुनतै जोगी बोलन लागे ❀ बांदी सुनौ बात मन लाय ॥
देश कामरूसे आये हम ❀ आगे हिंगलाजको जायँ ।
इतनी सुनिकै बांदी चलि भइ ❀ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
कही हकीकत उन जोगिनकी ❀ रानी बहुत खुशी ह्वै जाय ।
फिरिकै रानी बोलन लागी ❀ बांदी बार बार बलि जाउँ ॥
जल्दी लावो उन जोगिनको ❀ महलन करैं तमाशा आय ।

उनहीं पायँन बांदी लौटी ❋ औ जोगिनको लाई बुलाय।
देखी सूरति तब जोगिनकी ❋ रानी मोहि मोहि रहिजाय॥
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगिउ सांची देउ बताय।
कौन आपदा तुमपर परिगइ ❋ बारे डारे मूँड़ मुड़ाय॥
सुरति तुम्हारी ऐसी लागै ❋ मानौं रूप क्षत्रियन क्यार।
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ रानी घटिगो ज्ञान तुम्हार॥
जो कुछ कर्म लिखा विधिनाने ❋ ताको कौन मिटावनहार।
पूर्व जन्मकी जो करनी है ❋ ताको फल पावत संसार॥
बहुत बुझायो मात पिताने ❋ मेटै कौन रेख करतार।
सुनि बोली रानी जोगिनसे ❋ अब तुम नाच देउ दिखलाय॥
इतनी सुनतै दोनों जोगी ❋ अपने राग सुनावन लाग।
डमरू बाजै नर ढेबाकी ❋ बँसुरी बजै बीर सुलिखान॥
राग रागिनीकी ध्वनि छाई ❋ सबने सुनी सुरीली तान।
मोहित ह्वैके रानी बोली ❋ जोगिउ भोजन देउँ मँगाय॥
सो तुम जीमिलेउ महलनमें ❋ हमरो जन्म सुफल ह्वैजाय।
इतनी सुनकै योगी बोले ❋ औ रानीसे कही सुनाय॥
महलन भोजन जो हम जीमैं ❋ हमरो जोग भंग होइ जाय।
भीख मँगाय देउ महलनते ❋ जोगी चले यहांसे जायँ॥
गुरू हमारे हैं डेरनमें ❋ तहँपर भोजन होय तयार।
राह निहारैं गुरू हमारी ❋ सांची मानौं वचन हमार॥
भोग लगावैं वे ठाकुरको ❋ तब हम भोजन पावतमाय।
सुनतै रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ मानौ कही हमारि॥
तनिकबिलमियोतुमडयोढ़ीमें ❋ मैं बेटीको लेउँ बुलाय।
देखि तमाशा बेटी लेवै ❋ तब हम भिक्षा देइँ मँगाय॥
सुखिया वांदीको भेजो तब ❋ कलावतीको लाउ बुलाय।
बांदी पहुँची सतखंडापर ❋ औ बेटीसे कही सुनाय॥
तुमहिं बुलायो है रानीने ❋ जल्दी चलौ हमारे साथ।

द्वै जोगी महलन आये हैं ❀ उसने करो तमाशा आय ॥
रूपके आगर वे जोगी हैं ❀ जिनके रूप न बरने जायँ ।
इतनी सुनतै कलावतीने ❀ पानका डब्बा लियो उठाय ॥
बीरा बनायो पांच पानको ❀ सो मुट्ठीमें लियो दबाय ।
उनहीं पांयन बेटी चलिभइ ❀ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
जहां जोगिया दोनों ठाढ़े ❀ बेटी तहां पहूँची जाय ।
आवत देखो जब बेटीको ❀ पदुमा लीन्हो कंठ लगाय ॥
फिरि बैठाय दियो मचियापर ❀ औ जोगिनसे कही सुनाय ।
नाच दिखाय देउ जोगिउ तुम ❀ बेटी देखि तमाशा लेइ ॥
इतनी सुनतै ढेबा बहादुर ❀ अपनी डमरू दई बजाय ।
सुलिखे लीन्ही बेनु बांसुरी ❀ कजरीराग अलापन लाग ॥
बजी बांसुरी जब सुलिखेकी ❀ महलन दई मोहिनी डारि ।
नजर बदलिगइ कलावतीकी ❀ औ सुलिखे तन रही निहारि ॥
बीरा दीन्हों तेहि सुलिखेको ❀ सुलिखे बीरा लियो चबाय ।
चारो नैना इकमिलि होइगये ❀ दोनों गिरे मूरछा खाय ॥
बेटी गिरतै परलै होइ गये ❀ औ जरिमरी पदुमदे रानि ।
रूप देखिकै मेरी बेटीको ❀ जोगी धरनि गिरो मुरझाय ॥
इनछल कीन्हों आय महलमें ❀ ये राजनके राजकुमार ।
जोगी नाहीं ये भोगी हैं ❀ बांदी जाउ राजदरबार ॥
बोलिकै लावौ तुम राजाको ❀ इनकी खाल लेउ खिचवाय ।
इतनी सुनिकै ढेवा तड़पो ❀ औ रानीसे कही सुनाय ॥
छोटो जोगी जो मरिजैहै ❀ महलन आगी देहौं लगाय ।
रानी बोली तब ढेबासे ❀ यह तुम हाल देउ बतलाय ॥
काहे जोगी मूर्च्छित होइगो ❀ काहे गिरो धरणि महराय ।
बात बनाई तब ढेबाने ❀ औ रानीसे कही सुनाय ॥
सवा पहरभरि जोगी नाचो ❀ नाहीं कियो अन्न जलपान ।
बीरा दीन्हों जो बेटीने ❀ तामें दई तमाखू डारि ॥

पीक लागि गइ सो जोगीके ❀ तब गिरिपरो धरनि भहराय ॥
सुनतै रानी बोलन लागी ❀ जोगी बोलत बात बनाय ।
देखि रूप मेरी बेटीको ❀ जोगी गिरो धरनिपर जाय ॥
अबहिं बुलैहौं कुँअरसिंहको ❀ तुम्हरी कैद लिहैं करवाय ।
इतनी सुनिकै ढेबा बोलो ❀ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
धोखे न रहियो भिखमंगनके ❀ जो धमकीमें जाय डेराय ।
जो सराप देवउँ महलनमें ❀ तौ रनिवास भस्म ह्वइ जाय ॥
भेड़ बकरिया हम नाहीं हैं ❀ रानी कान छुये मिमियायं ।
हैं हम जोगी वंगालेके ❀ मारैं राज भंग ह्वइ जाय ॥
सुनिकै बातें नरढेबाके ❀ रानी बहुतै गई डेराय ।
तौलौं जगी मूरछा तुरतै ❀ जागे जबहिं बीर सुलिखान ॥
भिक्षा दीन्ही तब बेटीकी ❀ जोगिन बिदा दई करवाय ।
जागी मूरछा जब बेटीकी ❀ रानी लीन्हीं कण्ठ लगाय ॥
पूछन लागी तब बेटीसे ❀ बेटी भेद देउ बतलाय ।
लागि तमाखु गई जोगीको ❀ सो गिरि परो तड़ाका खाय ॥
कौनसो कारण तुमको ह्वैगो ❀ जो गिरिपरो तड़ाका खाय ।
बेटी बोली महतारीसे ❀ माता सुनो हमारी बात ॥
ऐसे जोगी कबहुँ न देखे ❀ इनके रूप न बरने जायं ।
सोच आय गौ मेरे मनमें ❀ ताते बदन गयो कुम्हिलाय ॥
डगरत चलिभये दोनों जोगी ❀ अपने डेरन पहुँचे जाय ।
राति बसेरा करि डेरामें ❀ भोरहि कूच दियो करवाय ॥
धीरे धीरे पन्द्रह दिनमें ❀ पहुँचे नगर महोबे जाय ।
खबरि फैलगइ सिरसागढ़में ❀ आये लौटि बीर सुलिखान ॥
सुलिखे गाफिल भयो महुबेमें ❀ रनि मल्हनाने सुनो हवाल ।
तुरतै बुलवायो ढेबाको ❀ पूछो सबहि राहको हाल ॥
कैसे गाफिल यह सुलिखे हैं ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
इतनी सुनतै ढेबा बोले ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥

शहर कमायूँ है उत्तरमें ❋ जहं है रतनसिंहको राज ।
दर्शन करिकै बद्रिनाथको ❋ हमने कूच दियो करवाय ॥
राह भूलि गये गढ़ महुबेकी ❋ पहुँचे शहर कमायूँ जाय ।
राति बसेरो करि नगरीमें ❋ भोरहिं उठे जबहिं सुलिखान ॥
सपनो देखो जो सुलिखेने ❋ सो सब हमसे कहो सुनाय ।
तब समझायो हम सुलिखेको ❋ अबही कूच दियो करवाय ॥
कही न मानी यक सुलिखेने ❋ जोगी बने बीर सुलिखान ।
घर घर शहर कमायूँ मांगो ❋ पहुंचे रतनसिंह घर जाय ॥
नृपकी कन्या कलावती है ❋ जाको रूप न बरनो जाय ।
रूप देखिकै वा कन्याको ❋ मोहित भये बीर सुलिखान ॥
जैसे तैसे हम ले आये ❋ अब कछुताको करौ उपाय ।
गाफिल सुलिखे यहि कारण हैं ❋ सांची मानौ कही हमारि ॥
इतनी सुनतै रनि मल्हनाने ❋ सिरसा खबरि दई पहुँचाय ।
सुनीखबरि जब नरमलिखेने ❋ अपने मनमें कीन्ह बिचार ॥
तुरत कबुतरीको मंगवायो ❋ तापर फांदि भये असवार ।
घरी चारि केरे अरसामें ❋ पहुंचे नगर महोबे जाय ।
देखी सूरति जब सुलेखेकी ❋ सोचन लगे बीर मलिखान ।
सुनी खबरि आल्हा ऊदनिने ❋ सोऊ तहां पहुंचे आय ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ पहुंचे रंगमहलमें जाय ।
आवत देखो जब लरिकनको ❋ मल्हना लीन्हों कंठ लगाय ॥
दियो बैठका इन चारोंको ❋ चारौं बैठि गये हरषाय ।
तब रनि मल्हना बोलन लागी ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
करौ तयारी अब बरातको ❋ औसुलिखेको करौ बिआहु ।
यह सुनि मलिखे पूछन लागे ❋ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन शहरमें ब्याह रचायो ❋ कहं बरातको करै तयार ।
बोली मल्हना तब मलिखेते ❋ बेटा मानो वचन हमार ॥
शहर कमायूँ है उत्तरमें ❋ जहंपर रतनसिंहको राज ।

ताकी बेटी कलावती है ❋ ताके सँग करौ यह काज ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ माता सुनौ बात मनलाय ।
केहिके छाती है बज्जरकी ❋ रतनसिंहसे माड़ै रारि ॥
बड़े लड़ैया पर्वतवाले ❋ जिनसे लड़े न पावैं पार ।
तोप रहकलाकी गति नाहीं ❋ औ असवार कहां ह्वाँ जाय ॥
इतनी सुनते ऊदनि बोले ❋ औ मलिखेसे कही सुनाय ।
मुखते हीनी दादा बोलत ❋ ऐसो तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
मारि शिरोहिनते मुख तोरौं ❋ औ सुलिखेको लाऊं ब्याहि ।
करौ तयारी तुम बरातकी ❋ तुम्हरे काम सिद्ध ह्वै जायँ ॥
न्योता भेजो सब राजनको ❋ औ सबहीको लेउ बुलाय ।
इतनी सुनते तुनि आल्हाने ❋ यक हरकारा लियो बुलाय ॥
लिखी हकीकति रतनसिंहको ❋ औ विवाहको लिखी हवाल ।
करौ तयारी तुम विवाहकी ❋ ब्याहन आवत हैं सुलिखान ॥
पाती लिखिकै दइ धावनको ❋ धावन कूच दियो करवाय ।
जायके पहुँचा शहर कमायूँ ❋ जहँपर रतनसिंहको राज ॥
लगी कचहरी रतनसिंहकी ❋ धावन जाके करी सलाम ।
पाती दीन्हीं जो आल्हाने ❋ सो गद्दीपर दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा बाँची ❋ आंकुइ आंकु नजरिकरि जायं ।
पाती पढ़ते परलै ह्वइगइ ❋ नैनाअग्निज्वाल ह्वै जाय ॥
तुरत जवाब लिखो पातीको ❋ पढ़ियो याहि बनाफर राय ।
कबसे तुम सब भये तरवरिहा ❋ कबसे कमर धरो तलवार ॥
धरमें मनके बढ़िया ह्वै गये ❋ नाहीं परो मर्दसे काम ।
धोखे न रहियो नैनागढ़के ❋ हमरो रतनसिंह है नाम ॥
मारि निकारौं मैं धूरेसे ❋ सबकी कटा देउं करवाय ।
लिखी हकीकति यह आल्हाको ❋ औ धावनको दई गहाय ॥
लैकै पाती धावन चलिभो ❋ औ महुबेमें पहुंचो आय ।
करी बन्दगी तुनि आल्हाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥

खोलिकै पाती आल्हा बांची ❋ पढ़तै होश बंद हुइ जायं ।
देखि अनमनो नर मलिखेने ❋ नुनि आल्हासे कही सुनाय ॥
काहैं दादा शोच करत हो ❋ मारौं राजभंग हुइ जाय ।
करौ तयारी अब बरातकी ❋ मनको शोच देउ बिसराय ॥
इतनी सुनतै नुनि आल्हाने ❋ सब राजनको लिखो हवाल ।
न्योता भेजि दियो राजनको ❋ अपनी करन तयारी लाग ॥
जितनो लश्कर थे महुबेको ❋ सो सजवायो बीरमलिखान ।
जितने राजा ब्योहारी थे ❋ सो महुबेमें पहुंचे आय ॥
सवालाख सब सजी बरायत ❋ शोभा एक न बरणी जाय ।
सखियां मंगल गावन लागीं ❋ महलन भये मंगलाचार ॥
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भयो सवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ ताप चढ़े बीर मलिखान ।
घोड़ा मनुरथाको सजवायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानंद असवार ।
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर रंजित भये सवार ॥
कामजीत औ समरजीत दोउ ❋ अपनी हथिनी पर असवार ।
मन्ना गूजर महुबेवारो ❋ सो बरातको भयो तयार ॥
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री भये तुरत हुशियार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगये ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
कूच कराय दियो लश्करमें ❋ औ उत्तर को कियो पयान ।
बीस दिना मारगमें बीते ❋ पहुंचे शहर कमायूं जाय ॥
तीन कोस जब रहा कमायूं ❋ तहँपर डेरा दियो लगाय ।
बड़े बड़े तम्बू बानातनके ❋ सो तनवाये बीरमलिखान ॥
ऊंचे ऊंचे तम्बू लगि गये ❋ औ नीचेमें लगी बजार ।
आठ कोशलौं लश्कर परिगो ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
राति बसेरो करि धूरेपर ❋ भोरहि उठे उदयसिंहराय ।

जायके बोले तुनि आल्हासे ❋ दादा पंडित लेउ बुलाय।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ चूड़ामणि तब पहुँचे आय॥
चूड़ामणिसे आल्हा बोले ❋ ब्याहकि साइति देउ बताय।
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❋ ऐपनवारी देउ पठाय॥
इतनी सुनिकै बघऊदनिने ❋ रूपन बारी लियो बुलाय।
बोले ऊदनि तब रुपनाते ❋ ऐपनवारी तुम लै जाउ॥
रुपना बारी बोलन लागो ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंहराय।
धोखे न रहियो तुम दिल्लीके ❋ जहँ ब्रह्माको लाये ब्याहि॥
बड़े लड़ैया पर्वतवाले ❋ जिनसे कछू पेश ना जाय।
हमरे भरोसे तुम न रहियो ❋ हम ना शीश कटैहैं जाय॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ रूपन सुनौ हमारी बात।
तुमको नेगी हम जानत नहिं ❋ तुम तौ भैया लगत हमार॥
मुखसे हीनी तुम बोलत हौ ❋ पानी पियो महोबे क्यार।
इतनी सुनतै रुपना बोलो ❋ औ ऊदनिसे कही सुनाय॥
घोड़ा पपीहा हमको दैदेउ ❋ अपनी देउ ढाल तलवारि।
भाला दैदेउ ब्रह्मानन्दको ❋ ऐपनवारी मैं लै जाउँ॥
जो जो मांगौ रुपना बारी ❋ सो सो ऊदनि दियो मँगाय।
तुरत सवार भयो रुपना तब ❋ ऐपनवारी लई उठाय॥
घड़ी एक केरे अरसामें ❋ औ रुपनासे कही सुनाय।
तब दरवानी बोलन लागो ❋ दरवाजे पर पर पहुँचो जाय॥
कहांसे आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो नाम देउ बतलाय।
बोलो रुपना दरवानीसे ❋ रूपना बारी नाम हमार॥
हम आये हैं गढ़ महुबेसे ❋ ब्याहन आये वीर सुलिखान।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ राजै खबरि सुनावो जाय॥
नेग हमारो जो द्वारेको ❋ हमको तुरत देयँ मँगवाय।
सुनि दरवानीने पूँछा तब ❋ अपनो नेग देउ बतलाय॥
सुनतै रुपना बोलन लागो ❋ दरवानीसे कही सुनाय।

चारि घरी भरि चलै शिरोही ❀ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
यहै नेग हमरो द्वारे को ❀ सो राजासे कहौ सुनाय ।
इतनी सुनिकै गौ दरवानी ❀ औ राजासे लगे बतान ॥
बारी आया है महुबेको ❀ ऐपनवारी लीन्हें ठाढ़ ।
नेग आपनो वह मांगत है ❀ द्वारे बहै रक्तकी धार ॥
इतनी सुनतै राजा जरिगे ❀ नैना अग्नि ज्वाल होइ जायँ ।
तुरत बुलायो कुँवरसिंहको ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
जान न पावै महुबेवारो ❀ अबहीं शीश लेउ कटवाय ।
देर लागि गइ दरवाजेपर ❀ रूपना तौलौं पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी रतनसिंहको ❀ ऐपनवारी दई चलाय ।
सूरति देखो जब बारीकी ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
तब ललकारो लालसिंहको ❀ याको लेउ जँजीरन बांधि ।
इतनी सुनतै लालसिंहने ❀ रजपूतनसे कही सुनाय ॥
जान न पावे महुबेवारो ❀ याको शीश लेउ कटवाय ।
हल्ला करि दौ तब क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवार ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❀ अपनी मया मोह बिसराय ।
सुमिरन करिकै नारायनको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ॥
चरण लागिकै जगदंबाके ❀ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
चली शिरोही तब रुपनाकी ❀ क्षत्रिय गिरैं धरणि भहराय ॥
जैसे लड़िका गबड़ी खेलैं ❀ गिनि गिनि धरैं अगारू पांव ।
तैसेइ रुपना तहँपर विचलो ❀ क्षत्री काटि करैं खरिहान ॥
जौहर कीन्हो रुपना बारी ❀ वाके अंग न आवै घाव ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
घिरिगो रुपना सबै ओरसे ❀ नाहीं तनिको मिलै उबार ।
ऐड़ लगाई तब घोड़ाके ❀ औ राजातर पहुँचो जाय ॥
भालाकी नोकसे ऐपनवारी ❀ सो रुपनाने लई उठाय ।
घोड़ा बढ़ायो रुपना बारी ❀ फाटक निकरि गयो वापार ॥

दौरिके घेरो बहु क्षत्रिनने ❀ रुपनापै चलन लगी तलवार ।
सोचो रुपना तब अपने मन ❀ देखैं कहा करै करतार ॥
मारन लागो रुपना बारी ❀ औ घोड़ाको दियो बढ़ाय ।
मारत मारत रुपना चलिभो ❀ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ॥
रंग बिरंगो घोड़ा ह्वइगो ❀ औ बरातमें पहुँचो जाय ।
रुपन देखौ जब मलिखेने ❀ मनमें गयो सनाका खाय ॥
पूँछन लागे तब रुपनाते ❀ भैया हाल देउ बतलाय ।
कैसी गुजरी तहँ ड्योढ़ीपर ❀ रूपन हमहिं देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना तब मलिखेते ❀ हमसे कछू कही ना जाय ।
बड़े लड़ैया पर्वतवाले ❀ अपने आये प्राण बचाय ॥
धर्म चंदेलेको राखो हम ❀ नारायणने करी सहाय ।
धोखे न रहियो तुम माड़ौके ❀ जहँ लै लियो बापको दांव ॥
कठिन मवासी शहर कमायूँ ❀ यहँ है रतनसिंहको राज ।
सुलिखे ब्याहि लेउ जबहीं तुम ❀ तब हम जनिहैं तेज तुम्हार ॥
मन घबड़ाने सुनि मलिखे कछु ❀ औ आल्हातर पहुँचे जाय ।
खबरि सुनाई सब रुपनाकी ❀ आल्हा गये सनाका खाय ॥
तौलौं आये ऊदनि बांकुड़ा ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
गाफिल दादा काहे बैठे हौ ❀ अब द्वारेको होउ तयार ॥
इतनी सुनतै तुनि आल्हाने ❀ अपनो पंडित लियो बुलाय ।
साइति देखो दरवाजेकी ❀ पंडित साइति दई बताय ॥
अबहीं त्यार होउ द्वारेको ❀ अब ना राखौ देर लगाय ।
यहांकि बातैं तौ यहँ छोड़ौ ❀ अब आगेके सुनो हवाल ॥
तुरत बुलायो सेनापतिको ❀ राजा रतनसिंह महाराज ।
हुक्म दे दियो तब जल्दीसे ❀ सिगरी फौज लेउ सजवाय ॥
करो तयारी अब लड़बेकी ❀ अपने साजि साजि हथियार ।
जान न पावैं महुबेवारे ❀ सबके शीश लेउ कटवाय ॥
कुँवरसिंह औ लालसिंह यह ❀ दोनों बेटा लिये बुलाय ।

हुक्म दे दियो दोउ बेटनको ❋ बांसन लग्गी लेउ मंगाय ॥
सो गड़वाय देउ द्वारेपर ❋ तिनपर बाज देउ बैठाय ।
यह कहि पठवो नुनि आल्हासे ❋ पहले बाज लेउ उतराय ॥
ताके पीछे होय दुवारो ❋ तब भौरिनको करौ उपाय ।
जब सब आवैं दरवाजेपर ❋ तबहीं मूँड़ लेउ कटवाय ॥
इतनी सुनतै कुँवरसिंहने ❋ तुरतै लग्गी लई मंगाय ।
सो गड़वाय देइ द्वारेपर ❋ तिनपै बाज दिये बैठाय ॥
यक हरकाराको बुलवायो ❋ औ आल्हापै दियो पठाय ।
खबर करो जाय नुनि आल्हाको ❋ अब द्वारेको होउ तयार ॥
गौ हरकारा तब आल्हापर ❋ औ सब हाल कहो समुझाय ।
इतनी सुनतै नुनि आल्हाने ❋ सबै घरौआ लिये बुलाय ॥
हुक्म दे दियो सब शूरनको ❋ दरवाजेको होउ तयार ।
सम्हरिकै युद्ध करौ द्वारेपर ❋ राखौ धर्म चँदेले राय ॥
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❋ अपने बांधि लिये हथियार ।
चली बरायत दरवाजेको ❋ देखो कापर राम रिसायँ ॥
घरी चारि केरे अरसामें ❋ दरवाजेपर पहुँचे जाय ।
देखे शूर सभी महुबेके ❋ कुँवरसिंहने कही सुनाय ॥
यह प्रण ठानो है राजाने ❋ पहिले बाज लेउ उतराय ।
ताके पीछे होय दुवारो ❋ फिरि विवाहको करौ विचार ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ समरजीतसे कही सुनाय ।
बाज उतारि लेउ लग्गीसे ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
आगे बढ़िगै समरजीत जब ❋ लालसिंहने दइ ललकार ।
पांव अगारूको जो धरिहौ ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
हल्ला करिदौ लालसिंहने ❋ द्वारे चलन लगी तलवार ।
बढ़े शूरमा दोउ ओरनके ❋ सबके मारु मारु रट लागि ॥
झुरमुट ह्वैगो दरवाजेपर ❋ कोइ न धरै पिछारू पायँ ।
तब ललकारो उदनिबाँकुड़ा ❋ लालसिंहसे कही सुनाय ॥

दस दस रुपयेके नौकर हैं ❋ काहे डरिहौ मूँड कटाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ॥
इतनी सुनतै लालसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तौलौं मलिखे दाखिल ह्वैगे ❋ लालसिंहको दइ ललकार ।
गुर्ज उठायो लालसिंहने ❋ सो मलिखेपर दियो चलाय ॥
बायेंसे घोड़ी दहिने ह्वैगइ ❋ उनको राखि लियो भगवान ।
कावा दैके रनि मलिखेने ❋ लालसिंहपै कीन्हो वार ॥
ढालकि ओझड़ मलिखे मारी ❋ औ धरतीमें दियो गिराय ।
डंड बांधिलइ लालसिंहकी ❋ औ लश्करमें दियो पठाय ॥
तुरतै ऊदनिगै लग्गी पै ❋ रसबेन्दुलसे कही सुनाय ।
वारेसे मल्हना तुमको पालो ❋ अमखुरवनसे दूध पिआय ॥
धर्म चँदेलेको राखो अब ❋ लग्गीसे बाज लेउ उतराय ।
इतनी कहिकै ऐंड़ लगाई ❋ घोड़ा बेन्दुला दियो उड़ाय ॥
भालाकी नोकसे बाज उतारो ❋ सो आल्हाके धरो अगार ।
खबरि पहुंचि गइ रतनसिंहको ❋ लग्गीसे बाज लियो उतराय ॥
कैद करायो लालसिंहको ❋ औ लश्करमें दियो पठाय ।
इतनी सुनिकै रतनसिंहने ❋ कुँवरसिंहसे कही सुनाय ॥
खेत जीति बैरी जैहैं जब ❋ तब बल पौरुष वृथा तुम्हार ।
इतनी सुनितै कुँवरसिंहने ❋ अपने हाथ गहे हथियार ॥
जायके पहुंचे दरवाजेपर ❋ औ मलिखेसे कही सुनाय ।
सम्हरौ ठाकुर तुम घोड़ीपर ❋ हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ समरजीतिसे कही सुनाय ।
सम्हरिके खेलो रणखेतनमें ❋ राखौ धर्म चन्देले क्यार ॥
खैंचि शिरोही समरजीतने ❋ कुँवरसिंह पर दई चलाय ।
ढाल उठाई कुँवरसिंहने ❋ तापर भयो जड़ाका जाय ॥

ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली ❁ गद्दी कटि मखमलकी जाय।
कछुक घाव आयो हाथेमहँ ❁ बचिगै कुंवरसिंह सरदार॥
गुर्ज उठायो कुँवरसिंहने ❁ समरजीति पै दियो चलाय।
लगो चपेटा समरजीतके ❁ धरती गिरे तड़ाका खाय॥
मुश्क बांधिकै समरजीतको ❁ अपने दलमें दियो पठाय।
देखि हाल यह नरमलिखेने ❁ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय॥
जायके पहुंचे कुंवरसिंहपै ❁ भारी जाय दई ललकार।
खैंचि शिरोही मलिखे लीन्हीं ❁ औ हौदापर दई चलाय॥
कलश सोबरनके भुइं गिरिगे ❁ हौदा टूक टूक ह्वै जाय।
घाव न आयो कुँवरसिंहके ❁ दहिने भई शारदा माय॥
गुर्ज उठायो कुंवरसिंहने ❁ सो मलिखेपर दियो चलाय।
लगो चपेटा तब घोड़ीके ❁ घोड़ी सातकदम हटिजाय॥
यह गति देखी कामजीतने ❁ अपनी हथिनी दई बढ़ाय।
जाके पहुंचे कुंवरसिंहपै ❁ भाला नागदौनिको हाथ॥
भाला चलायो कामजीतने ❁ कुंवरसिंहपर चोट बचाय।
खैंचि शिरोही कामजीतने ❁ कुंवरसिंहपै दई चलाय॥
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❁ उनकी टूटि शिरोही जाय।
तब ललकारो कुंवरसिंहने ❁ अब तुम खबरदारह्वइ जाय॥
इतनी कहिकै गुर्ज उठायो ❁ कामजीतपै दियो चलाय।
कामजीत जूझे खेतनमें ❁ यह गति लिखी उदयसिंहराय॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❁ कुंवरसिंहपै पहुंचे जाय।
ढाल अड़ाई कुँवरसिंहने ❁ ऊदनि धमकि दई तलवार॥
ढाल फाटि गई गैंड़ावाली ❁ कुंवरसिंहको आयो घाव।
ढालकी औझड़ ऊदनि मारी ❁ कुंवरसिंहको लियो बँधाय॥
सुनी खबरि यह रतनसिंहने ❁ मनमें गये सनाका खाय।
जहां बेंदुलाको चढ़वैया ❁ राजा तहां पहूँचे जाय॥

करी अधीनी रतनसिंहने ❀ तुम सुनिलेउ बनाफर राय ।
अब हम जानो अपने मनमें ❀ तुम्हरो कोइ दुसरिहा नाहिं ॥
कैदिछांड़ि देउ तुम लड़िकनकी ❀ अबहीं भांवरि देउँ डराय ।
इतनी सुनिकै बुनि आल्हाने ❀ सबकी कैद दई छुड़वाय ॥
बोले राजा तब आल्हासे ❀ अकिले लड़िका देउ पठाय ।
आल्हा बोले तब राजासे ❀ संग घरोआ दिहै पठाय ॥
गंगा कीन्हीं रतनसिंहने ❀ अकिले सुलिखे लिये लिवाय ।
चली पालकी जनवासेसे ❀ पहुंची रंगमहलमें जाय ॥
फाटकबन्दी राजा करिदई ❀ बहिरो आवै न भितरो जाय ।
हुक्म दै दियो तब लड़िकनको ❀ लड़िकै कैद लेउ करवाय ॥
यह सुनि कुंवरसिंह पहुंचे ढिग ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करा जड़ाका वा पलकीपै ❀ छतुरी टूक टूक ह्वै जाय ॥
धरे दहिंगला जो पलकीमें ❀ सो सुलिखेने लियो बुलाय ।
खैंचिकै मारे कुंवरसिंहके ❀ तुरतै छूटि परी तलवारि ॥
झपटि शिरोही लइ सुलिखेने ❀ महलन गड़बड़ दियो मचाय ।
बारह शूर हने सुलिखेने ❀ तब राजाने कही सुनाय ॥
अब हम जानी अपने मनमें ❀ तुमसे हारि गई तलवारि ।
दुचितो करिकै तहं सुलिखेको ❀ राजा कैद लई करवाय ॥
चुंगलदहक डारि सुलिखेको ❀ ऊपर पत्थर दियो धराय ।
सुनी खबरि यह कलावतीने ❀ तब मालिनिसे कही सुनाय ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❀ अब असमैं मे होउ सहाय ।
पाती लिखिकै कलावतीने ❀ तब मालिनिको दई गहाय ॥
यह दै आऔ तुम आल्हाको ❀ हमरे निमक उरिण ह्वइ जाउ ।
मालिनिचलिभइजनवासेको ❀ औ लश्करमें पहुंची जाय ॥
तौलौं मिलिगौ उदनिबांकुड़ा ❀ सो मालिनिसे पूछन लाग ।
कहांसे आई औ कहं जैहौ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥

इतनी सुनिकै मालिनि बोली ❋ औ ऊदनिसे कही सुनाय ।
लड़िका ब्याहन गौमहलनमें ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
ऊपर पत्थर धरवायो नृप ❋ बेटी पाती दई पठाय ।
पाती लैलइ तब ऊदनिने ❋ औ मालिनिकोलों अगुवाय ॥
जायके पहुंचे नुनिआल्हापै ❋ औ पातीको दियो गहाय ।
खोलिकै पाती आल्हा बांची ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
हुक्म दै दियो तब आल्हाने ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
लूटि कराय लेउ राजाकी ❋ मारौ राज भंग ह्वै जाय ॥
इतनी सुनतै उदनि चलिभै ❋ जूझको डंका दौ बजवाय ।
चोब नगाड़ाके बाजतखन ❋ सिगरी फौज भई तैयार ॥
तोपैं चढ़ि गइं सब चरखिनपै ❋ ज्वानन बांधि लिये हथियार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
खबरि पहुंचि गइ रतनसिंहको ❋ उनहू फौज लई सजवाय ।
लगे मोरचा दोनों दलके ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआं उड़ानो उन तोपनको ❋ दोउ दल रही अंधेरिया छाय ।
गोला ओलाके सम छूटै ❋ गोली मेघ बूंदझरि लाय ॥
बंबके गोला छूटन लागे ❋ कह कह करै अगिनियां बान ।
गोला लागे जेहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
गोला लागै जौन ऊंटके ❋ दलमें गिरै चकत्ता खाय ।
गोला लागै जिन घोड़नके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वैजायं ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सरग मंडराय ।
बंबको गोला जिनके लागै ❋ सो लत्तासे जायं उड़ाय ॥
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❋ तिनका हाड़मांस छुटिजाय ।
तीरकिगांसी जिनके लागै ❋ क्षत्री गिरैं करौटा खाय ॥
बानको डंडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वै जायं ।
तोपैं धैं धैं लाली ह्वैगइं ❋ जिनपर हाथ धरो ना जाय ॥

चढ़ी कमनियां पानी ह्वैगइँ ❀ चुटकिनके गौ मांस उड़ाय ।
तोप रहकला पीछे परिगइ ❀ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
भाला बर्छी छूटन लागीं ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ।
खट खट खट खट तेगा बाजे ❀ बोलै छपक छपक तलवार ॥
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ॥
पैग पैग पर पैदल गिरिगै ❀ उनके दुइ दुइ पैग असवार ।
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
घैहा डारे हैं लोहूमें ❀ जिनके मारुमारु रटलाग ।
मुहर कटोरा पानी ह्वै गौ ❀ ढूँढ़े नीर मिलै है नायँ ॥
अपनो परायो ना पहिचानैं ❀ जिनके मारु मारु रटलागि ।
दोनों फौजैं यकमिल ह्वैगइँ ❀ कोई कुँवर न टारै पांव ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रणदुलहा चले बराय ।
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ।
पांव पिछारूको ना धरियो ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥
खटिया परिकै जो मरिजैहौ ❀ जगमें कोई न लैहै नाम ।
जो मरि जैहौ रणखेतनमें ❀ साखो चलो अगारू जाय ॥
जीतिकै चलिहौ जो महुबेको ❀ सोने कड़ा दिहैं डरवाय ।
दैदै पानी रजपूतनको ❀ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
भागे सिपाही पर्वतवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी कुँवरसिंहने ❀ अपनी घोड़ी दई बढ़ाय ॥
यह ललकार दई ऊदनिको ❀ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
शूर सिपाही ना कटवावो ❀ हम तुम खेलैं जूझ अघाय ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके ❀ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ।
जायकै पहुँचे कुँवरसिंहपै ❀ औ ऊदनिने कही सुनाय ॥

भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ तुरतै भांवरि देउ डराय ।
इतनी बात कहन पाये नहिं ❋ कुँवरसिंह लइ तेग निकारि ॥
जाय धमक्की बघ ऊदनिपर ❋ बाये उठी गैंड़की ढाल ।
तीनि शिरोही गहि गहि मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ कुंवरसिंहको दियो गिराय ।
कूदि बेदुलाते भुइं आये ❋ तुरतै डंड लई बंधवाय ॥
यह गति देखी लालसिंहने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
तौलौ मलिखे दाखिल ह्वैगे ❋ लालसिंहने कही सुनाय ॥
हमरी तुम्हरी अब बरनी है ❋ देखैं कापर राम रिसायं ।
यह मन भाई लालसिंहके ❋ अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
सो धरिधमको नरमलिखेपर ❋ मलिखे लैगे चोट बचाय ।
समरजीत दहिनेपर आये ❋ लाली खैंचि लई तलवारि ॥
सो धरिधमकी समरजीतपै ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ।
ढाल फाटिगइ गैड़ावाली ❋ गद्दी मखमलकी कटिजाय ॥
घाव न आयो कहुं देहीमें ❋ उनको राख लियो भगवान ।
खैंचि शिरोही समरजीत लइ ❋ लैके रामचन्द्रके नाम ॥
तब समझायो नरमलिखेने ❋ भैया सुनौ हमारी बात ।
हाथ न डरियो लालसिंहपै ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
मुश्कबांधि लेउ लालसिंहकी ❋ सातौ भांवरि लेउ डराय ।
यह कहिमलिखेसमरजीत से ❋ लालसिंह ढिग पहुँचे जाय ॥
कावा दैके लालसिंहकी ❋ मलिखे कैद लई करवाय ।
यह गति देखी रतनसिंहने ❋ आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
तौलौं आल्हा दाखिल हुइगै ❋ हथिपचशावद पर असवार ।
बोले आल्हा रतनसिंहसे ❋ राजा मानौं बात हमार ॥
अबहु तुम्हारो कछु बिगरो नहिं ❋ ना हमरो कछु भयो बिगार ।
भँवरि डराय देउ सुलिखेकी ❋ यामें दुऔ धर्म रहिजायँ ॥

यह मन भाय गई राजाके ❋ तब आल्हासे कही सुनाय ।
कैद छांड़ि देउ तुम लड़िकनकी ❋ अबहीं भांवरि देउँ डरवाय ॥
गरुये नाते हम पाये हैं ❋ औ समरत्थ बनाफर राय ।
करी अधीनी रतनसिंह जब ❋ आल्हा कैद दई छुड़वाय ॥
उनहीं पायन राजा चलिभे ❋ औ मलिखेको संग लिवाय ।
जायकै पहुँचे रंगमहलमें ❋ सुलिखेकी कैद दई छुड़वाय ॥
खंभ गड़ायो मलयागिरिको ❋ पावन मंडप दियो छवाय ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित वेदी रची बनाय ॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❋ भांवरि फिरैं बीर सुलिखान ।
खबरि भेजिदइ तुनि आल्हाको ❋ अपने नेगी देउ पठाय ॥
सुनत खबरि यह तब आल्हाने ❋ तुरतै नेगी लिये बुलाय ।
ढेबा ऊदनिको बुलवायो ❋ मोहरन तोड़ा दियो गहाय ॥
दोनों चलिभे रंगमहलको ❋ अपने नेगौ संग लिवाय ।
जायकै पहुँचे रंगमहलमें ❋ औ मड़येतर पहुँचे जाय ॥
नेग चार भौंरिनके करिदौ ❋ दान दक्षिणा दई बंटाय ।
तब फिर मलिखे बोलन लागे ❋ औ राजासे कही सुनाय ॥
विदा कराय देउ बेटीकी ❋ अपनी कूच जायँ करवाय ।
इतनी सुनतै रतनसिंहने ❋ बेटीकी बिदा दई करवाय ॥
बैठि कलावति जब पलकीमें ❋ मलिखे मुहरैं दई लुटाय ।
चली पालकी कलावतीकी ❋ औ लश्करमें पहुंची जाय ॥
हुक्म फेरिदौ तब आल्हाने ❋ लश्कर कूच देउ करवाय ।
इतनी सुनतै सब क्षत्रिनने ❋ तंबुअन मेख दई उखराय ॥
कूच कराय दियो लश्करकी ❋ औ महुबेमें पहुंचे जाय ।
पंद्रह दिनकी मंजिलि करिके ❋ गढ़ महुबेमें पहुंचो जाय ॥
खबरैं ह्वइ गईं रंगमहलमें ❋ मलहना लीन्हीं सखी बुलाय ।
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ तुरत पहूँचीं आय ॥

सखियां मंगल गावन लागीं ❀ परछनि होय बीर सुलिखान ।
परिछन करिकै तब दोउनकी ❀ आरति करी मल्हनदे रानि ॥
रुचना करिकै तब माथेमें ❀ ऊपर अक्षत दिये लगाय ।
करी निछावरि सब रानिनने ❀ सो नेगिनको दई बंटाय ॥
जितने ब्राह्मण थे महुबेमें ❀ दान दक्षिणा दई गहाय ।
मुखदिखरावा करि दुलहिनको ❀ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय ॥
जितने राजा आये बराती ❀ तिनकी बिदा दई करवाय ।
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❀ गुंजै सुनैं महिल परिहार ॥
आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❀ सो बंगलामें पहुंचे जाय ।
करी बन्दगी परिमालैको ❀ दोनों हाथ बांधि रहिजायँ ॥
हृदय लगाय लियो लरिकनको ❀ औ हँसि कही रजापरिमाल ।
हैं समरत्थी यह लड़िका सब ❀ जो पहाड़पर करो बिआहु ॥
युग युग जीवो पुत्र हमारे ❀ औ सब सुखी रहौ सब काल ।
ऐसे ब्याह भयो सुलिखेको ❀ सो हम कहिकै दियो सुनाय ॥
जेहि विधि ब्याह भयो धांधूको ❀ सो अब आगे करौं बखान ।
भई लड़ाई घनघोरी तहँ ❀ जहँ रणधीर सिंह बलवान ॥

श्रीः

बुखारेकी लड़ाई



(धाँधूका ब्याह)

दोहा—सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सुमिरन करिये श्रीगिरिजापति ❋ जिनके श्रीगणेशसे क्वार ।
विघ्नबिदारी सो कहियतु हैं ❋ भूले अक्षर देहिं सम्हार ॥
सहज बानिहै दयासिंधुकी ❋ थोड़े प्रेम मग्न हो जायँ ।
ऐसे प्रभुको ध्यान छोड़िकै ❋ केहिको और जपैं मनमायँ ॥
बाढ़ बढ़ावनको समुद्रकी ❋ जैसे पूर्ण चन्द्रमा जान ।
ज्ञान बढ़ावनको भक्तोंके ❋ श्रीशंकरजी दयानिधान ॥
कमल खिलावनको सूरज हैं ❋ जल बरसावनको घनमाल ।
सुख सरसावन पवन देवता ❋ जग आनन्द अग्निकी ज्वाल॥
कंस विनाशनको बनमाली ❋ रावण मरिबोको श्रीराम ।
काज संवारनको भक्तनके ❋ भोलानाथ बुद्धि बलधाम ॥
रोग नशावनको धन्वंतरि ❋ लंका जारनको हनुमान ।
जग उपजावनको ब्रह्मा हैं ❋ रक्षा करन हेत भगवान ॥
इतनी बेरा अब कह गैये ❋ सादर केहिको लीजे नाम ।
संझा तारनि तुमको गैये ❋ घर घर दीपक बारैं बाम ॥
चरि चरि गौवैं बनसे डगरीं ❋ बछरन दूध पियाये आय ।
उड़ि उड़ि पंछिउ लीन्ह बसेरो ❋ ऋषिमुनि संध्या करैं बनाय॥
कण्ठ गवैयाको जो बांधे ❋ बांधै ताल मंजीरन क्यार ।
जो कोई बांधै मेरि ढोलकको ❋ ताको करै कालिका क्षार ॥
जागे शिवशंकर पर्वतपर ❋ अपनी डमरू लई उठाय ।

जाय पहूँचे नंदी गणतर ❋ आक धतूराभंग चढ़ाय ॥
फेंट लगाये हैं सांपनकी ❋ औ चन्द्रमा दिपै लिलार ।
कूदि नादियापर चढ़ि बैठे ❋ पहुंचे हथियापुर दिगद्वार ॥
भोलानाथ मगनमन अन्तर ❋ फाटक निकट पहूँचे जाय ।
पांचौ पांडव जहां बिराजै ❋ कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर राय ॥
भीमरुअर्जुन नकुल बीरतहं ❋ औ सहदेव बीर बलवान ।
बाजो घंटा नन्दीगणको ❋ सुनते अर्जुन गही कमान ॥
को अपराधी है द्वारे पर ❋ घंटा सुनाय दीन्ह मनताप ।
सन्मुख देखो जब अर्जुनको ❋ तब शंकरने दियो सराप ॥
जन्म तुम्हारो कलियुग युगमें ❋ ह्वैहै बिकट क्षत्रियन क्यार ।
बहुत युद्ध ह्वैहै राजनते ❋ तुम सुनि लेउ बात सरदार ॥
पांचौ भाई तुम अवतरिहौ ❋ करिहौ समर भयंकर जाय ।
रानि द्रौपदी पृथीराज घर ❋ बेला नाम कहैहै जाय ॥
वंश नशैहै बहु क्षत्रिनको ❋ रणमें कठिन होय संग्राम ।
यह कहि चलिभे शिवशंकरजी ❋ गै कैलास आपने धाम ॥
छोड़ि सुमिरिनी अब आगेमैं ❋ बरणौं कलह बुखारे क्यार ।
जैसे ब्याहु भयो धांधूको ❋ जो दुःशासनको अवतार ॥
सत्य यथार्थ ब्याह धांधूको ❋ सो हम तुमको दिहैं सुनाय ।
बलख बुखारा दो नगरी हैं ❋ तिनको भेद देउँ बतलाय ॥
बलख नगरके नृप अभिनंदन ❋ सेवक जौन अँबिका क्यार ।
देवि भवानीको सुमिरन करि ❋ जीतहिं समरमाहिं निरधार ॥
जाकी बेटी चित्तररेखा ❋ ब्याहे ताहि ईदला क्वार ।
सो आगे हम वर्णन करिहैं ❋ जेहिविधिब्याही राजकुमारि ॥
बलख बुखाराके अन्तरमें ❋ है दश कोश केर मैदान ।
नगरबुखाराके अधिपति जो ❋ हैं रणधीर सिंह बलवान ।
भाई चचेरे दोनों राजा ❋ श्रीअभिनन्दन औ रणधीर ।
चित्तररेखा गई न्यौतेमें ❋ देखे तहां इंदलसी क्वांर ॥

रूप देखिके मोहित ह्वैगइ ❀ मनमें बसा परिभना लाल।
जेठ दशहराकी बुड़कीमें ❀ सो हरिलाई सुआ बनाय॥
यह सब आल्हा आगे कहिहौं ❀ यहां इशारा दियो बताय।
नगर बुखाराके महराजा ❀ जो रणधीर सिंह बलवान॥
तिनके घरमें कन्या जन्मी ❀ जेहि मुख देखत चन्द्र लजाय।
नाम धरायो ताको केसरि ❀ केसर रंग रूप अधिकाय॥
बारह वर्षकी जब कन्या भई ❀ नित नित खेल करैसखियन संग।
यक दिन एक सखी यह बोली ❀ केशरि सुनौ हमारी बात॥
जितनी सखियां तुमरे संगको ❀ तिन सबको है गयो विवाह।
क्या कुलहीने बाप तुम्हारे ❀ जो तुम्हरो नहिं करो विवाह॥
आय कायली गई केसरिको ❀ सखियन संग दियो बिलगाय।
तुरतै चलि भइ रंगमहलको ❀ औ मातातर पहुंची जाय॥
आवत देखो जब केसरिको ❀ चम्पा छाती लियो लगाय।
बोली रानी तब केसरिसे ❀ बेटी हाल देउ बतलाय॥
काहे अनमन तुम आई हौ ❀ काहे बदन गयो कुम्हिलाय।
बात कही हो जो काहूने ❀ ताकी जीभ लेऊँ निकराय॥
बोली केसरि तब मातासों ❀ माता सुनौ हमारी बात।
जितनी सखियां हमरे संगकी ❀ ब्याही गौने रौने जायं॥
ताना मारतिहैं सखियां सब ❀ क्यों तुम्हरो नहिं भयो विवाह।
सुनो हाल जब यह चम्पाने ❀ तब बांदीको लियो बुलाय॥
बांदी आई जब रानीपै ❀ तब रानीने कही सुनाय।
जलदी जावो तुम बंगलामें ❀ औ राजासे कहौ सुनाय॥
बांदी चलके गइ राजातर ❀ औ राजासे कही सुनाय।
तुमहिं बुलायो हैं रानीने ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ॥
सुनत खबरिया राजा चलिभै ❀ रंगमहलमें पहुंचे जाय।
सूरति देखी जब राजाकी ❀ रानी उठी भरहरा खाय॥
लई बिजनियां कर फूलनकी ❀ औ राजापर करै बयार।

पलंग बिछाय दियो पचरंगा ❀ रेशम तकिया दई लगाय ॥
नीको मन राजाको पायो ❀ तब रानीने कही सुनाय ।
घर ये बेटी स्यानी ह्वइ गइ ❀ ताके अब कहुँ करो विवाह ॥
टीका भेजि देउ जल्दीसे ❀ केहु राजाके देउ चढ़ाय ।
यह मन भाय गई राजाके ❀ औ बंगलामें पहुँचे जाय ॥
तीन लाखको टीका लैकै ❀ सो राजाने दियो धराय ।
शाल दुशाला मोहन माला ❀ चीरा कलंगी दई धराय ॥
साठि पालकी दुइसौ गजरथ ❀ अच्छे घोड़ा एक हजार ।
पांच अंगूठी बहुत मोलकी ❀ जिनमें हीरा जड़े बनाय ॥
टीका लैकै तब राजाने ❀ सब नेगिनको दौ सौंपाय ।
चिट्ठी लिखिदइ महाराजने ❀ तामें लिखा घोर संग्राम ॥
पहली लड़ाई है धूरे पर ❀ दुसरी द्वार युद्ध घमसान ।
तिसरी लड़ाई है मड़येमें ❀ सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
ऐसी चिट्ठी लिखि राजाने ❀ मोती बेटा लियो बुलाय ।
चिट्ठी दैकै राजा बोले ❀ तुम संग जाउं नेगियन क्यार ॥
नीको लड़िकाजहं देखियो तुम ❀ तहं तुम टीका दियो चढ़ाय ।
एक न जैयो नगर महोबे ❀ जहं पर बसै बनाफर राय ॥
गढ़ दिल्लीमें एक धांधू है ❀ ओछी जाति बनाफर राय ।
बहुतै समझायो मोतीको ❀ औ टीका संग दियो पठाय ॥
लैकै टीका मोती चलिभै ❀ चारौ नेगी संग लिवाय ।
राह पकरिलइ गढ़कनउजकी ❀ मोती मनमें कियो विचार ॥
टीका चढ़ैहैं हम लाखनिको ❀ राजा जैचंदके दरबार ।
ऐसे सोच करत मोतीमन ❀ गढ़ कनउजमें पहुंचे जाय ॥
मोती पहुंचे जब फाटकपर ❀ दरवानी तब पूछन लाग ।
कहांसे आये औ कहं जैहौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ॥
बोले मोती दरवानीसे ❀ राजै खबरि देउ पहुंचाय ।
नगर बुखारेसे आये हम ❀ औ मोती है नाम हमार ॥

टीका लाये हम बहिनीको ❀ सुनते धावन गौ दरबार ।
करी बन्दगी तब राजाको ❀ औ मोतीको कहो हवाल ॥
बोले जयचँद दरवानीते ❀ अबहीं नजरि गुजारौ आय ।
उनहीं पायँन धावन लौटो ❀ मोतीसिंहसे कही सुनाय ॥
तुमहि बुलायो है राजाने ❀ अबहीं चलो हमारे साथ ।
मोती चलिभे सँग नेगीलै ❀ पहुँचे बीच कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी मोती ठाकुर ❀ पाती गद्दी दई चलाय ।
खोलिकै पाती राजा बांची ❀ औ टीकाको दो लौटाय ॥
लैकै पाती मोती चलिभै ❀ नैना गढ़में पहुंचे जाय ।
तहं पाती पढ़ि नैपालीने ❀ तुरतै टीका दियो फिराय ॥
देश देश मोती ह्वै आये ❀ काहू टीका कबूलो नाहिं ।
राह बुखारेकी पकरी तब ❀ मोती मनमें कियो विचार ॥
लड़िका पूछलेयं माहिलसे ❀ हैं जौ उरईके परिहार ।
राह पकरि लइ उरईकी तहं ❀ ताहर खेलत फिरैं शिकार ॥
संग सिपाही बहु ताहरके ❀ मोतीसिंहपर परी निगाह ।
चारौ नेगी संग देखे जब ❀ ताहर मनमें सोचन लाग ॥
ब्याह भयो नहिंकहुं धांधूको ❀ औ यह टीका लीन्है जात ।
टीका चढ़ै जो यह धांधूको ❀ तौ सब काम सिद्धि ह्वै जाय ॥
तौलौं मोती सम्मुहे आये ❀ तुरतै ताहर पूछन लाग ।
कहांसे आये औ कहं जैहौ ❀ सांचो हाल देउ बतलाय ॥
करा बहाना तब मोतीने ❀ करिहैं जाय गंग स्नान ।
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❀ काहे झूठी कहत बनाय ॥
चारौ नेगी संग तुम्हारे ❀ तब मोतीने कही सुनाय ।
टीका लाये हम बहिनीको ❀ सबने टीका दियो फिराय ॥
अब हम जैहैं गढ़ उरईको ❀ पुछिहैं जाय महिल परिहार ।
इतनी सुनिकै ताहर बोले ❀ मोती मानौं वचन हमार ॥
लड़िका क्वांरो है दिल्लीमें ❀ सूबा जौन बनाफर राय ।

बोले मोती तब ताहरसे ❀ नाही हुक्म बघेले क्यार ॥
ब्याह न होइहै बन्नाफरसे ❀ ओछी जाति बनाफरराय ।
गुस्सा होइ तब ताहर बोले ❀ नहिं कुलहीन बनाफरराय ॥
यह कहि बांधि लियो मोतीको ❀ औ अपने संग लिये लिवाय ।
तिसरे दिन पहुंचे दिल्लीमें ❀ जहं दरबार बीर चौहान ॥
जायकै ताहर दाखिल होइगे ❀ पृथीराजको करी सलाम ।
लैकै पाती टीका वाली ❀ सो गद्दीपर दई चलाय ॥
पाती बांचि तुरत लौटाई ❀ औ ताहरसे कही सुनाय ।
चाह नहीं है हमैं ब्याहकी ❀ तब ताहरने कही सुनाय ॥
ब्याह करि दिहो जो धांधूको ❀ तौ फिरि कहीं जानको नाहिं ।
काहे दादा टीका फेरत ❀ सातो भांवरि लिहौं डराय ॥
तौलौं चौंड़ा बोलन लागो ❀ काहे टीका दिहो फिराय ।
तुमहि हँसौआ को डर नाहीं ❀ जानत तुमहिं सकल संसार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ औ चौंड़ासे कही सुनाय ।
मनहिं तुम्हारे जैसे आवै ❀ तैसे करो चौंड़िया राय ॥
हुक्म करायो तब महलनमें ❀ लागे होन मंगलाचार ।
लक्ष्मण पंडितको बुलवायो ❀ पंडित चौक दई पुरवाय ॥
भयो बुलौआ तब मोतीको ❀ औ धांधूको लियो बुलाय ।
सखियां मंगल गावन लागी ❀ पंडित टीका दो चढ़वाय ॥
टीका चढ़ायो मोती ठाकुर ❀ फिर न कछू करी इनकार ।
चारो नेगी जो मोतीके ❀ ताहर गहनो दो पहराय ॥
बचि रहो गहनो सो तुरतैले ❀ मोतीसिंहको दो पकराय ।
और जो नेगी होयँ तुम्हारे ❀ तिनको गहनो दीजौ जाय ।
साइति पूछी तब ब्याहेकी ❀ सो पंडितने दई बताय ॥
मार्गमास तेरसि अँधियारी ❀ सुन्दरलग्न परी यह आय ।
यहसुनि चलिभै मोतीसिंह तब ❀ चारो नेगी सङ्ग लिवाय ॥
चारि दिना मारगमें बीते ❀ पहुँचे नगर बुखारे जाय ।

राजा पूँछो तब मोतीसे ❋ टीका कहाँ चढ़ायो जाय ।
हाथ जोरिकै मोती बोले ❋ दादा कछू कही ना जाय ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❋ टीका काहु कबूलो नाहिं ।
तब हम चलिभे गढ़उरईको ❋ ताहर मिले राहमें आय ॥
पूँछो हाल तहां ताहरने ❋ हमने हाल दियो बतलाय ।
उन लड़िका धांधू बतलायो ❋ हमने बहुत करी इन्कार ॥
बड़े लड़ैया दिल्लीवारे ❋ उनके कैद लई करवाय ।
लैकै पहुँचे गढ़ दिल्लीमें ❋ औ टीका उन लियो चढ़ाय ॥
इतनी सुनतै राजा जरिगै ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
मोती बोले तब राजासे ❋ दादा सोच देउ बिसराय ॥
ब्याहन अइहैं जब दिल्लीसे ❋ सबके मूँड लिहैं कटवाय ।
कछू दिनाको अरसागुजरो ❋ अगहन मास पहूँचो आय ॥
बोलो चौंड़ा पृथीराजसे ❋ अब बरातको होउ तयार ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ अपनो कलमदान मँगवाय ॥
पाती लिखिकै सब राजनको ❋ न्योता भेजि दियो तत्काल ।
देश देशके राजा आये ❋ औ धूरे पर कियो मुकाम ॥
सजी बरायत गढ़ दिल्लीमें ❋ महलन होय मंगलाचार ।
ब्याहकि रीति होन लागी सब ❋ पंडित वेदी रची बनाय ॥
तेल चढ़ायो तब धांधूको ❋ औ सब नेग दियो करवाय ।
बोले पृथीराज ताहरसे ❋ बेटा फौज होय तैयार ॥
पहुँचे ताहर तब लश्करमें ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
बजे नगारा गढ़दिल्लीमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ लश्कर तुरत भयो तैयार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
लश्कर सजिगौ दिल्लीवालो ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
बारह जोड़ी बजे नगारा ❋ बाजै तुरही औ करनाल ॥
नौसै झंडा हैं लश्करमें ❋ मानौ बिजलीसी चमकाय ।

बावन झण्डा है निशानके ❀ तिनमें ध्वजा रहे फहराय ॥
कोइ नालकी कोइ पालकी ❀ कोई गजरथपर असवार ।
सजी पालकी तब धांधूकी ❀ तापर धांधू भये सवार ॥
तेगा लैके वर्दवानको ❀ सो पलकीमें लियो धराय ।
फिरि दल उमड़ो पृथीराजको ❀ आठकोसलौ लगी कतार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ मारू डंका दौ बजवाय ।
बारह दिनकी मंजिल करिकै ❀ पहुँचे नगर बुखारे जाय ॥
पांच कोस जब रहा बुखारा ❀ डेरा तहां दियो डरवाय ।
तँबुआ लगि गये सब क्षत्रिनके ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
जीन उतरि गये सब घोड़नके ❀ क्षत्री करन गये अस्नान ।
ताहर बोले पृथीराजसे ❀ दादा पंडित लेउ बुलाय ॥
साइति पूछि लेउ द्वारेकी ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ लक्ष्मण तुरत पहूंचे आय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
साइति नीको है द्वारेकी ❀ द्वारो होय बनाफर क्यार ॥
छेदा बारीको बुलवायो ❀ औ राजाने कही सुनाय ।
ऐपनवारी तुम लै जावौ ❀ औ बरातको कहो हवाल ॥
इतनी सुनते छेदा बारी ❀ अपनो घोड़ा लियो सजाय ।
कूदि बछेरापर चढ़ि बैठो ❀ औ द्वारेपर पहुंचो जाय ॥
बोलो दरवानी बारीसे ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कहांसे आये औ कहं जैहौ ❀ तब छेदाने कही सुनाय ॥
आई बरायत गढ़ दिल्लीसे ❀ छेदा बारी नाम हमार ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ राजै खबरि सुनावो जाय ॥
इतनी सुनकै गौ दरवानी ❀ औ राजासे कहो हवाल ।
सुनी खबरिया जब राजाने ❀ मोती बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो तब मोतीको ❀ तुम डचोढ़ीपर देखो जाय ।

बारी आयो है दिल्लीसे ❀ ताको संगै लावौ जाय ॥
देर लागि गइ दरबानीको ❀ छेदा घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जहां कचेहरी महाराजकी ❀ बारी सम्मुहे पहुँचो जाय ॥
सांगकी नोकसे ऐपनवारी ❀ सो गद्दी पर दई चलाय ।
बोलो छेदा तब राजासे ❀ हमरो नेग देउ मंगवाय ॥
बोले राजा तब छेदासे ❀ अपनो नेग देउ बतलाय ।
सुनतै छेदा बोलन लागो ❀ औ महाराज बघेले राय ॥
चारि घरी भरि चलै शिरोही ❀ द्वारे बहै रक्तकी धार ।
यही नेग हमरो चहियत है ❀ सोई अबहिं देउ मंगवाय ॥
इतनी सुनितै राजा जरिगै ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
शीश काटि लेउ या बारीको ❀ टटुआ टायर लेउ छिनाय ॥
इतनी सुनिकै क्षत्री झपटे ❀ अपने हाथ लियो हथियार ।
जायके पहुँचे वा छेदापर ❀ छेदा खैंचि लई तलवारि ॥
नौसै क्षत्रिनके दंगलमें ❀ अकिलो बारी परै दिखाय ।
तेगा मारै जेहि क्षत्रीके ❀ तेहि धरतीमें देइ गिराय ॥
ऐंड लगाय दई घोड़ाके ❀ औ राजापै पहुँचो जाय ।
नोक मारिकै तब भालाकी ❀ ऐपनवारी लई उठाय ॥
चाबुक मारि दियो घोड़ाके ❀ फाटक निकरि गयो वापार ।
छेदा पहुँचो जब लश्करमें ❀ ताहर वासे पूछन लाग ॥
कैसी गुजरी दरवाजेपर ❀ छेदा हाल देउ बतलाय ।
छेदा बोला तब ताहरते ❀ द्वारे बही रक्तकी धार ॥
देवि शारदा दहिने ह्वैगइ ❀ अपने आये प्राण बचाय ।
यहांकि बातैं तौ यहँ छांड़ौ ❀ अब आगेके सुनौ हवाल ॥
राजा सोचैं अपने मनमें ❀ धांधूकि कैद लेउ करवाय ।
सोचि समझि दूती बुलवाई ❀ तिनसे राजा कही सुनाय ॥
बाना बदलि जाउ लश्करमें ❀ धांधुइ छलिकै लावौ जाय ।
इतनी सुनतै इक दूतीने ❀ अपने सोलह किये सिंगार ॥

बैठि पालकी रंगबिरंगी ❀ ऊपर झूल सुनहरी डार ।
तामें झालरि है मोतिनकी ❀ शोभा जासु वरणि नहिं जाय ॥
साथ सहेली लैकै चलिभइ ❀ डोला तिनके संग पचास ।
सजिकै डोला तुरतै चलिभइ ❀ औ बागनमें पहुँची जाय ॥
यक तालाब बहुत सुन्दर तहँ ❀ मठिया तहां भगौती क्यार ।
सखियां उतरि परी डोलनते ❀ औ बगियामें घूमन लागि ॥
धांधू आये थे नहानको ❀ सो बगियामें पहुँचे जाय ।
तालकी शोभा देखत देखत ❀ सब सखियन तन रहे निहारि ॥
डारि मोहिनी दइ दूतीने ❀ औ धांधूको लियो बुलाय ।
तासे धांधू पूँछन लागे ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
सुनिकै दूती बोलन लागी ❀ हम राजाकी राजदुलारि ।
हमको ब्याहन आये बनाफर ❀ तुरतै धांधू कही सुनाय ॥
हमही तुमको ब्याहन आये ❀ औ धांधू है नाम हमार ।
बोली दूती तब धांधूसे ❀ हमरे महल चलो महराज ॥
रैनमाहिं हिलमिलि बातैं करि ❀ भोरहिं तुमहिं दिहैं पहुंचाय ।
यहु मन भाय गई धांधूके ❀ तब दूतीसे कही सुनाय ॥
कैसे संग चलें तुम्हरे हम ❀ सो तुम जतन देउ बतलाय ।
जो सुनि पावै बाप तुम्हारे ❀ हमरी कैद लेयँ करवाय ॥
यह सुनि दूती बोलन लागी ❀ तुम डोलामें बैठो आय ।
चलो हमारे साथ महलमें ❀ हमरो महल अलग दिखलाय ॥
रैनि बसेरो करि हमरे घर ❀ भोरहिं तुमहिं दिहौं पहुँचाय ।
इतनी बात सुनी धांधूने ❀ अपनो नौकर लियो बुलाय ॥
बोले धांधू तब नौकरसे ❀ हाथी तुम लश्कर लै जाउ ।
खबरि न करियो तुम राजासे ❀ हम तनि नगर बुखारे जायँ ॥
इतनी सुनिकै चलो महावत ❀ औ लश्करमें पहुँचो जाय ।
हाथी बांधि दियो डेरामें ❀ काहुइ खबरि जताई नाहिं ॥
धांधू बैठे इत डोलामें ❀ औ महलनमें पहुँचे जाय ।

दूती तुरत गई राजा पर ❋ औ धांधूको कहो हवाल ॥
राजा पहुंचे तुरत महलमें ❋ धांधुइ भकसी दियो डराय ।
बांदी आई तब केसरिको ❋ औ बेटीसे कही सुनाय ॥
तुमहिं बियाहन धांधू आये ❋ राजा भकसी दियो डराय ।
छल करि दूती ले आई है ❋ राजा कैद लियो करवाय ॥
इतनी सुनिलइ जब केसरिने ❋ तुरतै कलमदान लै हाथ ।
लिखी हकीकत पृथीराजको ❋ पढ़ियो याहि बीर चौहान ॥
लड़िका लाये जो ब्याहनको ❋ सो राजाने लियो मंगाय ।
डारि भकसीमें दीन्हों तेहि ❋ ताको तुरतै करौ उपाय ॥
लिखिकै पाती यह केसरिने ❋ सो बांदीको दई गहाय ।
पाती लैके बांदी चलि भइ ❋ औ लश्करमें पहुंची जाय ॥
पाती दै दीन्हीं धावनको ❋ औ सब हाल कहो समुझाय ।
धावन पहुंचौ पृथीराजपै ❋ औ पाती दै कही हवाल ॥
पाती बांची पृथीराजने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
कैसे दूती धांधुइ लै गइ ❋ हमको काहु जतायो नाहिं ॥
सुनी हकीकत जब ताहरने ❋ तब राजासे कही सुनाय ।
अबहिं छुड़ैहैं हम धांधूको ❋ सातौ भांवरि लिहैं डराय ॥
ताहर पहुंचि गये लश्करमें ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय ।
बजो नगाड़ा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं जो लश्करमें ❋ सो चरखिन पर दई चढ़ाय ।
हाथी घोड़ा ऊंट सजाये ❋ क्षत्री तुरत भये तैयार ॥
ताहर बोले सब क्षत्रिनसे ❋ यारौं रखियो धर्म हमार ।
तीनि लाख पैदल सबसजिगे ❋ हाथी सजिगै पांच हजार ॥
सात लाख लश्कर दिल्लीको ❋ सो अब सजिकै भयो तैयार ।
बावन झंडा घूमन लागे ❋ मारू डंका दौ बजवाय ॥
यक हरकारा दौरत आयो ❋ जहं रणधीरसिंह नरराय ।
करी बन्दगी महराजाको ❋ औ लश्करको कहो हवाल ॥

लश्कर सजिकै पृथीराजको ❀ सो धूरे पर पहुंचो आय ।
इतनी सुनतै रणधीरसिंहने ❀ मोती बेटा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो महराजाने ❀ अपनो लश्कर लेउ सजाय ।
इतनी सुनतै मोती चलिभै ❀ औ लश्करमें पहुंचो जाय ॥
तुरत नगड़चीको बुलवायो ❀ तुरतै डंका दौ बजवाय ।
सब दलसजिगौ तब मोतीको ❀ जाको सजत न लागीवार ॥
सजो बछेड़ा जहं ठाढ़ो थो ❀ तापर मोती भये सवार ।
कूच कराय दियो लश्करमें ❀ औ समुहेपर पहुंचो जाय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो मोतीने ❀ ओ समुहे ह्वै कही सुनाय ।
कौन सौ राजा चढ़ि आयो है ❀ सो समुहे ह्वै देइ जवाब ॥
आगे बढ़िकै ताहर बोले ❀ औ समुहे हुइ दियो जवाब ।
हम चढ़ि आये हैं दिल्लीसे ❀ ब्याहन आये बनाफरराय ॥
ब्याह कराइ देउ बहिनीको ❀ नाहक रारि बढ़ाई आय ।
इतनी सुनिकै मोती बोले ❀ चुप्पै लौटि जाउ महराज ॥
ब्याह न ह्वइहै यहं धांधूको ❀ ओछी जाति बनाफरराय ।
दुसरी करिहौ जो हमसे तुम ❀ मारों गर्द गर्द ह्वइजाय ॥
बोले ताहर तब मोतीसे ❀ मोती अक्किल गई तुम्हारि ।
डण्ड बांधिकै मैं राजाकी ❀ सातौ भांवरि लिहौं डराय ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगै ❀ औ बातनमें बाढ़ी रारि ।
हुक्म देदियो तब दोउनने ❀ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपनके ❀ तोपन आगी दई लगाय ।
गोला छूटैं दोनों दलमें ❀ गोली मन्न मन्न मन्नाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ कहकह करै अगिनियां बान ।
सर सर सर सर गोला छूटैं ❀ मन मन परी तीरकी मारु ॥
चारि घरी भरि गोली बरसो ❀ तोपन हाथ धरे ना जायं ।
लई शिरोही तब क्षत्रिनने ❀ लम्बे बन्द करै हथियार ॥
खटखट खटखट तेगा बाजै ❀ बोलैं छपक छपक तलवार ।

चलै शिरोही मानाशाही ❀ औ बूँदीकी असल कटार ॥
डेढ़ पहर भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।
तेगा बाजै दोनों दलमें ❀ कौंधा चाल चलै तलवार ॥
तौलौं जीवनि मालिनि आई ❀ अपनी जादू दई चलाय ।
पत्थर फौज करी पिरथीकी ❀ उनकी कछू पेश ना जाय ॥
यह गति देखी पृथीराजने ❀ दिल्ली कूच गये करवाय ।
सुनी खबरि यह केसरिबेटी ❀ दिल्ली गये पिथौरा राय ।
केसरि सोची तब अपने मन ❀ पातीमहुबे देउ पठाय ॥
पिंजरा लीन्हों तब तोताको ❀ औ तोतासे कही सुनाय ।
बारेसे पाला हमने तुमको ❀ अब असमैमें होउ सहाय ॥
पाती लै जावो महुबेकी ❀ मल्हनै खबरिदेउ पहुँचाय ।
यह कहि पाती लिखि केसरिने ❀ कंठमें बाँध दई तत्काल ॥
सुआ उड़ानो तब हुवनांसे ❀ पहुँचो गढ़ महुबेमें जाय ।
गोदी बैठि गयो मल्हनाके ❀ मल्हना तोते देखन लागि ॥
कंठमें पाती मल्हना देखी ❀ तब पाती लै बांचनि लागि ।
पाती बांची जब मल्हनाने ❀ यक हरकारा लियो बुलाय ॥
बोली मल्हना हरकारेसे ❀ अबहीं दश पुरवा लौ जाउ ।
संगहि लावो तुम ऊदनिको ❀ धावन तुरतै पहुँचो जाय ॥
जहां कचेहरी थी आल्हाकी ❀ धावन करी बन्दगी जाय ।
बैठो देखो तहँ ऊदनिको ❀ तिनसे धावन कही सुनाय ॥
तुमहिं बुलायो मल्हना रानी ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ ।
इतनी सुनतै ऊदनि चलिभये ❀ औ मल्हनाढिग पहुँचे आय ॥
चरणलागिकै रनिमल्हनाके ❀ ऊदनि हाथ जोरि रहिजायँ ।
मल्हना रानी तब ऊदनिको ❀ पाती तुरत दई पकराय ॥
पाती पढ़िकै ऊदनि बोले ❀ माता धीर धरो मनमाहिं ।
अबहीं जैहौं मैं महुबेसे ❀ औ धांधूको लिहौं छुड़ाय ॥
सातौ भांवरि मैं डरवैहौं ❀ तौ मैं दस्सराजको लाल ।

इतनी कहिके ऊदनि चलिभै ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ।
पाती दीन्ही केसरिवाला ❋ औ सब हाल कहो समुझाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनिसे ❋ भैया मनमें करौ विचार ।
पृथीराजको सूबा धांधू ❋ तुम्हरे आवै कौने काम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
भाई लागत हमरो धांधू ❋ सो रणधीर लियो बँधवाय ॥
ब्याहि जो लेहौ तुम धांधूको ❋ ह्वैहै युगन युगनलौं नाम ।
पिरथी जनिहैं अपने मनमें ❋ हैं बड़वीर महुबिया ज्वान ॥
शरणागत है केशरि बेटी ❋ तुमको पाती दई पठाय ।
जो तुम बैठि रहौ महुबेमें ❋ बहु बदनामी होय तुम्हारि ॥
धांधू मरि जावै भकसीमें ❋ तौ मोहिं जीबेको धिक्कार ।
हम तो जैहैं नगर बुखारे ❋ औ भैयाको लिहैं छुड़ाय ॥
इतनी सुनिकै तब आल्हाके ❋ मनमें आय गई तत्काल ।
हुक्म देदियो तब ऊदनिको ❋ अपनी फौज लेउ सजवाय ॥
सुनतै ऊदनि गये लश्करमें ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय ।
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये असवार ॥
आल्हा ऊदनि ढेबा मन्ना ❋ सजिकै तुरत भये तैयार ।
जायके पहुंचे परिमालैते ❋ सो सब हाल कहो समुझाय ॥
आज्ञा लैकै चन्देलेकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
तीनि पहरको धावा करिकै ❋ सिरसा गढ़में पहुंचे जाय ॥
पाती लैकै केसरिवाली ❋ सो मलिखेको दई गहाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा जल्दी होउ तयार ॥
संगै लै लेउ पृथ्वीराजको ❋ सोऊ चलै तुम्हारे साथ ।
सुनतै त्यार भये मलिखे तब ❋ घोड़ी कबुतरी लई सजाय ॥
हुक्म दैदियो मलिखे ठाकुर ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ।
डंका बाजो सिरसा गढ़में ❋ तुरतै फौज भई तयार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।

बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दईं चढ़ाय ॥
नौसे झंडा उड़ैं सुनहरे ❋ मानौं बिजली सा चमकाय ।
कोइ नालकि कोइ पालकिन ❋ कोईं गजरथपर असवार ॥
बारह जोड़ी बजै नगाड़ा ❋ नौसै धौंसे शब्द अपार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ॥
आयो लश्कर ब्रह्मानँदको ❋ सोऊ सिरसा पहूँचो आय ।
औ जगनायक जगनेरीके ❋ सोऊ तुरत पहूँचे आय ॥
चारौं लश्कर मिलिकै चलिभे ❋ गढ़ दिल्लीमें पहुँचे आय ।
ऊदनि बोले नरमलिखेसे ❋ चलिकै मिलो पिथौराराय ॥
मलिखे ऊदनि दोनों चलि भये ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय ।
जहां कचेहरी पृथीराजकी ❋ दोनों उतरि परे अरगाय ॥
पृथीराज देखो दोनोंको ❋ तब आदरसे गये लिवाय ।
चौकी बिछवाई सोनेकी ❋ तापर दियो गलीचा डारि ॥
तापर बैठारो दोनोंको ❋ औ दोनोंसे लगे बतान ।
कैसे आये तुम दोनों हौं ❋ अपने हाल देउ बतलाय ॥
बोले मलिखे पृथीराजसे ❋ तुम सुनि लेउ वीर चौहान ।
कहां गँवायो तुम धांधूको ❋ सो सब हाल कहो समुझाय ॥
पिरथी बोले तब अनमनहै ❋ हमसे कछू कही ना जाय ।
धांधू ब्याहन गये बुखारे ❋ राजा भकसी दियो डराय ॥
छलिकै बुलवायो धांधूको ❋ तब हम कीन्हो युद्ध अपार ।
फौज हमारी पत्थर है गई ❋ मालिनि जादू दई चलाय ॥
तब हम लौटे गढ़ दिल्लीको ❋ औ हम बहुत भये लाचार ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ अब तुम चलौ हमारे साथ ॥
सातौ भांवरि हम डरवैहैं ❋ ओ धांधूको लैहैं ब्याहि ।
इतनी सुनिकै पिरथी बोले ❋ तुम सुनिलेउ बीरमलिखान ॥
मरने होवैं जो सबको तहँ ❋ तौ फौजनको जाउ चढ़ाय ।
हमरे मनमें नहिं आवत यह ❋ की धांधूका होय बिआहु ॥

इतनी सुनतै मलिखे बोले ❀ राजा बोलो बात सम्हारि ।
धांधू छोड़ि दियो भकसीमें ❀ औ तुम घरमें बैठे आय ॥
खबरि न हमको तुम पठवाई ❀ यह क्या कियो भूलको काम ।
मुखसे हीनी अब बोलत हो ❀ तुमहिं हंसौआको डर नाहिं ॥
बैठे रहियो तुम डेरामें ❀ हमरी देखि लेउ तलवारि ।
संग हमारे जो ना चलिहो ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनिकै पिरथी सोचे ❀ हैं यह बीर महोबे क्यार ।
हटकी हमरी यहु मनिहैं ना ❀ ताते लश्कर लेउ सजाय ॥
हुक्म देदियो पृथीराजने ❀ जल्दी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब दिल्लीमें ❀ लश्कर तुरत भयो तैयार ।
हाथी मंगायो पृथीराजने ❀ तापर चढ़े पिथौराराय ।
लश्कर चलिभे पृथीराजको ❀ मलिखे लश्कर पहुँचे जाय ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ संगै चले बीर चौहान ।
तीनि दिनाको धावा करिकै ❀ पहुँचे नगर बुखारे जाय ॥
पांच कोश जब रहा बुखारा ❀ लश्कर डेरा दिये डराय ।
जीन उतारि दिये घोड़नके ❀ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फटे छुटिगइँ रजपूतनकी ❀ ऊँचे तम्बू दिये तनाय ।
मलिखे बोले तब क्षत्रिनसे ❀ क्षत्रिउ सुनो हमारी बात ॥
जो कोई तुमसे पूछै कछु ❀ मत कछु दीजो हाल बताय ।
जोगी बनिकै हम जैहैं अब ❀ महलन भेद जानिहैं जाय ॥
इतनी कहिकै मलिखे ढेबा ❀ ऊदनि गंगू संग लिवाय ।
योगी बनिकै चारों चलिभे ❀ अंग विभूति लई लपटाय ॥
बहुत मोहिनी सूरति जिनकी ❀ देखत बिकल होयँ नरनारि ।
लई बँसुरिया बघऊदनिने ❀ खंजरी लई बीर मलिखान ॥
गंगू भाट लियो यकतारा ❀ ढेबा डमरू लई उठाय ।
चारों योगी डगरत चलिभे ❀ औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
बजी खंजरी नरमलिखेकी ❀ ढेबा डमरू दई बजाय ।

बाजो इकतारा गूंगूको ❋ बँसुरी बजी उदयसिंह क्यार ॥
राग रागिनी गावन लागे ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
धुरपद गावै औ तिल्लाना ❋ गजल तर्जपर तोरैं तान ॥
राग भैरवीकी शोभा है ❋ गावन लगे मोहिनी डार ।
गावत चलिभे चारों जोगी ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय ॥
बोलो दरवानी जोगिनसे ❋ बाबा हाल देउ बतलाय ।
कहांसे आये औ कहँ जैहौ ❋ यह सुनि ऊदनि कही सुनाय ॥
देश हमारो बंगाला है ❋ औ गोरखपुर कुटी हमारि ।
आगे जैहैं हिंगलाजको ❋ अस कहि जोगी बढ़े अगार ॥
जायकै पहुंचे वे डयोढ़ीपै ❋ सोरठ राग अलापन लाग ।
राग सुनत खन उन जोगिनके ❋ राजा मोहि मोहि रहिजायँ ॥
तुरत जोगियनको बुलवायो ❋ राजा उनसे पूछन लाग ।
कौन देशके तुम जोगी हौ ❋ कछु दिन यहां करो बिसराम ॥
बोले जोगी तब राजासे ❋ तुम सुनि लेउ बघेले राय ।
हम हैं जोगी बंगालेके ❋ औ गोरखपुर कुटी हमार ॥
बहता पानी रमता जोगी ❋ इनको कौन सकै बिरमाय ।
आजु रमानी तुमरी नगरी ❋ भोरहि हमहिं रमानी बाट ॥
भीख मंगाय देउ जल्दीसे ❋ राजा मोती दिये मंगाय ।
जोगी बोले तब राजासे ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
हमैं चाह नाहीं मोतिनकी ❋ हमको भोजन देउ कराय ।
यह सुनि राजा गये महलमें ❋ औ रानीसे कही सुनाय ॥
भोजन त्यार करौ जल्दीसे ❋ जोगी भोजन करिहैं आय ।
भोजन त्यार किये रानीने ❋ औ जोगिनको लियो बुलाय ॥
कछु सुधि आगई रानीको ❋ हमरी बेटी है बीमार ।
बोली रानी तब जोगिनसे ❋ जोगिउ सुनौ हमारी बात ॥
हमरी बेटी मांदी ह्वैगइ ❋ ताकी दवा देव बतलाय ।
बोले ऊदनि तब रानीसे ❋ अपनी बेटी देउ दिखाय ॥

रानी बुलायो तब बेटीको ❀ जोगिन लई विभूति निकारि ।
ऊदनि बोले तब रानीसे ❀ अब तुम परदा देउ कराय ॥
निकट हमारे कोइ न आवै ❀ दीहैं हम आसेव हटाय ।
परदा ह्वइगो हुक्म होतही ❀ सब नरनारी दिये हटाय ॥
बोले ऊदनि तब केसरिसे ❀ भौजी सुनो हमारी बात ।
हम आये हैं गढ़ महुबेसे ❀ औ सिरसासे बीर मलखान ॥
धांधू दादाको बतलावौ ❀ हम भकसीसे लेइँ निकारि ।
यह सुनि केसरी बोलन लागी ❀ ऊदनि सुनौ हमारी बात ॥
परदा लागो है महलनमें ❀ तुम मलिखेको लेउ बुलाय ।
ऊदनि टेरि लियो मलिखेको ❀ तीनों तहां पहुँचे जाय ॥
भकसी देखी बघऊदनिने ❀ तब पत्थरको दियो हटाय ।
लट्ठा साखूको ऊपर धरि ❀ तामें रस्सा दौ लटकाय ॥
पकरिके रस्सा ऊदनि उतरे ❀ औ धांधूको लियो निकालि ।
अंग विभूति मली धांधूके ❀ औ अपने संग लियो लिवाय॥
बोले ऊदनि तब केसरिसे ❀ भौजी धीर धरो मनमाहिं ।
सातौ भांवरि हम डरवैहैं ❀ हमरो नाम उदयसिंह राय ॥
डगरत चलिभे पांचौ योगी ❀ औ डेरनमें पहुँचे आय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ औ धांधूने कही सुनाय ॥
हमहिं छांड़ि दिल्ली पहुँचे तुम ❀ फिर ना लीन्ही खबरि हमारि ।
हमरे भैया जौ आते नहिं ❀ तौ नहिं बचते प्राण हमार ॥
बोले पृथीराज धांधूसे ❀ हमने कीन्हो युद्ध अपार ।
जादू डारि दियो मालिनिने ❀ फौजहि पत्थर दियो बनाय ॥
तब लाचार भये सबही विधि ❀ हम दिल्लीको गये पराय ।
धन्य बनाफर हैं महुबेके ❀ जिन यहँ तुमको लियो निकारि॥
बड़ शूर हैं मलिखे ऊदनि ❀ क्यों नहिं राज करैं परिमाल ।
करि अस्नान ध्यान धांधूने ❀ भोजन जाय कियो ततकाल ॥
दर्शन हेत जात देवीके ❀ नित रणधीरसिंह सरदार ।

नगरके बाहर है मठिया जहं ❀ तहं ऊदनिने कियो विचार ।
आजु बिठावैं हम धांधूको ❀ राजै कैद लेयँ करवाय ॥
कारो मुख करिकैं धांधूको ❀ देवि कि मठिया दौ बैठाय ।
केश खोलि दौ तिन धांधूके ❀ रूप भयंकर दियो बनाय ॥
दर्शन हेत मात देवीके ❀ आयो तहां भूप रणधीर ।
राजा भीतर गयो मढ़ीके ❀ धांधू तुरत लियो बँधवाय ॥
देखो राजा जब धांधूको ❀ मनमें गये सनाका खाय ।
बोले राजा तब धांधूसे ❀ तुम छल करो यहांपर आय ॥
तुमको भकसीमें राखो हम ❀ यहं कैसे तुम पहुँचे आय ।
बोले धांधू तब राजासे ❀ तुम सुनिलेउ बघेले राय ॥
तुम छल कीन्हो जस हमरे संग ❀ दूती भेजि लियो बुलवाय ।
तैसे छलकारि हमरे भाई ❀ भकसीमेंसे लियो निकारि ॥
होश बन्द भये तब राजाके ❀ संगको नौकर गयो भगाय ।
जाय पुकारो मोतीमलसे ❀ राजा कैद लिये करवाय ॥
इतनी सुनते मोतीमलने ❀ लश्कर डंका दौ बजवाय ।
बजो नगारा नगर बुखारा ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातुकी ❀ सो चरखिन पर दई चढ़ाय ।
हाथी सजिगये घोड़ा सजिगये ❀ लश्कर सजा बुखारे क्यार ॥
हाथी घोड़ा ऐसे सोहैं ❀ मानौं गिरि सुमेरु दिखराय ।
रेशम और मखमली झूले ❀ तिनपर जरी तारको काम ॥
ऊपर हौदा हैं सोनेके ❀ तिनमें हीरा जड़े बनाय ।
बोले मोती सब क्षत्रिनसे ❀ यारौ रखियो धर्म हमार ॥
पिता हमारे कैद कराये ❀ हैं चढ़िआये महुबिया ज्वान ।
बड़े शूरमा हैं महुबेके ❀ जिनकी जगजाहिर तलवार ॥
जिनहिं पियारी घर तिरिया हो ❀ सो सब तलब लेउ घर जाउ ।
जिनहिं पियारी परम भगौती ❀ सो दुइ बांधि लेउ तलवार ॥
इतनी सुनिकै क्षत्री बोले ❀ अपनी सोच देउ बिसराय ।

निमक तुम्हारे हम खाये हैं ❃ सो हाड़नमें गयो समाय ॥
पायँ पिछारू हम ना धरिहैं ❃ चाहै प्राण रहैं की जायं ।
कटि कटि बोटी गिरैं खेतमें ❃ उठि उठि रुंड करैं तलवार ॥
बख्तर हमरे तुम मंगवावौ ❃ लाल कुर्तियां देउ मंगाय ॥
बख्तर आये तब फौलादी ❃ सो ज्वाननने लिये चढ़ाय ।
लाल कुर्तियां ज्वानन पहिरी ❃ औ सब बांधि लियोहथियार॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❃ खलबल परी फौजमें आय ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❃ बांके घोड़नके असवार ॥
छमछमछमछम करैं सांड़िया ❃ दोयदोय शुतर चढ़े असवार ।
बावन झण्डा घूमन लागे ❃ औ लश्करमें उड़े निशान ॥
चंग बजावै कोई लश्करमें ❃ कहुं कहुं रही बँसुरियाबाजि ।
भूरा हाथीको सजवायो ❃ मोती तुरत भये असवार ॥
सुमिरन करिकै जगदम्बाको ❃ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
लश्कर चलिभौ मोतीमलको ❃ औ धूरे पर पहुंचो जाय ॥
सुनी खबरियां जब ऊदनिने ❃ अपनो लश्कर लियो सजाय।
लगे मोरचा दोनों दलमें ❃ भारी शूर महोबे क्यार ॥
मोती बढ़िगे तब आगेको ❃ औ ऊदनिसे कही सुनाय ।
कैद छांड़ि देउ तुम राजाकी ❃ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❃ मोती सुनो हमारी बात ।
बहिनि ब्याह देउ तुम जल्दीसे ❃ तौ हम लौटि महोबे जाउँ ॥
बिना बिआहे हम ना जैहैं ❃ चाहे प्राण रहैं कै जाय ।
इतनी सुनतै मोती जरिगौ ❃ तोपन बत्ती दई लगवाय ॥
हुक्म देदियो बघऊदनिने ❃ तोपन आगी देउ लगाय ।
बत्ती देदइ तब तोपनमें ❃ धुअँना रहो सरग मंडराय ॥
गोला छुटन लगे तोपनसे ❃ जिनका होवै शब्द अपार ।
अररररररर गोला छूटे ❃ कहकह करैं अगिनियां बान॥
सननन सननन गोली छूटे ❃ सररर परी तीरकी मारु ।

गोला लागै जेहि हाथीके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
गोला लागै जिन ऊँटनके ❋ दलमें गिरैं चकत्ता खाय ।
गोला लागै जिन घोड़नके ❋ चारौं सुम्म गर्द ह्वै जायं ॥
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❋ तिनकी त्वचा सरग मंडराय ।
बंबको गोला जिनके लागै ❋ सो लत्तासे जाय उड़ाय ॥
गोला जँजिरहा जिनके लागै ❋ तिनके हांड़ मांस छुटिजायं ।
छोटी गोली जिनके लागै ❋ मानौ गिरह कबूतर खायं ॥
बानको डण्डा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वै जायं ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ कोइ रजपूत न टारै पांव ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वै गइं ❋ चुटकिनके गै मांस उड़ाय ।
तोप रहकला पीछे छांड़े ❋ लम्बे बन्द करे हथियार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगौ पांच पैग मैदान ।
सांग चलन लगीं दोऊ दलके ❋ ऊपर बर्छिनको दइ मारु ॥
छुटै पिचक्का तब लोहुनके ❋ औ बुबकारिन बोलैं घाव ।
बूड़ि जुलुफियां गइं लोहूसे ❋ चर्बी अंग गई लपटाय ॥
हौदा भरिगे तब लोहूसे ❋ औ चुचुआत फिरैं असवार ।
चारि घरी भरि बजो सांगड़ा ❋ भारी भइ बर्छिनकी मारु ॥
भाला चलिकै दोना ह्वैगै ❋ लटुआ कटि बर्छिनके जाय ।
यहौ लड़ाई पाछे परिगइ ❋ अब आगेको सुनो हवाल ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो डेढ़ कदम मैदान ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रीनने ❋ खटखट चलन लगी तलवार॥
चले चुनब्बी औ अहिगर्बी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकैं वर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैं सुघरुआज्वान॥
पैदलके संग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनसे असवार ।
हौदाके संग हौदा मिलिगो ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ॥
पांच कोशलौं चलै शिरोही ❋ चारों ओर चलै तलवार ।
पैग पैगपर पैदल गिरि गये ❋ उनके दुइदुइ पैग असवार ॥

बिसे बिसे पर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
कटे भुसुंडा जिन हाथिनके ❋ भुइंमें गिरे भरहरा खाय।
कटिगै कल्ला जिन घोड़नके ❋ सो गिरिपरे करौंटा खाय ॥
कटि भुजदण्डैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार।
पगिया डारीं जो लोहूमें ❋ मानौं ताल फूल उतराय ॥
पड़े दुशाला हैं लोहूमें ❋ जनु नदीमें परो सिवार।
ढालैं डारी हैं लोहूमें ❋ मानो नाग रहे मन्नाय ॥
कठिन लड़ाई भई धूरे पर ❋ औ बहि चली रक्तकी धार।
घैहा डारे रणमें लौटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रटलागि॥
भुहर कटोरा पानी ह्वइगो ❋ रणमें कोइ न बूझै बात।
तीनि लाख मोतीके जूझे ❋ रहिगे दोइ लाख असवार ॥
दश हजार महुबेके जूझे ❋ ऐसी कठिन चली तलवार।
झुके सिपाही महुबेवारे ❋ जिनके मारु मारु रट लागि ॥
हाहाकार मचो लश्करमें ❋ सिगरे शूर उठे घबराय।
कोई रोवत है तिरियनको ❋ उनको कौन लगैहै पार ॥
कोई रोवत है लड़िकनको ❋ कोई पुरिखनको चिल्लाय।
कोई रोवै महतारिनको ❋ कोंछे लिये रही नौ मास ॥
गोल फूटिगौ भर्रा परिगौ ❋ लश्कर रेन बेन ह्वै जाय।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चलै बराय ॥
दुइ दुइ फेंटनके बँधवैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह।
भिड़हा आये हैं महुबेके ❋ सो लश्करमें दियो छुड़ाय ॥
भेड़ बकरियनकी गिनती नहिं ❋ जे मनइनको करैं अहार।
छोड़ि नौकरी हम मोतीकी ❋ बनकी बेंचि लकड़ियां खायँ॥
मालिनि आई तब लश्करमें ❋ अपनी जादू लई निकारि।
घोड़ी कबुतरी दाबे आवैं ❋ समुझे भये बीर मलिखान ॥
तकि तकि जादू मालिनि मारै ❋ सो मलखेपर ना अनियाय।
बोले मलिखे वा मालिनिसे ❋ मालिनि सुनौ हमारी बात ॥

पुष्य नछत्र माहिं जन्मा हूँ ❋ बरहें परी बृहस्पति आय ॥
और बरातकी क्या गिनती है ❋ शंका कहूं कालकी नाहिं ।
ढालकि औझड़ मलिखे मारी ❋ औ मालिनको दियो गिराय ॥
जूराकाटि लियो मालिनिको ❋ जादू सब झूठी परिजाय ।
तुरतबँधालियो मालिनिको ❋ औ यह कही बीरमलिखान ॥
पहली फौजनके क्षत्री जे ❋ तुमने पत्थर दिये बनाय ।
मानुष करिदेउ उन क्षत्रिनको ❋ सबकी जादू देउ उतारि ॥
तौ हमछांड़ि देइँ तुमको अब ❋ नाहीं बँधी बँधी मरिजाउ ।
मालिनि पुरिया लइजादूकी ❋ औ मलिखेको दइ पकराय ॥
पुरिया डारि देउ लश्करमें ❋ तौ सब जादू जाय पराय ।
पुरियालैकै मलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें दइ फैलाय ॥
उठे सिपाही दिल्लीवाले ❋ सबकी जादू गई पराय ।
मलिखेछोड़िदियोमालिनिको ❋ मालिनिगढ़में पहुँची जाय ॥
यह गति देखी जब मोतीने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
बढ़ि ललकारो बघऊदनिको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
दशदश रुपयाके नौकर हैं ❋ नाहक डरिहौ शीश कटाय ।
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ देखैं कापर राम रिसायँ ॥
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
सांग उठाई तब मोतीने ❋ औ ऊदनिपर दई चलाय ॥
बायेंसे घोड़ा दहिने ह्वइगो ❋ नीचे सांग गिरी अरराय ।
बोले मोती तब ऊदनिसे ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंहराय ॥
चोट हमारीसे तुम बचि गये ❋ अबहूं लौटि महोबे जाउ ।
ऊदनि बोले तब मोतीसे ❋ ठाकुर अक्किल गई तुम्हारि ॥
हम हैं क्षत्री गढ़ महुबेके ❋ नाहीं धरैं पिछारू पांव ।
दुसरी उचौनी औरौ करिलेउ ❋ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
सुनिकै बातैं यह ऊदनिकी ❋ मोती लीन्हो गुर्ज उठाय ।
सो धरिधमको बघऊदनिके ❋ ऊदनि लीन्हो चोट बचाय ॥

लई शिरोही तब मोतीने ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय ।
ढाल उठाई तब ऊदनिने ❋ तापर भई जड़ाका जाय ॥
तीनि शिरोही मोती मारी ❋ ऊदनिके नहिं आयो घाव ।
तब ललकारो बघ ऊदनिने ❋ मोती सुनौ हमारी बात ॥
तीनि उचौनी तुमने कीन्ही ❋ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ ।
एड़ लगाई रसबेंदुलके ❋ द्वै मस्तीक अड़ाये पांव ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलश दियो गिरवाय ।
रस्सा काटि दिये हौदाके ❋ हौदा गिरे धरणिमें आय ॥
ऊदनि उतरे तब घोड़ासे ❋ औ मोतीको लियो बँधाय ।
मोतिहि बांधि लियो ऊदनिने ❋ औ आल्हातर पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❋ दादा मंडलीक अवतार ।
करौ तयारी अब महलनकी ❋ सातौं भांवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ आल्हा सुनौ हमारी बात ।
कैद छांड़िदेउ हम दोउनकी ❋ अबहीं भांवरि देउँ डराय ॥
कैद छांड़िदेइ तब दोउनकी ❋ दोउ हाथीपर भये सवार ।
करी सलाहैं तब दोनोंने ❋ भारी शूर महोबे क्यार ॥
बड़े लड़ैया बन्नाफर हैं ❋ जिनकी जगजाहिर तलवार ।
इनसे जीतनके नाहीं हैं ❋ चाहैं कोटिक करैं उपाय ॥
देवी सहायक है आल्हाकी ❋ तासे ब्याह देउ करवाय ।
करी सलाहै यह दोउनने ❋ पहुँचे जाय राज दरबार ॥
हुक्म देदियो तब मोतीको ❋ चारों नेगी लेउ बुलाय ।
सब सामग्री करौ त्यार तब ❋ मोती नेगी लिये बुलाय ॥
यक हरकाराको बुलवायो ❋ बलख नगरमें दिये पठाय ।
न्योता भेजो अभिनन्दनको ❋ तिन लड़िका निज दियो पठाय ॥
चित्तररेखा राजकुमारी ❋ सोऊ तहाँ पहूँची आय ।
फिर रणधीरसिंह राजाने ❋ अपनो पंडित लियो बुलाय ॥

वेदी रचाई तब पंडितने ❋ लागे होन मंगलाचार ।
बोलन लागे तहँ पंडितजी ❋ नेगिउ तुम लश्करलौं जाउ ॥
गहनो लावो तुम आल्हासे ❋ औ बेटीको लेउ बुलाय ।
नेगी चलि भये तब डचोढ़ीसे ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
बोले नेगी तब आल्हासे ❋ गहनेको डब्बा देउ मँगाय ।
करो तयारी अब महलनकी ❋ महलन चढ़ै चढ़ावो जाय ॥
ऊदनि पहुँचे पृथीराजतर ❋ औ राजासे कही सुनाय ।
डब्बा लावो अब गहनेको ❋ महलन चढै चढ़ावो जाय ॥
बोले पृथीराज ऊदनिसे ❋ गहनो हम नहिं लाये साथ ।
हमहिं भरोसो नाहिं ब्याहको ❋ तुम समरत्थ उदयसिंहराय ॥
मुहरन तोड़ा तुम लै जावो ❋ अबहीं गहनो लेय गढ़ाय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि लौटे ❋ औ तंबूमें पहुँचे जाय ॥
गहनेको डब्बा तुरत निकारो ❋ औ रूपनाको लियो बुलाय ।
ऊदनि बोले तब रूपनासे ❋ महलन गहनों देउ पठाय ॥
संगे जावो तुम नेगिनके ❋ रूपना तुरत भयो असवार ।
डब्बा लीन्हो तेहि गहनेको ❋ नेगी लीन्हे संग लिवाय ॥
जाय पहूँचो महल बुखारे ❋ रूपना डब्बा दियो गहाय ।
गहनो पहुंच गयो महलमें ❋ रूपना लश्कर पहुंचो आय ॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❋ बेटी चौक पहूँची आय ।
चढ़ो चढ़ावा तब केसरिको ❋ केसरि भूषण सजी बनाय ॥
सजे अभूषण जे केसरिने ❋ तिनकी शोभा देउं सुनाय ।
पहिरी सारी रेशमवारी ❋ जामें बनो जरकसी काम ॥
ओढि दुपट्टाफिरि अतलसको ❋ जामें झालरि अजब सुहाय ।
पहिरो लहंगा घूमघुमेरो ❋ जामें गोटा लगो अपार ॥
झालरि लागी है मोतिनकी ❋ शोभा एक न बरनी जाय ।

माथे बेंदी नीलाम्बरकी ❋ सोऊचमकि चमकि रहिजाय॥
कर्णफूल काननमें सोहैं ❋ औ झुमकनको अजब बहार।
चम्पकली पचलड़ी सतलड़ी ❋ जेहरि तेहरि अधिक सुहाय॥
मोहनमाला चन्द्रहार अरु ❋ भुज भुजबंद कंठमें हार।
दुलरी तिलरी कंठ बिराजै ❋ बेंदी दमकि दमकि रहिजाय॥
नथकी शोभा क्या बरनूं मैं ❋ लटकन झूमि झूमि रहिजाय।
कड़ा छड़ा सोहै पायँनमें ❋ ऊपर छागलकी झनकार॥
कजरा सोहि रहा अँखियनमें ❋ मेंहदीलाली रही दिखाय।
जितने गहते थे तिरियनके ❋ सो केसरिने दिये सजाय॥
भयो बुलौवा तब धांधूको ❋ नेगी लश्कर दियो पठाय।
नेगी पहुंचे जब लश्करमें ❋ तहं आल्हासे कही सुनाय॥
अब भिजवावौ तुम दूलहको ❋ संग घरौआ लेउ लिवाय।
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ दूल्ह संग होउ तैयार॥
खबरि सुनावौ पृथीराजको ❋ सो मड़येको होयं तयार।
इतनी सुनतै ऊदनि चलिभै ❋ पृथीराजपै पहुंचे जाय॥
बोले ऊदनि पृथीराजसे ❋ अब दूलह संग होय तयार।
आदि भयंकर हाथी साजो ❋ पृथीराज भयो असवार॥
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार।
चौंड़ा चढ़िगो इकदन्तापर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मानंद असवार।
घोड़ी हिरौंजिनित्यार कराई ❋ तापर जगनिक भये सवार॥
घोड़ा बेंदुलापर ऊदनि हैं ❋ घोड़ी कबुतरी पर मलिखान।
घोड़ा करिलियापै इन्दन हैं ❋ जो आल्हाको राजकुमार॥
ताहर सूरज दोनों भैया ❋ अपने घोड़नपर असवार।
सजी पालकी तब धांधूकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय॥
चली पालकी तब दूलहकी ❋ संगहि चलै सभी सरदार।

अगल बगलपर घोड़ा नाचै ❀ बीच पालकी केरि बहार ॥
सब क्षत्रिय द्वारेपर पहुंचे ❀ तब रणधीरसिंह नरराय ।
साथ लिये मोती बेटाको ❀ सो द्वारेपर पहुंचे आय ॥
करी अगवानी सब शूरनकी ❀ औ मड़ये तर गये लिवाय ।
पण्डित वेद उचारन लागे ❀ धांधू चौक दियो बैठाय ॥
पहले पूजन करि गणेशको ❀ बहुरि गौरजा दई पुजाय ।
पूजा करवाई नवग्रहकी ❀ औ केसरिको लियो बुलाय ॥
करि गठबन्धन तब पंडितने ❀ कन्यादान दियो करवाय ।
भांवरि परन लगी धांधूकी ❀ मोती शूर लिये बुलवाय ॥
पहिली भांवरिके परतै खन ❀ मोती खैंच लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब खोपरीपर ❀ ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ॥
दुसरी भांवरिके परतै खन ❀ क्षत्री दौरि परे तत्काल ।
ऊदनि बोले तब आल्हासे ❀ दादा खबरदार है जाउ ॥
भांवरि धांधूकी डरवावौ ❀ हम क्षत्रिनको देयँ भगाय ।
ऊदनि ढेबा मलिखे ब्रह्मा ❀ चारौं शूर महोबे क्यार ॥
जायकै टूटे उन क्षत्रिनपर ❀ सबके होश बन्द ह्वै जाय ।
ढालकि औझड़ जेहिके मारैं ❀ तेहि धरतीमें देयँ गिराय ॥
बैठे देखैं पृथीराज तब ❀ मनमें कहैं बीर चौहान ।
बड़े लड़ैया महुबेवारे ❀ जिनके बांट परी तलवारि ॥
मारि भगायो सब क्षत्रिनको ❀ औ मड़येमें पहुंचे आय ।
तब रणधीर करी तैयारी ❀ औ दहेजको लियो सजाय ॥
करी तयारी तब बेटीकी ❀ डोला तुरत भयो तैयार ।
मिलिजुलिकै अपनी सखियनसे ❀ केसरि डोला बैठी जाय ॥
दियो दहेज सभी राजाने ❀ बेटी बिदा दई करवाय ।
डोला चलिभो तब बेटीको ❀ संगहि चले पिथौराराय ॥
घरी एकको अरसा गुजरो ❀ सब लश्करमें पहुंचे आय ।

डंका दै दीन्हों लश्करमें ❋ लश्कर सभी होय तैयार ॥
कूचको डंका तब बजवायो ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
चारि रोजको धावा करिकै ❋ लश्कर दिल्ली पहुंचो आय ॥
कछुक दिनालौं पृथीराजने ❋ महुबेवारेन लियो टिकाय ।
करी बनाफर तब तैयारी ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय ॥
जल्द सजाय देउ डोलाको ❋ औ धांधूको संग पठाय ।
मुख दिखरावा ह्वै माताढिग ❋ पाछे डोला दिहौं पठाय ॥
बोले पृथीराज ऊदनिसे ❋ तुम सुन लेउ उदयसिंहराय ।
डोला महुबे अब ना जैहै ❋ काहे करत बखेड़ा जानि ॥
इतनी सुनिकै मलिखे तड़पे ❋ औ राजाते लगे बतान ।
पाती आई रनि मल्हनापै ❋ उन हम सबको दियो पठाय ॥
हमरी छाती थी बज्जरकी ❋ जो धांधूको लाये ब्याह ।
माता मल्हनाको दिखलैहैं ❋ पीछे दिल्ली दिहैं पठाय ॥
सो मंगवाय देउ डोलाको ❋ धांधू संग देउ करवाय ।
बात हमारी झूठी जानौ ❋ तौ केसरिसे लेउ पुँछाय ॥
इतनी सुनिकै राजा चलिभै ❋ औ महलामें पहुँचे जाय ।
रानी अगमासे बोले तब ❋ तुम केसरिसे पूँछौ जाय ॥
किसको पाती तुमने भेजी ❋ सो सब भेद देउ बतलाय ।
हाथ जोरि तब केसरि बोली ❋ पाती मल्हनै दई पठाय ॥
भेजे शूरमा तब मल्हनाने ❋ तिन यह ब्याह लियो करवाय ।
तुम्हरे राजाके लश्करमें ❋ मालिनि जादू दियो चलाय ॥
बालम भकसीमें डारे गये ❋ तुम्हरे राजा आये बराय ।
जो नहिं जाते महुबे वारे ❋ तौ यह ब्याह न होतो रानि ॥
अब तुम भेजौ मोहि महुबेको ❋ पूजौं चरण सासुके जाय ।
मल्हना रानीके लागौं पग ❋ फिरि दिल्लीमें लेउ बुलाय ॥
इतनी सुनिकै रानी बोली ❋ औ राजासे कही सुनाय ।

हाल बतावति है केसरि सब ❋ यही महुबेको देउ पठाय ॥
चरण लागि ऐहै सबहीके ❋ धांधू संग देउ पहुंचाय ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ धांधू तुरत लियो बुलवाय ॥
सो आल्हा ऊदनि संग कीन्हें ❋ डोला तुरत दियो सजवाय ।
करी तयारी तब ऊदनिने ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
सात दिनाकी मंजिल करिकै ❋ औ धूरेपर पहुंचे जाय ।
रूपना बारीको बुलवायो ❋ औ ऊदनिने कही सुनाय ॥
खबरि करो तुम रनिमल्हनासे ❋ आये ब्याहि बनाफर राय ।
इतनी सुनिकै रूपना चलिभौ ❋ औ महलनमें पहुँचो आय ॥
ठाढ़ी मल्हना जहँ अंटापर ❋ हेरै बाट लहुरवा क्यार ।
सिढ़ियनसिढ़ियनमल्हनाउतरी ❋ औ रूपनापै पहुँची आय ॥
मल्हना बोली तब रूपनासे ❋ भैया हाल देउ बतलाय ।
कहाँपै डोला है केसरिको ❋ औ कहँ रहे बनाफर राय ॥
आल्हा मलिखे ऊदनि ब्रह्मा ❋ सबको हाल कहो समुझाय ।
कैसी गुजरी नगर बुखारे ❋ केहि विधि भयो ब्याहको साज॥
हाल बतायो तब रूपनाने ❋ सब धूरेपर पहुँचे आय ।
इतनी सुनतै मल्हनारानी ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
थार सोबरनके मँगवायो ❋ तामें चौमुख दियना बारि ।
सिगरी सखियां महुबेवारी ❋ सो मल्हनाने लई बुलाय ॥
सखियां मंगल गावन लागीं ❋ महलन भयो मंगलाचार ।
सिगरी रानी परिमालैकी ❋ सो द्वारेपर पहुँची आय ॥
देवै ब्रह्मा दोनों आई ❋ मछुला फुलवा संग लिवाय ।
डोला आयो दरवाजेपर ❋ परछनिहोनलागि तेहि काल ॥
नेगी बुलवाये मल्हनाने ❋ सबको मोहरैं दईं बँटाय ।
दान दक्षिणा दै विप्रनको ❋ मल्हना बहुत खुशी ह्वइजाय ॥

आल्हा ऊदनि मलिखे ढेबा ❋ औ ब्रह्माको संग लिवाय ।
पांचौ आये तब महलनमें ❋ औ मल्हनासे कही सुनाय ॥
माता सब परताप तुम्हारे ❋ हम धांधूको लाये ब्याहि ।
धांधू उतरे तब पलकीसे ❋ औ महलनमें पहुँचे जाय ॥
चरणलागिकै सब रानिनके ❋ धांधू माथे लिये लगाय ।
देवै ब्रह्माके पग लागे ❋ औ धांधूने कही सुनाय ॥
दया तुम्हारी माता चहियै ❋ हम नालायक पुत्र तुम्हारि ।
कर्मरेखको को मेटै जग ❋ नहिं कछु सेवा करी तुम्हारि ॥
बोली मल्हना तब धांधूसे ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ।
जहां तुम्हारे मनमें आवै ❋ तहं तुम रहो लड़ैते लाल ॥
खबरि हमारी तुम भुलियो ना ❋ सूबेदार पिथौरा क्यार ।
फिरि सब चलिभे रंगमहलते ❋ बीच कचहरी पहुंचे जाय ॥
करी बन्दगी चन्देलेको ❋ औ सब हाल दियो बतलाय।
सुनो हाल सब जब राजाने ❋ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
दगै सलामी गढ़ महुबेमें ❋ आये जीति बनाफर राय ।
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❋ घरघर भयो मंगलाचार ॥
दुलहिनि उतरी जो डोलासे ❋ सो महलनमें पहुँची जाय ।
नेग योग सब भये महलनमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
केसरि चरण छुये तब सबके ❋ औ माथेसे लिये लगाय ।
हाथ जोरिकै केसरि बोली ❋ औ मल्हनासे कही सुनाय ॥
तुमसे उऋण कबहूं ना ह्वइहों ❋ तुमने राखे प्राण हमार ।
बड़ो काम तुम माता कीन्हो ❋ हमरे स्वामी लियो बचाय ॥
जो स्वामी भकसी मर जाते ❋ तो मैं देती प्राण गँवाय ।
धन्य धन्य यह नगर महोबा ❋ तुमको धन्य मल्हदेमाय ॥
यहिविधि केसरि करी बड़ाई ❋ कछु दिन महुबे करो मुकाम ।

आठ रोज रहिके महुबेमें ❃ धांधू महलन पहुंचे जाय ॥
बोले धांधू रनि मल्हनासे ❃ माता हुक्म देउ फरमाय ।
अब हम जैहैं गढ़ दिल्लीको ❃ डोला साथ देउ भिजवाय ॥
करी तयारी तब मल्हनाने ❃ डोला तुरत दियो सजवाय ।
चरण लागिकै सब रानिनके ❃ धांधू कूच दियो करवाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❃ गढ़ दिल्लीमें पहुँचे जाय ।
डोला भेजि दियो महलनको ❃ धाधू गये राज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❃ औ सब हाल दियो बतलाय ।
खुशी भये सब गढ़ दिल्लीमें ❃ आये ब्याहि बनाफरराय ॥
ऐसे ब्याह भयो धांधूको ❃ सो हम कहिकै दियो सुनाय ।
इन्दलहरण ब्याह इन्दलको ❃ सो आगे मैं करौं बखान ॥
समय समय पर आल्हा गावो ❃ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❃ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति धांधूका ब्याह (बुखारकी लड़ाई) सम्पूर्ण

श्रीः

अथ इन्दलहरण

★

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सम्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सुमिरण करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय ।
इन्दलहरण कहौं आगे मैं ❋ होउ सहाय शारदा माय ॥
करौं ध्यान अब श्रीगंगेको ❋ निशिदिन पापहरनि महरानि ।
सब अस्नान करत भक्तीते ❋ तीर्थनमाहिं पुनीत बखानि ॥
जेठ दशहराकी पर्बी है ❋ बुड़की लेन गंगकी धार ।
देश देशके राजा चलिभे ❋ लीन्हे साथ सूर सरदार ॥
यात्री बोलैं जय गंगाकी ❋ जयजय शब्द होय चहुँओर ।
वही समैया ऊदनि ढेबा ❋ बनमें खेलन गये शिकार ॥
मेला देखो जब ऊदनिने ❋ तब ढेबाते कही सुनाय ।
कहां जात है यह मेला सब ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब ऊदनिते ❋ मेला यह बिठूरको जाय ।
पर्व दशहराको भारी है ❋ यह सुनि कही उदयसिंहराय ॥
बुड़की लेहैं हम बिठूरकी ❋ हमहूँ जैहैं गंग नहान ।
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❋ जेठो भाई बाप समान ॥
आल्हा पठवैं जो नहानको ❋ तौ तुम करो गंग अस्नान ।
ढेबा ऊदनि दोनों चलिभे ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
जेठ दशहराकी पर्बी है ❋ हमहूँ जैहैं गंग नहान ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❋ भैया मानो बात हमारि ।

काम तुम्हारो ना जैबेको ❀ करिहौ तहां बखेड़ा जाय ॥
माहिल बैठे थे बँगलामें ❀ सो आल्हाते लगे बतान ।
गंगा न्हैबेको हटकोना ❀ काहे करैं बखेड़ा जाय ॥
बोले आल्हा तब माहिलते ❀ तुमहूँ जाउ लहुरवा साथ ।
करी तयारी तब ऊदनिने ❀ लीन्हे साथ महिल परिहार ॥
ढेबा ऊदनि दोनों सजिगे ❀ अपनो डंका दियो बजाय ।
सुनो नगारा जब इन्दलने ❀ तब ऊदनिपै पहुँचे जाय ॥
बोले इन्दल तब ऊदनिते ❀ चाचा हाल देउ बतलाय ।
कहांकि त्यारी चाचा कीन्ही ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय ॥
जेठ दशहराकी बुड़की है ❀ बुड़की लिहैं गंगकी जायँ ।
करी तयारी हम बिठूरकी ❀ यह सुनि इन्दल कही सुनाय ॥
संग तुम्हारे हमहूँ चलिहैं ❀ बुड़की लिहैं गंगकी धार ।
यह सुनि बोले ऊदनि ठाकुर ❀ जान न देहैं बाप तुम्हार ॥
संग तुमहिं हम नाहीं लेहैं ❀ यह सुनि इन्दल लियो कटार ।
अपनी छातीपर धरि लीन्हो ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
संगहमहिं जौ ना लैचलिहो ❀ तौ मैं पेट मारि मरिजाउँ ।
यह सुनिसाथ लियो इन्दलको ❀ औ आल्हापै पहुँचे जाय ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❀ दादा सुनो हमारी बात ।
इन्दल मचले हैं मेलाको ❀ आज्ञा होय संग लै जायँ ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❀ साथ ना लीजो पुत्र हमार ।
जादूगर ऐहैं मेलामें ❀ अपनो जादू दिहैं चलाय ॥
चलिभये ऊदनि तब बँगलाते ❀ औ संग चले इन्दलसी क्वांर।
कूच करायो तब बिठूरको ❀ मानी कही न आल्हा क्यार॥
जबहीं पहुँचे गंग घाट पर ❀ अपनो डेरा दियो डराय ।
लाखनि राना कनउजवाले ❀ सोऊ तहां पहुंचे आय ॥
डंका बाजत रहे ऊदनिको ❀ सुनिकै लाखनि कही सुनाय ।
किसको डंका यह बाजत है ❀ अबहीं बन्द देउ करवाय ॥

धावन पहुंचो तब ऊदनिपै ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
हुक्म कनोजीको गालिब है ❋ डंका बन्द देउ करवाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम राजाते कहौ सुनाय ।
ऊदनि आये हैं महुबेते ❋ डंका बन्द होनको नाहिं ॥
लौटि जवाब दियो धावनने ❋ तुम सुनि लेउ कनोजीराय ।
आये महुबिया महुबेवाले ❋ डंका बन्द होनको नाहिं ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ।
सुनी खबरि जब यहु ऊदनिने ❋ तिनहूं मुर्चा दियो लगाय ॥
बत्ती धरिबेको बाकी रहि ❋ तौलौं सैयद पहुंचे जाय ।
बोले सैयद तब लाखनिते ❋ हमरे वचन करौ परमान ॥
बड़ो लड़ैया ऊदनि ठाकुर ❋ है जो देवकुंवरि को लाल ।
लड़ न जितिहौ तुम ऊदनिते ❋ ताते धीर धरो मनमाहिं ॥
मेला देखन तुम आये हौ ❋ काहे दैहौ कटा कराय ।
ढेबा समुझावै ऊदनिको ❋ भैया अक्किल गई तुम्हारि ॥
आल्हा हटको हैं याहीको ❋ सोई बात परी यहु आय ।
बन्द कराय देउ डंकाको ❋ औचलिमिलौ कनौजी साथ॥
अजैपाल राजा कनउजमें ❋ जिनको उदय अस्तलौं राज ।
तिनघर उपज्यो यहु लाखनिहै ❋ राजा रतीभानको लाल ॥
बेन चक्कवैको नाती है ❋ जानत जिनहिं सकलसंसार ।
दुसरी राखौ ना लाखनिते ❋ यह तुम मानो कही हमारि ॥
होय बड़ाई देश देशमें ❋ जो लाखनिते मिलिहौ जाय ।
बात मानलइ तब ऊदनिने ❋ पांच दुशाला लिये मंगाय ॥
हीरा पांच लिये ऊदनिने ❋ औ चलि भयो लहुरवा भाय।
पांचकदम जब लाखनि रहिगे ❋ ऊदनि झुकिकै करी सलाम ॥
देखो नजराना लाखनिने ❋ लै हँसि कही कनौजीराय ।
तुम सब लायक ऊदनि ठाकुर ❋ राजा दस्सराजके लाल ॥
डंका अपनो तुम बजवावो ❋ यह कहि छाती लियौ लगाय ।

भई मित्रता तब दोनोंमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
हियांकि बातैं तौ यहँ छांड़ौ ❋ अब आगेको सुनो हवाल ।
बलखबुखारेके राजाकी ❋ चित्तररेखा राजकुमारि ॥
सोऊ मचली जब मेलाको ❋ अभिनन्दनने कही बुझाय ।
बेटी जावौ ना मेलाको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
लाखन ऐहैं तहँ कनउजते ❋ ऐहैं तहां महोबिया ज्वान ।
बात बिगरि जैहै काहूते ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
एक न मानी जब बेटीने ❋ तब राजाने दियो पठाय ।
हंसा बेटा संग पठायो ❋ अपनो लश्कर दियो पठाय ॥
करी तयारी तब बेटीने ❋ केसरि नटिनी संग लिवाय ।
पिंजरा सोनेको लै लीन्हों ❋ अपनो कूच दियो करवाय ॥
पहुंची बेटी जब गंगा पर ❋ अपनो डेरा दियो लगाय ।
ब्याह भया था जब धांधूको ❋ इन्दल गये बरायत माहिं ॥
इन्दल देखे तहँ बेटीने ❋ तबते मनमें करै विचार ।
या तो ब्याह होय इन्दल संग ❋ नातर क्वांरि रहौं संसार ॥
यहै सोच बेटीको निशिदिन ❋ कैसे मिलैं इंदलसी क्वांर ।
इन्दल मिलिहैं गंगाघाटपर ❋ ताते गई गंग दरबार ॥
राति बसेरो करि गंगापर ❋ सूरज उदै भये जब आय ।
मेला देखनको जल्दीते ❋ चित्तररेखा भई तयार ॥
रूप बनाय लियो नटिनीको ❋ केसरि नटिनी संग लिवाय ।
संग लै लियो सब सखियनको ❋ मेला करन तमाशा लागि ॥
मेला टिको जहां महुबेको ❋ तहँपर करो तमाशा जाय ।
नाच तमाशा देखन लागे ❋ क्षत्री मोहि मोहि रहिजायँ ॥
जादू लीन्हो जब नटिनीने ❋ ढेबा तुरत गयो पहिचानि ।
बोलो ढेबा तब ऊदनिते ❋ जल्दी इनहिं देउ निकराय ॥
अब जो देखिहौ इन नटिनिनको ❋ तो सब जैहै काम नशाय ।
तुरतै मोहरैं दै नटिनिनको ❋ औ तम्बूते दियो निकारि ॥

देखिके बेटी गइ डेरामें ❋ मनमें बसे इन्दलसी क्वाँर ।
बुड़की लेन चले ऊदनि जब ❋ ढेबा इन्दल संग लिवाय ॥
क्षत्री एक हजार साथ ले ❋ नंगी लिये हाथ तलवार ।
गोदी लैकै तब इन्दलको ❋ बुड़की लई उदैसिंहराय ॥
गंगा पुत्री तब बुलवायो ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ।
मोहरैं पांच दई केवटको ❋ ऊदनि नौका लई मंगवाय ॥
सो ढिलवाई उदयसिंहने ❋ पहुँची बीच धारमें जाय ।
चलिभइ बेटी अभिनन्दनकी ❋ पहुँची गंग किनारे आय ॥
मोहरैं दैकै मल्लाहनको ❋ बेटी नाव लई मंगवाय ।
केसरि नटिनीको संग लैकै ❋ बैठी बीच नावमें जाय ॥
पिंजरा लैकै कर सोनेको ❋ तुरतै नाव दई छोड़वाय ।
नाव पहूँची बीच धारमें ❋ नौका जहां महोबियन केरि ॥
चित्तररेखा देखन लागी ❋ औ इन्दल तन रही निहारि ।
लैकै जादू भैरववाली ❋ सो ऊदनिपर दई चलाय ॥
नजरि बन्द ह्वइगइ ऊदनिकी ❋ मूर्च्छित भये उदयसिंहराय ।
दूसरि पुरिया बेटी लैकै ❋ नर ढेबापर दई चलाय ॥
ढेबा गिरिगो तब नौकापर ❋ देहीकी सुधि गई भुलाय ।
तिसरी जादू बेटी लैकै ❋ सो इन्दल पर दई चलाय ॥
सुवा बनाय लियो इन्दलको ❋ औ पिंजरामें राखो जाय ।
नाव किनारे पर लगवाई ❋ तुरतै उतरि परी अरगाय ॥
आय पहूँची जब लश्करमें ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।
जादू उतरि गयो ऊदनिको ❋ औ ढेबाको आयो होश ॥
नहीं दिखाय परे इन्दल कहुँ ❋ तब ढेबाते कही सुनाय ।
काहे दादा यह कैसी भइ ❋ देखि न परै परेउना लाल ॥
ऊदनि ढेबा दोनों चलिभये ❋ औ मेलामें ढूँढ़न लाग ।
सिगरो मेला जब मथि डारो ❋ तबउन जाल लियो मंगवाय ॥

सो डरवाय दिये गंगामें ❀ फँसिगै मगरमच्छ तहँ आय ।
पेट्ट फरायो सज जीवनको ❀ तबहुँ न मिले इंदलसी क्वाँर ॥
ऊदनि बोले तब ढेबाते ❀ अब हम करिहैं कौन उपाय ।
मुँह दिखरैहैं कैसे दादाको ❀ करिहैं कौन बहाना जाय ॥
माहिल बोले तब ऊदनिते ❀ अपनो सोच देउ बिसराय ।
हम कहि देहैं यह आल्हाते ❀ कोउ जादू करि गयो लिवाय ॥
तुम कहि दीजो हाथ जोरिकै ❀ जल्दी ढूँढ़ि मिलैहैं आय ।
मोहलत मंगियौ पांचमासकी ❀ औ इन्दलको ढूँढ़ियो जाय ॥
इतनी सुनिकै बघ ऊदनिने ❀ तुरतै कूच दियो करवाय ।
आय पहुँचे मदन तालपर ❀ अपनो तम्बू दियो लगाय ॥
आगे पहुँचे माहिल राजा ❀ औ आल्हाते लगे बतान ।
हाल सुनो तुम सब मेलाको ❀ मारो गयो परेउना लाल ॥
गोता मारो जब इन्दलने ❀ ऊदनि मारि दई तलवार ।
शीश काटिकै उन इन्दलको ❀ सो गंगामें दियो बहाय ॥
सुनतै आल्हा बोलन लागे ❀ काहे बोलत झूँठ बनाय ।
हमहिं पियारे थोरे इन्दल ❀ औ ऊदनिको बहुत पियार ॥
बहुत बतकही भइ आल्हाते ❀ माहिल गंगा लई उठाय ।
बात हमारी सांची जानो ❀ हमना बोलत झूँठ बनाय ॥
कसम हमहि है इकलौताकी ❀ जो हम कही होय कछु झूँठ ।
सांची बात मानि माहिलकी ❀ आल्हा गये क्रोधमें छाय ॥
माहिल चलिभै तब महुबेते ❀ औ उरईमें पहुँचे जाय ।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❀ भैया तुम बंगलालौं जाउ ॥
हाल सुनाऔ तुम मेलाको ❀ औ आल्है समुझावौ जाय ।
चलिभै ढेबा तब डेराते ❀ औ बँगलामें पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी जब आल्हाको ❀ आल्हा पीठी लई फिराय ।
बोले ढेबा तब आल्हाते ❀ काहे न हमारी लई सलाम ॥
खता हमारीको बतलावौ ❀ तब आल्हाने कही सुनाय ।

जल्दी लावौ तुम ऊदनिको ❋ हमरी नजर गुजारौ आय ॥
ढेबा लौटे तब बँगलेते ❋ औ डेरापर पहुंचे जाय ।
बोले ढेबा बघ ऊदनिते ❋ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
तुमहिं बुलायो है आल्हाने ❋ यह सुनि कही उदयसिंहराय ।
दादा मँगिहैं जब इन्दलको ❋ तब हम देहैं कौन जवाब ॥
ढेबा समुझायो ऊदनिको ❋ तुम यह कहिये बात सुनाय ।
जादूगर आये मेलामें ❋ हरि लैगयो परेउना लाल ॥
मोहलति दै देउ पांचमासकी ❋ लावैं ढूँढ़ि इन्दलसो क्वांर ।
बात मानिकै तब ढेबाकी ❋ तुरतै उठे उदयसिंह राय ॥
दूबको बौंड़ा मुखमें दाबो ❋ नंगे पांय गरीबी भेष ।
हाथ अगौंछाते बंधवायो ❋ औ चलिभये उदैसिंह राय ॥
पहुंचे ऊदनि जब आल्हापै ❋ झुकिकै ऊदनि करी सलाम ।
तीनि बार नैनै करी बन्दगी ❋ आल्हाने नहिं लियो सलाम ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय ।
खता हमारी तुम बतलावौ ❋ काहे रूठि गये यहि काल ॥
आल्हा बोले तब गुस्सा ह्वै ❋ तुम घटि करी हमारे साथ ।
साथ लेगयो पुत्र हमारो ❋ औ गंगापर डारो मारि ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा वचन करौ परमान ।
जादूगर आये मेलामें ❋ काहू जादू दियो चलाय ॥
साथ लै गयो कोउ इन्दलको ❋ हम सब मेला लियो ढुँढ़ाय ।
पता न लागो कहुँ बेटाको ❋ तब हम कूच दियो करवाय ॥
मोहलति दै देउ पांचमासकी ❋ लैहौं ढूँढ़ि परउना लाल ।
गुस्सा होइकै आल्हा बोले ❋ तुम घटि करी हमारे साथ ॥
सांची कहिगे माहिल मामा ❋ तुमने मारो पुत्र हमार ।
एक न मनिहौ बात तुम्हारी ❋ डरिहौं तुमहिं जानते मारि ॥
ऊदनि ढेबा दोनों मिलिकै ❋ आल्है बहुत कहो समुझाय ।
बात न मानी कछु आल्हाने ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥

डंड बांधिकै बघ ऊदनिकी ❀ औ खंभामें दियो बँधाय।
हरे बांस आल्हा मँगवाये ❀ औ ऊदनिको मारन लाग॥
रुधिर बहन लागौ देहीते ❀ पीठी लाल बरन ह्वइ जाय।
खबरि पहूँची जब देवैको ❀ सो बँगलामें पहुँची जाय॥
बोली देवै तब आल्हाते ❀ काहे दई बांसकी मारु।
बेटा छांड़ि देउ ऊदनिको ❀ इतनी मानौं कही हमारि॥
बोले आल्हा तब देवैते ❀ इनने मारो पुत्र हमार।
जियत छोड़िहौ ना ऊदनिको ❀ चाहै कोटिन करौ उपाय॥
देवै लौटि गई सुनवांपै ❀ औ ऊदनिको कह्यो हवाल।
कही न मानी कछु आल्हाकी ❀ अपने कंठ मनावौ जाय॥
सुनवां पहुँची तब फाटकपर ❀ औ आल्हाते कही सुनाय।
बहुत पियारे थे बघ ऊदनि ❀ काहे दई बांसकी मारु॥
कोखिके भाई तुम मारतहौ ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं।
सुनतै आल्हा बोलन लागे ❀ जानौ नाहीं हाल तुम्हार॥
छलिकै लैगै ये इन्दलको ❀ औ गंगापर डारो मारि।
जियत नाछोड़िहैं हम ऊदनिको ❀ जो चाहौ सो करौ उपाय॥
हाथ जोरिकै सुनवां बोली ❀ स्वामी पैयां परौं तुम्हार।
हम तुम रहिहैं जो दुनियांमें ❀ इन्दल आय लिहैं अवतार॥
पीठिको भाई फिर ना मिलिहै ❀ स्वामी समुझि लेउ मनमाहिं।
यादि करौ तुम नैनागढ़की ❀ तुम्हरी कैद छोड़ाई जाय॥
जोकहुँ मरिहौ तुम ऊदनिको ❀ तौ माटीके मोल बिकाउ।
अबहीं ग़ुस्सा करि मारतहौ ❀ पाछे पछितैहौ महराज॥
जबहीं सुनिहैं दिल्लीवाले ❀ तुरत महोबा लिहैं लुटाय।
बोले आल्हा तब सुनवांते ❀ रानी कोटिन कहौ बनाय॥
जियत छोड़िहौं ना ऊदनिको ❀ अबहीं दिहौं जानते मारि।
बोले ऊदनि रनि सुनवांते ❀ भौजी पानी देउ पियाय॥
लैकै गडुआ सुनवां चलिभइ ❀ औ ऊदनिको दौ पकराय।

लात ले गड़ुआ आल्हा मारो ❀ पानी सबै दियो ढरकाय ॥
आल्हा सुनवैं मारन लागे ❀ तुम मरवायो पुत्र हमार ।
भागी सुनवां तब फाटकते ❀ औ फुलवापै पहुँची जाय ॥
बोली सुनवां रनि फुलवाते ❀ अपनो कंथ छुड़ावौ जाय ।
खिरकी परते फुलवा बोली ❀ दादा बिनती मानि हमारि ॥
अब ना मारो तुम भैयाको ❀ बेड़ा कौन लगैहै पार ।
बोले आल्हा तब फुलवाते ❀ बैठी राज्य करौ घरमाहिं ॥
ऊदनि मारो है इन्दलको ❀ इनको दिहैं जानते मारि ।
सुनतै गुस्सा ह्वइ ऊदनिने ❀ तुरतै खंभा लियो उखारि ॥
सोचन लागे ऊदनि बांकुड़ा ❀ जेठो भाई बाप समान ।
हाथ चलावौं जो आल्हापर ❀ तौ रजपूती धर्म नशाय ॥
मारत मारत आल्हा थकिगैं ❀ तब जल्लाद लियो बुलवाय ।
आल्हा बोले जल्लादनते ❀ जल्दी ऊदनिको लै जाउ ॥
नयन करेजेको निकारिकै ❀ हमरी नजरि गुजारो आय ।
इतनी सुनिकै उदयसिंहको ❀ लै जल्लाद चले तत्काल ॥
पहुँचे ऊदनि जब ड्योढ़ीपै ❀ जहँपर खड़ी सुनमदे रानि ।
बोली सुनवां जल्लादनते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
हाथ चलैयो ना ऊदनिपै ❀ इनको छांड़ि देउ तुम जाय ।
अबै तो मारत है गुस्सामें ❀ पाछे पछितैहैं महराज ॥
ताते हिरना यक मारौ तुम ❀ नैन करेजा लाऔ निकारि ।
जाय दिखावौ तुम स्वामीको ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
यह कहि हार उतारि गरेको ❀ जल्लादनको दौ पकराय ।
लै जल्लाद चले आगेको ❀ तब फुलवाने कही सुनाय ॥
हाथ न डरियो तुम स्वामीपर ❀ यह कहि तोड़ा दियो गहाय ।
तब जल्लाद चले आगेको ❀ पहुँचे झारखण्डको जाय ॥
बोले ऊदनि जल्लादनते ❀ हमको छुरिया देउ गहाय ।
नैन करेजा अपने करते ❀ अबहीं तुमको देयँ निकारि ॥

इतनी बात सुनी ऊदनिकी ❁ तब जल्लादने कही सुनाय ।
जहाँ तुम्हारे मनमें भावै ❁ तहँको ऊदनि जाउ बराय ॥
नगर महोबेको जैयो ना ❁ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
जानते आल्हा हमको मरिहैं ❁ सो तुम जानि लेउ मनमाँहि ॥
हिरना मारो यक जंगलमें ❁ नैन करेजा लियो निकारि ।
जाय दिखायो सो आल्हाको ❁ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
खबरि सुनाई परिमालैको ❁ सुनि परिमाल गये घबराय ।
आय मूर्छा गइ राजाको ❁ भुइँमें गिरे तड़ाका खाय ॥
खबरि पहूँची जब महलनमें ❁ सिगरो रोय उठो रनिवास ।
हाहाकार परो मंदिरमें ❁ को गाढ़ेमें ऐहै काम ॥
पलकी मंगवाई राजाने ❁ तापर चढ़े चंदेले राय ।
राजा पहुँचे दशपुरवामें ❁ जहँ दरबार बनाफर क्यार ॥
राजै देखो जब आल्हाने ❁ तुरतै उठे भरहरा खाय ।
करी बन्दगी तब राजाको ❁ ना राजाने लियो सलाम ॥
गुस्सा होइके राजा बोले ❁ औ आल्हासे कहो सुनाय ।
तुमने मरवायो ऊदनिको ❁ नैन करेजा लौ निकराय ॥
पीठिको भाई तुम मरवायो ❁ तुमको बार बार धिक्कार ।
बिन ऊदनिके या महुबेमें ❁ को गाढ़े दिन ऐहैं काम ॥
बज्रकी छाती थी ऊदनिकी ❁ जो दिल्लीमें कियो विवाह ।
आल्हा मनमें कायल ह्वइगे ❁ मुखते कछू न आयी बात ॥
तब ललकारो चन्देलेने ❁ ओ हत्यारे बात बनाउ ।
इन्दल बेटेके कारण तुम ❁ अपनो भाई दियो गँवाय ॥
आंखिन पट्टी आल्हा बांधी ❁ ऊभे गिरे अंध मुख जाय ।
मुख दिखरैहों ना काहूको ❁ यह गति भई बनाफर केरि ॥
हियांकि बातैं तौ हियँ छांड़ौ ❁ अब आगेको सुनौ हवाल ।
ऊदनि सोचैं अपने मनमें ❁ सिरसा बसैं वीर मलखान ॥
करै नौकरी अब मलिखेकी ❁ कछु दिन समय गुजारैं जाय ।

सोचिकै चलिभै ऊदनि ठाकुर ❋ औ सिरसाकी पकरी राह ॥
सुनवां बुलवायो ढेबाको ❋ औ सब हाल कह्यो समुझाय ।
खबरि लै आवौ झारखंडते ❋ हमको खबरि सुनावौ आय ॥
इतनी सुनते ढेबा चलिभौ ❋ घोड़ा मनुरथापर असवार ।
उदया ठाकुर तुमरेधारको ❋ सोऊ चलो साथमें जाय ॥
दोनों पहुँचे झार खण्डमें ❋ गाय बरदिया रहें चराय ।
तिनते ढेबा पूँछन लागे ❋ तुम ऊदनिको देउ बताय ॥
एक बरदिया बोलन लागे ❋ अबहीं गये उदैसिंह राय ।
मूड़ उघारे नंगे पायन ❋ सिरसा ओर गये घबराय ॥
ताही रस्ता दोनौं चलिभै ❋ अब ऊदनिको सुनो हवाल ।
ऊदनि पहुँचे जब सिरसामें ❋ दरवानीते लगे बतान ॥
खबरि सुनावौ तुम मलिखेको ❋ द्वारे खड़े उदैसिंह राय ।
गौ दरबानी तब मलिखेपै ❋ औ यह हाल सुनायो जाय ॥
बोले मलिखे दरवानीते ❋ फाटक बन्द दियो करवाय ।
हुक्म नहीं है नर मलिखेको ❋ तौलौं ढेबा पहुँचो आय ॥
ढेबा पूँछे तब ऊदनिते ❋ कहँ जानेको करौ विचार ।
बोले ऊदनि तब ढेबाते ❋ दादा कछू न पूछो बात ॥
सुनवा भौजी दहिने ह्वैगई ❋ हमरो लीन्हो प्राण बचाय ।
बड़ो भरोसा था मलिखेको ❋ कछु दिन करैं गुजारा जाय ॥
सोऊ रूठि गये हमते अब ❋ फाटक बंद दियो करवाय ।
कोउ न साथ देत विपदामें ❋ यह हम जानि लियो सब भांति॥
हितू कुटुम्ब सबै रूठे हैं ❋ हमपर रूठि गयो भगवान ।

कुण्डलिया

सुखते बिपदा है भली, जो थोरे दिन होय ।
इष्टमित्र बांधव जिते, जानि परत सब कोय ॥

जानि परत सब कोय, बात नहिं पूछै कोई।
जब संकट परिजाय, मित्र होवै रिपु सोई॥
नारायण करि ध्यान, आप मनको समुझावै।
कछु दिनमें सुख होय, सदा नहिं विपति सतावै॥

यह सुनि ढेबा बोलन लागो ❋ भैया धीर धरो मनमाहिं।
बिपति दूर ह्वइहै जल्दीते ❋ हमरो बचन करो परमान॥
साथ तुम्हारो हमना छोड़िहैं ❋ रहिहैं सदा तुम्हारे संग।
ऊदनि बोले तब ढेबाते ❋ दादा हमहिं देउ बतलाय॥
हमरे बैरी हैं चारों दिशि ❋ क्यहिघर करैं गुजारा जाय।
ढेबा बोले तब ऊदनिते ❋ अब नरवरको होउ तैयार॥
करैं गुजारा मकरन्दी घर ❋ कछुदिन समय काटिहैं जाय।
यह मन भाय गई ऊदनिके ❋ औ चलिबेको भये तैयार॥
उदया ठाकुर तुमरधारको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार।
तीनों चलिभे गढ़ सिरसाते ❋ नरवरगढ़में पहुँचे जाय॥
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा ख्याल करो मनमाहिं।
ब्याहन आये थे नरवर जब ❋ लाये साथ आपने फौज॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ नाहीं पास ढाल तलवार।
एक कुवांपर ऊदनि बैठे ❋ तौलौमालिनिनिकसी आय॥
हिरिया मालिनि पूँछन लागी ❋ औ परदेशी बात बनाउ।
कौन देशके तुम बासी हो ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
बोले ऊदनि तब मालिनिते ❋ वासी नगर महोबे क्यार।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार॥
लाये संपदा थे नरवरमें ❋ सो तुम्हरे घर दई गँवाय।
तुमहूँ भूलि गई बिपदामें ❋ हमको सब जानत संसार॥
यह सुनि हिरिया पूँछन लागी ❋ सांची कहौ उदैसिंहराय।
फौज कटीली तुम कहँ छांड़ी ❋ औ कहँ तज्यो बेंदुला घोड़॥
बात बनावन लगे उदैसिंह ❋ औ हिरियाते लगे बतान।

चढ़ी पिथौरा दिल्लीवाला ❋ सिगरोमहुबो लियो लुटाय ॥
सुनवां फुलवाको डोला लै ❋ हमरे लूटि लिये हथियार ।
घोड़ा बेंदुला हथिपचशावद ❋ सो लैगयो पिथौराराय ॥
प्राण अपने लै भागे हम ❋ औ नरवरगढ़ पहुँचे आय ।
इतनीसुनिकै हिरिया चलिभइ ❋ पहुँची रंगमहलमें जाय ॥
हाल सुनायो सब रानीको ❋ रानी बहुत गयी घबराय ।
बोली रानी तब हिरियाते ❋ हमरे मन यह नहीं समाय ॥
ज्यहि दिन ऊदनि नरवर ऐहैं ❋ तादिन होय दिवसकी राति ।
हिरिया समुझावै रानीको ❋ रानी वचन करौ परमान ॥
ढेबा ऊदनि दोनौ आये ❋ कहौ तो अबहीं लाउँ लिवाय ।
तौलौं आये मकरंदी तहँ ❋ तब रानीने कही सुनाय ॥
जिन्हिं विवाही फुलवाबेटी ❋ सुनियत आये उदयसिंहराय ।
जल्दी जावौ तुम कुवटापर ❋ हमको खबरि सुनावौ आय ॥
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❋ तुरतै छाती लियो लगाय ।
पूंछन लागे मकरन्दी तब ❋ छांड़ो कहां बेंदुला घोड़ ॥
फौज कटीली कहँ छाड़ि तुम ❋ औ कहं तजीढाल तलवारि ।
ऊदनि बोले तब मकरन्दते ❋ हमते कछू कही ना जाय ॥
आये पृथीराज दिल्लीते ❋ महुबे लूटि लई करवाय ।
बहिनि तुम्हारी औ सुनवांको ❋ तुरतै डोला लियो खँदाय ॥
यहसुनि बोले मकरंद ठाकुर ❋ औ ऊदनिते लगे बताव ।
जियत तुम्हारे डोला लैगौ ❋ तुम्हरे जीवनको धिक्कार ॥
अबहीं चलौ साथ हमरे तुम ❋ करिहौं अपनी फौज तयार ।
चलिकै दिल्लीको लुटवैहौं ❋ दोनों डोला लिहौं खँदाय ॥
बात सुनी यहु मकरन्दीकी ❋ ऊदनि बहुत खुशीह्वइ जायँ ।
परो भरोसा तब ऊदनिको ❋ मिलिहै हमहिं इंदलसी क्वांर ॥
चलिभे मकरंद तब कुवटाते ❋ तीनों क्षत्री संग लिवाय ।

तुरतै पहुँचे रंग महलमें ❋ रानी करी रसोई त्यार।
चारौं बैठे जब जेंवनको ❋ सुन्दर भोजन धरे अगार॥
कौर उठायो जब ऊदनिने ❋ नैनन बही नीरकी धार।
देखि हाल यह रानी बोली ❋ धीरज धरौ उदयसिंह राय॥
पृथीराज लूटो महुबे जौ ❋ तौ हम दिल्ली लिहैं लुटाय।
बोले ऊदनि तब रानीते ❋ हमने करो बहाना आय॥
रैयत सुखी सबै महुबेकी ❋ बैठे राज्य करैं परिमाल।
अपनी पीठी खोलि उदयसिंह ❋ रानिहि तुरत दिखावन लाग॥
इन्दल हरिगे जो बिठूरमें ❋ सो सब हाल दियो बतलाय।
बांसन मारु दई आल्हाने ❋ सो सब रानीते कही बुझाय॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड़ लै जाय।
तब रानी समुझावन लागी ❋ बेटा धीर धरो मन माहिं॥
संकट कटि जैहैं जल्दीते ❋ औ सब ह्वैहैं काम तुम्हार।
ऊदनि चलिभे तब चौकाते ❋ औ ड्योढ़ीमें पहुँचे जाय॥
पूछन लागे तब ढेबाते ❋ दादा मतो देउ बतलाय।
कैसे मिलिहैं बेटा इन्दल ❋ ताको अब कुछ करौ उपाय॥
बोले ढेबा तब ऊदनिते ❋ भैया गुदरी लेउ सिलवाय।
जोगी बनिकै चलौ हियांते ❋ तौ मिलिजाय परेउनालाल॥
थान मंगाये तब मखमलके ❋ चारि गुदरियां लईं सिलाय।
बीस पर्तकी बनी गुदरियां ❋ जिनमें छिपे सबै हथियार॥
टोपी बनवाईं जोगीनकी ❋ सबमें हिरा दिये जड़ाय।
भस्म रमाई तब चारोंने ❋ रामानन्दी तिलक लगाय॥
यक यक गुदरी सबने पहिरी ❋ ऊदनि बँसुरी लई उठाय।
डमरू लीन्हो मकरंदीने ❋ ढेबा खंजरी लई उठाय॥
बजो मँजीरा तब उदयाको ❋ गावन लागे राग मलार।
कान अवाज परी रानीके ❋ सो द्वारेपर पहुँची आय॥
सूरति देखी जब जोगिनकी ❋ रानी मोहि मोहि रहिजाय।

बोली रानी तब जोगिनते ❀ जोगिन डेरा देउ डराय ॥
बहुत पियारे हमके लागौ ❀ तब मकरंदीने दियो जवाब ।
तुमने माता पहिचानो ना ❀ कुंछा लिये रहिउ नौ मास ॥
भेष बनायो हम जोगीको ❀ ढुँढ़िहैं जाय इंदलसी क्वांर ।
रानी बोली मकरंदीते ❀ तुम्हरो काम सिद्धिह्वइ जाय ॥
पहिले जैहौ तुम झुन्नागढ़ ❀ जहँ सेनापति स्वसुर तुम्हार ।
तहँतुमढुंढ़ियोत्यहिइन्दलको ❀ जासो होवै काम तुम्हार ॥
कुसुमा रानी मकरन्दीकी ❀ सो भीतरसे लागी बतान ।
घर भर जादू मोरे मैकेमें ❀ तिरिया जादू करैं बनाय ॥
देखि जो पैहैं कोउ ऊदनिको ❀ अपनी जादू दहैं चलाय ।
चारौ पुरियां जादू वाली ❀ मकरन्दीको दई गहाय ॥
मुखमें पुरिया तुम सब दबियो ❀ तुम परजादू ना अनिआय ।
चारौ चलिभे तब महलनते ❀ अपनो मयामोह बिसराय ॥
राहपकरि लइ झुन्नागढ़की ❀ पहुंचे पांच रोजमें जाय ।
जोगी पहुंचे जब पनिघटपर ❀ अपने बाजो दिये बजाय ॥
राग रागिनो गावन लागे ❀ मोहित भये तहां नर नारि ।
सबपनिहारिनमोहित ह्वइगइं ❀ पानी भरिबो गईं भुलाय ॥
काहू दीन्ही माला मुंदरी ❀ काहू छल्ला दिये निकारि ।
एक पहर पनिघटपर ह्वइगौ ❀ बांदी सोचि सोचि रहि जायं ॥
लैकै गागर बांदी चलिभइ ❀ रंगमहलमें पहुंची जाय ।
बांदी पहुंची जब महलनमें ❀ सब सखियनते कह्यो हवाल ॥
चार जोगिया ऐसे आये ❀ तिनके रूप न बरने जायं ।
उमर बीति गई झुन्नागढ़में ❀ ना अस जोगी परे दिखाय ॥
यह सुनि अपने अपने घरते ❀ सब ठकुरानी भईं तयार ।
चलिकै देखैं उन जोगिनको ❀ सबने थार लिये मंगवाय ॥
सो भरवाय लिये मेवाते ❀ औंकुंटापर पहुंची आय ।
लै ले पुरिया जादूवाली ❀ देखै रूप जोगियन क्यार ॥

कोऊ बात करै ऊदनिते ❋ कोउ ढेबाते लगी बतान ।
कोऊ पूछे मकरन्दीते ❋ काहे डार्यो मूड़ मुड़ाय ॥
तकि तकि जादू उनपर छांड़ैं ❋ सो जोगिनपर ना अनिआय ।
बोलीं सखियां तब आपुसमें ❋ अब हम करिहैं कौन उपाय ॥
अपने कर्तबके पक्के हैं ❋ हैं यह जोगी बुरी बलाय ।
सिगरी सखियां यकठौरी होय ❋ पहुंची रंगमहलमें जाय ॥
बोलीं सखियां रनि कुशलाते ❋ रानी सुनौ हमारी बात ।
चारि जोगिया ऐसे आये ❋ जिनके रूप न बरने जायँ ॥
बोली रानी तब सखियनते ❋ तुम जोगिनको लावौ बुलाय ।
सखियां लौटि गईं जोगिनपै ❋ औ जोगिनको लईं बुलाय ॥
जोगी आये दरवाजेपर ❋ गावन लागे राग मलार ।
रूप देखिकै तिन जोगिनको ❋ रानी मोहि मोहि रहिजाय ॥
रानी बोली सेनापतिकी ❋ काहे डारे मूड़ मुड़ाय ।
कौन तपस्या खण्डित ह्वैगइ ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हो ❋ आगे कौन देशको जात ।
जोगी बोले तब रानीते ❋ रानी सुनौ हमारी बात ॥
कर्म हमारे जोग लिखो है ❋ ताको कोउ मिटैया नाहिं ।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
फिरिकै रानी बोलन लागी ❋ जोगिउ डेरा देउ डराय ।
बोले ऊदनि तब रानीते ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
रमता जोगी बहता पानी ❋ इनको कौन सकै बिलमाय ।
आजु रमानी तुम्हरी डचोढ़ी ❋ भोरहि हमैं रमानी बाट ॥
रानी बोली फिर जोगिनते ❋ महलन करैं रसोई त्यार ।
तनिक बिलमि जावौ डचोढ़ीमें ❋ जोगिउ जेयँ लेउ ज्योंनार ॥
तब फिरि मकरंद बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात ।
धोखे रहियो ना जोगिनके ❋ हमरो मकरंद है अस नाम ॥
ऊदनि ढेबा उदया ठाढ़े ❋ यह सुनि रानी लगी बतान ।

मूड़ मुड़ाये तुम काहेको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
हाल सुनायो सब मकरंदने ❋ तब रानीने कह्यो सुनाय ।
देवी पूजन करौ हियां तुम ❋ पूँछौ हाल मातुते जाय ॥
यह मन भाई बघ ऊदनिके ❋ तब महलनमें करो निवास ।
खबरि सुनी जब सेनापतिने ❋ तुरते मिले जोगियन आय ॥
साले कांतामल मकरंदके ❋ सोऊ मिले जोगियन आय ।
चलिभे ऊदनि रंगमहलते ❋ औ मठियामें पहुंचे जाय ॥
पूजा करिकै श्रीदेवीकी ❋ ऊदनि हाथ जोरि रहिजायँ ।
इन्दल हरिगये हैं बिठूरते ❋ माता पिता देउ बतलाय ॥
आभा बोली तब देवीकी ❋ अब तुम बलखबुखारे जाउ ।
है जो बेटी अभिनन्दनकी ❋ चित्तररेखा राजकुमारि ॥
सोई इन्दलको हरि लै गइ ❋ दिनमें सुअना लेति बनाय ।
इन्दल बेटा तुमको मिलिहैं ❋ जल्दी जाउ उदैसिंहराय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभे ❋ औ रानी पै पहुँचे आय ।
हाल सुनायो सब रानीको ❋ तब रानीने कहा सुनाय ॥
जादू बहुत प्रगट तहँवापर ❋ ताते बहुत रहेउ हुशियार ।
कांतामलको तुरत बुलायो ❋ रानी कहन लगी तत्काल ॥
संग जाउ तुम मकरंदीके ❋ औ इन्दलहि ढुँढ़ावौ जाय ।
इतनी सुनतै कांतामलने ❋ अपनी गुदरी लई उठाय ॥
पुरिया जादूकी लै लीन्ही ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।
पन्द्रह दिनकी मंजिल करकै ❋ बलखबुखारे पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई तब फाटकपर ❋ दरवानीने कही सुनाय ।
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
सुनतै बोले ऊदनि ठाकुर ❋ दरवानीको दियो जवाब ।
देश हमारा बंगाला है ❋ आगे हिंगलाजको जायँ ॥
नाम सुना हम अभिनन्दनका ❋ तब हम अलख जगाई आय ।
फाटक खोलौ तुम जल्दीते ❋ मांगै शहर तुम्हारे जाय ॥

खोलो फाटक दरवानीने ❀ जोगी निकरि गये वापार ।
जबहीं पहुँचे गलियारनमें ❀ अपने बाजा दिये बजाय ॥
बजो यकतारा कांतामलको ❀ ढबाकि बजन खंजरी लागि ।
डमरू बाजी मकरंदीकी ❀ बँसुरी बजी उदयसिंहक्यार ॥
बजे मंजीरा तहं उदयाके ❀ गायन लागे राग मलार ।
डारि मोहिनी दइ जोगिनने ❀ मोहित भये सबै नरनारि ॥
काहू दीन्हे रुपया पैसा ❀ काहू माला दिये गहाय ।
काहू दीन्हे साल दुसाला ❀ छल्ला मुँदरी दिये उतारि ॥
जोगी आये जब पनिघटपर ❀ मोहित भई सबै नरनारि ।
तारा बांदी जो रानीकी ❀ मनमें सोचि सोचि रहिजाय॥
डेढ़ पहर पनिघठपर ह्वइगो ❀ कह रानीते कहिहौं जाय ।
बांदी पहुँची रंगमहलमें ❀ तब रानीने दइ ललकारि ॥
ढेढ़ पहर पनिघटपर बीतो ❀ सिगरे प्यास मरै रनिवास ।
हाथ जोरिकै बांदी बोली ❀ मेरी खता माफ ह्वइजाय ॥
पांच जोगिया ऐसे आये ❀ जिनके रूप न बरने जायँ ।
नीके नाचत हैं पनिघटपर ❀ तासों देर भई महरानि ॥
आज्ञा पाऊँ जो तुम्हरी मैं ❀ तौ जोगिनको लाऊँ लिवाय ।
हुक्म दे दियो तब रानीने ❀ तू जोगिनको लाउ बुलाय ॥
चलि भइ बांदी तब जल्दीते ❀ औ जोगिनको लाइ बुलाय ।
जोगी आये जब द्वारे पर ❀ अपने बाजा दिये बजाय ॥
सूरत देखी जब जोगिनकी ❀ रानी गई सनाका खाय ।
बोली रानी तब बांदीते ❀ तेरो डरिहौं पेटु फराय ॥
जोगी लरिका ये नाहीं हैं ❀ ये राजाके राजकुमार ।
गज गज भरिकी इनकीछाती ❀ औ नैननमें बरै मसाल ॥
चढ़ा उतारू मोखा इनके ❀ मारू सिंहबरन करिहावँ ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ रानी बोलो बात सम्हारि ॥
हम हैं जोगी बंगाले के ❀ है गोरखपुर कुटी हमारि ।

बाप हमारे बारे मरिगै ❀ बारी बैस मातु भइ रांड ॥
देश हमारे सूखा परिगो ❀ माता बेचो जोगियन हाथ ।
रूप विधाता हमको दीन्हे ❀ सो हम राखैं कहां छिपाय ॥
यह सुनि रानी बोलन लागी ❀ जोगिउ हमहिं देउ बतलाय ।
जड़े जवाहिर हैं गुदरिनमें ❀ सो कहँ पाई देउ बताय ॥
बोले ऊदनि तब रानीते ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ।
राजा जैचँद हैं कनउजमें ❀ तहं हम अलख जगाई जाय ॥
देखि तमाशा राजा मोहे ❀ तब यह गुदरी दई सिलाय ।
बोली रानी तब जोगिनते ❀ अब हम जाने हाल तुम्हार ॥
तनिक ठहरियो तुम द्वारेपर ❀ बेटी देखि तमाशा लेय ।
बांदी भेजी तब रानीने ❀ तू बेटीको लाउ बुलाय ॥
बांदी पहुँची सत खण्डापर ❀ औ बेटी ते कही सुनाय ।
तुमहि बुलायो है रानीने ❀ सो तुम चलो हमारे साथ ॥
बेटी चलिभइ तब बांदी सँग ❀ औ मातापै पहुँची आय ।
रानी देखी जब बेटीको ❀ तब जोगिनते लगी बतान ॥
नाच दिखाय देउ बाबा तुम ❀ जोगिन बाजा दिये बजाय ।
राग रागिनी गावन लागे ❀ नाचन लागे उदैसिंहराय ॥
बेटी उठिकै गइ ऊदनिपै ❀ तुरतै बीरा दियो गहाय ।
बीरा चाबो बघ ऊदनिने ❀ औ बेटी तन करी निगाह ॥
रूप देखि चित्तरेखाको ❀ ऊदनि गिरे मूरछा खाय ।
देखि हाल यह रानी बोली ❀ इनको पेटु दिहैं फरवाय ॥
जोगी नाहीं ये भोगी हैं ❀ इन छल करो हियांपर आय ।
रूप देखिकै मेरि बेटीको ❀ जोगी गिरो भूमि भहराय ॥
यह सुनि ढेबा बोलन लागे ❀ रानी घटिगो ज्ञान तुम्हार ।
बीरा दियो आय बेटीने ❀ तामें दई तमाखू डारि ॥
पीक लागि गइ यहु जोगीके ❀ ताते गिरो भूमिपर जाय ।
तीनि पहरको भूखा जोगी ❀ पायो नहीं अन्न जलपान ॥

नाचत गावत तीन पहर भे ❀ ताते गयो शीश भन्नाय ।
बेटी बोली तब रानीते ❀ माता आज्ञा होय तुम्हारि ॥
धरी मिठाई सतखंडापर ❀ सो जोगीको लाउँ जिवाय ।
बोली रानी तब बेटीसे ❀ अबहीं जोगी लाउ जिवाय ॥
तुरतै उठिकै बेटी चलिभै ❀ ऊदनिको गे संग लिवाय ।
बेटी पहुँची सतखण्डापर ❀ औ पिंजराको लियो उतारि ॥
सुआ निकारो त्यहि पिंजराते ❀ तुरतै मानुष लियो बनाय ।
बोली बेटी तब इन्दलसे ❀ हमने जानी थी मनमाहिं ॥
तुम्हरी बरोबरि कोउ सुन्दरना ❀ सो तुम देखो दृष्टि पसारि ।
कैसो सुन्दर यहु जोगी है ❀ याको रूप दियो भगवान ॥
इन्दल देखा जब ऊदनिको ❀ तब बेटीते कही सुनाय ।
धोखे रहियो ना जोगीके ❀ समुहे चाचा खड़े हमार ॥
परदा करिलेउ तुम जल्दीते ❀ अंटा आये उदैसिंह राय ।
परदा करवैयो वाही दिन ❀ जा दिन होय तुम्हारो ब्याह ॥
बोले ऊदनि तब इन्दलते ❀ बेटा मानो कही हमारि ।
जो अभिनन्दन यहु सुनिपैहै ❀ आये यहाँ बनाफर राय ॥
घरलौं जैबो मुशकिल ह्वइहैं ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ।
जोगी ह्वइकै घरते निकसे ❀ तुम्हरे कारन मूड़ मुड़ाय ॥
देश देशमें हम फिरि आये ❀ पायो तुमहि यहाँपर आय ।
बहुत दुख छायो है महुबेमें ❀ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
हाथ जोरिकै इन्दल बोले ❀ चाचा सुनौ हमारी बात ।
हमहिं माँगिलेउ तुम रानीते ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
ऊदनि बोले तब बेटीते ❀ माँगे देउ परेउना लाल ।
बोली बेटी तब ऊदनिते ❀ चाचा वचन करो परमान ॥
कठिन तपस्या हम कीन्ही है ❀ तब बर मिलेइ मोहिं संसार ।
ब्याह कराय लेउ अबहीं तुम ❀ हमरो डोला लेउ खंदाय ॥
अपने पंडितको बुलवावौ ❀ सब सामान लेउ मँगवाय ।

तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ तुम सुनिलेउ हमारी बात ॥
चोरा चोरी ब्याह न करिहैं ❀ करिहैं ब्याह धूमके साथ ।
ज्यहिदिन ब्याहन इन्दल ऐहैं ❀ चलिहैं अँधाधुंध तलवारि ॥
यह सुनि बोली चित्तररेखा ❀ ना जानो है हाल तुम्हार ।
धोखे रहियो ना माड़ौके ❀ जहँ ले लियो बापको दाउँ ॥
सातौ भैया हमरे जालिम ❀ जालिम जोर हमारो बाप ।
कठिन मवासी बलखबुखारा ❀ जहँ है जादूको अधिकार ॥
लड़ न जितिहौ मेरे बापते ❀ कैसे करिहौ आय विवाह ।
यहसुनि तड़पे ऊदनि बाँकुड़ा ❀ औ बेटीते लगे बतान ॥
दतिया मारि उड़ैसा मारो ❀ बाजी सेत बन्द लौं टाप ।
गर्व न राखो हम काहूको ❀ हमको जानत सकल जहान ॥
सातौ भैया तुम्हरे बांधौं ❀ औ राजाको तुरत बँधाय ।
सातौ भाँवरि मैं डरवाऊँ ❀ तौ मेरो नाम उदैसिंह राय ॥
जिसकी बेटी नीकी देखैं ❀ जोरा जोरी करैं विवाह ।
साँचो साँचो यहु हमरो प्रण ❀ सो तुम जानि लेउ मनमाहिं ॥
बेटी बोली तब ऊदनिसे ❀ चाचा गंगा लेउ उठाय ।
गंगा करि लइ तब ऊदनिने ❀ जल्दी ब्याह लिहौं करवाय ॥
सुआ बनायो तब इन्दलको ❀ बेटी पिंजरा दियो गहाय ।
मानुषवाली पुरिया लैकै ❀ सो ऊदनिको दइ पकराय ॥
शहर लांघि जैयो जबहीं तुम ❀ तबहीं मानुष लिहौ बनाय ।
ऊदनि चलिभे तब पिंजराले ❀ औ नीचेको पहुँचे आय ॥
भिक्षा लैकै तब रानीते ❀ अपनो कूच दियो करवाय ।
शहरके बाहर मानुष करिकै ❀ इन्दलको लौ संग लिवाय ॥
आयकै पहुंचे गढ़ सिरसामें ❀ उदया ठाकुर गयो अगार ।
खबरि सुनाई नरमलिखेको ❀ मलिखे आये पंवरिदुआर ॥
चरण लागिकै नरमलिखेके ❀ ऊदनि माथे लियो लगाय ।
हाल सुनायो सब इन्दलका ❀ जैसे मिलो परेउना लाल ॥

फिरकै ऊदनि बोलन लागे ❋ दादा सुनो बीर मलिखान ।
बांसन मारो म्वहिं आल्हाने ❋ जल्लादनको दो सौंपाय ॥
सुनवां भौजी दहिने ह्वइगइ ❋ हमरो लीन्हो प्राण बचाय ।
दुखमें पीठी तुमहू दे गये ❋ फाटक बन्द लिये करवाय ॥
सब कोउ साथी है संपतिमें ❋ ना बिपदामें कोउ सहाय ।
बड़ा भरोसा था अपने मन ❋ सिरसा बसत बीर मलिखान ॥
अब तुम इन्दलको ल जावो ❋ औ दादाको देवौ जाय ।
अब हम जैहैं नरवरगढ़में ❋ जबहीं लैहैं साजि बरात ॥
तब हम मिलि जैहैं बरातमें ❋ दादा वचन करौ परमान ।
इन्दल बिचले तब ऊदनिते ❋ हम ना तजिहैं साथ तुम्हार ॥
ऊदनि समझायो इन्दलको ❋ बेटा सुनो लड़ैते लाल ।
जबहीं बरायत तुम्हरी ऐहैं ❋ तब हम चलिहैं साथ तुम्हार ॥
पाती लिखिदइ बघऊदनिने ❋ सो इन्दलको दई पकराय ।
हाल बतैयो ना काहूको ❋ की म्वहिं मिले उदयसिंहराय ॥
दुसरी पाती ऊदनि लिखिकै ❋ सो मलिखेको दई गहाय ।
पहिले पाती सुनवै दीजो ❋ फिर इन्दलहि मिलैयो जाय ॥
इतनी कहिकै ऊदनि बांकुड़ा ❋ नरवर गढ़की पकरी राह ।
मकरंद ठाकुर औ कांतामल ❋ सोऊ चले साथमें जाय ॥
मलिखे चलिभये गढ़ महुबेको ❋ इन्दल ढेबा संग लिवाय ।
एक पहरके तब अरसामें ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
जहां कचहरी परिमालैकी ❋ पहुँचे तहां बीर मलिखान ।
आगे खड़ो कियो इन्दलको ❋ औ राजाते करी सलाम ॥
सूरति देखी जब इन्दलकी ❋ तब राजाने कही सुनाय ।
इन्दल देउ जाय आल्हाको ❋ वे ऊदनिको देयँ मंगाय ॥
जो नहिं मंगवैहैं ऊदनिको ❋ तौ दशपुरवा दिहै फुकाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे चलिभे ❋ औ इन्दलको संग लिवाय ॥

सङ्गहि चलिभै चंदेले तब ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय।
गई पालकी चंदेलेकी ❀ जहँ दरबार बनाफर क्यार॥
बोले इन्दल नर मलिखेते ❀ चाचा सुनो हमारी बात।
बहुत दुखी है चाची हमरी ❀ कहौं तौ हाल देउँ बतलाय॥
हुक्म दियो तब नरमलिखेने ❀ जल्दी खबरि सुनावो जाय।
इन्दल पहुंचो रंगमहलमें ❀ रनि सुनवांपै गौ नियराय॥
दोउ कर जोरे इंदल ठाढ़े ❀ सुनवां लीन्हो शीश लचाय।
इन्दल बोले तब सुनवांते ❀ माता काहे रही रिसाय॥
बात न पूंछी तुम हमरी कछु ❀ आये बहुत दिनामें माय।
गुस्सा ह्वैके सुनवां बोली ❀ हमरे आगेते हटि जाउ॥
तुम्हरे कारण ऊदनि देवर ❀ मारे गये बिना अपराध।
इतनी सुनिकै इन्दल बोले ❀ माता धीर धरौ मनमाहिं॥
पाती लिखिदइ थी मलिखेने ❀ सो इन्दलने दई गहाय।
दुसरी पाती इन्दल लैकै ❀ रनि फुलवाको दइ पकराय॥
बहुत खुशी भइ फुलवा रानी ❀ सो मैं कहँलग करौं बखान।
पढ़ी हकीकत रनि सुनवांने ❀ सो मैं कहँलग करौं बखान॥
इन्दल उतरे सतखंडाते ❀ औ मलिखेपै पहुँचे आय।
चलिभये मलिखे तब आल्हापै ❀ तब इंदलको कियो अगार॥
पहुँचे मलिखे जब आल्हापै ❀ नंगी हाथ लिये तरवार।
बोले मलिखे तुनि आल्हाते ❀ दादा देखौ दृष्टि पसारि॥
तुम्हरे समुहे इंदल ठाढ़े ❀ तुम ऊदनिको देउ मंगाय।
जो ना दैहौ तुम ऊदनिको ❀ तौ दशपुरवा दिहौं फुंकवाय॥
समुहे देखो जब इंदलको ❀ तुरतै आल्हा गये लजाय।
कायल ह्वैकै तुनि आल्हाने ❀ अपनी लई कटारी काढ़ि॥
हमने ऊदनि को मरवायो ❀ अबहीं पेट फारि मरि जाउँ।
छीनि कटारी लइ मलिखेने ❀ औ आल्हाते कही सुनाय॥

सुनौ हाल तुम अब इन्दलको ❀ पाछे करियो और उपाय ।
बलखबुखारेके अभिनंदन ❀ जो नौनेजाके सरदार ॥
तिनकी बेटी चित्तररेखा ❀ हरि लेगई परेउना लाल ।
सपना दीन्हो मोहिं देवीने ❀ हम जोगी बनि पहुँचे जाय ॥
अलख जगाई बलखबुखारे ❀ सो इन्दलको लाये ढूँढ़ि ।
ब्याह करनको हम कहि आये ❀ ताको जल्दी करो उपाय ॥
हमहिं दिखावौ अपनी मर्दुमी ❀ औ इन्दलको करौ विवाह ।
बिना लहुरवाके देखैं हम ❀ कसे भांवरि लिहौ डराय ॥
यहिविधि कीन्हीं बहुत बतकही ❀ औ चलिभये बीरमलिखान ।
चलिभये राजा चँदेले तब ❀ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
मलिखे पहुँचे गढ़ सिरसामें ❀ आल्हा सोचि सोचि रहि जाय।
बहुत अनमने आल्हा ह्वइगे ❀ औ पलँगापर लेटे जाय ॥
उतरी सुनवां सतखंडाते ❀ औ आल्हापै पहुँची जाय ।
कौन नींदमें तुम सोवत हौ ❀ अब लरिकाको करो विवाह ॥
बोले आल्हा तब सुनवांते ❀ हमते यहु ह्वइबेको नाहिं ।
प्राण हमारो ना भारू है ❀ जो हम बलखबुखारे जायं॥
यह सुनि बोली सुनवां रानी ❀ स्वामी पैयां परो तुम्हारि ।
करौ तयारी तुम बरातकी ❀ औ इन्दलको करो विवाह ॥
ब्याह न करिहौ जो लरिकाको ❀ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हार ।
न्योता भेजौ सब राजनको ❀ सो बरातको होयं तयार ॥
खबरि पठावौ तुम सिरसामें ❀ आवैं साजि बीरमलिखान ।
तापर ज्वाब दियो आल्हाने ❀ रानी बैठि रहौ अरगाय ॥
कठिन मवासी बलखबुखारा ❀ जहँपर जादूको अधिकार ।
प्राण गँवावन हम ना जैहैं ❀ हमते ब्याह होनको नाहिं ॥
तड़पी सुनवां तब आल्हाते ❀ तुम्हरी मति मारी भगवान ।
याही पौरुषपर स्वामी तुम ❀ ऊदनि देवर दिये मराय ॥

अबतुम पहिरौ लँहगा लुगरा ❀ औ धरिलेउ जनाना भेष ।
चुरियां बिछिया पहिर लेउ तुम ❀ औ पलँगापर बैठो जाय ॥
अपने कपड़ा हमको दैदेउ ❀ औ दैदेउ ढाल तलवार ।
साजि बरायत मैं लैं जैहौं ❀ औ इन्दलको लैहौं ब्याहि ॥
जैसे पानमें चूना लागे ❀ कत्था परे लाल ह्वइजाय ।
तैसेइ बात लगी आल्हाके ❀ सूखी निकरि गई वापार ॥
बोले आल्हा तब सुनवांते ❀ रानी मानी बात तुम्हारि ।
जो तुम कहिहौ सोई करिहैं ❀ तुम्हरे वचन किये परमान ॥
कागद लैकै कल्पीवालो ❀ अपनो कलमदान लै हाथ ।
पातीलिखिलिखिसबराजनको ❀ भेजी तुरत बनाफरराय ॥
यक हरकारा दिल्ली भेजो ❀ यक झुन्नागढ़को दियो पठाय ।
यक हरकारा नरवर भेजो ❀ यक बौरीगढ़ दियो पठाय ॥
यक हरकारा नैनागढ़को ❀ भेजो तुरत बनाफर राय ।
देश देशके सब राजनको ❀ न्योता भेजि दियो तत्काल ॥
पाती लिखि भेजी सिरसाको ❀ आवो बेग बीर मलिखान ।
चिट्ठी पाई जब मलिखेने ❀ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
चारि घरीके तब अरसामें ❀ दशपुरवामें पहुँचे आय ।
देश देशके राजा आये ❀ तिनके जहँ तहँ करो मुकाम ॥
इन्दलहरनक्यार आल्हा यह ❀ हमने कहिकै दियो सुनाय ।
इन्दलब्याहक्यार आल्हाहम ❀ आगे कहिकै दिहैं सुनाय ॥
समय समयपर आल्हा गावो ❀ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहं ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति इन्दलहरण समाप्त

श्री :

अथ बलखबुखारेकी लड़ाई

*

(इन्दलका ब्याह)

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

रामवामदिशि जनकनन्दिनी ❀ राजत लखन दाहिनी ओर ।
शोभा शील रूप गुण आगर ❀ बांयें भरत शत्रुहन जोर ॥
रत्नजटित सिंहासन सोहै ❀ सोहै राजक्षत्र भगवान ।
ठाढ़े हनूमान जोरे कर ❀ जगकल्याणकरन यह ध्यान ॥
करौं ध्यान अब रघुनन्दनको ❀ जासो होय भक्ति भगवान ।
नितनित बाढ़ै भवनसम्पदा ❀ अंतिम मिलै मुक्ति निर्वान ॥
रामचन्द्रको ध्यान मनोहर ❀ पंचायतन रूप करतार ।
जो कोउ सुमिरन करै निरंतर ❀ होवै जगत भक्त सरदार ॥
देखी करनी हनूमानकी ❀ हैं जो पवन पुत्र बलवान ।
निशिदिन सेवा कीन्ह रामकी ❀ तासों प्रगट नाम संसार ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❀ सीताराम स्वामिपद ध्याय ।
छूटि माजरा गा सुमिरनका ❀ साका चला शूरमन क्यार ॥
कहौं ब्याह मैं अब इन्दलको ❀ यारो सुनियो कान लगाय ।
हुक्म दै दियो तुनि आल्हाने ❀ लश्कर सजिकै होय तयार ॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❀ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजो नगाड़ा दशपुरवामें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
करी तयारी सब क्षत्रिनने ❀ औ बरातको भये तयार ।

भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ पंडित बेदी रची बनाय ॥
चौक पुराय दई मोतिनकी ❀ सोने कलश दियो धरवाय ।
मल्हना देवै तिलका रानी ❀ रानी सबै चँदेले क्यार ॥
नेगजोग कीन्हें सबने मिलि ❀ लागे होन मँगलाचार ।
तुरत बुलाय लियो इन्दलको ❀ चन्दन चौकी दियो डराय ॥
कलश प्रतिष्ठा करि पंडितने ❀ गौरि गणेश दिये पुजवाय ।
तेल चढ़ायो सात सुहागिन ❀ औ अस्नान दियो करवाय ॥
कपड़ा पहिराये इन्दलको ❀ शिरपर मोर दियो धरवाय ।
आई पालकी सजि द्वारेपर ❀ तामें इन्दल बैठे जाय ॥
कुवाँ बियाह्यो रानी सुनवां ❀ सातौ भांवरि दई डराय ।
उठी पालकी तब इन्दलकी ❀ औ बरातमें पहुंची जाय ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री सबै भये तैयार ।
कूच करायो दशपुरवाते ❀ औ नरवरमें पहुंचे जाय ॥
खबरि कराई मकरंदीको ❀ जल्दी चलौ बरायत साथ ।
बोले ऊदनि मकरन्दीते ❀ अब इन्दलको करौ विआहु ॥
सुनतै चलिभे मकरंदी तब ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ।
लश्कर सजिगै मकरंदीको ❀ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
मकरंद मिलै जाय आल्हाको ❀ तब बरात सब भई तयार ।
चली बरायत मौरंगगढ़ते ❀ पहुंची बलखबुखारे जाय ॥
जबही पहुंचि गये धूरेपर ❀ तहंपर डेरा दियो डराय ।
भयो बुलौआ तहं पंडितको ❀ ब्याहकि साइत दियो बताय॥
चूड़ामणि पंडित तब आये ❀ पत्राखोलि बिचारन लाग ।
बोले पंडित तब बिचारिकै ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ॥
रूपना बारीको बुलवायो ❀ बोले तुरत बीर मलिखान ।
ऐपनवारी तुम लै जावौ ❀ तब रूपनाने कही सुनाय ॥
मोरे भरोसे तुम रहियो ना ❀ हम ना शीश कटैहैं जाय ।
कठिन मवासी बलखबुखारा ❀ जहं है जादूको अधिकार ॥

मलिखे बोले तब रुपनाते ❀ भैया अक्किल गई तुम्हारि ।
इन्दल ब्याहनको रहिहैं ना ❀ यहुदिन कहिबेको रहिजाय ॥
तुमको नेगी हम समझैं ना ❀ तुमतौ भैया लगौ हमार ।
बोला रुपना तब मलिखेते ❀ घोड़ा हमहिं देउ मँगवाय ॥
इंदलवालो तेगा दै देउ ❀ तौ हम बलखबुखारे जायँ ।
जो जो मांगो रुपना बारी ❀ सो सो मलिखे दियो मँगाय ॥
कूदि बछेरापर चढ़ि बैठो ❀ ऐपनवारी लई उठाय ।
रुपना चलिभौ तब बराततै ❀ पहुँचो बलखबुखारे जाय ॥
जबहीं पहुँचो दरवाजेपर ❀ दरवानीने कही सुनाय ।
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोलो रुपना दरवानीते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
नगर महोबा एक बस्ती है ❀ जहँपर बसै चँदेले राय ॥
ब्याहन आये हम इन्दलको ❀ रुपना बारी नाम हमार ।
एपनवारी हम लाये हैं ❀ राजे खबरि सुनावौ जाय ॥
नेग हमारो जो द्वारेको ❀ राजा तुरत देइँ मँगवाय ।
चारि घरी भरि चलै शिरोही ❀ औ बहि चलै रक्तकी धार ॥
यहै नेग हमरो द्वारेको ❀ सो तुम खबरि देउ पहुँचाय ।
यह सुनि चलिभौ दरवानी तब ❀ औ राजापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी तहँ राजाको ❀ औ रुपनाको कह्यो हवाल ।
तुरत बुलायो हंसामनिको ❀ औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
मारि गिरावौ तुम बारीको ❀ तुरतै मूंड लेउ कटवाय ।
तौलौं रुपना सम्मुहे पहुंचो ❀ औ राजाको करो सलाम ॥
तीनि कदम जब गद्दीरहिगइ ❀ ऐपनवारी दई चलाय ।
बोलो रुपना अभिनन्दनते ❀ हमरो नेगु देउ मंगवाय ॥
गुस्सा ह्वैकै तब राजाने ❀ सातौ बेटा लिये बुलाय ।
हुक्म दै दियो सब क्षत्रिनको ❀ याको घोड़ा लेउ छिनाय ॥
रुपनै घेरो सब क्षत्रिनने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ।

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंग बलीको नाम ॥
खैंचि शिरोही लइ रूपनाने ❋ बहुतक क्षत्री दियो गिराय ।
चली शिरोही चारि घरी भरि ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
ऐड़ लगाय दई घोड़ाके ❋ द्वारे कलशा लिये उतारि ।
करी बन्दगी अभिनन्दनको ❋ ऐपनवारी लई उठाय ॥
नेग आपनो हम भरि पायो ❋ दायज लिहैं बनाफर राय ।
यह कहि चलिभौ रूपनाबारी ❋ फाटक निकरि गयो वापार ॥
रूपना चलिभौ तब बरातको ❋ पहुंचो तब बरातमें जाय ।
रंग बिरंगो रूपना देखो ❋ तब हँसि कही बीरमलिखान ॥
कैसी गुजरी दरवाजे पर ❋ सो सब हाल देउ बतलाय ।
बोले रूपना तब मलिखेते ❋ दादा कछू न पूंछो बात ॥
चली शिरोही चारिघरी भरि ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
हियांकि बातैं तौहियं छांड़ौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ॥
सातौ बेटा तब बुलवाये ❋ औ राजाने कही सुनाय ।
छापा मारौ तुम बरातमें ❋ अबही लूटि लेउ करवाय ॥
यह सुनि चलिभे सातौ बेटा ❋ औ लश्करमें पहुंचे जाय ।
बोलि नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ लश्कर साजि भये तैयार ।
घोड़ा सजवायो सातौने ❋ तिनपर फांदि भये असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई बढ़ाय ।
लश्कर पहुँचो सो धूरेपर ❋ डंका होन गोलमें लाग ॥
सुनी खबरि जब नरमलिखेने ❋ तुरतै हल्ला दियो कराय ।
डंका बजवायो जल्दीते ❋ सिगरी फौज भई तैयार ॥
भयो सामना द्वौ फौजनको ❋ मुर्चा बन्दी दई कराय ।
आल्हन बेटा अभिनन्दनको ❋ ताने घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
बोले आल्हन नर मलिखेते ❋ अपनो नाम देउ बतलाय ।
कौन काम तुम्हरो अटको है ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥

यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❀ हमरो नाम बीर मलिखान।
इन्दल ब्याहन हम आये हैं ❀ सो तुम ब्याह देउ करवाय॥
बिना ब्याहके हम जैहैं ना ❀ चाहे कोटिन करो उपाय।
गुस्सा ह्वइकै तब आल्हाने ❀ तोपन बत्ती दइ लगवाय॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ धुअंना रह्यो सरग मंडराय।
अररर अररर गोला छूटै ❀ गोली मन्न मन्न मन्नाय॥
बान अगिनियां छूटन लागे ❀ सर सर परी तीरकी मारु।
गोला लागे ज्यहि हाथीके ❀ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय॥
गोला लागे जौन ऊंटके ❀ दलमें गिरै चकत्ता खाय।
गोला लागे ज्यहि क्षत्रीके ❀ सो गिरि परै धरनि भहराय॥
गोला जंजिरहा जिनके लागै ❀ तिनके हाड़ मांस छुटिजायँ।
बंबके गोला जिनके लागै ❀ वे लत्ता अस जायं उड़ाय॥
छोटी गोली जिनके लागै ❀ मानहुं गिरह कबूतर खाय।
एक पहर भरि गोला बरस्यो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ॥
चढ़ी कमनियां पानी ह्वइगइँ ❀ चुटकिनके गै मांस उड़ाय।
मारु बन्द भइ तब तोपनकी ❀ लंबे बन्द करैं हथियार॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ रहिगौ सात कदम मैदान।
मारु होन लगी बरछिनकी ❀ भालाचलन लाग ततकाल॥
तीहि घरी भरि बजो सांगड़ा ❀ अब आगेको सुनौ हवाल।
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहिगौ डेढ़ कदम मैदान॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि।
खटखट खटखट तेगा बाजै ❀ बोले छपकि छपकि तलवारि॥
चलै जुनब्बी औ अहिगबीं ❀ ऊना चलै बिलायत क्यार।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❀ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान॥
पैदल अभिरि गये पैदलसँग ❀ औ असवारनते असवार।
हौदा मिलि गये हैं हौदा सँग ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दाँत॥

पैदल गिरि गये पैग पैगपर ❁ उनके दुइदुइ पैग असवार ।
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❁ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी ❁ मलिखे कहै पुकारि पुकारि ।
भागि न जैयौ कोउ समुहेते ❁ रखियो धर्म चँदेले क्यार ॥
सदा तुरैया ना बन फूलै ❁ यारो सदा न सावन होय ।
सदा न माता उरमें धरिहैं ❁ यारो जन्म न बारम्बार ॥
इंदल ब्याहनको रहिहैं ना ❁ यहुदिन कहिबेको रहिजाय ।
दियो बढ़ावा जब मलिखेने ❁ क्षत्रिन धरे अगारी पांव ॥
भगे सिपाही अभिनन्दनके ❁ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी अभिनन्दनने ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले अभिनन्दन मलिखेते ❁ काहे धुरो दबायो आय ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❁ पर्बी परी दशहरा क्यार ॥
बेटी तुम्हरी गइ बिठूरको ❁ गंगाकेरि करन अस्नान ।
इन्दल बेटाको हरि लाई ❁ जादू करिकै सुआ बनाय ॥
ऊदनि आये जोगी बनिकै ❁ सो इन्दलको गये लिवाय ।
गंगा उठवाई बेटी ने ❁ सातों भांवरि देउ डराय ॥
सो हम आये चढ़ि बरातलै ❁ सातौ भांवरि देउ डराय ।
बिना बियाहे हम जैहैं ना ❁ चाहै प्राण रहैं की जाय ॥
इतनी सुनतै अभिनन्दनने ❁ नर मलिखेको दियो जवाब ।
धोखे रहियो ना दिल्लीके ❁ नाहीं सजे बीर चौहान ॥
करी लड़ाई ना पिरथीने ❁ मन बढ़ि गये बनाफर राय ।
चुप्पै लौटि जाउ महुबेको ❁ नाहक प्राण गँवायो आय ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❁ हमको जानत सकल जहान ।
जिसकी बेटी नीकी देखैं ❁ जोरा जोरी करैं विवाह ॥
सातौ बेटा तुम्हरे बँधिहौं ❁ तुम्हरी मुश्क लिहौं बँधवाय ।
जोराजोरी ब्याह करैहौं ❁ सातौं भांवरि लिहौं डराय ॥
यह सुनि गुस्सा ह्वै अभिनन्दन ❁ सातौ बेटा लिये बुलाय ।

मारि भगावौ इन पाजिनको ❀ लश्कर कटा देउ करवाय ॥
इतनी सुनतै सातौ बेटा ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
झुके सिपाही अभिनन्दनके ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
दबी बायसी अभिनन्दनकी ❀ मुर्चा हटा महोबियन क्यार ।
भगे सिपाही महुबेवाले ❀ देखो हाल बीर मलिखान ॥
रूपना बारीको बुलवायो ❀ औ यह कही बीर मलिखान ।
जल्दी जावौ तुम ऊदनिपै ❀ औ यह हाल सुनावौ जाय ॥
इतनी सुनतै रूपना चलिभै ❀ औ ऊदनिपै पहुँचो जाय ।
बोलो रूपना बघ ऊदनिते ❀ लश्कर घिरे बीर मलिखान ॥
तुमहिं बुलायो नरमलिखेने ❀ जल्दी चलो हमारे साथ ।
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❀ मकरन्दीते कही सुनाय ॥
करौ तयारी अब लरिबेकी ❀ लश्कर सबै लेउ सजवाय ।
मकरंद ऊदनि दोनों चलिभै ❀ औ मठियामें पहुँचे जाय ॥
पूजन करिकै जगदम्बाको ❀ औ फिर होम दियो करवाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❀ माता राखो धर्म हमार ॥
आभा बोली तब देवीकी ❀ तुम्हरो काम सिद्ध है जाय ।
बिनती करिकै दोनों चलि भये ❀ औ लश्करमें पहुँचे आय ॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❀ तुरतै डंका दियो बजाय ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
फौज सजाई कांतामलने ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
मकरन्द ऊदनि औ कांतामल ❀ पहुँचे समरभूमिमें आय ॥
रूपना बारी तुरतै आयो ❀ औ मलिखेते कही सुनाय ।
मकरन्द ऊदनि औ कांतामल ❀ पहुंचे समरभूमिमें आय ॥
दाबे घोड़ा ऊदनि आये ❀ समुहे गोल गये समुहाय ।
लश्कर मारो अभिनन्दनको ❀ औ आल्हापै पहुंचे जाय ॥
ऐड़ लगाई रसबेंदुलके ❀ पचशावद पर बाजी टाप ।
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❀ सोने कलशा दियो गिराय ॥

बोले आल्हा तब मलिखेते ❀ यह क्षत्री है बुरी बलाय ।
थोरी उम्मिरिको लरिका है ❀ रणमें कठिन करै तलवार ॥
तौलौं ऊदनि समुहे आवे ❀ करमें आल्हा लई कमान ।
मलिखे बोले तब आल्हाते ❀ दादा घटिगौ ज्ञान तुम्हार ॥
ऊदनि ठाढ़े हैं समुहे पर ❀ तुमने लीन्ही हाथ कमान ।
तुनते धरि कमान हौदामें ❀ आल्हा छाती लियो लगाय ॥
बिना बेंदुलाके चढ़वैया ❀ ऐसी कौन करै तलवारि ।
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❀ दादा धन्य तुम्हारो ज्ञान ॥
मामा माहिलके कहिबेते ❀ तुमने मारो हमहिं बंधाय ।
सौंपि दियो फिरि जल्लादनको ❀ दहिने भई शारदा माय ॥
जोगी बनिके हमने ढूंढा ❀ इन्दल महुबे दिये पठाय ।
साइति बीती अब भौंरिनकी ❀ क्यों नहिं ब्याह लियो करवाय ॥
याही पौरुष पर दादा तुम ❀ म्वहिं जल्लादन दौ सौंपाय ।
बैठो दादा अब हौदामें ❀ अबहीं भांवरि दिहौं डराय ॥
आल्हा बोले तब कायल ह्वइ ❀ झूठी कही महिल परिहार ।
गंगा उठाय लई माहिलने ❀ तब हमरे मन गई समाय ॥
हम जब चलिहैं अब महुबेमें ❀ उरई घर घर लिहैं लुटाय ।
ऊदनि चलिभये तब लरिबेको ❀ बीच गोलमें गये समाय ॥
कांतामल उत्तरमें पहुंचे ❀ पश्चिम गये बीर मलिखान ।
पूर्व ओरको मकरंद घेरो ❀ ढेबो दक्खिन पहुंचो जाय ॥
पांचो शूर पैठि दलभीतर ❀ दोनों हाथ करैं तलवार ।
हौदन हौदन नचै बेंदुला ❀ भाला नागदौनिको हाथ ॥
बत्तिस हौदा खाली करिके ❀ हंसामनिपै गौ नियराय ।
तब ललकारो हंसामनिने ❀ ऊदनि खबरदार ह्वइजाउ ॥
खैंचि कमनियां हंसामनिने ❀ समुहे छांड़ि कैबरी दीन्ह ।
घोड़ा बेंदुला दहिने ह्वइगौ ❀ कैबर निकरि गयो वापार ॥
खैंचि शिरोही लई ऊदनिने ❀ तब मलिखेने कही सुनाय ।

हाथ न डरियो हंसामनिपर ❁ इतनी मानौ कही हमारि ॥
धक्का देके तब ऊदनिने ❁ हंसामनिको दियो गिराय ।
डंड बांधिकै हंसामनिकी ❁ अपने लश्कर दियो पठाय ॥
मोहन बेटा अभिनन्दनको ❁ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
चोट चलाई बघ ऊदनिपर ❁ ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ॥
गाफिल करिकै तब मोहनको ❁ ऊदनि लियो जंजीरन बांधि ।
देखि हाल यह सुक्खा बेटा ❁ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
तौलौं ढेबा समुहे पहुँचे ❁ औ सुक्खाको दइ ललकार ।
लई शिरोही तब सुक्खाने ❁ औ ढेबापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ढेबाने ❁ औ सुक्खाको लियो बँधाय ।
सातो बेटा अभिनन्दनके ❁ नर मलिखेने लिये बँधाय ॥
बढ़े सिपाही महुबेवाले ❁ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
राम बनावै तौ बनिजावै ❁ बिगरी बनत बनत बनिजाय॥
सुमिरण करिकै नारायणको ❁ भोलानाथ क्यार धरि ध्यान ।
कहौं लड़ाई अभिनन्दनकी ❁ शारदा मोको होउ सहाय ॥
सुनो हाल जब अभिनन्दनने ❁ सातौ बेटा बँधे हमार ।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❁ रणमें होत युद्धघमसान ॥
हाथी चढ़ायो अभिनन्दनने ❁ औ यह हुक्म दियो करवाय ।
जान न पावैं कोउ महुबेको ❁ सबकी कटा देउ करवाय ॥
झुके सिपाही अभिनन्दनके ❁ खटखट चलन लगी तलवारि।
मलिखे बोले तब चौंड़ाते ❁ ब्राह्मण सावधान ह्वइजाउ ॥
इतनी सुनते चौंड़ा ब्राह्मण ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
इक ललकार दई राजाको ❁ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
सेल धमक्की तब चौंड़ाने ❁ राजा लीन्ही चोट बचाय ।
गुर्ज उठायो अभिनन्दनने ❁ सो चौंड़ापर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब पुट्ठापर ❁ हाथी भगा चौंड़िया क्यार ।
मलिखे आये तब दहिनेपर ❁ अपनी सेल धमक्की आय ॥

चोट बचाई अभिनन्दनने ❀ अपनी दीन्ही गुर्ज चलाय ।
लगो चपेटा जब घोड़ीके ❀ घोड़ी सात कदम हटिजाय ॥
दाबे घोड़ा ऊदनि आये ❀ मकरन्दीते कही सुनाय ।
जो नहिं ब्याह होय इन्दलको ❀ तौ जगह्वैहै हँसी हमारि ॥
ऊदनि ढेबा मकरँद ठाकुर ❀ तीनौ चले एक ही साथ ।
मुर्चन मुर्चन खबरि जनाई ❀ क्षत्रिन धर्म तुम्हारे हाथ ॥
जंग जीतिकै जौ घर चलिहौं ❀ सोने कड़ा दिहौं डरवाय ।
दियो बढ़ावा जब क्षत्रिनको ❀ क्षत्रिन मारु मारु रटि लागि॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❀ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
आल्हा आये पचशावदपर ❀ घोड़ी कबुतरीपर मलिखान॥
घेरो राजा अभिनन्दनको ❀ चारों ओर चलै तलबारि ।
दाबे बेंदुला ऊदनि आये ❀ अभिनन्दनपै पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❀ सोने कलशा दिये गिराय ।
ऊदनि पहुँचे फिर आल्हापै ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
तुम्हरी बरनीके अभिनन्दन ❀ दादा लेउ जँजीरन बांधि ।
हाथी बढ़ायो तब आल्हाने ❀ अभिनन्दनते लगे बतान ॥
यातौ ब्याह करौ बेटीको ❀ या तुम हाथ लेउ हथियार ।
गुस्सा ह्वैकै तब अभिनंदनने ❀ अपनी लीन्ही लालकमान ॥
हियरा डटिकै तब आल्हाको ❀ समुहे छोड़ि कैबरी दीन्ह ।
सूँड़ उठाई पचशावदने ❀ कैबर निकरि गई वा पार ॥
हाथी बढ़ायो तब आल्हाने ❀ हौदा हौदाते मिलिजाय ।
दोनों शूर भिरे दंगलमें ❀ हौदा कठिन चलै तलवारि ॥
खोलि जंजीर दई आल्हाने ❀ पचशावदको दइ पकराय ।
बैरी समुहे यहु ठाढ़ो है ❀ याको लेउ जंजीरन बांधि ॥
सांकल फेरी तब हाथीने ❀ सब दल रेन बेन ह्वैजाय ।
भगे सिपाही अभिनन्दनके ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥

ऊँचे खाले कायर भागे ❃ जो रणदुलहा चले बराय ।
लम्बी धोतिन के पहिरैया ❃ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
बांधि जँजीरन अभिनंदनको ❃ आल्हा खुशी भये मनमाहिं ।
कठिन लड़ाई भै धूरेपर ❃ औ बहिचली रक्तकी धार ॥
जबहीं बांधौ अभिनंदनको ❃ जीतको डंका दियो बजाय ।
रूपना वारी को बुलवायो ❃ औ इन्दलको लियो बुलाय॥
चली पालकी तब इंदलकी ❃ औ लश्करमें पहुँची आय ।
भयो बुलौआ चूड़ामणि को ❃ ब्याहकि साइति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❃ अबहीं भांवरि लेउ डराय ।
करी तयारी तब आल्हाने ❃ चारों नेगी संग लिवाय ॥
जितने घरौआ हैं आल्हाके ❃ कांतामलको लीन्हैं साथ ।
खबरि कराय दई महलनमें ❃ अबहीं भांवरि लिहैं डराय ॥
त्यारी करवाई महलनमें ❃ सांगनको दौ खंभ गड़ाय ।
मड़वा छाय दियो ढालनको ❃ पंडित वेदी रची बनाय ॥
गौरि गणेशके पूजन करि ❃ फिरि गठिबंधन दियो कराय ।
सखियां मंगल गावन लागीं ❃ पंडित वेद उचारन लाग ॥
हाथ जोरि बोले अभिनंदन ❃ पूरन ह्वइगो काम तुम्हार ।
कैद छोड़ि देउ तुम सबहीकी ❃ हौ सब योग्य बनाफरराय ॥
कन्यादान दियो राजाने ❃ ऊदनि नेग दियौ बँटवाय ।
इतना सुनतै बघ ऊदनिने ❃ सबकी कैद दई छुड़वाय ॥
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❃ सातौं भांवरि लई डराय ।
बोले आल्हा अभिनन्दनते ❃ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
तुम यहु जानी थी अपनेमन ❃ कोउ रजपूत नहीं संसार ।
इतनी कहिके बुनि आल्हाने ❃ सिगरे नेगी लिये बुलाय ॥
गहनों बांटिदियो सबहीको ❃ दान दक्षिणा दई बटवाय ।
ऊदनि बोले तब राजाते ❃ बेटी बिदा देउ करवाय ॥
भई तयारी तब महलनमें ❃ बेटी बिदा दई करवाय ।

चित्तररेखा भेंटन लागी ❋ माता लीन्हों कंठ लगाय ॥
फिरिफिरि भेंटीसबसखियनको ❋ सखियां रोय रोय रहि जायं ।
जाय पालकीमें बैठी जब ❋ पलकी चली बरायत माहिं ॥
बारह तोड़ा मोहरें लैके ❋ सो ऊदनिने दिये लुटाय ।
आई पलकी जब बरातमें ❋ दीन्ही हुक्म बीर मलिखान ॥
मेख उखारि देउ तँबुअनकी ❋ लश्कर कूच देउ करवाय ।
कूचको डंका जब बजवायो ❋ तँबुअन मेखैं दई उखारि ॥
लदे सलीता जब ऊँटनपर ❋ छकड़न तँबू दिये लदाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
बारह दिनकी मंजिलकरिकै ❋ झुन्नागढ़में पहुँचे जाय ।
आल्हा ऊदनि मलिखे मकरंद ❋ कांतामलको संग लिवाय ॥
तुरतै पहुँचे राज सभामें ❋ सेनापतिको करी सलाम ।
बोले आल्हा राज सभामें ❋ राजा सुनौ हमारी बात ॥
कांतामलम्वहिं दहिने ह्वइ गये ❋ इन्दल हमको दियो मिलाय ।
करी बड़ाई तब राजाने ❋ तुम सब लायक राजकुमार॥
दुइ मुकाम करिकै झुन्नागढ़ ❋ तिसरे कूच दियो करवाय ।
सात दिनोंकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे नगर महोबे जाय ॥
खबरि भेजि दइ रंगमहलमें ❋ आये ब्याहि इन्दलसीक्वांर ।
आरति सजवाई मल्हनाने ❋ सखियां करैं मंगलाचार ॥
आई पालकी दरवाजेपर ❋ परछनि करी मल्हनदेरानि ।
बहू उतारी रनि सुनवांने ❋ दान दक्षिणा दई बटाय ॥
दगी सलामी गढ़ महुबेमें ❋ घर घर भयो मंगलाचार ।
ऊदनि भेंटे तहँ सबहिनते ❋ मनमें खुशी भये नरनारि ॥
ऐसे ब्याह भयो इन्दलको ❋ सो हम कहिके दियो सुनाय ।
दुसरौ ब्याह कहौं इंदलको ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ॥
समय समयपर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीतारामक्यार धरि ध्यान ॥

अथ पथरियाकोटकी लड़ाई

★

इन्दलका दूसरा विवाह

दोहा-तुलसी रार न कीजिये, जब लग पार बसाय।
आग लगै कंगालके, राव रंक जरि जाय ॥ १ ॥
तुलसी मन मानै नहीं जब लग खता न खाय।
जैसे विधवा इस्तरी, गर्भ रहे पछताय ॥ २ ॥

सावन प्यारी लैन भैंस है ❀ जैसे रण प्यारी तलवार।
भैया प्यारो वा दिन लागै ❀ बैरिहि करै सामनो आय॥
भारी धक्का उनके लागे ❀ जिनकी लैन भैंस मर जाय।
पूरो धक्का उनके लागे ❀ जिनको ज्वान पूत मरिजाय॥
लगो महीना है सावनको ❀ घर घर गावैं राग मलार।
गड़े हिंडोला गढ़ कनउजमें ❀ झूलन लागे नर औ नार॥
सजसजकामिनि झूलनलागी ❀ आयो तीजनको त्योहार।
बोलो सुनमा तब सासूसे ❀ माता सुनो हमारी बात॥
मोहिं झूलाय देउ लखाबागमें ❀ मन्शा मोरि पूरि हो जाय।
अब सब झूलैं हैं ठकुरानी ❀ मोहिनिगुड़ीको कौन झुलाय॥
इतनी सुनिके दोउ कर मींजे ❀ दिवला सोचि सोचि रहिजाय।
या बार्नाको फिर मत कहियो ❀ अरिमति करे जुलुमकै ठाट॥
रेशम झूला पड़ो महलमें ❀ हियनैं झूलो राजकुँवारि।
बाग लखेरामें मत जइयो ❀ हाँ कहिं हो जावै ना रारि॥
इतमें वैरी दिल्लीवारो ❀ उतमें वसै बिसेने राय।
चारों ओर वसत हैं वैरी ❀ बन्नाफर पर दांत चबायँ॥
जो कोई धावा करै बागमें ❀ इज्जत खोय पकड़ लैजाय।

नाम डूब जाय बन्नाफरको ❋ पगिया पड़ै जमीपर आय ॥
इतनी सुनिकै सुनमा जरिगई ❋ ज्यों बारूद लगाई आग ।
बादिन इज्जत कहां गई थी ❋ जा दिन हरी सुरजदे नार ॥
नट्टवा बनि गये मह्हुबेवारे ❋ नटनी बनो सिया नँदलाल ।
ऐसे ताने सुनमा मारे ❋ सौ सौ बातैं कहीं बनाय ॥
या तो झूलूँ लखा बागमें ❋ ना मैं मरूँ अभी विष खाय ।
बोली लागि गई दिवलाके ❋ तब ऊदनिको लियो बुलाय ॥
कही हकीकत नरऊदनिसों ❋ बेटा सुनौ उदयसिंहराय ।
यह हठ ठानी है सुनवाँने ❋ लखा बागमें देउ झुलाय ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि चुपभे ❋ औ कानों पर धर लिये हाथ ।
मैं फल पायो गंगाजीपर ❋ जो इंदलको लै गयो साथ ॥
मेरे भरोसे मत तुम रहियो ❋ बलकी बात कछू है नाय ।
ऊदनि चलिभे तब हुँअनासे ❋ औ बँगलामें पहुँचे जाय ॥
सुनमा जिद्द न छांड़ै अपनी ❋ दिवला सोचि सोचि रहिजाय ।
वेगि बुलायो तब सैय्यदको ❋ अरु तालासे कही सुनाय ॥
ताला बोले तब रानीसे ❋ तुमको कौन पड़ी परवाह ।
बागा झुलाऊं मैं सुनवांको ❋ मेरी देखि लेउ तलवार ॥
फौज सजाय लई सय्यदने ❋ लखा बागको भयो तयार ।
डोले सज गये हैं सुनवांके ❋ आतु चली सुनमदे रानि ॥
धावा करिदौ लखा बागको ❋ फौजें पड़ी बरोबर जाय ।
चार घड़ी केरे अरसामें ❋ बागमें झूला दियो डराय ॥
झूला डाल दई सुनमाने ❋ गावन लागी राग मलार ।
सातसौं सखियां झूलन लागीं ❋ कछू तारीफ करी ना जाय ॥
चौकी बैठ गई सय्यदकी ❋ अजगर चमक रही तलवार ।
वही समैयाके अरसामें ❋ औरै डोलन लगी बयार ॥
पथरीगढ़को नृप ज्वालासिंह ❋ सो खेलनको आयो शिकार ।
आंचर उड़ि गयो रनिसुनवांको ❋ मुखकी चमक लगी तनमाहिं ॥

चौधा लग गये रनि सुनवांके ❀ ज्वालासिंह सोचि रहिजाय ॥
ना कहुँ बादलमें बिजली है ❀ ना कहुँ चमक रही तलवारि ।
चहुँधा लागे है जंगलमें ❀ दइया ये परलैके ठाट ॥
तब काहूने पता बतायो ❀ बागमें झूलै सुनमदे नार ।
ऐसी नारी ना कोउ जगमें ❀ चन्दा सूरजकी उनहार ॥
सुनिके खटक गई राजाके ❀ वा रनियांको देखूँ जाय ।
पढ़ि पढ़ि जादू राजा मारो ❀ सबकी नजर बन्द ह्वइजाय ॥
जितनी चौकी औ रखवारे ❀ सबकी नजर बन्द ह्वइजाय ।
जादू पढ़िकै घोड़ा मारो ❀ तुरतै बाग पहुँचो जाय ॥
जहँ झूलैं थी सुनमा रानी ❀ ठाढो भयो सामने जाय ।
बोलो राजा तब सुनमासे ❀ रानी सुनो हमारी बात ॥
तोसी तिरिया एक न देखी ❀ तोमें बसिगै मेरे प्राण ।
तोहि लै जाऊँगो पथरीगढ़ ❀ अब तुम चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुनिकै सुनमा जरिगइ ❀ नैना अग्निज्वाल ह्वइजायं ।
टरजा कायर मेरे सम्मुहेसे ❀ तेरे फूट गये अब भाग ॥
काछी कुरमीकी न बेटी ❀ ना कहुं नीच जातिकी नार ।
भारी राजाकी बेटी हूं ❀ भारी भूप पती भरतार ॥
जो सुनि पावैं ताला सैय्यद ❀ तोहि बकरासों करैं हलाल ।
हाथ ततैयनमें मत डारै ❀ सारी निपट उड़ावैं खाल ॥
मारि चपेटन मुंह मलडारै ❀ औ हलि जायँ बतीसों दांत ।
इतनी सुनिकै राजा जरिगौ ❀ औ जादूकी छोड़ी घात ॥
पढ़ि पढ़ि सरसों राजा मारैं ❀ औ सुनमापै देय चलाय ।
विद्या अड़िगइ अब सुनमाकी ❀ एकौ पेश चलैहै नाय ॥
जादू देखो जब सुनमाकी ❀ राजा हका बका रहिजाय ।
हाथ चलैबो को मन चाहो ❀ तब रानीने कही सुनाय ॥
बेगि बुलाय लेउ सय्यदको ❀ बांदी तेरी लेउं बलाय ।
मारि शिरोहिनसे मुंह तोड़ैं ❀ एक धड़के द्वै धड़ हो जाय ॥

बांदी चलिदइ तब तालापर ❋ राजा चलत न लागी बार ।
छोड़ि बागको ऐसो भागो ❋ पत्ता टुटे मृगा ज्यों जायं ॥
नैना लागेहैं सुनमाके ❋ जाकै निकसे परली पार ।
गढ़ पथरीमें जाकर पहुंचो ❋ औंधो गिरो मूर्छा खाय ॥
सब समझावत हैं राजाको ❋ राजा एक मानता नाय ।
तीन दिना राजाको हुइगे ❋ अन्न रु पानी गयो भुलाय ॥
रानी बोली ज्वाला सिंहकी ❋ औ केसरिया बलम हमार ।
कौन मुसीबत तुमपर पड़गइ ❋ अन्न रु पानी दियो बिसराय ।
बेगि बतावौ हमको बालम ❋ किस बिपताने लियो दबाय ॥
तापर ज्वाब दियो राजाने ❋ रानी मानो यह सत भाय ।
एक कामिनी मैंने देखी ❋ जैसी तीनि लोकमें नाय ॥
बाग लखेरा गढ कनउजमें ❋ तामें झूल रही हरखाय ।
बीर महोबियनकी सो नारी ❋ जिनको कहैं बनाफर राय ॥
या तो लाऊं वा तिरियाको ❋ ना मैं मरिजाऊं विष खाय ।
बहुतक बरजो है रानीने ❋ राजा एक मानता नाय ॥
हाथ जोरिके रानी बोली ❋ तुमको जतन देउं बतलाय ।
जैसी चंडी गढ़ पथरीकी ❋ ऐसी तीन लोकमें नायं ॥
पूजा करो जाय चंडीकी ❋ सारे काम सिद्ध हुइ जाय ।
यह मन मानि गई राजाके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ॥
आधी रात केर बेलामें ❋ राजा जागि उठो अकुलाय ।
झुंड मंगाये हैं बकरनके ❋ मदकी बोतल लै दश पांच ॥
चलिकै पहुंचो है चंडीपर ❋ औ मंदिरमें झोंका खाय ।
बली चढ़ाई तब देवीको ❋ औ मदिराकी दीन्ही धार ॥
एक पांवसे ठाढ़ो हुइगो ❋ दोनों जोड़े हाथ बनाय ।
कठिन तपस्या राजा कीन्ही ❋ मुंहमें तिनका रह्यो दबाय ॥
सवा पहर भर ध्यानलगायो ❋ फिर हिरदेपर धरो कटार ।
बोली चण्डी पथरीवाली ❋ औ भूपतिको पकड़ा हाथ ॥

कौन मुसीबत तुम पर पड़ि गइ ❋ जो छातीमें हनत कटार ।
हत्या देवको ह्यां आयो ❋ मोसे कौन भयो अपराध ॥
तब राजाने हाल बतायो ❋ चण्डीने फिर दियो जवाब ।
जा राजा अपने घर बैठहु ❋ कलको काज सिद्ध हुइजाय ॥
आज्ञा मानि लई राजाने ❋ फूलो अंगमें नाहिं समाय ।
इधर चली चंडी मठियासे ❋ उड़न खटोला भई सवार ॥
आधीरात चोरको पहरा ❋ रिजगिरिकोट पहोंची जाय ।
जहँपर सोवै रानी सुनमदे ❋ ढूँढ़ो मन्दिरमें तिन जाय ॥
गाफिल सोवै रानी सुनमा ❋ तनकी खबर जिसे कछु नाय ।
चार बीर पलंगापर बैठे ❋ जो रानीके पहरेदार ॥
पढ़ पढ़ सरसों चण्डी मारी ❋ विद्या टूटी अगम अपार ।
चारौ बीर बशी कर लीन्हे ❋ औ फिरि लीन्हीं मुश्कबँधाय॥
बटुआ विद्याको जो नामी ❋ सिरहानेसे लियो उठाय ।
जितनी विद्या थी सुनमाकी ❋ बे खबरीमें कीली जाय ॥
यह गति कीन्ही है सुनमाकी ❋ तनकी खबर रही कछुनाहिं ।
चुटकी मारी तब चण्डीने ❋ लीन्हों पलंग समेत उठाय ॥
सो धर दीन्हों पथरी गढ़में ❋ ज्वाला सिंहके बँगले माहिं ।
खबर कराय दई राजाको ❋ अपनी रनियां देखौ जाय ॥
पहुँचे फाटक जब दिन निकसो ❋ सूरज उगे गयो तम भाग ।
बेटी आई ज्वालासिंहकी ❋ सुआ पंखिनी नाम कहाय ॥
भरिकै लोटा गंगाजलको ❋ औ सुनमाके धोरे जाय ।
नींदखुली जब रनि सुनवांकी ❋ रानी चौंकी महलों माहिं ॥
इतउत देखै रानी सुनमां ❋ देखत हकीबकी रहजाय ।
ना वे मानुष ना वे मन्दिर ❋ ना वो शहरमें है कछु आन॥
सहित पलंगको मुहिलै आयो ❋ रानी रोवै जार बेजार ।
हाथ जोड़ि कह सुआपंखिनी ❋ मौसी सुनौ हमारी बात ॥
मनमें शोचकरो कछु तुम ना ❋ तुमको कौन पड़ी परवाह ।

जैसे राजा पथरी वारो ❋ तैसे नाय बनाफर राय ॥
जैसे सुख तुम यहँ भोगोगी ❋ ऐसे ह्वां आल्हाके नाहिं ।
कही हकीकत गढ़पथरीकी ❋ जाविधि हरी सुनमदे जाय ॥
जरिकै सुनमा रापट ह्वैगइ ❋ औ पंखिनिको दई जवाब ।
तोहिं विवाह देउँ इन्दलसे ❋ वादिन मिटै करेजा घाव ॥
जो पानी सुनमाको दीन्हों ❋ मुँह धोवनको करो पियार ।
गडुआ पटकि धरणिसे मारो ❋ राजसुतासो कीन्ही रार ॥
सौ सौ गारी दईं महलमें ❋ कन्या भागी पीठि दिखाय ।
खबरैं पाई ज्वाला सिंहने ❋ नंगी ली तलवार उठाय ॥
सुनमाके बंगलेमें पहुँचो ❋ रिसभर बोलो तब अज्ञान ।
शीश उड़ाऊं अभी खड्गसे ❋ ना तर कही हमारी मान ॥
बोली सुनमा तब राजाको ❋ भूपति मानो कही हमार ।
सात मास तू भैया मोरो ❋ औ मैं लागूँ बहिन तुम्हार ।
जो दिन टरजाय सात मासके ❋ तब तुम बालम औ मैं नार ।
इन वचनोंकी जो पलटैगो ❋ वाकी कुलीनरक अधिकार ॥
जो तुम कछु करिहौ बरजोरी ❋ तौ सुनमा है वशकी नायँ ।
आप मरूं औ तोको मारूं ❋ चाहैं प्राण रहैं की जाय ॥
ये मनमानी ज्वालासिंहके ❋ वाके वचन करे परमान ।
छोड़ आसरा तब सुनमाको ❋ अपने बँगले पहुँचो आन ॥
या विधिरहन लगी तहँ सुनमा ❋ जैसे भैनीके संग भ्रात ।
यहांकि बातें तौ यहँ छांड़ौ ❋ औ आगेको सुनो हवाल ॥
आंखखुली जब एकबांदीकी ❋ सूनो भवन देखि पछिताउ ।
खोज करी सारे महलनमें ❋ मिली न कहीं सुनमदे रानि॥
बांदी रोई रंगमहलमें ❋ आगे शीश महलको जाय ।
मात दिवलदे पर जा पहुँची ❋ ब्योरेवार कही समुझाय ।
अति व्याकुल भइ रानीदिवला ❋ उलटी गिरगइखाय पछाड़ ।
जितने महल बनाफरवाले ❋ इक पलमें लीन्हे ढुँढ़वाय ॥

सागर ताल औ महल अटारी ❁ सर करनकी बाग बहार ।
सङ्ग सहेलिनके घर ढूँढ़े ❁ तहँ ना मिली सुनमदे नार ॥
खबर कराई तब आल्हाकी ❁ औ ऊदनिको लियो बोलाय ।
सुनत हकीकति रनिसुनमाकी ❁ सब शिर धुनै बनाफरराय ॥
नाकैं कटगईं गढ़ महुबेकी ❁ पगिया मिली धूलमें जाय ।
जो यह हाल सुनैं चन्देले ❁ सिरसा सुनै बीर मलखान ॥
बावन गढ़के भूप सुनैंगे ❁ स्याही लगै माथ पर आय ।
ऐसो जतन करो कोई भाई ❁ जा विधिमिले सुनमदे रानि ॥
हैं खोजी कोइह्याँ पर ऐसो ❁ जो रानीको पता लगाय ।
पड़ै न हिम्मत एक बीरकी ❁ पड़रह्यो शोर सकलरनवास ॥
बांदी बोली तब सुनमांकी ❁ जो पीहरसे आई साथ ।
जादिन ब्याही रानी सुनमा ❁ राजा नैपाली दरबार ॥
चार गिद्धिनी दी दहेजमें ❁ जिनको रानी राखै साथ ।
जल्दी ढूँढौ उन गिद्धिनिको ❁ वे ढूँढैंगी राजकुँवारि ॥
करी तलासी उन गिद्धिनिको ❁ सो पाईं भौंरेके माहिं ।
जल्दी काढ़ो उन गिद्धिनिको ❁ सुनमाहरन कह्यो समुझाय ॥
ढूढ़ लै आवौ रनिसुनमाको ❁ जाते रहै हमारी लाज ।
इतनी सुनिकै उड़ी गिद्धिनी ❁ रानी सुनमा ढूँढ़न काज ॥
बावन गढ़में फिरीं ढूँढ़ती ❁ ना कहुँ मिली सुनमदे नार ।
जाकर फिरि पहुँची पथरीगढ़ ❁ ज्वालासिंह नृपके दरबार ॥
गली गली और कूँचे कूँचे ❁ देखत फिरीं बजार बजार ।
आमखास दरबार कचहरी ❁ बँगला देखे नयन उघार ॥
शीशमहल औ बालाखाना ❁ चित्तरशाला औ रनवास ।
जरा जरा सब करिकै ढूंढो ❁ मेहनत बहुत करी खिसियाय ॥
रनियां बैठी चित्तरशाला ❁ गिद्धिनि केरि नजर पड़िजाय ।
चारों जाकर धोरे बैठीं ❁ औ सुनमाकी करी जुहार ॥
धन धन बेटी नैपालीकी ❁ तेरे धन्य घड़ी औतार ।

नाक काटिकै ह्यांपर आई ❀ दोनों कुलकी लाज उतार ॥
जो गति हुइगइ बनाफरकी ❀ हमसे कछू कही ना जाय ।
समाचार सुनमाने वर्णे ❀ जेहि विधि चण्डी लाइ उठाय ॥
हाथ जोड़िके रानी बोली ❀ मेरे वशकी बातैं नाय ।
इतनी सुनिके उड़ी गिद्धिनी ❀ औ आल्हापै पहुंची आय ॥
जो कुछ बीती हैं रानीपै ❀ ब्योरेवार कही समुझाय ।
गढ़ पथरीके भेद बताये ❀ औ जहं गइ सुनमदे नार ॥
बोले ऊदनि तब आल्हासे ❀ भैया सुनलेउ बात हमारि ।
देखि लौटि आवें गढ़ पथरी ❀ जो हो जावे हुक्म तुम्हार ॥
आज्ञा देदई तब आल्हाने ❀ आतुर चले उदैसिंह राय ।
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❀ पथरी कोट पहूंचे जाय ॥
भेष धारिके मनिहारेको ❀ बहुतक चुड़ियां लईं बिसाय ।
धरिकै झोली तब कंधेपर ❀ औ धंसगये नगरके माय ॥
चुड़ियां लैलेउ चुड़ियां लैलेउ ❀ बारम्बार कहैं चिल्लाय ।
जहँ बैठी थी रानी सुनमा ❀ रनवासामें पहुंचे जाय ॥
झोरी उतार धरी ऊदनिने ❀ औ सुनमासे लगे बतान ।
खबरें पड़गईं नर ऊदनिको ❀ जेहि विधिहरी सुनमदे रानि ॥
हाथ जोरिकै सुनमा बोली ❀ देवर सुनौ मरमकी बात ।
सातमास अन्दर बिपतासे ❀ हमको जल्दी लेउ छुड़ाय ॥
जैसे वचन करे ज्वालासिंह ❀ सारी बात कहीं समुझाय ।
सातमास जो खबर न लीन्हीं ❀ फिरना भावज जियतमिलाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ सो हिरदयमें गई समाय ।
करीं तैयारी गढ़ पथरीसे ❀ औ दशपुरवा पहुंचे जाय ॥
जो कछु बात कही सुनमाने ❀ सो आल्हाको दई सुनाय ।
हाथ जोड़िकै ऊदनि बोले ❀ हे छत्तीस कुलोंके राय ॥
करौ चढ़ाई गढ़ पथरीपर ❀ जो विधि छुटै सुनमदेनार ।
इतनी सुनिकै आल्हा बोले ❀ हमसे नहीं चलै तलवारि ॥

लानत ऐसी है रानीपर ❀ हमको नहीं पड़ी परवाह ।
भाई इक रनियांके ऊपर ❀ क्यों परजाको करैं हलाल ॥
हमरे जाने रानी मर गई ❀ वाके जान बनाफरराय ।
इतनी सुनिकै ऊदनि बोले ❀ भैया जीवनको धिक्कार ॥
जो ना जाओगे पथरीको ❀ इकलोइ चढ़ै उदयसिंहराय ।
फिर ललकारो ताला सैयद ❀ आल्हा सुनो हमारी बात ॥
बेशक चढ़ि जावौ पथरीको ❀ बेटा मानो कही हमार ।
जो ना चढ़िहौ गढ़पथरीको ❀ हमरी लाज रहनकी नाय ॥
ताला सैयदके कहनेसे ❀ आल्हा तुरत भये तैयार ।
हुक्म सुनायो तब आल्हाने ❀ सब फौजनको करौ तयार ॥
डौंड़ी पिटगइ है गढ़ियामें ❀ अब कोइ रँधो भात ना खाय ।
जितनी फौजैं आल्हा वारी ❀ एक घंटेमें भई तयार ॥
ताला सैयद ऊदल इन्दल ❀ मुन्शी सजे नवल चौहान ।
बावनगढ़को चिठियां भेजी ❀ ऊपर मोहरैं दई लगाय ॥
जो जो सूबा ना आवैगो ❀ गढ़िया कर देउँ पनियांढार ।
हुई सजावट अब सूबोंकी ❀ यारो सुनलेउ कान लगाय ॥
मांड़ौवारो राजा आयो ❀ बौना कुरिहलको सरदार ।
माहिल आयो उरईवालो ❀ झंडा गड़े बरोबर आय ॥
जोगा भोगा हरिद्वारके ❀ आयो बांदोको उमराव ।
धर्मसिंह पटियालेवालो ❀ फौजसिंहको लायो साज ॥
दलपत सुनपत पानीपतके ❀ कछु तारीफ करी ना जाय ।
गुजरातके लोहा सहेजवायो ❀ जाके नाहिं गड़ै तलवार ॥
ताहर आयो दिल्लीवारो ❀ बज्जरकाया के अनुहार ।
जगनिक आयो जगनेरीको ❀ सब फौजनको संग लिवाय ॥
लाखन सज गये कनउजवारे ❀ जाके लाखनके ब्यौहार ।
भूरी हथिनी कनवजियाकी ❀ बारह कोश अगाड़ी जाय ॥
सूरजमल बंगाले वालो ❀ जमीचन्दको लायो सजाय ।

बलखबुखारेके अभिनन्दन ❋ झंडा गड़े बरोबर आय ॥
ताला साजे बनरसवाले ❋ बावन बेटा सजे सम्हार ।
करी चढ़ाई गढ़ पथरीकी ❋ दलमें भारी मची पुकार ॥
चलतीबार भूप जयचंदने ❋ लाखनको दीन्हो समुझाय ।
ऐसी विधिसों लड़ियो बेटा ❋ जो तुम्हरे ना आवे घाव ॥
बारह रानीमें इकलौता ❋ सोलह रानिनके शृंगार ।
जो कहिं खप गये गढ़ पथरीमें ❋ पीछे नाम लिवैया नाहिं ॥
जंग जो ये जीतैं महुबेवाले ❋ शामिल रहौ फतहके माहिं ।
जो ये खप जायँ रणखेतनमें ❋ भगके गढ़ कनउजमें आव ॥
बारह कोस पिछाड़ी रहियो ❋ बेटा मनियौ कही हमार ।
बदलो लगे बन्नाफरसे ❋ आधी कनउज लई बटाय ॥
यह मन भाय गई लाखनके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
यहां कि बातैं तौ यहँ छोड़ौ ❋ औ आगेको सुनौ हवाल ॥
डबलकूँच फौजनको बोलो ❋ जोधा नहीं करैं मुकाम ।
रात चलैं औ दिनभर चालैं ❋ सारी रैन चलत ही जाय ॥
सीमा दाबि लई पथरीकी ❋ तंबुआ तने खेतमें जाय ।
बारह कोसनके जंगलमें ❋ डेरहि डेरा परैं दिखाय ॥
चिठिया भेजी तब आल्हाने ❋ मुजरे लिखे सम्हार सम्हार ।
जो तेरी मन्शा है लड़नेकी ❋ अपनो खेत बुहारो आय ॥
जो तेरी मन्शा है लड़िबेको ❋ डोला करो हमारे साथ ।
हमरी रानीको दै मिलतू ❋ औ अपनी कन्याको लाव ॥
नातर आयो युद्ध हमारो ❋ तुमपर चढ़े बनाफरराय ।
चिठिया पहुंची ज्वालासिंहपै ❋ ज्यों बारूद लगाई आग ॥
दोनों बेटाको बुलवायो ❋ तिनसे कही युद्धकी बात ।
आल्हाको उत्तर लिख दीन्हो ❋ अब तुम सावधान ह्वइजाव ॥
हाथीराम बड़ो लड़का है ❋ औ छोटो सूबा सरदार ।

ऐसे सोवत हैं मजलिसमें ❀ जैसे शेर गजनके माहिं ॥
आज्ञा ह्वैगइ ज्वालासिंहकी ❀ सब फौजनको लेउ सजाय ।
सीमा दाबी महुबेवारेन ❀ सबके मूंड़ लेउ कटवाय ॥
यह मन भाई शहजादनके ❀ औ हिरदेमें गई समाय ।
सकल समान युद्धके कीन्हे ❀ रणभूमीमें पहुँचे जाय ॥
दोनों दिशिसे तोपैं दहकीं ❀ सूरज गयो धुँधमें छाय ।
तोप लड़ाई जब बँद ह्वैगइ ❀ बन्दूकनकी कीन्ही मार ॥
तिसरी लड़ाई भई तीरकी ❀ चौथी कड़ाबीनकी मार ।
पँचई लड़ाई है बरछिनकी ❀ छठईं भालनकी बौछार ॥
सँतईं लड़ाईं संगीननकी ❀ अठईं बजन लगी तलवार ।
तीन पहर भरि बजी शिरोही ❀ अन्धाधुंध चली तलवार ॥
छातीसे छाती तब मिलिगइ ❀ ता बिच पेशकब्जकी मार ।
लोहूकी तो नदियां बहगइँ ❀ दलमें पड़ी लाश पै लाश ॥
रक्त बहाय दिये खेतनमें ❀ ज्यों भर भादों नीर बहाय ।
हुई पराजय ज्वालसिंहकी ❀ फौजैं गईं खेतसे भाग ॥
तब फौजनको रोक रोकके ❀ आगे चले लड़नके काज ।
सारी सेनाको पीछे करि ❀ आगे बढ़े दोउ सरदार ॥
हाथी डाट दिये खेतनमें ❀ तब दोनोंने करी पुकार ।
कौन है सांवन महुबेवारो ❀ हमसे आय करै दो हाथ ॥
नातर भगजा अपने घरको ❀ याते नाहिं चलै तलवार ।
होनीने चुटिया पकड़ी है ❀ क्यों शिरकाल रह्यो मड़राय॥
इतनी सुनिकै ऊदनि जरिगये ❀ ज्यों दारूमें लागै आग ।
इंदल बेटाको ललकारो ❀ भैया सावधान ह्वै जाव ॥
करो मर्दुमी कछु पथरीमें ❀ जो रही जाय तुम्हारो नाम ।
धरके गरजो सुनमावारो ❀ ज्यों बांबीमें भभकै नाग ॥
जिनके लड़िका समरथ ह्वैगे ❀ पुरिखन कौन पड़ी परवाह ।
दोनों क्षत्री ऐसे झपटे ❀ जैसे सिंह चले ललकार ॥

पथरीवालनके मुरचे पर ❀ दोनों झुके बरोबर जाय।
हाथी बरनीपर ऊदनि है ❀ इन्दल सूबापर डट जाय॥
जो जो शस्तर सूबा मारै ❀ सो सो इन्दल डारै काट।
जो फरसा गजराम मारते ❀ सो ऊदनिके लागै नाहिं॥
बहुतक चोट करी दोनोंने ❀ इनको रोम कटो हैं नाहिं।
तब ललकारो महुबेवारेनने ❀ क्षत्री हो जाओ हुशियार॥
फरसा पकरत परलै होइगइ ❀ कछु तारीफ करी न जाय।
दोनों हाथी मार गिराये ❀ दोनों मारे हाथीवान॥
दोनों काठी गैंडावाली ❀ दोनों दिये सँयोयल काट।
दोनों सेलैं शिरके काटे ❀ तब खुपरीमें आयो घाव॥
दोउ हथेली उनकी कटिगई ❀ करसे छूट पड़ी तलवार।
सूबा हारो है इन्दलसे ❀ औ ऊदनिसे हथीराम॥
बोले ऊदनि तब दोनोंसे ❀ तुम्हैं जानसे मरिहैं नाहिं।
ताने मारै सुनमा भौजी ❀ मेरे समधेटे डारे मार॥
मुश्कैं बांध लई दोनोंकी ❀ उनके डंड लिये बँधवाय।
भगदर पड़गइ सब फौजनमें ❀ सेना धंसी किलेमें जाय॥
यहु सुधिपाई ज्वालासिंहने ❀ राजा रोवै जार बेजार।
रोवत पहुंचो है मठियामें ❀ औ चंडीको ध्यान लगाय॥
भेंट चढ़ैहौं सुत सूबाकी ❀ रणमें डूब गई तलवार।
मोपै चढ़ि आये महुबेवारे ❀ बिपदा कछू कही ना जाय॥

गजल

जय हो! जनपालिका विबुधोंको भ्रमाया तुमने।
कालिका विश्वमें विस्तारी है माया तुमने॥ १॥
वृक्ष मिट्टीके बना पात लगा मिट्टीके।
बाग मिट्टीका ये पानीपै लगाया तुमने॥ २॥
तेरे करतब को कहै रैनमें तारेमें तारेको गिने।
अपने फन्देमें ये संसार बंधाया तुमने॥ ३॥

चंडमुण्डादि बधे रक्तबीज महिषासुर ।
शुम्भनिशुम्भकोरणमारिगिराया तुमने ॥ ४ ॥
होम जप यज्ञ कियादुष्टोंविध्वंसजभी ।
कर कृपा भक्तोंपर भैरवको पठाया तुमने ॥ ५ ॥
भक्त प्रहलादको होलीमें धरा हिरनाकुश ।
अग्नि चन्दनसी करीं शीत बनाया तुमने ॥ ६ ॥
वीर हनुमानको लंकामें बँधाया रावन ।
अग्निका रूप हो असुरोंको जलाया तुमने ॥ ७ ॥
लाखके कोटमें पांडव भी फंसे थे जाकर ।
खोद पृथ्वीको उन्हें पंथ बताया तुमने ॥ ८ ॥
दल बनाफरका चढ़ा हार हुई दलके बीच ।
काज सन्तोंका सदा मात बनाया तुमने ॥ ९ ॥
पुत्र बलिदान करूं रक्त पियाऊं दुर्गे ।
आजरण बीच मलुबियोकोजो ढाया तुमने ॥ १० ॥
सुनिके देवीने विजयदानदियाबालमुकुन्द ।
लोक परलोकमें यह रूप बनाया तुमने ॥ ११ ॥

चण्डी गरजी पथरीवाली ❋ औ फौजनमें पड़ी भिड़ाय ।
पढ़ि पढ़ि सरसों चण्डीफूँकै ❋ बन्नाफरपै देय चलाय ॥
पत्थर हाथी पत्थर घोड़ा ❋ पत्थर बने बनाफर राय ।
इन्दन बचिगयो वा जादूसे ❋ जो सुनमाने करी सहाय ॥
वह चलआयो गढ़कनउजको ❋ अपने बँगले पहुँचे आय ।
बारह कोस पिछाड़ी थे जो ❋ सो एक बचे कनौजीराय ॥
चलिके आये सो कनउजमें ❋ फूले अँगमें नाहिं समाय ।
कही हकीकत तब जयचँदने ❋ जिनघर घीके जलैं चिराग ॥
अब तुम हाल सुनो देवैका ❋ जा विधि मिली इन्दलसे आय ।
भुजा पकड़के तब इन्दलकी ❋ पूछन लागी कुशल मनाय ॥

भरि भरि हिलकी इन्दल रोयो ❁ सब खपगयो कुटुमपरिवार ।
जादू की है एक चण्डीने ❁ सबदल पत्थर दियो बनाय ॥
सुनतैं बानी चौंड़ा पड़ गयो ❁ महलन बीतो हाहाकार ।
भली बिगड़ गइ परदेशनमें ❁ सौ सौ कोस पुकरुवानाय ॥
तेहि अवसरमें लाखनकोप्यो ❁ अपनी फौजैं दईं चढ़ाय ।
महल घेरि लीन्हे आल्हाको ❁ रनवासनको लियो घिराय ॥
कोपकै बोलो कनउजवारो ❁ रानी सुनो हमारी बात ।
खाय खाय टुकड़े कन्नौजीके ❁ मोटे भये बनाफर राय ॥
सात बरसको बाकी दैदेउ ❁ औ तुम छांड़ो देश हमार ।
होश उड़े तब सब रानिनके ❁ औ इन्दलहु गये घबराय ॥
तीन दिनालौं लंघन बीतो ❁ अन्न रु पानी देखो नाय ।
पनघट घेरि लियो कुँहटापै ❁ कूआं नीर भरन दे नाय ॥
यह गति कर दइहे लाखनने ❁ बहुत दिननमें पायो दांव ।
बोली दिवला तब इन्दलसे ❁ बेटा सुनो हमारी बात ॥
चलेजा अबहीं गढ़सिरसाको ❁ औ मलिखेको लाओ बुलाय ।
इतनी सुनतैं इन्दल चलिभयो ❁ झट घोड़ेपर भयो सवार ॥
रात दिना भरके चलनेमें ❁ सिरसाकोट पहूंचो जाय ।
लगी कचहरी नरमलिखेकी ❁ अजगर लाग रहो दरबार ॥
पहुंचो इन्दल बीच कचहरी ❁ औ चाचाको शीश नवाय ।
भुजा पकरके नरमलिखेने ❁ तब छातीसे लीन लगाय ॥
कैसे मुख तेरो कुम्हिलायो ❁ बेटा कहो मरमकी बात ।
इतनी सुनिकै इन्दल रोयो ❁ मुखसे बात कही न जाय ॥
कही हकीकत गढ़ पथरीकी ❁ औ लाखनके हाल सुनाय ।
सात बरसकी बाकी मांगत ❁ कुवटा नीर भरनदे नाहिं
चिलम भरनको इन्दल मांगै ❁ ऐसे करै जुलुमके ठाट ।
देही पजर गई मलिखेकी ❁ मनमें छायो क्रोध अपार ॥

भुज विशाल नाहरके फड़के ❋ बोलो बच्छराजको लाल ।
बिटिया ब्याहूँ मैं जैचंदकी ❋ औ लाखनको करौं हलाल ॥
पथरी मारौं ज्वाला सिंहकी ❋ मुंहमें ठांसि देउ तलवार ।
घोड़ी कबुतरीको मंगवायो ❋ तापै तुरत भयो असवार ॥
हुक्म सुनायो है मुन्शीको ❋ औ सब दीन्हो हाल बुझाय ।
जितनी फौजैं हैं सिरसामें ❋ सब कनउजको लाउ सजाय ॥
दाबी रानैं फिरि घोड़ीको ❋ आधे सर्ग रही मंडराय ।
संगै घोड़ा है इन्दलको ❋ जैसे कला कबूतर खाय ॥
रैन दिवस भरके चलनेमें ❋ कनवज कोट पहोंचो जाय ।
एकदम टूटि परे लाखनपर ❋ कायर सावधान ह्वै जाय ॥
सात बरसकी बाकी देहौं ❋ औ मैं देहौं खिदमतगार ।
हनी सिरोही तब लाखनके ❋ ढालके टूक टूक ह्वै जाय ॥
भगके जाय घुसो महलनमें ❋ भा नगरीमें हाहाकार ।
अब ना छोड़ैं बच्छराजका ❋ सबकी मौत भई एक बार ॥
फिरि धर झपटो है जयचंदपै ❋ छत्तरमें मारी तलवार ।
छत्तर टूट गयो राजाको ❋ राजा गये सनाका खाय ॥
हाथ जोरिकै राजा बोले ❋ मेरि तवसीर माफ हुइ जाय ।
तेरो बसायो गढ़ कनउज है ❋ तेरो दियो टूक हम खायँ ॥
जौन मोरचा करौ जानौ ❋ सो लाखनको देहु बताय ।
हमने तुमसे ठट्ठा कीन्हो ❋ तुमने जान लई सतभाय ॥
दया आइ गइ तब मलिखेको ❋ राजापै ना डारो हाथ ।
बेगि बुलाय लयो लाखनको ❋ औ यह दीन्हो हुक्म सुनाय ॥
हमरी अपनी फौजैं लेकर ❋ पथरीकोट पड़ौ तुम जाय ।
हम तौं जैहै बबुरी बनको ❋ जहँपर तपै अमर गुरुद्याल ॥
एंड़ लगाय दई घोड़ीको ❋ औ चल दियो क्रोध मनमाय ।
सररररररर उड़ी बछेड़ी ❋ अंबर पंख दिये फैलाय ॥
आवत देखो अमर गुरूने ❋ ताली तुरतहि लई लगाय ।

तीन दिना मलिखेको ह्वै गये ❋ जोधा खड़ो एक ही पांय ॥
लई सिरोहीं तब मलिखेने ❋ औ गर्दनपर धरी कटार ।
मस्कनकी कछु देर नहीं थी ❋ अमर गुरूने कह्यो पुकार ॥
हत्या देन यहां क्यों आये ❋ चेला हमको देउ बताय ।
कौन मुसीबत तुमपर पड़ गइ ❋ मुंह पर रही उदासी छाय ॥
कही हकीकत सब पथरीकी ❋ ब्योरेवार सुनायो हाल ।
सुनो हाल जब यह मलिखेको ❋ तब बोले गुरु दीन दयाल ॥
सब विद्या हमरी लै जावो ❋ तुम्हरे काम सिद्धि हो जाय ।
जाके छल लेउ तुम चण्डीको ❋ जाविध बनै बनाफरराय ॥
चण्डी वश की ज्वालासिंहने ❋ जापर है जादूकी मार ।
वाने बलि बोली बेटेकी ❋ औ सूबा को भेंट चढ़ाय ॥
मोको जान परत अब ऐसो ❋ राजा ह्वै है बेईमान ।
भेंट न देहै अपने सुतकी ❋ सांची जान पुत्र मलिखान ॥
तुम बलि दैकै सुत इंदलकी ❋ अपनी कारज लेहु बनाय ।
जो मरि जैहै सुनमा वारो ❋ तो मैं फिरके देउँ जिलाय ॥
यह मन मानि गई मलिखेको ❋ औ हिरदेमें गई समाय ।
सब विद्या अमराकी लैके ❋ आतुर चलो वहांसे धाय ॥
कई दिनाको अरसा लागो ❋ पथरीकोट पहोंचो जाय ।
पढ़ पढ़ सरसों नर मलिखेने ❋ सब लश्करमें दियो चलाय ॥
वैसेहि हाथी वैसेहि घोड़ा ❋ वैसेहि बने बनाफरराय ।
सारे सामा वैसेहि ह्वै गये ❋ वैसेइ सब दल दियो बनाय ॥
तेहि औसरमें कनउजवारो ❋ सब सेना लै नायो माथ ।
कल्लू मुंसी नर मलिखेको ❋ सोऊ फौजौं लायो साथ ॥
तौलौं इन्दल दाखिल ह्वइ गयो ❋ होने लगे मंगलाचार ।
तेहि अवसरमें चण्डी पहुंची ❋ नृप ज्वालासिंहके दरबार ॥
अब तौ कारज भयो तुम्हारो ❋ निज पुत्तरकी भेंट चढ़ाउ ।

इतने दिन तुम कहते आये ❋ अबतक भेंट चढ़ाई नाय ॥
इतनी सुनिकै राजा चुपभो ❋ औ काननपै धरि लौ हाथ ।
बकरे हाथी लो सौ दुइसौ ❋ भेंड़ा भैंसा दऊँ चढ़ाय ॥
मानुष चाहौ और ला दऊँ ❋ सुतकी भेंट दई ना जाय ।
इतनी सुनिकै चण्डी कोपी ❋ राजा निकसो बेईमान ॥
कहिकै वचन जो पीछे पलटै ❋ सो नर पड़ै नरक दरम्यान ।
रिसभर चण्डी ह्वाँसे लौटी ❋ निजमन्दिरमें पहुँची आय ॥
यहांकी चरचा हियई रह गई ❋ अब आगेको सुनौ बयान ।
यह सुधि पाई जब मलिखेने ❋ राजा ह्वैगयो बेईमान ॥
जायकै पहुँचो तब चण्डीपर ❋ धरि दइ धूप दीप मिष्ठान ।
करिकै पूजा मंत्र जापकर ❋ तेहि चण्डीको लियो जगाय ॥
दे परिकरमा तब दुर्गेकी ❋ आगे रहिगे शीश नवाय ।
बोलो बेटा बच्छराजको ❋ दहने रहो शारदा माय ॥
नैय्या अटकी बीच धारामें ❋ बेड़ा दीजै पार लगाय ।
ऐसो जतन बतावौ दुर्गे ❋ पथरी ह्वै जाय पनियां ढार ॥
शीश काटिके अपने सुतको ❋ माता दैहों चरनन डार ।
इतनो सुनिकै चण्डी बोली ❋ सब जग बेईमान लखाय ॥
एक भेंट दई ज्वालासिंहने ❋ दूजी देत बनाफरराय ।
अपनी भेंट लेउँगी पहले ❋ तबही मेरो मन पतियाय ॥
यह मनमानी है मलिखेके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
अबहीं भेंट देउँ इन्दलकी ❋ मेरो वचन न खाली जाय ॥
इतनी कहि इन्दलपै पहुँचो ❋ रोय रोय कहै बीर मलिखान ।
बहुत दिननसो तुमको पालौं ❋ अमखोरनते दूध पियाय ॥
चंडी बलि तुम्हारी मांगति है ❋ कागज भये बरोबर आय ।
हँसकर ज्वाब दियो इंदलने ❋ चाचा सुनौ धरमकी बात ॥
नर देहीको कोई न पूछै ❋ याको नहीं कूकरो खाय ।

जो यह देह काममें आवै ❋ कहिं परमारथमें लग जाय ॥
इससे भली बात ना दूजी ❋ अब क्यों राखी देर लगाय ।
बड़ो खुशी हो इंदल चलिभौ ❋ संगहि चलो बीर मलखान ॥
घड़ी भरेको अरसा लागो ❋ पहुँचो चण्डीके मठ जाय ।
इन्दल डारि दियो मंदिरमें ❋ झड़की कम्मरसे तलवार ॥
हियरा कांपो तब मलखेको ❋ कैसेहु नाहिं चली तलवार ।
हाथ जोड़कर इन्दल बोले ❋ चाचा समुझलेहु मनमाय ॥
जो तुम मोह करो इन्दलकी ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
सती सत्य ओ जोद्धा रणसे ❋ हटै तौ नरक कुंडमें जाय ॥
जौ तुम चूके इस मठियामें ❋ तौ फिर लगै ठिकानो नाय ।
चट उठ बैठो सुत आल्हाको ❋ देवि शारदहिं ध्यान लगाय ॥
दांत बतीसोंको धरिदाबो ❋ छीनी मलखेकी तलवार ।
तुरतै मारी निज गर्दनपै ❋ धड़से शीश जुदो ह्वै जाय ॥
इंदल जोधाको बलि लैकै ❋ परगट भई शारदा माय ।
धड़पर शीश जोरि इंदलके ❋ सुधा छिड़किकै दियो जियाय ॥
राम राम कहिकै उठि बैठो ❋ औ दुर्गको शीश नवाय ।
बोली चण्डी तब इन्दलसे ❋ तुम्हरी धन्य घड़ी अवतार ॥
तुमसो क्षत्री होनो मुशिकिल ❋ निजशिर दियो चरननमें डार ।
विजय तुम्हारी रणमें होगी ❋ पथरी ह्वैहै पनियांढार ॥
जा गढ़ियापै सरकरि जैहो ❋ जयको डंका चले अगार ।
जहँ कहिं भीर पड़ैगी तुमपै ❋ मैं तहं लैहौं तुरत उबार ॥
शीश नायकै मलखे चलिभै ❋ और सब दलकी करी सँभार ।
मारू बाजे बाजन लागे ❋ बारह कोस गई धुधकार ॥
कमरैं खैंचि लई ज्वाननने ❋ द्वै द्वै बांधि लई तलवार ।
सजिगई सब सेना चतुरंगी ❋ दलमें पड़ी पुकार अपार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपै दई चढ़ाय ।

लैकै कागज कल्पीवारो ❋ मलिखे चिठिया लिखी बनाय ॥
जो तेरी मन्शाहोय लड़िबेको ❋ अपनो खेत बुहारौ आय ।
जो तेरी मंशा ना लड़नेकी ❋ डोला धरौ अगाड़ी लाय ॥
सुआ पंखिनीको डोला देउ ❋ इन्दलके सँग ब्याह रचाय ।
अचल राज पथरीमें करिहौ ❋ ढेला कोइ फिकैया नाय ॥
इतनी बात लिखी चिठियामें ❋ औ कसिदको दई गहाय ।
लैजाव चिठिया गढ़पथरीको ❋ नृप ज्वालासिंहके दरबार ॥
इतनी सुनि चलिभै हरकारा ❋ ज्वालासिंहपै पहुँचो जाय ।
पांच पैगसे कुन्नस कीन्ही ❋ औ ढिग जाकर करी जुहार ॥
चिठिया डारी सिंहासनपै ❋ राजा देखो नयन निहार ।
बाचत चिठिया परलै ह्वै गई ❋ ज्वाला झड़ झड़ पड़ै अगार॥
जरिकै बोली पथरी वारो ❋ कासिद तेरो बुरा होइ जाय ।
घर आयो बैरी ना मारौं ❋ हम रण चढ़िकै लोह चबांय॥
जायकै कहिये नर मलिखेसे ❋ मलखे सावधान ह्वइजायँ ।
अब दल साजे ज्वालासिंहने ❋ फौजैं वीर रंग हरषायँ ॥
जितनी फौजैं थी पथरीमें ❋ एक घण्टेमें करी तयार ।
दोऊ लँगते डटे मोरचा ❋ जिहिसे रणभूमि थर्रांय ॥
दोनों बेटा ज्वालासिंहके ❋ अपने हाथिनपर असवार ।
अपनी अपनी सेना लैकै ❋ गहरी ठान दई हैं रार ॥
एकलँगहाथी ज्वालासिंहको ❋ मोहरा मिलै खेतनमें जाय ।
दोनों ओरकी सेना टूटी ❋ अन्धाधुन्ध भयो संग्राम ॥
फौजैं जीती बन्नाफरकी ❋ पथरीवारी मानी हार ।
फौजैं भागी ज्वालासिंहकी ❋ औ कट गये बहुत सरदार ॥
दोनों बेटनको संग लैकै ❋ काढ़ी ज्वालासिंह तलवार ।
कौन लड़ैया है महुबेको ❋ जो तेगाकी झेलै आंच ॥
क्षत्री हो सो आवै समुहें ❋ कायर हो उलटो फिरि जाय।

इतनी सुनि लइ नरमलिखेने ❋ ज्यौं बारूदहिं आग लगाय ॥
चाचा चाचा को ललकारो ❋ सैय्यद बनरसके सरदार ।
सम्मुहे आवौ तुम राजाके ❋ तुमको फतह दिहैं करतार ॥
फिर ललकारो हैं ऊदनिको ❋ भैया समय न बारम्बार ।
सौ सौ हाथिनको बलराखौ ❋ सूबा बादलसों घहराय ॥
खंभ ठोंकिके ऊदनि ठाढ़ो ❋ अब कहं डूब गई तलवार ।
मली बिभूती भुजदण्डनमें ❋ सुमिरे मनहिं अञ्जनी लाल ॥
लौटि जांघियाको धरि मस्को ❋ लंगर कस्यो उदैसिंहराय ।
भुज बिशाल जोधाके फड़के ❋ नयनन गई लालरी छाय ॥
करो सवारी रस बेंदुलपर ❋ जैसे सिंहबनीको जाय ।
राजासे तालाकी बरनी ❋ औ गजराम संग मलखान ॥
सूबाकी ऊदनि संग बरनी ❋ करसे खैंचि लई तलवार ।
मोहरा मारि दिये तीनोंके ❋ उलटे दंड दिये बँधवाय ॥
ऊदनि मलखेके मुहरे पै ❋ बिरलेइ शूर गहैं तलवार ।
हांके दै दै राजा टेरै ❋ है कहिं चंडी होय सहाय ॥
सो तौ ठग लइ नरमलिखेने ❋ अब कोइ धीर धरैया नाय ।
सेनापति आल्हा बुलवायो ❋ तिनको हुक्म दियो फरमाय ॥
सवा पहरकी रुकसत दैदई ❋ सबकी लूट माफ ह्वै जाय ।
पथरी मार गर्द करि डारौ ❋ गढ़िया रेन खेत ह्वै जाय ॥
धावे पकड़ गये हैं सेनाके ❋ अब कोई डाटाडटतानाय ।
बड़े बड़े गोलनकी मारनसे ❋ किल्ले माटी दिये मिलाय ॥
लोहा गढ़ औ बुर्ज रेखते ❋ उड़ उड़ आसमानको जायँ ।
फौजैं घँसिगईं गढ़ पथरीमें ❋ लुटने लगे चौक बाजार ॥
सवा पहर तक बजी शिरोही ❋ गलियन रक्तधार बहिजाय ।
मारिकै पथरी रहपट करि दई ❋ काले पंखा दये करवाय ॥

हाथ जोरिकै राजा बोलो ❋ मेरि तकसीर माफ ह्वै जाय।
बहनी करिके सुनमा देहौं ❋ बेटीकी दउँ भौंरी डार॥
कर चुकाऊँगो तेरिगढ़ियामें ❋ अब मैं ताबेदार तुम्हार।
जहं कहिं याद करौगे हमको ❋ कबहूं उजर करूँगो नाहिं॥
दया आय गई बन्नाफरको ❋ मुश्कें तुरत दई खुलवाय।
तीनों छोड़ दये खेतनमें ❋ निज मंदिरमें पहुँचे जाय॥
एक डोला सुनमाको दीनों ❋ सो आल्हाकी नजर कराय।
ब्याहके डोला सुआपंखिनी ❋ सो इन्दलको दियो गहाय॥
हाथी घोड़े ऊंट पालकी ❋ सुरह गऊके दीने दान।
हीरा मोती लाल जवाहर ❋ औ मोहरनकी नाहिं शुमार॥
जरी वाफदा शाल दुशाले ❋ जोड़ा दीन्हें कई हजार।
बहुत दहेज दियो राजाने ❋ औ चरणमें शीश नवाय॥
दोनों बेटनको संग लैके ❋ तुरतै बिदा दई करवाय।
बिदा भये जब महुबेवारे ❋ लश्कर कूंच दियो करवाय॥
बावनगढ़के बावन राजा ❋ अपने घरको भये तयार।
मलिखे चले गये सिरसाको ❋ आल्हा रिजगिर पहुँचे आय॥
दुसरो ब्याह भयो इन्दलको ❋ सो हम गाकर दियो सुनाय।
तिसरो ब्याह कहों अब आगे ❋ दाहिन रहैं शारदा माय॥
श्रीवृषभानसुता पग रज लै ❋ औ मन सुमिर यशोदालाल।
गाऊँ ब्याहै ललित इन्दलको ❋ बीर छन्दमें परम रसाल॥

इति पथरियाकोटकी लड़ाई (इन्दलका दूसरा ब्याह) समाप्त

श्रीः

अथ सिंहलद्वीपकी लड़ाई

*

इन्दलका तीसरा विवाह.

दोहा—नैन छिपाये ना छिपै, पट घूँघटकी ओट ।
चतुर नार और शूरमा, करैं लाखमें चोट ॥
लिखत कलम सूखत हरफ, यही प्रीतिकी मूल ।
पिय बिछुरत सुख है नहीं, मुखमें डारो धूल ॥
सूरत मेरे मित्रकी, चढ़ी रहै नित चित्त ।
कहा भयो तन ना मिलो, मन मिल आयो नित्त ॥
कहा भयो मनके मिले, तनकी गई न प्यास ।
जैसे सीप समुद्रमें, करत पियास पियास ॥
जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीत बहार ।
अब अलि रही गुलाबकी, निपट कटीली डार ॥

श्रीगणेश शिव शारद तेंतिस ❀ कोटि देवता शीश नवाय ।
गाऊं पँवारे अब मर्दनके ❀ जैसी है कछु बुद्धि हमार ॥
गुण सागर इक जगमें भारी ❀ जाको कोउ न पावै पार ।
टूटीसी बुधि नाव हमारी ❀ केवट ईश्वर पार लगाय ॥
सिंहलद्वीप द्वीप एक नामी ❀ जो सब द्वीपनमें सरदार ।
चारों तरफ समुन्दर डोलै ❀ ओ जहँ पद्मावतिकी खान ॥
तहांको राजा सरहनाग है ❀ ताकी धर्म ध्वजा फहराय ।
तिसको बेटा एक जोधाजित ❀ दूजो है गणपत सरदार ॥
तिसकी पुत्री लेखा पद्मिनि ❀ चंदा सूरजकी उनहार ।
वाने कठिन तपस्या कीन्हीं ❀ की वर मिले इंदलसो राय ॥

बारह वर्षकी कन्या ह्वै गइ ❀ जोबन अंगमें नाहिं समाय ।
एक दिना महलनमें रोई ❀ औ गिर पड़ी धरनिमें जाय ॥
आठ माघ नौ कातिक न्हाई ❀ सब एकादशि लीनी साध ।
कौन तपस्या मेरि खंडित भइ ❀ ना वर मिले बनाफरराय ॥
सांझ भई औ जब दिन मुंदगो ❀ तब मनमें एक रचो उपाय ।
खबर मंगाय लई बीरनसे ❀ जहँपर सोये इंदलसीराय ॥
अब सुधि पाई है इन्दलकी ❀ जासे मिलनेकी ठहराय ।
करि शृंगार अप्सरा बन गई ❀ देखत मदन मरोरा खाय ॥
जैसे पुनोंको चन्दरमा ❀ मानों निकसो फोरि पहार ।
उड़न खटोलामें चढ़ बैठी ❀ औ जादूको हुकम चढ़ाय ॥
लैकै बीर चले अम्बरको ❀ औ उड़ गई पद्मिनी नार ।
जहँपर सोवत सुनवांवारो ❀ कनउजकोट पहोंची जाय ॥
देखो बंगला तहँ इन्दलको ❀ फूली अंगमें नाहिं समाय ।
जिन काजनको मैं भटकत थी ❀ सो अब सिद्ध करे भगवान ॥
रनियां धँसगइ तब बंगलामें ❀ जहँपै सोये इंदलसी राय ।
पांव पकरके बैठा लीन्हो ❀ तब इंदलकी पड़ी निगाह ॥
कच्ची नींद जगायो किसने ❀ करसे खैंच लई तलवार ।
हाथ जोड़कै रानी बोली ❀ मेरि तक्सीर माफ ह्वै जाय ॥
तुम्हैं मुनासिब यह नाहीं है ❀ जो तिरिया पर डारो हाथ ।
कही हकीकत अपनी सारी ❀ सिगरे भेद कहे समुझाय ॥
जाविधि आई सिंहलद्वीपसे ❀ जाविधि तप कीन्हे चित लाय ।
चौसर डारि दई रानीने ❀ हम तुम खेलैं पांसासार ॥
मैं तो कन्या सरहनागकी ❀ तुम सुनमाके राजकुमार ।
बाजी बदिकैं हम तुम खेलैं ❀ जाके देय शारदामाय ॥
जो मैं जीतूंगी चौसरमें ❀ तुमको लै जाऊंगी साथ ।
अरु जो जीतौ प्राणपियारे ❀ दासी होय भवन रहि जाउँ ॥
ऐसे वचन कहे दोऊने ❀ खेलन लागे पंसासार ।

जो इन वचननको पलटैगो ❀ ताकी कुली नरकमें जाय ॥
पांसा फेको है इंदलने ❀ लैकै अमरगुरूको नाम ।
पहले आये हैं पौबारह ❀ देखो यह कर्त्ताकी बात ॥
जो तुम जीतोगे चौसरमें ❀ हमसे लेहु भांवरैं डार ।
फिर पांसा फेका रानीके ❀ किस करनीसे लौटे दांव ॥
काने तीन पड़े रानीके ❀ किस करनीसे लौटे दांव ।
एक बेर जीतो द्वै बेर जीतो ❀ जीतो बाजी द्वै औ चार ॥
बोले बेटा सुनि आल्हाको ❀ हमरो देहु भंवरियां डार ।
भांवरि डारनकी ठहराई ❀ देखो यह हिकमतके ठाट ॥
ना सामग्री ना कोइ पंडित ❀ चोरा चोरी होत विवाह ।
साढ़े तीन भंवरियां पड़ गईं ❀ तब रानीने कही सुनाय ॥
अध ब्याही तौ ह्वै गई राजा ❀ सारी यों ना ब्याही जाउँ ।
काछी कुरमीकी ना बेटी ❀ ना केहु नीच जातिको नारि ॥
चोरी चोरी ब्याह न ह्वैहै ❀ चाहे मूंड़ मारि मरिजाउ ।
सिंहलद्वीपमें चढ़िकै आवौ ❀ दिन औ रात चलै तलवार ॥
जंग जीतिके मोको ब्याहो ❀ तबही सारो होय विवाह ।
आधी भांवरि तबहीं फिरिहौं ❀ जब तुम ऐहो देश हमार ॥
इतनी कहिकै रानी चलिभइ ❀ पलमें ह्वै गइ अन्तर्द्धान ।
उड़न खटोला पर चढ़ि तुरतै ❀ अपने महलन पहुंची आय ॥
इंदल जाय पड़े धरनीमें ❀ सुध बुध सबै गईं बिसराय ।
अनसन पाटी लईं कुमरने ❀ जाके देखे होश उड़ाय ॥
कड़ा गोखरू मोहनमाला ❀ काढ़िकै दिये धरणिमें डार ।
शाल दुशाले शिरको सेला ❀ बस्तर फाड़ उजाड़ सिंगार ॥
औंधों मुंहकर जोधा गिर गयो ❀ सुध बुध रही बदनकी नाय ।
सवा पहर दिन चढ़िकै आयो ❀ ऊपर मुख उकसायो नाय ॥
दँतउन कुल्हा संध्या तर्पण ❀ नाहिं भजन ना पूजापाठ ।
यह गति ह्वैगइ है इन्दलकी ❀ तिरिया विरह कठिन दुखभार ॥

तोप सहै बन्दूक सहै पुनि ❋ बरछी तीर तेग तलवार ।
इनकी चोटनसे बच जावे ❋ नैनन चोट बचत ना यार ॥
बड़ो दुःख है इस वियोगको ❋ प्रेमीसे पूँछो ये हाल ।
प्राण न निकसै मन नहिं मानै ❋ हा हा करैं सदा दिन रात ॥
ऐसे तड़प रहो धरनी पै ❋ जैसे जल बिन तड़पै मीन ।
खबरैं ह्वैगईं अब महलनमें ❋ रानी सुनवांके रनवास ॥
सवा पहर दिन चढ़िके आयो ❋ क्यों न उठे पुतरिया लाल ।
कंचुकि भेजो तब सुनवांने ❋ तुम बारेको लाओ जगाय ॥
हुक्म पायकै सेवक चलिभो ❋ औ इंदलके बंगले जाय ।
देखत इंदलके अचरज भयो ❋ सेवक सूखि गयो मन मार ॥
क्या गति ह्वै गइ है बारेकी ❋ अक्किल रही ठिकाने नाय ।
भुजा पकड़िकै तब इंदलकी ❋ दे दै हांकै रहो जगाय ॥
एक सुनी ना है इंदलने ❋ सेवक बैठ रहो झकमार ।
चलिकै आयो तब सुनवांपै ❋ सारे हाक कहे समुझाय ॥
इतनी सुनकै सुनवां रानी ❋ तुरतहि ऊदनि लियो बुलाय ।
फिरिकै भेजो है ऊदनिको ❋ तुम इन्दलको लायो जगाय ॥
क्यों अस हाल भयो बारेको ❋ अनसन बरत लियो क्यों धार ।
ऊदनि तब बंगलामें आये ❋ लरिकहि देखो नैन निहार ॥
भुजा पकड़िकै तब बेटाकी ❋ औ छातीसे लियो लगाय ।
जो काहूने हाथ उठायो ❋ उहिकी कोहनी देउँ उड़ाय ॥
जो काहूने तिरछी देखो ❋ वाकी आंख लेउँ कढ़वाय ।
जो काहूने जादू कीन्हों ❋ तो मैं वाको करूं उपाय ॥
हाथ जोड़िके इन्दल बोले ❋ चाचा ये दुख पूछौ नायँ ।
जो बिधि बीती थी बंगलामें ❋ ब्यौरेवार कही समुझाय ॥
या तौ ब्याहूं पद्मावतिको ❋ ना तौ योंहि सूखि मर जाउँ ।
इतनी सुनिकै ऊदनि चौंके ❋ औ मन गये सनाका खाय ॥

खबरैं कर दई तुनि आल्हापै ❋ औ तालाको लियो बुलाय ।
बँगले अन्दर दाखिल ह्वैगे ❋ आये वहीं नवल चौहान ॥
सब मिलि बरजत हैं बारेको ❋ हठ ना तजै इन्दलसी राय ।
बोले आल्हा तब इन्दलसे ❋ बेटा मानौ कही हमार ॥
दो गोरी दो सांवरि ब्याहीं ❋ ठाढ़ी सेवा करैं तिहारि ।
या रानीकी हठ मत ठानो ❋ पगियाबंद बचैगो नाय ॥
सारो कुनबा ह्वां खप जैहै ❋ रानी तुम्हें मिलैगी नाय ।
बहुतक बरजो है आल्हाने ❋ वाके मन नहिं कछू समाय ॥
रिस भरके तब आल्हा बोले ❋ याकी मुश्कैं लेहु बंधाय ।
कैद कराय देउ इन्दलको ❋ नाहकी भागी अकेलो जाय ॥
हाथ हथकड़ी पायन बेड़ी ❋ गलमें तौंक दियो डरवाय ।
सात कोठरी अन्दर राखो ❋ सातौं ताले दियो डरवाय ॥
पिटगइ डौंढी सब नगरीमें ❋ जहं तहं छोड़े पहरेदार ।
ताला सैयदको बुलवायो ❋ चाचा मानो वचन हमार ॥
बारह कोसके अन्तरमें ❋ अपनी चौकी देउ बिठाय ।
बादर फट जैहैं नगरीमें ❋ जो भग जाय इन्दलसी राय ॥
ये मन भाय गई तालाके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
बारह कोसके अन्तरमें ❋ अपने पहरे दिये बिठाय ॥
कीन्हों बंदोबस्त आल्हाने ❋ लड़कै कैद दियो करवाय ।
अति दुख पड़ गये हैं इन्दलपै ❋ सौ सौ कोश पुकरूआ नाय ॥
भर भर हिलकी इन्दल रोवै ❋ मुंहसे बोलो तक ना जाय ।
तीन दिनाके लंघन बीते ❋ अन्न रू पानी देखो नाय ॥
एक पांवसे ठाढ़ो ह्वैकै ❋ श्रीदुर्गैको ध्यान लगाय ।
आओ भवानी हिङ्गलाजकी ❋ मेरे असमैमें होउ सहाय ॥
मेरी बेर अबेर करी क्यों ❋ माता जल्दी सुध लौ आय ।
तुम बिन संकट कौन मिटावै ❋ जियरा तड़प तड़पकै जाय ॥
दुर्गाको सिंहासन डोलो ❋ तब लाँगुरसे कही सुनाय ।

भीड़ पड़ी है कौन भक्तपै ❀ जेहिं सिंहासन दियो हिलाय ॥
धरिके ध्यान देखि दुर्गने ❀ सारी लखी भक्तकी बात ।
करी तयारी हिंगलाजसे ❀ आतुर चली शारदा मात ॥
बाईं भुजासे भैरौं चलिभे ❀ दहिनी भुजा बीर हनुमान ।
लाँगुरवीर चले हैं आगे ❀ पीछे चली कालिका माय ॥
चलिकै आई है रिजगिरिमें ❀ जहँ पर बसे इंदलसी राय ।
ऐसी माया फैलाई है ❀ सारे सोये पहरेदार ॥
आवत काहूको ना दीखो ❀ गुप्तहि कारज दये बनाय ।
सातौं ताले आपहि टूटे ❀ सातौ खुल गये बज्र किवाड़ ॥
सन्मुख दर्शन दिये जायकै ❀ दहिने खड़ी शारदा माय ।
बंदी छूटी है इन्दलकी ❀ परगट भई तहांपर आय ॥
हाथ पैरके बन्धन काटे ❀ गलको तौक दियो कटवाय ।
इंदल जाय परो चरणनमें ❀ औ दुर्गेको शीश नवाय ॥
जैसे राखे भरुही अंडा ❀ पांचौ पंडा लिये बचाय ।
ऐसे राखौ यहि इंदलको ❀ है जिवदान तुम्हारे हाथ ॥
बोली दुर्गा तब इंदलसे ❀ तुम्हरे काम सिद्ध ह्वै जायँ ।
अबहीं चले जाउ बागनको ❀ मनमें शंका लावौ नायँ ॥
जहँ जहँ भीड़ पड़ेगी तुमपै ❀ तहँ तहँ करिहौं आय सहाय ।
इतनी कहिकै दुर्गे चल दईं ❀ औ चलि दिये इंदलसी राय ॥
चौकी बैठी थी तालाकी ❀ जिनकी दहशत लगें सिवाय ।
चलिकै पहुंचो है बागनमें ❀ फुलवा मालिनके ढिग जाय ॥
मोहि काढ़ि दे इन पहरनसे ❀ यह अहसान भूलिहौं नायँ ।
नेकी रहिजाय समो चलो जाय ❀ बातैं कहिबेको रहि जायँ ॥
जैसी आइ बनी जियरापै ❀ सो दुश्मनपर परियौ नाय ।
दया आयगइ तब फुलवाको ❀ सो रचि लियो तुरत उपाय ॥
भेष जनानो करि बारेको ❀ डोले अन्दर दियो बिठाय ।
झटपट डोलेको सजवायो ❀ लैकै डोला चले कहार ॥

फुलवा मालिनि चली संगमें ❋ तुरतहि मिलि गये पहरेदार ।
हुक्म नहीं है अरि तालाको ❋ पक्षी निकसन पावे नाय ॥
पहले तलासी देउ डोलाकी ❋ पीछे लै आगे को जाउ ।
इतनी सुनिकै फुलवा जरिगइ ❋ कायर लैजा जान बचाय ॥
डोला लुटिहौ मेरी बेटीको ❋ जो जैहैं अपनी ससुरार ।
उँ दोहाई बन्नाफरकी ❋ राजा आल्हाके दरबार ॥
इतनी सुनिकै सारे डर गये ❋ डोला छोड़ि दूर ह्वै जायँ ।
तुम ना छेड़ौ या डोलाको ❋ यह शिर परे तुम्हारे आय ॥
सबही बिचल गये आगेसे ❋ डोला चलत न लागी बार ।
ऐसे काढ़ दियो इन्दलको ❋ आतुर चले बनाफर राय ॥
सुरत लगाई बबुरीबनकी ❋ जहँपे तपै अमर गुरुद्याल ।
करी तपस्या गुरु अमराकी ❋ औ गुरुवासे ध्यान लगाय ॥
जो कुछ बीती है इन्दलपै ❋ ब्यौरेवार कही समुझाय ।
बहुतक बरजो है अमराने ❋ इंदल एक न मानी बात ॥
तब यह हुक्म भयो अमराको ❋ जोगी बनो बनाफर राय ।
भगुवे कपड़े पहनाये हैं ❋ अंग विभूति दई लगाय ॥
जोगी करि दियो है बारेको ❋ सारी विद्या दई बताय ।
बैन मुंदरियाको दै दीनो ❋ जामें उड़ै छतीसों राग ॥
जहँतक टेर सुनै बीनाकी ❋ पंछी तक हू मोहे जायँ ।
सोंटा दीनो है इंदलको ❋ यासे रणहि होय ना हार ॥
यह कहि बोले सोंटा दैके ❋ रणमें तेरी फतह ह्वै जाय ।
रत्न जड़ाऊ गुदड़ी दीना ❋ जासे भूख लगै न प्यास ॥
चरण खड़ाऊंको दै दीन्हो ❋ इनके ऊपर होउ सवार ।
जौन देशको करो इरादौ ❋ पलभरसे देहैं पहुंचाय ॥
विद्याका बटुआ दै दीनो ❋ जादू दियो इंदलसी राय ।
निर्भय चले जाउ सिंहलको ❋ मनमें शंका करियो नाय ॥
जहँ कहिं भीर पडेगी तुमपे ❋ वहिं वहिं अमरा होय सहाय ।

गुरु अमराको शीश नवाकै ❋ आतुर चले बनाफर राय ॥
पहले पहुंचे गढ़ सिरसामें ❋ राजा मलिखेके दरबार।
अलख जगायो रनिवासेमें ❋ रानी गजनाके घर जाय ॥
दर्शन करिकै गजमोतिनको ❋ औ सब देखो नैन निहार।
फिर पहुंचो है गढ़ महुबेमें ❋ राजा चन्देलेके द्वार ॥
दर्शन करिकै सब लोगनके ❋ औ मल्हनासे भिक्षा मांग।
फिरिचलिआयो गढ़रिजगिरमें ❋ माता सुनवांके रनवास ॥
अलख जगायो है महलनमें ❋ इंदलको कोइ चीन्हो नाय।
फिरि चलिआयो शहरउदयपुर ❋ राजा ऊदनिके दरबार ॥
दर्शन करिकै सब लोगनके ❋ आतुर चलो इंदलसी राय।
सब खेड़नको राम राम करि ❋ दै परिकरमा शीश नवाय ॥
जियत रहै तौं आय मिलैंगे ❋ नहिं तो सिंहलद्वीप जुझाय।
करी तयारी सिंहलद्वीपकी ❋ गुरुअमराको धरिकै ध्यान ॥
चरण खड़ाउनपै धरतै खन ❋ लड़का उड़ा लगो असमान।
रात दिना भरके चलनेमें ❋ सिंहलद्वीप पहोंचो जाय ॥
सूखौ बाग पड़ो राजाको ❋ इन्दलकेरि नजरि पड़ जाय।
पढ़ि पढ़ि सरसौ जोगी फूंकै ❋ सूखे बागमें देय चलाय ॥
सूखौ बाग हरो कर दीन्हों ❋ तरुवर फूले फले लखायँ।
सूखौ ताल उमड़िकैं आयो ❋ तामें जल भयो अगम अपार ॥
जल भर आयो है कुअँनामें ❋ जबहीं इन्दल देखो झांक।
नजर गुजारी है मालिनिने ❋ औ बागनमें पहुंची जाय ॥
चरण पकरिकै तब जोगीके ❋ चरणन लोटि रही हर्षाय।
धूनी डारि दई इन्दलकी ❋ जोगी तपौ बागके माहिं ॥
चार महीने चतुर्मासमें ❋ जोगी यहीं करौ विश्राम।
जितनो खर्चा है स्वामीको ❋ धूनी दासी करै तयार ॥
दै परिकरमा फिर जोगीको ❋ माली मालिनि चले सम्हार।

चलिकै आये हैं राजापै ❋ फूले अंगमें नाहिं समायँ ॥
माली खबर करी राजापै ❋ मालिन खबर करी रनवास ।
समाचार सब कहे बागके ❋ औ जोगीके बरने हाल ॥
धावे परि गये हैं नगरीसे ❋ औ भगि चले सबै नर नार ।
दर्शन करि लेउ सब जोगीके ❋ फिर यह घड़ी मिलनकी नाहिं ॥
जो कहुं रम गयो वो बागनसे ❋ पीछे हाथ मलौ पछिताउ ।
सजी सवारी सरहनागकी ❋ रथ गज अश्व सजे असवार ॥
बहंगी भरलईं हैं दूधनकी ❋ मेवा और मिठाइन थार ।
भांति भांतिके भोजन लेकै ❋ धूनी पानी सकल सम्हार ॥
चलिकै पहुंचे हैं बागनमें ❋ औ इन्दलके धोरे जाय ।
दर्शन करतहि मोहित ह्वैगये ❋ जोगी ऐसो देखो नाय ॥
यातौ आय गये कैलासी ❋ या घर आये राम औतार ।
सबही जाय पड़े चरणनमें ❋ राजा चरण तजत हैं नाय ॥
बड़ी दया प्रभु हमपै कीन्ही ❋ दर्शन दिये शठनको आय ।
मोहर असरफी और रुपैया ❋ सबनके ढेर दिये लगवाय ॥
चढ़त चढ़ावा है इन्दलपै ❋ औ नरियलकी गिनती नाय ।
बोलो इन्दल तब राजासे ❋ राजा सुनो हमारी बात ॥
माल खजाने मोहिं ना चहिये ❋ लत्ता कपड़ा लेते नाहिं ।
देश देशमें फिरते डोलैं ❋ परमेश्वरके रहैं अधार ॥
जो तुम बात करो लालचकी ❋ हमरो जोग भंग ह्वै जाय ।
दर्शन तुम सबने कर लीन्हे ❋ अब सब अपने घरको जाउ ॥
लैके आज्ञा सब जोगीसे ❋ अपने घरै चले हर्षाय ।
सुन लो बातैं रनवासनकी ❋ लेखा कुँअरि खबर ह्वै जाय ॥
माता माता कहिकै टेरै ❋ जननी तेरी लेउँ बलाय ।
दर्शन मैं करि आउँ जोगीके ❋ ऐसी घड़ी मिलेगी नाय ॥
लैलइ आज्ञा है मातासे ❋ लेखा चलत न लागो बार ।
डोले सजि गये रंगमहलसे ❋ सखी सात सौ लैके साथ ॥

डोले निकले हैं महलनसे ❀ सब सामान करै तैयार ॥
भांति भांतिके भोजन लैकै ❀ आतुर चली पद्मिनी नार ।
खबरैं हो गईं हैं राजाको ❀ उसने हुक्म दियो फरमाय ॥
जोगाजितको बेगि बुलायो ❀ पांचसौं संग करे असवार ।
डोला जैहैं अब बागनको ❀ बेटा सावधान ह्वै जाव ॥
यह मन मानी है जोगाके ❀ औ हिरदैमें गईं समाय ।
पांचसौ घोड़नसे हल्लेमें ❀ जाको चलत न लागी बार ॥
डोले घेर लिये फौजनने ❀ झटपट कूंच दियो करवाय ।
डोले अन्दर धँसे बागके ❀ फौजैं आसपास ह्वै जायँ ॥
सातसौ डोले जाकर उतरे ❀ जैसे खिलन लगी फुलवार ।
छाई रोशनी सब बागनमें ❀ कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
लेखा उतरी जब डोलेसे ❀ मानो रती मदनकी नार ।
और सखी सब उडुगण मानो ❀ मानों एक पुनोको चांद ॥
देखी सूरत सब अबलनकी ❀ इन्दल मगन भयो मनमांह ।
जौन काजको जोगी ह्वै गये ❀ सो सब सिद्धि किये भगवान ॥
मन चीते सब कारज ह्वै गये ❀ फूले अंगमें नाहिं समाय ।
बोली लेखा तब बांदीते ❀ जोगीको भोजन दे आव ॥
वस्त्र आभूषण सबहिं साजकै ❀ आप सरीखी दई बनाय ।
लई परीक्षा है इन्दलकी ❀ देखैं जानैंगे या नायँ ॥
भोजन लैके बांदी पहुंची ❀ औ इंदलको शीश नवाय ।
सुबरन थार धरो लै आगे ❀ बोली जीम लेउ महराज ॥
त्योरी चढ़ गई है इंदलकी ❀ औ बांदीकी सुरत लखाय ।
बांदी ह्वैकै भिक्षा लाई ❀ हमसे करी ठठोरी आय ॥
इतनी सुनिकै बांदी जरिगइ ❀ जोगी मति मारी करतार ।
मैं तो हौं महलनकी रानी ❀ केहि विधि बांदी दई बताय ॥
जोगी हो या रसके भोगी ❀ बांदी रानीसे क्या काम ।
तोसे भिक्षुक बहुतै देखे ❀ क्या तुम वृथा करो बकवाद ॥

लैकै सोंटा तब इन्दलने ❁ बांदी ऊपर दियो झुकाय ।
बांदी ह्वैकै करै सामनो ❁ सोंटा जड़े तीन अरु चार ॥
मारके सोंटन तिरछी करदइ ❁ बांदी रोई जार बेजार ।
लौटि तुरत आई रेखापै ❁ बाई तेरो बुरा ह्वै जाय ॥
बिना खता तूने पिटवाई ❁ जोगी गहरी दीनी मार ।
इतनो सुनिकै लेखा बोली ❁ चुप रहु कछू परोखो नाय ॥
जितनी सखियां संग आई थीं ❁ सबको दर्शन दिये कराय ।
सबसे पीछे चली पद्मिनी ❁ इकली गई पतीके पास ॥
दै परिकरमा पति प्यारेकी ❁ रहि चरणनमें शीश नवाय ।
चार आंख दोनोंकी ह्वै गई ❁ जिनको सुख बरणो ना जाय ॥
जोगी रानीने पहिचानो ❁ इन्दल रानी ली पहिचान ।
आंसू भर आये इन्दलके ❁ बैरन तेरो बुरा ह्वै जाय ॥
तेरे कारन जोगी ह्वै गयो ❁ औ सब तजो कुटुम परिवार ।
माता पिताको रोवत छोड़ो ❁ धूनी यहां लगाई आय ॥
जो कछु गुजरी है इन्दलपै ❁ ब्योरेवार कही समुझाय ।
ह्वै रानी अरु राज छोड़कै ❁ अंग विभूती लई रमाय ॥
अब मैं शरण तुम्हारी आयो ❁ रानी धरके हाथ निबाह ।
इतनी सुनिकै रानी बोली ❁ बालम कौन पड़ी परवाह ॥
दिन दिन रहो बागके अन्दर ❁ रातको चित्तरसालामाहिं ।
सैर जो करिहौ सब नगरीकी ❁ अपनो मंदिर दिहौं दिखाय ॥
प्रतिदिन सैर शहरकी करनी ❁ रातमें रहियो मेरे पास ।
फूल सेजपै हम तुम बैठैं ❁ दोनों खेलैं पांसा सार ॥
अब कछु शोच करो मत मनमें ❁ सब दुख मेट दिये करतार ।
कोइ दिन ऐसोहू आवैगो ❁ हमरो तुम्हरो होय विवाह ॥
ऐसे दोनोंने बातैं करि ❁ सारी कही मरमकी बात ।
बेर भई है पद्मावतिको ❁ अब चलबेकी सुरत लगाय ॥
सातसौ सखियनको संग लैके ❁ निज मंदिरमें पहुंची जाय ।

रहसी रहसी फिरै भवनमें ❀ कब दिन छिपै मिलैं भरतार ॥
यहांकि बातें तो यहँ छांड़ो ❀ अब आगेको सुनो हवाल ।
इंदल धायो है नगरीमें ❀ सैर करी गढ़ियाकी आय ॥
बैन मुंदरिया ऐसी फूंकी ❀ सारे मोहि लिये नर नार ।
घर घर देख लियो जोगीने ❀ अलख जगायो सबके द्वार ॥
जितनी बनिता थीं राजाकी ❀ सारी देखी नैन निहार ।
जितनी फौजैं जैसे बंगले ❀ जैसे थे कछु सूबेदार ॥
किल्ला बुर्ज देखलइँ तोपैं ❀ देखी चोवा भकसी जाय ।
जहँपर सोवै लेखा रानी ❀ मंदिर देखी नैन निहार ॥
दिन भर सैर करी नगरीकी ❀ निशिको लेखाके ढिग जाय ।
ऐसेहि जहं तहं डोलत इंदल ❀ रनवासनमें पहुंचो जाय ॥
सूरत देखी पद्मावतिने ❀ औ लै गई पकड़िके हाथ ।
पलंग बिछायो हाथिदांतको ❀ रेशम डोरिनसे खिंचवाय ॥
आयँत पांयत लगे गेंडुआ ❀ ऊपर गिलम दई ढरकाय ।
रतनजड़िता पंखा लै लीन्हो ❀ लागि बालकी करन बयार ॥
दोनों बैठ गये पलंगापै ❀ खेलन लागे पंसा सार ।
सारी रैन खुशीमें बीती ❀ दिनसे पहले दियो छिपाय ॥
नहीं भेद काहूने जानो ❀ या विधि करन लगे गुजरान ।
ऐसे बीत गये जब कछु दिन ❀ अब आगेको सुनो हवाल ॥
नित लेखा फूलनमें तुलसी ❀ जाके सतको मिलो न पार ।
जबसे बात भई इंदलसंग ❀ अब सत रहो रती भर नाहिं ॥
फूल चढ़ावत मालिन हारी ❀ जामें हैगो ऐसो भार ।
मालिन दिक्क भई जब मनमें ❀ तबहिं पसेरा दियो चढाय ॥
जाकै खबर करी राजाको ❀ राजा सुनो धरमकी बात ।
अर्ज करूं मैं एक आपसे ❀ मेरि तकसीर माफ ह्वै जाय ॥
राजाने जब आज्ञा दै दई ❀ मालिन कही जोरिके हाथ ।
सत्त डिगो है तेरि लेखाको ❀ है यह अति अचरजकी बात ॥

और दिना फूलनसे तुलसी ❁ अब पंसेरी दई चढ़ाय ।
कोई पुरुष धंस गयो महलमें ❁ कैसे भये गजबके ठाट ॥
इतनी बात सुनी राजाने ❁ नैना अगिन ज्वाल ह्वै जायँ ।
दूति बुलाईं तब राजाने ❁ तिनको बड़े बड़े दिये इनाम ॥
जो कोइ पकड़े चोर हमारो ❁ उहिको जानू चतुर सिवाय ।
माल खजाने इतने देहौं ❁ सात पुस्त घर बैठे खायँ ॥
इतनी सुनि लइ इक कुटनीने ❁ जापर विद्या अगम अपार ।
पता लगायो है जोगीको ❁ जाने इज्जत लई तुम्हार ॥
यही रहत है तेरे महलमें ❁ राजा सुनो गरीब निवाज ।
इतनी सुनिकै राजा जरिगौ ❁ ज्यों बारूद लगाई आग ॥
हुक्म दियो है चपरासिनको ❁ तुम जुगियाको लावो बांध ।
पांच सात औ दस चपरासी ❁ तब इन्दलपै पहुँचे जाय ॥
सबको मार गरम कर डारो ❁ राजे खबर भई तत्काल ।
सौ ज्वाननको फिर भेजो है ❁ जल्दी लावो जोगी बांध ॥
एक जोगीहू नाहीं वशको ❁ कैसे भये परलै के ठाट ।
सौ ज्वाननने हल्ला कर दियो ❁ सब इन्दलके आये पास ॥
लैके सोंटा इन्दल फैलो ❁ जैसे गजन सिंह बनमाहिं ।
जा क्षत्रीको शस्तर आवै ❁ तिसको काट करत है छार ॥
जाके इंदल सोंटा मारैं ❁ ठठरी चूर चूर ह्वै जाय ।
सौ ज्वाननको मार भगायो ❁ ना काहूकी खाई मार ॥
यह सुधि पाई जब राजाने ❁ जोगाजितको हुक्म कराय ।
इतनी सुनतहि जोगाजितने ❁ सेना अपनी करी तयार ॥
ऐसे टूट परो इंदलपै ❁ जैसे गिरै कुहीपर बाज ।
आवत देखो जब इंदलने ❁ दांत चबातो चलौ रिसाय ॥
जैसे मृगपै नाहर कूदे ❁ ऐसेइ भिड़ो इंदलसी राय ।
मार मार सोंटन हति डारे ❁ लैकै अमर गुरूको नाम ॥

विद्या टूट पड़ी अमराकी ❋ ना काहूकी खाई मार ।
बहुतै मारे बहुतै भागे ❋ बहुतै छोड़ गये हथियार ॥
यह गति कर दई है इंदलने ❋ सब फौजनको दियौ भगाय ।
मारिकै सोंटा जोगाजितको ❋ औ रणमेंसे दियो हटाय ॥
शोर मच गयो सब नगरीमें ❋ जहँ तहँ बीते हाहाकार ।
नृपसुत भागि गयो समुहेसे ❋ अपनी छोड़ भगो तलवार ॥
चलकै पहुंचो है राजापै ❋ रणको सबै सुनायो हाल ।
हाथ जोड़ राजासे बोलो ❋ सुनौ पिताजी बात हमार ॥
जुलुम गुजारे वा जोगीने ❋ सब सेनाको डारो मार ।
है अजीत नहिं जीतो जैहै ❋ ऐसो जोगी देखो नायँ ॥
कौन जतनसे करैं लड़ाई ❋ जासे वाको लेउँ बँधाय ।
इतनी बात सुनी राजाने ❋ सारे भूल गयो औसान ॥
नागफांसमें वाको बांधो ❋ ये राजाने कही बुझाय ।
ब्रह्म फांसको कभी न मेटै ❋ जो वह है क्षत्रीको लाल ॥
यह मन भाई जोगाजितके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
ब्रह्मफांस लैकै फिर झपटो ❋ औ इन्दलपै पहुंचो जाय ॥
ब्रह्मफांस इन्दलपै डारी ❋ याविधि लियो कुँवरको बांध ।
यह गत देखी जब इंदलने ❋ तब वह सोचि सोचि रहिजाय ॥
ब्रह्मफांस है यह ब्रह्माकी ❋ आदिहिते बंधि रहि मर्जाद ।
बड़े बड़ेने आन न मेटी ❋ परंपरासे यह ब्योहार ॥
जो अब आन बड़ेनकी मेटौं ❋ चाहे धड़से शिर उड़ि जाय ।
जोगाजीत मगन अब ह्वै गयो ❋ फूलो अंगमें नाहिं समाय ॥
मुश्क बांधिकै बंगले लायो ❋ जहँ है राजाको दरबार ।
बोले राजा तब इन्दलसे ❋ जोगी तेरो बुरो ह्वै जाय ॥
मन ना रंगो कपड़े रंगले ❋ नाहक भस्मी लई रमाय ।
परतिरियन को छलत फिरत है ❋ परलज्जाको लेत उतार ॥

धर्म नहीं है यह जोगीको ❋ जो तै कुमति करी ह्यां आय ॥
बोलो इन्दल तब राजासे ❋ राजा मैं जोगी हौं नाहिं ।
मैं तो बेटा तुनि आल्हाको ❋ मेरो नाम इन्दलसी राय ॥
नाती हौं मैं चन्देलेको ❋ औ गढ़ महुबो देश हमार ।
तिरिया कारण जोगी ह्वै गयो ❋ अपने कुलकी छोड़ी लाज ॥
जाविधि वचन भरे लेखाने ❋ ब्यौरेवार कहे समुझाय ।
परतिरिया मैं नाहिं छली है ❋ अपनी स्त्री दई बताय ॥
अधब्याही तौ ह्वै गई राजा ❋ सारी भांवरि देहु डराय ।
इतनी सुनिकै राजा जरिगे ❋ औ मन रहो ठिकाने नाय ॥
नाम सुनेसे बन्नाफरके ❋ कबसे बांध लई तलवार ।
बनके आये बन्नाफर ❋ कबसे बांध लई तलवार ॥
चाकर ह्वैगे चंदेलेके ❋ टुकड़ा शिर बेंचेको खायँ ।
उनको बेटी हम ना देहैं ❋ याको देहु शीश उतराय ॥
हाथ जोड़कै मन्त्री बोलो ❋ ओ महाराज गरीब निवाज ।
घर आये बैरी ना मारैं ❋ याते क्षत्री धर्म नशाय ॥
जो नर मारै शरणागतको ❋ उनकी कुली नरकमें जाय ।
जो चढ़ि आवै महुबेवारे ❋ कहँ है पुत्र इन्दलसी राय ॥
एक इन्दलके खप जानेसे ❋ लाखौं जानैं करै हलाल ।
याहि डरावो अब भकसीमें ❋ जल्दी कैद देहु करवाय ॥
सो मन भाय गई राजाके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
हाथ हथकड़ी पायन बेड़ी ❋ गलमें तौक दियो डरवाय ॥
असी हाथ गहरी जो भकसी ❋ ताके बीच दियो डरवाय ।
अजगर शिला धरी मोहरेपर ❋ जासे कहीं न निकसो जाय ॥
यह गति कर दइ है बारेके ❋ जाको दुख जानैं भगवान ।
चिठियां लिख दइ सरहनागने ❋ मुजरा लिखै सम्हार सम्हार ॥
राम राम चिठियामें लिखिकै ❋ श्रीगंगाजी करैं सहाय ।
राजा लिखिदौ सरहनाग औ ❋ कन्या लिखी पद्मिनी नार ॥

ब्याह रचावौ या कन्याको ❀ फिर यह समय मिलनको नाहिं ।
मुजरे लिखदैं गजराजाको ❀ लोहा सुतको करो विवाह ॥
सवा लाखको टीका धरके ❀ जलदी नेगिन करो तयार ।
चिठियां देदई उन नेगिनको ❀ अबहीं ले गुजरातहिं जाव ॥
टीका लैकै नेगी चलभे ❀ औ गुजरात पहूँचे जाय ।
जहँ दरबार गजराजाको ❀ नेगी तहँ पहुँचे हर्षाय ॥
बोलो नेगिनसो दरवानी ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
कौन देशसे तुम आये हौ ❀ आगे कहो आपनो नाम ॥
बोले नेगी दरवानीसे ❀ सिंहल द्वीप हमारो धाम ।
बिटिया जन्मी सरहनागके ❀ ताको पद्मिनि नाम कहाय ॥
वाको टीका हम लै आये ❀ राजपुत्रको दिहैं चढ़ाय ।
इतनी सुनि खुश ह्वै दरवानी ❀ पहुँचो गजराजा दरबार ॥
पांच पैगसे करी बन्दगी ❀ बोलो दरवानी बात सम्हार ।
टीका आयो सिंहलद्वीपसे ❀ नेगी ठाढ़े पँवर दुवार ॥
इतनी सुन बोले गजराजा ❀ नेगिन ले आवो दरबार ।
नेगिन आकर करी बंदगी ❀ पाती गद्दी दई चलाय ॥
पाती बांची गजराजाने ❀ फूले अंगमें नाहिं समाय ।
तुरते पंडितको बुलवायो ❀ औ टीकाको लियो चढ़ाय ॥
दान दक्षिणा इनाम पाकर ❀ सब नगरीमें खुशी लखाय ।
टीका चढ़ गयो जब लोहाको ❀ नेगी चलि दिये अपने धाम ॥
बिदा करो है तिन नेगिनको ❀ दैके बहुत बड़े इनाम ।
ब्याहकी सामा होने लागी ❀ मच गइ धूम नगरके मांहिं ॥
न्योतो भेजो नर मलिखेको ❀ ब्याहकी चिठियां लिखी सम्हार ।
मुजरे लिखे हैं मलिखेको ❀ राजा बच्छराजके लाल ॥
आई सगाई सिंहलद्वीपकी ❀ ब्याह रचो लोहा सरदार ।
बड़ि बड़ि मारैं सिंहलद्वीपकी ❀ जिनसे लड़े न पावैं पार ॥

या पति राखैंगी गंगाजी ❋ या पति शरण तुम्हारे हाथ ॥
जल्दी आवो मेरे ब्याहमें ❋ जीयत गुण भूलौंगो नायँ ।
न्योता आयो गढ़ सिरसामें ❋ राजा मलिखेके दरबार ॥
चिठिया दीनी है मलिखेको ❋ कोसिद झुकझुक करी जुहार ।
बांची चिठिया नर मलिखेने ❋ औ गजना पै खबर कराय ॥
बोली बेटी गजराजाकी ❋ बालम सुनौ हमारी बात ।
ऐसी कीजो सिंहलद्वीपमें ❋ जो कुलको ना आवे दाग ॥
ब्याहके लैयो मेरे भैयाको ❋ जो मेरि रहे जगतमें लाज ।
जो तुम बिना ब्याहे आवोगे ❋ तौ ना जियैं गजनदे नार ॥
ये मन भाय गई मलिखेके ❋ औ हिरदैमें गई समाय ।
बारह सहस सेन संग लैकै ❋ आतुर चले बीर मलिखान ॥
चलिकै आयो है गुजरातहि ❋ राजा गजराजाके द्वार ।
भई तयारी सिंहलद्वीपकी ❋ सब सजधजके चली बरात ॥
धावे पड़ गये सब सेनाके ❋ छांड़ कसौंदी चली अगार ।
यहांकि बातैं तौ यहिं छांड़ौ ❋ औ आगेको सुनौ हवाल ॥
जो दुख बीत रहे इंदलपै ❋ सो दुख जानत है भगवान ।
पद्मावतिसे भयो बिछोहा ❋ वाको फटो करेजा जाय ॥
हाय हाय करि दिनभर रोवे ❋ एक एक पलक वर्ष सम जाय ।
जो नर विरही होवे जगमें ❋ उनसे पूँछो दिलकी बात ॥
असि गति होवे प्रियाविरहमें ❋ ना जीवैं ना निकसैं प्रान ।
हाल सुनो अब पद्मावतिको ❋ जिहिसे छुटे बनाफरराय ॥
दिनभर बीतैं काग उड़ावत ❋ तारे गिन गिन रैन बिहाय ।
एक घड़ीभर चैन पड़ै ना ❋ हरदम पिया पिया डकराय ॥
सुरंग लगाय दई भकसीमें ❋ जहंपै पड़े इंदलसीराय ।
जायकै मिली पती अपनेसे ❋ तनके सबै रोग मिट जायँ ॥
इस विधि रोज रोज वह मिलती ❋ औ बालमसे करती प्यार ।
मन इच्छा भोजन पहुंचावै ❋ निशिदिन मिलती कंठ लगाय ॥

ऐसे चैन करैं वे दोनों ❋ अब कुछ सुख वरनो ना जाय ।
यहांकि बातैं तो यहि छांड़ो ❋ अब बरातको सुन लेउ हाल ॥
आय बरात गई लोहाकी ❋ सिंहलद्वीप पहोंची जाय ।
तँबुआ तन गये धुर खेतनमें ❋ कलसा आसमान घहरायँ ॥
झण्डा गड़ गये हैं रेतीमें ❋ जिनकी लाल ध्वजा फहरायँ ।
कमरै खुल गई सब ज्वाननकी ❋ घोड़ा लगे थानसे जाय ॥
लैकै कागज कल्पीवारो ❋ चिठियां लिखी भँवरमलखान ।
राम राम चिठियामें लिखिदइ ❋ औ गंगाजी रहैं सहाय ॥
मुजरे लिख दिये सरहनागको ❋ तो पर लोहा आयो धाय ।
जो तेरी मंशा होय लड़नेकी ❋ अपनो खेत बुहारो आय ॥
जो तेरी मंशा ना लड़नेकी ❋ डोला करो हमारे साथ ।
करके बंद मोमजामेमें ❋ हलकारे के देदइ हाथ ॥
लैजा चिठिया सरहनागपै ❋ गुजरै घड़ी घड़ीमें ब्यार ।
इतनी सुनि लई है धामनने ❋ करमें चिठियां लई उठाय ॥
करी तयारी धुर खेतनसे ❋ औ सड़िनीपै भये सवार ।
कहुं कहुं धूरि उड़ै अम्बरमें ❋ कहुं कहुं चलै अनोखी चाल ॥
थोडी देर कैरे अरसामें ❋ दाखिल गढ़ियामें ह्वै जाय ।
लगी कचहरी सरहनागकी ❋ शोभा कछू न बरनी जाय ॥
धामन पहुंचो दरबारनमें ❋ लैकै पार ब्रह्मको नाम ।
सुतरी खैचीं सांड़िनी बैठी ❋ चौबा उतरि अगाड़ी जाय ॥
पांच पैगसे कुन्नस कीनी ❋ औ ढिग जाकर करी जुहार ।
चिट्ठी धर दई सिंहासनपे ❋ राजा देखी नयन निहार ॥
चिठियां बांचत परलै ह्वै गइ ❋ राजा सोचि सोचि रहि जाय ।
सेनापतिको वेगि बुलाकै ❋ सुबरन कड़ा दिये पहिराय ॥
जितनी फौजैं मेरी गढ़ियामें ❋ एक घंटेमें करो तयार ।
लोहा शूरमा चढ़ि आयो है ❋ जा तन नाहिं गड़ै तलवार ॥
ताके संगमें सिरसावारो ❋ जासे लड़ै न पावैं पार ।

मोहरा मारो उन दोनोंको ❀ सांची मानो कही हमार ॥
पेन्सन करि देहौं ज्वाननकी ❀ खावैं सात पुस्त परिवार ।
पैदल पल्टन रथी गजपती ❀ औ सब साजे हैं असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो चरखिनपै दईं चढ़ाय ।
मारू डंका बाजन लागे ❀ बारह कोस धमाको जाय ॥
अस दल टूटे सरहनागके ❀ सेना बढ़ी अगाड़ी जाय ।
दोनों ओरके उठे मोरचे ❀ दलमें मारहिं मार सुहाय ॥
पहली लड़ाई भइ तोपनकी ❀ दूजी बंदूकनकी मारु ।
तिसरि लड़ाई भइ सहटिनकी ❀ चौथे दिये तमंचे दाग ॥
पँचई लड़ाई भइ भालोंकी ❀ छठी बार लई सांग उठाय ।
सतइँ मार भइ संगीननकी ❀ अठये बजन लगी तलवार ॥
नवीं लड़ाई पेशकब्जकी ❀ दशवीं विरयां चली कटार ।
ग्यारहिं लड़ाई हैं बिछुवनकी ❀ छातीसे छाती मिल जाय ॥
चार पहर तक भई लड़ाई ❀ रणमें पड़ी लाशपै लाश ।
ऐसी कटा भई खेतनमें ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
आधी फौज कटि सरहनागकी ❀ थोरी मलिखेकी कटि जाय ।
खप्पर भरती फिरै जोगिनी ❀ भूत प्रेत डोलैं बेताल ॥
मार सिरोहिन चहला ह्वै गये ❀ औ बुबकरियां बोलैं घाव ।
कट कट शीश पड़े धरनीमें ❀ उठ उठ रुंड करैं तलवार ॥
सननसननकर रही खोपड़िया ❀ घायल पड़े पड़े चिल्लायँ ।
रंगबिरंगे कपड़े ह्वै गये ❀ चरबी अंग रही लिपटाय ॥
लड़ते लड़ते फौजैं थक गईं ❀ औ सबके गये होश उड़ाय ।
फौजें डरपी सरहनागकी ❀ भागीं रणमें पीठ दिखाय ॥
शिकस्त खाई है फौजनने ❀ अपने पराये की सुधि नाहिं ।
तब ललकारो है मलिखेने ❀ दलमें धुआंधार ह्वइजाय ॥
ज्वान पुकारे गढ़ सिरसाके ❀ अब क्यों राखी देर लगाय ।
निमक जो खायो नर मलिखेको ❀ अब खेतनमें करो हलाल ॥

जो कोई मरिहै पीठ दिखाकै ❋ उसको मांस चील ना खाय ।
जो कोइ मर जाय रणखेतनमें ❋ वाको इन्द्र परी लै जाय ॥
लैलेउ लैलेउ इन फौजनको ❋ अब क्यों राखी देर लगाय ।
मुर्चा छीन लेउ शूरनसे ❋ तुम्हरे नाम फतह ह्वइजाय ॥
इतनी सुनिकै फौजें लपकीं ❋ ज्यों भर भादौ मेघ बहाय ।
छुटे कबूतर ज्यों दरवेसे ❋ औ वनमेंसे उड़ैं पुछार ॥
ऐसे टूटे सिरसावाले ❋ जैसे गिरै चिड़ीपर बाज ।
धरकै दाबो हैं फौजनको ❋ अजगर बाज रही तलवार ॥
ऐसे ग्रास लियो फौजनको ❋ जैसे सिंह गजे वन माहिं ।
पैर उखड़ गये सब फौजनके ❋ अपने छोड़ मोरचा जायँ ॥
रणमें भाग पड़ी सब सेना ❋ अब कोइ धीर धरैया नाय ।
आधी फौज मरी खेतनमें ❋ आधी धँसी शहरमें जाय ॥
रणसे हार भई राजाकी ❋ सेनापती सुनायो हाल ।
तब ललकारो सरहनागने ❋ मंत्री तेरो बुरो ह्वै जाय ॥
निमक हरामी तेरी अब जानी ❋ दोनों कुलमें दाग लगाय ।
जोगाजितको बेगि बुलायो ❋ औ गणपतिको हुक्म सुनाय ॥
चढ़जाउ चढ़जाउ मेरे सहजादो ❋ औ रहि जाय जगतमें लाज ।
ऐसे मारो तुम दुश्मनको ❋ जामें जय तुम पावो जाय ॥
इतनी सुनतै सहजादनने ❋ सब सेनाको लियो सजाय ।
दोनों बैठ गये हौदामें ❋ अस्त्र शस्त्र सब लगे गहाय ॥
मारू बाजा बाजन लागे ❋ बारह कोश धमाको जाय ।
लगे मोरचा धुर खेतनमें ❋ दौ लड़कनमें युद्ध मचाय ॥
फिरकै हार भई फौजनकी ❋ तब सहजादे चले अगार ।
ज्वान गरीबनको ना मारौ ❋ जिनको सेर चून घट जाय ॥
लड़नो होय तो हमसे लड़ लेउ ❋ तुम्हरिहु देख लेयँ तलवार ।
ज्वान गरिबनको ना मारौ है ❋ पल्ला पड़ो मर्दसे नायँ ॥

इतनी बात सुनी मलिखेने ❋ बोलो बच्छ राजको लाल ।
लोहा सूरमाको ललकारो ❋ अब कहँ लै गइ मौत कराल ॥
लियो जाय तो ले दोनोंको ❋ नृपसुत खड़े खेतके माहिं ।
जोगाजित तुम्हरी बरनीको ❋ गणपतिको मैं लेहौं धाय ॥
इतनी सुनिलइ है लोहाने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
घोड़ो बढ़ाय दई मलिखेने ❋ दोनों चले महेश मनाय ॥
ऐसे टूट पड़े दुश्मनपै ❋ जैसे शेर मृगा पै जाय ।
मोहरे भिड़ गये धुर खेतनमें ❋ अपने शस्त्रहि लिये उठाय ॥
जोगाके मोहरे पर लोहा ❋ औ गणपतिपै है मलिखान ।
जो जो चोटें जोगा मारै ❋ लोहाके तन तक ना आन ॥
बर्छी फरसा और सिरोही ❋ जौभर शस्त्र गड़ै तन नाय ।
बज्रकी काया है बैरीकी ❋ अब दुश्मनसे नाहिं बसाय ॥
काया खटकै है लोहासी ❋ खुपड़ी तांबासी ठन्नाय ।
जैसे आरनपै घन बरसै ❋ धौंधौं करि धौंकनि मन्नाय ॥
ऐसे मारो है लोहाको ❋ जाको रोमहु नाहिं कटाय ।
मारि शिरोहीसे गज काटे ❋ औ घोड़नके चारहुँ पायँ ॥
वही शिरोही पट्टा पड़ी है ❋ अब मेरे प्राण बचैंगे नाय ।
भइया लौट भतीजा लौटे ❋ औ सब लौट जाय परिवार ॥
रणमें लोहे तू मत लौटे ❋ तीनों लोक ठिकानो नायँ ।
बोलो लोहा जोगा-जितसे ❋ तुमरो काल पहुँचो आय ॥
तेरी उमरिया टर गइ प्यारे ❋ अब ह्वै गई हमारी आय ।
लैकै शस्तर लोहा दौड़ो ❋ औ जोगाके सन्मुख जाय ॥
पहिले मारो पीलवानको ❋ औ धरतीमें दियो गिराय ।
फिर फरसा जोगाको मारो ❋ औ बायेंसे हनो कटार ॥
चोट बचाय लई जोगाने ❋ ताको राखि लियो करतार ।
धोखा दैकै तब जोगाको ❋ लोहा धर धमकी तलवार ॥

ढाल उठाय दइ गैंडावाली ❀ अपनी रक्षा करी सम्हार ।
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❀ गही कटि मखमलकी जाय ॥
कटी हथेली है जोगाकी ❀ औ पंजेमें आयो घाव ।
तेगा मारो वर्दवानको ❀ औ चेहरापै झांपो जाय ॥
टोप झिलमिलाको काटो है ❀ फिर माथेको लक्ष बनाय ।
तब ललकारो है मलिखेने ❀ लोहा तेरो बुरो ह्वै जाय ॥
जौ तू मारै जोगाजितको ❀ नातो सालेको मिट जाय ।
तुम्हें मुनासिब यह नाहीं है ❀ राजपुत्रपै हाथ चलाउ ॥
मुश्क बांधिकै जोगाजितकी ❀ उलटे दंड देउ कसवाय ।
ये मन भाय गई लोहाके ❀ औ हिरदेमें गई समाय ॥
ढालकि औझड़ लोहा मारी ❀ औ जोगाको दियो गिराय ।
मुश्क बंधाय लई जोगाकी ❀ तुरतैं तंबुआ दियो पठाय ॥
अब तुम हाल सुनो गणपतिको ❀ जैसे लड़ो बीर मलिखान ।
जो जो शस्तर गणपति मारे ❀ सो सो मलिखे गयो बचाय ॥
पांचो शस्तर जब खाली गये ❀ मलिखे काढ़ि लई तलवार ।
पहले मारो पीलवानको ❀ दूजे हनी कुलफ बरदार ॥
तीजे मारो है हौदामें ❀ गणपति नीचेको ह्वै जाय ।
ऐसो हौदा सहजादेको ❀ शस्तर एक लगनदे नायँ ॥
जितने वार करे मलिखेने ❀ सो सब हौदा लिये बचाय ।
गणपति ओट लई हौदाकी ❀ उसके चोट नाहिं नगिचाय ॥
एकौ शस्तर नहिं खायो है ❀ उन हौदाकी ह्वैके आड़ ।
तब रिसभर कहि सिरसावालो ❀ हौदा हमको लग गयो झाड़ ॥
गणपति काबूमें नहिं आवै ❀ यामें लेवे चोट बचाय ।
दाबी घोड़ी तब मलिखेने ❀ जैसे लौट कबूतर जाय ॥
दो टापैं हौदामें टेकी ❀ औ दो रही जमीके माहिं ।
मारो तेगा नर मलिखेने ❀ अमर गुरूको ध्यान लगाय ॥
रस्से काट दियो हौदाके ❀ हौदा गिरो धरनिमें जाय ।

शूर गणपति पैदल ठाढ़ो ❀ तापर मलिखे टूटो आय ॥
कुश्ती होन लगी दोउनमें ❀ जाको देइ शारदा माय ।
मलिखे दाबै है गणपतिको ❀ साढ़े तीन कदम हट जाय ॥
गणपति दाबै हैं मलिखेको ❀ साढ़े तीन कदम ले जाय ।
लड़ते लड़ते बहुत विलम भइ ❀ दो में एकौ हारो नाय ॥
तब ललकारि कही लोहाने ❀ मलिखे कहां गई तलवार ।
बड़ो लड़ैया सिरसावारो ❀ जाको जोड़ नहीं संसार ॥
ताके दुश्मन ऐसे अड़ रहे ❀ उसको कैसे देर सुहाय ।
जरिकै मलिखे रापट ह्वै गयो ❀ ज्यों बारूदमें आग लगाय ॥
पहले सुमिरो अमर गुरूको ❀ दूजे तुनि आल्हा सरदार ।
तीजे सुनवांको सुमिरो है ❀ विद्या टूटी परम अपार ॥
ऐसे फेंको है गणपतिको ❀ जैसे बालक गेंद फिकाय ।
चालिस हाथ गयो ऊपरको ❀ फिर अधवरमें लियो थमाय ॥
कौली भर लइ हैं गणपतिकी ❀ मुश्कै बांधी खूब सम्हार ।
मुश्क बांधकै राजपुत्रकी ❀ अपने तम्बू दियो पठाय ॥
हाहाकार मचो फौजनमें ❀ अब कोई धीर धरैया नायँ ।
धावे कर दिये नर मलिखेने ❀ फौज आगेको धँस जायँ ॥
जितनी सेना थी बैरीकी ❀ सारी भागी पीठ दिखाय ।
पैर उखड़ गये हैं सेनाके ❀ फौजैं किल्ले गईं समाय ॥
तोपैं रह गई हैं खेतनमें ❀ सो मलिखेने लई छिनाय ।
बहुतोंकी बन्दूकैं रह गईं ❀ बहुतै छिपकै चले बराय ॥
बहुतक ढालै बहुतक भाले ❀ बहुतक छोड़ भगे तलवार ।
खबर दई है हलकारेने ❀ राजा सरहनागके द्वार ॥
हाथ जोरि हलकारो बोलो ❀ हे महराज मोर सरकार ।
जंग जीतगे दुशमन तुम्हरे ❀ सेना गई खेतमें हार ॥
मुश्क बांधकै सहजादनकी ❀ अपने डेरा दिये पठाय ।

अब ना रणमें फतह होयगी ❋ चाहे सौ सौ करौ उपाय ॥
बहुत शोक राजाने करके ❋ तब एक मनमें करो विचार ।
वो जो जुगिया कैद करायो ❋ है वो बड़ो शूर सरदार ॥
है अजीत वशमें ना ऐहै ❋ वाकी नाहि झिलै तलवार ।
ताहि जुटाय दऊँ वैरिनसे ❋ काको जय देवै करतार ॥
वे मरजाँ या यहु मरिजावैं ❋ हमरो कुछ बिगड़ैगो नाय ।
ये मन मानी सब लोगनके ❋ ऐसो रचदो तुरत उपाय ॥
इन्दल काढ़ो है भकसीसे ❋ औ दरबार पहूँचो जाय ।
सूरति देखी जब इन्दलकी ❋ राजा वचन कहे समुझाय ॥
जोगी आवौ पास हमारे ❋ औ सुन मानौ वचन हमार ।
मोपैं चढ़ो कसौदीवारो ❋ सब फौजनको डारो मार ॥
युद्ध करो तुम उनसे जाके ❋ तेरी देख लेऊँ तलवार ।
जो कोइ जीतेगो खेतनमें ❋ वह मेरि बेटीको भरतार ॥
बोलो इन्दल तब राजाते ❋ राजा कहौं तोहि समुझाय ।
जो मैं जीतो रणके अन्दर ❋ तो तुम भांवरि दिहौ डराय ॥
जो मैं मरजाउँ रणखेतनमें ❋ राजा कछू परेखो नायँ ।
देख बनैती मेरि कमनैती ❋ जा खन खेतनमें जुट जाय ॥
हाथ हथकड़ी पायन बेड़ी ❋ गलकी तौक दियो कटवाय ।
घोड़ा दीनो है चढ़िबेको ❋ पांचौ शस्त्रहि दिये गहाय ॥
करी तयारी है इन्दलने ❋ औ रणभूमि पहुँचो जाय ।
लोहा लोहा कहि ललकारो ❋ आयो तेरो काल नियराय ॥
देखौं तौ कैसो मरदानो ❋ जो सहजादे लिये बँधाय ।
सुनिकै हांकै लोहा झपटो ❋ जैसे बाज चिड़ीपै जाय ॥
मुहरे भिड़ गये हैं दोउनके ❋ करते खैंच लई तलवार ।
लोहा शस्तर मारन लागो ❋ सुमर हृदयविच श्रीकरतार ॥
विद्या सुमरीं है इन्दलने ❋ अमर गुरूको ध्यान लगाय ।
पांचो शस्तर लोहा मारे ❋ जाको रोम कटो इक नाय ॥

तब ललकारो है इन्दलने ❀ लोहा अब होजा हुशियार ।
जैसे अहरन पर घन पटकै ❀ ऊपर धौं धौं करे लुहार ॥
ऐसे शस्तर इन्दल मारे ❀ छेपट एक उतरती नाय ।
वज्रकी काया है जालिमकी ❀ जौभर शस्त्र न तनमें जाय ॥
तब रिस भरकै महुबेवारो ❀ ओ विद्याको लियो उठाय ।
जितनी विद्या थी अमराकी ❀ सबको सुमरो हृदय लगाय ॥
पढ़ पढ़ सरसो इन्दल फूँकै ❀ सो लोहा पर देत चलाय ।
लोहा जाय पड़ो हौदामें ❀ जैसे कला कबूतर खाय ॥
मुश्कैं बांध लईं इन्दलने ❀ उलटे गण्ड लिये कसवाय ।
यह गति देखी जब मलखेने ❀ ज्यों बरूदमें आग लगाय ॥
लौट गर्दना नाहर कैसी ❀ घोड़ी लै उड़िगइ असमान ।
एकदम टूट परौ इन्दलपै ❀ जैसे लंकामें हनुमान ॥
बारह मनको शैल शनीचर ❀ सो इन्दलपै दिया झुकाय ।
बालखिलारी वह लड़का था ❀ ओ छलबलमें अधिक कहाय ॥
खन घोड़ापै खन धरतीपै ❀ कबहूँ तंग तरे धँस जाय ।
सांग बचाई नर मलिखेकी ❀ सो धरनीमें गई समाय ॥
जरिके मलिखे राफ्ट ह्वै गये ❀ झुँझलाकर मारी तलवार ।
जादू टूटो अमरावाली ❀ खाली गयो वार तलवार ॥
सोचै मलिखे धुरखेतनमें ❀ करता कहा रची अब आन ।
यही शिरोहीसे गज काटे ❀ औ घोड़नके चारहु पांय ॥
सो तरवरिया पट्ट पड़ी है ❀ निश्चय आयहु काल हमार ।
ना कोइ क्षत्री बावन गढ़में ❀ जो मेरी झेलै तलवार ॥
कौन देशको यह जोगी है ❀ जाने दीनो जुलुम गुजार ।
जितने शस्तर मैंने मारे ❀ सबको तुरतै करदौ काट ॥
तब ललकार दई इंदलने ❀ क्षत्री सावधान ह्वै जाउ ।
विद्या टूटी सब अमराकी ❀ औ बल बाढ़ो अगम अपार ॥
धरिकै दाबौ नर मलिखेको ❀ घोड़ी बीस कदम हट जाय ।

मारी सिरोही नर मलिखेके ❋ कोटा बूँदीकी तलवार ॥
ढाल काट दई गैंडावाली ❋ गद्दी कटि मखमलकी जाय ।
कटी हथेली नर मलिखेकी ❋ औ पंजेमें खटकी जाय ॥
अब मन सोचै सिरसा वारो ❋ है यह बड़े गजबकी बात ।
बावन गढ़िया सर कर डारीं ❋ किनहूं ना काटी यह ढाल ॥
बड़ो लड़ैया यह जोगी है ❋ हमरे मेट दिये अरमान ।
फिरकै झपटा सुनवांवारो ❋ अपने धरे हथेली प्राण ॥
हटजा हटजा मेरे सम्मुहेते ❋ अपनी लैजा जान बचाय ।
तू ना जानै महुबेवारे ❋ जानै नहिं बनाफर राय ॥
जो कहिं होते चचा हमारे ❋ मोको कौन हती परवाह ।
दहशत गालिब मेरे चचाकी ❋ रोवत बाल बन्द ह्वै जाय ॥
इकलो घिर रहो परदेशनमें ❋ ना कुनबेको कोइ लखाय ।
तौहूँ मार करूंगा डटकर ❋ रणसे पाछे पैर न जाय ॥
इकलो नाहिं हटूंगा रणसे ❋ धरती लोट पोट हुइजाय ।
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ बचा मोहि कहो समुझाय ॥
कौन तुम्हारे मात पिता हैं ❋ औ है कौन तुम्हारो नाम ।
देश बतावो ऐ शहजादे ❋ तुम यहँ आये हो केहि काम ॥
भेद आपनो मैं बतलाऊँ ❋ ताको सुनिलेऊ ध्यान लगाय ।
देश हमारो गढ़ महुबो है ❋ जहवां वसै रजा परिमाल ॥
आल्हा पिता सुनमदे माता ❋ चाचा मेरे बीर मलिखान ।
आदि अन्तलौ जो कुछ बीती ❋ सो मैं सांची कही प्रमान ॥
आंसू टपक पड़े मलिखेके ❋ हिचकि मारि रोयो मलिखान ।
हाथ जोड़के करी प्रार्थना ❋ तुमही रक्षक श्रीभगवान ॥
अपने हाल कहे मलिखेने ❋ जाविधि आये बरातहिं मांय ।
भुजा पकड़कै तब इन्दलको ❋ औ छातीसे लियो लगाय ॥
रोय रोय मिले खेतनमें दोनों ❋ छाती उमँगी नाहिं समाय ।
भले बचाये नारायणने ❋ नहिं अपघातसे जात नशाय ॥

चचा भतीजे दोनों मिल गये ❀ ज्यौं बच्छासे मिलगइ गाय ।
बोले मलिखे तब लोहासे ❀ लोहा सबर करो मनमांय ॥
यह्नु तौ रानी मेरे लड़काकी ❀ यासे ह्वै गये कौल करार ।
अधब्याही कनउजमें ह्वै गई ❀ सारी यहां होय इक बार ॥
सात महीना पहले ब्याही ❀ बेटा मेरे इंदलसी राय ।
डोला तुमको ना मिलनेको ❀ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
इतनी सुनि लइ जब लोहाने ❀ फौजन कूंच दियो करवाय ।
राम राम मलिखेसे करिकै ❀ औ गुजरातहिं सुरत लगाय ॥
मौर उतारि सिंधुमें डारो ❀ कंगना तजो खेतके माय ।
ऐसे कूंच कियो लोहाने ❀ मानों संपति सकल गंवाय ॥
लोहा पहुंचो जब गुजरातहिं ❀ हांसी करी सकल संसार ।
सुनो हकीकत अब सिंहलकी ❀ ब्याहे गये बनाफर राय ॥
कर ठहरायो है राजापर ❀ जो कुछ राजनीति अनुसार ।
अपनो कर मलिखेने लीन्हो ❀ सरहनाग करि ताबेदार ॥
कूच करायो सिंहलद्वीपसे ❀ गढ़ कनउजको करो पयान ।
यहांकि बातें तौ यहि छोड़ो ❀ अब आल्हाको सुनो पयान ॥
जाय सिपाही कहे आल्हासे ❀ जो इन्दलका पहरेदार ।
जुलुम गुजर गये हैं कनउजमें ❀ समय प्रलयको परै लखाय ॥
बादल फाड़ काहु चोरने ❀ बिपदा मोसे कही ना जाय ।
तौक हथकड़ी औ बेडीको ❀ तोरिकै इंदल लियो चुराय ॥
सुनतै आल्हा सहमि गयो है ❀ धक्का लगो कलेजे माहिं ।
खाय पछाड़ गिरो धरतीपै ❀ मुंहसे बात कही ना जाय ॥
हुई खबरिया जब तालाको ❀ सैयद रोवै जार बेजार ।
ऊदनि रोवैं छाती पीटै ❀ बिपदा कौन उठी करतार ॥
सुनवा रोवै दिवला रोवै ❀ शोकपूर्ण रनवास लखाय ।
ढूँढ़ो ढूँढ़ो शहजादेको ❀ वाको लैगई कौन बलाय ॥
ताला चलिभो तेहि ढूँढ़नको ❀ औ चल दिये उदयसिंहराय ।

बावनगढ़में फिरैं भटकते ❋ जाको खोज मिलो कहुँ नाय ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त पांच मास गये ❋ गिर गिर पड़े बनाफर राय ।
ऊदनि पहुंचे बबुरी वनमें ❋ जहँपै तपै अमर गुरुवाल ॥
आवत देखो जब ऊदनिको ❋ गुरुवा ताली लई लगाय ।
एक पांवसे ऊदनि ठाढ़े ❋ मुंहमें तिनका रहे दबाय ॥
तीन दिना जब ठाढ़े ह्वै गये ❋ ऊदनि खैंचि लई तलवार ।
जोग भंग कर अमर गुरूको ❋ इसको बनूं गरेको हार ॥
मनमें सोचो अमर गुरूने ❋ यह ना मानैगो सरदार ।
ताली खोलि कही ऊदनिसे ❋ करसे छीन लई तलवार ॥
कौन मुसीबत तुमपै धाई ❋ काहे रही पिलाई छाय ।
कहो हकीकत गढ़ कनउजकी ❋ चेला मेरे बनाफर राय ॥
हाथ जोड़िकै ऊदनि बोले ❋ विपदा हमसे कही न जाय ।
बादर फट गये गढ़ कनउजमें ❋ खोये गये इन्दलसी राय ॥
तापर ज्वाब दियो अमराने ❋ अरसो भयो सातवों मास ।
इन्दल बेटा सिंहलद्वीपमें ❋ सुखसे कर रहो भोग विलास ॥
इतनी सुनिकै ऊदनि चलिभै ❋ गढ़ कनउजमें पहुंचे जाय ।
जो कुछ बीती बबुरी बनमें ❋ सो आल्हाको दई सुनाय ॥
आल्हा लश्करको सजवायो ❋ मारू डंका दियो बजाय ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ घुड़चर्खिनपर दई चढ़ाय ॥
जितने राजा सर कीने थे ❋ सोऊ रणहित लिये बुलाय ।
ताला सज गये ऊदनि सज गये ❋ लश्कर कूंच दियो करवाय ॥
इक मञ्जिल चल दुसरी मञ्जिल ❋ तिसरी मञ्जिल करो मुकाम ।
उतते आये मलिखे इन्दल ❋ लैके अमर गुरूको नाम ॥
बीचै भेंट भई आल्हाते ❋ इन्दल छाती लिये लगाय ।
जाहि पुत्रको हम ढूँढ़त थे ❋ सो ईश्वरने दियो मिलाय ॥

जैसे अन्धा नैना पावै ❀ जैसे मिले बच्छसे गाय ।
ऐसे मिल गये भूले बिछुड़े ❀ अति आनंद कहो ना जाय ॥
लौटिके आये सब कनउजमें ❀ घीके दियना धरे जलाय ।
बड़ी खुशी रिजगिरिमें छाई ❀ नौबत बजी भूप दरबार ॥
बड़े ज्ञान आल्हाने दीने ❀ मङ्गल गावैं सुन्दर नारि ।
बिछुड़ेइन्दलतिनकोमिलिगये ❀ सुखसों पूर रहो दरबार ॥
जितनी विद्या थी अमराकी ❀ सो गुरुवापै दई पठाय ।
सुनलो चरचा नर मलखेकी ❀ गढ़सिरसामें पहुंचे जाय ॥
बेगि बुलायो रनि गजनाने ❀ बालम कहो कुशल हित लाय ।
का विधि ब्याह भयो बीरनको ❀ सारो हाल कहौ समुझाय ॥
जो कुछ बीती सिंहलद्वीपमें ❀ सारी मलिखे कही सुनाय ।
मार दुहत्तर सब छातीमें ❀ धक्का गयो करेजो खाय ॥
हँसी कराई मेरे बीरनको ❀ बालम ऐसी चाहिये नाहिं ।
जनमके छलिया महुबेवारे ❀ तुम छल करो तहांपै जाय ॥
तब क्यों लै गये भैयाको ❀ फिर क्यों मौर दियो सिरवाय ।
बहुतै रोई रानि गजनदे ❀ तब मलिखेने दौ समुझाय ॥
याविधि ब्याह भयो इन्दलको ❀ तीसर नार पद्मिनी साथ ।
जैसी सुनी सिखी हम वैसी ❀ झूंठ सांच जानै करतार ॥
समय समय पर आल्हा गावो ❀ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति सिंहलद्वीपकी लड़ाई (इन्दलका तीसरा ब्याह) समाप्त

श्रीः

अथ आल्हा--निकासी

★

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सम्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
लिखौं निकासी अब आल्हाकी ❋ मनमें सुमिरि राम घनश्याम ॥
इक दिन बिपति परत सबहीको ❋ यारो सुनियो कान लगाय ।
बिपति परी इकदिन रघुपतिको ❋ सीता हरी विपिन खल आय ॥
बिपति परी थी राजा नलको ❋ खुटिया लीलो नौलखा हार ।
बिपदा परिगइ महादेवपर ❋ खल भस्मासुर परो पिछार ॥
बिपति परी यक नुनि आल्हापर ❋ चन्देलेने दियो निकारि ।
कसम दिलाई परिमालैने ❋ सो सब हाल लिखौं बिस्तारि ॥
यक दिन सोचो अपने मनमें ❋ माहिल उरईके परिहार ।
खोज मिटै सब परिमालैको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह ।
पांच दिना मारगमें बीते ❋ पहुँचे गढ़ दिल्लीमें जाय ॥
गये सामुहे माहिल राजा ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ।
उतरि बछेरीते भुइँ आये ❋ घोड़ी थापि लई थनवार ॥
करी बंदगी पृथीराजको ❋ माहिल रहिगये माथ नवाय ।
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❋ ऊंची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल पृथीराजते ❋ बैठे राज करौं महराज ॥
क्षेम कुशल है मेरि उरईमें ❋ पै दिन रात अंदेशा मोहिं ।
किला बनायो नर मलिखेने ❋ सबके घूरे लिये दबाय ॥

बड़ो बीर है सिरसावालो ❋ जाको नाम कहत मलिखान ।
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ अब महुबेको कहौ हवाल ॥
बोले माहिल पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ।
बड़े लड़ैया हैं महुबेके ❋ जिनते लड़े पार न जाय ॥
पांच बछेरा हैं महुबेमें ❋ तासे जीत सकत ना कोय ।
घोड़ा करिलिया औ हरनागर ❋ हंसामनि प्रसिद्ध है कोय ॥
घोड़ा बेंदुला और पपीहा ❋ पांचौ घोड़ा लेउ मंगाय ।
ऐंड़ लगावत ही घोड़ा ये ❋ उड़िकै आसमान लौं जात ॥
ऐसे घोड़ा हम देखे ना ❋ सो तुम समुझि लेउ महराज ।
घोड़ी कबुतरी औ पचशावद ❋ हाथी तुरत लेउ मंगवाय ॥
पहिले इनको तुम मंगवायो ❋ पाछे महुबे लेउ लुटाय ।
वंश नशावौ इन तीनोंको ❋ आल्हा ऊदनि औ मलिखान ॥
तीनिते रिस्ता नहिं नीको है ❋ सो तुम जानि लेउ महराज ।
बात सुनी जब यह माहिलकी ❋ पृथीराज मन गई समाय ॥
लैकै कागद कल्पीवारो ❋ अपनो कलमदान मंगवाय ।
लिखि सरनामा पृथीराजने ❋ चन्देलेको लिखी जोहार ॥
लिखो हाल फिरि यह पातीमें ❋ मानौ बात रजा परिमाल ।
घोड़ा हरनागर हंसामनि ❋ पपिहा और बेंदुला घ्वोड़ ॥
घोड़ाकरिलिया घोड़ीकबुतरी ❋ हथिपचशावद देउ पठाय ।
काम हमारो कछु अटको है ❋ फिरि पाछेते दिहैं पठाय ॥
ऐसी पाती लिखि राजाने ❋ सो धावनको दइ पकराय ।
पाती लैकै धावन चलिभौ ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
चारि रोजको धावा करिकै ❋ पहुंचो नगर महोबे जाय ।
जहां कचहरी परिमालैकी ❋ धावन तहां पहूंचो जाय ॥
सांकल खैंचत संडिनी बैठी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी परिमालैको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥

नजरि बदलि गई चंदेलेकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
पाती बांची परिमालैने ❋ औ आल्हाको लियो बुलाय ॥
राजा बोले तब आल्हाते ❋ पाती आई पिथौरा क्यार ।
उड़न बछेड़ा बड़ी राशिके ❋ सो मंगवाये पिथौरा राय ॥
काम कछू उनको अटको है ❋ सो तुम जल्दी देउ पठाय ।
सुनते आल्हा बोलन लागे ❋ हम सब मानत हुक्म तुम्हार ॥
पै इक अर्ज सुनो दादा तुम ❋ औ निज मनमें लेउ बिचारि ।
जिन घोड़न पर चढ़ैं चंदेले ❋ तिनपर चढ़ैं शूर चौहान ॥
तुमहिं हसौआको डर नाहीं ❋ सुनिकै हंसिहै सकल जहान ।
डरिगे चन्देले महुबेके ❋ अपने घोड़ा दियो पठाय ॥
इतनी सुनते कही चन्देले ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ।
शब्दवेधि राजा दिल्लीको ❋ है नरनाह वीर चौहान ॥
नहीं पठैहौ जो घोड़नको ❋ ह्वै है यहां बखेड़ा आय ।
तुम ना जितिहौ पृथीराजते ❋ ताते घोड़ा देउ पठाय ॥
इतनी सुनते ऊदनि तड़पे ❋ नैनन गई लालरी छाय ।
करै बखेड़ा जो हमरे संग ❋ मारौं राज भंग ह्वइ जाय ॥
जो कोउ देखै यहि महुबेतन ❋ ताको लेउँ शीश कटवाय ।
ब्याह कियो जब ब्रह्मानंदको ❋ तब कहँ हते वीर चौहान ॥
मोहरा मारो चौहाननको ❋ सातौ भांवरि लईं डराय ।
सो क्या भूलि गये राजा तुम ❋ अब क्यों डरत आप महराज ॥
गर्व न राखा केहु राजाका ❋ हमको जानत सकल जहान ।
बावन गढ़ हमने सर कीन्हे ❋ सिगरे राजा गये थर्राय ॥
हाल तुम्हारो ना जानो है ❋ दादा मनमें करो विचार ।
पहले घोड़ा वे मांगत है ❋ पीछे लैहैं फौज सजाय ॥
घोड़ा ह्वइहैं जब हमपर ना ❋ तब हम करिहैं कौन उपाय ।
ताते मानो कही हमारी ❋ लिखिकै भेजि देउ इनकार ॥
इतनी सुनिकै गुस्सा ह्वइगे ❋ बोले तुरत रजा परिमाल ।

कही हमारी तुम मानी ना ❀ खाली करो हमारो गांव ॥
पानी पीहौ दश पुरवामें ❀ तौ तुम पियौ रक्तकी धार ।
भोजन करिहौ जो पुरवामें ❀ तौ तुम खाउ गऊको मांस ॥
शय्या सोइहौ जो नारी संग ❀ मानौ परे मातके साथ ।
दई तलाकैं चन्देलेने ❀ सो आल्हा हिय गई समाय ॥
दोनों चलिभये तब बंगलाते ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय ।
रुपना बारीको बुलवायो ❀ औ यहु हुक्म दियो फरमाय ॥
फौज हमारी दश हजार है ❀ तुरतै सो तुम लेउ सजाय ।
चलिभौ रुपना तब जल्दीते ❀ लश्कर सबै सजावन लाग ॥
बोले ऊदनि सुनि आल्हाते ❀ दादा हमहिं देउ बतलाय ।
कौन देश तुम चलिहौ अब ❀ करिहौ कहां गुजारा जाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनिते ❀ बैरी बसत चारिहू ओर ।
कहीं गुजारो ना हमरो है ❀ भैया परी विपति अब आय ॥
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❀ दादा सुनौ हमारी बात ।
राजा जैचन्द हैं कनउजमें ❀ जिनको उदय अस्तलौं राज ॥
भयो बखेड़ा ना तिनते है ❀ तिन घर चलिकै करौ मुकाम ।
मोहिं भरोसा है जैचन्दको ❀ रखिहैं शरण आपनी माहिं ॥
सुनी बात जब यह ऊदनिकी ❀ आल्हाके मन गई समाय ।
इक हरकारा आल्हा भेजो ❀ औ ढेबाको लियो बुलाय ॥
आल्हा बोले तब ढेबाते ❀ भैया सगुन देउ बतलाय ।
त्यारी हमरी है कनउजकी ❀ राजा कनउजके दरबार ॥
काहे त्यारी है कनउजको ❀ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय ।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❀ हमपर रूठि गये परिमाल ॥
तीनि तलाकैं हमको दीन्ही ❀ औ भादौंमें दियो निकारि ।
हाल बताय दियो गुस्साको ❀ तब ढेबाने कही सुनाय ॥
साथ तुम्हारो हम ना छोड़िहैं ❀ दादा सोच करो कछु नाहिं ।

खोलि पत्तरा तब ढेवाने ❃ अपनो सगुन देउ बतलाय ।
कूच कराय देउ जल्दीते ❃ तुम्हरे काम सिद्ध ह्वइ जायँ ॥
यहसुनिचलिभौआल्हाऊदनि ❃ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
बोले इन्दल बघ ऊदनिते ❃ चाचा हाल देउ बतलाय ॥
कहांकि त्यारी तुमने कीन्ही ❃ सो तुम हमहि कहौ समुझाय ।
बोले ऊदनि तब इन्दलते ❃ बेटा कछू न पूँछो हाल ॥
तीनि तलाकैं राजा दीन्ही ❃ दशपुरवाते दियो निकारि ।
करी तयारी हम कनउजकी ❃ तुमहूँ जल्द होउ तैयार ॥
जहां दिवलदे माता बैठी ❃ आल्हा तहां पहूँचे जाय ।
हाथ जोरिकै आल्हा बोले ❃ डोला सबै लेउ सजवाय ॥
हमहिं निकारो परिमालैने ❃ हम कनउजको भये तयार ।
बोली देवै तब आल्हाते ❃ बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
बुरो न मानौ तुम राजाको ❃ बूढ़े भये चँदेले राय ।
रानी मलहना तुमको पालो ❃ ताते बिलग न मानो बात ॥
बोले आल्हा तब मातासे ❃ नाहीं जानो हाल तुम्हार ।
उड़न बछेरा बड़ी राशिके ❃ सो मंगवायो बीर चौहान ॥
घोड़ी कबुतरी हथिपचशावद ❃ सो मंगवायो पिथौरा राय ।
बहुत बतकही हमते ह्वइ गइ ❃ हमने साफ़ करी इनकार ॥
तापर राजा गुस्सा ह्वइ गये ❃ हमको दई तलाकैं तीनि ।
पानी पीवौ जो पुरवामें ❃ तौ तुम पिऔ रुधिरकी धार ॥
भोजन करो आजु पुरवामें ❃ तौ तुम खाउ गऊको मांस ।
सेजपै जावौ जो तिरियाकी ❃ तौ तुम चढ़ौ मातुको सेज ॥
तीनि तलाकैं यह राजाकी ❃ हमरे गईं करेजे सालि ।
हम ना रहिहैं अब पुरवामें ❃ माता वचन करो परमान ॥
इतनी सुनते रनि देवैके ❃ गुस्सा गई देहमें छाय ।
डोला सजवाये बहुअनके ❃ औ सब माया लई लदाय ॥
हाथी पचशावद सजवायो ❃ तापर आल्हा भये सवार ।

घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ा करिलियापर इन्दल हैं ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार ।
घोड़ा पपीहा औ हंसामनि ❋ लीन्हे साथ बनाफर राय ॥
कूच करायो दशपुरवाते ❋ औ चलि भये बनाफर राय ।
सिगरी रैयत रोवन लागी ❋ बेड़ा कौनु लगैहै पार ॥
जबहीं पहुँचे गढ़ महुबेमें ❋ डोला सबके धरे उतारि ।
महल निकट था जगनायकको ❋ जगनिक एक न पूछी बात ॥
सुनो हाल जब रनि मल्हनाने ❋ चले रिसाय बनाफर राय ।
मल्हना आई दरवाजे पर ❋ सो आल्हाते लगी बतान ॥
काहे रिसाय चले बेटा तुम ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ।
जो तुम छांड़ि दिहौ महुबेको ❋ लेहैं पृथीराज लुटवाय ॥
बोले ऊदनि तब मल्हनाते ❋ नाही कछू हमारी लाग ।
भादौं चिरैया ना घर छांड़ै ❋ ना बनिजार बनिजको जायँ ॥
काह बिगारो हम राजाको ❋ जो भादौंमें दियो निकारि ।
तीन तलाकैं दई राजाने ❋ हमरे गई करेजे सालि ॥
आज्ञा दै देउ तुम माता म्वहिं ❋ महुबे हम रहिबेके नाहिं ।
यह सुनि बोली रानी मल्हना ❋ बेटा मानौ वचन हमार ॥
मति अठिआय गई राजाकी ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ।
जो तुम छांड़ि देहौ राजाको ❋ तुमको हँसिहैं सकल जहान ॥
आई चन्द्रावलि द्वारे पर ❋ सो ऊदनिते लगी बतान ।
तुम ना जावौ गढ़ महुबेते ❋ वीरन बार बार बलि जाउँ ॥
बड़ो भरोसो म्वहिं तुम्हरो है ❋ को गाढ़ेमें ऐहैं काम ।
ऊदनि बोले चन्द्रावलिते ❋ बहिनी सुनौ हमारी बात ॥
दई तलाकैं हैं राजाने ❋ औ भादौंमें दिये निकारि ।
तासे रहिहैं ना महुबेमें ❋ चाहै कोटिन करो उपाय ॥
रोय रोय मल्हना समुझायो ❋ आल्हा एक न मानी बात ।

बारह रानी चन्देलेकी ❋ सोऊ बहुत रहीं समुझाय ॥
बात न मानी आल्हा ऊदनि ❋ औ चलिबेको भये तयार ।
चरण लागिकै सब काहूके ❋ आल्हा कूच दियो करवाय ॥
सिगरी रैयत रोवन लागी ❋ विपदा कछू कही ना जाय ।
विना बीरको महुबो रहिगौ ❋ बेड़ा कौनु लगैहैं पार ॥
चले बनाफर गढ़ महुबेते ❋ धावन चलो महोबे क्यार ।
धावन पहुंचो सो सिरसामें ❋ जहँ दरबार बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी नर मलिखेके ❋ औ आल्हाको कह्यो हवाल ।
आल्हा रूठि चले महुबेते ❋ तिनको राखि लेउ समुझाय ॥
इतनी सुनितै नर मलिखेने ❋ घोड़ी कबुतरी लई मंगाय ।
सो सजवाय लई जल्दीते ❋ औ चढ़ि चले बीर मलिखान ॥
मलिखे पहुँचे जहँ आल्हा थे ❋ औ आल्हाको करी सलाम ।
हाथ जोरि बोले नर मलिखे ❋ दादा काहे चले रिसाय ॥
बोले आल्हा तब मलिखेते ❋ भैया कछू कही ना जाय ।
पांच बछेड़ा बड़ी राशिके ❋ सो मंगवायो पिथौरा राय ॥
हथि पचशावद घोड़ी कबुतरी ❋ मांगी सोऊ बीर चौहान ।
कही देनको चन्देलेने ❋ हमने साफ करी इनकार ॥
तापर गुस्सा ह्वइ राजाने ❋ हमको दई तलाकैं तीनि ।
तासों रहिहैं ना महुबेमें ❋ भैया समुझि लेउ मनमाहिं ॥
इतनी सुनिकै मलिखे बोले ❋ दादा चलौ हमारे साथ ।
बैठे राज्य करौ सिरसामें ❋ नित उठि सेवा करौं तुम्हारि ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ भैया सुनौ हमारी बात ।
सिरसा रजधानी महुबेकी ❋ नहिं हम करैं अन्न जलपान ॥
मलिखे बार बार समुझायो ❋ दादा मानौ बात हमार ।
वास करौ तुम गढ़ सिरसामें ❋ या धूरेपर करौ मुकाम ॥
किला दूसरो हम बनवावैं ❋ जहँ है भूमि कनउजी क्यार ।
बहुतक समुझायो मलिखेने ❋ आल्हा एक न मानी बात ॥

हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ बीर मलिखान ।
कहै कोउ नहिं अस बैरीते ❋ जैसी कही रजा परिमाल ॥
तासे रोकौ ना दादा तुम ❋ हम ना करिहैं यहां मुकाम ।
गुस्सा ह्वैकै तब अपने मन ❋ सिरसा चले बीर मलिखान ॥
आल्हा चलिभे तब आगेको ❋ औ कनउजकी पकरी राह ।
नदिया बितवैपर पहुँचे जब ❋ तब तहँ होन उतारा लाग ॥
उतरि काफिला गौ नदियाते ❋ औ झाबरमें पहुँचे जाय ।
कबहुँक बादल गर्जन लागै ❋ कबहुँक तपै सूर्यको घाम ॥

दोहा—कांटो बुरो करीलको, औ बदरीको घाम ।
सौति बुरी है चूनकी, औ साझेको काम ॥

लगो घाम जब तहँ बदरीको ❋ सबके बदन गये कुम्हिलाय ।
गरम बयारी चलै रेतमें ❋ सबके प्यास प्यास रट लागि ॥
भये पियासे इन्दल बेटा ❋ ना कहुँ पानी परै दिखाय ।
मुँह कुम्हिलाय गये रानिनके ❋ बिपदा एक न बरनी जाय ॥
बहुत कलेश सहो रेतीमें ❋ औ जमुनापर पहुँचे जाय ।
डेरा डारे तब रेतीमें ❋ क्षत्री करन रसोंई लाग ॥
राति बसेरा करि जमुना पर ❋ भोरहिं कूच दियो करवाय ।
घाट कालपी उतरि गये जब ❋ पहुँचे सब परहुलमें जाय ॥
तीनि रोज परहुलमें रहकै ❋ सियरमऊको कियो पयान ।
जबहीं पहुँचे सियरमऊमें ❋ अपने डेरा दिये डरवाय ॥
फेटैं छूटिगइँ रजपूतनकी ❋ बागन तम्बू दिये तनाय ।
एक महीना सियरमऊमें ❋ आल्हा ऊदनि कियो मुकाम ॥
एक दिन ऊदनि बोलन लागे ❋ औ आल्हाते लगे बतान ।
काहे दादा तुम गाफिल हौ ❋ अब कनउजको करौ पयान ॥
चलिकै भेट करो जैचँदते ❋ नाहीं देर करनको काम ।
इतनी सुनितै तुनि आल्हाने ❋ हथिपचशावद लियो मंगाय ॥

सो सजवाय लियो जल्दीते ❀ यकसौ शूर लियो सजवाय ॥
कूच कराय दियो डेराते ❀ औ कनउजमें पहुँचे जाय ।
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर ❀ दरवानीने कही सुनाय ॥
कौन देशके तुम राजा हौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोले आल्हा दरवानीते ❀ हम हैं महुबेके सरदार ॥
भेंट करन आये राजाते ❀ औ आल्हा है नाम हमार ।
इतनी सुनतै गौ दरवानी ❀ औ जयचँदको करी सलाम ॥
आल्हा आये हैं महुबेते ❀ सो ठाढ़े हैं पँवरि दुआर ।
यह सुनि जैचंद बोलन लागे ❀ फाटक जल्द देउ खुलवाय ॥
अबहीं लावौ तुम आल्हाको ❀ हमरी नजर गुजारो आय ।
लौटो दरवानी द्वारेपर ❀ फाटक तुरत दियो खुलवाय ॥
बोला दरवानी आल्हाते ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ ।
चलिभै आल्हा तब द्वारेते ❀ औ राजापै पहुँचे जाय ॥
गये सामुहे जब जैचंदके ❀ आल्हा झुकिकै करी सलाम ।
सूरत देखी जब आल्हाकी ❀ ऊंची चौकी दई डराय ॥
पूँछन लागे राजा जैचंद ❀ कैसे बसत रजा परिमाल ।
खबरि बताय देउ महुबेकी ❀ अपनो हाल कहौ समुझाय ॥
बोले आल्हा तब जैचंदसे ❀ बैठे राज करैं परिमाल ।
कुशल क्षेम है गढ़ महुबेमें ❀ हमपर परी आपदा आय ॥
हमहिं निकालो चन्देलेने ❀ सो हम तुमहिं जुहारे आय ।
ठौर बताय देउ हमको कहुँ ❀ तहँ हम करैं गुजारा जाय ॥
इतनी सुनिकै जैचंद बोले ❀ तुम सुनि लेउ बनाफर राय ।
तुमहिं निकालो चंदेलेने ❀ तासों हम रखिबेके नाहिं ॥
इतनी सुनितै आल्हा चलिभै ❀ औ हाथीपर भये सवार ।
कूच कराय दियो कनउजते ❀ औ डेरापर पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❀ दादा हाल देउ बतलाय ।
कहां ठौर जैचंद बतलाई ❀ तब आल्हाने कही सुनाय ॥

सुखमें साथी सब कोऊ हैं ❀ दुखमें कोउ न होय सहाय ।
जाय ठौर मांगी राजाते ❀ राजा साफ करी इन्कार ॥
परी आपदा जब पाण्डुनपर ❀ तब विराट घर रहे छिपाय ।
परी विपति श्रीरामचन्द्रपर ❀ निश्चर हरी सिया बनमाहिं ॥
विपति परी यकदिन शंकरपर ❀ खल भस्मासुर परो पिछार ।
आजु आपदा हमपर परिगई ❀ कोउ न हमको होय सहाय ॥

दोहा—तुलसी पर घर जाइकै, दुख न कहियो रोय ।
आपन भरम गँवाइये, बांटि न लेहैं कोय ॥

यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ।
परत आपदा सब काहूपर ❀ सब दिन विपति रहति है नाहिं ॥
एक महीनाके बीते पर ❀ एक दिन ऊदनि किये विचार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❀ औ चलि भये उदैसिहराय ॥
यकसौ शूर साथ सजवायो ❀ औ चलि भये उदैसिहराय ।
बाला पीर जहां कनउजमें ❀ ऊदनि तहां पहूँचे जाय ॥
न्याजन जरि चढ़वाय पीरको ❀ तोशा तुरत दियो बंटवाय ।
तहँते चलि भये ऊदनि बांकुड़ा ❀ पहुँचे फूलमती ढिग जाय ॥
होम करायो तहँ देवीको ❀ कन्या सातक दई जिमाय ।
करि प्रणाम श्रीफूलमतीको ❀ ऊदनि पहुँचे बीच बजार ॥
जेती दुकानैं हलवाइनकी ❀ सो ऊदनिने लई लुटाय ।
गड़बड़ ह्वइगो तब बजारमें ❀ रैयत भगी कनौजी केरि ॥
जाय पुकार करी ड्योढ़ीमें ❀ जहँ दरबार कनौजी क्यार ।
लूटि बजार लई ऊदनिने ❀ औ महराज कनौजी क्यार ॥
अजैपाल कनउजमें ह्वइगै ❀ तब ना लूटी कोउ बजार ।
सुनतै जैचंद गुस्सा ह्वइकै ❀ औ लाखनिते लगे बतान ॥
तोपैं लगवावो धूरे पर ❀ औ ऊदनिको देउ उड़ाय ।
ऐसो क्षत्री को उपज्यो है ❀ हमरो कनउज लेय लुटाय ॥

इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ तोपैं आगे दइँ पहुँचाय।
खबरि पायके सैयद आये ❋ औ जयचंदको करी सलाम॥
बोले सैयद तब जैचंदते ❋ तोपैं कहां दईं पहुँचाय।
जैचंद बोले तब सैयदते ❋ ऊदनि लूटी आय बजार॥
यह सुनि सैयद बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ कनौजीराय।
जीति न पैहो तुम ऊदनिको ❋ कलहा देवकुँवरिको लाल॥
बारह बरस केरि उम्मिरिमें ❋ ऊदनि लियो बापको दाउँ।
पृथीराज दिल्लीके राजा ❋ तहँ ब्रह्माको कियो विवाह॥
हाथी पछारो दरवाजे पर ❋ तुरतै भांवरि लईं डराय।
आल्हा ब्याहे नैपाली घर ❋ इन्दल बलखबुखारे माहिं॥
मलिखे ब्याहे पथरीगढ़में ❋ सुलिखे शहर कमायू माहिं।
ऊदनि ब्याहे हैं नरपति घर ❋ सो तुम जानि लेउ महराज॥
बड़े बली हैं आल्हा ऊदनि ❋ कलहा दस्सराजके लाल।
यह सुनि जैचंद बोलन लागे ❋ सैयद सुनो हमारी बात॥
जौंरा भौंरा जो हाथी हैं ❋ तिनको मदिरा देउ पिलाय।
दोनों हाथी मतवारे करि ❋ दरवाजे पर देउ ढिलाय॥
सुनी बात जब यह सैयदने ❋ दोनों हाथी लिये मंगाय।
फूल पिलाय दियो दोनोंको ❋ औ द्वारेपर दियो ढिलाय॥
खबरि सुनाई जब जैचंदको ❋ तब जैचंदने कही सुनाय।
अब बुलवाय लेउ ऊदनिको ❋ द्वारे हाथी देयँ पछारि॥
गौ हरकारा सियरमऊको ❋ औ आल्हाते कहो हवाल।
करी तयारी तब आल्हाने ❋ अपनो हाथी लियो मंगाय॥
मस्तक रंगिदौ पचशावदको ❋ मखमल झूल दई डरवाय।
रेशम रस्साते कसवायो ❋ हौदा धरो सोबरन क्यार॥
तामें झालरि है मोतिनकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
झंपा लटकैं अम्बारीमें ❋ जिनमें जड़े जवाहिर लाल॥
सब हथियार सजे आल्हाने ❋ औ हाथी पर भये सवार।

घोड़ बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
कूच करायो सियरमऊते ❋ औ कनउजमें पहुँचे जाय ।
जबहीं पहुँचे दरवाजे पर ❋ आये तहां कनौजी राय ॥
बोले जयचंद सुनि आल्हाते ❋ सुनिये दक्षराजके लाल ।
हाथी पछारे तुम दिल्लीमें ❋ सो तुम हाथी देउ पछारि ॥
इतना सुनते बघ ऊदनिने ❋ भाला लियो आपने हाथ ।
उतरि बेंदुलाते भुइँ आये ❋ औ हाथी पर पहुँचे जाय ॥
भाला मारो यक जौंराको ❋ औ धरतीमें दियो गिराय ।
दांत पकरिकै यक भौंराको ❋ तुरते ऊदनि दियो पछारि ॥
देखि हाल यह राजा जैचंद ❋ तब सैयदते लगे बतान ।
अब हम जानि लिये अपने मन ❋ सांचे दस्सराजके लाल ॥
रिजिगिरि रजधानी छोटीसी ❋ सो आल्हाको दई इनाम ।
करी बन्दगी तब आल्हाने ❋ औ ऊदनिने करी सलाम ॥
दोनों चलि भये तब ड्योढ़ीते ❋ औ रिजिगिरिमें पहुँचे आय ।
फौज आपनी तहँ मंगवाई ❋ सब सामान लिये मंगवाय ॥
आल्हा रहन लगे रिजिगिरिमें ❋ ईश्वर बिपदा दई नशाय ।

कुं०–सुखते बिपदा है भली, जो थोरे दिन होय ।
इष्टमित्र अरु बन्धुगण, जानि परैं सब कोय ॥
जानि परैं सब कोय, बात नहिं पूंछै कोई ।
जब संकट टरि जाय, मित्र होवै रिपु सोई ॥
नारायण धरि ध्यान, आप मनको समझावै ।
कछु दिनमें सुख होय, सदा नहिं बिपति सतावै ॥

आल्हा निकासी यह पूरी भइ ❋ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
आगे ब्याह कहौं लाखनिको ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ॥
समय समय पर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति आल्हा निकासी सम्पूर्ण

श्रीः

अथ लाखनि रानाका ब्याह



बूँदी (कामरू 'बंगाल' देश) की लड़ाई

दोहा–सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

बजी बांसुरी बृन्दावनमें ❋ औ मधुबनमें कुहके मोर ।
मोहित ह्वै गये जीव चराचर ❋ औ ध्वनिछाय रही चहुँओर ॥
उठ उठ धाईं सबै गोपिका ❋ जबहीं सुने कृष्णके बैन ।
उलटे भूषण बसन धारिकै ❋ पहुँची जहां कृष्णछबि ऐन ॥
कीन्हों रासबिलास श्यामने ❋ त्रिभुवन मांहि रहो यश छाय ।
कृष्णचन्द्रछबि परम मनोहर ❋ निशिदिन ध्यान करौ मनलाय॥
देश कामरू बंगालेमें ❋ बूँदी शहर एक सरनाम ।
तहँके महराजा गंगाधर ❋ जिनकोजानत सकल जहान ॥
बेटी कुसुमा गंगाधरकी ❋ जाको रूप न बरनो जाय ।
तेरह बरसकेरि बेटी भइ ❋ तब राजाने कियो विचार ॥
ब्याह करौं अब यह बेटीको ❋ होगई ब्याह योग सुकुमारि ।
दुइ बेटा थे गंगाधरके ❋ मोती और जवाहिर सिंह ॥
तुरत जवाहिरको बुलवायो ❋ औ गंगाधर कही सुनाय ।
टीका लैजावो बहिनीको ❋ कोइ राजाके देउ चढ़ाय ॥
सुन्दर लड़का ज्यहि क्षत्रीको ❋ त्यहिघर टीका जाउ लिवाय ।
आल्हा ऊदनि हैं महुबेमें ❋ ओछी जात बनाफरराय ॥
ना लै जैयो तहँ टीका तुम ❋ इतनी मनियो कही हमारि ।
इतनी कहिकै गंगाधरने ❋ चारौ नेगी लिये बुलाय ॥
थार सूबरनको भारी लै ❋ मिसरूवाले थान मँगाय ।

एक नारियल पांच दुशाला ❋ मोहनमाला लिये मँगाय ॥
तोड़ा पांच लिये मोहरनके ❋ औ नौ हीरा लियो मँगाय ।
तीनि लाखको टीका लैके ❋ सो नेगिनको दौ सौंपाय ॥
नाऊ बारी भाट पुरोहित ❋ चारो नेगी संग लिवाय ।
टीका लैके चले जवाहिर ❋ गढ़ दिल्लीकी पकरी राह ॥
कछुकदिनाकी मञ्जिलकरिकै ❋ दिल्लीगढ़में पहुँचे जाय ।
जहां कचहरी पृथीराजकी ❋ उतरे तहां जवाहिर जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराजकी ❋ पाती गद्दी दई चलाय ।
पाती लैकै टीकावाली ❋ सो पढ़ लई बीर चौहान ॥
पाती फेरि दई राजाने ❋ औ यह कही पिथौराराय ।
ब्याह न करिहैं हम बूँदीमें ❋ टीका अनत चढ़ावो जाय ॥
चले जवाहिर तब दिल्लीते ❋ पथरी गढ़की पकरी राह ।
चलिकै पहुँचि गये पथरीगढ़ ❋ जहं गजराजाको दरबार ॥
गये जवाहिर जब समुहे पर ❋ गज राजाको करी सलाम ।
लैकै पाती टीकावाली ❋ सो गद्दी पर दई चलाय ॥
नजर बदलि गइ गजराजाकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
पढ़ी हकीकति तब पातीकी ❋ पाती तुरतै दई लौटाय ॥
ब्याह न करिहैं हम बूँदीमें ❋ जहँ हैं जादू को अधिकार ।
चले ज्वाहिर तब बिसहिनिते ❋ बौरी गढ़की पकरी राह ॥
आठ दिना मारगमें लागे ❋ पहुँचे बीरशाह दरबार ।
करी बन्दगी बीरशाहकी ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा बांची ❋ तुरतै पाती दई फिराय ।
टीका चढ़िहैं ना बूँदीमें ❋ ना हम फौज कटैहैं जाय ॥
इतनी सुनिकै चले जवाहिर ❋ औ अपने मन कियो विचार ।
अजैपाल कनउजमें ह्वैगे ❋ जिनको उदै अस्तलौं गाज ॥
राजा जैचंद है कनउजमें ❋ तिन घर टीका देयं चढ़ाय ।
यह विचारि मन चले जवाहिर ❋ औ कनउजकी पकरी राह ॥

आठ रोजकी मंजिलि करिकै ❀ पहुँचे गढ़ कनउजमें जाय ॥
कनउज शहर देखि मनमें तब ❀ भये प्रसन्न जवाहिरसिंह ।
गये जवाहिर जब फाटकपर ❀ दरवानीने कही सुनाय ॥
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोले जवाहिर दरवानीते ❀ हमरो नाम जवाहिरसिंह ॥
टीका लाये हम बूँदीते ❀ सो कनउजमें दिहैं चढ़ाय ।
इतनी सुनिकै गौ दरवानी ❀ औ जैचंदको करी सलाम ॥
हाल सुनायो दरवाजेको ❀ तब राजाने कही सुनाय ।
जलदी लावो दरवाजेते ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
गौ दरवानी तब द्वारे पर ❀ औ यह हुक्म सुनायो जाय ।
तुमहिं बुलायो है राजाने ❀ अबहीं चलौ हमारे साथ ॥
चले जवाहिर दरवाजेते ❀ पहुँचे बीच कचहरी जाय ।
करी बन्दगी महाराजको ❀ तब जैचंदने कही सुनाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ ❀ किस राजाके राजकुमार ।
बोले जवाहिर तब राजाते ❀ बंगाला है देश हमार ॥
पिता हमारे गंगाधर हैं ❀ बूँदी शहर केर महराज ।
टीका लाये हम बहिनीको ❀ हमको लरिका देउ बताय ॥
यह कहि पाती लै टीकाकी ❀ सो गद्दीपर दई चलाय ।
पाती बांची राजा जैचंद ❀ आंकुइ आंकु नजरि करिजायँ ॥
बोले जैचंद चिट्ठी पढ़िकै ❀ ना बूँदीमें करिहैं ब्याह ।
कठिन लड़ाई बंगालेकी ❀ जहँ है जादूको अधिकार ॥
बैठे ऊदनि तहँ बंगलामें ❀ सो जैचंदते लगे बतान ।
नाम तुम्हारो है दुनियामें ❀ तुमको जानत सकल जहान ॥
सो तुम हीनी मुखते भाखौ ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ।
टीका फेरत हौ घरते तुम ❀ यह नहिं धर्म क्षत्रियन क्यार ॥
घर आयो टीका नहिं फेरौ ❀ इतनी मानौ कही हमार ।
जो कहुँ फेरि दिहौ टीकाको ❀ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि ॥

चर्चा ह्वइहै यह घर घरमें ❀ की डरि गये कनौजी राय ।
टीका चढ़ैहैं हम लाखनिको ❀ औ बूँदीमें करिहैं ब्याह ॥
यह सुनि जैचंद बोलन लागे ❀ तुम सुनि लेउ उदैसिंह राय ।
जो कछु तुम्हरे मनमें आवै ❀ सोई करौ बनाफर राय ॥
बोले ऊदनि तब राजाते ❀ अबहीं पंडित लेउ बुलाय ।
भयो बुलौआ तब पण्डितको ❀ पण्डित आय गये तत्काल ॥
खोलि पत्तरा पण्डित बोले ❀ अबहीं टीका लेउ चढ़ाय ।
खबरि कराई तब महलनमें ❀ त्यारी करी तिलक दे रानि ॥
चौक पूरि दइ तब मोतिनते ❀ चन्दन चौकी दई डराय ।
सखियां मंगल गावन लागी ❀ पण्डित वेद उचारन लाग ॥
लाखनि रानाको बुलवायो ❀ औ चौकीपर दियो बैठाय ।
मंगल पाठ कियो पण्डितने ❀ गौरि गणेश दिये पुजवाय ॥
तुरत जवाहिरको बुलवायो ❀ सो आंगनमें पहुँचे आय ।
चारौ नेगी संगै आये ❀ औ सब साथ लिये सामान ॥
राजा जैचंद आल्हा ऊदनि ❀ सोऊ तहां विराजे आय ।
भयो रोचना जब लाखनिको ❀ तौलौं काहू छींको आय ॥
देखि हकीकति तिलकारानी ❀ तुरतै सबते कही सुनाय ।
असगुन ह्वइगो रंगमहलमें ❀ अबहीं टीका देउ फिराय ॥
बोले ऊदनि तब तिलकाते ❀ माता सुनौ हमारी बात ।
सगुन बिचारैं बनिया बाट्र ❀ जो धरि मौर बियाहन जायँ ॥
सगुन बिचारैं ना क्षत्री है ❀ जो रण चढ़िकै लोह चबायँ ।
गिरै पसीना जहँ लाखनिको ❀ तहँ दै देउँ रक्तकी धार ॥
तौ मैं बेटा दस्सराजको ❀ सातौ भांवरि लेउँ डराय ।
बिना बियाहे जो मैं लौटौं ❀ तौ म्बहिं खायँ कालिका माय॥
यह कहि ऊदनि बोलन लागे ❀ औ पंडितसे लगे बतान ।
ब्याहकि साइति तुम बतलावौ ❀ जामें काम सिद्धि है जाय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ सुन्दर फागुन मास पुनीत ।

कृष्ण पक्षकी शिव तेरसिको ❀ दिनमें ब्याह लेउ करवाय ।
साइति सुनिकै सिंह जवाहिर ❀ नेगी अपने देउ बुलाय ॥
आये नेगी तब राजाके ❀ तिनको गहनो दियो बंटाय ।
चारो नेगी बूंदीवाले ❀ जैचंद गहनो दियो बंटाय ॥
साल दुशाला मोहनमाला ❀ सो नेगिनको दिये गहाय ।
चले जवाहिर तब कनउजते ❀ औ बूंदीकी पकरी राह ॥
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❀ अपने शहर पहूंचे आय ।
हाल बतायो गंगाधरको ❀ बहिनको टीका आये चढ़ाय ॥
अजयपाल ह्वइगे कनउजमें ❀ जिनको उदय अस्तलौं राज ।
देवी फूलमती जहं कहिये ❀ अरु है गोवर्धन अस्थान ॥
नीचे धारा हैं गंगाकी ❀ ऊपर किला कनौजी क्यार ।
करी रसोई जहँ सीताने ❀ अरु सिन्दोहिनि को अस्थान ॥
भारी जैचंद हैं कनउजको ❀ लागत बावन जहां बजार ।
राजा जैचंद हैं कनउजमें ❀ तिनके लाखनके व्यौहार ॥
टीका चढ़ायो हम लाखनिको ❀ जो है लाखनमें सरदार ।
बेटा कहिये रतीभानको ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
लाखन भूपनमें यक सुन्दर ❀ जाको रूप न बरनो जाय ।
सुनिकै बोले तब गंगाधर ❀ हमरे मनमें गयो समाय ॥
नीको घर बर तुमने ढूंढ़ो ❀ अब सामान करौ तैयार ।
त्यारी करन लगे राजा तब ❀ ढूंढ़न लगे ब्याह सामान ॥
हियांकि बातैं तौ हियं छांड़ौ ❀ अब कनउजको सुनौ हवाल ।
पूस महीनाके बीते पर ❀ लागो माघ महीना आय ॥
त्यारी करत करत बीते दिन ❀ फागुन मास रह्यो नियराय ।
देश देशके सब राजन घर ❀ न्योता भेजि दियो तत्काल ॥
जितने राजा व्यौहारी थे ❀ सो कनउजमें पहुंचे आय ।
कुड़हरिवाले गंगा ठाकुर ❀ मामा जौन कनौजी क्यार ॥
सजिकै आये गढ़ कनउजमें ❀ बागन डेरा दिये डराय ।

परहुलवाले परशू राजा ❋ सो कनउजमें पहुंचे आय ॥
आये रूपन सिरउंजवाले ❋ आये देश देश सरदार ।
करी तयारी आल्हा ऊदनि ❋ औ बरात सब लई सजाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
हाथी सजवाये आल्हाने ❋ लागे होन मंगलाचार ॥
खंभ गड़ि गयो रंगमहलमें ❋ लागे होन मंगलाचार ।
तेल चढ़ायो सात सुहागिन ❋ पाछे उबटन दियो लगाय ॥
फिरि अस्नान कराय चौकमें ❋ नहखुर होन लाग तत्काल ।
कुवां बियाह्यो रनि तिलकाने ❋ लाखनि पलकी बैठे जाय ॥
चली पालकी जब लाखनिकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
भुरुही हथिनीको सजवायो ❋ तापर जैचंद भये सवार ॥
छत्र विराजत महाराज पर ❋ ऊपर चौंर ढरै गजगाह ।
हाथी पचशावद सजवायो ❋ तापर आल्हा भये सवार ॥
मीरा सैयद बनरसवाले ❋ घोड़ी सिंहिनिपर असवार ।
धनुआं तेली जो बनरसको ❋ घोड़ी बिलंदिनि पर असवार ॥
लला तमोली कनउवाला ❋ घोड़ा सब्जा पर असवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ा मनुरथाको सजवायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ।
अपनी अपनी असवारिनपर ❋ सिगरे शूर भये असवार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❋ सजिकै तीन लाख असवार ।
पैदल सजिगे चारिलाख सब ❋ डंका होन गोलमें लाग ॥
चली बरायत सब कनउजते ❋ झंडन रही लालरी छाय ।
बारह दिनकी मंजिल करिकै ❋ देश कामरू पहुँचे जाय ॥
बूँदी शहर केर धूरेपर ❋ अपने डेरा दिये डराय ।
तम्बू तनिगे बन्नातनके ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
फेंटै छुटि गईं रजपूतनकी ❋ घोड़न जीन धरे उतराय ।
चढ़ी रसोईं उमरावनकी ❋ कोऊ करन गये अस्नान ॥

नाच होन लागो तम्बुनमें ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
बोले आल्हा तहँ जेचंदते ❀ अपनो पंडित लेउ बुलाय ॥
भयो बुलौआ तब पंडितको ❀ पंडित तुरत पहुँचो आय ।
बोले राजा तब पंडितते ❀ ब्याहकि साइति देउ बताय ॥
खोलि पत्तरा पंडित बोले ❀ ऐपनवारी देउ पठाय ।
बोले आल्हा तब रुपनाते ❀ ऐपनवारी तुम लै जाउ ॥
हाथ जोरिकै रुपना बोलो ❀ दादा हम जैबेके नाहिं ।
कठिन देश यह बंगाला है ❀ जहँ है जादूको अधिकार ॥
आल्हा बोले तब रुपनाते ❀ भैया अक्किल गई तुम्हार ।
नगर महोबेके रहवैया ❀ मुखते कहत न बात सम्हारि ॥
ब्याह होनको यह रहिहै ना ❀ यहु दिन कहिबेको रहिजाय ।
यह सुनि रुपना बोलन लागो ❀ घोड़ा बेंदुला देउ मंगाय ॥
भाला दै देउ ऊदनिवालो ❀ औ दै देउ ढाल तलवारि ।
जो जो मांगो रुपनावारी ❀ सो सो आल्हा दियो मंगाय ॥
चलिभयो रुपना तब बरातसे ❀ औ बूँदीमें पहुँचो जाय ।
जबहीं पहुँचो दरवाजे पर ❀ दरवानीने दियो जवाब ॥
कहांते आये औ कहँ जैहो ❀ अपनो नाम देउ बतलाय ।
बोलो रुपना दरवानीते ❀ ब्याहन आये कनौजीराय ॥
ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ रूपनबारी नाम हमार ।
खबरि सुनावौ तुम राजाको ❀ हमरो नेग देयँ मंगवाय ॥
इतनी सुनिकै गौ दरवानी ❀ पहुँचो राजसभामें जाय ।
करी बन्दगी गंगाधरको ❀ दरवाजेको कह्यो हवाल ॥
देर देखिकै तब रुपनाने ❀ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ।
जायक पहुँचो राजसभामें ❀ औ राजाको करी सलाम ॥
कुन्नस करिकै पांच कदमते ❀ ऐपनवारी दई चलाय ।
पूँछो राजा तब रुपनाते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कौन देशते तुम आये हौ ❀ यहँपर काह तुम्हारो काम ।

इतनी सुनिकै रुपना बोल्यो ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
हम आये हैं गढ़ कनउजसे ❋ औ लाखनिको करन विवाह ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❋ रूपनवारी नाम हमार ॥
आल्हा आये गढ़ महुबेते ❋ जैचंद रिजगिरि दई इनाम ।
अगुआ आल्हा हैं बरातमें ❋ तिन म्वहिं आगे दियो पठाय ॥
नेग हमारो जो द्वारेको ❋ सो तुम जल्द देउ मँगवाय ।
काह नेग तुम्हरो द्वारेको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
चलै शिरोही चारि घरी भरि ❋ औ बहि चलै रक्तकी धार ।
यहै नेग हमरो द्वारेको ❋ सो तुम नेग देउ चुकवाय ॥
इतनी सुनते राजा जरिगे ❋ नैना अग्निज्वाल ह्वइजाय ।
बोले गंगाधर रुपनाते ❋ ओछी जाति बनाफरराय ॥
आल्हा आये क्यों बरातमें ❋ काहे आये हमारे द्वार ।
हुक्म दे दियो गंगाधरने ❋ फाटक बन्द देउ करवाय ॥
मारि गिरावौ या बारीको ❋ तुरतै शीश लेउ कटवाय ।
जान न पावै यह बारी कहुँ ❋ टट्टुआ टायर लेउ छिनाय ॥
यह सुनि रुपना बोलन लाग्यो ❋ राजा बोलौ बात सम्हारि ।
ऐसो क्षत्री को तुम्हरे है ❋ हमरो घोड़ा लेउ छिनाय ॥
यहु घोड़ा है चन्द्रवंशको ❋ सो तुम जानि लेउ महराज ।
इतनी सुनतै क्षत्री झपटे ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ॥
खैंचि शिरोही लइ रुपनाने ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
बत्तिस क्षत्री रुपना मारे ❋ औ तहँ गड़बड़ दियो मचाय ॥
झालरि तोरि लई मोतिनकी ❋ ऐपनवारी लई उठाय ।
बाकी नेग लिहौं भौंरिनमें ❋ यह कहि चलो महुबिया ज्वान ॥
ऐड़ लगाय दई घोड़ाको ❋ फाटक निकरि गयो वा पार ।
चारि घरी केरे अरसामें ❋ पहुँचो तब बरातमें जाय ॥
रंग बिरंगे रुपना देखो ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
कैसी गुजरी दरवाजेपर ❋ रूपन हमहिं देउ बतलाय ॥

बोलो रूपना तब ऊदनिते ❀ दहिने भई शारदा माय ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइगौ ❀ रहिगौ धर्म कनौजी क्यार ॥
बत्तिस क्षत्री हमने मारे ❀ द्वारे बही रक्तकी धार ।
हियांकि बातैं तो हियँ छांड़ौ ❀ अब बूंदीको सुनौ हवाल ॥
गंगाधर सोचैं अपने मन ❀ औ आपुसमें लगे बतान ।
जिनके नेगी ऐसे जालिम ❀ तिन क्षत्रिनके कौन हवाल ॥
मोती जवाहिर दोनों बेटा ❀ तिनते राजा कही सुनाय ।
लड़े न जितिहौ तुम आल्हाते ❀ ताते तुमहिं देउं बतलाय ॥
चारौ नेगी तुम बुलवावौ ❀ औ बरातके जाउ लिवाय ।
जायकै कहियो तुम आल्हाते ❀ अकिलो लरिका देउ पठाय ॥
देश हमारे यहै रीति है ❀ आवै साथ नाहिं कोउ शूर ।
चलिकै लावौ तुम लरिकाको ❀ औ खंदकमें देउ डराय ॥
आल्हा अगुआ हैं बरातके ❀ ओछी जाति बनाफर क्यार ।
ब्याह जो ह्वइहैं कहुं बेटीको ❀ कोउ न पिये घड़ाको पानि ॥
इतनी सुनिकै लरिका चलिभे ❀ चारौ नेगी संग लिवाय ।
दोनों पहुंचे जब बरातमें ❀ तहं क्षत्रिनते पूछन लाग ॥
कौनसो तम्बू है राजाको ❀ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
तम्बू बतलायो काहूने ❀ तहंपर दोनों पहुंचे जाय ॥
सोने सिंहासन जैचंद बैठे ❀ तिनको झुकिकै करी सलाम ।
मोती जवाहिर बोलन लागे ❀ हम बूंदीके राजकुमार ॥
हमहिं पठायो है राजाने ❀ औ यह कही बुंदेले राय ।
देवा लग्न बहुत नीकी है ❀ अकिलो लरिका देउ पठाय ॥
संग न भेजैं कोउ लरिकाके ❀ हमरे कुला यहै ब्योहार ।
बोले आल्हा तब लरिकनते ❀ हमरे रीति यही चलि आय ॥
जैहै सहबाला लरिका संग ❀ औ नेगी सब जैहैं साथ ।
नेग झगरिहैं वे मड़येतर ❀ हमरे वचन करौ परमान ॥
भेष बनायौ तब नेगिनको ❀ ऊदनि शूर लियो सजवाय ।

काहुइ दीन्हो आसा बल्लम ❀ काहुइ पंखा दो पकराय ॥
मुरछल दै दीन्हों काहूको ❀ काहुइ झण्डी दई गहाय ।
सजी पालकी तब लाखनिकी ❀ औ द्वारेपर पहुंची जाय ॥
चली पालकी तब लाखनिकी ❀ औ द्वारेपर पहुँची जाय ।
शूर तीनिसौ बूंदी वाले ❀ सो पहिलेते दिये छिपाय ॥
बोले मोती तब लाखनिते ❀ अबहियं छोरिधरो हथियार ।
नेगी भीतर जान न पावैं ❀ हमरे कुला यहै व्यौहार ॥
बोले ऊदनि तब मोतीते ❀ तब तुम घटि करी हमारे साथ ।
गंग उठाई तब मोतीने ❀ मनको भरम दियो बिसराय ॥
बात मानिकै लाखनि ऊदनि ❀ अपने छोरि धरे हथियार ।
दोनों चलिभये तब भीतरको ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
फिरिकै मोती बोलन लागे ❀ हमरे कुला यहै व्यौहार ।
पहिले भोजन करो महलमें ❀ पाछे भांवरि दिहैं डराय ॥
बिछो गलीचा तहं पलंगापर ❀ लाखनि ऊदनि बैठे जाय ।
थार सूबरनको आगे धरि ❀ तिनमें भोजन दो परसाय ॥
कौर उठायो जब दोनोंने ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।
बोले ऊदनि तब मोतीते ❀ तुम घटि करी हमारे साथ ॥
छलिकै लाये हम दोनोंको ❀ झूंठी गंगा लई उठाय ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ नाहीं लेन दिये हथियार ॥
इत उत दोनों देखन लागे ❀ ना कहुँ देखि परो हथियार ।
पलँगा देखो यक महलनमें ❀ ताकी पाटी लई निकारि ॥
पाटिन मारु करी दोनोंने ❀ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ।
मारि भगायो सब क्षत्रिनको ❀ क्षत्री लै लै भागे परान ॥
यह गति देखी मोतीसिंहने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
जायकै घेरो बघऊदनिको ❀ ऊदनि पाटी दई चलाय ॥
खाली हाथ परो ऊदनिको ❀ मोतीसिंहने दिये गिराय ॥
घेया करिकै तब ऊदनिको ❀ मोतीसिंहने लियो बँधाय ।

झुके जवाहिर तब लाखनिपर ❋ लाखनि पाटी मारी आय ।
खाली हाथपरो लाखनिको ❋ औ झुकिपरे भूमिपर जाय ॥
घैहा करिके तब लाखनिको ❋ तुरत जवाहिरलियो बँधाय ।
लाखनि ऊदनि दोनों बँधिगे ❋ राजे खबरि दई करवाय ॥
हुक्म दै दियो गंगाधरने ❋ चुंगल दहक दिये डरवाय ।
मोती लैके गै दोनों को ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ॥
शिला धरि दई तब ऊभे पर ❋ पहरा बिकट दियो बैठारि ।
देखिहालयहमालिनि चलिभई ❋ सतखंडा पर पहुंची जाय ॥
हाल बतायो सब बेटीको ❋ औ मालिनि यह कही सुनाय ।
ब्याहन आये लाखनिराना ❋ आये संग उदय सिंहराय ॥
घैहा करिके तिन दोनोंको ❋ औ ऊभेमें दियो डराय ।
यह नहिं चहिये थी राजाको ❋ जो घटि करी कनौजी साथ ॥
रूप दियो तिनको बिधनाने ❋ मानहु रामलषण द्वउभाय ।
यह सुनि सोची कुसुमा बेटी ❋ थार सूबरन लियो मँगाय ॥
भोजन धरिकै एक थालमें ❋ जलको गडुआ लियो मँगाय ।
रेशम रस्सा लियो साथमें ❋ औ ऊभेपर पहुँची जाय ॥
आधी रातकेर अमलामें ❋ दरवानीको दियो इनाम ।
जितने छत्री तहँ पहरापर ❋ सबको मोहरैं दईं पकराय ॥
हाल बतैयो ना काहूको ❋ आई यहँ पर राजकुमारि ।
बेटी पहुँची जब ऊभेपर ❋ बजर पिहनियाँ दइ सरकाय ॥
रेशम रस्साको लटकायो ❋ औ यह कही कुसुमदे रानि ।
निकसो स्वामी तुम ऊभेतै ❋ भोजन करौ कनौजी राय ॥
बोले लाखनि तब उभेते ❋ रानी घटिहा पिता तुम्हार ।
भाय तुम्हारे द्वउ घटिहा हैं ❋ गंगा करी हमारे साथ ॥
सब हथियार धराय द्वारपर ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ।
घैहा करिकै हम दोनोंको ❋ दाहकमाहिं दियो डरवाय ॥
तुम्हरे निकारे जो हम निकरैं ❋ तौ सब क्षत्रीधर्म नशाय ।

भोजन करिहैं ना ऊभेमें ❃ नहिं यहु धर्मक्षत्रियन क्यार ॥
इमको चाहौ जो रानी तुम ❃ आल्है खबरि देउ पहुँचाय ।
इतनीसुनिकै कुसुमा चलि भइ ❃ सतखंडा पर पहुँची जाय ॥
भोर होतखन पाती लिखिकै ❃ सो मालिनिको दइ पकराय ।
लैकैडलियामालिनिचलिभइ ❃ तामें पाती लई छिपाय ॥
मालिनि पहुँची जब बरातमें ❃ आल्है पूंछि पहुंची जाय ।
पाती दीन्हीं तब मालिनिने ❃ आल्हा पाती बांचन लाग ॥
बांचिकै पाती आल्हा बोले ❃ मालिनि सुनौ हमारी बात ।
धीरज देउ जाय बेटीको ❃ अबहीं कैद लिहैं छुड़वाय ॥
मालिनि चलिभइ तब बरातते ❃ औ बेटीपै पहुंची जाय ।
कह्यो संदेशा तब आल्हाको ❃ बेटी धीर धरौ मनमाहिं ॥
आल्हा बोले नर ढेबाते ❃ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ।
घटिहा राजा है बूंदीको ❃ झूठी गंगा लई उठाय ॥
लाखनि ऊदनिको धोखा दै ❃ चुंगुल दहक दियो डरवाय ।
इतनी सुनितै ढेबा चलिभौ ❃ औ लश्कर में पहुंचो जाय ॥
बोलि नगरचीको बीरा दै ❃ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
बजो नगारा जब लश्करमें ❃ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❃ दुसरे बाँध लियो हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजन खन ❃ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❃ बांके घोड़नके असवार ।
हाथी पचशावद सजवायो ❃ तापर आल्हा भये सवार ॥
मीरा सैयद बनरसवाले ❃ घोड़ी सिंहिनिपर असवार ।
धनुआँ तेली लला तमोली ❃ सोऊ साथ भये तैयार ॥
लश्कर चलि गयो रणखेतनमें ❃ मुर्चा बन्दी दई कराय ।
खबरि पहूँची गंगाधरपै ❃ शिरपै फौज पहूँची आय ॥
मोती जवाहिरको बुलवायो ❃ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
जान न पावै कोउ कनउजको ❃ सबकी कटा देउ करवाय ॥

इतनी सुनतै दोनों चलि भये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
हुक्म दे दियो तब लश्करमें ❋ जलदी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा तब बूँदीमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ॥
मोती जवाहिर दोनों सजिगे ❋ अपने घोड़ा भये सवार ।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दियो मोतीने ❋ औ आल्हाते कही सुनाय ।
कही हमारी आल्हा मानो ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
बोले आल्हा तब मोतीसे ❋ तुम छल कियो हमारे साथ ।
कटा करि दिहौं मैं लश्करकी ❋ औ बूँदीको लिहौं लुटाय ॥
लाखनि ऊदनि छलकै लैगे ❋ औ ऊभेमें दिये डराय ।
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ सातौ भांवरि देउ डराय ॥
इतनी सुनतै मोती बोले ❋ आल्हा बोलो बात सम्हारि ।
धोखे न रहियो तुम दिल्लीके ❋ जहँ ब्रह्माका कियो विवाह ॥
नाम जो लेहौ तुम भौंरिनको ❋ मुखमें धांसि दिहौं तलवार ।
इतनी सुनतै आल्हा बोले ❋ क्या कमबख्ती लगी तुम्हारि ॥
हट जा कायर तू समुहेते ❋ घटिहा वंश बुंदेले क्यार ।
धोखे न रहियो केहु कायरके ❋ नाहीं परो मर्दते काम ॥
सिगरी बूँदी मैं लुटवैहौं ❋ कारे पाखे दिहौं डराय ।
इतनी सुनते मोती जरिगे ❋ तुरतै गोलन्दाज बुलाय ॥
हुक्म दे दियो मोतीसिंहने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
हुक्म पायके झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
धुआं उड़ानो आसमानलौं ❋ सविता रहे धुन्धमें छाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ गोला चलै दनाक दनाक ॥
ओलाके सम गोला बरसैं ❋ गोली मघा बूँद झरलाय ।
तीरन मारैं जे कमनैता ❋ गोलिन मारैं बरकंदाज ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ।

लागे गोला ज्यहि हाथीके ❋ मानो चोर सेंधि दै जाय ॥
गोला लागै ज्यहि घोड़ाके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वइजाय ।
जौन ऊँटके गोला लागै ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरि परै भूमि भहराय ।
गोला जँजिरहा जिनके लागे ❋ तिनकी त्वचा सरग मँड़राय ॥
बंबको गोला जिनके लागै ❋ तिनकी हाड़ मांस छुटिजायँ ।
छोटी गोली जिनके लागै ❋ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
चुके मसाला जब तोपनके ❋ तोपैं छांड़ि दईं तत्काल ।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लागी तलवार ॥
बोले आल्हा बढ़ि सैयदते ❋ घटिहा वंश बुंदेले क्यार ।
लाखनि ऊदनिको छल लैगे ❋ चुंगुल दहक दियो डरवाय ॥
इतनी सुनते सैयद झपटे ❋ लेके खुदा नबीको नाम ।
धनुआं तेली लला तमोली ❋ तिनहूँ खैंचि लईं तलवार ॥
दोनों फौजैं संगम ह्वइगईं ❋ क्षत्रिन मारु मारु रटि लाग ।
चलै जुनब्बी और गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत क्यार ॥
चटकैं तेगा बर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुआ ज्वान ।
हौदाके संग हौदा मिलिगै ❋ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ॥
चलै शिरोही सात कोसलौं ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
पैदल चलिगै पैग पैग पर ❋ उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
हाथी डारे बिसे बिसे पर ❋ छोटे पर्वतके अनुहार ।
एक लाख जूझे बूँदीके ❋ रणमें बही रक्तकी धार ॥
तीन लाख जूझे कनउजके ❋ ऐसी कठिन चली तलवार ।
आधी नदीमें लोहू बहै ❋ लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
मारत मारत दोउ दल थकिगै ❋ संझा काल रह्यो नियराय ।
बन्द लड़ाई भइ दोनों दल ❋ क्षत्रिन छोरि धरे हथियार ॥
जितने घैया जीबे लायक ❋ सो आल्हाने लये उठाय ।
लश्कर घटिगो कनवजियाको ❋ आल्हा सोचि सोचि रहि जायँ ॥

बड़े लड़ैया बूँदीवाले ❋ रणमें कठिन करैं तलवारि ।
पहुँचे आल्हा सोचि समझिके ❋ पूजन करन अंबिका क्यार ॥
होम करायो जगदंबाको ❋ बोले हाथ जोरि शिरनाय ।
ब्याह न ह्वइहैं जो लाखनिको ❋ तौ जग ह्वइहैं हँसी हमारि ॥
आजु आपदा हमपर परिगइ ❋ अब गाढ़ेमें आवौ काम ।
बोली आभा तब देवीकी ❋ आल्हा सुनौ हमारी बात ॥
पाती भेजो तुम सिरसाको ❋ औ महुबेको देउ पठाय ।
मलिखे ब्रह्मा दोनों ऐहैं ❋ तब लाखनिको ह्वइहै ब्याह ॥
चरण लागिके तब देवीके ❋ आल्हा लश्कर पहुँचे आय ।
पाती लिखी एक मलिखेको ❋ दूजी ब्रह्मै लिखो हवाल ॥
लाखन राना ब्याहन आये ❋ सो बूँदीमें लाये बरात ।
गंगा करिकै लाखनि ऊदनि ❋ इन दोनोंको गये लिवाय ॥
धोखा दैकै गंगाधरने ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ।
कटा कराय दई लश्करकी ❋ अब गाढ़ेमें आवौ काम ॥
बड़े लड़ैया बूँदीवाले ❋ तिनसे कछू न पार बसाय ।
जल्दी लश्कर तुम लै आवौ ❋ तब लाखनिको होय विवाह ॥
तुमहिं बुलायो राजा जैचंद ❋ सो संकटमें होउ सहाय ।
दोनों पाती लिखि आल्हाने ❋ औ धावनको दई गहाय ॥
दीजो पाती इक ब्रह्माको ❋ दूसरि देउ बीर मलिखान ।
धावन चलि भयो तब पातीलै ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी ब्रह्माकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी ब्रह्मानँदको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
पढ़ी हकीकति जब ब्रह्माने ❋ तब धावनते कही सुनाय ।
माता मल्हना बहुत मनाये ❋ तुम नहिं जाउ बनाफर राय ॥
हटको ना मानो माताको ❋ औ कनउजको गये रिसाय ।
जो कछु कीन्हो सो भरिपायौ ❋ अब तहँ हमरी जाय बलाय ॥
चलो सांड़िया तब सिरसाको ❋ पहुँचो जहां बीर मलिखान ।

करी बन्दगी नर मलिखेको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती मलिखे बाँची ❋ तुरतै पाती दई चलाय ।
सोचत मनमें मलिखे चलिभै ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
आवत देखे जब मलिखेको ❋ तब रानीने कही सुनाय ।
कौन सोचमें तुम स्वामी हौ ❋ काहे बदन गये मुरझाय ॥
हाल बताय देउ सांचो तुम ❋ बालम पैयां परौं तुम्हार ।
बोले मलिखे गजमोतिनते ❋ रानी कछू कह्यो ना जाय ॥
लाखन ब्याहनगै बूँदीको ❋ साथहिं गये उदयसिंहराय ।
लाखनि ऊदनिको गंगाकरि ❋ बूँदीवाले गये लिवाय ॥
घायल करिकै तहँ दोनोंको ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ।
कटा कराय दई लश्करकी ❋ आल्हा पाती दई पठाय ॥
हमहिं बुलायो है बूँदीमें ❋ की असमैमें आवौ काम ।
याही दिनको हम हटकी थी ❋ औ धूरेपर रोको जाय ॥
बहुत मनायो हम आल्हाको ❋ मानी नहीं हमारी बात ।
कही हमारी उन मानी ना ❋ अब मलिखेकी जाय बलाय ॥
यह सुनि बोली गजमोतिनि तब ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ।
तुम जब ब्याहन गै हमरे घर ❋ तबही याद करौ सब बात ॥
बाप हमारेने दाहकमें ❋ तुमको बांधि दियो डरवाय ।
तुमहिं निकारो तब ऊदनिने ❋ सो तुम भूलि गयो सब बात ॥
जो कहुँ ऊदनि मारे जैहैं ❋ तौ जग हइहै हँसी तुम्हारि ।
पीछे पछितैहो स्वामी तुम ❋ सो तुम समुझिलेउ मनमाहिं ॥
जल्दी जावो तुम बूँदीको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
यह मन भाय गई मलिखेको ❋ बोले तुरत बीर मलिखान ॥
जो कछु कहिहौ सोई करिहैं ❋ रानी मानी बात तुम्हार ।
इतनी कहिके मलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
बोले नगरचीको बीरा दै ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ॥

डंका बाजो तब सिरसामें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहिले डंकामें जिन बन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नपर असवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर मलखान ।
खुनखुन कोरी मन्ना गूजर ❋ मदन गड़रिया भयो सवार ॥
तीनों शूर चले मलिखे संग ❋ जो मरिबेको नाहिं डेरायँ ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ पहुँचे नगर महुबे जाय ॥
डेरा डारे मदन तालपर ❋ आगे बढ़े बीर मलिखान ।
जहां कचहरी ब्रह्मानंदकी ❋ पहुँचे जाय बीर मलिखान ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानंदकी ❋ ब्रह्मा चौकी दई डराय ।
बोले ब्रह्मा तब मलिखेसे ❋ अपनी कुशल देउ बतलाय ॥
कौन सोच है तुम्हरे जियमें ❋ काहे बदन गयो कुम्हिलाय ।
बोले मलिखे तब ब्रह्माते ❋ सिरसा कुशल छेम सब भांति ॥
राज करत हौं मैं सिरसामें ❋ है यह सब परताप तुम्हार ।
काज हमरो कछु अटको नहिं ❋ पै एक अर्ज सुनो मन लाय ॥
लाखन ब्याहन गै बूँदीसे ❋ संगै गये उदयसिंह राय ।
छलिकै लैगे बूँदी वाले ❋ लाखनि ऊदनि संग लिवाय ॥
घायल करिकै तिन दोनोंको ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ।
कटा कराय दई लश्करकी ❋ हमको पाती दई पठाय ॥
सो हम त्यार भये बूँदीको ❋ तुमहू चलो हमारे साथ ।
असमौ परिगा है आल्हाको ❋ सो गाढ़में आवौ काम ॥
जो नहिं चलिहौ तुम हमरे संग ❋ तुमको हँसिहैं सकल जहान ।
इतनी सुनतै तब ब्रह्मानंद ❋ तुरतै साथ भये तैयार ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ चीरा कलंगी दियो इनाम ।
डंका बाजौ गढ़ महुबेमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ॥
खबरि पायकै मल्हना रानी ❋ नर मलिखेको लियो बुलाय ।

आवत देखो जब मलिखेको ❋ तब मल्हनाने कही सुनाय ॥
नित उठि हेरौं बाट तुम्हारी ❋ आवतु आज बीर मलिखान ।
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❋ अब कहँ त्यारी दई कराय ॥
हाथ जोरिकै मलिखे बोले ❋ माता सुनो हमारी बात ।
लाखनि ब्याह गये बूँदीको ❋ संगे गये उदेसिंह राय ॥
बूँदीवाले छलिकै लै गये ❋ चुंगल दहक दियो डरवाय ।
घैहा होइगै लाखनि ऊदनि ❋ ऊभै परे मूरछा खाय ॥
पाती भेजी राजा जैचंद ❋ लिखिकै आल्हा दई पठाय ।
मलिखे ब्रह्मा दोनों आवैं ❋ तो बूँदीमें होय विवाह ॥
भारी संकट है आल्हापर ❋ हम बूँदीको भये तयार ।
संग हमारे ब्रह्मा जैहैं ❋ माता हुक्म देउ फरमाय ॥
इतनी सुनतै मल्हना बोली ❋ अबहीं जाउ लड़ैते लाल ।
ब्याह करावौ तुम लाखनिको ❋ औ ऊदनिको लेउ छोड़ाय ॥
चरण लागिकै रनि मल्हनाके ❋ मलिखे कूच दियो करवाय ।
बोले मलिखे ब्रह्मानंदते ❋ अब न राखौ देर लगाय ॥
कूच कराय देउ जल्दीते ❋ गुजरै घरी घरी पर ब्यार ।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार ॥
घोड़ी कबुतरी त्यार खड़ी थी ❋ तुरतै चढ़े बीर मलिखान ।
कूच कराय दियो महुबेते ❋ औ बूँदीकी पकरी राह ॥
सात रोजको धावा करिकै ❋ बूँदी शहर गये नियराय ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
लिखौं लड़ाई अब बूँदीकी ❋ होउ सहाय राम घनश्याम ।
मलिखे ब्रह्मा बूँदी पहुँचे ❋ अब आल्हाको सुनौ हवाल ॥
बूँदी रहिगइ सात कोस जब ❋ मलिखे डेरा दियो डराय ।
बोले आल्हा तब जैचंदते ❋ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ॥
लश्कर थोरा है कनउजको ❋ आये नाहिं बीर मलिखान ।
अब तुम लौटि चलौ कनउजको ❋ लावैं साथ बीर मलिखान ॥

संगै लैहैं ब्रह्मानँदको ❋ तब लाखनिको होय विवाह ।
बोले जयचँद तब आल्हाते ❋ अबहीं कूच देउ करवाय ॥
अकिले पैदल क्या लरिहैं अब ❋ ताते अबहीं करो पयान ।
हुक्म देदियो तब आल्हाने ❋ लश्कर चलो कनौजीक्यार ॥
जितने घैहा थे लश्करमें ❋ औ कनउजकी पकरी राह ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ सो डोलिनमें लिये बिठाय ॥
लश्कर देखो जब मलिखेने ❋ इक हरकारा लियो बुलाय ।
लावौ खबरि जाय अबहीं तुम ❋ आवत फौज बुँदेले केरि ॥
लैकै तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
लश्कर देखो जब आल्हाने ❋ तब ढेबासे कही सुनाय ॥
आगे लश्कर है बूँदीको ❋ जल्दी मुर्चा देउ लगाय ।
इतनी सुनतै नर ढेबाने ❋ मुर्चा बन्दी दई कराय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
तौलौं धावन दाखिलह्वइ गयो ❋ धावन देखि महोबे क्यार ॥
बत्ती धरिबेको बाकी थी ❋ ढेबा बन्द दई करवाय ।
धावन पहुँचि गयो आल्हापै ❋ औ आल्हाको करी सलाम ॥
खबरि बताई ब्रह्मानँदकी ❋ आये साथ बीर मलिखान ।
सुनी खबरि जब ब्रह्ममलिखे ❋ लश्कर फिरौ कनौजीक्यार ॥
घोड़ी कबुतरीको सजवायो ❋ तुरतै तापर भये सवार ।
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ ब्रह्मा फांदि भये असवार ॥
दोनों पहुँचे तुरत जहांपर ❋ आल्हा और कनौजीराय ।
करी बन्दगी तिन दोनोंको ❋ आल्हा छाती लियो लगाय ॥
मोह आयगौ तुनि आल्हाको ❋ नैनन बहै नीरकी धार ।
बोले मलिखे तब आल्हाते ❋ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
मारिशिरोहिन चहलाकरिहौं ❋ सातौं भांवरि लिहैं डराय ।
बोले मलिखे तब ढेबाते ❋ भैया सुनौ हमारी बात ॥

उत्तर ओर जाय बूँदीके ❋ अपनो मुर्चा देउ लगाय ।
जबहीं राजा करै चढ़ाई ❋ पाछे लश्कर दियो हटाय ॥
जैहैं दक्खिन हम बूँदीके ❋ औ फाटकको दिहैं गिराय ।
ढेबा चलिभौ उत्तर पाटी ❋ घेरिकै मुर्चा दियो लगाय ॥
पांच कोशको फेरु खायकै ❋ दक्खिन गये बीर मलिखान ।
ढेबा बहादुरने मुर्चापर ❋ सिगरी तोपैं दईं लगाय ॥
लै बारूद डराय सबनमें ❋ ऊपर गोला दिये डरवाय ।
वत्ती दैदइ सब तोपनमें ❋ धुअँना रह्यो सरग मडराय ॥
भयो दनाका जब तोपनको ❋ गंगाधरने सुनी अवाज ।
मोती जवाहिरको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
मोती जवाहिर दोनों चलि भये ❋ अपनो डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजन लगो बूँदीको ❋ क्षत्री सजिकै भये तयार ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ॥
मोती जवाहिर केरि लड़ाई ❋ लिखिहैं सुमिरि शारदामाय ।
मोती जवाहिर दोनों लरिका ❋ अपने घोड़न भये सवार ॥
चली सवारी तब दोनोंकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
जाय पहूँचे जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई करवाय ॥
तोपैं लगाय दईं आगेको ❋ सबमें बत्ती दई लगवाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ चहुँदिशि रही अँधेरिया छाय ॥
जबहीं गोला छूटन लागे ❋ ढेबा मुर्चा दियो हटाय ।
मुर्चा लगवायो पाछे हटि ❋ लश्कर बढ़ो बून्देले क्यार ॥
बढ़िगै आगे बूँदीवाले ❋ फिरिकै ढेबा हटो पिछार ।
हटै पिछारू ज्यों ज्यों ढेबा ❋ त्यों त्यों बढ़ै बुँदेली फौज ॥
सातकोस पीछेको हटिकै ❋ ढेबा मुर्चा दियो लगाय ।
दक्खिन पाटी मलिखे घेरी ❋ औ तोपनको दियो लगाय ॥
मारे गोला दरवाजे पर ❋ तुरतै फाटक दियो गिराय ।

धावा करिकै बीच किलामें ❋ पहुँचे जाय बीर मलिखान ॥
आई रानी रंग महलते ❋ औ मलिखेते लगी बतान ।
हाथ चलैयो ना तिरियनपर ❋ तुम समरत्थ बनाफरराय ॥
बड़े लड़ैया हौ महुबेके ❋ तुम्हरी जगजाहिर तलवारि ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ धर्मकि माता लगौ हमारि ॥
घटिहा राजा बूंदीवाला ❋ जो घटि करी हमारे साथ ।
छलिकै लाये लाखनि ऊदनि ❋ तिनको ऊभे दियो डराय ॥
कौनसे ऊभेमें दोनों हैं ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोली रानी तब मलिखेते ❋ महलके नीचे परत दिखाय ॥
ताही खंदकमें दोनों हैं ❋ तिनको अबहिं लेउ निकराय ।
मलिखे पहुंचे तब दाहक पर ❋ बजर पहनियां दई हटवाय ॥
जितने क्षत्री थे पहरेपर ❋ सबकी कटा दइ करवाय ।
बोले मलिखे बघ ऊदनिते ❋ निकसो तुरत उदैसिंहराय ॥
हम चलि आये हैं सिरसाते ❋ संगै ब्रह्मा राजकुमार ।
इतनी सुनते ऊदनि बोले ❋ हमरे लगो करेजे घाव ॥
कैसे निकसैं हम चुङ्गलते ❋ दादा सुनौ बीर मलिखान ।
बोले मलिखे तब ऊदनिते ❋ भैया सुरति करौ मनमाहिं ॥
हमको ब्याहन गै पथरीगढ़ ❋ हम जब परे दहकमें जाय ।
तुम जब पहुंचे थे दाहक पर ❋ हमको तहां पुकारो जाय ॥
तुरतै निकसे हम ऊभेते ❋ सो सुधि करौ लहुरवा भाय ।
बाना राखे रजपूतीको ❋ क्या बल घटो तुम्हारो आज ॥
इतनी सुनितै बात लागिगइ ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
तड़पिकै ऊदनि बाहर आये ❋ औ मलिखेको करी सलाम ॥
चरण लागिकै ब्रह्मानंदके ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय ।
बोले मलिखे फिरि लाखनिते ❋ निकसौ बेगि कनौजीराय ॥
यहसुनि लाखनि सोचन लागे ❋ बहुतैं लागो घाव हमार ।

कसक करेजे पर भारी है ❋ पँसुरी कसकि कसकि रहिजाय॥
उज्रुरु जो करिहैं हम हियनापर ❋ हँसिहैं हमहिं बीरमलिखान।
तड़पिके निकसे लाखनिराना ❋ लै बजरंगबलीको नाम॥
तुरत पालकी तब मँगवाई ❋ लाखनि ऊदनिको बैठाय।
संग पालकी लइ दोनोंकी ❋ लश्कर गये बीर मलिखान॥
घाव सिलाये तिन दोनोंको ❋ मलहमपट्टी दई बँधाय।
फौज बढ़ाय दई आगेको ❋ हाहाकारी बीतन लागि॥
उत्तर घेरो ढेबा बहादुर ❋ पश्चिम सैयद लियो घिराय।
पूरब बढ़िगे हैं ब्रह्मानँद ❋ दक्षिण ओर वीर मलिखान॥
बीचमें घिरिगे बूँदीवाले ❋ चारों ओर चलै तलवारि।
पांच कोसके चौफेरामें ❋ चारों ओर बजै हथियार॥
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ सबके मारु मारु रट लागि।
एक पहर भरि चली शिरोही ❋ तहँ बहि चली रक्तकी धार॥
तीनि लाख क्षत्री बूँदीके ❋ महुबेवारेन दिये गिराय।
भगे सिपाही बूँदीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार॥
यह गति देखि जवाहिर मोती ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय।
मोतीसिंह पहुँचे ब्रह्मा पै ❋ औ ब्रह्माते कही सुनाय॥
खबरदार रहियो घोड़ापर ❋ यह कहि लीन्ही लाल कमान।
तीर चलायो ब्रह्मानँद पर ❋ ब्रह्मा दीन्ही बाग मरोरि॥
बायँते घोड़ा दहिने ह्वइगो ❋ कैवर निकरि गयौ वापार।
खैंचि शिरोही तब मोतीमल ❋ ब्रह्मानँद पर दई चलाय॥
ढाल अढ़ाय दई ब्रह्माने ❋ उनकी टूटि गई तलवारि।
आगे बढ़िगे ब्रह्मानँद तब ❋ औ मोतीको दियो गिराय॥
तुरतै बांधि लियो मोतीको ❋ देखा हाल जवाहिरसिंह।
आगे बढ़िके गै ब्रह्मा पै ❋ समुहे आय गये मलिखान॥

खैंचि शिरोही लई जवाहिर ❁ सो मलिखेपर दई चलाय ।
ढाल अड़ाई तब मलिखेने ❁ उनकी टूटि शिरोही जाय ॥
ढालकी औझड़ मलिखे मारी ❁ औ धरतीपर दियो गिराय ।
बांधि जवाहिरसिंह मलिखेने ❁ अपने लश्कर दियो पठाय ॥
सुनो हाल जब गंगाधरने ❁ दोनों लरिका बँधे हमार ।
मन घबराने बूँदीवाले ❁ अवधौं काह करैं करतार ॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❁ औ गणपतिके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई गंगाधरकी ❁ शारद मोपर होउ सहाय ॥
धीरज धरिकै गंगाधरने ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
सम्मुहे पहुँचे जब मलिखेके ❁ तब मलिखेने कही सुनाय ॥
छलिकै बुलवाये लरिका तुम ❁ औ ऊभेमें दियो डराय ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❁ जो छल करो हमारे साथ ॥
अबहूँ तुम्हारो कछु बिगरोना ❁ सातौं भाँवरि देउ डराय ।
ब्याह किये बिन हम जैहैं ना ❁ चाहै प्राण रहैं की जायँ ।
इतनी सुनतै गंगाधरने ❁ अपने जादू लिये उठाय ॥
तकि तकि जादू राजा मारै ❁ सो मलिखेपर ना अनियाय ।
बोले मलिखे गंगाधरते ❁ तुम सुनिलेउ बुँदेले राय ॥
पुष्य नछत्तरमें जन्मा हूँ ❁ बरहैं परी बृहस्पति आय ।
तुम्हरे जादूकी क्या गिनती ❁ शंका हमहिं कालकी नाहिं ॥
बोले मलिखे तुनि आल्हाते ❁ दादा सुनौ हमारी बात ।
तुम्हरी बरनी गंगाधरकी ❁ अबहीं लेउ जँजीरन बांधि ॥
हाथी बढ़ायो तब आल्हाने ❁ गंगाधरको दई ललकार ।
या तो ब्याह करौ बेटीको ❁ या तुम आय लड़ौ मैदान ॥
सुनतै भाला लै गंगाधर ❁ सो आल्हापर दियो चलाय ।
चोट बचाय लई आल्हाने ❁ भाला गिरो धरनिमें जाय ॥

मनमें सोचे तब गंगाधर ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
हौदाके संग हौदा मिलिगै ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
सो धरि धमकी तुनि आल्हापर ❋ छतुरी टूकि टूकि ह्वइजाय ।
डंडा कटिगे अम्बारीके ❋ आल्है राखि लियो भगवान ॥
तड़पे आल्हा तब हौदाते ❋ गंगाधरको लियो बँधाय ।
तब गंगाधर बोलन लागे ❋ सुनियो देवकुँवरिको लाल ।
हौ सब लायक महुबेवाले ❋ तुम्हरी जग जाहिर तलवारि ॥
ऐसे क्षत्री महुबे प्रगटे ❋ क्यों नहिं राज करैं परिमाल ।
कैद छांड़ि देउ तुम लरिकनकी ❋ अबहीं भाँवरि दिहौं डराय ॥
बात मानिके गंगाधरकी ❋ मलिखे कैद दई छोड़वाय ।
लौटो लश्कर महुबेवालो ❋ खेतन डेरा दियो डराय ॥
करी तयारी तब गंगाधर ❋ मड़वा तुरतै दियो गड़ाय ।
भयो बुलौआ तब पंडितको ❋ पंडित तुरत पहूँचे आय ॥
चौक पुराय दई मोतिनकी ❋ सोने कलश दियो धरवाय ।
मोती जवाहिरको बुलवायो ❋ औ यह कही बुँदेले राय ॥
शूर बुलाय लेउ जल्दीते ❋ सो कोठरिनमें देउ छिपाय ।
जबहीं आवैं महुबेवाले ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥
ब्याह करैं हैं जो महुबेके ❋ तौ जग ह्वइहैं हँसी हमारि ।
दुइ हजार क्षत्री बुलवायो ❋ सो महलनमें दियो छिपाय ॥
मोती चलिभे तब बूँदीते ❋ औ बरातमें पहुँचे जाय ।
करी बन्दगी तहँ जैचँदको ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
साइति नीकी है भौंरिनको ❋ जल्दी लरिकै देउ पठाय ।
आय पालकी तब लाखनिकी ❋ तापर लाखनि भये सवार ॥
आल्हा सैयद मलिखे ढेबा ❋ पँचये ब्रह्मा भये तयार ।
चली पालकी तब लाखनिकी ❋ दरवाजेपर पहुँचे जाय ॥

चारौ नेगी सँगै पहुँचे ❋ लरिकै मँड़ये लियो बुलाय।
चन्दन चौकी लाखनि बैठे ❋ गौरि गणेश दिये पुजवाय॥
कुसुमा बेटीको बुलवायो ❋ चन्दन पाटा दियो बिठाय।
हुक्म दै दियो गंगाधरने ❋ सबकी कटा देउ करवाय॥
क्षत्री निकरे तब कोठरिनते ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवार।
उठे महुबिया तब जल्दीते ❋ अपनी खैंचि लईं तलवारि॥
जितने क्षत्री थे बूँदीके ❋ सबको काटकियो खरिहान॥
दोनों लड़िका गंगाधरकै ❋ बांधे तुरत बीर मलिखान।
तब बुलवायो गंगाधरको ❋ कन्यादान लियो करवाय॥
बड़ लड़ैया महुबेवाले ❋ सातौ भांवरि लईं डराय।
नेग जोग सबही करवाये ❋ गंगाधरते कही सुनाय॥
बिदा करौ अब तुम बेटीकी ❋ तब गंगाधर लगे बतान।
सालके भीतर गौना देहैं ❋ हमरे कुला यहै ब्यौहार॥
बोली रानी गंगाधरकी ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात।
बड़े लड़ैया महुबेवाले ❋ जिनके बांट परी तलवारि॥
लड़ न जितिहौ इन लरिकनते ❋ ताते भरम देउ बिसराय।
हंसी खुसीते इनहिं पठावौ ❋ दाइज देउ बुँदेले राय॥
बोले गंगाधर रानीते ❋ रानी मानी बात तुम्हारि।
सवा लाखको लहरपटोरा ❋ अस्सी मोहरें लईं मंगाय॥
सो बहंडोर धरी राजाने ❋ औ लाखनिको लियो बुलाय।
फिरि लहकौरि खवाय प्रेमते ❋ मोहन माला दई पहिराय॥
द्वारो रोंको जब सरहजने ❋ लाखनि हरवा दो पहिराय।
रूप देखिकै उन लाखनिको ❋ सखियां मोहि मोहि रहि जायं॥
धनि धनि कहिये इनकी माता ❋ जिनकी कोख लियो औतार।
हँसी खुशीते दायज दैकै ❋ कीन्हों बिदा बुँदेले राय॥

चली पालकी तब द्वारेते ❋ औ लश्करमें पहुँची जाय ।
कूच करायो तब बूँदीते ❋ औ कनउजकी पकरी राह ॥
बारह दिनकी मंजिल करिकै ❋ पहुँचे घाट कालपी जाय ।
मलिखे ब्रह्मा आज्ञा लैकै ❋ गढ़ महुबेकी पकरी राह ॥
आई बरायत जब कनउजमें ❋ महलन खबरि दई करवाय ।
करी तयारी रनि तिलकाने ❋ सखियाँ करैं मंगलाचार ॥
आई पालकी दरवाजे पर ❋ परछनि करी तिलकदेरानि ।
भीतर पहुँचे लाखनि राना ❋ दान दक्षिणा दई बँटाय ॥
दगी सलामी गढ़कनउजमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
ऐसे ब्याह भयो लाखनिको ❋ सो हम कहिके दियो सुनाय ॥
आगे लड़ाई है गाँजरकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय ।
समय समय पर आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।

इति बून्दी (कामरू देश बंगाला) की लड़ाई
(लाखनिरानाका ब्याह) समाप्त

श्रीः

अथ गाँजरकी लड़ाई

★

ऊदनि-विजय

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❃ औ गणपतिके चरण मनाय।
कहौं लड़ाई अब गांजरकी ❃ शारद मोंको होउ सहाय॥
सिंहासन जैचन्द विराजैं ❃ भारी लागि रहो दरबार।
ऊपर ढुरै चौंर राजाके ❃ बैठे बड़े बड़े सरदार॥
बोले मन्त्री महाराजते ❃ तुम सुनि लेउ कनौजीराय।
अटको पैसा बहु गांजरमें ❃ ताको करिहौ कौन उपाय॥
यह सुनि सोचे राजा जैचंद ❃ औ यककलश लियो मंगवाय।
सो धरवाय दियो बंगलामें ❃ तापर बीरा दियो धराय॥
कौन शूरमा है कनउजमें ❃ जो गांजरपर पान चबाय।
पैसा अटको जो गांजरमें ❃ ताको तुरत लेउ भरवाय॥
भारी खिलत दिहैं ताको हम ❃ करिहैं माफ लूटको माल।
पहर एक बीराको ह्वैगो ❃ कोऊ पान चबावै नाहिं॥
तड़पे ऊदनि तब बंगलेमें ❃ औ बीराको लियो उठाय।
पान चबाय लियो गांजरपै ❃ औ जैचंदते कही सुनाय॥
ठाढ़े पैसा हम भरवैहैं ❃ गांजर गर्द दिहैं करवाय।
यह कहि चलिभै ऊदनि ठाकुर ❃ औ लाखनिपै पहुँचे जाय॥
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❃ जल्दी फौज लेउ सजवाय।
बीरा चाबा हम गांजरपर ❃ ठाढ़े पैसा लिहैं भराय॥

इतनी सुनतैं लाखनि राना ❋ लश्कर डंका दौ बजवाय ।
फौज सजाय लई कनउजकी ❋ भारी हुक्म कनौजी क्यार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❋ बांके घोड़नके असवार ।
पैदल सजिगै सब लश्करको ❋ अपने बांधि सबै हथियार ॥
भूरी हथिनी तब सजवाई ❋ तापर लाखनि भये सवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ ऊदनि फांदि भये असवार ॥
इन्दल चढ़िगै हंसामनिपर ❋ ढेबा मनुरथापर असवार ।
दस हजार हाथी सजवाये ❋ सजिगये तीनि लाख असवार ॥
चारि लाख पैदल सजवाये ❋ कूचको डंका दियो बजाय ।
साले आल्हाके आये थे ❋ जोगा भोगा जिनके नाम ॥
सोऊ त्यार भये गांजरको ❋ अपने बांधि लिये हथियार ।
घोड़ा पपीहा त्यार करायो ❋ तापर जोगा भयो सवार ॥
सब्जा घोड़ाको सजवायो ❋ तापर भोगा भयो सवार ।
लश्कर चलिभौ गढ़कनउजते ❋ कूचको डंका दियो बजाय ॥
मारू बाजा बाजन लागे ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइ जायँ ।
मंजिल मंजिलके चलिबेमें ❋ गोरखपुरमें पहुँचे जाय ॥
पांच कोश बिरियागढ़ रहिगो ❋ अपने डेरा दिये डराय ।
तम्बू तनिगै तब ऊंचेपर ❋ औ खालेमें लगी बजार ॥
हौदा उतरि गये हाथिनके ❋ घोड़न जीन दिये उतराय ।
फेंटै छुटिगईं सब क्षत्रिनकी ❋ सबने छोरि धरे हथियार ॥
तीनि दिना होइगे घूरेपर ❋ मनमें ऊदनि कियो विचार ।
पाती भेजैं अब बिरियागढ़ ❋ यह कहि कलमदान लै हाथ ॥
सिद्धि श्रीनारायण लिखिकै ❋ ता पीछेते लिखी जोहार ।
लिखो हाल तब बघऊदनिने ❋ हमरे वचन करौ परमान ॥
तुम तहसील करी गांजरकी ❋ औ जैचंदको दियो न दाम ।
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ तुम ना दीन्हों एक छदाम ॥
हमहिं पठायो राजा जैचंद ❋ लाखनि राना साथ हमार ।

हम हैं क्षत्री गढ़ महुबेके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
पैसा भेजि देउ जल्दी तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि ।
जौ नहिं इच्छा होय देनेकी ❋ तौ तुम आय लड़ौ मैदान ॥
चिट्ठी लिखिकै यह ऊदनिने ❋ हरकाराको दई पकराय ।
चलि भयो धावन तब लश्करते ❋ औ विरियागढ़ पहुँचो जाय॥
हिरसिंह बिरसिंह बँगला बैठे ❋ धावन करी बन्दगी जाय ।
पाती देदइ बघ ऊदनिकी ❋ सो पाती लै बाचन लाग ॥
पढ़ी हकीकति जब पातीकी ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ।
बोलि नगरचीको बीरा दौ ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ।
पहले डङ्कामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डङ्काके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई बढ़ाय ।
कूचको डंका जब बजवायो ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
चारि घरी केरे अरसामें ❋ पहुँची फौज खेतमें आय ।
इक हरकारा बदलति आयो ❋ औ ऊदनिते कह्यो हवाल ॥
लश्कर आयो बिरयागढ़को ❋ सो तुम खबरदार ह्वइजाउ ।
सुनी खबरि जब यह ऊदनिने ❋ तुरतै डंका दौ बजवाय ॥
चोब नगाराके बाजतखन ❋ क्षत्री बांधिलिये हथियार ।
सजिगयो लश्कर कनउजवालो ❋ तुरतै कूच दियो करवाय ॥
आधकोस जब लश्कर रहिगयो ❋ हिरसिंह हाथी दियो बढ़ाय ।
आगे बढ़िकै हिरसिंह बोले ❋ को बिरियागढ़ घेरो आय ॥
किसकी माता नाहर जायो ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
बोले ऊदनि तब आगे बढ़ि ❋ औ हिरसिंहसे कही सुनाय ॥
हमरी माता नाहर जायो ❋ हमने घेरो गांव तुम्हार ।
हमहिं पठायो राजा जैचन्द ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥

बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो तुम दाम देउ भरवाय ।
नीके देहौं नीके लेहौं ❋ नाहीं कठिन करौं संग्राम ॥
यहसुनि हिरसिंह बोलन लागे ❋ औ ऊदनिको दियो जवाब ।
चढ़ि चढ़ि आयो राजा जैचन्द ❋ हम ना दीन्हौं एक छदाम ॥
धोखे रहियो ना काहूके ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय ।
भागे बचिहौ ना कनउजलौं ❋ ताते लौटि कनौजे जाउ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ नाहीं जानो हाल तुम्हार ।
अपन दुसरिहा हम देखा ना ❋ जो सम्मुहे होइ देउ जवाब ॥
धोखे रहियो ना जैचन्दके ❋ कौड़ी कौड़ी लिहौं भराय ।
दूजी करिहौ जौ हमते तुम ❋ मारौं गर्द बर्द ह्वइजाय ॥
हम हैं क्षत्री गढ़ महुबेके ❋ राजा दस्सराजके लाल ।
पैसा लिये विना लौटैना ❋ चाहैं प्राण रहे की जायँ ॥
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगै ❋ औ बातनमें बाढ़ी रारि ।
गुस्सा ह्वइकै हिरसिंह ठाकुर ❋ अपनो हुकम दियो करवाय॥
बत्ती दैदेउ मोरि तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ।
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ सुम्बा मारैं बारंबार ॥
रंजक धरिकै तिन प्यालनपर ❋ ऊपर बत्ती दई लगाय ।
दगीं सलामी दोऊ ओरते ❋ दलमें रही अँधेरिया छाय ॥

अथ हिरसिंह बिरसिंहकी लड़ाई

अररर गोला छूटन लागे ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
गोला छूटैं दोनों दलमें ❋ रणमें होय दनाक दनाक ॥
गोला लागै ज्यहि हाथीके ❋ मानों चोर सेंधि दै जाय ।
जौन ऊँटके गोला लागे ❋ सो गिरपरै चकत्ता खाय ॥
गोला लागै जिन घोड़नके ❋ चारौ सुम्म गर्द ह्वइजायँ ।

१ हिरसिंह और हरिसिंह दोनों नाम प्रसिद्ध थे ।

गोला लागे जिन क्षत्रिनके ❀ सो गिरिपरै धरनि भहराय ॥
चारिघरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ ।
क्षत्रिन छोड़ि दई तोपैं तब ❀ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ।
हल्ला ह्वइगो द्वउ लश्करमें ❀ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदलसँग ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
हौदाके सङ्ग हौदा मिलिगये ❀ औ असवारनते असवार ॥
पैदल गिरिगै पैग पैगपर ❀ उनके दुइदुइ पैग असवार ।
हाथी गिरिगै बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
पहर एक भरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ।
कटे भुशुंडा हैं हाथिनके ❀ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ॥
कल्ला कटि गये हैं घोड़नके ❀ अंधाधुन्ध चली तलवारि ।
मुर्चन मुर्चन नचैं बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
सदा तुरैया न बन फूलै ❀ यारौ सदा न सावन होय ।
सदा न माता उरमें धरिहैं ❀ यारौ जन्म न बारंबार ॥
जैसे पात गिरै तरुवरते ❀ गिरिकै बहुरि न लागै डार ।
मानुष देही यह दुर्लभ है ❀ आवै समय न बारंबार ॥
पांव पिछारू तुम धरियो ना ❀ रखियो धर्म कनौजी क्यार ।
जीतिकै चलिहौ जो गांजरते ❀ दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दै दै पानी रजपूतनको ❀ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ।
झुकै सिपाही ऊदनिवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही बिरियावाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
गड़बड़ परिगौ तब लश्करमें ❀ सब दल रेनबेन ह्वइजाय ॥
देखि हाल यहु हीरसिंहने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
बोले हिरसिंह बघ ऊदनिते ❀ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
काल तुम्हारो नियरानो है ❀ सुनिल्यो दस्सराजके लाल ।
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❀ अपनी छाती दई अड़ाय ॥

चोट आपनी हिरसिंह करिलेउ ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी सुनते हीरसिंहने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई बघ ऊदनिपर ❀ ऊदनि दीन्हीं ढाल अड़ाय ।
बचिगौ बेटा दस्सराजको ❀ हिरसिंह लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो बघ ऊदनिपर ❀ ऊदनि ले गये चोट बचाय ।
कावा दैकै तब ऊदनिने ❀ रस बेंदुलको दियो बढ़ाय ॥
तड़पिकै पहुँचिगये मस्तकपर ❀ औ हिरसिंहको लीन्हों बांधि ।
यह गति देखी बीरसिंहने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई आगे बढ़ि ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
खबरदार घोड़ापर रहियो ❀ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
इतनी कहिकै गुर्ज उठायो ❀ सो ऊदनिपर दई चलाय ।
बायेंते घोड़ा दहिने ह्वइगयो ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा ह्वइकै बीरसिंहने ❀ अपनी खैंचि लई तलवार ।
करो झड़ाका जब ऊदनिपर ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीन शिरोही बिरसिंह मारी ❀ ऊदनि लीन्हीं चोट बचाय ।
टूटि शिरोही गइ बिरसिंहकी ❀ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
घोड़ा बेंदुलाको धरि दाबो ❀ गज मस्तकपर बाजी टाप ।
औझड़ मारी एक ढालकी ❀ सोने कलशा दिये गिराय ॥
रस्सा काटि दिये हौदाके ❀ बिरसिंह गिरे धरनिपर आय ।
बड़ि बड़ि कुस्ती बिरसिंहमारी ❀ जीते बड़े बड़े बलवान ॥
गजभरि छाती बीरसिंहकी ❀ देखत शूर ताहि भयखायँ ।
देही बहुत गठी बिरसिंहकी ❀ दोनों नयनन बरे मशाल ॥
ताल ठोंकि बोले ऊदनिते ❀ कुश्ती लड़ौ हमारे साथ ।
ऊदनि उतरे रस बेंदुलसे ❀ औ समुहेपर पहुँचे जाय ॥
झपटि उठाय लियो ऊदनिको ❀ औ बिरसिंह यह कही सुनाय ।
कहँपर फेंकि देऊँ तुमको मैं ❀ तब ऊदनिने दियो जवाब ॥

फेंकि देउ जल्दी हमको तुम ❋ जहँपर मर्जी होय तुम्हारि ।
यह सुनि बहुतदूरि फेंकनको ❋ बिरसिंहमनमें कियो विचार ॥
ऊदनि पेंच करो ऊपरते ❋ औ छातीपर भये सवार ।
डंड बांधिलइ तब बिरसिंहकी ❋ माल खजाना लियो लुटाय ॥
किलाजीतिलियोबिरियागढ़का ❋ जितिको डंका दियो बजाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ पट्टी धुरो दबायो जाय ॥

पट्टीके महाराज सातनिकी लड़ाई

सुमिरन करिके रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ।
कहौं लड़ाई अब सातनिकी ❋ होउ सहाय कृष्णघनश्याम ॥
राति बसेरा करि धूरेपर ❋ भोरहि उठे उदैसिंह राय ।
कागद लैकै कल्पीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पीछेते लिखी जोहार ।
लिखी हकीकति फिरि ऊदनिने ❋ सातनि मानो कही हमारि ॥
पैसा तहसीली गाँजरको ❋ नाहीं दीन्हों एक छदाम ।
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो सब दाम देउ भरवाय ॥
हमको भेजो राजा जैचंद ❋ लाखनि आये हमरे साथ ।
नगर महोबेके रहवैया ❋ वघ ऊदनि है नाम हमार ॥
हिरसिंहबिरसिंहबिरियावाले ❋ तिनकी डंड लई बँधवाय ।
बारह बरस क्यार पैसा था ❋ ठाढ़े दाम लियौ भरवाय ॥
दाम चुकाय देउ तुमहू सब ❋ नाहीं कठिन करौं संग्राम ।
जो नहिं इच्छा होय देनेकी ❋ तौ तुम निकसि होउ मैदान ॥
ऐसी पाती लिखि ऊदनिने ❋ हरकाराको दई गहाय ।
चलि भयो धावनतब लश्करते ❋ औ पट्टीगढ़ पहुंचो जाय ॥
जहाँ कचहरी थी सातनिकी ❋ धावन उतरि परौ अरगाय ।
करी बन्दगी तहँ राको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती राजा वांची ❋ मन में गये सनाका खाय ।

ऊँचे चढ़ि देखो धूरे पर ❋ लश्कर डटा बनाफरक्यार ॥
बोलि नगरचीको बीरादै ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
डंका बाजै हमरे घरमें ❋ सब दल साजि होय तैयार ॥
बजो नगारा गढ़ पट्टीमें ❋ क्षत्रिन बांधि लिये हथियार ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो आगेको दई बढ़ाय ॥
तीनि लाखदलतुरतै सजिगौ ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
भूरा हाथीको सजवायो ❋ सातनि राजा भये सवार ॥
चार घरी केरे अरसामें ❋ रणखेतनमें पहुँचे आय ।
लश्कर पहुँचो जब खेतनमें ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ॥
हाथी बढ़ायो सातनि राजा ❋ आगे जाय दई ललकार ।
कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब ॥
देखि फौज सातनि राजा ❋ ऊदनि लश्कर लियो सजाय ।
घोड़ा बेंदुला त्यार करायो ❋ तापर फांदि भये असवार ॥
आगे बढ़िकै ऊदनि बोले ❋ औ सातनिको दियो जवाब ।
हम चढ़ि आये हैं कनउजते ❋ जैचँद हमको दियो पठाय ॥
देश हमारो नगर महोबा ❋ जहँपर बसै रजा परिमाल ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
बावन गढ़के राजा जीते ❋ जीते बड़े बड़े सरदार ।
नाम हमारो जग जाहिर है ❋ लाखनि राना साथ हमार ॥
भलो आपनो जो तुम चाहौ ❋ पैसा जल्दी देउ चुकाय ।
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगै ❋ औ बातनमें बाढ़ी रारि ॥
हुक्म देदियो तब सातनिने ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअँना रह्यो सरग मँडराय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ गोली मन्न मन्न मन्नायँ ॥
भाला बरछी छूटन लागे ❋ सरसर परी तीर की मारु ।

एक पहर भरि गोला बरसो ❋ अंधाधुंध तोपकी मारु ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वइगईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ।
तोपैं छांड़ि दई ज्वानननें ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ॥
हाथी बढ़वायो सातनिने ❋ औ क्षत्रिनते कही पुकारि ।
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ।
आजु अखाड़ेमें बरनी है ❋ सन्मुख लरौ शत्रुके साथ ॥
जान न पावैं कनउजवाले ❋ सबके मूँड़ लेउ कटवाय ।
झुके सिपाही तव पट्टीके ❋ रहि गयो पांच पैग मैदान ॥
झुरमुट होइगयो दोनों दलमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ।
खट खट तेगा बाजन लागे ❋ बोले छपक छपक तलवारि ॥
चले जुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवान के ❋ कटिकटिगिरे सुघरुआ ज्वान॥
चलै कटारी बून्दी वाली ❋ अब ना सूझै अपन बिरान ।
चारि घरीभरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बड़े लड़ैया गांजर वाले ❋ जिनके मारु मारु रटिलागि ।
हटो मुरचा बघ ऊदनिको ❋ ऊदनि घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ सो सातनिपर राखी जाय ।
ढाल अड़ाय दई सातनिने ❋ सातनि लैगो चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो सातनि राजा ❋ बघऊदनिपर दियो चलाय ।
लगो चपेटा रसबेंदुलके ❋ घोड़ा पांचकदम हटिजाय ॥
ऐड़ लगाई रसबेंदुलके ❋ औ मस्तक पर बाजी टाप ।
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय ॥
गुर्ज उठायो तब सातनिने ❋ घोड़ा भगो उदयसिंह क्यार ।
हाथी पचशावद ठाढ़ो थो ❋ ऊदनि तासु आड़ ह्वइजाय ॥
बोले इंदल तब आल्हाते ❋ दादा अब कछु करौ उपाय ।
अकिलेसातनिकी धमकिनमें ❋ कोऊ कुँवर ना आड़ै पांव ॥

डंड बांधिलेउ तुम सातनिकी ❋ अब ना राखौ देर लगाय ।
हाथी बढ़ायो तब आल्हाने ❋ औ सातनिते कही सुनाय ॥
करो सामना अब हमरो तुम ❋ मनके भेटिलेउ अरमान ।
इतनी सुनतै सातनि राजा ❋ करमें लीन्ही लालकमान ॥
कैबरि छोड़ि दियो आल्हापर ❋ आल्हा हाथी लियो हटाय ।
आल्हा बचिगै तब हौदामें ❋ कैबरि निकरि गयो वापार ॥
सांग उठाई तब सातनिने ❋ सो आल्हापर धमकी जाय ।
हाथीहटिगयोतुनि आल्हाको ❋ नीचे सांग गिरी अरराय ॥
दोनों चोटैं खाली परिगईं ❋ सातनि हाथी दियो बढ़ाय ।
हौदाके सँग हौदा मिलि गयो ❋ सातनि खैंचि लई तलवार ॥
चोट चलाई जब आल्हापर ❋ आल्हा लीन्ही चोट बचाय ।
बोले सातनि तब आल्हाते ❋ अबहूँ लौटि महोबे जाउ ॥
धोखे रहियो ना माड़ौके ❋ जहँ लै लियो बापका दाउँ ।
जितने आये हौ महुबेते ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
बोले आल्हा तब सातनिते ❋ राजा बोलौ जीभ सम्हारि ।
दाम लिये बिन हम ना जैहैं ❋ चाहैं प्राण रहैं की जायँ ॥
बिना दामके हम नौकर हैं ❋ तासों हम लौटनके नाहिं ।
इतनी कहिकै लै जंजीर तब ❋ औ हाथीको दई गहाय ॥
बांधि जँजीर लेउ सातनिको ❋ यह हाथीते कही सुनाय ।
सांकल फेरी तब हाथीने ❋ तुरतै हौदा दियौ गिराय ॥
गिरिगै सातनि जब धरतीपर ❋ दुसरो घोड़ा लियो मँगाय ।
तापर चढ़ि गये सातनि राजा ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ॥
जोगा भोगाके समुहेपर ❋ सातनि राजा कही सुनाय ।
खबरदार रहियो घोड़ा पर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी बात सुनी राजाकी ❋ जोगा खैंचि लई तलवारि ।
चोट चलाई जब सातनिपर ❋ सातनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥

खाली मूठि रही जोगाकी * सातन खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब जोगापर * जोगा भूमि गिरो मुरझाय ।
यह गति देखी जब भोगाने * अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब सानिपर * बायें उठी गैंड़की ढाल ।
तीनि शिरोही सातनि मारी * तुरतै टूट गई तलवारि ॥
खैंचि शिरोही सातनि मारी * भोगा गिरो धरनिपर जाय ।
जोगा भोगा दोनों जूझे * घायल भयो पपीहा छ्वोड़ ॥
देखि हकीकति यह इंदलने * अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
बढ़िकै सातनिको ललकारो * ठाकुर खबरदार होइ जाउ ॥
ढालकी औझड़ इन्दल मारी * सातनि राजै दियो गिराय ।
उतरिकै घोड़ाते इंदलने * सातनि राजा लियो बँधाय ॥
तुरतै भिजवायो लाखनिपै * जीतिको डंका दियो बजवाय ।
लूटि कराई गढ़ पट्टीकी * पहरा अपनो दियो बिठाय ॥
जोगा भोगा नैनागढ़के * साले जौन बनाफर क्यार ।
तिनकी यादि करत आल्हाके * नैनन बहै नीर की धार ॥
कूच कराय दियो पट्टीते * पहुँचे कामरूपमें जाय ।
डेरा डारि दियो धूरे पर * मुर्चा बन्दी दई कराय ॥

कामरूपके राजा कमलापतिकी लड़ाई

सुमिरन करिकैं नारायणको * औ गणपतिके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई कमलापतिकी * यारो सुनियो कान लगाय ॥
राति बसेरा करि धूरे पर * भोरहि उठे उदयसिंह राय ।
पाती लिखिकै बघऊदनिने * हरकारा को दई गहाय ॥
पाती लैकै धावन चलि भयो * पहुंचो कामरूपमें जाय ।
जहां कचहरी कमलापतिको * धावन उतरि गयो अरगाय ॥
करी बन्दगी कमलापतिको * पाती गद्दी दई चलाय ।
पाती बांची कमलापतिने * मनमें गये बहुत घबराय ॥

ऊंचे चढ़ि देखी कमलापति ❋ लश्कर डटा बनाफर क्यार ।
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
हुक्म दे दियो कमलापतिने ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा कामरूपमें ❋ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लियो हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ॥
डेढ़ लाख दल तुरतै सजिगयो ❋ कट्टर फौज गँजरियन केरि ।
जबरजंग औ जबरजस्तखां ❋ जै मरिबेको नाहिं डेरायँ ॥
सोऊ त्यार भये लश्करसंग ❋ अपने घोड़न भये सवार ।
करी तयारी कमलापतिने ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
घट भरवायो गंगाजलको ❋ तासे तुरत कियो स्नान ।
डारि आसनी रेशमवाली ❋ तापर बैठि गये अरगाय ॥
चन्दन रगरो मलयागिरिको ❋ सोने कटोरा धरो उतारि ।
करिकै पूजन श्रीगणपतिको ❋ ले बजरंगबलीको नाम ॥
दैकै चन्दन भुजदंडनपर ❋ औ माथेमें लियो लगाय ।
लंग बांधिकै रेशमवाली ❋ धोती पहिरि पोतिया केरि ॥
पहिरि पैजामा मिसरूवालो ❋ जामा पहिरि दुदामी क्यार ।
ताके ऊपर बख्तर पहिरो ❋ जामें तेग नाहिं अनियाय ॥
पाग बैंजनी शिरपर बांधी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
बारह छुरियां कम्मर बांधी ❋ राजा दुइ बांधी तलवार ॥
अगल बगल पर दुइ पिस्तोलैं ❋ दहिने सिंहिनि मूठि कटार ।
भाला लीन्हो नागदौनिको ❋ बायें भुजा गैंड़की ढाल ॥
कलंगी लागी मोतीचूरकी ❋ भाला चमकि चमकि रहिजाय ।
सजिकै कमलापति ठाढ़ें भे ❋ अपनो हाथी लियो मंगाय ॥

गद्दा डारि दियो मखमलको ❋ रेशम रस्सा दियो कसाय ।
धरि अम्बारी सोनेवाली ❋ चमकै कलश सुबरन क्यार ॥
हौदाधरि दियो है चुम्बकको ❋ जामें सेल बिलौंचा खाय ।
रेशमरस्साते हाथी कसि ❋ चन्दन सिढ़िया दई लगाय ॥
सिढ़ियन २ चढ़िकमलापति ❋ हौदा बीच पहूँचे आय ।
सुमिरनकरिकै रामचन्द्रको ❋ ले बजरंगबली का नाम ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डंका दौ बजवाय ।
बजत नगारा दलमें आवै ❋ घुमरत आवैं लाल निशान ॥
तीन घरी केरे अरसामें ❋ रण खेतनमें पहुँचे आय ।
मुर्चा बन्दी तब करवाई ❋ पाई खबरि उदैसिंहराय ॥
डंका बजवायौ ऊदनिने ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
हाथी बढ़ायो कमलापतिने ❋ आगे जाय दई ललकार ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देउ जवाब ।
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ कमलापतिको दियो जवाब ॥
देश हमारो नगर महोबा ❋ जहँपर बसैं रजापरिमाल ।
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
हमहिं पठायो है जैचँदने ❋ लाखनि आये हमारे साथ ।
बीरा चाबा हम गांजरपर ❋ सिगरे दाम लिये भरवाय ॥
हिरसिंह बिरसिंह बिरियावाले ❋ तिनते दाम लिये भरवाय ।
सातनि राजा पट्टीवाले ❋ तिनहूँकी लइ कैद कराय ॥
बारह बरस क्यार पैसा है ❋ सो तुम जल्दी देउ चुकाय ।
लाखनि राना हैं हमरे संग ❋ तिनकी नजरि गुजारौ आय ॥
गुस्सा ह्वइकै कमलापतिने ❋ बघ ऊदनिको दियो जवाब ।
गीदड़ मारे हौ जंगलके ❋ बगुला मारे सागर ताल ॥
जादिन परिहैं काम मर्दते ❋ मुँहका थूक बन्द ह्वइजाय ।
धोखे रहियो न काहूके ❋ सबके शीश लिहौं कटवाय ॥
ताते लौटि जाउ महुबेको ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ।

यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ कमलापतिको दियो जवाब ॥
हाल तुम्हारो ना जानो है ❋ ताते बातैं करत बनाय ।
दतिया मारि उड़ैसा मारो ❋ बाजी सेतबन्दलौं टाप ॥
मोहरा मारो हम पिरथीको ❋ औ ब्रह्माको कियो विवाह ।
बावन गढ़के राजा जीते ❋ जीते बड़े बड़े सरदार ॥
अपने दुसरिहा हम राखोना ❋ जो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
दाम चुकाय देउ जल्दी तुम ❋ तो हम लौटि कनौजे जायँ ॥
दाम लिये बिन हम जैहैं ना ❋ चाहे कोटिन करौ उपाय ।
नीके देहौ नीके लेहैं ❋ नाहीं कैद लिहैं करवाय ॥
इतनी सुनतै कमलापतिने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ।
बत्ती दैदेउ मेरी तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउँ उड़ाय ॥
हल्ला ह्वइगौ दोनों दलमें ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ गोला मघा बूँद झरिलाय ॥
भाला बरछी छूटन लागीं ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
हाहाकारी बीतन लागीं ❋ कह कह करैं अगिनियाँबान ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ भारी भई तोपकी मारु ।
तोपैं धैं धैं लाली होइ गईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ॥
तोपैं छोड़ि दईं क्षत्रिनने ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
दोनों फौजनके अन्तरमें ❋ रहिगो पांच पैग मैदान ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ।
खटखट खटखट तेगा बाजे ❋ बोलै छपक छपक तलवारि ॥
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायति क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान॥
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारुमारु रट लागि ।
भगे सिपाही कामरूपके ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
तब कमलापति मनमें सोचे ❋ अपनी जादू लई उठाय ।
जादू मारी तब लश्करपर ❋ जादू सबै झूठि परि जाय ॥

हाथीबढ़ायो तब कमलापति ❋ औ ऊदनिपै पहुँचे आय ।
इक ललकार दई कमलापति ❋ अपनो भाला लियो उठाय ॥
चोट चलाई बघऊदनिपर ❋ ऊदनि लीन्ही चोट बचाय ।
गुर्ज उठायो फिर कमलापति ❋ औ ऊदनिपर दियो चलाय ॥
बायें घोड़ा दहिने ह्वइगौ ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ।
बोले कमलापति ऊदनिते ❋ अबहूँ लौटि जाउ महराज ॥
चोट तीसरीमें बचिहौना ❋ ताते लौटि जाउ महराज ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ राजा बोले वचन सम्हारि ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिनको ❋ जो हटि धरैं पिछारी पांव ।
तिसरिउचौथी औरौ करिलेउ ❋ मनके मेट लेउ अरमान ॥
इतनी सुनिकै कमलापतिने ❋ तुरतै खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़का बघऊदनिपर ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली ❋ चांदी फूल उठे झहनाय ।
बचिगौ बेटा दस्सराजको ❋ दहिने भई शारदा माय ॥
घोड़ा उड़ायो तब ऊदनिने ❋ पहुँचे आसमानमें जाय ।
जैसे बाज कुहीपर टूटै ❋ तैसे गिरे उदयसिंहराय ॥
हौदा घेरो कमलापतिको ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब हौदापर ❋ हौदा टूक टूक ह्वइजाय ॥
करिकै दुचितो कमलापतिको ❋ तुरतै डंड दई बँधवाय ।
हुक्म कराय दियो लश्करमें ❋ माल खजाना लेउ लुटाय ॥
जीति कामरू कामक्षाको ❋ आगे बढ़े उदैसिंहराय ।

बंगालेके राजा गोरखा की लड़ाई

सुमिरण करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरणमनाय ॥
कहौं लड़ाई बंगालेकी ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ।
फौज पहुँचि गइ बंगालेमें ❋ धूरे डेरा दियो डराय ॥
लिखिके पाती बघऊदनिने ❋ हरकारा को दई गहाय ।

धावन चलिभौ तब धूरेते ❋ औ गढ़माहिं पहूँचो जाय ॥
जहां कचहरी थी राजाकी ❋ धावन उतरि परो तहँ जाय ।
करी बन्दगी तब राजाको ❋ पाती गदी दई चलाय ॥
पाती बांची जब राजाने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
ऊँचे चढ़ि देखो धूरे पर ❋ झंडन रही लालरी छाय ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजो नगारा जब लश्करमें ❋ क्षत्रिन बांधि लियो हथियार॥
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ।
करी तयारी राजा गोरख ❋ अपनो हाथी लियो मँगाय ॥
सो सजवाय लियो जल्दीते ❋ तापर तुरते भयो सवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ अपनो डंका दियो बजाय ॥
लश्कर पहुँचो जब धूरे पर ❋ मुर्चाबन्दी दई कराय ।
देखि फौज राजा गोरखकी ❋ ऊदनि लश्कर दियो सजाय ॥
हाथी बढ़ाय दियो राजाने ❋ औ इक जाय दई ललकार ।
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देउ जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ औ राजाको दियो जवाब ।
हमहैं क्षत्री महुबेवाले ❋ हमरो उदयसिंह है नाम ॥
हम चढ़ि आये हैं कनउजते ❋ लाखनि राना साथ हमार ।
बारह बरस क्यार पैसा भौ ❋ तुम ना दीन्हों एक छदाम ॥
जितना पैसा तुमपर चहिये ❋ सो सब दाम देउ भरवाय ।
नीकी देहौ नीकी लेहैं ❋ नाहीं कैद लिहैं करवाय ॥
इतनी सुनते गुस्सा ह्वइके ❋ राजा हुक्म दियो फरमाय ।
मारि भगावौ इन पाजिनको ❋ सबकी कटा देउ कटवाय ॥
झुके सिपाही तब राजाके ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।
चलै जुनब्बी औ अहिगर्बी ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरन लगे बहुज्वान ।
बोले ऊदनि सब क्षत्रिनते ❋ यारौ रखियो धर्म हमार ॥

मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
जीतिकै चलिहौ जो कनउजको ❋ दूनी तलब दिहैं बढ़वाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही बंगालेके ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
हाथी बढ़ायो तब गोरखने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।
यह कहि गुर्ज लियो राजाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़गो ❋ नीचे गिरो गुर्ज अरराय ।
ऐंड़ लगाई तब घोड़ाके ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारो ❋ सोने कलशा दिये गिराय ।
करिकै दुचितो तब राजाको ❋ ऊदनि लियो जँजीरन बांधि ॥
धावा करि दियो गढ़ भीतरको ❋ माल खजाना लियो लुटाय ।

कटक, जिन्सी, गोरखपुर, पटना आदिके राजाओंकी लड़ाई

जीतको डंका तब बजवायो ❋ लश्कर आगे दियो बढ़ाय ॥
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ।
कहौं लड़ाई अब आगेकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
लश्कर चलिकै बंगालेते ❋ पहुंचो कटक धुरेपै जाय ।
हुक्म दे दियो बघ ऊदनिने ❋ तुरतै कटक लियो घिरवाय ॥
फाटक बन्दी तब करवाई ❋ अपने पहरा दियो बिठाय ।
मुरली मनोहर दोनों भैया ❋ तिनकी कैद लई करवाय ॥
माल खजाना सब लै लीन्ही ❋ सो छकरनमें लियो लदाय ।
कूच करायो कटक शहरते ❋ जगमनि राजा लिये घिराय ॥
खबरि कराय दइ जिन्सीमें ❋ जगमनि गये सनाका खाय ।
हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब जिन्सीमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ।

हाथी सजवायो जगमनिने ❋ तुरतै तापर भये सवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुंचो जाय ।
आगे बढ़िकै जगमनि बोले ❋ काहे धुरो दबायो आय ॥
कौनसो क्षत्री चढ़ि आयो है ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
ऊदनि बढिकै बोलन लागे ❋ हमको जैचंद दियो पठाय ॥
छोटे भैया हम आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ।
लाखनि राना साथ हमारे ❋ तुमसे दाम लिहैं भरवाय ॥
बारह वर्षको पैसा मारो ❋ तुम ना दीन्हों एक छदाम ।
इतनी सुनतै जगमनि राजा ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
जाय न पावैं कोउ कनउजको ❋ सबकी कटा देउ करवाय ।
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❋ मुर्चा हटो गैंजरहन क्यार ।
ऐड़ लगाई रस बेंदुलके ❋ ऊदनि घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ औ जगमनिको दियो गिराय ।
बांधि जंजीरन लौ जगमनिको ❋ माल खजाना लियो लुटाय ॥
आगे बढ़िगै रूसनी गढ़में ❋ चिन्ता ठाकुर लियो बँधाय ।
लूटि करिलई गढ़ रूसनीकी ❋ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ॥
गोरखपुर में सूरज राजै ❋ ऊदनि तुरतै लियो बँधाय ।
माल खजाना लै आगे बढ़ि ❋ पटना शहर लियो घिरवाय ॥
पूरन राजाको तहँ बांधो ❋ औ काशीमें पहुँचे जाय ।
हंसामनि राजाको बांधो ❋ माल खजाना लिये लदाय ॥
गांजर वाले बारह राजा ❋ जीतो तिनहिं उदैसिंह राय ।
कैदी करिकै सब राजनको ❋ जीतको डंका दियो बजाय ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❋ गांजर कठिन चली तलवारि ।
कूच करायो सब लश्करको ❋ औ कनउजकी पकरी राह ॥
पगिया बदली लाखनिराना ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।

जा दिन जैहौ तुम महुबेको ❋ हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ॥
लश्कर पहुँचो गढ़ कनउजमें ❋ सबने छोरि धरे हथियार ।
आल्हा ऊदनि लाखनिराना ❋ पहुँचे बीच कचहरी जाय ॥
बारह राजा जो कैदी थे ❋ सो जैचंदको दियो सौंपाय ।
माल खजाना जो लाये थे ❋ सो जैचंदको दियो बताय ॥
सब सौंपाय दियो राजाको ❋ बहुतै खुशी भये महराज ।
बोले जैचंद तब ऊदनिते ❋ धनि धनि दस्सराजके लाल ॥
तुम सब लायक हौ महुबेके ❋ रानी देवकुंवरिके लाल ।
कठिन काम हमरो तुम कीन्हो ❋ अब तुम जाय करो विश्राम ॥
करि अधीन अपने जैचंदने ❋ सब राजाको दियो छुटाय ।
इतनी लड़ाई भइ गांजरमें ❋ सिरसा समर सुनौ मनलाय ॥
समय समयपर आल्हा गावो ❋ नितउठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हिये महं ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति गांजरकी लड़ाई (ऊदनि विजय) समाप्त

श्री :

सिरसागढ़की दूसरी लड़ाई

★

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

लाज गई बछराजके साथ, तल्वारि गई मलिखान अकेले ।
काढ़िकै तेग फिरो दलमें पृथीराजकी फौजन मारिकै ठेले ॥
लोहूके नारे पनारे चलैं, मानौ रगरेज कुसुम्म सनेले ।
ठाढ़ी कहै मलिखानकी नारि, आवत कंत वसंतसो खेले ॥
सुमिरन कीजै श्रीगणपतिके ❀ है जो ऋद्धि सिद्धि दातार ।
बहुरि मनैये जगदम्बेको ❀ भूले अक्षर लेंहि संभारि ॥
सदा सुमिरिये शिवशंकरको ❀ जो दीननपर सदा दयाल ।
जो कोइ भक्ति करै शंकरकी ❀ ताको तुरतै करैं निहाल ॥
फूलमती देवीको सुमिरौं ❀ सुमिरौं बहुरि संकटा माय ।
बहुरि सरस्वतीको सुमिरौंमैं ❀ माता कंठ विराजौ आय ॥
समर कहौं मैं गढ़सिरसाको ❀ होउ सहाय शारदा माय ।
तुम्हरे अखाड़ेमें गावत हौं ❀ बेड़ा पार करौ मन लाय ॥
कमल न प्रगटे कहुँ पर्वतपै ❀ मोती लगत न देखो डार ।
गई जवानी फिर बहुरै ना ❀ माँगे रूप न मिलै उधार ॥
माहिल राजा उरईवाले ❀ हैं जो चुगुलनमें सरदार ।
इक दिन सोचे अपने मनमें ❀ खाली भूमि महोबे क्यार ॥
देउँ बढ़ावा अब पिरथीको ❀ महुबे नगर लेय लुटवाय ।
सोचिसमुझिकेतब माहिलने ❀ लिल्ली घोड़ी लई मँगाय ॥
कूदि बछेरी पर चढ़ि बैठे ❀ औ दिल्लीकी पकरी राह ।

पांच दिनाकी मंजिल करिके ❀ पहुँचे गढ़ दिल्लीमें जाय ॥
जहां कचहरी पृथीराजकी ❀ बैठे बड़े बड़े सरदार ।
सोने सिंहासन राजा बैठे ❀ ऊपर चौंर ढुरै गजगाह ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ माहिल रहिगे माथ नवाय ।
नजरि बदलिगइ पृथीराजकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
हाल सुनावो तुम महुबेको ❀ कैसे बसै रजा परिमाल ॥
बोले माहिल तब राजाते ❀ तुम सुनिलेउ बीर चौहान ।
सबै कुशल है मेरि उरईमें ❀ बैठे राज करौं महराज ॥
एक अँदेशा है हमरे जिय ❀ खटकत राति दिना महराज ।
किला बनाय लियो धूरेपर ❀ सबके धूरे लियो दबाय ॥
एक बात हम तुमहिं बतावैं ❀ सो तुम मानौ वचन हमार ।
आल्हा ऊदनि कनउज छाये ❀ सूनो परा महोबा गांव ॥
लश्कर सजवावौ जल्दीते ❀ ऐसो समय न बारम्बार ।
अकिले मलिखे हैं सिरसामें ❀ तुमते लड़ै न पैहैं पार ॥
पहिले लूटि लेउ सिरसाको ❀ फिर महुबेको लेउ लुटाय ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❀ अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
बजै नगारा हमरे दलमें ❀ लश्कर सजिकै होय तयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❀ बांके घोड़नके असवार ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❀ कोऊ गजरथ भये सवार ॥
लश्कर सजिगौ दिल्ली वालो ❀ डंका होन गोलमें लाग ।
आदि भयंकर जो हाथी था ❀ सो सजवायो बीर चौहान ॥
अपनो साजकरो दिल्लीपति ❀ शोभा एक न बरनी जाय ।

पहिरि पैजामा मिसरूवाला ❀ जामा पहिरि दुदामी क्यार ॥
दुइ पिस्तौलैं अगल बगलपर ❀ बायें सिहिनि मूठि कटार ।
बारह छुरियां कम्मर बांधो ❀ लीन्हें हाथ ढाल तलवार ॥
पाग सेंदुरी शिरपर सोहै ❀ कलँगी मोतिचूर कै लागि ।
गजभर छाती पृथीराजकी ❀ मानो नैनन बरै मसाल ॥
सजिकै पृथीराज ठाढे भै ❀ मानो इन्द्र अखाड़े जायँ ।
सिढ़ियन २ पिरथी चढ़िगै ❀ धरि धरि कुम्भकरनिपर पावँ॥
सजी सवारी पृथीराजकी ❀ शोभा कछू कही ना जाय ।
हाथी इकदंता सजवायो ❀ तापर चढ़ो चौड़िया राय ॥
ताहर बेटा पिरथी वाला ❀ भा दलगंजन पर असवार ।
भौंरानँद हाथी सजवायो ❀ तापर धांधू भयो सवार ॥
पारथ बेटा पृथीराजको ❀ अपने घोड़ा भयो सवार ।
चन्दन बेटा जो पिरथीको ❀ सो घोड़ापर भयो सवार ॥
हाथी सजवाया जल्दीते ❀ तापर धीरसिंह असवार ।
दुइसो हाथी खूनी साजे ❀ दुइसै मुड़िया लियो सजाय॥
इकसै हाथी मस्ता सजिगै ❀ दुइसै भूरा लिया सजाय ।
कट्टर हाथी दुइसै कहिये ❀ सो सजवायो पिथौरा राय ॥
नौसै हाथिनके हल्लामें ❀ झूमैं आदिभयंकर ठाढ़ ।
तीनि लाख पैदल सजवाये ❀ साजे चारि लाख असवार ॥
सात लाखते पिरथी चलिभे ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
सात दिनाकी मंजिल करिकै ❀ पहुँचे गढ़ सिरसामें जाय ॥
चारिकोस जब सिरसरहिगौ ❀ अपने डेरा दिये डराय ।
चौड़ा ब्राह्मणको बुलवायो ❀ और यह कही पिथौराराय ॥
किला गिरायदेउ सिरसाको ❀ जल्दी कूच दियो करवाय ।
हाथी इकदन्ता सजवायो ❀ तापर चौंड़ा भयो सवार ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❀ सिरसागढ़को घेरो जाय ।
इक हरकारा बदलत आयो ❀ औ मलिखेपै पहुँचो जाय ॥
करि सलाम बोला मलिखेते ❀ तुम पर चढ़े बीर चौहान ।

सिरसा घेरि लियो चौंड़ाने ❋ सो तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
यह सुनि बुलवायो सुलिखेको ❋ औ यह कही बीर मलिखान ।
फौज सजायलेउ जल्दीते ❋ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनतै सुलिखे चलिभये ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
हुक्म दे दियो सब लश्करमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब सिरसामें ❋ क्षत्री सजे बांधि हथियार ।
सजिगे क्षत्री सिरसावाले ❋ जिनको सजत न लागीबार ॥
घोड़ीहिरौंजिनिको सजवायो ❋ सुलिखे फांदि भये असवार ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
जबहीं चढ़न लगे घोड़ीपर ❋ सन्मुख छींक भई ठहनाय ।
ब्रह्मा माता बोलन लागी ❋ बेटा मेरे लड़ैते लाल ॥
असगुन ह्वइगयो है सम्मुहते ❋ तुम ना जाउ युद्ध मैदान ।
बोले मलिखे तब माताते ❋ माता सुनौ हमारी बात ॥
सगुन मनावत बनिया बाटू ❋ जो धरि मौर बियाहन जात ।
सगुन मनावैं क्या क्षत्री ह्वै ❋ जो रण चढ़िकै लोह चबात ॥
हम ना जावैं जो दंगलमें ❋ लूटै शहर पिथौरा राय ।
आशीर्वाद देउ माता तुम ❋ अपनो हुक्म देउ फरमाय ॥
हुक्म दे दियो तब माताने ❋ जुगजुग जियो लड़ैते लाल ।
चरण लागिकै तब माताके ❋ तुरतै चले बीर मलिखान ॥
पहुँचे जाय तुरत धूरेपर ❋ लश्कर साथ बीर सुलखान ।
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीका नाम ॥
कहौं लड़ाई अब चौंड़ाकी ❋ जीते जंग बीर मलिखान ।
सम्मुहै देखो जब मलिखेको ❋ तब चौंड़ाने कही सुनाय ॥
हुक्म दियो है पृथीराजने ❋ सिरसा किला देउ गिरवाय ।
यह सुनि मलिखेबोलन लागे ❋ ब्राह्मण सुनो हमारी बात ॥
अपने बल हम किला बनायो ❋ सो कैसे अब देयँ गिराय ।
होय पराक्रम पृथीराजमें ❋ हमरो किला देयँ गिरवाय ॥

मारौं खेदि खेदि दिल्ली लौं ❋ टटुआ टायर लेउँ छिनाय ।
गुस्सा ह्वइकै तब चौंड़ाने ❋ अपनो हुक्म दियो करवाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❋ औ सिरसाको देउ उड़ाय ।
इतनी सुनतै झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअँना रह्यो सरगमें छाय ।
तोपैं छुटन लगीं तुरतै तब ❋ गोला होय दनाक दनाक ॥
बाण अगिनियां छूटन लागे ❋ सरसर परी तीरकी मारु ।
चारि घरी भरि गोलाबरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ॥
तोपैं छोड़ी तब ज्वानननै ❋ लम्बे बन्द कर हथियार ।
दोनों फौजैं इकमिल ह्वइगईं ❋ क्षत्रिन खैंचि लईं तलवारि ॥
खटखट तेगा बाजन लागे ❋ बोले छपक छपक तलवारि ।
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै बिलायतक्यार ॥
बाजे तेगा बर्दवानके ❋ कटिकटिगिरैं केसरिहाज्वान ।
मुर्चन मुर्चन नचै कबुतरी ❋ मलिखे कहैं पुकारि पुकारि ॥
भागि न जैयो कोउ मोहराते ❋ यारो धर्म तुम्हारे हाथ ।
मारे जैहो जो खेतनमें ❋ ह्वइहैं जुगन जुगन लौं नाम ॥
खटिया परिकै जो मरिजैहो ❋ कलिमें कोउ न लेहै नाम ।
दै दै पानी रजपूतनको ❋ मलिखे आगे दियो बढ़ाय ॥
घोड़ी कबूतरी दाबे आवै ❋ करमें नग्न लिये तलवारि ।
जैसे भेड़िन भेड़आ पैठे ❋ ज्यो गौवनमें छूटे बाघ ॥
जैसे सुआ सुपारी कतरै ❋ जैसे खेती लुनै किसान ।
तैसे रणमें मलिखे पैठे ❋ क्षत्रिन काटि करैं खरिहान ॥
अकिलेमलिखेकी धमकिनमें ❋ सब दल रेन बेन ह्वइजाय ।
भगे सिपाही चौंड़ावाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखो जब चौंड़ाने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
यक ललकार दई मलिखेको ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ पहले चोट करौ तुम आय ।

सांग उठाई तब चौंड़ाने ❀ सो मलिखेपर दई चलाय ।
घोड़ी कबुतरी दहिने ह्वइगइ ❀ नीचे सांग गिरी अरराय ॥
खैंचि शिरोही लइ मलिखेने ❀ औ चौंड़ा पर पहुँचे जाय ।
चोट चलाई तब हौदा पर ❀ हौदा टूक टूक होइ जाय ॥
मलिखे मनमें सोचन लागे ❀ हम ना करैं विप्रको घात ।
बांधि जंजीरन लौ चौंड़ाको ❀ अपने दलमें राखो जाय ॥
चुरियांबिछिया त्यहिपहिरादी ❀ औ करि दियौ जनाना भेष ।
माथे बेन्दी दइ चौंड़ाके ❀ नाक नथुनियां दइ पहिराय ॥
डंड बांधिकै उहि चौंड़ाकी ❀ सेन्दुर मांग दियो भरवाय ।
एक पालकी तुरत मंगाई ❀ तामें ताहि दियो गिरवाय ॥
परदा डारि दियो पलकीपर ❀ दुइ हरकारा लिये बुलाय ।
बहु समझाय दियो मलिखेने ❀ पृथीराजसे कहियो जाय ॥
चौंड़ा जीति गयो सिरसामें ❀ सिरसाकिला दियो गिरवाय ।
डोला खंदायो चन्द्रावलिको ❀ तुम्हरे पास दियो भिजवाय ॥
इतनी सुनतै चलो सांड़िया ❀ पलकी उठी चौंड़िया क्यार ।
पलकी आई पृथीराजपै ❀ मनमें बहुत खुशी चौहान ॥
जो जो बात कही मलिखेने ❀ सो हरकारा कही सुनाय ।
खोलिकै पलकी राजा देखी ❀ तामें चौंड़ा परो दिखाय ॥
मन खिसियाने पृथीराज तब ❀ दांतन अंगुरी रहे दबाय ।
बड़ो बीर है सिरसावाला ❀ जासे हारि गई तलवारि ॥
डंड खेलिकै तब चौंड़ाकी ❀ मनमें सोचि रहे चौहान ।
बोले पारथ तब पिरथीते ❀ दादा धीर धरो मनमाहिं ॥
मारि गिरैहौं मैं मलिखेको ❀ नाहक सोच करत हौ आज ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❀ औ गणपतिके चरण मनाय ॥
कहौं लड़ाई अब पारथकी ❀ याको सुनियो कान लगाय ।
सूरज उदै भयो पूरबमें ❀ किरणन कीन जगत उजियार ॥

पारथ वीर उठा पलंगते ❋ लश्कर हुक्म दियो फरमाय ॥
बजे नगारा हमरे दलमें ❋ जल्दी फौज होय तैयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्रा सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकाके जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
पैदल सजिगे सब लश्करके ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
सुनी खबरि जब नरमलिखेने ❋ अपनो लश्कर लियो सजाय ।
घोड़ी कबुतरीको सजवायो ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरेपर पहुँचे जाय ।
बोले पारथ नर मलिखेते ❋ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
सम्हरिकै बैठो तुम घोड़ीपर ❋ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ समुहे लड़ौ आय मैदान ॥
होय पराक्रम जो देहीमें ❋ तो तुम हमैं देउ दिखलाय ।
इतनी सुनिकै पारथ ठाकुर ❋ तुरतै हल्ला दियो कराय ॥
खटखट तेगा बाजन लागे ❋ क्षत्रिन मारु मारु रट लागि ।
मलिखे पारथ दोनों भिड़िगये ❋ अपनी अपनी चोट बचाय ॥
कबहुँक तेगा पारथ मारैं ❋ कबहुँक हनैं बीर मलिखान ।
वज्र समान देह दोनोंकी ❋ तामें तेगा नाहिं अनियाय ॥
दिनभर बीतै लड़त लड़त तहँ ❋ संध्याकाल बन्द ह्वइ जाय ।
भोर होत खन दोनों अभिरैं ❋ यहिविधि बीति गये दिन सात ॥
इक दिन मलिखे सोचन लागे ❋ औ रानीपै पहुँचे आय ।
बोली रानी तब मलिखेते ❋ काहे बदन गये कुम्हिलाय ॥
कौन बातको तुम सोचत हौ ❋ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
बोले मलिखे तब रानीते ❋ हमते कछू कही ना जाय ॥
पत्थर देही है पारथकी ❋ जामैं तेग नाहिं अनियाय ।
सात दिना बीते दंगलमें ❋ मारे न मरै पिथौरालाल ॥

बोली गजमोतिन मलिखेते ❀ हम इक जतन देयँ बतलाय ।
दिनभर देही पाथर कहिये ❀ सन्ध्यासमय मोम ह्वइजाय ॥
कालिह लड़ाई करौ रातमें ❀ तुम्हरो काम सिद्धि ह्वइ जाय।
हाल जानि यह नरमलिखे तब ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वइजाय ॥
भोर होत खन धावा करिदौ ❀ दोनों लड़न लगे मैदान ।
चारि पहर बीते दंगलमें ❀ सन्ध्याकाल रह्यो नियराय ॥
मुर्चा फेरि दियौ पारथने ❀ तब हँसि कही बीरमलिखान ।
भारी जोधा हौ पारथ तुम ❀ क्यों समुहेते चले बराय ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिनके ❀ जो हटि धरैं पिछारी पांव ।
जूझ अघाय करौ हमरे सँग ❀ हौ तुम बीर पिथौरालाल ॥
तेहा आय गयो पारथको ❀ समुहे लड़न लाग तत्काल ।
करी चोट जबहीं मलिखेपर ❀ मलिखे लीन्ही चोट बचाय ॥
सेल उठाई तब मलिखेने ❀ सो पारथ पर दई चलाय ।
तुरतै गिरगे पारथ ठाकुर ❀ मलिखे खैंचि लई तलवारि ॥
मूंड काटिलियो तब पारथको ❀ औ लश्करको दियो भगाय ।
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❀ पारथ जूझि गयो मैदान ॥
बहुत सोच कीन्हों पिरथी तब ❀ भारी शूर बीर मलिखान ।

अथ धीरसिंह व मलिखान की लड़ाई

सदा भवानी दाहिनी कहिये ❀ औ सन्मुखपर रहैं गणेश ॥
रक्षा करैं पांच देवता मिलि ❀ नितप्रति ब्रह्मा विष्णु महेश ।
जूझे पारथ जब खेतनमें ❀ पाई खबरि पिथौरा राय ॥
तुरतै बुलवायो धाँधूको ❀ साउँत शूर लिये बुलवाय ।
करी सलाहैं महाराजने ❀ बीरा तुरतै दियो धराय ॥
कौनसो क्षत्री है हमरे दल ❀ लावौ बाँधि बीर मलिखान ।
मुश्क बांधिकै नर मलिखेकी ❀ हमरी नजर गुजारै आय ॥
पहर एक बीराको ह्वइगौ ❀ सबके भूलि गये औसान ।

कोउ न देखै वा बीरातन ❋ तब पिरथी मन सोचन लाग ॥
धीरसिंहको तुरत बुलाये ❋ औ यह कही बीर चौहान ।
बांधि लै आवौ तुम मलिखेको ❋ यह तुम मानी कही हमारि ॥
बात मानिकै धीरसिंहने ❋ तुरतै बीरा लियो चबाय ।
चले धीरसिंह तब हाथीपर ❋ चौबिस लीन्हे साथ सवार ॥
तीनि घरी मारगमें बीते ❋ औ फाटकपर पहुँचे जाय ।
कही धीरसिंह दरवानीते ❋ फाटक तुरत देउ खुलवाय ॥
बोलो दरवानी धीरजते ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
हाथी चढ़िकै जान न देहौं ❋ नाहीं हुकम बीर मलिखान ॥
उतरे धीरसिंह हाथीते ❋ औ घोड़ापर भये सवार ।
दुसरे फाटकपर पहुँचे जब ❋ तब दरवानीने कही सुनाय ॥
कोउ न जावै घोड़ा चढ़िकै ❋ है यह हुकम बनाफरक्यार ।
यह सुनि धीरसिंह सोचे मन ❋ कीन्हों यह प्रबन्ध मलिखान॥
बांधो घोड़ा तब फाटकपर ❋ पैदल चला धीर सरदार ।
भीतर बँगलामें पहुँचे जब ❋ चौबिस लिये संग सरदार ॥
देखी शोभा जब बँगलाकी ❋ बहुतै खुशी भयो सरदार ।
खम्भ अठासीको बँगला है ❋ जहँपर बना जड़ाऊ काम ॥
बिछे गलीचा हैं मखमलके ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार ।
सिंहासन सोहै सोनेको ❋ बीचमें बैठे बीर मलिखान ॥
हीरा दमकै है माथेपर ❋ ऊपर चौंर ढुरै गजगाह ।
नचैं कंचनी वा बँगलामें ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
मचियाके सँग मचिया रगड़ै ❋ मोढ़ा रगड़ि रगड़ि रहिजाय ।
एक हजार ज्वान पंजाबी ❋ काबुलके हजार सरदार ॥
सिंहकि बैठक क्षत्री बैठे ❋ सबके बीच बीर मलिखान ।
सँगके क्षत्री बाहर छोड़े ❋ अकिला गया धीर सरदार ॥
पांच कदम जब मलिखे रहिगो ❋ धीरसिंहने करी जोहार ।

नजरिबदलिगइ नर मलिखेकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय।
बैठे धीरसिंह चौकीपर ❋ औ मलिखेते लगे बतान॥
हमको भेजो है पिरथीने ❋ की मलिखेको लावो साथ।
सङ्ग हमारे जो चलिहौ तुम ❋ ह्वइहैं खुशी बीर चौहान॥
राज करो बैठे सिरसामें ❋ चलिकै मिलो पिथौरासाथ।
बीरा चाबो हम लावनको ❋ सो तुम राखो लाज हमारि॥
संग न चलिहौ जो हमरे तुम ❋ तौ जग ह्वइहैं हँसी हमारि।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ सुनिये धीरसिंह महराज॥
शीश झुकैहौं परमेश्वरको ❋ जाने जन्म दियो संसार।
करे अधीनी जो क्षत्री ह्वइ ❋ ताकी माताको धिक्कार॥
हम तो मिलि हैं तेगधारते ❋ सो तुम वचन करौ परमान।
बोले धीरज फिरि मलिखेते ❋ मलिखे मानो बात हमारि॥
चलिकै मिलिहौ पृथीराजते ❋ तुम्हरे देहैं प्राण बचाय।
जो कछु होवे तुमरे जियको ❋ हमरे जीवनको धिक्कार॥
फिरिकै ज्वाब दियो मलिखेते ❋ हठ ना करो हमारे साथ।
सात लाखते पिरथी आये ❋ चाहे चढ़ैं पचासी लाख॥
करैं अधीनी ना पिरथीकी ❋ हमको कौन पड़ी परवाह।
तुम तौ मित्र लगत आल्हाके ❋ आल्हा भैया लगत हमार॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❋ करिहौं नाहिं अधीनी जाय।
काल बिराजत है सबके शिर ❋ कोऊ आज्ञु मरै कोउ काल्हि॥
करैं खुशामद जो काहूकी ❋ हमरो क्षत्री धर्म नशाय।
हमहिं भरोसा है अपने बल ❋ जबतक हाथ रहै तलवारि॥
हम नहिं जैहैं पृथीराजपै ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय।
यह कहि दीजै पृथीराजते ❋ मनके मेटि लेउ अरमान॥
सुनीबात जब यह मलिखेकी ❋ गुस्सा भयो धीर सरदार।
तुरतै उठिकै सांग उठाई ❋ औ बँगलामें धमकी जाय॥
सात तवा सोनेके कहिये ❋ तिनके वारपार ह्वइजाय।

बोले धीरसिंह गुस्सा ह्वै ❋ मलिखे सुनौ हमारी बात ॥
सांग उखारो या हमरी तुम ❋ या तुम चलो हमारो साथ ।
मलिखे सोचे अपने मनमें ❋ है यह धीर वीर सरदार ॥
है बरदानी यहु देवीको ❋ याको जानत सकल जहान ।
बोले मलिखे तब धीरजते ❋ धीरज धरो धीर सरदार ॥
करिकै सुमिरन जगदम्बैको ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार ।
मारी ठोकर नर मलिखेने ❋ लैकै सांग दई पकराय ॥
देखि हाल यह नरमलिखेकी ❋ धीरज गये सनाका खाय ।
चलिभै धीरज तब सिरसाते ❋ और लश्करमें पहुँचे जाय ॥
आवत देखो धीरसिंहको ❋ पृथीराजने कही सुनाय ।
हाल बताय देउ धीरज तुम ❋ यह सुनि धीर बतावन लाग ॥
बड़ा बहादुर सिरसावाला ❋ जाकी जगजाहिर तलवारि ।
बहुतक हमने तहँ समुझायो ❋ मलिखे एक ना मानी बात ॥
सांग गाड़ि दई हम बँगलामें ❋ सो मलिखेने दई उखारि ।
जीति न पैहो तुम मलिखेको ❋ हैं तलवारि धनी मलिखान ॥
सुनो हाल जब यह पिरथीने ❋ मनमें गये सनाका खाय ।
हारि मानि गये मन अपनेमें ❋ है बड़वीर धीर मलिखान ॥

मलिखान विजय और सुलिखानका स्वर्गवास

दोहा—सिरसामें बहु युद्धकरि, लड़े बीर सुलिखान ।
त्यागि प्राण रणखेत महँ, पायो पद निर्वान ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ लैकै रामचन्द्रको नाम ।
विजय सुनाऊँ अबमलिखेकी ❋ वर्णन करौं मरण सुलिखान ॥
हुक्म दियो जब पृथीराजने ❋ लश्कर साजिकै होय तयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्रिन बांधि लिये हथियार ॥
आदि भयंकर हाथी साजो ❋ तापर चढ़े बीर चौहान ।

ताहर चढ़िगै दलगंजनपर ❋ सब दलसाजि भयो तैयार ॥
चन्दन बेटा पृथीराजको ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ।
धांधू तैयार भयो लरिबेको ❋ भौरानँद पर भये सवार ॥
हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चढ़ा चौंड़िया राय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डंका दियो बजाय ॥
चार चौसँधे के धूरेपर ❋ पहुँची फौज पिथौरा केरि ।
सुनी खबरि जब नरमलिखेने ❋ घोड़ी कबुतरी लई सजाय ॥
फांदि बछेरी पर चढ़ि बैठे ❋ औ लश्करको लियो सजाय ।
घोड़ी हिरौंजिनि त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर सुलिखान ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ धूरे पर पहुँचे जाय ।
समुहे देखो नरमलिखेको ❋ पिरथी हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले पृथीराज मलिखेते ❋ क्यों यह किला लियो बनवाय ।
किला गिराय देउ अबहीं तुम ❋ इतनी मानो कही हमारि ॥
इतनी सुनतै नर मलिखेने ❋ पृथीराजको करी सलाम ।
बोले मलिखे पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
किला बनाया हम अपनेबल ❋ सो हम कैसे देयँ गिराय ।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ ताते कहौं समुझिके बात ॥
धरती बंजर हम यह देखी ❋ तब यह किला लियो बनवाय ।
काम तुम्हारो कछु अटको ना ❋ काहे रारि बढ़ाई आय ॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ नर मलिखेते कही सुनाय ।
किला गिरैहौ जो अबही ना ❋ सिरसा गर्द दिहौ करवाय ॥
तापर ज्वाब दियो मलिखेने ❋ क्यों तुम वृथा करत बकवाद ।
गर्व न राखो हम काहूको ❋ हमको जानत सब संसार ॥
गये बरायत लै ब्रह्माकी ❋ द्वारै हाथी दियो पछारि ।
सातौ लरिका तुम्हरे बांधे ❋ सातौ भांवरि लईं डराय ॥
सिरसा छीनि लियो पारथते ❋ तब कहँ हते बीर चौहान ।
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥

बत्ती दैदेउ इन तोपनमें ❀ अबहीं किला देउ गिरवाय ।
झुके खलासी तब तोपनपर ❀ तुरतै बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ चहुँदिशि धुवाँ रह्यो मँडराय ।
अररर गोला छूटन लागे ❀ रणमें होय दनाक दनाक ॥
चारि घरीभरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइजाय ।
तोपैं छांड़ि दईं ज्वानननने ❀ अपनी खैंचि लईं तलवारि ॥
दोनों फौजनके अन्तरमें ❀ रहि गयो तीनि कदम मैदान ।
खटखट तेगा बाजन लागो ❀ जूझन लागे अनेकन ज्वान ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❀ सबके मारु मारु रट लागि ।
पैदल अभिरि गये पैदलसँग ❀ औ असवारनते असवार ॥
हौदाके सँग हौदा मिलिगये ❀ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ।
सूँड़ि लपेटा हाथी ह्वइगे ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
चन्दन बेटा जो पिरथीको ❀ ताने घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जहँपर लरत रहे नर सुलिखे ❀ चन्दन तहाँ पहुँचे जाय ॥
बोले चन्दन नर सुलिखेते ❀ तुम्हरो काल पहूँचो जाय ।
यह कहिगुर्ज लियो चन्दनने ❀ सो सुलिखेपर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई सुलिखेने ❀ चन्दन खैंचि लई तलवारि ।
करोजड़ाका जब सुलिखे पर ❀ सुलिखे लीन्ही ढाल अड़ाय ॥
तीनि शिरोही चन्दन मारी ❀ सुलिखे लीन्ही चोट बचाय ।
बोले सुलिखे तब चन्दनते ❀ अब तुम खबरदार ह्वइजाव ॥
खैंचि शिरोही लइ सुलिखेने ❀ सो चन्दनपर दई चलाय ।
ढाल अड़ाई तब चन्दनने ❀ तापर भयो जड़ाका जाय ॥
ढालफटिगइ तब चन्दनकी ❀ उनको छूटि जनेवा जाय ।
चन्दन जूझि गये खेतनमें ❀ ताहर गये सनाका खाय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहरने ❀ औ सुलिखेको दइ ललकार ।
खबरदार रहियो घोड़ीपर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
इतनी सुनिकै तब सुलिखेने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।

करो जड़ाका तब ताहरपर ❋ ताहर दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
गुर्ज उठायो तब सुलिखेने ❋ औ ताहरपर दियो चलाय ।
घोड़ा हटिगौ तब ताहरको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
गुस्सा ह्वैके तब ताहरने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ।
चोट चलाई नर सुलिखेपर ❋ सुलिखे दीनी ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंडावाली ❋ सोने फूल गिरे झहनाय ।
सुलिखे जूझि गये खेतनमें ❋ पाई खबरि बीर मलिखान ॥
घोड़ी बढ़ाई तब मलिखेने ❋ औ ताहरपै पहुँचे जाय ।
भाला लैकै नर मलिखेने ❋ सो ताहर पर दिये चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ाके ❋ ताहर घोड़ा गये भगाय ।
मोह आयगो तब भाईको ❋ सोचन लगे बीर मलिखान ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ मलिखे खैंचि लई तलवारि ।
जैसे भिड़हा भेड़िन पैठे ❋ ज्यों गौवनमें छूटैं बाघ ॥
पान तमोली जैसे कतरै ❋ जैसे खेती लुनै किसान ।
तैसे रणमें मलिखे पैठे ❋ बहुतक क्षत्री दिये गिराय ॥
राजा अंगद नैमिषारको ❋ सो मलिखेने दियो गिराय ।
राजा सूरत हाड़ावाला ❋ औ दिल्लीके तीनि सरदार ॥
राजा इन्द्रसेन बांदाके ❋ मारे तुरत बीर मलिखान ।
अकिले मलिखेकी डपटनमें ❋ सब दल रेन बेन ह्वैजाय ॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले ❋ अपने डारि डारि हथियार ।
मुर्चा हटिगो पृथीराजको ❋ लश्कर आठ कोस भगिजाय ॥
मारत आवै मलिखे ठाकुर ❋ हाहाकार परो रणमाहिं ।
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ है तलवारि धनी मलिखान ॥
बड़ो लड़ैया सिरसा वाला ❋ जाके कछू न पार बसाय ।
पहुँचे पृथीराज दिल्लीमें ❋ सिरसा आय गये मलिखान ॥
मोहरा मारो पृथीराजको ❋ जीते जंग बीर मलिखान ।

बीर मलिखानका धोखेसे मारा जाना और गजमोतिनिका सती होना

दोहा—सिरसामें अति युद्ध करि, महाबीर मलिखान।
धोखा दै मारौ गयो, जीति गयो चौहान ॥ १ ॥

राम बनावे सो बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनिजाय।
मलिखे मारे गये धोखेते ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
माहिल राजा उरईवाले ❋ जो परिहार गोटैयाटार।
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठे ❋ औ सिरसाको भये तयार ॥
सोचत चलि भये माहिल राजा ❋ पहुँचे गढ़ सिरसामें जाय।
महल जौन था रनिब्रह्माको ❋ द्वारे गये महिल परिहार ॥
खबरि सुनाई तब बांदीने ❋ माहिल ठाढें पँवरि दुआर।
तुरत बुलाय लियो माहिलको ❋ रंग महलमें पहुँचे जाय ॥
बोली ब्रह्मा तब माहिलते ❋ बीरन हाल देउ बतलाय।
कहौ छेम तुम गढ़ उरईकी ❋ औ अभईकी कहौ हवाल ॥
कुशल छेम है सब उरईमें ❋ बैठे राज करौं गढ़ माहिं।
देन बधाई हम आये हैं ❋ मलिखे जीति लियो मैदान ॥
पै इक बिगरी बात यहां पर ❋ रणमें जूझि गये सुलिखान।
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागी ❋ बीरन सुनो हमारी बात ॥
नहिं कोउ क्षत्री है दुनियांमें ❋ जीते जौनु बीर मलिखान।
जबलौं पांव पद्म कायम है ❋ जीवित रहै मोर मलिखान ॥
है बरदानी जगदम्बेको ❋ साची मानौं बात हमारि।
इतनी सुनिकै माहिल राजा ❋ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ॥
जोई रोगीको भावति थी ❋ सोई वैद बताई आय।
भेद लेन माहिल आये थे ❋ सो ब्रह्माने दियो बताय ॥
चलि भये माहिल तब सिरसाते ❋ औ दिल्लीकी पकरी राह।
पहुँचे माहिल दिल्लीगढ़में ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥

उतरि बछेरीते भुइँ आये ❀ घोड़ी थामि लई थनवार ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❀ माहिल रहिगे माथ नवाय ।
नजरि बदल गइ पृथीराजकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल पृथीराजते ❀ भई सहाय शारदा माय ॥
गये रहैं हम गढ़सिरसाको ❀ भ्रह्मा हाल दियो बतलाय ।
पायँ पद्म है नर मलिखेके ❀ ताते जीति सकै ना कोय ॥
पद्म फाटिजाय जो तरवाको ❀ तौ मरिजाय बीर मलिखान ।
जतन बतावैं हम तुमको अब ❀ सोई करौ बीर चौहान ॥
ऊभे खुदवावौ धूरे पर ❀ तामें साँगैं देउ गड़ाय ।
पद्म फाटि जैहै जबहीं तब ❀ सब्ब बनि जैहैं काम तुम्हार ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ माहिल भली बताई आय ।
हुक्म देदियो तब पिरथीने ❀ दुइसै ऊभे होयँ तयार ॥
गढ़ सिरसा केरे धूरे पर ❀ ऊभे तुरत लेउ खुदवाय ।
खुले रहै सूरंग एकसौ ❀ इकसौ पटपर होयँ तयार ॥
भाला बर्छी तिनमें गड़ियो ❀ सांग कटारी देउ गड़ाय ।
यह सुनिचलिभे सुरँग खोदैया ❀ औ सिरसागढ़ पहुँचे जाय ॥
ऊभे त्यार किये धूरे पर ❀ भाला बर्छी दिये गड़ाय ।
हुक्म दे दियो जो पिरथीने ❀ तैसेइ ऊभे किये तयार ॥
खबरि कराई पृथीराजको ❀ ऊभे सबै भये तैयार ।
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❀ तुरत नगरची लियौ बुलाय ॥
हुक्म देदियो महाराजने ❀ लश्कर डंका देउ बजाय ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❀ क्षत्री सबै भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिन बन्दी ❀ दुसरे बाँधि लियो हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बांके घोड़नके असवार ।
आदि भयंकरको सजवायो ❀ तापर चढ़े बीर चौहान ॥

हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चढ़ा चौंडिया राय ।
घोड़ा दलगंजन सजवायो ❋ तापर ताहर भये सवार ॥
भौंरानँद हाथी सजवायो ❋ तापर धांधू भये सवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ सिरसाको धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डारि दिये धूरे पर ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ।
कागद लैके कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान ले हाथ ॥
लई लेखनी कर कंचनकी ❋ पिरथी लिखनलाग अब हाल ।
लिखो हाल यह पृथीराजने ❋ पढ़ियो याहि बीर मलिखान ॥
किला गिराय देउ सिरसाको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
किला गिरैहौ ना जल्दी जो ❋ तुम्हरे प्राण बचनके नाहिं ॥
ऐसी पाती लिखि पिरथीने ❋ सो धावनको दइ पकराय ।
चलो साँड़िया तब लश्करते ❋ औ सिरसामें पहुँचो जाय ॥
जहां कचहरी थी मलिखेकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी नरमलिखेको ❋ पाती गही दई चलाय ॥
खोलिकै पाती मलिखे बांची ❋ हरकाराको दियो जबाब ।
जाय सुनावै पिरथीराजको ❋ सिरसाकिलागिरनको नाहिं ॥
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ तुम किला देउ गिरवाय ।
यह कहिहुक्मदियो मलिखेने ❋ लश्कर जल्दी होय तैयार ॥
बजो नगारा तब सिरसामें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ।
घोड़ी कबुतरी त्यार कराई ❋ तापर चढ़े बीर मलिखान ॥
समुहे छींक भई मलिखेकी ❋ तब ब्रह्माने कही सुनाय ।
असगुन ह्वइगौ है समुहेपर ❋ तुम घर बैठि रहो मलिखान ॥
मलिखे बोले तब माता ते ❋ माता बोलौ बात सम्हारि ।
बैरी चढ़ि आयो सिरसापर ❋ कैसे बैठि रहैं घरमाहिं ॥
जो हम बैठि रहैं घर भीतर ❋ हमरो जियत मरन ह्वइ जायँ ।
सगुन बिचारैं बनियां बाटू ❋ जो धरि मौर बियाहन जायँ ॥
सगुन बिचारैं क्या क्षत्रीहै ❋ जो रण चढ़िकै लोह चबायँ ।

सदा न जीवत कोऊ रहिहै ❋ कोऊ आज मरै कोउ कालिह ॥
जो मरि जैहैं खटिया परिकै ❋ जगमें कोउ न लैहैं नाम ।
जो मरि जैहैं रणखेतनमें ❋ ह्वइहैं जुगन जुगन लौंनाम ॥
सोचि समुझि यह आज्ञा देदेउ ❋ माता वचन करो परमान ।
समुहे गजमोतिन ठाढ़ी थी ❋ सो मलिखेते लगी बतान ॥
माता हटकति है जैबे को ❋ तुम ना जाउ समर मैदान ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे ❋ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
लश्कर लै पिरथी चढ़ि आये ❋ कैसे बैठे रहे घरमाहिं ।
हँसी हमारी जगमें ह्वइहै ❋ बुड़िहै सात साखिको नाम ॥
रानी बैठो रंगमहल में ❋ मनमें धीर धरो महरानि ।
इतनी कहिकै मलिखे चलिभे ❋ मारू डंका दियो बजाय ॥
कूच कराय दियो लश्करमें ❋ औ धूरे पर पहुँचे जाय ।
घोड़ा बढ़ायो तब ताहरने ❋ औ मलिखेते कही सुनाय ॥
किला गिराय देउ जल्दीते ❋ है यह हुक्म पिथौरा क्यार ।
गुस्सा ह्वइ तब मलिखे बोले ❋ औ ताहरते कही सुनाय ॥
एक पिथौराकी गिनती क्या ❋ कोटिन चढ़ै पिथौरा राय ।
मारि भगैहैं मैं दिल्लीलौं ❋ कारे पाखे दिहैं कराय ॥
किलाके समुहे जो कोउ दिखिहै ❋ मुखमें धांसि दिहौं तलवार ।
देउँ चुनौती पृथीराजको ❋ हमरो किला देयँ फिरवाय ॥
मारि सिरोहिनसे मुड़ु तोरौं ❋ जौलौं रहै हाथ तलवारि ।
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ मरदूमी देउ दिखाय ॥
देखैं कैसे तुम क्षत्री हौ ❋ सन्मुख लड़ौ आय मैदान ।
इतनी सुनिकै ताहर जरिगै ❋ गुस्सा गई देहमें छाय ॥
हुक्म दे दियो तब ताहरने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तोपन बत्ती दई चलाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअना रच्यो सरग मँडराय ।
अररर गोला छूटन लागे ❋ सर सर परी तीरकी मारु ॥

सनन सनन गोली छूटैं ❋ कहकह करै अगिनियां बान।
डेर पहर भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानननने ❋ लम्बे बन्द करैं हथियार।
खैंचि शिरोही लई क्षत्रिनने ❋ खटखट चलन लगी तलवारि॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रटलागि।
खैंचि शिरोही मलिखे ठाकुर ❋ समुहे गोला गये समुहाय॥
पैग पैगपर पैदल गिरि गये ❋ उनके दुइ दुइ पैग असवार।
बिसे बिसेपर हाथी डारे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार॥
लोथी डारीं जो लोहूँमें ❋ मानौ मगरमच्छ उतरायँ।
डारीं पगियाँ जो लोहूँमें ❋ जनु नद्दीमें परे सिवार॥
ढालैं डारीं जो लोहूँमें ❋ मानौ कछुआसी उतरायँ।
पहर एक भरि चली शिरोही ❋ क्षत्री लैलै भगे परान॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ मुर्चा हटौ पिथौरा क्यार।
अकिले मलिखेकी धमकिनमें ❋ सब दल रैन बैन ह्वइजाय॥
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ पृथीराजको करी जोहार।
बोले मलिखे पृथीराजते ❋ तुम सुन लेउ बीर चौहान॥
आजु अखाड़ेमें बरनी है ❋ अब तुम खेलौ जूझ अघाय।
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ है यह महावीर मलिखान॥
जौलौं बारी लेइँ हम करमें ❋ तौलौं मारिदेय तलवारि।
सोचि समुझिकै पिरथी बोले ❋ औ मलिखेते कही सुनाय॥
बरनी तुम्हरी है ताहरते ❋ सो तुम खेलो जूझ अघाय।
यह मन भाई नर मलिखेके ❋ घोड़ी कबुतरी दई बढ़ाय॥
ऐंड़ लगाय दई घोड़ीके ❋ ऊभे फांदि गई वापार।
पटपर ऊभे पर जबहीं गइ ❋ जातै घोड़ी गई समाय॥
लगी सांग जब पांव पदुममें ❋ तरवा फटो बीर मलिखान।
मूर्छित होन लगे मलिखे जब ❋ सोचे मनहिं बीर मलिखान॥

काल हमारो अब आयो है ❀ धोखा दियो पिथौरा राय ।
धोखा देवै जो काहूको ❀ ताको बार बार धिक्कार ॥
सन्मुख लरतो जो हमरे संग ❀ मरतो बीर धनी चौहान ।
मनकी बात रही मनहीमें ❀ यहि विधि रोय कहैं मलिखान॥
तड़पी घोड़ी नर मलिखेकी ❀ औ ऊभेते लाईं निकारि ।
देखिलाश तब नर मलिखेकी ❀ धावन खबरि दई पहुंचाय ॥
सुनी खबरि जब माता ब्रह्मा ❀ भुइंमें गिरी तड़ाका खाय ।
बांदी पहुंची सतखंडापर ❀ औ रानीते कही सुनाय ॥
बदी उड़ानी है राजाकी ❀ सुनियत जूझे कन्त तुम्हार ।
सुनतै रानी गइ द्वारे पर ❀ औ धावनते पूंछो हाल ॥
हाल सुनायो तब धावनने ❀ तुरतै डोला लियो मंगाय ।
तुरत सवार भई डोला पर ❀ माता ब्रह्मा संग लिवाय ॥
डोला पहुँचो गजमोतिनिकी ❀ जहंपर लाश बीरमलिखान ।
माता ब्रह्मा बहुतै रोवै ❀ लै लै नाम बीर मलिखान ॥
लाश जहांपर थी मलिखेकी ❀ तहंपर गयो पिथौरा राय ।
तब ललकारो गजमोतिनिने ❀ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
तुम यह जानी अपने मनमें ❀ मारे गये बीर मलिखान ।
खेदिकै मरिहौं मैं दिल्ली लौं ❀ लश्कर कटा दिहौं कटवाय ॥
अबहीं शाप देहौं तुमको मैं ❀ तुरत यहां भस्म ह्वइजाउ ।
ताते मानौ कही हमारी ❀ दिल्लिहि लौटिजाउ महराज ॥
सत्त विधाता हमको दीन्हों ❀ ह्वइहौं सती कन्तके साथ ।
काम न कीन्हों तुम नीको यह ❀ जो धोखा दै दियो मराय ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❀ कीन्हो दगा हमारे साथ ।
तीन महीना तेरह दिनमें ❀ नदिया बहैं रक्तकी धार ॥
नगर महोबे ते दिल्ली ❀ ह्वइहैं सबै सोहागिन राँड़ ।
अब तुम देखौ ना सिरसातन ❀ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥

इतनी सुनिकै गजमोतिनिते ❀ मनमें डरे पिथौरा राय।
मुर्चा फेरो तब जल्दीते ❀ दिल्ली कूच दियो करवाय॥
हुक्मफेरिदियोतब गजमोतिनि ❀ चन्दन लकड़ी लईं मँगाय।
जितनो खजाना था सिरसाको ❀ सो सब पुण्यकरो महरानि॥
माता ब्रह्माप्राण छोड़ि दियो ❀ ताकी क्रिया दई करवाय।
चारि चौंसधेके धूरे पर ❀ तुरतै चिता लई रचवाय॥
सबने समुझाये रानी को ❀ बैठी राज करौ महरानि।
तापर ज्वाव दियो रानीने ❀ करिहौं राज कंतके साथ॥
यह कहि सुमिरिमातदेबीको ❀ बैठी तुरत चितापर जाय।
सुमिरनकरिकै सतमल्हनाको ❀ सरमें आगी लई लगाय॥
सती पुकारै सरके ऊपर ❀ जागौ जागौ कन्त हमार।
सती ह्वइगइ गजमोतिनि तब ❀ आल्हा ऊदनिको लै नाम॥
ऐसी सती भई गजमोतिनि ❀ पहुंचो स्वर्गलोकमें जाय।
यहि विधि पूरन भयो समर यह ❀ सो हम कहिकै दियो सुनाय॥
आगे लड़ाई है सागरपर ❀ यारो सुनियो कान लगाय।
आल्हा गावौ पावस ऋतुमें ❀ सुमिरन करौ नित्य भगवान॥
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❀ सीताराम क्यार धरिध्यान।

इति सिरसागढ़की दूसरी लड़ाई समाप्त

श्रीः

कीरतिसागरपर भुजरियोंकी लड़ाई

★

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करकै नारायणको ❀ लैकै रामचन्द्रको नाम।
कहौं लड़ाई अब सागरकी ❀ शारद मोपै होउ सहाय ॥
लगो महीना अब सावनको ❀ घर घर होय तीज त्यौहार।
परे हिंडोला हैं घर घरमें ❀ सखियां गावैं राग मलार ॥
बेटी चन्द्रावलि मलहनाकी ❀ जो महुबेकी राजकुमारि।
झूला झूले सावन गावै ❀ लै लै नाम बनाफर क्यार ॥
करै यादि आल्हा ऊदनिकी ❀ नैनन बहै नीरकी धार।
नाम लेय जब नरमलिखेको ❀ तबहीं रोय उठै तत्काल ॥
चलि भये माहिल गढ़ उरईते ❀ औ दिल्लीकी पकरी राह।
पांच रोजकी मंजिल करिकै ❀ गढ़ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
जहां कचहरी पृथीराजकी ❀ माहिल तहां पहूँचे जाय।
करी बन्दगी महाराजको ❀ राजा चौकी दई डराय ॥
आवौ आवौ उरईवाले ❀ अपनो हाल देउ बतलाय।
बोले माहिल पृथीराजते ❀ अब ना राखौ देर लगाय ॥
चलिकै लूटि लेउ जल्दीते ❀ सूनो परो महोबा गांव।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❀ अपनो हुक्म दियो फरमाय ॥
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❀ लश्कर जल्द होय तैयार।
बजो नगारा तब दिल्लीमें ❀ सिगरी फौज भई तैयार ॥
आदि भयंकरको सजवायो ❀ तापर चढ़े पिथौरा राय।
चौड़ा धांधू ताहर सूरज ❀ सरदनि मरदनि भये तयार ॥

सजिकै भूप टंकवै आयो ❋ भूरा मुगल भयो तैयार ।
सात लाखते पिरथी साजे ❋ लैकै खुरासान गुजरात ॥
कूच कराय दियो दिल्लीते ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ महुबो धुरो दबायो जाय ॥
लश्कर बांटि दियो पिरथीने ❋ औ महुबेको लियो घिराय ।
कनवां खेरे पर धांधूने ❋ अपनौ डेरा दिये डराय ॥
चन्दन बगियामें पिरथीने ❋ अपने तम्बू दिये तनाय ।
कोऊ परिगे मदनताल पर ❋ कोउ वैरागि तालपर जाय ॥
खजुहा गढ़में कोऊ परिगो ❋ कोऊ लुहर गांव मैदान ।
बारह कोसी चौगिर्दामें ❋ झंडन रही लालरी छाय ॥
सिगरी रैयति गढ़ महुबेकी ❋ मनमें कांपि कांपि रहिजाय ।
रानी मल्हना सोचन लागी ❋ अब ना रहिहैं धर्म हमार ॥
लई आरती औ सामग्री ❋ देविकी मठी पहूँची जाय ।
करिकै पूजा जगदम्बेकी ❋ मल्हना होम दियो करवाय ॥
हाथ जोरिकै मल्हना बोली ❋ माता राखो धर्म हमार ।
पिरथी घेरो नगर महोबा ❋ संकट परो नगर पर आय ॥
होउ सहायक अब तुम माता ❋ औ गाढ़ेमें आवौ काम ।
सपना देउ जाय ऊदनिको ❋ माता मेरी अम्बिका माय ॥
आभा बोली तब देवीको ❋ रानी धीर धरौ मनमाहिं ।
काम तुम्हारो पूरन ह्वइहै ❋ ऊदनि ऐहैं नगर महोब ॥
मल्हना चलिभइ तब महलनते ❋ कनउज गई शारदा माय ।
आधी रातिकेर अमलामें ❋ सपना दियो अम्बिका माय ॥
ऊदनि सोवत थे बंगलामें ❋ तिनते देवी लगी बतान ।
पृथीराज घेरो महुबेको ❋ संकट परो नगर पर आय ॥
थर थर कांपै सिगरी रैयति ❋ कोऊ रंधो भात ना खाय ।
फाटक बन्दी है महुबेमें ❋ बहिरो आवै न भितरो जाय ॥

तुम सोवत हौ सुखनिंदियामें ❋ है सुखनींद रजापरिमाल ।
जल्दी पहुँचो तुम महुबेको ❋ राखौ धर्म चँदेले क्यार ॥
पबनी करावो चन्द्रावलिकी ❋ औ भुजरिनको देउ सिराय ।
यहि बिधि सपनेमें देबीने ❋ कहिदो हाल महोबे क्यार ॥
सुनते सपना यह सोवतमें ❋ ऊदनि उठे भरहरा खाय ।
ढेबा बहादुरते सपनेको ❋ सबियां हाल कह्यो समुझाय ॥
पिरथी घेरौ नगर महोबा ❋ दादा सगुन देउ बतलाय ।
पबनी खोटी जो ह्वइजैहैं ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी हमार ॥
ढेबा बोलेउ तब ऊदनिते ❋ जल्दी कूच दियो करवाय ।
करौ बहाना तुम आल्हाते ❋ लाखनि राना संग लिवाय ॥
करौ तयारी अब जल्दीते ❋ गुजरै घरी घरी पर ब्यार ।
करि सलाह दोनों चलि पहुंचे ❋ जहंपर हते कनौजी राय ॥
करी बन्दगी बघ ऊदनिने ❋ औ लाखनिते कह्यो हवाल ।
सपना दियो हमहिं देबीने ❋ हमरे काम सिद्ध ह्वइजाय ॥
होत सनीनो है महुबेमें ❋ ऐसी कहूं होत है नाहिं ।
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ महुबो हमहिं देउ दिखलाय ॥
ऊदनि बोले तब लाखनिते ❋ जान न दिहैं तुमहिं महराज ।
ताते चर्चा नाकरियो तुम ❋ की हम नगर महोबे जाहिं ॥
करो बहाना तुम गांजरको ❋ की हम खेलन जात शिकार ।
यहसलाहकरितीनोंचलिभये ❋ औ जैचंद कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी महाराजको ❋ तब जैचंदने कही सुनाय ।
कहांकि त्यारी तुमने कीन्ही ❋ यह सुनि कही उदैसिंह राय ॥
संग जात हैं हम लाखनिको ❋ गांजर खेलन जायं शिकार ।
आज्ञा दैदेउ तुम लाखनिको ❋ तब जैचंदने दियो जवाब ॥
जो कुछ तुम्हरे मनमें आवै ❋ सोई करौ ऊदैयसिंह राय ।
हुक्म पाय यह तीनौ चलिभये ❋ त्यारी करन लगे तत्काल ॥
पूछौ आल्हा तब ऊदनिते ❋ कहं जैबेको भये तयार ।

बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ लाखनि खेलन चले शिकार ॥
संग जात है हम लाखनिके ❋ दादा हुक्म देउ फरमाय ।
बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ भैया खेलन जाउ शिकार ॥
पै नहिं जैयो नगर महोबे ❋ यह सुनि ऊदनि दियो जवाब ।
जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड़ लै जायँ ॥
यह कहि चलिभै ऊदनिबांकुड़ा ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
हुक्म कराय दियो लाखनिने ❋ लश्करमें डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ।
ठाढ़ी देवै दरवाजे पर ❋ सो ऊदनिते लगी बतान ॥
कहाँकि त्यारी तुमने कीन्ही ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
साथ जात हैं हम लाखनिके ❋ गांजर खेलिहैं जाय शिकार ॥
बोली देवै तब ऊदनिते ❋ तुम ना जैयो नगर महोब ।
ऊदनि बोले तब देवैते ❋ हम ना जैहैं नगर महोब ॥
चरण लागिके तब माताके ❋ तुरतै चले उदैसिंह राय ।
सुनवां ठाढ़ी थी खिरकीमें ❋ ऊदनि तहां पहूँचे जाय ॥
पूँछन लागी सुनवां रानी ❋ कहांको डंका दियो बजाय ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
हाल बतैयो ना दादाते ❋ जियतै ह्वइहैं मरण हमार ।
जो सुनि पैहैं दादा आल्हा ❋ हमको घरसे दिहैं निकारि ॥
महुबो घेरो पृथीराजने ❋ बहिरो आवै न भितरो जाय ।
पृथीराज लुटिहैं महुबो जो ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी हमार ॥
करी तयारी हम महुबेकि ❋ लाखनि ढेबाको लै साथ ।
यह सुनि सुनवां बहुत खुशीह्वइ ❋ बघ ऊदनिते लगी बतान ॥
धन्य धन्य देवर हमरे तुम ❋ तुम बिन कौन करै यह काम ।
जल्दी जावै तुम महुबेकी ❋ भारी बिपदा देव नशाय ॥
चलिभै ऊदनि तब आगेको ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
ढेबा बहादुर आगम जाने ❋ जोगिन गुदरी लई सिलाय ॥

कूच कराय दियो कनउजते ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
तीनि रोजकी मंजिल करिकै ❋ नदि बितवैपर पहुँचे जाय ॥
छकड़न गेरू तहँ मंगवाई ❋ सो धरवाय लई तत्काल ।
कपड़ा रंगवाये जोगिनकै ❋ लश्कर जोगी लियो बनाय ॥
राति बसेरा करि नद्दी पर ❋ भोरहिं होन उतारा लाग ।
नदी पार ह्वइकै जोगिनकी ❋ अपने डेरा दिये डराय ॥
मीरा सैयद लाखनि राना ❋ ढेबा ऊदनि भये तयार ।
गुदरी पहिरि लई जोगिनकी ❋ अपने बाजा लिये उठाय ॥
लियो इकतारा मीरा सैयद ❋ ढेबा खंजरी लई उठाय ।
लई बांसुरी बघऊदनिने ❋ लाखनि डमरू लियो उठाय ॥
चारो जोगी गावत चलिभौ ❋ शोभा कछू कही न जाय ।
बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा सुनो हमारी बात ॥
पहिले देखिहैं गढ़ सिरसा हम ❋ पाछे चलिहैं नगर महोब ।
इतनी कहिकै चारौ जोगी ❋ गढ़ सिरसामें पहुँचे जाय ॥
ऊजरखेरा देखि ऊदयसिंह ❋ मनमें ऊदनि सोचन लाग ।
देखो फाटक गढ़सिरसाको ❋ उड़ि उड़ि काग बसेरा लेय ॥
हते बरदिया जो बगियामें ❋ सो जोगिनते लगे बतान ।
यहँ पर आये तुम काहे सब ❋ कोऊ भीख देवैया नाहिं ॥
सिरसागढ़केरो मालिक जो ❋ मारो गयो वीर मलिखान ।
इतनी सुनतै ऊदनि रोये ❋ ढेबा छांड़ि दई डिडकार ॥
देखि बरदिया बोलन लागे ❋ बाबा हाल देउ बतलाय ।
काहे बाबा तुम क्यों रोये ❋ क्या वे भाई लगैं तुम्हार ॥
बोले ऊदनि तब धीरे ते ❋ वे गुरु भैया लगत हमार ।
मोह आय गयो हमहिं यहांपर ❋ देखि न मिले वीर मलिखान ॥
कैसे मरण भयो मलिखेको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
बोले बरदिया तब ऊदनिते ❋ बाबा सुनौ हमारी बात ॥
पृथीराज दिल्लीते आये ❋ लश्कर सात लाख लै साथ ।

मारि भगायो नर मलिखेने ❀ तब तौ लौटि गये चौहान ॥
देत बधाई माहिल आये ❀ ब्रह्मा हाल दियो बतलाय ।
माहिल हाल कह्यो पिरथीते ❀ है यह पद्म वीर मलिखान ॥
चढ़ो पिथौरा फिर दिल्लीते ❀ औ धूरेपर कियो मुकाम ।
ऊभे खुदवाये धूरे पर ❀ तिनमें सांगैं दियो गड़ाय ॥
घास फूस डरवाय ऊपरते ❀ पटपर भूमि दई करवाय ।
खाली राखे आधे ऊभे ❀ तहँ पर खड़े पिथौरा राय ॥
करो बन्दगी पृथीराजको ❀ तब पिरथीने कही सुनाय ।
तुम्हरी ताहरकी बरनी है ❀ सो तुम खेलो जूझ अघाय ॥
मलिखे जानी यह धरती है ❀ घोड़ी आगे दई बढ़ाय ।
फांदिकै घोड़ी गइ पटपर पर ❀ तुरते भीतर गई समाय ॥
घाव सांगको लगो पदुममें ❀ तरवा फटो बीर मलिखान ।
घोड़ी कबुतरी घायल ह्वैगइ ❀ मूर्छित भये वीर मलिखान ॥
तड़पी घोड़ी तब भीतरते ❀ औ ऊपरको लाई निकारि ।
मुलिखे मारे गये पहलेही ❀ ब्रह्मा छांड़ि दिये तहँ प्राण ॥
रनि गजमोतिनि सत्ती ह्वैगइ ❀ आल्हा ऊदनिको लै नाम ।
रैयति जितनी थी सिरसाकी ❀ सो सब जहँ तहँ गई बराय ॥
धोखा दैकै पृथीराजने ❀ यहि विधि मारि दिये मलिखान ।
बोले बरदियाते ऊदनि तब ❀ सतीको चौरा देउ बताय ॥
ठौर बतायो तब ऊदनिको ❀ जोगी तहां पहूँचे जाय ।
देखिकै ऊदनि रोवन लागे ❀ हा दैया गति कही न जाय ॥
आभा बोली तब मलिखेकी ❀ अब ना मिलिहै भाय तुम्हार ।
रोये तुम्हारे कछु ह्वैहै ना ❀ अब तुम जावो नगर महोब ॥
रोयकै ऊदनि बोलन लागे ❀ हम ना जैहैं नगर महोब ।
थोरि दूरि पर रहैं चन्देले ❀ क्यों ना तुम्हरी करी सहाय ॥
जियत महोबे हम जैहैं ना ❀ कागा मरे हाड़ लै जायँ ।

बोली आभा गजमोतिनकी ❋ देवर सुनौ उदयसिंह राय ।
जल्दी जावौ तुम महुबेको ❋ यह क्यों खाक बटोरी आय ॥
पृथीराज लुटिहैं महुबेको ❋ तुम्हरे जीवनको धिक्कार ।
पबनी खोटी जो ह्वै जैहैं ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हार ॥
ताते जल्द जाउ महुबेको ❋ उनकी पबनी देउ कराय ।
जो तुम महुबेको जैहौ ना ❋ देहौं शाप भस्म ह्वइ जाउ ॥
इतनी सुनते जोगी चलिभे ❋ औ महुबेकी पकरी राह ।
जबहीं पहुंचे वे फाटक पर ❋ दरवानीने कही सुनाय ॥
हुक्म नहीं है महाराजको ❋ भीतर जान दिहैं हम नाहिं ।
बोले ऊदनि तब जल्दीते ❋ भीतर भिक्षा मंगिहैं जाय ॥
नाम सुना हम गढ़ महुबेको ❋ महुबे बसत रजा परिमाल ।
पारस पूजा है तिनके घर ❋ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥
फाटक खोलि देउ जल्दीते ❋ यह कहि अलख जगावन लाग ।
डारि मोहिनी दइ द्वारेपर ❋ फाटक तुरत लियो खुलवाय ॥
गावत गावत जोगी चलि भये ❋ औ पनिघटपर पहुंचे जाय ।
मोहित ह्वइगइ सब पनिहारी ❋ देखत एक पहर ह्वइजाय ॥
नैवा बांदी रनि मल्हनाकी ❋ सो अपने मन सोचन लागि ।
एक पहर पनिघटपर ह्वइगो ❋ सिगरो प्यास मरै रनिवास ॥
बांदी चलिभइ तब पनिघटते ❋ रंगमहलमें पहुंची जाय ।
रानी मल्हना जब गुस्सा भइ ❋ तब बांदीने कही सुनाय ॥
चारि जोगिया हैं पनिघटपर ❋ जिनके रूप न बरने जायं ।
देखि तमाशा लेउ तिनको तुम ❋ रानी पैया परौं तुम्हारि ॥
बोली मल्हना तब गुस्साह्वइ ❋ हमपर बिपति परी है आय ।
नाच रंग तोको भावत है ❋ हमरे नैन ओट ह्वइ जाय ॥
हाथ जोरिकै बांदी बोली ❋ रानी बार बार बलि जाउं ।
बड़े तेजधारी जोगी हैं ❋ तुम्हरो कामसिद्धि ह्वइजायं ॥
आज्ञा दै दइ तब मल्हनाने ❋ जल्दी जोगिन लाउ बुलाय ।

आई बाँदी तब जोगिनपै ❋ औ जोगिनते कही सुनाय ॥
तुमहि बुलायो है रानीने ❋ अबहीं चलो हमारे साथ ।
आये जोगी तब ड्योढ़ीमें ❋ देखो महल कनौजी राय ॥
बहुत खुशी भये लाखनिराना ❋ शोभा देखि देखि रहिजाय ।
रूप देखिकै उन जोगिनको ❋ मल्हना रानी उठी रिसाय ॥
पेट्ट फरैहौं बांदी तेरो ❋ तू छल कियो हियाँपर आय ।
ये हैं लरिका पृथीराजके ❋ इनछलियनको लाई बुलाय ॥
बोले ऊदनि तब रानीते ❋ धर्मकी माता लगौ हमारि ।
हमतौ लरिका हैं जोगिनके ❋ दुविधा छोड़ि देउ महरानि ॥
कुटी हमारी है गोरखपुर ❋ हमको रूपदियो करतार ।
फिरिकै मल्हना बोलन लागी ❋ रहि रहि मेरो प्रान घबराय ॥
तुमहौ लरिका कोइ राजनके ❋ साँची हमहिं देउ बतलाय ।
कहां मुदरिया यह तुम पाई ❋ जिनमें जड़े जवाहिरलाल ॥
झालरि लागी हैं मोतिनकी ❋ हाथन कड़ा सूबरन क्यार ।
कानन कुण्डल हैं सोनेके ❋ सो कहँ तुमहिं मिले महराज ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ माता सुनौ हमारी बात ।
कियो तमाशा गढ़ कनउजमें ❋ राजा जैचँदकी जहँ राज ॥
हुइ प्रसन्न तहं महाराजने ❋ हमको गुदरी दई सिलाय ।
तिलकारानी मोहित होय गइ ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ॥
तहंते पहुँचे हम रिजगिरिमें ❋ जहँ पर बसत बनाफर राय ।
आल्हा ऊदनि दो भैया हैं ❋ तहँ हम कियो तमाशा जाय ॥
कुंडल पहिराये ऊदनिने ❋ चीरा कलंगी दई इनाम ।
नाम सुनो जब बघऊदनिको ❋ रोवन लगी मल्हनदे रानि ॥
बेटा ऊदनिको पाऊं कहं ❋ जो गाढ़ेमें आवैं काम ।
जोगियो जैयो तुम कनउजको ❋ हमरी खबरि सुनैयो जाय ॥
याही दिनको हम पालो थे ❋ की असमयमें ऐहैं काम ।
कुआं बियाह्यो जब ऊदनिने ❋ तब हमते यह कियो करार ॥

प्राण निछावरि माता कीन्हें ❋ सो क्या भूलि गयो यह बात।
तुम सुखनिंदियामें सोवत हौ ❋ हमपर बिपति परी अब आय॥
फिरिकै ऊदनि पूँछन लागे ❋ माता हाल देउ बतलाय।
कौन आपदा तुमपर परगइ ❋ जो तुम रोय रोय रहिजाउ॥
बोली मल्हना तब ऊदनिते ❋ पिरथी घेरो नगर महोब।
धरी भुजरियां हैं महलनमें ❋ सागर कौन देय सिरवाय॥
कौन हुसरिहा पृथीराजको ❋ को ऊदनि बिन करै सहाय।
तौलौं आई बेटी चन्द्रावलि ❋ सो मल्हनाते लगी बतान॥
छोटो जोगी ऐसो लागै ❋ मानो मेरो लहुरवा भाय।
बोली मल्हना चन्द्रावलिते ❋ बेटी सुनौ हमारी बात॥
काहे ह्वइहैं ऊदनि जोगी ❋ जिनकी जगजाहिर तलवारि।
करो इशारा तब लाखनिने ❋ ऊदनि नाम देउ बतलाय॥
बोले ऊदनि तहँ लाखनिते ❋ नाहीं अबहिं बतैहैं नाम।
बोले ऊदनि रनि मल्हनाते ❋ पबनी तुम्हारी दिहैं कराय॥
मल्हना बोली तब जोगिनते ❋ तुम भिक्षाके मांगनहार।
क्या गति जानौ तुम लरिबेकी ❋ पबनी कैसे दिहौ कराय॥
ऊदनि होतो जो महुबेमें ❋ पबनी देत हमहिं करवाय।
होते मलिखे या सिरसामें ❋ तौ बनि जातो काम हमार॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ माता वचन करो परमान।
हम जोगी हैं बंगालेके ❋ पबनी तुम्हरी दिहैं कराय॥
मारि भगैहैं हम पिरथीको ❋ हम जोगी हैं बुरी बलाय।
बोली चन्द्रावलि ऊदनिते ❋ जो तुम गंगा लेउ उठाय॥
तौ हम जानैं अपने मनमें ❋ हमरो पबनी दिहौ कराय।
गंगा कीन्ही तब ऊदनिने ❋ तोलौं माहिल पहुँचे जाय॥
देखि हकीकत माहिल लौटे ❋ पृथीराजपै पहुँचे आय।
जोगी चलि भै रंगमहलते ❋ अपने लश्कर पहुँचे जाय॥
बोले माहिल पृथीराजते ❋ हमते कछू कही न जाय।

आये योगी बंगालेके ❋ जादू पढ़ै बीर बैताल॥
गंगा कीन्ही उन महुबेमें ❋ पवनी तुम्हरी दिहैं कराय।
लड़े न जितिहौ तुम जोगिनते ❋ तासे कूच जाउ करवाय॥
चुग़ुली करिके परिमालैते ❋ हम निकराये बनाफरराय।
तब ना लूटो तुम महुबेको ❋ अब सब बिगरि गयो है काम॥
पृथीराज तब पूंछन लागे ❋ अब कछु जतन देउ बतलाय।
कैसे लूटैं नगर महोबा ❋ तब माहिलने कही सुनाय॥
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ तौ जोगिनको देउ भगाय।
पाछे लूटि लेउ महुबेको ❋ यह सुनि पृथीराज चौहान॥
चौंड़ा धांधूको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय।
जल्दी जावौ तुम झाबरको ❋ औ जोगिनते कहो सुनाय॥
कूच कराय जाउ जल्दीते ❋ नहिं कछु यहां तुम्हारो काम।
चौंड़ा धांधू दोनों चलिभे ❋ औ जोगिनपै पहुँचे जाय॥
हाथ जोरिकै दोनों बोले ❋ बाबा कूच जाउ करवाय।
बोले ऊदनि तब दोनोंते ❋ हम पंद्रह दिन करैं मुकाम॥
देखि सनीनौं गढ़महुबेकी ❋ तब हम कूच दिहैं करवाय।
तापर ज्वाब दियो चौंड़ाने ❋ बाबा मानौ कही हमारि॥
पृथीराज घेरो महुबेको ❋ चढ़िकै महुबो लिहैं लुटाय।
गर्द बर्द बाबा ह्वइ जैहौ ❋ ताते कूच जाउ करवाय॥
गुस्सा ह्वइ तब ऊदनि बोले ❋ क्यों नहिं बोलत बात सम्हारि।
जल्दी चले जाउ समुहेते ❋ क्यों हम कूच जाय करवाय॥
आगे बढ़िगै चौंड़ा धांधू ❋ लश्कर देखि योगियन क्यार।
मन घबराय गये दोनों तब ❋ पृथीराजपै पहुंचे आय॥
हाल कहो सब बैरागिनको ❋ हैं बैरागी बुरी बलाय।
फौज परी है आठ कोसलौं ❋ तंबुअन रही लालरी छाय॥
जो मुहलगिहौ उन जोगिनको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय।
परे रहन देउ तुम जोगिनको ❋ अपनो लीजो काम बनाय॥

यहिविधि बीतेदिन संकटमें ❋ अब दिन परो सनीनौं आय ।
ठाढ़ी मल्हना सतखण्डापर ❋ देखो बाट जोगियन क्यार ॥
पहर एक ह्वइगयो अंटापर ❋ नाहीं जोगी परे दिखाय ।
बोली चन्द्रावलि मल्हनाते ❋ पबनी कौन दिहै करवाय ॥
गंगा करिगे थे जोगी हियँ ❋ सोऊ नाहीं परत दिखाय ।
मल्हना समुझावै बेटीको ❋ बेटी मानौ बात हमारि ॥
लेउ भुजरियां तुम महलनते ❋ सो कुंवटामें देउ सिराय ।
रोवन लागी तब चन्द्रावलि ❋ लै लै नाम बीर मलिखान ॥
माहिल आये तब महलनमें ❋ सो मल्हनाते लगे बतान ।
डांड़ पठाय देउ पिरथीको ❋ अपनी करो सनीनौं जाय ॥
बोलन लागी रानिमल्हनाते ❋ क्या हम डांड़ देयं पठवाय ।
माहिल बोले तब मल्हनाते ❋ यह कह दियो बीर चौहान ॥
हार नौलखा शहर ग्वालियर ❋ जैहैं उड़न बछेरा पांच ।
बैठक लैहैं खजुहागढ़की ❋ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
ब्याह रचैहैं सो ताहर संग ❋ पारस पूजा लिहैं अगार ।
इतनो डांड पठाय देउ तुम ❋ बहिनी मानौ बात हमार ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❋ औ माहिलते कही सुनाय ।
डोला देहौं ना बेटी को ❋ चाहे लाख चढ़ै चौहान ॥
पेटु मारि अपनो मरि जैहौं ❋ देहौ मया मोह बिसराय ।
बोली चन्द्रावलि मल्हनाते ❋ यह ब्रह्माते कहौ हवाल ॥
चलिभे माहिल रंगमहलते ❋ पाछे चली मल्हनदे रानि ।
लीन्हों संगे चन्द्रावलिको ❋ औ ब्रह्मापै पहुँची जाय ॥
चरण लागिकै तब माताके ❋ ब्रह्मा माथे लिये लगाय ।
बोले ब्रह्मा तब माताते ❋ आई यहां कौनसे काम ॥
बोली मल्हना तब ब्रह्माते ❋ बहिनि कि पबनी देउ कराय ।
धरी भुजरियां रंगमहलमें ❋ सो सागरमें देउ सिराय ॥

सुनतै ब्रह्मा बोलन लागे ❋ हम ना मूँड़ कटैहैं जाय ।
तुमहिं भरोसा दौ जोगिनने ❋ सोई पबनी दिहैं कराय ॥
यह सुनि मल्हना रोवन लागी ❋ बेटी छांड़ि दई डिंडकार ।
देखि हाल यह अभई बोले ❋ बेटा जौन महिल परिहार ॥
पबनी तुम्हरि हम करवैहैं ❋ अपनी त्यारी लेउ करवाय ।
दई चुनौती पृथीराजको ❋ हमते डोला लेयँ छिनाय ॥
बोले माहिल तब अभईते ❋ बेटा अक्किल गई तुम्हारि ।
जन्मकै बैरी हम महुबेवाले ❋ तिनकी ओर लड़न ना जाउ ॥
कही हमारी बेटा मानौ ❋ घरमें बैठि रहौ चुपसाधि ।
तापर ज्वाब दियो अभईने ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
दोनों राजा हमहिं बराबर ❋ जगमें पृथीराज परिमाल ।
पृथीराज मनमें जानो यह ❋ कोऊ मर्द महोबे नाहिं ॥
बात कहि चुके अब मल्हनाते ❋ पबनी इनकी दिहैं कराय ।
यह कहि अभई उठि ठाढ़ेभै ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
हुक्म देदियो तब अभईने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ क्षत्री फांदि भये हुशियार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लियो हथियार ।
तिसरे डंकाके बाजतखन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथ भये सवार ॥
बेटा रंजित परिमाले को ❋ सोऊ साथ भयो तैयार ।
घोड़ी हिरौंजिन त्यार कराई ❋ तापर रंजित भये सवार ॥
सब्जा घोड़ाको सजवायो ❋ तापर अभई भये सवार ।
खबरि कराई रंगमहलमें ❋ सिगरे डोला लेउ सजाय ॥
डोला त्यार भये सखियनके ❋ चहुँदिशि सब्जी परै दिखाय ।
सब्ज नालकी सब्ज पालकी ❋ तिनपर डारो सब्ज उहार ॥

सब्जै झालरि है रेशमकी ❀ उरदी सब्ज कहारन केरि।
सब्जभुजरियांसबसखियनकी ❀ सब्जै झूला लिये सजाय॥
सब्जै रस्सा रेशमवाले ❀ सो झूलनमें लिये धराय।
जतन करी इक मल्हनारानी ❀ सोऊ सुनि लेउ कान लगाय॥
जहर बुझाई यक यक छुरिया ❀ सब सखियनको दइ पकराय।
मटुका यक यक बारूदनके ❀ सब पलकिनमें दियो धराय॥
पत्थर चकमक लै मल्हनाने ❀ सब सखियनको दियो गहाय।
डोला लूटैं पृथीराज जो ❀ तौ तुम जहर खाय मरिजाउ॥
जहर न खाय मिले तुमको जो ❀ तौ तुम पेटु मारि मरिजाय।
आगि लगाय लिहौ डोलनमें ❀ यह मल्हनाने दिये सिखाय॥
यह सुनि सखियां बोलन लागीं ❀ हम देहैं प्राण गँवाय।
जैहैं नाहिं जियत दिल्लीको ❀ माता वचन करौ परमान॥
चौदहसै डोला सब सजिगे ❀ डोला बीच चन्द्रावलि क्यार।
डोला आगे रनि मल्हनाको ❀ बारह रानि चंदेले केरि॥
आये डोला जब फाटकपर ❀ अभई रंजित चले अगार।
चलते छींक भई सम्मुहेपर ❀ तब रानीने कही सुनाय॥
असगुन ह्वइ गयो है चलतैपर ❀ तुम ना चलौ हमारे साथ।
बोले अभई तब मल्हनाते ❀ हम ना मनिहैं कही तुम्हार॥
सगुन चाहिये उन बनियनको ❀ जे धरि मौर बियाहन जायँ।
सगुन चाहिये ना क्षत्रीको ❀ जे रण चढ़िके लोह चबायँ॥
करौ भरम नहिं तुम अपने मन ❀ दुबिधा छांड़ि देउ तत्काल।
चलिभे डोला तब महुबेते ❀ सखियां गावैं राग मलार॥
माहिल पहुँचे तब बगियामें ❀ औ पिरथीते कही सुनाय।
रंजित अकिले हैं डोलन संग ❀ डोला सबै लेउ लुटवाय॥
बोले पृथीराज चौड़ाते ❀ अबहीं डोला लेउ लुटाय।
चलो चौंड़िया तब बगियाते ❀ औ लश्करमें पहुँचो जाय॥
लश्कर सजवायो जल्दीते ❀ इकदन्ता पर भयो सवार।
कूच कराय दियो लश्करको ❀ औ सागरपर पहुँचो जाय॥

अभई, रंजितकी चौंड़ा आदिसे लड़ाई

सुमिरन करिकै नारायणको ❁ लैकै रामचन्द्रको नाम ।
लिखौं लड़ाई अब सागरकी ❁ अभई रंजितको संग्राम ॥
देखो समुहे जब अभईको ❁ डोला संग चौड़िया राय ।
बोलो चौंड़ा तब अभईते ❁ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
कहांकि त्यारी तुमने कीन्हीं ❁ क्यों यह डोला तुम्हरे साथ ।
यह सुनि अभई बोलन लागे ❁ है त्योहार महोबे क्यार ॥
आज सनीनो है महुबेमें ❁ हम सागरको भये तयार ।
हैं रखवारे हम डोलनके ❁ डोला संग मल्हनदे क्यार ॥
बीचमें डोला चन्द्रावलिको ❁ अपनी लिये भुजरियां जाय ।
सखियां सिगरी हैं बेटीकी ❁ सोऊ चली साथमें जायँ ॥
सुनि यह बात कही चौंड़ाने ❁ डोला हियां देउ धरवाय ।
पांव बढ़ैया ना आगेको ❁ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
बोले अभई तब चौंड़ाते ❁ मुखते बोलो बात सम्हारि ।
समुहे देखै जो डोलनके ❁ ताके नैन लेउँ निकराय ॥
गुस्सा ह्वइ तब चौड़ा ब्राह्मण ❁ लश्कर हुक्म दियो करवाय ।
डोला लूटि लेउ जल्दीते ❁ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनितै तब क्षत्रीने ❁ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ।
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❁ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
पैदल अभिरि गये पैदल संग ❁ औ असवारनते असवार ।
हौदा मिलिगे तब हौदासंग ❁ हाथिन अड़ो दांतसे दांत ॥
तीनि घरी भरि चली शिरोही ❁ औ बहि चली रक्तकी धार ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❁ रणमें कठिन करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही चौंड़ावाले ❁ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी जब चौंड़ाने ❁ तब हाथीको दियो बढ़ाय ॥
समुहे जाय कही अभईते ❁ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।

गुर्ज उठाय लियो चौंड़ाने ❃ सो अभई पर दियो चलाय ॥
सब्जा घोड़ा आगे बढ़िगौ ❃ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ।
घोड़ा बढ़ायो तब अभईने ❃ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
करो जड़ाका इक हौदापर ❃ छतुरी टूक टूक ह्वैजाय ।
सोने कलश गिरे धरतीपर ❃ चौंड़ा हाथी दियो बढ़ाय ॥
हटिगौ मुर्चा जब चौंड़ाको ❃ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वैजाय ।
सुनो हाल जब यह पिरथीने ❃ सूरज बेटा लियो बुलाय ॥
जल्दी चले जाउ सागपर ❃ डोला सबै लेउ लुटवाय ।
डोला लावौ चन्द्रावलिको ❃ हमरी नजरि गुजारौ आय ॥
यहसुनि चलिभै तब सूरजमल ❃ लश्कर तीन लाख सजवाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❃ राजा टंक संग सजवाय ॥
जबहिं पहुंचि गये सागपर ❃ सूरज बढ़िकै कही सुनाय ।
डोला धरि देउ चन्द्रावलिको ❃ सुनि अभईने दियो जवाब ॥
नाम लिहौ जो तुम डोलाको ❃ मुहमें धांसि दिहौं तलवारि ।
समुहे दिखिहौ जो डोलनके ❃ दोनों नैन लिहौं निकराय ॥
इतनी सुनतै सूरज जरिगे ❃ गुस्सा गई देहमें छाय ।
हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❃ सबकी कटा देउ करवाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❃ खटखट चलन लगी तलवारि ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❃ लोथिन ऊपर लोथि दिखाय ॥
सूरजमल आगेको बढ़िगै ❃ औ रंजितते लगे बतान ।
खबरदार रहियो घोड़ापर ❃ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
यह कहि गुर्ज लियो सूरजने ❃ सो रंजितपर दियो चलाय ।
घोड़ी हटिगइ तब रंजितकी ❃ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
लई शिरोही तब सूरजने ❃ सो रंजितपर दई झुकाय ।
तीनि शिरोही सूरज मारी ❃ रंजित लीन्ही चोट बचाय ॥
कावा दैके तब रंजितने ❃ अपनी लई शिरोही काढ़ि ।

चेहरा मारो तब सूरजको ❋ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
ढाल फाटि गइ सूरज मलकी ❋ धरनी गिरे जाय मुरझाय ।
देखिहाल यह टंकराजने ❋ आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
सम्हरौ ठाकुर तुम घोड़ीपर ❋ यह कहि लीन्ही सांग उठाय ।
अभई आय गये समुहे पर ❋ औ राजाते कही सुनाय ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❋ दुइमें एक आंकु रहिजाय ।
साँग उठाई टंकराजने ❋ सो अभई पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई अभईने ❋ अपनो भाला लियो उठाय ।
दियो चलाय टंक राजापर ❋ सो तोंदीमें गयो समाय ॥
मूर्छित ह्वैकै गिरे टंक तब ❋ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वैजाय ।
चलो सांड़िया तब लश्करते ❋ पृथीराजपै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ औ लश्करको कह्यो हवाल ।
बिकट लड़ाई भइ सागरपर ❋ सूरज टंक जूझिगे जाय ॥
लाश उठाय लेउ दोनोंकी ❋ सुनि घबराय गये महराज ।
सरदनि मरदनि औ ताहरको ❋ तुरतै राजा लियो बुलाय ॥
हुक्म दै दियो पृथीराजने ❋ अपनो लश्कर लेउ सजाय ।
सूरज टंक परे खेतनमें ❋ जायके लाश लेउ उठवाय ॥
इतनो सुनिकै तीनों चलि भये ❋ लश्कर तुरत लियो सजवाय ।
अपने अपने तब घोड़न पर ❋ तुरतै फांदि भये असवार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ मारू डंका दो बजवाय ।
लश्कर पहुँचि गयो सागरपर ❋ दोनों लाशैं लईं उठाय ॥
सो पठवाय दईं बगियाको ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
इक ललकार दई ताहरने ❋ कौने मारो भाइ हमार ॥
बोले अभई तब आगे बढ़ि ❋ हमने मारो भाइ तुम्हार ।
करन सनीनों हम आये हैं ❋ क्यों तुम लाये फौज चढ़ाय ॥
तापर ज्वाब दियो ताहरने ❋ डोला देउ चन्द्रावलि क्यार ।
बोले अभई तब ताहरते ❋ अपनी जीभ लौटि मुँह दाबु ॥

अब जो नाम लिहौ डोलाका ❋ तुम्हरो शीश लिहौं कटवाय ।
यह सुनि ताहर गुस्सा ह्वैगये ❋ औ क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
अबही लूटलेउँ डोला सब ❋ सबकी कटा देउँ करवाय ।
खैचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ क्षत्री बीर रूप होइ जाय ॥
झुरमुट ह्वैगो दोनों दलमें ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ सबके मारु मारु रटिलागि ॥
आगे बढ़ि गये ताहर ठाकुर ❋ औ रंजितते लगे बतान ।
डोला धरिदेउ चन्द्रावलिको ❋ जो जीते सो लेइ उठाय ॥
गुस्सा ह्वैकै तब रंजितने ❋ अपनी खैंचि लई तलवार ।
चोट चलाई तब ताहरपर ❋ बायैं उठी गैंड़की ढाल ॥
तीन शिरोही रंजित मारी ❋ ताहर लीन्ही चोट बचाय ।
टूटि शिरोही गइ रंजितकी ❋ ताहर खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका जब रंजितपर ❋ रंजित जूझि गये मैदान ।
यह गति देखी जब अभईने ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई ताहरको ❋ अब तुम खबरदार ह्वैजाव ।
खैंचि शिरोही लई अभईने ❋ सो ताहर पर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई ताहरने ❋ अपनी लीन्ही चोट बचाय ।
कावा देकै तब ताहरने ❋ तुरत मारि दई तलवारि ॥
अभई गिर गये जब धरतीपर ❋ ताहर लीन्हों शीश उतारि ।
मल्हना रोय उठी तुरतै तब ❋ औ बेटीते कही सुनाय ॥
बात हमारी तुम मानी ना ❋ औ सागर पर आइ लिवाय ।
दोनों लरिका खेत जूझिगे ❋ अबको रखिहैं धर्म हमार ॥
बोली आभा तब दोनोंकी ❋ ब्रह्मै खबरि देउ बतलाय ।
जौलौं ब्रह्मा हियँ ऐहैं ना ❋ तौलौं रुंड करैं तलवारि ॥
जगे रुंड अभई रंजितके ❋ रणमें कठिन कियो संग्राम ।
मुर्चा फेरि दियो ताहरको ❋ क्षत्री लैलै भगे परान ॥
इक हरकाराते मल्हनाने ❋ भेजी खबरि महोबे माहिं ।

चलो साँड़िया तुरत फौजते ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी ब्रह्मानँदको ❋ औ सागर को कह्यो हवाल ।
अभई रंजित रणमें जूझे ❋ चलिकै लाश लेउ उठवाय ॥
नाहर मारो है अभईको ❋ औ रंजितको दियो गिराय ।

अथ ब्रह्मानन्दकी लड़ाई

सुमिरन करकै रामचन्द्रको ❋ लैकै नाम बीर हनुमान ॥
युद्ध बखानौं ब्रह्मानँदको ❋ कायर सुनत होय बलवान ।
पाई खबरि जबहिं लश्करको ❋ ब्रह्मानँद मन कियो विचार ॥
अब जो जैहै ना सागर पर ❋ हँसिहैं हमहिं सकल संसार ।
कियो उचित नहिं पृथीराजने ❋ जो हियँ आय बढ़ाई रारि ॥
आजु सामना करि सागरपर ❋ मरिहौं खेदि खेदि चौहान ।
सोचि समुझि यह ब्रह्मानँद ने ❋ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
बीरा दैकै हुक्म दियो यह ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ सिगरी फौज भई तैयार ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर ब्रह्मा भये सवार ।
कूंच कराय दियो लश्करको ❋ औ सागरकी पकरी राह ॥
चलिभै क्षत्री बीररूप ह्वइ ❋ डंका होत गोलमें जाय ।
हियँ कि बातै तौ हियँ छोड़ौं ❋ अब ताहरको सुनौ हवाल ॥
ताहर आये फिरि मुर्चापर ❋ भूरा मुगुल शूर लै साथ ।
कठिन मारु देखि रुंडनकी ❋ तब भूराते कही सुनाय ॥
लीलको झंडा फेरि देउ तुम ❋ भुइँमें गिरैं रुंड भहराय ।
यह सुनि झंडा लियो लीलको ❋ सो रुंडनपर दियो फिराय ॥
रानी मल्हनाके डोलापर ❋ दोनों रुंड गिरे भहराय ।
तौलौं पहुँचे ब्रह्मानँद तहँ ❋ दोनों रुंड लिये उठवाय ॥
तुरतै भेजि दिये महुबेको ❋ औ क्षत्रिनते लगे बतान ।
निमक हमारो तुम खायो है ❋ सो हाड़नमें गयो समाय ॥

पाँव न धरियो तुम पाछेको ❋ हमरी पबनी देउ कराय ।
धर्म राखि लेहौ हमरो जो ❋ तो हम तलब दिहैं बढ़वाय ॥
दियो बढ़ावा रजपूतनको ❋ क्षत्री बीररूप ह्वइ जायँ ।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ॥
सुमिरि भवानी जगरानीको ❋ लैकै हनूमानको नाम ।
खैंचि शिरोही लइ ब्रह्मानँद ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
भेड़हा पैठे ज्यों भेड़नमें ❋ ज्यों बन सिंह बिडारै गाय ।
त्यों ब्रह्मानँद रणमें पैठे ❋ क्षत्रिन काटि किये खरिहान ॥
मुर्चन मुर्चन नाचै घोड़ा ❋ ब्रह्मा कहै सुनाय सुनाय ।
भागि न जैयो केउ सम्मुहेते ❋ यारो रखि,यो धर्म हमार ॥
ब्रह्मानँदकी तहँ धमकिनमें ❋ सब दल तिड़ी बिड़ी ह्वैजाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही पृथीराजके ❋ अपने छांड़ि छांड़ि हथियार ।
यह गति देखी जब ताहरने ❋ मनमें बहुत गये घबराय ॥
दपटनि झपटनि ब्रह्मानँदकी ❋ ताहर देखि देखि रहिजाय ।
सम्मुहे देखैं जब ब्रह्माके ❋ ब्रह्मा काल रूप दिखलायँ ॥
सोच समुझिकै तब ताहरने ❋ इक हरकारा दियो पठाय ।
खबरि सुनावौ तुम राजाको ❋ जल्दी लावैं फौज चढ़ाय ॥
जो नहिं ऐहैं वे सागरपर ❋ तो सब जैहैं काम नशाय ।
चलो सांड़िया तब लश्करते ❋ औ बगियामें पहुंचे जाय ॥
तौलौं आये माहिल राजा ❋ सो पिरथीसे लगे बतान ।
जौहर कीन्हें ब्रह्मानंदने ❋ रणमें कठिन करी तलवारि ॥
करौ चढ़ाई अब ब्रह्मापर ❋ तुरतैं मुश्क लेउ बंधवाय ।
डोला लैकै चन्द्रावलिको ❋ महुबो नगर लेउ लुटवाय ॥
सुनतै पिरथी उठि ठाढ़े भे ❋ चौंड़ा धांधू लिये बुलाय ।
हुक्म दे दियो तब जल्दीते ❋ अबहीं फौज होय तैयार ॥
डंका बाजो तब लश्करमें ❋ सिगरो लश्कर भयो तयार ।

दुइसौ हाथी भूरा साजे ❋ दुइसौ मकुना लिये सजाय ॥
इकसौ हाथी खूनी साजे ❋ इकसौ मुड़िया लिये सजाय ।
दुइसौ हाथी मुकुटबन्दनी ❋ सो सजवाये बीर चौहान ॥
इकसौ हाथी मस्ता कहिये ❋ सो सजवाये पिथौरा राय ।
आदि भयंकरको मँगवायो ❋ ताको तुरत लियो सजवाय ।
चकमक पत्थरको हौदाधरि ❋ रेशम रस्सा दियो कसाय ॥
सिढ़ी लगाई मलयागिरिकी ❋ औ चढ़ि गये बीर चौहान ।
नौसै हाथीके हलकामें ❋ आदि भयंकर झूमन लागि ॥
हाथी इकदन्ता सजवायो ❋ तापर चौंड़ा भयो सवार ।
हाथी भौंरानँद सजवायो ❋ तापर धांधू भयो सवार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
हाहाकारी बीतन लागी ❋ मानौं भई दिवसकी राति ॥
लश्कर आयो जब सागर पर ❋ लश्कर जहाँ महोबे क्यार ।
हुक्म दियो तब पृथीराजने ❋ डोला तुरत लेउ लुटवाय ॥
खैंचि शिरोही लई क्षत्रिनने ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि ।
लश्कर देखा पृथीराजको ❋ ब्रह्मा मया मोह दौ छाँड़ि ॥
प्राण हथेलीपर धरि लीन्हों ❋ दलमें घोड़ा दियो बढ़ाय ।
ज्यों किसान खेतीको काटे ❋ कतरै जैसे तमोली पान ॥
तैसे ब्रह्माक्षत्रिन काटैं ❋ क्षत्री लै लै भगैं परान ।
झपटनि दपटनि ब्रह्मानँदकी ❋ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
सोचे पृथीराज अपने मन ❋ धनि धनि ब्रह्मा राजकुमार ।
बड़ बड़ शूर रहत महुबेमें ❋ एकते एक बीर सरदार ॥
देखि लड़ाई ब्रह्मानँदकी ❋ गुस्सा भये चौंड़िया राय ।
समुहे जाय कह्यो ब्रह्माते ❋ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ ॥
यह कहि गुर्जलियो चौंड़ाने ❋ सो ब्रह्मापर दियो चलाय ।
घोड़ा हटिगौ ब्रह्मानँदको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
सोचन लागे ब्रह्मानँद तब ❋ समुहे ब्राह्मण खड़ो हमार ।

हाथ चलैहौं जौं ब्राह्मणपर ❀ तो रजपूती धर्म नशाय ॥
सोचि समुझि यह ब्रह्मानंदने ❀ दियो संमोहन बाण चलाय ।
मूर्छित ह्वै तब चौंड़ा गिरिगो ❀ मुर्छा हटो चौंड़िया क्यार ॥
धांधू आयो तब समुहेपर ❀ औ यह मनमें सोचन लाग ।
ब्रह्मा भैया हमरो लागे ❀ कैसे करौं युद्ध ब्योहार ॥
जो नहिं लड़ौं साथ ब्रह्माके ❀ गुस्सा करैं पिथौरा राय ।
यह मन समुझि लड़े धांधू तब ❀ ब्रह्मा दीन्हों बाण चलाय ॥
धांधू गिरिगे तब हौदाते ❀ सरदनि मरदनि पहुँचे आय ।
सरदनि बोले तब ब्रह्माते ❀ समुहे डोला देउ धराय ॥
बोले ब्रह्मानंद सरदनिते ❀ सरदनि अपनी जीभ सम्हारु ।
नाम जो लैहै अब डोलाको ❀ मुंहमें ठांसि दिहौं तलवारि ॥
गुस्सा ह्वैकै तब सरदनिते ❀ अपनी लीन्ही तेग निकारि ।
चोट चलाई ब्रह्मानंदपर ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
टूटि शिरोही गइ सरदनिकी ❀ ब्रह्मा खैंचि लई तलवारि ।
चेहरा मारो तब सरदनिको ❀ सरदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
ढाल फाटि गइ गैंड़ा वाली ❀ सरदनि गिरे धरनि पर जाय ।
जूझे सरदनि जब खेतनमें ❀ मरदनि खैंचि लई तलवारि ॥
चोट चलाई तब ब्रह्मापर ❀ ब्रह्मा लीन्ही चोट बचाय ।
धार लौटि गइ तब तेगाकी ❀ ब्रह्मा दीन्ही तेग चलाय ॥
छूटि जनेवा गौ मरदनिको ❀ ताहर घोड़ा दिहो बढ़ाय ।
भई लड़ाई तहँ दोनोंते ❀ ब्रह्मा भाला दियो चलाय ॥
घोड़ा भगाय गये ताहर तब ❀ देखैं खड़े बीर चौहान ।
चन्द्रभाट बोला पिरथीते ❀ ब्राह्मण भक्त ब्रह्म सरदार ॥
जीति न सकिहै केउ ब्रह्माते ❀ ताते हाथ लेउ हथियार ।
यह सुनि सोचे पृथ्वीराज तब ❀ धीरसिंहते कही सुनाय ॥
बांधि लेउ तुम ब्रह्मानंदको ❀ औ सब डोला लेउ लुटाय ।
यह सुनि चलिभै धीरसिंह तब ❀ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥

आवत देखौ धीरसिंहको ❋ तब ब्रह्मा मन कियो विचार ।
आज्ञु अखाड़ेमें बरनी है ❋ आवत धीरसिंह सरदार ॥
बड़ो भक्त है यहु देवीको ❋ भारी शूर बीर सरनाम ।
बोले धीरसिंह ब्रह्माते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
डोला धरि देउ तुम खेतनमें ❋ है यह हुक्म पिथौरा क्यार ।
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ सुनिये धीरसिंह बलवान ॥
करौ सामना तुम हमरो यहँ ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ।
हौ तुम परममित्र आल्हाके ❋ आल्हा भैया लगत हमार ॥
धन्य नीति है पृथीराजकी ❋ हमपर लाये फौज चढ़ाय ।
बेटी ब्याही है हमरे संग ❋ फिरि क्यों भूमि मझाई आय ॥
लानति ऐसी रजपूती पर ❋ पानी पीबे को धिक्कार ।
मरजी होवै जो लड़नेकी ❋ तौ तुम करौ सामना आय ॥
जौ नहिं इच्छा है लड़नेकी ❋ तौ समुहेते जाउ पराय ।
सुनते गुस्सा ह्वइ धीरजने ❋ अपनी सांग चलाई आय ॥
चोट बचाई तब ब्रह्माने ❋ लीन्हो गुर्ज धीर सरदार ।
गुर्ज धमक्को जब ब्रह्मापर ❋ ब्रह्मा लैगै चोट बचाय ॥
गुस्सा ह्वइ तब धीरसिंहने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब ब्रह्मापर ❋ ब्रह्मा दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
बोले ब्रह्मा धीरसिंह ते ❋ हमहूँ भक्त अंबिका क्यार ।
जितने शस्त्र होय तुम्हरे संग ❋ सो हमपर सब लेउ चलाय ॥
यह सुनि सोचै धीरसिंह तब ❋ है यहु बड़ा शूर सरदार ।
चौटैं हमारी खाली परिगई ❋ ब्राह्मण भक्त धन्य संसार ॥
हाथी लौटायो धीरजने ❋ देखैं खड़े पिथौरा राय ।
देखि हाल यह पृथीराजने ❋ दांतन रहे अंगुरिया दाबि ॥
हाथी बढ़ायौ पृथीराजने ❋ औ ब्रह्माको घेरो जाय ।
हुक्म दै दियो महाराजने ❋ सिगरे डोला लेउ लुटाय ॥

चौंड़ा ताहर दोनों चलिभै ❋ औ डोलनको लियो घिराय ।
चौंड़ा घेरि लियो मल्हनाको ❋ डोला सबै लिये फिरवाय ॥
डोला घेरो चन्द्रावलिको ❋ ताहर जौन पिथौराराय ।
दुइसै जोड़ी बजैं नगारा ❋ बाजै तुरुही औ कंडाल ॥
कान आवाज परी लाखनिके ❋ सो ऊदनिते लगे बतान ।
हमरे मन में अस आवत है ❋ सागरचलत विषम तलवारि ॥
जल्दी त्यार होउ लरिबेको ❋ अब ना राखो देर लगाय ।
ऊदनि बोले तब ढेबाते ❋ दादा हाल देउ बतलाय ॥
बोले ढेबा तब ऊदनिते ❋ भैया जल्द होउ तैयार ।
हुक्म दैदिये तब लाखनिने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री तुरत भये हुशियार ।
पहिले डंकाके जिनबन्दी ❋ दुसरे बांधि लिये हथियार ॥
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्रिन धरे रकाबन पायँ ।
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❋ बांके घोड़नके असवार ॥
भुरुही हथिनी त्यार कराई ❋ तापर लाखनि भये सवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❋ तापर ऊदनि भये सवार ॥
घोड़ा मनुरथा त्यार करायो ❋ तापर ढेबा भयो सवार ।
मीरा सैयद बनरसवाले ❋ घोड़ी सिंहिनिपर असवार ॥
लला तमोली धनुवां तेली ❋ सोऊ साथ भये असवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ औ सागरपै पहुँचे जाय ॥
लगो मोरचा जहँ धांधूको ❋ पहुँची फौज जोगियन केरि ।
बोले धांधू तब जोगिनते ❋ नाहक प्राण गँवाये आय ॥
पाछे लौटि जाउ झाबरको ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ औ लाखनिते लगे बतान ॥
कठिन लड़ाई है सागरकी ❋ दादा बहुत रहेउ हुशियार ।
हुक्म दैदियो तब लाखनिने ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवार ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ मनियां सुमिरि महोबे क्यार॥
खैंचि शिरोही लइ ऊदनिने ❋ सम्मुहे गोल गये सम्मुहाय।
जैसे भेड़हा भेड़िन पैठे ❋ ज्यों बन सिंह बिडारै गाय॥
तैसे ऊदनि दलमें पैठे ❋ भाला नागदौन लै हाथ।
बाइस हौदा खाली करिकै ❋ औ धांधूपै पहुँचे जाय॥
धांधू देखो जब ऊदनिको ❋ अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय।
गुर्ज चलायो बघ ऊदनिपर ❋ ऊदनि लैगै चोट बचाय॥
ऐंड लगाई तब घोड़ाके ❋ औ मस्तक पर पहुँचे जाय।
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय॥
धांधू सोचे तब अपने मन ❋ है यहु जोगी बुरी बलाय।
मुर्छा लौटि गयो धांधूको ❋ लश्कर रैन बैन ह्वै जाय॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने डारि डारि हथियार।
ऊँचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय॥
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह।
जिनहिं पियारी घरमें तिरिया ❋ अबही लाये गौनवांचार॥
भस्म रमाई तिन देहीमें ❋ अपने डारि दिये हथियार।
हमको मरियो ना क्षत्रिउ तुम ❋ हम भिक्षाके मांगनहार॥
कहँ लग वरणौं मैं क्षत्रिनको ❋ क्षत्री लै लै भगे परान।
यह गति देखी जब ऊदनिने ❋ आगे लश्कर दियो बढ़ाय॥
चौंड़ा पहुँचो रनि मल्हनापै ❋ औ मल्हनाते कही सुनाय।
हुक्म दियो है पृथीराजने ❋ रनि मल्हनाते कही सुनाय॥
सो हम मानत अदब तुम्हारो ❋ तासे गहना देउ उतारि।
यह सुनि मल्हना बोलन लागी ❋ यह पिरथी ते कहियो जाय॥
धर्म क्षत्रियनके नाहीं यह ❋ जो तिरियनपर डारैं हाथ।
काहे नाहीं तब चढ़ि आये ❋ जब यहँ हते उदैसिंहराय॥
यह सुनि बोले चौंड़ा ब्राह्मण ❋ हम ना सुनिहैं बात तुम्हारि।
हार नौलखा हमको दैदेउ ❋ अब ना राखौ देर लगाय॥

इतनी सुनतै मल्हना रानी ❋ मनमें बहुत गई घबराय ।
हाथ जोरिकै आसमानको ❋ तहँपर लागी करन विलाप ॥
हे नारायण दीनबन्धु प्रभु ❋ स्वामी जगतकेर करतार ।
होउ सहायक यहि समयापर ❋ राखो आजु हमारी लाज ॥
ऊदनि मिलै कहां हमको अब ❋ जो असमयमें आवैं काम ।
होउ जो ऊदनि आसमानपर ❋ हमपर फाटि परो अरराय ॥
तौलौं आये ऊदनि बांकुड़ा ❋ औ मल्हनापै पहुँचे आय ।
ठाढ़े देखो जब चौंड़ाको ❋ घोड़ा बेंदुला दियो बढ़ाय ॥
जोगी रूप देखि मल्हनाने ❋ अपने मनमें किये विचार ।
भये सहायक नारायण अब ❋ आई फौज जोगियन क्यार ॥
चौंड़ा देखो जब जोगिनको ❋ तब जोगिनते कही सुनाय ।
चलै शिरोही आठ कोसलौं ❋ काहे प्राण गँवाये आय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
ऍंड़ लगाई रस बेंदुलके ❋ समुहे गोल गये समुहाय ॥
बाइस हौदा खाली करकै ❋ औ चौंड़ापै पहुँचे जाय ।
डपटो घोड़ा बघ ऊदनिने ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
ढालकि औझड़ तुरतै मारी ❋ सोना कलसा दिये गिराय ।
मुर्चा हटिगौ तब चौंड़ाको ❋ सोचन लाग चौंड़ियाराय ॥
बड़े लड़ैया ये जोगी हैं ❋ इनते हम जीतनके नाहिं ।
मल्हना रानीको डोला जहँ ❋ तहंपर ऊदनि पहुँचे जाय ॥
बोले ऊदनि रनि मल्हनाते ❋ भिक्षा हमहिं देउ मंगवाय ।
हाथ जोरि तब मल्हना बोली ❋ बाबा हमपर होउ सहाय ॥
हमरो डोला पिरथी लुटिहैं ❋ फिरि महुबेको लिहैं लुटाय ।
डोला लैकै चन्द्रावलिको ❋ पँचपेड़नपै राखौ जाय ॥
ब्रह्मै घेरो है पिरथीने ❋ सो तुम बिपदा देउ हटाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम्हरी पबनी दिहैं कराय ॥
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ यह कहि चले उदैसिंहराय ।

बोले ऊदनि नर ढेबाते ❋ दादा बहुत रहेउ हुशियार ॥
लाखनि ऊदनिको संग लैकै ❋ पँचपेड़न तर पहुँचे जाय ।
बोले ताहर तब जगनिकते ❋ काहे प्राण गँवाये आय ॥
ऊदनि बोले तब ताहरते ❋ हमने गंगा लई उठाय ।
कौल हारि गये हैं मल्हनाते ❋ तुम्हरी पबनी दिहैं कराय ॥
डोला धरि देउ तुम ठौरेपर ❋ इतनी मानौ कही हमारि ।
हुक्म दैदियो तब ताहरने ❋ इन जोगिनको देउ भगाय ॥
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रणमें चलन लगी तलवारि ।
ताहर बढ़िगे खैंचि शिरोही ❋ सो लाखनि पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई लाखनिने ❋ अपनो लीन्हों गुर्ज उठाय ।
गुर्ज चलायो तब ताहरपर ❋ ताहर घोड़ा गये भगाय ॥
ऊदनि डोला चन्द्रावलिको ❋ लै मल्हनापै राखो जाय ।
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
पृथीराज घेरे ब्रह्माको ❋ चलिकै खबरि लेउ तत्काल ।
लाखनि ऊदनि तब धाये तहँ ❋ अब ब्रह्माको सुनौ हवाल ॥
कठिन लड़ाई लखि ब्रह्माकी ❋ सोचन लगे बीर चौहान ।
बोला चन्द्रभाट पिरथीते ❋ अब ब्रह्माको देउ गिराय ॥
सोचि समुझि तब पृथीराजने ❋ अपनी लीन्ही लालकमान ।
तब ब्रह्मानँद सोचन लागे ❋ जैसे हमहिं रजा परिमाल ॥
तैसेइ हमको पृथीराज हैं ❋ पै यह हरत हमारे प्राण ।
अब चुप साधनकी बिरिया नहिं ❋ है यह शब्दबेधि चौहान ॥
सोचि समुझि यह ब्रह्मानँदने ❋ लीन्हों मोहन बाण उठाय ।
धनुष तानि मारो पिरथीके ❋ हौदा गिरे बीर चौहान ॥
हाहाकार होन लागो तहँ ❋ मूर्छित भये पिथौरा राय ।
तौलौं ऊदनि दाखिल ह्वै गये ❋ लाखनि सैयद संग लिवाय ॥
चारिहु राजा गांजर वाले ❋ धनुआ तेली संग लिवाय ।
लला तमोली संगहि आयो ❋ बारह कुंवर वनौधे क्यार ॥

राउ गोरखा बंगालेका ❋ सातनि पट्टीके सरदार।
मुरली मनोहर कलपी वाले ❋ औ पत्यउँजके मदनगोपाल॥
रूपन राजा सिरउँजवाले ❋ जगमनि जिन्सीके सरदार।
चन्दन राजा दतियावाले ❋ पूरन पूराके सरदार॥
मधुकर राजा गढ़चित्तौरके ❋ चिन्ता रुसनीके सरदार।
मोहन राजा हद्दीगढ़के ❋ चिन्तामनि गोरखपुर क्यार॥
लश्करबढ़िगौ उन जोगिनको ❋ कीरति सागरके मैदान।
देखो लश्कर जब जोगिनको ❋ ब्रह्मा लौटि परे तत्काल॥
मूर्छा जागी पृथीराजकी ❋ आदि भयंकर दियो बढ़ाय।
हुक्म दै दियो फिर पिरथीने ❋ लश्कर कटा देउ करवाय॥
हल्ला ह्वैगो तब दोनों दल ❋ क्षत्रिन खैंचि लईं तलवारि।
खटखट तेगा बाजन लागे ❋ कटि कटि गिरन लगे बहुज्वान॥
रंग बिरंगे घोड़ा ह्वइगे ❋ क्षत्री रक्त बरन ह्वइ जायं।
बिजुली चमकै ज्यों बादलमें ❋ त्यों रणचमकि रही तलवारि॥
लाखनि भुरुही दाबे आये ❋ जहंपर खड़े पिथौराराय।
टक्कर मारी तब भुरुहीने ❋ आदि भयंकर दियो हटाय॥
सोचैं पृथीराज अपने मन ❋ हमरो हाथी दियो हटाय।
क्याबिजरासिनि यह हथिनी है ❋ है यहु जोगी बुरी बलाय॥
तौलौं ऊदनि सम्मुहे आये ❋ जूझको कंगन परो दिखाय।
सोचि समुझि तब पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय॥
दक्खिन पारिनपर सागरके ❋ लश्कर परो पिथौरा क्यार।
उत्तर पाटीमें सागरके ❋ लश्कर पड़ो कनौजी क्यार॥
डोला पहुंचि गये सागर पर ❋ तब ऊदनिने कही सुनाय।
लेउ भुजरियां अब बहिनी तुम ❋ सो सागरमें देउ सिराय॥
लईं भुजरियां तब चन्द्रावलि ❋ सो सागरमें दईं सिराय।
बोले माहिल पृथीराजते ❋ सगुनको दोना लेउ मंगाय॥
हुक्म दैदियो तब चौंड़ाको ❋ जल्दी दोना लावो जाय।

बढ़ो चौड़िया तब आगेको ❋ तब चन्द्रावलि कही सुनाय ॥
चौड़ा लैहै जो दोना यहु ❋ खोटी पबनी होय हमारि ।
ऊदनि भैया जो होते यहँ ❋ तौ यहु दोना लौते उठाय ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ ऊदनि दोना लेउ उठाय ।
ऊदनि झपटे जब दोनापर ❋ तब चौड़ाने कही सुनाय ॥
हाथ चलायो ना दोना पर ❋ नाहीं लैहौं शीश उतारि ।
बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वै ❋ चौड़ा बोलो बात सम्हारि ॥
दोना पैहो ना सागरपर ❋ चाहै कोटिन करौ उपाय ।
भाला लैकै तब चौड़ाने ❋ बघऊदनिपर दियो चलाय ॥
चोट बचाई तब ऊदनिने ❋ दोना लीन्हो झपटि उठाय ।
सो पकराय दियो बहिनीको ❋ तब चन्द्रावलि लगी बतान ॥
कहँ मैं पाऊँ अब ऊदनिको ❋ क्यहिके घुरसि भुजरियां देउँ ।
जबहिं भुजरियां मैं घुरसतिथी ❋ म्वहिं मुहमांगौ देत मँगाय ॥
बोली मल्हना चन्द्रावलिते ❋ बेटी सुनौ हमारी बात ।
समुहे तुम्हारे जोगी ठाढ़े ❋ जिन यह पबनी दई कराय ॥
धर्म हमारो इन राखो है ❋ जानो इनहिं लहुरवा भाय ।
इनके घुरसौ जाय भुजरियां ❋ यह तुम मानौ कही हमारि ॥
यह सुनि तुरतै लई भुजरियां ❋ सो ऊदनिके घुरसन लागि ।
बोले ऊदनि चन्द्रावलिते ❋ धर्मकी बहिनी लगौ हमारि ॥
जेठो जोगी यहु ठाढ़ो है ❋ पहिले घुरसि देउ तुम जाय ।
ताके पीछे हमरे घुरसौ ❋ इतनी मानौ बात हमार ॥
लई भुजरियां चन्द्रावलि तब ❋ सो लाखनिको घुरसी जाय ।
हथिनीचालिस चन्द्रावलिको ❋ दीन्ही विहँसि कनौजीराय ॥
लई भुजरियां फिर चन्द्रावलि ❋ सो ऊदनिके घुरसी जाय ।
कंगन अपनो ऊदनि लैकै ❋ चन्द्रावलिको दौ पकराय ॥
देखो कंगन जब चन्द्रावलि ❋ तब मल्हनाते लगी बतान ।
यह तो कंगन है ऊदनिका ❋ माता देखि लेउ पहिचान ॥

कैसे पायो इन जोगिनने ❋ सुनि हँसि दियो उदयसिंहराय।
चमकी बिजुली तब दांतनमें ❋ मल्हना तुरत गई पहिचानि॥
मिलन लगी तुरत चन्द्रावलि ❋ नयनन बही नीरकी धार।
बोली चन्द्रावलि मल्हनाते ❋ हमने पहिलेइ लौ पहिचानि॥
डचोढ़ी पहुँचे ये जोगी जब ❋ तबहीं हमने दियो बताय।
छोटो जोगी ऐसो लागे ❋ मानो मेरे लहुरवा भाय॥
बिना बेंदुलाके चढ़वैया ❋ को पिरथीको देय हटाय।
मल्हना रानी औ सखियनको ❋ तुरतै मिलै उदैसिंहराय॥
दोना लै लै सब काहूने ❋ सो सागरमें दिये सिराय।
बोले पृथीराज धांधूते ❋ बीर भुगन्त कही सुनाय॥
इक तौ दोना तुम लै आवौ ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय।
दोनों शूर चले सुनतै यह ❋ तब लाखनिने कही सुनाय॥
एकौ दोना दिल्ली जैहैं ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय।
हुक्म दे दियो तब ऊदनिने ❋ क्षत्रिउ खबरदार ह्वइ जाउ॥
जान न पावैं दिल्लीवाले ❋ सबकी लूटि लेउ करवाय।
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❋ तुरतै चलन लगी तलवारि॥
हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❋ औ सिढ़ियनपर पहुँचे जायँ।
हाथ चलैयो ना दोनापर ❋ सोने कलशा दियो गिराय॥
दपटो घोड़ा तब ऊदनिने ❋ औ हाथी पर राखो जाय।
ढालकि ओझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय॥
सोचे धांधू तब अपने मन ❋ यह जोगी है बुरी बलाय।
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❋ बीर भुगन्ता गयो बराय॥
लीन्हो भाला बघ ऊदनिने ❋ नोकसे दोना लिये उठाय।
पैदल डेढ़ लाख पिरथीके ❋ जूझे सागरके मैदान॥
हाथी नौसै रणमें जूझे ❋ जूझे दस हजार असवार।
राजा टङ्क शूर पिरथीको ❋ जूझो समर खेतमें आय॥
सरदनि मरदनि सूरज जूझे ❋ ऐसी विषम चली तलवार।

बोले माहिल पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ पिथौरा राय ॥
जीति न पैहौ तुम ऊदनिते ❋ ताते कूच जाउ करवाय ।
जबहीं ऊदनि कनउज जैहैं ❋ तुरतै खबरि दिहौं पहुँचाय ॥
तीस हजार फौज महुबेके ❋ कटि गइ सागरके मैदान ।
हाथी बासठि गढ़ महुबेके ❋ जूझे घोड़ा एक हजार ॥
रंजित अभई दोनों जूझे ❋ जिनके रुण्डनै की तलवारि ।
सुनी खबरि जब चन्देलेने ❋ पवनी ऊदनि दई कराय ॥
तुरत पालकी तब मंगवाई ❋ औ चलि भये रजा परिमाल ।
झूला झूलन लगि चन्द्रावलि ❋ लै लै बघ ऊदनिको नाम ॥
बोले ऊदनि तब बहिनीते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
पबनी करवाई लाखनिने ❋ तिनको नाम लेउ यहि काल ॥
नाम बखानो तब लाखनिको ❋ गावन लागी राग मलार ।
तौलौं पलकी परिमालैकी ❋ आई सागरके मैदान ॥
देखि पालकी चन्देलेकी ❋ ऊदनि उठे भरहरा खाय ।
चरण लागिकै परिमालैकी ❋ ऊदनि माथे लिये लगाय ॥
आंसू बहन लगे नैननते ❋ राजा छाती लियो लगाय ।
बोले चन्देले ऊदनिते ❋ बेटा मेरे उदयसिंहराय ॥
सुधि बिसराय दई हमरी तुम ❋ औ कनउजको गये रिसाय ।
बिना तुम्हारे ऊदनि बेटा ❋ हमपर चढ़ें पिथौरा राय ॥
अब तुम छांड़ौ ना महुबेको ❋ इतनी मानौ कही हमार ।
खबरि भेजिकै तुम कनउजको ❋ आल्है तुरत लेउ बुलवाय ॥
हाथ जोरि बोले ऊदनि तब ❋ दादा सुनि लेउ बात हमारि ।
भादौं चिरैया ना घर छाड़ैं ❋ ना बनिजरा बनिजको जायँ ॥
तब तुम सोची क्या अपने मन ❋ जो भादौंमें दिये निकारि ।
बात मानिकै तुम माहिलकी ❋ हमपर रूठि कियो अपमान ॥
तीनि तलाकैं दइँ हमको तुम ❋ हमरे गईं करेजे सालि ।

जियत महोबे हम जैहैं ना ❋ कागा मरे हाड़ ले जायँ ॥
यह सुनि मल्हना रोवन लगी ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
ऊदनि तुमको हमने पाला ❋ अपनो दूध पिलाय पिलाय ॥
तुम जब जैहो गढ़कनउजको ❋ चढ़िहैं तुरत बीर चौहान ।
नगर महोबा वे लुटवैहैं ❋ डोलालिहैं चन्द्रावलि क्यार ॥
आगे करिकै ब्रह्मानँदको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
हो रखवारे तुम ब्रह्माको ❋ अब ना लौटि कनउजै जाउ ॥
करो राज्य बैठे महुबेमें ❋ तब ऊदनिने दियो जवाब ।
धीरज राखौ अपने मनमें ❋ हमरे वचन करो परमान ॥
छिपिकै आये हम आल्हाते ❋ हमने करो बहाना जाय ।
संग जात हैं हम लाखनिके ❋ गांजर खेलन हेत शिकार ॥
ऐसे छिपिकै हम आये हैं ❋ तासों हम रहिबेके नाहिं ।
लश्कर लावैं पृथीराज जब ❋ तुरतै दीजो खबरि कराय ॥
तब फिरि ऐहैं हम महुबेको ❋ लाखनि रानै संग लिवाय ।
बोली मल्हना तब लाखनिते ❋ तुम यह पबनी दई कराय ॥
बिछुरे ऊदनि हमहिं मिलाये ❋ धनि धनि रतीभानके लाल ।
लाखनि बोले तब बिनती करि ❋ माता सब तुम्हार परताप ॥
आज्ञा लैकै रनि मल्हनाते ❋ लाखनि कूच दियो करवाय ।
सबको लैकै रनिमल्हना तब ❋ रंग महलमें पहुँची जाय ॥
इतनो युद्ध भयो सागरपर ❋ सो हम कहिकै दियो सुनाय ।
आल्हा मनौआ आगे कहिहौं ❋ यारौ सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति (सागर पर) भुजरियोंकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

अथ आल्हा मनौआ

★

दोहा—सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय।
कहौं मनौआ अब आल्हाको ❋ शारदा मोको होउ सहाय ॥
माहिल राजाकी चुग्गुलीमें ❋ बारह बाट भये परिमाल।
आल्हा छाये गढ़ कनउजमें ❋ महुबे विपति रही सबकाल ॥
माहिल चलिभये गढ़ उरइते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय।
जहाँ कचहरी पृथीराजकी ❋ माहिल उतरि परे अरराय ॥
करी बन्दगी पृथीराजकी ❋ माहिल रहि गये माथ नवाय।
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ ऊँची चौकी दई डराय ॥
आवौ बैठो उरईवाले ❋ जियको भेद देउ बतलाय।
यह सुनि माहिल बोलन लागे ❋ सुनिये पृथीराज महराज ॥
लौटि गये ऊदनि कनउजको ❋ कोऊ मर्द महोबे नाहिं।
सूनी परी सबै बस्ती है ❋ चलिकै लूटि लेउ करवाय ॥
डंका बाजै गढ़ दिल्लीमें ❋ लश्कर तुरत होय तैयार।
बजो नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
पहले डंकामें जिनबन्दी ❋ दुसरे बाँधि लिये हथियार।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❋ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगै ❋ बाँके घोड़नके असवार।
कोउ नालकिन कोउ पालकिन ❋ कोऊ गजरथ भये सवार ॥
ताहर गोपीचन्दन बेटा ❋ तीनौ साजिकै भये तयार।

हाथी साजे आदि भयंकर ❋ तापर चढ़े बीर चौहान ।
लश्कर सजिगौ सातलाखते ❋ कूचको डंका दियो बजाय ॥
लश्कर चलिभौ पृथीराजको ❋ डंका होन गोलमें लाग ।
हाहाकारी बीतन लागी ❋ सविता रहे धुंधमें छाय ॥
सात रोजकी मंजिल करिकै ❋ महुबो धुरो दबाये आय ।
महुबो घेरि लियो जल्दीते ❋ फाटक बन्दी दई कराय ॥
बाहरको ना भीतर आवै ❋ ना भीतरसे बाहर जाय ।
क्या दुख बरणौंत्यहिसमयाकी ❋ बिपदा कछू कही ना जाय ॥
राम बनावै तौ बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनि जाय ।
तम्बू तानिगै पृथीराजके ❋ कीरति सागरके मैदान ॥
कोऊ परिगयो खजुहागढ़में ❋ कोऊ मदनतालकी पार ।
कउक्वउपरिगयो नदी किनारे ❋ कोउ बैरागी तालपर जाय ॥
तनिगै तम्बू सब लश्करमें ❋ चन्दन बगियाके मैदान ।
बोले पृथीराज माहिलते ❋ अब तुम रंगमहललौं जाउ ॥
कहो सँदेशा रनिमल्हनाते ❋ अब तुम डाँड़ देउ मँगवाय ।
डाँड़ न पैहैं पृथीराज जो ❋ तौ महुबेको लिहैं लुटाय ॥
माहिल चलिभे तब लश्करते ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ।
चढ़ि गइ मल्हना सतखंडापर ❋ देखी फौज पिथौरा केरि ॥
नीचे उतरी रानी मल्हना ❋ औ राजाको लियो बुलाय ।
तौलौं आये माहिल राजा ❋ औ मल्हनाते लगे बतान ॥
हमहिं पठायो पृथीराजने ❋ यह कहिं दई पिथौराराय ।
डांड़ पठाय देउ हमको तुम ❋ नहिं हम महुबो लिहैं लुटाय ॥
यहसुनि मल्हना बोलन लागी ❋ बीरन हमहिं देउ बतलाय ।
काह डांड़ चाहिये पिरथीको ❋ ब्योरेवार कहो समुझाय ॥
बोले माहिल तब मल्हनाते ❋ बहिनी सुनौ हमारी बात ।
हार नौलखा पिरथी मांगत ❋ सिगरो शहर ग्यालियर क्यार ॥
उड़न बछेरा सब माँगत हैं ❋ डोला लिहै चँद्रावलि क्यार ।

पारस पूजाको मांगत हैं ❀ खजुहा गढ़ बैठक सुखसार ॥
यह सब मांगत पृथीराज हैं ❀ सो तुम डांड़ देउ पहुंचाय ।
सुनतै मल्हना रोवन लागी ❀ ओ माहिलते लगी बतान ॥
यह कहि दीजौ पृथीराजते ❀ कापर चढ़े बीर चौहान ।
क्यों नहिं आये पृथीराज ❀ जब घर हते उदैसिंहराय ॥
हाथी पछारे दरवाजेपर ❀ औ ब्रह्माको कियो विवाह ।
सातौ बेटा पृथीराजके ❀ बांधे तुरत उदैसिंहराय ॥
कलश उतारि लिये द्वारेके ❀ तबकहँ हते बीर चौहान ।
तिनहिं मुनासिब यहु नाहीं ❀ जो सूनेमें घेरो आय ॥
नहीं मुरदूमी यह राजाकी ❀ जो तिरियनपर डारैं हाथ ।
मोहलति दैदेहंपन्द्रह दिनकी ❀ सोरहें देहै डांड़ भराय ॥
सुनतै चलिभे माहिल राजा ❀ फाटक निकरि गये वा पार ।
जबहीं पहुँचे पृथीराजपैं ❀ सिगरो हाल बतायो जाय ॥
मांगी मोहलति पंद्रहदिनकी ❀ सोरहें डांड़ दिहैं भरवाय ।
बात मानि लइ तब पिरथीने ❀ अब मल्हनाके सुनो हवाल ॥
आधी रातिकेर समयामें ❀ अपनो कूच दियो करवाय ।
दुइ हरकारा लिये साथमें ❀ मल्हना पलकीमें लई मंगाय ॥
चली पालकी रनि मल्हनाकी ❀ जगनेरीमें पहुंची जाय ।
गौ हरकारा जगनायक पर ❀ औ जगनिकते कही सुनाय ॥
मल्हना आई दरवाजेपर ❀ जल्दी चलौ हमारे साथ ।
जगनिक आये दरवाजेपर ❀ मल्हना छाती लियो लगाय ॥
रोयके मल्हना बोलन लागी ❀ हमपर चढ़े बीर चौहान ।
घर घर महुबो उन घिरवायो ❀ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
बिपति हमारी तुम मिटवावौ ❀ आल्हे खबरि सुनावौ जाय ।
बोले जगनिक तब मल्हनाते ❀ तुम सुनि लेउ धर्मकी बात ॥
तीनि तलाकैं दइ राजाने ❀ औ भादौंमें दिये निकारि ।
हम जो जैहैं उन आल्हापै ❀ हमको मरिहैं तुरत बंधाय ॥

तातै कनउज हम जैहैं ना ❋ हमरो करौ भरोसा नाहिं ।
यह सुनि मलहना रोवन लागी ❋ अब को रखिहैं धर्म हमार ॥
सब को उसाथ देत सुखमें जग ❋ दुखमें कोउ न होय सहाय ।
बड़ो भरोसा म्वहिं तुम्हारो था ❋ को अब खबरि सुनावै जाय ॥
सुनि यह बातै रनिमलहनाकी ❋ तब जगनिकने कही सुनाय ।
घोड़ा हरनागर तुम देदेउ ❋ तौ हम खबरि सुनैहैं जाय ॥
सङ्ग लियो तब जगनायकको ❋ मलहना महुबे पहुँची आय ।
तुरत बुलायो ब्रह्मानंदको ❋ तौलौं आये माहिल परिहार ॥
बोली मलहना ब्रह्मानंदते ❋ घोड़ा अपनो देउ मंगाय ।
जगनिक जैहैं गढ़ कनउजको ❋ आल्हा खबरि सुनैहैं जाय ॥
बोले माहिल तब ब्रह्मा ते ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
जिन घोड़नपर भयो बखेड़ा ❋ आल्हा कनउज गये रिसाय ॥
जगनिक लै जैहैं घोड़ा जब ❋ आल्हा लेहैं तुरत छिनाय ।
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❋ हम ना दिहैं आपनो घ्वोड़ ॥
काढ़ि कटारी लइ मलहनाने ❋ सो छातीसे लई लगाय ।
घोड़ा आपनो जो देहौ ना ❋ तो मैं पेटमारि मरि जाउं ॥
देखि हाल यह ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै घोड़ा दियो मँगाय ।
चिट्ठीलिखन लगी मलहना तब ❋ नैनन बहै नीरकी धार ॥
सात लाखते चढ़ो पिथौरा ❋ लैकै खुरासान गुजरात ।
जहाँ रसुईयां थी देवैकी ❋ तहँपर मुगल पछारे गाय ॥
पीपर कटिगै हैं आल्हाके ❋ कटिगै आम लहुरवा क्यार ।
घरघर महुबो पिरथी घेरो ❋ फाटक बन्द दियो करवाय ॥
तुमबिनुबिपदाहमपर परिगइ ❋ बेटा हमको होउ सहाय ।
नगर महोबा जब लुटि जैहैं ❋ तबका खाक बटुरिहौ आय ॥
मोहलति मांगी पन्द्रह दिनकी ❋ सोरहें लुटिहैं नगर महोब ।
तुरते आय जाय बेटा तुम ❋ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
दूलह बनिहैं पृथीराज जब ❋ दुलहिन बनै मलहनदेरानि ।

डोला जैहैं चन्द्रावलिको ❋ तब चलि जैहैं पाग तुम्हारि ॥
याही दिनको हम पालो है ❋ की असमयमें ऐहौ काम ।
सो तुम छाय रहे कनउजमें ❋ हमपर परी आपदा आय ॥
देखत चिट्ठीके आवौ तुम ❋ राखौ धर्म चंदेले क्यार ।
यहिबिधिपातीलिखिमल्हनाने ❋ जगनायकको दई गहाय ॥
घोड़ा हरनागर सजवायो ❋ तापर जगनिक भये सवार ।
चलिभे जगनिक तब महुबेते ❋ अब माहिलको सुनो हवाल ॥
माहिल पहुंचे पृथीराजपै ❋ औ पिरथीते लगे बतान ।
उड़न बछेरनमें हरनागर ❋ जगनिक चढ़े कनौजे जात ॥
घोड़ा छीनि लेउ जल्दीते ❋ औ सब घाट लेउ घिरवाय ।
आल्हा ऊदनि महुबे ऐहैं ❋ तौ ना बनिहै काम तुम्हार ॥
इतनी सुनिकै पृथीराजने ❋ चौंड़ा धांधू लिये बुलाय ।
हुक्म दै दियो तब दोनोंको ❋ सिगरे घाट लेउ घिरवाय ॥
घोड़ा लावौ तुम जगनिकते ❋ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
यह सुनि चौंड़ा धांधू चलिभे ❋ औ लश्करको लियो सजाय ॥
चलिकै पहुंचे तब बितवापर ❋ सिगरे घाट लिये रुकवाय ।
जगनिक पहुँचे जब नदियापर ❋ तब चौंड़ाने कही सुनाय ॥
चुप्पे उतरि परौ घोड़ाते ❋ नदिया उतरि जाउ वापार ।
यह सुनि जगनिक बोलन लागे ❋ ब्राह्मण बोलौ बात सम्हारि ॥
कौन शूर है तुम्हरे दलमें ❋ हमरो घोड़ा लेय छिनाय ।
गुस्सा ह्वैकै तब चौंड़ाने ❋ अपनी लीन्ही लाल कमान ॥
तीर निकारि लियो तरकसते ❋ औ जगनिकते कही सुनाय ।
जल्दी उतरौ तुम घोड़ाते ❋ नाहीं देहौं तुरत गिराय ॥
इतनी सुनतै जगनिक झपटे ❋ औ मस्तकपर पहुँचे जाय ।
ढालकि औझड़ जगनिक मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय ॥
घोड़ा बढ़ाय दिये आगेको ❋ तब धांधूने दइ ललकार ।
धोखा दैकै तब धांधूको ❋ शिरकी कलंगी लई उतारि ॥

जगनिक घोड़ा तिरछे हांको ❋ नदिया निकरि गयो वापार ।
बोले धांधू जगनायकते ❋ भैने सुनो चंदेले क्यार ॥
हमरी कलंगी हमको देदेउ ❋ इतनी मानौ बात हमारि ।
बोले जगनिक तब धांधूते ❋ हम ना कलंगी दिहैं तुम्हारि ॥
यह दिखलैहैं हम आल्हाको ❋ यह कह घोड़ा दियो बढ़ाय ।
देखि हाल यह चौंड़ा ब्राह्मण ❋ मनमें सोचि सोचि रहिजाय ॥
तनिकसो लरिका महुबेवालो ❋ सो कलंगी ले गयो उतारि ।
हियांकि बातैं तौ हियँ छांड़ौ ❋ अब आगेको सुनो हवाल ॥
राम बनावैं सो बनि जावैं ❋ बिगड़ी बनत बनत बनिजाय ।
जगनिक पहुँचे जब कुड़हरिमें ❋ देखो पेड़ बरगदा क्यार ॥
तहँपर उतरि परे घोड़ाते ❋ अपनो लीन्हो जीन बिछाय ।
बांधौ घोड़ा तुरत पेड़में ❋ सोवन लाग महोबिया ज्वान ॥
आयो माली जो बगियामें ❋ सो घोड़ा तन रह्यो निहारि ।
माली चलिभौ तब बगियाते ❋ औ गंगापै पहुँचो आय ॥
करी बन्दगी तब राजाको ❋ औ घोड़ाको कह्यो हवाल ।
उमर बीति गई मोरि कुड़हरिमें ❋ ऐसो तुरंग न परो दिखाय ॥
यह सुनि गंगा तुरतै चलिभै ❋ औ बगियामें पहुँचे जाय ।
सोवत देखो जगनायकको ❋ तुरतै घोड़ा लाये चुराय ॥
सो बँधवाय दियो महलनमें ❋ औ यह हुक्म दियो करवाय ।
नाम जो लेहै कोउ घोड़ाको ❋ तौ हम लेहैं शीष कटाय ॥
जागे जगनिक जब बगियामें ❋ तब ना घोड़ा परो दिखाय ।
सोचन लागे जगनायक तब ❋ हमरे चौंड़ा आयो पिछार ॥
टाप देखिकै फिर घोड़ाकी ❋ जगनिक कुड़हरि पहुँचे जाय ।
पानी भरति रहैं पनिहारी ❋ सो आपसमें लगी बतान ॥
ऐसो घोड़ा हम देखो ना ❋ जैसो राजा लाये चुराय ।
कान आवाज परी जगनिकके ❋ जगनिक बीच कचहरी जाय ॥
करी बन्दगी तब गङ्गाको ❋ सो जगनिकते लगे बतान ।

कहांते आये औ कहँ जैहौ ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले जगनिक तब गंगाते ❋ ठाकुर सुनौ हमारी बात ।
हम तो आये हैं महुबेते ❋ औ कनउजको कियो पयान ॥
हैं हम भैने चन्देलेके ❋ औ जगनायक नाम हमार ।
घोड़ा लाये तुम बगियाते ❋ सो तुम हमहिं देउ मंगवाय ॥
घोड़ा हमरो जो देहौ ना ❋ तौ मैं पेटु मारि मरिजाउँ ।
गुस्सा ह्वै तब गंगा बोले ❋ जगनिक अक्किल गई तुम्हारि ॥
चोर बनावत क्यों हमको तुम ❋ ना हम करत चोरके काम ।
बहुत बछेरा हैं हमरे घर ❋ जो चाहो सो लेउ खुलाय ॥
जैसे भैने चन्देलेके ❋ तैसेइ भइने लगो हमार ।
बोले जगनिक तब गंगाते ❋ हमरो घोड़ा देउ मंगाय ॥
दुसरा घोड़ा हमहि न चहिये ❋ आवै कौन हमारे काम ।
जो ना देहौ तुम घोड़ाको ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
इतनी सुनतै गंगा ठाकुर ❋ जगनायकको लियो बँधाय ।
डेढ़ पहर जब राति बीत गई ❋ तब तहँ रानी परी दिखाय ॥
जगनिक बोले तब बिनती करि ❋ रानी सुनौ पँवारे केरि ।
महुबो घेरो पृथीराजने ❋ मल्हना पाती लिखी चुराय ॥
दैके पाती हमहिं पठायो ❋ हम कनउजकी पकरी राह ।
आल्हा ऊदनिको लैहैं हम ❋ राजा घोड़ा लियो चुराय ॥
जो सुनि पैहैं आल्हा ऊदनि ❋ तुरतै कुड़हरि लिहैं लुटाय ।
यह सुनि रानी बोलन लागी ❋ घोड़ा तुम्हारे दिहैं दिवाय ॥
भोर होत ही घोड़ा दै दो ❋ जगनिक बहुत खुशी ह्वै जायँ ।
राखिलौं कोड़ा सवा लाखको ❋ तब जगनिकने कही सुनाय ॥
बदला लैहैं हम कोड़ाको ❋ लौटत कुड़हरि लिहैं लुटाय ।
यह कहि तुरतै जगनिक चलिभे ❋ पहुँचे गढ़ कनउजमें जाय ॥
पांच दिना मारगमें लागे ❋ जगनिक पहुँचे बीच बजार ।
जगनिक पूँछैं हलवाइनते ❋ तुम आल्हाको देउ बताय ॥

कहँ पर मिलिहैं ऊदनि ठाकुर ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
कियो बहाना हलवाइनने ❀ आल्हा सहरकेर कुतवाल ॥
दुसरे आल्हा इक तेली हैं ❀ तीजे रहैं महोबे क्यार ।
सो वे आल्हा ऊदनि दोनों ❀ गांजर लड़न गये चढ़ि धाय ॥
सो वे मारि गये गांजमें ❀ यह सुनि जगनिक सोचन लाग ।
बड़ा भरोसा करि आये हम ❀ सो यह काह भये भगवान ॥
धक्का लागि गयो जियरामें ❀ जगनिक बहुत गये घबराय ।
फिरि धरि धीरज आगे बढ़िकै ❀ औ लरिकनते पूछन लाग ॥
कहँपर मिलिहैं आल्हा ऊदनि ❀ सांची हमहिं देउ बतलाय ।
बोले लरिका तब जगनिकते ❀ ठाकुर सुनौ हमारी बात ॥
अबहिं कचहरीते आल्हागे ❀ रिजगिरि पहुँचे हैहैं जाय ।
यह सुनि लौटे जगनायक तब ❀ हलवाइनको लूटन लाग ॥
भागे हलवाई तुरतै तब ❀ औ जयचन्द कचहरीं जाय ।
हाल सुनायो तहँ जगनिकको ❀ औ राजातै करी पुकार ॥
हुक्म दे दियो तब जैचँदने ❀ औ लाखनिते कही सुनाय ।
जल्दी जाय बांधि लरिकाको ❀ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
भुरुही हथिनीपर लाखनि चढ़ि ❀ लीन्हे साथ बीस असवार ।
चलिभै लाखनि तब बँगलाते ❀ औ बाजारमें पहुँचे जाय ॥
समुहे देखो जगनायकको ❀ लाखनिराना कही सुनाय ।
हथिनी मस्ता यह हमारी है ❀ अपनो घोड़ा जाउ हटाय ॥
सुनतै जगनिक बोलन लागे ❀ तुम सुनि लेउ कनौजीराय ।
कट्टर घोड़ा ना हटिबेको ❀ अपनी हथिनी जाउ हटाय ॥
लाल कमान लई लाखनि तब ❀ औ जगनिकते कही सुनाय ।
पांव बढैहो जौ आगे को ❀ तौ हम घोड़ा लिहैं छिनाय ॥
बोले जगनायक गुस्सा ह्वै ❀ राना सुनौ हमारी बात ।
नगर महोबा इक बस्ती है ❀ जहँपर बसै रजा परिमाल ॥

हम हैं भैने चन्देलेकै ❀ औ जगनायक नाम हमार ।
है यह घोड़ा ब्रह्मानँदको ❀ भेजो हमहिं मल्हनदे रानि ॥
जाय मनैहैं हम आल्हाको ❀ अटको काज चँदेले क्यार ।
कौन शूरमा है धरती पर ❀ जो यह घोड़ा लेय छिनाय ॥
सुनी बात जब यह जगनिककी ❀ लाखनिमनमें गे खिसियाय ।
बोले लाखनि तब जगनिकते ❀ भैने सुनो हमारी बात ॥
यहुना कहियो तुम आल्हाते ❀ की लाखनिने गही कमान ।
ताना देहैं हमहिं उदयसिंह ❀ ह्वइहैं जियते मरण हमार ॥
बोले लाखनिते जगनिक तब ❀ ना हम हीनी कहे तुम्हारि ।
इतनी कहिकै करी बन्दगी ❀ औ रिजिगिरिकी पकरी राह ॥
लाखनि पहुँचे तब बंगलामें ❀ औ राजाते कह्यो हवाल ।
जगनिकपहुँचेजब रिजिगिरिमें ❀ फाटक बीस कदम रहिजाय ॥
तुरतै धावन गो आल्हापै ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
जगनिक आये हैं द्वारिपर ❀ सो हरनागर पर असवार ॥
सुनते आल्हा बोलन लागे ❀ हमहिं न सांची परत दिखाय ।
जगनिकऔतेजोरिजिगिरिको ❀ लौते घोड़ा तुरत फँदाय ॥
देर लागिगै जब धावनको ❀ जगनिक घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जहां अखाड़ा था इन्दलको ❀ जगनिक तहां पहूँचे जाय ॥
जबही देखो जगनायकको ❀ इन्दल बहुत खुशी ह्वइजाय ।
इन्दल पूछो जगनायकते ❀ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले जगनिक तब इन्दलते ❀ पहिले आल्हा देउ बताय ।
कुशल क्षेम कहिहैं पाछे हम ❀ यह सुनि इन्दल चले लिवाय ॥
सूरत देखी जब जगनिककी ❀ आल्हा छाती लियो लगाय ।
आल्हा पूँछी जगनायकते ❀ सबकी कुशल देउ बतलाय ॥
यह सुनि पाती मल्हनावाली ❀ खोलिकै आल्है दई पकराय ।
पाती बांची तुनि आल्हाने ❀ आल्हा मनमें गै घबराय ॥
पूँछन लागे बघ ऊदनि तब ❀ काहे बदन गयो मुरझाय ।

बोले आल्हा तब ऊदनिते ❋ महुबो पिरथी लियो घिराय ॥
खाली करि दो दशपुरवाको ❋ जल्दी तुम महलनलौं जाउ ।
त्यार कराय लेउ भोजन तुम ❋ यह सुनि गये उदैसिंहराय ॥
त्यार रसोई तहँ करवाई ❋ औ जगनिकको पठयो बुलाय ।
बोले जगनायक आल्हाते ❋ अबहीं फौज लेउ सजवाय ॥
त्यारी करि देउ जब चलिबेकी ❋ तब हम जेयँ लिहैं ज्योनार ।
सुनतै हुक्म दियो आल्हाने ❋ अबहीं फौज होय तैयार ॥
आल्हा ऊदनि ढेबा इन्दल ❋ औ जगनायक संग लिवाय ।
पांचौ पहुँचि गये चौकामें ❋ सुनवां परसे थार अगार ॥
लई बिजनियां करफूलनकी ❋ देवै करने लगी बयारि ।
कौर उठावत ही जगनिकके ❋ जब सुधि आई बीर मलिखान॥
नैनन आंसू ढरकन लागे ❋ तब देवैने कही सुनाय ।
धीरज राखौ जगनिक बेटा ❋ गढ़ महुबेको लिहौं बचाय ॥
बोली सुनवां तब जगनिकते ❋ तुम सिरसा को कहौ हवाल ।
तब जगनायकने सिरसाको ❋ सिगरो हाल दियो बतलाय ॥
माहिल राजा उरईवाले ❋ तिन सब लीन्हो भेद बनाय ।
सीधे जियकी ब्रह्मारानी ❋ तिन सब भेद दियो बतलाय ॥
माहिल पहुँचे तब दिल्लीमें ❋ सिगरो भेद कह्यो समुझाय ।
करी चढ़ाई फिर पिरथीने ❋ सिरसा धूरो लियो दबाय ॥
ऊभे खुदवाये धूरेपर ❋ तिनमें साँगैं दई गड़ाय ।
घास बिछाय दई तिन भीतर ❋ ऊपर पटपर दियो कराय ॥
धोखा दैकै नर मलिखेको ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय ।
ऊभे पार खड़े ताहर थे ❋ तिनसों लड़न चले मलिखान॥
घोड़ी समाय गई ऊभेमें ❋ घोड़ी घायल भई बनाय ।
पद्म फाटिगौ नर मलिखेको ❋ जूझे खेत बीर मलिखान ॥
मदन गड़रिया मन्ना गूजर ❋ सुलिखे जूझि गये मैदान ।

सती ह्वइगई गजमोतिनि तहँ ❀ ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय ॥
इतनी सुनतै परलै ह्वइगई ❀ रोवन लगे उदैसिंह राय ।
आल्हा ढेबा इन्दल जगनिक ❀ रोवन लगे जार बेजार ॥
हा हा करि सब रोवन लागे ❀ सिगरो रोय उठो रनिवास ।
आल्हा आये दरवाजे पर ❀ घोड़न जीन लियो उतराय ॥
तौलौं जगनिक गे द्वारेपर ❀ औ आल्हाते कही सुनाय ।
काहे जीन उतारि दियो तुम ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ॥
बोले आल्हा तब जगनिकते ❀ घटिहा बसै रजा परिमाल ।
मलिखे मारेगै सिरसामें ❀ नाहीं खबरि दई पहुँचाय ॥
हमहिं निकारि दियो भादौंमें ❀ कीन्हों रहै कौन अपराध ।
जियत न जैहैं हम महुबेको ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
बोले जगनिक तब आल्हाते ❀ जल्दी त्यारी लेउ कराय ।
जो न चलिहौ तुम महुबेको ❀ तौ मैं पेटु मारि मरिजाउँ ॥
देवै समुझावै आल्हाको ❀ बेटा मानौ बात हमारि ।
जल्दी चले जाउ महुबेको ❀ राखौ धर्म चंदेले क्यार ॥
बात न मानी तब आल्हाने ❀ देवै गई उदयसिंह पास ।
बोली देवै तहँ ऊदनिते ❀ बेटा जल्द महोबे जाउ ॥
बहुतै समुझायो आल्हाको ❀ तिन ना मानी कही हमारि ।
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❀ माता सुनौ हमारी बात ॥
जेठो भैया बाप बरोबरि ❀ आल्हा पठवैं तौ हम जायँ ।
देवै बोली तब ऊदनिते ❀ पालो तुमहिं मल्हनदे रानि ॥
जो लुटि जैहै नगर महोबा ❀ जगमें ह्वइहै हँसी तुम्हारि ।
याही दिनको मल्हना पालो ❀ की गाढ़ेमें ऐहैं काम ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ माता सुनो हमारी बात ।
कही न मनिहैं हम आल्हाकी ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि देवै बोलन लागी ❀ रोवन लागी जार बेजार ।
होती बेटी जौ हमरे इक ❀ कोइ राजाके जाती ब्याहि ॥

कुम्भक लौती त्यहि राजाते ❀ औ महुबेको देतिउँ पठाय ।
सुनी बात जब यह देवेते ❀ मानहुँ लग्यो करेजे बान ॥
बोलन लाग्यो ऊदनि बांकुड़ा ❀ माता मनिहौं बात तुम्हारि ।
अकिलो जैहौं मैं महुबेको ❀ यह कहि चले उदैसिंह राय ॥
ऊदनि पहुँचे तब आल्हापै ❀ औ अल्हाते लगे बतान ।
जल्दी साजि चलौ दादा तुम ❀ अब ना राखौ देर लगाय ॥
गुस्सा ह्वैके आल्हा बोले ❀ हम ना जैहैं नगर महोब ।
घटिहा राजा चन्देला है ❀ सिरसा जूझि गये मलिखान ॥
खबर पठाई नहिं हमरे ढिग ❀ औ भादौंमें दियो निकारि ।
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा सुनौ हमारी बात ॥
बांसन मारो तुम दादा म्वहिं ❀ जल्लादनको दौ सौंपाय ।
तैसे गुस्सा भये चँदेले ❀ औ भादौंमें दियो निकारि ॥
जब रिस दूरि भई राजाकी ❀ तब जगनिकको दियो पठाय ।
जल्दी त्यार होउ दादा तुम ❀ इतनी मानौ कही हमारि ॥
गुस्सा ह्वइ तब आल्हा बोले ❀ चांहै कोटिन करो उपाय ।
जियत महोबे हम ना जैहैं ❀ कागा मरे हाड़ लै जाय ॥
तड़पे ऊदनि तब आल्हाते ❀ आधी फौज देउ बँटवाय ।
सङ्ग पठावौ तुम इन्दलको ❀ माया लेउँ तिहाई बाँटि ॥
हँसी खुशी ते जो ना देहौ ❀ तौ मैं कठिन करौं तलवारि ।
हम तो जैहैं गढ़ महुबेको ❀ रखिहैं धर्म चन्देले क्यार ॥
ढेबा समझायो आल्हाको ❀ मानौ बात उदैसिंह केरि ।
आल्हा बोले तब ढेबाते ❀ जान न दिहैं कनौजीराय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ तुम जयचन्द कचहरी जाउ ।
आज्ञा मांगि लेउ राजाते ❀ औ महुबेको होउ तयार ॥
हाथी मँगवायो आल्हाने ❀ तापर तुरत भये असवार ।
आल्हा पहुँचे जब बँगलामें ❀ औ जैचंदको करी सलाम ॥
नजरि वदलि गइ तब जैचँदकी ❀ ऊँची चौकी दई डराय ।

आवौ बैठो यहँ आल्हा तुम ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
हाथ जोरि तब आल्हा बोले ❋ औ महुबेको कह्यो हवाल ।
जगनिक आये हैं महुबेते ❋ आज्ञा देउ महोबे जायँ ॥
गुस्सा ह्वै तब जैचँद बोले ❋ ओ आल्हाते लगे बतान ।
लूटि करी जो तुम गांजरमें ❋ सो महुबे में दई पठाय ॥
खायकै मोटे भै रिजिगिरिमें ❋ तब महुबेको भये तयार ।
लेखा देउ सबै गांजरको ❋ यह कह कैद दई करवाय ॥
आल्हा भेज्यो तब रूपनाको ❋ तुम ऊदनिते कहो हवाल ।
उनहीं पायन रूपना चलिभौ ❋ औ ऊदनिपै पहुँचो जाय ॥
हाल सुनायो तब आल्हाको ❋ जैचँद आल्है लियो बँधाय ।
लेखो मांगत हैं गांजरको ❋ जल्दी उनहिं देउ समुझाय ॥
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❋ घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ।
देवै माता पूँछन लागी ❋ अब तुम कहँको भये तयार ॥
बोले ऊदनि तब देवैते ❋ माता सुनो हमारी बात ।
आल्हा गये रहैं जैचँदपै ❋ औ महुबेको कह्यो हवाल ॥
आज्ञा माँगी जब जैबेकी ❋ तब उन कैद लई करवाय ।
लेखो माँगत हैं गांजरको ❋ सो हम जैहैं दिहैं समुझाय ॥
दुसरी करिहैं जो हमरे सङ्ग ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ।
तब देवै समुझावन लागी ❋ बेटा करौ अधीनी जाय ॥
आज्ञा लैकैं हँसी खुशीते ❋ तब महुबेको होउ तयार ।
संग लेउ तुम जगनायकको ❋ तब जगनिकने कही सुनाय ॥
सुथरी बैठक है जैचंदकी ❋ मैले कपड़े भये हमार ।
कपड़ा मँगवायो इन्दलके ❋ सो जगनिकको दौ पकराय ॥
कपड़ा पहिरे सो जगनिकने ❋ औ हरनागर लियो सजाय ।
दोनों चढ़िगे तब घोड़नपर ❋ गलियनघ्वोड़नचावत जायँ ॥
जितनीसखियां थीं छज्जनपर ❋ सो सब मोहिं मोहिं रहिजायँ ।
सुनी खबरि जब राजा जैचँद ❋ द्वारे हाथी दिये ढिलाय ॥

जबहीं पहुँचे दरवाजेपर ❀ तब ऊदनिने कही सुनाय ।
हाथी पछारि देउ जगनिक तुम ❀ जगनिक उतरि परे अरगाय ॥
भाला लै लौ जगनायकने ❀ औ हाथिनकौ दियो पछारि ।
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❀ फाटक निकरि गये वापार ॥
जगनिक ऊदनि दोनों पहुँचे ❀ जहँ दरबार कनौजी क्यार ।
उतरे ऊदनि रसबेंदुलते ❀ औ जगनिकते लगे बतान ॥
जबहिं बुलावैं तुमहिं कनौजी ❀ करियो तबहि बंदगी जाय ।
तवा सात राजा गड़वाये ❀ तिनपर सांग धमक्को आय ॥
यह कहि ऊदनि आगे बढ़िगै ❀ औ राजाके समुहे जाय ।
करी बन्दगी बघ ऊदनिने ❀ औ बिनती करि कही सुनाय ॥
सात लाखते चढ़ौ पिथौरा ❀ महुबे नगर लियो घिरवाय ।
चिट्ठी भेजी रनि मलहनाने ❀ आज्ञा देउ महोबे जायँ ॥
तुरत बचैहैं हम महुबेको ❀ रखिहैं धर्म चंदेले क्यार ।
सुनते जैचंद बोलन लागे ❀ अब तुम ऊदनि गये भुटाय ॥
गंगाजल पीयो कनउजमें ❀ नित गंगामें करि अस्नान ।
गेहूं खाये तुम गांजरके ❀ लूटिकि माया लइ पँजियाय ॥
लेखो बतावो गांजरमें ❀ तब महुबेको होउ तयार ।
तब फिरि ऊदन बोलन लागे ❀ राजा सुनौ हमारी बात ॥
बारह बरस लड़े गांजरमें ❀ तुम नहिं पाई एक छदाम ।
धन्यकि छाती थी आल्हाकी ❀ गांजर पैसा लियो भराय ॥
सिगरे राजा गांजर वाले ❀ बांधिकै तुमको दौ सौंपाय ।
दौलत लाये जो गांजरते ❀ सो सब तुम्हरे धरी अगार ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❀ तंग न छुटा बछेरन क्यार ।
लाज तुम्हारी हमने राखी ❀ सिगरे राजा लिये बंधाय ॥
घोड़ा पपीहा घायल ह्वइगो ❀ ताको मोल देउ मंगवाय ।
जोगा भोगा दोनों जूझे ❀ तिनको अब तुम देउ जिआय ॥
लेखा यहु है गांजरवाला ❀ सो तुम समुझि लेउ महराज ।

कैद कराई क्यों आल्हाको ❀ सो तुम हाल देउ बतलाय ॥
घोड़ा पपीहाके बदलेमें ❀ भुरुही हथिनी लिहौं खुलाय ।
जोगा भोगाके बदलेमें ❀ जैहौं लाखनि साथ लिवाय ॥
गंगा कीन्ही लाखनि राना ❀ महुबे चलिहैं संग तुम्हार ।
हँसी खुशीते आज्ञा दैदेउ ❀ नाहीं कठिन करौं तलवार ॥
बोले जैचंद तब ऊदनिते ❀ हमने कियो हँसौआ आज ।
सांची जानी बघ ऊदनि तुम ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल ॥
जबहीं जैहौ तुम महुबेको ❀ अपनो लश्कर दिहौं सजाय ।
छकरन माया तुमको देहौं ❀ तुरतै जैयो नगर महोब ॥
लाखनि ह्वैहैं रनि तिलका घर ❀ तिनते मांगि लेउ तुम जाय ।
कौन खबरि लायो महुबेकी ❀ तेहि तुम अबहीं लेउ बुलाय ॥
तुरत बुलायो तब जगनिकको ❀ सो सम्मुहेपर पहुँचे आय ।
करी बन्दगी जगनायकने ❀ तब हँसि कही कनौजी राय ॥
भैने आवौ चन्देलेके ❀ औ सब हाल कहो समुझाय ।
कै यह बखतर मांगिकैं लाये ❀ या काहूके लाये उठाय ॥
तापर ज्वाब दियो जगनायक ❀ राजा सुनौ हमारी बात ।
मांगिकै नाहीं यहु लाये हम ❀ ना हम बख्तर लिये उठाय ॥
बड़े बड़े जोधा हमने जीते ❀ तिनके बख्तर लिये उठाय ।
इतनी कहिकै सांग घमक्की ❀ सातौ तवा तोरि धंसि जायँ ॥
देखि हाल यह राजा जैचंद ❀ मुंहमें रहे अंगुरिया दाबि ।
बड़े बड़े जोधा हैं महुबेमें ❀ जिनते हारि गई तलवार ॥
हाल सुनायो फिर जगनिकने ❀ औ हंसि चले उदैसिंहराय ।
जाय पहूंचे द्वउ लाखनिते ❀ औ लाखनिते लगे बतान ॥
चढ़ा पिथौरा दिल्लीवालो ❀ घर घर महुबो लियो घिराय ।
चिट्ठी पठाई रनि मल्हनाने ❀ हम महुबेको भये तयार ॥
जल्दी त्यार होउ हमरे संग ❀ अब ना राखौ देर लगाय ।
तब हंसि लाखनि बोलन लागे ❀ हम ना छोड़िहैं संग तुम्हार ॥

पै तुम पूँछ लेउ तिलकाते ❋ तब हम चलिहैं संग तुम्हार ।
दोनों चलिभे तब महलनते ❋ पहुँचे रंग महलमें जाय ॥
पूंछै रानी बघ ऊदनि ते ❋ कहांकि त्यारी भई तुम्हारि ।
हाथ जोरि तब ऊदनि बोले ❋ माता सुनौ बात धरि ध्यान ॥
सात लाखते चढ़ो पिथौरा ❋ महुबो नगर लियो घिरवाय ।
संकट परिगो चन्देले पर ❋ मल्हना पाती दई पठाय ॥
सो हम जैहैं नगर महोबे ❋ लाखनि जैहैं संग हमार ।
आज्ञा दै देउ सो माता तुम ❋ तब तिलकाने कही सुनाय ॥
बारह रानिनको इकलौता ❋ औ सोरहको सबं सिंगार ।
आस लकरिया इक राजाकी ❋ सो तुम मानौ कही हमारि ॥
संग लेउ ना तुम लाखनिको ❋ रानी देवकुंवरिके लाल ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ माता सुनो हमारी बात ॥
लाखनि प्यारे बहुत तुमहिं हैं ❋ सो तुम घरमें लेउ बिठाय ।
हम ना प्यारे थे देवैके ❋ जो गांजरको दियो पठाय ॥
कठिन लड़ाई करि गांजरमें ❋ गांजर पैसा लियो भराय ।
तंग न छूटी कोइ घोड़ाको ❋ साढ़े तीनि मास लौं मात ॥
गंगा कीन्ही हमते लाखनि ❋ महुबे चलिहैं साथ तुम्हार ।
कायल ह्वइ तब तिलका बोली ❋ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
तबलौं बालक मात पिताको ❋ जौलौं होय न वाको ब्याह ।
ब्याह भये पर तिरिया मालिक ❋ तासे पूँछि लेउ तुम जाय ॥
सुनतै लाखनि ऊदनि चलिभे ❋ औ अंटापर पहुँचे जाय ।
बोले लाखनि तहँ बांदीते ❋ ऊपर खबरि देउ पहुँचाय ॥
बांदी चढ़िगइ तब ऊपरको ❋ रानी सोय रही त्यहि देखि ।
सोचिकै बांदीने तुरतै तब ❋ सुन्दर चन्दन लियो उतारि ॥
सोइ लगाय दियो माथे पर ❋ औ ऊपरते करी बयारि ।
ठंढक पहुंची जब माथे पर ❋ तुरतै नैना दिये उघारि ॥
सम्मुहे देखो जब बांदीको ❋ तब कुंसुमाने कही रिसाय ।

तूने काची नींद जगायो ❀ तब बांदीने दियो जवाब ॥
हमहिं पठायो है तिलकाने ❀ नीचे ठाढ़े कंत तुम्हार ।
खोलि खिरकिया तब देखतही ❀ मनमें बहुत खुशी ह्वैजाय ॥
सब सिंगार कियो रानीने ❀ औ बांदीते कही सुनाय ।
जल्दी लावो तुम बालमको ❀ बांदी तुरत पहूंची जाय ॥
बोली बांदी तब लाखनिते ❀ ऊपर जाउ कनौजीराय ।
लाखनि चढ़िगे तब ऊपरको ❀ चारौ नैन एक ह्वइजायँ ॥
मूर्च्छित होइगे लाखनिराना ❀ तब रानीने कही सुनाय ।
नैनके मारे तुम मूर्च्छित भै ❀ रण तुम काह करौ तलवारि ॥
जागी मूर्छा जब लाखनिकी ❀ तब रानी यह पूँछन लागि ।
कौन हेत दिनमें आये हौ ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
बोले लाखनि तब रानीते ❀ पिरथी घेरो नगर महोब ।
पाती भेजी रनि मल्हनाने ❀ आल्हा जैहैं नगर महोब ॥
हमहूँ संग जात ऊदनिके ❀ सो तुम हुक्म देउ फरमाय ।
सुनते कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी सुनो हमारी बात ॥
बादल उमड़त हैं चारों दिशि ❀ निशिमें रहत अंधेरिया छाय ।
जब सुधि ऐहैं हमहिं तुम्हारी ❀ तब को करिहै कौन उपाय ॥
झींगुर दादुर बोली बोलिहैं ❀ लगिहैं हिये कामके बान ।
बिरह हूक उठिहै जियरामें ❀ तब को हरिहैं पीर हमारि ॥
घटा छाय रहिहै सबही दिशि ❀ अकिले नींद न ऐहैं मोहिं ।
बिजुली चमकि चमकि रहिजैहै ❀ जियतै होइहै मरन हमार ॥
ताते अबहि न जाउ कंत तुम ❀ इतनी मानौ कही हमारि ।
पिरथी घेरौ नगर महोबे ❀ तुम ना जावो कंत हमार ॥
तुम घिरि जैहो दलके भीतर ❀ तब तुम करिहौ कौन उपाय ।
बोले लाखनि तब कुसुमाते ❀ रानी सुनो हमारी बात ॥
खांड़ा बिजुलिया हम दै जैहैं ❀ सोई जनियो कंत हमार ।
तापर रोय कही रानीने ❀ ओसन कैसी बुझै पियास ॥

हमहू चलिहैं संग तुम्हरे ❋ महुबे दिखिहैं जूझ अघाय ।
गुस्सा ह्वइ तब लाखनि बोले ❋ रानी अक्किल गई तुम्हरि ॥
संगमें डोला जो लै जैहैं ❋ हमको हँसिहैं सकल जहान ।
तीन घरीके हम पाहुन हैं ❋ ताते खेलो पंसासार ॥
लैकै चौसर तब कुसमा ने ❋ तुरते तहँपर दई बिछाय ।
खेलत ह्वइ गयो डेढ़ पहर तब ❋ लाखनि उठे भरहरा खाय ॥
पूछन लागी रानी कुशमा ❋ काहे तुरत उठे भहराय ।
बोले लाखनि तब रानी ❋ नीचे खड़े उदयसिंहराय ॥
डेढ़ पहर बीतो अंटापर ❋ तबही उझकि देखिकै रानि ।
बोलन लागी बघ ऊदनिते ❋ तुम सुनिलेउ उदयसिंहराय ॥
हठ ना ठानौ तुम बालम संग ❋ ना लै जाऊ आपने हाथ ।
चुरियां हमरी अम्मर करि देउ ❋ इतनी मानौ कही हमारि ॥
ना ये जानैं कठिन लड़ाई ❋ नाकहुँ करी कठिन तलवारि ।
ताते मानौ बात हमारी ❋ ना लै जावौ कन्त हमार ॥
माया चहिये जो तुमको कछु ❋ सो हम छकरन देयँ भराय ।
फौज कटीली जो हमरी है ❋ सो लै जाउ आपने साथ ॥
पै नहिं संग लेउ बालमको ❋ इतनी मानौ बिनय हमारि ।
जौ कहुँ बालम मारे जैहैं ❋ बेड़ा कौन लगै है पार ॥
तापर ज्वाब दियौ ऊदनिने ❋ रानी सुनौ कनौजी क्यार ।
पगिया बदली राजघाटमें ❋ औ छाती लग गंग मँझाय ॥
कौल करार कियो लाखनिने ❋ हमहूँ चलिहैं साथ तुम्हार ।
सो हम लैजैहैं लाखनिको ❋ रखिहैं धर्म चँदेले क्यार ॥
तब तौ कुसुमा बोलन लागी ❋ आल्है डसै कालिया नाग ।
भरी जवानी इन्दल मरियो ❋ तुम हूँ मरौ उदयसिंह राय ॥
जो मैं जनती ऐसी ह्वैहै ❋ औतै देती तुमहि निकारि ।
जोड़ी हमरी तुम बिछुराई ❋ घटिहा पूत दिवलदे क्यार ॥

बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वइ ❀ लाखनि सुनो हमारी बात ।
रूप देखिकै तुम रानीको ❀ मोहित ह्वैगे हमहिं भुलाय ॥
अब तुम बैठि रहो अंटापर ❀ अपने छोरि धरो हथियार ।
जब सुधि ऐहै तुमहिं यहांकी ❀ तब धरि दिहो ढाल तलवारि ॥
कायल ह्वैकै तब लाखनिने ❀ पांसे तुरतै दिये फिकाय ।
तुरतै लाखनि त्यारी कीन्ही ❀ तब कुसुमाने हाथ उठाय ॥
ऊपर चितै कही ब्याकुल ह्वइ ❀ बहिनि बदरिया होऊ सहाय ।
कारी बदरी तुमको सुमिरौं ❀ कौंधा बीरनकी बलिजाउं ॥
झिमिकिकै बरसौ तुम अंटापर ❀ कंता आजु रैनि रहिजायं ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❀ रानी अक्किल गई तुम्हारि ॥
कारी बदरिया सारीं लागैं ❀ कौंधा लागैं सार हमार ।
डारि मोमियां देउ भुरुहीपर ❀ बदरै देत चुनौती जाउँ ॥
देर न करिहैं हम अंटापर ❀ बीतै घरी घरीपर ब्यार ।
फिरिकै रानी बोलन लागी ❀ कंता सुनौ हमारी बात ॥
पिंजरा साथ लेउ चिड़ियनके ❀ जिनको प्यार करो दिनरात ।
खिरकी खोल दई लाखनिने ❀ औ सब दीन्हे लाल उड़ाय ॥
दामन पकरो तब कुसुमाने ❀ औलाखनिते कही सुनाय ।
सोई पृथीराज दिल्लीके ❀ जिनके कठिन कियो संग्राम ॥
डोला लैगै संयोगिनिको ❀ काहे न कियो सामना जाय ।
गुस्सा ह्वइ तब लाखनि बोले ❀ औ रानीको दियो जवाब ॥
दासी कन्या संयोगिनिको ❀ पृथीराज लै गयो चोराय ।
बदला लेहैं मैं ताहीको ❀ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
तीन बरसकी मेरि उमारि थी ❀ नाहीं कमर धरी तलवार ।
तब क्या करते नासमुझीमें ❀ सोई अब हम भये तयार ॥
डोला लेहैं हम अगमाको ❀ रानी धीर धरो मनमाहिं ।
फिरिकै कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी दूध-धरो बिलखाय ॥

करे रसोई माता तिलका ❀ सो तुम जेइँ लेउ ज्योंनार ।
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❀ हमको भोजन जहर समान ॥
रुधिर धार सम हमहिं दूध है ❀ कैसे जेइ लेयँ ज्योंनार ।
नदि बितवैपर हमरि रसोई ❀ पासे हमुहिं चौंड़िया राय ॥
सोई खैहैं हम नदियापर ❀ फिर कुसुमाने कही सुनाय ।
चटक चूनरी ना मैली भई ❀ ना धोबी घर गयो पटोर ॥
लाज न छूटी मेरे नैनकी ❀ कंता छांड़ि चले परदेश ।
अबके बिछुरे फिर कब मिलिहो ❀ स्वामी हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले लाखनि तब रानीते ❀ रानी सुनो हमारी बात ।
चारि महीनाके बीतेपर ❀ पँचये हेरिओ बाट हमारि ॥
सुनते कुसुमा बोलन लागी ❀ हमरो जोबन गौ कुम्हिलाय ।
सगुन हमारो खाली परिगौ ❀ अब ना मिलिहै कंत हमार ॥
थोरे दिनकी यह जोड़ी थी ❀ सो ब्रह्माने दइ बिछुराय ।
बारी उम्मिरिया बिरहिनकी ❀ बेड़ा कौन लगैहै पार ॥
हाय बिधाता यह कैसी भइ ❀ यह दुख हमहिं दियो करतार ।
लाखनि समुझायो रानीको ❀ मनमें धीर धरो महरानि ॥
बिना मीच कोऊ मरिहै नहिं ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ।
सरग मड़ैया सब काहूकी ❀ कोउ आजु मरै कोउ कालिह ॥
शूर प्राण खोवत रण सन्मुख ❀ कायर भागत प्राण बचाय ।
काज पराये जो मरि जैहैं ❀ ह्वइहै नाम प्रगट संसार ॥
घरमें रहिकै जो मरि जैहैं ❀ कोउ न लेहैं नाम हमार ।
यह सुनि कुसुमा बोलन लागी ❀ स्वामी खेलौ जूझ अघाय ॥
काम बनाओ चन्देलेको ❀ पै इक वचन सुनौ दै कान ।
पांव पिछारू ना धरियो तुम ❀ नहिं क्षत्रीपन जाय नशाय ॥
जो सुनि पैहौं भगे कनौजी ❀ तो मैं पेटु मारि मरि जाउँ ।
रणके सन्मुख जो मरि जैहौ ❀ ह्वइहौं सती तुम्हारे साथ ॥
यह सुनि हँसिकै लाखनि बोले ❀ रानी वचन करौ परमान ।

इन्द्र डोलि जायँ इंद्रासनते ❋ औ शिव डोलि जायँ कैलाश ॥
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ चाहै धजी धजी उड़ि जायँ ।
मोहिं कसम माता तिलकाकी ❋ औ जयचंदके रक्त नहाउँ ॥
कटि कटि मांस गिरै धरनीपर ❋ पैं ना धरौं पिछारी पांव ।
फिरि यह बोली कुसुमा रानी ❋ परहुल दिया बुझाये जाउ ॥
जो अंटाते देखि परत है ❋ ताको खटका देउ मिटाय ।
सिहा ठाकुर परहुलवाला ❋ ताको खटका हमहिं सिवाय ॥
बोले लाखनि तब रानीते ❋ पहिले दिया दिहैं बुझवाय ।
धीरज दैकै रनि कुसुमाको ❋ औ चलि भये कनौजीराय ॥
संगै चलिभै ऊदनि बांकुड़ा ❋ लाखनि डंका दियो बजाय ।
कान अवाज परी तिलकाके ❋ सो द्वारेपर पहुंची आय ॥
पूँछै तिलका तब लाखनिते ❋ कहँकी त्यारी दई कराय ।
बोले लाखनि हाथ जोड़िकै ❋ हम महुबेको भये तयार ॥
यह सुनि बोली रानी तिलका ❋ कुसुमै संग लिवाये जाउ ।
बोले लाखनि तब तिलकाते ❋ माता बोलौ बात सम्हारि ॥
हँसी हमारी जगमें होइ हैं ❋ यह कहि हंसिहैं सकल जहान ।
बेनचक्कवै को नाती है ❋ डोला संग पद्मिनी क्यार ॥
पृथीराज यह ताना देहै ❋ कुसुमा रानी तुम्हरे साथ ।
यह कहि चलिभै लाखनि राना ❋ औ जैचंदपै पहुंचे जाय ॥
ऊदनि लाखनि करी बन्दगी ❋ हाथ जोरि यह कही सुनाय ।
आज्ञा दैदेउ हंसी खुशीते ❋ महुबे कूच जायँ करवाय ॥
सोने सिंहासन जैचंद बैठे ❋ बैठे बड़े बड़े उमराव ।
गांजरवाले चारिहु राजा ❋ बारह कुंवर बनौधे क्यार ॥
लला तमोली धनुआं तेली ❋ मीरा सैयद बनरस क्यार ।
यह सब बैठे थे बंगलामें ❋ सबते जैचंद कही सुनाय ॥
सबको सौंपत हौं लाखनिको ❋ हमको फेरि मिलायो आय ।
इतनी सुनतै मीरा सैयद ❋ तुरतै लियो कुरान उठाय ॥

चारों राजा गांजरवाले ❁ बारह कुँवर बनौधे क्यार ।
धनुआं तेली लला तमोली ❁ सबने गंगा लई उठाय ॥
पहिले जुझिहैं हम खेतन में ❁ ता पाछेते पुत्र तुम्हार ।
जहां पसीना गिरै कुँवरको ❁ तहँ दै देयँ रक्तकी धार ॥
ठाढ़ी तिलका जो बँगलापर ❁ त्यहि ऊदनिको लियो बुलाय ।
बोली तिलका बघ ऊदनिते ❁ बेटा सुनौ हमारी बात ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको ❁ खेलियो युद्ध एकही साथ ।
लाय मिलायों फिरि बेटाको ❁ औ गाढ़ेमें दीजो संग ॥
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❁ माता सुनौ हमारी बात ।
सौंपत नाहीं कोउ क्षत्रीको ❁ निशिदिन रहत कालके साथ ॥
पै हम बचन देत माताको ❁ हमरे वचन करौ परमान ।
गिरै पसीना जहँ लाखनिको ❁ तहँ मैं देउँ रक्तकी धार ॥
भाई समुझत हौं हिरदैसे ❁ सो तुम जानि लेउ महरानि ।
इतनी सुनतै रानी तिलकाने ❁ भुरुही हथिनी लई मँगाय ॥
मस्तक पूजि दियो हथिनी को ❁ औ लाखनिको लियो बुलाय ।
हाथ पकरिकै तब लाखनिको ❁ औ भुरुहीते कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको ❁ नहिं तुम धरियों पावँ पिछारि ।
रोचना करिकै तब तिलकाने ❁ औ छातीते लियो लगाय ॥
चरण छुये माता तिलकाने ❁ औ माथेते लियो लगाय ।
भुरुही हथिनी तब सजवाई ❁ तापर लाखनि भये सवार ॥
बोले लाखनि सब क्षत्रिनते ❁ यारौ सुनौ हमारी बात ।
घरमें तिरिया जिनहिं पियारी ❁ सो सब तलब लेउ घरजाउ ॥
जिनहिं पियारी परमभगोती ❁ सो सजि चलो हमारे साथ ।
बोले क्षत्री तब लाखनिते ❁ हम ना तजिहैं साथ तुम्हार ॥
कटि कटि बोटी गिरैं खेतमें ❁ पै ना तजिहैं साथ तुम्हार ।
गंगा कीन्ही सब हिन्दुनने ❁ औ तुर्कनने करी कुरान ॥

इतनी सुनतै लाखनिराना ❋ अपनो कूच दियो करवाय ।
लश्करचलिभयोगढ़कनउजते ❋ संगै चले बनाफर राय ॥
आल्हाचलिभैतबारिजिगिरिते ❋ संगै मिलो काफिलाजाय ।
साथमें डोला सब रानिनके ❋ संगै चले महोबिया ज्वान ॥

अथ सिंहाठाकुरसे लाखनिकी लड़ाई

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औगणपतिके चरण मनाय ।
सिंहा ठाकुर औ लाखनिकी ❋ लिखिहौं कछुक दिहैं बुझवाय॥
होत सबेरे परहुल पहुँचे ❋ तब लाखनिने कही सुनाय ।
हम करार कीन्हों रानीते ❋ परहुल दिया दिहैं बुझवाय ॥
आल्हा बोले तब लाखनिते ❋ धीरज धरो कनौजी राय ।
पाती लिखिकै हम सिंहाको ❋ अबहीं दिया दिहैं बुझवाय ॥
लैकै कागद कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ।
पहले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पीछेते लिखो हवाल ॥
पाती पढ़ियौ सिंहा ठाकुर ❋ गालिब हुकम कनौजीक्यार ।
दिया बुझाय देउ अंटाको ❋ औ सजि चलौ हमारे साथ ॥
लाखनि आये हैं कनउजते ❋ गढ़ महुबेको किया पयान ।
लिखिकै पती नुनि आल्हाने ❋ हरकारा को दइ पकराय ॥
गयो हरकारा तब परहुलमें ❋ औ सिंहाको करी सलाम ।
पाती धरि दइ तहँ गद्दीपर ❋ सिंहा पाती लई उठाय ॥
पाती बांचत गुस्सा आई ❋ नैनन रही लालरी छाय ।
तुरत नगरची को बुलवायो ❋ तुरतै डंका दियो बजाय ॥
फौज त्यार भइ सब परहुलकी ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
हाथी सजवायो सिंहाने ❋ तुरतै ता पर भयो सवार ॥
जाय पहूँचो जब धूरेपर ❋ तब सिंहाने कही सुनाय ।
'कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❋ सो सम्मुहे ह्वइ देय जवाब ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ औ सिंहाको दियो जवाब ।

लाखनि आये हैं कनउजते ❀ आगे जैहैं नगर महोब ॥
दिया बुझाय देउ अंटाको ❀ औ सजि चलौ कनौजी साथ ।
इतनी सुनतै सिहा ठाकुर ❀ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ॥
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❀ सबकी कटा देउ करवाय ।
झुके खलासी तब तोपनमें ❀ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ चहुँदिशि धुवां रह्यो मंडराय ।
अररर गोला छूटन लागे ❀ गोली मन्न मन्न मन्नाय ॥
पहर एक भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ ।
आगे बढ़िकै सब क्षत्रिनने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही कनउजवाले ❀ खटखट चलन लगी तलवार ।
भगे सिपाही परहुलवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
यह गति देखी जब सिंहाने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
सिंहा ठाकुर बोलन लागे ❀ समुहे खेलो जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❀ आगे भुरुई दई बढ़ाय ।
गुस्सा ह्वैकै तब सिंहाने ❀ अपनो लीन्ही चोट बचाय ॥
चोट चलाय दई लाखनिपर ❀ लाखनि लीन्ही चोट बचाय ।
आगे बढ़िकै तब लाखनिने ❀ सिंहा ठाकुरको लो बांधि ॥
लाखनि पहुँचे सतखंडापर ❀ करमें लैकै लाल कमान ।
तीर चलाय दियो लाखनिने ❀ औ दीपकको दियौ गिराय ॥
फौज साथ लीन्हीं सिंहाकी ❀ औ सिंहाको साथ लिवाय ।
कूच कराय दियो आगेको ❀ कोड़हरि धुरो दबायो जाय ॥

अथ गंगा ठाकुरसे आल्हाकी लड़ाई

सुमिरण करिकै नारायणको ❀ औ गणेशके चरण मनाय ।
लिखौं लड़ाई अब गंगाकी ❀ यारौं सुनियो कान लगाय ॥
बोले जगनायक ऊदनिते ❀ हमरे वचन करौ परमान ।
कोड़हरिवाले गंगा ठाकुर ❀ हरनागर लै गये चोराय ॥

उठे सोयकै जब देखा हम ❀ ना कहुँ घोड़ा परो दिखाय।
चिह्न देखिकै तब टापनके ❀ हम कोड़हरिमें पहुँचे जाय॥
घोड़ा मांगो हम गंगाते ❀ तबहीं गंगा उठे रिसाय।
विनती कीन्हीं हम रानीकी ❀ तब उन घोड़ा दियो मंगाय॥
कोड़ा हमरो सवा लाखको ❀ सो नहिं दियो पँवारे राय।
हमहूँ चलि भये यह कहिकै तब ❀ लौटत लैहैं नगर लुटाय॥
सो तुम कोड़ाको मंगवावो ❀ नहिं म्वहिं हँसै रजा परिमाल।
सुनतै ऊदनि बोलन लागे ❀ औ लाखनिते कही सुनाय॥
कोड़ा लेबेके बदलेमें ❀ हम कोड़हरिको लिहैं लुटाय।
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❀ धीरज धरौ उदैसिंहराय॥
मामा हमरे गंगा ठाकुर ❀ तिनसे कोड़ा लिहैं मंगाय।
अबही पाती हम भेजत हैं ❀ यह कहि कलमदान लै हाथ॥
लैकै कागद कल्पीवाला ❀ लाखनि पाती लिखी बनाय।
मामा हमरे तुम लागत हो ❀ सो तुम मानौ कही हमारि॥
जगनिक ठाकुर महुबेवाले ❀ तिनको कोड़ा लियो उठाय।
सो पठवाय देउ जल्दीते ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय॥
पाती लिखिकै यह लाखनिने ❀ हरकाराको दइ पकराय।
पाती लैकै गयो हरकारा ❀ औ कोड़हरिमें पहुँचो जाय॥
जहां कचहरी थी गंगाकी ❀ धावन नैकै करी सलाम।
पाती दीन्हीं लाखनिवाली ❀ पाती पढ़ी पँवारे राय॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो करवाय।
बजै नगारा हमरे दलमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार॥
डंका बाजो तब कोड़हरिमें ❀ लश्कर सजिकै भयो तयार।
हथिनी सजवाई गंगाने ❀ तापर तुरत भये असवार॥
कूच कराय दियो लश्करको ❀ औ धूरेपर पहुँचे आय।
गंगा बढ़िकै बोलन लागे ❀ को यहु धुरो दबायो आय॥

लाखनि मुरुही दाबे आये ❀ औ गंगाते लगे बतान ॥
मामा हमरे तुम लागत हौ ❀ काहे रारि करत बिनकाज ।
आल्हा ऊदनि महुबेवाले ❀ जिनको जानत सकल जहान ॥
तिनको कोड़ा तुम मँगवावो ❀ औ आल्हाते करो मिलाप ।
दुसरी करिहौ जो आल्हाते ❀ तो सब जैहैं काम नशाय ॥
रारि बढ़ावौ ना मामा तुम ❀ इतनी मानौ बात हमारि ।
तापर ज्वाब दियो गंगाने ❀ है क्या चीज बनाफर राय ॥
देत चुनौती हम आल्हा को ❀ हमते कोड़ा लेयँ मँगाय ।
बातन बातन बतबढ़ होइ गयो ❀ औ बातनमें बाढ़ी रारि ॥
हुक्म देदियो गङ्गा ठाकुर ❀ तोपन आगी देउ लगाय ।
दगीं सलामी तब दोऊ दल ❀ चहुँ दिशि रहे अँधेरिया छाय ॥
गोली गोला छूटन लागे ❀ छूटन लगे अगिनिया बान ।
क्यागतिबरणौ त्यहिसमयाकी ❀ रणमें परी तोपकी मार ॥
तोपै धै धैं लाली होइ गईं ❀ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ ।
मारुवन्द भइ जब तोपनकी ❀ क्षत्रिय खैंचि लई तलवारि ॥
झुके सिपाही महुबे वाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
चारि घरीभरि चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
भगे सिपाही कोड़हरिवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
आगे बढ़िकै लाखनि बोले ❀ मामा मानौ बात हमारि ॥
अबहूँ मानौ कही हमारी ❀ कोड़ा तुरत देउ मँगवाय ।
बड़े लड़ैया महुबे वाले ❀ जिनते तुम जीतनके नाहिं ॥
नगर तुम्हारौ सब लुटवैहैं ❀ कलहा दस्सराजके लाल ।
बात न मानी गंगा ठाकुर ❀ अपनी हथिनी दई बढ़ाय ॥
गंगा बोले सुनि आल्हाते ❀ काहे देहौ प्राण गवांय ।
ऊदनि बोले तब गङ्गाते ❀ अबहीं घोड़ा देउ मँगाय ॥
कोड़ा देहौ ना हमरो तुम ❀ कोड़हरि तुम्हरी लिहौं लुटाय ।

यह सुनि गुस्सा होय गङ्गाने ❋ अपनो लीन्हो गुर्ज उठाय ॥
चोट चलाई बघदनि पर ❋ ऊदनि लैगै चोट बचाय ।
ऐड़ लगाई तब घोड़ाके ❋ औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय ।
ऊदनि झपटि गये आल्हापै ❋ औ आल्हाते लगे बतान ॥
तुम्हरि बरनीके गङ्गाहै ❋ तुरतै ले जँजीरन बांधि ।
बढ़िगै आल्हा तब आगेको ❋ औ गङ्गाते कही पुकारि ॥
कोड़ा हमरो ना देहौ जो ❋ तौ तुम खबरदार ह्वइ जाय ।
खैंचि शिरोही लइ गङ्गाने ❋ लै बजरंग बलीका नाम ॥
करो जड़ाका जब सम्मुहेपर ❋ आल्हा लीन्ही ढाल अड़ाय ।
सात सिरोही गंगा मारी ❋ आल्हा लीन्ही चोट बचाय ॥
बोले आल्हा तब गंगाते ❋ उसरिन खेलौ जूझ अघाय ।
लैकै सांकल तब आल्हाने ❋ पचसावदको दइ पकराय ॥
सांकल फेरी जब हाथीने ❋ तब गंगाको लियो बंधाय ।
ऊदनि पहुँचे तब कोड़हरमें ❋ सिगरी लियो बजार लुटाय ॥
खबरि पायकै बोना ठाकुर ❋ सो कोड़ालै पहुँचो आय ।
करी अधीनी तब आल्हाकी ❋ औ कोड़ा लै धरो अगार ॥
हाथ चलैयो ना गंगापर ❋ हौ समरत्थ बनाफर राय ।
लैकै कोड़ा तब आल्हाने ❋ जगनायकको दौ पकराय ॥
कैद छाँड़ि दइ तब गंगाकी ❋ गंगाको लौ साथ लिवाय ।
लश्कर साथ लियो गंगाको ❋ औ चलि गये बनाफरराय ॥
कूच करायी सब लश्करको ❋ जमुना निकट पहूँचे जाय ।
डेरा डारि दिये नदियापर ❋ भोरहि उतरि गये वापार ॥
जबहीं पहुँचे शहर कालपी ❋ आये जबहीं बीच बजार ।
लूटि बजार लई लाखनि तब ❋ बोले उदैसिंह बलवान ॥
क्यों बजार तुमने लुटवाई ❋ तब हँसि कही कनौजीराय ।

कोइहरि तुमने क्यों लुटवाई ❀ गंगा मामा लगत हमार ।
बदला लीन्हो हम मामाको ❀ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ॥
ढेबा बोलो तब ऊदनिते ❀ भैया भूलि जाउ सब बात ।
संग आपने तुम लाये हौ ❀ ताते बैठि रहौ चुप साधि ॥
दूजी करिहौ जो लाखनिते ❀ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि ।
काम बनावौ चंदेलेको ❀ नदिया खेलौ जूझ अघाय ॥
यह सुनि ऊदनि चुप्पै होइगे ❀ अपनो डेरा दियो डराय ।
शहर कालपी के धूरे ते ❀ नदिया बितवैके मैदान ॥
लश्कर परि गयो बहुत दूरिलौं ❀ झंडन रही लालरी छाय ।
बोले जगनायक आल्हाते ❀ मल्हनै खबरि सुनावौ जाय ॥
सुनतै पाती लिखि ऊदनिने ❀ सो जगनिकको दई गहाय ।
जगनिक चलिभये तब लश्करते ❀ औ महुबेमें पहुँचे जाय ॥
मल्हना देखो जब जगनिकको ❀ तब छातीते लियो लगाय ।
तौलौं माहिल दाखिल ह्वैगे ❀ जगनिक करन बहाना लाग ॥
पाती दीन्ही जो हमको तुम ❀ सो आल्हा पढ़ि दई फेंकाय ।
बात न मानी कछु आल्हाने ❀ हमने बहुत मनायो जाय ॥
यह सुनि मल्हना रोवन लागी ❀ तब माहिल यह लगे बतान ।
बात हमारी बहिनी मानो ❀ अब तुम डांड़ देउ भरवाय ॥
बोले जगनिक तब माहिलते ❀ मांगत डांड़ काह चौहान ।
माहिल बोले तब जगनिकते ❀ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
सिगरो शहर ग्वालियर मांगत ❀ मांगत उड़न बछेड़ा पांच ।
बैठक मांगत खजुहागढ़को ❀ मल्हना क्यार नौलखा हार ॥
पारस पूजाको मांगत हैं ❀ डोला लिहैं चन्द्रावलि क्यार ।
बोले जगनायक माहिलते ❀ अबहीं डांड़ दिहैं भरवाय ॥
पारसपूजा है कोठरिमें ❀ सो तुम पहिले लावौ उठाय ।
गये कुठरियामें माहिल जब ❀ जगनिक बन्द दियो करवाय ॥

पाती लैकै ऊदनि वाली ❀ सो मल्हनाको दई गहाय ।
पाती बांची रनि मल्हना ❀ औ राजाको लियो बुलाय ॥
हाथमें पाती दई राजाके ❀ राजा पाती बांचन लाग ।
बहुत खुशी भये पाती पढ़िकै ❀ मल्हना बहुत खुशी ह्वैजाय ॥
माहिल बोले तब कोठरीते ❀ बिछुरे लरका मिले तुम्हार ।
कैद छोड़ि देउ अब बहिनी तुम ❀ ना घटि करिहौं साथ तुम्हार ॥
चुगुली करिहौं ना तुम्हरी कछु ❀ सो तुम मानौ कही हमारि ।
दाया करिकै तब मल्हनाने ❀ तुरतै माहिल दियो निकार ॥
चलिभे माहिल तब महलनते ❀ औ बगियामें पहुँचे जाय ।
हाल सुनायो पृथीराजको ❀ आये यहां बनाफर राय ॥
साथ लै आये हैं लाखनिको ❀ औ नदियापर कियो मुकाम ।
घाट बयालिस अब रुकवावौ ❀ अपनो पहरा देउ बिठाय ॥
सुनतै राजा पृथीराजने ❀ सिगरे घाट लिये रुकवाय ।
पहरा अपने तहँ बैठाये ❀ कोउ ना जाय नदीके पार ॥
आल्हा मनौआ यह पूरा भा ❀ सो हम लिखो सुमिर करतार ।
आगे लड़ाई है बितवा पर ❀ सो हम लिखिकैं दिहैं सुनाय ॥
कठिन लड़ाई भइ पिरथी संग ❀ जीते जंग कनौजी राय ।
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❀ नित उठि लेव नाम भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।

इति आल्हा मनौआ समाप्त

श्रीः

अथ नदिया बितवैकी लड़ाई

★

लावनि-विजय

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

स०-होत प्रकाश दिवाकरको तब, चन्द्रप्रकाश लखाय परै ना ।
सिंहको शब्द सुनाय परै तब, मत्तगयन्द दिखाय परै ना ॥
शूर सिंगार करै रणको तब, नारि सिंगारपै ध्यान धरै ना ।
बात यही समरत्थन केरि कि, भावी टरै पर बात टरै ना ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरङ्गबलीको नाम ।
कहौं लड़ाई अब बितवैकी ❋ यारो सुनो छोड़ि सब काम ॥
बाग चिरैया बिन सूनो है ❋ सूनो कमल बिना है ताल ।
बिना पातको तरुवर सूनो ❋ सूनो बिना मंत्रि भूपाल ॥
बिन विद्याको ब्राह्मण सूनो ❋ सूनी बिना पुरुषकी नारि ।
रैनि तो सूनी है चन्दा बिन ❋ ठाकुर बिना सूनि चौपारि ॥
सूनो मंदिर निशि दीपक बिन ❋ सूनो बिना पुत्र परिवार ।
अकिले ऊदनिके जियरा बिन ❋ सूनो भूमि चन्देले क्यार ॥
सुनी खबरिया जब ऊदनिने ❋ पिरथी घाट लियो रुकवाय ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा अब कछु करौ उपाय ॥
घाट बयालिस पिरथी रोके ❋ तब आल्हाने कही सुनाय ।
धीरज राखौ तुम अपने मन ❋ अबहीं देहौं जतन बताय ॥
कलश मंगाय लियो सोनेको ❋ औ इक बीरा लियो मंगाय ।

सो धरवाय दियो कलशापर ❋ औ आल्हा यह कही सुनाय ॥
कौन सूरमा है दोनों दल ❋ जो बितवापर पान चबाय ।
मारि भगावै चौहाननको ❋ पृथीराजको देय हटाय ॥
यह सुनि क्षत्री चुपके ह्वइगये ❋ सबने शीश लियो औंधाय ।
घरी एक बीराको ह्वइगौ ❋ तब ऊदनि उठि कही सुनाय ॥
मारि भगैहौं चौहाननको ❋ पृथीराजको दिहौं हटाय ।
घाट बयालिस मैं छुटवैहौं ❋ अबहीं बीरा लिहौं चबाय ॥
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय ।
गांजर उसरी रहै तुम्हारी ❋ अब यहँ काम कनौजी क्यार ॥
इतनी सुनिकै मीरा सैयद ❋ सो लाखनिते लगे बतान ।
बात सुनाई जो आल्हाने ❋ सो तुम समुझि लेउ महराज ॥
पान चबाय लेउ बितवैपर ❋ हम चलि दैहैं साथ तुम्हार ।
धनुआं तेली बोलन लागो ❋ सैयद सांची कही सुनाय ॥
याही दिनको तुम आये हो ❋ लाये ऊदनि संग लेवाय ।
राजपाट आपनो छाड़ो तुम ❋ घरमें तजी पद्मिनी नार ॥
बीरा चाबि लेउ जल्दी तुम ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ।
हम छुटवैहैं घाट बयालिस ❋ नाहीं छोड़िहैं साथ तुम्हार ॥
सुनतै उठिकै लाखनि राना ❋ नदियापर लियो पान चबाय ।
हुक्म दै दियो तब लाखनिने ❋ लश्कर डंका देउ बजाय ॥
बजा नगारा तब लश्करमें ❋ क्षत्री साजि भये तैयार ।
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ हमहूँ चलैं तुम्हारे साथ ॥
तब हँसि लाखनि बोलन लागे ❋ तुम ना कही मर्मकी बात ।
ना मोरि भुरुही बूढ़ी ह्वइगइ ❋ ना बल घटो परवौरन क्यार ॥
बात कही तुम संग चलनकी ❋ सो हमरे मन नाहिं समाय ।
मारि भगहौं मैं पिरथीको ❋ औ धूरे लौं हनौं निशान ॥
यहकहिचलिभयेलाखनिराना ❋ औ सैयदते लगे बतान ।

अब तुम कूच करो लश्कर लै ❁ तब सैयदने कही सुनाय ॥
पांजि लगाय लेउ नदियाकी ❁ सिगरी फौज होय वापार ।
यह कहि चलिभे मीरा सैयद ❁ लाखनि धनुआं संग लेवाय ॥
राह पकरि लइ तब नदियाकी ❁ लश्कर साथ कनौजी क्यार ।
नौसै हथिनी लिये साथमें ❁ सुपना पानि पियावन जाय ॥
घाम बदरियाको दुपहरमें ❁ लागत तनमें तीर समान ।
सबियां हथिनी व्याकुल ह्वैके ❁ नदि बितवैमें गईं मंझाय ॥
नदिया पार गई हथिनी जब ❁ तब हरकारा बढ़ो अगार ।
खबरि सुनाई सो चौंड़ाको ❁ हथिनी आईं नदीके पार ॥
नौसै हथिनी हैं लाखनिकी ❁ ताको अब कछु करो उपाय ।
इतनी सुनते चौंड़ा ब्राह्मण ❁ अपनो हाथी लियो सजाय ॥
तुरत सवार भयो हाथीपर ❁ औ बितवापर पहुंचो जाय ।
नौसै हथिनी जो लाखनिकी ❁ सो चौंड़ाने लई खेदाय ॥
भगो महावत तब नदियाते ❁ औ लाखनिपै पहुंचो जाय ।
हाल बतायो सब हथिनिनको ❁ चौंड़ा हथिनी लई खिदाय ॥
सुनतै गुस्सा ह्वइ लाखनिने ❁ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ।
जबहीं पहुंचि गये नदियापर ❁ औघट घोड़ा दिया चलाय ॥
हाथी हेलि दिये घाटनपर ❁ लश्कर उतरि गयो वापार ।
नौसै हथिनी थीं अपनी जहँ ❁ सातसै रहीं चौंड़िया क्यार ॥
हथिनी सोरहसै लाखनिने ❁ गुस्सा ह्वइ सब लई खिदाय ।
खबरि पहुंची तब चौंड़ाको ❁ लाखनि हथिनी लई खिदाय ॥
सुनतै चलिभयो चौंड़ा ब्राह्मण ❁ लश्कर डंका दियो बजाय ।
चौंड़ा पहुंचो चढ़ि हाथीपर ❁ नदिया बितवैके मैदान ॥
कछुक दूरि जब लाखनि रहिगे ❁ तब चौंड़ा यह कही सुनाय ।
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❁ काहे करो उतारा आय ॥
नाम आपनो तुम बतलावौ ❁ हियँपर कौन तुम्हारो काम ।
बोले लाखनि तब चौंड़ाते ❁ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ॥

संगमें आये हम ऊदनिके ❋ आगे दिखिहैं नगर महोब ।
नाम हमारो लाखनि राना ❋ औ कनउज है देश हमार ॥
हम हैं लरिका रतीभानके ❋ नाती बेनचक्कवे क्यार ।
यह सुनि चौंड़ा बोलन लागो ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात ॥
संगमें आये ना जैचंदके ❋ ना बुलवायो राजा परिमाल ।
साथमें आये तुम आल्हाके ❋ जगमें ह्वइहैं हँसी तुम्हारि ॥
ताते लौटि जाउ कनउजको ❋ इतनी मानो बात हमारि ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ चौंड़ा ब्राह्मण बात बताउ ॥
सुनी बड़ाई हम महुबेको ❋ नाहीं मनिहैं बात तुम्हारि ।
फिरिकै चौंड़ा बोलन लागो ❋ लाखनि मानौ कही हमारि ॥
जैसेइ लरिका रतीभानके ❋ तैसेही लरिका लगो हमार ।
ताते तुमको समुझावत हौं ❋ लाखनि लौटि कनौजे जाउ ॥
सात लाखते चढ़ो पिथौरा ❋ लैक खुरासान गुजरात ।
घाट बयालिस रोकवाये हैं ❋ सो तुम करो उतारा आय ॥
चढ़िहैं लश्कर पृथीराजको ❋ जब चौरासी बंब बजाय ।
तुम घिरिजहौ तब लश्करमें ❋ ना ठहरैगो पांव तुम्हार ॥
कुशल आपनी जो चाहो तुम ❋ चुप्पै लौटि कनौजे जाउ ।
इतनी बातैं सुनि चौंड़ाकी ❋ हँसिकै कही कनौजी राय ॥
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासनते ❋ औ शिव डोलि जायँ कैलाश ।
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ हमरे वचन करौ परमान ॥
बार बार चौंड़ा समुझायो ❋ मानी नाहिं कनौजी राय ।
बातन बातन बत बढ़ ह्वइगौ ❋ औ बातनमें बढ़िगइ रारि ॥
रिसहा ह्वइकै तब चौंड़ाने ❋ तुरतै दीन्हीं ढाल चलाय ।
तौ हम जानै तुम जोरावर ❋ जो यह ढाल लेउ उठवाय ॥
बोले लाखनि तब धनुआंते ❋ अबहीं लावौ ढाल उठाय ।
बोल्यौ चौंड़ा तब धांधूते ❋ हमरी लावौ ढाल उठाय ॥

हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❁ औ धनुआंते कही सुनाय ॥
आगे बढ़िहौ जो धनुआं तुम ❁ अबहीं भाला दिहौं चलाय ।
इतनी बात सुनत धांधूकी ❁ धनुआं घोड़ी दई बढ़ाय ॥
भाला मारौ तब धांधूने ❁ धनुआं लीन्हीं चोट बचाय ।
ढाल उठाय लई जल्दीते ❁ सो लाखनिको दीन्ही आय ॥
हँसिकै लाखनि बोलन लागे ❁ धनि तुम शूर कनौजी क्यार ।
लाखनि रानाने खेतनमें ❁ अपनो दियो कटार चलाय ॥
बोले लाखनि तब चौंड़ाते ❁ हमरो लेउ कटार उठाय ।
बोलो चौंड़ा तब भूराते ❁ अबहीं लेउ कटार उठाय ॥
लाखनि बोलो तब सैयदसे ❁ जल्दी लेउ कटार उठाय ।
भूरा मुग़ुल बढ़ो आगेको ❁ तब सैयदने कही पुकारि ॥
पांव बढ़ैहौ जो आगेको ❁ तौ हम लेहैं शीश उतारि ।
झुरमुट ह्वइगयो तब दोनोंको ❁ सैयद लीन्हों झपटि कटार ॥
आयकै दीन्ही सो लाखनिको ❁ तब हँसि कही कनौजीराय ।
अब हम जानी अपने मनमें ❁ तुम असमयमें ऐहो काम ॥
यह गति देखी जब लाखनिकी ❁ चौंड़ा बहुत गयो खिसियाय ।
हुक्म दै दियो तब चौंड़ाने ❁ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❁ तोपन बत्ती दई लगाय ।
दगी सलामी तब दोउ दलमें ❁ धुँअना सरग रहो मँड़राय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❁ गोली मघा बूँद झरिलाय ।
गोला ओलाके सम बरसै ❁ रणमें होय दनाक दनाक ॥
बरछी भाला छूटन लागे ❁ सरसर परी तीरकी मारु ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❁ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानननने ❁ लम्बे बन्द करैं हथियार ।
आगे बढ़िकै तब क्षत्रिनने ❁ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
खट खट तेगा बाजन लागे ❁ औ बूँदीकी चलै कटार ।
पैदल अभिरे तहँ पैदल संग ❁ औ असवारनते असवार ॥

हौदा मिलिगे तहँ हौदा संग ❋ सबके मारु मारु रटिलागि ।
चारि घरी भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
दबी बायसी तहँ लाखनिकी ❋ मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार ।
भगे सिपाही चौंड़ावाले ❋ औ सम्मुहेते गये बराय ॥
यह गति देखी जब चौंड़ाने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
बोला चौंड़ा तब लाखनिते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ ॥
दाबे भरुही लाखनि आये ❋ औ सम्मुहेपर पहुँचे आय ।
सम्मुहे देखो जब लाखनिको ❋ चौंड़ा लीन्ही लाल कमान ॥
कैवर छोड़ि दियो लाखनिपर ❋ लाखनि लीन्ही चोट बचाय ।
भाला अपनो लौ हाथेमहँ ❋ मनमें सोचि कनौजीराय ॥
मारो मस्तक तब हाथीको ❋ औ धरतीमें दियो गिराय ।
पांव पियादे चौंड़ा रहि गयो ❋ तब लाखनिने कही सुनाय ॥
पांव पियादे अब तुम रहिगे ❋ दुसरो हाथी लेउ मंगाय ।
हाथ चलैहैं ना तुमपर हम ❋ ताते हाथी लेउ सजाय ॥
यह गति देखी जब लाखनिकी ❋ चौंड़ा मनमें गयो सकाय ।
मुर्चा फेरि दियो अपनो तब ❋ जीते जंग कनोजी राय ॥

पृथीराज और लाखनिकी लड़ाई

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ।
लिखौं लड़ाई अब लाखनिकी ❋ ज्यहि विधि लड़े पिथौराराय ॥
सुनी खबरि जब पृथीराजने ❋ मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार ।
लाखनि आये हैं कनउजते ❋ नदिया करो उतारा आय ॥
हुक्म दै दियो पृथीराजने ❋ ताहर बेटाको बुलवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ सिगरी फौज होय तैयार ॥
ताहर पहुँचे तब लश्करमें ❋ तोप दरोगा लियो बुलाय ।
हुक्म दै दियो तब ताहरने ❋ सिगरी तोपैं लेउ सजाय ॥
हाथिनवालेको बुलवायो ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।

हाथी सजवाओ जल्दीते ❀ मुड़िया हौदा देउ धराय ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय ।
डंका दैदेउ तुम लश्करमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ॥
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सजन लगे तत्काल ।
दुइसै हाथी खूनी सजि गये ❀ दुइसै भूरा भये तयार ॥
दुइसै सजिगये मुकुट बन्दनी ❀ इकसौ मस्ता भये तयार ।
दुइसै सजिगये मकुना हाथी ❀ सबके माथे दिये रँगाय ॥
आदि भयंकर हाथी सजि गयो ❀ सजिगये तुरत वीर चौहान ।
नौसौ हाथिनके हलकामें ❀ झूमै आदि भयंकर ठाढ़ ॥
चढ़िगे पृथीराज हाथीपर ❀ शोभा कछू कही न जाय ।
पाग बैंजनी शिरपर सोहै ❀ कलंगी मोतीचूरकी लागि ॥
गजभरि छाती पृथीराजकी ❀ औ नैननमें बरै मशाल ।
पृथीराज बैठे हाथीपर ❀ मानो इन्द्र अखाड़े जायं ॥
सजिगयो लश्कर पृथीराजको ❀ तुरतै कूच दियो करवाय ।
मारू डंका बाजन लागो ❀ ढाढी करखा बोलन लाग ॥
हाहाकारी बीतन लागी ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
तीनि घरीके तब अरसामें ❀ पहुंचे आय समर मैदान ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहरने ❀ ताहर कर्णक्यार औतार ।
लाखनि रहिगे बीस कदम जब ❀ तब ताहर यह कही पुकारि॥
कहांते आये औ कहँ जैहौ ❀ अपनौ हाल देउ बतलाय ।
घाट बयालिस हम रोकवाये ❀ तुम क्यों करो उतारा जाय॥
काम तुम्हारो क्या अटको है ❀ सो तुम हमहिं कहौ समुझाय।
बोलो लाखनि तब ताहरते ❀ बेटा सुनौ पिथौरा क्यार ॥
हम आये हैं गढ़ कनउजते ❀ आगे देखिहैं नगर महोब ।
जायकै मिलिहै महाराजको ❀ लाखनिराना नाम हमार ॥
सुनतै ताहर बोलन लागे ❀ लाखनि सुनौ हमारी बात ।
महुबो घेरो दिल्लीपतिने ❀ तुम क्यों देहौ प्राण गंवाय॥

काम तुम्हारो ना अटको कछु ❋ ताते लौटि कनौजे जाउ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ ताहर सुनौ हमारी बात॥
देखन आये हम महुबेको ❋ मिलिहैं जाय रजापरिमाल।
तुम चढ़ि आये क्यों महुबेको ❋ काहे रारि बढ़ाई आय॥
हम नहिं लौटैंगे देखे बिन ❋ चाहे कोटिन करो उपाय।
इतनी सुनिलइ जब ताहरने ❋ तब गुस्सा ह्वइ कही सुनाय॥
कही हमारी अबहूं मानो ❋ लाखनि लौटि कनौजे जाउ।
प्राण तुम्हारे क्यों भारू हैं ❋ जो नदियापर दिहौ गंवाय॥
सुनतै लाखनि बोलन लागे ❋ ताहर अक्किल गई तुम्हारि।
आगे बढ़िकै हम आये हैं ❋ अब क्यो धरे पिछारी पांव॥
धर्म क्षत्रियनको नाहीं यह ❋ जो मुर्चाते जाय बराय।
लाखनि लौटनके नाहीं हैं ❋ चाहे प्राण रहैं की जायं॥
मर्द बनाये मरिजैबे को ❋ खटिया परिकै मरै बलाय।
होय पराक्रम जो तुम्हरेमें ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय॥
बात बनैबेको औसर नहिं ❋ गुजरै घरी घरी पर ब्यार।
गुस्सा ह्वइकै तब लाखनिपर ❋ ताहर हुक्म दियो करवाय॥
बत्ती दैदेउ तुम तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय।
झुकै खलासी तब तोपनपर ❋ तोपन बत्ती दई लगाय॥
मुर्चा लागि गयो दोनों दलमें ❋ शोभा कछू कही ना जाय।
राजा कालनेमि दक्खिनको ❋ पृथीराजको जो सरदार॥
त्याहिके मुर्चापर गंगाने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय।
भूरा मुग़ुलकेर मुर्चापर ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय॥
पटनाके राजा पूरसिंहने ❋ तिनउत मुर्चा दियो लगाय।
तिनके समुहे परसिंहाने ❋ अपनो मुर्चा दियो लगाय॥
धांधू ठाकुरके मुर्चा पर ❋ धनुआं मुर्चा दियो लगाय।
रहिमति सहमति दोनों जोधा ❋ तिन इत मुर्चा दियो लगाय॥

हिरसिंहबिरसिंहबिरियागढ़के ❀ तिन इत मुर्चा दियो लगाय ।
देवी मरहटा दक्खिनवाला ❀ अपनो मुर्चा दियो लगाय ॥
भूप गोरखा बंगालेको ❀ इतने मुर्चा दियो लगाय ।
वंशगोपालकेर मुरचा पर ❀ अंगद मुर्चा दियो लगाय ॥
यहि विधि मुर्चा लगे सबनके ❀ सो मैं कहँ लगि करौं बखान ।
ताहर ठाकुरके सम्मुहे पर ❀ मुरचा लागो कनौजी क्यार ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ कह कह करैं अगिनियाँबान ।
सननन गोली छूटन लागीं ❀ सरसर परी तीरकी मारु ॥
चारि घरी भरि गोला बरसो ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ ।
मारु बंद करि तब तोपनकी ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
दोनों फौजैं यकमिलि ह्वइगईं ❀ खटखट चलनलगी तलवारि ।
चले चुनब्बी औ गुजराती ❀ ऊना चले विलायत क्यार ॥
तेगा चटकैं वर्दवानके ❀ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ।
मुर्चा लौटि गयो ताहरको ❀ देखैं खड़े बीर चौहान ॥
आगे बढ़िगे पृथीराज तब ❀ अपनो लश्कर दियो बढ़ाय ।
नौसै हाथीके हलकामें ❀ घिरिगे बीर कनौजी राय ॥
लश्कर सात लाख दिल्लीको ❀ सो बितवापर पहुँचे आय ।
चले शिरोही आठ कोसलौ ❀ सबके मारुमारु रटि लागि ॥
पैदल गिरिगे पैग पैग पर ❀ उनके दुइदुइ पैग असवार ।
हाथी गिरिगे बिसे बिसेपर ❀ छोटे पर्वतकी अनुहार ॥
भुरुही घिरिगइतहँ लाखनिकी ❀ पृथीराजने घेरो आय ।
आधी नदियामें पानी बहै ❀ आधी बहै रक्तकी धार ॥
मीरा सैयद धनुआं तेली ❀ दोनों मनमें गये डराय ।
मुरचा छाड़ि दियो दोउनने ❀ औ सम्मुहेतें गये बराय ॥
जितने चढ़वायक लाखनिके ❀ सब मुरचाते चले बराय ।
भुरुही हथिनी लाखनिवाली ❀ सो मुर्चातें लौटन लागि ॥
यक ललकार दई लाखनिने ❀ भुरुही खबरदार ह्वइजाउ ।

मस्तक पूजो जब माताने ❀ तब तुमते यह कही सुनाय ॥
तुमको सौंपतिहौं लाखनिको ❀ तुमना धरियों पांव पिछार ।
याही दिनको रनि तिलकाने ❀ पालो तुमहिं बहुत दुलराय ॥
चहुँदिशि लाखनि देखन लागे ❀ कोउ ना आपन परो दिखाय ।
संगमें जितने राजा आये ❀ सब मोहराते गये बराय ॥
अनुआं तेली लला तमोली ❀ सोऊ ना कहुँ परत दिखाय ।
बड़ा आसरा था सैयदको ❀ सोऊ रणते गये बराय ॥
सोचैं लाखनि अपने मनमें ❀ को असमैंमें ऐहै काम ।
सुपना महाउत जो भुरुहीको ❀ तासे लाखनि लगे बतान ॥
कोउ सहायक ना हमरे संग ❀ जो गाढ़ेमें आवै काम ।
राजा जैचंदने हटका था ❀ ना महुबेको करौ पयान ॥
रानी कुसुमाने हटका था ❀ तुम ना जावो कन्त हमार ।
तुमघिरि जैहो दलके भीतर ❀ तब तुम करिहो कौन उपाय ॥
सात लाखते पिरथी घेरो ❀ हमते परो साबिका आय ।
साची बात भई रानीकी ❀ हम अब करिहैं कौनु उपाय ॥
बोले सुपना तब लाखनिते ❀ कहौ तौ कनउज चलौं लिवाय ।
तब ललकारो लाखनि राजा ❀ सुपना अपनी जीभ सम्हारु ॥
जो हम भागि जायं मुरचाते ❀ बूड़ै सात साखिको नाम ।
कोउ न अमर भयो दुनियामें ❀ हैं क्या अमर कनौजीराय ॥
रणके सन्मुख जो मरिजैहैं ❀ जगमें चलिहैं नाम हमार ।
बड़े बड़े राजा जगमें ह्वइगे ❀ कोउ न अमर भये जगमाहिं ॥
क्या हम अम्मर हैं दुनियांमें ❀ जो मुरचाते जायं बराय ।
लाखनि उतरि परे भुरुहीते ❀ चौबिस बोतल फूल मगाय ॥
सो पिलाय दीन्हों भुरुहीको ❀ भांग मिठाई दई खवाय ।
गोटादै दियो फिर अफीमको ❀ राती माती दई बनाय ॥
अहदू डारि दियो हाथिनीके ❀ औ भुरुहीते कही सुनाय ।
पांव पिछारु तुम ना धरियो ❀ रणमें रखियो धर्म हमार ॥

चहूँ ओर लश्कर पिरथीको ❋ सो तुम जौहर देउ दिखाय ।
लैकै सांकल लाखनि राना ❋ सो भुरुहीको दइ पकराय ॥
सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लैके अजैपालको नाम ।
प्राण हथेली पर धरि लीन्हे ❋ अपनो मयामोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही लाखनि राना ❋ बीच गोलमें गये समाय ।
जैसे भिड़हा भेड़िन पैठइ ❋ जैसे सिंह बिड़ारै गाय ॥
त्यों दल पैठे लाखनि राना ❋ अपनी नग्न लिये तलवारि ।
सांकल फेरै भुरुही हथिनी ❋ सबदल रैनबैन ह्वैजाय ॥
अकिलेलाखनिकीडपटनिमें ❋ कोऊ कुँवर न आड़ै पाँव ।

सवैया

लाखन भूपनमें यक सुन्दर, रूप छटा लखि काम लजावै ।
लाखनकी गिनती दलमें अरु, लाखन शूरनमें चलि जावै ॥
लाखन बीर हने क्षणमें लखि, ताहि भगें रिपु प्राण बचावै ।
ऐसो महाबलवान सो लाखनि, लाखनमें तलवारि चलावै ॥

एक पहर भरि चली शिरोही ❋ औ बहि चली रक्तकीधार ।
भगे सिपाहि दिल्लीवाले ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
लाखनि राना ढाल उठाये ❋ रणमें देत फिरत ललकार ।
है कोउ क्षत्री दिल्लीवालो ❋ सम्मुहे लड़ै आय मैदान ॥
हियांकि बातैं तो हियँ छाँड़ो ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
घोड़ा पियावन रूपना आयो ❋ नदिया बहै रक्तकी धार ॥
उँचे चढ़ि तब रूपना देखो ❋ औ घाटन तन रहो निहारि ।
ज्योंबादलबिचबिजुलीचमकै ❋ तैसेइ चमकि रही तलवारि ॥
चलिभयोरूपना तबनदियाते ❋ औ डेरन पर पहुँचो आय ।
ठाढ़ी दैवै जो तंबूमें ❋ सो रूपनाते पूछन लागि ॥
कौन सोचमें तुम रूपन हौ ❋ जियको भेद देउ बतलाय ।
बोलो रूपना तब दैवैते ❋ माता कछू न पूँछौ हाल ॥

कठिन लड़ाई भइ नदियापर ❀ अंधाधुन्ध चलै तलवारि ॥
मनहिं हमारे यह आवत है ❀ जूझे तहाँ कनौजी राय ।
खबरि मँगाय लेउ लाखनिकी ❀ माता मानौ कही हमारि ॥
सुनतै चलिभइ देव माता ❀ औ आल्हाके तंबू जाय ।
देखी सूरति जब मातकी ❀ आल्हा उठिकै कियो प्रणाम ॥
हाथ जोरिकै आहा बोले ❀ माता हाल देउ बतलाय ।
कौन कामको तुम आई हो ❀ तब देवैने कही सुनाय ॥
लाखनि आये हैं तुम्हरे संग ❀ सो तुम अकिले दिये चढ़ाय ।
है इकलौता रतीभानको ❀ नाती बेनचक्कवै क्यार ॥
तुमहिं मुनासिब यहु नाहीं थी ❀ जो तुम अकिले दियो पठाय ।
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❀ तौ जग होइहै हँसी तुम्हारि ॥
काह जवाब दिहौं जैचन्दको ❀ सो तुम खबरि लेउ तहँ जाय ।
चढ़ो पिथौरा सात लाखते ❀ अंधाधुन्ध चलै तलवारि ॥
लावौ खबरि जाय लाखनिकी ❀ बेटा मानौ बात हमारि ।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❀ माता सुनो बात धरि ध्यान ॥
तीनि महीना औ तेरह दिन ❀ तंग न छुटी बछेरन क्यार ।
कठिन लड़ाई भइ गांजरमें ❀ ठाढ़े पैसा लिये भराय ॥
गांजर उसरी थी ऊदनिकी ❀ नदिया उसरि कनौजी राय ।
लाखनि परे रहे तबुअनमें ❀ ऊदनि लड़े गँजहरन साथ ॥
जो कहुं ऊदनि मारे जाते ❀ तौ कहं मिलतो भाइ हमार ।
लाखनि चढ़िगे हैं बितवापर ❀ क्यों हम जयं जंग मैदान ॥
इतनी सुनिकै देवै चलिभई ❀ पहुंची जाय उदैसिंह पास ।
हाल सुनायो तब लाखनिको ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
जल्दीजावौ तुम नदिया पर ❀ औ सुधि लेउ कनौजी क्यार ।
हम समुझायो बहु आल्हाको ❀ उन ना मानी बात हमारि ॥
बोले ऊदनि तब देवैते ❀ आल्हा पठवैं तौ हम जायं ।
जेठे भैया बाप बरोबरि ❀ माता समुझि लेउ मनमाहिं ॥

यह सुनि देवै बोलन लागी ❀ बेटा सुनो हमारी बात ॥
बारह रानिनको इकलौता ❀ औ सोरहको सबं सिंगार ।
आश लकड़ियां है जैचँदकी ❀ सो तुम अकिले दियो पठाय ॥
राजा जचँद रनि तिलकाने ❀ सौंपो तुमहि कनौजीराय ।
सो तुम सुखते यहँ बैठे हौ ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❀ तुमको हँसिहै सब संसार ।
मित्र तुम्हारो मारो जैहैं ❀ तुम्हरे जीवनको धिक्कार ॥
ताते समुझि लेउ अपने मन ❀ जल्दी खबरि लेनेको जाउ ।
बोले ऊदनि तब देवैते ❀ हमरे मनमें नाहिं समाय ॥
बड़ लड़ैया लाखनि राना ❀ नकुला पंडाको अवतार ।
संकट परिहैं जब लाखनिपर ❀ तब वे खबरि दिहैं पहुँचाय ॥
फिरिकै देवैने समुझायो ❀ बेटा सुनौ हमारी बात ।
पूरे क्षत्री जो दुनियांमें ❀ सो दे देते अपने प्राण ॥
संकट लाखनि सहिशिरऊपर ❀ पैनहिं खबरि करहिं सकुचाय ।
कही रमारी ऊदनि मानो ❀ अबही कूच जाउ करवाय ॥
खबरिलैआवोतुमलाखनिकी ❀ इतनी मानो कही हमारि ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ आल्हा भेजैं तो हम जायँ ॥
कहे तुम्हारे हम ना जैहैं ❀ चाहे कोटिन करौ उपाय ।
यह सुनि देवै रोवन लागी ❀ लागी कहन मर्मकी बात ॥
हुक्म न मानत तुम माताको ❀ है कलजुगहा पुत्र हमार ।
हमने जानी थी अपने मन ❀ हमरे दोनों पूत सपूत ॥
कही न मानी तिन दोनोंने ❀ हमरे जीवनको धिक्कार ।

सवैया

जो दश पुत्रजनै गदही तो, कहा दश पुत्र जने सुख पावै ।
लादत लादत बोझ सबै बिधि, आयु घटेपर सो मरि जावै ॥
सिंहिनि एकहि पुत्र जनै, वनमें सुखते सब आयु बितावै ।
पूत सपूत सदा सुख देत, कपूत सदा दुखको सरसावै ॥

रामचन्द्र त्रेतामें उपजे ❀ जिनको नाम प्रकट संसार ।
सौती माताके कहिबेते ❀ चौदह वर्ष कीन्ह बनवास ॥
पूत सपूत होय कुंछामें ❀ मानै हुक्म मातु पितु क्यार ।
पूत कपूत होय कुंछामें ❀ नित दुख देय सबहिं संसार ॥
बिटिया होती जो मोरे इक ❀ कोइ राजाके देती ब्याहि ।
कुम्मक लौती तेहि राजाकी ❀ औ लाखनिको लेत बचाय ॥
यह सुनि ऊदनि कायल होइगे ❀ औ मातासे लगे बतान ।
हुक्म तुम्हारो हम मानत हैं ❀ माता वचन करो परमान ॥
बिना बुलाये हम लाखनिके ❀ कैसे जायँ समर मैदान ।
देवै पहुँची तब सुनवांपै ❀ औ लाखनिको कह्यो हवाल ॥
दोनों भाइनको समुझायो ❀ उनना मानी बात हमारि ।
कही हमारी अब तुम मानौ ❀ औ ऊदनिको देउ पठाय ॥
भेजो सुनवां तब बांदीको ❀ औ ऊदनिको लियो बुलाय ।
चौकी डारि दई सुनवांने ❀ ऊदनि सुनवैं कियो प्रणाम ॥
जबहीं बैठि चुके चौकीपर ❀ तब सुनवांने कही सुनाय ।
मित्र कनौजी अस मिलिहैना ❀ भाई न मिले वीरमलिखान ॥
माता देवैसी मिलि है ना ❀ चाहौ धरौ लाख औतार ।
क्योंनहिं खबरि लई नदियाकी ❀ जहँ घिरि गये कनौजीराय ॥
बारह राननिको इकलौता ❀ औ सोरहको सर्व सिंगार ।
यक अधार रानी तिलकाको ❀ सो तुम अकिले दिये पठाय ॥
बैठक छांड़ी जिन जैचँदकी ❀ घरमें तजी पद्मिनी नारि ।
दर्शन छांड़ि फूलमती के ❀ छांड़े गंगाके असनान ॥
साथ तुम्हारो पै छांड़ो ना ❀ औ चलि आये परायेकाज ।
प्रीति पतिंगा की सांची है ❀ जो जरिजात दिया के साथ॥
प्रीति कनौजीकी सांची है ❀ जिन नहिं छांड़ो संग तुम्हार ।
लावौ खबरि जाउ जल्दीते ❀ देवर मानौ कही हमारि ॥
जो नहिं इच्छा होय तुम्हारी ❀ तो तुम धरौ जनानो भेष ।

लहँगा लुगरा पहिरि लेउ तुम ❋ औ धरिदेउ ढाल तलवारि ॥
कपड़ा अपने हमको दैदेउ ❋ औ दैदेउ बेंदुला घ्वोड़ ।
अबहीं जैहैं मैं नदियापर ❋ लैहौं खबरि कनौजी क्यार ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ भौजी सुनौ हमारी बात ।
बड़े बली हैं लाखनि राना ❋ नकुला पंड़ाके औतार ॥
खेदिकै मरिहैं पृथीराजको ❋ औ दिल्लीलौं दिहैं भगाय ।
जोपै आज्ञा है माताकी ❋ औ है भौजी हुकम तुम्हार ॥
तौ हम जैहैं समरभूमिपर ❋ लैहैं खबरि कनौजी क्यार ।
यह कहि चलिभै ऊदनि बांकुड़ा ❋ घोड़ा बेंदुला लियो मँगाय ॥
सो सजवाय लियो जल्दीते ❋ तापर तुरत भये असवार ।
ऊदनि पहुँचे तुनि आल्हापै ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
सुनी खबरि हम लाखनि घिरिगै ❋ नदिया बितवैके मैदान ।
मारे जैहैं जो लाखनि तहँ ❋ तो जग ह्वैहै हँसी हमारि ॥
ताते त्यार भये नदियाको ❋ लैहै खबरि कनौजी क्यार ।
तुमहूँ त्यार होउ जल्दीते ❋ तुरते फौज लेउ सजवाय ॥
हुकम दैदेयो तब आल्हाने ❋ सिगरी फौज होय तैयार ।
बजौ नगारा तब लश्करमें ❋ लश्कर सजिकै भयो तयार ॥
कूच कराय दियो लश्करको ❋ आगे चले उदयसिंहराय ।
लीन्हे साठि सवार साथमें ❋ जो मरिबोको नाहिं डेराय ॥
चारौ राजा गांजरवाले ❋ बारह कुँवर बनौधे क्यार ।
धनुआ तेली मीरा सैयद ❋ सब मुर्चा आये बराय ॥
राहमें मिलि गये ऊदनिबाघा ❋ सो सैयदते पूँछन लागि ।
कहँपर छाड़ो तुम लाखनिको ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय॥
बोले सैयद तब ऊदनिते ❋ नदिया चलै विषम तलवारि ।
नौसै हाथीको हलका है ❋ बीचमें घिरे कनौजीराय ॥
कठिन मारु है पृथीराजकी ❋ हम मुर्चाते आये बराय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ चाचा अक्किल गईतुम्हारि॥

अकिले छोड़ दियो लाखनिको ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहि।
जो कहुँ लाखनि मारे जैहैं ❀ तौ तुम सबको दिहौ उड़ाय॥
बोला धनुआ तब सैयदते ❀ जैचँद पुछिहैं हाल हवाल।
कौन जवाब दिहौ तबहीं तुम ❀ जियतै हइहै मरन तुम्हार॥
ताते लौटि चलौ अबहीं तुम ❀ औ लाखनिकी करौ सहाय।
यह सुनि सैयद धनुआं लौटे ❀ अपनो मरन ठानि मनमाहिं॥
देखत लौटि परे राजा सब ❀ औ मुर्चनपर पहुँचे जाय।
ऊदनि पहुंचि गये दंगलमें ❀ समुहे गोल गये समुहाय॥
राम बनावै तौ बनिजावै ❀ बिगरी बनत बनत बनि जाय।
ऊदनि पहुंचे इत नदियापर ❀ अब लाखनिको सुनौ हवाल॥
मुर्चाहटि गयो जब पिरथीको ❀ तब लाखनिने कही पुकारि।
है कोई जोधा दिल्लीवालो ❀ समुहे लड़ै हमारे साथ।
ढाल अड़ाये लाखनि राना ❀ रणमें देत जायँ ललकार॥
भुरुही हथिनी दाबे आये ❀ पृथीराजपै पहुंचे आय।
टक्कर मारी तब हथिनीने ❀ आदि भयंकर हटो पिछार॥
पृथीराज तब सोचन लागे ❀ गरुई गाज कनौजी क्यार।
भुरुही हथिनी है जोरावर ❀ हमरो हाथी दियो हटाय॥
तब लाखनिको पृथीराजने ❀ मोहनमाला दई पहिराय।
हंसिकै बोले पृथीराज तब ❀ लाखनि सुनि लेउ बात हमारि॥
जैसे लरिका रतीभानके ❀ तैसेइ लरिका लगो हमारि।
योग्य मित्रता है समानते ❀ पै नहिं योग्य कपट वर्ताव॥
करी मिताई तुम ऊदनिते ❀ तुम्हरे योग्य नाहिं यह बात।
संग छांड़िकै तुम आल्हाको ❀ हमते मिलौ कनौजी राय॥
हम तुम लूटैं नगर महोबा ❀ जहं है पारसको अधिकार।
सो तुम लीन्हेउ पारस पूजा ❀ लोहा छुवत सोन होइ जाय॥
खोटी संगति छांड़ि देउ तुम ❀ घटिहा दस्सराजके लाल।
जबहीं आल्हा तुमते बिचलैं ❀ ठाढ़े कनउज लिहैं लुटाय॥

सुनतै ज्वाब दियो लाखनिने ❋ ऐसी न कहो पिथौराराय ॥
हमरे मनमें यह भावत नहिं ❋ जो तुम कहत बीर चौहान ।
घाटि करत जो कउ काहूते ❋ ताको नाश होत संसार ॥
धर्म हमारो यहु नाहीं है ❋ जो रण चढ़ि हम घूसैं खायँ ।
होय हाल जो कछु आल्हाको ❋ सो गति होइ हमारी आजु ॥
संग न छोड़िहैं हम आल्हाको ❋ चाहै लाखन कहो बनाय ।
यह सुनि गुस्सा ह्वइ राजा तब ❋ औ लाखनिते लगे बतान ॥
कौन दिनाते भये तरवरिहा ❋ तब कहँ गई रहैं तलवारि ।
लाये संयोगिनि हम कनउजते ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ।
उमिरि हमारी तीन बरसकी ❋ तब तुम चेरी लाय चोराय ॥
कौन बीरता तुमने कीन्ही ❋ जो बड़ि बात कहत महराज ।
बदला लेवै हम आये हैं ❋ डोला लिहैं अगमदे क्यार ॥
डाहु बुझैहै तब छातीको ❋ सो तुम वचन करो परमान ।
माहिल राजा तहँ ठाढ़े थे ❋ सो पिरथीते लगे बतान ॥
छोटो लरिका यहु लाखनि है ❋ बोली बोलत नाहिं सम्हार ।
सही न जात बात यह हमते ❋ याको लेउ जंजीरन बांधि ॥
जानते मारौ या लरिकाको ❋ औ यहु खटका देउ मिटाय ।
यह सुनि राजा पृथीराजने ❋ अपनी लीन्ही लाल कमान ॥
हियांकि बातैं तौ हियँ छांड़ौ ❋ अब आगेकी सुनौ हवाल ।
ऊदनि बांकुड़ा ढूँढ़त डोलै ❋ लश्कर डटा पिथौरा क्यार ॥
भुरुही देखि परी ऊदनिको ❋ खाली हौदा परो दिखाय ।
सोचैं ऊदनि तब अपने मन ❋ मारे गये कनोजी राय ॥
पाछे हटि तब ऊदनि देखो ❋ औ लाखनि पर परी निगाह ।
सन्मुख देखो पृथीराजको ❋ करमें लीन्हे लाल कमान ॥
मनमें जानी तब ऊदनिने ❋ अब ना बचिहै मित्र हमार ।
खाली चोट जात इनकी नहिं ❋ है यहु शब्दबेधि चौहान ॥

घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ अपनो मया मोह बिसराय ।
करी बन्दगी पृथीराजको ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ हो तुम शब्द बेधि चौहान ।
ना चढ़ि आये राजा जैचंद ❋ ना चढ़ि आये रजा परिमाल ॥
तुम्हरी बरोबरिको नाहीं कोउ ❋ केहिपर लीन्ही लाल कमान ।
जैसेइ लरिका रतीभानको ❋ तैसे लरिका लगै तुम्हार ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है ❋ जो लाखनिपर गहौ कमान ।
हँसी तुम्हारी जगमें होइहै ❋ जो लरिकनपर डरिहौ हाथ ॥
कायल हो गये पृथीराज तब ❋ अपनी धरिदई लाल कमान ।
ऍड़ लगाई तब घोड़ाके ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
कलश शूबरनको हौदापर ❋ सो ऊदनिने लियो उतारि ।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
हमरी बरोबरिके नाहीं तुम ❋ जौहर देतेउँ अबहिं दिखाय ।
क्या सुधि भूलि गये द्वारेकी ❋ हम ब्रह्माको लाये बियाहि ॥
हाथी पछारा दरवाजे पर ❋ सातौ भांवरि लई डराय ।
ऐसो देखैं ना काहूको ❋ जो महुबेको लेय लुटाय ॥
यह सुनि सोचे पृथीराज तब ❋ कलहा दस्सराजके लाल ।
बड़े लड़ैया महुबे वाले ❋ गरुई गाज कनौजी क्यार ॥
सोचि समुझिकै पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दियो हटाय ।
रुधिर धारते लाखनि बूड़े ❋ तिनहिं न को उसके पहिचानि ॥
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ हमारी बात ।
अब तुम बैठि जाउ हौदामें ❋ हमरी देखि लेउ तलवारि ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❋ काहे हँसी करत तुम आज ।
क्यातुमहमहिं निर्बलजानतहौ ❋ क्या बल रहो भुजनमें नाहिं ॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❋ दादा धन्य कनौजी राय ।
कौन शूर है या धरती पर ❋ जो पिरथीको देय हटाय ॥
करो सामना तुम पिरथीको ❋ औ मुर्चांते दियो हटाय ।

हौ सब लायक महराना तुम ❋ राखौ धर्म चंदेले क्यार ॥
देह दुशाला ते पोछी तब ❋ औ यह कही उदयसिंहराय ।
बैठो दादा तुम हौदामें ❋ यह सुनि लाखनि भये सवार ॥
ऊदनि चढ़िगे रसबेंदुलपर ❋ आगे बढ़े कनौजी राय ।
तौलौं आल्हा लश्कर लैकै ❋ पहुंचे आय समर मैदान ॥
हल्ला होइ गयो रणखेतनमें ❋ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।
बढ़े सिपाही आल्हावाले ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
धांधू धनुआंको मोहरा था ❋ धनुआं कठिन करी तलवारि ।
मुर्चा फेरि दियो धांधूको ❋ श्याबसि कही कनौजी राय ॥
भूरा मुग़ुल केरे मुर्चा पर ❋ सैयद जीति लियो मैदान ।
रहिमत सहिमतको दंगलमें ❋ हरिसिंहबिरसिंहदियो गिराय ॥
लाखनि रानाने हनि डारे ❋ दतियावाले वंशगोपाल ।
पैदल तीनि लाख पिरथीके ❋ कनउजवालेन दियो गिराय ॥
दुइसै हाथी दिल्लीवाले ❋ जूझे एक लाख असवार ।
कनउजवाले सत्तर हाथी ❋ जूझे पांच हजार सवार ॥
नदिया बितवैंपर लाखनिके ❋ जूझे पैदल साठि हजार ।
ताहर लाये बेड़ा लश्कर ❋ औ लाखनिपर पहुंचे आय ॥
बोले ताहर तब लाखनिते ❋ अब तुम खबरदार होइ जाउ ।
तेग निकारि लई ताहरने ❋ सो लाखनिपर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाय दई लाखनिने ❋ उनके अंग न आयो घाव ।
ग़ुस्सा होइकै तब लाखनिने ❋ अपनो दीन्ह गुर्ज चलाय ॥
लगो चपेटा इक घोड़ाके ❋ ना रोकेते रुकी लगाम ।
भागो घोड़ा तब ताहरको ❋ लश्कर रैन बैन होइ जाय ॥
घाट बयालिस सोरह घाटी ❋ तुरतै लाखनि लिये छुड़ाय ।
लालि वैरखैं घूमन लागीं ❋ जीतिको डंका दियो बजाय ॥
कूच करि दियो नदिबितवैंते ❋ चन्दन बगिया पहुंचे जाय ।
तम्बू लगे जहां पिरथीके ❋ तंबुअन रस्सा दिये कटाय ॥

लूटि होन लागी तँबुअनमें ❀ गालिब हुक्म कनौजी क्यार ।
काहू लूटे शाल दुशाला ❀ काहू शक्कर लई लुटाय ॥
घीके कुप्पा काहू लूटे ❀ काहू चावल लिये लुटाय ।
हाथी घोड़ा ऊदनि लूटे ❀ अपने लश्कर दिये पठाय ॥
कूच कराय दियो पिरथीने ❀ औ दिल्लीकी पकरी राह ।
मन खिसियाने माहिलराजा ❀ तिन उरईकी पकरी राह ॥
सुनी खबरि जब परिमालैने ❀ आये यहां कनौजी राय ।
घाट बयालिस उन छुटवाये ❀ औ महुबेको लियो बचाय ॥
पिरथी लौटि गयो दिल्लीको ❀ जीते जंग कनौजी राय ।
लश्कर परि गयो है बगियामें ❀ देखन ऐहैं नगर महोब ॥
यह सुनि खुशी भये राजा तब ❀ औ ब्रह्मा को लियो बुलाय ।
हाल सुनायो नदि बितवैको ❀ औ यह हुक्म दियो करवाय ॥
दगी सलामी यहं जल्दीते ❀ छूंछी दगन सलामी लागि ।
सुनी खबरि जब मल्हना रानी ❀ सिगरी सखियां लई बुलवाय ॥
जितनी रानी चन्देलेकी ❀ सो सब सजिकै भईं तयार ।
सखियां मंगल गावन लागीं ❀ घर घर भयो मंगलाचार ॥
हुक्म दियो फिर परिमालैने ❀ सिगरो नगर लेउ सजवाय ।
चलि भये मन्त्री तब राजाके ❀ कूचा गली दिये झरवाय ॥
कलश सूबरनके मंगवाये ❀ द्वार द्वार प्रति दिये धराय ।
वन्दनवार बंधे द्वारेपर ❀ झालर लगी मोतियन केरि ॥
बिछे बिछौना गलियारनमें ❀ ऊपर दिये गलीचा डारि ।
इतर गुलाबनके शीशा लै ❀ गलियारनमें दौ छिरकाय ॥
नौबत बजन लगी महुबेमें ❀ छज्जन रही लालरी छाय ।
सजि गयो महुबो तब जल्दीते ❀ मानौ इन्द्रधाम दिखराय ॥
पलकी मंगवाई राजाने ❀ तापर चढ़े रजा परिमाल ।
हरनागर पर ब्रह्मानंद चढ़ि ❀ चलि बगियामें पहुंचे जाय ॥
जबहीं देखो चन्देलेको ❀ लाखनि उठिकै करी सलाम ।

हृदय लगाय लियो राजाने ❃ भेंटे ब्रह्मा राजकुमार ।
आल्हा ऊदनि इन्दल आये ❃ औ राजाको करी सलाम ॥
चरण लागिकै चन्देलेके ❃ सो माथेमें लिये लगाय ।
मोह आय गयो परिमालैको ❃ नैनन बहै नीरकी धार ॥
बहुतै बातैं भइँ आल्हाते ❃ राजा लीन्हो शीश लचाय ।
कायल ह्वैकै चन्देले तब ❃ तुरते करन अधीनी लाग ॥
बसौ महोबेमें बेटा तुम ❃ सुखते रहो छोंड़ि दुख जाल।
सूनो नगर जानि घेरत हैं ❃ नित उठि चढ़त पिथौराराय॥
हँसी खुशीते चन्देलेने ❃ सब लरिकनते कही सुनाय ।
तुमहिं बुलावन हम आये हैं ❃ जल्दी चलौ हमारे साथ ॥
करी तयारी तब सबने मिलि ❃ देखत चले महोबा गांव ।
जबहीं आय गये फाटक पर ❃ महुबे दगन सलामी लाग ॥
आई सवारी गलियारेनमें ❃ महुबो इन्द्रधाम दिखलायँ ।
जितने राजा थे लाखनि सँग ❃ महुबो देखि देखि रहिजाय ॥
शोभा देखत गढ़ महुबेकी ❃ पहुँचे राज महल ढिगजाय ।
अपनी अपनी असवारिनते ❃ सिगरे उतरि परे अरगाय ॥
मेल मिलाप भयो सबहीको ❃ सो हम कहँ लग करैं बखान।
आदर करिकै चन्देलेने ❃ सब काहूको दियो टिकाय ॥
आल्हा ऊदनि दशपुरवागे ❃ फिरिकै पुरवा लियो बसाय ।
घर घर खुशी भये नर नारी ❃ महुबे आये बनाफर राय ॥
पूरि लड़ाई भइ बितवैकी ❃ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
ऊदनि हरन लिखौं आगे मैं ❃ यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गावो ❃ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❃ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति नदिया बितवैकी लड़ाई (लाखनिराना विजय) समाप्त ।

श्री:

अथ ऊदनि हरनकी लड़ाई

★

दोहा—सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरणमनाय।
ऊदनि हरन कहौं यहि अवसर ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
पर्व दशहराकी बुड़की परि ❋ औ दिन आनि परो इतवार।
श्रीबिट्ठूर घाट गंगाके ❋ मेला चलनलाग त्यहिकाल ॥
सुनवां ठाढ़ी सतखंडापर ❋ मेला देखि देखि रहिजाय।
गंगा गंगा यात्री बोलैं ❋ जय जय कहत चले सब जायँ ॥
उतरी सुनवां सतखंडाते ❋ औ ऊदनिको लियो बुलाय।
आये ऊदनि तब सुनवांपै ❋ सुनवां चौकी दई डराय ॥
चरण लागिकै ऊदनि बैठे ❋ तब सुनवांने कही सुनाय।
मेला चलो जात गंगाको ❋ हमहूँ चलिहैं गंग नहान ॥
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❋ भौजी सुनौ हमारी बात।
आज्ञा लैलेयँ हम आल्हाते ❋ तब तुम चलौ हमारे साथ ॥
यह कहि ऊदनि उठि ठाढ़ेभै ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ दादा सुनौ हमारी बात ॥
गंगा नहैहैं सुनवां भौजी ❋ सो तुम हुक्म देउ फरमाय।
यह सुनि आल्हा बोलन लागे ❋ करिहौ तहां बखेड़ा जाय ॥
ताते बैठि रहौ घरहीमें ❋ यह तुम मानौ बात हमारि।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❋ दादा वचन करौ परमान ॥
धुरो हमारो कछु अटको ना ❋ क्यों हम करैं बखेड़ा जाय।
बुड़की लैकै घर फिरि ऐहैं ❋ रहिहैं विना काम तहँ नाहिं ॥

आज्ञा देदइ तब आल्हाने ❀ तुरतै उठे उदैसिंह राय ॥
खबरि पठाय दई सुनवांपे ❀ भौजी जल्दी होउ तैयार ।
करी तयारी सुनवां रानी ❀ फुलवा त्यारी लई कराय ॥
सुनवां फुलवा दोनों चलिभइँ ❀ औ पलकीमें भई सवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❀ तापर चढ़े उदैसिंह राय ॥
साथमें लीन्हो जगनायकको ❀ लश्कर सवालाख सजवाय ।
कूच कराय दियो महुबेते ❀ औ बिठूरकी पकरी राह ॥
मंजिल करिकै सात रोजकी ❀ गंगा घाट पहूँचे जाय ।
ढेरा डारि दिये रेतीमें ❀ खाली एक देखि मैदान ॥
तम्बू तनवाई अपनो तहँ ❀ तामें टिके उदयसिंह राय ।
सोभिया नटनी झुन्नागढ़की ❀ रेतमें डेरा दियो लगाय ॥
भोर होत खन त्यहि सोभियाने ❀ सहुआ बीरन लियो बुलाय ।
बोली तुरतै तब बीरनते ❀ त्यारी तुरत लेउ करवाय ॥
यह कहिसंगलियोनटिनको ❀ औ मेला में पहुंची जाय ।
राग रागिनी गावन लागी ❀ मेला करन तमाशा लागि ॥
मेला रहै जहां महुबेको ❀ सोभिया तहां पहुंची जाय ।
पूंछन लागी दरवानीते ❀ महुबेको मेला देउ बताय ॥
जहंपर तम्बू थी ऊदनिकी ❀ दरवानीने दियो बताय ।
नाचति आई सोभिया बेड़िन ❀ औ तम्बूपै पहुँची जाय ॥
जहां कचहरी थी ऊदनिकी ❀ सोभिया कियो तमाशा आय ।
डारि मोहिनी दइ सोभियाने ❀ क्षत्री मोहि मोहि रहिजाय ॥
देखो सोभिया जब सुनवांको ❀ तब यह मनमें कियो बिचार ।
जीति न पैहों मैं सुनवांते ❀ ताते करिहौं कौन उपाय ॥
नब्बेलाखको गहनो सुनवां ❀ सो डिब्बामें धरो उतारि ।
लैकै जादू तब सोभियाने ❀ वहु डिब्बापर दियो चलाय ॥
लैकै भिक्षा नटिनी चलिभइ ❀ अपने डेरा पहुँची आय ।

सुनवां फुलवा दोनों सजिगइँ ❋ संगै चले उदयसिंह राय ॥
गंगास्नान करी सबहीने ❋ दीन्हो बहुत दक्षिणा दान ।
लश्कर आयो तब यमुनापर ❋ सोभिया डब्बा लियो मँगाय॥
जादू डारि गई थी पहिले ❋ ताते तुरतै लियो उड़ाय ।
उतरी सुनवां जब डोलाते ❋ ना कहुँ डिब्बा परो दिखाय॥
मनमें डरिगइ सुनवां रानी ❋ औ ऊदनिको लियो बुलाय ।
बोली सुनवां बघ ऊदनिते ❋ देवर करिहौं कौन उपाय ॥
डब्बा भूली मैं बिठूरमें ❋ जैहौं अबहिं गंगके घाट ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❋ भौजी धीर धरौ मनमाहिं ॥
गहना लैहौं मैं बिठूरते ❋ जैहौं अबहिं गंगके घाट ।
ऊदनि बुलवायो जगनिकको ❋ औ जगनिकते कही सुनाय॥
डोला लै जाउ तुम महुबेको ❋ अब हम गहना ढुढ़िहैं जाय ।
डोला चलिभौ तब महुबेको ❋ अकिले चले उदैसिंह राय ॥
ऊदनि पहुँचे जब बिठूरमें ❋ मेला कहूँ न परो दिखाय ।
कूच कराय गयो मेला सब ❋ ऊदनि गये सनाका खाय ॥
डेरा परो रहै सोभियाके ❋ ऊदनि तहां पहूँचे जाय ।
पूँछन लागी सोभिया बेड़िन ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब शोभियाते ❋ हम रहवैया नगर महोब ।
छोटे भैया हैं आल्हाके ❋ औ ऊदनि है नाम हमार ॥
गहना भूले हम भौजीको ❋ सो नाहीं कहुँ परत दिखाय ।
बोली सोभिया तब ऊदनिते ❋ हमते खेलौ पंसासार ॥
पता लगैहैं हम गहनेको ❋ ऊदनि धीर धरो मनमाहिं ।
घोड़ा बेंदुलाते उतरे तब ❋ ऊदनि बैठि गये निरशंक ॥
सोभिया मँगवाई चौपर तब ❋ सो सिरकिनमें लई बिछाय ।
खेलन लागे ऊदनि ठाकुर ❋ सोभिया जादू दीन्ही डारि ॥
सुआ बनाय लियो ऊदनिको ❋ औ पिंजरामें लौ बैठाय ।
कूज कराय दियो दिल्लीकी ❋ औ दिल्लीमें पहुँची जाय ॥

कही हकीकत तहँ पिरथीते ❋ पृथीराजने दियो निकारि ॥
टिकन न दीन्हो महाराजने ❋ सोभिया कूच दियो करवाय ।
जहँजहँपहुँची सोभिया बेड़िन ❋ काहूँ ठौर दियो त्यहि नाहिं ॥
झारखंडके तब झाबरमें ❋ सोभिया डेरा दियो लगाय ।
सिरकों परिगइं ठौर ठौरपर ❋ जादुकी चौकी दई बिठाय ॥
हियांकि बातैं तौ हियँ छांड़ो ❋ अब महुबेको सुनौ हवाल ।
डोला आयो जब बिठूरते ❋ ना कहुँ ऊदनि परे दिखाय ॥
आल्हा पूंछो जगनायकते ❋ छोड़े कहां लहुरवा भाय ।
हाल सुनायो तब जगनिकने ❋ आल्हा बैठि रहे अरगाय ॥
बहुत दिना बीते ऊदनिको ❋ आल्हा सोच करन तब लाग ।
पूछन लागे तब सुनवांते ❋ कहं रह गये उदैसिंह राय ॥
खबरि मिली ना कहुं ऊदनिकी ❋ रहि रहि मेरो प्राण घबराय ।
बोली सुनवां तब आल्हाते ❋ स्वामी सुनौ हमारी बात ॥
हमरे मनमें अस आवत है ❋ काहू हरे उदैसिंह राय ।
जादू करि कोई हरि लैगयो ❋ सो हम देहैं ढूँढ़ि मिलाय ॥
बिना हमारे सो मिलिहै ना ❋ सो तुम वचन करो परमान ।
लेकै जादू सुनवां चलिभई ❋ मुखमें गुटिका लियो दबाय ॥
चिल्हिवनिगई लोटि पोटिकै ❋ आधे सरग रहीं मँडराय ।
घर घर खोज्यो तेहि बिठूरमें ❋ ना कहुँ ऊदनि परे दिखाय ॥
देश कामरू बंगाला सब ❋ ढूँढो जाय सुनमदे रानि ।
झुन्नागढ़ नैनागढ़ नरवर ❋ सबकहुँ ढूँढ़ो सुनवां रानि ॥
सिगरे राजनके शहरनमें ❋ ढूँढ़े जाय ऊदैसिंह राय ।
तब फिरि आई झारखंडमें ❋ सिकिरन डेरा परे दिखाय ॥
टँगों पींजरा इक अमिलीनमें ❋ तामें सुनआ परो दिखाय ।
सो पहिचान लियो सुनवांने ❋ तापर सुनवां बैठी जाय ॥
सोभिया पहुँचीवा अमिलीतर ❋ तुरतै पिंजरा लियो उतारि ।

पलंगविछायलियोसोभियाने ❋ तापर चौफेर लई बिछाय ॥
मानुष करिकै बघ ऊदनिको ❋ पंसासारी खेलन लागि ।
आधी राति गई खेलतही ❋ तब सोभियाने कही सुनाय ॥
ब्याह करौ ऊदनि हमरे संग ❋ औ नित लेउ खुदाको नाम ।
बोले ऊदनि तब सोभियाते ❋ हमते यह होइबेकी नाहिं ॥
बहुतक समझायो सोभियाने ❋ ना ऊदनिने मानी बात ।
रस्सा लैकै तब सोभियाने ❋ बघ ऊदनिको दियो बंधाय ॥
बांसन मारु दई पीठीमें ❋ गांठी पैठि पीठमें जायं ।
बोले ऊदनि तेहि सोभियाते ❋ चाहै धजी धजी उड़िजाय ॥
ब्याहु न करिहैं हम तुमरेसंग ❋ ना हम लिहैं खुदाको नाम ।
रामनाम आधार हमारे ❋ सोई रखिहैं धर्म हमार ॥
राति रहिगई पहर एकजब ❋ सोभिया सुअना दियो बनाय ।
पिंजरा टांगि दियो अमिलीमें ❋ अपना परिकै सोवन लागि ॥
डारि मसान दियो सुनवां तब ❋ पिंजरा तुरतै लियो उतारि ।
दुसरे बवनमें पिंजरा लाई ❋ तुरतै मानुष लियो बनाय ॥
बोली सुनवां तब ऊदनिते ❋ देवर क्या गति भई तुम्हारि ।
बड़े बड़े जोधा तुमने मारे ❋ कबहुँ न लगो पिठिमें दागु ॥
जातिकि बेड़िन तुमको मारै ❋ क्यो ना लियो खुदाका नाम ।
बोले ऊदनि तब सुनवांते ❋ है तलवारि गहेकी लाज ॥
धर्म नहीं है यह क्षत्रिनको ❋ जो तजि देऊँ रामको नाम ।
फिरिकै सुनवां बोलन लागी ❋ या नटिनीते करौ विवाह ॥
हमैं चाह नाहीं नटिनीकी ❋ ना हम महोबेको लै जांय ।
तब फिरि सुनवां बोलन लागी ❋ अब तुम चलो हमारे साथ ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ हम ना जायँ तुम्हारे साथ ।
चोरी चोरी जो जैहैं हम ❋ हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
खबरि सुनावौ तुम आल्हाको ❋ सो लश्कर लै पहुँचैं आय ।

लड़िके भागि जाय नटिनी जब ❋ तब हम चलैं महोबे माहिं ।
यह सुनि सुनवांने ऊदनिको ❋ फिरते लीन्हो सुआ बनाय ॥
सो बैठारि दीन पिञ्जरामें ❋ औ अमलीमें दीन्हो टांगि ।
चलि भइ सुनवां झारखंडते ❋ औ महुबेमें पहुंची जाय ॥
खबरि सुनाई सब आल्हाको ❋ औ सुनवांने कही सुनाय ।
फौज सजाय लेउ जल्दीते ❋ औ ऊदनिको लेउ छुड़ाय ॥
संग तुम्हारे हमहूँ चलिहैं ❋ औ सब जादू दिहैं हटाय ।
पाती भेजो तुम जगनिकको ❋ औ लै लेउ आपने साथ ॥
यह सुनि पाती लिखि आल्हाने ❋ जगनायकको लियो बुलाय ।
हाल बतायो सब ऊदनिको ❋ औ चलिबेको भये तयार ॥
तुरत नगरचीको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर जल्द होय तैयार ॥
डंका बाजौ तब लश्करमें ❋ क्षत्री सबै भये तैयार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ अपनो हाथी लियो सजाय ॥
तापर बैठि गये आल्हा तब ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार ।
घोड़ीहिरौंजिनिपरजगनिकतब ❋ तुरतै कूदि भये असवार ॥
घोड़ा करिलियापरइन्दलचढ़ि ❋ सबने कूच दियो करवाय ।
गुटका मुहमें सुनवां दाबे ❋ चिल्हिया बनि लश्करके साथ ॥
चलिभइ सुनवां रंगमहलते ❋ झारखंडमें पहुंची जाय ।
आधिरातके तब अमलामें ❋ सुनवां गई अमिलिया पास ॥
लैके पिञ्जरा सुनवां चलिभइ ❋ बनके बाहर पहुंची जाय ।
मानुष करिदियो बघऊदनिको ❋ तौलौं आल्हा पहुंचे जाय ॥
डेरा डारि दियो आल्हाने ❋ अपने तम्बू दियो लगाय ।
ऊदनि मिले जाय आल्हाको ❋ औ आल्हाको करी सलाम ॥
पहरा बैठे थे रखवारे ❋ तिन सोभियाते कही सुनाय ।
फौज आय गइ केहु राजाकी ❋ घेरो चारि ओरते आय ॥
यहसुनिसोभिया उठिठाढ़ीभइ ❋ सहुआ बीरन लियो बुलाय ।

बोली बेड़िनि तब बीरनते ❁ शिरपर दुशमन पहुंचो आय ॥
जल्दी त्यार होउ लरिबेको ❁ अब ना राखो देर लगाय ।
नौ हजार नट त्यार भये तब ❁ अपने बांधि बांधि हथियार ॥
लै लै अपने जादू झोरा ❁ औ मुर्चांपर पहुंचे जाय ।
बोले ऊदनि तब आल्हाते ❁ तोपन बत्ती देउ लगाय ॥
हुक्म दे दियो तब आल्हाने ❁ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
झुके खलासी तब तोपनपर ❁ तोपन आगी दई लगाय ॥
दगी सलामी दोऊ ओरसे ❁ अररर गोली छूटन लागि ।
लागै गोला जौने नटके ❁ सो लत्ता अस जाय उड़ाय ॥
गोला जंजिरहा ज्यहिके लागै ❁ तुरतै हाड़ मांस छुटि जायँ ।
बानको डंडा ज्यहिके लागै ❁ ताके दुइ खंडा ह्वइजाय ॥
छोटी गोली ज्यहिके लागै ❁ सो गिरिपरै करौटा खाय ।
हक हजार नट जब भुइँ गिरिगै ❁ सहुआ मनमें गयो डेराय ॥
लैकै जादू बंगालेकी ❁ तब सहुआने दई जगाइ ।
गोल बांधि सब झुके बेड़िया ❁ अपनो मया मोह बिसराय ॥
खैंचि शिरोही नटवा आये ❁ क्षत्रिन खैंचि लई तलवारि ।
झुके सिपाही दोनों दलके ❁ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
दोनों फौजैं संगम होइ गईं ❁ कोता खानी चलै कटार ।
पैदल गिरिगै पैग पैग पर ❁ उनके दुइ दुइ पैग असवार ॥
जहँ तहँ कटि कटि हाथी गिरिगै ❁ छोटे पर्वतकी उन्हार ।
क्या गति बरणौं तेहि समयाकी ❁ अन्धाधुन्ध चलै तलवारि ॥
सहुआ सोभियाकी धमकिनमें ❁ कोऊ कुंवर न आड़ै पावँ ।
भगे सिपाही महुबेवाले ❁ अपने डारि डारि हथियार ॥
बोले ऊदनि तब क्षत्रिनते ❁ यारो समय न बारम्बार ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हौ ❁ तुम सब भैया लगौ हमार ॥
भागि न जैयो तुम मोहराते ❁ यारो रखियो धर्म हमार ।
निमक हमारो तुम खायो है ❁ सो हाड़नमें गयो समाय ॥

मारि भगावौ तुम नटवनको ❀ औ रखि लेउ आपनो नाम ॥
सदा तुरैया ना बन फूले ❀ यारो सदा न जीवन होय ।
मानुष देही यह दुर्लभ है ❀ कोऊ आजु मरै कोउ कालिह ॥
दियो बढ़ावा बघऊदनिने ❀ सबको आगे दियो बढ़ाय ।
झुके सिपाही तब महुबेके ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
ऊँचे खाले कायर भागे ❀ जे रण दुलहा चले बराय ।
लम्बी धोतिनके पहिरैया ❀ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
यह गति देखी जब सोभियाने ❀ अपने जादू लियो उठाय ।
जादू पढ़िकै सोभिया मारी ❀ रणमें आगी दई फैलाय ॥
व्याकुल होइ गये महुबेवाले ❀ क्षत्री लै लै भगे परान ।
देखि हाल यह सुनवां रानी ❀ अपनो जादू लियो उठाय ॥
पानी बरसायो जादूते ❀ तुरतै आगी गई बुझाय ।
आंधीकी पुड़िया सोभिया छाड़ी ❀ सुनवां दई मसानी डारि ॥
बोले आल्हा तब क्षत्रिनते ❀ यारो राखौ धर्म हमार ।
भागि न जैहो कोउ समुहेते ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ॥
सुनिकै लौटे फिरि क्षत्री सब ❀ रणमें चलन लगी तलवारि ।
पूरब दबिगे जगनायक तब ❀ पश्चिम दबे उदैसिंहराय ॥
उत्तर पाटी ढेबा बहादुर ❀ दक्षिण दबे इँदलसी क्वांर ।
मारि शिरोहिनते मुह फेरो ❀ मुर्चा हटो बेड़ियन क्यार ॥
देखि हकीकति अपने दलकी ❀ सोभिया सोचिसोचिरहिजाय ।
सिगरे जादू लै सोभियाने ❀ सो लश्कर पर दिये चलाय ॥
जो जो जादू सोभिया फेंके ❀ सो सो सुनवां देय हटाय ।
तीन पहर लौं चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
तकि तकि जादू सोभिया मारै ❀ सुनवां काटि देय तत्काल ।
बहुत लड़ाई भइ सोभियाते ❀ पै सुनवांने लिये बचाय ॥
बीर महमदावाली पुरिया ❀ सो सुनवांने लई उठाय ।

लेकै जादू नारसिंहका ❋ सुनवां चौकी दई बिठाय ॥
लैकै जादू भैरौं वाली ❋ सोऊ सुनवां दई बैठारि ।
है विकराल कालिका जादू ❋ सो बेड़िनपर दई चलाय ॥
भगे बेड़िया तब लश्करते ❋ सब मोहराते गये बराय ।
लौटिके सोभिया देखन लागी ❋ मनमें बहुत गई घबराय ॥
बचे बेड़िया जो हमरे थे ❋ सो समुहेते गये बराय ।
सोभिया झपटी तब सुनवांपर ❋ दोनों लड़न लगीं तत्काल ॥
नीचे सोभिया ऊपर सुनवां ❋ तौलौं इन्दल पहुँचे आय ।
बोली सुनवां तब इन्दलते ❋ याको देउ जानते मारि ॥
बोले इन्दल तब सुनवांते ❋ माता सुनो हमारी बात ।
हाथ न डरिहैं हम तिरियापर ❋ हमरो क्षत्री धर्म नशाय ॥
उतरे इन्दल तब घोड़ाते ❋ औ सोभियापै पहुँचे जाय ।
छुरिया लैकै जहर बुझाई ❋ जूरा काटि लियो तत्काल ॥
सिगरे जादू झूठे परिगै ❋ जियतै छांड़ि दियो महरानि ।
छूटिकै भागी सोभिया बेड़िन ❋ गहना आल्हा लियो सम्हारि ॥
कूच करायो झारखंडते ❋ झुन्नागढ़की पकरी राह ।
जबहीं पहुँचे झुन्नागढ़में ❋ आल्हा डेरा दियो लगाय ॥
गौ हरकारा सेनापतिपै ❋ औ लश्करको कह्यो हवाल ।
कोऊ राजा चढ़ि आयो है ❋ ताको अब कछु करो उपाय ॥
सुनतै धावनको बुलवायो ❋ औ राजाने कही सुनाय ।
जल्दी जावौ तुम बागनमें ❋ औ सब खबरि सुनावौ आय ॥
चलो सांड़िया झुन्नागढ़ते ❋ औ बागनमें पहुँचा आय ।
सुनो हाल तब सब आल्हाको ❋ तुरतै लौटि परो अरगाय ॥
खबरि सुनाय दई राजाको ❋ लश्कर परो महोबे क्यार ।
इतनी सुनतै सेनापतिने ❋ अपनी पलकी लई मंगाय ॥
तोड़ा पांच लिये मोहरनके ❋ औ नौ हीरा लिये मँगाय ।

तुरत सवार भये पलकीपर ❋ औ लश्करकी पकरी राह ॥
आगे मिले जाय आल्हाको ❋ दीन्ही भेंट बिसेने राय ।
बोले सेनापति आल्हाते ❋ कहांकि त्यारी दई कराय ॥
बोले आल्हा तब राजाते ❋ ऊदनि गये थे गंग नहान ।
सोभिया बेड़िन जादू करिके ❋ हर लै गई उदैसिंह राय ॥
मोहरा मारो हम सोभियाको ❋ औ ऊदनिको लाये छुड़ाय ।
यह सुनि राजा बहुत खुशी भये ❋ हौ समरत्थ बनाफर राय ॥
जादूगरनी सोभिया बेड़िनि ❋ तुमने लड़िकै दई भगाय ।
लाज राखिलइ परमेश्वरने ❋ औ मिलि गये उदैसिंह राय ॥
खातिर कीन्ही तब राजाने ❋ आल्हा कीन्हे तीन मुकाम ।
कूच करायो झुन्नागढ़ते ❋ औ महुबेकी पकरी राह ॥
मञ्जिल मञ्जिलके चलिबेमें ❋ गढ़ महुबेमें पहुँचे आय ।
खबर फैल गइ गढ़ महुबेमें ❋ महुबे आये उदैसिंह राय ॥
अनंद बधैया महुबे बाजी ❋ तुरतै दगन सलामी लागि ।
ऊदनि भेंटे सब काहूको ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
ऊदनि हरन भयो पूरा यह ❋ सो हम कहिकै दियो सुनाय ।
आगे अमरकोटकी गाथा ❋ यारो सुनियो कान लगाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❋ नित उठि नाम लेउ भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति ऊदनि हरनकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

अथ अमर गढ़की लड़ाई

★

सुमिरन करिकै हनूमानको ❋ जोधा बड़े अंजनीलाल ।
जो जोधा रणमाहीं सुमिरै ❋ ताकी कभी न होगी हार ॥
नित उठि बंदौं हनूमानपद ❋ सागर रूप बुद्धि बलवान ।
अंजनिलाल काल असुरनके ❋ रणमें करे रामको काम ॥
राम पियारे सिया दुलारे ❋ सागर कूदि गये वा पार ।
आशा मेरी पूरण करियो ❋ तुमही सब जगके रखवार ॥
जो चाहै मैं करूं सिरोही ❋ क्यों ना रटै बीर हनुमान ।
कोट असरगढ़ इक नामी है ❋ जहँपर 'धीर' बसै सरदार ॥
वा राजाकी कहूँ हकीकत ❋ जहँपर योधा बसै अपार ।
मरद शूरकी क्या गिनती है ❋ शेरनके नित हनैं शिकार ॥
तेहि राजाने टीका भेजा ❋ कनउज जैचंदके दरबार ।
लाखन हैं महुबेके माहीं ❋ सो जैचंदने करी सलाह ॥
लाखन राजाको बुलवाऊँ ❋ सो अपने मन कियो विचार ।
शतरवानको हुक्म सुनायो ❋ तुम महुबेको होहु तयार ॥
उदयचंद औ लाखन सुतको ❋ ह्यां जल्दीसे लाव लिवाय ।
हुक्म सुनतही चला सांड़िया ❋ जाको चलन न लागी बार ॥
मंजिल मंजिलके चलनेमें ❋ गढ़ महुबेमें पहुंचो जाय ।
छोड़ि सांड़िया नीचे आया ❋ देखा राजनका दरबार ॥
सात पैगते मुजरा करिकै ❋ औ ढिग जाकर करी सलाम ।
पुरजा हाथ दियो लाखनिके ❋ लाखनि पुरजा बांचन लाग ॥
बांचत पत्री मगन हुए हैं ❋ औ चलनेको हुए तयार ।
हाथ जोरिकै चन्देलेसे ❋ ऊदनि लीन्हों हुक्म कराय ॥
एक महीनामें आवैंगे ❋ याते बिलम होयगी नाहिं ।

फौजैं संग सजाकर अपने ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ॥
मंजिल मंजिलके चलनेमें ❀ कनउज धुरो दबायो आय ।
इत कुसुमा अंटापर बिलखे ❀ हेरै प्राणपतीकी बाट ॥
जनै पियारे कब आवैगे ❀ जाने आवैगे की नाहिं ।
चार मास बालमको हुइगे ❀ हाहा कछु सुधि पाई नाहिं ॥
वरषा बीती शरदऋतु आई ❀ जाने कौन काज रहे छाइ ।
रैन बडी है शरद निशाकी ❀ तापर पवन रही सन्नाय ॥
विरह सतावै जानि अकेली ❀ पापी मदन हनै हियबान ।
मोहि डर लागति मोर शोरसुनि ❀ काले मेघ कालसम होय ॥
सुखद रैन तिनको जाड़ेमें ❀ जो निज कंथरहीं हियलाय ।
पड़ी अकेली घरमें तड़पैं ❀ जिनके बालम गये विदेश ॥
ईश्वर ! कब ऐसे दिन ह्वैहैं ❀ डारूँ प्राणनाथ गरबाहिं ।
अजहुं न आवैं जो पिय प्यारे ❀ प्यारी मरै कटारी खाय ॥

ठुमरी

बिन याया मोहिं कल न परत, मनमें रहत यही अँदेश ।
जुबनाझुरतजियराजरत, पातीनलिखी न भेजो सँदेश ॥बि०॥१॥
कैसे के पियाके दरश पाऊँ, बिरह सताये जरी रे जाऊँ ।
वसन रगाऊँ सेली बनाऊं, अंग विभूती बीन बजाऊं ॥
अबके ऐसे न आवैं जो द्वार, कर रहूँ जोगिनका वेश ॥बि०॥२॥
कासों कहौं मनकी ब्यथा, जबसे गये लीनी न खबर ।
जरत २ पीली रे पड़गइ, जबसे बालम गये बिदेश ॥बि०॥३॥

दूसरी ठुमरी

सखी मोरा जिया घबराये,
सखी री ! तड़पत उन बिन निशिदिन चैन न आये ॥
हाय ! मोरी सुधि प्रीतम बिसराये,
निपट निठुराई कीन तहां जाये, जिया घबराये ॥ १ ॥

कटत रैन मोहिं तारे गिन गिन,
बरस समान बितावत हैं दिन,
ब्याकुल पिय बिन बिरह अगिन,
तन मनको हमरे जराये,
जिया घबराये, सखी मोरा ॥ २ ॥

छंद आल्हा

प्राणनाथ हमरी सुधि लीजे ❋ नाहित चलन चहत ये प्राण ।
मूर्छा आय गई रानीको ❋ अरु गिरि परी धरनि मुरझाय॥
तौलौं लाखनि दाखिल हुइगए ❋ लीन्ही धुठ लाय प्रियनारि ।
इतर छिड़क दीन्हो मुख ऊपर ❋ औफिरि छिड़को लाय गुलाब॥
नैन खोल दीन्हे रानीने ❋ लिखिपिय मगन भईगुणखान।
हिये लगाई लाखन राना ❋ मनके मेट दिये संताप ॥
कुसुमा बोली फिर कर जोरे ❋ सुनियो कंत हमारी बात ।
अब न वियोगहोय इकपलको ❋ दीजो प्राणनाथ बरदान ॥
विना तुम्हारे हे पिय प्यारे ❋ सारे दुखद भये सुखमूल ।
हमहीं जानैं जो दुख पायो ❋ जब तुम कंता गये विदेश ॥
हँसिकै लागे कहन कनौजी ❋ प्यारी धीर धरौ मनमाहिं ।
बाल तिहारो हीय हमारे ❋ रानी युग युग करौ विहार ॥
फिर लाखन तिलकापै पहुंचे ❋ माता लीन्ही हृदय लगाय ।
दई अशीश मगन मन होके ❋ युग युग जीवो पुत्र हमारे ॥
फिर पहुंचे हैं दरबारनमें ❋ औ जैचंदको करी सलाम ।
राजा देखत मगन हुए हैं ❋ औ पूंछा सब हाल हवाल ॥
फिर सब हाल कहा टीकेका ❋ औ नेगिनको लियो बुलाय ।
टीका भेजो धीरज सिंहने ❋ जो गढ़ अमराको सरदार ॥
सो टीका तुम लेव चढ़ाई ❋ यामें देर करो तुम नाहिं ।
सात खर्बका टीका आयो ❋ ऊदल खुशी भये मनमाहिं ॥

करी तयारी अब चलनेकी ❀ मंत्री करो समान तयार ।
फौज सजायो अब जलदीसे ❀ फिर क्यों राखी देर लगाय ॥
अम्मरगढ़की होइ चढ़ाई ❀ बड़ो शूरमा तहँको राव ।
इतनी सुन लइ सरदारोंने ❀ फौजोंमें डंका बज जाय ॥
धौंसा बाजा अम्मरगढ़को ❀ सजि सजि बीर भये तैयार ।
जितने हाथी हथखानेमें ❀ हौदा एक संग पड़ जायँ ॥
जितने घोड़े घुड़शालनमें ❀ काठी एक संग पड़ जायँ ।
जितनो पैदल गढ़ कनउजमें ❀ कमरैं एक संग खिंच जायँ ॥
जितनी तोपें तोपखानेमें ❀ सो चरखिनपर दईं चढ़ाय ।
जितने शस्तर थे फौजोंमें ❀ ज्वानन एक संग लिय साज ॥
मारू बाजे बाजन लागे ❀ घूमन लागे लाल निशान ।
झूल चमकतीं हेमजरिनकी ❀ ज्यों घनमें दामिनि दमकाय ॥
पहले डंकाके बजनेमें ❀ फौज सजत न लागी बार ।
दूजे डंकाके बाजत खन ❀ सब घोड़नपर भये सवार ॥
तड़ तड़ तड़ तासे बाजैं ❀ जंगी ढोल रहे झड़लाय ।
जैचँद ऊदलको बुलवायो ❀ आल्हासे कह दियो सुनाय ॥
भारी राजा अम्मरगढ़को ❀ धीरजसिंह जाहिको नाम ।
और न धोखेमें मत रहियो ❀ फौजनको रखियो हुशियार ॥
आल्हा ऊदनि तुम नामी हो ❀ औ लड़नेकी जानौ सार ।
इतनी सुनकर ऊदल बोले ❀ बेड़ा राम लगावैं पार ॥
चिंता मत करियो कुछ मनमें ❀ हम क्षत्रीपन देयँ दिखाय ।
फौज कटीली सजिकै चलिभै ❀ शोभा कछू कही ना जाय ॥
झनझनझनझन चलैं मझोला ❀ औ रथ उड़ैं पवनके साथ ।
धमक धमक कर हाथी चाले ❀ हौदैसे हौदा मिल जाय ॥
झुड़झुड़झुड़झुड़ पैदल चाले ❀ ज्यों टीड़ीदल चले अपार ।
ऊटनपर छूटत जम्बूरे ❀ लम्बी टांग सांड़नी क्यार ॥
खड़कत जाती हैं बन्दूकैं ❀ आगे चले छड़ी बरदार ।

तीन महीनाके अरसामें ❋ पहुँचे अम्मरगढ़ सरदार ॥
तंबू तान दिये धूरेपर ❋ औ दीने हैं फर्श बिछाय ।
नाच रंग होरहे फौजमें ❋ मीठे सुरमें बजैं सितार ॥
बीन और मुरचंग बजत हैं ❋ बजैं मँजीरा तोरैं ताल ।
सारंगिनकी जोड़ी बजती ❋ तबला बजैं खटाक खटाक ॥
बड़े बड़े शूर क्षत्री बैठे ❋ डिब्बा धरे अगार अफाम ।
मंगल वारीको बुलवाके ❋ ऐपनवारी दीने हाथ ॥
ले जाओ तुम ऐपनवारी ❋ औ राजापर खबर कराय ।
इतनी सुनकर सोचन लागो ❋ कठिन मवासी ह्यांकी आय ॥
सब्जा घोड़ा सजवा लीना ❋ तापर कूदि भये असवार ।
राम राम सबसे भाखी है ❋ औ जगदम्बा लई मनाय ॥
मंगल बारी चला वहांसे ❋ मनमें करता सोच विचार ।
कोड़ा मारा जब घोड़ाके ❋ घोड़ा उड़ा पवनके साथ ॥
चार घरी केरे अरसामें ❋ घोड़ा गयो शहरमें जाय ।
बीच कचहरी जाकर पहुँचा ❋ अब आगेको सुनो हवाल ॥
सात पैगसे कुन्नस कीनी ❋ औ ढिग जाके करी सलाम ।
कहँसे आये औ कहँ जाओ ❋ सो राजाने पूँछा हाल ॥
मंगल बोला सुनलो राजा ❋ कनवजियनकी आइ बरात ।
जहँ टीका भेजा था तुमने ❋ कुवर कनौजी ब्याहन आय ॥
सो तुम सावधान हो जाओ ❋ ऐपनवारी लायो द्वार ।
सवा पहरलौं चलै शिरोही ❋ मेरा नेग देव चुकवाय ॥
कीच खून इतना हुइ जइहै ❋ जब लग लौट धुरेनहिं जायँ ।
इतनी सुनकर राजा जर गयो ❋ नैना अग्निज्वाल है जायँ ॥
तबहीं हुक्म दियो शूरनको ❋ इस नेगीको करो हलाल ।
तलवारें लेकर चढ़ जाओ ❋ इसका देओ नेग चुकाय ॥
धावा कीने तब मंगलपै ❋ मंगल करै कठिन तलवार ।
बहुत ज्वान मंगल मारे ❋ कुछ घोड़ेने दिये गिराय ॥

सवा पहरलौं चली शिरोही ❋ कीच खून हो गइ दरबार ॥
घोड़ा हांकि दियो मंगलने ❋ घोड़ा कूदि गढ़ीको जाय ।
तुर्तहि फांदि किलेको आयो ❋ अपने दलमें पहुँचो जाय ॥
मंगल देखा जब ऊदनिने ❋ घोड़ा कूद गढ़ाको आय ।
फिर शरबतकी बहँगी आई ❋ सो बरातको दियो पिआय ॥
बाग बहारी आगे करकै ❋ तब सजिकरकै चली बरात ।
बड़े शूरमा महुबेवाले ❋ घोड़न कूदि भये असवार ॥
शेर समाने चेहरा जिनके ❋ शोभा वर्णन करी न जाय ।
जब दरवाजेपर पहुँचे हैं ❋ धीरसिंह बोले सुन ज्वाब ॥
नेग आगयो दरवाजेपर ❋ गजसे लड़ियो सम्मुख आय ।
पीछे लड़ो शेरसे कुस्ती ❋ इन्हैं जीतकर करो विवाह ॥
जब ये बात सुनौ लाखनिने ❋ लाखनि तुरत गये घबराय ।
लाखनि बोले तब ऊदलसे ❋ ह्यां तौ बात निभौगी नाहिं ॥
ऊदनि बोले सुनलो भइया ❋ मैं हाथीको देउँ पछाड़ ।
हाथी छूटा जब सम्मुखसे ❋ ऊदल घूसा दियो जमाय ॥
मस्तक फटि गयो है हाथीका ❋ फिर ऊदलने दियो गिराय ।
जब राजाने सुनी हकीकत ❋ भूरासिंह दियो छुटवाय ॥
ऊदल आल्हासे तब बोले ❋ शेर हमारे वशका नाहिं ।
आल्हा आइ शेरसे डटगये ❋ पंजा दियो शेरने धाय ॥
आल्हाकी छातीपर लागा ❋ आल्हाने गरदाना नाहिं ।
पकरि सिंहको देकर मारा ❋ हड्डी चूर चूर होइ जाय ॥
ये गत देखी जब राजाने ❋ मनमें गये अचंभा मानि ।
या बिधि कुश्ती भई शेरसे ❋ फिर सब नेग लिये चुकवाय ॥
आय गये अपने दलमांही ❋ चर्चा और भई तैयार ।
जो ब्रह्माने लिखी कर्ममें ❋ सो टारेसै टरती नायँ ॥
फौजोंके अप्सर बुलवाये ❋ औ धीरजने करी सलाह ।
बड़े शूरमा महुबेवाले ❋ बावन गढ़िया लई छिनाय ॥

नये शूरमा ये बाढ़े हैं ❋ ❋ इनकी देख लेहु तलवार ।
ऐसी कटा करो रणमाहीं ❋ जो जग रहै तुम्हारो नाम ॥
जो मर जावैं तलवारेनसे ❋ उनको ठांय हूर ले जायँ ।
जो मरते हैं खटिया परिकै ❋ उनके मांस चील्ह ना खायँ ॥
इतनी सुनिकै डटे शूरमा ❋ छोड़ि दई प्राणनकी आश ।
खबर कराई है लाखनिको ❋ हमरे रीति यही चलि आय ॥
पहले आके लड़ो सामने ❋ हम भी देखैं जोर तुम्हार ।
जो तुम हो क्षत्रीके जाये ❋ फौजैं संग जल्द लै आव ॥
ताके पीछे ब्याह होयगो ❋ सो तुम समुझि लेहु मनमाँह ।
इतनी सुनिलइ जब लाखनिने ❋ नैना अग्निज्वाल होइ जायँ ॥
हुक्म देदियो फौज सजनको ❋ जल्द रिसाले होयँ तयार ।
कोइ कोइ पहने लाल बनाती ❋ कोइ कोइ कालो पहनेयार ॥
कोइ कोइ कुरतीको पहने हैं ❋ जामें फिसल जाय तलवार ।
फौज चली लाखनिरानाकी ❋ शोभा कछू कही ना जाय ॥
दोउ तर्फासे तेगा बाजैं ❋ औ बहि चली रक्तकी धार ।
धीराकि फौजैं बढ़ि आईं ❋ लाखनिकी हटती हैं नायँ ॥
धीराकि फौजैं बड़ी शूरमा ❋ लाखनि सोच सोच रह जायँ ।
लश्कर हारा कन्नौजीका ❋ तब ऊदनिको लियो बुलाय ॥
सुनो बनाफर बात हमारी ❋ अब है लाज तुम्हारे हाथ ।
अपनी फौजैं लेउ बुलाई ❋ हमरी फौज गई है हार ॥
इतनी सुनकर ऊदनि बोले ❋ लाखन करौ न शोच विचार ।
पहलेहि धावेमें मारूँगा ❋ मुखमें ठांसि देउँ तलवार ॥
ऊदल ललकारो फौजनमें ❋ अस्त्र शस्त्र सब करो तयार ।
करो चढ़ाई अब धीरापै ❋ मढ़िया करदूँ पनियां ढार ॥
हल्ला बोले राजपूतोंने ❋ जैसे शेर बनोको जाय ॥
आगे आगे पैदल पल्टन ❋ पीछे चले तुरंग सवार ।

तिनके पीछे हाथी चाले * तुपखाने दीन्हे जुतवाय ।
अली अली कर सैयद कूदे * हिंदू लेत राम का नाम ॥
उतसे फौज चली धीराकी * बड़ि बड़ि तोप बड़े सरदार ।
धीरसिंहने हुक्म दियो है * अपनी सब फौजनके माहिं ॥
अबके हल्ला बढ़बढ़ मारो * सुबरन कडे देउँ करवाय ।
जो तुम ऊदनिको जीतोगे * जगमें रह तुम्हारे नाम ॥
ह्यांकी चरचा तो ह्यां रहगइँ * उदयसिंह ललकारे आय ।
ऐसे कूद पड़े फौजनमें * जैसे लंकामें हनुमान ॥
जैसे भिड़हा भेड़िन पैठे * औ गायनमें छुटै बिजार ।
छत्री कूद पड़े फौजनमें * करमें खैंचि लई तलवार ॥
खटखट खटखट तेगा बाजे * छुरियां चलै छनाक छनाक ।
झन झन झन झन खांडा बाजे * किरचैं बजे कटाक कटाक ॥
केहु ज्वानकी भुजा काटत हैं * केहुकी गर्दन डारी काट ।
धीरसिंह रणमें हारा है * जीते जंग बनाफर राय ॥
लाखन ऊदल जगनिक मामा * विजय हुई तिनकी रणमाहिं ।
फौजैं भाग गईं धीराकी * कायर छोड़ि भगे तलवार ॥

अथ रणधीरकी लड़ाई

मसलत करिकै धीरसिंहने * तब साड़निको लियो बुलाय ।
जल्दी लाओ रणधीराको * देर करो पलकी तुम नाँय ॥
इतनी सुनकर धामन धायो * रणधीराको लायो साथ ।
सुनी हकीकत रणधीराने * और रिसाले किये तयार ॥
ऊदन ढेबा जगनिक चलि भये * औ लाखन भैये तुरत तयार ।
पांचो कपड़े पहन लिये हैं * पांचौं बांधलिये हथियार ॥
झिल मिल टोप सभीने पहिने * अपनी झिलम लई सजवाय ।
बख्तर पहिने अष्टधातुके * जिनमें सांग गड़े है नांय ॥
किरच और तलवार टूटजाँ * औ बरछिनकी टूटै नोक ।

सब राजनकी सजी सवारी ❋ कछु तारीफ करी ना जाय ॥
कोइ हाथीपर कोइ घोड़नपर ❋ सजि सजि चले सजीले ज्वान ।
पहुँच गये महलनके भीतर ❋ खबर करी धामनने जाय ॥
भौंरिनकी अब करो तयारी ❋ आये बीर कनौजी राय ।
धीरसिंहने तब रानिनपै ❋ तुर्तै खबर दई करवाय ।
गावैं नारी मंगल चारी ❋ अति सुर भरके गीत अलाप ॥
फिर सब शूर बुलाये भीतर ❋ ब्राह्मण वेद रीति करवाय ।
अब भौंरिनकी हुई तयारी ❋ बड़े बड़े शूरा बैठे ज्वान ॥
जिन राजन घर रचा स्वयम्बर ❋ सो इकलंगमें बैठे राव ।
एक ओर बैठे कनउजके ❋ बीच महोबिया रहे दिखाय ॥
चहुँ ओर खंभा केलाके ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
पहिले फेरेके होनेमें ❋ लाखनिके मारी तलवारि ॥
धक्का दीनो तब ऊदलने ❋ सम्मुख रोक लई है ढाल ।
औंधा गिरा मूरछा खाके ❋ सारी सफा हैफ हो जाय ॥
ये हैं क्षत्री बड़े शूरमा ❋ औ महुबेके हैं सरदार ।
इनसे दुसरी जो तुम करिहौ ❋ तौ ह्यां अभी रार होइ जाय ॥
फेरनपर क्यों परी लड़ाई ❋ सभी राव दीन्हे समुझाय ।
दूजी तीजी भौंरी पड़ गईं ❋ अब कोइ नहीं करै तकरार ॥
सबही फेरे होगये पूरे ❋ औ अब बिदाबुलावा जाय ।
डोले सज गये अब रानीके ❋ कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
कमख्वाबनके परदा छूटे ❋ सुबरन किरन दई लटकाय ।
मोतिनके गुच्छा लटकत हैं ❋ मखमल चादर दई बिछाय ॥
नौसौबांदी दई टहलनको ❋ सो डोलेके सँगमें जाय ।
बेटी करी बिदा राजाने ❋ औ संग करे पांचसौ ज्वान ॥
कूच कराय दियो कनउजको ❋ दलकी नहीं पड़े शुम्मार ।
मंजिल मंजिलके चलनेमें ❋ औ कनउजमें पहुंचे जाय ॥

शूतरवानको हुक्म सुनायो ❋ महलन खबर करौ तुम जाय।
छमछमछमछम चली सांडिनी ❋ जिसको चलत न लागी बार॥
जाके पहुंची है महलनमें ❋ औ सब दीनी खबर सुनाय।
सुनी खबरिया जब महलनमें ❋ रानी करैं मंगलाचार॥
डोला पहुँचि गयो महलनमें ❋ दुलहिनको मुख देखो आय।
नौलखहार दियो दुलहिनको ❋ औ दीन्ही मुतियनको माल॥
काहू दीन्हो हँसला कठला ❋ काहू दियो गरेको हार।
मगन हुईं मुख देखि बहूका ❋ नीछावरि की बेशुम्मार॥
अनँदबधैया कनउज बाजी ❋ तुरतै दगन सलामी लागि।
अब जलशूर विवाह लड़ाई ❋ यारो सुनियो कान लगाय॥
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धर ध्यान॥

इति अमरगढ़की लड़ाई सम्पूर्ण

श्री :

अथ जलशूरके विवाहकी लड़ाई

★

सदा भवानी मेरे दाहिने ❋ रक्षा करो शारदा माय ॥
जन अपनेको ऐसे राखौ ❋ जैसे हरि राखे प्रह्लाद ।
इक दिन सुमरी थी रावणने ❋ लक्ष्मण राम लगायो बाद ॥
इक दिन सुमरो बिभीषणने ❋ जाको मिले रामजगदीश ।
इक सुमरी हनूमानने ❋ सुबरन लंका दई जराय ॥
नौ क्षौनी दल पदम अठासी ❋ लंका कोपि चढ़े भगवान ।
इक दिन सुमरी रामचन्द्रने ❋ लंका कर दई पनियांढार ॥
स्वप्न हुआ मल्हना रानीको ❋ जो चंदेलेकी है नारि ।
गजमोतिन मलिखेकी रानी ❋ सो सपनेमें कहै सुनाय ॥
मेरो पुत्र जलशूर कुँवारो ❋ इसका ब्याह करो तुम साधु ।
मात पिता जो होते जीवित ❋ काहे पुत्र विवाह न होत ॥
हमने गोद तुम्हारो छोड़ी ❋ करी सगाई पृथीराज ।
ये सब हाल कही ऊदनिसे ❋ सो गै भूल नहीं परवाह ॥
अब उनको फिरसे समुझाओ ❋ औ सुपनेको लिख दो हाल ।
रानीने सुपनेकी बातैं ❋ चन्देलेसे कही सुनाय ॥
राजा चन्देला सुनिकै सुपना ❋ रजा लिखो अपने हाथ ।
जहँ ऊदलका गिरै पसीना ❋ मलिखे दीन्हो खून गिराय ॥
क्या तुम भूल गये मलिखेको ❋ तिसका पुत्र कुँवारा आज ।
चिट्ठी लिखिकै चन्देलेने ❋ शुत खानको लियो बुलाय ॥
यह पुरजा ऊदनिको दीजो ❋ औ आल्हाको लाव बुलाय ।
धामन है सवार सांडिनिपै ❋ पुरजा लैगा हाथोंहाथ ॥
कोइ घड़ीका अरसा गुजरो ❋ ऊदनके ढिग पहुँचो जाय ।
सात पेगसे मुजरा करिकै ❋ औ ऊदलको करी सलाम ॥

चिट्ठी दे दीनी ऊदनिको ❋ काटि लिफाफा बांचन लाग ।
मलिखेने जो वचन दिये थे ❋ सो सब चितसे गये भुलाय ॥
याद दिलाई मात मल्हनदे ❋ सो सुपना जब परो दिखाय ।
गजमोतिन मलिखेकी रानी ❋ सो सुपनेमें कहि गइ आय ॥
ऊदनि हाल कहो आल्हासे ❋ पढ़िके चिट्ठी दई सुनाय ।
और काम सब पीछे करियो ❋ पहिले कीजे कुँवर विवाह ॥
इतनी सुनिकै तब आल्हाने ❋ सबको दियो हुक्म सुनाय ।
जितनी फौजें हैं लश्करमें ❋ तिनको सजत न लागै ब्यार॥
ज्वानन ज्वाननको ललकारो ❋ हे शहजादो भाइ हमार ।
बड़े बड़े भोजन तुमको दीने ❋ औ दिन रात खिलाये माल॥
यही समैयाको पाले हौं ❋ सो दिन लगो बरोबर आय ।
बरनी होइगइ अब दिल्लीको ❋ ह्वां दिनरात चलै तलवार ॥
जल्दी साजो मेरे शहजादो ❋ अब क्यों राखौ देर लगाय ।
जिनको प्यारी घर तिरिया है ❋ अपनी लेवो तलब चुकाय ॥
जो जो हैं क्षत्रिनके जाये ❋ पंजा जड़ै ढाल तलवार ।
भर भर कौली तब कुरतिनकी ❋ मंझा चौक दई डरवाय ॥
पहिरो पहिरो मेरे शहजादो ❋ जैसी जाके अंक समाय ।
जो जो थे बांदीके जाये ❋ कायर छोड़ गये तलवार ॥
जो जो थे क्षत्रीके जाये ❋ बोले और देव हथियार ।
सांग लेलई सब ज्वाननने ❋ जो चिन्तामणि गढ़ी लुहार ॥
भाला लीन्हे नागदौनके ❋ जिनमें उड़त चिड़ी बिंध जायँ।
लई शिरोही मानाशाही ❋ कोटा बून्दीकी तलवार ॥
लई बँदूकैं सब ज्वाननने ❋ औ संगीनै लई चढ़ाय ।
कड़ाबीन कांधे पर धर लीं ❋ गोली पांच शेरकी खायँ ॥
सजे रिसाले रजपूतनके ❋ कुछ तारीफ करी ना जाय ।
असकी मुश्की जरदी सबजे ❋ तिनपर काठी दई खिंचाय ॥
ढाल तहरू पशमीनेकी ❋ जापर तारकसी काम ।

जीनसुनहरी धर दीने हैं ❋ औ चांदीकी पड़ी रकाब ॥
मोतीचूरकी जड़ी लगामैं ❋ औ सवारके तंग लगाय ।
पड़े बक्कसुवा सुबरनवाले ❋ शोभा एक न बरनी जाय ॥
गेरबन्द है रेशमवाला ❋ गलमें कण्ठा सुबरन क्यार ।
जितने हाथी थे हथखाने ❋ हौदा एक संग पड़ जाय ॥
तोप दरोगाको बुलवायो ❋ सुबरन कंठा दियो इनाम ।
जितनी तोपैं तुपखानेमें ❋ सो चरखिनपर दिये चढ़ाय ॥
पैदल और रिसाले ठाढ़े ❋ आगे तोप दईं जुतवाय ।
झूल जरी हाथीपर डारे ❋ जापर कारचोबके काम ॥
मुंडे हौदनको धरवाये ❋ चारौ ओर धरीं तलवारि ।
ऐसी बिगड़ैगी पृथीकी ❋ दिल्ली करदैं पनियांढार ॥
पहिले डंकाके बाजतमें ❋ ज्वानन दिये रकाबन पांव ।
दूजे डंकाके बाजत खन ❋ घोड़न ऊपर भये सवार ॥
तीजे डंकाके बाजत खन ❋ फौजनकेर कूच हो जाय ।
बड़े बड़े राजा संग चले हैं ❋ सब न्योतारी लिये बुलाय ॥
जब दिन आवैं पोच मनुषके ❋ इतनी बातैं उपजैं आय ।
बारह बेटा पृथीराजके ❋ सबके कन्या जनमी आयँ ॥
जा घर कन्या होयँ बहुतसी ❋ धनका अन्त वहां लो जान ।
जा घर पूत कपूते जन्मे ❋ कुलका अन्त वहां लो जान ॥
सुखका अन्त वहां तुम जानो ❋ जहँ ब्राह्मणसे वैर बँधाय ।
सारी बात हुई पृथ्वीके ❋ तब पृथ्वी कैसे बच जाय ॥
हियांकि बातैं तो हियँ छांड़ौ ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
सब बढ़ि चले महोबेवाले ❋ दुलहा बनो बीर जलशूर ॥
नाना लागै जो लड़केका ❋ गजराजाको लियो बुलाय ।
हाथी हौदे हुई सगाई ❋ मलिखे जियत कियोइकरार ॥
मंजिल मंजिलके चलनेमें ❋ दिल्ली शहर दबायो जाय ।
धौंसा बाजो जब लश्करमें ❋ औ पृथ्वी को गई अजवाय ॥

पृथ्वी बोला तब मन्त्रीसे ❀ किसका धौंसा परै सुनाय ।
कहांकि फौजैं कहँको जावैं ❀ कौन राव यहँ पहुँचो आय ॥
यहँ डंकेका हुक्म नहीं है ❀ हमरी सीमा परै सुनाय ।
तबहीं भेज दियो कासिदको ❀ तुर्त सांड़िनी लई सजाय ॥
तुर्त सांड़नी पहुँची दलमें ❀ औ सब पूँछे हाल हवाल ।
कहँसे राजा ये आये हैं ❀ इनका नाम देउ बतलाय ॥
हुक्म नहीं है पृथीराजका ❀ ह्यां क्यों लश्कर घेरो आय ।
इतनी सुनिकै हरकारेने ❀ ऊदनि सम्मुख गयो लिवाय ॥
सात पैगते मुजरा करिके ❀ औ ऊदनिको करो सलाम ।
ऊदनि बोले हरकारेसे ❀ आयो कौन देशसे धाय ॥
हरकारा बोलौ ऊदनिसे ❀ मोहिं पृथ्वीने दियो पठाय ।
कहँकी फौजैं ये आई है ❀ हुक्म ठहरनेको है नाहिं ॥
इतनी बात सुनी ऊदनिने ❀ हँसि हँसि करिकै लगे बतान ।
कह दे जाकर पृथीराजसे ❀ आये महुबेके सरदार ॥
हाथी हौदे करी सगाई ❀ मलिखेसे कर लिये करार ।
सो इकरार करैं अब पूरे ❀ धूरे सजके परी बरात ॥
धामन जाके जल्दी कह दो ❀ अब भौंरिनकी करैं तयारि ।
इतनी सुनिकै धावन चलिभौ ❀ औ पथरीगढ़ पहुँचो जाय ॥
कही हकीकत सब पृथ्वीसे ❀ सुनतै होश बन्द हो जाय ।
हो तब कहा रचो ठाकुरने ❀ कौन करमगति प्रगटी आय ॥
अपने बेटनको बुलवाये ❀ औ सब हाल कहो समझाय ।
बेटे बोले तब पृथ्वीसे ❀ सुनलौ पिता पिथौराराय ॥
जो हम बेटा राजपूतके ❀ तिनहिं बीरता दिहैं दिखाय ।
जौ हमरे दिन आय गये हैं ❀ तो भी इनको छोड़ै नाहिं ॥
चिंता सोच फिक्र मत कीजो ❀ इनकी धरैं लाश पर लाश ।
बैठे रहियो तुम गद्दी पर ❀ तुमको कौन पड़ी परवाह ॥
जो कुछ हमरे लिखौ भाग्यमें ❀ सो टारेसे टरती नाहिं ।

अपनी फौजैं सजवा करके ❋ एक एक हम लड़ने जायँ ॥
नाम मेट देंगे महुबेका ❋ औ फौजनको करिहौं नाश ।
भारामलको संग लियो है ❋ सूरज चले लड़नके काज ॥
बड़ बड़ जोधा संग लिये हैं ❋ औ चलनेको भये तयार ।
तोपैं चरखिनपर चढ़वाई ❋ औ फिर दीन्हो हुक्म सुनाय ॥
ऐसी तोपैं हमरी दागो ❋ गोला सात कोसलौं जाय ।
ज्यों वर्षामें ओला बरसै ❋ तैसे गोला दो बरसाय ॥
सुबरनके तोड़ा इनाम है ❋ सुनो तोपखानेके ज्वान ।
बाजो गोला जब सूरजका ❋ तौ बढ़ि चले महुबिया ज्वान ॥
जा हाथीके गोला लागै ❋ सात कदमपर गिरै उड़ाय ।
जौन ऊंटके गोला लागै ❋ चारो पांव चित्त हो जायँ ॥
जो गोला घोड़ाके लागै ❋ तिसको लागै ठिकाना नाय ।
फौजैं भाग गईं ऊदनिकी ❋ ऊदल सोचि सोचि रहिजायँ ॥
आकर बैठो तब डेरनमें ❋ औ सब शूर लिये बुलवाय ।
ऊदन बोले तब शूरनसे ❋ छलबल करो रातही रात ॥
आल्हा ऊदन मसलत करके ❋ बड़ि बड़ि तोपैं लईं मंगाय ।
रातो रात करी तयारी ❋ ऊदनि कानोंमें बतरात ॥
दीवा आग बुझा दो बाती ❋ औ गुल कर दो बड़ी मशाल ।
दुश्मन भेद न लेने पावैं ❋ औ कोई बोलो तुम नाहिं ॥
रातो रात बोल दो धावा ❋ औ दुश्मनको मारो जाय ।
ह्यांकी चरचा तो ह्यां रह गई ❋ अब पृथ्वीकै सुनो हवाल ॥
बहुत बड़ा राजा पृथी है ❋ वो दिल्लीका है सरदार ।
दे दियो हुक्म सफर मैनाको ❋ जल्दी दो तुम सुरंग लगाय ॥
जाकर भूमीको खुदवा दो ❋ औ बरूद वहँ देउ बिछाय ।
बनाफरके आनेसे पहिले ❋ भारी सुरंग दई लगवाय ॥
इत ऊदनिने हुक्म सुनायो ❋ रातो रात घेर लो जाय ।
इतनो सुनकर फौजैं चलिभईं ❋ और किलेको घेरो जाय ॥

चारो तरफा तोप लगादी ❀ बड़े बड़े शूर डटे तहँ जाय ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्ट धातुकी ❀ गोला दो दो मनका खायँ ।
ये गति देखी जब रैयतने ❀ रैयत रोवे जार बिजार ॥
गाली देवै है पृथीको ❀ राजा होय तुम्हारो नाश ।
राजीसे बेटी ना ब्याहै ❀ तिसको कन्या देवै शाप ॥
रैयत दुखी भई है सारी ❀ बेड़ा कौन लगावे पार ।
ऐसे रोवैं दिल्लीवारे ❀ अब हम भागि किधरको जायँ ॥
महुबेवाले बड़े शूरमा ❀ वढ़िके दुर्ग लियो सब घेर ।
यह गति देखी पृथीराजने ❀ मनमें अति प्रसन्न ह्वैजायँ ॥
हुकम दै दियो तब पृथीने ❀ बत्ती देव सुरँगके मायँ ।
सुरँग उड़ाया जब ज्वानननें ❀ लश्कर तिड़ी बिड़ी हो जाय ॥
बहुतक ज्वान महोबिया मर गये ❀ भाग गये कुछ गोलंदाज ।
अरररररररर सुरँग छुटी थी ❀ मानों ऊपर गिरा पहाड़ ॥
लश्कर उड़ गयो है महुबेका ❀ औ कछु भागे जान बचाय ।
पुनि पृथ्वीने कासिद भेजो ❀ यह ऊदनिसे कह दो जाय ॥
तोपोंका मत करो लड़ाई ❀ हम तो बंद देंय करवाय ।
अब पैदलकी करौ लड़ाई ❀ दोमें एक कुरी मिटि जाय ॥
नातर लौटि जाउ महुबेको ❀ जीवत ब्याह होनको नाहिं ।
दिया लिया कुछ आगे आयो ❀ जो बच गये सुरँगसे आज ॥
इतनी सुन लइ जब ऊदलने ❀ औ सब फौज करी तैयार ।
तरह तरह की वर्दी पहनी ❀ पांचो बांधि लिये हथियार ॥
अब ऊदलकी कहौं लड़ाई ❀ मरदो सुनियो कान लगाय ।
फौजें डटगइँ दोउ ओरनकी ❀ होने लगो कठिन संग्राम ॥
प्यादनसे तो प्यादे अड़िगे ❀ औ असवारनसे असवार ।
सारी पल्टन और रिसाले ❀ एकै बार डटे मैदान ॥
दुमदुम दुमदुम चलैं बदूँकें ❀ कानन शब्द सुनो नहिं जाय ।
छातीसे तौ छाती मिलिगइ ❀ छपक छपक बाजे तलवार ॥

कायरका तो सीना धड़कै ❀ औ शूरनको लागै चाव।
ज्यों सावनके छुटैं लहरुवा ❀ भादौं बरसै मेघ अपार॥
सर सर सर सर छुटैं बछेरा ❀ ज्यों गायनमें छुटैं बिजार।
ऐसे छूटे महुबेबारे ❀ रिपुको काट कियो खरिहान॥
बढ़ि गइँ फोजें फिर पृथीकी ❀ औ ऊदनि पीछे हटिजायँ।
बड़े बड़े योधा दिल्लीवाले ❀ सों पृथीने दियौ उड़ाय॥
पहिलि लड़ाई भइ सांगनकी ❀ दूजी भई ढाल तलवार।
तीर तमंचा सभी चल रहे ❀ भाले फेरत हैं असवार॥
इंदल बोला तब ऊदलसे ❀ चाचा सुनो हमारी बात।
बहुत लड़ाई तुमने जीती ❀ अब आज्ञा तुम हमको देहु॥
अब लड़नेको हुक्म दीजिये ❀ चाचा जाकर लड़ैं अगार।
बहिनी राखुं मैं पृथीराजकी ❀ मुखमें ठांसि देउँ तलवार॥
ऊदनि बोले तब इंदलते ❀ बेटा सुनो हमारी बात।
बड़े लड़ैया दिल्लीवाले ❀ ये तुमरे वशके हैं नाहिं॥
इन्दल बोला औ ललकारा ❀ चाचा लखौ हमारे हाथ।
आल्हा ऊदनिसे आज्ञा लै ❀ इंदल चले दलोंके मांहिं॥
आल्हा शोच करैं अपने मन ❀ हुरमत रखियो गंगामाय।
फौजैं अपनी सजवा करके ❀ औ इंदल हो गयो तयार॥
जब इंदलने शस्तर धारे ❀ कुछ तारीफ करी नाजाय।
जामा पहिरो मछलीवनको ❀ रेशम बंद दिये छिटकाय॥
सैला बांधो सिंहभवनको ❀ हीरा मोती रत्न जड़ाव।
पेटी बांधी जरीबाफकी ❀ जामें तारकशीको काम॥
पहिरसिंजोयल अष्टधातुकी ❀ गोली लगे चीप हो जाय।
टोप झिलमिला जब ओढ़ा है ❀ घनमें घुंडी जड़ै लुहार॥
दहिने हाथे नंगा तेगा ❀ बायेंमें गैंड़ेकी ढाल।
जूता बनाती मरकत जावै ❀ खटकत चलै ढाल तलवार॥
ऐसे सजि गयो इंदल बांकुड़ा ❀ जैसे शेर बनोको जाय।

पकड़ि बकुसुवा जब घोड़ेका ❀ इन्दल झपटि भयो असवार ॥
क्या छबि बरनूँ मैं घोड़नकी ❀ कुछ तारीफ करी ना जाय ।
घोड़ा हिरंजन औ मुखभंजन ❀ तुरकी तीन पांव थर्राय ॥
अबजा सबजा चीनी तुरकी ❀ समुद कुमैते लिये सजाय ।
नुकरा अबलक सुरंगबदामी ❀ पँच कल्याणी लिये सजाय ॥
जितने घोड़े घुड़सालनमें ❀ काठी एक संग पड़ जायँ ।
अस्की मुश्कीको सजवाये ❀ औ बहुलोचन लियो सजाय ॥
पहिले डंकाके बजनेमें ❀ ज्वानन दिये रकाबन पायँ ।
दूजे डंकाके बाजत खन ❀ सब घोड़नपर भये सवार ॥
तीजे डंकाके लगनेमें ❀ पैदल बीर चले हर्षाय ।
चौथे डंकाके लगनेमें ❀ सारी फौज कूच हो जाय ॥
इतसे दल इंदलका धायो ❀ उतसे सूरजको दल आय ।
बीर बीरको डटो मोरचो ❀ अंधाधुन्ध चली तलवारि ॥
सब दल आरत गारत हो गये ❀ अपने परायेकी सुधि नायँ ।
खट खट खट खट तेगा बाजैं ❀ कोताखानी चलै कटार ॥
कटि कटि शीश गिरैं धरनीपै ❀ उठि उठि रुण्ड करैं तलवारि ।
खूननकी पिचकारी छूटैं ❀ कपड़ा लाल बरन हो जायँ ॥
सूरज बोले तब इंदलसे ❀ इन्दल सुनौ हमारी बात ।
अपनी मेरी सब फौजनकी ❀ क्यों तुम कटा देत करवाय ॥
हम तुम जूझैं रणखेतनमें ❀ जिसको देय शारदा माय ।
इतनी सुन लइ जब इंदलने ❀ दई लड़ाई बंद कराय ॥
सूरज इन्दल दोनों जुटि गये ❀ अपनी खैंचि खैंचि तलवार ।
बदलि पैंतरा तब दहनेसे ❀ औ बायें पर पहुँचे आय ॥
सूरज बोला तब इन्दलसे ❀ प्रथम आपनी करलो वार ।
फिरि पछताओगे मनमाहीं ❀ अपने मेंटि लेउ अरमान ॥
इन्दल बोलो तब सूरजते ❀ पहिलै हम नहिं करते वार ।
भगतेके पीछे नहिं पड़ते ❀ ना अबलनपर डारैं हाथ ॥

इतनी सुनलइ जब सूरजने ❋ अपनो तेगा लियो उठाय ।
पांच सांग औ तेगा मारे ❋ सो इंदल सब गये बचाय ॥
फिरि जब वार कियो इंदलने ❋ प्रथमैं साँगैं दईं झुकाय ।
लगतै सांग गिरचो है सूरज ❋ इन्दलने दीन्हो बँधवाय ॥
हाथ हथकड़ी पायन बेड़ी ❋ गलमें तौंक दियो डरवाय ।
यह सुधि पाई जब पृथ्वीने ❋ मोती बेटा दियो पठाय ॥
जल्दी जइयो तू महलनमें ❋ मत कहिं गिरै कुही पर बाज ।
सूरज कैद कियो इन्दलने ❋ ऊदनि पास दियो भिजवाय ॥
बड़े शूरमा महुबेवाले ❋ पृथ्वी शोच करै मनमाहिं ।
फिर पृथ्वीने शीश धुना है ❋ औ चौंड़ाको लियो बुलाय ॥
बावनगढ़में नाम हमारो ❋ पगिया मिली धूरके साथ ।
चौंड़ा तुम जावो लड़नेको ❋ औ सूरजको लाउ छुड़ाय ॥

अथ जलशूर और चौंड़ाकी लड़ाई

अब चौंड़ाने करी तयारी ❋ लेकर परब्रह्मको नाम ।
मोतीमल तो जा पहुँचे थे ❋ चौंड़ा गयो फौज लै साथ ॥
इंदल इकला है रणमाहीं ❋ दिल्ली फौज जुरी बहु आय ।
जब ये खबर सुनी ऊदनिने ❋ आयो लड़न चौंड़िया राय ।
मनमें सोच कियो अति भारी ❋ औ जलशूरै लियो बुलाय ।
हुईं सलाहें तब दोउनकी ❋ फिर जलशूर कहे समुझाय ॥
चाचा हुक्म हमैं दै दीजे ❋ मैं जाउँ इन्दलके पास ।
हुक्म दे दियो है ऊदलने ❋ औ जलशूर भये तैयार ॥
बख्तर धारि लिये जोधाने ❋ पांचौं बांधि लिये हथियार ।
अष्टधातुको बख्तर पहनो ❋ जिसमें सांग गड़ै हैं नाहिं ॥
अब जलशूर चले हैं सजिकै ❋ घोड़ा फांदि भये असवार ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❋ दारू गोला बेशूम्मार ॥
जाय मिले हैं इन्दलसीसे ❋ औ सब हाल कहो समुझाय ।

इन्दल बोले जलशूरासे ❀ तुम क्यों भाई आये धाय।
भगवत चाहैं इकला जीतूं ❀ इनसे करूं कठिन संग्राम॥
जलशूरा इन्दलसे बोले ❀ भ्राता तुम तबलौं सुस्ताव।
अबके धावेमें मैं जाऊँ ❀ अब तुम हमरे देखो हाथ॥
इतनी सुनकर इन्दल राजा ❀ रणसे एक ओर हटिजाय।
जलशूराकी देखि मर्दुमी ❀ मोती गयो वहांसे भाग॥
अब चौंड़ा वहँ रहा अकेला ❀ जलशूराने लीन्हो बांध।
हाथ हथकड़ी पांयन बेड़ी ❀ गलमें तौंक दियो प्रहराय॥
इन्दल बोले जलशूरासे ❀ धन्य धन्य मलिखेके लाल।
धनि है तुम्हरे मात पिताको ❀ सिंहके सिंह हुए जल शूर॥
यहांकि बाते तो ह्यां रहगईं ❀ चरचा और भई तैयार।
जब ये सुधि पृथ्वीने पाई ❀ मनमें गये सनाका खाय॥
सब बेटनको बुलवायो हैं ❀ औ सब बुला लिये हैं शूर।
सम्मति करिकै सब मित्रनसे ❀ लड़नेके कीन्हे सामान॥
आल्हाने धामन इक भेजा ❀ ये पृथ्वीसे कह दो हाल।
अब भी व्याह करो बेटीका ❀ क्यों फौजनको करो हलाल॥
इतनी सुनकर पृथ्वी बोला ❀ औ कासिदसे कही सुनाय।
यह कह दीजो तुम आल्हासे ❀ नहिं बदले हैं सिंह सुहाय॥
हंसा ज्वार नहीं चुगते हैं ❀ सिंह न सूंघै सूखी घास।
पृथ्वी बोले नाहरसिंहसे ❀ अपनी फौजैं लेउ सजाय॥
चौंड़ा बांधि लियो बनाफरने ❀ कठिन लड़ाई करियो जाय।
चढ़ गयो नाहरसिंहलड़नेको ❀ दिये तोपखाने सब दाग॥
पैदल पल्टन और रिसाले ❀ तोपैं चलैं धड़ाक धड़ाक।
ऊदल आल्हा हिकमत कीनी ❀ तहंपर सुरंग दई लगवाय॥
फौजैं आई जब पृथ्वीकी ❀ तबहीं सुरंग दई उड़वाय।
बहुतैं फौज रिसाले जरि गये ❀ बाकी फौज गयी है भाग॥
चौतरफासे किला घेर लियो ❀ फौजैं घुसी किलेके माहिं।

मुश्क बांधली सब शूरनकी ❋ बेटा पृथ्वी के लिये बांध ॥
पृथ्वी दुबक गये महलनमें ❋ औ ऊदल ढूँढ़नको जाय ।
रानी बोलै नर ऊदलसे ❋ ऊदल अब डेरनको जाव ॥
तड़के फेरे फिरवा दूँगी ❋ निश्चय राखो मनके माहिं ।
ऊदनि बात मानी रानीकी ❋ दई लड़ाई बन्द कराय ॥
पहुँचे सब अपने डेरनमें ❋ चर्चा और सुनो चितलाय ।
प्रातकाल जब सूरज निकसो ❋ अब तुम सुनियो सकल हवाल ॥
जुड़ी कचहरी अब पृथ्वीकी ❋ अजगर लागि रहो दरबार ।
पृथ्वी बोले हैं मन्त्रीसे ❋ अब कुछ दीजो जतन बताय ॥
किस विध जीतै इन बनफरको ❋ ये हैं पूर्व जन्मके पाप ।
मन्त्री बोले पृथ्वीराजसे ❋ राजा मानौ बात हमारि ॥
भाँवर डरवा दो बेटीको ❋ पहले हितसे लेउ बुलाय ।
जो दुश्मनको टेढ़ा जानो ❋ तो नरमीसे काढ़ो काम ॥
इतनी बात सुनी पृथ्वीने ❋ नेगी बुला दिये भिजवाय ।
आल्हा ऊदलसे यों कह दो ❋ जलशूराको लाव लिवाय ॥
भौंरी करलो मन्दाकिनि सँग ❋ नेगी जाय सुनायो हाल ।
इतनी सुनकर ऊदल आल्हा ❋ अपने शूर लिये सजवाय ॥
सजी नालकी और पालकी ❋ और सजे घोड़न असवार ।
ऐसे सजकर चले महुबिया ❋ कुछ तारीफ करी नाजाय ॥
पहुँचि गये पृथ्वीके मंदिर ❋ पृथ्वी कियो बहुत सत्कार ।
मढ़के चोतरफा ज्वाननको ❋ सुन्दर फर्श दियो विछवाय ॥
आल्हा ऊदल औ सब शूरन ❋ नौ नौ बांध लिये हथियार ।
पंडितने बेदी रचि राखी ❋ औ पुस्तकको धरो अगार ॥
अब फेरनकी त्यारी होगइ ❋ मुतियन चौक दियो पुरवाय ।
वेदी पंडितने बनवाई ❋ चन्दन चौकी दई बिछाय ॥
मन्दाकिनि रानी सजवाई ❋ शोभा कछू कही ना जाय ।
सब श्रृंगार बतीसों अभरण ❋ माथे बिन्दी लई लगाय ॥

इक इक लटमें सौ सौ मोती ❋ जैसी चमक रही तलवार ॥
माँगन काढ़ि सिंदूर भरो है ❋ दाँतन मिस्सी लई लगाय ।
पांच मुहरकी नाथ पहिरी है ❋ तोता होठन पर लटकाय ॥
भुजबँद छना पछेली बाजू ❋ लीन्हो पहिरि नौलखाहार ।
चूहे दंती बनी नौगरी ❋ मठिया करमें देत बहार ॥
क्या छबि बरनूं मैं नुहियोंकी ❋ औ हथिफूल दिये पहिराय ।
पहिरि आरसी सुबरनवाली ❋ शीशा जड़ो नगीनेदार ॥
अनबट बिछुवे अँगूठी छल्ले ❋ कड़े छड़े पाजेब बहार ।
चुड़ला पहिरो गजदंतीका ❋ सुबरन बन्द लगे बिचमाहँ ॥
लग्न आगई जब फेरनकी ❋ पदमिनि लई तुरत बुलाय ।
पहले पूजन करि गणेशको ❋ फिरि गठबन्धन दियो कराय ॥
पहली भाँवरिके होनेमें ❋ सूरज झोंक दई तलवार ।
इन्दल ढाल अड़ाय दियो है ❋ जलशूराको लियो बचाय ॥
दूजे फेरेके होनेमें ❋ नाहरसिंह उठे ललकार ।
त्योंरी चढ़गइ तब ऊदलकी ❋ अपना तेगा लियो उठाय ॥
तीन बेरकी माफी करदइ ❋ तुम हरबार करो हथियार ।
खबरदार जो हाथ उठायो ❋ हमरो नाम उदयसिंहराय ॥
इतनी बात सुनी पृथ्वीने ❋ औ नाहरसे कही सुनाय ।
कही हमारी मानो नाहर ❋ अब ना वृथा बढ़ाओ रार ॥
समझ मानलइ पृथीराजकी ❋ तहँ फिर चौंड़ा पहुँचो आय ।
चौंड़ा बोले पृथीराजसे ❋ अपना नेग चुकावैं जाय ॥
पृथी बोले तब चौंड़ासे ❋ चौंड़ा सुनो हमारी बात ।
तुम ना आओ इन बैरिनपै ❋ नाहक अभी रारि मचजाय ॥
चौंड़ा बोला फिर पृथ्वीसे ❋ इनके साथ करूँ छल जाय ।
ज्वान सातसो छिपे महलमें ❋ अपने बांधि बांधि हथियार ॥

जब अपना औसर पावैंगे ❃ तबै बनाफर देयँ कटाय।
ऐसो समय बहुरि नहिं पावैं ❃ सारी रारि अभी मिटिजाय॥
इतनी सुनिकै पृथ्वी बोले ❃ चौंड़ा सुनो हमारी बात।
जो तुमसे ये छल बनि आवे ❃ तो ऊदनिको डारो मार॥
जो ऊदनि छल से मरिजावे ❃ फिर कोइ डटै सामने नाहिं।
इतनी सुनिकै चौंड़ा चलि भये ❃ ज्वान सातसौं संग लिवाय॥
तिनहिं छिपायो कोठरिनभीतर ❃ बांधि बांधि पांचो हथियार।
समय पायकै कूदि पड़े हैं ❃ अब तहँ चलन लगी तलवार॥
ऊदनि बोले तब आल्हासे ❃ भैया भयो जुलुमके ठाट।
ऐसो छल कीनो पृथ्वीने ❃ दुबका दिये सातसौ ज्वान॥
अब द्वांपर क्या जतन बनावैं ❃ घेरि लिये मंदिरमें लाय।
आल्हा बोले औ ललकारे ❃ ऊदनि सुनो हमारी बात॥
अपने अपने खांड़े लेलो ❃ मनके मेटि लेहु अरमान।
ढेबा जगनिक औ इन्दलसिंह ❃ औ जलशूर हुए तैयार॥
जितने ज्वान संग थे इनके ❃ सबने खैंचि लई तलवारि।
चलै शिरोही दोउ तर्फासे ❃ औ बहि चली रक्तकी धार॥
जिनके ऊदनि तेगा मारैं ❃ तिनके टूक टूक हो जायँ।
आल्हा काटि रहे ज्वाननको ❃ जैसे काटै खेत किसान॥
मारे गये ज्वान दिल्लीके ❃ जीते हैं आल्हा सरदार।
एक घड़ीका अरसा लागो ❃ तिसमें मरे पांचसौ ज्वान॥
दोसौ ज्वान रहे थे बाकी ❃ सो भी भागे जान बचाय।
जब पृथ्वीने यह गति देखी ❃ दांतन लई अँगुरिया दाब॥
जैसे शूर महोबे वाले ❃ ऐसे बावन गढ़में नाहिं।
हाथ हथकड़ी पांयन बेड़ी ❃ चौंड़ाके राखी ठुकराय॥
फिर चौंड़ासे इन्दल बोले ❃ चौंड़ा सुनौ हमारी बात।
विप्र जानि तुमको छोड़ै हैं ❃ नाहीं जानसे देते मार॥

कैद उमरि भर तुमको रखिहैं ❋ बन्दीखाने महुबे माहिं ।
इतनी कहिकै तेहि चौंड़ाको ❋ लश्करमाहिं दियो पहुँचाय ।
जो भांवरिको काज रहा था ❋ सो भी तुर्त लियो करवाय ॥
ह्यांकी चरचा तो ह्यां रह गइ ❋ अब आगेको सुनो हवाल ।
आल्हा ऊदल मसलत करिकै ❋ बिदा होनको भये तयार ॥
डेरन महँ सब भये इकट्ठे ❋ औ पृथ्वीको लियो बुलाय ।
आल्हा बोले तब पृथ्वीसे ❋ डोला जल्द करो तैयार ॥
अब डोलेको करो न देरी ❋ हमें होत छिन छिनपे ब्यार ।
इतनी सुनिकै पृथ्वी चलिभै ❋ औ महलनमें पहुँचे जाय ॥
नर नारिनसे कही जायकै ❋ बेटी बिदा देउ करवाय ।
इतनी बात सुनी महलनमें ❋ औ रानीने दियो जवाब ॥
बिदा नहीं होने पावैगी ❋ तुम राजासे कह दो जाय ।
जब गौना होगा बेटीका ❋ तबहीं बिदा देइँ करवाय ॥
यहु हमरे दस्तूर नहीं है ❋ जो गौनेसे पहले जायँ ।
इतनी सुनिकै बांदी चलिभइ ❋ बेटी बिदा होनकी नाहिं ॥
जब यह खबरि भई ऊदनिको ❋ ऊदनि तुर्त क्रुद्ध हो जाय ।
बोले ऊदनि तेहि बांदीते ❋ डोला बिना लिये ना जायँ ॥
अपने बलसे करैं सगाई ❋ अपने बलसे करैं विवाह ।
डोला हरगिज नहिं छोड़ैंगे ❋ तुम्हरी रीति हमैं ना काम ॥
जब यह बात सुनी पृथ्वीने ❋ मनमें कीनो सोच विचार ।
नहिं मानैंगे मोहबेवाले ❋ नाहक कौन बढ़ावै रार ॥
यह मन भाइ गई पृथ्वीके ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
डोला बिदा करी महुबेको ❋ अब क्यों राखी देर लगाय ॥
सजि गयो डोला तब बेटीका ❋ नौसौ बांदिनको सजवाय ।
हाथी घोड़े और पालकी ❋ दायज दीनो बेशुम्मार ॥

डोला लैकै चले महुबिया ❋ जलशूराको भयो विवाह ।
नौबत संगे बजती जावै ❋ होते चले मंगलाचार ॥
मंजिल मंजिलके चलनेमें ❋ अब महुबेमें पहुँचे आय ।
मल्हना रानी करी निछावर ❋ दुलहिनको ले गई लिवाय ॥
शाल दुशाले मुहर रुपैया ❋ सो नेगिनको दियो इनाम ।
घर घर अनंद बधाई बाजी ❋ मलिखेसुतको भयो विवाह ॥
अब सागरकी कहौं लड़ाई ❋ जहँ आल्हासुतको भौ ब्याहु ।
समय समयपै आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ॥

इति मलिखेके पुत्र जलशूरके विवाहकी लड़ाई

श्रीः

अथ सागरकी लड़ाई प्रारम्भ



सुमिरि भवानी धौलागढ़की ❀ जो घट अंदर करै प्रकाश ।
तिमिर मारके दूर हटावै ❀ हिरदै बीच करै उजियार ॥
सब देवनको सुमिरन करिकै ❀ सागरका मैं कहूँ हवाल ।
सुनलो चरचा अब सागरकी ❀ तहँका राव मदन महिपाल ॥
बड़ो शूर राजा परतापी ❀ जिसका वर्णन करो न जाय ।
आशिक परी हुई सूरतपै ❀ ताको सुनिये सकल हवाल ॥
इन्द्र अखाड़ेकी परियोंका ❀ तख्त उड़ा जाता इक रोज ।
शीतल मन्द पवन जो लागी ❀ नैनन निंदिया लई दबाय ॥
तिसी समय इक देव तहांपर ❀ उड़ा जात था करता सैर ।
पड़ी दृष्टि परियोंके ऊपर ❀ मोहित भयो देव तत्काल ॥
चन्द्रकला जिस नाम परीका ❀ तिसको लीन्हों देव उठाय ।
जब यो लेकर उड़ा परीको ❀ देखा राव मदन महिपाल ॥
जादू मारा है राजाने ❀ देव रु परी गिरे भहराय ।
घरमें राख परीको लीना ❀ देव कैद लियो करवाय ॥
सुन्दर रूप देखि राजाका ❀ परी प्रेमते रहने लागि ।
उसी परीसे पुत्री जन्मी ❀ चम्पाकली नाम धरवाय ॥
हंस सवारीमें चलती थी ❀ जादू विद्या थी अधिकाय ।
चम्पकलीने जादू सीखे ❀ कुछ दिनमें हो गइ हुशियार ॥
एक दिना खेलत फिरती थी ❀ चम्पकली सखियनके साथ ।
एक सखीने बोली मारी ❀ चम्पाकली सुनो चितलाय ॥
इतनी बड़ी उमिरिया होगइ ❀ कीन्हों ब्याह पिताने नाहिं ।
क्या राजाके धन है नाहीं ❀ क्या कुलदागी पिता तुम्हार ॥

जिन घरमें कन्या हो स्यानी ❋ तिनका धर्म कर्म कुछ नाहिं ।
इतनी बात सुनी सखियनसे ❋ चम्पकली गई मांके पास ॥
माता बोली तब बेटीसे ❋ चम्पकली क्यों भई उदास ॥
कौन उदासी तुमपर छाई ❋ पुत्री कहो मरमकी बात ।
हमरे सँगकी जितनी सखियां ❋ ब्याही गौने रौने जात ॥
बोली मारैं हैं सब सखियां ❋ तासे गई उदासी छाय ।
क्या बाबुलके धन है नाहीं ❋ क्या कहिं कुलको दाग लगाय ॥
इतनी बात सुनी माताने ❋ माता सोचि सोचि रहिजाय ।
सांची बात कही बेटीने ❋ हमको अबतक नहीं विचार ॥
जिन घर बेटी स्यानी ह्वगइ ❋ उनका पुण्य लगै है नायँ ।
इससे ज्यादे पाप नहीं हैं ❋ जिन घर कन्या स्यानी होय ॥
रानीने राजा बुलवाये ❋ औ सब हाल कहो समुझाय ।
बेटी हो गइ बारा बरसकी ❋ अबतक ब्याह करो हेनायँ ॥
जिनघर कन्या स्यानी होजा ❋ उनका धर्म कर्म सब जाय ।
इतनी बात सुनी राजाने ❋ औ रानीसे कियो जवाब ॥
सात समुन्दर बीच बसैहै ❋ कोइ राजा नेरे है नायँ ।
कौन सगाई लेय दूरकी ❋ किसके टीका दें भिजवाय ॥
सोच विचार कियो राजाने ❋ औ नेगिनको लियो बुलाय ।
सात लाखका टीका देकर ❋ नेगी बिदा दिये करवाय ॥
दो दरियाई घोड़े दैकै ❋ नेगिनको कर लिये सवार ।
पहिले जइयो गढ़ दिल्लीको ❋ जहँपर बसै पिथौराराय ॥
नेगी पहुँच गये दिल्लीमें ❋ औ पृथ्वीको करी सलाम ।
पृथ्वीने पूँछा नेगिनसे ❋ कहँका टीका लाये ज्वान ॥
नेगी बोले तब राजासे ❋ औ सब कहन लगे अहवाल ।
सातसिंधु लांघत सागर है ❋ तहँका राव मदन महिपाल ॥
तिसकी पुत्री महासुन्दरी ❋ जाके वर्णन करो ना जाय ।
सो राजाने टीका भेजो ❋ सो तुम टीका लेउ चढ़ाय ॥

पृथ्वी बोले तब नेगिनसे ❀ यह टीका हम लेते नाँय ॥
सात समुंदर कैसे लांघें ❀ औ हाँ कैसे जाय वरात ।
टीका ले जाओ महुबेको ❀ जहँपर बसैं रजापरिमाल ॥
उनके वशका है यह टीका ❀ बावनगढ़का जो सरदार ।
फिर नेगि कनउजमें पहुँचे ❀ राजा जैचँदके दरबार ॥
राजा बोले तब नेगिनसे ❀ कहँका टीका लाये ज्वान ।
हम आये हैं सागरगढ़से ❀ जो है सात सिंधुके पार ॥
टीका सात लाखका लाये ❀ भेजो हमैं मदन महिपाल ।
राजा बोले कनउजवाले ❀ यह टीका महोबे ले जाउ ॥
जो टीका हम लेयँ चढ़ाई ❀ कैसे उतरैं सागर पार ।
टीका फेरि दियो जैचँदने ❀ औ नेगिनको दियो निकाल ॥
बानगढ़में वे हो आये ❀ टीका लियो किसीने नाहिं ।
मरियो चंपकली राजकी ❀ गढ़ गढ़ होते फिरै हिरान ॥
जो महुबेवाले ना लेंगे ❀ तो निश्चय क्वांरी रहजाय ।
अब नेगी महुबेमें आये ❀ राजा चंदेले दरबार ॥
पहिले पहुँचे उदैराजपै ❀ नेगी कहौ सभी अहवाल ।
सब राजोंके हम हो आये ❀ कोई टीका थामो नाहिं ॥
तुम्हारा यश फैला पृथ्वीपर ❀ सबने लियो तुम्हारो नाम ।
जो तुम टीका ना लेवोगे ❀ तौ पृथ्वी निर्बीज कहाय ॥
निश्चय पुत्री रहै कुवाँरी ❀ ऊदनि सोचि लेहु मनमाहिं ।
बावनगढ़ने दियो बताई ❀ ऐसो राजा दूजो नाहिं ॥
इतनी बात सुनी नेगिनसे ❀ ऊदल चँदेलेपर जायँ ।
कही हकीकत सब राजासे ❀ राजा सुनियो कान लगाय ॥
आयो टीका महीपालका ❀ जो है सागरका भूपाल ।
बावनढ़में फिरकर आयो ❀ कोई टीका थामो नाहिं ॥
आल्हा को जो छोटो लड़का ❀ जाको नाम 'भयंकर' राय ।
तिसको टीका देव चढ़ाई ❀ यामें देर करौ तुम नाहिं ॥

जो तुम टीका उलटा फेरौ ❋ सब जग ह्वैहैं हँसी तुम्हारि ।
आल्हा बोले तब ऊदनिसे ❋ सागर सात समुन्दर पार ॥
बड़ा कठिन है तहँको जानो ❋ याते टीका देहु फिराय ।
इतनी सुनिकै कहै चँदेला ❋ ऊदनि तुमको है अख्त्यार ॥
टीका लैलीनो ऊदनिने ❋ सबराजों पर खबर कराय ।
बड़े बड़े राजा सजकर आये ❋ औ ऊदलने कहो हवाल ॥
हेठी होती रजपूतनकी ❋ याते टीका लियो चढ़ाय ।
सब राजोंकी इज्जत रहगइ ❋ हँसी होइ ना सागरपार ॥
अब चलनेकी करो तयारी ❋ कैसे ब्याहनको ह्वां जाँये ।
सम्मति करिकै जतन बताओ ❋ जाते काम सिद्धि हो जाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदलकी ❋ सब राजोंने दियो जवाब ।
इक तो सात समुद्रपार है ❋ दूजे जादूकी है मार ॥
हमरे वशकी बात नहीं है ❋ ना हम संग बराती जाँय ।
तुम्हरे तौ उड़ने घोड़े हैं ❋ औ सामर्थ्य बड़े बलवान ॥
हमें जानकी नहीं समरथा ❋ ऊदल समुझि लेउ मनमाहिं ।
तुमहिंबनाफरजाओसजिकै ❋ औ सँगलेहु अमर गुरुद्याल ॥
सब राजनने ज्वाब दियो है ❋ तब बनाफर हो गये तयार ।
आल्हाऊदलइन्दलसजिगये ❋ जगनिक औ जलशूरसजाय ॥
जितने बनाफर थे महुबेमें ❋ तिनको सजत न लागी बार ।
उड़न बछेड़े सिगरे सजिगये ❋ औ सागरकी लीन्ही राह ॥
उड़ने घोड़े उड़कर जावैं ❋ दरियाई सब तैरत जायँ ।
सुम्म सिरफ भीगे घोड़नके ❋ सात समुन्दर हो गये पार ॥
डेरा डारि दिये सागर ढिग ❋ बुलवा लिये अमर गुरुद्याल ।
कहौ गुरुजी अबक्या करिये ❋ तब गुरुवाने दियो जवाब ॥
पहिले भेजो रूपनवारी ❋ अपना नेग चुकावे जाय ।
इतनी सुनिकै रूपनवारी ❋ ह्वां जानेको भयो तयार ॥
करी तयारी है बारीने ❋ लेकर परमब्रह्म को नाम ।

पांचो कपड़े पहिरि बदनमें ❀ पांचो बांधि लिये हथियार ।
कोई घड़ीका अरसा लागे ❀ सागर द्वार पहूँचो आय ॥
लगी कचहरी है राजाकी ❀ अजगर लागि रहो दरबार ।
नजर गुजारी महीपालने ❀ औ बारी पर गई निगाह ॥
कौन देशसे तुम आयो है ❀ आगे कौन देशको जाय ।
हाथ जोड़िकै रूपन बोला ❀ हे महराज महीपति राय ॥
गढ़ महुबेके रहने वाले ❀ तेरी गढ़िया पहुँचे आय ।
ऐपनवारी हम लाये हैं ❀ रूपन बारी हमारो नाम ॥
महिपति बोले तब नेगीसे ❀ अपनो नेग देउ बतलाय ।
नेग हमारो है यह राजा ❀ चार घड़ीलौं चलै कटार ॥
इतनी सुनिकै राजा जर गयो ❀ औ शूरनको दियो उटाय ।
चार घड़ी लौं चली शिरोही ❀ औ बहि चली रक्तकी धार ॥
बहुत हाथ मारे बारीने ❀ अपने एक न आई घाव ।
जादू मारो है राजाने ❀ बारी बन्दर दियो बनाय ॥
लौटके आये अपने डेरनमें ❀ रूपन बन्दर परो दिखाय ।
अमरा मारो अपना मन्तर ❀ रूपन नर तुतें ह्वइजाय ॥
इतसे फौज चढ़ी ऊदलकी ❀ उतसे चढ़े मदन महिपाल ।
दलसे दल जा मिले ओरसे ❀ बाजन लगी ढाल तरवार ॥
छातीसे तौ छाती अड़ गई ❀ घोड़ासे घोड़ा अड़ जायँ ।
खांड़ा बाज रहा रण माहीं ❀ जैसे काटें खेत किसान ॥
महुबेवाले बड़े शूरमा ❀ धरि धरि लड़ैं लोथपर पांव ।
चार घड़ीतक चली शिरोही ❀ मारे गये हजारन ज्वान ॥
फौजै भाग चलीं सागरकी ❀ कीनो सोच मदन महिपाल ।
बनफर क्षत्री बड़े शूरमा ❀ जो बावन गढ़के सरदार ॥
इनसे कबहूँ ना जीतैंगे ❀ यहु राजाने कियो विचार ।

शुतरखानको बुलवा करिकै ❋ दीनो हुक्म मदन महिपाल ॥
हो सवार अबहीं तुम जावौ ❋ उदयचन्दको लाउ बुलाय ।
औ ऊदलसे यह कह दीजो ❋ जल्दी कुंवर देहु भिजवाय ॥
लग्न आ गई है भांवरिकी ❋ अब तुम देर करो कछु नायँ ।
सांड़ीवान गयो ऊदलपै ❋ औ सब दीनो हाल सुनाय ॥
आल्हा ऊदल चले कुंवर लै ❋ औ संग लीने साठक ज्वान ।
बड़े बड़े शूर बीर संग चाले ❋ औ भांवरि करवाने जाय ॥
बीच पालकी चली कुंवरकी ❋ चौतरफा चाले उमराव ।
पहुँचि गये महलोंके अन्दर ❋ राना कियो बहुत सन्मान ॥
फरस बिछाय दियो महलनमें ❋ औ सब शूर दिये बैठाय ।
राजा बोले तब बनफरसे ❋ तुम हो बड़े बीर महराज ॥
तुम आल्हा हो बड़े शूरमा ❋ तुम्हरी जग जाहिर तलवार ।
सारी पृथ्वी तुमने जीती ❋ सब राजनके हो सरदार ॥
हम सबसे छोटे राजा हैं ❋ हमें बीरता दो दिखलाय ।
जादू मारो मदन महीपति ❋ सारे मुर्गा लिये बनाय ॥
अमरागिरि गुरु सोचन लागे ❋ कैसे जादू जाय बराय ।
फिरि अमराने सर्सों मारे ❋ औ जादूको दीनो टार ॥
फिरि अमराने ताल बजाई ❋ मुखमें छूछू मन्त्र पढ़ाय ।
बहुत मन्त्र अमराने मारे ❋ पर ह्वां पैश एक न आय ॥
दोनों मंत्र यन्त्रसे लड़ रहे ❋ अमरा हार मान हटि जाय ।
गुरुपै चलिकै हाल सुनावौं ❋ यह मन सोचि चलो गुरुद्वाल ॥
उड़ना घोड़ा लियो सजाई ❋ औ जल्दीसे भयो सवार ।
जहँ देवी थी विन्ध्यवासिनी ❋ जहां बसै हैं औढरनाथ ॥
कही हकीकत जाय गुरूसे ❋ जादू कियो मदन महिपाल ।
सब फौजैं बेहोश पड़ी हैं ❋ जतन बतावौ औढरनाथ ॥

राखकि चुटकी दई गुरूने ❁ चेला इक करि दीनो साथ ।
अब अमरा सागरको चलिभौ ❁ जादू पुड़िया लीन्ही साथ ॥
फेंक दई फौजोंके ऊपर ❁ सारे ज्वान मनुष हो जायँ ।
दूजी काटि दियो राजाने ❁ औ आगीको दियो बुझाय ।
आल्हा बोले तब राजासे ❁ सुनिये राव मदन महिपाल ॥
दगा करी तुम हमसे भारी ❁ ऐसे जादू किये अपार ।
जो हम अमराको नहिं लाते ❁ तौ तुम हमैं छोड़ते नाहिं ॥
जो हम तुमको ऐसो जनते ❁ तौ हम टीका लेते नाहिं ।
या कहलाते सारे लश्करको ❁ सागर करते पनियांढार ॥
बावनगढ़में तुम्हरो टीका ❁ याते कोइ कबूलो नाहिं ।
राजा मदन महीपति बोले ❁ सुनिये शूर उदयचँदराय ॥
विद्या हमने तुम्हें बताई ❁ जो कुछ विद्या थी हम पास ।
अपने मनमें बुरो न मानो ❁ तुम हो वीर उदयचँदराय ॥
गहनेको डिब्बा मँगवा दो ❁ अबहीं फेरे देयँ फिराय ।
ऊदल बोले प्रतिहारीसे ❁ जल्दी जाकर गहना लाव ॥
रसबेंदुलपै चढ़िकै अबहीं ❁ तुम तँबुवनमें पहुँचो जाय ।
फिरि जाना तुम सात समुन्दर ❁ पार उतरि महुबेमें जाय ॥
तब कासिद अवसार होयकै ❁ औ महुबेमें पहुँचो जाय ।
मल्हना बोली है धामनसे ❁ पूछन लगी कुशलकी बात ॥
हाल सुना दे तू सागरका ❁ औ बनाफरकी खुबी सुनाव ।
इतनी सुनिकै धामन बोलो ❁ क्षेम कुशल है सागर माहिं ॥
मैं डिब्बा लेने को आयो ❁ सो तुम रानी देहु गहाय ।
जब मैं पहुँचूँ गहना लैकै ❁ तब फेरे होवैं महरानि ॥
इतनी बात सुनी रानी ❁ डिब्बा तुरतै दियो गहाय ।
डिब्बा लेकर धामन पहुँचो ❁ औ दै दियो उदयचंदराय ॥

गहना पहुंचि गयो महलनमें ❀ चंपकलीको दौ पहराय।
न्हाय धोय दुलहिन भइ ठाढ़ी ❀ सो भौंरिनको भई तयार॥
दुलहिन दुलहा दोनों सजिगये ❀ मंडप तले दिये बैठाय।
सातौं फेरे भये खुशीसे ❀ औ सब भये मंगलाचार॥
डोलासजिगयोअबदुलहिनको ❀ औ इक दीनो उड़न विमान।
पार उतरिकै तुम समुद्रसे ❀ उल्टा भेजो यहां विमान॥
बैठि विमान उड़े सब बनफर ❀ तुरतै भये समुंदर पार।
आल्हा सुत जो बीर भयंकर ❀ ताको ब्याह कह्यो मैं गाय॥
आगे हीरासिंह समरको ❀ कहिहौं सुनिये चित्त लगाय।

इति सागरकी लड़ाई समाप्त

समुद्र किनारे हीरासिंहकी लड़ाई

★

मैं पग वन्दौं रामचन्द्रके ❀ औ लक्ष्मणके जोड़ौं हाथ।
सिया भवानीके चरणनमें ❀ राखौं सदा आपनो माथ॥
अंगदादि वानरगण राऊ ❀ वंदौं जाम्बवंत हनुमान।
वीर पंवारेको गावत हौं ❀ मेरे हीय विराजौ आय॥
पार उतरके तब सागरके ❀ माहिल मनमें करै विचार।
आल्हा ऊदल औ इन्दलको ❀ हीरासिंहसे दो मरवाय॥
नहीं फौज बनफरके संगमें ❀ केवल ज्वान लिये हैं साठ।
जो ह्यां बनाफर मारे जावें ❀ तो सब बीज नाश हो जाय॥
माहिल पहुंचो हीरासिंह पै ❀ औ सब कहकर हाल सुनाय।
परी ब्याहके बनफर लाये ❀ ऐसी नारी जगमें नाहिं॥
मारके छीन लेहु डोलेको ❀ माल खजाना लेहु लुटाय।
साठ ज्वान कुल इनके संगमें ❀ इक धावेमें देहु उड़ाय॥
इतनी बात सुनी माहिलकी ❀ राजाके मन गई समाय।
हुक्म देदियो तब लश्करमें ❀ जल्दी फौज होय तैयार॥
चंपकली इक नारि अप्सरा ❀ तिसको जल्दी लेव छिनाय।
त्यारी होगइ हीरासिंहकी ❀ औ बनफरसे लड़ने जायं॥
जितने हाथी हथिखानेमें ❀ हौदा एक संग पड़ जायं।
जितने घोड़े घुड़शालनमें ❀ काठी एक संग पड़ जायं॥
भर भर कौली हथियारनकी ❀ होदे बीच दई धरवाय।
जितनी फौजैं पैदल पल्टन ❀ इक घंटेमें भई तैयार॥
जितनी तोपैं तुपखानेमें ❀ सो सब आगे दईं जुताय।
हुक्म दे दियो हीरासिंहने ❀ मारके डोला लाव छिनाय॥
हीरासिंहने धामन भेजो ❀ सो ऊदनिसे कही सुनाय।
या तो डोला दौ रानीको ❀ नातर लड़ौ सामने आय॥
इतनी सुनिकै आल्हा ऊदनि ❀ मनमें गये सनाका खाय।
फौज नहीं है हमरे संगमें ❀ यह हो गये जुलमके ठाट॥
जो राजीसे डोला देदें ❀ तौ क्षत्रीपन धर्म नशाय।

जो अब उनते लड़ै सामने ❋ जिन्दा एक बचैगो नाहिं ॥
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❋ कर्म लिखा मिटता है नाहिं ।
साठ ज्वान जो संग तिन्होंके ❋ सबको दीनो हुक्म सुनाय ॥
जो मरि जावै तलवारनसे ❋ सूधी राह स्वर्गको जाय ।
जो मरि जैहौ खटिया परिकै ❋ ताके मांस चील्ह ना खाय ॥
जाकर युद्ध करो तुम ज्वानो ❋ रिपुकी कटा देउ करवाय ।
साठों ज्वान चले लड़नेको ❋ जैसे शेर चले घहराय ॥
छातीसे तौ छाती अड़गइ ❋ औ बज रही कठिन तलवार ।
सहस ज्वान जूझे हीराके ❋ इन साठोंमें बचो न एक ॥
चार बनाफर चार कहारा ❋ सो बच रहे खेतके माँहि ।
डोला घेर लियो रानीका ❋ चौतरफा रहि फौज डटाय ॥
रानी बोली डोले भीतर ❋ सुनौ बनाफर कान लगाय ।
तुम मत डरियो इन फौजनते ❋ अब्र मैं विद्या देउँ दिखाय ॥
जो मैं मदन महीपति पुत्री ❋ तौ नहिं जाऊंगी इन साथ ।
हीरासिंहसे कहा परीने ❋ तुम्हरी मति मारी भगवान ॥
यहु राजाके धर्म नहीं हैं ❋ जो मारगमें लूट मचाय ।
इतनी सुनिकै राजा बोले ❋ चम्पकली सुन मेरी बात ॥
बहुत राव मारे बनफरने ❋ अब ये जीवित जावैं नाहिं ।
अब तुम हमरे चलौ महलको ❋ पटरानी करि देउँ बिठाय ॥
इतनी बात सुनी रानीने ❋ नैना अग्निज्वाल हो जाय ।
मारी पुड़िया है जादूकी ❋ सारी फौज गिरी भहराय ॥
हीरा भागि गयो महलोंको ❋ सब मिटि गये जुलुमके ठाट ।
तीनि दिनाको जादू मारो ❋ चौथे दिवस चेत हो जाय ॥
आल्हा आय गये महुबेमें ❋ होने लगे मंगलाचार ।
ऐसे ब्याह भयो बेटेको ❋ सो हम लिखिकै दई सुनाय ॥
आगे इन्दल देवपालकी ❋ लिखौं लड़ाई सुनियो यार ।
समय पाइके आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ॥

इति हीरासिंहकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

अथ देवपालकी लड़ाई

★

बजी बँसुरिया बृन्दावनमें ❀ औ मधुवनमें कूके मोर ॥
सबै गोपियां उठिकै धाईं ❀ तब श्रीकृष्ण बजाई बैन ।
दौड़त आईं रास करन हित ❀ उलटे भूषण बसन बनाय ॥
निरखि श्यामघनवृक्ष ओटमें ❀ सबने किये प्राण बलिहार ।
सो छबि बसै हमारे नैनन ❀ बैनन कृष्ण कन्हैया नाम ॥
कुछइकयशवरणतवीरनको ❀ जो है मनदायक विश्राम ।
सागरसों विवाह करि आये ❀ औ यहँ हुए जुलुमके ठाट ॥
इंदल बोले शहजादीसे ❀ सुनिये रानी प्रेम कुँवारि ।
हम तो गैं सागर बरातमें ❀ प्यारी रही कुशलसे आप ॥
कौन रंजमें तुम बैठी हो ❀ सो जियरेका भेद बताउ ।
प्रेमा बोली तब बालम से ❀ राजा सुनो हमारी बात ॥
आप गये थे बरात करने ❀ पीछे भये जुलुमके ठाट ।
देव पालने दूती भेजी ❀ औ यह बात कही समुझाय ॥
बनाफर जीते नहिं आवेंगे ❀ सो तुम आवो हमारे पास ।
इतनी सुनिकै इंदलजरिगयो ❀ नैना अग्निज्वाल हो जायँ ॥
मैं धरि मारूँ देव पालको ❀ मुँहमें ठांसि देउँ तलवार ।
जो इंदल है नाम हमारो ❀ तो हम ताको करौं हलाल ॥
जबलौं शीशकाटि ना लाऊँ ❀ घरमें भोजन जहर समान ।
चाचा चाचा कहि ललकारो ❀ चाचा सुनो उदयसिंहराय ॥
जुलम कियो है देवपालने ❀ औ सब हाल सुनो चितलाय ।
पीछे ह्यांपर देवपालने ❀ खोटे वचन कहे हैं आय ॥
इतनीसुनिकै ऊदनिजरिगयो ❀ औ फौजनको हुक्म सुनाय ।
देवगढ़ीकी त्यारी कर दो ❀ जहँपर बसे देव महिपाल ॥
जितनी पल्टन और रिसाले ❀ सबको करौ जल्द तैयार ।

ज्वानन ज्वाननको ललकारो ❋ अबहीं सजिकै होउ तयार ॥
चलिकै जलदी देवगढ़ीपर ❋ देवपालका कर दो नाश ।
जितने हाथी हथिखानेमें ❋ हौदा एक साथ खिचजायँ ॥
जितनी तोपैं तुपखानेमें ❋ सो चरखिनपर दई चढ़ाय ।
दोइ घड़ीको अरसा गुजरो ❋ देव गढ़ीको घेरो जाय ॥
देवपाल सोचै मनमाहीं ❋ औ लड़नेको करै समान ।
देवपालने चिट्ठी लिखिकै ❋ औ धावनको दियो पकराय ॥
ऐसो हाल लिखी चिठियामें ❋ इन्दल सुनियो वचन हमार ।
अपनी हमरी फौज कटानी ❋ ऐसा क्यों करते संग्राम ॥
जौ तुम बेटा हौ क्षत्रीके ❋ खांडा लेकर सन्मुख आव ।
फौजकटा मत अब करवावो ❋ हमरे तुमरे हों दो हाथ ॥
इतनी सुनिकै इँदल बाँकुड़ा ❋ सन्मुख आय डटो मैदान ।
डटिकै शेरनकीसी जोड़ी ❋ करमें लइ ढाल तलवार ॥
देवपालने इक इक खांड़े ❋ इन्दल ऊपर दिये झुकाय ।
बड़ो लड़ैया इंदल बाघा ❋ तुरतै लीन्हीं चोट बचाय ॥
कुस्तमकुस्ता दोनों होगये ❋ लाखोंमानुष खड़े तिहिकाल ।
तीन पहर तक लड़े शूरमा ❋ इंदल बहुत गये घबराय ॥
देवपाल बलमें था ज्यादा ❋ पर इंदल था पट्टेबाज ।
एक हाथ मारा इंदलने ❋ देवपालका शिर कटजाय ॥
ऐसे मारो देवपालको ❋ मरदो सुनियो कान लगाय ।
जियकीजरनि मिटी प्रेमाकी ❋ अपने दुस्मनको मरवाय ॥
इहौ लड़ाई पाछे परिगइ ❋ आगे सुनिये कान लगाय ।
बेला रानीके गौनेकी ❋ गाथा कहौं सुनो चितलाय ॥
समय पायके आल्हागावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति देवपालकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

बेलाके गौनंकी पहिली लड़ाई

★

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

सवैया

कैटभसे नरकासुरसे अरु भीषण द्रोण महायश खेवा ।
बालि बली बलि बाण दधीचि ययाति दिलीपहुसे बलसेवा ॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महा बलवान सुदेवा ।
अन्तसमय उबरे न कोऊ क्षणमाहिं भये सब कालकलेवा ॥२॥

सुमिरण करिकै रामचन्द्रको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ।
गौना बेलाको भाषत हौं ❀ यारो सुनौ छोड़ि सब काम ॥
सुमिरण करियेसब दुष्टनको ❀ जिनको नाम प्रगट संसार ।
हिरण्याक्ष हिरणा कुश ह्वइगे ❀ सतयुग माहिं शूर सरदार ॥
त्रेतामें रावण दशकंन्धर ❀ लड़िकै वंशनाश करि दीन ।
मुख नहिं मोरचो रणसमुहेते ❀ रघुवर किये प्राणते हीन ॥
द्वापर प्रगट भयो कंसासुर ❀ मारचौ ताहि कृष्ण भगवान ।
कलियुग प्रगटे माहिलराजा ❀ जाने क्षत्री कियो निदान ॥
चुगुली करि करि युद्ध करायो ❀ लड़ि लड़ि मरे शूरशिरताज ।
वीर हीन भारत गारत भयो ❀ बिगड़े सबै राजके काज ॥
भारत युद्ध कियो दुर्योधन ❀ सोई पृथीराज भै आय ।
क्यों ना करते युद्ध बाद सो ❀ माहिल दीन्ही बुद्धि फिराय ॥
बेटी ब्याही जब ब्रह्मासँग ❀ तब क्यों कियो युद्धसामान ।
आल्हाऊदनि लाखनि सैयद ❀ होते मित्र बीर मलिखान ॥
होत यवनराज नाही यहँ ❀ मिलतो नाहिं कष्ट संसार ।
क्षत्री उपजैं ना आल्हासे ❀ ना फिरि तपै चन्द्र सरदार ॥

लगी कचरी परिमालैकी ❋ अजगर लागि रहो दरबार।
बड़े बड़े जोधा बँगला बैठे ❋ बैठे बड़े बड़े सरदार॥
लाखनि राना मीरा सैयद ❋ आल्हा और उदय सिंहराय।
ढेबा इन्दल ब्रह्मा बैठे ❋ बैठे उरईके परिहार॥
माहिल बैठे थे समुहे पर ❋ सो राजासे लगे बतान।
लरिका आये अब तुम्हरे घर ❋ आये आज कंनौजी राय॥
ऐसो समय फेरि मिलिहै ना ❋ गौनेको बीरा देउ धराय।
इतनी सुनतै परिमालैने ❋ सोने कलशा लिये मँगाय॥
बीरा लैकै पांच पानको ❋ सो कलशापर दियो धराय।
है कोउ क्षत्री या बँगलामें ❋ जो गौने पर पानचबाय॥
भरी कचहरी क्षत्री बैठे ❋ सुनिकै गये सनाका खाय।
कोऊ चलि भयो दहिने बायें ❋ कोऊ करन गयो अस्नान॥
कोऊ निहारै आसमानको ❋ काहू लिन्हों शीश लचाय।
कोउ न देखै वा बीराको ❋ नाहिं मसातलक मन्नाय॥
तड़पिकै ऊदनिगै कलशापर ❋ औ बीराको लिये उठाय।
गौनो लैहैं हम ब्रह्माको ❋ हमहीं बीरा लिहैं चबाय॥
यह सुनिउठिकैमाहिलराजा ❋ ब्रह्मानँदसे लगे बतान।
संगमें जैहैं आल्हा ऊदनि ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं।
बीरा छीनि लेउ ऊदनिते ❋ औ गौनेको होउ तयार॥
साथ तुम्हारे चलि दिल्लीको ❋ तुरतै गौना दिहैं कराय।
बात मानिकै तब माहिलकी ❋ ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय॥
कायल आल्हा बहुतैं ह्वइगै ❋ ऊदनि मनमें गये लजाय।

१–रतीभानके पुत्र 'लाखनिराना' आल्हा, ऊदलके संग आये थे और नदियावित-वैपर लड़ाई कर पृथीराजको परास्त करके कुछ दिन महोबेमें निवासकर कन्नौजको वापस चले गये हैं। फिर अमरगढ़में अपना विवाह करनेके बाद आल्हाके बुलाने पर महोबे आगये हैं।

दोनों भैया उठि ठाढ़ेभै ❀ दशपुरवामें पहुँचे जाय ॥
आल्हा बोले तब ऊदनिते ❀ तुम सुनि लेउ लहुरवा भाय ।
बीरा छीनि लियो मजलिसमें ❀ हमरी दीन्ही हँसी कराय ॥
घटिया राजा परिमाले है ❀ कायल कियो हमहिं बुलवाय ।
हम नहिं आवत थे कनउजते ❀ तुम ना मानी बात हमारि ॥
लगौ महीना जब अगहनको ❀ आये दिन गौनवां क्यार ।
करी तयारी ब्रह्मानन्दने ❀ तुरत नगरची लियो बुलाय ॥
डंका बाजै हमरे दलमें ❀ सिगरी फौज होय तैयार ।
बजो नगारा हमरे दलमें ❀ क्षत्री सजिकै भये तयार ॥
सोचन लागीं रानी मल्हना ❀ अकिले ब्रह्मा भये तयार ।
आल्हा ऊदनि जो जैहैं ना ❀ मारो जैहै पुत्र हमार ॥
सोचि समुझिकै रानी मल्हना ❀ इक हरकारा लियो बुलाय ।
सो पठवाय दियो लाखनिपै ❀ औ लाखनिको लियो बुलाय ॥
देखी सूरत तब लाखनिकी ❀ मल्हना रोय उठी तत्काल ।
बोले लाखनि तब मल्हनाते ❀ माता हाल देउ बतलाय ॥
कौन बातको तुम रोई हो ❀ सो सब हमते कहो सुनाय ।
बोली मल्हना तब लाखनिते ❀ बेटा सुनौ कनौजी राय ॥
आल्हा ऊदनि रूठि गये हैं ❀ सो ना मनिहैं कही हमारि ।
कौनसो जोधा है धरती पर ❀ जो पिरथीसे माड़ै रारि ॥
लाखनि बोले तब मल्हनासे ❀ धीरज धरौ मल्हनदे माय ।
मोहरा मरिहैं हम पिरथीको ❀ तुरतै बिदा लिहै करवाय ॥
यह कहि चलिभै लाखनिराना ❀ अपने दलमें पहुँचे जाय ।
हुक्म दै दियो तब लश्करमें ❀ हमरी फौज होय तैयार ॥
डङ्का बाजो तब लाखनिको ❀ क्षत्री होन लगे तैयार ।
सुनी खबरि जब बघ ऊदनिने ❀ तब लाखनिपै पहुँचे जाय ॥
करी बन्दगी उन लाखनिको ❀ पूछन लगे उदयसिंह राय ।

कहांकि त्यारी दादा कीन्ही ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ मल्हना रानी हमहिं बुलाय ।
रोवन लागी हमरे आगे ❋ औ गौनेको कहो हवाल ॥
आल्हा ऊदनि हमसे रूठे ❋ को अब गौना देय कराय ।
तब हम त्यार भये ब्रह्मासंग ❋ उनको गौना देहैं कराय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ तुम तौ साथी अहौ हमार ।
अकिले जावौ ना ब्रह्मासंग ❋ घटिया वंश चंदेले क्यार ॥
काम तुम्हारो ना जैबेको ❋ सो तुम मानौ कही हमार ।
कही हमारी जो मनिहौ ना ❋ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
बोले सैयद तब लाखनिते ❋ बेटा छोरि धरो हथियार ।
दूजी करौ नहीं ऊदनि संग ❋ नहिं कछु काम बनैगो नाह ॥
इतनी सुनतै लाखनि राना ❋ सबकी कमरैं दई खुलाय ।
त्यारी कीन्ही तब ब्रह्माने ❋ अपनो लश्कर संग लिवाय ॥
बड़े बड़े योधा लिये साथमें ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ।
संगै चलिभै माहिल राजा ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ॥
डेरा डारि दियो धूरेपर ❋ अपने तम्बू दिये लगाय ।
फेटैं छुटिगइँ रजपूतनकी ❋ सब क्षत्रिनने कियो मुकाम ॥
जीन उतारि दिये घोड़नके ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ।
चलिभै माहिल तब लश्करसे ❋ पहुँचे जहां राज दरबार ॥
करी बन्दगी पृथीराजकी ❋ माहिल हाथ जोरि रहिजायँ ।
नजरि बदलगइ महाराजकी ❋ ऊंची चौकी दई डराय ॥
आवो बैठो उरईवाले ❋ अपनो हाल देउ बतलाय ।
बोले माहिल तब राजाते ❋ बैठे राज्य करौ महराज ॥
आये ब्रह्मा हैं गौनेको ❋ अपना लश्कर साथ लिवाय ।
बीरा धरो गयो गौनेको ❋ सो ऊदनिने लियो उठाय ॥
हमने कहिकै तब ब्रह्माते ❋ वा बीरा को लौ छिनवाय ।

करी तयारी थी लाखनिने ❋ सो ऊदनिने लियो रोकाय ॥
अकिले आये हैं ब्रह्मानंद ❋ डोला लेन बिलमदे क्यार ।
मनहिं तुम्हारे जैसी आवै ❋ तैसी करौ बीर चौहान ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ माहिल सुनौ हमारी बात ।
गौना देहैं हम पाछेको ❋ पहिले करिहैं युद्ध अघाय ॥
अपनो क्षत्रीपन दिखलावौ ❋ यह ब्रह्माको देउ सुनाय ।
इतनी सुनिकै माहिल चलिभे ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचे आय ॥
बोले माहिल ब्रह्मानंदते ❋ यह कह दई पिथौरा राय ।
गौना देहैं हम पीछेको ❋ पहिले करिहैं युद्ध अघाय ॥
करैं तयारी वे लड़िबेकी ❋ औ क्षत्रीपन देयँ दिखाय ।
बिना लड़े गौना मिलिहैं ना ❋ सो तुम जान लेउ मनमाहिं ॥
होय न इच्छा जो लड़िबेकी ❋ तौ तुम कूच जाउ करवाय ।
पै इक मानौं सीख हमारी ❋ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ॥
लौटि जो जैहौ तुम गौने बिन ❋ तुमको हँसिहै सकल जहान ।
आल्हा ऊदनि हँसि हँसि कहिहैं ❋ क्यों नहिं लाये गौन कराय ॥
ताते त्यार होउ लड़िबेको ❋ रक्षा करैं शारदा माय ।
इतनी सुनतै ब्रह्मानंदने ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लैकै कागद कलपीवालो ❋ चिट्ठी लिखी आपने हाथ ।
सिद्धि श्रीनारायण लिखिकै ❋ ता पाछेते लिखी जोहार ॥
लिखी हकीकत फिरि गौनेको ❋ पढ़ियो याहि पिथौरा राय ।
लेन गौनवां हम आये हैं ❋ सो तुम बिदा देउ करवाय ॥
कही हमारी जौ मनिहौ ना ❋ तौ हम कटा दिहैं करवाय ।
बिदा करैहैं रनि बेलाकी ❋ ताते बिदा देउ करवाय ॥
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❋ चाहे प्राण रहैं की जायँ ।
यहि विधि चिट्ठी लिखि ब्रह्माने ❋ हरकाराको दइ पकराय ॥
चलो सांड़िया तब लश्करते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचो जाय ।
धावन उतरि परो जल्दीते ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ॥

करी बन्दगी पृथीराजको ❀ पाती गही दई चलाय ।
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❀ तुरते पाती लई उठाय ॥
पाती पढ़िके महाराजने ❀ ताहर बेटा लियो बुलाय ।
चौंड़ा धांधूको बुलवायो ❀ गोपी बेटा लियो बुलाय ॥
औ बुलवायो टोंडरमलको ❀ सबते कही बीर चौहान ।
लश्कर सजवावौ जल्दीते ❀ औ धूरे पर पहुँचौ जाय ॥
ब्रह्मा आये हैं गौनको ❀ सो तुम कटा देउ करवाय ।
बांधिके लावौ ब्रह्मानंदको ❀ अब ना राखौ देर लगाय ॥
इतनी सुनते ताहर चलि भये ❀ औ लश्करमें पहुँचो जाय ।
तुरत नगरचीको बुलवायो ❀ सोने कड़ा दियो डरवाय ॥
बजे नगारा हमरे दलमें ❀ लश्कर सजिके होय तयार ।
डंका बाजो तब लश्करमें ❀ क्षत्री सजन लगे तत्काल ॥
पहिले डंकामें जिनबन्दी ❀ दुसरे बांध लियो तलवार ।
तिसरे डंकाके बाजत खन ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ॥
हाथी चढ़ैया हाथिन चढ़िगे ❀ बांके घोड़न के असवार ।
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो आगेको दई जुताय ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो ❀ तापर ताहर भये सवार ।
सब्जा घोड़ा त्यार करायो ❀ तापर गोपी भयो सवार ॥
टोंडरमल चढ़िगे सुर्खापर ❀ हाथी सजा चौंड़िया क्यार ।
भौरानंद हाथी सजवायो ❀ तापर धांधू भये सवार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर ❀ सिगरे क्षत्री भये सवार ।
कूच कराय दियो लश्करको ❀ मारू डंका दियो बजाय ॥
चारि घरीके तब अरसामें ❀ पहुँचे रणखेतनमें जाय ।
खबरि सुनी जब ब्रह्मानंदने ❀ आई फौज पिथौरा क्यार ॥
हुक्म दै दियो तब जल्दीते ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ।
बजो नगारा तब लश्करमें ❀ क्षत्री सजिके भये तयार ॥
बड़ि बड़ि तोपैं अष्टधातुकी ❀ सो मुर्चा पर दई लगाय ।

लश्कर त्यार भयो ब्रह्माको ❋ औ मुर्चा पर पहुँचे जाय ॥
चढ़ि हरनागर पर ब्रह्मानँद ❋ पहुँचे समरभूमिमें जाय ।
ताहर घोड़ा दाबे आये ❋ औ ब्रह्मापै पहुँचे जाय ॥
बोले ताहर ब्रह्मानंदते ❋ काहे धुरो दबायो आय ।
गरुई गाजैं है दिल्लीकी ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
यह सुनि ब्रह्मानँद बोले तब ❋ बहिन कि विदा देउ करवाय ।
बिदा कराये बिन जैहैं ना ❋ चाहे प्राण रहै की जाय ॥
गुस्सा ह्वइकै तब ताहरने ❋ तुरतै हुक्म दियो करवाय ।
बत्ती दै देउ सब तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❋ तुरतै आगी दई लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुँवना रह्यो सरगमें छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ सरसर परी तीरकी मार ।
बान अगनियाँ छूटन लागे ❋ गोली मघाबूँद झरिलागि ॥
गोला ओलाके सम बरसै ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय ।
गोला लागैं ज्यहि घोड़ाके ❋ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ॥
लागै गोला जौने ऊँटके ❋ सो गिरि परै चकत्ता खाय ।
गोला लागे ज्यहि घोड़ाके ❋ चारों पायँ देय फैलाय ॥
लागे गोला ज्यहि क्षत्रीके ❋ सो गिरिपरै धरनि भहराय ।
छोटी गोली ज्यहिके लागै ❋ मानौ गिरह कबूतर खाय ॥
गोलाजँजिरहा ज्यहिकेलागै ❋ तुरतै हाड़ मांस छुटिजाय ।
बानको डंडा ज्यहिके लागै ❋ ताके दुइखण्डा ह्वइ जायँ ॥
चारि घरी भरि गोलाबरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइ जायँ ।
बन्द लड़ाई करि तोपनकी ❋ ज्वानन खैंचि लई तलवार ॥
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❋ रहि गयो तीन कदम मैदान ।
उठी शिरोही तब क्षत्रिनकी ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
चलै जुनब्बी औ अहिगवीं ❋ ऊना चलै बिलायत क्यार ।
तेगा चटकैं बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥

झुके सिपाही महुबेवाले ❀ दोनों हाथ करैं तलवारि ।
पैग पैग पर पैदल गिरिगै ❀ उनके दुइदुइ पैग असवार ॥
बिसे बिसे पर हाथी डारे ❀ छोटे पर्वतकी उनहार ।
सवा पहर भरि चली शिरोही ❀ धूरे बही रक्तकी धार ॥
डारे घैरा रणमें लोटैं ❀ जिनके प्यास प्यास रटि लागि ।
पगिया डारी जो लोहूमें ❀ मानो कमलफूल उतरायँ ॥
डारी ढालैं जे लोहूमें ❀ मानो कछुवासी उतरायँ ।
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ॥
देखि हाल यह गोपी बढ़िगे ❀ औ ब्रह्मते लगे बतान ।
सम्हरो ब्रह्मा तुम घोड़ा पर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ब्रह्माने ❀ औ गोपीते कही सुनाय ।
पहिली चोट करौ अपनी तुम ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ॥
इतनी सुनतै गोपी बढ़िगे ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
चोट चलाई ब्रह्मानँदपर ❀ बायें उठी गैंड़की ढाल ॥
तीनि शिरोही गोपी मारी ❀ ब्रह्मा लीन्ही चोट बचाय ।
तब ललकारो ब्रह्मानँदने ❀ अब तुम खबरदार ह्वइजाउ ॥
खैंचि शिरोही ब्रह्मा मारी ❀ गोपी दीन्ही ढाल अड़ाय ।
ढाल फटिगइ गैंड़ावाली ❀ गद्दी कटि मखमलकी जाय ॥
छूटि जनेवा गौ गोपीको ❀ गोपी जूझि गये मैदान ।
यह गति देखी जब टोंडरमल ❀ तब ब्रह्माको दई ललकार ॥
खैंचि शिरोही टोंडरमलने ❀ ब्रह्मानँद पर दई चलाय ।
चोट बचाई ब्रह्मानँदने ❀ अपनी दीन्ही ढाल अड़ाय ॥
टूटि शिरोही गइ टोंडरकी ❀ टोंडर सोचि सोचि रहिजाय ।
तब ललकार दई ब्रह्मानँद ❀ अपनो दीन्ही गुर्ज चलाय ॥
गुर्जके लागत टोंडर जूझे ❀ ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ।
लाश उठाय लई दोनोंकी ❀ सो दिल्लीको दई पठाय ॥
घोड़ा बढ़ायो ताहर ठाकुर ❀ औ ब्रह्मते कही सुनाय ।

सम्हरिकै बैठो तुम घोड़ापर ❀ तुम्हरो काल पहूँचो आय ॥
चोट आपनी ब्रह्मा करिलेउ ❀ नाहीं स्वर्ग बैठि पछताउ ।
बोले ब्रह्मा तब ताहरते ❀ हमरे वचन करो परमान ॥
पहिलि उचौनी हम ना खेलैं ❀ ना तिरियापर डारैं हाथ ।
भगे सिपाहीको मारैं ना ❀ ना हम धरैं पिछारी पांव ॥
चोट आपनी ताहर करिलेउ ❀ मनके मेटि लेउ अरमान ।
इतनी सुनि ताहर गुस्सा ह्वै ❀ अपनी लई शिरोही काढ़ि ॥
चोट चलाई ब्रह्मानंदपर ❀ ब्रह्मा दीन्ही ढाल अड़ाय ।
सात शिरोही ताहर मारी ❀ ब्रह्मा लेगे चोट बचाय ॥
सोचे ताहर अपने मनमें ❀ यहु ब्रह्मा है बुरी बलाय ।
सांग उठाई फिर ताहरने ❀ सो ब्रह्मापर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ब्रह्माने ❀ ताहर दीन्ही गुर्ज चलाय ।
हटि गयो घोड़ा ब्रह्मानंदको ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
बोले ब्रह्मानंद ताहरसे ❀ अब तुम खबरदार ह्वैजाउ ।
गुर्ज उठायो ब्रह्मानंदने ❀ सो ताहरपर दियो चलाय ॥
लगो चपेटा जब घोड़ाके ❀ ताहर घोड़ा गये भगाय ।
यह गति देखी जब चौंड़ाने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
आगे बढ़ि ब्रह्मै ललकारो ❀ अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ।
बांयते घोड़ा दहिने ह्वइगौ ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय ॥
सांग उठाई तब ब्रह्माने ❀ सो हाथीपर दियो चलाय ।
हाथी हटि गयो तब चौंड़ाको ❀ मुर्छा फिरो चौंड़िया क्यार ॥
मुर्छा हटि गयो तब चौंड़ाको ❀ धांधू हाथी दियो बढ़ाय ।
धांधू आये जब सम्मुहे पर ❀ तब ब्रह्माने कही सुनाय ॥
भैया हमरे तुम लागत हो ❀ पै जो लड़ो हमारे साथ ।
तौ तुम अपने बलपौरुष भरि ❀ लड़िकै मेटि लेउ अरमान ॥
काल समान देखि ब्रह्माको ❀ धांधू तुरतै लगे बतान ।
लागि हमारी कछु नाहीं है ❀ खायो नमक पिथौरा क्यार ॥

खैंचि शिरोही लइ इतना कहि ❋ सो ब्रह्मापर दई चलाय ।
भागो हाथी तब धांधूको ❋ ब्रह्मा डंका दियो बजाय ॥
तापर चौंड़ा धांधू ठाकुर ❋ सब मुर्चाते गये बराय ।
फौज भागि गइ पृथीराजकी ❋ ताहर तहां पहूँचे जाय ॥
जहां कचहरी पृथीराजकी ❋ ताहर तहां पहूँचे जाय ।
हाल सुनायो सब ब्रह्माको ❋ औ लश्करको कह्यो हवाल ॥
लड़े न जितिहैं हम ब्रह्माते ❋ है जो रणमें काल समान ।
गोपी टोंडरको हति डारो ❋ लश्कर काटि कियो खरिहान ॥
मारि भगायो हम सबहीको ❋ सो तुम समुझि लेउ महराज ।
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❋ हमरो वंश नाश करि दीन ॥
कौन उपाय करैं ब्रह्मा संग ❋ यह सुनि माहिल कही सुनाय ।
जीति न पैहो तुम ब्रह्माको ❋ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
सीख हमारी राजा मानो ❋ तौ हम जतन देय बतलाय ।
भेष जनाना ताहर धरिलेयँ ❋ औ डोलीमें होय सवार ॥
भेजो डोली सो ब्रह्मा पै ❋ औ यह कहिकै देउ पठाय ।
डोला भेजो हम बेटीको ❋ सो तुम लेउ चँदेले राय ॥
गाफिल करिकै ब्रह्मानंदको ❋ तुरतै लेउ जंजीरन बांधि ।
लायकै दिल्लीके खंदकमें ❋ ब्रह्मानंदहि देउ डराय ॥
यह उपाय मैंने सोचा है ❋ सोई करो बीर चौहान ।
उड़न बछेड़ा है ब्रह्माको ❋ ताते और न चलै उपाय ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ हम ना धरैं जनानो भेष ।
धर्म क्षत्रियनको नाहीं यह ❋ जो क्षत्रियपन देयँ नशाय ॥
चौंड़ा बोला तब जल्दीसे ❋ हम धरि लिहै जनानो भेष ।
जायकै मरिहै हम ब्रह्माको ❋ सिगरो झगड़ा दिहैं मिटाय ॥
यह कहिचलिभयोचौंड़ाब्राह्मण ❋ औ महलनमें पहुँचो जाय ।
भेष जनानो धरो तहां तब ❋ पायँ महाउर लियो लगाय ॥

गहनो पहिरि लियो तिरियनकी ❀ घूँघट हाथ भरेको काढ़ि ।
जहर बुझाई कटारीको ❀ सो कमरमें लई छिपाय ॥
पलकी मंगवाई जलदीते ❀ तापर चौंड़ा भयो सवार ।
चली पालकी चौंड़ावाली ❀ हुकमत चलिभे आठ कहार ॥
संगे ताहर है घोड़ापर ❀ लीन्हे साथ बीस सरदार ।
इक हरकाराको भेजो तब ❀ औ यह ताहर कही सुनाय ॥
खबरि सुनावौ तुम ब्रह्माको ❀ डोला भेजि दियो महराज ।
ताहर आवत हैं डोला संग ❀ आगे हमको दियो पठाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बहुत खुशी भै ❀ अपनो घोड़ा लियो सजाय ।
तुरत सवार भये घोड़ापर ❀ तौलौं डोला परो दिखाय ॥
बीस कदम जब ब्रह्मा रहिगे ❀ ताहर झुकिकै करी सलाम ।
बोले ताहर ब्रह्मानंदते ❀ डोला भेजि दियो महराज ॥
बात तुम्हारी राजा मानी ❀ अब तुम बिदा जाउ करवाय ।
साची मानि लई ब्रह्मा तब ❀ घोड़ेते उतरि परो अरगाय ॥
देखो दुचिता जब ब्रह्माको ❀ हाथमें लई कटारी जाय ।
उतरो चौंड़ा तब पलकीते ❀ बायें हनी कटारी जाय ॥
तुरत समाय गई हिरदैमें ❀ मूर्च्छित भये चंदेले राय ।
तीर खैंचि फिरि ताहर मारो ❀ सो माथेमें गयो समाय ॥
सांग उठाई फिर ताहरने ❀ सो दहिने पर दियो चलाय ।
घाव तीन लागे ब्रह्माके ❀ तौलौं धांधू पहुँचे आय ॥
हाल देखिकै ब्रह्मानंदको ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ।
बोले धांधू तब ताहरते ❀ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं ॥
धोखा देकै तुमने मारो ❀ नहिं यह धर्म क्षत्रियन क्यार ।
लानति ऐसी रजपूतीपर ❀ तेगा बँधिबेको धिक्कार ॥
भागि गये थे तुम समुहेते ❀ अब क्या कियो मर्दको काम ।
ब्याह कियो थे जब ब्रह्माते ❀ तब कहँ गई रहै तलवारि ॥

रांड करि दियो तुम बहिनीको ❋ अब नियरानो काल तुम्हार।
भेष जनानो चौंड़ा धरिकै ❋ धोखेते हनि दई कटार॥
करी मर्दुमी ना चौंड़ाने ❋ याके जीवनको धिक्कार।
दिया बुझाय गयो महुबेको ❋ अब ना बचैं पिथौरा राय॥
अब चढ़ि ऐहैं आल्हा ऊदनि ❋ मरिहै बीनि बीनि सरदार।
बचिहै कोऊ नहिं दिल्लीमें ❋ हमरे वचन करौ परमाण॥
सुने वचन जब यह धांधूके ❋ ताहर लीन्हों मूँड लचाय।
मन घबराय गयो चौंड़ा तब ❋ सब दिल्लीमें पहुँचे जाय॥
देखो मूर्छित ब्रह्मानंदको ❋ जगनिक तँबुवा गये लिवाय।
जागी मूर्छा जब ब्रह्माकी ❋ तब जगनिकते लगे बतान॥
हम न जैहैं जब महुबेको ❋ तुम हरकारा देउ पठाय।
तब जगनिकने हरकाराको ❋ गढ़ महुबेमें दियो पठाय॥
घाव सिलाय दिये ब्रह्माके ❋ मलहम पट्टी दई लगाय।
ताहर चौंड़ा धांधू पहुँचे ❋ जहँ दरबार पिथौरा क्यार॥
बोले धांधू पृथ्वीराजसे ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं।
समुहे जीते ना ब्रह्माते ❋ तब धोखेते दियो मराय॥
बेटी ब्याही जब ब्रह्माको ❋ तब क्यों करी निरासिनि रांड।
काम मर्दको है नाहिं यहु ❋ ना यहु धर्म क्षत्रियन क्यार॥
ऐसे महाबीर ब्रह्माको ❋ बिन अपराध कियो संहार।
दिया बुझाय दियो महुबेको ❋ अपनो कियो सुयशको नाश॥
ऐसेइ मारो तुम मलिखेको ❋ जग बदनामी भई तुम्हारि।
काल बुलाय लियो सबको तुम ❋ सांची मानौ बात हमारि॥
भई खबरि जब रंगमहलमें ❋ ब्रह्महि हनो चौड़िया राय।
रोवन लागी अगमा रानी ❋ चौंड़ा तेरो बुरो ह्वइ जाय॥
भेष जनानो करिकै मारो ❋ तेरे जीवनको धिक्कार।
गौन भयो नहिं मेरि बेटीको ❋ तू करि दियो निरासिनि रांड़॥

सुनी खबरि जब रनि बेलाने ❋ तुरतै अग्निज्वाल ह्वइजाय ।
भूषणवसनत्यागि जौंहरकरि ❋ बेला करन लागि अपघात ॥
महल दूसरेमें बेलागइ ❋ रोवन लागी जार बेजार ।
जो हरकारा गयो महुबेमें ❋ मल्हने खबरि सुनाई जाय ॥
दिल्ली जूझे पुत्र तुम्हारे ❋ सुनिकै रोय उठी महरानि ।
खबरि सुनतही परले ह्वइगई ❋ हाहाकार परो रनिवास ॥
हाय हाय करि मल्हना रोवै ❋ औ सब रोय रोय रहिजायँ ।
सुनी खबरि जब चन्देलेने ❋ रोवन लगे रजा परिमाल ॥
रैयति रोवै गढ़ महुबेकी ❋ कोऊ रधा भात ना खाय ।
खबरि फैलि गइ दशपुरवामें ❋ जूझे ब्रह्मा राजकुमार ॥
सिगरी रैयति रोवन लागी ❋ हा दैया गति कही न जाय ।
देवै सुनवा फुलवा रानी ❋ सबने छांडि दई डिडकार ॥
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ मारे गये चँदेले राय ।
अगमा रानी बेला जाई ❋ त्यहि करिदई वंशकी हानि ॥
दिया बुझाय दियो महुबेको ❋ मरियो पुत्र पिथौराक्यार ।
होय निपूती अगमा रानी ❋ जैसे भई मल्हनदे रानि ॥
माहिल राजा तुम मरिजैयो ❋ औ उरई पर परियो गाज ।
साथ लै गये छलि ब्रह्माको ❋ औ धोखेते दियो मराय ॥
सुनो हाल आल्हाऊदनि जब ❋ भुईमें गिरे तड़ाका खाय ।
रोवन लागे दोनों भैया ❋ नैनन बहैं नीरकी धार ॥
रो रो बोले बघ ऊदनि तब ❋ सूनो ह्वइगयो नगर महोब ।
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ कैसे बचैं चन्देले राय ॥
भैया ब्रह्मा अब कहँ मिलिहैं ❋ करिहै अब हम कौन उपाय ।
धीरज धरि तब आल्हा बोले ❋ भैया सुनो हमारी बात ॥
मीच पराई कोऊ मरैं ना ❋ सब कोऊ मरैं आपनी मीच ।
जो कछुकर्म लिखे विधिनाने ❋ ताको कोउ मिटैया नाहिं ॥

काल आय गयौ ब्रह्मानँदको ❋ तब उन बीरा लियो छँड़ाय ।
अकिले चढ़िगै गढ़दिल्लीको ❋ घटिहा वंश पिथौरा क्यार ॥
जैसेई मारा था मलिखेको ❋ सो गति करी चंदेले क्यार ।
उन्हैं मुनासिब यह नाहीं थी ❋ जो घटि करी चंदेले साथ ॥
घटिहा राजा दिल्लीवाला ❋ घटिहा वंश पिथौरा क्यार ।
पहिलि लड़ाई यहु पूरी भइ ❋ आगे दुसरी दिहैं सुनाय ॥
आल्हा गावो वर्षाऋतुमें ❋ नित उठि नाम लेउ भगवान ।
भोलानाथ मनाव हियेमहं ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति बेलाके गौनेकी पहिली लड़ाई समाप्त

श्रीः

बेलाके गौनेकी दूसरी लड़ाई

★

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कुण्डलिया

सबकी बाजी लगि रही, धर्मराजसों जान।
लैकै फांसी हाथमें, यम घोटैंगे प्रान ॥
यम घोटैंगे प्रान जानि मन क्यों भरमावै।
मातु पिता सुत नारि बन्धु कोउ काम न आवै ॥
नारायण धरु ध्यान बंध्यो यमपुरको जावै।
तब रोवै पछिताय नहीं कछु पार बसावै ॥ २ ॥

सवैया

ज्ञान घटै खल संगतिते, अरु रोष घटै मनके समुझाये।
पाप घटै कछु पुण्य किये, अरु रोग घटै कछु औषधि खाये ॥
प्रीति घटै नित मांगनते, अरु नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये।
नारि प्रसंगते जोर घटै, यमत्रास घटै हरिके गुन गाये ॥ ३ ॥

सुमिरन करिकै नारायणको ❀ औ गणपतिके चरण मनाय।
दुसरि लड़ाई अब गौनेकी ❀ सो हम लिखिकै दिहैं सुनाय ॥
भुइँया गैये यहि खेरेकी ❀ माता भूलौं नाम तुम्हार।
तुम्हरे अखाड़ेमें गावत हौं ❀ बेड़ा खेय लगैयो पार ॥
जो जो अक्षर माता भूलौं ❀ सो सब कंठ बैठि कहि जाउ।
शरण तुम्हारीमें आया हौं ❀ भूले अक्षर देउ बताय ॥
परति बिपति जगमें सबहीको ❀ यारो बिपति धाम संसार।
इकदिन बिपति परी शंकरपर ❀ जब भस्मासुर परो पिछार ॥
इक दिन परिगै रामचन्द्रपर ❀ वनमें हरी निशाचर नारि।

सोइ दिन परिगयो चन्देलेपर ❋ जूझे ब्रह्मा राजकुमार ॥
महलन बिलखत बेला रानी ❋ सो बहु बिपति कही ना जाय ।
कागद लेकै कलपीवालो ❋ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
सोचि समुझिकै बेला रानी ❋ तुरतै लिखन हकीकति लागि ।
पहले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखो हवाल ॥
पाती पढ़ियो बघऊदनि तुम ❋ औ आल्हाको देउ सुनाय ।
सुनियत मल्हना तुमको पाली ❋ ऊदनि यही दिनाके काम ॥
सुखसे सोये तुम महुबेमें ❋ हमरे कंत दिये मरवाय ।
लानति ऐसी रजपूतीपर ❋ तेगा बंधिबेको धिक्कार ॥
तेग तुम्हारी जग जाहिर है ❋ रणमें एक शूर सरदार ।
सो तुम डरिगे क्यों पिरथीको ❋ क्यों गौनेते गये बराय ॥
होउ जो पैदा दस्सराजते ❋ हमरे कंत देउ मिलवाय ।
नाहीं आवो जौ दिल्लीको ❋ तौ धरिलेउ जनानो भेष ॥
बाना छोड़ि देउ क्षत्रीको ❋ औ सब छोरि धरौ हथियार ।
बेला रानी रोय रोय यह ❋ बघऊदनिको लिखो हवाल ॥
ऐसी चिट्ठी लिखि ऊदनिको ❋ फिरि आल्हाको लिखो हवाल ।
जेठ हमारे तुम आल्हा हौ ❋ तुम ऊदनिको देउ समझाय ॥
बिदा कराय लेयँ हमको आय ❋ हमरे कंत देयँ मिलवाय ।
खाय जो कसम गये गौनेकी ❋ तौ वे करै चाकरी आय ॥
भरती करिहैं हम लश्करकी ❋ लावैं फौज उदैसिंह राय ।
लिखिकै पाती यह बेलाने ❋ हरकाराको दइ पकराय ॥
जल्दी चले जाउ महुबेको ❋ यहु आल्हाको दीन्ह्यो जाय ।
चलो सांड़िया तब दिल्लीते ❋ दशपुरवामें पहुँचो जाय ॥
लगी कचहरी जहँ आल्हाकी ❋ धावन उतरि परो अरगाय ।
करी बन्दगी तुनि आल्हाको ❋ पाती गद्दी दई चलाय ॥
खोलिकै पाती आल्हा बांची ❋ जियके होश बन्द ह्वइ जायँ ।

सोचन लागे शिर नीचेकरि ❀ तब ऊदनिने कही सुनाई ॥
कहां कि पाती यहु दादा है ❀ सो तुम हाल देउ बतलाय ।
कौन सोच आयो जियरामैं ❀ काहे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बोले आल्हा तब ऊदनिसे ❀ भैया हाल कह्यो ना जाय ।
चिट्ठी भेजी यह बेलाने ❀ तुरतै तुमहिं बुलायो रानि ॥
ब्रह्मा मारेगे दिल्ली में ❀ सो अब करिहौं कौन उपाय ।
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ दादा वचन करो परमान ॥
बदला लेहैं हम ब्रह्माको ❀ दिल्ली गर्द दिहैं करवाय ।
डाह बुझैहै तब छातीको ❀ यह कहि उठे उदैसिंहराय ॥
ऊदनि पहुँचि गये लाखनिपै ❀ औ यह कही उदैसिंहराय ।
अब तुम त्यार होउ दिल्लीको ❀ दादा फौज लेउ सजवाय ॥
बिदा करैहैं हम बेलाको ❀ औ ब्रह्माको दिहैं दिखाय ।
बदला लेहैं हम भैयाको ❀ तब छातीको डाहु बुझाय ॥
यह सुनि चलिभै लाखनिराना ❀ संगे चले उदैसिंह राय ।
तुरतै पहुँचि गये लश्करमें ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
डंका बाजै हमरे दलमें ❀ लश्कर जल्द होय तैयार ।
जतनकरी यह बघ ऊदनिने ❀ कारे कपड़ा लिये रँगाय ॥
कार निशाना सब बनवाये ❀ कारो बाना कियो तयार ।
वस्त्र बँटाय दिये क्षत्रिनको ❀ औ यह सबते कही सुनाय ॥
आयकै पूंछै जो तुमसे कोउ ❀ कहियौ फौज गंजरहन क्यार ।
भरती होवे गढ़ दिल्लीमें ❀ सो हम करन चाकरी जायं ॥
डंका बाजो गढ़ महुबेमें ❀ सजिगइ फौज कनौजी क्यार ।
लश्करसजिगयो अल्हावालो ❀ जाको सजत न लागी व्यार ॥
अपनी अपनी असवारिनपर ❀ क्षत्री फांदि भये असवार ।
आल्हा चढ़िगै पचशावदपर ❀ सैयद सिंहिनिपर असवार ॥
लाखनि चढ़िगै तब भुरुहीपर ❀ ढेबा मनुरथापर असवार ।
घोड़ा बेंदुलाको सजवायो ❀ ऊदनि फांदि भये असवार ॥

२६

धनुवा तेली कनउजवाला ❀ घोड़ी बिलन्दिनिपर असवार ॥
मारू डंकाके बाजत खन ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ।
पांच दिना मारगमें बीते ❀ दिल्ली धुरो दबायो जाय ॥
डेरा डारि दिये बागनमें ❀ लश्कर रही लालरी छाय ।
चौंड़ा आया था बागनमें ❀ सो लश्करतन रह्यो निहारि ॥
कार निशाना कारो बाना ❀ देखै खड़ा चौंड़िया राय ।
पूछन लागो बघ ऊदनिते ❀ कहांते आई फौज तुम्हारि ॥
कहँ तक जैहौ तुम आगेको ❀ सो सब हाल देउ बतलाय ।
कौने राजाको लश्कर यहु ❀ क्यों यहँ आप मँझायौ आय ॥
यह सुनि ज्वाब दियो ऊदनिने ❀ हरिसिंहविरसिंह नाम हमार ।
हम रहवैया हैं गांजरके ❀ करिहैं यहां नौकरी जाय ॥
भरती सुनी शहर दिल्लीमें ❀ रखिहैं हमैं बिलमदे रानि ।
बोल्यो चौंड़ा तब ऊदनिते ❀ हरिसिंह सुनौ हमारी बात ॥
करौ नौकरी जो तिरियाकी ❀ तुम्हरे क्षत्री धर्म नशाय ।
करौ चाकरी बादशाहकी ❀ तुम्हरो नाम होय संसार ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ हमको यही खर्चते काम ।
चाकर रखिहैं जो हमको यहँ ❀ करिहैं तहां चाकरी जाय ॥
बोल्यो चौंड़ा तब ऊदनिते ❀ अब तुम चलौ हमारे साथ ।
यहसुनि चलिभे ऊदनि ठाकुर ❀ संगै चले कनौजी राय ॥
जबहीं पहुँचे वे डचोढ़ीपर ❀ तब चौंड़ाने कही सुनाय ।
अब तुम ठहरौ दरवजेपर ❀ राजै खबरि सुनावौं जाय ॥
तलब बताय देउ पहिले तुम ❀ सो राजाको देउ सुनाय ।
बोले ऊदनि तब चौड़ाते ❀ लैहैं तीस लाख महाराज ॥
यह सुनि चौड़ा गौ राजापै ❀ तुरतै करी बन्दगी जाय ।
बोल्यो चौंड़ा पृथीराजते ❀ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
फौज कटीली गांजरवाली ❀ सो हियँ आइ चाकरी काज ।
लाख रुपैया रोजाना है ❀ मागत तीस लाख महवार ॥

यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ चौंड़ा बैठि रहौ चुप साधि ॥
यहां खजाना ना इतनो है ❀ कैसे तलब सकैं दिलवाय ।
पारस पूजा है महुबेमें ❀ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ॥
राखि सकत है गढ़ महुबेमें ❀ राजा चन्द्रवंस परिमाल ।
यह सुनि चौंड़ा बोलन लाग्यो ❀ ऐसी न कहो वीर चौहान ॥
बड़े शूरमा हैं गांजरके ❀ जो मरिबेको नहीं डेराय ।
लड़े कनौजी बारा बरस लौं ❀ तहां न पाई एक छदाम ॥
नौकर राखि लेउ पन्द्रह दिन ❀ औ महुबेको लेउ लुटाय ।
काम सिद्धि तुम्हरो ह्वइ जैहै ❀ सो रहै दीजो नाम कटाय ॥
यह सुनि बोले पृथीराज तब ❀ अबहीं नाम देउ लिखवाय ।
भयो बुलौवा तब ऊदनिको ❀ औ लाखनिको लियो बुलाय ॥
दोनों पहुँचे पृथीराजापै ❀ औ सब बातचीत ह्वइजाय ।
लिखिगै चेहरा जब लश्करमें ❀ तब यह कही पिथौराराय ॥
तुरत बुलायो जल्लादनको ❀ हाथी घोड़ा देउ दगाय ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❀ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
आज एकादशि हम बरते हैं ❀ पारन करिहैं काहि बनाय ।
चमड़ा जरिहैं चौपायनको ❀ हमरो बरत भंग ह्वइजाय ॥
ताते मानौ बात हमारी ❀ परसौं दीजौ दाग दिवाय ।
सो सुनि मानि लियो राजाने ❀ इनकी चौकी देउ बिठाय ॥
चौकी बिठवायो मुग़ुलनको ❀ खटका हमैं उदेसिंह क्यार ।
बोल्यो चौंड़ा तब ऊदनिते ❀ हरिसिंह सुनौ हमारी बात ॥
हुक्म दियो है महाराजाने ❀ मंदिर जहां बिलमदे क्यार ।
तहँ तुम जाओ दरवाजेपर ❀ रहियो बहुत बहुत हुशियार ॥
इतनी सुनतै लाखनि ऊदनि ❀ ढेबा सैयद भये तयार ।
धनुआं तेली उठि ठाढ़ो भयो ❀ सब द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
चौकी बैठ गये द्वारेपर ❀ तब लाखनिने कही सुनाय ।
कौन काम खाली बैठनको ❀ ऊदनि खेलो पंसासार ॥

खेलन लागे लाखनि ऊदनि ❋ लै लै नाम बिलमदे क्यार।
होउ जो सांची बेला रानी ❋ पांसा परै हमारे नाम॥
कान अवाज परी बेलाके ❋ तब बांदीते कही सुनाय।
लावौ खबरि जाय द्वारेकी ❋ पहरा कौन सिपाही क्यार॥
नाम हमारो बार बार कहि ❋ द्वारे खेलत पंसासार।
यह सुनि आई रूपा बांदी ❋ औ द्वारेपर पूँछन लागि॥
हमको पठायो रनि बेलाने ❋ अपनो नाम देउ बतलाय।
काहे नाम लेत हमरो है ❋ सो यह पूँछी बेलमदे रानि॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागो ❋ तुम बेलाते कहियो जाय।
आये ऊदनि गढ़ महुबेते ❋ सो ठाढ़े हैं पँवरि दुआर॥
जल्दी त्यार होउ चलिबेको ❋ गौना लिहैं तुम्हारो आज।
इतनी सुनतै बांदी लौटी ❋ औ बेलाते कही सुनाय॥
ऊदनि ठाढ़े हैं द्वारेपर ❋ सो तुम सजिकै होऊ तयार।
तब ललकारी रनि बेलाने ❋ काहे झूठी कहै बनाय॥
ऐहैं ऊदनि जब दिल्लीमें ❋ होइहैं तब दिवसकी राति।
चारिहु ओरी फौज पिताकी ❋ कैसे आये उदयसिंह राय॥
कैसी सूरत है ऊदनिकी ❋ बांदी हमहि कहौ समुझाय।
यह सुनि बांदी बोलन लागी ❋ नैना हिरनाकी अनुहार॥
मुख नरियारो देह सांवली ❋ औ है बहुत सुघरूआ ज्वान।
बोली बेला तब बांदीते ❋ हमरे मन यहु नाहिं समाय॥
अबहीं लौटि जाउ द्वारेपर ❋ पूंछौ जाय ब्याहको हाल।
ब्याहैं आये चन्देलेको ❋ सो सब हाल देउ बतलाय॥
इतनी सुनतै बांदी लौटी ❋ औ द्वारेपर पहुँची जाय।
बोली बांदी फिर ऊदनिते ❋ ठाकुर सुनो हमारी बात॥
हमको भेजो रनि बेलाने ❋ औ यह पूँछो हाल हवाल।
ब्याहन आये चन्देलेको ❋ सो सब हाल देउ बतलाय॥
इतनी सुनतै बघ ऊदनिने ❋ कोरो कागद लियो उठाय।

पहिले लिखिकै सरनामाको ❋ ता पाछेते लिखो प्रणाम ॥
लिखी हकीकत बघऊदनिने ❋ पढ़ियो याहि बिलमदे रानि ।
ब्याहन आये हम ब्रह्माको ❋ द्वारे चली विषम तलवारि ॥
हाथी मस्ता खड़े द्वारे पर ❋ हम अरु मलिखे दिये पछारि ।
द्वारे चार भयो जबहिं तब ❋ फिरि समधौरा लियो कराय ॥
मड़येके नीचे फिरि पहुँचे ❋ लागे होन नेग ब्यौहार ।
भांवरि परते भई लड़ाई ❋ खटखट चली कठिन तलवारि॥
बांधे तुरते भैया तुम्हरे ❋ सातो भांवरि लई डराय ।
खान कलेवा गैं ब्रह्मा संग ❋ चौड़ा धारि जनानो भेष ॥
छिपकै जाय बीच तिरियनके ❋ हमरे हनी कटारी आय ।
घाव आय गयो मुर्छा आई ❋ तब तुम भई दाहिने आय ॥
प्राण हमारो तहँ राखो तुम ❋ ऐसे भयो ब्याहको काम ।
ऐसी पाती लिखि ऊदनिने ❋ सो बांदीको दई गहाय ॥
लैके पाती बांदी चलि भइ ❋ औ बेलाको दीन्ही जाय ।
पढ़ो हाल जब रनि बेलाने ❋ पाती छाती लई लगाय ॥
बोली बेला तब बांदीते ❋ तू ऊदनिको लाउ लिवाय ।
बांदी आई दरवाजे पर ❋ औ ऊदनिको चली लिवाय ॥
आये ऊदनि रंगमहलमें ❋ तब बेलाने कही सुनाय ।
एक अंदेशा है हमको यहु ❋ सो तुम धोखा देउ मिटाय ॥
ब्याहन आये थे भाई को ❋ गोरे हते उदैसिंह राय ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ गुस्सा भये रजा परिमाल ॥
हमहिं निकार दियो भादौंमें ❋ हम कनउजमें करा मुकाम ।
करी तयारी हम गांजरपर ❋ तहँ हम विषम करी तलवारि ॥
तीन महीना तेरह दिनलौं ❋ ना तंग छुटी बछेरन केरि ।
बख्तर पहिरे रहे राति दिन ❋ गोरी देह गई करियाय ॥
सांची मानी सो तब बेलाने ❋ तब ऊदनिते कही सुनाय ।
जैसे हमरे तुम लागत हो ❋ तैसो परदा करौं तुम्हार ॥

बोले ऊदनि हाथ जोरिके ❋ धर्मकि माता लगौ हमारि ॥
मौसी हमरी मल्हना रानी ❋ ब्रह्मा भैया बड़े हमार ।
देवर तुम्हरे हम लागत हैं ❋ सो तुम जानि लेउ महरानि ॥
इतनी बात सुनी बेलाने ❋ तुरतै परदा दियो हटाय ।
ऊंची चौकी तब डरवाई ❋ बैठे जाय उदयसिंह राय ॥
बोली बेला बघ ऊदनिते ❋ देवर हाल देउ बतलाय ।
कैसो घाव लगो बालमके ❋ सो तुम हमैं कहौ समुझाय ॥
यह सुनि ऊदनि बोलन लागे ❋ दहिने लगौ सेलको घाव ।
लागो कैबर है माथेमें ❋ गांसी निकरि गई वापार ॥
बायें कुछा लगी कटारी ❋ सो हियरेमें गई समाय ।
तीन घाव लागे भैयाके ❋ लोटैं पोटैं औ रहिजायँ ॥
व्याकुल ब्रह्मा पड़े पलंगपर ❋ कोऊ रंधे भात ना खाय ।
सुनतै बेला रोवन लागी ❋ औ ऊदनिते लगी बतान ॥
तुम रणदूलह घरमें बैठे ❋ अकिले भेजो कंत हमार ।
सो मरवाय दिये दिल्लीमें ❋ ऐसी तुमहि मुनासिब नाहिं ॥
अबहीं शाप देउँ तुमको मैं ❋ तौ तुम भस्म होउ तत्काल ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ हाथ जोरिकै कही सुनाय ॥
बात धर्मकी माता सुनिल्यो ❋ नाहक हमैं देउ कछु दोष ।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ सो तुम समुझि लेउ मनमाहिं ॥
इक दिन राजा चंदेलेने ❋ गौनको वीरा दियो धराय ।
काहु न लीन्हो वा बीराको ❋ हमने बीरा लियो उठाय ॥
हुक्म दै दियो हम लश्करमें ❋ क्षत्री सबै होयँ तैयार ।
तुरतै माहिलके कहिबेते ❋ ब्रह्मा बीरा लियो छुँड़ाय ॥
अकिले त्यार भये दिल्लीको ❋ उनको काल रह्यो नियराय ।
मीचु पराई कोउ मरिहैं ना ❋ अपनी मीचु मरै संसार ॥
लिखी विधाताकी को मेटैं ❋ माता समुझि लेउ मनमाहिं ।
यह सुनि बेला बोलन लागी ❋ औ ऊदनिते लगी बतान ॥

सात जन्म हमरे खंडित भै ❀ सो हम तुमहिं देयँ बतलाय ।
पहले जन्म भयो मछरीको ❀ मछरा भये चंदेले राय ॥
तहां तपस्या खंडित ह्वइ गइ ❀ ना हम कीन्हों भोग बिलास ।
दुसरे जन्म भयो नागिनको ❀ नागा भये चंदेले राय ॥
तहौं तपस्या खंडित ह्वइ गइ ❀ ना करि पायो भोग बिलास ।
तिसरो जन्म भयो चकईको ❀ चकवा भये चंदेले राय ॥
रैनि बिछोहा तहँऊँ ह्वइ गयो ❀ हम ना कीन्हों सुख अघाय ।
चौथा जन्म भयो हिरनीको ❀ हिरना भये चंदेले राय ॥
तहां तपस्या खंडित हो गइ ❀ ना हम कीन्हों भोग बिलास ।
पचवां जन्म भयो हंसिनको ❀ हंसा भये चंदेले राय ॥
तहौं आपदा हमपर परिगै ❀ ना करि पायो भोग बिलास ।
छठयें जन्म भयो द्रुपदीको ❀ अर्जुन भयो चंदेले राय ॥
बैरी हमरे तहँ कौरव भै ❀ ना करि पायो राज अघाय ।
सतवां जन्म भयो हमरो यह ❀ बैरी होइगै बाप हमार ॥
बालम हमरे उन मरवायो ❀ ना करिपायो भोग बिलास ।
अब तुम मानौ बात हमारी ❀ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ॥
लश्कर भारी मेरे बापको ❀ काहे देहौ प्राण गँवाय ।
जीति न पैहौ तुम दादाको ❀ हमरो डोला लिहैं छँड़ाय ॥
उमरि तुम्हारी यहु थोरो है ❀ ताते ऊदनि जाउ बराय ।
जीवत गौना तुम लै जाते ❀ कछु दिन करती भोग बिलास ॥
अब जो गौना तुम लै जैहौ ❀ तौ क्या खाक बटोरिहौ जाय ।
झांझरि नैया मेरी डोलति है ❀ बेड़ा कौन लगैहै पार ॥
ऊदनि बोले तब बेलाते ❀ बेड़ा खेइ लगैहौं पार ।
जौलौं जीहौं मैं दुनियामें ❀ बैठी राज्य करो महरानि ॥
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❀ यह हमरे मन नाहिं समाय ।
अबै तौ बैठी मैं दिल्लीमें ❀ जहँ मोतीके मोल बिकाउँ ॥
राहमें डोला दादा छिनिहैं ❀ तब माटीके मोल बिकाउँ ।

कौन शूर है साथ तुम्हारे ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ॥
बोले ऊदनि तब बेलाते ❋ लाखनि राना हमरे साथ ।
है जो बेटा रतीभानके ❋ नाती बेन चक्कवै क्यार ॥
मीरा सैयद बनरसवाले ❋ जिनकी जग जाहिर तलवार ।
धनुआं तेली कनउजवाला ❋ जाकी बेड़ि बहै तलवार ॥
ढेबा बहादुर है हमरे संग ❋ लश्कर साथ कनौजी क्यार ।
लश्कर आयो है आल्हा संग ❋ तिन बागनमें कियो मुकाम ॥
यह सुनि झांको तब खिरकीते ❋ औ ऊदनिते लगी बतान ।
पाग बैजनीको बांधे है ❋ गोरे वदन कौन सरदार ॥
दाढ़ी लटकति हाथ भरेकी ❋ सो यह ठाढ़ो कौन अगार ।
बोले ऊदनि तब बेलाते ❋ गोरे वदन कनौजी राय ॥
पाग बैजनी शिरपर बांधे ❋ लाखनिराना इनको नाम ।
दाढ़ी जिनकी हाथ भरेकी ❋ सोई सैयद खड़े अगार ॥
तब बुलवायो बेला रानी ❋ दोनों तहां पहुँचे जाय ।
वीरा दीन्हों तब ऊदनिने ❋ सो दोनोंने लिये चबाय ॥
नयनबाण मारे बेलाने ❋ लाखनि गिरे धरनि भहराय ।
बोली बेला तब ऊदनिते ❋ देवर देखौ दृष्टि पसारि ॥
साथ लरिकवा तुम लाये यहु ❋ जो तिरियनको देखि डराय ।
दबै मतंगा दुर्योधन के ❋ करते छूटि परै तलवारि ॥
तापर ज्वाब दियो सैयदने ❋ तुरतै लीन्हीं बात बनाय ।
तलकि तमाखू है कनउजकी ❋ बँगला पान महोबे क्यार ॥
पीक लागि गइ सो लाखनिके ❋ तासे गिरे धरनि मुरझाय ।
उठिकै बोले लाखनि राना ❋ रानी सुनो चंदेले केरि ॥
इन्द्र डोलि जायँ इन्द्रासनते ❋ औ शिव डोलि जायँ कैलाश ।
देवी डोलै मृत्युलोककी ❋ धरती पांच कदम हटिजाय ॥
लाखनि डोलनके नाहीं हैं ❋ चाहै धजी धजी उड़िजाय ।
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ अब कछु भयो भरोसा मोहिं ॥

कन्त हमारे तुम मिलवैहौ ❀ फिरि सैयदते कही सुनाय ।
देवर हमरे तुम लागत हौ ❀ क्यों सुधि हमरी दई बिसारि ॥
बोले सैयद तब गुस्सा होय ❀ कहँको नातो लियो निकारि ।
बोली बेला तब सैयदते ❀ तुम द्वापरकी गये भुलाय ॥
छोटे भैया दुःशासनके ❀ तुमने चीर खिंचायो आय ।
कीन्ही रक्षा नारायणने ❀ चीर द्रौपदी दियो बढ़ाय ॥
थकि गयो सभा बीच दुःशासन ❀ राखी लाज कृष्ण भगवान ।
देवै पुत्र भयो दुशासन ❀ धांधू नाम प्रगट भौ आय ॥
पापके मारे तुम सैयद भे ❀ काशीमाहिं प्रगट भे आय ।
लाखनि राना जो ठाढ़े यह ❀ नकुला पंडाके औतार ॥
तुमसे देवर हमरे लागैं ❀ औ हम भई निरासिनि रांड ।
बालम हमरे जबसे मरिगे ❀ तब क्या खाक बटोरी आय ॥
कही हमारी अब मानौ तुम ❀ लाखनि लौटि कनौजे जाउ ।
चढ़िहै लश्कर जब दिल्लीको ❀ तुमपर मारु सही ना जाय ॥
गरुई गाजैं मेरे बापकी ❀ काहे देहौ प्राण गँवाय ।
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❀ तुम्हरे कंत दिहौं मिलवाय ॥
मोहरा मरिहौं पृथीराजको ❀ तौ तो लाखनि नाम हमार ।
यह सुनि बोली बेला रानी ❀ अब बिन कहे रह्यो ना जाय ॥
डोला लाये संयोगिनिको ❀ आये जीति पिथौरा राय ।
वा दिन लाखनि गे कहँवा तुम ❀ क्यों ना कठिन करी तलवार ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❀ नाहीं जाना हाल तुम्हार ।
नाहीं जैचंद मड़वा गाड़ो ❀ नाहीं दीन्हो कन्यादान ॥
चेरी हरिकै पिरथी लाये ❀ तब हम रहे बहुत नादान ।
अब हम लैहैं सो बदला यहँ ❀ डोला लिहैं अगमदे क्यार ॥
तुम्हरो डोला हम लै जैहैं ❀ तंबुआ जहां चंदेले क्यार ।
देउँ चुनौती पृथीराजको ❀ हमते डोला लेयँ छिनाय ॥
बोली बेला तब लाखनिते ❀ अब हम मानी बात तुम्हारि ।

बात हमारी अब मानौ तुम ❀ औ फिरि समुझि लेउ मनमाहिं ॥
डोला जैहै जो चोरीते ❀ हमरो परै भगोड़िनि नाम ।
नाम तुम्हारो ओछो होइहै ❀ ताते सुनो हमारी बात ॥
नेगी जितने हैं राजाके ❀ सबको देउ नेग बुलवाय ।
अधकर लावौ तुम गौनेको ❀ तब हम चलैं तुम्हारे साथ ॥
यह मन भाय गई लाखनिके ❀ तब ऊदनिते लगे बतान ।
देउ नेग तुम सब नेगियनको ❀ अधकर लेउ उदैसिंहराय ॥
यह सुनि ऊदनि उठि ठाढ़े भे ❀ घोड़ा बेंदुला लियो सजाय ।
तोड़ा चारि लिये मोहरनके ❀ सो घोड़ा पर धरे अगार ॥
चलि भये ऊदनि तब द्वारेपर ❀ औ लाखनिते कही सुनाय ।
रहियो खबरदार द्वारेपर ❀ जल्दी डोला लेउ सजाय ॥
पहुँचे ऊदनि तब जल्दीते ❀ जहँ दरबार पिथौरा क्यार ।
समुहे पहुँचे पृथीराजके ❀ तुरतै ऊदनि करी सलाम ॥
तोड़ा लैगे थे मोहरनके ❀ सो गद्दीपर दिये चलाय ।
बोले ऊदनि पृथीराजते ❀ गौनेको अधकर देउ मंगाय ॥
नेगी बुलवावौ अपने तुम ❀ तिनको मोहरैं देउ बँटाय ।
गौना लेहैं हम बेलाको ❀ हमरो उदयसिंह है नाम ॥
बैठे माहिल थे दहिने पर ❀ सो राजाते लगे बतान ।
शीश कटाय लेउ ऊदनिको ❀ ऐसा समौ न बारम्बार ॥
अकिले ऊदनि हियँ आये हैं ❀ राजा समय खोय पछिताउ ।
इतनी सुनतै पृथीराज तब ❀ बघ ऊदनि ते लगे बतान ॥
उतरौ ऊदनि तुम घोड़ाते ❀ अबहीं अधकर दिहै मंगाय ।
यह कहि महाराज पिरथीने ❀ ऊंची चौकी दई डराय ॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❀ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ।
जैसे लरिका परिमालेके ❀ तैसेइ लरिका लगों तुम्हार ॥
तुम्हरि बरोबरि ना बैठौं मैं ❀ तब राजा यह पूछन लाग ।
हाथमें कंगन तुम बांधे हौ ❀ ताको हाल देउ बतलाय ॥

बोले ऊदनि तब राजाते ❋ तुम सुनि लेउ धनी चौहान ।
बहुत लड़ाई हमने जीती ❋ जीते बड़े बड़े उमराव ॥
जूझको कंगन परिमालैने ❋ तब हमरे कर दियो बंधाय ।
यह सुनि कुंडल सात लाखके ❋ पृथीराजने लिये मंगाय ॥
सो रखवाय दिये सम्मुहेपर ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
कुंडल रक्खे जो सम्मुहे हैं ❋ सो तुम ऊदल लेउ उठाय ॥
जाय दिखावौ परिमालैको ❋ तुम्हरो नाम होय संसार ।
यह सुनि ऊदनि चौकन्ने ह्वै ❋ देखन लगे चारिहूँ ओर ॥
झपटि उठाये दोनों कुंडल ❋ औ राजाको करी सलाम ।
ऍड़ लगाई रसबेंदुल के ❋ फाटक निकरि गये वा पार ॥
उड़न बछेड़ा था ऊदनिको ❋ देखत रहे धनी चौहान ।
राम बनावै सो बनि जावै ❋ बिगरी बनत बनत बनि जाय ॥
सुनो हाल अब तुम बेलाको ❋ बेला पलकी लई मंगाय ।
बोली बेला तब लाखनिते ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात ॥
माता अगमाके महलनमें ❋ हमने गहनो धरो उतारि ।
गहना अपनो सो लेहैं हम ❋ औ मातते मिलिहैं जाय ॥
इतनी कहिकै बेला रानी ❋ त्यहि पलकीपर भई सवार ।
लाखनि राना हैं भुरुहीपर ❋ ढेबा मनुरथा पर असवार ॥
धनुआं तेली मीरा सैयद ❋ सोऊ साथ कनौजी राय ।
चली पालकी रनि बेलाकी ❋ औ अगमापै पहुंची जाय ॥
रानी अगमाके द्वारेपर ❋ भुरुही अड़ी कनौजी क्यार ।
देखो अगमा जब बेटीको ❋ तब हिरदैसे लियो लगाय ॥
रानी अगमा बोलन लागी ❋ बेटी मानौ बात हमारि ।
बैठी राज्य करौ दिल्लीमें ❋ काहे रोय रोय रहिजाउ ॥
रानी ताहरकी बोली तब ❋ ननदी सुनौ हमारी बात ।
ना सुख भोग्यो तुम बालमको ❋ ना महुबेको जान्यो राज ॥
नाहक रोवौ तुम ब्रह्माको ❋ अब तुम बैठि रहौ चुप साधि ।

राजपाटकी जौ भूखी हौ ❋ केहु राजाघर देउँ बियाहि ॥
इतनी सुनतै बेला रानी ❋ भौजाईते लगी बतान ।
बिटिया होवै बादशाहके ❋ सो मुगलन घर देउ पठाय ॥
हमपर मोहे ताहर भैया ❋ हमरे कंत दिये मरवाय ।
समुहे लड़िकै जो मरि जाते ❋ तौ कछु दुःख न होतो मोहि ॥
बालम मारेगे धोखेते ❋ है नामर्द चौंड़िया राय ।
भेष जनानो धरि चौंड़ाने ❋ मारे जाय चंदेले राय ॥
ताहर भैया गये संगमें ❋ तिनहुँ मारो तीर निकारि ।
सांगको घाव दियो दहिनेपर ❋ नाहीं कियो मर्दको काम ॥
लानति ऐसी रजपूतीपर ❋ तेगा बंधिबेको धिक्कार ।
अब हम देखिहैं कंत आपनो ❋ ह्वइहौं सती कंतके साथ ॥
यह तुम जनियो ना अपने मन ❋ बेला भई निरासिन रांड़ ।
घर घर दिल्ली रँड़िया ह्वइहैं ❋ मिलिहैं नाहिं सुहागिन कोउ ॥
एक महीना तेरह दिनलौं ❋ बहिहैं हियां रक्तकी धार ।
जैसि निपूती मल्हना ह्वइगईं ❋ तैसेइ होय अगमदे रानि ॥
गंगा करौ रांड़ होवो तुम ❋ दिल्ली परै बज्रकी गाज ।
रो रो यहि बिधि कहि बेलाने ❋ गहना पहिरि लियो तत्काल ॥
चलिभइ बेला रङ्गमहलते ❋ औ पलकी पर भई सवार ।
चली पालकी दरवाजेते ❋ औ मढ़ियापर पहुंची जाय ॥
बोली बेला तब लाखनिते ❋ तुम सुनि लेउ कनौजी राय ।
दर्शन करिकै हम देवीके ❋ सो तुम बिलमि जाउ कछु काल ॥
उतरि पालकीते बेला तब ❋ मठिया भीतर पहुंची जाय ।
दर्शन करिकै जगदम्बाको ❋ औ फुलवाते लगी बतान ॥
मालिनि जावौ तुम ताहरपै ❋ यह वीरनते कहियो जाय ।
लाखनि राना रनि बेलाको ❋ डोला लिये कनौजे जात ॥
बदला लैहै संयोगिनिको ❋ सो तुम डोला लेउ छिनाय ।
जो कहुँ डोला कनउज जैहौं ❋ बुड़िहै सात साखिको नाम ॥

सुनतै चलिभइ फुलवामालिनि ❀ औ ताहरपै पहुँची जाय ।
हाल सुनायो जब बेलाको ❀ ताहर अग्निज्वाल ह्वइ जाय ॥
दुइ हजार क्षत्री संग लैकै ❀ ताहर मठिया लई घिराय ।
बोले ताहर आगे बढ़कै ❀ किन यहु डोला लियो खँदाय ॥
कौन शूरमा चढ़ि आयो है ❀ चोरी करी हियां पर आय ।
आगे बढ़िकै लाखनि बोले ❀ ना हम चोरी करी तुम्हारि ॥
लाये डोला हैं बेलाको ❀ सो ब्रह्मापै दिहैं पठाय ।
बदला लेहैं सयोगिनिको ❀ फिरि कनउजमें रखिहैं जाय ॥
इतनी सुनितै ताहर जरिगै ❀ गुस्सा गई देहमें छाय ।
हुक्म देदियो सब क्षत्रिनको ❀ अबहीं डोला लेउ छिनाय ॥
खैंचि शिरोही लइ क्षत्रिनने ❀ तुरतै चलन लगी तलवारि ।
घोड़ा बढ़ायो ताहर ठाकुर ❀ औ लाखनिपै पहुँचे जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ कम्मरते ❀ औ लाखनिपर राखी जाय ।
चोट बचाय लई लाखनिने ❀ अपनो दीन्हो गुर्ज उठाय ॥
गुर्ज चलायो तब ताहरपर ❀ घोड़के लगो चपेटा जाय ।
घोड़ा भागि चलो ताहरको ❀ ना रोंकेते रुकी लगाम ॥
हटि गयो मुर्चा तब ताहरको ❀ लाखनि डोला दियो बढ़ाय ।
तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❀ तिनते बेला पूँछन लागि ॥
अधकर लाये क्या गौनेको ❀ सो तुम हमैं देउ दिखलाय ।
दोनों कुंडल सात लाखके ❀ सो ऊदनिने धरे अगार ॥
बहुत खुशी भइ बेला रानी ❀ सांचे देवकुँवरिके लाल ।
अब हम जानि लई अपने मन ❀ बेड़ा खेइ लगैहौ पार ॥
खबरि सुनी जब पृथीराजने ❀ डोला जात बेलमदे क्यार ।
तुरतै चौंड़ाको बुलवायो ❀ औ यह हुक्म दियो फरमाय ॥
डोला छीनि लाउ जल्दीते ❀ हमरी नजर गुजारो आय ।
सुनतै चौंड़ा करी तयारी ❀ तुरतै फौज लई सजवाय ॥
कूच कराय दियो लाखनिपै ❀ औ लाखनिते कही सुनाय ।

डोला लायो को चोरी करि ❁ सो समुहें होइ देय जवाब ॥
बढ़िकै बोले लाखनि राना ❁ चौंड़ा अपनी जीभ सम्हारु ।
डोला लाये हम बेलाको ❁ सो महुबेमें दियो पठाय ॥
बोल्यो चौंड़ा तब गुस्सा होइ ❁ डोला अबहीं देउ धराय ।
चुप्पै लौटि जाउ कनउजको ❁ लाखनि मानौ बात हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❁ काहे रारि बढ़ाईं आय ।
डोला लौटनको नाहीं यहु ❁ चाहे कोटिन करो उपाय ॥
गुस्सा ह्वइकै तब चौंड़ाने ❁ सब क्षत्रिनसे कही सुनाय ।
डोला छीन लेउ इनते तुम ❁ सबकी कटा देउ करवाय ॥
सुनतै बढ़िगै सबै सूरमा ❁ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ।
डोला घेरि लियो बेलाको ❁ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
चारि घरी भरि चली शिरोही ❁ औ बहि चली रक्तकी धार ।
झुके सिपाही कनउजवाले ❁ सबके मारु मारु रटि लागि ॥
भगे सिपाही चौंड़ावाले ❁ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी जब चौंड़ाने ❁ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
चौंड़ा ब्राह्मणने ललकारो ❁ लाखनि खबरदार ह्वइ जाउ ।
यह कहि गुर्ज लियो चौंड़ाने ❁ औ समुहे पर दिये चलाय ॥
गुर्जकि चोट लगी हौदामें ❁ धक्का लगो बदनमें आय ।
गाफिलहोइगे कछु लाखनि तब ❁ चौंड़ा डोला लियो घिराय ॥
कही चौंड़ियाने सैयदते ❁ सैयद सुनौ बात मन लाय ।
थाती लाये जो कनउजते ❁ सो दिल्लीमें दई गँवाय ॥
यह सुनि मीरा गे लाखनिपै ❁ सो लाखनिते कही सुनाय ।
काहे गाफिल भे हौदामें ❁ सो तुम हमैं देउ बतलाय ॥
यह सुनि लाखनि बोलन लागे ❁ गरुई गाज चौंड़िया क्यार ।
धक्का लागि गयो देहीमें ❁ तासे बदन गयो कुम्हिलाय ॥
बढ़िकै लाखनिने ललकारो ❁ चौंड़ा खबरदार ह्वइ जाउ ।
लैकै भाला लाखनि मारो ❁ औ हाथीको दियो गिराय ॥

पाँय पियादे चौड़ा रहिगौ ❋ तब समुहे ते गयो बराय ।
डोला उठवायो लाखनि तब ❋ सो आगेको दियो बढ़ाय ॥
सुनी खबर जब पृथीराजने ❋ डोला नगर महोबे जात ।
हाथी जूझो तहँ चौंड़ाको ❋ लश्कर तिड़ी विड़ी ह्वइजाय ॥
यह सुनि राजा पृथीराजने ❋ ताहर बेटा लियो बुलाय ।
हुक्म देदियो तब ताहरको ❋ लश्कर तुरत लेउ सजवाय ॥
डोला जैहो जो महुबेको ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी हमारि ।
चलिभै ताहर तब बँगालाते ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ॥
तुरत नगरचिको बुलवायो ❋ सोने कड़ा दिये डरवाय ।
बजै नगारा हमरे दलमें ❋ लश्कर तुरतै होय तैयार ॥
डंका बाजो तब दिल्लीमें ❋ क्षत्री सजिकै भये तयार ।
सजि गयोहाथीआदिभयंकर ❋ तापर चढ़े पिथौरा राय ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो ❋ तापर ताहर भये सवार ।
हाथी भौंरानँद सजवायो ❋ तापर धाँधू भये सवार ॥
ताँता लगो चारि कोसलौं ❋ मारू डंका दियो बजाय ।
कूच कराय दियो लश्करको ❋ आगे हाथी दियो बढ़ाय ॥
डोला रहि गयो तीस पैग जब ❋ तब पिरथीने कही पुकार ।
कौन शूर लायो डोलाको ❋ चोरी करी महलमें जाय ॥
बढ़िकै ज्वाब दियो लाखनिने ❋ हम चोरी ना करो तुम्हारि ।
आज्ञा दीन्ही रनि बेलाने ❋ तब हम डोला लियो खँदाय ॥
जहँपर तम्बू है ब्रह्माको ❋ तहँ यह डोला दिहैं पठाय ।
इतनी सुनिकै पिरथी बोले ❋ लाखनि सुनल्यो बात हमारि ॥
जैसेहि लरिका रतीभानके ❋ तैसेहि लरिका लगौ हमार ।
काम तुम्हारो ना कछु अटको ❋ काहे यहां बढ़ाई रारि ॥
आल्हा ऊदनि डोला लेते ❋ खाये निमक चँदेले क्यार ।
तुम क्यों आये प्राण देनको ❋ ताते लौटि कनौजै जाउ ॥
यहसुनिलाखनि बोलनलागे ❋ ना कछु जाना हाल तुम्हार ।

पगिया बदली हम ऊदनिसँग ❋ आल्हा भैया लगत हमार ॥
आल्हा ऊदनि गांजर चढ़िगे ❋ गांजरि कठिन करी तलवारि ।
तीन महीना तेरह दिनलौं ❋ नातँग छूटि बछेरन केरि ॥
पैसा भरिलौ बारह वर्षको ❋ राखो धर्म कनौजी क्यारि ।
संग न छोड़िहैं हम आल्हाको ❋ चाहैं कोटि कहौ परकार ॥
यह सुनि गुस्सा भै पिरथी तब ❋ औ यह हुक्म दियो फरमाय ।
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❋ इन पाजिनको देउ उड़ाय ॥
हुक्म पायकै झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❋ धुअँना रह्यो सरगमें छाय ॥
अररर गोला छूटन लागे ❋ हाहाकारी बीतन लागि ।
गोली छूटै सननन सननन ❋ सर सर परी तीरकी मारु ॥
भाला बरछी छूटन लागीं ❋ हाहाकारी बीतन लागि ।
चारि घरी भरि गोला बरसो ❋ तोपैं लाल बरन ह्वइजायँ ॥
छोंड़ी तोपैं तब क्षत्रिनने ❋ लम्बे बन्द किये हथियार ।
बढ़े सिपाही दोनों दलके ❋ क्षत्रिन खैंचिलईं तलवार ॥
खटखट तेगा बाजन लाग्यो ❋ बोलै छपक छपक तलवारि ।
पैदल अभिरि गये पैदलसँग ❋ औ असवारनते असवार ॥
चलै शिरोही मानाशाही ❋ औ बूँदीकी चलै कटार ।
चटकैं तेगा वर्दवानके ❋ कटि कटि गिरैं सुघरुवा ज्वान ॥
पैग पैगपर पैदल गिरिगे ❋ उनके दुइ दुइ पैग असवार ।
बिसे बिसेपर हाथी गिरगे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार ॥
चली शिरोही चारि घरीलौं ❋ औ बहि चली रक्त की धार ।
आधी जमुनामें पानी बहै ❋ आधी बहै रक्त की धार ॥
डारी लोथी जो लोहूमें ❋ मानो कच्छमच्छ उतराय ।
परी बँदूकैं हैं रणमें जो ❋ मानों रहे नाग मन्नाय ॥
डारी पगिया जो लोहूमें ❋ जनु नदीमें बहैं सिवार ।
सबै बयरियनका मसका है ❋ कौंधा चाल चलै तलवारि ॥

बढ़े सिपाही कनउजवाले ❀ सबके मारु मारु रटल गि।
धनुआं तेलीके मुर्छापर ❀ लाखनि राना पहुँचे जाय॥
बोले लाखनि तब धनुआंते ❀ भैया धर्म तुम्हारे हाथ।
दबी बायसी तब लाखनिकी ❀ संगे बढ़े शूर सरदार॥
भगे सिपाही दिल्ली वाले ❀ अपने डारि डारि हथियार।
यह गति देखी पृथीराज जब ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय॥
बोले पृथीराज धांधूते ❀ डोला तुरत लेउ घिरवाय।
हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❀ औ धनुआं को दई ललकार॥
धरिदे तेली तू डोलाको ❀ काहे देहै प्राण गंवाय।
बोल्यो धनुआं तब गुस्सा होइ ❀ तुमको कोल्हू दिहैं पेराय॥
तेलु काढ़िकै हम तुम सबको ❀ सो कनउजको दिहैं पठाय।
ऐसे तेली हम जालिम हैं ❀ क्यों तुम रारि बढ़ाई आय॥
गुर्ज उठायो तब धांधूने ❀ सो धनुआं पर दियो चलाय।
चोट बचाई तब धनुआंने ❀ नीचे गुर्ज गिरो अरराय॥
धोखा दैकै तब धांधूने ❀ अपनो भाला दियो चलाय।
घाव आय गयो तब जंघामें ❀ धनुआं उतरिपरौ अरगाय॥
घेरो डोला तब धांधूने ❀ तुरतै बेला कही सुनाय।
पता नहीं है कहुं ऊदनिकी ❀ काहे हंसी कराई आय॥
कान अवाज परी लाखनिके ❀ तुरतै भुरुही दई बढ़ाय।
लाखनि उतरि परे भुरुहीते ❀ औ धनुआं पै पहुंचे जाय॥
बोले लाखनि तब धनुआंते ❀ को गाढ़ेमें ऐहै काम।
बड़ा भरोसा म्वहिं तुम्हरो ❀ तुम्हरे लगे जांघमें घाव॥
यह सुनि धनुआं उठिठाढ़ोभयो ❀ अपनो लियो दुशाला हाथ।
घाव बांधि लियो कसिपट्टीते ❀ औ घोड़ापर भयो सवार॥
आगे बढ़िकै गौ धांधूपै ❀ औ हौदापर पहुँचो जाय।
चोट चलाई धनुआं तेली ❀ सोने कलशा दियो गिराय॥
मुर्छा हटि गयो तब धांधूको ❀ धनुआ डोला लौ उठवाय।

सो लै राखेउ इनलाखनिपै ❀ भारी शूर कनौजी क्यार ॥
देखि हाल यह पृथीराजने ❀ अंगद राजा लियो बुलाय ।
जल्दी लावौ तुम डोलाको ❀ भूरा मुग़ुल लेउ तुम साथ ॥
तुरतै चलिभयो राजाअंगद ❀ औ डोलाको घेरचो जाय ।
गुर्ज उठायो अंगद राजा ❀ सो धनुआं पर दियो चलाय ॥
लग्यो चपेटा इक घोड़ीके ❀ धनुआं घोड़ी गयो भगाय ।
डोला उठवायो भूराने ❀ तब लोगनने कही सुनाय ॥
चाचा सैयद आगे बढ़िकै ❀ डोला तुरतै लेउ छिनाय ।
अली अली करि सैयद दौरे ❀ औ डोलापै पहुचो जाय ॥
सेल उठाय लियो सैयदने ❀ सो भूरा पर राखो जाय ।
लग्यो चपेटा जब घोड़ाके ❀ भूरा घोड़ा गयो भगाय ॥
घोड़ा बढ़ायो तब ताहरने ❀ औ डोलापै पहुचो जाय ।
गाफिल देखो जब सैयदको ❀ ताहर डोला लियो उठाय ॥
हथिनी बढ़ाई तब लाखनिने ❀ औ ताहरते लगे बतान ।
धरि देउ डोला तुम खेतनमें ❀ जो जीते सो लेय उठाय ॥
यह सुनि बढ़िगे ताहर ठाकुर ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब समुहेपर ❀ लाखनि लैगे चोट बचाय ॥
गुर्ज उठायो तब लाखनिने ❀ सो ताहर पर दियो चलाय ।
लग्यो चपेटा तब घोड़ाके ❀ ताहर घोड़ा गयो भगाय ॥
डोला उठायो लाखनिराना ❀ सो आगे को दियो बढ़ाय ।
देखि हाल यह पृथीराजने ❀ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
बोले पृथीराज लाखनिते ❀ लाखनि मानो बात हमारि ।
अबहूं लौटि जाउ कनउजको ❀ काहे देहो प्राण गंवाय ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❀ डोला यह लौटनको नाहिं ।
डोला लिये बिना जैहैंना ❀ चाहैं प्राण रहैं की जायं ॥
इतनी सुनतै पृथीराजने ❀ अपनी लीन्ही लाल कमान ।

ऊदनि लड़त रहैं मुर्चापर ❀ तिनकी परिगई तुरत निगाह ।
झपटे ऊदनि तब मुर्चाते ❀ औ सम्मुहे पर पहुँचे आय ॥
लाखनि रानाने देखो जब ❀ ऊदनि गये सनाका खाय ।
बोले ऊदनि पृथीराजते ❀ तुम सुनि लेउ धनी चौहान ॥
हाथ न डरियो तुम लाखनिपर ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
तुम्हारी बरोबरिके नाहीं है ❀ जो तुम लीन्ही लाल कमान ॥
सोचि लेउ अपने मनमें तुम ❀ सब जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❀ हौदा धरि दई लाल कमान ॥
भुरुही बढ़ाई तब लाखनिने ❀ आदि भयंकर दियो हटाय ।
हटि गयो हाथी पृथीराजको ❀ लाखनि डोला लियो उठाय ॥
जहँपर तम्बू था ब्रह्माको ❀ तहँ डोलाको दियो धराय ।
ऐसि लड़ाई भइ डोलापर ❀ सो हम लिखिके दई सुनाय ॥
हियांकि बातैं तौ हियँ छाड़ौ ❀ अब आगे की सुनौ हवाल ।
उतते आवत देखि परो तहँ ❀ माहिल चुगुलखोर सरदार ॥
बोलि उठे इन्दल ऊदनिते ❀ दादा मोहिं हुकुम दे देहु ।
जहरकी पुड़िया यहु माहिल हैं ❀ याकी कटा देउँ करवाय ॥
यहु सुनि ऊदनि बोलन लागे ❀ इन्दल सुनो हमारी बात ।
जानते मरियो नहिं माहिलको ❀ जीवन कैद देहु करवाय ॥

अथ इन्दल और माहिलकी लड़ाई

सुमिरन करिकै नारायणको ❀ लै बजरंगबलीको नाम ।
कहौं लड़ाई अब माहिलकी ❀ यारो सुनियो कान लगाय ॥
हुक्म पायके इन्दल बाघा ❀ अपने दलमें पहुँचे जाय ।
हुक्म सुनायो सब फौजनको ❀ अबहीं सजिके होउ तयार ॥
आगे आगे इन्दल चलि भये ❀ पीछे सेना चली अपार ।
इन्दल सेना लखिकै माहिल ❀ मनमें गयो सनाका खाय ॥
लिल्ली घोड़ी पर चढ़ि बैठो ❀ औ उरईको चलो बराय ।

आगे भागो जात है माहिल ❋ लिल्ली घोड़ी पै असवार ॥
पीछे पीछे इन्दल बाघा ❋ सेना सहित खदेरत जायँ ।
छक्के छूट गये माहिलके ❋ जरदी गई बदनपर छाय ॥
निश्चय जानि गयो अपने मन ❋ अब परलैके हो गये ठाट ।
जायके पहुंचो गढ़ उरईमें ❋ माहिल हुक्म दियो करवाय ॥
डंका बाजे मेरी लश्करमें ❋ देउँ इन्दलको मरवाय ।
उतते माहिलकी सेना है ❋ इतते इन्दलको है फौज ॥
अभिर गये दोनों दल समुहे ❋ खटखट चलन लगी तलवार ।
आगे बढ़िकै इन्दल बोले ❋ माहिल मेरी बात बनाउ ॥
आओ हम तुम समुहे ह्वैके ❋ पहिले करिलें दो दो बात ।
देवपालसे कहा कही थी ❋ पीछे प्रेमा लेउ छिनाय ॥
दादा कोल्हूमें पिरवायो ❋ हमपर करिया दियो चढ़ाय ।
पृथ्वी औ महुबेवालोंका ❋ तुमने नाश दियो करवाय ॥
जान न पैहो अब समुहेते ❋ चाहैं कोटिन करौ उपाय ।
इतनी सुनिकै माहिल बोले ❋ इन्दल क्यों करता बकबाद ॥
हुक्म दे दियो तब माहिलने ❋ तोपन बत्ती देउ लगाय ।
हुकुम पाइकै झुके खलासी ❋ तोपन बत्ती दई लगाय ॥
तोपैं दगन लगी दोनों दल ❋ धुअँना रह्यो सरग मंड़राय ।
गोला बाजि रहो गढ़ियापर ❋ होवै युद्ध बीच घमसान ॥
जो गढ़िया थी माहिल केरी ❋ सो करि दीन्ही पनियाढार ।
फौजैं भाग गईं उरईकी ❋ औ माहिलको लियो बँधाय ॥
एक तरफकी डाढ़ी मूछें ❋ सो इन्दलने दई मुड़ाय ।
काला मुह करिकै माहिलको ❋ गदहे ऊपर दियो चढ़ाय ॥
गांव गांव केरी गलियनमें ❋ चारौ तरफ घुमायो जाय ।
पुनि हथकड़ी पांवमें बेड़ी ❋ गलमें तौक दियो डरवाय ॥
असी हाथकी गहरी भकसी ❋ तामें कैद दियो करवाय ।

खुशी भये अपने मन इंदल ❋ जीवत यहु छूटनको नाहिं ।
फिरि सब फौज साधलै इंदल ❋ दिल्ली गढ़की पकरी राह ॥
आइके पहुँचे तहँपर जहवां ❋ घायल परे ब्रह्मा सरदार ।
हाल बतायो सब ऊदनिते ❋ ऊदनि खुशी भये मनमाहिं ॥
इहाँ लड़ाई पाछे परिगइ ❋ अब आगेको सुनो हवाल ।
आगे लड़ाई है बेलाकी ❋ सो हम कहिकै दिहैं सुनाय ॥
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❋ नित उठि लेउ नाम भगवान ।
भोलानाथ मनाय हियेमहँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान ॥

इति बेलाके गौनेकी दूसरी लड़ाई समाप्त

श्रीः

अथ बेलासे ताहरकी लड़ाई

★

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कुंडलिया

यह मानुष मन चाहना, छांड़ित नाहिं नदान।
क्षणमें राजा होत है, क्षणमें रंक समान॥
क्षणमें रंक समान, क्षणकमें पंडित भाई।
क्षणमें रोवत आपु, क्षणकमें हंसत ठठाई॥
क्षणमें मानत मोर, धाम धन बाम पियारी।
क्षणमें होत उदास, मरणकी करत तयारी॥

सवैया

ज्यो घट माटीको फूटि गयो तब, होत कहासुठि लाखके लाखे।
दांव चलाय दियो रिपुने तब, होत कहा बल पौरुष भाखे॥
धीरज छूटि गयो जबहीं तब, होत कहा हथियारके राखे।
बात गई जगमें तुलसी फिरी, होत कहा तन प्राणके राखे॥
सुमिरण करिकै नारायणको ❋ जगदम्बाके चरण मनाय।
कहौं लड़ाई अब बेलाकी ❋ शारद मोकौ होउ सहाय॥
क्यहिकी अंटापर दियनां जरै ❋ क्यहिकी फूलसे रहिये छाय।
क्यहिकी रानी अंटा बिलखै ❋ कंता रहे बिदेशा छाय॥
परद्दुलअटरियापरदियानांजरै ❋ फुलवा फूलसेज कुम्हिलाय।
कुसुमारानी अंटा बिलखे ❋ लाखनि छाय रहे परदेश॥
बेला पहुंची जब तम्बू में ❋ देखा हाल चँदेले क्यार।
बिलखन लागी रनि बेला तब ❋ औ फिरि आरति धरी उतारि॥

लिये बिजनियाँकरफूलनकी ❀ सो ब्रह्मापर करै बयारि ।
बेला रानी बोलन लागी ❀ जागौ जागौ कंत हमार ॥
मुर्छा जागी ब्रह्मानँदकी ❀ देखन लागे नैन उघारि ।
सम्मुहे ठाढे ऊदनि ठाकुर ❀ तिनते ब्रह्मा लगो बतान ॥
क्यहिकी तिरिया यह ठाढ़ी है ❀ सो तुम हमैं देउ बतलाय ।
हाथ जोरि बेला बोली तब ❀ मैं ठाढ़ी हौं नारि तुम्हारि ॥
बेटी हौं मैं पृथ्वीराज की ❀ औ बेला है नाम हमार ।
गुस्सा होइकै ब्रह्मानँदने ❀ बघ ऊदनिते कही सुनाय ॥
घटिहा राजाकी बेटी है ❀ हमको मुख दिखरायो आय ।
मारि निकारो यहि तँबुआते ❀ इतनी मानौ कही सुनाय ॥
हाथ जोरि तब बेला बोली ❀ स्वामी सुनो हमारी बात ।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❀ बैरी होइगो बाप हमार ॥
राज उठाय लियो हमरो उन ❀ हमपर रूठि गयो भगवान ।
अब जो हुक्म होय दासी को ❀ सोई करैं काम मनलाय ॥
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❀ औ बेलाते कही सुनाय ।
हमको चाहो जो रानी तुम ❀ तौ इक मानो बात हमारि ॥
शीश काटि लावो ताहरको ❀ हमरी नजरि गुजारौ आय ।
शीश देखिहैं जब ताहरको ❀ तादिन जियैं चँदेले राय ॥
हाथ जोरिके बेला बोली ❀ तुम्हरे वचन करौ परमान ।
अपना घोड़ा तुम दीजौ म्वहिं ❀ दीजौ हमहिं ढाल तलवार ॥
पाग बैंजनी अपनी दीजौ ❀ तौ हम लेहैं शीश उतारि ।
पहले जैहैं हम महुबेको ❀ लगिहैं चरण सासुके जाय ॥
शीश काटिके फिरि ताहरको ❀ तुरतै तुमहिं दिखैहैं आय ।
यह सुनि ब्रह्मा बोलन लागे ❀ अबहीं नगर महोबे जाउ ॥
पै नहिं जैयो सँग लाखनिके ❀ बदला लिहैं संयोगिनि क्यार ।
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❀ हमना जायँ कनौजी साथ ॥
थोरी उम्मिरिके ऊदनि हैं ❀ जैहौं ना ऊदनिके साथ ।

संग पठावो तुम आल्हाको ❋ इतनी मानो बात हमारि ॥
इतनी सुनतै ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै आल्हैं लियो बुलाय ।
बोले ब्रह्मानंद आल्हाते ❋ इनको महुबे देउ दिखाय ॥
बात मानिकै तब आल्हाने ❋ हथिपचशावद लियो सजाय ।
डोला मगवायो बेलाने ❋ तामें बेला भई सवार ॥
हाथो चढ़िगेनुनिआल्हा तब ❋ डोला चला बिलमदे क्यार ।
खबरि पाय यह धावन चलिभो ❋ औ पिरथीपै पहुँचो जाय ॥
करी बन्दगी पृथीराज को ❋ औ धावन यह कही सुनाय ।
आल्हा संग जात बेलाके ❋ डोला जैहैं नगर महोब ॥
चलिकै डोला छीन लेउ तुम ❋ इतनो मानौ बात हमारि ।
सुनतै बुलवायो चौड़ाको ❋ पृथीराज यह कही सुनाय ॥
डोला लिये जात आल्हा हैं ❋ सो तुम डोला लेउ छिनाय ।
डोला लैकै तुम बेटीको ❋ हमरी नजरि गुजारो आय ॥
हुक्म पायकै चौंड़ा चलि भयो ❋ लश्कर तुरत लियो सजवाय ।
जायकै घेरि लियो डोलाको ❋ औ आल्हाते कही सुनाय ॥
डोला धरिदेउ तुम बेटीको ❋ चुप्पै लौटि महोबे जाउ ।
बोले आल्हा तब चौंड़ाते ❋ तुम्हरी मति मारी भगवान ॥
बार बार घेरत डोला तुम ❋ पै नहिं चलत तुम्हारो दांव ।
डोला लौटनको नाहीं यह ❋ चाहै कोटिन करो उपाय ॥
ताते-लौटि जाउ चौंड़ा तुम ❋ नाहक रारि बढ़ाई आय ।
यह सुनि चौंड़ा गुस्सा ह्वैकै ❋ सब क्षत्रिनते कही सुनाय ॥
डोला छीनि लेउ जल्दीते ❋ औ आल्हाको देउ भगाय ।
हल्लाकरि दियो तब क्षत्रिनने ❋ अपनीं खैंचि लई तलवारि ॥
डोला घेरि लियो सबहीने ❋ खटखट चलन लगी तलवारि ।
हाथी चिंघारा जब आल्हाका ❋ सुनी अवाज कनौजी राय ॥
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ ऊदनि मानो बात हमारि ।
खबरि लै आवो तुम आल्हाकी ❋ मानौ घिरे बनाफर राय ॥

हमरे मनमें यह आवत है ❋ जल्दी जाउ उदैसिंह राय।
तुरतै ऊदनि उठि ठाढ़े भे ❋ औ घोड़ा पर भये सवार॥
नारे ककरहा के डाड़ेपर ❋ पहुँचे जाय उदैसिंह राय।
हाथी घिरो तहाँ आल्हाको ❋ ऊदनि घोड़ा दियो बढ़ाय॥
इक ललकार दई चौंड़ाको ❋ चौंड़ा खबरदार ह्वइ जाउ।
ऐंड़ लगाई रसबेंदुलके ❋ औ हौदापर पहुँचे जाय॥
ढालकि औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दियो गिराय।
मुर्छा लौटो तब चौंड़ाको ❋ ऊदनि डोला दियो बढ़ाय॥
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❋ मुर्चा हटो चौंड़िया क्यार।
लश्कर सजवायो पिरथी तब ❋ आदि भयंकर लियो सजाय॥
तापर चढ़िगे पृथीराज तब ❋ लश्कर कूच दियो करवाय।
देखो लश्कर पृथीराजको ❋ लाखनि फौज लई सजवाय॥
कूच कराय दियो जल्दी ते ❋ औ नारे पर पहुँचे जाय।
हल्ला ह्वइगै दोनों दलमें ❋ खटखट चलन लगी तलवारि॥
भई लड़ाई तहँ डोलापर ❋ हाहाकारी शब्द सुनाय।
कबहुँक डोला राजा छीनैं ❋ कबहुँक लाखनि लेय छिनायँ॥
देखि हाल यह बघऊदनिने ❋ पृथीराजते कही सुनाय।
कही हमारी अब मानो तुम ❋ ओ महराज बीर चौहान॥
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम चढ़ि रार बढ़ावत आय।
नाहक डोला तुम रोकत हो ❋ है यह तुमहिं मुनासिब नाहिं॥
डोला जैहै यहु महुबेको ❋ चाहे कोटिन करो उपाय।
जबलौं रहिहै श्वास देहमें ❋ तबलौं लड़ौं तुम्हारे साथ॥
ताते लौटि जाउ दिल्लीको ❋ इतनी मानो बात हमारि।
यह सुनि सोचे पृथीराज मन ❋ इत लरिकनते जितिहै नाहिं॥
मुर्चा फेरो पृथीराज तब ❋ दिल्ली कूच गये करवाय।
ऊदनि बोले तब आल्हाते ❋ दादा कूच जाउ करवाय॥
चलिभे डोला तब बेलाको ❋ बरइनि पुरवा पहुँचो जाय।

पूँछन लागी रनि बेला तब ❋ क्या यह महुबो परो दिखाय ॥
बोले आल्हा तब बेलाते ❋ बरइनि पुरवा परे दिखाय ।
है यह पुरवा परिमालैको ❋ रैयत बसै चन्देले केरि ॥
आगे महुबो अब देखोगी ❋ जहँ पर बसत चन्देलेराय ।
डोला पहुँचो जब महुबेमें ❋ तब आल्हाने कही सुनाय ॥
नगर महोबा अब तुम देखो ❋ यह सुनि बेला रही निहारि ।
खबरि फैलि गइ रंगमहलमें ❋ डोला आयो ब्यलमदेक्यार ॥
मल्हना आई दरवाजे पर ❋ तुरत आरती लई सजाय ।
बारह रानी चन्देलेकी ❋ सुनवा फुलवा संग लिवाय ॥
देवै आई दरवाजे पर ❋ सबने आरति धरी उतारि ।
तुरत उतारि लियो बेलाको ❋ औ महलनमें गईं लिवाय ॥
बैठि जायँ सबै आंगनमें ❋ बैठी बीच ब्यलमदे रानि ।
मुख दिखराई रनि बेलाने ❋ मल्हना दियो नौलखाहार ॥
चरण लागिकै तब बेलाने ❋ अपनो कंकन दियो उतारि ।
पूँछन लागि मल्हना रानी ❋ कैसे लगो पुत्रके घाव ॥
बोलन लागी रनि बेला तब ❋ दहिने लगे सेलको घाव ।
गांसी लागी है मस्तकमें ❋ कैबर निकरि गयो वा पार ॥
बाँये कटारी उनके लागी ❋ स्वामी जियनकेर हैं नाहिं ।
श्वासा वाकी है हिरदै महँ ❋ ब्याकुल परे चन्देले राय ॥
यहसुनि मल्हना रोवन लागी ❋ सिगरो रोय उठा रनिवास ।
क्यागति बरणौंतेहिसमयाकी ❋ हा दैयागति कही न जाय ॥
बोली बेला चन्द्रावलिते ❋ ननदी सुनो हमारी बात ।
अपने बीरनको सतखण्डा ❋ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय ॥
सुनि चन्द्रावलिउठिठाढ़ी भइ ❋ औ बेलाको चली लिवाय ।
जायके पहुँची सतखण्डा पर ❋ देखन लगी बिलमदे रानि ॥
शोभा देखि देखि अंटाकी ❋ बेला सोचि सोचि रहि जाय ।
नीचे सागर लेय हिलोरें ❋ मानो बनो इन्द्रको धाम ॥

छाई छौनी मोरपंख की ❁ झालरि लगी मोतियन केरि ।
लागे खम्बा मलयागिरिके ❁ हीरा मानिक जड़े बनाय ॥
हंस हिलोरैं वा सागरमें ❁ औ छज्जन पर नाचैं मोर ।
कलश सुबरनके अंटापर ❁ शोभा एक न बरनी जाय ॥
देखि देखि शोभा अंटाकी ❁ बेला बहुत दुखी होइ जाय ।
जियत कन्तके गौना ओतो ❁ करती कुछ दिन भोगविलास ॥
मरत समय आई महुबे हम ❁ हमरे कौन कामको राज ।
बहुत सोच कीन्हों बेलाने ❁ फिरि महलनमें पहुंची जाय ॥
बेला बोली फिरि मल्हनाते ❁ अब फुलबगिया देउ दिखाय ।
इतनी सुनते रनि मल्हनाने ❁ तुरतै डोला लिये सजाय ॥
चलिभे डोला सब रानिनके ❁ फुलबगियामें पहुंचे जाय ।
बेला पहुँची जब बगियामें ❁ देखन लागि सबै फुलवारि ॥
बीचमें बंगला था ब्रह्मा को ❁ जिसपर चढ़ी व्यलमदेरानि ।
चारौं ओरी बेला देखी ❁ नैनन बहै नीरकी धार ॥
उठैं सुगन्धैं वा बगियामें ❁ औ केवड़ाकी अजब बहार ।
फूल गुलाबी दौना मरुआ ❁ बिच बिच फूल केतकी क्यार ॥
बेला चमेलीकी बहार है ❁ शोभा देखि चित्त लहराय ।
चुरियां तोरन बेला लागी ❁ बहुतै बेला करै बिलाप ॥
मल्हना समुझावैं बेलाको ❁ बहुअर धीर धरौ मनमाहिं ।
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❁ लोहा छुवत सोन ह्वइ जाय ॥
बैठी राज्य करो महुबेमें ❁ काहे रोय रोय रहि जाउ ।
यह सुनि वेला बोलन लागी ❁ औ देवैते लगी बतान ॥
तुम्हरे बेटा आल्हा ऊदनि ❁ जिनकी जग जाहिर तलवारि ।
सुखते बैठे सो अपने घर ❁ अकिले बालम दिये पठाय ॥
उनहिं मुनासिब यह नाहीं थी ❁ हमरे कन्त दिये मरवाय ।
बोली देवै तब वेलाते ❁ नाहीं लागि लरिकवन क्यार ॥
यह सब कीन्ही माहिलराजा ❁ सो सब हाल सुनौ मनलाय ।

करिकै चुगुली उन माहिलने ❋ हमरे लरिका दै निकराय ॥
बिपतिके मारे सो भादोंमें ❋ पहुँचे गढ़ कनउजमें जाय ।
द्वारपै हाथी जैचँद छाड़े ❋ सो ऊदनिने दिये पछारि ॥
बहुत खुशी भये राजा जैचँद ❋ अपनी रिजगिरि दई इनाम ।
तहां बसे संकटके मारे ❋ फिरि माहिलके सुनो हवाल ॥
लाय चढ़ाये पृथीराजको ❋ सिरसा तुरत लियो घिरवाय ।
हाल पूँछिकै तब ब्रह्माते ❋ तहँ मरवाये बीर मलिखान ॥
फिरि घिरवायो नगरमहोबो ❋ लाये साथ बहुतसी फौज ।
आये ऊदनि तब कनउजते ❋ सङ्गै आये कनौजी राय ॥
मुर्छा माऱ्यो पृथीराजको ❋ दिल्ली लौटि गये चौहान ।
ऊदनि लौटि गये कनउजको ❋ फिरि माहिलने करो उपाय ॥
चुगुली करिकै पृथीराजते ❋ फिरिकै लाये फौज चढ़ाय ।
सब घिरवायो नगर महोबो ❋ बिपदा कछू कही ना जाय ॥
तब यह जतन करी मल्हनाने ❋ जगनायक को दियो पठाय ।
आल्हा ऊदनिको बुलवायो ❋ आये सङ्ग कनौजी राय ।
धनि धनि बेटा रतीभानको ❋ लाखनिराना जिनको नाम ।
समुहे लड़िकै नदिबितवैपर ❋ पृथीराजको दियो हटाय ॥
फिरिकै आये माहिल राजा ❋ औ राजाते कही सुनाय ।
बीरा धरवावौ गौनेकी ❋ औ गौनेको लेउ करवाय ॥
बीरा धरायो तब राजाने ❋ सो ऊदनिने लियो उठाय ।
सीख मानिकै तब माहिलकी ❋ ब्रह्मा बीरा लियो छिनाय ॥
करी तयारी बघऊदनिने ❋ ब्रह्मा बन्द दई करवाय ।
माहिल भूपति तू मरिजैयो ❋ उरई परै इन्द्रकी गाज ॥
वंश नसैबेको लागे थे ❋ सो करिदई वंशकी हानि ।
लाग हमारी कछु नाहीं है ❋ यह सब कर्म माहिला क्यार ॥
बोली बेला तब देवैते ❋ हम पर रूठि गयो भगवान ।
लेख बिधाताको जैसे था ❋ ताको कौन मिटावनहार ॥

सागर बंगला जो स्वामीको ❀ सो हम अबहीं देखिहैं जाय ।
तुम बुलवाय लेउ आल्हाको ❀ तब देवैने लियो बुलाय ॥
आये आल्हा रंगमहलनमें ❀ तब बेलाने कही सुनाय ।
सागर बंगला जो बालमको ❀ सो तुम हमहिं देउ दिखलाय ॥
तुरतै त्यार भये आल्हा तब ❀ संगै चली ब्यलमदे रानि ।
पहुँची बेला जब सागर पर ❀ चन्दन नाव लई मंगवाय ॥
चढ़िगइ बेला त्यहि नौकापर ❀ औ बंगलाको गइ नियराय ।
उतरी बेला तब नौकाते ❀ औ बंगलामें पहुंची जाय ॥
शोभा देखै बेला रानी ❀ औ मन मोहि मोहि रहिजाय ।
चौपरि दीख एक ताखेमें ❀ सो बेलाने लई उठाय ॥
बोली बेला तहँ आल्हाते ❀ आवौ देवकुंवरिके लाल ।
पंसासारी हम तुम खेलें ❀ आल्हा बैठि गये चुपसाधि ॥
अंचल खोलि दियो बेलाने ❀ देखिकै आल्हा गये निहारि ।
रूप धरचो बेला डाइनिको ❀ औ आल्हा तन रही लजाय ॥
लैकै खांडा तब आल्हाने ❀ औ बेलाते लगे बतान ।
धर्मकी माता हमरी लागौ ❀ तुमते हम डरपनके नाहिं ॥
असल रूप धरि तब बेलाने ❀ नुनि आल्हाते कही सुनाय ।
हमने जानि लियो अपने मन ❀ सांचे दस्सराजके लाल ॥
पाप कछू नहिं है तुम्हरे मन ❀ हौ तुम धर्मराज औतार ।
यहु कहि बेला उठि ठाढ़ी भइ ❀ औ नौकामें बैठी जाय ॥
नाव पार आई सागरके ❀ तब डोलीमें बैठी जाय ।
जितने ताल हते महलनमें ❀ देखे सबै बनाफर राय ॥
आई बेला रङ्गमहलमें ❀ औ मल्हनाते कही सुनाय ।
आज्ञा दै देउ अब माता तुम ❀ सेवा करौं स्वामिकी जाय ॥
मल्हना बोली तब बेलाते ❀ बहुअर मानौ कही हमारि ।
राज्य करौ तुम गढ़ महुबेमें ❀ रैयत मनिहै हुक्म तुम्हार ॥
बोली बेला तब मल्हनाते ❀ हमरे मनमें नहीं समाय ।

जीवत गौनो हमरो औतो ❁ तौ हम करतीं भोग विलास ।
नहीं भरोसा है स्वामीका ❁ हैं सब वृथा राज धनधाम ॥
सेवा करिहौं जाय कन्तकी ❁ अपने जन्म सुफलके काज ।
हो तो कुँअना तौ पटि जातो ❁ केहि विधि समुद्र पटायो जाय ॥
ना कोउ बेटा और तुम्हारे ❁ जो हम करैं ताहिकी आस ।
झांझरि नैया मोरि डोलति है ❁ को यह खेइ लगैहै पार ॥
उमिरि हमारी यह बारी है ❁ ना नैननकी छूटी लाज ।
जब सुधि ऐहै मोहि स्वामीकी ❁ तब हम करिहैं कौन उपाय ॥
मेघ गरजिहै सावन भादौ ❁ रहिहै रैन अंधेरिया छाय ।
बिरह सतैहै सतखण्डापर ❁ जियरा हूकि हूकि रहिजाय ।
पिउ पिउ पपिहा बोली बोलिहै ❁ हम पर बोल सहे ना जायँ ॥
ताते माता आज्ञा दैदेउ ❁ अब ना राखौ देर लगाय ।
हमें हुक्म दीन्हों स्वामीने ❁ लावौ शीश शत्रुका जाय ॥
शीश काटि अब हम ताहरको ❁ सो स्वामीको दिखैहैं जाय ।
देखत शीश जियैं स्वामी जो ❁ तौ बनि जैहैं काम हमार ॥
इतनी सुनिकै रानि मल्हनाने ❁ तुरतै हुक्म दियो फरमाय ।
चरण लागिकै तब मल्हनाके ❁ बेला कूच दियो करवाय ॥
आल्हा चले संग बेलाके ❁ बेला सिरसा पहुंची जाय ।
देखिकै चौरा गजमोतिनिकी ❁ बेला उतरि परी अरगाय ॥
पूजा करिकै हाथ जोरि तब ❁ विनती करी ब्यलमदे रानि ।
आभा बोली गजमोतिनिकी ❁ काहे भरम गँवायो आय ॥
माहिल मामा बैरी ह्वइगे ❁ हमरे दीन्हे कन्त मराय ।
सत्त हमें ब्रह्माने दीन्हों ❁ हम जरि मरीं कन्तके साथ ॥
गढ़ दिल्लीते औ महुबेलौं ❁ होइहैं सबैं सुहागिनि रांड़ ।
धरती रक्तबरन ह्वइहै सब ❁ हमरे वचन करौ परमान ॥
यह सुनि बेला रोवन लागी ❁ औ आभाते कही सुनाय ।

हमहूँ रँड़िया वा दिन ह्वइगइँ ❀ जूझे जादिन कन्त हमार ।
बहुत आसरा था मोहू को ❀ सिरसा बसत बीर मलिखान ॥
सो यह सिरसा सूनो होइ गयो ❀ देखत छाती फटै हमारि ।
यह कहि पैकरमा कीन्हीं तब ❀ औ चलि भई ब्यलमदेरानि ॥
बेला पहुँचि गईं तम्बूमें ❀ लागी तुरतै करन बयारि ।
मूर्छा जागी ब्रह्मानंदकी ❀ औ बेला पर परी निगाह ॥
बोले ब्रह्मा तब बेलाते ❀ कहं तुम लाईं शीश उतारि ।
बोली बेला तब ब्रह्माते ❀ हम हो आईं नगर महोब ॥
लाय शीश अब हम ताहरको ❀ तुमको बेगि दिखैहैं आय ।
यह कहि चलि भइ बेला रानी ❀ लश्कर डंका दियो बजाय ॥
लश्कर सजवायो ब्रह्माको ❀ अपना सजिकै भईं तयार ।
लांग चढ़ाय लईं लहँगाकी ❀ बेला कमर कसी तत्काल ॥
पहिर पैजामा मिसरूवाला ❀ जामा पहिरि दुदामी क्यार ।
पटुका बांधि लियो ऊपरते ❀ शिरपर बांधि बैजनी पाग ॥
दुइ पिस्तौलैं अगलबगलपर ❀ दहिने सिंहिनी मूठि कटार ।
बारह छुरियां कम्मर बांधी ❀ बेला दुइ बांधी तलवारि ॥
कलँगी लागी मोती चूरकी ❀ हीरा चमकि चमकि रहिजाय ।
टोप झलरिया धरि माथेपर ❀ बायें भुजा गैड़की ढाल ॥
भेष मर्दको बेला धरिकै ❀ दोनों नैना लियो ऊघारि ।
घोड़ा सजवायो हरनागर ❀ बेला फांदि भई असवार ॥
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❀ हमहूँ चलैं तुम्हारे साथ ।
बोली बेला तब ऊदनिते ❀ तुम तम्बूमें रहो हुशियार ॥
काम बनैहैं हम स्वामीको ❀ अबहीं लैहैं शीश उतारि ।
यह कहि चलिभइ बेला रानी ❀ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर पहुँचो जब बागनमें ❀ तहँपर डेरा दियो लगाय ।
लैकै कागद कलपीवालौ ❀ अपनो कलमदान लै हाथ ॥
लिखी हकीकत बेलारानी ❀ पढ़ियो याहि बीर चौहान ।

बेटी तुम्हारी गइ महुबेमें ❋ हमको ताने दियो जियाय ॥
अधकर बाकी जो गौनेको ❋ सो तुम तुरत देउ पहुँचाय ।
अधकर देहौ जो नाहीं तुम ❋ ठाढ़े दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
यहिविधिचिट्ठी लिखी बेलाने ❋ सो धावनको दई गहाय ।
लैकै पाती धावन चलि भयो ❋ औ दिल्लीमें पहुंचो जाय ॥
जहां कचहरी दिल्लीपतिकी ❋ धावन उतरि परी अरगाय ।
करी बंदगी पृथीराजको ❋ पाती गही दई चलाय ॥
नजरि बदलि गइ पृथीराजकी ❋ तुरतै पाती लई उठाय ।
खोलिके पाती जबहीं बाची ❋ पिरथी गये सनाका खाय ॥
तुरतै बुलवायो ताहरको ❋ औ ताहरते कही सुनाय ।
बेला पहुँचि गयी महुबेमें ❋ औ ब्रह्माको दियो जिआय ॥
आये ब्रह्मा हैं लश्कर लै ❋ गौनेको अधकर रहे मँगाय ।
लावौ खबरि जाय ब्रह्माकी ❋ अबहीं कूच जाउ करवाय ॥
सुनतै ताहर उठि ठाढ़े भै ❋ औ लश्करमें पहुँचे जाय ।
तुरत सजाय लियो लश्कर सब ❋ मारू डंका दियो बजाय ॥
घोड़ा दलगंजन सजवायो ❋ तापै चढ़े पिथौरालाल ।
पांव धरतही काहू छींको ❋ तब चौंड़ाने कही सुनाय ॥
तुम ना चलौ साथ लश्करके ❋ ताहर बैठि रहो चुपसाधि ।
खबरि लै ऐहैं हम ब्रह्माकी ❋ तुम ना चलो हमारे साथ ॥
यह सुनि ताहर बोलन लागे ❋ ब्राह्मण सुनौ हमारी बात ।
सगुन चाहिये उनबनियनको ❋ जो धरिमौर विवाहन जायँ ॥
सगुन चाहिये ना क्षत्रिनको ❋ जो रण चढ़िकै लोह चबायँ ।
यह कहि ताहर चढ़ि घोड़ापर ❋ लश्कर कूच दियो करवाय ॥
लश्कर आयो रण खेतनपर ❋ ताहर घोड़ा दियो बढ़ाय ।
बोले ताहर आगे चढ़िकै ❋ कोयह लश्कर लायो चढ़ाय ॥
बोली बेला तब ताहरते ❋ गौनेको अधकर देउ मगाय ।
तौ हम लौटि जायं महुबेको ❋ अबहीं सबै रारि मिटिजाय ॥

ताप्रर ज्वाब दियो ताहरने ❀ काहे प्राण गँवाये आय ॥
कही हमारी ब्रह्मा मानौ ❀ चुप्पे लौटि महोबे जाउ ।
बोली बेला तब ताहरते ❀ ताहर सुनौ हमारी बात ॥
बहिनि तुम्हारीने भेजा है ❀ गौनेको अधकर लावौ जाय ।
सो तुम देदेउ हँसी खुशीते ❀ नाहीं दिल्ली लिहौं लुटाय ॥
बोले ताहर तब ब्रह्माते ❀ ब्रह्मा चलौ हमारे साथ ।
भोजन करिहौं जब हमरे सँग ❀ तब हम अधिकर दिहैं मँगाय ॥
बोली बेला तब ताहरते ❀ हौ तुम दगाबाज जल्लाद ।
बात तुम्हरी हम मनिहैं ना ❀ ना हम जायँ तुम्हारे साथ ॥
ठौर मँगाय देउ अधकर तुम ❀ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
बातन बातन बतबढ़ ह्वइगी ❀ औ बातनमें बाढ़ी रारि ॥
गुस्सा ह्वइकै ताहर बोले ❀ औ क्षत्रिनते कही सुनाय ।
बत्ती देदेउ सब तोपनमें ❀ इन सबहुनको देउ उड़ाय ॥
बत्ती दैदेइ सब तोपनमें ❀ धुअँना रह्यो सरग मँडराय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❀ तोपैं चलन लगी तत्काल ॥
अररर गोला छूटन लागे ❀ गोली मन्न मन्न मन्नायँ ।
गोली बरसे तीनि घरी भरि ❀ तोपैं लाल बरन ह्वइजाय ॥
तोपैं छोड़ि दई ज्वानननें ❀ लम्बे बन्द करे हथियार ।
खैंचि शिरोही लेइ क्षत्रिनने ❀ खटखट चलन लगी तलवारि ॥
क्यागतिवरनोंत्यहिसमयाकी ❀ बेला बीर रूप ह्वइजाय ।
अकिली बेलाकी धमकिनमें ❀ कोऊ कुँवर न आड़ै पांव ॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❀ अपने डारि डारि हथियार ।
यह गति देखी जब ताहरने ❀ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई ताहरने ❀ ब्रह्मा खबरदार होइ जाउ ।
खैंचि शिरोही लइ ताहरने ❀ सो बेलापर दई चलाय ॥
ढाल अड़ाई तब बेलाने ❀ औझड़ लगी हाथमें जाय ।

कटि अस्तीन गई जामाकी ❀ चुरियां खुली ब्यलमदे क्यार ॥
देखि हाल यहु तब चौंड़ाने ❀ यह ताहरते कही सुनाय ।
हाथ चलैयो ना बेलापर ❀ है आगे यह बहिनि तुम्हारि ॥
सुनत दुचित्ते ताहर ह्वइगे ❀ बेला घोड़ा दियो बढ़ाय ।
खैंचि शिरोही लइ बेलाने ❀ औ ताहर पर दई झुकाय ॥
शीशकाटि लीन्हो ताहरको ❀ अपनो मुर्चा दियो हटाय ।
कूच कराय दियो तुरतै तब ❀ औ ब्रह्मापै पहुंची जाय ॥
चौंड़ा आयो गढ़ दिल्लीमें ❀ जहंदरबार पिथौरा क्यार ।
हाल सुनायो सब बेलाको ❀ सुनि सब गये सनाका खाय ॥
पृथीराज मनमें घबराने ❀ पहुंची खबरि महलमें जाय ।
हाहाकार परो महलनमें ❀ अगमा रोय रोय रहि जाय ॥
अगमा रानी बहुतै विलखै ❀ लैलै सब लरिकनके नाम ।
याही दिनको बेला जन्मी ❀ ज्यहि करि दई वंशकी हानि ॥
खूनकि प्यासी यह बेला है ❀ कैसे लेय नीर का धार ।
पानी दिवैया कोई रहिगोना ❀ दिल्ली दियना गयो बुझाय ॥
सिगरी रैयत रोवन लागी ❀ लैलै नाम ब्यलमदे क्यार ।
याही दिनको तुम उपजी थी ❀ जो करि दई वंशकी हानि ॥
पूरि लड़ाई भई बेलाकी ❀ सो हम कहिकै दई सुनाय ।
आगे लड़ाई है चन्दनकी ❀ ऊदनि बगिया लाये कटाय ॥
सो हम कहिके तुमहिं सुनैहैं ❀ यारौ सुनियो कान लगाय ।
समयपाय तुम आल्हा गाऔ ❀ नित उठिनाम लेउ भगवान ॥
भोलनाथ मनाय हिये महँ ❀ सीता राम क्यार धरिध्यान ।

इति बेला और ताहरकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

चंदन बगिया कटानेकी लड़ाई

★

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

सवैया

ज्ञान घटै खलसंगतिते अरु, नीर घटै ऋतु ग्रीषम आये।
पाप घटै कछु पुण्य किये अरु, रोग घटै कछु औषधि खाये॥
प्रीत घटै नित मांगनते अरु, रोष घटै मनके समझाये।
नारि प्रसंगते जोर घटै, यमत्रास घटै हरिके गुण गाये॥२॥

बिपति बसेरा सब काहूको ❀ यारौ बिपति परै संसार।
इक दिन परिगो रामचन्द्रपर ❀ बनमें हरी निशाचर नारि॥
सोइ दिन परिगो परिमालैपर ❀ जूझे ब्रह्मा राजकुमार।
कहौं लड़ाई अब बगियाकी ❀ यारौ सुनौ सुमिरि करतार॥
शीश काटि लाई ताहरको ❀ सो थारामें तुरत धराय।
जायकै पहुँची ब्रह्मानँदपै ❀ बेला ठाढ़ी करै बयारि॥
बार बार तकि मुखस्वामीको ❀ बेला रानी कहै पुकारि।
जागौ जागौ स्वामी मेरे ❀ मैं ठाढ़ी हौं नारि तुम्हारि॥
शीश काटि लाई ताहरको ❀ सो तुम देखो नैन उघारि।
जागी मूर्छा ब्रह्मानँद की ❀ औ बेला तन रहे निहारि॥
देखा शीश जबहिं ताहरको ❀ तब बेलाते लगे बतान।
डाहु बुझाय गयो छातीको ❀ जो तुम बैरी दियो गिराय॥
तुम्हरे देखत अब सुखते हम ❀ अपने देहै प्राण गँवाय।
मनसा हमरी पूरन ह्वइ गइ ❀ रानी सुनो हमारी बात॥
जो इच्छा होय राजपाटकी ❀ तो महुबेको करौ पयान।

होवै प्यारो जो नैहर यहु ❋ तौ दिल्लीमें बैठो जाय ॥
साथ हमारो जो चाहो तुम ❋ हमरे संग सती ह्वइ जाउ ।
इतनी कहिके ब्रह्मानँदने ❋ तुरतै दीन्हे प्राण गँवाय ॥
देखि हाल यह बेलारानी ❋ भुँइमें गिरी तड़ाका खाय ।
कारन करि करि रोवन लागी ❋ बहुतै लागी करन बिलाप ॥
लटैं उखारै चुनरी फारै ❋ दांतन पहुँचा लगी चबान ।
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ बेड़ा कौन लगैहैं पार ॥
नातो छूटि गयो नैहरते ❋ ससुरे रही अँधेरिया छाय ।
जो हम जनतीकी मरिजैहैं ❋ क्यों भैयाको मरती जाय ॥
यहिविधि बेला बहुतै विलापै ❋ सो दुख कछू कह्यो ना जाय ।
सोचै बेला अपने मनमें ❋ अब मैं सती होउँ पिय साथ ॥
बेला बुलवायो ऊदनिको ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ।
ह्वइहौं सती सँग स्वामीके ❋ चन्दन बगिया लाओ कटाय ॥
बोले ऊदनि तब बेलाते ❋ चहुँदिशि फौज पिथौरा क्यार ।
कही हमारी तासे मानो ❋ बैठी राज्य करो महरानि ॥
गुस्सा ह्वइके बघ ऊदनिते ❋ रनि बेलाने कही सुनाय ।
जल्दी जावौ तुम चन्दनको ❋ नाहीं तुरतै दिहौं सराप ॥
यह सुनि घबराने ऊदनि तब ❋ औ लाखनिते कही सुनाय ।
चन्दन मांगति है बेला अब ❋ ह्वइहैं सती कंतके साथ ॥
चलौ साथ हमरे दिल्लीको ❋ चन्दन बगिया लेयँ कटाय ।
यहकहिचलिभेलाखनिऊदनि ❋ लश्कर तुरत लियो सजवाय ॥
कूच कराय दियो नारेते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ।
चन्दन बगिया तुरत कटाई ❋ सो छकरनमें लई भराय ॥
माली खबरि करी राजाको ❋ ऊदनि बगिया लई कटाय ।
चौंड़ा धांधूको बुलवायो ❋ औ यह कही वीर चौहान ॥
चन्दन बगिया ऊदनि कटाई ❋ सो तुम चन्दन लेउ छँड़ाय ।
फौज सजाय जाउ जल्दी तुम ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥

यह सुनि चौंड़ा धांधूचलिभे ❋ सिगरोलश्कर लियो सजाय ॥
कूच कराय दियो चौंड़ाने ❋ औ छकरनको लियो घिराय ।
हाथी बढ़ाय दियो चौंड़ाने ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
काहे बगिया तुम कटवाई ❋ सो तुम हमहिं देउ बतलाय ।
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ ह्वइहै सती बिलमदे रानि ॥
हुक्म मानिकै हम बेलाके ❋ चन्दन बगिया लई कटाय ।
फिरिकै चौंड़ा बोलन लागो ❋ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ॥
जान न देहैं हम चन्दन लै ❋ चाहे लाखन करो उपाय ।
बोले ऊदनि तब गुस्सा ह्वइ ❋ नाहक रारि बढ़ाई आय ॥
अपने दुसरिहा हम राखो ना ❋ दूजी करै हमारे साथ ।
गुर्ज उठायो तब चौंड़ाने ❋ सो ऊदनिपर दियो चलाय ॥
हटि गयो घोड़ा बघऊदनिको ❋ नीचे गुर्ज गिरो अर्राय ।
ऐड़ लगाई रस बेंदुलके ❋ औ मस्तकपर बाजी टाप ॥
ढालकी औझड़ ऊदनि मारी ❋ सोने कलशा दिये गिराय ।
हाथी भागि चलो चौंड़ाका ❋ मुर्चा हटा चौंड़िया क्यार ॥
बीकानेरी बीजैसिंह ने ❋ चन्दन छकरा लिये घिराय ।
लाखनि भेजेहिरसिंहबिरसिंह ❋ तुम छकरनको लेउ छोड़ाय ॥
इतनी सुनते दोनों झपटे ❋ बिजयसिंहको दइ ललकार ।
ह्वइगयो झुरमुट तहँ दोनोंको ❋ हौदा चली विषम तलवारि ॥
हिरसिंह बिरसिंह दोनों जूझे ❋ लाखनि देखि गये घबराय ।
तुरत बुलाय लियो गंगाको ❋ औ लाखनिने कही सुनाय ॥
मामा जाओ तुम जल्दीते ❋ औ छकरनको लेउ छँड़ाय ।
हाथी बढ़ायो तब गंगाने ❋ बिजयसिंहको दइ ललकार ॥
छकरा छिनवाये जल्दीते ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका बिजैसिंहपर ❋ औ धरती पर दियो गिराय ॥
यह गति देखी हीरामनिने ❋ जो चरखारीके सरदार ।
भाला मारो तब गंगाके ❋ गंगा लैगै चोट बचाय ॥

लियो गुर्ज तब गंगा ठाकुर ❋ हीरामनिपर राखौ जाय ।
जूझे हीरामनि तुरतै तब ❋ छकरा आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही तब दिल्लीके ❋ सबके मारु मारु रटि लागि ।
बढ़े महोबिया वीररूप ह्वै ❋ दोनों हाथ करैं तलवारि ॥
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ औ मुर्चा ते गये बराय ।
चौंड़ा धांधू दोनों चलि भये ❋ मुर्चा हटो पिथौरा क्यार ॥
लैकै छकरा लाखनि ऊदनि ❋ जमुनापार पहूँचे आय ।
जहँ पर तम्बू ब्रह्मानँदको ❋ तहँ सब छकरा दौं पहुँचाय ॥
डेरा डारि दिये बागनमें ❋ फटैं छुटीं सिपाहिन केरि ।
जीन उतरिगै सब घोड़नकी ❋ हाथिन हौदा धरे उतारि ॥
बोले ऊदनि तब लाखनिते ❋ बेलहि खबरि सुनावो जाय ।
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ जल्दी हाल सुनावो जाय ॥
यह सुनि चलिभे ऊदनि ठाकुर ❋ औ बेलापै पहुँचे जाय ।
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ चन्दन बगिया लाये कटाय ॥
यह सुनि चलिभइ बेलारानी ❋ औ छकरनपै पहुँची आय ।
देखिकै चन्दन बेला बोली ❋ गीलो चन्दन लाये लदाय ॥
चिता न जरिहैं या चन्दनते ❋ सूखो चन्दन लावो जाय ।
बोले ऊदनि हाथ जोरिकै ❋ औ बेलाते कही सुनाय ॥
चन्दन सूखो है कनउजमें ❋ सो हम तुमहि देयँ मँगवाय ।
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❋ तौलौं सत्त रहनको नाहिं ॥
लावो चन्दन तुम दिल्लीते ❋ जहँ है पृथीराज दरबार ।
बारह खम्भा हैं चन्दनके ❋ लावौ जाय अबहिं उखराय ॥
यह सुनि तड़पे ऊदनि बाकुड़ा ❋ औ बेलाते लगे बतान ।
बात सम्हारि कहौ बेला तुम ❋ है ना भारू प्राण हमार ॥
गुस्सा होइ तब बेला बोली ❋ अब हम जान लई सतिभाव ।
देखि रूप हमरो मोहे तुम ❋ हमरे कंत दिये मरवाय ॥
देखिकै पारस तुम महुबेमें ❋ अकिले बालम दिये पठाय ।

काम तुम्हारो पूरन होइगौ ❀ सिगरी मनसा फली तुम्हारि ।
यह ना जनियो तुम अपने मन ❀ बेला भई निरासिनि रांड ॥
दिल्ली गढ़ते औ महुबेलों ❀ होइहैं सबै सुहागिन रांड ।
पायल बजिहैं ना पलंगापर ❀ होय न बिछुवनकी झनकार ॥
घर घर महुबो आठ दिनामें ❀ होइहैं सिगरो नगर निराश ।
बीस दिना केरे अरसामें ❀ दिल्ली परे बज्रकी गाज ॥
बाकी रहे पांच दिन सतके ❀ जल्दी कूच जाउ करवाय ।
चन्दन खंबा न मिलिहै जो ❀ तौ सब जैहैं काम नशाय ॥
यह सुनि चलिभे ऊदनि बांकुड़ा ❀ औ लाखनिपै पहुँचे जाय ।
करी बन्दगी तब लाखनिको ❀ औ सब हाल कह्यो समुझाय ॥
सो सुनि चलिभे लाखनि राना ❀ संगै आये उदैसिंह राय ।
आये लाखनि जब बेलापै ❀ तब बेलाते कही सुनाय ॥
सती न होवौ बेला रानी ❀ महुबे करो राजको काज ।
आज्ञा मनिहैं हम तुम्हरी सब ❀ सेवा करैं बनाफर राय ॥
पारस पूजा है तुम्हरे घर ❀ लोहा छुवत सोन ह्वइजाय ।
तापर ज्वाब दियो बेलाने ❀ हमरे मन यहु नाहिं समाय ॥
मन नहिं मानत समझायेते ❀ हमको सत्त दियो भगवान ।
ह्वइहौं सती साथ स्वामीके ❀ हमरो जन्म सुफल होइ जाय ॥
या लै आवो चंदन खंभा ❀ नातर छोरि धरौ हथियार ।
इतनी सुनते लाखनि बोले ❀ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
अब तुम त्यार होउ जल्दीते ❀ शिरपर काल पहूँचो आय ।
चन्दन खम्भा हम तुम लैहैं ❀ या तहँ देहैं प्राण गँवाय ॥
आगे लड़ाई है खंभनकी ❀ सो हम कहिकै दिहैं सुनाय ।
आल्हा गावौ समय पाय तुम ❀ औ नित नाम लेउ भगवान ॥
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीताराम क्यार धरि ध्यान ।

इति चन्दन बगियाकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

चन्दनखम्भ उखाड़नेकी लड़ाई

*

दोहा-सदा भवानी दाहिनी, सम्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सुमिरन करिकै रामचन्द्रको ❋ लै बजरंगबलीको नाम ॥
कहौं लड़ाई अब खंभनकी ❋ यारो सुनौ छांड़ि सब काम ।
राम चले गये बनोवासको ❋ दशरथ दीन्हें प्राण गँवाय ॥
सीतहिं हरिलीन्हो रावणने ❋ प्रभुपर विपति परी बन आय ।
तैसेइ विपति परी बेलापर ❋ ब्रह्मा दीन्हें प्राण गँवाय ॥
छांड़ि आसरा जिंदगानीको ❋ लाखनि और उदयसिंहराय ।
करी तयारी तब खंभनकी ❋ लश्कर सबै लियो सजवाय ॥
कूच कराय दियो जल्दीते ❋ औ दिल्लीमें पहुँचे जाय ।
डेरा डारि दियो धूरेपर ❋ तुरतै तम्बू दिये तनाय ॥
गाड़ि निशाना दै लश्करके ❋ झण्डन रही लालरी छाय ।
लाखनि बुलवायो राजा सब ❋ औ सब शूर लिये बुलवाय ॥
ढेबा जगनिक धनुआं तेली ❋ लला तमोली पहुँचो आय ।
आये राजा गांजरवाले ❋ तिनते लाखनि लगे बतान ॥
छांड़ि आसरा जिंदगानीको ❋ अपनो माया मोह बिसराय ।
धावा मारो तीन गोल ह्वइ ❋ चन्दन खम्भ लेउ खुदवाय ॥
सुनतै धाये तीन गोल ह्वइ ❋ पहुँचे शूर राजदरबार ।
बारह खम्भा मलयागिरिके ❋ सो उखराय लिये लदवाय ॥
मिली खबरि जब बीरभुगन्तै ❋ रमया दानव लियो बुलाय ।
लाख सवार साथ लीन्हें सब ❋ तुरतै धावा दियो कराय ॥
खंभा घेरि लिये दोनोंने ❋ औ आगे बढ़ि कही सुनाय ।

बीर भुगन्ताने ललकारो ❋ किसने खंभ लिये उखराय ॥
कालबिराजत है क्यहिके शिर ❋ सो समुहे ह्वै देय जवाब ।
घोड़ा बढ़ायो तब ऊदनिने ❋ बीर भुगन्ता दियो जवाब ॥
खंभ मंगाये रनि बेलाने ❋ अपने सती होनेके काज ।
तब हम खंभा यह उखराये ❋ है यह काज ब्यलमदे क्यार ॥
काम हमारो ना अटको कछु ❋ तुम क्यों रारि बढ़ाई आय ।
गुस्सा ह्वइ तब बीर भुगन्ता ❋ सब क्षत्रियनते कही पुकारि ॥
जान न पावैं महुबेवाले ❋ सबकी कटादेउ करवाय ।
हल्ला करिदौ सब क्षत्रिनने ❋ अपनी खैंचि खैंचि तलवारि ॥
खट खट तेगा बाजन लाग्यो ❋ जूझन लगे सुघरुवा ज्वान ।
रमया दानौ शूर युद्धमें ❋ बहुतै विषम करै तलवारि ॥
लोथै गिरन लगीं लोथिनपै ❋ सबके मारु मारु रट लागि ।
राजा अंगद आगे बढ़िकै ❋ चंदन खंभा लिये घिराय ॥
लाखनि भेजा जब परशूको ❋ चंदन खंभा लेउ छुड़ाय ।
बढ़िकै परशूने ललकारो ❋ अंगद खैंचि लई तलवार ॥
करी जड़ाका जब परशूपर ❋ परशू लीन्हीं चोट बचाय ।
खैंचि शिरोही लइ परशूने ❋ सो अङ्गद पर दई चलाय ॥
अङ्गद जूझि गये खेतनमें ❋ वीर भुगन्ता बढ़ो अगार ।
भाला मारि दियो परशूके ❋ परशू जूझि गये मैदान ॥
बोले लाखनि तब ऊदनिते ❋ ऊदनि खंभा लेउ छिनाय ।
खंभा जैहैं जौ दिल्लीको ❋ तौ जग ह्वइहै हंसी हमारि ॥
तापर ज्वाब दियो ऊदनिने ❋ दादा धीर धरौ मन माहिं ।
घोड़ा बढ़ायो बघऊदनिने ❋ बीर भुगन्तै दई ललकार ॥
झुरमुटह्वइगौ तहं दोनोंको ❋ तुरतै ऊदनि दियो भगाय ।
आगे बढ़िगौ रमया दानौ ❋ औ ऊदनिते कही सुनाय ॥
खबरदार रहियो घोड़ापर ❋ तुम्हरो काल पहूंचो आय ।
खैंचि शिरोही लइ मायाने ❋ सो ऊदनि पर दई चलाय ॥

चोट बचाय लई ऊदनिने ❁ अपनो दीन्हो गुर्ज चलाय ।
गुर्जके लागत रमया जूझो ❁ ऊदनि छकरा दिये बढ़ाय ॥
भुरुही दाबे लाखनि आये ❁ घेरो महल पिथौरा क्यार ।
बदला लेहौं संयोगिनिको ❁ तब छातीको डाहु बुताय ॥
बोले जगनिक तब लाखनिते ❁ यह ना कहो कनौजीराय ।
जैसे हमको मल्हना राना ❁ तैसेइ हमहिं अगमदे रानि ॥
नाम न लीजो तुम अगमाको ❁ नहिं सब जैहैं काम नशाय ।
तौलौं आये ऊदनि ठाकुर ❁ सो जगनिकते लगे बतान ॥
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं है ❁ दूजी करौ कनौजीराय ।
ऊदनि समुझायो जगनिकको ❁ ओ लाखनिते कही सुनाय ॥
धीरज राखो तुम अपने मन ❁ अबहीं डोला लेउ खँदाय ।
यह कहि चलिभये ऊदनि ठाकुर ❁ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
सूरति देखी जब ऊदनिकी ❁ अगमा बहुत गई घबराय ।
बोली अगमा बघ ऊदनिते ❁ तुम सुनि लेउ उदैसिंहराय ॥
हाथ चलैयो ना काहूपर ❁ तुमतौ लरिका लगो हमार ।
बोले ऊदनि हाथ जोरि तब ❁ माता सुनौ हमारी बात ॥
लाखनि विचले हैं द्वारेपर ❁ बदला लिहैं संयोगिनि क्यार ।
कही हमारी माता मानो ❁ बांदीको डोला देउ सजाय ॥
इतनी बात सुनी अगमाने ❁ तुरतै डोला दियो सजाय ।
डोला लैकै ऊदनि चलि भये ❁ दरवाजेपर पहुँचे आय ॥
बोले ऊदनि तहँ लाखनिते ❁ दादा मानौ कही हमारि ।
परन तुम्हारो पूरो ह्वैगौ ❁ डोला आयो अगमदे क्यार ॥
डोला फेरि देउ अपनो करि ❁ तुम्हरो नाम होय संसार ।
बात मानि लइ तब ऊदनिकी ❁ लाखनि डोला दियो फिराय ॥
बेंडा लश्कर पृथीराजको ❁ बिसहिनि जीति पहूँचो आय ।
सुनी खबरि यह पृथीराजने ❁ ऊदनि खंभ लिये उखराय ॥
साथमें आये लाखनि राना ❁ लश्कर साथ कनौजी क्यार ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❁ चौड़ा धांधू लियो बुलाय ॥

हुक्म दैदियो तिन दोनोंको ❀ चन्दन खंभा लेउ छिनाय ॥
हाथी बढ़ायो तिन दोनोंने ❀ आगे लश्कर दियो बढ़ाय ।
आदि भयंकर झूमत आवै ❀ बैठे शब्दवेधि चौहान ॥
बोले पृथीराज आगे बढ़ि ❀ किसने खम्भा लियो उखारि ।
करी बन्दगी तब ऊदनिने ❀ औ समुहे ह्वइ दियो जवाब ॥
हुक्म पायकै रानि बेलाका ❀ हमने खम्भा लियो उखारि ।
काज हमारो ना अटको कछु ❀ है यह काज ब्यलमदे क्यार ॥
फिरिकै पिरथी बोलन लागे ❀ ऊदनि लौटि महोबे जाउ ।
खंभ न पैहौ तुम हमरे यह ❀ नाहक देहौ प्राण गँवाय ॥
बोले ऊदनि तब राजाते ❀ अब ना मिलिहैं खम्भ तुम्हार ।
पृथीराज बोले धांधूते ❀ चन्दनखम्भा लेउ छिनवाय ॥
हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❀ चन्दन खम्भा लिये घिराय ।
बोले लाखनि तब धनुआंते ❀ खम्भा तुरतै लेउ छँड़ाय ॥
धनुआं पहुँचो जब खम्भनपै ❀ तब धांधूने दइ ललकार ।
झुरमुट ह्वइगो तब दोनोंको ❀ धनुआं जूझि गयो मैदान ॥
आगे बढ़िगो लला तमोली ❀ सोऊ जूझि गयो रणमाहिं ।
मन घबराने लाखनि राना ❀ को असमयमें ऐहैं काम ॥
घोड़ा बढ़ायो बघऊदनिने ❀ औ धांधूको दइ ललकार ।
गुर्ज चलायो तब धांधूने ❀ ऊदनि लैगे चोट बचाय ॥
मारो भाला जब ऊदनिने ❀ धांधू हाथी गये भगाय ।
खैंचि शिरोही देवी मरहटा ❀ बघऊदनि पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई ऊदनिने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
चेहरा मारो तब देवीको ❀ देवी जूझि गये मैदान ॥
यह गति देखी पृथीराज जब ❀ तब लश्करको दियो बढ़ाय ।
झुके सिपाही दिल्लीवाले ❀ सबके मारु मारु रट लागि ॥
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❀ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ।
कोउ न भगियो रणसमुहेते ❀ यारो रखियो धर्म हमार ॥

जंग जीति चलिहौ दिल्लीते ❋ दूनी तलब दिहौं बढ़वाय ।
समुहे रणके जो मरि जैहौ ❋ ह्वइहै जुगन जुगन लौं नाम ॥
खटिया परकै जो मरिजैहौ ❋ कोऊ न लैहै नाम तुम्हार ।
दै दै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दियो बढ़ाय ॥
झुके सिपाही दोनों दल के ❋ अन्धा धुन्ध चलै तलवारि ।
चलै शिरोही आठकोसलौं ❋ धूरे बही रक्तकी धार ॥
सांकल लैके लाखनि राना ❋ सो भुरुहीको दई गहाय ।
दबी बायसी पृथीराजकी ❋ भुरुही राखो धर्म हमार ॥
लाखनि ऊदनि दलमें पैठे ❋ क्षत्रिन काटि करो खरिहान ।
भगे सिपाही दिल्लीवाले ❋ अपने छोड़ि छोड़ि हथियार ॥
करैं चाकरी ना दिल्लीमें ❋ बनकी बेंचि लकड़ियां खाय ।
आये भिड़हा हैं महुबेके ❋ जे मानुषकर करैं अहार ॥
भगत सिपाही पिरथी देखे ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
आगे बढ़िकै पृथीराजको ❋ बघ ऊदनिने करी सलाम ॥
हाथ जोरिकै ऊदनि बोले ❋ तुम सुनिलेउ पिथौराराय ।
अदब तुम्हारो हम मानत हैं ❋ तुम क्यों रारि बढ़ावत आय ॥
सती होइ हैं बेला रानी ❋ सो हम खंब लिये उखराय ।
जो तुम छिनिहौ इनखंभनको ❋ तौ जग ह्वइहै हँसी तुम्हारि ॥
काज हमारो ना कछु अटको ❋ है यह काज ब्यलमदे क्यार ।
खंभ न देहैं हम तुमको अब ❋ चाहैं प्राण रहैं की जायँ ॥
ताते मानो कही हमारी ❋ अपनी कूच जाउ करवाय ।
इतनी सुनतै पृथीराजने ❋ अपनो मुर्चा दिये हटाय ॥
लाखनि ऊदनिने खम्भनकै ❋ छकरा आगे दियो बढ़ाय ।
पृथीराज पहुँचे दिल्लीमें ❋ पहुँचे रंगमहलमें जाय ॥
हाल सुनायो रनि अगमाने ❋ बिचले यहां कनौजीराय ।
बदला लेहैं संयोगिनिको ❋ महल आये उदय सिंहराय ॥
डोला सजाय दियो बांदीको ❋ औ द्वारेपर गये लिवाय ।

डोला फेरि दियो द्वारेते ❀ औ लाखनिको दौ समुझाय।
इतनी सुनिकै रनि अगमाते ❀ बहुतै खुशी भये महराज॥
लाज हमारी ऊदनि राखी ❀ धनि धनि दस्सराजके लाल।
बेला सती भई आगे अब ❀ सो हम कहिकै दिहैं सुनाय॥
समय पाय तुम आल्हा गावौ ❀ नित उठि नाम लेउ भगवान।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❀ सीता राम क्यार धरि ध्यान॥

इति चन्दनखंभ उखाड़नेकी लड़ाई समाप्त

श्रीः

अथ बेलाके सती होनेकी लड़ाई

★

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश।
पांचदेव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

सवैया

कैटभसे नरकासुरसे अरु भीषण द्रोण महायश खेवा।
बालि बली बलि बाण दधीचि ययाति दिलिपहुँसे बलसेवा ॥
रावण और युधिष्ठिर भारत भीम महाबलवान सुदेवा।
अन्त समय उबरे न कोऊ क्षणमाहिं भये सब कालकलेवा ॥२॥

कहौं लड़ाई अब अखीरकी ❋ यारो सुनियो कान लगाय।
सुमिरन करिकै नारायणको ❋ औ गणपतिके चरण मनाय ॥
ऊदनि पहुँचे रनि बेलापै ❋ औ बेलाते कही सुनाय।
चन्दन खम्भा हम लाये हैं ❋ आगे हुक्म देउ फरमाय ॥
बोली बेला तब ऊदनिते ❋ अब तुम सुनो हमारी बात।
पहिलो धूरो गढ़ दिल्लीको ❋ दुसरो नगर महोबे क्यार ॥
तिसरो धूरो गढ़ कनउजको ❋ चौथो बलख बुखारे क्यार।
चारि चौसँधेके धूरेपर ❋ जल्दी सरा देउ रचवाय ॥
यही हुक्म हमारो अखीर है ❋ जल्दी चिता बनावौ जाय।
सुनतै चलिभै ऊदनि ठाकुर ❋ चन्दन छकरा दिये जुताय ॥
चारौ चौसँधेके धूरेपर ❋ ऊदनि सरा दियो रचवाय।
ऊदनि बोले तब लाखनिते ❋ दादा सुनौ कनौजीराय ॥
मरनकि बेरा अब आई हैं ❋ सिगरो लश्कर लेउ सजाय।
खबरि पहूँची गढ़ महुबेमें ❋ सत्ती होय ब्यलमदे रानि ॥
रयत धाई सब देखनको ❋ औ धूरेपर पहुँची आय।

सुनी खबरिया पृथीराजने ❃ बेला सती होनको जाय ॥
लश्कर अपनो सब सजवायो ❃ औ चढ़ि आये पिथौरा राय ।
अगहन माससुदी एकादसि ❃ सत्ती भई बिलमदे रानि ॥
चिता समीप गई बेला जब ❃ पतिकी लाश लई मँगवाय ।
लाश धराई तुरत चिता पर ❃ बेला कीन्हें सर्व सिंगार ॥
करि पैकरमा जबहीं बैठी ❃ पृथीराज तब कही पुकारि ।
होवै जो कोउ चन्द्रवंशमें ❃ सर में आगी देउ लगाय ॥
जाति बनाफरकी ओछी है ❃ सो ना जायँ चिताके पास ।
आगे बढ़ि तब ऊदनि बोले ❃ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ॥
हुक्म दियो हमको बेलाने ❃ की तुम आगी देउ लगाय ।
कोटि उपाय करौ चाहै तुम ❃ आगी हमहीं दिहैं लगाय ॥
गुस्सा होइके पृथीराज तब ❃ तुरतै हुक्म दियो करवाय ।
बत्ती दैदेउ सब तोपनमें ❃ इन पाजिनको देउ उड़ाय ॥
झुके खलासी तब तोपनपर ❃ तुरतै बत्ती दई लगाय ।
दगी सलामी दोनों दलमें ❃ धुअनां रह्यो सरग मँडराय ॥
तोपैं छूटीं दोनों दलमें ❃ रणमें होन लगा घमसान ।
अररर अररर गोला छूटैं ❃ कहकह करैं अगिनियाँ बान ॥
रिमझिमरिमझिम गोली बरसै ❃ सननन परी तीरकी मारु ।
तड़ तड़ तड़ तड़ तासे बाजैं ❃ जंगी ढोल रहे झहनाय ॥
शंख तोरही औ रणसिंहा ❃ जहँ तहँ मदन बेलि घहराय ।
तीर कमनियाँ जो मुलतानी ❃ कारी नागिनिसी मन्नाय ॥
जैसे सांप बँबीमें जावै ❃ त्यों ज्वाननके तीर समायँ ।
दोनों फौजनके संगममें ❃ अन्धाधुन्ध तोपकी मारु ॥
लागै गोला ज्यहि हाथीके ❃ दलमें डौंकि डौंकि रहिजाय ।
गोला लागै जौन ऊँटके ❃ दलमें गिरै चकत्ता खाय ॥
लागै गोला जिन घोड़नके ❃ चारौ सुंम गर्द ह्वइ जायँ ।
गोला लागै जिन क्षत्रिनके ❃ तिनकी त्वचा सरग मँड़राय॥

बंबका गोला जिनके लागे ❋ तिनके हाड़मांस छुटिजायँ।
गोला जँजिरहा जिनके लागे ❋ सो लत्ता अस जायँ उड़ाय॥
छोटी गोली जिनके लागे ❋ मानौ गिरह कबूतर खाय।
बानका डंडा जिनके लागै ❋ तिनके दुइ खंडा ह्वइ जायँ॥
तोपैं धैं धैं लाली ह्वइ गईं ❋ ज्वानन हाथ धरे ना जायँ।
चढ़ी कमनियाँ पानी ह्वइगईं ❋ चुटकिनके गै मांस उड़ाय॥
तोप रहकला पीछे छाड़े ❋ लंबे बन्द करैं हथियार।
झुके सिपाही दोनों दलके ❋ रहिगै पांच पैग असवार॥
सांगै चलन लगीं दोनों दल ❋ ऊपर बर्छिनकी भइ मारु।
छुटैं पिचक्का तहँ लोहूके ❋ औ बहि चली रक्तकी धार॥
बूड़ि जुलफियां गईं क्षत्रिनकी ❋ चरबी अंग गईं लपटाय।
मानहुँ टेसू बनमें फूले ❋ ऐसी रही लालरी छाय॥
हौदा भरिगै हैं लोहूते ❋ औ चुचुआत फिरे असवार।
चारि घरी भरि बजो सांगड़ा ❋ भारी भई सांगकी मारु॥
टूटिके भाला दोना ह्वइगे ❋ सबियां हारि मानिगे ज्वान।
दोनों फौजनके संगममें ❋ रहिगो डेढ़ कदम मैदान॥
खैंचि शिरोही लइ ज्वाननने ❋ नेगी चलन लगी तलवार।
चलै चुनब्बी औ गुजराती ❋ ऊना चलै विलायत बयार॥
तेगा चटकै बर्दवानके ❋ कटिकटि गिरैं सुघरुआ ज्वान।
पैदलके संग पैदल अभिरे ❋ औ असवारनते असवार॥
हौदाके संग हौदा मिलिगै ❋ ऊपर पेशकब्जकी मारु।
कटि कटि शीश गिरैं धरनीमें ❋ उठि उठि रुण्ड करैं तलवारि॥
आठ कोशके तहँ गिरदामें ❋ अँधाधुन्ध चलै तलवारि।
पैग पैग पर पैदल गिरिकै ❋ उनके दुइ दुइ पैग असवार॥
बिसे बिसेपर हाथी गिरिगे ❋ छोटे पर्वतकी उनहार।
कल्ला कटिगै जिन घोड़नके ❋ धरती गिरे भरहरा खाय॥

कटे भुसुंडा जिन हाथिनके ❋ पलमें गिरैं करौंटा खाय ॥
कटि भुजदंडैं रजपूतनकी ❋ चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
दोनों सेना यकमिलि हो गईं ❋ ना तिल परा धरनिमें जाय ॥
ज्यों सावनमें छुटैं फुहारा ❋ त्योंही चलें रक्तकी धार ।
परे दुशाला जो लोहूमें ❋ जनु नदीमें परे सिवार ॥
पगिया डारीं जे लोहूमें ❋ मानों ताल फूल उतराय ।
परी शिरोही हैं ज्वानननकी ❋ मानों नाग रहे मन्नाय ॥
घैहा डारे रणमें लोटैं ❋ जिनके प्यास प्यास रटलागि ।
मुर्चन मुर्चन नचै बेंदुला ❋ ऊदनि कहैं पुकारि पुकारि ॥
नौकर चाकर तुम नाहीं हो ❋ तुम सब भैया लगो हमार ।
पांव पिछारीको ना धरियो ❋ यारो रखियो धर्म हमार ॥
सन्मुख लड़िकै जो मरिजैहौ ❋ ह्वइहै जुगुन जुगुन लौं नाम ।
जो मरिजैहौ खटिया परिकै ❋ कोउ न लिहै तुम्हारो नाम ॥
दै दै पानी रजपूतनको ❋ ऊदनि आगे दिये बढ़ाय ।
झुके सिपाही महुबेवाले ❋ जिनके मारु मारु रटि लागि ॥
ऊंचे खाले कायर भागे ❋ जे रणदुलहा चले बराय ।
लंबा धोतिनके पहिरैया ❋ तिन नारेनकी पकरी राह ॥
भेष बदलिकै क्षत्री भागैं ❋ हा दैयागति कही ना जाय ।
कोऊ रावै है लरिकनको ❋ कोऊ पुरिखनको चिल्लाय ॥
कोउ कोउ रोवैं तहँ तिरियनको ❋ बेड़ा कौन लगैहै पार ।
चौंड़ा ब्रह्मणके समुहेपर ❋ ढेबा करो सामना जाय ॥
बिकट लड़ाई भइ दोनोंमें ❋ ढेबा जूझि गयो मैदान ।
घोड़ी बढ़ाई जगनायक तब ❋ औ चौंड़ाको दइ ललकार ॥
बहुत लड़ाई भइ दोनोंमें ❋ सो मैं कहँ लगि करौं बखान ।
जगनिक जूझि गये खेतनमें ❋ आगे बढ़ो चौंड़िया राय ॥
बोले पृथीराज भूराते ❋ भूरा सुनौ हमारी बात ।
जान न पावैं कोउ महुबेको ❋ सबकी कटा देउ करवाय ॥

भूरा मुगल रहै काबुलको ❋ सो मुर्चा पर पहुँचो आय ।
बोले लाखनि तब सैयदते ❋ मैं चाचाकी लेउँ बलाय ॥
बड़ो लड़ैया यहु भूरा है ❋ याको शीश लेउ कटवाय ।
अली अली करि सैयद झपटे ❋ भूरा लीन्हीं चोट बचाय ॥
सुनतै गुस्सा ह्वइ भूराने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ।
करो जड़ाका जब सैयदपर ❋ सैयद लीन्हीं चोट बचाय ॥
टूटि शिरोही गइ भूराकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ।
खैंचि शिरोही लइ सैयदने ❋ औ भूरापर दई चलाय ॥
शीश काटि लौ वा भूराको ❋ बीर भुगन्ता बढ़ो अगार ।
बार भुगन्ताने ललकारो ❋ सैयद खबरदार ह्वइ जाउ ॥
लई कमनियां बीर भुगन्ता ❋ समुहे केबर दियो चलाय ।
चोट बचायो तब सैयदने ❋ फिरिसे भाला दियो चलाय ॥
भाला लागत सैयद गिरिगै ❋ लाखनि गये सनाका खाय ।
बोले लाखनि तब गंगाते ❋ मामा राखौ धर्म हमार ॥
सैयद जूझि गये खेतनमें ❋ को असमयमें ऐहै काम ।
हाथी बढ़ायो तब गंगाने ❋ बीर भुगन्तै दइ ललकार ॥
लैकै भाला बीर भुगन्ता ❋ सो गंगापर दियो चलाय ।
चोट बचाय लई गंगाने ❋ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
करो जड़ाका इक समुहे पर ❋ बीर भुगन्तै दियो गिराय ।
यह गति देखी पृथीराज तब ❋ तब धांधूते कही सुनाय ॥
मारि गिरावो कनवजियनको ❋ सबके शीश लेउ कटवाय ।
हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❋ औ धांधू यह कही सुनाय ॥
कौने मारो बीर भुगन्ते ❋ सो समुहे ह्वइ देय जवाब ।
हथिनी दाबी तब गंगाने ❋ औ धाधूको दियो जवाब ॥
हमने मारो बीर भुगन्तै ❋ यह कहि हाथिनी दई बढ़ाय ।
गुर्ज उठायो तब धांधूने ❋ सो गङ्गा पर दई चलाय ॥

चोट बचाय लई गंगाने ❀ अपनी खैंचि लई तलवारि ॥
ढाल अड़ाय दियो धांधूने ❀ तापर भयो जड़ाका जाय ।
टूटि शिरोही गई गंगाकी ❀ खाली मूठि हाथ रहि जाय ॥
यह गति देखी जब गंगाने ❀ मनमें गये सनाका खाय ।
जौनि शिरोहीते गज काटे ❀ औ घोड़नके चारों पांव ॥
सोइ शिरोही धोखा देगई ❀ हमरो काल रह्यो नियराय ।
हाथी बढ़ायो तब धांधूने ❀ औ भालाको दियो चलाय ॥
भाला लागत गंगा गिरि गये ❀ लाखनि देखि गये घबराय ।
भुरुही बढ़ाये लाखनि आये ❀ औ धांधूको दई ललकार ॥
खबरदार रहियो हाथीपर ❀ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ।
बोले धांधू तब लाखनिते ❀ पहिले चोट करौ तुम आय ॥
ज्वाब दियो तब लाखनिराना ❀ नहिं यहु हुक्म कनौजी क्यार ।
पहले चोट करौ तुम अपनी ❀ नाहीं स्वर्ग बैठि पछिताउ ॥
इतनी सुनतै धांधू ठाकुर ❀ अपनी लीन्ही लाल कमान ।
कैबर छांड़ि दियो सम्मुहेपर ❀ लाखनि लीन्ही चोट बचाय ॥
भाला लैकै तब धांधूने ❀ सो लाखनिपर दियो चलाय ।
हथिनी हटिगइ तब लाखनिकी ❀ भाला गिरो भूमिपर जाय ॥
खैंचि शिरोही लइ धांधू तब ❀ औ लाखनिपर दई चलाय ।
ढाल अड़ाई लाखनि राना ❀ धांधूकि टूटि गई तलवारि ॥
गुर्ज उठायो लाखनि राना ❀ सो धांधू पर दियो चलाय ।
लाग्यो गुर्ज जाय खोपरीमें ❀ धांधू जूझि गये मैदान ॥
देखि हाल यह पृथीराज तब ❀ मनमें बहुत गये घबराय ।
बड़ो शूरमा यहु मारोगौ ❀ को गाढ़ेमें ऐहै काम ॥
नौसै हाथीको हलका है ❀ आगे बढ़े पिथौरा राय ।
आदि भयंकर झूमत आवै ❀ बैठे शब्दबेधि चौहान ॥
बीचमें घिरि गये लाखनिराना ❀ तब लाखनि मन सोचन लाग ।
सिगरो लश्कर पिरथी लाये ❀ हमते कियो सामना आय ॥

उतरे लाखनि तब भुरुहीते ❋ औ धरती पर पहुँचे आय ।
फूल मंगाय लियो गगरी भरि ❋ सो हथिनीको दियो पिलाय ॥
भांग मिठाई औ अफीमको ❋ गोला दीन्हों तुरत खवाय ।
हथिनी मस्त करी लाखनिने ❋ औ सांकलको दइ पकराय ॥
बोले लाखनि तब हथिनीते ❋ भुरुही राखौ धर्म हमार ।
यह कहि चढ़िगे लाखनिराना ❋ आगे हथिनी दई बढ़ाय ॥
खैंचि शिरोही लइ लाखनिने ❋ समुहे गोल गये समुहाय ।
भुरही सांकल फेरन लागी ❋ लश्कर तिड़ी बिड़ी ह्वइजाय ॥
अकिले लाखनिकी झपटिनमें ❋ सब दल रेन बेन ह्वइजाय ।
आगि लगन पाई ना सरमें ❋ बेला केश दिये छिटकाय ॥
लपटैं छूटीं तब बारनते ❋ जरने लगा सरा तत्काल ।
ढाल अड़ाये लाखनिराना ❋ समुहे खड़े पिथौरा राय ॥
लाखनि बोले पृथीराजते ❋ तुम सुनि लेउ बीर चौहान ।
है कोउ क्षत्री तुम्हरे दलके ❋ सन्मुख लड़े हमारे साथ ॥
यह सुनि पिरथी बोलन लागे ❋ लाखनि सुनौ हमारी बात ।
बारह रानिनके इकलौता ❋ औ सोलाके सर्व सिंगार ॥
आसलकड़ियाहौ जैचन्दकी ❋ नाहक देहौ प्राण गँवाय ।
कही हमारी लाखनि मानौ ❋ तुम समुहेते जाउ बराय ॥
घुण्डी खोली तब लाखनिने ❋ समुहे छाती दई अड़ाय ।
बोले लाखनि पृथीराजते ❋ तुम सुनिलेउ पिथौरा राय ॥
हिरणाकुश सतयुगमें ह्वैगे ❋ जाने कियो अखण्डितराज ।
सो ना अमर भयो पृथ्वीपर ❋ अब क्या अमर कनौजीराय ॥
त्रेता युग में रावण ह्वै गयो ❋ जाके बीस भुजा दश भाल ।
सो ना अमर भयो दुनियामें ❋ अब क्या अमर कनौजीराय ॥
द्वापरमें राजा दुर्योधन ❋ ह्वैगे बहुत बली सरनाम ।
सो नहिं अमर भयो धरतीपर ❋ अब क्या अमर कनौजीराय ॥

धर्म्म क्षत्रियनके नाहीं है ❋ जो हटि धरैं पिछारी पांव ॥
फिरि समझायो पृथीराजन ❋ लाखनि मानौ कही हमारि ।
जैसे लड़िका रतीभानके ❋ तैसे लड़का लगौ हमार ॥
ताते तुमको समुझावत हौं ❋ हमते नाहिं करौ तकरार ।
भुरुही लावो हमरे दलमें ❋ हम तुम लूटैं नगर महोब ॥
हँसिके लाखनि बोलन लागे ❋ औ पिरथीको दियो जवाब ।
धर्म नहीं है यहु क्षत्रिनको ❋ की घटि करैं काहुके साथ ॥
बोले पृथीराज गुस्सा ह्वै ❋ तादिन कहां रहे महराज ।
लाये सँयोगिनि हम कनउजते ❋ अब बढ़ि करत सामुहे बात ॥
तापर ज्वाब दियो लाखनिने ❋ काहे बोलत बात बनाय ।
नाहीं जैचँद मँड़वा गाड़ो ❋ नाहीं दीन्हों कन्या दान ॥
चेरी लाये तुम कनउजते ❋ अब बढ़ि कहत बात महराज ।
उमरि हमारी तब थोरी थी ❋ तब ना धरी कमर तरवारि ॥
बदला लेहैं संयोगिनिको ❋ तब छातीको डाहु बुझाय ।
इतनी सुनतै गुस्सा ह्वै तब ❋ पृथीराजने लई कमान ॥
तीर निकारि लियो तरकससे ❋ छाती डटी कनौजी केरि ।
बाइस तीर हते तरकसमें ❋ सो पिरथीने दिये चलाय ॥
ढाल फारि लाखनि रानाकी ❋ छाती निकरि गये वापार ।
देह नहीं हाली लाखनिकी ❋ पिरथी गये सनाका खाय ॥
बड़ो शूरमा यहु लाखनि है ❋ नाती बेनचक्कवै क्यार ।
है यहु बेटा रतीभानको ❋ यहु मारेते मरिहै नाहिं ॥
भुरुही हथिनी आगे बढ़िके ❋ आदि भयङ्कर दियो हटाय ।
सोचैं पृथीराज अपने मन ❋ गरुइ गाज कनौजीकेरि ॥
बड़ी जोरावर यहु हथिनी है ❋ हमरो हाथी दियो हटाय ।
पीठि फेरी पृथीराज ने ❋ हौदा गिरे कनौजी राय ॥
हाथसे गिरी ढाल लाखनिके ❋ सो चौंड़ाने लई उठाय ।
जहँ मुर्चापर उदैसिंह थे ❋ तहँपर गयो चौंड़िया राय ॥

चौंड़ा बोल्यो हँसि ऊदनिते ❋ ऊदनि देखौ दृष्टि पसार ॥
लाये थाती जो कनउजते ❋ सो तुम रणमें दई गँवाय ।
लाश पड़ी लाखनि रानाकी ❋ सो तुम जाय लेउ उठवाय ॥
काहू लूटी छुरी कटारी ❋ काहू लुटी बैंजनी पाग ।
हम लै आये गैंड़ावाली ❋ सो तुम देखिलेउ पहिचानि ॥
देखि ढाल ऊदनि पहिचानी ❋ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
जायके देखो जब लाखनिको ❋ ऊदनि छांड़ि दई डिडकार ॥
हाय विधाता यह कैसी भई ❋ हमते बिछुरो मित्र हमार ।
देखि न पाये मरती विरियां ❋ मारे गये कनौजी राय ॥
अब कहँ मिलिहौ लाखनिराना ❋ सो तौ हमहिं देउ बतलाय ।
बचन बँधे हमरे सँग आये ❋ यहँ पर दीन्हे प्राण गँवाय ॥
माता मिलिहै ना देवैसी ❋ भाइ न मिलै बीर मलिखान ।
मित्र कनौजी अस मिलिहै ना ❋ चाहै सात धरो अवतार ॥
दिया बुझाय गयो कनउजको ❋ अब हम देहैं कौन जवाब ।
हमते पुछिहै रानी तिलका ❋ पुछिहै हमते कुसुमदे रानी ॥
कुशल बताय देउ राजाकी ❋ तब हम करिहैं कौन उपाय ।
मुख दिखलैबौ भारी परि है ❋ क्या जयचन्दको दिहौं जवाब ॥
कहि आये थे हम तिलकाते ❋ पहिले मरैं उदैसिंह राय ।
बात हमारी झूंठी ह्वइ गइ ❋ हमरे जीवनको धिक्कार ॥
सराके ठाढ़ ऊदनि रोवैं ❋ लै लै नाम व्यलमदेकयार ।
यही दिनाको तुम उपजी थी ❋ तीनों दीपक दिये बुझाय ॥
दिल्ली कनउज औ महुबेका ❋ तुमने दीन्हो दिया बुझाय ।
आभा बोली तब बेलाकी ❋ तुम सुनि लेउ हमारी बात ॥
लिखी विधाताकी मेटै को ❋ जो कछु कर्मलिखी सो होय ।
गढ़ दिल्लीते औ महुबेलौं ❋ ह्वइहैं सबै सुहागिनी रांड़ ।
अब तुम रोवत हौ काहेको ❋ काहे भरम गँवायो आय ।
सुनतै चलिभये ऊदनि तहँते ❋ अपनो मरण ठानि त्यहिकाल ॥

चौंड़ा ब्राह्मण हमको मारैं ❃ हम बैकुंठ धामको जायँ ॥
सोचि समुझि यह बघ ऊदनिने ❃ अपनो घोड़ा दियो बढ़ाय ।
ऊदनि ललकारो चौंड़ाको ❃ ब्राह्मण खबरदार ह्वइ जाउ ॥
हम तुम खेलैं रणखेतनमें ❃ दुइमें एक आँकु रहि जाय ।
आजु अखाड़े में बरनी है ❃ चौंड़ा खेलौ जूझ अघाय ॥
इतनी सुनतै चौंड़ा ब्राह्मण ❃ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ।
बोल्यो चौंड़ा तब ऊदनिसे ❃ तुम्हरो काल रह्यो नियराय ॥
सम्हरौ ऊदनि तुम घोड़ापर ❃ यह कहि लीन्ही लालकमान ।
तीर निकारि लियो तरकसते ❃ सो ऊदनिपर दियो चलाय ॥
घोड़ा बेंदुला दहिने होइ गयो ❃ कैबर निकरि गयो वापार ।
साँग उठाई तब चौंड़ाने ❃ सो ऊदनिपर दियो चलाय ॥
चोट बचाय लई ऊदनिने ❃ नीचे सांग गिरी अरराय ।
भाला मारो तब चौंड़ाने ❃ सोऊ ऊदनि गये बचाय ॥
सोचे ऊदनि तब अपने मन ❃ हमरे मरन करो अख्त्यार ।
फिरि क्यों वृथा लड़त चौंड़ाते ❃ यह मन सोचि उदैसिंहराय ॥
ऐंड़ लगाई रसबेंदुलाके ❃ औ हौदापर उरके जाय ।
ढालकी औझड़ ऊदनि मारी ❃ सोने कलशा दिये गिराय ॥
होदा मुड़िया भौ चौंड़ाको ❃ चौंड़ा गयो सनाका खाय ।
खैंचि शिरोही लइ चौंड़ा तब ❃ लैकै रामचन्द्र को नाम ॥
करो झड़ाका तब ऊदनि पर ❃ ऊदनि दीन्ही ढाल अड़ाय ।
ढाल फाटि गइ गैंड़ावाली ❃ सोने फूल गिरे झहनाय ॥
शीश काटिलौ तब ऊदनिको ❃ ऊदनि स्वर्गलोक को जांय ।
देखि हाल यह इन्दल बोले ❃ औ आल्हाते लगे बतान ॥
काहे दादा यह कैसी भई ❃ मारे गये उदैसिंह राय ।
मारयो चाचे यहि चौंड़ाने ❃ ताको देउ जानते मारि ॥
हमरी बरनीको नाहीं हैं ❃ नहिं करि देतेउ खण्डाचारि ।

सुनतै गुस्सा ह्वइ आल्हाने ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
इक ललकार दई चौंड़ाको ❋ चौंड़ा खबरदार ह्वइ जाउ ।
हाथी बढ़ायो तब चौंड़ाने ❋ करमें लीन्हों लालकमान ॥
कैंबर छांड़ि दियो सम्मुहेपर ❋ आल्हा लीन्ही चोट बचाय ।
सांग उठाई तब चौंड़ाने ❋ सो आल्हा पर दई चलाय ॥
चोट बचाय लई आल्हाने ❋ चौंड़ा खैंचि लई तलवारि ।
चोट चलाय दई आल्हापर ❋ आल्हा लैगै चोट बचाय ॥
तीनि शिरोही चौंड़ा मारी ❋ आल्हा लैगै चोट बचाय ।
टूटि शिरोही गइ चौंड़ाकी ❋ खाली मूठि हाथ रहिजाय ॥
हाथी बढ़ायी तब आल्हाने ❋ औ अपने मन कियो विचार ।
है यहु जालिम चौंड़ा ब्राह्मण ❋ द्रोणाचारज को औतार ॥
गिरिहै रुधिर बूँद धरतीपर ❋ दुसरो चौंड़ा होय तयार ।
बांह पकरिकै तब चौंड़ाकी ❋ त्यहिं हौदाते लियो उतारि ॥
मींजि मींजिक चौंड़ा मार्‌यो ❋ देखौ हाल पिथौरा राय ।
सोच आयगौ पृथीराज को ❋ मारो गयो चौंड़िया राय ॥
बड़ो शूरमा यह मारो गयो ❋ को गाढ़ेमें ऐहैं काम ।
हाय विधाता यह कैसी भइ ❋ कोउ न रह्यो शूर सरदार ॥
हाथी बढ़ायो पृथीराज तब ❋ औ आल्हापै पहुँचे जाय ।
पृथीराज बोले आल्हाते ❋ अब तुम खबरदार ह्वै जाउ ॥
सम्हरिके बैठो तुम हौदामें ❋ तुम्हरो काल पहूँचो आय ।
इतनी सुनते नुनि आल्हाने ❋ सम्मुहे छाती दई अड़ाय ॥
घुंडी खोलि दई आल्हा जब ❋ पिरथी लीन्ही लाल कमान ।
तीर चलायो पिरथीराजने ❋ लागो तीर भुजामें जाय ॥
लागत तीरके भुजदण्डनते ❋ निकसी तुरत दूधकी धार ।
देखि हाल यह पृथीराज तब ❋ अपनो हाथी दियो बढ़ाय ॥
मोह आइगौ नुनि आल्हाको ❋ मलि मलि हाथ बहुत पछिताय़ँ ।

अपने मनमें हम जानी थी ❀ हमरे अमर उदयसिंह राय ।
जो हम जनते हम अम्मर हैं ❀ काहे मरत लहुरवा भाय ॥
खोली सांकल जब आल्हाने ❀ पचशावद को दई गहवाय ।
फेरी सांकल तब हाथीने ❀ क्षत्रिन काट करो खरिहान ॥
जब सुधि आई बघऊदनिकी ❀ आल्हा गये कोधमें छाय ।
खड्ग दई थी जो देवीने ❀ सो आल्हाने लई निकारि ॥
जहँ लग आभा परा खड्गकी ❀ क्षत्री भये शीशते हीन ।
शीश उतरिगे सब सत्रुनके ❀ रहिगे चन्द्रभाट पृथिराज ॥
जब दोनों थे बृक्ष ओट में ❀ तौलों गोरख पहुँचे आय ।
हाथ पकरिकै तब आल्हाको ❀ गुरु गोरखजी लगे बतान ॥
बेटा तजिदेउ अब गुस्सा तुम ❀ अपनी म्यान करौ तलवार ।
खड्ग म्यानमें करि आल्हा तब ❀ गुरुगोरखको कियो प्रणाम ॥
समुहे आये पृथीराज जब ❀ देखत आल्हा गयो रिसाय ।
नाश करि दियो इन भारतको ❀ कीन्हो नाश क्षत्रियन क्यार ॥
चारिहु ओरको आल्हा देखौ ❀ कोऊ शूर न परो दिखाय ।
लोथैं डारीं तहँ लोथिन पर ❀ चहुँदिशि देखि परा सुनसान ॥
मारनहित तब पृथीराजके ❀ आल्हा खांडा लियो उठाय ।
हाथ पकरिलौ तब गोरखने ❀ आल्हा मानौ बात हमारि ॥
छोड़ि देउ तुम पृथीराजको ❀ बनको चलौ हमारे साथ ।
धरि दौ खाँड़ा तब आल्हाने ❀ पृथीराज पै गये नगिचाय ॥
लील छुवाय दियो आँखिनमें ❀ अपनी करिकै दौ लौटाय ।
खबरि पहुँच गई गढ़ महुबेमें ❀ सब कटि मरे शूर सरदार ॥
करत बिलाप चलीं रानी सब ❀ समुहे इन्दल परे दिखाय ।
बोली सुनवां तब इन्दलते ❀ रणको हाल दियो बतलाय ॥
आल्हा ऊदनिको देखो कहुँ ❀ तौ तुम हमहिं देउ बतलाय ।
यह सुनि आल्हा कहि इन्दलते ❀ तिरिया लेत कंतको नाम ॥

राज छोड़िकै तुम महुबेको ❋ बनको चलौ हमारे साथ।
बोले इन्दल तब सुनवांते ❋ ऐसी तुमहिं मुनासिब नाहिं॥
सम्मुहे दादा हमरे ठाढ़े ❋ तुमने लियो कंतको नाम।
राख समेटि दई तुरतै तहँ ❋ इन्दल चौरा दियो बनाय॥
कूदि बछेरा पर चढ़ि बैठे ❋ औ आल्हा सँग भये तयार।
चलिभै आल्हा कजरीबनको ❋ लटकत चली सुनमदे रानि॥
पूँछ काटि दइ तब हाथीकी ❋ सुनवां गिरी भूमिपर जाय।
आल्हा चले गये कजरीबन ❋ सुनवां जरी कुंडमें जाय॥
फुलवा जरि गइ औरानी सब ❋ अपने दीन्हे प्राण गँवाय।
मल्हना चलिभइ पारस लैकै ❋ सागर होम दियो करवाय॥
करिकै पूजा वा पारसकी ❋ बोली हाथ जोरि महरानि।
चन्द्रवंशमें जो कोउ होवै ❋ महुबे आय लेय अवतार॥
ता घर ऐयो तुम पूजनहित ❋ नाहीं तुमहिं औरते काम।
यह कहि पारस पत्थर लैकै ❋ सो सागरमें दियो सेराय॥
लंघन करिकै परिमालेने ❋ दुखते दीन्हे प्राण गँवाय।
सती ह्वइ गई मल्हना रानी ❋ महुबे दीपक गयो बुझाय॥
आल्हखंड यह पूरो ह्वइगो ❋ रहिगो एक रामको नाम।
भूल चूक ह्वइहै यामें कछु ❋ क्षमिहैं चूक सुजन गुणधाम॥
पढ़िप्रसन्न ह्वइहैं सज्जन जन ❋ निंदा करिहैं क्रूर अजान।
आल्हाखंड असली बातैं सब ❋ हमने लिखी सुमिरि हनुमान॥
आल्हा गावौ समय पाय तुम ❋ नित उठि नाम लेउ भगवान।
भोलानाथ मनाय हिये महँ ❋ सीताराम क्यार धरि ध्यान॥

(इति बेलाके सती होने की लड़ाई समाप्त)

इति पं० नारायणप्रसाद विरचित

आल्हखण्ड समाप्त

श्री :

अथ आल्ह खण्ड कवितावली

★

इस आल्हखण्ड कवितावलीमें आल्हखण्डविषयक कविता लिखी गई है
अर्थात् आल्हखण्डमें कहने योग्य कवित्त; सवैया, कुंडलिया,
सौरनी आदि लिखी हैं, जहां जो उचित समझे
उसको वहां पर उच्चारण करे यही नियम है ।

दोहा–सदाभवानी दाहिनी, सन्मुख रहैं गणेश ।
पांच देव रक्षा करैं, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥

कवित्त–सिद्धिके सदन गजवदन विशाल तन, दरश कियेते वेगि हरत कलेशको । अरुण परागको ललाटमें तिलक सोहै, बुद्धिके निधान रूप तेज ज्यों दिनेशको ॥ मंगल करण भव हरण शरण गये, उदित प्रभाव जग विदित सुरेशको । जेते शुभ कार्य तामें पूजिये प्रथम ताहि, ऐसो जगवंदन सुनंदन महेशको ॥ २ ॥

छन्द त्रिभंगी

जयजयगणनायक, जयति विनायक, जगसुखदायक लंबोदर ।
जय जयति कृपाला दीनदयाला, रूप विशाला शशिशेखर ॥
जयजय भगवंता, जयति अनंता, जय इकदंता नागवदन् ।
जय गिरिजानंदन त्रिभुवन वंदन, दुष्टनिकंदन बुद्धि सदन् ॥
जय मूषककेतू, कृपानिकेतू भव सरि सेतू तव लीला ।
जय विद्यासागर त्रिपुर उजागर सब गुण आगर शुभ लीला ॥
जय विघ्नविनाशक, बुद्धिप्रकाशक, शक्ति उपासक लायक ।
शिवते नहिं हारे, बहु भट मारे, शिवापियारे वरदायक ॥ ३ ॥

छन्द चौपदी

जय त्रिभुवन वन्दनि, सुर उर चंदनि दुष्टनिकंदनि सदाजये ।
मम बिपति विभंजनि, खलदल गंजनि, जनमनरंजनि, कृपा-

मये ॥ जय जय जगजननी, भवभय हरणी जग विस्तरणी शिववामा । जय विषय निवारिणि, कलिमल हारिणि, अधम उधारिणि सुखधामा ॥ ४ ॥

सवैया

हो बरदानि अनुग्रहखानि, सुनी यह बानि, भवानि तिहारी ।
द्वै कर तीव्र गदा धरि ज्यों, करती सब दासनकी रखवारी ॥
त्यों करिये हमरी रखवारि, दया उर धारि सुनो करतारी ।
केवल हैं अवलम्ब तुहीं, जगदम्ब विलंब कहा मम बारी ॥५॥

कुंड०–मनमें धीरज बांधिकै कीजै जप तप दान ।
लाऔ मन समुझायकै, पदसरोजका ध्यान ॥
पदसरोजका ध्यान मान मन वचन हमारा ।
भवसागर नहिं अन्त, कृष्णका लेय सहारा ॥
नारायण धरि ध्यान, अरे मन चेत अपारा ।
भजै नहीं हरिनाम, मूढ़ डूबैं मँझधारा ॥ ६ ॥

सवैया

जयजगवन्दन जयव्रजनन्दन, जयनँदनन्दन जय गिरिधारी ।
जय असुरारि महादुखहारि, सदासुखकारि सुकुंजबिहारी ॥
जय जगपालक बुद्धिप्रकाशक, संत उबारक कृष्ण मुरारी ।
जय प्रभुगोविंद दीनको संकट, काटि सदा करिये रखवारी ॥७॥

कुंड०–जगमें छल बल छांड़िकै, निश्चय भजिये राम ।
यमदूतोंका भय मिटै, सब सुधरैंगे काम ॥
सब सुधरैंगे काम, भजन बिन नहीं गुजारा ।
क्या सोवैं सुखनींद, काल शिरपै ललकारा ॥
नारायण संसार, रामगुण गावौ प्यारे ।
सुमिरि सुमिरि हरिचरण, होय सुखचित्त तुम्हारो॥

सवैया

दीनदयालु कहावत हौं तेहि, नामको लाज करो रघुवीरा।
नाम रटौं तुमरो हियमें नित, मांगत हौं तुव भक्ति गँभीरा॥
भक्तनके दुख दूरि दुरावत, ताते रटौं धरिके मन धीरा।
माथ नवाय करौं विनती प्रभु, बेगि हरौ हमरी सब पीरा ॥९॥
मैं सुमिरौं तुम्हरे पदपंकज, वेगि विनय सुनिये रघुनाथा।
मेरे तो एक तुम्हीं प्रभु हो सब, काह बनाय कहौं बहु गाथा॥
स्वारथ साथ सबै नर देत, न देत कोऊ परमारथ साथा।
दीन पुकार करै रघुनन्दन, वेगिकरो जनिजान सनाथा॥
रामको नाम बड़ो जगमें सोइ, रामको नाम रटै नर नारी।
रामके नाम तरी शबरी बहु, तारे अजामिलसे खल भारी॥
रामको नाम लियो हनुमान, हते बहु निश्चर लंक मझारी।
प्रेमते नेमते नाम रटौ नित, रामको नाम बड़ो हितकारी॥११॥
श्रीरघुनाथ सियाबरको शिर, नाय कवीन्द्र को शिर नावौं।
पूत प्रभंजनको हनुमन्त, प्रभूत बली सब भांति मनावों॥
ध्यावो सदा गुरुके पदपंकज, शंभु पदांबुजमें लव लावों।
क्षत्रिन भूषण शत्रु निषूदन, भारत शूरनके गुण गावों॥ १२॥

कुंड०-मन मेरे तू शोच ले, भूतल हे दरबार।
अबके चूके ठौर ना, पन होवैगा ख्वार॥
पन होवैगा ख्वार पार नहिं होगी नैया।
मातु पिता सुत नारि बिपतिमें कोइ न भैया॥
नारायण संसार कोई नहिं धीर धरैया।
भज ले सीताराम नित्य जो पीर हरैया॥१३॥

सवैया

जग कोऊ बनावत ऊँचो अटां, घनघोर घटा लगे तम्बूकनातैं।
पुनि तात तिया सुत मातके ख्याल, फँसे जगजाल घते बहुघातैं॥

अपने मनके सब धाम रचे नहिं अन्त समय सँग एकहु जातैं।
इक रामके नाम बिना सुमिरे, जगमें धिरकार सबै यहबातैं॥ १४॥

शिव विनय

भाल विशाल त्रिपुण्ड बिराजत, मस्तक एक कलाशशि सोहै।
दीनदयालु कृपालु विभो दुख, दोष दुरावत ताप विमोहै॥
पार न पावत वेद कबौं, महिमा तुम्हरी कहि पावत को है।
मुडन माल गले उर ब्याल, रटो शिवशंकर पालन जो है॥ १५॥
श्रीगिरिजापतिको विनवों, विनवों पुनि मैं गिरिजेश दुलारो।
अञ्जनिपुत्र बली हनुमान, तुही सब भांतिनसों रखवारो॥
हर्षि हिये बिनवों सब देवन, भक्तन कष्ट सदा निरवारो।
मैं मतिमंद यथामतिसों, सबके हित गावत वीर पँवारो॥ १६॥
जांहि मनाय बनाय प्रपंच, विरंचि रच्यो बिरच्यो जगतीको।
बिष्णु करे प्रतिपालन लालन पाय सहायक अलक्ष्यगतीको॥
शंकर सृष्टि सँहारन जा बल, फर्क न आवत एक रतीको।
ध्यान धरौ तेहि सारसतीको, उदारमती सिरीपारवतीको॥ १७॥

सवैया मत्तगयन्द

शुभनिशुंभविनाशिनिविन्ध्य, निवासिनिश्रीगिरिराजकुमारी।
देव विपत्ति परी जबहीं, तबहीं तुम आनि तहां निरवारी॥
त्यों लखिकै हमरो अति संकट, वेगि हरौ गिरिनाथ पियारी।
केवल हैं अवलंब तुही, जगदंब बिलंब कहा मम वारी॥ १८॥

कवित्त

रामसों न धीर हनुमानसो न वीर अरु, बालिसों लड़ैया नाहिं क्रोधी भृगुरामसों। भीषमसों पूत न सपूत भागीरथ सम, भानुसो न तेजमान रूप चारु कामसों॥ दानी बलि करण न सत्यशील हरिश्चन्द्र, शिवसों न योगी न तो भोगी घनश्याम सों॥ भाईसों न भरत न व्रत एकादशीसों गंगासों न तीरथ न मन्त्र राम नामसों॥ १९॥

सवैया

हे हनुमन्त अनन्त बलीजन, आपन केरि विनय उर धारहु ।
मोह मदादि विकार महातम, शीघ्र कृपा करिकै निरवारहु ॥
दासकि आश दया करि सारहु, आनि परै सोइ संकट टारहु ।
आरत दीन पुकारत हौं, जनको भवसागर पार उतारहु ॥२०॥
नन्द यशोमतिके पद ध्याय, मनाय हियेमहँ नन्द दुलारो ।
दीन दयाल दयानिधि है, जिन संकटमें प्रहलाद उबारो ॥
भक्तनपै जब कष्ट परो, तबहीं प्रभु ताहि तहां निरवारो ।
मैं मतिमन्द यथामतिसों, सबके हित गावत बीर पँवारो ॥२१॥
नन्द यशोमतिको सुमरौं, सुमिरौं पुनि मैं पद कृष्ण मुरारी ।
ध्यान धरौं नन्दनन्दनको, जिन भक्तनकी विपदा निरवारी ॥
बेगि हरो हमरे सब संकट, दास विनय सुनिये गिरिधारी ।
गावत हौं गुण वीरनके प्रभु, पार करो यह नाव हमारी ॥२२॥
जो जग जन्म न होत उदयकर, तो अस को करतो प्रभुताई ।
अपने बल साहसते बघऊदनि, जीति लियो चहुँधा बरियाँई ॥
ब्याह किये सब भाइनके अरु, पाइ सभा मर्याद बड़ाई ।
राजन आपके पुण्य प्रतापसे, छाय रही जगमें ठकुराई ॥२३॥
[1]जोगी हैं पांच प्रवीन बड़े, जनु पांचहु देव जुरे समुदाई ।
अंग विभूती गले अलफी, अरु कानन कुण्डलकी छबिछाई ॥
रूप अनूप दियो करतार, न देखी कहूँ असि सुन्दरताई ।
दर्शन योग्य हैं साधु सबै, मानो पांचहु तत्त्व मिले इकठांई ॥२४॥
मोती जवाहिर आनि हिये भरि, थार तिन्हैं कुशला महरानी ।
देखिकै ऊदन बोलन लाग ये, कंकड़ हैं हम ना पहिचानी ॥
मेरे नहीं कछु कामके हैं, हमरे गुरुकी है यही इक बानी ।
देहु हमैं गलहार उतारि, रहै तुम्हरी हमपै ये निशानी ॥ २५ ॥

१ माड़ोकी लड़ाईमें पहले ताल्हन, आल्हा, मलिखे, ऊदनि, ढेवा ये पांचो योगी बनकर माड़ोमें भेद लेने गये थे। २ जम्बंकी रानी कुशलाने मोती दिये उस समयका यह कवित्त है।

वीरनमाहिं शिरोमणिको, जिनके यशको सबही जग गावैं।
देवनमाहिं वही शिरताज, जिहैं सब देव मुनीश मनावैं॥
भक्तिशिरोमणि कौन कहौ, हियते नित जो निज इष्टहि ध्यावैं।
साधन भक्ति वही जगमें, जन जाते सदाहि परंपद पावैं॥२६॥
वीरनमाहिं रहे रणधीर जू, भीष्मपितामह और कन्हैया।
देवन मध्य गणेश भये तिहुँ, लोकमें हैं तिनके पुजवैया॥
भक्तिशिरोमणि भे प्रहलाद, नहीं इन सों कोउ रामजपैया।
लालजू प्रेम पवित्र है भक्ति, यही भवसागर पार करैया॥२७॥

कवित्त

चुंनि चुनि चुनिंदे ज्वान नाहर लड़ैया जेइ तिनको सजाय पुनि धावा करि घेरि लेउ। खूनीते मतंग मतवाले दंतवाले गज, तिन्हैं लय जाय रिपु दलहिं बघेरि लेव॥ कट्टर जे घोड़े टाप फेंकत उटक्कर हैं, जुलमी चढ़ैया असवारनको टेर लेव। शत्रुनको काटि मुंडरुंड खंड खंड करि, बाकी फौज आगे करि ऊख सम पेरि लेव॥ २८॥ लपकि लपकि ललकारिकै कृपान झारि, घन सम गंजि तंजि वंजि रिपु मारैंगे। घटा घोर युद्ध करि क्रुद्ध अरिदल बीच, मर्दि मीजि काटि शीश लोथ चीथ डारैंगे। पकरि पछारि महि मल्लनके कल्ला फारि हेरि हेरि घेरि घेरि उदर बिदारैंगे॥ टूक टूक ह्वैहैं ध्वज तऊ ना दिखैहैं पीठ, असल कनौजी पग पीछे नाहिं टारैंगे॥ २९॥

कुंड०-सुखसे विपदा है भली, जो थोरे दिन होय।
इष्ट मित्र अरु बन्धुगण, जानि परत सब कोय॥
जानि परत सब कोय बात नहिं पूँछे कोई।
जब संकट टरि जाय मित्र होवै रिपु सोई॥
नारायण धरि ध्यान आप मनको समुझावै।
कछु दिनमें सुख होय सदा नहिं विपति सतावै॥३०॥

१ ये कवित्त जयचंद के वचन हैं

कवित्त

योधा कौन जगमें जो सन्मुख लड़ैगो आय, सामने परे जो आय मेरी तलवारके। मारिकै चिथार डारौं शानहूं निकारि डारौं, नाहर लड़ैया जेइ शूर सरदारके॥ खण्डखण्ड करिभूमि लोथिनते पाटि डारौं, नदिया बहाय डारौं रुधिरकी धारके। कहत पुकारि रण मध्य ललकारि मारौं, भूपतिको मारी अब युद्धमें पछारके॥ ३१॥

सवैया

योगी यती तप सो न रहे, न रहे नृप चक्रवती धनुधारी।
नाहि रहे जग शूर न बीर, महान बली गुण पंडित भारी॥
ज्ञानी रु ध्यानी रहे न यहां, न रहे धनवान न दीन दुखारी।
ईशहु देह धरे न रहे नर, नाहिं रहे तो कहा दुख भारी॥३२॥

कबित्त

दाता कर्ण विक्रम मान्धाता औ दिलीप पृथ्वी, जिनके सुयश द्वीप द्वीप लग छाये हैं। बालिसों बलवान् कौन भयो है धराके बीच, रावण समान को प्रतापी जग जाये हैं॥ बाणकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे, जाहि यश कृष्णचन्द्र भारतमें गाये हैं। ऐसे ऐसे शूर बीर रचे काल पृथींपै फेर चकचूर करि धूरिमें मिलाये हैं॥ ३३॥

सवैया

युद्धको साज बनो चहुँ ओरसे, बीर बली रणधीर सयाने।
वादलसों दल साजि चढ़े, तेहि अवसरकी छबि कौन बखाने॥
शूर महा बलवान सबै, जिनको लखि कालहु हार पराने।
सुन्दर साज कहा बरणौं, तेहि सैन्यको कायर देखि डराने॥३४॥

कुंड०—रणमें शायर दश भले, कायर भले न पचास।
शायर रण सन्मुख लड़ै, कायर प्राणकी आस॥
कायर प्राणकि आस, भागि रणते वे जावैं।

आपु हँसावैं लोग जगतमें नाम धरावैं ॥
कहि गिरिधर कविराय बात चारौ जुग जाहिर ।
शायर भले पांच पांच संग सौ भले न कायर ॥ ३५ ॥

सवैया

जो दश पुत्र जनै गदही, तो कहां दश पुत्र जने सुख पावै ।
लादत लादत भार सभी विधि, आयु घटै तबही मरि जावै ॥
सिंहिनि एकहि पुत्र जनै बनमें सुखसों सब आयु बितावै ।
पूत सपूत सदा सुख देत, कपूत सदा कुल दाग लगावै ॥३६॥

कुंड०-साईं ऐसे समरमें, जो बचि जावैं प्राण ।
छाँड़ि चाकरी घर रहै, देन न आवैं जान ॥
देन न आवैं जान, मान चाहै नहिं होई ।
भीख माँगिकै खायँ नौकरी करै न सोई ॥
नारायण द्विज कहैं, प्राण लै चलै बजाई ।
रण दइ पीठि दिखाइ, भागि गये कायर साईं ॥३७॥
यारौ रणमें आयकै, कीजे युद्ध अघाय ।
बैरिनको हति डारिये, आगे धरिये पाँय ॥
आगे धरिये पाँय, मोह चितमें नहिं कीजे ।
रणमें करि संग्राम, पावँ पाछू नहिं दीजे ॥
नारायण करि ध्यान शूरता यही विचारौ ।
रण में कायर भगै, शूर भागै नहिं यारौ ॥३८॥

सवैया

सूर्य प्रकाश करै जबहीं, तब चन्द्र प्रकाश लखाय परै ना ।
शब्द सुनाय परै हरिको तब, मत्त गयन्द दिखाय परै ना ॥
शूर सिंगार करै रणको, तब नारि सिंगार पै ध्यान धरै ना ।
बात यही समरत्थन केरि कि, भाभी टरै पर बात टरै ना ॥३९॥

कुण्डलिया-मारौ अपने क्रोधको, निश्चय शत्रू ठान ।
ऐसी समता धारिलै, होवै मित्र जहान ॥

होवै मित्र जहान कौन तब मारै भारी।
करि आदर सत्कार बात पूछैंगे सारी॥
नारायण धरि ध्यान बोल सबसों प्रिय बैना।
होउ सिन्धु भव पार पाय जगमें सुख चैना॥४०॥

सवैया

लाज गई बछराजके साथ, तल्वारि गई मलिखान अकेले।
काढ़िकै तेग फिरौ दलमें, पृथीराजकि फौजन मारिकै ठेले॥
लोहूकै नारे पनारे चले, जनु हैं रँगरेज कुसुम्भ सनेले।
रानि कहै मलिखानकी नारि, कि आवत कंत बसंतसे खेले॥४१॥

कुंडलिया—साई पुर पाला परो, आसमानते आय।
पंगु अन्धको छांड़िके, पुरजन चले बराय॥
पुरजन चले बराय अन्धयक मतो विचारो।
धरि पंगाको पीठि दीठि वाकी पगु धारो॥
कहगिरधर कविराय मतेसों चलिये भाई।
विना मते का राज्य गयो रावणको साँई॥४२॥
साँई समय न चूकिये, खेलि शत्रुसों सार।
दाँवपरे नहिं चूकिये, तुरत डारिये मार॥
तुरत डारिये मार नरद काची करि दीजे।
काची होय तो जीति जगमें यश लीजे॥
कह गिरधर कविराय, युगन ऐसी चलि आई।
सौ सौ सौहैं खाय शत्रुको मरिये साई॥४३॥
हिरना बिचलो सिंहसे, औझर खुरी चलाय।
झारखंड झीने परे, सिंहा चले बराय॥
सिंहा चले बराय, समय समरत्थ विचारो।
कुलै कालिमें कानि हँसो हँसिकै पग डारो॥
कह गिरधर कविराय हमहिं याही बन रहना।
आज गई कलजाय, कालिह हम हैं कै हिरना॥४४॥

धोखे दाड़िमके सुआ, गयो नारियल खान ।
खम खाई पाई सजा, तब लाग्यो पछितान ॥
तब लाग्यो पछितान, बुद्धि अपनीको रोयो ।
निर्गुनियनके साथ बैठि गुन अपनो खोयो ॥
कह गिरधर कविराय, कहूँ जैयो न ओखे ।
गई तड़ाका टूटि चोंच, दाड़िमके धोखे ॥४५॥

सवैया

जो घट माटीको फूटि गयो फिर, होत कहा तिहि लाखके लाखे ।
शत्रुन दाँव चलाय दियो फिर, होत कहा बल पौरुष भाखे ॥
धीरज छूटि गयो रणमें जब, होत कहा तब शस्त्रन राखे ।
बात गई जगमें ज्यहिकी, फिरि होत कहा तन प्राणके राखे ॥४६॥
कुण्डलिया—जगमें सारी सोधले, हित अनहितकी बात ।
विना भक्ति भगवानकी, औसर बीता जात ॥
औसर बीता जात, खात है भूलिके धोखा ।
विन चेते निजरूप, होय ना तेरी मोखा ।
नारायण मन समुझि, देख दुख सुख अरु रोषा ॥
धर्म सनातन त्यागि, धरो मत शिरपै दोषा ॥४७॥

सवैया

लाखन भूपनमें इक सुन्दररूप, मणी लगि काम लजावै ।
लाखनकी गिनती दलमें अरु, लाखन शूरन में चलि जावै ॥
लाखन वीर हने क्षणमें लखि, ताहि भगै रिपु प्राण बचावै ।
ऐसो महाबलवान सो लाखनि, लाखनमें तलवारि चलावै ॥४८॥
कुण्डलिया—शुद्ध नाम करतारको, लीजै बारंबार ।
भव सागरको भय मिटै, होवै नैया पार ॥
होवै नैया पार, धारसो पार लँघावै ।
करि आतमका ध्यान, आपमें आप समावै ॥

नारायण धरि ध्यान मना तुझको समुझावै ।
नरतन हीरा जन्म मूढ़ तू व्यर्थ गँवावै ॥ ४९ ॥

सवैया

पुण्य प्रताप प्रभा पलटे, विचरैं खल नीच निशाचर राई ।
भक्तनको दुख भूरि मिलै, अरु पापके भार धरा गरुआई ॥
धर्म रु कर्म घटैं जबहीं, तबहीं जग बाजत द्वेष बधाई ।
भार उतारनको जगमें, तबहीं प्रगटे भुवि श्रीयदुराई ॥ ५० ॥

कुण्डलिया—सबकी बाजी लगि रही, धर्मराजसों जान ।
लेके फांसी हाथ में, यम घोटैंगे आन ॥
यम घोटैंगे आन जान तेरी भरमावै ।
मात पिता सुत नारि बन्धु कोइ पास न आवै ॥
नारायण धरु ध्यान बँधा यमपुरको जावै ।
तब रोवै पछिताय नहीं कछु पार बसावै ॥ ५१ ॥

सवैया

ज्ञान घटे ठग चोरकी संगति, रोष घटे मनके समुझाये ।
मान घटै नित मांगनसे, अरु नीर घटे ऋतु ग्रीषम आये ॥
पाप घटे कछु पुण्य किये, अरु रोग घटे कछु औषधि खाये ।
नारि प्रसंगसे जोर घटे, यमत्रास घटे हरिके गुण गाये ॥ ५२ ॥

कुण्डलिया—सांई अपने भाइको, कबहुँ न दीजे त्रास ।
पलक ओट नहिं कीजिये, सदा राखिये पास ॥
सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजे ।
त्रास दियो लंकेश तासुकी गति सुन लीजे ॥
कहि गिरधर कविराय रामसों मिलि गयो जाई ।
पाई विभीषण राज लंकपति बाजो सांई ॥ ५३ ॥

सवैया

कैटभसे नरकासुर अरु, भीषण द्रोण महायश खेवा ।
बालि बली बलिबाण दधीचि, ययाति दिलीपहुँसे बलसेवा ॥

रावण और युधिष्ठिर भारत, भीम महाबलवान सुदेवा।
अन्त समय उबरे न कोऊ, क्षणमाहिं भये सब काल कलेवा ॥५४॥

युद्ध आज्ञा भुजङ्गप्रयात

अरे आ सिंदूर बजाओ। नगाड़े पै चोब लगाओ लगाओ। चतुर्बर्ण सेना बुलाओ बुलाओ। ध्वजा और पताका उड़ाओ उड़ाओ। रथी सारथी बीर धाओ सिधाओ। चक्राबू रचो शीघ्र सेना सजाओ ॥ अभी मोरचेको जमाओ जमाओ। जंबूरे सिताबी चलाओ चलाओ ॥ निशानेपै तोपैं लगाओ लगाओ। गनीमोंके धुरें उड़ाओ उड़ाओ ॥ कड़ाबीन लै बाण दागो दगाओ। उखाड़ो पछाड़ो गिराओ भगाओ॥ कटारी छुरी बाण बरछी सम्हारो। भरो रक्तका सिंधु खांड़ा पखारो। जहां शत्रु पाओ तहां पीस डारो। पुकारो पृथीराजकी जय पुकारो ॥५५॥

राग सिंदूर

युद्ध अवनि बीर ठवनि धावत बलशाली॥ कं कं कर धर। कृपाण फं फं फेरत सुजान चंचल चला समान चमक है निराली॥ गं गं गहि लेत बाण खं खं खैंचत कमान दं दं द देत तान लागत जनु ब्याली ॥ पं पं पग फिरत जाय बं बं बरछी चलाय सं सं सं सन्‌सनाय धावत जनु काली ॥ रं रं रण करत यहां तं तं तत्काल वहां एक छिन अनेक ठौर दीखत रणवाली ॥ युद्ध अवनि वीर ठवनि धावत बलशाली ॥ ५६ ॥

राग काफी

लड़त सब बीर विनोद भरे
पिचकारिनसे चलत तमंचा, लालहि लाल करे।
गोला चलत कुमकुमा मानों, लाल गुलाल भरे॥
जलसीकरसे तीर चतुर्दिशि, अगणित उमँग परे।
भये रुधिरमें सकल तरातर, मज्जा मेद भरे॥
बर्छी गै त्रिशूल भुशुण्डि, जो जेहि हाथ परे।

मार मार कहि मारत बहुबिधि, तनकी सुधि बिसरे ॥
धुवांधार अंधियार दशौंदिशि, गरदाबाद भरे ।
मच्यो घोर घमसान कौन कित, काहु न जान परे ॥९७॥

नाराच छन्द

अनेक पागको तजैं भजैं दशा निहारिकै ॥
अनेक वस्त्रहीन शस्त्र भूमिमाहिं डारिकै ॥
अनेक अंग भंग संग साथको विसारिकै ॥
अनेक भागि जायँलोकलाजकोनिवारिकै ।
अनेक पादुका विहाय धाय गात मारिकै ॥
अनेक जी बचाय जायँ घास शीशधारिकै ॥
अनेक साधु वेष साजि जातवस्त्र फारिकै ॥
अनेक हाय मार मार प्राण देत हारिकै ॥ ९८ ॥

कवित्त

धावहु चतुरंगिन लै वेगि बलशाली जन, पृथ्वीते नाम पृथ्वी-राजको मिटाय दो । गावहुसिंदुराअरुशंकरादि ऊंचे स्वर, तोपनको मारि मारि भूमि उलटाय दो ॥ लावो मम शस्त्र मैं हूँ चलौंगो तुम्हारे संग, शत्रुको सुयश आज धूरिमें मिलाय दो । दाबहुस्वसैनसे रिपुनको भले प्रकार, दिल्लीहि उजारि बीच धारमें बहाय दो ॥ ९९ ॥ फूटि गये हीरकी बिकानी कनीहाट हाट, काहू घटि मोल काहू बाढ़ि मोलको लियो। टूटि गई लंका फूटि मिलिगो विभीषण आय, रावण समेत वंश नाशवान ह्वै गयो । कहै कवि गंगा दुर्योधनसे छत्रधारी, तनिकके फूटते गुमान वाको नैगयो । फूटेते नारद उठि जात बाजी चौसरकी; आपसके फूटे कहो कौनको भलो भयो ॥ ६० ॥

बीररस सवैया

रामशरासनते चले तीर, रहै न शरीर हाड़ाबड़ फूटी ॥
रावण धीर न पीर गली लखि, लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥

शोणित छीट छटानपरी, तुलसी प्रभु सोहै महाछबि छूटी।
मानहु मर्कतशैल विशामें, फैलिरही जनु बीरबहूटी ॥ ६१ ॥
गहि मन्दर बन्दर भालु चले, सो मनो उमड़े घन सावनके।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके, झपटे भट जे सुरदावनके ॥
विरुझे विरुदैत जो खेत अड़े, न टरे हठि बैरबढ़ावनके।
रण मारु मची उपरी उपरा, भलेवीर रघूपति रावनके ॥ ६२ ॥
कीजै न कोप कृपानिधि राम जो, तौ गढ़लंक उठाय मैं लाऊँ।
काऊको भय अरु शंक न मानिकै, रावणरानिते पानी भराऊँ॥
लच्छ कहैं रघुराज समच्छ, विपच्छज सो नित सिद्धि चलाऊँ।
माथे मरोरि धरौं दशकन्धके, नाथके हाथका पान जो पाऊँ ॥ ६३ ॥
कुम्भकरनको हन्यो रण राम, दल्यो दशकन्दर कंधर तोरे।
भूषण वंश विभूषण भूषण, तेज प्रताप गरे अरि ओरे ॥
देव निशान बजावत गावत, धावत गे मन भावत मोरे।
नाचत वानर भालु सबै, तुलसी कहि हारे हहाभय हारे ॥ ६४ ॥
हनुमान हठीलो रँगीलो बली, जेहि मान मथ्यो गढलंकपतीको।
लैकै मुन्दर कूदि समुन्दर, शोक हरो जाय सीय सतीको ॥
लाय पहार दई है सजीवन, तेज गयो क्षणमें शकती को।
तुलसी जन संकट क्यों न कटै, जब ध्यान धरै हनुमान यतीको ॥ ६५ ॥
बालि बँध्यो बलि राव बँध्यो, करशूलीको शूलकपालथली है।
काम रच्यो जर काल परचो, बँधसेतु धरचो विष हालहलो है ॥
सिंधू मथ्यो खलकाली नथ्यो, कहि केशवचन्द कुचालि चली है।
रामहुँकि हरी रावण वाम, चहूँदिशि एक अदृष्टबली है ॥ ६६ ॥
कोशल राजके काज हौं आज, त्रिकूट उपारिकै वारिधि बोरौं।
द्वौ भुज दंड दै अंड कटाह, चपेटके चोट चटाक से फोरौं ॥
आयसु भंगको जो न डरौं तौ, मींजि सभासद शोणित बोरौं।
बालिको बालक तौ तुलसी, दशमुखहूँके रणमें रदतोरौं ॥ ६७ ॥
तीर कमान गही दलमंडक, मारमची घमसान मचायो।

योगिनि रज्जकै भारी भई, शिवशंकर मुंडकै माल लै आयो ॥
भीम समान को युद्ध कियो, कवि जैत कहै जगमें यश पायो ।
शाहके काजपै शूरलड़चो, शिरटूटिपरचोधड़धारुकेधायो ॥६८॥
अंजनिजात दई जब लात, गिरचो हहरात न गात सँभारो ।
फेरि सचेत उठचो रणधीर, भई अति पीर शरीर न टारो ॥
रावण ताहि प्रशंसि कह्यो अति, है बल पौरुष कीश तिहारो ।
देखि हृदय सकुचे हनुमान, न प्रान गयो धिक मान हमारो ॥६९॥
मंडित जे रविरूप किरीटन, माणिक मोतिनसों झलकारे ।
पूजित फूल सुगन्धनसों नभ, बालनके तनमें महकारे ॥
काहू लचे न लचावत और, न चन्दन ऐसे महा महकारे ।
ते शिर रावणके रणमें हनुमान, बली चढ़ि लागत मारे ॥७०॥
इन्द्रके वज्रसे जे न टरे न टरे, हैं जलेशके फांस प्रहारे ।
शंभुत्रिशूल गह्यो नहिं नेक न, विष्णुके चक्रसो वक्र न हारे ॥
ब्रह्मकी शक्ति न शाले हिये, रण आयते रावणके ललकारे ।
काल दपेटन जे न टरे, हनुमान बली ते चपेटन मारे ॥७१॥
अति कोपसो रोप्यो है पांवसभा, सबलंक सशंकित शोर मचा ।
तमके घननादसे बीर प्रचारिकै, हारि निशाचर सैन पचा ॥
न टरै पग मेरुहसों गुरुओ, सो मनो महि संग विरंचि रचा ।
तुलसी सब शूर सराहत हैं, जगमें बलशालि है बालिबचा ॥७२॥
तोसों कहौं दशकंधर रे, रघुबीर विरोध न कीजिये बौरे ।
बालि बली खर दूषण और, अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसोइ हाल भयो कहि कौन तो, लै मिलु सीय चहै सुखजौरे ।
रामके रोष न राखिसकै, तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥७३॥

कवित्त

हनूमाननन्दन प्रभञ्जनको लंकाबीच, कूदो देखि साहससरा-
सरके सरके । तालदेत जाके काल कालको कराल भयो, छुटिगे

हथ्यार जे कराकरके करके ॥ खल भललकहीयखलनके हाल हल, दहल कमलके बराबरके करके डरि डरि ढुरि गये अडर डराय ठह ढरढरढरके धराधरके धरके ॥ ७४ ॥ वारिटारि डारों कुंभकर्णहीं बिदारिडारों, मारौं मेघनादै आजुयों बल अनन्त हौं । कहैं पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहि डारौं, डारतकरेईयातुधा-नन को अन्त हौं ॥ अच्छहि निरच्छ कपि रिच्छहि उचारौं इमि, तोत्र तिच्छ तुच्छनको कछुवै न गन्त हौं । डारि जारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन, फारि डारौं रावणको तो मैं हनुमंत हौं ॥ ७५ ॥ सोहैं अंत्र ओढ़ जे न छोड़ शीश संगरके लंगर लँगूर उच्च ओजके अतंकामें । कहै पदमाकर त्यो करके फुन्करत, फलत फुलत फाल बाँधत फलंकामें ॥ आगे रघुबीर-के समीरकै तनैयके संग, तारी दै तड़ातड़के तड़के तमंकामें । शंका दै दशाननको इंका दै सबका, बीर डंका दै विजैको कपि कूदि परचो लंकामें ॥ ७६ ॥ देखि चंडमुंडको प्रचंड उग्र बोली शिवा; अबल अरक्षणकी पक्ष पक्ष पाली हौं । कहै पद्माकर देव कौतुक विलोको नभ, चारौं दिग दन्तिबेको आजु दुराताली हौं ॥ फोरि डारौं वसुधा मरोरि डारौं मेरु गिरि, कालचक्र तोरि डारौं आजु मैं बहाली हौं । काली करौं अरिदल सबै बिकराली करौं, जगभूमि लाली करौं तौ मैं महाकाली हौं ॥ ७७ ॥ लगीसों लगाई लंक खेहनि खराब करौं, मारि करौं मारनि आहार मार जारेको । सो कवि निधान कान अंगुरीन मूंदि दहौं सुनि हौ न घोर शोर झिल्ली झनकारेको ॥ भेकनकी भीड़ सहसानन मिटाय डारों, मेटि डारौं गरब गरूर धनकारेको । पाउँ जो पकरि कहूं जलसों जकरि तन, फीहा फीहा करौं या पपीहा दई मारेको ॥ ७८ ॥ गरदके झुंड ढक्यो मारतण्ड मण्डल लै बाने फहराने जब ढिग आनि अरिके । तमकि तमकि तब राजे

करजीले वीर, बिरुझाने खरुझाने जैसे बाघ थरिके ॥ मण्डन विरचि लीनी घोड़नकी बाग दीनी, दौरि के दरेरे जैसे भादवकी लरिके। जित तित बिचली सलौह लगे लहकन, बरसन बाण लगे जैसे बूंद झरिके ॥७९॥ अभय कठोर बाणि सुनिके लखन जूकी, मारिबेको चाही जो सुधारी खल तलवारि। वीर हनुमन्त तेहि गरजि है हास करि झपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि ॥ पुच्छन लपेटि अरु दंतनसों दरदराय, नखन बकोटि चोंथि देत सहि डारि डारि उदार बिदारि मारि लुत्थन लुटारि बीर; जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि ॥८०॥ नाचि नाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि उछरि उछरि राहि लेत आसमानकी। बलकि बलकि बलु करि छरिदरि छरत छरेत भेद कृत गति भानकी ॥ रुंडनसों रुंड अरु मुण्डनसों मुण्ड करी, भारीभट झण्डनघुमड़ मारु घानकी। स्याबसि कहत राम हिये हरषात जात, देखो बीर लषण लड़नि हनुमानकी ॥ ८१ ॥ आयो आयो सोई वानर बहोरि भयो, शोर चहुँ ओर लंका आयो युव–राजके। एक काढ़े सौंज एक धौंज करे कहा ह्वैहै, पोच भई महाशोच सुभट समाजके ॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथ करि मूँदे कान यातुधान मानो गाजे गाजके। सहमि सुखाति वातजातकी सुरति करि, लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेट बाजके ॥ ८२ ॥ लोथिनसे लोहूके प्रवाह चले जहां तहां मानहु गिरन मेरु झरना झरत है। शोणित घोर कुंजर करारैं भारे कूलते समूह वाजि विटप परत हैं ॥ सुभट शरीर नीर चारी भारी भारी तहां, शूरन उछाह कूर कादर डरत हैं फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात, काक कंक बालक कोलाहल करत हैं ॥ ८३ ॥ दिग्गज

दबक जात शेष शीश अलसात, हलहलात वारिधि घटत द्युति भानुकी। मेरु धसकत कसकत उर रावणको चलत अवनि छबि छपत कृशानुकी॥ सुभट सकात दैत्य देखिकै परात मन, राम मुसुकात अति आय निज जानकी। गर्भ गिरिजात शोक सुर वितात वन, नाक अररात सुनि हाँक हनुमानकी॥ ८४॥ जाकी बांकी वीरता सुनत सहमत शूर, जाकी आंच अबहूँ लसत लंका साहसी। सोई हनुमान बलवान बांको बनाइत, जो है यातुधान सेना चले लेत थाहसी। कम्पत अकम्पन मुखाय अतिकाँप काँप, कुंभऊ करण आय रह्यो लेत आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्यों गरज धायो, वीर रघुवीरको समीर सुनु साहसी॥ ८५॥

इति श्री आल्हखण्ड कवितावली समाप्त

श्री:

कवि चन्दभाटकृत आल्हखंडकी भूमिका

★

कवि चन्दवरदायी कृत आल्हखण्ड लिखनेसे पहले कवि चन्दभाटकृत आल्हखंडमें सत्यासत्यका निर्णय कर लेना परमावश्यक है। परंतु इस बातका निर्णय करना कठिन ही नहीं वरन् असंभव है, क्योंकि यदि चन्दकृत "पृथीराजरासो" को सत्य मान लिया जाय तो आल्हा गानेवालों का कुछ गाना असत्य हो जायगा। यदि आल्हा गानेवालों का आल्हा सत्य माना जाय तो कविचन्दकृत पृथ्वीराजरासो में का आल्हखंड पक्षपातयुक्त प्रमाणित होता है। यह बात तो सत्य ही है कि "जिस राजाके यहां जो कवि परिपालित होता है वह कवि उस राजाके पराजयकी बात तो लिख ही नहीं सकता, जयकी बातको शतगुणा बढ़ाकर लिखता है, इस वाक्यके अनुसार चन्दकृत आल्हखंड को पक्षपातयुक्त मान लेने में आश्चर्य की बात नहीं है। परंतु इतिहासकार चन्दकृत पृथीराजरासो को इस कारण निरंतर सत्य मानते हैं कि वह पुस्तकाकार होकर प्रचलित हुआ, साथ ही इतिहासोंमें भी पाया जाता है और आल्ह अल्हैतों की जबान पर ही रहा। जबसे विक्रमीय संवत् १९२९ में फर्रुखाबाद कम्प फतेहगढ़में बन्दोबस्त के कलक्टर मिस्टर सी. ई. इलियट साहब बहादुरने अल्हैतोंसे आल्हखड लिखवाकर उसका तर्जुमा अंगरेजीमें कराके लंदन भेजा और हिन्दीमें कम्प फतेहगढ़में "दिलकुशा" प्रेसमें पहिली बार छपा तबसे आल्हखंड पुस्तकाकार प्रचलित हुआ इसमें ५२ गढ़के राजाओंकी बातें हैं यह आल्हखंड सच्चा है। इसमें तेईस लड़ाइयां हैं, तेईस लड़ाइयों से पृथक् २६। ५६। ६४ लड़ाइयोंवाले आल्हखंड में जो जो लड़ाइयां सच्ची नहीं हैं, उन झूठी लड़ाइयों को पढ़ने और विचारनेसे बुद्धि मान जनोंके हृदयमें उनकी झुठाई भासित हो जाती है, परंतु जिन लोगों के हृदय में विचार शक्तिका अंकुर ही नहीं जमा, उनके लिये तो सब धान बाइस ही पंसेरी है। अस्तु, इस विषय में सुज्ञ पाठकगण स्वयं विचार कर लेंगे।

वशंवद:-

नारायणप्रसाद-सीताराम, खीरी.

श्रीः

अथ कवि चन्दभाटकृत आल्हखंड प्रारंभ

★

दोहा—कहत चन्द गुन छन्द पढ़ि, क्रोध उदंगल सोइ ॥
चहूँआन चंदेल कुल, कंदल उपज न होइ ॥१॥
चहूँआन पूँछत बगदि, कौन बरस किन मास ॥
कौन बारको तिथि सुकवि, करौ विचार निवास ॥२॥
ग्यारहसै चालीस इक, युद्ध अतुल भर होइ ॥
कातिक शुदि बुध त्रयोदशी, समर सामिला लोइ ॥३॥
आठ सहस असवार सजि, परस्थान नृप कौन ॥
पूरब दिशिपर गमन किय, सुआ वचन सुनि लीन ॥४॥

छप्पै

समर सिखरि गढ़ परनि राज दिल्लिय दिशि चल्लिब ।
पातसाहि सुनि खबरि धाय बिच ही रण मिल्लिब ॥
सकल सिमिटि सामन्त चन्द कयमास बुद्धिवर ।
लहिब युद्ध चहुँआन गहिब पृथीराज अप्पुकर ॥
राजपूत पंचास रंण लुट्टिय वर सेना घनिय ।
सहस षष्टि पट्ठान पर जीति चल्यो सभरि धनिय ॥५॥

चौपाई

राजा दिल्ली दिशि चढ़ि आइब । चूकी राह बहीर सुभाइब ।
घायल आइ महोबे पानह । हो परिमाल सुनी इह कानह ॥६॥

छंद पद्धरी

बरनी विवाह चहुँआन रान । जब सुने वचन निज करि प्रमान ॥
जाइब गँभीर भानियो वीर । कमोद भनी जोती गहीर ॥
रण कटिब पंच हैं यह हजार । जादों कमोदमनि कटि दुतार ॥
सुलतान पकरि लिये नृपति आइ। रुसमत्त ताप मिट गये ताइ ॥

जुग्गिनि पुरेशदिशि रतिय पाइ । भूली बहोरि महुबे सुआइ ॥
घांयल पचास रजपूत संग । दासी सुमंजरी अति अनंग ॥
पहुँचे सु महोबे निकट आइ । बरसै सुमेघ बूँदन अघाइ ॥
भये बिकल लोग घायल उताप । नृप बागवान चलि गये आप ॥
जहँ महल बने अन्नेकनेक । कलमलत जोध चढ़िचढ़ि अनेक ॥
बरजियो आय मालीन सोइ । बोलियो बोल आनि क्रोध होइ ॥
गारी सुदीन उभहारि हत्थ । फको सु एक पत्थर समत्थ ॥
लाग्यो सु आइ रजपूत शीश । धायो सुतेग कटि कटि बरीस ॥
दीन्ही सुँघाय दुहुँ हत्थ सोइ । उड़ि पऱ्यो मत्थ धरणी सुसोइ ॥
भइ कुक सुनी परिमाल राज । पट्टाय जोध करि हुकुम साज ॥
चँदेले बैस जाधरा सूर । चौदा सहस्र कलमले शूर ॥
सोइ लखी जादवे चढ़ि नरेश । सजि गहरवार गोइल अशेश ॥
बरजियो बनाफर युद्धताइ । क्यों करत बैर चँदेले राइ ॥
पृथीराज लोग घायल गहीर । आई जु थान भाजी बहीर ॥
बैरजो आइ निज शरण लेहि । बोलिये नहीं जो दुःख देहि ॥
चहुँआन नाहिं आपुको शत्रु । तिनपै न राज बांधिये अस्त्र ॥
परिमाल उच्चरिव सुनौ आल्ह । बिन चूक मारि माली कराल ॥
काल्हिको आइ पृथीराज शूर । मारि हैं और काहू हजूर ॥
बरजियो बनाफर युद्धताइ । हरिदास बघेलो विरचि भाइ ॥

१ यहां इस बातपर विचार करना चाहिये कि क्या पचासों राजपूत घायल थे उनमें कोई बिना घावके न था ? फिर मालियोंने आकर उनको मना किया और गालियां दी तथा पत्थर भी फेंके ये बातें झूठ मालूम पड़ती हैं कि राजपूतोंने कुछ नहीं कहा और मालियोंने इतने काम कर डाले, यह पक्षपात नहीं है तो क्या है ? सच्ची बात तो यह है कि वह जनाना बाग होगा उसमें ये लोग जा ठहरे और अपने उद्धत स्वभावके अनुसार गुलगपाड़ा करने लगे होंगे; तब मालीने मना किया होगा इस पर इन्होंने मालीका सिर काट डाला एवं सर्वत्र समझना चाहिये ।

आये सुसाजि दरबार शूर । रानी मल्हना बोली हजूर ॥
तुम हनौ जाय इनकी समाज । क्षत्रिन धर्म इन नाहिं राज ॥
कुञ्चे अवास छञ्जे समुद्ध । परिमाल तहां बैठे विरुद्ध ॥
मालिनि पुकार कीन्हीं नवीन । परिमाल फौजपर हुक्म कीन ॥

दोहा-पकरि बाग रजपूत सब, क्रोध जानि परिमाल ।
शिर लाग्यो आकाशसों, पायँ लगे पाताल ॥८॥

छन्द मोतीदास

कियो परिमाल हुकमसुगाजि । चले सब रावत जंगपै साजि ॥
चँदेले बनाफर मुख्य सुशूर । बघेल बगोइ रहैं झकझूर ॥
चले भर जां घरमल्हन सोइ । चले भर जद्दव मद्दव होइ ॥
चल्यो हरिदास बघेलबिलिट्ठ । सुचारियसेन उचारिय इष्ट ॥
निवाजित्र बैस चँदेल हुकम्म । सम्मुख शस्त्र सुअस्त्रभिरम्म ॥
सुनी रजपूतन बात कुढंग । वधे वपु धाय उताय उतंग ॥
कसै रजपूत सुन्यो जब घेरु । कही परिमाल करौजिन बेरु ॥
सुनै चहुँआन नछांड़ि हैं दाउ । करो मति युद्ध चँदेलन राउ ॥
करौ पृथिराज सुकाज विरुद्ध । भजौ तजि खेत जुरै जब युद्ध ॥
इती सुनि बैन किये रतसैन । कहीं नृप मारहु मारहु ऐन ॥
सबै सब साजि चँदेलन फौज । मिले रजपूत सनम्मुख चौज ॥
भई जब दृष्टि सुदृष्टिकरूकरि । मिले रजपूत सनम्मुख पूरि ॥
मिले मुख आइ सुछल्लजु आन । उल्हन अक्षियक्रोध अमान ॥
लगे शर शायक क्षत्रिन आइ । किधौंविषआसिय पासिय पाइ ॥
लगे उर सांगि शकत्तिय सेल । करै दुहुँ बीरदुही मुख खेल ॥
कटक्कत्त घाइल खग्गन खाइ । खटक्कत सेलन खेलन राइ ॥

१ यहां शंका यह है कि आल्हाकी इच्छा न थी राजाने आज्ञा नहीं दी थी तो मल्हनाने सहसा कैसे आज्ञा दे दी कि जाकर इनके समाज को मारो । ठीक खबर तक मिली नहीं मालिनिने पीछेसे आकर खबर की इस प्रकार सर्वत्र शंकाएं हैं सो नहीं लिखेंगे, क्योंकि यहां इस पुस्तकके खंडनकी आवश्यकता नहीं है ।

गटक्कत गोटन गिद्धन दौरि। घटक्कत घायलवाहिमरोरि॥
नटक्कत नाचतधाई मुछाल। चटक्कत चौंप गही करमाल॥
छटक्कत मूर धारापर धाय। जटक्कत जूथन जुग्गिन चाय॥
झटक्कत एकनको गहि एक। टटक्कत लुट्टक कुट्टक मेक॥
ठठक्कत काइर दीसत युद्ध। डुडक्कत डौरुववाद्य विरुद्ध॥
ढुढक्कत ढुढक्कत रुक्कतसाइ। णणक्कत रूख खणंकत काउ॥
ताता थेई नाचत विक्रम मंकि। थरत्थर कंपत कायर अंकि॥
दरद्दर दौरत बीर दुरन्त। धरद्धर चाल परं न करन्त॥
नरन्नर रूर सरूर रखाय। परंपर फुट्टत जुट्टत काय॥
फरफ्फर फौज तरफ्फर मार। बरब्बर लाजत घायल लार॥
भरभ्भर भाजिय फौज चंदेल। मरम्मरसुद्धिय सिद्धिलखेल॥
बरब्बर छेदिय घायल धाई। लरे पृथीराजकि सैन सुधाई॥
तबै उमराबन पाइल चाल। भजीसबफौज लखी परिमाल॥
हजार सुतोनि परे धर मध्य। भजीपरिमालकिफौजप्रसध्य॥
कटे रण तीसक घायल सोइ। रुपै रण बीस कपंड बहोइ॥
गह्यो गुणमंजरि पाणिय धाय। उठावति प्यादति कीनहुचाय॥
लगे शर सेर सुसत्रह गात। करे गुणमंजरि जुग्गिनिबात॥
निवाजिय वैस चँदेलन तान। बली दरिदासनिपाइ बितान॥
तबै नृप ऊदनि लीय बुलाय। सुनी जब कान पयादेइ धाय॥
पठाइय मल्हन दै तलवारि। अहौ इन घायललेहु ज़ुमारि॥
कहै जब ऊदनि वैन प्रसिद्ध। सुनौ नृप ए रजपूत अवद्ध॥
नहीं इह राजनको भ्रम ताप। करौ इनकी अबचूक सुमाफ॥
कही परिमाल दिवन नवीन। हना इन फौज हजार सुतीन॥
हिनो इनको रनि ऊदनि लोइ। तबै हगचैनल है सब कोइ॥९॥

छप्पय

जब ऊदनि मुख उचरि सुनहुपरिमाल अरजइक। घायल महा
अबद्धकही परमान व्यासतक। होय चौप चहुँआन रोषभित्तन

नहिं मारिय। अतुल तेज पृथीराज सुनौ बिनती हितकारिय।
चन्देल चाहि मानो अरज अरथ लगै सोइ कीजिये। नहिं करौ
बैर पृथीराजसे जग ऊपर जसु लीजिये ॥ १० ॥

चौपाई

सुनि ऊदनिकी बानी लोइ। महिला भोपति बोले दोइ॥
हम दरबार भाइ दोउ मंडहिं। रजपूतनपरमाव्रतखंडहि॥११॥

दोहा—महिला भोपतिकी सुनी, रिस पाई परिमाल।
दौरो ऊदनि मारिये, घायल घाइन हाल॥१२॥

छंद भुजंगी

सुनीबात चन्देले भोपत्ति भाषी। भयो यार ऊदन्निकेबेगसाषी॥
गहैं तेग हत्थं समत्थं सुधायो। लड़ौवेगखर्गंतमासोदिखायो॥
कियोराज फुरमानडेरा सिधारे। किये कूच अग्गंनिहंगनिहारे॥
दिये पंच हज्जार सत्थं चंदेले। चले बागकाज समाजै सुझेले
निकट्टं च बाग वच न पुकारे। कढ़ौबेगिरजपूत चहुँ आनरे॥
सुनो कनकबानीगुमानीचलाये। अभंगं बलीबाहुजंगं मिलाये॥
कहै कुदलं फेरिमनमें बिचारी। इनैंक्योंभजैजोभयंखाहमारी॥
करैं खंड खंडभुसंडं भकरैं। हथ्यारंधरौजोधऊदनि हकारैं॥
भजौ जाउह्यांते बचै जितिहारो। कहो मांनिये आपु सुन्दर हँमारो॥
तबैकनक बोल्यो महारोष ह्वैकै। गिरैशीश तोऊ लड़ै रुंडह्वैकै॥
सुनो नन्ददस्सराजके बारबारं। पृथीराजको लोन खर्ग उजारं॥
इही बोल बानीदलंबीच रूरे। दिये आय सेलं किये बोलपूरे॥
चलावंत बीरं दुहूँ ओर बांके। परे फूटिधरणी दुहूँसैनधांके॥
चलावंत बीरं शकत्ती कटारी। उरं फोरिही कंपरैंकूटिन्यारी॥
चलावंत गुरज शिरंचूर होई। लगै जासु अंग गिरै भूमि सोई॥
चलावंत मुद्गर हकारंत शूरं। मकारंत भै खातकायरसुकूरं॥
चलावंत बीरं बरच्छी सभारी। परे फूटिन्यारी उरंलागिभारी॥
लगे सांग छाती भयंरंद भारे। मनो जावकंभाटकीने पनारे॥

लगै हीकचमड़ाढहै जाति पारं । अटारीमनोकामिनीखोलिद्वारं ॥
बहै तेग कंधं परै सांस न्यारे । गिरै टूट तरबूजतेसे मुण्डभारे॥
पटेबाज केते लड़ैं धोखे दैकै । लगामस्सुमत्थं फिरैं मुण्ड लैकै ॥
कितेज्वानमुदगरलिये हाथसीलं । फिरावैं चलावें करैं खीलखीलं॥
परे रुंड मुण्डं कहूँ हाथ डुण्डं । कहूँ पाइँ प्यादे कहूँ पीलमुंडं ॥
कहूँ कंध बंधं कहूँ रंद हीकं । कहू हैबर टूट धरना धरीकं ॥
भयाजुद्धभारी बही स्रोतधारा । गये टूट घायल लड़ेसो अपारा॥
रह्या एक शूरंकन हैं अमानौ । लियोसेलहत्थंढ़ियोसोरिसानो॥
कहै उद्दसों बैन किलकार रोमं । बलं आपुमेंतौलड़ौआयमोसं॥
सुनैबैन रनमें पिल्यो उद्द भारो । गहै तेग दत्थं समत्थ प्रचारो ॥
इतै कनक चहुँ आनरजपूत धायो । बरंबीर ऊदनिपै कोपि आयो॥
गयो कोपि बीरंजहांउद्दघाती । दियोजायसेलंकियोसालछाती॥
दई तेग उद्दं गई पारमुंडं । गिरचाशीशजोरंभयोबीरडुपडं॥
हियो सौ उरं उद्दखे एकने जाय । भयो पार पेटं अलेटं कलेजा ॥
इतै शूर आयोधरनिचाहु गानं । उतै मूरछा उद्द खाईस्सु ज्वानं॥
अचासों परे घायलं खेत जाने । बरछी लगी तेगजमधरकमाने ॥

छप्पै

कटे खेत चंदेल शूर इक सहस समानह । गिरेबनाफरसाठि देखि ऊदनि परमानह ॥ परि परिहार पचास परे चेरा क्षत दोइक गहरवार शत दोइ लोइ अंतर शिर होइक ॥ राजपूत धरे घायल कनक परे बीस संज्ञा गइय । कविचन्द कहैं परि-मालसों पृथीराजसों लग्गइय ॥ १४ ॥

चौपाई

परे बीस घायल रजपूतह । सहस एक चन्देले सुदूतह ॥
गहरवार शत दोइ समानैं । परे बनाफर साठि अमानैं ॥१५॥

दोहा–परे बीस घायल सर, और कनक चहुँ आन ॥
परि ऊदनि रण मूरछा, कटि दासी बपुरान ॥ १६ ॥

छप्पय

कटि दासी बपुरान लाखै परिमाल अवासह । सहस एक चंदेले खेल रणही करि बासह ॥ लग्गि नई परिमाल चाइ पृथीराज तनंवरि । कहत चंदबरदाय बीस घायल परिसंभरि ॥ सनमध्य देश जातह परिन घायल सो महुबे गवन हुव बनि विरुद्ध जहुँ आनसों भविष्य वचन मेटे कवन ॥ १७ ॥

चौपाई

ऊदनि जगी मूरछा शूरह । उठे चले चंदेल हजूरह ॥
जाइ कही हम घायल मारे । वे सामी परि सबै सँहारे ॥१८॥

दोहा--कही उद्द जो तुम हुकम, कीनो हमको राह ॥
सोई हस पूरा कियो, मारे घायल धाय ॥ १९ ॥
बहुत भये चन्देल खुश, सुनि ऊदनिके बैन ॥
बहला पास बुलायके, लगे इनाम सुदैन ॥ २० ॥
हाथी दोइ तुरंग शत, मोतिन माल सुदेश ॥
ऊदनिको शिरपांव दै, उठि करि आपु नरेश ॥ २१ ॥
कियो हुकम चन्देल नृप, मानौ मेनि बहु सोइ ॥
देखन गढ़ सुकलिंजर, चलौ आजु सब कोइ ॥ २२ ॥
करो त्यार रनिवासको, नवल नगरको साजि ॥
आल्हा पास बुलायकै, कियो हुकम नृप गाजि ॥ २३ ॥

छन्द पद्धरी

बुल्लाइ राज अल्हन्न लीन । सब शूर बीर सज्जत प्रवीन ॥
हाथीन रत्न साजहु सुवेग । बलवान शूर बाँधत सुतेग ॥
डोला सुडोल चहुँडोल सज्जि । रनिवास काज डंबर सुगज्जि ॥
एदल प्रवीन अन्नेकभार । रहकला तोद बंदूकसार ॥
नौबत्ति नाद नीसान बज्जि । घनगरजि मेघसुरपत्तिलज्जि ॥
कालिंजकाजचढ़ि चलि नरेश । आनंद होय तहँ करि प्रवेश ॥
बुल्लाय पुत्र नृपसंग लीन । ऊदनि बुलाय करिहुकुमकीन ॥

तुम चलौ नगर कालिंजपत्थ । लै शूर बीर सामन्त सत्थ ॥
चलि चलिय राज एकंत होय । वहिपर समूह करबल सँजोय ॥
सब चले साजि परिमालसंग । पहुँचे सुजाय जहँ बन उतंग ॥
परिमाल हुकुम कीन्हो सुतब्ब । खेलौ शिकार सब शूर अब्ब ॥
खेलन शिकार सब शूर बीर । एकै हुलाश सज्जत गहीर ॥
देख्यौ कुरंग वन एक राज । हयवरसु आल्हा कीन्हो दराज ॥
ललकारि शूर हय दपटि धाय । लिय पकरि मिरग जीवत सुभाय ॥
खेलैं शिकार सब शूर ज्वान । फिरि चले नगरको करि उठान ॥
पहुँचे सुनगर कालिंज जाय । सब देशमांझ पटिगये पाय ॥
लीन्हे सँजोय शुभतिलक नारि । गावंत गीत ठाढ़ी दुवारि ॥
सबहीको राज सन्मान कीन्ह । द्वै द्वै सुहेम सबहीको दीन ॥
जब गये महल भीतरहिं राज । सब शूर वीर डेरन समाज ॥
रनिवास साथ महिला समेत । भोपत्तिसंग दाखिल निकेत ॥ २४ ॥

दोहा—करी केलि परिमाल नृप, सब रनिवास समेत ॥
महिला भोपति भूपको, मतो कुमतिको देत ॥ २५ ॥
आल्हा हय दौरायकै, पकरि लियो मृग जाय ॥
उनके ऐसे पांच हैं, नृपके एक न भाय ॥ २६ ॥
घोड़ा पांच मँगाइये, देहु आल्हको और ॥
नाहिं करैं तौ घर तजैं, जाहिं औरही ठौर ॥ २७ ॥
होनहार होइकै रहै, मिटै न क्योंहूँ जानि ॥
आय गई मनराजके, बात कुमतिकी खानि ॥ २८ ॥

चौपाई

भोपति आल्हा उद्द बुलाइब ❋ नृप कह ऐसे वचन सुनाइब ॥
पांच बछेरा घरके दीजे ❋ उनके पलटे हयवर लीजे ॥ २९ ॥

दोहा—घोड़े देहु तौ घर रहो, देहु न तजौ सुठाम ।
द्वैमें नीको जो लगै, कीजे ताहि सकाम ॥ ३० ॥

छप्पै

आल्हा सुनि इमि वचन बोलि उत्तर नहिं दीन्हों। उठि आयो घर सुभट मंत्र मातासों कीन्हों॥ कहिय आज उन चुंगुल बात मोसो इक भारी। घोड़े घरके देहु राज मांगत मनुहारी॥ छांड़ि देश नातर अबै आन देश कीजै गवन। तुम कहौ मतो सो कीजिये माता मंत्र सुनिये श्रवन॥ ३१॥ माता सुनि यह बात कही आल्हासों बानी। पूत बछेरे न देहु लेहु यह बात सुगानी॥ देहु छांड़ि यह देश लेउ कनउजका गैलह। मिलौ चलिय जयचंद और छांड़हु सब रैलह॥ सुनि मात बात सोई करिय उही बार कीन्हो गवन। सब साजि अपने कटकको चले आल्हा दुर्जन दवन॥ ३२॥

दोहा—आल्हा महोबो छांड़िकै, कनउज कियो पयान॥
मिले जाय जयचन्दसों, बाजे नगर निशान॥ ३३॥
भोपतिकी मारत गई, जागीरी दलपत्ति॥
गिर्दंत लूटत भगे, गाम सबै सब जत्ति॥ ३४॥
पृथीराज कानन सुनी, घायल हतन सुजान॥
महुबेते परिमाल नृप, कालिंज कियो पयान॥ ३५॥

छप्पै

सुनि खबरि चहुँआन बोलि सामन्त शूर लिये। सोच जालमहँ परचो भयो बहु प्रबल दुःख हिये॥ कौन चूक चन्देल हने घायल रण पानह। कौन चूक चन्देल हनो गुण मंजरि जानह॥ कीन्ही न खूब चन्देल नृप नाहक मारि विरुद्ध किय। कवि चन्दवाक्य सांची भई मिट नहीं बिनु जुद्ध किय॥ ३६॥

दोहा—यह विचारि राजा कहत, सब सरदार बुलाइ।
सुनहु सर्व सामन्त हो, करौ मंत्र अब आइ॥ ३७॥

छप्पै

सुनौ सर्व सामन्त करिब चँदेल विरुद्ध। हनि घायल

बेचूक और दासी वपु सुद्धह ॥ सुनौ मन्त्र कयमास सुनौ गुज्जर राय रामह सुनौ चन्दपुण्डीर सुनौ जादौगुनधामह ॥ चामुण्डराय सुनिये श्रवण सेनि पज्जून बिचारिय । संजम राय लक्खन सुनौ तत्त सुमन्त्र उचारिय ॥ ३८ ॥

छन्द पद्धरी

उच्चीर बघेल लक्खन समत्थ । भंजिय सुदेशमें हुबो सुमत्थ ॥
उच्चरै बात चहुँआन कान्ह । भंजिये देश महुबो सुथान ॥
बोले सु चंडपुंडीर बीर । पक्करि नरेश परिमाल धीर ॥
साझिमाराय बोल्यो बिरंत । चढ़िये सुभूप कहिये तुरन्त ॥
सारंग बोलि बानी विराट । कट्टिये मास परिमाल जात ॥
बोलियो जैन मत सुनौं सुद्ध । कीजिये मेग चहुँआन युद्ध ॥
अचलेश बोलि भाटीसुधीर । मारो सुजाय महुबे गहीर ॥
चामुंड बोलि विरदैत बंक । धारहु सुतेग मारहु निशंक ॥
सुनि मन्त्र मुरुय निड्डर नरेश । मारिये देश महुबो सुवेश ॥
भाहां चँदेल बोल्यो सुलोय । पृथीराज कीजिये हुकम मोय ॥
गोइन्द बोलि रावत्त राज । मारो चँदेलकी मैं समाज ॥
बिझराराज करि दाव पाज । काटो सुजाय परिमालराज ॥
चलिये सुराज अतिक्रोध होय । सामंतशूर उच्चरत सोय ॥
कयमास बोलि आगे नरेश । चितयो सुमंत्र इद्द जुद्धनेश ॥
जयचन्द करै ऊपर चँदेल । कीजिये मंत्र विद्या अमेल ॥
कनवज्ज और महुबो सुवेश । भंजिये शूर दिनबिन उदेश ॥
थापियो मंत्र चहुँआन सुद्ध । धारियो धर्म चन्देल जुद्ध ॥
बुलवाय चंदवरदाय सोय । यह भविषबाततोहि अगम होय ॥
तब कहैं चंदबरदाय बात । होगी सुजंग भारी सुजात ॥
फिरि थमै एक द्वै मास जुद्ध । पुनि मचै खेतभारी विरुद्ध ॥
भारत्थ होइ महुबे सुखेत । कोइ न बचै इह जानि लेत ॥
पाछे सुजिति होगी निदान । झारै सुखेत तूही सुजान ॥

यह सुनी चंदकी चहूँआन । पृथीराज आपु कीन्ही प्रमान ॥
बुलवाय राम गुरू रामराज । काढ़िये महूरत बोलि साज ॥
रचिकुंडमुंड सचिहोम सार । संकल्पकीन मारन विचार ॥
वनजरिनशिष्य शिवदासवट्टि । रविका विलासकइहोमकट्टि ॥
करि हस्त चाल जपि रुद्रमंत्र । त्रैलोक विजय भुगवै सुतंत ॥
केतिकिय पुहुप हरपर चढ़ाय । केसूके फूल हितकारि बनाय ॥
चक्कोर आइ नृप दरश दीन । खंजनशिखंडिविविपरशकीन ॥
हुबदान चहुँआन रान । किय युद्धचाव मनउमँगिदान ॥
अष्टमी वार शुक्कर अनूप । भादौं सुकृष्ण पक्षं सुरूप ॥
सामंत सत्त ग्यारह बरीस । चालीस जानि पृथीराज ईश ॥
शुभ दीन महूरत विप्र सोइ । चहुँआन राज उच्चरिब लोइ ॥
ग्रह देख कौने कौन लगाय । द्विज कहत खोलि पत्रासुनाय ॥
रवियोग पुष्प नक्षत्र चन्द । पंचमो सूर आनन्दकंद ॥
सप्तमी शुक्र गुरु दशम जान । नवमो सुबुद्धवर अधिकपान ॥
तीसरो शनीचर छठो केत । पंचमो भूमिजा आगि दरेत ॥
ग्यारहो राहु चढ़ि चलि नरेंद । पारत्य जेमि बल बढ़े दंद ॥
शुभ शकुनदेखिग्रहशुभलखाय । कीन्हो सकूच पृथीराजराय ॥
कीन्हो मुकाम नृपबाग आय । बत्तीसहंसहयवर मँगाय ॥३९॥

चौपाई

बाग आय नृप किये विनोदह । अंछनि राजनि बैठी गोदह ॥
चन्द बुलाय कह्यो नृपहीको । कवि यह बाग बरनिये नीको ॥

छन्द भुजंगी

कहै चन्द ऐसे सुनो सर्वभूपं । कहौं वागकी राजशोभा अनूपं ॥
चहूँ ओर डंडा सरस रंगरागे । बुरजचारिसुन्दरबहुतदाम लागे ॥
बन्यो कोश फेरं उभै बाग सोइ । अनेकं तिवारे जहां हेम लोई ॥
बने गौखछज्जे अनूपं अबासं । लिखेचित्रतिनमें चतुरने विलासं
जहां फूल नाना प्रकारं खिले हैं । चमेलीसरसमोतियासों मिले हैं

जहां सेवती औ गुलाबाससेहैं । निवाड़ावबूना जूहीसों गसे हैं
जहांकेतकी औमदनबान जानौ । जहां चूतफूले कदम्में बखानौ
गुलादाउदी औहजरा विराजैं । जहां माधवीस्वच्छसुंदर समाजैं
गुलाबास तुर्कजहां इश्कपेंचा । जहां मोगराऔकलीकुंदसेचा
बसंती कुजाकेवड़ामुलसरोशन । जहां रायबरेलीजुहीसोमसोशन
सदासो गुलाबं असर्फी सुहाई । तहां गोलगेंदारगजाकी अवाई
अनेकं सुफूल कहालौं बखानौं । अनेकं तहरदार मेवा सुमानौ
अँजीरं खरे सेव आंडू जहांहीं । अँगूरे नारंगी खुरट आमपाहीं
जहां कोकिला मोरबानी उचारे । तहां कूक कोयल अनेकहँकारैं
जहां भौंर चहुँओर भन्नात डोलैं । तहां चिक्करचक्का औचकोरैं
जहांआयचहुँआन कीनौमुकामं । सबै शूर सामंत संगंसकामं ।४०।

छप्पय

गेर महल पृथीराज सीख सब कारण दीनी। कुसुमपाट शिवपाग शूर लोहा कर लीनी ॥ पहर निशा रहे जागि कीन्ह करि विक्रम अंगह । सीख दीन्ह सुदरिय बीर कीन्हैं वपु जंगह ॥ कयमास बोली आगे कियब केदिल नाद बजाईयब। सामंतसूर गुरू रामसों हैं सब सांमत आइयब ॥ ४१ ॥

दोहा-कियो नगांड़ो कूचको, सामंत लिये बुलाय ।
हुकुम कियो कयमाससों, घोड़े देहु बढ़ाय ॥ ४२ ॥

छन्द हनूफाल

नृप जागि बंब कराय । कयमास अग्रबुलाय ॥ चहुँआन कान्हरचन्द गुरू राम आनँद कन्द ॥ सो हने कुठेहरु बाज । विलहना वट्ठन काज ॥ हय मोर कन्हर दीन । ऐराख वंश नवीन ॥ शिरताज आख शुद्ध ।कय मास दीन विबुद्ध ॥ हयराज चामुण्ड काज । खधारि उपजि समाज ॥ हयरतन चंडपुंडीर । भुजलक्हैं वर हीय ॥ हय मुकुट गोइंद काज । मानिक्क बाज समाज ॥ नृप सुरंग संग सुदीन । ठट्टी सुवेश नवीन ॥ मन

प्यार निडरराय। इत वरुद्धर उपजाय॥ हयतेज रूप सुराज हिय रामदेवना काज॥ मग सीम लेसी काज। संमर्पि केहरि बाज॥ असु कुसुम अरु दल ठेलि। बिलहान भौंह चँदेलि॥ सरसीह हैवर लीन। अचलेश कारन दीन॥ सुरखा सुदल सुख शूर। दिये आल्ह कारन तूर॥ नवलेशको हय दीन। नृप हैम सरभर लीन॥ हाहुलो कारन हीर। ताजी सुतेज गहीर॥ हंबीर काज सहंस। उपजियो तुरकी वंश॥ गंभीरकाज तुरंग। रेशमी रंग सुरंग॥ सामंत और कुलान। अन्नेक हयवरदीन॥ घोड़ हजार कलारि। दीन्हे सुबांटि बिचारि॥ मंगाय पील नाद। बकशीश कीन्हों चँद गुरु राम कारन कीन। यह सहस हेम सुदीन॥ मंगाय करिव सिंगार। मद गलित जनु मद भार॥ उत्तङ्गगिरीवररंगा। जनु सिखरि कजरीरंगा॥ शिर चरचि लाल सिंदूर। जनुतडित घनमें पूर॥ अवसर भये पृथीराज। कयमास सङ्ग समाज॥ तासमय धुग्घूपंछि। चौकीर देखन अंछि॥ समुक्ख स्यार शबद्द। आइजा फनौफन मद्द॥ जाशीश बैठी देवि। जलजात खंजन सेवि॥बग देखि ऊंचे पाय। मुखमें मिल्यो भख आय॥ जलमांझ चकइन बेलि। सजि करति पियसों केलि॥ भै सगुन आनंदकन्द। हंसि गांठि बांध्यो चंद॥ ४३॥

दोहा-चल्यो साजि संभरि धनी, सामंत शूर समाज।
बोरन दल चन्देलनको, जोरन युद्धहि राज॥ ४४॥

छप्पय

चलिब राज चहुंआन लीन्ह सामन्त शीशभर।
अतुल तेज भर अतुल सुभट भ्रम शीश महाधर॥
बीस सहस सब संग जंग कन्दलि कसि बारी।
चहूँआन राठौर बैस कूरम बड़भारी॥

गहलौत बघेल बगोइरिय मोड़िय बड़ गुज्जर मिलिय
तोमर पँवारिखिची पुँडीर दाहिमा हाड़ा चलिय ॥ ४५ ॥

दोहा--चल्यो साजि संभरि धनी, सामँत शूर अभंग।
लियब अंग पुनिहास कर, करन सरिसमा जंग ॥ ४६ ॥

छन्द मोतीदास

चल्यो पृथीराजसुसाजिकेसैन। सजे सब सामँत शूर सतैन ॥
सजे चहुँआन सुकन्हर सत्थ। सजे कछवाह पजून समत्थ ॥
सजे सँग दाहिमा चामुँड शूर। सजे कयमास लिये मुखनूर ॥
सजे कमधुज्ज सुनिडरराय। सजे परसंग सुखी बियभाय ॥
सजे सँग भौंह चँदेल सुबीर। सजे अचलेश सुभट्टी भीर ॥
सजे परिहार सुकूरम भार। सजे सँग सामँत साखुलल र ॥
सजे सुबघेलव लख्खन आय। सजे चहुँआन सु संयमराय ॥
सजे अतताइय बीर बनाय। सजे सँग सामँत हाहुलीराय ॥
सजे सँग भार सुहाड़हठील। सजे सँग जद्दव मद्द सचील ॥
सजे सँग चंदपुँडार सरद्द। सजे सँग गौर सुगाह नरद्द ॥
सजे हरियंत मलेसिय दंद। सजे सँग मारू अठाय अरंद ॥
सजे सँग माल बिशालसुएव। सजे सँग जद्दव जाम उदेव ॥
सजे सँग टोक चटासुरिसाय। सजे गहलौत सुगोइंद राय ॥
सजे बिझराज सुखेन खगार। सजे सँग उद्दय राय पगार ॥
सजे सँग बागरासाखुल सोय। सजे सगँ मल्ल चँदेल सुसोय ॥
सजे सँग भट्टिय भीम गहीर। सजे सँग शूर पमार सुबीर ॥
सजे निरवान सुबीर बहान। सजे सँग वीरप्रसंग प्रथान ॥
सजे परिहार सुपीप मरद्द। सजे सँग गौर सगाहन रद्द ॥
सजे सँग मोरिय सेंगर शूर। सजे सँग तेज लड़ो गरूर ॥
सजे सँग तारन मल्लसमाज। सजे सुबली सँग सोम समाज ॥
सजे सँग धामर धीरपरम्म। सजे सँग रावत राम गरम्म ॥
सजी सँग फौजसबै पृथीराज। सजी सँग सामँतशूर समाज ॥

कियेदर कूच चल्यो चहुँआन । चँदेलन ऊपर कूच निशान ॥
भजे भुमियां सोई छांड़िहैं देश । बसे बन मंदिर कीन्ह नरेश ॥
चले मग शुद्ध सु ऊवट वाट । पिलेदल सामँत दारुण ठाट ॥
मिले मगमाहिं मरद्द बुलाय । सुनौ परिमालको थान बताय ॥
कही यक एक रहै मलिखान । लड़ै तुमते सुनिके उह ज्वान ॥
इती सुनि बागलई चहुँआन । करौचलियुद्ध जहां मलिखान ॥
चली सबफौज निशान बजाय।जहांमलिखानरहैअकुलाय॥४७॥
दोहा--कासिद सुनि मलिखानको, ले सब खबरि सुजान ॥
जलद पंथ पायँन चल्यो, शुद्ध सिरसवां थान ॥ ४८ ॥
गयो उद्धुत मलिखान पर, नैकरि करी सलाम ॥
आयो दल चहुँआनको, ज्यों रावणपर राम ॥ ४९ ॥
मल्लिखान सुनि बात मतो बजरंग उपायव । पृथीराज पद्धरै सज्जि चौरै चढ़ि आइव ॥ नहिय आल्ह उद्दनि सुकरैं ॥ ऊपर भर संगह महिला विपति चुंगुल चारु परिहारस अंगहै ॥ अरसिंह बोलि बिरसिंहको नरसिंह मंत्र यह लीजिये । जे सिंह शूर शब्दन सुनौ मिली अनी कह कीजिये ॥ ५० ॥
सुनिव कहत जयसिंह सुनो भाई मलिखानह । आपु हुकुम मुख करौ वही रोक चौहानह ॥ लड़ैं धरैं यह टेक करैं स्वर्गनको स्यालह । भरै जुग्गिनी आइ धाइ खप्पररणहालह ॥ जयराज नन्द इमि उच्चरत तुरत कहौ सोई करन । चंदेल नोन सांचो करैं रजपूतन मंगल करन ॥ ५१ ॥
दोहा--हिम्मत है क्षत्रीनको, आश कौनकी पाय ।
कहा आल्ह ऊदनि करैं, महिला भोपति आय ॥ ५२ ॥
आय बनी अब तो इहां, तुमसो जंग जरूर ।
ताते करौ न ढील अब, लड़ौ मन्त्र करि पूर ॥ ५३ ॥
सुनी बात जयसिंहकी, मल्लिखान महराज ॥
सबै सेनको हुकुम किय, करौं लरनको साज ॥ ५४ ॥

छप्पै

किय़ो लरनको साज सेन बुल्लाव संग लिय। किय केसरिया ज्वान हाल केसरि घुराय दिय॥ करी त्यार सब फौज जुरी हज्जार आठबर। बान तोप तलवारि तुपक बांधे कमान सर॥ हाथी पचास सज्जे प्रबल कोतल हय आगर अगर। थँमिय जाय पृथीराज दल कोश एक बाहर नगर॥ ९५॥

चौपाई

मल्लिखान कसिद्द बुलाइब। कहौ पिथौरासों तुम जाइब॥
इही ठौर डेरा करवावो। युद्ध हो सो त्यारी पावो॥
एही ठौर युद्ध करिबेको। आगे नाहिं ठौर लरिबेको॥
मलिखानहू आवै ह्यांई। जुरै जंग होइ बड़ी लड़ाई॥९६॥

छप्पै

कासिद सुनि यह बात चल्यो पृथीराज पास तब। जो बातै सुनि गयो जलद ह्वां कही जाय सब॥ महाराज पृथिराज करौ डेरा या ठौरह जंग खेत है इही ठौर आगे नहिं औरह॥ कर जोरि सरल बातैं कहन लगे अच्छर रावर बरन तुम सजौ युद्ध त्यारी करौ मल्लिखान आवै लरन॥ ९७॥

दोहा-सुनि बानी कासिद्दकी, किये नगारे तेन।
उहीं उतरि डेरा किये, सजी सजाई सेन॥ ९८॥

छन्द भुजंगी

बजै बंब हाथीनपै भूमि लरजैं। मनो मेघ भादौं प्रबल झूमि गरजैं॥ सुनी मल्लिखानं नगारो करायो। सजी फौज चौंजें रणं रोष पायो॥ चले बीर केते लिये हाथ तेगं। किते लै गरजैं पिले बेगि बेगं॥ किते मुद्गरं लै धरैं कन्ध भारी। किते सेल सांगै बरच्छी कटारी॥ किते हाथ कुत्तीकबजपेसलीये। किते खंजरं पंजरं वार कीये॥ किते तीरबीरं लिये सो कमानं। किते हाथ फरसा लिये बीर बानं॥ किते हाथ नेजेतबलतोपसज्जैं। किते

बीर जोधा करैं शोरगज्जैं ॥ किते लालबानेनते शूरन्यारे । किते मूँगियां रंग पहिरे पचारे ॥ किते शर्बतीश्वेत तूसी हरेई । किते सो सिंदूरी अमौं आलरेई ॥ किते बीरआबी सजे वस्त्र अंगं । किते शूर सुन्दर सजैं श्यामरंगं ॥ बसंती सजैं वस्त्र जे चाय चौजं । किते अंगराइ चंपई बीर फौजं ॥ किते सोसिनी सोर पहरे अमानैं । किते कासनी रंग सज्जैं सुवाने ॥ किते आसमानी सुनहरी समाजैं । किते बीर केसरिय हरिवल विराजैं ॥ किते सो गुलाबी सजैं फाकताई । नारंगी किते रंग पहिरे सुहाई ॥ किते शूर सूहे सजैं वस्त्र नीके । किते प्याजू सजैं सन्दलीके ॥ किते शूर सफतालु साजे बसन हैं । किते बीर लीले बने सोर सनहैं ॥ किते बीर चीर चरचि चारु पहरैं । किते कोचकी रोचकी रङ्ग गहरैं ॥ सजैं पिस्तई किसमिसी शूर केते । जँगाली रंग धूमरं वास केते ॥ बने रंग रंगं लड़ल चाउ कीन्हो । सबै हाथ हाथ हथ्यारं सुलीन्हो ॥ सजे अंग जैसिंह भाई सुपांचौ । करौ नोन परिमालको आजु सांचौं ॥ हजारे सजैं संग भाई भतीजे । सहंसं सजे शूर सामंत लीजे ॥ बँधे गोल टट्टं गरद्दं चलाये ॥ सजे कंगलं अंग नेजा दिखाये । मिली दृष्टि चहुँआनकेरी ॥ कियो नंद नीसान फौजं सुफेरी । मुखं अग्रकन्हं कयमास भारी । नरंनाह चामुंड कनकेस धारी ॥ बरंबीर धीरं चल्यो इन्दराजं । इते अग्र सामंतशूरं समाजं ॥ वरंबीर शारंग मोरी नहानं । परीहार लख्खन सुअल्हन सुजानं ॥ बरंबीर सामंत संयम्यम रयं । पँजूनं वरं कच्छवायं सुपायं ॥ जुरे जाम जादौ दिशा दक्षिणीयं । साजि शूरं दलन रक्खिनीयं ॥ धरैं धीर पम्मार पुण्डीरचंदं । अचलसिंह पाठी पहारं सुदंदं ॥ सजंडोड खींची बघेला बलिष्टं । सजे बीर हाड़ा शिरं धारि इष्टं ॥ भरं हाहुली और हंबीर पानं । इते कीन सामंत वाई भुजानं ॥

विजयराज पृथीराज सज्जैं संयदं बजैनंदनीशानगज्जैगयंदं ॥ लख्यो मालिखानंदिख्योचाहुंआनं । उठिबागबीरं प्रसंगंप्रथानं॥ लखी फौज परिमालके बीर पिछ्छे । धरा धीर धरती बरावीर मिछ्छे ॥ करै खंड खंड भुशुंडं सवारी । छकैं छाक लग्गैं बजैं स्वर्ग तारी ॥ अनोमान खग्गं करैं फांक दोई । गिरैं शूर धरनी रकत भूमि होई॥ चलैं खूब फरसा उड़ैं मुंड लैलै । दलंहांक मारैं लड़ैं रुंड ह्वैकै ॥ सटं सांगि लग्गैं उरं बीर छाती । धरं फूटिशूरं निकसि पार जाती । घटं कंतधावैनदंबीर नाचैं । बरंबीच कैऔ सटं वार सांचैं ॥ जटंज्वालकेसी सजट्टाल लोई । उरं झार झारं उमारैं सतोई ॥ लगे तीर बीरं हिये लागिझूमैं । परैं पार ह्वैकै गड़ैं जाय भूमैं ॥ लगै सेल हीकं गिरैं शूरआई । करैंनाहिंसंख्या परैं मूरछाई ॥ लगैं बीरछातीवरंसोकटारी । मनो दूलहीद्वारवालैं अटारी ॥ लिये हाथ खप्परसो जोगिन्निडोलैं । बड़े गिद्ध आये गगनमांहि बोलैं॥ बरैं अप्छरा शूर सो काम आवैं । सुरगलोक बिम्मानधरिकै सुधावैं ॥ भयो बीर खेत बढ़ो युद्ध भारी । बही सो नदी श्रोण भै लालभारी ॥ तबै मलिखानं सु धायो रिसानं । लिये हाथ तेगं अवेगंअमानं ॥ पिले जाय दलमें भयो वारपारं । गयो फेरिकै कन्हपै तेग झारं ॥ परी तेग खाली लगी पीलमानं । तते कन्हने खैंचि दीन्ही कमानं ॥ लगीशीशझारं सु टोपं कटायो । तबै फेरि मलखान तेगा चलायो ॥ दियो कान्ह कंधं भ्रम्यो सातवारं । दई तेग वेगं भई वारपारं ॥ दईचंडपुंडीर किरवान औरे । गिरो शीश धरनी लियो जाय गौरे ॥ भयो रुण्डमुडं चल्योकन्हपैकं । दयोकन्हने फेरिमुदगरउठेकं ॥ गिरघो टूटि मलिखान धरनी गहाई । बरचो तासमय अप्छरा फेरी आई । राइ अप्छरा ले तहां सूरलोकं । भयो शब्द जयजय दुहू फौज शोकं ॥ मरचो देखि मलिखान जयसिंह धायो । लिये हाथ

बरछी सन्मुख आयो ॥ दई जोरते चण्डपुण्डीर छाती । गई फूटि हीकं भई भूमिराती ॥ भयो मूरछा चंडपुंडीर बीरं । भज्यो देखि चामुण्ड सूधे गहीरं ॥ दई जाय जयसिंहके तेगसीसं । गिरचो रुण्ड धरनी परचो टूटि शीशं ॥ पलटि एक नरसिंहके जाय दीन्ही । सम्हरि शूरने ढालपै रोकि लीन्ही ॥ कमरते लई हत्थ जमघर नृसिंहं । दई रायचामुण्डके रोष आयो ॥ लियो दौरिसमुगपर दियो जाई रीसं । गिरे वीर नरसिंह ह्वै टंक बीसं ॥ गिरे देखि जयसिंह नरसिंह दोऊ । भेजी फौज अरिसिंह बिरसिंह सोऊ ॥ गये भागि परिमालपै चालुखाई । लियो सरिसमा गढ्ढ चहुँआन धाई ॥ ५९ ॥

दोहा--तोरि सिरसवां नगर नृप, हने सेन रण भाइ
अरसिंह विरसिंह युद्धतजि, भये महोबे आइ ॥ ६० ॥

मल्लिखान रण परे पानि क्षत्रिय ध्रम रक्खिब । करिब लोनको सोचु ख्याल सबही रण लक्खिब ॥ परे बीर नरसिंह परै जयसिंह अमानै । भजि अरसिंहगयेचन्देल सुथानै । परि डेढ़ सहस ठाकुर अवनि चारि सहस संगी कहिब ॥ हज्जर गिरे पृथीराजके लाख शूर अन्तर रहिब ॥ ६१ ॥

चौपाई

बेशुमार घायल भे चन्दह । और कन्ह चामुण्ड सुदंदह ॥
सो परिमाल सुनी इन कानह । उपज्यो डर अंतर चहुँ आनह ॥ ६२ ॥

छप्पै

सुनिब बात परिमाल काल आयो पृथीराजह । मल्लिखान लिय पारि मारि जयसिंह सुसाजह ॥ मारि सिरसवा नगर भागि अरसिंह बिरसिंह डर । हनि जयसिंह नरसिंह युद्ध कीन्हे वर । चहुँआन शूर सांमत पतिसाहि पकरि जिन छांड़ि दिय । सबशूर और महिलासुवन भोपति पास बुलाय लिय ॥ ६३ ॥

चौपाई

सुत चन्देल बुलाये सोई। महिला भोपति परिगइ दोई ॥
कायथ सो श्रीवासकल्यानह। उचरि वचन राजा परिमानह॥६४॥

छप्पय

बोलि सुतन परिमाल बोलि कायथ कल्यानह। बोलि बैसु सुनरेश गौड़सेंगर सब ज्वानह॥ गहरवार गोहित्त भार जगनिक ढिग बुल्लिव। प्रोहित केशवदास राजधानी ढिग खुल्लिव॥ आइयो सेत चहुँआनपति सजो युद्ध जालिम सबै। तुम कहौ मतौं सो कीजिये लाज रहै हम तुम सबै॥ ६५॥

चौपाई

तब रानी मल्हना देहु भाखी। राजा युद्ध मास द्वै राखी॥
जगनिक पठवौ आल्ह बुलाओ। जंगकास अरदास लिखाओ॥
रानी मत सबके मन भायो। राजाने जगनिक बुलवायो॥

दोहा-रानी की परिमाल सुनि, जगनिक निकट बुलाय।
आल्हा ऊदनिको अबै लावौ तुम जु मनाय॥ ६६॥
ह्योजो तुम आंखिन लख्यो, सो सब कहियो जाय।
सिरसागढ़ सार्‍यो सबै, दील्हो देश ढहाय॥ ६७॥
इतनी सुनि जगनिक चल्यो, आल्ह मनावन काज।
गयो बेगि कनउज नगर, जहां बनाफरराय॥ ६८॥

चौपाई

रानी बात कही सब मानी। पृथीराजसो अधगति ठानी॥
जाल्हन पठयो नजरि सु दीजै। मासदो इह्यां छावनि कीजै॥
यों कहिकै कागद लिखवायो। येही लिखिकै आल्ह बुलवायो॥
पान पचास हजार पठाये। जे मगही छन्दनिमें गाये॥
अतर गुलाब बन्दूक परच्छिय। हयवर दोइ चढ़नको कच्छिय॥
लै सहुगाति जाल्ह जव चल्लिव। पृथीराजसो नद पर मिल्लिव॥
दै कागद सब नजरि सु दीनी। सब पर सोधि मिलनको चीनी॥

कागद बांच ले चहुँ आनह । सिद्धिश्री पृथीराज सुथानह ॥
जगनिक हम कनोज पठाइब । जहां बनाफर रूठि बढ़ाइब ॥
आवैं आल्ह युद्ध तब होइब । इह पृथीराजबांचिखतसोइब ॥
पृथीराज सब नजरि सुराखी । बिदा किये जाल्हन शुभभाखी॥
दोहा-कागद लै जाल्हन्न तब, चल्यो महोबे थाम ॥
डेरा करि सरिता निकट, पिथ्थल कियो मुकाम ॥७०॥
फिरि राजा वरदायसो, बानी उचरी एमि ॥
आल्ह उद्द परिमालते, रूठि गयो सो केमि ॥ ७१ ॥

छप्पै

कानन सुनि चहुँआन कहे बरदाय मन्त्र गति । प्रथम देश परिमाल रह्योजसराज सैनपति ॥ गढ़ाजायनृप लागिपरी गोड़नसो जगह । पर्‌यो चाल चन्देल उली धरनीधर अंगह ॥ रोकियो सेन अरि सेन सब काम मरनधीर न धरिय । खेलियो ख्याल बिन शीश धर काम जाय फत्ते करिय ॥ ७२ ॥

चौपाई

गढ़ानगर चन्देल सुलियो । गौड़सु मिले युद्ध तजि दियो ॥
भगी सेन देखी जसराजह । दीन्हो शीश स्वामिके काजह ॥७३॥
दोहा-चाल परी रोक्यो जने, काम आइ जसराज ॥
मारि गौड़ लीन्हो गढ़ा, शिर दै स्वामीकाज ॥७४॥
ताके सुत दोउ सुभट, आल्हा ऊदनि शूर ॥
फौजन मारन अरिहनन, बल बिशेष भुज भूर ॥७५॥

चौपाई

राजा जीति महोबे आइब । आल्हा ऊदनि पार लगाइब ॥
दै जस राज भार तब सारो । सेनापति धरनी रखवारो ॥
करै प्यार मल्हनदे रानी । ब्रह्मानँद समय सुत मानी ॥
ऐराकिन घर घोड़ा जाये । पांच बेछैरा लगे सुहाये ॥
महिला भोपति चुग़ुली कीन्ही । सो परिमाल मानि सब लीनी ॥

नृपति कलिंजर देखत कीनो । राजा आल्ह बुलाय सुलीनो ॥
पांच बछेरा मांगे दीजै । उनके पलटे हयवर लीजी ॥
नातर वास छोड़ि या ठौरह । जाउ जहां चाहो नहँ औरह ॥
आल्हासुनि माताढिग आयो । कही राजसों आय सुनायो ॥
घर बैठी देवलदे खीजी । पूत बछेरा देन न कीजी ॥
वास छांड़ि कनउजको चलिये । जाय बदल पंगुलते मिलिये ॥
साहन वाहन सबही लीने । कनउज देश पयाने कीने ॥
जागीरी भोपतिकी मारी । बस्ती सबै उजारि पजारी ॥
परिपाटी हरिहार सुचुक्किय ।ऊदनिमुखकाहूरहिरुक्किय॥७६॥

छप्पै

आल्ह कियो कनवज्ज चाव पृथिराज देश दल । भोपतिकी जागीर धीर उज्जारि जारि बल ॥ करि आदर जयचन्द दीन्ह बड़देश सुभारी घोड़ पांच मंगाय दोह हाथी दिनकारी ॥ मोती रूमाल उत्तंग अति हीरापहुँची सुद्धरिय । परिमाल सुनत सौंप्यो अधिक मिलियमानमंगल भरिय ॥ ७७ ॥

दोहा–चन्द कहै पृथिराजसों, बिसर्यो आल्ह गँवाय ।
मनहुँ बनाफर आइहैं, मुण्डन रुण्डनचाय ॥७८॥

छप्पै

गयउ जगन कनउज्ज दइय आल्हनको पत्रो । उद्दल इन्दल जोगि दई देवदे मन्त्रो ॥ पृथीराज पद्धरे सज्जिय मद्दुबे चढ़ि आइब । मल्लिखान जैसिंहवती नरसिंह जुझाइब ॥ भरि भज्जि सिरसवाँ नगर नृप देश चँदेल दहाइब । पृथीराज थम्भि द्वै मासलौं मैं तुम पास पठाइब ॥ ७९ ॥

चौपाई

जबतुम आल्हनिकसिकरिचल्लिब। मल्हनदैंअति दुःख उगिल्लिब ॥
मल्हन बैठी बाट सजोवै । कनउज दिशा देखिके रोवै ॥
अतिदलजोरि पिथौरा आयो । सिगरो देश उजारि दहायो ॥

जैचँदको अरदास लिखाइय । सो गुरु आल्ह कहो तुम जाइय ॥
कुमक मांगिये गहि सँग लीजै । खड्गन खेल बनाफर कीजै ॥
इतनी बात जगनसी कही । सुनि आल्हाकी देही दही ॥८०॥

छप्पै

सुनि जगनिककी बात आल्हा बोल्यो इमि बानी। लुटो महोबो नगर कुटो परिमाल गुमानी ॥ विना चूक परिमाल किये परदेशनि न्यारे । काम आय जसराज सबै नृपकाज सुधारे । परिहारसेन आगे धरो लरौ चारि करिबानसों । सामंत शूर सन्मुक्ख ह्वइ युद्ध करहु चहुँआनसों ॥ ८१ ॥

चौपाई

जगनिक भाट बचन इमि बुल्लिव । अब तुम आल्हमहोबे चल्लिब ।
भगिहै भरम चँदेलनुकौ सब । आल्हा सुनि पछिताओगे तब ॥
सुनि जगनिक यह बात सुमानी । हम यह राजकछू नहिं जानी ।
हमसिरबांधिमहोबेरक्खिब । नृपचँदेलचुगुलमुखदक्खिब ॥८२॥

छप्पै

हम मारे बड़ गौड़ देवगर चन्दावारे । हम जादव करि युद्ध धरि चँदेल उधारे ॥ हम कटिहरिया काटि दट्टि परिमाल देश दल । हम कौतुक किरबान लूटि लीन्हें सु सबै तल । लीन्हें सुपील जयचँदके असिय लाख गिनियो सुतुच्छ । सुनि भाट बात रजपूत की राजन जानी नहिं कछु ॥ ८३ ॥ हम आगे पतिसाह फौज भागी दश बारह हम नसतरिया काटि कियो दल कूटि पुवारह ॥ हम जीती घर गया और दल प्रबल पठानह । हम बांध्यों शिरनेत खेत दल बिरचि अमानह । मेवाति मारि पद्धर करिय अन्तर वेद दहाइयो । बघेर मरि बसुधा हरी गढ़ चँदेल लगाइयो ॥ ८४ ॥

चौपाई

राजा दश जीते जसराजह । लीनी धर कंचनकी साजह ॥
ताको फल राजा यह कीनो । हमको देश निकारा दीनो ॥
ता पाछे हम ख्याल सुकीनो । राजा जीति इकतिकरलीनो ॥
सात बार ऊदनि युध कीनो । जेत पत्रचन्देलहि दीन्हो ॥८५॥

छप्पै

सात बार पर धवल लगे चौरासी गातह । जीति राव इकतीस रीस करि सेनि सुसातह ॥ स्वामिधर्म उज्वल करीय दुर्जन दल जोरह । गौंड मारि उज्जारि वारि नसतर कर तोरह ॥ बज्जाइ लोह तेरस बरस पंचास लगि छांह किय । चंदेल चुगल मानी कही तीजे पन परदेश दिय ॥ ८६ ॥

छन्द पद्धरी

सुनिभाट बोलि उच्चरि बतान । आल्हननरेश सो सुनियकान ॥
परिमाल छांरि बालकन बप्प्य । जयमाल धरा जसरायअप्प्य॥
चंदा सपर्व लिये उभै दण्ड । वारीश देशवल कियो खंड ॥
रैवास पासकी लूटि सर्व । मानियो बीर जीता सुगर्व ॥
जद्दवा राइ खर्गन खिलाइ । मेवाति मारि घर लई धाइ ॥
पंजाब देश पंजा बजान । वैराट देशको गर्व भान ॥
मालवा देश लिय पेशमारि । उद्दीय पमारको घर उजारि ॥
चंदेले राज बट्टाइ दीन । फिरि गढ़ा मारि पेश कीन ॥
यह धुनिब बात परिमालराज । आये सुकाम जस रायकाज ॥
शिर धुनिब आल्ह लीन्हे बुलाय। आपनो देश सब दलबताय ॥
तलवारि बांधि शिरदार कीन । हयवर मँगाय तेहि बेर दीन ॥
कय सेव अग्र ठाकुर सुशुद्ध । वाजियो व ठाकुर नामयुद्ध ॥
बैठंत राज आल्हन नरेश । मरियो जाय पूरब्ब देश ॥
पट्ठान गयाके जेर कीन । तहँ गर्वकोट इक लूटि लीन ॥
जीतियो युद्ध निभरत्थ जाय । समसहाबाद खर्गन खिलाय ॥

केहरि कढ़ेरके मन्न मारि । लीन्हे सुपील जयचंद धारि ॥
हिंडोन देश जादौ दहाय । लूटियो सिद्धि नव निद्धिपाय ॥
पतिसाह फौज कइ बेर मारि । चालुक्क सिक्खको गर्व गारि ॥
शत बीर खेत परियो सुदंद । धरिस्वामिधर्म जसराजनंद ॥
सांकरे स्वामि छंडै सुजाय । अघोरन इक गहरे पराय ॥
तुम सहो आज कनउज्ज चाव । सांकरे परेकि चंदेल राव ॥
जुहि होत बधाई नृपति कीन । धरि चामर मल्हनदे प्रवीन ॥
करि रुदनमल्हनदे कह्यो मोहिं।सो मात दिवलदे कह्योतोहिं॥८७॥

दोहा--देवलदे कारन सुनो, कह्यौ मल्हनदे मोहिं ॥
भीर परी चन्देलपै, है मिलिबेकी तोहिं ॥ ८८ ॥

चौपाई

देवलदे तुम बांची बंदीय । अरि परिमाल धार ना संधिय ॥
गढ़सों आनि लग्यो पृथीराजे । आल्हा सीख देहु तुम आजे ॥
बांचि व्यास छाइह मुख गाई । बाच आजमें मुक्ति कहाई ॥
जो कुछ बांचि दिवलदे बुल्लिब । आल्हा सुनन महोबे चल्लिब ॥
पृथीराजसों युद्ध सो कीजे । स्वामिधर्मको फल अब लीजे ॥
तब ऊदनि यह बोलिब बानी । होय महोबेकि चूरा घानी ॥
बुरे हाल काढ़े परिमालह । सो सब भूलि गई अब ख्यालह ॥
जगनिक उद्दलको समुझावहि । कीजे जो जगमें जसु पावहि ॥
माता दीन बचन कहि रोई । तैं सब बनाफरकी खोई ॥
स्वामि काज इन देन न कट्टिय।हे करतार कूखिकिनफट्टिय॥८९॥

छप्पै

आल्हा उद्दलिय सुनत उट्ठि मुरडाय बीर दुहुँ । मातु सुक्ख मानियो जाय हम मरैं कुटुमसुहु ॥ लरैं धरैं शिरधर्म कटै किसान पान धरि ॥ करै युद्ध भरिपूर चहिं शोणित समुद्र तारे ॥ जोगिनिय गिद्ध भायो करिहिं हूर बरैं सूरत घनिय । तो कोखि यात उज्जल करिहिं चलि भेटै सँभारि धनिय॥९०॥

दोहा—चलन महोबेकी सुनी, देवलदे सुख पाइ।
अरज करन जयचँदसों, चले बनाफर राइ ॥ ९१ ॥

छप्पै

देखि नयन जयचंद बोलि आल्हासों बानी। क्यों आये दरबार उट्टिठ इहि बेर गुमानी ॥ कस कवचं इक अंग जंग कंदल कसि भारिय। विदा किये कहुँ नाहिं नाहिं हंकारि पुकारिय ॥ इमि कहत बनाफर जोरी कर लेन सुजगनिक आइयो। पृथीराज महोबे युद्धको सुहम परिमाल बुलाइयो ॥ ९२ ॥

चौपाई

नैन रतन करि बोले बानी। मरिबे काज महोबे ठानी ॥
अब लौं नोन हमारो खायो। चंदेलन ढिग मरन बुलायो ॥
सिगरी जाय नाव बँद कीजे। आल्हा ऊदनि जान न दीजे ॥
छावनि करहु हमारे पासहि। छाड़हु अबै महोबे आसहि ॥
तब आल्हन्न रतन किये नैन। सुनि जयचंद नृपतिके बैन ॥
कनउज लूटि ऋद्धि सब करिहौं। पाछे युद्ध महोबे करिहौं ॥
आल्हा पंग क्रोध जब भये। ऊदनि शस्त्र हाथमें लये ॥
तबजगनिककहिबिरदविशालह।दीनीअरजलिखीपरिमालह९३॥

छप्पै

गढ़ दुर्गम खल भलत अरट्टय परत गिरग्गिरि। तृण बन घन टूटंत धरनि धँस समति हयन भरि ॥ सर संभन खलभलत डिडिड्डिडाय करक्खय। कमठ पीठि कलमलति पुहुमिपर भय रुवरक्खय ॥ जयचंद पायन प्रसंभरति पुनि ब्रह्ममंड बिछुट्टि है। नन चलहु न चलि नन चलि नलि सुभमा चल प्रलय पलट्टि है ॥ ९४ ॥

चौपाई

अरजी बाँचि बिरह सुनि भारी। कछु आल्हाको क्रोध निहारी ॥
करैं चाकरी सेवा ठाई। पृथीराजपर कुमक पठाई ॥९५॥

छप्पै

बांचि अरज जयचंद कहे मुख वचन भाट वर। करे चाकरी प्रगट करहु उप्पर आतुर ॥ पृथीराज पद्धरै सेनि बड़ आय सो किन्निय। कुट्टी सिरसा नगर लुट्टि धरनीधर लिन्निय ॥ बुल्लाइ कुमर संग आल्हाके युद्ध समर भर लिज्जिये। संभारि सेन विजयपाल सुव तुम जुरि पिग्गुरि किज्जिये ॥ ९६ ॥

दोहा—बांचि अरज जयचंद नृप, बोलि दिवान हजूर।
बिदा करो सेना सजो, आल्हा संग जरूर ॥ ९७ ॥

छन्द मोतीदाम

बिदा किये आल्हसु पंगुल राय। दिये दश हयवर साज बनाय ॥
दिये दुइ पील सुउज्ज्वल दंत। छहू ऋतु छाय रहे मयमंत ॥
दइ दशा बीगिके मोतिय माल। दई करे पहुँचि रुद्र विशाल ॥
दिये शिरो पाट कब्बिय सात। निरक्खनचन्द मुसिक्कत जात ॥
कटारी जरावकी दीन है दोइ। रखो तुम आल्ह क्षत्रीधर्म सोइ ॥
बोल्योइमि लक्खनसी कमधुज्ज। धरे धर्म शीश सक्षत्रियलज्ज ॥
दई संग फौज पचास हजार। दिये दश डील बताय जुझाय ॥
दिये संग मोरिया रूप सुशुद्ध। दिये संग चालुकके सब युद्ध ॥
दिये सिकवार सुकूरमपाल। दिये संग वैससुवै ततकाल ॥
दिये चहुँआन सुमंगल राय। दिये संग बाबुल सेंगर माय ॥
दिये संग संगर राय अमान। दिये संग ताल्हन वेग पठान ॥
हजार पचास दिये असवार। धरै सिरसामत धर्म दतार ॥
दिये नृप आल्हको पान मंगाइ। लई नृप सीख चंदेल सहाइ ॥
जगन्निक कारन पील मंगाय। समर्पिय पिंगुल साज बनाय ॥
दिये सिरोपाय तुरी दुइ शुद्ध। दई द्रवि बीस हजार विबुद्ध ॥
दिये दुइ ग्राम सुपत्र लिखाय। समर्पिय भाट सुपिंगुल राय ॥
उठे जयचन्द बिदा किये आल्ह। समर्पिय फौज तबै तत्काल ॥
पधारिय आल्ह हवेलिय सुद्ध। धरे हियमांझ पिथौरह युद्ध ॥

हवेलिसु आल्हचलावसु कीन । मँगायके पालकि पांच नवीन ॥
चढ़ायके देश चले सुख शूर । दुहुं ठकुराइनि देश जरूर ॥
चले चलि ऊदनि जोधसुवाह । गही सु महोबेकी फेरि कराह ॥
करायके पारथि पूजन आल्ह । अगन्नित आय तितै ततकाल ॥
बँधे कस्वान चढ़े हय सोइ । चले बढ़ि ऊदनि सुकृत होइ ॥
चले जगनिक्क किये जुधचाव । अबै सुख मानिचँदेलेनिराव ॥
निकसि कनव्वज बाहरसोइ । तहां भयो सोन छत्रीधमहोइ ॥
सुसम्मुख काक करालियकूक । भयोदिशि जैमनी और उलूक ॥
ठठक्किय भाट निरक्खिसुगुन्न । लिखी लरु आल्हसुक्किवदन्न ॥

चौपाई

मुसकि आल्हफिरबोलिवबानी । तैं कछु होनहारकी जानी ॥
सामंत शूर अटल भररक्खिय । औ कविचंद भवानी भक्खिय ॥
उनसों युद्ध न जीतै कोइय । हिंदू तुरक मिलैं दल दोइय ॥
पातसाह लरि उनसों हारयो । कनवपतिकोगर्वप्रहारयो ॥९९॥

दोहा--होनहार ऐसी लिखी, कही आल्ह अकुलाय ॥
हम सामन्तनि जूझि है, राजा चँदेल सुजाय ॥ १०० ॥

छप्पै

दुरजोधन परिमाल जबै बरज्यो नहिं मान्यो । तब घायल मरवाइ बात हम तबहीं जान्यो ॥ फिरि ऊदनि बरजिकरि बिनती हितकारी । चुगुलनि चुगली करीं बात बिगरी अति भारी ॥ देखतपरिमालको जानदुःख देख्यो नहीं । सुनि भाट बात रजपूतकी बिहँसि आल्ह ऐसे कही ॥ १०१ ॥

चौपाई

जगनिक कही सुहम सब जानी । होनहार अबिगतिनहिं मानी ॥ गंगातट डेरा करवाये । कुमक दई सो आनि मिलाये ॥ लक्खनसी जाल्हनसी दोई । इन मिलि आल्ह मित्रता होई ॥ १०२ ॥

दोहा--मिहमानी देवल करी संग एकही साज ॥

अन्न घृत पकवान शत, बहुतै स्वाद समाज ॥ १०३ ॥
राति रहें उतरे नदी, चले महोबे बार ॥
कुमक लिये जयचन्दकी, बिक्रम बीर जुझार ॥ १०४ ॥

छन्द पद्धरी

चढ़िचलिब आल्ह ऊदल्लि सोइ । डर स्वामी धल रातिबिलोइ ॥
गंजिये गंभि बज्जिय निसान । सज्जिय जुवन अतिजोरवान ॥
धरि पील अग्गि पंचास पंच । चलिये सुढोल करिये न रंच ॥
जैमने शब्द स्यारस्स कीन । भखनीलकंठमुख मक्खिलीन ॥
चमचमिय मेघपश्चिमदिशान । यह चित्तजानि लखिविद्यवान ॥
फिक्करिय दौरि आड़ी सुआय । जम्बूक शब्द बोले कुभाय ॥
सूरजै मांझ इकूकबँधिदिक्ख । यह चित्तजोरकर्य्यासलिक्ख ॥
हँसिकहिय बेरअबकहलखाइ । रजपूत मरन मंगल बताइ ॥
इहि बात सोच कीजै न कोइ । रजपूत बात बिकट होइ ॥
दुर कूच कूच कीने पयान । किय युद्धचावमन उमंग मान ॥
कहु एकहिव सुमर है न चाय । परिमाल हेत करि बांधि भाय ॥
ताडंत तुरी मारत सिंह । भुवि भव्य बात भुगवै सुसिंह ॥
चहुँ आन प्रतिज्ञा किये युद्ध । परिमालपालखिबी बिबुद्ध ॥
पट्ठाइ दीन कासिह एक । आये सुजोध इह बान मेक ॥
केसरि मंगाय केसरियकीन । सेवा मँगाय सुखसों अधीन ॥
उतसाह हर्ष किये मग्गलोय । सांकरे स्वामीजाने सुलोय ॥
कासिद पठै परिमाल पास । बैठियो भूप ऊचे-अवास ॥
गुद्दरिय खबरि दरबार जाय । आये सुबनाफर दोय भाय ॥
दरबार जाय बोल्यो जरूर । आये सुआल्ह सेना हजूर ॥
सुनि राज हर्ष मन बहुत कीन । उच्चरि वचन चन्देले दीन ॥
केतीक सेन आल्हन्न लाय । बोल्यो सुदीन कासिद चाय ॥
द्वै शत सुपील सेन सुभाय । पंचास सहस्र इह पंगुराय ॥
लक्खन भतीज नृप संगदीन । सरदार आठ द्वैदश प्रवीन ॥

तालहन पठान लाखनकुलीन । आल्हन्न काज ऊपर सुकीन१०५॥
दोहा-सुनि बानि कासिद्दकी, किये नगारे बेन ॥
साजबाज सब सजिकै, सजि आये सब सेन ॥१०६॥
देवलदे जगनिक्क सँग, चली महोबे धाय ।
मल्हनदे सुनि खबरिको, आगे भई सुगाय ॥१०७॥
मिली बागमें आयकै, अँगसों अंग मिलाय ।
एक पालकी बैठिकै, भूप सुवन घर जाय ॥१०८॥
देवलदे रानी निकट, कहि कनउजकी बात ।
वचन कहे जैचँदने, ते सब करे बिख्यात ॥१०९॥
जगनिकको हाथी दियो, दोय गाम अजघट्ट ।
भाट निवाज चँदेलने, करी बड़ाई भट्ट ॥११०॥
असवारी राजा सजी, संग ब्रह्मजित लीन ।
तुरी बैठि परमालजू, आल्ह मिलापो कीन ॥१११॥
आय आल्ह सम्मुहे चले, लाखन तालहन संग ।
मिले आय सब बीचमें, भेंटे राजनि अंग ॥११२॥

छन्द हनूफाल

चढ़ि चले आल्ह अमान । परिमाल आइय जान ॥ सिर पाय कीन सुअंग । चढ़ि चले आल्ह निषंग ॥ मिलि सबै निकट सुआय । परिमाल अंग लगाय ॥ मिलिटाक रूप जवीन । चंदेल आदर कीन । चालुक्क केशव दास । परिमाल मिलिब हुलाश ॥ तोमर सुबोहित आय । मिलि नृपतिके लगिपाय ॥ चलि जद्दवंद सुवाल । मिलिहेत करि परिमाल ॥ चहुँआन मंगल आय । मिलियो नरेश सुधाय । बड़गुज्जरं सोनिंग । मिलियो सुराजनि अंग ॥ मिलि सिक्क करमपाल । उठि अग्र राज निहाल ॥ सेंगरबराय अमान ॥ मिलि भूपनूं पुरवान ॥ मिलि वैस अग्र सुकाल । मिलियो सु उठि परिमाल ॥ ढिग

आय ताल्हन वेग । पट्ठान मिलिय सुतेग ॥ जयचन्द कुशल पुछाइ । फरमान शीश चढ़ाय ॥ दिय आल्ह कारन राय । परगने चारि बताय ॥ मंगाइ हाथी दोइ । संमर्पि आल्हन लोइ मँगाइ मोतीलाल । पहुँची जवाहरलाल । शिरपेंच पन्नापान । मिलि जोति छाइ भान ॥ नृपजाल कंधे दीन । सन-मान बहुविधि कीन ॥ उद्दल सुलागिब पाँय । नृप बोलि कंठ लगाय ॥ दिय तुरी तेरह साजि । सुबरन्नसाज समाजि ॥ रानी सुनिकट बुलाय । न्यौछावरैं करवाय ॥ करि अरज मल्हन एह । ये बात मोको देह ॥ फिरि आल्ह बोले ताम । मौसी तिहारे काम ॥ मोतीन आरति कीन । या भाँति आदर लीन ॥ सुख मानि सब मिलिभूप । गये सभा सुंभग सरूप ॥ ११३ ॥

दोहा-आल्हाकी जुबिदा करी, नृपति हवेली काज ॥
फौज उतारी पंगुकी, बागनमाँझ समाज ॥११४॥
आल्हा आये सात दिन, भई खबरि पृथिराज ॥
बोलि कन्हकैमास भर, कियो लड़नको साज ॥११५॥

छप्पै

बोलि कन्ह कैमास बोलि सामन्त महाभर । बोलि चंड पुंडीर वोलि चामुंड मुण्डवर ॥ बोलि लखन परिहार बोलि पंजून महामति । बोलि जंगरा राय बोलि कनकेश बिरदपति ॥ कमधुज्ज राय निण्डुर बुलिव वरदाक अरू बुल्लिय । सब मिलि ससूर सामंत हौ तंत्र मंत्र सब खुल्लिय ॥ ११६ ॥

दोहा-कहै[1] चन्दपृथिराज सुन, ढील न कीजै नेत ॥
आयो आल्ह कनौजते, सहस पचास समेत ॥११७॥

१ चन्दने पृथ्वीराजसे कहा कि अब ढील न करिये शीघ्र युद्ध कीजिये, यहां चंदको शांति स्थापन करना था न कि आपसमें बीरोंको लड़वाकर भारत भूमिको गारद करानेमें सहायता । ऐसा ही कन्नौजकी लड़ाई को भी समझना चाहिये ।

चौपाई

आल्हा सहस पचासक लायो । पंगुपती जो संग पठायो ॥
आये आल्ह सात दिन बीते । कीजै युद्ध चँदेलन हीते ॥११८॥

दोहा--सुनि बानी कविचन्दकी, पृथीराज महाराज ।
हुकुम कियो कागद लिखो, तुरत चँदेले काज ॥११९॥

चौपाई

दो मास हम छावनि कीनी । क्षत्री धर्म कारने चीनी ॥
अब चन्देल युद्ध वर मण्डहु । नातर नगर महोबो छण्डहु ॥
गुणमंजरि मोहिं सालती दासी । घायल हने अनाहक नासी ॥
पहिले जोम लरनको कीनो । अब चँदेल कहां बलहीनो ॥१२०॥

दोहा--पहिले तुमने यों लिखी, जगनि कनौज पठाय ॥
आल्हा ऊदनि रूठि गये, लावैं ताहि मनाय ॥१२१॥
मास दोय हमथँभि गये, मानि तिहारी बात ॥
अब आये आल्हा भये, मढ़ै माँझ दिन सात ॥१२२॥
कै तो युध बेगी करौ, कै भाजौ तजि ठाम ॥
कै जु हमारे ह्वै रहो, बसो आपने गाम ॥१२३॥
या प्रकार कागद लिख्यौ, कायथ चतुर सुजान ॥
युद्ध करो छाड़ो नगर, दोऊ बात सयान ॥१२४॥
पत्री लिखि कासिद जबै, बोल्यो रामस्वरूप ॥
जाउ चँदेले पै जहां, पत्री देहु अनूप ॥१२५॥
या पत्रीको आज ही, आवै जल्द जवाब ॥
युद्ध करो छांड़ो नगर, रहौ हमारे ताब ॥१२६॥
पत्री लै कासिद चल्यो, गही महोवे बाट ॥
गयो बेगि परिमालपै, जहां चँदेले ठाट ॥१२७॥
दिय काज नृपनाथ कर, तेहि जवाब लिखाय ॥
ढील करो मति तनक अब, बांचि लेहु रुखपाय ॥१२८॥

सुनी दूतकी बानी राजा । बाँच्यो खती लिख्यो पृथीराजा ॥
जे ब्यौरे लिखि भेजे रातें । ते परिमाल बांचि सब बातें ॥
तब सिरदारी सबै बुलाई । राजा उर चिन्ता बहु छाई ॥१२९॥
दोहा--बांचत ही राजा महा, पऱ्यो सोचके कूप ॥
महिला भूपति आदि दै, सबै बुलाये भूप ॥१३०॥

छन्द रघुराज

बुलाय राज आल्हयं । करंत मंत्र ख्यालयं ॥ बुलाय उद्द-लीनयं कुमार द्वै प्रवीनयं ॥ बुलाय प्रोहितं लियं । करंत मंत्र जेकियं ॥ बुलाय कायथं कला । सुचारु बुद्धिमें भला ॥ बुलाय राज हि त्रयं । अनेक युद्धजित्तयं ॥ बुलाय भाट लीनयं । नरेश थाप कीनयं ॥ बुलाय साह सुन्दरं । करंति बात इंदरं ॥ चँदेल भीर धीरयं । गहारवार हीरयं ॥ बुलाय राज इंदिरं । मल्हन्नरानि मंदिरं ॥ तहां सुमंत्र कीनयं । अनेक मर्म चीनयं ॥ पिथौरदूत आइयो । तुरंत युद्ध ठाइयो ॥ सिताब युद्ध मंडिये । नहीं तो ठाम छंड़िये ॥ कहै चँदेल आल्हते करौ सुयुद्ध काल्हते ॥ बुल्यो सुआल्ह नृपुरं । सुनो चँदेल भूपरं ॥ करो सुयुद्ध दीनमें दिवस्स दोय तीनमें ॥ विचारि लोग आपनो । लरिहलं हना-पनो ॥ कही चँदेल आल्हयं । कितेक सेन भालयं ॥ इहै बनाफरं कही । हजार साठिहै सही ॥ पचास पंगकी भली । करी सुदोइसे चली । गयंद तीनसौ इहां । दलं दलं परै जहां ॥ कियो हुकम्म युद्धयं । करौ हथ्यार शुद्धयं ॥ चन्देल चेत कीनयं । निकस्सि डेर दीनयं ॥ करैं सुजोध मंत्रयं । गुरू विशेष जंत्रयं ॥१३१॥

दोहा--एक लाख हज्जार दश, सेना सबै चँदेल ॥
करी पांचसै सो सजीं, कियो बनाफर पेल ॥१३२॥

चौपाई

शहर बाहिरे डेरा किये । मनमें करि करि कर हिये ॥

पाछे मसलति करौ कराओ । पृथीराजको खत लिखवाओ १३३॥
दोहा—लिखी पिथौराकारने, सुनो सँभारिके राय ॥
एतवार दिन द्वादशी, करै युद्ध हम आय ॥ १३४ ॥

चौपाई

लिखी पत्री कासिदं पठायो । युद्ध चाव चन्देल करायो ॥
सब दल डेरा बाहर कीन्हो। यह परिमाल लिख्यो कर दीन्हो १३५॥
दोहा—लिख्यो बांचि संभरि धनी, कियो लरनको साज ॥
मानो रावणपर बहुरि, कोप्यो रघुकुलराज ॥ १३६ ॥
शुक्रवार नौमी निकट, संभरि वीर नरिंद ॥
बोरन दल चन्देलको, कियो नगारो नंद ॥ १३७ ॥

छन्द चामर

किने निसाननद पान बहसिसामंत सूरयं । मरदन कराये अंग न्हाये पाय स्वायं पूरयं ॥ उत सुनी अप्छरी खरो उच्छरी अंग मंज कीनयं । बहु फिरै हरषी बाल सुरखी नैन अंजन दीनयं । हर्षें कपाली खुली तालीं रुंडमाली पूरयं । चौसट्ठि योगन वधि उछंगनि हरै अंगनि तूरयं ॥ परि चरि धावै चित्र आवैं गीत गावै मंगलं । चहुँ आन चन्देले खुले बहु खेल मेले उच्छलं ॥ १३८ ॥

चौपाई

सामँत शूर चढ़े युध चावहु । सार संभारि सँभारिय रावहु ॥
इतै सुभट्ट कवच करे लीने । उत अप्छरा सिंगारसुकीने॥१३९॥
दोहा—शूर कवच बाने बने, मंगल भरन सुभाव ॥
उतै अप्सरा तन सजैं, बरन बरनको चाव ॥ १४० ॥

छन्द भुजंगी

इतै शूर न्हाये करै ज्ञान ध्यानं । उतै अप्छरा अंग मंडैं सुभानं॥ इतै टोप टंकारि शशी शूर मंडं । उतै अप्छरा कंचुकी धारि अंगं॥ इतै शूर मोजा बनावंत भायं । उतै अप्छरा नूपुरं

पन्हि पायं ॥ इतै शूर सांगे बँधे ताउतंपं । उतै अप्छरा जांघिया पन्हि जंघं ॥ इतै पाग पेचं संभारंत शूरं । उतै शीश फूले गुहावंति नूरं ॥ इतै शूरमा पागपै झिलम डारैं । उतै रूट्ठ रंभा सुमांगै सँभारै ॥ इतै शूर सर्वं खरे खंग तंजै । उतै अप्छरा कंकनं नैन अंजै ॥ इतै शूर जम डाढ़के बाढ़ दीने । उतै अप्छरा कंकनं पान कीने ॥ इतै शूर सांगै लिये हाथ न्यारी । उतै अप्छरा हाथ पर माल धारी ॥ इतै शूर किरवान कम्पान नाई । उतै अप्सरा चौंकि कांछेन चाई ॥ इतै शूरवीर लिये हाथ नेजा । उतै अप्सरा आननं चंद तेजा ॥ इतै नंग सामन्त घोरे न लीने । उतै अप्सरा साजि बिम्मान कीने ॥ कहैं चन्द ऐसो निरक्खो न सोई । बरन्यो समानं परी वीर दोई ॥ १४१ ॥

चौपाई

परी शूर बरने कवि दोऊ । उत परिमाल सजे दल सोऊ ॥
दोऊ कोशको बीच सुकीनो । दुहुँ दल आय पयानो लीनो १४२॥

दोहा—नौमी तिथि शुक्रहि दिवस. चढ़े सकल सजि शूर ॥
दोय कोश अंतर रहिब, गहिब मुकाम जरूर ॥१४३॥

छप्पै

करि मसिलति परिमाल आल्ह ऊदनि ढिग बुल्लिव । अरु कायथ कल्यान धर्म धरि प्रोहित तुल्लिव ॥ बोलिव जगनिक भाटि बोलि लख्खन कमधुज्जह । बोलिव ताल्हन तुरक बोलि भोपति जम युद्धह ॥ रानी सुबोलि परदा राखि देवल ढिग बैठारियव । परिमाल कहैं सामन्तसों तत्त सुमंत उचारियव ॥१४४॥

चौपाई

बोलिव सामा सहज सुजानहु । राजा आल्हाको मत मानहु ॥
देवल रानी ढिग बैठारौ । पाछे लरनको मंत्र बिचारौ ॥
राजा उठि भीतरको आयो । वाही ढिग आल्हा बैठायो ॥

रानी मल्हनदे अति बुल्लिव । पाछे बात मतेकी खुल्लिव ॥
तेज पिथौराको अति कहिये । तासों युद्ध कौन विधि लहिये ॥
हारैं नगर महोबो छूटै । दंड देहितौ अपयश फूटै ॥
फिरि देवलदे बोलिव बानी । सुनौ श्रवण राजा अरु रानी ॥
नीको होय करौ सुबिचारौ । परिगइ बोलि मतो सुउचारौ ॥
देवल कही सबै यह भाखों । रामायन भारथकी राखों ॥
स्वामि सांकरे छांड़न कहै । कहै चंद सूरलौं नरकहि रहै ॥
अपनो स्वामी सँकरे छांड़ै । आपुन जाय फेरि घरुमांड़ै ॥
पौन नीर तौलौं भ्रक परई । ताकी साखि ब्यासमुनिभरई ॥
खाबिंद हेत आपसों मरैं । क्षत्रीधर्म शीश पर धरैं ॥
वे जीवत सत कहिये नारी । पार्वती को अंश निहारी ॥
बोले आल्ह सुनो हो माता । कलियुगमें राखो इहि बाता ॥
संभरेशकी फौजहि मारौं । सामंत खंड खंड करि डारौं ॥
तो कुलताज चढ़ाऊँ पानी । भुवि मंडलमें चले कहानी ॥
मल्हनदे बोली तब बानी । आल्हा सीख हमारी मानी ॥
सामँतशूरविषम अति सुनिये । राखौ देश दंड दै दुनिये ॥
उदल बैन तमकि करि बुल्लिव । अब इन बातन कहें खुल्लिव ॥
घायल मारत मैं वर जाने । अब क्यों माता भये सयाने ॥१४५॥

दोहा--चारि बार बिनती करी, मानी नहीं लगार ॥
अब क्यों राजासमुझियो, लखि सामंतन भार ॥ १४६ ॥
हम होते निरखे नहीं, बुरी तिहारि नरेश ॥
काम आय जब बिगरिहै, महुबे नगर सुवेश ॥ १४७ ॥
तुम आगे परिमालजू, परिहैं दोऊ भाय ॥
वरैं अप्सरा हम जबहिं, राज चँदेल सुजाय ॥ १४८ ॥
होनहार को मेटिहै, कही दिवलदे शुद्ध ॥
नोन सींचि चन्देलको, पूत सुधारहु युद्ध ॥ १४९ ॥
मसलति करि जाहिर कढ़, आल्हा उद नरेश ॥

डते मारि पज्जारिकै, चामुंड धारचो देश ॥ १५० ॥
जारि गांव उज्जारिकै, लूटी ऋद्धि अचेत ॥
दौरि लरौ चंदेलजू, थोरौ जोरौ देत ॥ १५१ ॥
इतनी सुनि आल्हा सुभट, उठचो लाल करिनैन ॥
चलो लरौ ढील न करो, कहे तेज हो बैन ॥ १५२ ॥
तब बरजे परिमाल नृप, आजु शनीचर बार ॥
कालिह करो चहुँ आनसों, युद्ध सुबुद्ध बिचार ॥ १५३ ॥
जा धरतीको खायके, धूआं देखै कोइ ॥
कहे आल्ह परिमालसों, क्षत्रीधर्म न होइ ॥ १५४ ॥
राजनि आगे पैज करि, कही बनाफर सोइ ॥
प्रात करौं पृथीराजसों, युद्ध विरुद्धह होइ ॥ १५५ ॥
सबहीको नृप सीख दै, गेर महल फिरि आय ॥
रानीसों मसलत करैं, मन धरि चिंता लाय ॥ १५६ ॥

चौपाई

कह चंदेल सुनो हो रानी । अब तो दोष पाछिला मानी ॥
आइ चढ़चो चहुँआन हँकारो । करता बिनाको रखवारो ॥
रानी कहै सुनो हो राजा । करो सबेरे सेन समाजा ॥
प्रात युद्ध कीजै आभूता । मिलिहै राज दुहूँ दल दूता ॥
आल्हा गयो हवेली आपुन । उदलइन्दल मिलन समातुन ॥
भोजन कीना एकहि होइ । इंदल सहित मिले सब कोइ ॥
गेर महल ह्वां कंद्रप खुल्ले । अर्धरात अमृत सम तुल्ले॥ १५७॥

छप्पै

पहरनिशा पिछलीय जागि उठि नीर मँगाइब । करिवन्हान दै दान ध्यान गोरखका लाइब ॥ कियो बनाफर होम नवग्रह पूजा कीनो । हनू पताका जंत्र धरि शोभित भुज दीनो ॥ आइयो तुरी पाछिल पहर तापर असवारी कियब । सजि चले लरन चहुँआनसों हत्थ बीर लोहालियब ॥ १५८ ॥ तबहिं

उदल लिय बोलि कही बातें समुझाइब । पृथीराज चहुँआन पैजि करि करि चढ़ि आइब ॥ लेहु बार करतेग देहु दुर्जनके धाइब । लरौ करो रन आजु अमनिपै सुजन चलाइब ॥ धरियो न पाउँ पाछे अहुटि शूरनसो संग्राम रुचौ ॥ रखहु नाम जसराजाको शीश छांड़ि रुंडहि नचौ ॥ १५९ ॥

पाचौई

इहसुनि उद्दल वचन उचारिब । भाई तुम नीकी सुबिचारिब ॥
सामंतनसों खर्गन खेलहु । पृथीराजमों ठट्टन ठेलहु ॥
देवल कहै सुनौ सुत दोई । नैनहलाहल करुतम सोई ॥
खाँइदके आगे शिर दीजे । निर्भयराज स्वर्गको लीजे ॥
नव ठाकुरानि उदलकी बुल्लिव । सुनि होसासुवचनइमिभुल्लिव ॥
निहचै वद नरकहित भाख्यो । पीव मरत तिरिया तनसख्यो ॥ १६० ॥

दोहा—पीव मरत तिरिया रहैं, करै पूतकी आस ॥
सो रानी निहचै लहै, महानरककोवास ॥ १६१ ॥
भयो प्रान परिमाल उठि, न्हान दान दै भूर ॥
कियो नगारो फौजसे, भये त्यार सब शूर ॥ १६२ ॥

चौपाई

राजा जागि नगारो गीतो । आल्हा काजै आयसु दीतो ॥
सही नाद बाजी सहनाई । बजी पाखरैं हैवर ठाई ॥ १६३ ॥

छन्द पद्धरी

बुल्लाय आल्ह ऊदलहु राज । कीनो सुनगारो बंब साज ॥
बुल्लाय पुत्र नृप संग लीन । बिल हना शूर वाठे नकीय ॥
चन्देल कही सुनि आल्ह शूर । घोड़े सु बाँटि दीजे जरूर ॥
असमुनि आल्ह विद्यानिधान । घोड़े मँगाय बोले जुवान ॥
दल ठेल तुरी ऊदलहि दीन । कुम्भेद रंग सुन्दर नवीन ॥
वोदला दियो नवलेसकाज । तुरकी तरेर साहर समाज ॥
हरिपाल केहरी बाजि हाल । चंचल सुचित्त सुन्दर सुचाल ॥

भोपत्ति काज दिय जगजीत । सुरखा सुरंग पुट्ठे अदीत ॥
नारेन काज दिय तेजरूप । ऐराकि जाति लियनृप अनूप ॥
जगनिक्क भाट बोल्यो हजूर । दीनो अनूप हय राजशूर ॥
तालहन्न बोलि आगे नरेश । दीनो कुरंग बाजि सुवेश ॥
सामंत और अनेक नाम । अनेक वाजि दीने सकाम ॥
पाइगा तुरी इक शत हजार । दीनी सुबांबि करि करि बिचार ॥
परिमाल सेन हज्जार साठि । सजियो शूर चंदेल घाटि ॥
पंचास सहस जयचंद रौल । ते किये शूर आगे हरौल ॥
हाथी सुदोय शतपंत फौज । तीनसै पील जयचंद चौज ॥
हयपीठि आल्ह असवार होय । परिमाल राज उच्चरिय सोय ॥
सब फौज आप सरदार ईश । सब युद्ध लाज तोरे जु शीश ॥
उच्चरचो बनाफर सुन चँदेल । हैवर मँगाय दल करिब पेल ॥
परिहार उच्चरिव सुनहु राज । आसरे आल्ह चढ़िये समाज ॥
पांचसै पील जासंग पूर । परिहै सुभारत शीश चूर ॥
इत सुनी बात पृथीराजपेल । कीनी सुयुद्ध त्यारी चँदेल ॥
सुनि शूर वीर चौहान रान । बाजंत बंब सुसमुहे उठान ॥
मुख अग्र कण्ठ पुंडिल चंद । बिहँसे सुशूर सुनि कन्ह दंद ॥
दक्खियो फौज चंदेल राव । कापंत देह डगमगत पांव ॥
हग मून्दि बैन किलकार कीन । आल्हन्नपास बुलवाय लीन ॥
मोपर न युद्ध है है सुजान । पृथिराज फौज भारी प्रमान ॥
कीजिये आल्ह अब कछु उपाय । संकट निवास मेरो हटाय ॥
दीजिये दंड पृथिराज काज । छाड़िये आल्ह संभरी लमाज ॥
दीजिये सुता अधराज छांड़ि । चहुँआन संगनाहिं युद्ध मांड़ि ॥

चौपाई

कांपी कही परिमाल नरेशह । आल्हा आधो दीजै देशह ॥
लाख पचास दरबि औ कन्या । लै चहुँआन मिलाय सुधन्या ॥

छप्पै

सुनिव आल्ह इमि वचन नयन राते करि बुल्लिव। दीन वचन रण चढ़े राज ऐसे मति खुल्लिव॥ एक लाख दश सहस सैन मंडित चहुँ ओरह। आपु राज देखिये मारि सामन्त न तोरह॥ लड़े एकते एक है देहिदंड पृथीराज तब रन चढ़े पाउँ पाछे धरत क्षत्रियधर्म घटि जाय सब॥ १६६॥ क्यों जगनिक सुपठाय मोहि कनवजते बुल्लव। क्यों राखो पृथीराज मास द्वै तव क्यों भुल्लव॥ काहेको सजि सेन किये डेरा सनमुक्खह। काहे खत भिजवाय लरनकी त्यारी रुक्खह॥ पहले न दंड दीन्हो समुझि अब क्यों कातरता करत। तुम सिद्धि करो गढ़को अबै पृथीराजसों हम लरत॥ १६७॥

दोहा–महिला भोपति संग लै, दलते कढ़े चँदेल।
पिली फौज पृथीराजकी, झिली बनाफर सेल॥
ब्रह्माजित सँग बापके, गयो करन गढ़माहिं।
उतै बनाफरने करी, चारि फौज रन माहिं॥१६८॥

छन्दमोतीदास

लखिय राजन फौज चँदेल चले। तिही ऊमर कन्ह आमान पिले॥ तब आल्हन रोकि लिये सबहीं। करिबे हम युद्ध खड़े अबहीं॥ नृपकी खुशी देखनेको गढ़से। हम युद्ध करैं तुमसों अड़से॥ तब कान्ह कही नृपभागि गयो। तुम चाकरते कह युद्ध रह्यो॥ जियमें प्रभु हारि गयो जिनको। दल जीति सकै कहु क्यों तिनको॥ तब आल्ह कही चहुँआन सुनो तुम। औरनमें हमको न गिनो॥ जिन चाबिचना भ्रमसो निरचै। करिहैं सबकी किरचैं किरचैं॥ न करौ अब ढील घरीपलको। लखियो तुम युद्ध बनाफरको॥ इतिलक्खि विलोकिय सेन घनी। चहुँआन बनाइय चाहि अनी॥ मुख अग्रसुकन्ह अमान कियो। भरचंदपुंडीर सुअंग दियो॥ तिनिमें परिहार सुलल्खनयं।

सँग संजमराय सुभक्खनयं ॥ अचलेश हरीसिंह सो गुरयं ।
जहँ जद्दवराय ऋषीश्वरयं ॥ इतने सिरधार अगे धरियं ।
फिरि दहिनी बज्जुकसो करियं ॥ कछवाहपजून सुपाल्हनयं
सिकवार जुझार सुजाल्हनयं ॥ नरसिंह पहार सुतोरनयं
संग धामर धीर अमोरनयं ॥ बिझराज समाज सयंरधयं ।
संग दाहिमा सामँत दावरियं ॥ जह खिच्चियंदेवसुजैत पिल्यो ।
संग हाहुली राय अमार चल्यो ॥ दिशि दाहिनि सामँत
एकरियं । हनुमन्त समान बली वरियं दिशि बाइयँ भौंह
चँदेल किये । अचलेस भले सिय संग दिये ॥ दोइ दीन
समीर गँभीर नरं । अत ताइय संभर ईश वरं ॥ जहँ मल्ह
चँदेल सुपूर नयं । दिय बाइँ दिशामुख नूरनयं ॥ जहँ सीनग
मल्ह कमच्छ मिले । परिहार सुनाहर संग चले ॥ सह सामल
सामँत संग दिये । जहँ खेतसगार निशंक लिये ॥ कयमास
कमध्वज विक्रमयं । जहँ गौर सुक्षत्रिय सौभ्र मियं ॥ हलका-
रिय सेन बनाइ लियं । दिशि पश्चिम संमतये करियं ॥ चतु-
रंगित सेन बनाइ लियं । मनसी मनसे अब युद्धकियं ॥ उत
लक्खन फौज सुदोय कियं । हलकारि कमध्वज लोहलियं ॥
कमधुज्ज सुलक्खनताल्हकियं । चहुँआन सुमंगल संगदियं ॥
सिक्रवार सुतोमर पाल्हनयं । जहँ मारिय रूदसुजाल्हनयं ॥
जहँ जादव राव सुरूप धरं । तहँ चालुक सारंग बीर वरं ॥
तहँ ताल्हन बेगहरोल कियं । दल बीस हजार सुसंग दियं ॥
बिच तीस हजार सुगोल रची । सिरदार सुलक्खन संगसची ॥
हय पीठि सुआल्ह बनाफरयं । तिहि अग्र सुउद्दल ह्वै सुगयं ॥
दिशि बाइँय मोहनदास कियं । सुरकासिय युद्धको बर्तलियं ॥
अरसिंह सुसिंह समाजवरं । गजराज सुसाजि चल्यो रभरं ॥
तहँ सेंगर राय अमान भयं । जिन बाइँ दिशा भरने भरयं ॥
दिशि दाहिनी ओर सबै सुरयं । दुतियं दलरोकि अनेकहयं ॥

बरने अति तोमर मोहनयं। परिमास सबै दल सोहनयं॥
महि कर्म सिवाझर आगरयं। इतने भट दाहिनि ओर भयं॥
दलवानियाके सब संग चलं। मकरंद सुकायथ भूरि बलं॥
लखि देव करन्न सुरंजनयं। क्रमचंद सुहाथ गुरुज्जनयं॥ बड़
गुज्जर बागरी पच्छिमयं। सब फोजबनी शुभ कृच्छनयं॥१७०॥

चौपाई

पंग पचास हजार चलेपिलि। औरपचास चंदेलनको मिलि॥
चारि फौज आल्हालखि सारह। पृथीराजसों बीस हजारह१७१॥

दोहा–देखि फौज परिमाल नृप, कांपि चल्यो तनपान॥
दश हजार भर संग लै, गये महोबे थान॥ १७२॥
मल्हनदे आवतलखे; ब्रह्मजीत परिमाल॥
महा दुःखदारुण भयो, बाढ़्यो कोप कराल॥ १७३॥

छन्द भुजंगी

कही बात रानी महाराज ऐसे अनी छोड़ि आये यहां आप कैसे॥ सुनी बात राजा कहि राज रानी। पृथीराजको देखिकै भीति मानी॥ सुता राज आधो बिचारोसु मैंने। मिलौ लाख पंचास लै द्रव्य बैने॥ नहीं आल्ह मानी अही आजु मेरी। कही जाउ मोसों कलिंजर कनेरी करैं पृथीराजसों जंग भारी। कहौ जौ कछू सो करौं आजु प्यारी॥ कही ना गई रोसु चंदेलकानी। ब्रह्मा जीतकी ओर रानी रिसानी॥ अरे पूत धिक्कार मोको महा है। किहू कर्म क्षत्री न जाने कहा है॥ नहीं जानती बीज चंदेलकाको। कहायो सुमू बोरिया पूत जाको॥ भयो कूखि मेरी बड़ो दुःख मोको। पर्‍यो कूप क्यों न वहीं ठौर तोको॥ सुनी मातकी यो ब्रह्मा जीत बानी। भयो दुःख मनमें सुधिक्कार मानी॥ अरे मात मोसों कहै बैन कैसे। हनौ चाहुँआनै करी सिंह जैसे॥ कह्यो क्यों न मानिये शासन पिताकी। लगै दोष भारी कहौं मैं हिताकी॥ भयो वृद्ध राजा

गई बुद्धि जाकी। भयो का जो माई दसा दीनताकी॥ लये जीतिकै देश अन्नेक जाने। पखाऱ्यो सही सिंधुमें खर्ग जाने॥ दिन फेरकी बात माता न जानी। बली स्यारसे होत कातर गुमानी॥ इन्हैं देखि व्याकुल सुआयो करन मैं। अबै जाउँगो माँ तहांई लरन मैं॥ करौंगो धरामें कछू नाम ऐसो। लरौंगो सुनौगी श्रवण माहिं तैसो॥ करौं ऊजरी कोखि तेरी महाही। सुजसको लहौं आज रनमें लहाही॥ पिताकी करौं सेव चिन्ता न कीजै। पतिव्रत्तहीको महा धर्म लीजै॥ १७४॥

छप्पै

सुभट शूर ब्रह्माजीत वचन जिमिइमिउच्चारिब संभरेशको मारि फौंज सब शूर बितारिब। हरहुँ गर्व चहुँआन लरहुँ बिन शीश धरापर करहुँ सुजस जगमाहिं भरहुँ जुग्गिनकर॥ गिद्धनि अकाय पूरन करहुँ शिवमाल हूरन भरहुँ। शोणित समुद्र तरि जाहु मा मलहनदे ऊज्ज्वलकरहुँ॥ १७५॥

दोहा—ब्रह्माजित आयहु बगदि, क्षत्रि धर्म बिचारि॥
लरन परन मनमें करन, पृथीराजसों रारि॥ १७६॥
जुरी अनी शूरन दपटि लरत हँकारि हँकारि॥
दुहूँ दलनके बीचमें, होत मारही मारि॥

छन्द भुजंगी

दुहूँ सेन मिल्ली बाग लीनी। दुहूँ धारि धर्म वरन अष्ट कीनी॥ दुहूँ सांग कट्टी दुहूँ कोर वट्टी। दुहूँ वाक बानीसबद्दं उचट्टूटी॥ बजैं भेरि नीसान जग तबल्लं। बजैंशंख तुरही हथल्लं सुसल्लं॥ दुहूँ नाद कीन्हैं सुरंशख भारी। दुहूँ नाम हंकै सुहै है हँकारी॥ यहै चन्द ऐसे सुनौ चाहुँआनं। चलाऔ सुनेजा सुवाई भुजानं॥ मुखं मंत्रजंपै सुइष्टं भवानी। मिलाओ बलं बांधि धावै जनानी॥ आगे कीन सेना सुचंडोल हाथी। रहै पुट्ठि असवार बिलहंत साथी॥ नचायं तुरी कान्ह पट्टी

उठाई। किधौं रामपै राम भौंहैं रुठाई॥ आगे आपं हाथिनपै हाथवाहैं। वरं दन्त खेंचेउपारैं उमाहैं॥ उपारं उदंत बली बाहु जोरैं। गहैं पुच्छ सुण्डाव गामैं अमोरैं॥ कहूं डील सुण्डनपै तेल लावैं। गहैं कोपि दक्षं धरत्री कि लावैं॥ कहूं अंग धायं कहूं कीन रोरैं। कहूं मार मारैं कहू शूर दौरैं॥ कहूं पील सुंड पकरि खैंचि मारैं। कहूं शूरशीशं सिरं तेग झारैं॥ कहुं कायरं खाय भै धाय भाजैं॥ लड़ै शूर केते रनं लाज लाजैं॥ कहूँ वीर बाने तराने तराजैं। कहूँ युद्धके आयुधै हाथ साजैं॥ कहूँ कींकि ही कं कटारी चलावैं। कहूँ घाव मल्हनाराच मुंडी बहावैं॥ कहूँ कन्धबन्धं कहूँ रद्द हीकं। कहूँ घाव कुत्ती कहूँ पीक लीकं। कहूँ हक्क धक्कं दुहूँ सैनि सोई। वजामें हरं लोह निर्मोह होई॥ करैं खंड खंड अखंड अखारे। किते एकजोधानके शीशफारे वरं सांगि लागै उरं फार होई गिरैं नट्टवासे कलाचूकि सोई॥ लगै तीर हीकं हियं होस भाजैं। गड़ै पार ह्वैके धरत्रीसमाजैं॥ किते मारु मारं किते हाय हायं। किते पायँ प्यादे लरैं चाय चायं॥ गिरैं शीश तेगं गुहैं गोरमालं। मानो भाय फांली उतारं कलालं॥ चलै बीर बैताल हालं प्रचंडं। लरैं पंडवासे करैं खण्डखण्डं॥ भुसुंडै उडैं सो भुजा जंग अंगं। अखण्डं बली धीर वारं अभंगं॥ बहैं कंधरीवान वेधं खुलामें। परैं मुंड धरनी सुरंडं नचामें॥ गुरज्जं बहैं शीश मानी भवानी। बरच्छी तिरच्छी लगामें अयानी॥ बहैं खज्जरं मारु मारुं ततारं। परैं बीर धरनी समानं वितीरं॥ करैं बारहंका कटारी करूरं। परी मारु मित्रं परे चक्कचूरं॥ इसी भांति कन्हं कियो युद्ध भारी। मिटचो ध्यान अंबा खुली रुद्रतारी॥ १७८॥

दोहा--कन्ह कटक कीन्हों कहर, हटक परी मनमाहि॥
भटकि भीर भाजे बली, कोऊ बगदतु नाहिं॥१७९॥

छन्द रसावली

कान्ह कोप्यो जबै। कीन युद्धं तबै ॥ धाम सूधे बली। सर्व फौजैं दली ॥ धाय सूरं गहैं। ठाक धरनी रहैं। मारबाणं कियं। खाय सैलं लियं ॥ राज राजं दुखं। खाय रारैं मुखं ॥ बीर नादं रचैं। चाक केते मचैं ॥ बीर बानं धरे। खाय सूरं भरे ॥ फौज कंपी जबै। कान्ह देख्यो तबै ॥ १८० ॥

छप्पै

देखि कन्हको युद्ध आल्ह लक्खनसी बुल्लिव। ताल्हन बेग पठान रूप मोरी रव खुल्लिव ॥ सोलंखी कल्याण केसरी धीर बीर बर। तोमर वोहिन बीर धीर बोल सुपीर पर ॥ चहुँआन कन्ह भारी प्रबल युद्ध करौ सब एक ह्वै। दलयंत्र आपु हय छंडिकै संभारौ सेना सबै ॥ १८१ ॥

दोहा-ताल्हा हय दौराइकै, संभारी सब सैन ॥
लेहु लोहु सब हाथमें, लसै करौ दियमैन ॥ १८२ ॥

छन्द पद्धरी

धामंत ताल संभारि सेनि। सिरदार आठ बर महे तेनि ॥ गोइंद राय हरि पंद सोइ। इक्कल बलाइ दलसलख लोइ ॥ मोरी सरूर सँगर अमानि। जादो सुइंदवरगह्यो पानि ॥ गल चौहान तोमर जुवान। चालुक्य केसरी सुबलमान ॥ बड़-गुज्जर राना महाबाहु। सुज्जान बैस संभारि सुचाहु ॥ नरहरिय बैंस कायथ कल्यान। सँगर बराय जल्हनजुवान ॥ बंघेल शूर पूरन अमोर। लोधी सुशील रामं सुजो ॥ गोकुलसुबघेलो रूपराज गौतन जुझार इन्दलि समाज ॥ पाल्हन पमार भगवान शूर। निडुरहाय डोंगर जरूर ॥ जगनिक्क भाट जाल्हन जुहान। बिनयांसु ईसुरा सुबलवान ॥ कायत्थ कर्मचन्दं बलिष्ट। मक-रन्दजानु श्रीबास इष्ट ॥ हरिपदं वेव क्रन दुरिन जोर किरपा सुगौर युद्धं अमोर ॥ मंदरं भूप निजराज शूर। कछवाह

राम लीने सुनूर ॥ गंभीर तेग अज्जानबाहु । अनिरुद्धसिंह सैंगर सुनाहु ॥ बिरसिंह बीर सुरखी सुमूर । जट्ठवा राय कमनैत धूर ॥ परिमाल सेन इतने हजूर । नवरंग राय रघुवंश शूर ॥ पृथिराज सेन सामंत दंद । कयमास कन्हपुंडीर चंद ॥ निंडुरह राय पज्जून मोइ । वीरं बलिष्ठ नरसिंह लोइ ॥ हाहुली राय हंबीर पीर । लक्खन पमार संयोग हीर ॥ रावत्त राम तोबर पहारं । संझिमा राय बिरसिंह सारं ॥ वरं अत्तवाय चहुँ आन बंक । नरनाह कन्ह आगे निशंक ॥ चामुंडराय धामर सुधीर । खेता पगार पाल्हन सुबीर ॥ परिमाल सेन लक्खन सुधाय । पृथिराज सेन निंडुरह राय ॥ धाये सुदोय मुख मेल कीन । धरि धर्म हाथ किरबान लीन ॥ १८३ ॥

दोहा-लक्खनसी परिमान दल, निंडुर दल चहुँआन ॥
आहुरियो सामन्त ए, सरसे बीर अमान ॥ १८४ ॥

चौपाई

लक्खन पंग भतीजो इतमें । पृथीराज निंडुर दल जितमें ॥
ऐक द्वे बीर आहुरे जंगह । लालचँदेल संभारचो अंगह॥१८५॥

छन्द त्रोटक

लखि लक्खन निंडुरसी धरनं । चहुँआन चँदेले निरखि भवनं ॥
कमधुज्ज सो दोउअ ओर अरे । बहु लाज जँजीरनिलो जकरे ॥
ललकार दुहूँ जन लोह लियं । निरखे चहुँआन चँदेल हियं ॥
लड़ि तीर सनाहनि पार कियं । मछरी मनोजालमें सुक्ख लियं ॥
लगि सेल बखत्तर पार भये । मुख पन्नग कारिमें काढ़ि लिये ॥
किरबान बहै भुजदंड मथं । तरबूज मनो हरकंत मथं ॥
तलवारि चलैं दुहुँ ओर लरं । बिन शीश करैं शिर टूटि परं ॥
गहि लेत गयंद नरिंद करं । पकरैं कर मुंड फिराय तरं ॥
उचकायके पुच्छब नीर हरं । हनुमंत दौना गिरिलौं गहियं ॥
हयके गहि पायँ पटक्कि धरं । तरवारि दई असवार मरं ॥

इक सत्थ लरैं भरवत्थ बली । तहँ शोणितकी सरिता जु चली ॥
इहि भांति दुहूँजन युद्ध कियं । तजि शंक निशंक समानहियं ॥
जुरि लक्खन निंडुर वीर महा । इन दोइनने बड़ युद्ध गहा ॥ १८६ ॥

छन्द पद्धरी

बिरचियो लोहलक्खनसुधाय । ता समै कोपि निंडुरह राय ॥
बाजंति बंब पीलन सुपीठि । मैना सुजानकी तेज डीठि ॥
ललकारि सेन किलकारि आय । अप अप्प जीति चाहत सुभाय ॥
लक्खन जुटं बजरंग बीर । निंडुर हराय सज्जत गहीर ॥
हंकारि शब्द बल करत हंक । दल दपटि शूर दौरैं निशंक ॥
विफरंज बीर बरनेत शूर । मुदगल उतंग मारत जरूर ॥
लगि खील खील ह्वै जात शीश । दश पांच आठ द्वै बार बीस ॥
मारंत बीर तोरंत मुंड । बाहंत तेग डोलंत रुंड ॥
गहि लेत एकको एक धाय । गहि कमरि ज्वान मारन फिराय ॥
कायर कितेक कोपत डरात । केतेक शूर बीर लरात ॥
केतेक तेग लगि होत रुंड । केतेक हाथ बीन शीश झुंड ॥
घायल कितेक धरपर अचेत । चहुँओर जोर भयो बीर खेत ॥
लक्खनहि संग ताल्हन पठान । निंडुरह संग सेना सुजान ॥
हज्जार संग पच्चीस भीर । लक्खनहि संग सज्जति गहीर ॥
सिरदा आठ कमधुज्ज संग । दौरे सगोल भरिकै अभंग ॥
निंडुरह रायपर हल्ल कीन्ह । ताल्हन पठान आगे नवीन ॥
इकलो जु देखि निंडुरह राय । आये जु शूर परिमाल धाय ॥
खोलियो आंग पट्टी सकान्ह । लैकरि गुरज्ज धायो अमान्ह ॥
सामुहे आय ताल्हन्न वेगि । दीनी सुकान्हके आय तेग ॥
दीन्हीं गुरज्ज ताल्हन्न शीश । ह्वै गये मुंडके टूक बीस ॥
रुंडं हकारि फिरि हल्ल कीन । कयमास शीशमें गुरज दीन ॥
फिरि दयो कान्ह मुदगर फिराय । टूट्यो पठान धरनी पराय ॥
दाब दई तेग कयमास दौरि । ह्वै गये टूक धरके बितौरि ॥

सौंनिग देखि तालहन्न काम। चलियो सुसाजिसेंगर सुठाम॥
इनमें पजून कूरंम धाय। सौंनिग उतै सेंगर बराय॥
लइ हाथसांगि सेंगर सु शूर। दीनी पजूनकै ही जरूर॥
हीकं अपार चोटं लगाय। पुनि लई तेग पज्जून धाय॥
दीनी दुहत्थ शीशं उड़ाय। गिरे धरे धरणी सेंगर बराय॥
इत लगी सांगि हीकं अपार। भये अति अचेत पज्जूनसार॥
फिरि पिल्यो रूपमोरी मरद्द। केतेक शूर वरधै जरद्द॥
चँदेले फौजके शूर धाय। मंगल चौहान नारे नराय॥
केशव सुदास मल्हन अमान। सिरदार आठ सुन्दर सुजान॥
मचकंत धरनिलचकंत शीश। कसकन्त कूर चँदेले देश॥
वांजंत वज्रकरि सभरि सार। मानो करंत बरवत्त पार॥
इत पृथीराजके शूर धाय। सिरदार आठ भाजे सुभाय॥१८७॥

छप्पै

हनि तालहन पट्ठान कान्हने काटे प्राणह। सेंगर सोनिगउपर बीर कीन्हे बहु ज्वानह॥ लड़े एक लँग मुंड रुंड खेले बिन शीशह। कन्द गुरज्जह मारि ताल्ह शिर कीन्हे बीसह॥ और हजार रजपूत कटि हाथी पंचपचास गिरि। चहुँआन हाँक सामंत करि चली पंगकी फौज अरि॥ १८८॥

दोहा--पृथीराज दलमें परे, हाथी मस्त पचास॥
अरु हजार रजपूत कटि, घायल शूर प्रकाश॥ १८९॥
कछवाहे पज्जूनके, लगी साँगि बहुसोइ॥
परी मूर्छा धरणिपै, द्वै सामन्तन खोइ॥ १९०॥
भजी फौज लाखनि लखि, तालहन आये काम॥
हाँक मारि कमधुज्जने, बल करिकै दल थाम॥ १९१॥

चौपाई

जुरी सेन भाजी सब सोइय। फिरि रजपूत एकतग होइय॥
जूरी सेन छतीस हजारह। भये अगारी फिर सरदारह॥

निडुरराय फतेसिर बुझिब। बीर बीरतन रस भुझिब ॥
जुरि जंग फिर सामँत धाये। आयुध लये क्रोध उर छाये ॥

छन्द मोतीदाम

हजार छतीस जुरे रन युद्ध। सजे कमधुज्ज सुलक्खन शुद्ध ॥
इतै भर लक्खन नाभिय युद्ध। उतै रुप्यो निंडुररायसों युद्ध ॥
बहैं किरवान सुज्वानन हत्थ। करैं दश हंक सबैं समरत्थ ॥
भभक्कति सेन चटक्कति तोप। करक्खत ज्वानदुहूँकर कोप ॥
भनक्कय बान सुपज्जर बेधि। करक्खैं कमान दुहूंकर छेदि ॥
लगै उर सांगि सुपील गिरंत। सनम्मुख सुर उपारत दंत ॥
धरैं कर खप्पर जुग्गिन जोर। हकारति डोलति बोलति सोर ॥
लगैं शिर तेगन शूर परं। तबही सुधरंगना आय बरं ॥
लगे उर खजर पंजर पार। करैं किलकारसुजुग्गिनलार ॥
झटक्कत एकनको गहि एक। पटक्कत जाय धरा पर टेक ॥
लटक्कत शीश हटक्कत शूर। चटक्कत तोप भटक्कत भूर ॥
सटक्कत तेग नटक्कत निद्ध। फटक्कत बीर गटक्कत गिद्ध ॥
ठठक्कत कायर घायन देखि। छटक्कत शूर धरा पर पेखि ॥
बहै किरवान परै शिर शूर। करै वपु रोष दुहूं दल पूर ॥
मिले दन लक्कननिंडुरराय। भये हग चारि किये हिये चाय ॥
लईकर लक्खन तेग सहाय। दई शिर निन्डुरेके मुख पाय ॥
कटचोलगिटोपलगाशिर आय। पऱ्योधर मुर्छित निन्डुरराय ॥
लख्योजबलक्खनकान्हसुधाय। लियेसुकमनान दियेसर आय ॥
उठयौ जब निंडुर लीयगुरज्ज। दई बर लक्खन शीच सुरज्ज ॥
हजारक टूक भये शिर सोइ। परै धर लक्खन लक्खन होइ ॥
भयो फिरि मूर्छित निन्डुरराय। गह्यो धर लक्खन अंतसुपाय ॥
लई किरवासो कान्हर कोपि। चले कयमासलये मुख ओपि ॥
हतै सतमुक्ख सुबाबुल सज्जि। भये भगवान हरौल सुगज्जि ॥
चले दलपत्ति लिये किरवान। चले नर बन्न नारायण ज्वान ॥
मुकुन्द सु कायथ अग्र सुहोइ। इतै जुर पंगकी फौजमें रोपि ॥

इतै भय चन्दपुँडीर जुवान। उतै भय बाबुल औ भगवान ॥
लियो खर्ग चन्दपुँडीर सुकोपि। दयो भगवानके शीशमें रोपि ॥
लयो शिर पार धस्यो धर धीर। तबै उत आइ सुबाबुल बीर ॥
नारायणदास नरव्वद कोपि। मिले इतकन्हर आयसु पोपि ॥
मुगद्दर कन्हपै तीन सुडारि। लगे नहिं नेक सनंमुख चारि ॥
गहे जब कन्हर तीनों चरन्न। पयक्किय लेकर पीन धरन्न ॥
भये धर चून गये यमलोक। भगी जयचंदकि फौज सशोक ॥

दोहा-भजीं सेन सरदार हैं, थाँभी दल पति दौरि ॥
जात कहां भाजे करौ, पृथीराजसों रौरि ॥१९४॥

छन्द भुजंगी

पिल्यो वैस दलपत्ति सनमुक्ख सूरो। गहै तेगहत्थं समत्थं गहूरो ॥ पिल्यो चंपियो जोध मकरंद बीरं। अखाड़े परे तै पचारं अधीरं ॥ धरैं नोन शीशं मरैं खेत हेतं। फते स्वामि रट्टैं भये जो अचेतं ॥ बजैं नाल गोला हयं सोसरक्कैं। किते कायरं अंग जंग करक्कैं ॥ मिले इत्थ हत्थं समत्थं सुबानी। मनौथानखेलंत हेरी रमानी। झुलेंझूल झूल झंझीले झटक्कैं। किते कायरं भाजि न्यारे फटक्कैं॥ इतै चंदपुंडीर मकरन्दधायो। दुहूं इत्थं तेगं हयं सो नचायो ॥ तबै चन्द बोल्यो सुनौ कायथ इहो। करौ जाय लिखनी कहा युद्ध कइहो ॥ सुनीचन्द मकरंद सुकमेलकोनो। लये हाथतेगंअवेगं नवीनो ॥ दई चन्दपुण्डीरकै शीश जानी। मनों बीज आकाशते झिलमिलानी ॥ लटक्कैं सुचन्दं धरामूरछायो। तिही ऊपरं दौरि कयमास आयो ॥ दई आय कयमास मकरंद ईशं। दई अंग संगी भई पारशीशं ॥ भई लागि न्यारी शिरं फार दोई। मनों बाँटिये तरबूज सोई ॥ बरचो कायथं सो धरन्नी धरामैं। बरचो अप्परा लैगई लै बरामैं ॥ गिरचो देखि मकरंद दलपत्ति धायो। लये हाथ कुत्ती हयं सो दबायो ॥ दई आप हीकं कयमास पीकं। भ्रमो

सात बारं गिरयो सूरसीकं ॥ लख्यो कन्ह कयमास सो मूरछायो । दलंपत्तिपै आय मुगदर चलायो ॥ भयो चूरचूरं दलंपत्ति खेत । भयो चन्दपुण्डीर दलमें अचेतं ॥ १९५ ॥

चौपाई

कहै आल्ह उदल सुनु भाई । कनउज कुमक काम सबै आई ॥
लाखन ताल्हन वचननिवाहे । पृथीराजदल खर्ग न माहे ॥१९६॥

दोहा-कही बात कनवज्जमें, मो साँचो कर दीन ॥
लरे मरे मारे बहुत, छत्री धर्म सुकीन ॥१९७॥
ब्रह्माजीत बुलायके, कहैं आल्ह इमि बैन ॥
जाउ आप परिमालपै, करो महोबे चैन ॥१९८॥

छप्पै

उचरि आल्ह इमि वचन सुनो ब्रह्माजितकान्हह । आपु युद्ध रण छाँड़ि जाहु जीवत घर मानह हम मारिहैं सुभट्ट काम आवैं घर काजह । तुम कलिंजर जाउ मिलौ चंदेल समाजह । कीजियों बैन अज्यो न तजि दंड दवैं मुख भक्खियो । मिलियो सुराज चहुँआनसों नगर महोबो रक्खियो ॥ १९९ ॥

छन्द पद्धरी

उच्चरे ब्रह्मानँद सुनौ आल्ह । चलिये शूरसामन्त चाल ॥
लीजिये बाग निर्मोह होय । करिये न दूसरी बात कोय ॥
कीज्जये युद्ध अब मोह छंडि । चहुँआन रानकै गर्व खंडि ॥
सुनि आल्ह बैन ऊदनि बुलाय । दीन्हो सुबोझ भारत्थमाय ॥
सामन्त पास बुल्लाय लीन । सबसों सुनाय करि बैन कीन ॥
सेना सुसाठि हज्जार तोलि । उच्चरे आल्ह निःशंक बोलि ॥
कनवज्ज नाथ दिय कुमक सुद्ध । आये सुकाम सामन्त युद्ध ॥
कम धुज्ज लखन ताल्हन पठान। पहिले जुटंत परिहै जिठान ॥
परिमाल शूर सबही सलाल । चन्देल नोन कीजै हलाल ॥
लीजिये लोह निर्मोह होइ । चाहौ सुजीव घर जाहु सोइ ॥२००॥

चौपाई

या विधि आल्हे बनाफर कही। सब रजपूत एकतन सही॥
छत्री धर्म काज शिर दीजै। जी चाहै सो रस्ता लीजै॥ २०१॥
दोहा-आल्हन मंत्र सुनाय यो, सबनि चित्त दिय खेल।
अबहिं बरौं सुर अप्सरा, नोनु इजारि चँदेल॥ २०२॥

छन्द भुजंगी

कही बात आल्हा सुनौ ब्रह्माजीतं। करौ मित्त चिन्ता लहौ बात मीतं॥ अतुल युद्ध सामन्त देखे न भारी। करौ युद्ध परिमालनंद विचारी॥ तजौ युद्ध सामन्त नृप मास जातू करौ जाय निरशंक सेवा पिता तू॥ लरैंगे मरैंगे करैंगे न लाचौं। करैंगे परीमालको नोन सांचो॥ कहो जाय चन्देलसो बात एही। मरैंके विजय पाय बगदै सुवैही॥ विजय पायकै आय तोते मिलैंगे। मरैं तौ सुयश आ अवनिपै चलैंगे॥ तबै दीजिये दँड चहुँआन राजै। मिलौ आय आगे रहो राज लाजै॥ सुनी शूर बानी ब्रह्माजीत सारी। तबै आल्हसो बैन बोल्यौ हँकारी॥ २०३॥

दोहा-राजा घर जीतैं भरे, करैं स्वर्गका भोग॥
चहूँ वक्त जस बिस्तरै, हँसैं न दुर्जन लोग॥ २०४॥

छप्पै

फिरि सुकहत ब्रह्मजीत आल्हा बानी सुनि लीजे। करो पैज परिमाल मारु सामन्तन कीजे॥ बरहु स्वर्ग अप्छरा हरहु चहुँ-आन गर्व सब। भरहु जुग्गिनी पत्र रुधिरसों सुनकर मुंड भव॥ परिमालनन्द इमि उच्चरत टूक टूक ह्वैके लरहुँ। काटौं सदंतरह-तीनके मलहनदे उज्जल करहुँ॥ २०५॥

छन्द मोतीदाम

कहैं ब्रह्माजीत सुबैन हुलास। सुनौ सब फौज चँदेल निवास॥ सुनौ उच वानिय ऊदल आल्ह। सबै चलौ शूर छत्री ध्रम चाल॥ बुलाइय केशवदास चँदेल। करौ अरिसों

अब फौंज अमेंल ॥ लियो रायसिंह सुगौर बुलाय । सज्यो संग लोधिय ईश्वर राय॥ बुलायव भूपति मल्हन पूर। बुलायव बैस नरबद सुर ॥ मिल्यो अहुँआन सुरूव गहीर । दिये दिसवाइय भरिय भीर ॥ बुलाय बखान पठान चँदेल । मिल्यो शत्रुसाल सुमल्हन मेल ॥ सकत्तिय सिंह सुमोह मरद्द । लिये जगते ससुस्याम सरद्द ॥ सज्यो परमानँद पूरण राय । दई दिश दक्खिन और बताय ॥ भये हरिबल्ल सु ऊदल आप । लियो सँग जाल्हन भाट प्रताप ॥ लिहो चक्रपान बघेल सुशूर । पलं गहलोत भुजा भरि पूर ॥ जगन्निक दाहिमा डाहर दीन । इतै सरदार हरौल सुकीन ॥ बिचैं ब्रह्माजीत कुमार सुशूर । दल शिरमौर सु आल्हनपूर ॥ अमान सुराय पमार परम । चलै शिर धरि सो छत्रि धरम्म ॥ सबै दल जोरि हजार पचास । धरेशिर धर्म करै हिय हास ॥ २०६ ॥

चौपाई

दश हजार बाईं दिशि दीनी । आठ हजार रौलसों कीनी ॥
द्वादश सहस दाहिनी तोलह ।बीसहजारबीचमें गोलह॥२०७॥

दोहा—सहस बीसके गोलमें, ब्रह्माजित अरु आह ॥
आठ सहस सेना तबै, हंकारी तत्काल ॥ २०८ ॥

छन्द पद्धरी

ललकारि आल्ह सेना सुपूर । सब भये शूर आगे हजूर ॥ ललकार शब्द किलकार कीन । अब अप्पुयुद्धरण भारलीन ॥ कंगल सुअंग शिर टोप लोइ । सामन्त उद्द आगे सुहोइ ॥ हज्जार आठ असवार संग । दौरे सुगोल करिकै उतंग ॥ बारह हजार दक्षिण दिशान । दौरे सुहाथ लै बीर बान ॥ ह्वै गई एक सेना मिलाय । हज्जार बीर हरि बल सुभाय ॥ उत पांच सहससेना हरौल । सिरदार आठ सुन्दर सुडौल ॥ नरनाह कन्ह पुंडीरचंद । गोइंदराय गहलौत दंद ॥ पज्जूनजैतभौंहाँ चंदेल । कनकेशबीर

पम्मार पेल ॥ तोबर पमार हाड़ा हमीर। संझिभराय हाहुली हीर ॥ इतने हरौल सिरदार कीन। लै तेग सुभट हय छांड़ि दीन ॥ ऊदनि सुसंग सरदार इत्त। सकतेस सोमवंशी सुमित्त॥ दाहिमा शूर भोपति पास। जाल्हन्न राय जंगं हुलाश ॥ अम्मान राय परिहार सोइ। बीरं बलिष्ठं नरसिंह लोइ ॥ प्रोहित्त परमानंद सुचाल। भूनग भदौरिया छत्रसाल ॥ तोंबर पहार भुज धरा रुद्ध। अचलेश अजय उमँगे सुयुद्ध ॥ नव लेश आल्हा रन मन उमंग। कूदे सु एक ही पार जंग ॥ इतने सु कूदि धरि युद्ध लाज। हज्जार बीर ठाकुर समाज ॥ उतरे सु शूर दसहूँ निशान। अपअप्पइष्टवरकरतपान ॥ २०९ ॥

दोहा—चाहुँआन कन्हर प्रबल, उद्दल सुभट प्रताप।
युद्ध करनको सामुहे, भये बीर वर लाप ॥ २१० ॥

छन्द त्रोटक

तजिकै हय उद्दल कन्ह लरं। गहिके किरबान सुढाल करं ॥
उमँगे चहुँआन चँदेलदलं। अप अप्प सुसेन कराय हलं ॥
गज उद्दल सौक हरोल कियं। गज सौकइतै उत पेलि दियं ॥
अतिसुन्दर पीलनपंक्ति लगी। भर भादवजानि घटा उमंगी ॥
उत उज्जल दंत लसंत सधैं। बगुला घनमें जनु पंक्ति बंधैं ॥
अति लाल बिशाल ध्वजारमकी। तड़ितामनौ बद्दलमें चमकी ॥
हसती शत दोइ हरौल दियं। तिन ऊपर कन्ह सकोप कियं ॥
गहि दंत उपारत मन्तवली। मनु मालिनि तोरति फूलकली ॥
हसती शंत हो जमाति भली। तहं शोणितकी सरिता जो चलीं ॥
पटके गहि शुंड गयंद करं। हनुमंत गिरावत पानि गिरं ॥
बिरच्यो वर कान्ह अमान बली। हगदेखिचँदेलकि फौज हली ॥
पिलियो उत उद्दल तेज कियं। सब सेन समाज सु एकजियं ॥
पुनि बाग लई दल ऊपरयं। चहुंआन बनाफर भूपरयं ॥ २११ ॥

दोहा—लरत सूरसन्मुख जहां, धरत धर्म शिर भार ॥
परत टूटि धरनी तऊ, करत मारुई मार ॥ १२२ ॥

छन्द मोतीदाम

गहैं किरवान सुज्वानन हत्थ । परे धर ऊपर शीश समत्थ ॥
करक्खि कमान करक्कर छुट्टि । खरक्कत बान सनाहनि फुट्टि ॥
गनंगन जुत्थ पलप्पल धाय । घनग्घन घायल होत पराय ॥
नरंनर लोह सुलोहुन पूर । नरंचर टुट्टय सीसय चूर ॥
छलब्बल खेलत मेलत मार । जरंत जुवान झिलैं दल मार ॥
झलक्कत तेज झलाझल झेल । करैं दल शूर दुहुं दिशि पेल ॥
डरड्डर कायर कोपत देखि । रुणंकय रुण्ड खनंकय पेखि ॥
ढरक्कत मुण्ड निरंखत नैन । करक्खत तीर परक्खत बैन ॥
थिरक्कतिसेन मुरक्कति नाहिं । दरब्बर दौरि परे दलपाहिं ॥
परंपर फुट्टत पापर पूर । फरप्फर फैलत फंफठ तूर ॥
खरक्खर खात रुपै दलदोइ । हरीहर नाम उचारत सोइ ॥
दिले इत संजमराय सहाय । उतै गहलौन दलप्पति राय ॥
पिल्यो मुख आममरद्दनमेल । तजीकिरबान लिये करसेल ॥
लगायव संजमकं हिरसार । रह्यो सधि सूर भयो लगिपार ॥
दइ दलपत्तिकै शीशमें तेग । सदाशिव गोह लियो शिरवेग ॥
लख्यो तब भोपतिकीनिहरीस । दई उन दौरिकै संजम शीश ॥
भ्रम्यौ शतबार सुमूरछमानि । चल्यो नरसिंह सहाइक तानि ॥
दई नरसिंह गुरज्ज सु शीश । पर्योगिरि भोपति सो धरनीश ॥
चले चक्रपानि इते नरसिंह । मिले दोउ बीच परीं मनबिंह ॥
बलब्बल होइ लरे मल सार । गिरे दोउ संग भई भरमार ॥
निकसि जमद्धर चक्रयपानि । दई नरसिंहके हीकमें आनि ॥
पियो नरसिंह सुखंजर आंत । मरे चक्रपानि उबेरेहिदांत ।२१३॥

दोहा—चक्रपानि मारियुद्ध तजि, अहुटि फौज परिमाल ॥
तबै आल्ह बानी कही, ब्रह्मजीतसों हाल ॥ २१४ ॥

छप्पै

मरन धार मंगालिय विर ब्रह्माजित सुआइब । भजे नृपति परिमाल देखि दल धर्म लजाइब ॥ कुट्टि कुटम पंगको कबंध लक्खन जुरि जंगह । तिल तिल तन कटि गयो मरन छांड़ो नहिं अंगह ॥ तालहन पठान बिन शीश रुपि अतुल पराक्रम कबँध किय । भाजत सैन जीवत महि उह माहिं दुख सालंत हिय ॥ २१९ ॥

छंद पद्धरी

परिमाल नंद ललकारि आय । विरचियो कुँवर मंगलमनाय ॥
ललकारि सेन सब एक कीन । आल्हन्न शीशपर भार दीन ॥
ऊदल्ल सारु दिय संग शूर । फिरि चले युद्धको ह्वै हजूर ॥
सकतेस सोमबंशी जुवान । बकसी सुदेवक्रन सजि समान ॥
बर गहरवार सत्रसाल शूर । डोंगर सुदलन देवा हजूर ॥
तोमर अमान रान्योरराय । सिकवार शूरके सब सुधार ॥
बडबंत गोड जद्दव सुझील । सुरखी वसंत सुन्दर सुशील ॥
जाल्हन्न भाट अति तेज तानि । कायस्थ कर्मचन्दहि बखानि ॥
बनियाँ सुभार मलहन सरद्द । ऊदल्ल संग एते मरद्द ॥
हज्जार षोडश असवार दीन । गजराज दोयसै मद मलीन ॥
पंचास तोप धरि हेम अंच । गोला सुखाति मन पंच पंच ॥
हज्जार पंच दिय वान भूर । ऊदनि संग सजि चले शूर ॥
हत कन्ह चंदपुण्डीर जेत । कनकेश शूर उत्तम सुचेत ॥
भौंहा चँदेल पपिहार पीप । अतिताइ गोपि सो अरि समीप ॥
संझि माराय धरि धीर युद्ध । गूजर अनेक मन किये शुद्ध ॥
लक्खन पमार हाड़ा हमीर । सजि चले शूर सामंत धीर ॥
जहुँ आन टोंकचाटा सुसज्जि । लक्खन पमारनौब बज्जि ॥
तोमर पमार भुज धरा रुद्ध । अचलेश अजय उमँगे सुयुद्ध ॥

पज्जून मलय सीपिना पूत। कोपंत जानु रघुनाथ दूत॥
लै हाथ अस्त्र शस्त्र कराल। फेकंत ज्वानराना विशाल॥२१६॥

दोहा--पांच सहस पृथीराजके, हरिबल कन्ह सुमार॥
उतै बनाफर सैन जुरि, ऊदल बीस हजार॥२१७॥
दोऊ वीर रिसायकै, अस्त्र लिये करमाहिं॥
बाग उठाइ सँगा गहे, चले महातन त्राहि॥२१८॥

छन्द हनूफाल

बजरंग बीर उमंग। चल साजिकै बहु जंग॥ उत कन्ह हैवर डारि। आये सुबीर हँकारि॥ दश सहस हैवर लोइ। उतरैं सु हैवर सोइ॥ दस सहस हैवर पुट्ठि। जिन तोषवानन छुट्टि॥ हय छांड़ि तीनि हजार॥ चहुँआन कान्हर लार। असवार दोय सहंस। रहे पुट्ठिठ राखय हंस॥ दिशि पिले पेले ताय। झेले सुकुन्ह सुभाय॥ कढ़ि दंतमतनि पानि। थलिवली केदल तान॥ गहि शुंड फेरत गाहि। हनुवन्त गिरवर वाहि॥ भुज तुण्ड पटकत तानि। हनुवन्त दुति जिहि जानि॥ हय पकरि बाहत फेरि। अस वार यूथन हेरि॥ अगहन्त पीलन कोपि। भानियो कन्हर जोपि॥ परदल सुजल मुख मूथ। जिमि लंक बन्धत यूथ॥ मुरकी सुफौज चंदेल। बल देखि कन्हर मेल॥ मारै सुपील मतंग। धर परे परवत अंग॥ २१९॥

छप्पै

कन्ह कोपि चहुँआन हने हाथी मतवारे। काढ़ि दंत बढ़ि बाहु डोरि डंकूरसे डारे॥ हैं बरहत्य समूह डाहि दल दयो सुसेनह। भजी फौज चंदेल देखि सामंत सुनैनह॥ मुरकियो फौज ऊदल लखी भयो बनाफर कोटि रन। सयलोट करि दुर्जन चमू में भेंटत सामंत घन॥ २२०॥

छन्द मोतीदाम

मिलि लाखन फौज बनाफर बीर। चल्यो सनमुक्ख मरन्न सुधीर ॥ करी परदक्षिण आल्हन काज। लिये सब सामंत संग समाज ॥ चल्यो सोमवंश सुसत्तिय धीर। पिल्यो नरदेव करन्न गहीर ॥ पिल्यो दल डोंगर देव दुआर। पिल्यो सु अमान ह्वै तोमर तार ॥ पिल्यो राय रह्ळ रट्यो रमरद्द। पिल्यो छत्रसाल सुबांधि जरद्द ॥ पिल्यो सिक्रवार सुरज्जन सिंह। पिल्यो दल केशव गोड सुघिंह ॥ पिल्यो दल दुर्जन जद्दव जोर। सुरक्खिय वीर वसन्त अमोर ॥ पिल्यो दल जाल्हन भाट हुलाश। पिल्यो क्रमचन्द सुकायथ पास ॥ पिल्यो भर मल्हन बैश बरिष्ठ। इते पिलि ऊदनि सँग सरिष्ठ ॥ इते हय छंडित ऊदनि सत्थ। उतै हय छंडिय कन्ह समत्थ ॥ भुजब्बस आयुध सायुध नाहिं। डगंमग कायर त्रासहि पाहि ॥ करक्खि कमान लई कर सेनि। मरक्किय कुंडलि कीजिये मेनि ॥ चलावन सेल ढिठात पगेत। मनो अहि बांबिय होत मगेत चलावत हैं बढ़ि दंत दुबाह। करै बर प्राण सुउब्बट राह ॥ बहैं गड़कर्ण सुलागत हीक। मानौ अहि मत्तिय जीय सुलीक ॥ बहैं बहुतैं सरनावक नेह। बरक्खय बूँद सुअंतर मेह ॥ दई कर डारि कमान जुतैन। गहैं कर सेल लड़ैं दोउ सेन ॥ करैं दुहुँ ओर अन्यो अनमार। दुहूँ घट होत हैं पंजर पार ॥ लगावत तोवर जौभर जोर। बहैं रुधिर छीछि दुहूँ दल ओर ॥ लगे उर आय सकत्तिय शूर। मनौ विषयासिय लागि करूर ॥ अन्यो अनि सेलन घग्गर मार। तबै दुहूँ ओर गही तलवार ॥ लगे वरकंध सबंध बुलाय। मनो जमराज जनेउ बताय ॥ लगै शिर ऊपर कट्टय टोप। मनो किय गंग सरस्वति लोप ॥ बहै किरवान सुकंधनि झांक।

रुपै रण रुंड करैं शिर हाक ॥ शिव शूरनको शिर नेत ।
हँकारत राहु बधब्बिय केत ॥ तजी किरवान लई जम डाढ़ ।
लगावत हक्क करी बल गाढ़ ॥ बखत्तर पार करै भुज जोर ।
मनो घन बेधि उठी रजकोर ॥ लगावन खंजर पंजर पार ।
किधौं किथ कालिका दंत निवार ॥ चलावत संकर फेरि जु
मानं । छुवावत अंग निहंग कृपानं ॥ चलाय गुरज्ज सु पीलनि
शीश । मनो गिरि फोरि पुरंदर रीस ॥ लगाय भुशुंडनि
सासनि ताम । मनो दधि फोरिय ग्वालिनि स्याम ॥ लगाइब
केहरिके नख पेट । बखत्तर पार भयैं चरपेट ॥ लगाइब रंजक
बंदनि दाम । किधौं कढ़ि पुच्छ सुनागिनि नाम ॥ इही विधि
उद्दल कन्ह लरंत । महा उर क्षत्रिय धर्म धरंत ॥ बड़ौ करि
युद्ध बनाफरराय । गये धुकि शूर अनेक लराय ॥ ठठक्किय
सैन उतै चहुँआन । मिले दोउ बीर परग्घट आन ॥ २२१ ॥
दोहा-दौर्‍यौ संझिमराय रण, ऊदल ऊपर आय ॥
सकति सोमवंशी मरद, झेल्यो बीच रिसाय ॥ २२२ ॥

छन्द भुजंगी

पिल्यो संझिमाराय उद्दल्लि कानी । धरैं खंग हत्थं सुमत्थं
गुमानी ॥ लख्यो सक्कते राय संझिमुराजं । लियौ बीचही
आय युद्धं समाजं ॥ दुहूँ बीर गरजे बजामन्त बाहं । दुहूँशूर
मरणं सुमंड्यो उमाहं ॥ कटं धाटिखंगा उमंगा चलावैं । कस्यो
धर्म शीशं निकट्टं मिलावैं ॥ गटंगट्ट जुग्गिन्न लोहू गटक्कैं ।
घटक्कैं बिहूसो धरामें पटक्कैं ॥ नटं जैमिनाचंत वारं दुधारं ।
चटक्कैं तुरी छांड़ि ह्वै जाति पारं ॥ छलब्बल्ल शूरं समारं
सजोरं । जरीजं जरैं ज्वान अम्मान तोरं ॥ झटक्कं कितेकं
कितै एक ज्वानं । नटक्कैं किते बीर खैचैं कमानं ॥ टटं
शूआय केतेके रं हकारैं । ठठक्के जहां जंग कायरं लारैं ॥

डडंकत्त बाजत डौंरू दमामें । ढढंकंत डाढं धरैं लेग मामें ॥
नरं आय केते लड़ैं चूरचूरं । तताथेइ नाचन्त साचङ्ग हूरं ॥
थहर थहर कापन्त कायर केते । हलमें लरैं धायके शूर जेते ॥
धरैं सेल हत्थं करैं युद्ध भारे । नरं नेह छांड़े भये नेह न्यारे ॥
परैं शूर बीरं धरा देह कट्टैं । फिरैं नाहिं दोऊ फतेस्वामि रट्टैं ॥
बली बीर केते गहैं सुण्डि पीलं । फिरावैं पकरि खैंचि मारंत डीलं ॥
भभक्कत्त खप्पर करं माँह लीये । मरैं शूर जुग्गिनि मुखं श्रोण पीये॥
जुरे आय दोऊ दलं दौरि बीचं । रटैं राम रामं करैं रुधिर कीचं ॥
लरैं राउ राजं धरैं शीश धर्मं । बरैं अप्छराजं गछाँडे अधर्मं ॥
इतै शूर चहुँआन संझिम्य रायं । उतै उद्दबीरं बनाफर सुभायं ॥
बरं सोमवंशी अगारी अमानो । लख्यो संझिमानेह कैसो रिसानो॥
लियो सेल हत्थं दियो जाय ज्वानं । इतै बीर सकतेसदीनी कृपानं॥
लग्यो संझिमा सेलहीकं सतापं। रूप्यो जाय धरनी परचो देह कापं॥
लगी तेग संझिम्मके अंग भारी । गई अंगसंगा परचो भूमिधारी ॥
परचो अंत सैजं सकत्ती लखायो । तहां गहरवारं छताको पिआयो॥
इतै चन्द्रमुंडीर नैनं लखायो । तबै कोपिकरि बीर चन्दं सुधायो॥
इतै चन्दमुंडीर देवी पुजाई । तजै शंकरं अङ्ग किलकारि आई ॥
लखी सत्रुसालं विशालं वरिष्ठं । चल्यो पीर परिहार मीरं गरिष्ठं ॥
पिल्यो देवकरणं करैं जोर छत्ता । जपै मन्त्र सुःखं भयो क्रोधमत्ता॥
इतै देवकरणं छमा गहरवारं । उतै चन्द्रपुंडीर पीपो पहारं ॥ इतै दोय परिमालके सूर ठाये । तिनी ऊपरं चन्द्रपुंडीर आये॥ हयंपीठि परिहार पाछे सहायं । लिये आय दोऊ किये चाय चायं ॥ लई कोपिकरि सत्रुसालं कमानं । धरचो बान शूरं दई खैचितानं ॥
लग्यो पीय परिहारके तीर आई । भयो वारपारं परे मूरछाई ॥
परचो पीप परिहार खेतं अचेतं । उठचो संझिमाराय पायो सुचेतं ॥ उठचो संझिमाराय कैकरण धायो । सुसंझिम्ममें आय

खरगं चलायो ॥ लगी शीश तेगं शिरं पार होई । दुहूं हाथ फार्कं कहै बीर सोई ॥ कमानं छता खैंचि शीशं विधायो । दुहूँ फार भेदी सनम्मुख धायो ॥ २२३ ॥

दोहा—देवकरन दई दौरिके, संझिम शीश कृपान ।
लटकि फाँक द्वै ह्वै गई, धायो चन्द अमान ॥२२४॥
दुहू हाथ फाँक गही, दियो तीर करि कूत ॥
जुरचो शीश धायो लरन, भयो फेरि साबूत ॥२२५॥

छन्द पद्धरी

संझिमाराय हनि सोमवंश । रोकिये धाइ इत्तङ्ग तंग ॥
सकतेस दई किरवान घाय । परियौ सुधरनि संझिमाराय ॥
धायो सु चन्द पुण्डीर पीप । आयो सुसाजि चन्देल दीप ॥
जहँ सत्तुसाल आये सुसंग । सब शूर कोपि करि करि उमंग ॥
कंमान पकरि सत्तुसाल शूर । दीनो सुपीप कही करूर ॥
लाग्यो सुतीर धर फूटि लोइ । परियो सुधरनि परिहार सोइ ॥
तासमय उठचो संझिम नरेश । मिटि गई मूर्छा सर्ब तेस ॥
दौरचो सुदेव ऊनगहैं रीश । दीन्हीं सुतेग संझिमा शीश ॥
कटि गयो शीश दै फार होय । गहि लीन्ह चन्द दुहुँ हत्थ सोय॥
लै तीर वेधि फारं जुवान । भयो शीश फेरि साबूत ज्वान ॥
फिरि परचो दलमें रिसाय । लै तेग हाथ दइ करन धाय ॥
कटि टोप मुंडधर कमर सार । पाकर सुजीन हैवर उतार ॥
गिरि परे धरा द्वै भाग होइ । लखि सत्तुसाल आड़ौ जु सोइ ॥
कम्मान खैंचि सत्तुसाल सीर । दीन्हो सुकन्हके जाय तीर ॥
उत चन्द आय मुखमेल कीन । सत्तुसाल शीशमें गुरज दीन ॥
परियो सु टूटि रन गहरवार । फिरि भयो आय आंड़ौ अवार॥
रान्यो ररायले सांगि संग । दीनी सुचन्द पुंडीर अंग ॥
हीक अपार नीकं लगाय । गिरि परे चन्द धरनी धराय ॥

तब लख्यो कन्हने चन्दहाल। दीन्हों सुजायमुदगलविशाल॥
लगि शीश खीलखील कराय। इतपरे खेत रान्यो रराय॥२२६॥

चौपाई

परि संकतेश सोमवंशी रन। गहरवार राठौर परेतन॥
डोंगरसोंदे वारन कट्टिव। सामँत शूर सामुहे दट्टिव॥
चन्दपुँडीर गिरे मुरछाइय। अरुपरिहार पीपगिरि ठाइय॥
संझिमराय फते सिर बुट्टिव। वीरवीरतनसेरसफुट्टिव॥२२७॥

दोहा--इतै कन्ह लजिआइयो, उत ऊदनि सजि आय॥
आपु आपु नृप जे छई, मंगल मरन सुभाय॥२२८॥

छन्द त्रोटक

इत कन्हर निंडुर जैन दले। कनकं बड़गुज्जर सँग चले॥
लखि भौंह चँदेल पजूनबली। इतने सँग सामँत रङ्ग रली॥
लखि ऊदनि जोध सलंसुखयं। सँग तोमर वान वली रूखयं॥
कमधुज्ज सुराय सला पिलियं। सिक्रवार सुसज्जनसोमिलियं॥
बड़बंड सु केशव गौड़पिले। जहँ जद्दव राव उमंग चले॥
मुरके बर बीर वसन्त बने। सँग जाल्हन भाट समातरने॥
बकसी जहँ कायथं कर्मचदं। उमँग्यों बनिया भर मल्हददं॥
पिलियो तहँ ऊदनिपायनिसों। भरझेलि बनाफर चायनसों॥
मुख अंगपचासक तोपकरी। ठहराय जँजीरन शोर भरी॥
अरु पाँच हजार सुज्वान सजे। अपने अपने कर लेत गजे॥
लाल करिय गोल सुसेनिदलं। जिकरे सु जँजीरन सोरमलं॥
अब बान सुज्वान दई चिनगी। दल सामँत ऊदर दौं सिलगी॥
तब तोपन जामिगि दै जुदई। चहुँआन दलं बहु भै जु भई॥
अरराहट भौ अति सोरसह्यो। उलका दिस अंबरछाय रह्यो॥
लगिबान अनेकन ज्वान मरे। तहँ तोपनिगोल अनेक मरे॥
धुकिकै धर संझिमराय गिरे। रन पांचहजार तहां जिकरे॥

हसती परे तीस सबै रनमें । कितने डर कायर ही मनमें ॥
फिरिके सोइ उद्दल बाग लई । सँग बीस हजार सुभार तई ॥
बसवंड़ करक्खिया खंड तनं । खँडखँड प्रचंड गयंद करं ॥
बिचरे दल पित्थलितेज तरा । सब भारसुऊदल केलिलरा ॥
चहुँआन हलौर अनीसुरकी । लखि संझिमराय गिरे धरकी ॥
जहँ चन्दपुँडीर रु पीप मरे । मुरझाय सुलक्खन धरंनिधरे ॥
तब कन्हर कोप कियो रनमें । मुरकाय सुसेन दई गनमें ॥
करमान लई हय छाँडि दियो । सतमुक्ख सुकन्हरकोप कियो ॥
इत बीर वसन्त सुकर्म चदं । उमँग्यों बनिया भरमल्ह ददं ॥
मिलि डोंगर देव नरेशबली । सँग जाल्हन भाट प्रतापझली ॥
परिमाल सुने नृप गासिबलं । चहुंआन सबै दलतासि हलं ॥
सुर भोग लहो इह उद्द कही । मृतलोकके भोग तजौ सबही ॥

छप्पै

डिगी फौज पृथीराज तोप बाननकी मारी । परयो सो संझिम राय चन्द पुण्डीर सुधारी ॥ मर्‍योपीप परिहार परेंगुज्जरन सोई । परि तीस गयन्द सहस हैबर कटि लोई ॥ रजपूत सहस डेढ़हु परे फौज विचरि पाछे हुइय । चहुँआन हत्थ हार्‍यो हुमकि संकि बीर दारुण दइय ॥ २३० ॥

चौपाई

बिछुरी फौज लखी चहूँआनह । पेलिव हाथी आगे कान्हह ॥
कन्हरजै तहँ हुलियो वीरह । नरसिंह राम मलयसी धीरह ॥

छन्द त्रोटक

नृपहाथिय पिय्य लिये लिवरं । सब सेनि सकेलिय एक करं ॥
कयमास स कन्ह पजून मिले । जूरिकै सब राय हमीर चले ॥
जहँ खिच्चिय देव प्रसङ्गनरं । बिझराय सुधाराम धीर वरं ॥
जह खेत सुपूरन सल्ल चले । भर मलहन ऊपर भार मिले ॥

नृप ऊदनि ऊपर कोप कियं । इतने उमरायन संग दियं ॥
इत देखि बनाफर शूर सथं । संग डोंगर देव प्रसंग माथं ॥
क्रमबीर बसन्त रु जाल्हनयं । सिक्रवार सुरज्जन माल नयं ॥
जहँ भोज बनाफर भारभलं । बखता अजवावर कोपिदलं ॥
मद्दुकंभ मिले भर माल तये । इतने मिलि ढ्ढक संग भये ॥
उत कह्न्ह चलाइय कोपिकियं । इत ऊदलि बीर अपार दियं ॥
बिफरे चहुँआन बनाफरयं । धरि हत्थनि लोह बलो बलयं ॥
चहुँआन दबाय हरौल लियं । उत ऊदनि बीर समाज कियं ॥
पिलियो कछवाह पजून बली । डरुमानि चँदेलकी फौज चली ॥
पटकैं गहि हैनर भूपरयं । मसकंत गयंदनके बलयं ॥
कहुँ हक्कैं धक्कहिं शूर मुखं । कहुँ मारत सायक लाय रुखं ॥
कहु सेल चलावत बाहु बरं । धर टूटि बखत्तर फूटि उरं ॥
सिक्रवार सुरज्जन आय हतै । बिफरे कछवाह पजून जिते ॥
सिक्रवार चलाइय तेगवरं । उर लागि पजूनके पट्टि धरं ॥
सँधिराय पजूनने कोप कियं । करवान सुरज्जन कंध दियं ॥
गिरियं सिर टूटि धरन्नि परे । ततकाल वरंगणि आय बरे ॥
भ्रम दाय पजून गिरे धरनी । फिरि आइय गैंडरसी मरनी ॥
तिहिऊपर आयके जाम अरचो । कटिमें तरकस्सनि लायसरचो ॥
लइ खैंचि कमान सुज्वाननरं । दिय बानसुकान्हरलागि धरं ॥
फिरि तेग लई कर कोप कियं । रपटाय सुजैतके शीश दियं ॥
लगिटोपकटचोशिर आय लगी । सँभरचोफिरिजैत अमानतगी ॥
किय ऊपर डोंगरने जबहीं । सजिजामपै कोपकियो तबहीं ॥
धुकिके दइ डोंगरसी पगमें । धर घूमिके जाम गिरे मगमें ॥
फिरि चेतिकै तेग दई सिरमें । पुनि डोंगर देव बलं बिरमें ॥
शिरडोंगर टूटि कबंध नच्यो । शिवमालमें शीशसुहालसच्यो ॥
बकसी क्रमचंद सु आय गयो । खग धारण बीच दुधार लयो ॥

नरसिंह इतै मकमेल कियो । क्रमचंद दुधार सुजाय दियो ॥
लखि कन्ह भ्रम्यो नरसिंहहयं । रिसकै क्रमचंद सुखैंचिलयं ॥
गहि पाय सुधीर पटक्किबलं । धर चून भयो शिर टूटि परं ॥
लखिसाहिसुधीर पटक्किबलं । पिलियो सुतहाँ पृथिराजदलं ॥
नरसिंह सुसाहको देखि चखं । हय दाबि सु आय प्रहारलखं ॥
नरसिंह लई गुरजे करमें । इत साहसु माँगि लई बरमें ॥
कर सांगिलै साह चलाय दई । नरसिंह लगी उर आय सई ॥
धुकिमूरछ खाय नृसिंह परयो । तिहि ऊपर पूरन मल्ल अरयो ॥
लई तंग दई शिरमांह तबै । घरजाय परयो शिर टूटि जबै ॥
तब देखि सुरज्जन आय अरयो । तब पूरन मल्लतेजाय लरयो ॥
दइ तेग सुरज्जन शीश हथं । भइ पार धरा शिर टूटिमथं ॥
लजि कन्हर आय गुरज्ज दई । लगि शीश सुरज्जनमाहिं सही ॥
भये टूक अनेक पर्यो धरनी । तबही लखि फौज सबै करनी ॥
फिरि ऊदलकान्हकोयुद्ध भयो । सु सुनौ कविचंद बनाय कह्यो ॥

दोहा-जाल्हन भाट निराट लखि, मरन सु नियरो आय ॥
सुनियो संत जसराजके, स्वर्ग भोग मन लाय ॥२३३॥
उतै कन्ह सजि आइयो, इत ऊदनि सजि आय ॥
चहुँआन चँदेलके, लड़े शूर सब धाय ॥२३४॥

छन्द भुजंगी

मिले ऊदलो कन्ह दोऊ अभग । विरच्चे सु जोधादुहूँ स्वामि संग ॥ जपैं इष्ट मुक्खं उचारंत सोई । भवानी धरैं ध्यान धामंत दोई ॥ उचारंत मंत्रं उचारंत धाये । विचारंत दोऊ सनंमुक्ख धाये ॥ मिलि दृष्टिसों दृष्टि बागी उचारी । अहो कन्ह धीरमँडयो युद्ध भारी ॥ दलं पात माहीं सबै आपु जीते । अबै युद्ध कीजै सरस उद्दहीते ॥ घने ध्रोस पट्टी सु आँखैं बँधाई । अबै ऊदलैसों

पऱ्यो काम आई ॥ लरे शूर केते नते आपजंगं। हने वापुर जाय लै शूर संगं ॥ पऱ्यो युद्ध मोसों अबै त्यार हूजै । भरोस न औरै लरौ जंग जूझै ॥ तबै कन्ह बोल्यो महारोष होई। सुनौ नंद जसराजके बात सोई ॥ इहां गौड़ नाहीं गढ़ा मारि जानौ । अबै कन्ह चहुँ आनसो युद्ध ठानौ ॥ हने लोग घायल बिचारे सदाही । पऱ्यो शूर क्षत्रीनते काम नाहीं ॥ सुनी शूर बानी तबै उद्द धायो इतै कन्ह बीनं रनरोष पायो ॥ दुहूँ ओरते बीर विरचे अमानैं । किये अंग राग लस प्रीतिवानैं ॥ चलावंत बीरं सकत्ती कटारी । लगै वीर छाती परै फूटि न्यारी चलंत बीर दुहूँ ओर बांके । परैं फूटि धरनी दुहूँ सेन धांके ॥ चलावंत सेलं दुहूँ हाथ जोरैं सनाहं सुफूटत फूटंत घोरैं । चलं तेग वैगं सुशूरं हकारैं मानौ पात्र चक्रं कुलालं उतारैं ॥ चलावंत फरसा शिरं फार होई । मानो बाटिये फारि तरबूज साईं लगे शीश गुरजं परै खील ह्वैकै मनों कृष्ण मटुकी दही डारि कैकै ॥ लये मुगदरं भीरु भारी सुशीशं । लटक्कैं अनेकं खटक्कैं सुदीशं लगैं जामदाढं सनाहं सफूटैं ॥ वयं अंत लै काल जैपाल खूटैं लगा मैं तहाँ केहरी लक्ख सारैं वरं कंगलं अङ्गजंगं सफारैं ॥ इसी भांति कन्हं लड़ैं उद्द दोऊ । कबक्कैं अटक्कैं दुहू कोप होऊ ॥ इतै कान्हकी भारि कयमास आयो । वरं टोक चाटा शिरं शूर ठायो ॥ लख्यो जाल्हनं चाट कयमास दोई । भयो आय आड़ौ महाराज सोई ॥ इतै टोक चाटा मुकं मेल कीनो । बली जल्हनं तानिके बीच लीनो दई तेग दोऊ दुहूं वार कीनो लगी सङ्ग दोऊनके अंग कीनो ॥ लगी जल्हनं हाथकी तेग चाही पऱ्यो शीश धरनी सुचाटा नहाही वरटोक चाटा शिररुंड वाही । लगी जाल्हनके गिऱ्यो भूमिमाहीं ॥ तहीं जाय कयमास सेलं चलायो । बली

जाल्हनं खेत धरनी मिलायो ॥ पऱ्यो जाल्हनं खेत उदल्लि धायो तुरंगं करैं त्यार ललकारि आयो उभं शुंभ हयने धरे मुंड पीलं । कमरते लई तेग उद्दं असीलं ॥ दई कन्हके कंध बंध खुलायो । अछेतं गयेते भयो मूरछायो ॥ करो म्यान तंगं लई वीर बांकैं । तबै कन्ह चेत्यो लख्यो उद्दधाके ॥ नहीं तेग लीनी गुरज्जं न हत्थं । पकरि उद्दको हाथही लच्छयत्थं ॥ लड़े मल्ल जैसे दुहूँ पीठ पीलं । हटै नाहिं दोऊ दुहूँ ओरडीलं लखे फौज दोऊ सकै जाय को है । चन्द ऐसे महायुद्ध होहै ॥ भये लत्यपत्थं गिरे पील पेते । भये लोटपोटं दुहूं बीर होते ॥ तरे उद्द ऊपर सकन्हं बलिष्ट । तबै युद्ध भारी भयो खेत रिष्टं ॥ तहाँ चन्द बोल्यो चहूँ आन डीलं । लगायो सुतेगं करौ काह ढीलं ॥ तबे कन्ह चैत्यौ सुनी भाट बानी । गयोपक्ष कयमास आस प्रमानी ॥ बली दूसरो बीर कयमास आयो । उरं उद्दके आय सैलं लगायो ॥ गदी तेग कन्हं शिरं बार कीनो । पऱ्यो उद्दलं टूटि धरनी नवीनी ॥ रुप्यो रुण्ड धरनी शिरं हांक मारे । भयो सेर उद्दल्लि बैठ्यो हँकारे ॥ तबै उद्दलं रुण्ड धायो हँकारे। बली तेग कयमासके कध झारे ॥ पऱ्यो मूरछा दाहिमा भूमि आयो । कट्यो टोप मुंडं धारा मूरछायो ॥ पऱ्यो कन्ह दलमें बनाफर हँकारी । किते शूर मारे परे सो अगारी ॥ किते रुण्डकीये लियेकाटि मुण्डं । हने पील केते किये शुण्ड डण्डं ॥ किते डारि दीने धरनिये तरंगं । बड़ी मारु मारी करी उद्द जंगं ॥

१ यहां ऐसा जान पड़ता है कि ऊदनिने कान्ह देवको पछाड़ दिया और छाती पर चढ़ बैठा। कान्हको मारना ही चाहता था कि चंदभाटने कयमाससे कहा कि धोखा देकर ऊदनिको मारो और कान्हको बचाओ तब कयमासने धोखा देकर ऊदनिके ऊपर सेलका आघात किया जब ऊदनि कयमासकी ओर चला तब कान्ह ने उठकर तेग लेकर ऊदनिका शिर धोखा देकर काट डाला । इस प्रकार धोखेसे ऊदनि वीर मारा गया परंतु चंद भाटको तो कान्ह की तारीफ करनी थी इस कारण ऊदनिको नीचे कान्हको ऊपर लिखा है ।

भयो कन्हदलमें हाहाकार भारी। परे शूर जितमें भजै फौज सारी॥ नचै रुंड तेगं लिये हाथ न्यारी। इस भांति उद्दं करी जंग रारी॥ करी म्यान तेगं अवेगं सभाई। गिरचो शूर धरनी भयो मूर्च्छाई॥ गईं अप्छरा ले तहां सूरलोकं। भयो शब्द जैजै दुहूँ फौज सोकं॥ २३५॥

दोहा--उद्दलिको नाच्यो कबँध, पर्‌यो शीश धर शूर॥
हनी फौज पृथीराजकी, एक हजार हुजूर॥ २३६॥

चौपाई

पहले ऊदल कन्ह धुकायो। पाछे कन्ह उठचोरिसलायो॥
लरो शूर दोऊ मलसारह। भये मूरछा दोऊ भारह॥
फिरचहुँआन चेतकिय चंदह। तब कयमास आयढिग बंदह॥
सेल साधि ऊदलके मारिव। ऊदल खैंचि दई तलवारिव॥
भयो रुण्ड खेल्यौ धरनी सह। दई तेग कन्हरके शीशह॥
फेरि दई कयमास सुकंदह। भये मूरछा दोऊ दंदह॥
फिरिऊदनिदलमाहिं हकारिव। आगे परे सबै सो मारिव॥
पहर द्वेक कीन्हो बहुयुद्धह। पाछे भयो मूरछा उद्दह॥२३७॥

दोहा-तीनिउं मिलिकै मारियो, नृप जसराजकुमार॥
मारे भट पृथीराजके, शिर विन एक हजार॥ २३८॥

छयप्य

सुनि ब्रह्मजीत सु बात काम उद्दलि रन आइब। द्वै बली सब टूटिसार सामंतन पाइब॥ सत्रसाल सकतेसपरेदरकरन अमानह। सुरजन डोंगर परे परे जाल्हन रन पानह॥ धर परे

---

१ ऊदनिको तीनों ने मिलकर मारा, जैसे महाभारतके युद्धमें अभिमन्यु कुमारको अनेक वीरोंने अधर्म युद्ध करके मारा था इसी प्रकार यहां ऊदनि भी अधर्मयुद्ध करके मारा गया। जैसे युद्ध करनेसे कौरव पराजित ये, इ सी प्रकार अधर्म युद्धसे अन्त में पृथीराजकी भी दुर्गति हुई ऊदनि आदि शूरोंने ही वीरगति पाई।

पिलंसे दोय सन दश हजार हैवर वहर । मुखवाहवाह अल्हन कही कन्ह कटक कीनो कहर ॥ २३९ ॥

चौपाई

ऊदल कटे बीर रन माहीं । क्षत्रीधर्म धन्यो शिरमाही ॥ ब्रह्मजीत बोले इह बानी । स्वर्गभोग भोगैसुखदानी ॥ २४० ॥

छन्द नाराच

किये कुमार हल्लयं । सबै यशूर मलयं ॥ हरौल पील कीनियं । अरिब्ब पुट्टि दीनियं ॥ स्वामीत्तिधर्मचीनियं । तमंकि बाग लीनियं ॥ बनाय बेस फौजयं । बिचारि आल्ह चोजयं ॥ मिले मरद्द मारिकै । अनेक दावँ धारिकै ॥ बंध्यो गरद्द गोलयं बिचौ कुमारि सोमयं ॥ चढ़यो सुआल्ह हाथियं । लिये सुभाट साथियं ॥ इतै चौहान चल्लियं । मरद्द मेल मिल्लयं ॥ सामंतशूर साथियं । हत्यार हाथ हाथयं ॥ कैमास कन्ह जैतयं । हमीरयुक्त नैतयं ॥ उतै सु आल्ह साजियं । लखै सुकामलाजियं ॥ चल्यो परिमालनंदयं ॥ मनौ द्वितीय चन्दयं ॥ सुरग्ग भोग आइयं । खिलंत खंग ताइयं ॥ बुल्यो सुआल्ह बांचयं । सुनौ चहुंआन सांचयं ॥ धरंम युद्ध कीजिये । वचन्न ब्यास लीजिये बुलाय जोध जोधयं । करै हथ्यार शोधयं ॥ सुधर्म युद्धमंडिये । अधर्म युद्ध छंडिये ॥ सुजंत्र मंत्र कीजिये । प्रलोक जीति लीजिये ॥

दोहा--ऊदनि काम सु आइयो, दई खबरि प्रतिहार ।
अब सुधीर परिमालके, सब तेरे शिर भार ॥ २४२ ॥

छन्द भुजंगी

पऱ्यो ऊदलं खेत सो आल्ह जान्यो । कऱ्योक्रोध अंगारनं मरन ठान्यो ॥ लिये बान हत्थं बुल्यो बीरबानी । करैं पैज मनमें महासुक्ख मानी ॥ धरैं ईश मुंडं गरैं आज मेरो । उधारौं

अबै नोन चन्देल तेरो ॥ ऐसे बोलि आल्हन सबको सुनायो । धरैं स्वामि धर्म जो रन बीच आयो ॥ चलाये दुहू बीर बांधे गरिष्टं । चले साथ शूरं जपै सुक्ख इष्टं ॥ करैं खंड खण्डं भुसंडं पछारैं । परैं वीर जोधा करी कुम्भ फारैं ॥ भबकैं भुसंडं निसुंडे बरच्छों । किधौं नागिनी सिंह नागैं तिरच्छों ॥ सुदंडं घटा जानि गाजंत बाजं । बली बह्नु जोरं ततोरं समाजं ॥ गटा सेनि बंधी दुहूँ वीर धाये । मानौं मेघ दोऊ दिशाते घुमाये ॥ झमंके धावा आगि लग्गैं घमोरैं । मानौं फूटि संनाह फूटंत धोरैं ॥ मिले शूर शूरं अपूरं अखारे । किते एक जोधानके शीश फारे ॥ गहैं सुंडि दंती सुमंती चिकारैं । कढ़े तेग बेगं मनोरे बिकारैं ॥ इते कन्ह चहुँआन कयमास धाये । अखारे लरे ते पचारे मिलाये ॥ कहूँकै भुजा जोरि तोरंत पाटैं । किते एक जोधानके शीश काटैं ॥ किते डील गहि पीलको लै फिरामें । किते फूटि रुण्डं परैं सो सभामें ॥ कहूँ हैवरं पुच्छ गहि तानिबाहैं । कहूँ पाय प्यादे गहैं धरनिमाहैं ॥ कहूँ सांगि वाहैं कहूँ कीन रोरैं । कहूँ बाण छांडै कहूँ शर दौरैं ॥ कहूँ बीर गुरजं सिरं खैंचि मारै । कहूँ शूरबीरं शिरं तेग झारैं ॥ कहूँ परगला बीर बाहंत जोरैं । कहूँ काटते शीश शूरं सजोरैं ॥ कहूँ शंकरं लार बाहैं अमानैं । कहूँ पेल खेलं नव लै कमानैं ॥ कहूँ कंधबंधं सुबंधं खुलावैं । कहूँ किंगरा बिंदरी लै बजावैं ॥ कहूँ तेग संभारिकै खैंचि लेते । कहूँ खंजरं लै हियेमाहिं देते ॥ हूँ बीर बाहैं भुसुंडं निहारी । कहूँ डंकिनी संकिनी कूक भारी ॥ कहूँ भेष भीलन्नि भ्यानक्क गाजैं । कहूँ जोगिनी हाथ खप्पर बिराजैं ॥ कटारी किय अंग उर जात मानी । खुले द्वार मानौं अटारी सुवामी ॥ कहूँ खंजरं पिंजरं मारि फारै । कहूँ रंजकं मारि हीकै सुधारै ॥ कहूँ बीर कम्मान बानं चलावैं । परैं रुण्ड धरनी सुरुण्डं नचावैं ॥ कहूँ

शूर धरनी पर काम आवैं । वरं अप्छरा सूरलोक सिधावै ॥ भयं काम भारी भयो फोज फौजं । किते शूर धरनी परे टूट चौजं ॥ इसी भाँति कयमास कन्हं चलाई । घनी सेन चन्देल धरनी मिलाई ॥ भगी सेन देखी चखी अल्ह सोई । भये आय आंगे महारान सोई ॥ तवै कन्हसों बैन बोल्यो पतीजै । सबै सेनको दुःख क्यों बादि दीजै ॥ २४३ ॥

चौपाई

आल्हा भये सेन अँग ह्वरे । वचन कन्हसों बोलि गह्वरे ॥
सुन चहुँआन आपु रण कीजै । सबै सेनको क्यों दुःख दीजै ॥
आल्ह सकतिको मंत्र उपायव । सोई अर्जुनको ईश बतायव ॥
निद्राअस्त्र प्रयोग सुकीनो । ओघत सामँत शूर नबीनो ॥२४४॥

छन्द पद्धरी

उच्चरे मल्ह बानी निराट । सुनिये सुकन्ह कयमास पाट ॥
सबसे न काज दुख देहु काय । कीजिये युद्ध मोसंग आय ॥
जंवियौ मंत्र ताराधुभाय । कीन्हो सुध्यान उर मध्य आय ॥
हंकार कियो देवी बलिष्ट । किलकारि कीन हलकारि इष्ट ॥
निद्राप्रयोग कीनो सुबीर । आघन्त सर्व सामन्त धीर ॥
कयमास कन्ह पुण्डीरचन्द । ओघन्त सर्व सामन्त दन्त ॥
तौबर पहारसुसलंखसोई । भोंहा चँदेल नरसिंह लोई ॥ परिहार पीप हाड़ा हमीर । खींची सुडौंड धामर सुधीर ॥ खेताखगार अन्नेक फौज । छांडी सुजंग सामंत चौज ॥ औघं इते सामन्त सोइ । छांड़ि सुजग उन्मत होइ ॥ दौरै सुजोध चन्देल सेन । बलवन्त बीर निर्मोह तेन ॥ केतेक शीश टूटंत मार । केतेक अंगलगि होत फार ॥ केतेक चरण टूटंत जंग । केतेक शीश बिन लरत अंग ॥ केतेक शूर रण कटि हुलास । केतेक गये चहुँआन पास ॥ नरनाह कन्ह पुण्डीर सोइ । बली बीर

सुनरसिंह लोइ ॥ मारन्त अल्ह सजि सेन शूर । चलिये नरेश ऊपर जहूर ॥ अचरज्ज पाय पृथीराज देखि । वरदाय चन्द बोयो विसेखि ॥ सुनि चन्द बेन आयो सुतीर । उच्चरचो तबै पृथीराज वीर ॥ कीनो सुमन्त्र आल्हन अभंग । औघन्तशूर सब छांड़ि जंग ॥ उच्चरसो चंदसुनिये नरेश । कीन्हो प्रयोग आल्हन सुबेश ॥ तारा सुहस्त झोलौ सुपाय । दीनो सुमंत्र शंकर सहाय ॥ पांडव सुकीन कौरव न निद्ध । सो किया आल्ह तुम परम सिद्ध ॥ अवतार उही अब भयो आय । दीनो सुमंत्र गोरख बताय ॥ यह सुनी बात पृथीराज भूप । बोले सुचन्दसों दन्द गूप ॥ २४५ ॥

दोहा--पृथीराज पूछत बगदि, कब सु मिले ऋषिराय ॥
किहि प्रकार विद्या दई, किहि विधिमंत्र बताय ॥२४६॥

छप्पय

कहत चन्द वरदाय आल्ह अवतारसलम्भय । गयो शिकार इकबार रानि उद्यान भूलि गय ॥ गिरि ऊपर जहं गयो तहां गोरख ऋषि बैठव । कियो दरश तब आल्ह आल्ह गोरखचख देठव ॥ लगयो पाय जसराय सुहाथ जोरि बिनती करिय । मोहिं संग लेहु उपदेश करि तजी भवन सम्पति भरिय ॥२४७॥ तब गोरख मुख उचरि बरष सेवाकरिसारह । तबतारीसम खुली देहु जो मांगे बारह ॥ करैं बनाफर सेव रैन दिन एक चित्तकरि । हाथ पांयध्यायवन्त प्रात उठि धीर नीर भरि ॥ या विधि सुसेव कीनी प्रगट एक चित्त करि आल्हये । बीतो सु बरस तारी खुली बहुत गोरख भये ॥ २४८ ॥

चौपाई

तब गोरखमुख बोलिव बानी । अल्ह मांगि कछू मनमानी ॥
बरस एक लगि धायव मोको । जो मांगैसो देगो तोको ॥२४९॥

दोहा--अस्त्र शस्त्र सिखये सबै, कीन्ह अमर सुदेह ॥
डहल लगि गृहमें रहौ, पाछे जोग सुलेहु ॥२५०॥
सो ऊदनि जूझो अबै, गोरख आवतु होय ॥
आल्हा संग सिधारिहैं, वचन कह गये सोय ॥२५१॥
अब याते यह मंत्र है, और न करौ उपाय ॥
गोरख आवत होयगो, भलो बन्यो है दांय ॥२५२॥
चामुंडको कीजै बिदा, कदन करन चंदेल ॥
आततायको अग्र करि, करौ लरनको खेल ॥२५३॥
चंदवचन पृथीराज सुनि, लोचन भये विशाल ॥
बिदा करी चामुंडकी, पकरनको परिमाल ॥२५४॥
चलौ सहस रजपूत लै, चामुँडराय सहाय ॥
आततायको अग्र करि, कियो युद्ध मनभाय ॥२५५॥

छन्द त्रोटक

करिकोप तबै पृथीराज मने । अतताय भुअग्र किसे सजने ॥
मुख मन्त्र उचारत आपु नृपं । करिके उपयूथ निदेह द्रपं ॥
गिरजा हरशंकर ध्यान हियं । अतताय नरेश सुलोह लियं ॥
महाकालिय ध्यानधरचो जबही । अतताइ सिद्धिकरी तबही ॥
वरबीर अराधन चंद इयं । रबिको करि ध्यान समानहियं ॥
विफरे वर बीर पिलं बलमें । हथ लै तिरशूल चले गलमें ॥
मुख मन्त्र उचारत सौ हलमें । मन्त्र सिधि किये कलसों पलमें ॥
किलकारियकालिकाआगनकी । सुधिभूलिगई उठि जागनकी ॥
बिन शुंड बिहंड गयंद करैं । खड खंड प्रचंड नरेश हरैं ॥
लगि लोह शूपूरन हूरवरं । उमंगे सबशूर चन्देल धरं ॥
अगवानिय केशव आय गयो । रण मध्य कैमास उठाय लयो ॥
तबही अतताइ मेल कियं । वर केशवके तिरशूल दियं ॥
लटक्यो तन केशवभूमि पर्यो । ततकाल बरंगनि आय वर्यो ॥

तबहीं जगनिक्क प्रताप बली । कर तेग लई अमरेज तली ॥
जगनिक्कपै लायर कन्हरखं । किरमान सुदीयर कन्ह मुखं ॥
भरम्यो नरनाह धरन्नि पर्‍यो । तेहिऊपर दाहिमा आनिअर्‍यो॥
कयमास लगाइय तेग तनं । लगि शीश सही कबिराजभनं॥
जगनिक्क लयोकर सेलगन्यो । कयमास प्रकासही जायहन्यो॥
कयमास दई फिर तेगशिरं । भइ यार धरा शिर टूटिनिरं॥
धरनी धर दौरत शीश बिना । किरयान लये कर धार गना ॥
बिन शीशजगन्नियपीलहन्यो । भटशूरमहाचहुँआन गन्यो ॥
दोहा--जगनिक पर्‍यो सुशीशबिन, उठ्यो रुंड करि रोस ॥
पील हन्यो देख्यो नृपति, करी कीर जनुजोस ॥ २५७॥

छप्पै

रुपि जगनिक रनमाहिं हत्थ वाहे कर हत्थिय। हनी सेन हज्जार रुंड धायो समरत्थिय ॥ हलीफौजचहूँआनरुण्डखेल्यो बिन शीशह । मानिजोर पृथीराज पील मार्‍यो करि रोसह ॥ कीनो कहाव रनमाहिं बढ़ि लोहा लहरि बढ़ाव सुहर ! जंपियो चंदबानी बरनि भट्ट ठट्ट कीन्हो कहर ॥ २५८ ॥

दोहा—आततताय आल्हा ऊपर, हांकि चल्यो बलवान ॥
उतै बनाफर आयकै, बोल्यो बीच बिहान ॥ २५९ ॥

छन्द पद्धरी

विरच्यो सु आततायं बलिष्ट । उत आल्ह बीर मन धारि इष्ट ॥ ठारेजु शूर चंदेल फौज । इनमें सुदौर चहुंआन चौज ॥ छूटंत बान सननं सनात । तोपं बलिष्टं भननं भनात ॥ बिफरंत बीर धीरं हंकारि । उचरन्त दुहूँ दल मारि मारि ॥ बाहंतसेल हेलं समारि । लागंत अङ्गहीक सुफारि ॥ खैंचत कमान मारन्त तीर । लागं पार फूटन्त पीर ॥ बाजन्त तेज वेगं अनेग । टूटंत

मुण्ड रुण्ड बनेग ॥ मारंत ज्वान मुदगर फिराय। लागतं शीश चूरं कराय ॥ बाहंत गुग्ज गहि सँभरि शूर। कापंत देखि कातर सुकूर ॥ खञ्जर सुखैंचि हीकं लगाय। वरं प्रवेश सारं समाय ॥ फेकंति चक्रं अक्कं फिराय। ले जात शूर शीशं उड़ाय ॥ मारंत वीर बानैत बांक। लागंति अंगफिरंतिकांक ॥ बाहंत अंग जमघर जुवान। फाटंति हीकं लीकं प्रमान ॥ केते न हाथ नहिं सार भाय। फेकंत एकको एकधाय ॥ या भांति आततायं लरात। आल्हन बीर मारंसरात ॥ लै आत-ताय बीरत्रिशूल। दीन्हो सुआल्ह होके प्रसूल ॥ आल्हन्न खैंचि तेग लगाय। धुकि पऱ्यो धरनि शूरं समाय ॥ आल्हा अचेत उत भयो युद्ध। भयो विषम खेत भारी विरुद्ध ॥२६०॥

दोहा–भयो मूरछा आल्ह नृप, आततायके दन्द ॥
ताहि समय पृथीराजसों, बानी बोल्यो चंद ॥ २६१ ॥

चौपाई

आल्हा गिरौ मूरछा खाइय। दोऊ वीर गिरे मुरझाइय ॥
ब्रह्मजीतको वेगहि मारौ। नातर उठे आल्ह रन हारौ ॥२६२॥

दोहा--ब्रह्मजीतसों युद्ध करि, सँभरि राय संभार ॥
जो जगहे आल्हा नृपति, तौ हारौगे रारि ॥ २६३ ॥

छप्पय

पेल पील पृथीराज चल्यो चँदेल सनंमुँख। ईश मंत्र उच्चारि बीर वर धारि मंत्र रुख ॥ नृपति आपु हँकारिबान कंमान पान कीय। खैंचि राज करी रोस तीर चँदेल हीक दिय ॥ भेदंत तीर खेदंत हय फूटि अंग सननात गय। पाखर सुफूटि दय वर सहित औ तुरंग असवार भय ॥२६४॥ लग्यो तीर चँदेल धऱ्यो पृथीराज सनंमुख। लये बीर कर

सांगि आगि चख भरे बान दुख ॥ आन आन पृथीराज चाय खर्गन सों खेलह । करैं युद्ध पर युद्ध वीर सामन्तन ठेलह ॥ सुनि चाहुँआन पालं उतरि हय मँगाय असवार भय । आये सुबीर दुहुँ ओरते रास जोरि जोरि घमसाय हय ॥२६९॥

छन्द भुजंगी

चलेसो चँदेलंमुखं चाहुँआनं । प्रियामान जंगंउमंगं उठानं ॥
लई सांगि हत्थं हनाराजहीकं । भईपार अंगं भ्रम्यौशूरजीकं ॥
भ्रम्यौं कंगलं अंग जंगं धुकायो । अचेतं हयंते धरामूरछायो ॥
लख्यौ चन्दवरदायराजाधिराजं । गुरूमन्त्रकीन्हो विरुद्धं समाजं॥
जगी मूरछा चहुँआन जहाँहीं । गये रोसहै ब्रह्मजीतं तहांहीं ॥
लये बान कंमान हत्थं समत्थं । दयो खैंचितीर चँदेल सुमत्थं॥
लई खैंचि तेग शिवंवारिकीनी । परं उद्दलं खेतधरनी नवीनी ॥
भजीफौज चँदेलकीसर्वसत्थं । उठचोतासमयआल्हबीरंसमत्थं
भयो चेत आल्हाइतै आतताई । लियं खर्गहत्थं मिले बीच आई हनी आल्ह तेगं इतै अत्ततायं । गिर्‌यो वीर धुकिके सुधरनी धरायं । करी पेज आल्हा चल्यो राजमुखं । धरौ स्वामिधर्म हियं शूर सुक्खं ॥ पृथीराज धरनी अचेतं षरायं । अगारी कयंमास ठाढ़चो रिसायं ॥ इतै आल्ह धाये किये रोष सक्खं उतै दाहिमा तेग दीनी सुमुक्खं ॥ दई आल्हके घाय कन्धं खुलायो । दई आल्ह तेगं सुधरनी परायो ॥ कियो ध्यान गोरख सुविद्या पसारी । प्रयोगं रहे शूर सामन्त भारी ॥ गुरू चन्दवरदाय आल्हं धरायो । तुलायं सरा और हस्ती फिरायो ॥ बली आल्ह विद्या अनेकं उपायं । गुरूचन्द आगे सुजानं न पाई ॥ भई स्वर्गवानी अनन्दं उपाई ।

अंहो भट्ट गुरुराय जीतै न जाई ॥ इतेमें गुरू गोरखं आप आये अगारी करारं किये जानि पाये ॥ तबै गोरखं आल्हसों बैन भाखे । रही धर्म पै कर्म विद्या मिलाखे ॥ २६६ ॥

चौपाई

भये मूरछा सब बरदाई । गोरखकी वसुधा फैलाई ॥
गोरख कह्यो योगपथ लीजे । काया काजै अमर सुकीजै ॥
देह अमर कर वनको धाये । छोड़ा भोग योग मन लाये ॥
जगसो छोड़ि योग रँगमाहीं । सकलकामना मनते ठाहीं२६७॥

दोहा—आल्ह चले तजि समरको, छांड़ि भोगको वास ॥
गोरख संगी ह्वइ चले, किये निरञ्जन आस ॥२६८॥

छप्पै

लोह लागि चहुँ आन मरे धरनी मुरछाइय । गिद्धिनि बैठी आइ चोंच चाहत दृग लाइय ॥ देख्यो संझिमराय नृपति पंखनि दृग गच्छन । अपने तनको माँस काटि दीयो भषपच्छन ॥ उड़ि गई मांस लैगगनको चाहुँआन दृगछण्डि तब । धनिधन्य संझिमा रायको अन्त समय भ्रम लिज्जियब ॥ २६९ ॥

दोहा—गिद्धिनिको निजपल दियो, नृपके नैन बताय ॥
देह सहित वैकुण्ठको, पहुँचे सँझिम राय ॥२७०॥

छन्द पद्धरी

चामुण्ड जीति परिमाल लाय । सब लूट माल कागद बताय ।
चँदेल रायको लै मिलाय । उन पकरि बांह उरसों लगाय ॥

१—यहां चंदजीने अपनी प्रशंसा की है । राजा परिमालकी ओरके भट्ट गुरु मार डाले गये, उनके लिये आकाशवाणी नहीं हुई चन्दजीके लिये आकाशवाणी हुई कि 'अहो भट्ट गुरुराय ! जीते न जाई ।' सच्ची बात तो जान पड़ती है कि आल्हाने सबको परास्त किया तब वहां गोरखनाथजीने आकर पृथ्वीराजको सचेत कर समझाया और दिल्ली लौट जानेकी आज्ञा दी, अब पृथ्वीराज कूच कर गये तब आल्हाको साथ लेके वनको चले गये । चामुण्डराय तो आल्हाके हाथसे मारा गया था परिमालको पकड़नेके लिये भेजना कैसा ? इसी प्रकार आगेकी बातें भी चन्दकी सशंकित हैं ।

पंचास क्रोड रोकंत दाम । पंच क्रोड पांषान याम ॥ मुक्ता सुवास भूषन सजोर । पंचास क्रोडको और जोर ॥ अन्नेक वाजि अन्नेक माल । अन्नेक पील डीलं विशाल ॥ भूषण अनेक नग खचित लोल । अन्नेक वसन लीन्हे अमोल ॥ शत कोट दर्वी कहुँ नहिं सँभार । चाण्ड जाति दाहिमा सार ॥ अन्नेक लूटको माल सांटि । सब दियो राज सबको सुबांटि ॥ परिमाल राजको छांड़ि दीन । तुम रहो जाय कनवज कुलीन ॥ २७१ ॥

दोहा–कछवाहे पज्जूनको, राखि महोबे थान ॥
दंड छांड़ि परिमालको, कीन्हो नृपति पयान ॥२७२॥
चहुँआन दिल्ली नगर, कीन्हो नृपति प्रवेश ॥
घर घर मंगल गावहीं, आयो जीति नरेश ॥२७३॥
संझिमराय कुमारको, बोलि हुजूर नरेश ॥
हयगयमणिमाणिक बकसि, अधआसनअधदेश॥२७४॥
और शूरा सामन्त सब, घर इनाम पहुँचाय ॥
ह्वइ प्रसन्न बैठे तखत, सो वह सम्भरि राय ॥२७५॥
याकोसुनिकछु कीजिये, यथाशक्ति शुभदान ॥
कबहुँ हार न आवही, पांच पचास प्रमान ॥२७६॥
आल्हखण्ड पूरण भयो, कन्यो चंद कवि राय ॥
पढ़ै सुनै सीखै कहै, ताकों सुभट सहाय ॥२७७॥

इति श्रीकविचंदभाट विरचित आल्हखंड संपूर्ण

श्री :

अथ परिशिष्ट भाग

★

वीरवंशोत्पत्तिवर्णन

दोहा–वेङ्कटेश पग वन्दन, करहुँ प्रथम शिर नाय।
वीरवंश वर्णन करों, वीर छन्द में गाय ॥ १ ॥

सुमिरणकरिकै श्रीसारदको ❋ औ गणपतिके चरणमनाय।
निशिदिन ध्यावोगिरिजापतिको ❋ जिनके कंठ गरल लहराय ॥
बन्दौं चरणकमल श्रीपतिके ❋ जिनकी माया अपरंपार।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र है करते ❋ उद्भव पालन औ संहार ॥
पवनपूत मैं तुमको गाओं ❋ तुम हौ बड़े बीर बलवान।
लाय सँजीवनमूरि वेगसों ❋ लछमनबकसदीन जिन प्रान ॥
गंगा माता तुमको गाओं ❋ तुम हौ कलियुगमाहिं अधार।
भागीरथके पुरिखन तार्‍यो ❋ औ सब तारिदियो संसार ॥
शहर बम्बईकी बंबाजू ❋ मनियादेव महोबे क्यार।
विंध्यवासिनी विंध्याचलकी ❋ निशिदिनकरहुदासपर प्यार ॥
गाओं काली कलकत्तेकी ❋ औ बकसरकी चण्डी माय।
वीर पँवाराके गैबेमा ❋ सो तुम कंठ बिराजौ आय ॥
कंठमें बैठो मेरे कंठेश्वर ❋ जिह्वामाहिं सरस्वति माय।
जो अक्षर मैं भूलौं माता ❋ सो करि कृपा देहु बतलाय ॥
छोड़ि माजरा अबसुमिरणको ❋ उतपति सुनौ शूरमन केरि।
जैसे जन्म बीर सब लीने ❋ क्रमसे कहौं निबेरि निबेरि ॥
कछुक दिवस कलियुगकेबीते ❋ शोभित नगर चँदेलीमाहिं।
चन्द्रवंशमें चन्द्रब्रह्म भे ❋ जिनकी धर्मध्वजा फहराहि ॥
ऐसा राजा तेजस्वी भा ❋ जिनकी कथा कही ना जाय।

जापै ह्वै प्रसन्न श्रीउडुपति ❋ पारसमणिको दियो थमाय ॥
राजा चन्द्रब्रह्मके यक सुत ❋ जाको वीरब्रह्म अस नाम ।
प्रगटत भयो वीररस पागे ❋ जाकी क्षत्री करत कलाम ॥
वीरब्रह्मसुत रूपचन्द्र भो ❋ रूपचन्द्र सुत भो ब्रजब्रह्म ।
ब्रजब्रह्माके एक पुत्र भो ❋ बन्दन बंदनके जगब्रह्म ॥
जग ब्रह्माके सत्यब्रह्म सुत ❋ सूरजब्रह्म सत्यसुत एक ।
सूर्यब्रह्मके मदन प्रगट भे ❋ मदन पुत्र भे कीरतिराव ॥
कीरतिसागर जिन खुदवायो ❋ जाको बल जानै संसार ।
तिनके बेटा परिमालक भे ❋ क्षत्री बीरबाँकुरा ज्वान ॥
चम्पावती सदृश चम्पाके ❋ कन्या परिमालिक कुल केरि ।
कनउज राजाके संग वाको ❋ विधिना ब्याह दियो बर हेरि ॥
तेहि कन्यासे दुइ सुत प्रगटे ❋ जयचँद रतीभानु सरदार ।
राजा रतीभानुसुत नाहर ❋ लाखनि बीर नकुल अवतार ॥
उत्पति गायो परिमालिककी ❋ चर्चा सुनौ और मन लाय ।
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ सुनिथे चरित ज्वान हर्षाय ॥
थोरी चर्चा परिमालिकका ❋ ज्वानो बीचमाहि सुनि लेउ ।
नगर महोबेका राजा था ❋ जेहिका वासुदेव अस नावँ ॥
कोऊ मालवन्त अस भाषत ❋ जेहिके भये पुत्र दुइ बीर ।
यक भे माहिल दूसर भूपति ❋ जगनिक नाम बड़ो रणधीर ॥
मालवन्त राजाकी कन्या ❋ उपजीं पांच रूपगुणखान ।
मल्हना कमला अगमा दिवला ❋ तिलका ब्रह्मा नाम बखान ॥
तिन पांचौमें मल्हना रानी ❋ सुन्दरि भई चन्द्र अनुहार ।
जेहिकी शोभा निरखि देवपति ❋ मनमें सोचि मूरछा खायँ ॥
तेहि सुन्दरिकी पाय खबरिया ❋ नाहर परिमालिक सरदार ।
करी चढ़ाई नगर महोबे ❋ कीन्ह्यो युद्ध महाभयकार ॥
हार मानि नृप मालवन्त तब ❋ मल्हने ब्याह दियो करवाय ।
चारो बहिनिनका अब ज्वानो ❋ सुनिये ब्याह श्रवण मन लाय ॥

कमला ब्याही बौरी गढ़के ❋ राजा वीर शाहके संग ।
अगमाको रानी निज कीन्ही ❋ राज पृथीराज चौहान ॥
दिवला ब्याही दस्सराजसंग ❋ तिलका बच्छराजकी नारि ।
याविधिसब कन्या ब्याही गईं ❋ ज्यादा कौन करै विस्तार ॥
यहौ माजरा पाछे परिगा ❋ उतपति सुनौ बनफरन केरि ।
बड़े लड़ैया रण बाघा हैं ❋ जिनका यश छायो संसार ॥
नगर चँदेलीके राजाको ❋ मंत्री चिन्तामणि अस नाम ।
राजा चन्द्रब्रह्मको निशिदिन ❋ दै दै मंत्र सँवारत काम ॥
यहि जगमाहिं काल करियाते ❋ बिन काटे कोउ बचै न वीर ।
बड़े बड़े योद्धा धर्मधुरंधर ❋ सब हैं कालनागके कौर ॥
राजा चन्द्रब्रह्म बहुविधिसों ❋ कीन्ह्यो राज्य प्रजन सुख दीन ।
यक दिन कालकौर भे राजा ❋ मन्त्री ताते भयो मलीन ॥
त्यागि कुटुँब संपत्ति निजहूकी ❋ घरते निकरि गयो बनमाहिं ।
द्वादशवर्ष शम्भुको पूज्यो ❋ मन्त्री खान पान बिसराय ॥
भये प्रसन्न भूतभावन हर ❋ मांगु मांगु वर रहे सुनाय ।
ऐसी बाणी सुनि मन्त्रीवर ❋ मांग्यो पुत्र शूर रणधीर ॥
एवमस्तु कहि उत शिव चलिभे ❋ इत मंत्री चित भयो निहाल ।
कुछ दिन बीते चिंतामणिके ❋ यक सुत भयो वीर शशिपाल ॥
कृपाचन्द शशिपाल पुत्र यक ❋ औ मकरंद कृपासुत जान ।
बड़ो वीर अक्रूर शूररण ❋ मकरंदाको सुत बलवान ॥
टोडर भे अक्रूर शूर सुत ❋ टोडरके रहिमल एक पूत ।
रहिमलके सोरठ जायो है ❋ ताके सल्ह बल्ह दुइ वीर ॥
ते दोउ भाई योगी ह्वैकै ❋ श्रीगोरख ढिग पहुँचे जाय ।
कीन्ही सेवा श्रीगोरखकी ❋ योगाभ्यास सिखनेके हेतु ॥
योग सिखायो दोउ भैयनको ❋ योगीराज भये परसन्न ।
आज्ञा दीन्ही उन वीरनको ❋ वनमें करहु तपस्या जाय ॥
आयसु सुनिकै गुरु गोरखकी ❋ यक नदिया तट बैठे जाय ।

वही समैयाके औसरमें ❋ अचरज देखी नदिया तीर ।
सिंहके बच्चा औ गौवनके ❋ खेलैं यक सँग पीवैं नीर ॥
या विधि देखि सिंह बछराको ❋ मनमें सह्य बिचारन लाग ।
जो हम होते गऊ बालका ❋ क्रीडा करते याही संग ॥
यहै ध्यान बछौके आया ❋ बछरा भये न गौवन केर ।
जो हम होते गऊ बालका ❋ यासँग रहते हिलमिल नित्त ॥
ऐसे सोचि दोउ भैया तब ❋ प्राणायाम साधि भे मौन ।
बहुत उपाय किये तेहि औसर ❋ पै न तरे श्वास किये गौन ॥
जो कुछ विधिनाने लिखदीन्हा ❋ तेहिको कौन टरैया भाय ।
होनहार हिरदै बसि जावै ❋ जाते बुद्धि सकल नशिजाय ॥
अन्तकाल दोऊ का ह्वैगा ❋ या विधि वनमें साधत योग ।
सिंहबालका दोऊ बछेरा ❋ ते दोउ भये वही मनमाहिं ॥
तिनकी प्रीति कहां लौं वर्णौं ❋ निज भैयनको छांड़ै नाहिं ।
एकै संग खाँय औ पीवैं ❋ एकै संग करैं विश्राम ॥
बहुत काल बीतो जब या विधि ❋ क्रीडा करत सघन वनमाहिं ।
गऊबालकाको इक दिन कोउ ❋ बधिक पकरि लीन्हो है जाय ॥
फाँसि जँजीरनसे बछवाको ❋ मारचो बधिक ताहि तत्काल ।
प्राण निकरिगे तब बछराके ❋ जो रोबत था जार बिजार ॥
आरत नाद सुनी केहरिने ❋ पहुँचा तुरत कह्यो ललकार ।
अरे बधिक तोको अब मरिहौं ❋ काहे मारे भाय हमार ॥
इतना कहिकै चिता लगायो ❋ औ बधिकासे कह्यो सुनाय ।
यही चितामें मेरे भैयाको ❋ जल्दीसे अब देहु जलाय ॥
काटि जँजीरे दी बधिकाने ❋ औ धरि दियो अग्निके माहिं ।
या गति भैयाकी जब हो गई ❋ तब बधिकाको डारचो मार ॥
आपहु जाय चितामें कूदेउ ❋ भाई संग भयौ जरि छार ।
गिरजासहित शंभु तेहि वनमें ❋ निकसे जाय दयाके खान ॥
जरत चिता देखी गिरजाने ❋ पूछन लगी शंभुसे हाल ।

सिगरी कथा सुनाई शिवने ❋ गिरिजा विनय करन तब लागि।
दीनदयालु जिआओ इनको ❋ मोपै कृपा करहु अधिकाय॥
अमृतबूँद छिरको शिवजीने ❋ तिन दोउनको दियो जिआय।
दस्सराज औ बच्छराज अस ❋ शंकर नाम सुनाये गाय॥
बड़े वीर तुम ह्वैहौ जगमें ❋ तुम्हरो यश गावै संसार।
राजा परिमालिक ऐहैं जब ❋ तुमको लैजैहैं निज धाम॥
नैन पुतरिया करिकै रखिहैं ❋ बर सुनि लेहु हमारो सांच।
जबलगि तुमते भेंट न होवै ❋ तबलगि रहो यही वनमाहिं॥
इतनी कहिकै शंकर चलिभे ❋ दोउ वीरनको दै वरदान।
निर्भय विचरैं तेहि वनमाहीं ❋ बाघा दोऊ सिंह समान॥
वीर बनाफरकी यह उत्पति ❋ याविधि भई सुनौ सब ज्वान।
जैसे भेंट परिमालिकसे ❋ तैसे चर्चा करिहौं गान॥
एक समैयाके औसरमें ❋ राजा परिमालिक सरदार।
कुछ सेना निज सँगमें लैकै ❋ निकसे हवाखानके हेत॥
घूमत घूमत वनमें आये ❋ जहँ थे दोउ बीर बलवान।
गैलमाहिं दुउ भैंसा लड़ते ❋ देखे वहि वनमें परिमाल॥
हुक्म दे दियो सब सेनाको ❋ इन भैंसनको देउ हटाय।
इतना सुनतै सेना दौरी ❋ औ भैंसन ढिग पहुँची जाय॥
बहुत उपाय किये सब बीरन ❋ भैंसा हटैं न तिलभरि भूमि।
सब राजनको जीति बांकुरा ❋ परिमालिक त्यागे हथियार॥
अमर गुरूकी आज्ञा मानै ❋ सो ना गहै ढाल तलवार।
यहिते सेनाको ललकारो ❋ सबके निष्फल भये उपाय॥
वही समैयाके औसरमें ❋ रणबाघा तहँ पहुँचे धाय।
दस्सराज औ बच्छराज मिलि ❋ यक यक भैंसा दियो हटाय॥
वीर जानि दोऊसे तबहीं ❋ पूछन लगे रजापरिमाल।
कहां तुम्हारी रहना होवै ❋ केहिके सुत हौ दोऊ लाल॥
इतनी सुनिकै परिमालकको ❋ तिन सब दियो हाल बतलाय।

ना हम जानैं पिता मातुको ❋ औ ना जानैं अपन निवास ॥
साधू एक सुन्दरी तियसँग ❋ हम देखा यही बनमाहिं ।
दस्सराज औ बच्छराजतिन ❋ हमरो नाम धरो महराज ॥
एक बात औरौं कहिगे थे ❋ मिलिहैं तुम्है रजापरिमाल ।
सो तुमको लैजैहैं निजसँग ❋ हमरे वचन करो परमान ॥
तेहि दिनसे हम यह वनमाहीं ❋ बिचरैं सदा फूल फल खाय ।
इतनी बातैं सुनि परिमालिक ❋ मनमें बहुत भये परसन्न ॥
संग लिवाय दोउ बीरनको ❋ नगर महोबे पहुँचे आय ।
मलहना रानी तब पूछति भै ❋ केहिके हैं बालक महराज ॥
बोले परिमालिक मलहनासे ❋ सुनि लो रानी बात हमारि ।
ये दोउ बालक हमको दीन्हो ❋ साधू एक कृपाके सिंधु ॥
इनको रखिहौं निजभाई सम ❋ ये हैं बड़े बीर बलवान ।
इतना सुनिकै मलहना रानी ❋ मनमें बहुत भई परसन्न ॥
हिरदयमहिं लगाय दुहुँनको ❋ नितप्रति सेवा करै महान ।
जब दोउ वीर वीर रस पावे ❋ राजा तिनको कियो विवाह ॥
मलहनाकी छोटीबहिनिनसँग ❋ जिनका दिवला तिलका नाम ।
दस्सराजको दशहरपुरवा ❋ दैकैकोट झिझावटक्यार ॥
बच्छराजको सिरसागढ़ दै ❋ अपनो नेत्रपुतरिया कीन ।
परिमालिक दोउनको समुझत ❋ अपने पुत्रहुसे अधिकाय ॥
या विधि नगर महोबे बसिगे ❋ बनफर वीर बांकुरे ज्वान ।
ह्यांकी बातैं रही हियापै ❋ चरचा सुनो और मनलाय ॥
बहुत पांवरा है आल्हाको ❋ ज्यादा कौन करे बकवाद ।
गाओ गाथा पृथीराजकी ❋ क्षत्री वीरवंश चौहान ॥
पृथिराज जन्म सुनिलीजै ❋ ज्वानो तुमसन कहौं बखान ।
नगर हस्तिनापुर जाहिर है ❋ जाको यश छायो संसार ॥
राजा वीर अनगपाल इक ❋ पहले करत रहा रजधान ।
बड़े बड़े दान किये राजाने ❋ जाको यश छायो संसार ॥

तिहि राजाकी एक सुता थी ❀ जिनका इन्द्रकुँवरि असनाम ।
कोकिलबैनी औ मृगनैनी ❀ अंगअंग कोटिकाम छबिधाम॥
जिसका सुन्दर रूपनिरखिकै ❀ चँदा सकुचि रहे मनमाँहि ।
क्या गति वर्णौं तेहिकन्याकी ❀ शोभा कहत शेष सकुचाहि ॥
दिन दिन कला बढ़ै कन्याकी ❀ जैसे बढ़ै चन्दमाकेरि ।
एक दिना रनिवासके माहीं ❀ राजा गयो रानिके पास ॥
तहँ खेलत निज कन्या देखी ❀ राजा मनमें कियो विचार ।
सोरह वर्षकेरि कन्या है ❀ इसका करन चही अब ब्याह॥
निज रानीसे संमति लैके ❀ चिठिया एक लिखी तत्काल।
बेगि बुलाय कह्यो धामनसे ❀ लैजा पत्र शहर अजमेर ॥
तहँका राजा सोमदत्त है ❀ दीजो चिट्ठी ताहि थमाय ।
औ कहिदीजौ इंद्रकुँवरिके ❀ ब्याहनयो आवैं तत्काल ॥
इतना सुनिकै धामन चलिभौ ❀ पहुँचो जाय शहर अजमेर ।
सूधे राजमहलमें घुसिगो ❀ जहँ दरबार चुहाननक्यार ॥
करी बंदगी सोमदत्तकी ❀ औ मन्त्रीको दई सुनाय॥
कह्यो संदेश अनंगपालको ❀ कासिदहाथ बांधिरहि जाय ॥
राजा सोमदत्त पढ़ि चिठिया ❀ औ मन्त्रीको दई सुनाय ।
लिखिकै उत्तर दै कासिदको ❀ राजा बहुत दई बकसीस ॥
बिदा कियो कासिदको तबहीं ❀ कासिद चलत न लागीबार ।
लौटिकै कासिद दिल्ली आयो ❀ औ दै दियो पत्र तत्काल ॥
होन लगी सामग्री तबहीं ❀ शोभित चौहट हाट बजार ।
ध्वजा पताका सुबरन कलशा ❀ दीपक बरै सबनके द्वार ॥
लगे फुहारा है हौजनमें ❀ औ सड़कनमें उड़ै गुलाब ।
लगी दुकानै सब चीजनकी ❀ दिल्ली इंद्रलोक अनुहार ॥
भई तयारी या विधि हियना ❀ जेहिको शोभा कही न जाय ।
राजा सोमदत्तपढ़ि चिठिया ❀ औ मन्त्रीसे कही बुझाय ॥
सब फौजनको जल्दी साजो ❀ दिल्ली शहर जानके हेत ।

हुक्म दे दियो जब राजाने ❋ फौजैं तुरत भईं तैयार ।
हर्षके बाजे बाजन लागे ❋ मानो मेघ रहे घहराय ॥
सजें सूँड़िया है बहु विधिसे ❋ जिनके पड़ी सुनहरी झूल ।
घोड़ा रथ म्याना सजिगे सब ❋ इतके एक बड़े छबिखान ॥
बहुविधिसे सिगरो नहिं गाओं ❋ ज्वानो बड़ो पँवारो होय ।
याविधि साजि बरात बेगिसों ❋ दिल्ली शहर पहूँचे आय ॥
वीर अनंगपाल राजा तब ❋ कीन्ह्यो बहु प्रकार सन्मान ।
शोभित जनवासोंमें राजा ❋ सबके डेरा दिये उतारि ॥
भई समैया जब विवाहकी ❋ पंडितको झट लियो बुलाय ।
होन लगी भांवरी दुहुँनकी ❋ सखियां गावैं मङ्गलाचार ॥
याविधि इंद्रकुँवरि ब्याहीगे ❋ राजा सोमदत्तके साथ ।
इक लख हाथी दुइ लख घोड़ा ❋ दश हजार रथ सुंदर साजि ॥
द्रव्य असंख्य भरायो छकड़न ❋ जेहिके भार धरणि अकुलाय ।
दास रु दासी दश हजार दियो ❋ सुन्दर अलंकार पहिराय ॥
या विधि दायज दीन्ह्यो राजा ❋ वीर अनंगपाल सरदार ।
डोला सजिगो इंद्रकुँवरिको ❋ रानी तामें भई सवार ॥
कूच नगारा बाजन लागे ❋ सब सजि गयो फौजके ज्वान ।
कूदि बछेरामें बैठो झट ❋ राजा सोमदत्त चौहान ॥
रामहि राम सबनिको करिके ❋ औ डोला आगे करवाय ।
कूच बरात कियो दिल्लीसे ❋ पहुँची आय शहर अजमेर ॥
घर-घर मंगल गावैं सखियां ❋ तोता लेत रामके नाम ।
राजा सोमदत्त निशिवासर ❋ रानी इन्द्रकुँवरिके सँग ॥
भोगविलाश करै महलनमें ❋ ज्वानी नई दुहुँनके अंग ।
बड़ो पँवारो को अब गावै ❋ ज्यादा कौन करै बकवाद ॥
जैसे जन्म लीन पृथ्वीपति ❋ सो सब हाल सुनो मन लाय ।
कुछ दिन बीते सोमदत्तकी ❋ रानी इंद्रकुँवरि छबिधाम ॥
भई गर्भिणी महलनमाहीं ❋ जिसका तेज रहो है छाय ।

लगो महीना जब सावनका ❋ सखियां गावैं राग मलार ॥
माता इंद्रकुँवरिकी तबहीं ❋ बोली निज पीतम ढिग जाय ।
सब सखियां मिलि झूला झूलैं ❋ कन्या मेरी परी ससुराल ॥
बेगि बुलावो मेरि कन्याको ❋ पीतम नेक न लाओ बार ।
वीर अनंगपाल रानीके ❋ सुनिकै ऐसे कोमल बैन ॥
पर्व श्रावणीकी लखि राजा ❋ निज कन्याको लियो बुलाय ।
तीन मासका गर्भ रहा था ❋ रानी इंद्रकुँवरि के पेट ॥
देखि गर्भिणी तब कन्याको ❋ राजा मनमें भयो प्रसन्न ।
चंदन पंडितको बुलवायो ❋ सिगरो हाल दियो बतलाय ॥
कहौ गर्भके लक्षण पंडित ❋ शुभ औ अशुभ समस्त विचार ।
इतनी सुनिकै चंदन पंडित ❋ बोले करिकै गर्भविचार ॥
ह्वैहै राजा याके इक सुत ❋ बाघा बड़ो लड़ैया बीर ।
सब राजनको जीति एक यहु ❋ ह्वैहै पृथ्वीको सरदार ॥
लंबी भुजा चंद्रमुख सुन्दर ❋ शूरनको ह्वैहै शिरताज ।
नरदेही अस नाम होयगो ❋ ताके बलको नहीं प्रमाण ॥
एक बात औरौ सुनि लीजै ❋ राजा तुमसे कहौं विचारि ।
शहर हस्तिनापुरते तुम्हरे ❋ सकल वंशको देइ निकारि ॥
दिल्लीपति अपने बनि जाई ❋ निर्भय करै राज्य बलवान ।
जितनी बातैं हैं ये राजा ❋ सांची जानि करौ परमान ॥
चंदन पंडितते यह सुनिकै ❋ राजा परो मूरछा खाय ।
बड़ो कुऔसर अब आयो है ❋ एकौ इसका नहीं उपाय ॥
बेगि बुलायो कुटुँबजननको ❋ औ सब हाल दियो बतलाय ।
भैया कहौ यत्न क्या करिये ❋ जाते बनै आपनो काज ॥
इतना सुनिकै बोले कुटुँबी ❋ अय महाराज गरीब निवाज ।
एक यत्न तुमको बतलावैं ❋ सो अब करौ बेगि मन लाय ॥
कन्याको हनि डारैं हम सब ❋ जो तुम्हरे मन आवै बात ।
जायकै कन्यासे यों कहिये ❋ कन्या तेरे गर्भके हेत ॥

सब बिदुषोंसे पूछा हमने ❋ सो वे कहैं बड़ो इक भेद ।
इंद्रवतीके अस सुत होगा ❋ बाघा तेजस्वी बलवान ॥
कारण इक जो घरमें रहिहै ❋ यहिका गर्भपतन हो जाय ।
तीरथ दर्शनको जो भेजो ❋ तौ कल्याण सकल हो जाय ॥
ऐसी बात महलमें जाकै ❋ राजा कन्यै देउ सुनाय ।
तो सब कारज अपने बनिहैं ❋ और उपाय कछू है नायँ ॥
इतनी बात सुनिकुटुँबिनकी ❋ राजा गये महलके बाच ।
इंद्रवतीको बेगि बुलायो ❋ औ सब कही गर्भकी बात ॥
हे पुत्री जो तै घर रहि है ❋ तौ तव गर्भ नष्ट हो जाय ।
याते तीरथ दर्शन करियो ❋ सारी सेना संग लिवाय ॥
पिता वचन सुनि इंद्रवती तब ❋ डोलामाहिं भई असवार ।
सेना चतुरंगिणि सँग लैकै ❋ तीरथ दर्शनके हित जात ॥
घरते निकरि चली दूरक कछु ❋ सबने गही सघनवन राह ।
जायकै पहुँचे वहि जंगलमें ❋ जहँ नित सिंहबाघ डकरायँ ॥
खैंचि पालकीसे कन्याको ❋ सबने दियो कुआंमें डार ।
लौटिकै आये सब दिल्लीमें ❋ औ राजासे कहे हवाल ॥
अंधकूपमें डारि इन्द्रवति ❋ हम सब लौटे हैं नरनाह ।
माता पिता नहीं काहूके ❋ सब हैं स्वारथ केरे मित्त ॥
द्रव्य पियारि सबनको लागै ❋ ज्वानो गुनियो अपने चित्त ।

कुंडलिया

पैसेके हैं मातु पितु, पैसेके हैं भ्रात ।
बिन पैसे या जगतमें, कोउ न पूंछत बात ॥
कोउ न पूँछत बात द्रव्य बिन क्रूर बखाने ।
होवे पैसा पास ताहि बड़ शूरहु मानें ॥
कह कवि पन्नालाल चिताको मुर्दा जैसे ।
त्यागत हैं सब लोग जाहि ढिग होत न पैसे ॥ १ ॥
स्वारथके साथी सबै, हैं याही जगमाहिं ।

तातै भजिये रामको, कलिमल सकल नशाहिं ॥
कलिमल सकल नशाहिं, समुझिये मनके माहीं ।
गृह अरु धन परिवार कोउ सँग जैहैं नाहीं ॥
कह कवि पन्नालाल एक सँगी परमारथ ।
भजिये राम कृपालु साधिये अपनो स्वारथ ॥२॥

अंधकूपके भीतर परिकै ❋ रानी रोवै जार बिजार ।
या गति ह्वैगै इन्द्रकुँवारिकी ❋ बिपदा कछू कही ना जाय ॥
दैव योगसे वहि वनमाहीं ❋ अश्वत्थामा निकसे जाय ।
आरतनाद ऋषीश्वर सुनिकै ❋ पहुँचे कुँवनापर तत्काल ॥
वेगि निकारि लियो रानीको ❋ पूंछन लगे मातु पितु नाम ।
हे पुत्री अब मोहिं बताओ ❋ कहँपर अहै तिहारो धाम ॥
इतना सुनिकै ऋषीराजसों ❋ रानी कहन लगी करजोर ।
हौं महाराज अनंगपालकी ❋ कन्या इन्द्रवती मम नाम ॥
सोमदत्त मेरे स्वामी हैं ❋ जिनका राज सहर अजमेर ।
इतनी सुनिकै अश्वत्थामा ❋ फिर कन्यासे कह्यो बुझाय ॥
तोको कहो पिता घर भेजौं ❋ कहुँ पहुंचाय देउं अजमेर ।
इंद्रकुंवरिफिरि बोलन लागी ❋ सुनिये दीनबंधु भगवान ॥
मेरे माता पिता आपै हो ❋ मोको राखौ कन्या जान ।
तब अश्वत्थामा संग लैकै ❋ राखे जाय कुटी निजमाहि ॥
इन्द्रवती तहं रहने लागी ❋ जहं ऋषिराज करी है छाँह ।
सम्वत ग्यारासै बत्तिस औ ❋ माघमास उजियारा पाख ॥
जीव नखत तेरस भृगुदिन औ ❋ दुपहर अभिजियत प्रबलमुहूर्त ।
त्रिविध बयारिबहन लागी हैं ❋ शुभग्रह उदै भये भरपूर ॥
वही समैयाके औसरमें ❋ इन्द्रकुंवरि जन्म्यो यक पूत ।
दुर्योधन अवतार कहै सब ❋ जो भो बड़ौ लड़ैया शूर ॥
अश्वत्थामा जात कर्म करि ❋ औ पृथीराज नाम धरिदीन ।
बड़े प्यारसे पालन लागे ❋ अपनी दुहितासुत समकीन ॥

जबै दुलरुवा सोमदत्तका ❋ भा है पांच वर्षका वीर ।
शरविद्यामें निपुन कियो तब ❋ श्री अश्वत्थामा रणधीर ॥
जैसे मिले पिता अपनेसे ❋ राजा पृथीराज चौहान ।
कहौं माजरा सोइ अब ज्वानो ❋ सुनिये हर्षसहित दे कान ॥
यक दिन राजा सोमदत्तजी ❋ वनमें खेलन गये शिकार ।
दैवयोगसे ऋषि आश्रममें ❋ पहुँचे जाय सेनके साथ ॥
आवत देखे सोमदत्तको ❋ तब ऋषि लेन चले अगवान ।
कुशल पूँछिकै सब राजासे ❋ पूँछन लगे रहनको थान ॥
सोमदत्त तब बोलन लागे ❋ सुनिये ऋषीराज महराज ।
नाम हमारो सोमदत्त है ❋ औ मेरी राज शहर अजमेर ॥
शहर हस्तिनापुरका राजा ❋ ताको सुता इन्द्रवतिनाम ।
मृगनयनीसोइतिरिया हमरी ❋ तेहि विन ब्याकुल फिरौं उदास ॥
पर्व श्रावणीमें बुलवायो ❋ वाको पिता सुनो महाराज ।
निजसेनाको संग पठैके ❋ वनमें दुष्ट दिया मरवाय ॥
तेहितेबिनतिरियामैंनिशदिन ❋ वनमें फिरौं छोड़ि सब काम ।
जैसे जलबिन मीन मरति है ❋ तैसे दसा भई महराज ॥
इतनी सुनिकै अश्वत्थामा ❋ राजासे सब कह्यो बुझाय ।
तुम्हरी नारि तुम्है मिलि जैहै ❋ सोच न करो नेकमन माहिं ॥
पृथीराज औ इन्द्रकुवरिको ❋ तब ऋषि अपने निकट बुलाय ।
कही हकीकत सब राजासे ❋ औ दौनोंको दियो गहाय ॥
ह्वै प्ररसन्न ऋषीवर बोले ❋ राजा लेहु पुत्र औ नारि ।
तुम्हारा पुत्र शूर बड़ होई ❋ यहिका यश गावै संसार ॥
तिरिया पुत्र सङ्ग लै राजा ❋ निज पुरको गवन्यो तत्काल ।
रहन लगे अजमेर शहरमें ❋ या विधि पृथीराज चौहान ॥
बादशाह पश्चिमका कोऊ ❋ दिल्ली शहर लेनके हेत ।
बीर अनङ्गपालपै चढ़िकै ❋ डंका दियो युद्धके हेत ॥
तब तौ राजा ब्याकुल ह्वैगा ❋ औ मंत्रिनसे करै विचार ।

लड़ने जैहै हम शत्रुनसे ❋ को दिल्ली की करी सँभार ॥
इतनी सुनिकै मंत्री बोले ❋ सुनिये दीन बँधु भगवान ।
नाती अपनेको बुलवावो ❋ जो हैं इन्द्रकुँवरिका लाल ॥
बड़ो लड़ैया रणबाघा है ❋ सो सब करी नगर रखवार ।
सुनिकै बातैं सब मंत्रिनकी ❋ लिखि परवाना दियौ पठाय ॥
बेगि बुलायो पृथीराजको ❋ बीर अनंगपाल सरदार ।
सौंपि हस्तिनापुर नातीको ❋ औ गद्दी पर दियो बिठाय ॥
ताँबा तवा मँगाय बेगिसो ❋ औ शर्तैं लिख दिये बनाय ।
विन आज्ञा लै पृथीराजके ❋ दिल्ली कोउ न जाय मझाय ॥
इतनी शर्तैं लिख नातीको ❋ राजा चलो चढ़न मैदान ।
संवत् ग्यारह सै अड़तालिस ❋ भौ यह हाल कह्योकरिगान ॥
वही दिनासे दिल्ली लीन्हो ❋ राजा पृथ्विराज चौहान ।
अपने भाई औ मित्रनको ❋ दिल्लीमाहिं बसायो आय ॥
यहि विधि पृथ्वी दिल्ली पाई ❋ ज्वानो तुमसे कह्यो सुनाय ।
और माजरा अब गावत हौं ❋ ज्यादा कौन करै बकबाद ॥
इन्द्रदत्त सुत चौंड़ा ब्राह्मण ❋ बकसर क्यार बसैया वीर ।
पूजि चंडिकाको बहुविधिसे ❋ बाघा भावों बड़ो रणधीर ॥
पहुँच्यो दिल्लीमें तब नाहर ❋ जहँ थे पृथीराज चौहान ।
करी खबरिया निजआवनकी ❋ यह हरकारा दियो पठाय ॥
जाय सिपाही पृथ्वीपतिसे ❋ चामुण्डाका कह्यो हवाल ।
हुक्म दैदियो राजा तबहीं ❋ लाओ बेगि हमारे पास ॥
इतना सुनि हरकारा आयो ❋ औ चौंड़ाको गयो लिवाय ।
जायकै चौंड़ा देखन लागो ❋ भस्माभूत लगा दर्बार ॥
आशीर्वाद दियो राजाको ❋ औ मसदनपर बैठा जाय ।
कुशल पूछिकै चामुण्डासे ❋ राजा पृथ्वीपाल सरदार ॥
सुन्दर खान पान दै पाछे ❋ पूछा आवनका शब हाल ।
कही हकीकति सब चौंड़ाने ❋ अपने आवनका सब हाल ॥

सुनिकै बातैं यह चौंड़ाकी ❀ राजा हुक्म दियो फर्माय ॥
साजौ मंदिर एक अनोखा ❀ जामें बसै चौंड़िया ज्वान ।
हुक्मके कहते मंदिर बनिगा ❀ मानो इन्द्रभवन छबिखान ॥
कह्यो पिथौरा तब चौंड़ासे ❀ चौंड़ा सुनो हमारी बात ।
सुन्दर भवनमाहिं अब रहिये ❀ अपनी तलब लेव करवाय ॥
हुक्म पायकै तब चौंड़ाने ❀ मंदिर माहिं बसा बलवान ।
नित दर्बार करै पृथ्वीका ❀ अपने बलका करै बखान ॥
कुछ दिन बीते सब सेनाका ❀ मालिक किया पिथौराराय ।
याविधि चौंड़ा बसि दिल्लीमें ❀ कीन्हे काज पिथौरा केर ॥
बड़ा माजरा अब को गावै ❀ ज्वानो सब जानत हौ हाल ।
वीर चौंड़िया समनहिं कोइभा ❀ जाहिर रही जासु तलवार ॥
यहौ माजरा पाछे पड़िगा ❀ अब आगेको सुनो हवाल ।
उत्पति गावों अब आल्हाकी ❀ जेहिका यश छाया संसार ॥
दशहरपुरवाका महाराजा ❀ बागा दस्सराज अस नाम ।
देश देश जिसका यश छाया ❀ ऐसा देशराज बलवान ॥
तेहि राजाकी दिवलारानी ❀ जेहिकी शोभा कही न जाय ।
ज्येष्ठसुदीदशमी दिन दुपहर ❀ औ संवत् ग्यारहसौ साठ ॥
एक पुत्र भा तेहिके सुन्दर ❀ नाहर लग्न रही बलवान ।
वही समैयाके औसरमें ❀ राजा परिमालिक सरदार ॥
पंडित चिन्तामणिहिबुलाया ❀ औ ज्योतिषिन लिया बुलवाय।
हाथजोरि परिमालिक राजा ❀ बोले मीठे वचन सुनाय ॥
सब भूदेवनसे बोलत हौं ❀ सो सुनिलेहु सबै महाराज ।
यहि बालकके लक्षण कहिये ❀ शुभऔ अशुभ समस्त विचार॥
इतनी सुनिकै बोले ब्राह्मण ❀ सुनिये दीनबंधु सरदार ।
सिंहलग्नमें जन्म्यो यह सुत ❀ तेहिते होवे सिंह समान ॥
सब राजनका जीतनहारा ❀ यहिका यश गावै संसार ।
आल्हा नाम प्रसिद्ध होयगो ❀ युग युग यश गैहैं सब ज्वान॥

इतनी सुनिकै भूदेवनको ❋ राजा दीन बहुतसो दान ।
कीन्हों बिदा याचकन दै दै ❋ निजनिजके मनमाने दाम ॥
जबै दुलरुआ देशराजका ❋ है गा वर्ष सत्तरह क्यार ।
कियो विवाह सुनमदे रानीसे ❋ नैनागढ़में है बलवान ॥
पंद्रह वर्ष आयु लग बाघा ❋ पूजन कियो चण्डिका क्यार ।
निजशिरकाटि चंडिकाजीको ❋ अर्पण कियो बहुतसी बार ॥
तब परसन्न भई चंडीजू ❋ औ वर दैकै कियो निहाल ।
श्रीभगवतिके वर पायेसे ❋ जो भा अमर यही संसार ॥
सब जग जानै जेहि बाघाको ❋ जो भा धर्मराज औतार ।
यहू हकीकति पाछे पढ़िगै ❋ सुनिये मलिखानेका जन्म ॥
ऐसा वीर लड़ैया नाहर ❋ वीरनसिंह भयो उत्पन्न ।
सिरसागढ़ सब गढ़में नामी ❋ राजा बच्छराज तहँकेर ॥
जेहिका भाई देशराज है ❋ ज्वानो सब जानौ है भेद ।
बच्छराजकी रानी तिलका ❋ जेहिका ब्रह्मा दूसर नाम ॥
भादों वदी अष्टमी तिथिऔ ❋ ग्यारहसै इकसठिका साल ।
केहरिलग्न उदय सूरजके ❋ तेहिके पुत्र भयो रणधीर ॥
जेहिकायश यहि जगके माहीं ❋ गावें बड़े बड़े सब वीर ।
बच्छराजके पुत्र भया है ❋ ऐसी सुनी रजा परिमाल ॥
बेगि बुलायो पंडितनको ❋ औ कीन्हो है नाम तत्काल ।
कीन विचार ब्राह्मणन तबहीं ❋ औ मलिखान कीन असनाम ॥
बड़ा लड़ैया है मलिखाना ❋ जेहिकी जगजाहिर तलवार ।
सो ब्याहा था पथरी गढ़में ❋ रानी गजमोतिनिके साथ ॥
करिकै पूजा श्रीशारदकी ❋ औ बरदान पाय रणधीर ।
मारिसिरोहिन निजशत्रुनको ❋ अपनो काम जगतमें कीन ॥
बहुत पँवारा नहिं गावतहौं ❋ भारी ग्रंथ होय तैयार ।
थोरे माहिं जानि सब लीजै ❋ ज्वानो मनसे करौ विचार ॥
यहौ माजरा पाछे पढ़िगा ❋ उत्पति गाओं लाखनि केरि ।

मेरे ज्वान अब सुनिलीजै ❀ चर्चा कहौं निवेरि निवेरि ॥
नगर कनौज माहिं यकराजा ❀ क्षत्रीं वंश रठूरन क्यार ।
जयचन्दनाम शिरोमणिहैगा ❀ सब राजनका जो सरदार ॥
जेहिके द्वारे बड़े बड़े बाघा ❀ दिन औ रात करैं रखवार ।
काढ़ि शिरोही निजम्यानन्नसे ❀ पहरा देइं हजारन ज्वान ॥
बड़ा प्रतापी जैचँद राजा ❀ तेहिका रतीभानु लघुभाय ।
सब बीरनमें अग्रगण्य भा ❀ रणमें जाहिर है तलवार ॥
संवत् ग्यॉरहसै इकसठ औ ❀ अगहन मास उजारा पाख ।
तिथि पंचमी निशा आधीमें ❀ जब थी सिंहलग्न बलवान ॥
सुन्दर नेत्र पूर्णचन्द्रासम ❀ यक सुत प्रगटथो तेहिकी नारि ।
बड़ो लड़ैया सो क्षत्री भा ❀ जेहिकी जगजाहिरतलवार ॥
लाखनिनामभयोतेहि सुतका ❀ जो भानुकुल क्यार अवतार ।
मारि सिरोहिन पृथीराजको ❀ रणसे बाघा दिया हटाय ॥
रतीभानुसुत लाखनिराना ❀ कुसुमा नाम रानिके साथ ।
देश बंगालेमें ब्याहा था ❀ बूंदीशहर बखाना नांव ॥
वा विधि लाखनिरानाजन्म्यो ❀ लाखन बीर प्रचारन हार ।

कवित्त--लाखन नृपनमें है लाखन स्वरूपवान, जाको मुख लखि लाख कामहू लजावते । पन्नालाल लाखनदलनमाहिं लाखन हैं, लाखन बलिन दलि लाखन ढहावते ॥ लाखन संग वीर लाखन रहत नित्य, लाखन मिलन नृपलाखन जुआवते । ऐसे बलवानबीर रणधीर लाखन हैं, लाखनमें तलवार लाखन चलावते ॥ १ ॥

जेहि तन चितै देतहै बाघा ❀ मानो यकमा भयो अहार ॥
यहौ हकीकति पीछे परिगै ❀ अब आगेके सुनो हवाल ।
ढेबा औ धांधूकी उत्पति ❀ सुनियो ज्वानो चित्त लगाय ॥
नगर महोबेका यक ब्राह्मण ❀ पंडित चिंतामणि असनाम ।
तेहिकीतिरियाइकसुतजन्म्यो ❀ ग्यारहसै बासठके साल ॥
कीनविचार तबै चिंतामणि ❀ औ ढेबा धरिदीना नाम ।

पालन लागे ते बालकका ❀ सुन्दररूप शाल बलधाम ॥
पांचवर्षका जब ढेबा भा ❀ तब पंडितने दियो पढ़ाय ।
निपुण भयो ज्योतिषविद्यामें ❀ तेहिकी बुद्धि सराहैं लाग ॥
परिमालिक औ मल्हनारानी ❀ तेहिका करैं बहुतसा प्यार ।
अश्वमनुरथा दीन्हेनि राजा ❀ तेहिपर होत नित्य असवार ॥
धांधूको उत्पति अब सुनिये ❀ ज्वानो मैं गावौं सब भेद ।
याविधि ढेबा नगर महोबे ❀ जायो चिंतामणिके गेह ॥
संवत् ग्यारहसै तिरसठ औ ❀ चैतवदी चौदसतिथि मांहिं ।
दस्सराजकी पटरानीने ❀ जन्म्यो एक पुत्र बलवान ॥
सुनी हकीकत परिमालिकने ❀ औ पंडितको लियो बुलाय ।
पूँछन लाग्यो सुतके लक्षण ❀ जैसे होयँ देउ फर्मांय ॥
इतनी सुनि पंडित सब बोले ❀ सुनिये परिमालिक सरदार ।
यह बालक अपने कुलमाहीं ❀ करिहैं बड़ा घोर संग्राम ॥
पिता जो यहिकी दृष्टि पड़ैगा ❀ तो होवैगी मृत्यु निदान ।
तेहिते दशराज यहिका मुख ❀ नहिं देखैं सुनिये महराज ॥
बड़ा लड़ैया होई राजा ❀ यहिका नाम चँडपुंडीर ।
मारि सिरोहिन निजशत्रुनको ❀ रणखेतनमें करी अधीर ॥
इतनी सुनिकै परिमालिकने ❀ यक दासीको लियो बुलाय ।
दैके धांधूको राजाने ❀ औ दासीसे काम बनाय ॥
यह बालककी रक्षा करियो ❀ दासी सुनौ हमारी बात ।
नये मकानमाहिं लैजाओ ❀ अबही सुन्दर भयो तयार ॥
तब तौ दासी लै बालकको ❀ सेवा बहु प्रकारसे कीन ।
आठ महीनाके धांधूको ❀ दासी खोइ हाथसे दीन ॥
तौन माजरा अब गावत हौं ❀ जैसे धांधू गया बिलाय ।
मेरे ज्वानों अब सुनि लीजै ❀ बारंबार समै नहिं आय ॥
आठ महीनाके धांधू थे ❀ परिगे पर्व कातिकी केरि ।
जायकै बांदी परिमालिकसे ❀ विनती करै लागि तब टेरि ॥
हुक्म जो पाऊँ परिमालिकका ❀ गंगान्हान करौं मैं जायँ ।

पर्व कातिकीका भारी है ❋ बुड़का गंगाघाट बिठूर ॥
इतनी सुनिकै परिमालिकने ❋ कुछ सेना सँग दैकै शूर ।
पठै दियो गंगा न्हानेको ❋ मेला बड़ा कातिकी क्यार ॥
जायकै पहुँची तट बिठूरमें ❋ औ गंगामें करि अस्नान ।
यक पंडितसे पूछन लागी ❋ रेखा धांधूकी दिखलाय ॥
वहां समैयाके औसरमें ❋ राजा पृथीराज चौहान ।
गंगान्हान करन हित ठाढ़े ❋ बांदाके देखैं सब हाल ॥
पंडित तब बांदाके सुतके ❋ लक्षण कहैं बनाय बनाय ।
देखि सुघरता औ सुनि लक्षण ❋ राजाका मन गया लुभाय ॥
यक जादूगरको बुलवायो ❋ औ बहुविधि दीन्हो समुझाय ।
लाइ बालकको हमैं जो देहो ❋ करिकै जादूका विस्तार ॥
तौ तोहि धनसे अटल करौंगा ❋ सुनिये जादूके उस्ताद ।
इतनी सुनिकै पृथीराजकी ❋ जादूगर बहुतै हर्षान ॥
अथये सूर्य भई संध्या औ ❋ कुछ बीती जब थोरी रैन ।
बेसुधि ह्वैगे सब पहरुआ ❋ बांदी सोय गई बेहोश ॥
चोरी करिकै बालक लायो ❋ जादूगर भारी उस्ताद ।
लायकै सौंपा पृथीराजको ❋ औ बकसीस लई गिनवाय ॥
इत राजा ढिग धांधू खेलै ❋ उत जागे सेनाके ज्वान ।
बांदी जागि चहूंदिशि ढूंढ़े ❋ धांधू धांधू रही पुकार ॥
बेगि पहरुवा घुसि मेलामें ❋ ढूँढ़े बहुतै खोज लगाय ।
जब नहिं पाये हैं धांधूको ❋ मनमें बहुतै भये उदास ॥
पायो बालक जब पृथ्वीपति ❋ जल्दी सेनाको सजवाय ।
दिल्लीको चलि दियो बांकुरा ❋ डंका कूचक्यार बजवाय ॥
पालन कारण धांधू कैहां ❋ अपने चाचाको दै दीन ।
कान्हकुमार चाचा राजाके ❋ बालकको निज गोदी लीन ॥
जब दश वर्षक्यार धांधू भा ❋ भारी भयो लड़ैया बीर ।
असी हजार सेनाका मालिक ❋ राजा पृथीराज करि दीन ॥
या विधि धांधू दिल्लीमें बसिगे ❋ राजा पृथीराजके देश ।

लौटिक बांदी परिमालिकसे ❀ धांधूहरन कह्यो समुझाय ॥
दस्सराज सुनिकै यह बातैं ❀ मनमें बहुतै भयो उदास ।
कुछ दिन बाते परिमालिकने ❀ पाई खबरि हर्षकी वीर ॥
पृथीराजके घरमें धांधू ❀ राजे दिल्लीमें रणधीर ।
बहुत खुशी ह्वै दस्सराजको ❀ तब समुझायो बात बनाय ॥
राज्य करैगा दिल्ली केरी ❀ जेहिका मालिक है चौहान ।
ऐसी बातैं बहुती कहिके ❀ सबके मन कीन्हे सन्तोष ॥
यहि विधि धांधू दिल्ली बसिके ❀ सबके मेटे भारी शोक ।
यहो माजरा पाछे पड़िगा ❀ चर्चा सुनौ और मन लाय ॥
उत्पति गाओ ब्रह्मानँदकी ❀ ज्वानौ सुनो खुशीके साथ ।
नगर महोबा जाहिर जामें ❀ तेहिका मालिक नृपपरिमाल ॥
मल्हना रानी तेहि राजाकी ❀ जेहिकी शोभा कही न जाय ।
संवत् ग्यारहसै चौंसठिमें ❀ औ वैशाख महीना माहिं ॥
शुक्ल पक्ष औ तीज तिथीको ❀ सूरज उदे होनके काल ।
मल्हना रानी यक सुत जन्म्यो ❀ जो भा बड़ा प्रतापी वीर ॥
बालकजन्मसुना परिमालिक ❀ ह्वैगा बहुत खुशी रणधीर ।
अपने पंडितको बुलवायो ❀ औ सब लक्षण पूँछन लाग ॥
गुण अवगुण सब कहौ पुत्रके ❀ पंडित करिये बेगि विचार ।
इतनी सुनिकै पंडित बोले ❀ सुनिये परिमालक सरदार ॥
रोहिणी नखत उच्च ग्रहमाहीं ❀ जन्म्यो यह बालकमहराज ।
चंद्रवंशमें भूषण ह्वै है ❀ बाघा बड़ा बीर बलवान ॥
ब्रह्मानंद नाम यहिका है ❀ नाहर अर्जुनका औतार ।
यक अरिष्ट ग्रह है बालकका ❀ सो सुनि लेहु रजापरिमाल ॥
स्त्रीभाव नीक नाहीं है ❀ औ सब ग्रह अच्छे बलवान ।
तिरियाके कारण होवैगी ❀ यहिकी मृत्यु सुनौ सरदार ॥
यह लक्षण हैं यहि बालकके ❀ सो तुमसे सब कहौं बिचार ।
इतनी सुनिकै परिमालिकने ❀ तिनपंडितको दियो इनाम ॥
पालन लाग्यो ब्रह्मानंदको ❀ नितप्रति करै बहुतसा प्यार ।

वर्ष पचीसका ब्रह्मानंद ❋ जब भो वीर ज्वानि रसपाग ॥
पृथीराजकी कन्या बेला ❋ तेहिसँग अपना कियो विवाह ।
रानी बेलाके कारणसे ❋ दीन्हो बाघा प्राण गँवाय ॥
मारि सिरोहिन बड़े बड़े योधन ❋ अपनो यश कीन्हो विस्तार ।
वीर दुलरुआ परिमालिकका ❋ जेहिकै जगजाहिर तलवार ॥
यहिविधि जन्म्यो नगर महोबे ❋ अब आगेको सुनौ हवाल ।
उत्पति गाओं अब ऊदनिकी ❋ जेहिका चरित बड़ा गंभीर ॥
जेहिके सम यहि जगके माहीं ❋ दुसरा भया नहीं कोउ बीर ।
संवत् ग्यारहसै पैंसठ औ ❋ जेठसुदी दशमी तिथि माहिं ॥
ठीक दुपहरी सिंह लग्नमें ❋ दिवलासे प्रगट्यो बलवान ।
दस्सराजकी सो रानी थी ❋ दिवला रही छबिनकी खान ॥
पायकै सुन्दर बालक रानी ❋ मनमें बड़ा शोच तब कीन ।
पतिके आगे पुत्र न दीन्हो ❋ विधिना माहिं बड़ो दुख दीन ॥
ऐसे कहिके दिवला रानी ❋ यक बांदीको बेगि बुलाय ।
ऊदनिको देकै बांदीसे ❋ बोलन लागी वचन सुनाय ॥
लै जा वेगी मेरे आगेसे ❋ जहँ चाहैं तहँ फेंकें जाय ।
विधवा भये मेरे यह जन्म्यों ❋ यहिकै मोहिं नाहीं है चाह ॥
यह सुनि बांदी ऊदनिको लै ❋ पहुँची नगर महोबे जाय ।
मल्हना रानी लै ऊदनिको ❋ पालन लागी दूध पिलाय ॥
नाम सिंहनी इक भैंसी थी ❋ तेहिका दूध पियै नित वीर ।
सिंह समान भया बलमाहीं ❋ बाघा दिवला सुत रणधीर ॥
यहि विधि ऊदनि प्रगट भयो है ❋ चर्चा और कहौं कुछ गाय ।
देशराजके प्राण छुटेके ❋ पाछे जेहि विधि जन्म्यो आय ॥
राजकुमार शहर मांड़ौका ❋ करिया नाम बड़ा बलवान ।
संवत् ग्यारहसै चौंसठमें ❋ पवनी परी कार्तिकी केरि ॥
सजा दुलरुवा मांड़ौवाला ❋ गंगान्हान करनके हेत ।
जायके पहुँच्यो गंगातटमें ❋ औ कीन्हो गंगा स्नान ॥
कपटी माहिल तहँ करियासे ❋ करिकै भेंट कहो समुझाय ।

हार नौलखा दिवला पहिरे ❋ मेरी बहिन सुनौ सरदार ॥
ऐसा हाल सुना जब करिया ❋ सारी फौज लई सजवाय ।
जाय महोबेमें बाघाने ❋ भारी युद्ध कियो बलवान ॥
कुछ वश चला नाहिं करियाका ❋ तब तौ लौटि गयो खिसियाय ।
चौथे मास चढ़ा महुबेमें ❋ औ चोरीका रचा समान ॥
राति अंधेरियाकी महलोंमें ❋ करिया घुसा जाय तत्काल ।
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ सोवत पायो महलन माहँ ॥
बांध लिया दूनौंको तबहीं ❋ औ लै लियो नौलखाहार ।
कूच नगाड़ाको बजवाके ❋ माड़ौ शहर पहूँचा आय ॥
दस्सराज औ बच्छराजको ❋ कोल्हू माहिं दिये पिरवाय ।
दोनोंका शिर काट टँगाया ❋ करिया करियाके अनुहार ॥
यह कौतुक जेहि बेरिया भा था ❋ ऊदन रहे गर्भके माहिं ।
या विधि पिता मरेके पाछे ❋ जन्म्यो दशहरपूरवा माहिं ॥
बड़ा पँवारा को अब गावै ❋ ज्यादा कौन करै बकवाद ।
ग्रंथ बड़ा होइ याही भयते ❋ कुछ संक्षेप कह्यों मैं गाय ॥
यहिविधि जन्म लिये सब बीरन ❋ जिनका यश छाया संसार ।
बहुत पँवारा है आल्हाका ❋ ज्वानो मनसे करौ विचार ॥
वीर प्रगटकै यहि पृथ्वीमें ❋ अपनी शाखा दई चलाय ।
जिनके चरित सुने गायेते ❋ ज्वानन वीरभाव ह्वै जाय ॥
जो कुछ भूल चूक हो यामें ❋ सो सब सज्जन लेहु बनाय ।
इतनी अर्ज सुनो यदु मेरी ❋ पन्नालाल कहै कर जोरि ॥
रायबरेली जिला मध्यमें ❋ नामी हवै सकतपुर ग्राम ।
तहां बसैं पण्डित शिवशंकर ❋ पन्नालाल हवै उपनाम ॥
विरच्यो वीरनकी उत्पति तिन ❋ सुन्दर वीरछन्दमें गाय ।
"श्रीविङ्कटेश्वर" के स्वामी ❋ खेमराजकी आयसु पाय ॥

इति वीरवंशवर्णन समाप्त





खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई - ४.